Hindi

[illegible]

LIB. G.K. V.

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
पुस्तकालय

R

विषय संख्या २.2
पुस्तक संख्या ल ६ ६ श्री
आगत पंजिका संख्या 799 D

पुस्तक पर किसी प्रकार का निशान लगाना वर्जित है। कृपया १५ दिन से अधिक समय तक पुस्तक अपने पास न रखें।

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

Acc 199 D
12.2.73

Stock Verification-2024

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

Stock Verification-2024
[illegible]

R
2.2
[illegible]

श्रीधरभाषाकोष

D799

संग्रहकर्त्ता:—

पण्डित श्रीधर त्रिपाठी।

Stock Verification

लखनऊ
केसरीदास सेठ द्वारा
किशोर प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित
सन् १९१९ ई०

Stock Verification

{ जिल्द सहित ३)
{ बिना जिल्द २॥)

* ओ३म् *

पुस्तक की संख्या..................

पुस्तकालय-पञ्जिका-संख्या......~~8~~ १९

पुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियां लगाना वर्जित है।
हाशय १५ दिन से अधिक देर तक पुस्तक अपने
हीं रख सकता। अधिक देर तक रखने के लिये
ाज्ञा प्राप्त करनी चाहिये।

R
Q.2
[illegible]

१/११

CHECKED 197
Initial

श्रीधरभाषाकोष।

जिसमें

संस्कृत और भाषाके शब्द, शब्दार्थ, अनेकार्थ,
धातु, धात्वर्थ, शब्दलक्षण और उनके प्रमाणिक
उदाहरणोंके व्याकरणसंयुक्त पाठकजनों की
विद्योन्नति और सहायार्थ लिखे गये हैं

सकलगुणाकर वीरेश नरेश विद्यातिविज्ञ श्रीमान् टामस सी ल्यूस
एम्, ए, डैरेक्टर शिक्षाविभाग प्रान्तिक मुत्तहदा आगरा व
अवध तथा श्रीयुत मार्लबरो क्रास साहब बहादुर एम्, ए,
इन्स्पेक्टर अवधदेशीय पाठशालाध्यक्ष के अधिकार में

सद्गुणसम्पन्न

पण्डित बदरीनारायण मिश्र हेडमास्टर सेण्ट्रल
नार्मलस्कूल लखनऊ की प्रेरणा से

कान्यकुब्ज पण्डित श्रीधरत्रिपाठि उक्त सेण्ट्रल नार्मलस्कूल के संस्कृत और भाषा
के अध्यापक ने रचना किया

लखनऊ
केसरीदास सेठ द्वारा
नवलकिशोर प्रेस में मुद्रित होकर प्रकाशित हुआ
सन् १९१९ ई०

सर्वाधिकार संरक्षित हैं।

७११
LIBRARY
VIDYALAYA

चौथी बार ४०००

जिल्द सहित ३)
विना जिल्द २॥)

ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः
पुस्तक सं० R
आगत सं० [illegible]
तिथि
गुरुकुल [illegible]

Luck

ॐ श्रीसच्चिदानन्दमूर्तये नमः ।

श्लोकः ।

परमानुग्रहाकारं गणाध्यक्षं सुखप्रदम् ।
बुद्धिराशिं गुणागारं प्रणमामि गजाननम् ॥ १ ॥

भूमिका

प्रकट हो कि वर्तमानकाल में जो शिक्षाप्रकरण अर्थात् सरिश्ता तालीम में जो पुस्तकें पठन पाठन में आती हैं वे प्राचीन और अर्वाचीन पुस्तकों से संग्रह कीजाती हैं बहुधा अंगरेज़ी भाषाकी पुस्तकों से भी अनुवाद कीजाती हैं उन में ऐसे अपूर्व शब्द आजाते हैं कि जिनको सर्व साधारण लोग और पाठकजन नहीं समझसके न अद्यावधि भाषा में कोई उत्तम कोष ऐसा निर्म्मित किया गया कि जिसकी सहायता से शब्दों की धातु धात्वर्थ लक्षण अर्थों का प्रमाण और वाच्यादिशब्द सम्बन्धी बातोंका बोध भली भांति ज्ञात होता यद्यपि एक दो कोष भाषा के बनाये भी गये हैं तथापि उनमें केवल शब्द और शब्दार्थ लिखा गया है पर उपस्थित काल में जो पुस्तकें शिक्षाविभाग में प्रचलित हैं उनमें बहुत से शब्द ऐसे प्रयोग किये गये हैं कि जो इन कोषों में नहीं मिलते हैं ऐसे अभिधान अर्थात् कोष के अवलोकन से पाठकजनों का चित्तोत्साह मन्द होजाता है इस दशा को देख खेद होता है अतएव एक भाषा का अभिधान लिखना समयानुसार उचित जान पड़ा मैं चौंतीस वर्ष से अवधशिक्षाविभाग का सेवक अर्थात् मुलाज़िम हूं इतने समय की सेवकाई में संस्कृत और भाषा कोष और नाना समाचारपत्रों में जो २ विलक्षण और अपूर्वशब्द दृष्टिगोचर हुए उनको संग्रह करता रहा इनसे अतिरिक्त सर्वगुणगणालंकृत महाशय बाबू मधुसूदन मुकरजी हेडमास्टर हाईस्कूल सुलतांपुर कि जिनकी मातहती में मैं चौदहवर्ष आनन्दपूर्वक रहा पूर्वोक्त महोदय से वंगदेशीय कोषों का उत्तमोत्तम आशय ग्रहण किया अब मातृभाषा के संशोधनार्थ और पाठकजनों के उत्साहवर्द्धन हेतु इस संग्रहको मुद्रित कराया पुनः इस स्थल पर इस बात को भी सूचित करना योग्य है कि भाषा का प्रचार कबसे

और किस प्रकार से हुआ इतिहासों से विदित हुआ है कि संवत् ७७० में अवन्तिकापुरी अर्थात् उज्जैननगर में राजा भोज के पिता राजा मान काव्य विद्या में अतिनिपुण थे उन्होंने पुष्पनामक बन्दीजन को संस्कृत काव्य और अलङ्कारादि पढ़ाये उसने उनको भाषा दोहों में अनुवाद किया उसी समय से भाषा काव्य की नीव पड़ी तब से दिनप्रति भाषा की उन्नति होती गई सूरदास, तुलसीदास, केशवदास, बिहारीलाल आदि कवियों ने भाषा के उत्तमोत्तम ग्रंथ निर्म्माण किये उनके शब्दों का ज्ञानदाता केवल कोषही होसक्ता है यद्यपि बहुत प्रकार की विद्या हैं और उनके विषय भिन्न २ हैं यथा व्याकरणविद्या से वर्णविचार, शब्दविचार, वाक्यरचना, छन्दरचना, उनकी विवेचना, योजना और शुद्धाशुद्ध का ज्ञान होता है परन्तु वाक्य और छन्द का भावार्थ और तर्क वितर्क का ज्ञान न्यायशास्त्र से होता है और साहित्य अर्थात् काव्य विद्या शब्दों की सजावट लालित्य और विचित्रता के काम में आती है परन्तु सर्वोपरि कार्य अभिधान से निकलता है अभिधान में एक २ शब्द के नानार्थ दिखलाये जाते हैं एकही शब्द है पर स्थानान्तर से भिन्न २ अर्थ दिखलाता है इन बातों के विचार का भार कोषसंग्रहक पर रहता है क्योंकि वह शब्दों को श्रेष्ठतम रीतियों से चुन २ कर एकत्रित करता है वह शब्दों को इस ढब से क्रमबद्ध करता है कि जिस शब्द या उसके अर्थ को जो लोग देखना चाहें तुरन्त निकल आवे वह शब्दों की योनि अर्थात् धातु, धात्वर्थ, प्रत्ययादि की रचना का विषय ठीक २ लक्षण या पहचान और उपसर्गादि के संयोग से जो अर्थों में भेद होजाता है प्रकट करदेता है इसका वर्णन आगे विस्तार सहित होगा अब कोष के उपयोगी संकेतों का उल्लेख किया जाता है ॥

इस कोष में निम्नलिखित संकेत ठहराये गये हैं ॥

संकेत	शब्द	संकेत	शब्द
सं०	संस्कृत	अं०	अंगरेज़ी
प्रा०	प्राकृत वा हिन्दी	( )	शब्दोत्पत्ति वा माद्दा
अ०	अरबी	पु०	पुँल्लिङ्ग
फ़ा०	फ़ारसी	स्त्री०	स्त्रीलिङ्ग

संकेत	शब्द	संकेत	शब्द
व० व०	बहुवचन	गु० उपस०	गुणवाचक उपसर्ग
गु०	गुणवाचक	समुच्च०	समुच्चयिक अव्यय
सर्वना०	सर्वनाम	वि० बो०	विस्मयादिबोधक
सं० सर्वना०	सम्बन्धी सर्वनाम	बोल०	बोलचाल वा मुहावरा
नित्य सं०	नित्य सम्बन्धवान् वा कृतसम्बन्धी	अव्य०	अव्यय
		क०	कर्तृवाचक
क्रि० अ०	क्रियाअकर्म्मक	र्म्म०	कर्म्मवाचक
क्रि० स०	क्रियासकर्म्मक	भा०	भाववाचक
क्रि० वि०	क्रियाविशेषण	ण०	करणवाचक
उपस०	उपसर्ग	धि०	अधिकरणवाचक

उक्त संकेतों का स्फुट विचार ॥

पु० जिस नाम से पुरुषत्व का बोध हो उसे पुँल्लिङ्ग कहते हैं जैसे पुरुष, लड़का, घोड़ा ॥

स्त्री० जिस नाम से स्त्रीत्व का बोध हो उसे स्त्रीलिङ्ग कहते हैं जैसे स्त्री, लड़की, घोड़ी ॥

भाषा में नपुंसक शब्द पुँल्लिङ्ग ही मानेगये हैं जैसे सागर, जल, रत्न, कुल इत्यादि पर ये संस्कृत में नपुंसक लिङ्ग हैं ॥

वचन—संख्या को कहते हैं वे दो हैं एकवचन और बहुवचन जिस रूप से एक का बोधहो उसे एकवचन जैसे लड़का, घोड़ा इत्यादि ॥

---

१ सत्त्वरजस्तमोगुणानामुपचयोपचयसमत्वामिह क्रमेण पुंस्त्वं स्त्रीत्वं नपुंसकत्वं च विवक्षितं तेनाचेतने खट्वाजवनिकादौ न दोष इति ॥

जिस नाम से एक से अधिक का बोध हो उसे बहुवचन जानो जैसे लड़के, घोड़े इत्यादि ॥

गुणवाचक–गुणवाचकसंज्ञा वह है जो पदार्थ के गुण वा धर्म को बतावे जैसे काला घोड़ा, धनी पुरुष, प्रतापी मनुष्य इस स्थलपर काला, धनी, प्रतापी गुणवाचक हैं भाषा में गुणवाचक शब्द बहुधा संज्ञा और कर्तादि के विशेषण होते हैं जैसे खट्टा नींबू, ऊंची भीत, प्रतापी मनुष्य, सुखी जन, खज़ानची मोहनलाल इत्यादि ॥

सर्वनाम—संज्ञा उसे कहते हैं जो सब नामों के बदले में आवे सर्वनाम का प्रयोजन वहाँ पड़ता है जहाँ नामको एकबार कहकर फिर कहना हो तब उसकी जगह सर्वनाम आताहै इससे वाक्य बुरा नहीं लगता और न वह संज्ञा बारबार कहने पड़ती है जैसे देवदत्त आया और उसने पोथी पढ़ी यहाँ (उसने) सर्वनाम है, सर्वनामों में लिङ्ग के कारण कुछ विकार नहीं होता जिन संज्ञाओं के स्थान में वे आते हैं उनके अनुसार सर्वनामों का लिङ्ग समझा जाता है जैसे देवदत्त ने कहा मैं पढ़ताहूं यहाँ देवदत्त पुँल्लिङ्गहै उसके बदले में मैं आयाहै तो मैं पुँल्लिङ्ग हुआ, लड़की कहती है कि मैं जातीहूं यहाँ लड़की स्त्रीलिङ्ग है अतएव मैं भी स्त्रीलिङ्ग हुआ ॥

सर्वनामों के कई भेद हैं जैसे पुरुषवाची ज़मीर शख़्सी, निश्चयवाचक वा दर्शक जमीर इशारह, अनिश्चयवाचक ज़मीर मुबहम, सम्बन्धवाचक इस्म मौसूल, प्रश्नवाचक इस्तफ़हाम, आदरसूचक इज़्ज़त बतानेवाले । मैं तू वह पुरुषवाचक सर्वनाम हैं यह, वह निश्चयवाचक कोई, कुछ अनिश्चयवाचक जो, जौन, सो, तौन सम्बन्धवाचक क्या, कौन प्रश्नवाचक आप आदरसूचक ॥

सम्बन्ध उसे कहते हैं जिससे स्वत्व और रिश्ता जाना जाता है वह दो में रहताहै एक कृतसम्बन्धी अर्थात् मुज़ाफ़अलेह दूसरा सम्बन्धी अर्थात् मुज़ाफ़ जैसे राजा का घोड़ा राजा कृतसम्बन्धी घोड़ा सम्बन्धी इत्यादि ॥

क्रिया के विषय में ॥

क्रिया उसे कहते हैं जिससे कृति स्थिति और देह मन के व्यापार का बोध हो क्रियापद में लिङ्ग, वचन, पुरुष, अर्थ, काल, प्रयोग अवश्य होते हैं और इनका ज्ञान क्रियापद के रूप से होताहै इन भेदों से क्रियापद के रूप प्रायः बदलते हैं ॥

क्रिया धातु से बनती है इस हेतु धातुका वर्णन करते हैं ॥

क्रिया की योनि या मूल जो प्रत्ययादि कार्यरहित शुद्धरूप है उसे धातु कहते हैं क्रिया दो प्रकार की है सकर्म्मक और अकर्म्मक सकर्म्मक क्रिया में कर्ता के व्यापार का फल कर्म्म में पाया जाता है यथा पण्डित पोथी को पढ़ता है पण्डित कर्ता, पोथी कर्म्म, पढ़ता है क्रिया । अकर्म्मक क्रिया में कर्ता के व्यापार का फल कर्ताही में रहताहै यथा बालक होता है या रोता है बालक के व्यापार का फल बालकही में रहा संस्कृतज्ञ धातुके दो भेद कहते हैं सकर्म्मक अकर्म्मक जो धातु वस्त्वन्तरसापेक्ष है वह सकर्म्मक है यथा राम भोजन करताहै श्याम दर्शन करता है इस स्थल में क्या भोजन करता है और किसका दर्शन करता है इसकी जानने की अपेक्षा है राम कोई वस्तु भोजन करता है और श्याम कोई द्रव्य का दर्शन करता है अतएव सापेक्षत्व प्रयुक्त भुज धातु एवं दृश धातु सकर्म्मक हैं जो धातु वस्त्वन्तरसापेक्ष नहीं है वह अकर्म्मक है यथा शिशु शयन करते हैं बालक क्रीड़ा करते हैं इस स्थल में शी एवं क्रीड़ धातु किसी वस्तु की अपेक्षा नहीं करती हैं केवल कर्तृनिष्ठ हैं ॥

* अकर्म्मक धातु जानने के निमित्त संस्कृत में कोई संकेतिक चिह्न नहीं दिया जाता है वह अनायास ज्ञात होती है ॥

द्वितीय बात यह है कि इ, औ, इत्यादि वर्णों को अनुबन्ध कहते हैं जिस धातु के परे इ, वर्ण दृष्ट होवे तिस धातु के उपान्त में न अक्षर का आगम होगा पश्चात् वही नकार वर्ग के अनुसार सन्धि के नियम से ङ, ञ, ण, म से बदल जाती है यथा अक् + इ + त=अङ्कित, अच् + इ + त=अञ्चित, उत्कठ् + इ + त=उत्कण्ठत, कप् + इ + त=कम्पित ॥

स्वाभाविक धातु संवलित नकार का भी यही नियम है यथा अन्ज=अञ्जन एवं जिस धातु के पश्चात् औ होगा उसके उत्तर त (तव्य) आदि प्रत्यय के परे इकार का आगम नहीं होगा यथा गमऔ=गत, गमऔ=गन्तव्य तृतीय बात यह है धातु का नानाप्रकार का अर्थ होने से भी व्यवहारानुसार एक दो तीन पर्य्यन्त धात्वर्थ लिखे गये हैं ॥

---

* लज्जासत्तास्थितिजागरणं वृद्धिक्षयभयजीवितमरणम् । शयनक्रीडारुचिदीप्त्यर्थं धातुगणं तमकर्मकमाहुः ॥

इस ग्रन्थ में धातु निष्पन्न शब्द का अकारादिवर्ण प्रबन्ध में प्रत्यय और वाच्य का यथोचित उल्लेख रहेगा वाच्य का सङ्केतिक एक २ वर्ण होगा अर्थात् कर्तृवाच्य का क० कर्म्मवाच्य का र्म० करणवाच्य का ण० अधिकरणवाच्य का धि० भाववाच्य का भा० लिखा गया है ॥

प्रत्यय

अन, अ, ति, अ,

(संस्कृत में अनट, अल, क्ति, घञ्,) इन प्रत्ययों के योगसे क्रियावाचक शब्द निष्पन्न होता है (कहीं २ संज्ञा शब्द भी होता है) प्रकट हो कि अनट, अल प्रत्यय के ट, ल, काम में नहीं आते इस कारण अनट, अल के स्थान में अन, अ को लिखते हैं अन, अ, (अनट, अल) के प्रायः सब धातु के उत्तर भाववाच्य में अन, अ, प्रत्यय होता है अन, अ के योग से धातु का अन्त्य वर्ण पूर्ववर्ती इ, उ, ऋ के स्थान में ए, ओ, अर् होजाता है एवं धातु के अन्त स्थित इ ई के स्थान में अय्, उ ऊ के स्थान में अव्, ऋ ॠ के स्थान अर् होजाता है यथा क्षिप + अन=क्षेपन। विक्षिप + अ=विक्षेप। चि + अन=चयन। सञ्चि + अन=सञ्चयन इत्यादि ॥

ति (क्ति)

प्रायः सब धातु के अन्त में भाववाच्य में ति प्रत्यय होता है ति कभी २ धातु में युक्त होजाता है यथा शक् + ति=शक्ति । कभी २ ति प्रत्यय के परे धातु के अन्तिम, एवं न, का लोप हो जाता है यथा गम् + ति=गति । आहन् + ति=आहति और कभी २ ति के परे धातु के अन्त स्थित म को न होजाता और प्रथम स्वर दीर्घ होजाता है भ्रम् + ति=भ्रान्ति इत्यादि ॥

अ (घञ्)

धातु के उत्तर भाववाच्य में अ प्रत्यय होता है अ प्रत्यय के योग से धातु के उपान्त अ को आ होजाता है और-इ के स्थान में ए और उ को ओ ऋ को अर् होजाता है यथा स्वद + अ=स्वाद एवं अ प्रत्यय के योग से धातु के अन्त इ ई के स्थान में आय् उ ऊ के स्थान में आव्, ऋ ॠ के स्थान में आर् होजाता है यथा अधि इ+अ=अध्याय इत्यादि निम्न लिखितं प्रत्ययों के योग से विशेषण शब्द कदाचित् संज्ञा शब्द निष्पन्न होते हैं

अक, तृ, इन, इष्णु, अन, उक, र, अ, आन, स्यमान, क्विप्, त, तव्य, अनीय, य, स, इ, ष (संस्कृत क्रम से) अक, तृण्, णिन्, इष्णु, अन, उक, र, (ण, यण, श, उ,) आन, स्यमान ॥

क्विप्, त, तव्य, अनीय, य, क्यप्, घ्यण्, सत्, णि, यङ् उक्त प्रत्ययों का प्रयोग अर्थात् इस्तेमालः—

(अक=णक)

धातु के उत्तर कर्तृवाच्यमें अक प्रत्यय होता है अर्थात् धातु के साथ अक प्रत्यय के योग से कर्तृबोधक शब्द निष्पन्न होताहै अक प्रत्यय के योग से धातु के इकारादि अन्तस्वर के स्थान में आय् इत्यादि होजाता है एवं उपान्त का अ दीर्घ आ होजाताहै और इकारादि के स्थान में एकारादि होजाताहै, एवं आकारान्त अकारान्त धातु के पीछे अकप्रत्यय के पूर्व में य का आगम होजाताहै यथा नी + अक=नायक, पठ् + अक=पाठक, भिद् + अक=भेदक, कृ + अक=कारक, दा + अक=दायक ॥

(तृ=तृण्)

धातु के उत्तर तृ प्रत्यय होने से कर्तृवाच्य होता है तृ प्रत्यय के योगसे धातु के अन्त्य और उपान्तिम इकारादि के स्थान में एकारादि होताहै यथा जि+तृ=जेता, नी + तृ=नेता, स्तु + तृ=स्तोता, कृ + तृ=कर्ता, हृ + तृ=हर्ता, आ, हृ + तृ=आहर्ता, छिद् + तृ=छेत्ता, भिद् + तृ=भेत्ता ॥

(इन्=णिन्)

धातु के परे कर्तृवाच्य में इन् प्रत्यय होता है इन् प्रत्यय के योग में धातु के इकारादि अन्तस्वर के स्थान में आय् प्रभृति होजाताहै एवं उपान्त के अ को आ होजाता है और इकारादि के स्थान में एकारादि होजाताहै एवं अकारान्त धातु के उत्तर इन् प्रत्यय के परे यकार का आगम होताहै यथा शी + इन्=शायी, वद + इन्=वादी, भिद + इन्=भेदी, स्था + इन्=स्थायी, दा + इन्=दायी, पा + इन्=पायी, या + इन्=यायी ॥

(इष्णु)

चर, सह, वृध्, निर, आ, कृ और कई एक धातु के उत्तर में कर्तृवाच्य में इष्णु प्रत्यय होताहै इष्णु प्रत्यय के योगसे धातु के अन्त और उपान्त इकारादि एकारादि होजाताहै यथा चर् + इष्णु=चरिष्णु, वृध् + इष्णु=वर्द्धिष्णु, अलं, कृ + इष्णु=अलंकरिष्णु इत्यादि ॥

(अन)

ई (नि) युक्त पद प्रभृति कई एक धातु के परे कर्तृवाच्य में अन होताहै यथा नद् + इ + अन=नन्दन, नश् + अन=नाशन, हन् + अन=घातन, मर्द् + अन=मर्दन, तृ + अन=तारण, भू + अन=भावन, मुह + अन=मोहन, पू + अन=पावन, भिन्न उक्तरूप सब उपपद पूर्व में व्यवहार किये जाते हैं यथा विपन्नाशन, पतितपावन, गोपीमोहन इत्यादि ॥

(उ, उक)

कई एक धातुके उत्तर कर्तृवाच्यमें उक होताहै कम् + उक=कामुक इत्यादि ॥

(र)

दीप्, नम्, कम्, हिस् प्रभृति कई एक धातु के परे कर्तृवाच्यमें र होताहै यथा नम् + र=नम्र, हिस् + र=हिंस्र ॥

† ‡ अ (ण्, यण, श, उ)

विशेष्य विशेषण किंवा अव्यय शब्द के पूर्ववर्ती धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अ प्रत्यय होता है अ प्रत्यय कई एक धातु में संयुक्त होजाता है और अ प्रत्यय के परे कई एक धातु का अन्त्य इकारादि एकारादि से परिवर्तित होजाता है अर्थात् बदल जाता है और अ प्रत्यय के कई एक धातु का अन्त्य वर्ण और तत्पूर्ववर्ती स्वर का लोप होजाता है वा धातु का अन्त्य अकार लुप्त होजाता है यथा मनस् रम् + अ=मनोरम, कुम्भ कृ + अ=कुम्भकार, पङ्क + जन् + अ=पङ्कज, सुख + दा + अ=सुखद ॥

(आन)

कई एक धातु के परे वर्तमान काल में कर्तृवाच्य में आन प्रत्यय होता है। जिस धातु के परे अकार आता है तदुत्तर आन के स्थान में मान होजाता है अन्यप्रकार के धातु के परे केवल आन प्रत्यय होता है कर्म्म और भाववाच्य धातु के उत्तर यकार का आगम आता है और आन के स्थान में मान होजाता है यथा धाव + आन=धावमान, शी + आन=शयान, कृ + आन=कुर्वाण, क्रिय + आन=क्रियमाण ॥

(स्यमान)

कर्तृ एवं कर्मवाच्य भविष्यत्काल में धातु के उत्तर स्यमान प्रत्यय होता है किसी धातु के परे स्यमान प्रत्ययके पीछे इकार का आगम होताहै यथा दा + स्यमान=दास्यमान, जन + स्यमान=जनिष्यमाण ॥

---

† स्वद्योतकं विशेष्यम् । ‡ परद्योतकं विशेषणम् ॥

(क्विप्[१])

धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में क्विप् होता है । क्विप् का कुछ नहीं रहता है इस कारण शून्यमात्र प्रदर्शित होता है क्विप् प्रत्यय के परे वच् धातु प्रभृति का अकार दीर्घ होजाता है और च् के स्थान में क् होजाता है एवं क्विप् प्रत्यय के परे ज् और श् के स्थान में क् होजाता है यथा वच्+०=वाक्, आखु+भुज्=आखुभुक्, दृश्+०=दृक् ॥

(त=क्त)

गम् प्रभृति कई एक धातु एवं अकर्म्मक धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में त प्रत्यय होता है और इससे भिन्न धातु के उत्तर कर्म्मवाच्य और प्रयोग विशेष उभयवाच्य में त प्रत्यय होता है यथा अकर्म्मक गम्+त=गत, भी+त=भीत, सकर्म्मक कृ+त=कृत, परिच्छिद्+त=परिच्छिन्न, भिद्+त=भिन्न ॥

जिस धातु का औ अनुबन्ध नहीं है तिससे परे त प्रत्यय के पूर्व इकार का आगम होता है एवं कृ, भू इत्यादि धातु के उत्तर त प्रत्यय के पूर्व इकार का आगम नहीं होता यथा इकार का आगम लिख्+त=लिखित ॥

अनागम भू+त=भूत, कृ+त=कृत, त प्रत्यय के योग में मकारान्त और नकारान्त धातु के म् और न् का लोप होजाता है कभी २ म को न होजाता है तब प्रथम स्वर दीर्घ होजाता है यथा लोप का उदाहरण गम्+त=गत, हन्+त=हत, म को न और दीर्घ होने का उदाहरण भ्रम्+त=भ्रान्त, त प्रत्यय के योग में धातु का अन्त्य हकार ग से परिवर्तित होजाता है अर्थात् बदल जाता है एवं त प्रत्यय का तकार ध से बदल जाता है और यह ग के साथ मिल जाता है किसी २ धातु का ह और त प्रत्यय दोनों मिलकरके एक ढकार से बदल जाते हैं और धातु का ह्रस्व स्वर दीर्घ होजाता है यथा मुह्+त=मुग्ध, मुह्+त=मूढ ॥

त प्रत्यय के योग में मद धातु छोड़कर दकारान्त धातु के द के स्थान में न और त प्रत्यय के त को भी न होजाता है यथा छिद्+त=छिन्न, डी प्रभृति धातु के परे त प्रत्यय के त के स्थान में न होजाता है यथा डी+त=डीन, उड्डी+त=उड्डीन ॥

शुष्, पच् धातुओं के उत्तर त प्रत्यय के तकार को क वा व होजाता है यथा शुष्+त=शुष्क, पच्+त=पक्व त प्रत्यय के योग में ऋकारान्त धातु

---

[१] क्विपः सर्वापहारी लोपः सर्वाचार्य्यैर्विधीयते इति ॥

के ऋ को इर् होजाता है एवं त प्रत्यय के त को न होजाता है यथा आ-कॄ+त=आकीर्ण, उत्-तॄ+त=उत्तीर्ण ॥

योग्यार्थ और कर्म्मवाच्य ।

(तव्य)

यह प्रत्यय प्रायः बहुत धातुओं के साथ योग किया जाता है प्रायः योग्यार्थ और कर्म्मवाच्य में तव्य होता है तव्य के योग में धातु के अन्त्य किंवा उपान्त स्थित इकारादि के स्थान में एकारादि होजाता है । एवं जिस धातु का (औ) अनुबन्ध नहीं है ऐसे धातु के उत्तर एवं वृ, श्वि, श्रि, डी, शी, पू, रु, नु, स्नु, क्षि, क्ष्णु धातु के उत्तर तव्य प्रत्यय के योग में इकार का आगम होजाता है तद्भिन्न एक स्वर आ, इ ई, उ ऊ और ऋकारान्त धातु के उत्तर तव्य प्रत्यय के योग में इकार का आगम नहीं होता है यथा चि+तव्य=चेतव्य, बुध+तव्य=बोद्धव्य, दा+तव्य=दातव्य ॥

कर्मवाच्य और योग्यार्थ ।

(अनीय)

यह प्रत्यय प्रायः सकल धातु के उत्तर कर्म्मवाच्य और योग्यार्थ में होता है अनीय प्रत्यय के योग में धातु के अन्त्य इ ई, उ ऊ, ऋ के स्थान में अय्, अव्, अर् होजाता है एवं उपान्त्य के इकारादि के स्थान में एकारादि होजाता है यथा चि+अनीय=चयनीय, भिद्+अनीय=भेदनीय, भज्, यज्, जप्, आ, नम् धातु के उत्तर एवं जिन सब धातुओं के साथ (य=घ्यण्) किंवा (य=क्यप्) प्रत्यय का योग नहीं किया जाता है तिसके पश्चात् प्रायः कर्म्मवाच्य में और योग्यार्थ में य प्रत्यय होता है य प्रत्यय के योग में तव्य प्रत्ययान्त धातु के अनुसार स्वर का परिवर्तन होता है अर्थात् बदलजाता है एवं धातु का अन्त्य आ एकार से परिवर्तित होता है यथा चि+य=चेय, भिद्+य=भेद्य, दा+य=देय, धा+य=धेय, ज्ञा+य=ज्ञेय, वि-ज्ञा+य=विज्ञेय ॥

(य=क्यप्)

वृ, दृ, भृ, स्तु, इ, शास् एवं ऋकारान्त धातु के उत्तर एवं और कई ए धातु के उत्तर प्रायः कर्म्मवाच्य नित्य (य, क्यप्) प्रत्यय होता है कृ, वृष् मृज्, गुह्, दुह्, शंस्, संप्रभृति वा अपि अभिपूर्वक ग्रह धातु के उत्तर विकल से (य, क्यप्) होता है य प्रत्यय के योगमें धातु के स्वर का परिवर्तन नह होता अर्थात् नहीं बदलता यथा भृज+य=भृज्य, गुह्+य=गुह्य परन्तु

आ, दृ, भृ, स्तु, कृ धातु के उत्तर (य, क्यप्) प्रत्यय के पूर्व त का आगम होजाता है यथा भृ + य=भृत्य, आ–दृ + य=आदृत्य ॥

इकारान्त वा उकारान्त एवं हलन्त अथवा ऋकारान्त धातु के उत्तर कर्म्मवाच्य में (य, घ्यण्) होजाता है य प्रत्यय के योग में धातु के इकारादि अन्त्यस्वर आय् आदि के रूप में बदलजाता है एवं उपान्त्य का इकारादि स्वर एकारादि में परिवर्तित होजाता है एवं जन्, वध् धातु को छोड़ अन्य धातुका उपान्त्य अ को आ होजाता है यथा श्रु + य=श्राव्य, दुह् + य=दोह्य, क्रम् + य=क्राम्य ॥

(इ, णि)

धातु के परे प्रेरणार्थ में और स्वार्थ में इ प्रत्यय होता है इस प्रत्यय के होने में शब्द निष्पन्न नहीं होता है धातु के उत्तर इ प्रत्यय किया जाय तिसके परे और कोई एक प्रत्यय करते हैं इ प्रत्यय के परे धातु के अन्त्य इकारादि के स्थान में आय् इत्यादि एवं उपान्त्य के इकारादि के स्थान में एकारादि होजाता है परन्तु कभी २ इ प्रत्यय का लोप होजाता है वा कभी इ प्रत्यय का परिवर्तन अय् से होजाता है यथा कृ + इ + त=कारित, कृ + इ + तृ=कारयिता, चुर् + इ + त=चोरित ॥

(स, सन्)

धातु से परे इच्छार्थ में स प्रत्यय होता है इस स प्रत्यय के करने में और एक प्रत्यय का योग होता है स प्रत्यय के परे एकस्वर के सहित धातु के आद्य अक्षर की द्विरुक्ति अर्थात् द्वित्व होजाता है एवं द्विरुक्ति के क को च होजाता है और ग को ज और भ को ब एवं ध को द होता है यथा कृ + स—आ=चिकीर्षा, पा + स—आ=पिपासा, गुप् + स—आ=जुगुप्सा ।

स प्रत्यय के परे लभ्, दा, आप् के स्थान में क्रमशः लिप्, दित्, इप् होजाता है यथा लभ् + स—आ=लिप्सा, दा + स—आ=दित्सा, वि—आप् + स—आ=वीप्सा ॥

(य, यङ्)

धातु के उत्तर पुनः पुनः अर्थात् वारंवार अर्थ में य प्रत्यय होता है य प्रत्यय के परे एक प्रत्यय और होता है य प्रत्यय के परे एकस्वर सहित धातु के आद्यवर्ण की द्विरुक्ति अर्थात् द्वित्व होजाता है एवं द्विरुक्ति के क को च होजाता है ग को ज और ध को द एवं भ को ब होजाता है यथा दीप् + य–आन=देदीप्यमान इस य प्रत्यय का किसी २ स्थान में लोप होजाता है किन्तु

य प्रत्यय का कार्य्य समुदाय होता है पीछे अन्य प्रत्यय का योग होजाता है यथा क्रम् + अन=चंक्रमण ॥

तद्धित प्रकरण ।

तद्धित उसे कहते हैं जो शब्दार्थमें विशेषता प्रकट करे जिससे संज्ञाके अन्त में प्रत्ययों के लगाने से अनेक शब्द बनते हैं जो भाषा में व्यवहृत प्रत्यय हैं उन्हें नीचे लिखते हैं तद्धित के प्रत्यय से अपत्यवाचक, कर्तृवाचक, भाववाचक, ऊनवाचक, गुणवाचक संज्ञा उत्पन्न होती है जैसे :—

१ अपत्यवाचक संज्ञा नामवाचक से निकलती है । नामवाचक के पहले स्वर को वृद्धि करने से अथवा ई प्रत्यय होनेसे जैसे शिव से शैव, विष्णु से वैष्णव, गोतम से गौतम, मनुसे मानव, वशिष्ठ से वाशिष्ठ, महानन्द से महानन्दी, रामानन्द से रामानन्दी हुआ है ॥

२ कर्तृवाचक संज्ञा उसे कहते हैं जो क्रिया के व्यापार का कर्त्ता है उसे बतावे संज्ञा से वाला, हारा, इया, इन प्रत्ययों के लगाने से बनती है जैसे चुड़िहारा, दूधवाला, आढ़तिया इत्यादि ॥

३ भाववाचक संज्ञा और संज्ञाओं से इन प्रत्ययों के लगाने से बनती है जैसे ता, त्व, आई, ई, पन, पा, वट, हट, स इत्यादि उदाहरण ये हैं चतुराई, बोआई, लड़काई, लम्बाई, पशुत्व, उत्तमता, मित्रता, बालकपन, बुढ़ापा, बनावट, चिकनाहट ॥

४ ऊनवाचक संज्ञा अक, इया, आ, वा लगाने से और आ को ई आदेश करने से बनती है जैसे मानव से मानवक, वृक्षसे वृक्षक, घोड़ी से घुड़िया, बच्चा से बचुआ, मर्दसे मर्दक, पलँग से पलँगड़ी ॥

५ गुणवाचक संज्ञा नीचे के प्रत्ययों के लगाने से बनती है आ, इक, इत, इय–या–ई–इला, एला, ऐला, लु, लू, ल, वन्त, वान्, जैसे प्यास से प्यासा, भूख से भूखा, शरीर से शारीरिक, स्वभावसे स्वाभाविक, आनन्द से आनन्दित, समुद्रसे समुद्रिय, झाँझ से झाँझिया, ऊन से ऊनी, साज से सजीला, घरसे घरेला, बन से बनेला, दयासे दयालु, झगड़ा से झगड़ालू, कृपा से कृपालू, कुल से कुलवन्त, आशा से आशावान् ॥

इति तद्धितप्रकरणम् ॥

कृदन्त के विषय में ।

क्रिया से परे जो प्रत्यय होते हैं कि जिनसे कर्तृत्व या व्यापार का बोध

होता है उन्हें कृत कहते हैं उनके आने से जो शब्द बनते हैं उन्हें कृदन्त अथवा क्रियावाचक संज्ञा कहते हैं इस हेतु से कि प्रायः क्रियाके सदृश अर्थ को प्रकाश करते हैं ॥

भाषा में पांच प्रकार की संज्ञा क्रिया से बनती हैं अर्थात् कर्तृवाचक, कर्म्मवाचक, करणवाचक, भाववाचक और क्रियाद्योतक उनके बनाने की रीति नीचे लिखी है ॥

१ जिससे कर्तापन का बोध हो वह कर्तृवाचक है उसके बनाने की रीति यह है कि क्रिया के साधारण रूप के अन्त्य आ को ए करके आगे हारा, वाला लगा देते हैं यथा करनेवाला मारनेहारा इत्यादि स्त्रीलिङ्ग में अन्त आ को ई से बदल देते हैं यथा करनेवाली मारनेहारी दान देनेवाली ॥

धातु के न चिह्न का लोप करके अक, इया, वैया प्रत्यय करने से कर्तृवाचक संज्ञा होजाती है, यथा पालना से पालक, जड़ना से जड़िया, जीतना से जितवैया जिस धातु का स्वर दीर्घ हो तो वैया प्रत्यय के लगाने पर उसे ह्रस्व कर देते हैं यथा खाना से खवैया गाना से गवैया आदि जानो ॥

२ जिस संज्ञा से कर्म्मत्व जाना जाता है उसे कर्म्मवाचक संज्ञा कहते हैं वह सकर्म्मक क्रिया से बनती है और उसके बनाने की यह रीति है कि धातु के न चिह्न को पुँल्लिङ्ग में आ से और स्त्रीलिङ्ग में ई से बदल देते हैं उसके पूर्व स्वर का लोप करके आ आर ई को मिला देते हैं वही कर्म्मवाचक संज्ञा होजाती है अथवा उस रूप के आगे हुआ लगा देते हैं यथा देखना से देखा मारना से मारा अथवा मारा हुआ देखा हुआ स्त्रीलिङ्ग में मारी हुई देखी हुई आदि ॥

३ भाववाचक संज्ञा उसे कहते हैं कि जिसके कहने से पदार्थका धर्म्म वा स्वभाव समझा जाय अथवा जिससे किसी व्यापार का बोध हो व्यापार की भाववाचक संज्ञा कई प्रकार से बनाई जाती है यथा कहीं धातु के ना के लोप करदेने से कहीं ना को आव् आदेश करने से कहीं २ धातु के ना के आ का लोप करने से और कहीं आ का लोप करके आ, ई लगाने से और कहीं ना का लोप करके आवट आहट अथवा वट हट लगाने से बनती है यथा बोलना से बोल चढ़ना से चढ़ाव देना लेना से देन लेन मारना पीटना से मार पीट और बोना से बोआई ठगनासे ठगाई सिखना से सिखावट लिखना से लिखावट ॥

४ करणवाचक वह है जिसके द्वारा कर्ता व्यापार को सिद्ध करताहै उस के बनाने का नियम यह है कि धातु के ना के आ को ई करदेने से कहीं २ ना का लोप करके ना से पूर्व अक्षर में आ लगाने से कोई २ धातुही करणवाचक का काम देती है यथा कतरना से कतरनी खोदना से खोदनी घेरना से घेरा फेरना से फेरा बेलना यह धातु ही करण का काम देती है ॥

५ क्रियाद्योतक संज्ञा वह है जो संज्ञा का विशेषण होके निरन्तर क्रिया को जनावे उसके बनाने की रीति है कि धातु के न चिह्न को ता करने से और स्त्रीलिङ्गमें ती करने से बनती है अथवा उसके आगे हुआ लगाने से बनती है यथा देखता देखताहुआ इत्यादि ॥

इति कृदन्तप्रकरणम् ॥

१ अव्यय अ=नहीं व्यय=नाश, क्षय, खर्च ।

अव्यय[1] उसे कहते हैं जिसमें लिङ्ग वचन कारक के कारण विकार नहीं होता है सदा एक सा रहता है अव्यय चार प्रकार के हैं क्रियाविशेषण, उभयान्वयी, शब्दयोगी, विस्मयादिबोधक देशभाषा में क्रियाविशेषण वारंवार आते हैं वे पांच सर्वनामों से बने हैं उनका एक कोष्ठ आगे दिया गया है यह वह कौन जौन तौन इन पांच सर्वनामों से स्थलवाचक, कालवाचक, प्रकारार्थक, परिमाणवाचक, क्रियाविशेषण-अव्यय बनते हैं ॥

	यह	वह	कौन	जौन	तौन	
१	अब	०	कब	जब	तब	कालवाचक
	०	०	कद	जद	तद	
२	यहां	वहां	कहां	जहां	तहां	स्थलवाचक
३	इधर	उधर	किधर	जिधर	तिधर	
४	यों	वों	क्यों	त्यों	ज्यों	गुणवाचक वा प्रकारार्थक
५	ऐसा	वैसा	कैसा	तैसा	जैसा	
६	इत्ता	उत्ता	कित्ता	जित्ता	तित्ता	परिमाणवाचक
७	इतना	उतना	कितना	जितना	तितना	

समुच्चय बोधक या उभयान्वयी अव्यय जो दो शब्दों या दो वाक्यों के बीच में आते हैं और प्रत्येक पद को भिन्न २ क्रिया सहित अन्वय का

---

[1] सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु । वचनेषु च सर्वेषु यन्नव्येति तदव्ययम् १ ॥

संयोग अथवा विभाग करते हैं उन्हें संयोजक और विभाजक अव्यय कहते हैं जैसे राम और कृष्ण आये ॥

संयोजक अव्यय

औ
और
एवं
अथ
कि
तो
फिर

यथा
यदि
जो
भी
पुनर
पुनः

विभाजक अव्यय

वा
अथवा
क्या
परंतु
किन्तु
पर
चाहे
जो

शब्दयोगी अव्यय जब नाम या सर्वनाम के संग न आवे तो क्रिया-विशेषण होते हैं जैसे नाम या सर्वनाम के साथ उदाहरण जिस लिये उस विना किस लिये इत्यादि गोपीसहित कृष्ण आये गोपालसमेत कृष्ण आये क्रिया विशेषण जैसे बाहर गया पीछे गया ॥

शब्दयोगी अव्यय ।

आगे पीछे भीतर ऊपर बाहर बराबर बदल बदले समीप बीच पास तले ऊपर विना साथ सहित समेत समक्ष लिये प्रभृति ॥

विस्मयादिबोधक या केवल प्रयोगी अव्यय जिन अव्ययों से कहनेवाले का दुःख हर्ष धिक्कार धन्यता इत्यादि के भाव या दशा का बोध होता है वे विस्मयादिबोधक हैं ॥

दुःख और धिक्कार बोधक बापरे, हाय हाय, अरे, रे, हा, धिक्, दूर दूर, चुप, छी, त्राहि, हर्ष और धन्यताबोधक जय जय, शाबाश, वाह वाह, धन्य धन्य, सम्मुखीकरणबोधक अय, ओ, अरे, अबे ॥

नीचे के अव्यय संस्कृत और भाषा में उपसर्ग कहाते हैं (उप=ऊपर + सृज्=सर्ग, सृज्=बनाना) उपसर्ग[1] प्रायः क्रियावाचक शब्द के पूर्वयुक्त होके क्रिया के भिन्न २ अर्थ का प्रकाश करते हैं वे एक से ले चार तक क्रिया के पूर्व में आते हैं यथा विहार, व्यवहार, सुव्यवहार, समभिव्यवहार उपसर्ग द्योतक हैं वाचक नहीं संयुक्त होकर दूसरे का अर्थ प्रकाश करते हैं असंयुक्त

---

[1] उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते । प्रहाराहारसंहारविहारपरिहारवत् ॥

रहने से निरर्थक रहते हैं उपसर्ग से धातु का अर्थ बदल जाता है यथा हार आहार, प्रहार संहार इत्यादि ॥

अब मैं अपना संक्षेप वृत्तका उल्लेख करताहूं ।

मेरे पितामह पण्डित रामप्रसाद जी जोकि पौराणिक और अपने समय में वैद्य शिरोमणि थे कान्यकुब्ज मुहल्ला मकरंदनगर शुक्लनटोला के निवासी थे और मेरे पिता श्रीपण्डित लालमणिजी पुराण, ज्योतिष, वैद्यक के ज्ञाता थे उन्होंने सरकारी नौकरी भी १४ वर्ष पर्य्यन्त की और समयानुसार मुझे सात वर्ष की अवस्था से १६ वर्ष पर्य्यन्त संस्कृत अध्ययन कराकर फ़ारसी और गणितविद्या पढ़ने को उपदेश किया उन्हीं के आशीर्वाद से मैंने कुछ सीख पाया जिसका फल आप सज्जनों की सेवा में अर्पण किया जाता है ॥

इस अभिधान के बनाने में निम्न कोषों और समाचार पत्रों की सहायता लीगई है ॥

फैलन साहेब का हिन्दुस्तानी अंगरेजी कोष ।
फार्ब साहेब का हिन्दुस्तानी अंगरेज़ी कोष ।
वेट साहेब का हिन्दी अंगरेज़ी कोष ।
पण्डित तारानाथ वाचस्पति का शब्दस्तोम महानिधि ।
वावन शिवराम आप्तेकृत संस्कृत अंगरेज़ी कोष ।
बाबू राधालाल साहेब का शब्दकोष ।

प्रतिष्ठित वंगवासी समाचार पत्र कलकत्ता और राजा रामपालसिंह कालेकांकर का हिन्दोस्तान नामक समाचार पत्रादि ।

इस कोष के मुद्रित कराने में मेरे चित्त में कई कारणों से नाना प्रकार के संकल्प विकल्प उत्पन्न होते थे पर श्रीकश्यपवंशोद्भव लखीमपुरनिवासी पण्डित बेचेलालात्मज मनीषिमाननीय पण्डित बदरीनारायण मिश्र हेडमास्टर नार्मलस्कूल लखनऊ की निर्भर सहायता और प्रेरणा से कटिबद्ध होकर इसको मुद्रित कराया ॥

सन्धिप्रकरण ॥

१ अक्षरों के मेलको सन्धि कहते हैं ॥

२ उनमें आगम और आदेशादि होते हैं ॥

३ पदके बीचमें ऊपर से जो अक्षर आता है वह आगम कहा जाता है ॥

४ जो किसी वर्णके स्थानमें दूसरा वर्ण बनाया जाताहै उसे आदेश कहते हैं॥

स्वरसन्धिः ॥

५ जब इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ से कोई असवर्ण * स्वर परे होता है तब उक्त वर्णों के स्थान में क्रम से य् व् र् ल् आदेश किये जाते हैं उदाहरण यथा—यदि अपि=यद्यपि। देवी आगता=देव्यागता। यहां इ ई को य् और मधु अत्र=मध्वत्र। वधू आगमन=वध्वागमन। यहां उ ऊ को व् और पितृ अर्थ=पित्रर्थ यहां ऋ को र् और ऌ इत्=लित् यहां ऌ को ल् आदेश होजाता है ॥

६ जब ए ऐ ओ औ के पीछे कोई स्वर आता है तब चारों वर्णों को क्रम से अय् आय् अव् आव् आदेश होजाते हैं। यथा—जे अति=जयति। शे आते=शयाते। विनै अक=विनायक। भो अन=भवन। पौ अक=पावक इत्यादि ॥

७ परन्तु जब पदके अन्त में ए ओ से परे अकार ह्रस्व आनेपर अकार का लोप होजाता है यथा—ते अत्र=तेऽत्र। पटो अत्र=पटोऽत्र इत्यादि ॥

८ जिस सञ्ज्ञा अर्थात् नाम के अन्त में विभक्ति हो उस (विभक्ति सहित) को पद कहते हैं ॥

९ अ इ उ ऋ ऌ ये ह्रस्व और आ ई ऊ ॠ ए ऐ ओ औ दीर्घ और अ ३ इ ३ उ ३ ऋ ३ ऌ ३ ए ३ ऐ ३ ओ ३ औ ३ ये प्लुत कहाते हैं एकमात्रिक को ह्रस्व द्विमात्रिकको दीर्घ और त्रिमात्रिक को प्लुत कहते हैं। मात्राका अर्थ परिमाण है ॥

१० पर गवादिकों के मध्य में अ का आगम होजाता है यथा—गो इन्द्रः=गो अ इन्द्रः यहां अकार का आगम हुआ=गवइन्द्रः यहां ओ का अव् आदेश होकर स्वरहीन वर्ण पर अक्षर में मिल गये और नियम ११ के अनुसार गवेन्द्रः सिद्ध हुआ। गो अग्रम्=गवाग्रम्। गोऽग्रम् नियम ७ के अनुसार हुआ।

---

* विजातीय, गैरजातिका ॥

११ अ आ से परे इ ई हो तो दोनों मिलके ए और अ आ से उ ऊ परे हो तो ओ और अ आ से ए ऐ परे हो तो ऐ और अ आ से परे ओ औ हो तो औ बनजाता है । यथा—उप + इन्द्र = उपेन्द्र । महा + उदय = महोदय । एक + एक = एकैक । महा + ऐश्वर्य्य = महैश्वर्य्य । जल + ओघ = जलौघ । महा + औदार्य्य = महौदार्य्य ॥

१२ अ आ अ ३ ये तीनों आपस में सवर्ण कहे जाते हैं इसी प्रकार इ ई इ ३ इत्यादि स्वर सवर्ण कहाते हैं ॥

१३ जब अ इ उ ऋ वर्णों से कोई इनकाही सवर्ण स्वर परे हो तो दोनों मिलके एक दीर्घ आदेश बनजाता है । यथा—शशअङ्क=शशांक । देव आलय=देवालय । क्षितिईश=क्षितीश । विधु उदय=विधूदय । स्वयम्भू उदय=स्वयम्भूदय । पितृ ऋण=पितृण ।

१४ जब पदके अन्त में ई या ऊ होवे इनके परे सवर्ण स्वर छोड़कर कोई दूसरा स्वर हो तो ये ह्रस्व हो जाते हैं । यथा—चक्री अत्र=चक्रिअत्र दूसरा रूप नियम ५ से चक्र्यत्र होता है ।

१५ जब आ से परे ऋ हो तो आ को अ भी होता है यथा—ब्रह्मा ऋषि= ब्रह्मऋषि दूसरारूप नियम १६ से ब्रह्मर्षि होताहै ॥

१६ अ आ से परे ऋ हो तो दोनों मिलके अर् और कभी आर् भी होजाता है । यथा—देवऋषि=देवर्षि महाऋषि=महर्षि शीतऋत=शीतार्त इत्यादि ॥

१७ अकार से परे लृ हो तो दोनों को अल् हो जाता है यथा—तव लृकारः= तवल्कारः । इति स्वरसन्धिः ॥

अथ प्रकृतिभावः ॥

प्रकृतिभावका अर्थ सन्धि न होना ज्योंका त्यों रहना ॥

१८ अमू वा अमी शब्द से परे स्वर हो तो सन्धि नहीं होगी । यथा—अमू आसाते । अमी अश्वाः यहाँ नियम ५ से ऊ को व् और ई को य् आदेश नहीं हुआ इत्यादि ॥

१९ किसी शब्द द्विवचनके अन्त में ई, ऊ, ए, स्वर हों और इनके आगे कोई स्वर आवे तो सन्धि नहीं होगी । यथा—अग्नीअत्र । पटूअत्र । माले आनय इत्यादि यहां अग्नी पटू माले द्विवचनान्त हैं ॥ इन शब्दों के स्वरों को य् व् अय् नियम ५ और ६ से आदेश नहीं हुए । परन्तु

मणीवादि शब्दों में नियम १३ के अनुसार सन्धि होगई । यथा—मणी इव=मणीव । दम्पतीइव=दम्पतीव इत्यादि ॥

२० आकार ओकार की निपात सञ्ज्ञा है इनमें और एक स्वर में सन्धि नहीं होती है । यथा—आ एवं मन्यसे । नो अत्रस्थातव्यम् । उ उत्तिष्ठ । इन उक्त शब्दों में निपात और एक स्वर होने से सन्धि नहीं हुई ॥

२१ जब किसी सम्बोधनान्त (दूरसे बुलाने) में स्वर हो तो वह प्लुत होजाता है और प्लुतको अगले स्वर से सन्धि नहीं होती । यथा—देवदत्त ३ एहि यज्ञदत्त ३ आगच्छ यहां अ ए मिलके ऐ और अ आ मिलकर आ नहीं हुआ । इति प्रकृतिभावः ॥

व्यञ्जनसन्धिः ॥

२२ स और त वर्गको शकार चवर्ग के परे क्रमसे शकार चवर्ग बनजाता है । यथा—कस्चरति=कश्चरति । कस्शूरः=कश्शूरः । तत् चित्रम्=तच्चित्रम् । राजन्जय=राजञ्जय इत्यादि ॥

२३ यदि पदके अन्त में त अथवा द परे श हो तो त द के स्थान में च और श के स्थान में छ आदेश हो जाता है । यथा—जगत् शरणम्=जगच्छरणम् । तत्शास्त्रम्=तच्छास्त्रम् । तत्शरीरम्=तच्छरीरम् ॥

२४ श से परे तवर्गको चवर्ग नहीं होता है यथा—विश्नः=विश्नः । प्रश्नः=प्रश्नः ॥

२५ स और तवर्ग के परे ष और टवर्ग हो तो क्रमसे ष और टवर्ग हो जाताहै । यथा—तत्टीका=तट्टीका । कस्टीकते=कष्टीकते । कस्षष्ठः=कष्षष्ठः । उत्डीनम्=उड्डीनम् । पेष्ता=पेष्टा । शिष्तः=शिष्टः ।

२६ यदि तवर्ग से ष परे हो तो टवर्ग न होगा । यथा—सन्षष्ठः यहां नियम २५ से न् को ण् नहीं बना ॥

२७ पदके अन्त में किसी वर्गका प्रथम द्वितीय तृतीय चतुर्थ वर्ण और य व ल से परे य म ङ ण न हों तो पूर्वोक्तवर्णों में से जो जिस वर्गका हो उसको उसीका पञ्चमवर्ण होजाता है । यथा—वाक्मयम्=वाङ्मयम् । चित्मयम्=चिन्मयम् । एतत् मुरारिः=एतन्मुरारिः । यहां क् और त् को उसीका पञ्चम ङ् और न् बनगया ॥

२८ तवर्ग से लकार परेहो तो त को ल होजाता है परन्तु नकार को लँ अनुनासिक बनजाता है यथा—तत्लीला=तल्लीला । महान्लाभः=महाल्ँलाभः॥

२९ वर्गके प्रथम तृतीय अक्षरों से किसी वर्गका पञ्चम अक्षर परे हो तो इनको भी अपने वर्गका पञ्चमवर्ण प्रायः बनजाता है । यथा–त्वक्मांसम्=त्वञ्मांसम् । दूसरारूप नियम ३० से त्वग्मांसम् । तत्मित्रम्=तन्मित्रम् ॥

३० च ट त क प को ज ड द् ग ब आदेश होजाते हैं यदि स्वर वा ह य व र वा वर्गका तृतीय चतुर्थ वर्ण परेहो तो । यथा–वाक्ईश्वरः=वागीश्वरः । धिक् लोभिनम्=धिग्लोभिनम् । वाक् दानम्=वाग्दानम् । जगत् ईशः=जगदीशः । महत् धनुः=महद्धनुः । अच् अन्तः=अजन्तः । षट् अत्र=षडत्र । ककुप् ऐन्द्री=ककुबैन्द्री इत्यादि ॥

३१ किसी वर्गके दूसरे तीसरे चौथे अक्षरों को उन २ का प्रथम अक्षर भी होजाता है यदि वर्गके प्रथम द्वितीयवर्ण वा श ष स परेहों तो । यथा–उद् थानम्=उत्थानम् । त्वग् तत्र=त्वक्तत्र इत्यादि ॥

३२ यदि किसी वर्ग के प्रथम द्वितीय तृतीय चतुर्थवर्ण से परे ह हो तो ह को उसी का चतुर्थ अक्षर होजावेगा पीछे नियम ३० के अनुसार कार्य होगा । यथा–वाक् ह्रासः=वाग्घ्रासः । त्वच् हीनः=त्वज्झीनः । षट् हसन्ति=षड्ढसन्ति । तत् हविः=तद्धविः । ककुप् ह्रासः=ककुब्भ्रासः ॥

३३ ह्रस्व स्वर से परे छ होवे तो उसके पूर्व च का आगम होता है अर्थात् च अधिक होजाता है ॥ परन्तु दीर्घस्वर से परे च होता और नहीं भी होता । यथा–परिछदः=परिच्छदः । वृक्षछाया=वृक्षच्छाया । लक्ष्मीच्छाया । लक्ष्मीछाया ।

३४ अनुस्वार से परे किसी वर्गका कोई अक्षरहो तो अनुस्वार को उसी वर्गका पञ्चमवर्ण बनजाता है । यथा–अंक=अङ्क । पंच=पञ्च । कंठ=कण्ठ । अंत=अन्त । अंध=अन्ध । अंब=अम्ब । सम्वत्=संवत् । इत्यादि भाषाके ज्ञाता अनुस्वारको अनुस्वारही लिखते हैं और संस्कृतज्ञ अनुस्वार के बदले वर्गका पञ्चमवर्ण काममें लाते हैं परन्तु लेख दोनों रीति से प्रचलित है ॥

३५ ह्रस्व स्वरसे परे ङ् ण् न् हों और इनके परे स्वर हो तो इनको द्वित्व होजाता है । यथा–प्रत्यङ् आत्मा=प्रत्यङ्ङात्मा । सुगण् इह=सुगण्णिह । धावन् अश्वः=धावन्नश्वः । इति व्यञ्जनसन्धिः ॥

अथ विसर्गसन्धिः ॥

३६ जब किसी वर्गसे त, थ, स, परे हों तो (ः) को स् आदेश होता है ।

799D

यथा—उन्नतः तरुः=उन्नतस्तरुः । नद्याः तीरम्=नद्यास्तीरम् । रामःथं वदति=रामस्थंवदति । यज्ञदत्तःसनोति=यज्ञदत्तस्सनोति ॥

३७ यदि विसर्ग से ट ठ ष परे हों तो विसर्गको ष् आदेश हो जाता है। यथा—धनुःटङ्कारः=धनुष्टङ्कारः । भग्नः ठक्कुरः=भग्नष्ठक्कुरः । कःषष्ठः=कष्षष्ठः ॥

३८ यदि विसर्ग से परे च, छ, श हों तो (ः) को श आदेश होता है । यथा—पूर्णःचन्द्रः=पूर्णश्चन्द्रः । रवेःछविः=रवेश्छविः । नरःशङ्कते=नरश्शङ्कते ॥

३९ यदि पदके मध्य में न् वा म् हो तो उनको अनुस्वार होजाता है जब कि वर्गोंका प्रथम द्वितीय तृतीय चतुर्थ और श ष स ह परे हों तो । यथा यशान्सि=यशांसि । किम् करोषि=किंकरोषि ॥

४० यदि पदके अन्तमें म् होवे उससे परे व्यञ्जनहो तो म् को अनुस्वार होजाताहै । यथा—हरिम् वन्दे=हरिंवन्दे । चन्द्रम् पश्यति=चन्द्रंपश्यति॥

४१ यदि अकार के नीचे विसर्ग हो और विसर्ग के परे ह्रस्व अकार होवे तो पूर्व अकार सहित विसर्ग को ओ आदेश होजाता है उस ओ में पूर्व वर्ण को मिला देते हैं ओ से परे अकार का लोप करके ऽ ऐसा रूप लिख देते हैं यथा—वेदः अधीतः=वेदोऽधीतः । नरः अयम्=नरोऽयम् ॥

४२ यदि अः के परे वर्गका तृतीय चतुर्थ वा ह, य, व, र, ल, न, म, हों तो अः को ओ बनजाता है यथा—चौरः हरति=चौरोहरति । नरः याति=नरोयाति । पण्डितःभवति=पण्डितोभवति इत्यादि ॥

४३ यदि अ आ को छोड़ किसी स्वर से परे विसर्ग हो और उसके परे कोई स्वर वा ह, य, व, र, ल, न, म, वा किसी वर्ग का तृतीय चतुर्थ वर्ण हो तो विसर्ग को र् हल बनजाता है, यथा—कविः अयम्=कविरयम् । शत्रुः हतः=शत्रुर्हतः । हरेःवचनम्=हरेर्वचनम् इत्यादि ॥

४४ यदि सः और एषः के परे अकार को छोड़ कोई स्वर वा व्यञ्जन वर्ण हो तो सः और एषः की विसर्ग का लोप हो जाता है और लोप होने पर सन्धि नहीं होती है। यथा—सः आगतः=स आगतः। सः इच्छति=सइच्छति । सः करोति=सकरोति । सःहसति=सहसति । एषः आयाति=एष आयाति । एषःशेते=एषशेते इत्यादि ॥

४५ यदि श्लोक वा ऋचाका पाद ¼ चौथाई पूर्ण करना हो तो सन्धि हो जावेगी ॥

यथा-सःएषदाशरथीरामः=सैषदाशरथीरामः। सःएषराजा युधिष्ठिरः=सैषराजायुधिष्ठिरः। सः एषकर्णोमहात्यागी=सैषकर्णोमहात्यागी। सः एष भीमो महाबलः=सैषभीमो महाबलः। यहां विसर्ग का लोप होने पर भी सन्धि होगई ॥

४६ अ से परे विसर्ग का लोप हो जाता है जब कि अ को छोड़ कोई अन्य स्वर परे हो। यथा-देवः आगच्छति=देवआगच्छति। तथा आ से आगे विसर्ग का भी लोप होजाता है यदि कोई स्वर वा वर्गका तृतीय चतुर्थ पञ्चम वा ह य व र ल परे हों। यथा-मनुष्याः निवसन्ति=मनुष्या निवसन्ति। वाताःवान्ति=वातावान्ति इत्यादि ॥

४७ यदि अ इ उ के नीचे विसर्ग हो और विसर्ग के परे र हो तो विसर्ग को हल र् आदेश होकर लोप हो जाता है और पूर्व स्वर दीर्घ हो जाता है यथा-पुनःरमते=पुनर्रमते=पुनारमते। शुक्तिःरूप्यात्मनाभाति=शुक्तिर्रूप=शुक्तीरूप्यात्मनाभाति इत्यादि ॥

४८ यदि स्वर वा वर्गका तृतीय चतुर्थ पञ्चम वर्ण वा य र ल व ह भोः पद के परे होवें तो भोः के नीचे विसर्ग का लोप होजाता है लोप होने पर सन्धि नहीं होती है ॥

यथा-भोःगदाधर=भोगदाधर। भोःअम्बरीष=भो अम्बरीष इत्यादि ॥

४९ कभी स्वर के परे भोः शब्द की विसर्ग को य् भी बन जाता है यथा-भोः ईशान=भोयीशान। भोः उमापते=भोयुमापते।

इति विसर्गसन्धिः ॥

(णत्वविधान)

५० ऋ ॠ र ष इनके परे न को ण आदेश होता है। यथा-नृ नाम्=नृणाम्। मातृनाम्=मातृणाम्। सर्वेन=सर्वेण। पूष्ने=पूष्णे। इत्यादि यदि स्वर वर्ण वा कवर्ग पवर्ग वा य, व, ह और अनुस्वार मध्य में व्यवधान अर्थात् रोकनेवाले हों तो भी न को ण बनजावेगा यथा-मूर्खेन=मूर्खेण। दर्पेन=दर्पेण। मृगेन=मृगेण। पूर्वोक्त वर्णों को छोड़ और वर्णों के व्यवधान होनेसे न को ण कभी न होगा। यथा-अर्चना। दृढेन। अर्थेन इत्यादि में न को ण नहीं हुआ।

५१ पदके अन्त में न् हो तो ण कभी न होगा। यथा-हरीन्। गुरून्। इतरान्। इत्यादि ॥

(षत्वविधान)

५२ अ आ भिन्न स्वर और क, र, ल, के परे प्रत्यय का जो सकार आता है उसके स्थान में मूर्धन्य षकार होजाता है । यथा-मुनिसु=मुनिषु । साधुसु=साधुषु । भ्रातृसु=भ्रातृषु । सर्वेसाम्=सर्वेषाम् इत्यादि अनुस्वार विसर्ग मध्य में रहने से भी दन्त्य स के स्थान में मूर्धन्य ष हो जाता है यथा-धनूंसि=धनूंषि । हवींसि=हवींषि । धनुःसु=धनुःषु । आशीःसु=आशीःषु इत्यादि ॥

५३ संहितैकपदे नित्या, नित्या धातूपसर्गयोः । नित्या समासे वाक्ये तु, साविवक्षामपेक्षते ॥

(अर्थ)

सन्धि एक पद में और धातु उपसर्गसमास में सदैव होती है और जब पद मिलकर वाक्य बनता है तब वक्ता के अधीन है ॥

(इति सन्धिव्याख्यानम्)

विभक्तिहीन शब्दों को नाम कहते हैं वही नाम विभक्ति युक्त होने से पद कहाता है ॥

पदों के मेल को समास कहते हैं ।

समास ६ प्रकार का है ।

१ अव्ययीभाव २ तत्पुरुष ३ द्वन्द्व ४ बहुव्रीहि ५ कर्म्मधारय ६ द्विगु ॥

१ अव्ययीभाव उसे कहते हैं जिसमें समीप, आदर, उल्लङ्घना अभाव अर्थ पाये जावें और कई एक पदों के मेल से समास होता है उन पदों में प्रथम पद अव्यय होता है । यथा-निर्दोष । यथाशक्ति । उपकूल । निर्विष । आसमुद्र । प्रतिगृह । सजल ॥

२ तत्पुरुष उसे कहते हैं जिसके पूर्वपद में द्वितीयादि दे सप्तमी पर्यन्त कोई विभक्ति युक्तहो और परे के पद में प्रथमाविभक्तिहो । यथा-घर गया । लोभजित । धनलोभी । सर्पभय । राजपुत्र । पुरुषोत्तम इन शब्दों में द्वितीयादि दे सप्तमी तक की विभक्तियुक्त हैं ॥

३ द्वन्द्वसमास उसे कहते हैं जिसमें परस्पर पद विशेष्य विशेषण न हों पर प्रथमाविभक्ति युक्त अनेक पद हों इस समास के मध्य में संस्कृत में च अक्षर और भाषा में च के स्थान में और आता है पर समास बनने

से उसका लोप होजाता है । यथा—राम लक्ष्मण । माता पिता इनके मध्य में और शब्द का लोप होगया ॥

४ बहुव्रीहि समास उसे कहते हैं जिसमें कई पदों से समास बनायाजावे पर पदोंका अर्थ ठीक २ न पाया जावे उनसे दूसरी वस्तु वा व्यक्ति का अर्थ समझा जावे बहुव्रीहि में संस्कृत में येन, यस्य-पद आते हैं भाषा में यद् का वाचक जिस शब्द का रूप अवश्य आता है यथा—दीर्घबाहू इस स्थल में बड़ी दो भुजा न समझी जावेंगी बल्कि बड़ी हैं दो भुजा जिस पुरुषकी वह पुरुष समझा जावेगा अर्थात् पुरुष दो भुजावाला । चन्द्रशेखर । त्रिशूलपाणि । चक्रपाणि । जलज । वंशीधर । निर्मलजला । ये समासान्त पद अपना अर्थ त्याग विशेष अर्थ बताते हैं इससे दूसरे के विशेषण होते हैं ॥

५ कर्म्मधारय समास उसे कहते हैं जो विशेष्य और विशेषण के योगसे बने मुख्य संज्ञाको विशेष्य और उसके गुण धर्म्म को बतावे वह विशेषण है यथा—उन्नततरु । नीलकमल । श्वेतवस्त्र । सुन्दरपुरुष । पूर्वपद विशेषण और परे का पद विशेष्य से मिलके कर्म्मधारय बना ॥

६ द्विगु समास उसे कहते हैं जिसमें पूर्वपद संख्यावाचक परे का पद समाहार अर्थात् अनेक वस्तुओं का बोधकहो यथा—त्रिभुवन । पञ्चपात्र । त्रिनेत्र । चतुर्युग । षट्ऋतु ॥

इति समासः ॥

ॐ सच्चिदानन्दमूर्तये नमः ।

श्रीधरभाषाकोष ।

अ देवनागरी वर्णमाला का प्रथम अक्षर, जिस शब्द के आदि में आताहै, उसका अर्थ पलट जाता है, जैसे धर्म से अधर्म और शोक से अशोक और जब शब्द का प्रथम अक्षर स्वर होता है तो अ के स्थान में अन् होजाता है और न् शब्द के आदि स्वर में मिला देते हैं जैसे अन् + अंत=अनंत, अन् + एक=अनेक इत्यादि ।

सं० अ (अव्=बचाना) पु०रक्षक, विष्णु, ब्रह्मा, शिव, पिता, गुरू, वायु, कृपा, समर्थ, अधिपति, मालिक ।

प्रा०अऊत } (सं० अपुत्र, अ=नहीं,
ऊत } पुत्र=बेटा) पु० जिसके लड़काबाला न हो, निर्वंश, २ अनब्याहा, मूर्ख, जाहिल ।

सं० अंश (अंश्=बांटना) भा० पु० भाग, बांट, बांटा, टुकड़ा, २ हिस्सा, दर्जा, अंश, भिन्न में उसे कहते हैं कि एक पूरी चीज़ के बराबर टुकड़े करके उसमें से जितने लेवें उसे शुमारकुनिन्दा कहतेहैं ।

सं० अंशक (अंश्+अक) क०पु० बांटनेवाला, हिस्सेदार ।

सं० अंशांश (अंश+अंश) अंश का अंश, भागका भाग, हिस्सा दर हिस्सा ।

सं० अंशी (अंश+ई) क०पु० बटाऊ, बांटनेवाला, बटवैया, साझी, हिस्सेदार ।

सं० अंशु (अंश्+उ) पु० सूर्य की किरन, २तेज, उजाला, प्रकाश ।

सं० अंशुक (अंशु + क) पु० वस्त्र, रेशमी वस्त्र, टसर, रेशम ।

सं०अंशुजाल (अंशु=किरण, जाल=समूह) पु०किरन समूह, शुआयें ।

सं० अंशुधर (अंशु=किरन, धर=धरनेवाला) क० पु० किरनधारी, सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, दीप, दिया, देवता, ब्रह्मा, प्रतापी ।

सं०अंशुमान् क०पु० सूर्य, चन्द्रमा, नाम सूर्यवंशी राजाका असमंजस का पुत्र सगर राजाका पोता ।

सं०अंशुमालिन्
अंशुमाली (अंशु=किरन, माला=पांति) क०पु० सूर्य, आफ़ताब ।

प्रा०अंसनि (सं०अंश, अंस्=बांटना) पु० किरन, २ भाग, ३ कंधे ।

प्रा० अंसल (सं० अंशल=बाँटनेवाला) गु० साझी, हिस्सेदार ।

सं०अंहति (अंह=जाना + ति) भा० स्त्री० त्याग, दान, २ रोग ।

सं०अंहस् (अंह + अस्) पु० पाप, स्वधर्म त्याग, गुनाह, दुःख ।

सं०अंह्रि ना०पु० चरण, पांव, हाऊबेर ।

सं०अकच्छ (अ=नहीं, कच्=बांधना) गु० नंगा, मेहरा, लंपट, हरैला ।

प्रा० अकड़ (अकड़ना) भा० स्त्री० ऐंठ, टेढ़ापन, बांकापन, शेख़ी ।

प्रा० अकड़बाज़ बोल० अकड़ैत, छैला, बांका, छैलचिकनियां ।

प्रा० अकड़मकड़ बोल० ऐंठ कर चलना, घमंड, अभिमान, शेख़ी ।

प्रा० अकड़ना (सं०आकुंचन, आ=उलटा, कुञ्च=सिमटना) क्रि०अ० ऐंठना, टेढ़ाहोना, २ दुखना, दर्द करना, ३ कड़ा होना ।

प्रा०अकड़ैत (अकड़ना) गु० बांका, छैला, घमंडी, अभिमानी, शेख़ीबाज़ ।

सं० अकण्टक (अ=नहीं + कण्टक=कांटा) गु० शत्रुहीन, निरुपाधि, चैनसे, बेख़तर, बेख़रख़शा ।

प्रा०अकथ (सं०अकथ्य, अ=नहीं, कथ्=कहना) गु० जो कहनेमें न आवे, जिसका वर्णन न होसके ।

सं० अकथनीय (अ + कथ् + अनीय) कर्म०जो कहने योग्य न हो, बयानसे बाहर ।

प्रा० अकनि (सं० आकर्ण्य, आ=चारोंओरसे, कर्ण=पैठना) धा० सा० अव्य० सुनकर ।

सं० अकम्पन (अ=नहीं, कम्प्=कांपना) गु० दृढ़, कठोर, मज़बूत, पु० राक्षसविशेष ।

प्रा० अकरन (सं०अ + करण, कृ=करना) अयोग्य, बिना हथियार, बेसबब ।

प्रा० अकरा (सं० अनर्घ, अन्=नहीं, अर्घ=मोल होना) गु० महँगा, बहुत मोलका, बढ़िया, बहुमूल्य, क़ीमती ।

सं० अकर्म (अ=नहीं वा बुरा, कर्म=काम) पु० बुराकाम, पाप, अधर्म, अपराध, बुराई, कुकर्म, कारबद ।

सं० अकर्मक (अ=नहीं, कर्म=कर्मकारक) गु० ऐसी क्रिया जिसमें कर्म न हो जैसे आना, रहना आदि, फ़ेल लाज़िमी ।

सं० अकल (अ + कला) गु० अङ्गहीन, परमात्मा ।

प्रा० अंकवार, **अँकवार** स्त्री० गोद, गोदी, बग़ल, कांख, २ छाती ।

प्रा० अँकवारभरना बोल० गले लगाना, गोदमें लेना, मिलना ।

अ० अकस (अक्स=उलटा) परछाईं, वैर, विरोध, अदावत ।

प्रा०अकसर गु० अकेला, २ तनहा, बहुधा ।

सं०अकस्मात् (अ=नहीं, कस्मात्=किससे वा किसकारण) क्रि०वि०, अचानक, अनचिते, अकारण, एकाएक, संयोग से, दैवात्, इत्तिफ़ाक़न् ।

प्रा० अकाज (सं० अकार्य्य, अ=नहीं, कार्य्य=काम) कर्म० पु० बिगाड़,हानि,घटी,घाटा, अनरथ, नुक़सान ।

सं० अकाण्ड (अ + काण्ड) गु० कुसमय,बेवक़्त,अचानक, बेफ़स्ल ।

सं० अकापट्य भा० पु० निश्छलता, ईमानदारी, बेमक्र ।

प्रा० अकाम (सं० अकर्म्म वा अकार्य्य)वृथा, निष्फल, बेफ़ायदे, २ इच्छारहित, ३ कामहीन, ४ बे मुहब्बत, बे उल्फ़त ।

सं० अकाल (अ=नहीं वा बुरा, काल=समय) पु० महँगी, काल, कुसमय,दुकाल, दुर्भिक्ष, क़हत्, २ गु०बिनसमयका, बेऋतु,बेफ़स्ल ।

सं० अकिञ्चन गु० निर्धन, तिहीदस्त, मुफ़लिस ।

प्रा० अकीरति (अ + कीर्ति, कृत=गाना) भा०स्त्री०अयश,बदनामी।

प्रा० अकुण्ठा (सं० अ + कुण्ठ=गुठिला) गु० नाशहीन, तीक्ष्ण, तेज़, पैना ।

सं०अकुल गु०कुलटुट,नीच,२अशिव शिव, बे हसब नसब ।

प्रा० अकुलाना (सं०आकुल) क्रि० अ०, घबराना, दुखीहोना, व्याकुलहोना,थकना, मुज़्तरिब होना, परेशान होना ।

सं० अकुलीन (अ=नहीं, कुलीन=अच्छेघरानेका) गु० नीच,कुजात, कुलहीन, कमीना ।

प्रा० अकेला (सं०एक) गु०अकेला, केवल, निराला, तनहा ।

सं० अक्रूर (अ=नहीं, क्रूर=कठोर) गु०कोमलस्वभाव, नम्र, नर्मदिल, पु० श्रीकृष्णका चचा और मित्र ।

सं० अक्ष (अक्ष्=फैलना)पु०पहिया, २ धुरी वा कील, ३ पांसा, ४ जुआ, ५ गाड़ी, रथ,६ आंख, ७ रुद्राक्ष,८ बहेड़ा,९सर्प, १०गरुड़, ११ रावणका पुत्र, १२ आत्मा ।

सं०अक्षत (अ=नहीं,क्षत=टूटाहुआ क्षण=नाशकरना, तोड़ना)गु०पु०

बिनटूटा चावल जो पूजाके काममें आता है, बिनाटूटाहुआ ।

सं० अक्षय (अ=नहीं, क्षय=नाश, क्षि=नाशहोना) गु० अमर, चिरंजीव, स्थिर, लाज़वाल ।

सं० अक्षर (अ=नहीं, क्षर=नाश होना) पु० अकारादिवर्ण, आखर, हर्फ़, २ ब्रह्म, गु० जिसका नाश न हो, अविनाशी ।

सं० अक्षांश(अक्ष=पृथ्वी की कील, अंश=भाग) पु०पृथ्वीके उत्तर वा दक्षिण केन्द्रतक नब्बे नब्बे अंशपर रेखा, अर्ज़ुलबलद, लैटीच्यूड ।

सं० अक्षि (अक्ष्=फैलना) स्त्री० आंख, चश्म ।

सं० अक्षोभ (अ + क्षुभ्=डरना) गु०निर्भय, बेख़ौफ़ ।

सं० अक्षौहिणी (अक्ष=रथ, ऊहिणी=भीड़,ऊह=तर्ककरना) स्त्री० सेना जिसमें १०९३५० पैदल, ६५६१० घोड़े, २१८७० रथ, २७८७० हाथी हों ।

प्रा० अखड़ गु० गँवार, अनसीखा, अनघड़,जंगली ।

सं० अखण्ड (अ=नहीं, खण्ड=टुकड़ा) गु०पूरा,सारा,सब, सम्पूर्ण, तमाम ।

सं० अखण्डित (अ=नहीं, खण्डित =टूटाहुआ) गु० पूरा, बिनटूटा, सारा, तमाम ।

प्रा० अखाड़ा अखारा } पु० मल्लों के कुश्ती करनेकीजगह,सभा।

सं० अखिल (अ=नहीं, खिल=नाश, खिल=कण, कण=लेना) गु० पूरा,सारा,सब,सम्पूर्ण,कुल ।

प्रा० अखैवृक्ष अक्षैवृक्ष } (सं० अक्षयवृक्ष, अक्षय=अमर, वृक्ष =पेड़)पु०ऐसा पेड़ जिसका कभी नाश न हो, दरख़्त लाज़वाल ।

सं० अग (अ=नहीं,गम्=चलना वा जाना) पु०पहाड़, २ वृक्ष ।

सं० अगणित (अ=नहीं,गण=गिनना) गु० अनगिनत, अपार, असंख्यात, बेशुमार ।

सं० अगद (अ+गद=बोलना) गु० गूंगा,२नीरोग,पु०ओषधि वा दवा।

प्रा० अगम (सं० अगम्य, अ=नहीं, गम्य=जानेयोग्य, गम्=जाना)गु० नहीं जाने योग्य, विकट, औघट, अपहुँच, दुर्गम, २ गहरा, अथाह ।

प्रा० अगर (सं० अगुरु, अ=नहीं, गुरु=भारी) पु०एकप्रकारकी सुगंधित लकड़ी ।

प्रा० अगरवाला (अगरोहा एक जगहका नाम जो दिल्लीके पश्चिम की ओर है) पु० बनियोंकी एक जाति जो अगरोहा से निकले हैं ।

प्रा० अगला (अग्रय, अग्र=आगे) गु० आगेका, पहलेका, पहला, २ मुखिया, प्रधान ।

प्रा० अगलौन गु० गिनती में पहला, अव्वल ।

प्रा०अगवा
अगुवा (सं० अग्रम वा अग्रगामी, अग्र=आगे, गम्=जाना) गु०आगे चलनेवाला, २ मार्ग बतलानेवाला पु० दूत, अगवानी ।

सं० अगस्ति (अग=पहाड़ अस्=फेंकना) पु० एक ऋषि का नाम जो मित्रावरुणका पुत्र था जिसने विन्ध्याचलपहाड़को गिरादिया था कहते हैं कि यह ऋषि घड़े से जन्मा था और जब समुद्रपर कोप किया था तो सारे समुद्र को पी गया, एक वृक्ष का नाम, ३ एक तारे का नाम है ।

सं०अगस्त्य (अग=पहाड़, विंध्याचल, स्त्यै=शब्दकराना) पु० अगस्ति ऋषि ।

प्रा०अगहन (सं०अग्रहायण, अग्र=पहले, हायन=बरस, हा=छोड़ना अर्थात् पुरानी रीति से बरस का पहला महीना) पु० मंगसर, मृगशिर, बरसका आठवां महीना ।

प्रा०अगहुड़ गु० अगला, अव्वल ।

प्रा०अगाऊ (सं०अग्र=आगे) क्रि० वि०अगाड़ी,आगे, पहले, सामने ।

प्रा० अगाऊजाना बोल० सामने जाना,किसी के मिलनेको जाना ।

प्रा० अगाड़ी (सं० अग्र=आगे) क्रि० वि० आगे, सामने और बढ़के, स्त्री०रस्सी जिससे घोड़े के अगले पैर बांधते हैं, २ अगला हिस्सा, अगवाड़ा, आगा ।

प्रा०अगाड़ी पिछाड़ीलगाना बोल० रोकना,बन्दकरना (घोड़ेको),घोड़े के अगले पिछले पैर बांधना ।

प्रा० अगाड़ीमारना बोल० मोहरा मारना, वैरी की अगली सेना को हराना ।

सं०अगाध (अ=नहीं, गाध=थाह, जगह, गाध=ठहराना) गु० अथाह, बहुतही गहरा, बेपाँयाँ ।

प्रा० अगिया पु० एक पक्षी वा कीड़ा का नाम ।

सं० अगुण (अ=नहीं, गुण=हुनर, विद्या, वा रज, तम, सत ये तीन गुण) गु०निर्गुणी, बेहुनर, २ निर्गुण, ब्रह्म ।

सं०अगेन्द्र (अग=पहाड़+इन्द्र=राजा, पु० सुमेरु, २ हिमालय ।

सं०अगोचर (अ=नहीं, गोचर=इन्द्रियों केसामने, गो=इन्द्री, चर=चलना) जो देखने में नहीं आवे, अदृश्य, अलख, गायब ।

प्रा०अगौनी (सं० अग्रगमन, अग्र=आगे, गमन=जाना) स्त्री० मिलाप के लिये आगेजाना,पेशवाईकरना।

प्रा० अगौनीकरना बोल० दुलहा के मिलने के लिये सामने जाना,

बरात के सामने जाना, मिलनी करना ।

सं० अग्नि (अगि=जाना जो ऊपर जाती है) स्त्री०आग,आगी, अनल, २ दक्षिण पूर्वकोनका दिक्पाल ।

सं०अग्निकोण (अग्नि=आग,कोन =खूंट वा गोशा) स्त्री०पूर्व दक्षिण के बीच का कोन जिसका स्वामी आग है ।

सं० अग्निक्रीड़ा (अग्नि+क्रीड़ा= खेलना) भा०स्त्री०आतशबाज़ी ।

सं०अग्निचूर्ण (अग्नि+चूर्ण=पीसना) र्म० पु० बारूद ।

सं० अग्निबाण (अग्नि+बाण= तीर) पु० आगका तीर ।

सं०अग्निसंस्कार(अग्नि+संस्कार =पवित्रता) पु० मुर्दे को आगदेना, जलाना, दाग देना ।

सं० अग्निहोत्री (अग्नि+होत्री= होम करनेवाला) क० पु० अग्निपूजक, होम करनेवाला,सदा आग रखनेवाला, आतशपरस्त ।

सं० अग्र (अगि=जाना) गु०आगे, पहले, मुख्य, प्रधान, मुखिया, पहला ।

सं०अग्रगण्य (अग्र=आगे, गण्य =गिनाजाय,गण=गिनना) र्म० सबसे पहला और बहुत अच्छा गिनाजाय,प्रधान, मुखिया,मुख्य।

सं०अग्रगामी (अग्र=आगे, गामी= चलनेवाला, गम्=जाना) क०पु० सबसे आगे चलनेवाला, अगुआ, सरदार, प्रधान, नायक, मुखिया, पेशवा ।

सं० अग्रज (अग्र=आगे, जन्=पैदा होना) पु० बड़ाभाई ।

सं०अग्रदूत (अग्र=आगे,दु=चलना दूत=चलनेवाला)क०पु० नक़ीब, जो आगे सवारीके तारीफ़ करता चलता है ।

सं०अग्रसर (अग्र=आगे, सृ=जाना) गु० आगे चलनेवाला, अग्रगामी पु०सरदार ।

सं०अग्रिम गु० अगौढ़ी, पेशगी ।

सं०अघ (अघ=पापकरना) पु० पाप, अपराध, अधर्म, गुनाह, २ दोष, चूक, दुःख ।

सं०अघखानि (अघ=पाप, खानि= उत्पत्तिस्थान, खन्=खोदना) गु० पाप की खानि, पापी, गुनहगार ।

सं० अघटित (अ+घटित, घट= होना वा चेष्टा करना) गु० अयोग्य, अनहोनी, नाशुदनी, ग़ैरमुमकिन ।

सं० अघमर्षण (अघ=पाप, मर्षण मृप=छुटाना) भा० पु० पापनाशक मंत्र जो सन्ध्योपासन में पढ़ा जाता है ।

प्रा० अघाई (अघाना) भा० स्त्री०

पेटभराव, तृप्ति, आसूदगी ।

प्रा० अघाना क्रि० अ० पेट भर जाना, छकना, अफरना, भरपूर होना, तृप्त होना, आसूदा होना ।

सं० अघासुर (अघ=पाप, असुर=राक्षस) पु० एक राक्षसका नाम जिसको कंसने श्रीकृष्ण के मारने के लिये भेजाथा ।

सं०अघोर (अ=नहीं, घोर=डरावना अर्थात् शांत वा जिससे अधिक कोई डरावना नहीं) पु० शिव, गु० डरावना, भयानक ।

प्रा०अघोरी (सं० अघोर) गु० अघोरपंथी, जो सब चीज़ बल्कि मैला और मुर्दा भी खाते हैं ।

सं०अंक (अङ्क=चिह्न करना, गिनना) पु० आंक, चिह्न, संख्या, संकेत, नम्बर, २ गोद ।

प्रा०अंकना (सं० अङ्क=चिह्नकरना क्रि० स० छापना, मोहर देना, लिखना, २ मोलकरना, जांचना।

सं० अंकविद्या(अङ्क=संख्या, विद्या) स्त्री० गणितविद्या, हिसाब ।

प्रा० अंकाना (सं० अङ्क=चिह्न करना) क्रि०स० मोल ठहराना, जचाना, परखाना ।

सं० अंकित (अङ्क=चिह्न करना) कर्म० चिह्न कियाहुआ, आंका हुआ, मोल ठहराया हुआ, जांचा हुआ, लिखाहुआ ।

सं० अंकुर (अङ्क=चिह्न करना वा जाना) पु० अंखुआ, आंकुर, कोपल, गाछी, फुनगी ।

सं०अंकुश (अंक=चिह्नकरना)पु० लोहे का कांटा जिससे हाथी को चलाते हैं, आँकुश, आंकड़ी ।

प्रा० अँकोर पु० घूस, रिशवत ।

प्रा० अँखिया (अक्षि) स्त्री० ब० व० आंखें ।

सं० अङ्ग (अङ्ग=चिह्न करना) पु० शरीर, देह, शरीर का एक भाग, अवयव, अज़ो, २ देशविशेष वा भागलपुर ।

सं०अंगजनित (अंग=शरीर+ जनित=उत्पन्न, जन्=पैदाहोना) क०पु० देहसे पैदा ।

प्रा० अङ्गड़ाई (सं०अङ्ग) भा० स्त्री० देह मरोड़ना, जम्हाई ।

सं० अङ्गण } (अगि=जाना) पु०
अङ्गन } आँगन, अँगनाई, चौक चौगान, आँगन, सहन ।

सं०अङ्गद (अङ्ग=शरीर, दै=शुद्धकरना, वा, दा=देना) पु० बहूँटा, भुजबन्द, बाजूबन्द, २ वालि वानरका बेटा ।

सं०अङ्गना (अंग=शरीर, अर्थात् सुन्दर शरीरवाली) स्त्री०सुन्दरस्त्री, सुन्दरी, कामिनी, स्त्री, लुगाई ।

प्रा०अङ्गना, पु० } (सं० अंगन)
अङ्गनाई, स्त्री० } आँगन, चौक ।

सं०अङ्गन्यास (अंग=शरीर,न्यास=धरना) भा० पु० मंत्र पढ़कर अंग स्पर्श करना ।

सं०अङ्गपक्ष पु० सहायक,मददगार।

प्रा०अङ्गरखा (सं० अंगरक्षा, अंग=शरीर, रक्षा=बचाना) पु०चपकन, पहनने का एक कपड़ा ।

प्रा० अङ्गरी स्त्री० कवच, वखतर ।

प्रा०अंगुली
अंगुरी
अंगुलि (सं० अंगुली, अंग=चिह्नकरना, गिनना) स्त्री० हाथका वा पांव का अंग, हाथ पैर की अंगुली ।

प्रा०अंगुली काटना बोल० अचम्भे में होना, अचम्भा करना ।

सं०अङ्गव (अंग+अव=रक्षाकरना) पु० मेवा ।

प्रा०अङ्गवनिहारा गु० सहनेवाला, बरदाश्त करनेवाला ।

प्रा०अङ्गा (सं० अंग=शरीर) पु० अंगरखा, कुरता, कुरती ।

सं० अङ्गाङ्गीभाव भा० पु० शारीरक सम्बन्ध, बाहमी मदद ।

सं०अङ्गार (अंग=चिह्न करना) पु० अंगारा, जलताहुआ कोयला ।

प्रा०अङ्गारा (सं० अंगार) पु० जलता हुआ कोयला, अंगार ।

प्रा० अङ्गारोंपरलोटना बोल० डाहसे जलना,दुखपाना,कलपना।

प्रा०अङ्गिया (सं० अंगिका, अंग=शरीर) स्त्री० चोली, कांचुली, कंचुकी ।

सं०अङ्गिरा (अंगिरस, अगि=जाना) पु० एक ऋषि का नाम जो ब्रह्मा के मुँह से पैदा हुआ ।

सं० अङ्गी (अंग+ई) क० पु०शरीर वाला ।

सं०अङ्गीकार (अंग=स्वीकार, कृ=करना) भा०पु०मानना,स्वीकार, अंगेज़ना, क़बूल, मंज़ूर ।

प्रा० अङ्गीकारकरना बोल० मानना, स्वीकार करना, अंगेज़ना, मंज़ूर करना ।

प्रा०अङ्गीठी
अङ्गेठी स्त्री० आग रखने का बर्तन, आगकी बरोसी, कांगड़ी ।

सं० अंगुल (अङ्ग=चिह्न करना) पु० आठ जौ का नाप, एक गिरह का तीसरा हिस्सा ।

सं० अंगुलित्राण (अंगुलि+त्राण रक्षा) हाथका मोज़ा, दस्ताना ।

प्रा० अंगूठा (सं० अंगुष्ठ, अंगु=हाथ, स्था=ठहरना) पु० मोटी अंगुली ।

प्रा० अंगूठी (सं० अंगुलीय) स्त्री० मुँदरी, छल्ला, अंगुरी में पहनमे का गहना ।

प्रा० अङ्गोछा (सं० अङ्ग=शरीर, उञ्छ=बांधना वा अङ्ग पोंछना)पु० गमछा, शरीर पोंछने का कपड़ा ।

सं० अंघ्रि (अघि=जाना) पु० पांव,

पैर, २ वृक्ष की जड़ ।

सं० **अच** पु० स्वर (अच=गुप्तकरना) छिपाकर करना ।

प्रा० **अचगरी** स्त्री० अनुचित काम, धींगाधींगी, अत्याचार ।

सं० **अचञ्चल** (अ=नहीं + चञ्चल=चपल) गु० स्थिर, क़ायम ।

प्रा० **अचंभा** } (सं० आश्चर्य) पु०
अचरज } आश्चर्य, विस्मय, ताज्जुब ।

सं० **अचर** (अ=नहीं, चर=चलना) गु० नहीं चलनेवाला, अचल, अटल ।

सं० **अचल** (अ=नहीं, चल=चलना) गु० नहीं चलनेवाला, ठहराहुआ, अटल, पु० पहाड़, पर्वत ।

सं० **अचला** स्त्री० पृथ्वी, धरती, भूमि, ज़मीन ।

प्रा० **अचानक** } (सं० अकस्मात्)
अचानचक } क्रि० वि० एकाएकी, संयोग से, अनुचित, बिन कारण, दैवयोग से, दफ़अतन् ।

प्रा० **अचाना** } (सं० आचमन, आ,
अचवाना } चमु=खाना) क्रि० स० खाने के पीछे मुँह साफ़ करना, आचमन करना ।

प्रा० **अचार** (सं० आचार, आ, चर=चलना) भा० पु० चलन, चालचलन, रीतिभांति, व्यवहार, धर्मव्यवहार, तरीक़ा ।

सं० **अचिन्त** (अ=नहीं, चिति=सोचना) गु० अचेत, बेसुध, निर्बुद्धि ।

सं० **अचिर** (अ=नहीं + चिर=देर) तुरन्त, जल्द ।

प्रा० **अचीता** (सं० अ=नहीं, चित=सोचना) गु० बिनचाहा, २ (सं० अ=नहीं, चित्र, बेल बूटा वा तसवीर) बिन तसवीर वा बेल बूटों के ।

प्रा० **अचेत** (सं० अचेतस्, अ=नहीं, चित=सोचना) गु० बेसुध, निर्बुद्धि, सुन, मूर्च्छित, बेहोश ।

प्रा० **अचेत होना** बोल० बेसुध होना, सुन होजाना, मूर्च्छा खाना, मूर्च्छित होना ।

प्रा० **अचैन** (सं० अ=नहीं, चैन=सुख) गु० बेकल, व्याकुल, दुखी, बे आराम ।

सं० **अच्युत** (अ=नहीं, च्युत=गिरना) गु० ठहरा हुआ, अटल, अचल, नित्य, अमर, स्थिर, पु० विष्णु का नाम ।

प्रा० **अच्छना** } (सं० अस्=होना)
अछना } क्रि० अ० जीता रहना, होना, रहना ।

जैसे "तुमहिअछतअसहालहमारी"
"सुखतजिभइउँशोकअधिकारी"
तुलसीकृत रामायण ।

"अच्छतपतिभभूतिकिनलाई"
" कहो कहांकी रीति चलाई "
प्रेमसागर ।

प्रा० **अच्छर** (सं० अक्षर) पु० आखर,

वर्ण, हर्फ़, अक्षर, अकार आदि वर्ण, २ नाशरहित ।

प्रा० अच्छा (सं० अच्छ, अ=नहीं, छो=काटना) गु० भला, उत्तम, सुन्दर, स्वच्छ, साफ़, मनोहर, चंगा ।

प्रा० अच्छाकरना बोल० चंगा करना, भला चंगा करना, बीमारी से चंगा करना ।

प्रा० अच्छालगना बोल० मोहना, फबना, खुलना, पसन्द आना, भाना ।

प्रा० अच्छाहोना बोल० चंगाहोना, भलाचंगाहोना, बीमारी से आराम पाना ।

प्रा० अच्छेसेअच्छा बोल० सबसे अच्छा, उत्तम, बहुतही अच्छा, श्रेष्ठ ।

प्रा० अछतानापछताना बोल० क्रि० अ० पछताना, पस्तावाकरना, पश्चात्ताप करना, अफ़सोस करना ।

प्रा० अछूता (सं० अ=नहीं हिं० छूना) गु० नहीं छुआहुआ जो चीज़ जूठी न हो, पवित्र, देवता अथवा ऋषिमुनिके लिये शुद्धभोगआदि ।

प्रा० अज
आज
(सं० अद्य, इदम्, यह) क्रि० वि० आजकादिन, वर्त्तमान दिन ।

सं० अज (अ=नहीं, ज=पैदाहुआ, जन्=पैदाहोना, वा अ=विष्णु, ज=पैदाहुआ) पु० ब्रह्म, विष्णु, ब्रह्मा, शिव, जीव, २ राजा दशरथ के बाप का नाम ।

सं० अज (अज्=चलना) पु० बकरा, मेषराशि ।

सं० अजा (अज्=चलना) स्त्री० बकरी, २ माया ।

सं० अजगर (अज=बकरा, गर=निगलनेवाला, गॄ=निगलना) पु० बड़ासांप, अज़दहा ।

सं० अजगव (अजगु=शिव, अजोऽजन्मा गौर्यस्य असौ अजगुः शिवः तस्य धनुः अजगवं आजगवं वा) न० शिव का धनुष ।

सं० अजय (अ=नहीं, जि=जीतना) गु० जिसकी जीत नहीं हुई हो, २ जो जीतानहींजाय, अजीत, स्त्री० हार।

सं० अजर (अ=नहीं, जरा=बुढ़ापा जॄ=बूढ़ा होना) गु० जो बूढ़ा न हो सदा जवान बनारहे ।

प्रा० अजहू
अजहूं
अजों
(अज=आज, हू=भी, तक) क्रि० वि० अबभी, आज भी, अबतक, आजतक ।

प्रा० अजान
अनज्ञान
(सं० अज्ञान) गु० मूर्ख, अनसमझ, अबूझ ।

सं० अजामिल एक पापी ब्राह्मण का नाम जो क़न्नौज में रहताथा जिसके पुत्र का नाम नारायण था मरते समय नाम लेनेसे तरगया ।

सं० अजित (अ=नहीं, जित=जीतना) गु० जो जीता नहीं जाय, अपेल,

बली, सबको जीतनेवाला ।

सं० अजिन (अज्=जाना वा चमकना) पु० मृगछाला, हरिण की खाल जिसपर ब्रह्मचारी और संन्यासीलोग बैठा करते हैं ।

सं० अजिर (अज्=जाना) पु० आँगन, चौक, अँगना, अँगनाई ।

प्रा० अजीत (सं० अजित) गु० सब को जीतनेवाला, बली, जो जीता नहीं जाय ।

सं० अजीर्ण (अ=नहीं, जीर्ण=पुराना, जॄ=पुराना होना, पचना) गु० अपच, नहींपचना, हज़म न होना ।

प्रा० अयोध्या (सं० अयोध्या, अ=नहीं, युद्ध=लड़ना अर्थात् जहां कोई लड़नेको नहींआसक्ता) स्त्री० अवध, सूर्यवंशियों की राजधानी ।

सं० अज्ञ (अ=नहीं, ज्ञा=जानना) गु० अजान, अनजान, अनसमझ, अबूझ, मूर्ख, बेवकूफ़ ।

सं० अज्ञात (अ=नहीं, ज्ञात=जाना हुआ, ज्ञा=जानना) गु० अनजाना, नहीं जाना हुआ, २ असमझ, मूर्ख ।

सं० अज्ञान (अ=नहीं, ज्ञा=जानना) गु० मूर्ख, अजान, अनजान, असमझ, अबूझ, स्त्री० मूर्खता, बेवकूफी ।

सं० अज्ञानता (अज्ञान) भा० स्त्री० मूर्खता, अज्ञानपन, बेवकूफ़ी, नाफ़हमी ।

सं० अज्ञानी (अज्ञान) गु० मूर्ख, अजान, अबूझ, अनसमझ, बेवकूफ़, नादान।

सं० अञ्चल (अञ्च्=जाना वा मांगना) पु० अंचल, आंचल, कपड़े का किनारा ।

सं० अञ्जन (अञ्ज्=आंजना, सुरमा लगाना) पु० सुरमा, काजल।

सं० अञ्जना (अञ्ज्=शोभना) स्त्री० हनुमान् की मा ।

सं० अञ्जलि (अञ्ज्=मिलाना) स्त्री० दोनों हाथों का मिलाना, हाथ का सम्पुट, दोनों हाथों को इस तरह से मिलाना कि बीच में जगह खालीरहे जिसमें पानी आदि लिया जाय, २ एक तरहका नाप, इतनी चीज़ कि दोनों हाथों में अटसके ।

सं० अञ्जसा (अञ्ज्=जाना, सा=साधारण) २ शीघ्र, सारा ।

फ़ा० अञ्जुमन स्त्री० सभा, मंडली ।

प्रा० अञ्झा(अन्=नहीं + अध्याय=पढ़ना) छुट्टी तातील ।

प्रा० अटक (अटकना) स्त्री० रोक, रुकाव, आड़, २सिंधु नदीका नाम ।

प्रा० अटकना क्रि० स० रोकना, बंदकरना, क्रि० अ० रुकना, बंद होना, ठहरना, रहना ।

प्रा० अटकल (अटकलना) स्त्री० अनुमान, अंदाज़ा, कूत ।

प्रा० अटकलपच्चू बोल० बे

अंदाज़, बे हिसाब, ऊटक नाटक, बे ठौर ठिकाने, योंहीं ।

प्रा० अटकलना क्रि० स० अंदाज़ा करना, अनुमान करना, सोचना, बिचारना, कूतना ।

प्रा० अटका पु० श्रीजगन्नाथ के प्रसादके लिये भात बनाने का मिट्टी का बरतन ।

प्रा० अटकाना क्रि० स० रोकना, ठहराना, छेंकना, बंदकरना ।

प्रा० अटकाव (अटकाना) भा० पु० रोक, रुकाव, प्रतिबन्ध ।

प्रा० अटखेल अठखेल (सं० अट्टखेला अट्ट=बहुत, खेल=खेल) गु० चंचल खिलाड़, खिलाड़ी, शोख़ ।

प्रा० अटखेली अठखेली (सं०अट्ट खेला) स्त्री० चंचलता, खिलाड़पन, ढिठाई, चंचलाई, शोख़ी ।

सं० अटन (अट्=फिरना) भा० पु० फिरना, चलना, भ्रमण, यात्रा, घूमना, सफ़र, सैयाही, २ अटारी ।

प्रा० अटना (सं० अट्=फिरना, जाना) क्रि० अ० समाना, भर जाना, २ फिरना ।

प्रा० अटपट, पु० **अटपटी,** स्त्री० **अटपटांगी,** स्त्री० गु० टेढ़ा, टेढ़ी, बांका, बांकी, टर्रा, टर्री, एढ़ी, टेढ़ी, बेठिकाने, बेढंगी, कठिन, व्यंगयुत, पेचीदा ।

सं० अटल (अ=नहीं, टल्=घबराना) गु० अचल, जो टले नहीं, ठहराहुआ, दृढ़, पायदार ।

सं० अटवि अटवी (अट्=जाना, फिरना) स्त्री०वन,जंगल।

प्रा० अटा अटारी (सं० अट्ट, अट्ट=ऊंचा होना, बढ़जाना या निरादर करना) स्त्री० अटारी, ऊपरकी कोठरी ।

प्रा० अटाला ढेर, असबाब, सामान, खटला, सामग्री ।

प्रा० अटूट (सं० अ=नहीं, हिं० टूटना) गु० बहुतही बहुत जो टूटे नहीं, समूचा, पूरा, कुल ।

प्रा० अटेरन (भा० स्त्री० चरखी, आंटी) २ घोड़े की एक चाल ।

सं० अट्टहास (अट्ट=बहुत, हास =हँसी) भा० पु० बहुत हँसना, खिलखिलाकर हँसना, क़हक़हा मारना ।

सं० अट्टालिका (अट्ट=ऊंचाहोना बढ़ना वा निरादर करना) स्त्री० अटारी, अटा, ऊपरकी कोठरी, बालाख़ाना ।

प्रा० अठतालिस अड़तालीस (सं०अष्टचत्वारिंशत्, अष्ट=आठ, चत्वारिंशत्=चालीस) गु० चालीस और

आठ ।

प्रा० अठतीस
अड़तीस (सं० अष्ट=आठ त्रिंशत्=तीस) गु० तीस और आठ ।

प्रा० अठवारा सं० अष्टवार, (अष्ट=आठ, बार=दिन) पु० आठवांदिन, २ हफ़्ता, सप्ताह ।

प्रा० अठसठ
अड़सठ (सं० अष्टषष्टिः अष्ट=आठ, षष्टि=साठ) गु० साठ और आठ ।

प्रा० अठहत्तर (सं० अष्टसप्ततिः अष्ट=आठ, सप्तति=सत्तर) गु० सत्तर और आठ ।

प्रा० अठाईस
अट्ठाईस (सं०अष्टविंशतिः अष्ट=आठ, विंशति=बीस) गु० बीस और आठ।

प्रा० अठानवे (सं० अष्टनवति, अष्ट=आठ, नवति=नब्बे) गु० नब्बे और आठ ।

प्रा० अठारह (सं० अष्टादशः, अष्ट=आठ, दशन्=दश) गु० दश और आठ ।

प्रा० अठावन (सं० अष्टपञ्चाशत्, अष्ट=आठ, पञ्चाशत्=पचास) गु० पचास और आठ ।

प्रा० अठासी
अट्ठासी (सं० अष्टाशीतिः, अष्ट=आठ, अशीति=अस्सी) गु० अस्सी और आठ।

प्रा० अठोतरसौ (सं० अष्टोत्तरशत, अष्ट=आठ, उत्तर=आगे, शत=सौ) गु० एक सौ आठ ।

प्रा० अड़ भा० स्त्री० झगड़ा, विरोध, हठ, ज़िद ।

प्रा० अड़ंग स्त्री० मंडी, दिसावर की चीज़ का उतार, २ हठ, ज़िद ।

प्रा० अड़ना
अड़करना क्रि० अ० रुकना, थमना ।

प्रा० अड़बंगा गु० बांका, तिरछा, बराबर नहीं, ऊँचानीचा, नाहमवार।

प्रा० अड़बड़ंग पु० बावलापन ।

प्रा० अडूसा पु० एक औषधि का नाम, रूसा, बासा ।

प्रा० अडोल (सं० अ=नहीं, डुल्=हिलना, झूलना, डोलना) गु० जो नहीं हिलसके, अचल, अटल, दृढ, बेहरकत ।

प्रा० अड़ोसपड़ोस पु० बोल० पड़ोस, पासबसना, प्रतिवास ।

प्रा० अड्डा सेनाकी जगह, ठहरनेकी जगह, छावनी, छतुरी ।

प्रा० अढ़ाई (सं० अर्द्धद्वयः अर्द्ध=आधा, द्वि=दो) गु० दो और आधा ।

सं० अणि
अणी (अण्=शब्द करना) स्त्री० धार, नोक, बाढ़, तीखीधार, तेज़धार ।

सं० अणिमा (अणु=छोटा) स्त्री० आठ सिद्धियों में की एक सिद्धि, जिससे बहुतही छोटारूप बनाके सब जगह जासके, छोटा बनजाने

की शक्ति, बहुतही सूक्ष्मता, बहुत बारीकी ।

सं० अणु (अण्=शब्द करना, जीना) पु० कन, कनिका, परमाणु, गु० बहुतही छोटा, महीन, सूक्ष्म, बारीक, खुर्द, ज़र्रा ।

सं० अणुमात्र गु०छोटासा,ज़रासा।

प्रा० अण्डा (सं० अण्ड=अंडा) पु० गोली, खेलने की गोली ।

सं०अण्ड(अम्=जाना,अर्थात् जिसमें से बच्चा निकलता है) पु० अंडा।

सं० अण्डकटाह (सं० अण्ड + कटाह) पु० ब्रह्माण्ड ।

सं० अण्डज (अण्ड=अण्डा,ज=पैदा हुआ, जन्=पैदा होना) पु० अण्डे से पैदा होनेवाले जानवर जैसे पखेरू, सांप, मछली, और गोह, गिरगिट, बिसखपरा आदि।

प्रा० अण्डा (सं० अण्ड) पु० पखेरू आदि के पैदा होने की जगह।

सं० अतः क्रि० वि० इससे, इस लिये, लिहाज़ा ।

सं० अतएव क्रि० वि० इसीलिये, पस ।

सं० अतसी (अत्=जाना) स्त्री० तीसी, सन, अलसी ।

सं० अतत्त्वज्ञ (अ=नहीं+तत्त्व=मूल + ज्ञा=जानना) क० पु० मूल का न जाननेवाला, ग़लतफ़हम, बेसमझ ।

सं० अतत्त्वज्ञता भा० स्त्री० नासमझी, ग़लतफ़हमी ।

सं० अतन
अतनु (अ=नहीं + तन=शरीर)गु० शरीररहित, पु० कामदेव ।

सं० अतन्द्रित गु० आलस्यरहित, सुस्त ।

सं० अतल (अ=नहीं + तल=थाह) गु० अथाह पु० नीचे के सात लोकों में से पहिला लोक ।

प्रा० अताई पु० गवैया, बजंत्री, बजानेवाला ।

सं० अति (अत्=जाना) गु० उप० बहुत, अधिक, बहुतही बहुत, बड़ा, बीताहुआ, होचुका, उलांघना, पार।

सं० अतिकाय (अति=बड़ी, काय=देह)पु०बड़ा शरीर, २ रावणका पुत्र जिसे लक्ष्मण ने मारा था अथवा गु० बड़ी देहवाला, दानवरूपी, भयानक ।

सं० अतिक्रम (अति=पार+क्रम=चलना) भा०पु० पारजाना, उल्लंघन, अपराध, जुर्म ।

सं० अतिक्रान्त (अति + क्रान्त, क्रम=चलना) क० पु० पार गया हुआ, बहुत बढ़गया, सबक़तपाया हुआ ।

सं० अतिथि (अत्=जाना अर्थात् जो एक जगह नहीं ठहरता फिरता रहता है) पु० पाहुना, महिमान,

२ अभ्यागत, योगी, संन्यासी ।

सं० अतिथिभक्त (अतिथि + भक्त भज्=सेवा करना) क०पु० अतिथिपूजक, महिमानपरस्त, मेज़बान ।

सं० अतिथिभक्ति भा० स्त्री० अतिथिसेवा, मेज़बानी ।

सं० अतिरिक्त (अति + रिक्त) गु० छूटाहुआ, सिवाय, अलावह ।

सं० अतिरेक (अति+रेक, रिच्=जुदा होना) भा०पु० अधिकता, कसरत ।

सं० अतिशय (अति=बहुत, शी=सोना) गु० बहुतही बहुत, अत्यन्त, अधिक, निहायत ।

सं० अतिसार (अति=बहुत, सृ=जाना) पु० पेट चलना, संग्रहणीरोग, पेटौखा रोग, पेट की बीमारी ।

सं० अतीत (अति=बीता हुआ, इ=जाना) क० पु० बीताहुआ, होचुका, परे, गुज़रा हुआ ।

प्रा० अतीत
अतीथ } (सं० अतिथि) पु० योगी, संन्यासी ।

सं० अतुल
अतुलित
प्रा० अतोल } (अ=नहीं, तुल=तोलना) गु० जिसका तोल नहीं, अपार, जो तोला नहीं जाय, अप्रमाण, २ अनूप, उत्तम, जिसकी बराबरी न होसके ।

सं० अत्यन्त (अति=उलांघना, अन्त=पार) गु० बहुतही बहुत, अतिशय, अधिक ।

सं० अत्यय (अति=पार + अय=जाना, इ=जाना) भा०पु० समाप्ति, नाश, अपराध, गुनाह ।

सं० अत्याचार (अति=विरुद्ध + आचार=चलन) भा० पु० अन्याय, ज़ुल्म, बिदअत ।

सं० अत्युक्ति (अति=बहुत, उक्ति=कहना, वच्=बोलना) भा० स्त्री० बहुत बढ़ावा देकर कहना, झूठी सराह करना, एक अलंकार का नाम, मुबालिग़ा ।

सं० अत्र (इदम्=यह) क्रि०वि० यहां, इस जगह, इस ठौर ।

सं० अत्रि (अद्=खाना वा बचाना) पु० सात ऋषियों में का एकऋषि ब्रह्मा का बेटा ।

सं० अथ (समुच्च० अव्य० फिर, उपरांत) इसके पीछे, शुरू, आरंभ, इस तरह से ।

सं० अथवा (अथ=फिर, वा, या) समुच्च० या, वा, किंवा, प्रकारान्तर ।

प्रा० अथाई (सं० अ=नहीं, स्था=रहना) भा० स्त्री० जगह जहां लोग बातचीत और हँसी ठट्ठा करने के लिये इकट्ठे होते हैं, बैठक, २ सभा, जमाव ।

प्रा० अथाह (सं० अ=नहीं, स्थान=जगह, वा अगाध) गु० गहरा, गंभीर, बहुतही गहरा, बेथाह ।

प्रा० **अद** **अध** (सं०अर्द्ध) गु०आधा।

सं० **अदन** (अद्=खाना) भा० पु० भोजन, खाना।

सं० **अदनीय** (अद्+अनीय) र्म० पु० भोजन योग्य, खुर्दनी।

अ० **अदब** क़ायदा, आचार।

सं० **अदभ्र** गु० बहुत, पूर्ण।

प्रा० **अदमूआ** **अदमरा** **अधमूआ** **अधमरा** (सं० अर्द्धमरण, अर्द्ध=आधा, मृ=मरना) गु० बोल० बहुतही सुस्त, बहुतही अशक्त, आधामरा हुआ, नीम मुर्दा।

प्रा० **अदल बदल** बोल० एराफेरी, पलटा।

प्रा० **अदलाबदला करना** बोल० बदलना, पलटना, एक चीज़ के पलटे में दूसरी चीज़ लेना।

प्रा० **अदहन** (सं०आदहन आ=अधिक, दहन=जलाना) पु०दाल चावल अथवा और चीज़ पकाने के लिये बहुतही गर्म पानी।

सं० **अदार** (अ=नहीं, दारा=स्त्री) पु० कल्याणभार्य, रँडुवा।

सं० **अदिति** (अ=नहीं, दा=देना, जो दुःख नहीं देवे वा, दो=काटना) स्त्री० देवताओं की मा और दक्ष की बेटी और कश्यप मुनि की स्त्री।

सं० **अदिन** (अ=नहीं, वा बुरा, दिन=समय) पु० बुरादिन, बुरी दशा, खोटे दिन, खोटे ग्रह, कुदिन।

सं० **अदूरदर्शी** क० पु० अल्पदृष्टि, कोताह नज़र।

सं० **अदृश्य** **अदृष्ट** (अ + नहीं, दृश=देखना) गु०अलख, जो देखने में न आवे, अगोचर, गुप्त, अदेख।

सं० **अदेय** (अ=नहीं, देय=देनेयोग्य, दा=देना) गु० नहीं देने योग्य।

सं० **अद्धा** अव्य०साक्षात्, सन्मुख।

प्रा० **अद्धी** (सं०अर्द्ध=आधा) स्त्री० आधीदमड़ी, २एकप्रकारकीतनज़ेब।

सं० **अद्भुत** (अत्=अचंभा, भू=होना वा, भा=चमकना) गु० अनोखा, अपूर्व, अजीब।

सं० **अद्यापि** (अद्य + अपि) क्रि० वि० आजतक, अबतक।

सं० **अद्यावधि** (अद्य + अवधि) क्रि०वि० अभीतक, इस समयतक।

प्रा० **अद्रक** (सं० आर्द्रक, आर्द्र=गीला) पु० आदा, आद, कच्ची सोंठ।

सं० **अद्रि** (अद्=खाना) पु०पहाड़, पर्वत, २ वृक्ष, पेड़, सात।

सं० **अद्वितीय** (अ=नहीं, द्वितीय=दूसरा) गु० केवल, निकेवल, एक ही, २ अनूप, अतुल्य, लासानी।

सं० **अद्वैत** (अ=नहीं, द्वैत=दूसरा) गु० जिसके समान दूसरा नहीं है,

भेदरहित, बे मिस्ल ।

प्रा० **अधकपाली** (सं० अर्द्धकपाल, अर्द्ध=आधा, कपाल=शिर) स्त्री०अधशीशी,आधेशिर में पीड़ा।

प्रा० **अधबर** (सं०अर्द्ध=आधा)गु० आधीदूर, बीचमें, मध्य,दर्मियान।

सं० **अधम** (अव्=बचाना) गु० नीच, कमीना ।

सं० **अधमर्ण** (अधम + ऋण) क० पु० ऋणी, खादक, क़र्ज़दार ।

सं० **अधर** (अ=नहीं, धृ=रखना) पु० होठ, नीचेका होठ, २ बीच, शून्य, स्वर्ग और धरती के बीच की जगह, गु० नीच, कमीना, छोटा, लघु ।

सं० **अधरामृत** (अधर=होठ,अमृत =अमी) पु० होठों में की अमी ।

सं० **अधर्म** (अ=नहीं, धर्म=पुण्य) पु० पाप,अन्याय,अपराध,अन्धेर, बुराकाम, दोष, गुनाह ।

सं० **अधर्म्मी** (अ=नहीं, धर्म्मी= धर्म करनेवाला) क० पु० पापी, दुराचारी, अन्यायी, दुष्ट, दोषी, अपराधी, बदकार ।

प्रा० **अधवाड़** (सं० अर्द्ध=आधा) पु० कपड़े का आधा थान, आधे घर के लोग ।

सं० **अधस्**
अधः } अव्य० नीचे, तले ।

प्रा० **अधार** (सं० आधार) भा०पु० आसरा, आड़, २ खाना,आहार, भोजन ।

सं० **अधार्मिक** (अ=नहीं, धार्मिक =धर्मी) क०पु० अन्यायी, पापी, दुष्ट, बुरा ।

सं० **अधि** उप० पर, ऊपर, ऊंचा, २ मुख्य, प्रधान, ३ बहुत, अधिक, ४ सामने, ५ वशमें, यह उपसर्ग अप का उलटा है ।

सं० **अधिक** (अधि=ऊपर) गु० बहुत, विशेष, ज़ियादह ।

सं० **अधिकता** (अधिक) भा०स्त्री० अधिकाई, बहुतायत, बढ़ती ।

सं० **अधिकरण** (अधि=ऊपर, कृ= करना) पु० आधार, आसरा, २ व्याकरणमें सातवां कारक, ज़र्फ़ ।

प्रा० **अधिकाई** (सं० आधिक्य, अधिक=बहुत)स्त्री०बहुतात,बढ़ती।

सं० **अधिकार** (अधि=ऊपर, कृ= करना) भा० पु० हक़, बपौती, २ योग्यता, स्वामीपन, ३ राज, ४ अख़्तियार, ५ ओहदा, काम ।

सं० **अधिकारी** (अधिकार + ई) क० पु० अधिकार रखनेवाला, स्वामी, मालिक, धनी, वारिस, हक़दार, २ पुजारी, पण्डा ।

सं०**अधिकृत** कर्म०पु०अधिकार पाया हुआ, अधिकार किया हुआ, मक़बूज़ा ।

सं० **अधित्यका** (अधि + त्यकन्

त्यज्=छोड़ना) स्त्री०टीला, तराई, दामन कोह, २ कुड़री ।

सं० **अधिप** **अधिपति** (अधि=ऊपर, पा=पालना) क० पु० राजा, मालिक, स्वामी, प्रभु ।

सं० **अधिमास** (अधि=अधिक, मास=महीना) पु० मलमास, लौंद का महीना ।

सं० **अधिराज** (अधि=ऊपर वा प्रधान, राजन्=राजा) पु० महाराज, राजाधिराज ।

सं० **अधिरूढ़** (अधि=ऊपर, रूढ़ रुह=जमना) क० पु० आरूढ़, सवार ।

सं० **अधिवास** (अधि + वास वस्=रहना) भा० पु० रहनेकी जगह, सकूनत ।

सं० **अधिवेशन** (अधि=ऊपर, वेशन विश=घुसना, जाना) बैठक, दरबार, इजलास ।

सं० **अधिष्ठाता** (अधि=ऊपर, स्था=ठहरना) क० पु० स्वामी, मालिक, रक्षक, पालनेवाला, अध्यक्ष, मुखर, अगुवा ।

सं० **अधिष्ठान** (अधि + स्थान) भा० पु० स्थिति, क़याम, मुक़ाम ।

सं० **अधीत** (अधि + इत इ=जाना) कर्म० पु० पढ़ाहुआ, पठित ।

सं० **अधीति** (अधि + इति इ=जाना) भा० स्त्री० पढ़ना, अध्ययन, ख़्वाँदगी ।

सं० **अधीन** (अधि=पर अथवा वश इन=स्वामी) गु० बसमें, आज्ञाकारी, दबेल, ताबेदार ।

सं० **अधीनता** (अधीन) स्त्री० ताबेदारी, चाकरी, दबाव, हुक्म मानना ।

सं० **अधीर** (अ=नहीं, धीर=धीरज वाला) गु० चंचल, उतावला, घबरायाहुआ, असंतोषी, चपल, अस्थिर, हड़बड़िया, चटपटा, जल्दबाज़, बे सब्र ।

सं० **अधीरता** (अधीर) भा० स्त्री० घबराहट, चंचलाहट, उतावली, बेसबरी, हड़बड़ी, चटपटी ।

सं० **अधीश** **अधीश्वर** (अधि=ऊपर वा अधिक, ईश वा ईश्वर=स्वामी) पु० राजाधिराज, राजाओं का राजा, महाराज, शाहन्शाह ।

सं० **अधुना** क्रि० वि० अब, इसवक़्त ।

प्रा० **अधूरा** (अधपूरा) गु० अधबना, अनबना, पूरानहीं, नामुकम्मिल ।

प्रा० **अधूराजाना** बोल० कच्चाजाना, कच्चेबच्चे का गिरना ।

प्रा० **अधेढ़** (अर्द्ध=आधा) गु० अधबूढ़ा, जिसकी आधी उमर बीत गई हो यह शब्द स्त्री के लिये बहुत बार बोलाजाता है ।

प्रा० **अधेन** (सं० अध्ययन) भा०

पु० पढ़ना, ख़्वाँदगी ।

प्रा० अधेला (सं० अर्द्ध=आधा) पु० आधा पैसा, पैसेका आधा ।

प्रा० अधेली (सं० अर्द्ध=आधा) स्त्री० आधा रुपया, अठन्नी, आठ आना ।

सं० अधोमुख गु० नीचे मुख किये हुये, शिर झुकाये हुये, उदास, सरनगूं ।

प्रा० अधौड़ी (सं० अर्द्ध=आधा) स्त्री० आधी खाल, मोटा और गाढ़ा चमड़ा जिसके जूते के तले, डोल,डोलची और घोड़े के साज़ आदि बनते हैं ।

सं० अध्यक्ष (अधि=ऊपर, अक्ष=फैलाना) पु० स्वामी, मालिक, प्रधान, मुखिया,मुख्य,अधिकारी ।

सं० अध्ययन (अधि+इ=पढ़ना) पु० पढ़ना, पवित्र पोथियों का पाठकरना, ब्राह्मणों के षट्कर्म में का एक कर्म ।

सं० अध्यवसाय (अधि+अव+सै=नाश होना) पु० उद्यम, उपाय, रोज़गार ।

सं० अध्यापक (अधि+इ=पढ़ना) पु० पाठक, गुरू, उपाध्याय, आचार्य, शिक्षक, वेद शास्त्र पढ़ानेवाला ।

सं० अध्यापन (अधि+इ=जाना) भा० पु० पढ़ाना, सबक़ देना ।

सं० अध्याय (अधि+इ=पढ़ना) पु० पाठ, पर्व, सर्ग, प्रकरण, वाब, परिच्छेद ।

सं० अध्यास (अधि+आस=बैठना) भा०पु० भाव, ख़याल, सम्बन्ध, ताल्लुक़, २ सत्य असत्य वस्तुकी जो अभेद प्रतीति है उसीका नाम अध्यास है ।

सं० अध्यासीन (अधि+आसीन आस्=बैठना) कृ०पु० बैठाहुआ ।

सं० अध्वर (अध्वन्=मार्ग, रा=देना अर्थात् जो सच्चा रस्ता बतलाता है) पु० यज्ञ, होम, बलिदान ।

सं० अध्वा (अध्वन्=मार्ग) स्त्री० राह ।

सं० अन्=निषेधवाचक अव्यय, संस्कृत में जिस शब्द का पहला अक्षर स्वर हो उसके पहले अ नहीं आता बल्कि ऐसी जगह पर अ को अन् होजाता है जैसे अनन्त, पर हिन्दी में व्यंजन के पहले भी अन आता है जैसे अनदेखा ।

अं० अनक्वनांट्यड वह नौकर जिन्हें सरकार नौकरी देने की ज़िम्मेदार नहीं ।

प्रा० अनख (अनखाना) भा० स्त्री० रिस, कोप, क्रोध, ग़ुस्सा, २ डाह, ईर्षा ।

सं० अनख (अ+नख) नखहीन,

जिसके नख न हो ।

प्रा० अनखाना क्रि० अ० कोप करना, खिसियाना, क्रोध करना, गुस्सा होना, चिढ़ना, खुनसाना, खफ़ाहोना ।

प्रा० अनगढ़, अनगढ़ा, पु० **अनगढ़ी,** स्त्री० } (अन=नहीं, गढ़ना =बनाना) गु० अनबना, अड़बग, अनसीखा, नहीं गढा हुआ ।

प्रा० अनगढ़ीबात बोल० बे ठिकाने बात, बे मेल बात, बे सिर पांव की वात, बेढंगीबात ।

प्रा० अनगणित अनागिणत अनागिणती } (सं० अगणित, अ = नहीं, गण् = गिनना) गु० अपार, बे शुमार, असंख्यात, बहुत, बेहिसाब ।

प्रा० अनगिना (सं० अगणित) गु० नहीं गिना हुआ, बे गिना, २ अनगणित, अपार, बेशुमार, बेहिसाब ।

प्रा० अनगिना महीना बोल० स्त्री को गर्भ का आठवां महीना, जब लुगाई पेट से होती है उस समय का आठवां महीना ।

सं० अनघ (अ=नहीं, अघ=पाप) गु० निष्पापी, निर्दोष, सीधा सादा, शुद्ध, बेगुनाह ।

प्रा० अनङ्ग (अन्=नहीं, अङ्ग=देह) पु० कामदेव, एकबार महादेव ने अपनी तीसरी आंख की आग से कामदेव को जला दिया था उसी दिन से इसका नाम अनङ्ग हुआ, यमराज और श्रद्धा का पुत्र ।

प्रा० अनचाहत (अन=नहीं, चाहना) गु० नहीं चाहा हुआ, अनिच्छित ।

प्रा० अनचित (सं० अ=नहीं, चित्=सोचना) गु० अचानक, एकाएक, अचीता ।

प्रा० अनजाना (सं० अज्ञान) गु० नहीं जाना हुआ, २ निर्बुद्धि ।

प्रा० अनजाने (सं० अज्ञान) क्रि० वि० बिनजाने, बे जाने बूझे, नहीं जानके, अजान ।

प्रा० अनजीवत (सं० अजीवित) क० पु० मृतक, मुर्दा ।

सं० अनडुह (अनः=छकड़ा + वह=लेजाना) पु० बैल ।

सं० अनड्वान् (सं० अनडुह्) पु० बैल ।

प्रा० अनत (सं० अन्यत्र) क्रि० वि० और जगह ।

सं० अनन्त (अन्=नहीं, अन्त=पार) गु० अपार, जिसका अन्त नहीं, असीम, बेहद, पु० शेषजी, शेषनाग जिनके एक फनपर हिंदूलोग पृथ्वीको ठहरी बताते हैं, २ चौदह गांठका एक धागा जिसको भादौं

R 2.2

Acc 799

सुदी १४ अर्थात् अनन्तचौदसके दिन पूजा करके हिंदूलोग अपने दहिने हाथ पर बांधते हैं, २ विष्णु, धरणी, नक्षत्र, जीव, ब्रह्म, लाइन्तिहा ।

सं०अनन्य (अन्=नहीं,अन्य=दूसरा) गु०एकही,जिसको दूसरेका भरोसा नहीं ।

सं० अनपत्य(अन्=नहीं + अपत्य=पुत्र) पुत्रहीन, लावल्द ।

प्रा०अनपावनी (सं०अप्रापणीय) गु० जिसको कोई न पावै, दुर्लभ, अप्राप्त ।

प्रा०अनबनाव(अन=नहीं, बनाव=मेल) भा०पु० अनरस, बिगाड़, फूट, नाचाकी, ऐंठाऐंठी, नाइत्तिफ़ाक़ी ।

प्रा०अनबेधा (सं० अविद्ध,अ=नहीं व्यध्=बींधना) कर्म० पु०अनछेदा, अबेधा, नहीं छेदा हुआ, नहीं बींधा हुआ ।

प्रा० अनबोल(अन=नहीं + बोल=बोलना)गु० चुपचाप, अवाक्, अबोल, अनबोला, चुपका, गूंगा ।

प्रा० अनभल(अन=नहीं, भला=अच्छा) पु० बुरा, दुख ।

सं० अनभिज्ञ(अन् + अभि + ज्ञा=जानना)गु०नादान, नावाक़िफ़ ।

प्रा० अनमना (सं० अन्यमनस्, अन्य=दूसरा, मनस्=मन वा उन्मनस्, उत्=ऊपर, मनस्=मन) गु० घबराया हुआ, उदास,चिंता में, चिंतित, फ़िक्रमंद, मुतफ़क्किर ।

प्रा० अनमोल (अन=नहीं, मोल=क़ीमत वा सं०अमूल्य, अ=नहीं, मूल्य=मोल) गु० अमोल,बढ़िया, उत्तम, जिसका मोल न होसके ।

प्रा०अनरस(अन=नहीं,रस=स्वाद) पु० अनबनाव, मित्रों के आपस में ऐंठाऐंठी,फूट, नाचाक़ी, बिगाड़ ।

प्रा० अनरीति (अन=नहीं, रीति=चाल)स्त्री०कुचाल,कुढंग,बुरीरीति।

सं०अनर्थ(अन्=नहीं,अर्थ=मतलब, लाभ) गु० वृथा, बेफ़ायदा, अनुचित,निरर्थक,अकारथ, निष्फल, बेमतलब, पु० हानि, नुक़सान ।

सं० अनर्थकारी (अनर्थ + कारी) क० पु० हानिकारक, मुज़िर ।

सं० अनल (अन्=नहीं, अल=पूरा होना, अर्थात् जिसमें चाहे जितना डालो पर पूर्ण नहीं होवे वा अन्=जीना, जिससे सब जीते हैं) पु० आग, आगी, अग्नि ।

सं०अनवद्य(अन्=नहीं,अवद्य=दोष) गु० निर्दोष, बेचूक, बेगुनाह, बेख़ता ।

सं० अनवधान (अन्=नहीं + अव=निश्चय + धा=धरना) भा० पु० आसक्तिरहित, बेतवज्जुह, बेमुहब्बत, बे ख़्वाहिश ।

सं० अनवस्थित (अन्+अव + स्था=ठहरना) गु० अचेत,बेख़बर, असावधान, ग़ाफ़िल ।

प्रा० अनसिख
अनसीखा (सं० अशिक्षित अ=नहीं, शिक्षित=सीखा) गु० अनपढ़ा, मूर्ख, अजान, ग़ैर तालीमयाफ़्ता ।

प्रा० अनसुना (अन=नहीं, सुनना) गु० नहीं सुना, नहीं ध्यान दिया, अनाकानी ।

प्रा० अनसुनी करना
सुनी अनसुनी करना बोल० किसीकी बात पर कुछ ध्यान नहीं देना, नहीं सुनने का बहाना करना ।

प्रा० अनहित (सं० अहित,अ=नहीं, हित=भला) क० पु० बैरी, द्वेषी, बुरा करनेवाला, २ बुरा ।

प्रा० अनहोना (अन=नहीं, होना) गु० नहीं होनेवाला, असंभव, ग़ैर मुमकिन ।

सं० अनाचार(अन्=नहीं,आचार=चालचलन)भा० पु० बुरा चाल चलन, कुचाल, कुरीति, बुरा व्यवहार, बदचलनी, बदचलन ।

प्रा० अनाज
नाज (सं० अन्न)पु० अन्न, नाज, ग़ल्ला ।

प्रा० अनाड़ी (सं० अनार्य,अन्=नहीं, आर्य=सभ्य) गु० गँवार, मूर्ख, भोंदू, फूहड़, बेडौल, बेढंगा, सिखनौत, कच्चा ।

सं० अनाथ(अ=नहीं, नाथ=स्वामी) गु० बिन मालिक, बिन मा बाप का, मुरहा, यतीम, बिन पतिकी लुगाई, २ दुखी, दीन ।

सं० अनाथालय (अनाथ+आलय) धि० पु० मुहताजख़ाना, यतीमख़ाना ।

सं० अनादर (अन्=नहीं, आदर=मान, आ+दृ=फाड़ना) पु० अपमान, हलकापन, बेइज़्ज़ती ।

सं० अनादि (अन्=नहीं,आदि=पहले) गु० जिसका शुरूअ नहीं, अविनाशी, सदा रहनेवाला ।

सं० अनामय (अन्=नहीं,आमय=रोग, अम्=बीमार होना) गु० नीरोग, भला चंगा, बिन रोग, भा० पु० अरोग्यता, नीरोगपन, नीरोगता, सेहत ।

सं० अनायास(अन्=नहीं, आयास=मिहनत, आ=सब तरह में, यस्=मिहनत करना)गु० बिन मिहनत, सहज, सुगम, भा० पु० सुगमता, आसानी, चैन, सुख ।

सं० अनाहार (अन्=नहीं, आहार=खाना) पु० उपास, लंघन, भूखा रहना, फ़ाक़ाकशी ।

सं० अनित्य(अ=नहीं,नित्य=सदा) गु० जो सदा नहीं रहे, नाशवान्, नाश होनेवाला, झूठा ।

सं० अनित्यता भा० स्त्री० अस्थि-

रता, फ़ना, नापायदारी ।

सं० अनियत (अ=नहीं, नियत= निश्चित, नि+यम) कर्म० पु० अनिश्चित, संदिग्ध, इत्तिफ़ाक़िया ।

सं० अनिरुद्ध (अ=नहीं, निरुद्ध= रोका हुआ नि, रुध्=रोकना अर्थात् जो किसी से नहीं रोका जाय) पु० प्रद्युम्न का बेटा श्रीकृष्णका पोता और ऊषा का पति, कहते हैं कि अनिरुद्ध शत्रुघ्न का अवतार था, गु० जो रोका नहीं जाय ।

सं० अनिर्वचनीय } अनिर्वाच्या } (अ + निः + वचनीय=कहने योग्य) जो कहने योग्य न हो, अकथ्य ।

सं० अनिशम् क्रि० वि० प्रतिदिन, रोज़मर्रा ।

सं० अनिल (अन्=जीना) पु० पवन, हवा, वायु, बाव, बयार, बतास, संख्या ४९ ।

सं० अनिष्ट (अन् + इष्ट, इष्=चाहना) अप्रिय, अनिच्छित, ख़राब, बे चाहा ।

प्रा० अनी (सं० अणी) स्त्री० नोक, तीखी धार, २ सं०अनीक) स्त्री० फ़ौज, सेना, दल, कटक ।

सं० अनीक (अन्=जीना अर्थात् जिससे रक्षा होती है) स्त्री० सेना, फ़ौज, कटक ।

सं० अनीति (अ=नहीं + नीति= अच्छा चलन) स्त्री० अन्याय, कुचाल, बुरा चलन ।

सं० अनीप (अनी=सेना, पा=रक्षा करना)क०पु० सेनापति, सरदार।

सं० अनीह(अन्=नहीं + ईहा=सुध, इच्छा, चेष्टा) गु० जिसको कुछ चाह नहीं, चेष्टारहित,२ निर्गुण, बेरूप, ३ आलसी, ढीला, बोदा, अयोध्याके एक राजा का नाम ।

सं० अनीहा (अन् + ईहा) भा० स्त्री० उदासीनता, बेपरवाही ।

सं० अनु उप०पीछे, साथ, अनुसार, बराबर, पास, अनुकरण, नक़ल, हरएक, कम, थोड़ा ।

सं० अनुकथन(अनु=पीछे + कथ्= कहना) भा० पु० कहे के पीछे कहना, वारंवार कहना,ताईद करना।

सं० अनुकम्पा (अनु + कम्प्=कांपना) भा० स्त्री० दया, कृपा, मेहरवानी ।

सं० अनुकरण (अनु=नक़ल, कृ= करना) पु० नक़ल करना,अनुरूप ।

सं० अनुकूल (अनु=साथ, कूल= घेरना) गु० सहाय करनेवाला, मददगार, कृपालु, दयालु, मेहरवान, अनुसार, मुवाफ़िक़ ।

सं० अनुक्रम (अनु=पीछे, क्रम= चलना) गु० क्रमानुसार,तर्तीबवार, क्रमशः,भा० पु० प्रबंध, सूचीपत्र, फ़ेहरिस्त ।

सं० **अनुग** (अनु=पीछे + गम्=जाना) क० पु० अनुचर, सेवक, ताबेदार ।

सं० **अनुगति** (अनु=पीछे, गति=चाल) भा० स्त्री० अनुमति, सम्मति, मर्ज़ी, आज्ञा ।

सं० **अनुगामी** (अनु=पीछे, गामी=चलनेवाला, गम्=चलना) क० पु० पीछे चलनेवाला, पु० साथी, २ नौकर, पैरोकार ।

सं० **अनुग्रह** (अनु=पीछे, ग्रह=लेना) भा० पु० कृपा, मेहरबानी, प्रसन्नता, दया ।

सं० **अनुगृहीत** (अनु=पीछे+गृहीत, ग्रह=लेना) कर्म० पु० दया किया गया, निवाज़ा गया, इहसानमन्द ।

सं० **अनुचर** (अनु=पीछे, चर=चलनेवाला, चर्=चलना) पु० नौकर, दास, सेवक, चाकर, पीछे चलनेवाला, २ साथी ।

सं० **अनुचरी** (अनुचर) स्त्री० दासी, लौंड़ी, बांदी ।

सं० **अनुचित** (अन्=नहीं, उचित=ठीक) गु० अयोग्य, ठीक नहीं, नामुनासिब ।

सं० **अनुज** (अनु=पीछे, ज=पैदा हो, जन्=पैदाहोना) पु० छोटाभाई ।

सं० **अनुजा** (अनुज) स्त्री० छोटी बहन ।

सं० **अनुजीवी** (अनु=पीछे, जीविन्=जीनेवाला, जीव=जीना) क० पु० नौकर, दास, सेवक, चाकर, पराधीन ।

सं० **अनुज्ञा** (अनु=पीछे, ज्ञा=जानना) भा० स्त्री० आज्ञा, अनुमति, हुक्म, चिताना, ताकीद ।

सं० **अनुतप्त** (अनु=पीछे + तप्त=तपा हुआ) क० पु० दुःखसे भराहुआ, रंजीदा ।

सं० **अनुताप** (अनु + तप=तपना) भा० पु० पश्चात्ताप, अफ़सोस ।

सं० **अनुदिन** (अनु=हरएक दिन) क्रि० वि० हरएक दिन, दिन दिन, सदा, प्रतिदिन, रोज़मर्रा ।

सं० **अनुनय** (अनु + नी=लेजाना) भा० पु० विनय, शिक्षा, अदब, नसीहत ।

सं० **अनुनासिक** (अनु=पीछे, नासिका=नाक) गु० सानुनासिक, जो अक्षर मुँह और नाक से बोले जायँ, जैसे (ङ,ञ,ण,न,म) और अनुस्वार ।

सं० **अनुपकारी** (अन् + उप + कारी, कृ=करना) क० पु० उपकाररहित, बेफ़ैज़ ।

सं० **अनुपम** (अन्=नहीं, उपमा=बराबरी) गु० अनूप, उत्तम, अपूर्व, जिसकी बराबरी न होसके, बेमिसाल, बेनज़ीर ।

सं० अनुप्रयुक्त कर्म० पु० अयोग्य, नामुनासिब ।

सं० अनुपल (अनु=कम, थोड़ा, पल=निमेष) पु० पल का साठवां हिस्सा, सेकण्ड ।

सं० अनुपात (अनु=पीछे, बराबर, पत्=गिरना) पु० त्रैराशिक, बराबर, सम्बन्ध ।

सं० अनुपान (अनु + पा=पीना) ण० औषधिका सहकारी, सहयोगी, ज़रिया, बदर्क़ा ।

सं० अनुबन्ध (अनु + बन्ध=बांधना) बांधना, मिलाना, मेल, मिलाप, धातुका गणसूचक पूर्व पर अक्षर ।

सं० अनुभव (अनु=पीछे, भू=होना) भा०पु० ज्ञान, यथार्थज्ञान, विचार, अनुमान, सोचना, समझना, बूझना, तजरुबा ।

सं० अनुमत (अनु + मत , मन्=सोचना) कर्म० पु० सलाह दिया गया ।

सं० अनुमति भा० स्त्री० सलाह, सम्मति ।

सं० अनुमान (अनु=पीछे, मा=मापना) भा०पु० अन्दाज़ा, अटकल, विचार, क़यास, तख़मीना ।

सं० अनुमानी क० पु० विचारने वाला, अन्दाज़ करनेवाला ।

सं० अनुमित (अनु+मित, मा=मापना) कर्म० पु० अटकला गया, क़यास कियागया ।

सं० अनुमेय (अनु + मेय, मा=मापना) कर्म० पु० अन्दाज़ के लायक़ ।

सं० अनुमोदन (अनु + मुद=हर्षित होना) प्रशंसा, समर्थन, ताईद करना ।

सं० अनुमोदित (अनु + मुद) क० पु० आह्लादित, आनन्दित, ख़ुश ।

सं० अनुयायी (अनु=पीछे, यायी=जानेवाला, या=जाना) क० पु० पीछे जानेवाला, दास, नौकर, अनुचर, पैरोकार ।

सं० अनुयोग (अनु + युज्=मिलना) भा० पु० तिरस्कार, निरादर, बेक़दरी ।

सं० अनुयोजन भा० पु० पूंछपांछ, अपील ।

सं० अनुयोक्ता
अनुयोजक } (अनु + युज्=मिलना, मिलाना) पूंछपांछ करनेवाला, अपीलांट, अर्थात् अपील दायर करनेवाला ।

सं० अनुयोज्य कर्म० पु० निन्दायोग्य, क़ाबिल हिक़ारत, रिस्पांडेंट अर्थात् वह जिसपर अपील कीजाय ।

सं० अनुरक्त (अनु=साथ, रञ्ज्=रंगना) क० पु० प्रेमी, अनुकूल, शायक़, आशिक़ ।

सं० अनुराग (अनु=साथ, रञ्ज्=रंगना) भा० पु० प्यार, स्नेह, प्रीति, छोह, मोह, मुहब्बत ।

सं० अनुरागी क० पु० प्रेमी, स्नेही, मुहब्बती ।

सं० अनुराधा (अनु=पीछे, राधा==विशाखा नक्षत्र, राध्=पूरा करना) स्त्री० सत्रहवां नक्षत्र ।

सं० अनुरुद्ध
अनुरोधित (अनु+रुध्=रोकना) कर्म० पु० रोका गया, क़ैद कियागया ।

सं० अनुरूप (अनु=बराबर, रूप=डौल) गु० बराबर, तुल्य, समान, एकसा, सदृश, अनुसार, अनुहार।

सं० अनुशासक (अनु+शास्=सिखाना) क० पु० हाकिम ।

सं० अनुरोध
अनुरोधन (अनु+रुध्) भा० पु० अपेक्षा, निस्बत, २ रोकना, ३ आज्ञापालन, आशय, सम्मति, तामील लिहाज़ ।

सं० अनुरोधक
अनुरोधी क० पु० रोकने वाला, आज्ञापालक, फ़र्माबरदार।

सं० अनुलेप
अनुलेपन (अनु+लिप्=लगाना) भा० पु० उबटन लगाना, तेल लगाना, सुगंधादिक लेप ।

सं० अनुलोम (अनु=पीछे, लोम=बाल) गु० बालसहित, यथाक्रम, विलोम ।

सं० अनुवाद (अनु+वद्=कहना) भा० पु० बारबार कहना, उल्था, तर्जुमा ।

सं० अनुवृत्ति (अनु+वृत्ति=बर्तना) मार्ग, सेवा, ज़रिया, तामील ।

सं० अनुवेदना (अनु+विद्=विचारना) भा० स्त्री० सहानुभूति, हमदर्दी ।

सं० अनुवर्जन
अनुवर्तन (अनु+वृज्=वर्जना, बर्तना) पीछेचलना, अनुगमन, पैरवीकरना।

सं० अनुशासन (अनु=पास, शास्=सिखाना) भा० पु० आज्ञा, हुक्म, शिक्षा, सीख ।

सं० अनुशीलन (अनु+शील=अभ्यास करना) भा० पु० आलोचन, अभ्यास करना, सेवन ।

सं० अनुशोचन (अनु+शुच=रंज करना) भा० पु० पश्चात्तापकरना, अफ़सोस करना ।

सं० अनुष्ठान (अनु+स्था=ठहरना) भा० पु० आरम्भ, आग़ाज़, अमल ।

सं० अनुसन्धान (अनु=पीछे, सम्=अच्छी तरह से, धा=रखना) पु० खोज, पता, खोजना, तलाश, अन्वेषण, साज़िश, तहक़ीक़ात, पूंछपांछ, क़स्द, प्रबन्ध, इन्तिज़ाम ।

प्रा० अनुसरना
अनुहरना सं० (अनु+सरण, अनु=

पीछे, सृ=जाना) क्रि०अ० पीछे चलना, २ साथ चलना ।

सं०अनुसार(अनु=पीछे, सृ=जाना) भा०पु० बराबर, मुताबिक़, समान।

सं०अनुस्यूत=ओतप्रोत, परस्पर, बाहम, ख़ल्तमल्त ।

सं०अनुस्वार (अनु=पीछे, बराबर, स्वृ=शब्द करना) पु० स्वरके सिर पर की बिंदी ं ।

प्रा० अनूठा पु० अनोखा, नया अपूर्व ।

प्रा०अनूप (सं० अनुपम) गु०
अनुप जिसकी बराबरी नहीं, उत्तम, श्रेष्ठ, सबसे अच्छा, बेमिस्ल, २ दलदल ।

सं०अनृत (अन्=नहीं, ऋत=सांच, ऋ=जाना) गु० झूठा, स्त्री०झूठ।

सं०अनेक (अन्=नहीं, एक) गु० बहुत, ढेर, अधिक, कईएक, एकनहीं ।

प्रा०अनैसे क्रि० वि०कुदृष्टिसे, टेढ़े ।

प्रा०अनोखा गु० अनूठा, अद्भुत ।

सं०अन्त (अम्=जाना) पु० सीमा, आख़िर, सिरा, खूंट, सींव, समाप्ति, पूराहोना, २ नाशहोना, मौत, गु० पिछला, शेष, निदान ।

सं० अन्तःकरण (अन्तर्=भीतर, करण=इन्द्रिय) पु० मन, चित्त, हृदय, जी ।

सं० अन्तःपुर पु० स्त्रियों के रहने का घर, ज़नानख़ाना, हरम ।

सं० अन्तकाल (अन्त=पिछला, काल=समय) पु० मरनेका समय, मौत का समय, मौतकी घड़ी ।

प्रा० अन्तड़ी (सं० अन्त्र, अति=बांधना) स्त्री० आंत, अन्तरी ।

सं०अन्तर (अन्त=सीमा, रा=देना) पु० भीतर, बीच, बीचकी जगह, दूरी, २ मन, ३ भेद, फ़रक़, गु० और क्रि० वि० भीतर, बीच में ।

सं० अन्तरकथा (अन्तर=बीच की, कथा=बात) स्त्री० बात में बात ।

सं०अन्तरङ्गमित्र पु० दिली दोस्त।

सं०अन्तरङ्गसभा (अन्तर + ग + सभा) सभा के अन्तरसभा, छोटीसभा ।

प्रा०अन्तरा (सं० अन्तर) पु० भजन अथवा गीत आदि का चरण, पद, गु० बीचका, पास ।

प्रा०अन्तरिया (सं० अन्तर) पु० तिजारी, जो तप एक दिन बीचमें आकर तीसरे दिन फिर आवे, अन्तरा, तप ।

सं०अन्तरिक गु०भीतरी, अन्दरूनी।

सं०अन्तरिक्ष (अन्तर्=स्वर्ग और
अन्तरीक्ष पृथ्वी के बीच, ईक्ष्=देखना वा अन्तर्=भीतर, ऋक्ष=तारा अर्थात् जिसमें तारे हैं) पु० आकाश, शून्य, अधर ।

सं०अन्तरित (अन्तर + इत=गया

हुआ) मध्यका, बीचका, दर्मियानी ।

सं० अन्तरितकृषक (अन्तरित + कृषक, कृष्=जोतना) कृ० पु० शिकमी काश्तकार, वह किसान जो मौरूसी काश्तकार से लेकर ज़मीन जोतता है ।

प्रा० अन्तरी (सं० अन्त्र, अति=बांधना) स्त्री० आंत, अन्तड़ी ।

प्रा० अन्तरियांजलना बोल० बहुत भूख लगना, भूखोंमरना ।

प्रा० अन्तरीकाबलखोलना बोल० भूख में पेट भरके खाना ।

प्रा० अन्तरियों में आग लगना बोल० बहुत भूखा होना, बहुत भूख लगना, बहुत भूखों मरना ।

सं० अन्तरीप (अन्तर्=भीतर, आप=पानी) पु० धरती का वह टुकड़ा जो समुद्र में दूर तक चला गयाहो जैसे कन्याकुमारी ।

प्रा० अन्तर्जामी }
सं० अन्तर्यामी } (अन्तर्=मन, यम्=ठहरना, फैलना) गु० मन की बात जानने वाला, घटघटनिवासी, पु० परमेश्वर, ईश्वर, परमात्मा ।

प्रा० अन्तर्धानहोना }
अन्तर्ध्यानहोना } (सं० अन्तर्द्धान, अन्तर्=भीतर, धा=रखना, पकड़ना) क्रि० अ० अलख होना, छिपजाना, नहीं दीखना, बिलाजाना, गुप्तहोना, ग़ायब होना ।

सं० अन्तःपट (अन्तर्=बीचमें, पट=कपड़ा) पु० परदा, ओट, आड़, क़नात, टट्टी ।

सं० अन्तर्वृत्ति भा० स्त्री० दिलीहाल ।

सं० अन्तर्हित (अन्तर्=भीतर, धा=रखना) गु० अन्तर्द्धान, छिपा, अलख, अदृश्य ।

सं० अन्तिक पु० समीप, मित्र, चूल्हा, जेठी बहिन ।

सं० अन्तिम गु० पिछला, आख़िरी ।

सं० अन्त्रावलि (अन्त्र=आंत, अति=बांधना, अवलि=पांत) स्त्री० बहुत सी अन्तड़ियां, अन्तड़ियों की पांत । जैसे, धरि गाल फारहिं उरबिदारहिं गलअंत्रावलि मेलहीं रामायणलं० ।

सं० अन्ध (अन्ध्=अंधा होना) गु० अंधा, सूरदास, बिन आंखका, पु० अंधेरा ।

सं० अन्धकार (अन्ध=अन्धा, कार=करनेवाला, कृ=करना) पु० अंधेरा, अंधियारा ।

सं० अन्धकूप (अन्ध=अन्धा, कूप=कुआं) पु० अन्धाकुआं, ऐसा कुआं जिसमें घास पात जमजाता है और पानी नहीं होता ।

प्रा० अन्धड़ (सं० अन्ध) पु० आंधी, तूफ़ान ।

सं० अन्धपरम्पराग्रस्त कर्म० पु० पुरानी रीतों में फँसाहुआ, क़दीम रस्मों में मुब्तिला ।

प्रा० अन्धला } (सं०अन्ध) गु०
अन्धा } बिन आंख का, सूरदास, आंख फूटा, नेत्रहीन ।

प्रा० अन्धाधुन्ध बोल० अंधेर, बेहिसाब, बेठिकाना, बहुतही बहुत अन्धों की तरह, आंख मूंदे ।

प्रा० अन्धाधुन्धलुटाना बोल० उड़ाना, बेहिसाब ख़र्च करना, बेठिकाने ख़र्च करना, बेफ़ायदह ख़र्च करना, आंख मूंदे ख़र्च करना ।

सं०अन्धसुत (अन्ध=अन्धा,सुत=बेटा) पु०अन्धेका बेटा,अन्धे राजा धृतराष्ट्र का बेटा दुर्योधन ।

प्रा० अन्धियारा (सं० अन्धकार) पु० अंधेरा, अन्धकार ।

प्रा० अंधेर (सं०अन्धकार) पु०अंधेरा,अन्याय,बखेड़ा,उपद्रव,अन्धाधुन्ध, उत्पात, अनीति, बलवा,दंगा ।

प्रा० अंधेरकरना बोल० अन्याय करना,अनीति करना,उपद्रव करना, अन्धाधुन्ध करना ।

प्रा० अंधेरा (सं०अन्धकार) पु०अंधियारा, अन्धकार ।

प्रा० अंधेरीकोठरी बोल० ऐसी कोठरी जिसमें अंधेरा हो, २ पेट, गर्भस्थान, कोख, धरन ।

सं० अन्न (अद्=खाना वा अन्=जीना) पु० नाज,अनाज,खाना ।

सं० अन्नकूट (अन्न=खाना, कूट=ढेर) पु० दीवाली के दूसरे दिन का पर्व, जिसमें हिन्दूलोग बहुत सा खाना और तरकारियां बनाकर अपने देवताओं को भोग चढ़ाते हैं ।

सं० अन्नजल } बोल० दानापानी ।
अन्नपानी } संयोग, पु० खाना पीना ।

सं० अन्नदाता(अन्न=अनाज,दाता=देनेवाला, दा=देना) बोल०पालनेवाला, बचानेवाला, मालिक, दयावन्त, उपकारी, दाता ।

सं० अन्नपूर्णा(अन्न=खाना,पूर्णा=भरनेवाली) स्त्री० दुर्गा का नाम, योगमाया, देवी ।

सं० अन्नप्राशन (अन्न=अनाज वा खाना, प्राशन=खिलाना, प्र=शुरूअ, अश्=खाना) पु० जब बालक छः महीने का होता है तब पहली बार अनाज अथवा खीर आदि खिलाना ।

सं० अन्य (अन्=जीना) गु०और, दूसरा, ग़ैर ।

सं० अन्यतर गु० कोई एक ।

सं० अन्यथा (अन्य=और, था=प्रकार अर्थमें प्रत्यय) क्रि० वि०और प्रकार से, और तरह से, नहीं तो गु० उलटा ।

सं० अन्याय (अ=नहीं, न्याय=इन्साफ़, धर्म) बेइन्साफ़ी, अधर्म, उपद्रव, ज़ुल्म ।

सं० अन्यायी (अन्याय) गु०

अन्याय करनेवाला, अधर्मी, दुष्टात्मा, ज़ालिम ।

सं० अन्योन्य (अन्यः+अन्य) गु० आपस में, एक दूसरे को, परस्पर, बाहम ।

सं० अन्योन्याश्रित गु० एक दूसरे के साथ संबंध रखनेवाला, लाज़िम मल्ज़ूम ।

सं० अन्वय (अनु=पीछे, इण्=जाना) पु० वंश, कुल, २ पदच्छेद, श्लोक के पदों का संबंध मिलाना, तरक़ीबनहवी ।

सं० अन्वित कर्म० पु० युक्त, शामिल, पूरा ।

सं० अन्वेषण (अनु=पीछे, इष्=जाना) पु० खोजना, पता लगाना, हेरना, ढूंढ़ना, तलाश करना ।

प्रा० अन्हवाना (अन्हाना) क्रि० स० नहलाना, अंग धोना, स्नान कराना ।

प्रा० अन्हान (सं० स्नान वा अवगाहन) पु० स्नान, अन्हाना ।

प्रा० अन्हाना (सं० अवगाहन वा स्नान (क्रि० अ० अन्हाना, स्नान करना, शरीर साफ़ करना ।

सं० अप, उप० से, उलटा, हानि, नहीं, बुरा, भेद, छिपाव, बुरीतरह से, अलग, भिन्न ।

सं० अपकर्ष (अप+कृष्=खींचना) भा० पु० खींचना, न्यूनता, निरादर ।

सं० अपकार (अप=उलटा वा बुरा वा हानि, कृ=करना) भा० पु० बिगाड़, बुरा करना, हानि ।

सं० अपकारी क० पु० हानि करने वाला, नुक़सान करनेवाला ।

सं० अपकीर्त्ति (अप=बुरा, कीर्त्ति =यश) भा० स्त्री० बुराई, बदनामी, अपयश, कुयश ।

सं० अपक्व गु० कच्चा, ख़ाम ।

सं० अपगति भा० स्त्री० दुर्दशा, बुरीहालत ।

सं० अपगा (अप=नीचे, गम्=जाना) स्त्री० नदी, दरिया ।

सं० अपचय (अप+चि=चुनना) भा० पु० गिरना, हानि, नुक़सान ।

प्रा० अपडर भा० पु० मिथ्याडर, अपना से डर ।

प्रा० अपत गु० पापी, अप्रतिष्ठित, बेइज़्ज़त ।

प्रा० अपति(सं० आपत्ति) भा० स्त्री० अपमान, मुसीबत, बेइज़्ज़ती, २ पतिरहित, उपपति ।

सं० अपत्य (अ=नहीं, पत्=गिरना) जिसके द्वारा पितर न गिरनेपावें, पुत्र, सन्तान, औलाद ।

प्रा० अपना सं० सर्वना० निजका, आपका ।

प्रा० अपनीगाना, बोल० अपनी तारीफ़ करना, अपनेतईं सराहना ।

प्रा० अपनाना क्रि० स० अपना करना ।

प्रा० **अपनायत** स्त्री०नाता, सबन्ध, भाईचारा, घराना ।

सं० **अपनीत** (अप+नीत, नी=ले जाना) कर्म० पु० हटायागया, दूर कियागया ।

सं० **अपभ्रंश** (अप=से,भ्रंश=गिरना) भा० पु० गँवारी बोलचाल, व्याकरण की रीति से अशुद्ध शब्द, व्याकरणविरुद्ध शब्द, बिगड़ाहुआ शब्द ।

सं० **अपमान** (अप=उलटा, मान=आदर) पु० अनादर, निरादर, तिरस्कार, हलकापन, बेइज़्ज़ती ।

सं० **अपयश** (अप=उलटा, यश=नामवरी) पु० बुराई, बदनामी, अपकीर्त्ति, बुरानाम ।

सं० **अपर** (अ=नहीं, पृ=भरना वा अ=नहीं; पर=दूसरा) गु० और, दूसरा, एक और, दूसरा कोई ।

सं० **अपरमित** (अ+पर+मित, मा=नापना, मापना) बेपरिमाण, बेहद, अनगिनत ।

सं० **अपरम्पार** (अ=नहीं, पर=दूसरा, पार=अन्त) गु० अपार, अनंत, बेहद, जिसका पार नहीं ।

सं० **अपराध** (अप=बुरीतरह से, राध=पूरा करना) पु० पाप, दोष, अधर्म, अन्याय, जुर्म, गुनाह ।

सं० **अपराधी** (अपराध) क० पु० पापी, दोषी, अधर्मी, गुनाहगार, मुजरिम ।

सं० **अपराह्न** (अपर=पिछला, अह्न=दिन) पु० तीसरापहर, सेपहर ।

सं० **अपरिचित** गु० बेजान पहिचान, अनजान, अजनबी ।

सं० **अपरिष्कार** भा० पु० अपवित्रता, मैलापन ।

सं० **अपवर्ग** (अप=भिन्न, अलग, वर्ग=पद, दर्जा, अर्थात् सब दर्जों से अलग और बढ़कर है) पु० मुक्ति, मोक्ष, परम्पद, परमगति, छुटकारा, निस्तारा, उद्धार, नजात ।

सं० **अपवाद** (अप=बुरा, वद्=कहना) पु०गाली, निन्दा, दोष, बुराई, बदनामी ।

सं० **अपवाहन** (अप+वह्=लेजाना, फुसलाना, लोगों को बहका लेजाना) एक राज्यसे दूसरे राज्य में लेजाकर बसाना ।

सं० **अपवित्र** (अ=नहीं, पवित्र=शुद्ध) गु० अशुद्ध, मैला, अपावन, नापाक ।

सं० **अपशकुन** (अप=बुरा, शकुन=सगुन) पु० बुरासगुन, बुरा जतलानेवाला, अशुभ जतलानेवाला चिह्न ।

सं० **अपशब्द** (अप=बुरा, शब्द) पु० बुराशब्द, अशुद्धशब्द, ऐसा शब्द जिसका कुछ अर्थ नहीं, मुहमिल, २ पाद, गोज़ ।

सं० अपहरण (अप=अलग, हृ=लेजाना) भा० पु० कुर्की ।

सं० अपहरित कर्म० पु० छीनलियागया, हरलियागया ।

सं० अपहारी क० पु० हरनेवाला ।

सं० अपहृत कर्म० पु० कुर्कतहसील ।

सं० अपादान (अप=से, आदान=लेना) भा० पु० जुदाकरना, विभाग, २ व्याकरण में पांचवां कारक ।

सं० अपान (अप=नीचे+अन्=जीना) पु० शरीर के पांच पवनों में से एक जो गुदा से निकलती है, अधोवायु, गोज़, २ कहार, ३ वरुण गु० अपना, २ पानरहित ।

सं० अपाय (अप=बुरीतरहसे, इण्=जाना) पु० बिगाड़, नाश, हानि, २ जुदा होना ।

सं० अपार (अ=नहीं, पार=अन्त) गु० अनन्त, अपरम्पार, अनमिलत, बेहद्द ।

सं० अपावन (अ=नहीं, पावन=पवित्र) गु० अशुद्ध, अपवित्र, मैला ।

प्रा० अपाहज गु० लूला, लँगड़ा, सुस्त ।

सं० अपि उप० भी, तिसपर भी, इसके सिवाय, इसपर भी, बल्कि, यहांतक, तोभी, तब भी, जोभी, यद्यपि, निश्चय, केवल, और भी, पास, मिला हुआ ।

अं० अपील अनुयोजन, मुराफ़ा, दुबारा नालिश, बड़े हाकिम से फ़रयाद ।

अं० अपीलाँट अनुयोजक, अपील करनेवाला ।

प्रा० अपूत (सं० अपुत्र, अ=नहीं, पुत्र=बेटा) गु० बिन लड़केवाला, निर्वंश, २ कुपूत ।

सं० अपूत (अ=नहीं, पू=पवित्रकरना) कर्म० पु० अपवित्र, नापाक ।

सं० अपूर्ण (अ=नहीं, पूर्ण=पूरा) गु० पूरा नहीं, अधूरा, नातमाम ।

सं० अपूर्व (अ=नहीं, पूर्व=पहले, अर्थात् जो पहले न देखा गया) गु० जिसको पहले कभी नहीं देखा हो, उत्तम, अनूप, अनोखा, नया, अजीब ।

सं० अपृष्ट (अ=नहीं, प्रच्छ्=पूंछना) कर्म० पु० वे पूंछे ।

सं० अपेक्षा (अप+ईक्ष्=देखना) स्त्री० आशा, भरोसा, इच्छा, ख़्वाहिश, ज़रूरत, २ सम्बन्ध, निस्बत ।

सं० अपेय (अ+पेय, पा=पीना) कर्म० पु० नहीं पीने योग्य ।

प्रा० अपेल (अ=नहीं, पेलना=टालना) गु० अचल, अटल, अमिट ।

सं० अप्रकाशित कर्म० पु० प्रकाशहीन, अँधेरा, तारीक ।

सं० अप्रचारित कर्म० पु० चलन बाहर, ग़ैर मुरौवज ।

सं० अप्रतिष्ठा (अ=नहीं, प्रतिष्ठा=

बड़ाई) भा० स्त्री० अपयश, अपमान, बुराई, बदनामी ।

सं०अप्रतिहत कर्म०पु० बेरोक, नाश रहित, सावधान ।

सं० अप्रधान (अ=नहीं, प्रधान=मुख्य) गु०जो मुख्य नहीं, अमुख्य, २ आधीन ।

सं० अप्रमाणिकोन्नति (अ+प्रमाणिक+उन्नति) भा० स्त्री० शर्तीतरक्की ।

सं०अप्रमाणीय गु० अविश्वासीय, बे एतिबार ।

सं०अप्रमेय (अ=नहीं, प्रमेय=मापने योग्य, प्र=बहुत, मा=मापना) कर्म० पु० अपार, अनन्त ।

सं०अप्रसन्न (अ=नहीं,प्रसन्न=खुश, हर्षित) गु० दुखी, मलीन,उदास, नाराज़ ।

सं० अप्रिय (अ=नहीं, प्रिय=पियारा) गु० दुःखदायी, नापसन्द, नागवार, पु० शत्रु, दुश्मन ।

सं० अप्रीतिकर क० पु० निठुर, बे मुहब्बत, बे खुल्क़, बे उन्स ।

सं० अप्सरा (अप्=पानी, सृ=चलना, अर्थात् जो समुद्र से पैदा हुई, वा जिसको न्हानेकी बहुत रुचि हो) स्त्री०स्वर्ग की स्त्री, इंद्रकी सभा में नाचनेवाली, उर्बशी, रम्भा आदि ।

प्रा०अफल (अ=नहीं, फल=लाभ) गु० वृथा, निष्फल, बे फ़ायदा ।

प्रा०अफसोस अहः ओह, अचम्भा, पछताव ।

प्रा० अब (सं० अद्य) क्रि० वि० इस घड़ी, इस समय, अभी २, इसके पीछे ।

प्रा०अबका बोल० इस बार का ।

प्रा० अबकी बोल० इस बार, इस बरस ।

प्रा०अबतक
अबतलक
अबतोड़ी } बोल० इस घड़ी तक, इस समय तक ।

प्रा०अबतब होना बोल० मौतका समय पास आना, मरनेपै होना ।

सं० अबन्धित (अ=नहीं, बन्ध्=बांधना) कर्म० पु० बन्धनरहित, अयुक्त, स्वच्छन्द, मुक्त ।

सं० अबल अ=नहीं, बल=ज़ोर, गु० पु० निबल, निर्बल, दुबला, कमज़ोर ।

सं० अबला (अबल) गु० स्त्री० निबली, दुबली, कमज़ोर, स्त्री० लुगाई, स्त्री, नारी ।

सं० अबाक् अ=नहीं, वाक्=बोल, गु० अबोल, चुप, गूंगा, मौन ।

सं० अबुध (अ=नहीं, बुध=पण्डित) गु० अबूझ, मूर्ख, असमझ, अज्ञानी, बेवकूफ़, जाहिल ।

प्रा०अबूझ (सं० अबुध) गु० मूर्ख, असमझ, अनसमझ, अज्ञानी ।

प्रा० **अबेर** (सं० अबेला, अ=नहीं, बेला=समय) स्त्री० देरी, देर, ढील, बिलम्ब, कुवेला ।

प्रा० **अबोल** (अ=नहीं, बोल=बोलना) गु० चुपचाप, अवाक्, खामोश ।

सं० **अब्ज** (अप्=पानी, जन्=पैदा होना) पु० कमल, पद्म, २ चांद, चौदह रत्न जो समुद्र से निकले ।

सं० **अब्द** (अप्=पानी, दा=देना) पु० बादल, मेघ, २ बरस, साल।

सं० **अब्धि** (अप्=पानी, धा=रखना) पु० समुद्र, सागर, सातकी गिनती।

सं० **अभय** (अ=नहीं, भय=डर) गु० निडर, निर्भय, निधड़क ।

सं० **अभयदान** भा० पु० शरणदेना, जानबख़्शी ।

प्रा० **अभाग** (सं० अभाग्य) पु० बुराभाग, दुर्दशा, खोटी दशा, बद क़िस्मती ।

प्रा० **अभागा** (सं० अभाग्य) गु० मन्दभागी, भाग्यहीन, कमबख़्त, अभागी ।

सं० **अभाग्य** (अ=नहीं, भाग्य=भाग) पु० अभाग, बुरा भाग, बुरी दशा, दुर्दशा, कुदशा, गु० अभागा, मंदभागी, कमबख़्त ।

सं० **अभाव** (अ=नहीं, भाव=होना, भू=होना) पु० नहीं होना, नाश, अदममौजूदगी ।

सं० **अभि** उप० पास, को, इच्छा, चाह, बार बार, चारों ओर से, बहुत, साम्हने, ऊपर, अधिक, पहिले ।

सं० **अभिख्या** स्त्री० शोभा, सुंदरता, ख़ूबसूरती ।

सं० **अभिगमन** भा० पु० निकट जाना, पास जाना ।

सं० **अभिजित्** पु० नाम नक्षत्र जो उत्तराषाढ के चतुर्थ चरण और श्रवण के प्रथम चरण से बनता है, योधा, जीतने वाला ।

सं० **अभिधान** पु० कोष, शब्दसंग्रह, लुग़त ।

सं० **अभिनय** पु० नाटक का खेल।

सं० **अभिप्राय** (अभि=चाह, प्र=बहुत, इण्=जाना वा अभि=चाह, प्रिञ्=पूरा करना) पु० मतलब, प्रयोजन, अर्थविचार, इरादा, मनोरथ, आशय, इच्छा, चाह, सम्मति ।

सं० **अभिप्रेत** कर्म० पु० वांछित, मुराद मक़सूद ।

सं० **अभिमत** (अभि=बहुत, मन्=मानना वा जानना) कर्म० पु० चाहाहुआ, मानाहुआ, पसंद कियाहुआ, सम्मत, वांछित ।

सं० **अभिमर्षण** (अभि + मृष्=छूना) भा० पु० सम्भोग, सुहबत, परस्त्रीगमन, छूना ।

सं० अभिमान (अभि=ऊपर, अधिक, मन्=जानना) पु० घमंड, अहंकार, मद, दाप, दर्प, ग़रूर, शेख़ी, अकड़।

सं० अभिमानी (अभिमान) क० पु० घमंडी, अकड़बाज़, शेख़ीबाज़, अहंकारी।

सं० अभियुक्त **अभियोग्य** (अभि=सामने, युज्=जोड़ना) र्म्म० पु० प्रतिवादी, मुदआअलेह।

अभियोग पु० नालिश, मुक़दमा।

सं० अभियोगी **अभियोजक** (अभियोक्ता, क० पु० वादी, मुदई।

सं० अभिमुख (अभि=सामने, मुख=मुँह) शब्दयो० अव्य० सामने, रूबरू, पेश।

सं० अभिराम (अभि=सामने, रम्=खेलना) गु० सुन्दर, प्यारा, मनोहर।

सं० अभिलाष **अभिलाषा** (अभि=बहुत, लष=चाहना) भा० स्त्री० इच्छा, चाहना, कामना, चाह।

सं० अभिलाषी **अभिलाषुक** क० पु० चाहनेवाला, लोभी, ख़्वाहिशमन्द आर्ज़ूमन्द।

सं० अभिवादन (अभि+वद्=कहना) स्तुति, नमस्कार, बंदगी।

सं० अभिषिक्त (अभि=सामने, सिच्=सींचना) र्म्म० पु० तिलक कियागया।

सं० अभिषेक (अभि=ऊपर, सिच्=सींचना) भा० पु० राजतिलक देने के समय का स्नान, २ मन्त्र देते समय शिरपर पानी डालना, शान्तिस्नान।

सं० अभिसन्धान भा० पु० मिलाप, २ कपट।

सं० अभिसन्धि भा० स्त्री० ख़ूब मेल, धोखा।

सं० अभिसम्पात पु० संग्राम, युद्ध, नाश।

प्रा० अभी (अब+ही) क्रि० वि० इसी घड़ी, इसी दम, इसी समय, तुरन्त।

सं० अभीरु (अ=नहीं, भीरु=डरनेवाला) गु० निर्भय, निर्दोष, पु० महादेव, भैरव, शतावरि।

सं० अभीष्ट (अभि=बहुत, इष्ट=चाहाहुआ, इष्=चाहना) र्म्म० पु० चाहा हुआ, बहुत चाहाहुआ, मनमाना, प्यारा, चहीता, पसन्द।

सं० अभूतपूर्व र्म्म० पु० जैसा कभी पहले नहीं हुआ, अद्भुत, अजीब।

सं० अभ्यन्तर गु० भीतरी, अंदरूनी।

सं० अभेद (अ=नहीं, भेद=छिपी बात) गु० जिसका भेद नहीं जाना जाय, २ जाना हुआ, ३ जो नहीं टूटसके, जिसमें कुछ नहीं घुससके, पु० मेल।

सं० अभ्यर्थना (अभि=सामने,

अर्थना=मांगना) भा० स्त्री० निवेदन, दरख़्वास्त ।

सं०अभ्यस्त कर्म० पु० आदी, खूगर।

सं०अभ्यागत अभि=सामने, पास, आगत=आयाहुआ, आ, गम्=आना) पु० पाहुना, अतिथि, मेहमान गु० आया हुआ ।

सं० अभ्यास (अभि=बारबार, अस्=फेंकना, और अभि उपसर्ग के साथ आनेसे इसका अर्थ दोहराना होता है) पु० साधन, चिंतन, बारबार करना, रब्त, मश्क़ ।

सं०अभ्यासक
अभ्यासी } क० पु०अभ्यास करनेवाला ।

सं० अभ्युदय (अभि + उदय, उत् + इ=जाना) भा० पु० वृद्धि, ऐश्वर्य्य, हश्मत ।

सं० अभ्र (अभ्र=जाना) पु० बादल, मेघ, २ आकाश, अब्र ।

सं० अमङ्गल (अ=नहीं, मङ्गल=कुशल, कल्याण) गु० अशुभ, बुरा, पु० अकल्याण, अशुभ ।

प्रा० अमचूर (सं० आम्रचूर्ण, आम्र=आम,चूर्ण=चूर)पु० सुखाये आम के टुकड़े वा फाँक ।

सं० अमत गु० मतरहित, धर्महीन, लामज़हब ।

सं०अमर (अ=नहीं,मृ=मरना)गु० जो कभी नहीं मरे, अविनाशी, सदा जीतारहनेवाला पु० देवता, २ अमरकोष का बनानेवाला ।

सं०अमरपति (अमर=देवता,पति=स्वामी) पु० इन्द्र, देवताओं का राजा ।

प्रा० अमरपुर
अमरलोक } (अमर=देवता, पुर, लोक=जगह) पु० स्वर्ग, बहिश्त ।

प्रा० अमराई (सं० आम्रराजि आम्र=आम, राजि=क़तार) स्त्री० आंबों का बाग़ ।

सं०अमरावती (अमर=देवता, वत्=वाली) अर्थात् जिसमें देवता रहते हैं, स्त्री० स्वर्ग, इन्द्रकी राजधानी, देवलोक ।

प्रा०अमरूत (सं० अमृत) पु० एक फलका नाम, अमरूद ।

सं० अमरेश (अमर=देवता, ईश=राजा) पु० देवताओं का राजा, इन्द्र ।

प्रा०अमर्याद
सं०अमर्यादा } (अ=नहीं, मर्यादा=मान, इज़्ज़त) स्त्री० अनादर, अप्रतिष्ठा, अवज्ञा, हलकाई, हलकापन ।

सं० अमर्ष (अ=नहीं, मर्ष=क्षमा) भा० पु० क्रोध, असह्य, गुस्सा ।

सं०अमात्य पु० भूमिका मंत्री,वज़ीर आराज़ी ।

सं०अमल (अ=नहीं, मल=मैल) गु० निर्मल, शुद्ध, साफ़, पवित्र, स्वच्छ ।

प्रा० अमलतास पु० एक औषध का नाम ।

सं०अमान (अ=नहीं, मान=गर्व) गु० मानरहित, निरहंकार, बेग़रूर।

प्रा० अमाना (सं० मान, मा=मापना) क्रि० अ० समाना, भरजाना।

सं०अमाय गु० कपटरहित, बेमक्र ।

सं० अमाया भा० स्त्री० सचाई, दियानतदारी ।

प्रा०अमावस
सं०अमावस्या
सं०अमावास्या
(अमा=साथ वस्=रहना, अर्थात् जिस दिन सूर्य और चांद एक राशिमें रहते हैं, अमा सह वसतोऽस्याश्चन्द्रार्कौ अमावस्या, अमावास्या) स्त्री० अंधेरे पक्षकी पंद्रहवीं तिथि, मावस ।

सं० अमित (अ=नहीं, मित=मापा हुआ, मा=मापना) गु० अप्रमाण, अपार, बेहद, बेठिकाने, जो नापने में नहीं आवे ।

प्रा०अमिय
अमी
(सं० अमृत)पु० अमृत, सुधा, पीयूष, आबहयात ।

सं०अमुक (अदस्=यह) गु० वह, यह कोई, अमकाढमका, फ़लाना, फ़लां ।

सं०अमूलक (अ=नहीं, मूल=जड़) बेजड़, बेबुनियाद, निर्मूल ।

सं०अमृत (अ=नहीं, मृ=मरना) पु० अमी, सुधा, पीयूष, देवताओं का खाना अथवा रस जिसको पीने से अमर होजाते हैं) आबहयात।

सं०अमोघ (अ=नहीं, मोघ=वृथा, मुह्=अचेत होना) गु० सफल, सच्चा, फलदाता, जो ख़ाली न जाय, बेख़ता ।

प्रा०अमोल (सं० अमूल्य, अ=नहीं, मूल्य=मोल) गु० अनमोल, उत्तम, बहुतही बढ़िया, अनोखा, अपूर्व ।

प्रा० अम्ब
आंब
आम
(सं० आम्र, अम्=खाना, जाना) पु० आमका पेड़, आम का फल ।

सं० अम्बक (अम्ब्=जाना) पु० आंख, लोचन, नेत्र, नयन ।

सं० अम्बर (अबि=शब्द करना) पु० आकाश, आस्मान, २ कपड़ा, वस्त्र, नृप अम्बर=राजाओं के कपड़े, ३ सुगन्धित चीज़, ४ अभ्रकधातु ।

सं० अम्बा
अम्बिका
(अबि=जाना, जोप्यार के साथ अपने लड़के के पास जाती है) स्त्री० मा, माता, जननी, २ दुर्गा, देवी, भगवती, पार्वती, जगज्जननी ।

सं०अम्बु (अबि=शब्द करना) पु० पानी ।

सं०अम्बुकण पु० ओस, शबनम ।

सं० अम्बुज (अम्बु=पानी, ज=पैदा हुआ, जन्=पैदा होना) पु० क

मल, पद्म २ चांद ।

सं०अम्बुद (अम्बु=पानी, द=देने वाला, दा=देना) पु० बादल, बदल, मेघ, घन, घटा, अभ्र ।

सं० अम्बुधि (अम्बु=पानी, धा= रखना) पु० समुद्र, सागर, सिंधु।

सं०अम्बुनिधि (अम्बु=पानी, निधि =जगह वा ख़ज़ाना) पु० समुद्र, सागर, सिन्धु ।

सं०अम्बुनाथ (अम्बु=पानी, नाथ= मालिक) पु० समुद्र, सागर ।

सं०अम्बुवाह (अम्बु=पानी, वह= लेजाना) बादल, मेघ, अभ्र ।

सं०अम्भस (अभि=शब्द करना) पु० पानी, जल, नीर, तोय, वारि।

सं०अम्भोज (अम्भस्=पानी, जन् =पैदा होना) पु० जलज, कमल, पद्म ।

सं०अम्भोद (अम्भस्=पानी, द= देनेवाला, दा=देना) पु० बादल, मेघ ।

सं०अम्भोधर अम्भस्=पानी, धा= रखनेवाला, धृ=रखना)पु०बादल।

सं०अम्भोधि (अम्भस्=पानी, धा= रखना) पु० समुद्र, सागर ।

सं० अम्भोनिधि (अम्भस्=पानी, निधि=जगह वा भंडार) पु० समुद्र ।

प्रा० अम्मा (सं० अम्बा) स्त्री० मा, माता ।

सं० अम्ल (अम्=जाना) गु०खट्टा ।

प्रा० अम्लि (सं० अम्ल=खट्टा) स्त्री० इमली, अमली, चिंचा ।

प्रा० अय (सं० अयस् इ=जाना) पु० लोहा, शोग, प्रेम से पुकारने के लिये संबोधन, यह ।

सं० अयन (अय्=जाना) पु० मार्ग, रस्ता, २ चाल, ३ आधा बरस, विषुवत् रेखा के उत्तर वा दक्षिण की ओर सूर्य का रस्ता, ४ घर, स्थान ।

सं० अयश (अ=नहीं, यश=नामवरी) पु० अपयश, बुराई, बदनामी, अपकीर्ति ।

प्रा० अयशी (सं० अयशस्वी) गु० बदनाम ।

प्रा० अयाना (सं० अज्ञान) गु० मूर्ख, अबूझ, अनसमझ, भोला ।

सं० अयुक्त (अ=नहीं, युक्त=ठीक) गु० अनुचित, अयोग्य, अनरीत, अन्याय ।

सं० अयुत (अ=नहीं, युत=मिलना, गिनना) गु० दशहज़ार ।

सं० अयोग्य (अ=नहीं, योग्य= ठीक) गु० अयोग, अनुचित, नामुनासिब ।

सं० अयोध्या (अ=नहीं, युध्= लड़ना) स्त्री० अवध, सूर्यवंशियों की राजधानी जो सरयू नदी के तीर पर है ।

प्रा० अरई } स्त्री०बड़ा, कंदा, एक
अरवी } तरकारी का नाम, घुइयाँ, कच्चू ।

प्रा० अरगजा पु० सुगंधित चीज़ ।

प्रा० अरगा (सं० अलग्न, अ=नहीं, लगि=मिलना) गु० अलग, अलगा, जुदा, न्यारा, भिन्न ।

प्रा० अरगाई } गु० अलग, चुप ।
अलगाई }

प्रा० अरगाना (सं० अलग्न) क्रि० सं० अलग करना, जुदा करना ।

प्रा० अरझना क्रि० अ० उलझना, फँसना, बझना ।

प्रा० अरणा (सं०आरण्य=जंगली) पु० जंगली भैंसा ।

सं० अरणि (ऋ=जाना) स्त्री० एक तरह की लकड़ी जिसको घिसकर होम करने के लिये आग निकालते हैं, आग मथने की लकड़ी ।

सं० अरण्य (ऋ=जाना) पु० वन, जंगल ।

सं० अरविन्द (अरा=पहिये का एक भाग उसी के समान दल, विद्=पाना वा होना)पु० कमल, कँवल, पद्म ।

प्रा० अरहट पु० रहट, रेंटा, पानी चढ़ाने की कल ।

प्रा० अरहर (सं० आढ़की, आ= चारों ओर से, ढौकृ=जाना) पु० अरहर, तूर, एक प्रकार का नाज जिसकी दाल होती है ।

सं० अराति (अ=नहीं, रा=देना, जो सुख नहीं देता) पु० वैरी, शत्रु, दुश्मन ।

प्रा० अराधना (सं० आराधन) क्रि० स० पूजना, सेवा करना, मन्त्र जपना ।

सं० अरि (ऋ=जाना) पु० वैरी, शत्रु, दुश्मन, अराति ।

सं० अरिष्ट (रिष्=हिंसा करना) गु० अशुभ, पु० विघ्न, कौआ, वृषभासुरदैत्य, नींबवृक्ष ।

प्रा० अरहू (सं० भ्रू०) स्त्री० तिउरी, भृकुटी ।

प्रा० अरु समुच्चय, और, फिर ।

सं० अरुचि भा० स्त्री० नफ़रत, घृणा, अनिच्छा ।

सं० अरुण (ऋ=जाना)पु० सूर्य, २ सूर्य का सारथी, ३ सूर्य का रथ, ४ सिंदूर, कुंकुम, गु०लाल।

सं०अरुणचूड़ } पु० मुर्ग़ा, कुक्कुट ।
अरुणशिखा }

प्रा० अरुणाई (सं० अरुणता, अरुण=लाल) स्त्री० ललाई, बिहान की ललाई, सुर्ख़ी ।

सं० अरुणोदय (अरुण=सूर्य, उदय=निकलना)पु० भोर,तड़का, बिहान ।

सं० अरुणोपल (अरुण=लाल,

उपल=पत्थर) पु० लाल चुन्नी, पद्मराग, २ लाल पत्थर ।

सं० अरुन्तुद (अरु=मर्मस्थल,तुद=काटना) क्लेशकारक, मर्मच्छेदक ।

सं० अरुन्धती स्त्री० वशिष्ठमुनि की स्त्री ।

सं० अरूप (अ=नहीं, रूप=डौल) गु० निराकार, २ कुरूप, भोंड़ा, कुडौल ।

सं० अरोग (अ=नहीं,रोग=बीमारी) गु० भलाचंगा, नीरोग, अच्छा ।

सं० अर्क (अर्च=पूजना वा अर्क=गर्म होना)पु० सूर्य, २ अकवन, आक, मदार ।

सं० अर्गल पु० बिलाई, ज़ंजीर, बेलहन ।

सं० अर्घ (अर्ह=पूजना वा अर्घ=मोल होना) पु० आठ चीज़ मिलाकर ईश्वर को अथवा सूर्य चांद आदि देवता के लिये अर्पण करना, पूजा में सूर्य चांद आदि देवताओं को पानी देना, २ मोल, क़ीमत ।

प्रा० अर्घा (सं० अर्घ) पु० अर्घ देने का बरतन जो नाव के आकार बनता है ।

सं० अर्चक (अर्च=पूजना) पु० पूजनेवाला, पुजारी, सेवक ।

प्रा० अर्चना (सं० अर्चन) क्रि० स०पूजना,पूजा करना,स्त्री०पूजा ।

सं० अर्चा (अर्च्=पूजना) भा० स्त्री० पूजा, सेवा, आराधना ।

सं० अर्चित (अर्च्=पूजना) कर्म० पु० पूजा कियाहुआ, सेवा किया हुआ ।

सं० अर्जन (अर्ज्=इकट्ठा करना) भा० पु० इकट्ठा, कमाई, संग्रह, सञ्चय ।

सं० अर्जुन (अर्ज्=इकट्ठा करना वा जीतना) पु० पाण्डु का तीसरा बेटा, युधिष्ठिरका भाई जो इन्द्र के अंश से पैदा हुआ, २ एक पेड़ का नाम, श्वेत, दिशा ।

सं० अर्णव (अर्णस्=पानी, ऋ=जाना) पु० समुद्र, सागर ।

सं० अर्थ (अर्थ=मांगना वा ऋ=जाना) पु० अभिप्राय, मतलब, तात्पर्य, कारण, प्रयोजन, विचार, इरादा, मनोरथ, लिये, वास्ते, निमित्त, २ धन, मुनाफ़ा ।

सं० अर्थकारी (अर्थ + कृ=करना) क० पु० कार्यसाधक, उपयोगी, मुफ़ीद ।

सं० अर्थशास्त्र पु० राजनीति, हिकमतअमली, पालिसी ।

सं० अर्थात् (अर्थ)समुच्च० अव्य० अर्थ से, जानो, याने ।

सं० अर्थी (अर्थ) गु० धनी, धनवान्, २ मांगनेवाला, याचक, ३ वाद करनेवाला, मतलबी, फ़रयादी,

४ मुर्दे की खाट, रथी ।

प्रा० अर्दावा पु० मोटाआटा, दलिया ।

सं० अर्दित (अर्द्=पीड़ितहोना) र्म्म० पु० दुःखित, कष्टित, मुसीबतज़दा ।

सं० अर्द्ध(ऋध्=बढ़ाना) गु०आधा ।

सं० अर्द्धचन्द्र (अर्ध=आधा, चन्द्र =चांद) पु० आधाचांद, चंद्रबिंदु ँ ।

सं० अर्द्धनिमेष पु० आधापल, आधाक्षण ।

सं० अर्द्धवन्य गु० नीमवहशी ।

सं० अर्द्धरात्र (अर्द्ध=आधी, रात्रि=रात) स्त्री० आधीरात ।

सं० अर्द्धाङ्ग (अर्द्ध=आधा, अंग=शरीर) पु० आधा शरीर, २ पक्षाघात, शीतांग, एक बीमारी जिसमें आधा अंग रहजाता है ।

सं० अर्द्धाङ्गी (अर्द्धांग) स्त्री० लुगाई, स्त्री, नारी, पत्नी, गु० पक्षाघाती ।

सं० अर्पण (ऋ=जाना) पु० देवता की भेंटदेना, भेंट, दान, समर्पण, नज़र ।

प्रा० अर्पणकरना } (सं०अर्पण)
अर्पना } क्रि० स० भेंट चढ़ाना, ईश्वरको या देवताको भेंट देना, सिपुर्द करना, चारज देना ।

प्रा० अर्ब (सं० अर्बुद, अर्ब्=जाना) पु० सौकरोड़, और कहीं कहीं अर्बुद का अर्थ दशकरोड़ भी लिखा है ।

प्रा० अर्ब खर्ब बोल० अपार, बेशुमार, अनगिनत, असंख्यात ।

सं० अर्भ } (ऋ=जाना) पु०
अर्भक } लड़का, बालक, पुत्र, शिशु, गु० छोटा ।

प्रा० अर्राटा पु० बड़ाभारीशब्द, मकान आदिके गिरपड़ने का शब्द, अथवा बाण व गोले का शब्द ।

सं० अर्वाचीन० गु० नया, जदीद ।

सं० अर्हन्त (अर्ह्=पूजना) पु० बौद्धमती, जैन, जैनियों के एक मुनि का नाम ।

सं० अलक (अल्=संवारना) स्त्री० घूंघरवालेबाल, ज़ुल्फ़, लटूरी, लट, घूंघरेबाल, अँगूठिये बाल ।

सं० अलका स्त्री० कुबेरपुरी, दशवर्ष की कन्या ।

सं० अलकावलि (अलक=घूंघरवाले बाल, अवलि=पांत) स्त्री० वेणी, घूंघरवालेबाल, ज़ुल्फ़, घूंघरे बाल, अँगूठिये बाल ।

प्रा० अलक्षि (सं० अलक्ष्मी) गु० धनहीन, दरिद्री, कंगाल, मुफ़लिस ।

सं० अलक्ष्य (अ=नहीं, लक्ष=देखना) र्म्म० पु० अलख, अगोचर, जो देखने में नहीं आवे ।

प्रा० अलक (सं० अलक्ष्य) गु० अनदेखा, अगोचर, जो देखने में नहीं आवे ।

प्रा० अलखित (सं० अ=नहीं,

लक्षित=देखागया) कर्म० पु० नहीं देखा, नहीं जाना गया, बेपता, अबूझा ।

प्रा० अलग } (सं० अलग्न, अ=
अलगा } नहीं, लग्न=लगा हुआ, लग्=मिलना) गु० जुदा, अरगा, न्यारा, भिन्न, अलहदा ।

प्रा० अलगाना (सं० अलग्न) क्रि० स० जुदा करना, अलग करना, न्यारा करना, भिन्न २ करना ।

सं० अलङ्कार (अलम्=शोभा, कार=करना, कृ=करना) पु० गहना, भूषण, शोभा, आभरण, २ साहित्य शास्त्र का एकभाग कविताका गुण दोष बतानेवाला ग्रन्थ, शब्दभूषण, सनअत ।

सं० अलंकृत (अलम्=शोभा, कृ=करना) कर्म० शोभायमान, शोभित, भूषित, सँवाराहुआ, सुधाराहुआ, बनायाहुआ, मुज़ैयन ।

प्रा० अलङ्ग स्त्री० ओर, तर्फ़, छोर, पार, इसअलङ्ग=इसओर, इसपार ।

प्रा० अलता (सं० अलक्त, अ=नहीं, रक्त=लाल अर्थात् जिससे अधिक और कोई लाल नहीं यहां र को ल होगया है) पु० लाखके रंगमें खूब गहरी रंगी हुई रूई जिससे स्त्रियां हाथ पैर रचाती हैं, महौरी ।

प्रा० अलबेला गु० छैला, बांका, छैलछबीला, छैल चिकनिया ।

सं० अलम् (अल् + अम्) अव्य० भूषण, योग्य, निषेध, निवारण, अवधारण, पूरा, सब, काफ़ी, बेफ़ायदा, बस, फ़क़त ।

सं० अलभ्य (अ=नहीं, लभ्=मिलना) कर्म० पु० जो मिल न सके, दुर्लभ, अप्राप्य, नायाब ।

प्रा० अलान (सं० आलान) स्त्री० हाथी के बाँधने की रस्सी, ज़ंजीर आदि ।

प्रा० अलाप (सं० आलाप) भा० पु० राग, तान, स्वर, २ बातचीत, बोल चाल ।

प्रा० अलापना } (सं० आलाप)
आलापना } क्रि० अ० स्वर मिलाना, रागछेड़ना, गाना, तान छेड़ना ।

प्रा० अलापी (अ=बहुत, लप्=कहना) कहनेवाला, बकनेवाला, ग़ुल मचानेवाला ।

प्रा० अलाव पु० धूनी ।

सं० अलि } (अल्=समर्थ होना,
अली } अर्थात् डंक मारने में और गूंजने में जो समर्थ होता है) पु० भौंर, भँवरा, २ बिच्छू, ३ कोयल, ४ काग, ५ शराब, मदिरा ।

सं० अलिनी स्त्री० भ्रमरी, भौंरी ।

सं० अलीक (अल्=रोकना) गु० झूठा, मिथ्या, असार, असत्य,

स्त्री० झूठ ।

सं० अलीन (अ=नहीं, ली=मिलना वा गलना) अयोग्य, हराम, नाजायज़ ।

प्रा० अलीहा (सं० अलीक) गु० झूठ, मिथ्या, दरोग़ ।

प्रा० अलैक पलबा (सं० अलीक प्रलाप) बेहूदा बकना, वाहियात बकना, बेठौर ठीक कहना ।

प्रा० अलैया बलैया (सं० अलि, काग, बलि=बलिदेना) स्त्री० निछावर ।

प्रा० अलोना (सं० अलवण, अ=नहीं, लवण=नमक) गु० बिन लोन का, बे सवाद, फीका ।

सं० अलोभ (अ=नहीं, लुभ्=चाहना) गु० निर्लोभ, संतुष्ट, बेतमअ ।

प्रा० अलोला गु० नासमझ, बेअक़्ल, स्थिर, बेहरकत ।

सं० अलौकिक (अ=नहीं, लौकिक=संसार का) गु० अनोखा, अद्भुत, जो इस लोक का नहीं परलोक का ।

सं० अल्प (अल्=समर्थ होना, वा रोकना) गु० थोड़ा, कुछ, छोटा, क़लील ।

सं० अल्पबुद्धि (अल्प=थोड़ी, बुद्धि=समझ) गु० कमसमझ, मंदबुद्धि, मूर्ख ।

प्रा० अल्लहड़ गु० अनाड़ी, अनसीखा, २ जवान ।

सं० अव उप० से, नीचे, दूर, बीच में, बुरा, नहीं, अनादर, जुदा, फैलाव, निश्चय, आसरा, शुद्ध, हार ।

सं० अवकाश (अव=बीचमें, काश्=चमकना) पु० अवसर, सुबीता, सावकाश, फ़ुरसत, बीचका समय ।

प्रा० अवगाहना (सं० अवगाहन, अव+गाह्=मथना) क्रि० स० मथना, थाहपाना, २ नहाना ।

सं० अवगुण (अव=बुरा, गुण) पु० दोष, खोट, औगुन ।

सं० अवग्रह (अव=नीचे, ग्रह=पकड़ना) भा० पु० रुकावट, रोक, २ समास के पदों का विभाग, ३ हाथियोंका झुंड, ४ आँकुश ।

सं० अवज्ञा (अव=बुरी, ज्ञा=जानना) स्त्री० अनादर, अपमान, २ घिन, नफ़रत ।

सं० अवतंस (अव=निश्चय, तसि=शोभना) पु० गहना, भूषण, २ कान का गहना, झुमका, कर्णफूल ।

प्रा० अवतरना (सं० अवतरण, अव=नीचे, तॄ=पारहोना) क्रि० अ० अवतार लेना, उतरना, विष्णु का अवतार लेना ।

सं० अवतार (अव=नीचे, तॄ=पार

होना) भा० पु० जन्म, प्रकट, उत्पन्न, विष्णुका जन्म लेना, विष्णु के चौबीस अवतार हैं उन में से दश अवतार बहुत प्रसिद्ध हैं जैसे १ मत्स्य, २ कच्छप, ३ वराह, ४ नृसिंह, ५ वामन, ६ परशुराम, ७ रामचन्द्र, ८ श्रीकृष्ण, ९ बुध, १० कल्की ।

सं० अवदान (अव=नीचे, दा=काटना) भा० पु० वध, क़त्ल, मारडालना, पराक्रम, उल्लंघन ।

प्रा० अवदीच (सं० उदीचि=उत्तर दिशा, उत्=ऊपर, अञ्च्=जाना) पु० गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति ।

सं० अवद्य (अ=नहीं, वद्य=कहने योग्य, वद्=कहना) पु० पाप, दोष, अपराध, गु० नीच, पापी, निन्दा करने योग्य, नहीं कहने योग्य ।

प्रा० अवध (सं० अवधि, अव=दूर, धा=रखना) स्त्री० वचन, सीमा, सीव, २ समय, मुद्दत, ३ (सं० अयोध्या) पु० अवध देश, ४ (सं० अवध्य, अ=नहीं, वध्य=मारने योग्य, वध्=मारना) गु० नहीं मारने योग्य ।

सं० अवधान (अव+धा=रखा) भा० पु० कृपा, दया, तवज्जुह ।

प्रा० अवधारी पु० निश्चय किया गया, सोचा गया ।

सं० अवधीर्य धा० अव्य० विचार कर, सोचकर ।

सं० अवधीरित कर्म्म० पु० अनादृत, अपमानित, ग़फ़लत कीगई, ज़ाया कीगई ।

सं० अवनति (अव=नीचे, नम्=झुकना) भा० स्त्री० घटती, तनज़्ज़ुली, उतार ।

सं० अवनि } (अव्=बचाना) स्त्री०
अवनी } धरती, पृथ्वी, ज़मीन, भूमि ।

सं० अवनिकुमारी (अवनि=धरती, कुमारी=बेटी) स्त्री० सीता, जानकी, जनकराजा यज्ञ के लिये धरती जोतते थे उस समय धरती में से एक घड़ा निकला उसमें से सीता जी निकलीं (इसका पूरा वर्णन रामचरित्र में देखो) ।

सं० अवनिप (अवनि=पृथ्वी, प=रक्षाकरना)क०पु०राजा,बादशाह।

सं० अवनिपरमाणि स्त्री० रानी, मलका ।

सं० अवनीत (अव=नहीं, नी=लेजाना)कर्म्म० पु० बेढंगा, बदचलन, बदसलीक़ा, कुमार्गी ।

सं० अवनीश } (अवनि=धरती,
अवनीश्वर } ईश वा ईश्वर=राजा) पु० राजा, महाराजा, राजाधिराज ।

सं० अवन्ति (अव्=बचाना) स्त्री० मालवादेश ।

सं० अवन्तिका (अव्=बचाना) स्त्री० मालवादेश की राजधानी उज्जैन, सात पवित्र पुरियोंमें की एक पुरी थी अयोध्या, मथुरा, माया, गया, काशी, कांची, अवन्तिकापुरी ।

सं० अवयव (अव=जुदाजुदा, यु=मिलना) पु० अंग, शरीर का कोई भाग ।

सं० अवराधक (अव=निश्चयही, राध्=पूराकरना) क० पु० सेवक, सन्त, आराधना करनेवाला, आबिद ।

प्रा० अवराधना (सं० अवराधन) भा० स्त्री० सेवा, ख़िदमत ।

प्रा० अवरेख स्त्री० लेख, लकीर, गिनती, शुमार ।

सं० अवरोध (अव + रुध्=रोकना) पु० रोक, रुकाव, अटकाव, २ रनिवास ।

प्रा० अवर्त (सं० आवर्त) पु० पानी का चक्कर, भँवर, गिर्दाव ।

सं० अवलम्ब } अव + लबि=ठह-
अवलम्बन } रना) ण० पु० सहारा, आसरा, आधार, आड़ ।

प्रा० अवली (सं० आवलि) स्त्री० पांत, पंक्ति, लकीर ।

सं० अवलेह (अव + लिह्=चाटना) पु० चाटना, चटनी ।

सं० अवलोकन (अव + लोक्=देखना) भा० पु० दृष्टि, दीठ, नज़र, देखना, दर्शन, मुलाहिज़ा करना ।

प्रा० अवलोकना (सं० अवलोकन) क्रि० स० देखना ।

सं० अवश (अ=नहीं, वश=चाहना) बेवश, बेइख़्तियार, बेक़ाबू ।

सं० अवशिष्ट (अव + शिष्ट=बाक़ी रहना) क० पु० बाक़ी, अधिक, शेष ।

सं० अवशेष भा० पु० बाक़ी ।

सं० अवश्य (अव=निश्चयही, श्यै=जाना) क्रि० वि० निश्चय ही चाहिये, ज़रूर ।

सं० अवश्यक (अवश्य) गु० ज़रूरी ।

सं० अवश्यकता (अवश्य) स्त्री० ज़रूरत, प्रयोजन, निश्चय ।

सं० अवसर (अव=निश्चय, सृ=जाना) पु० औसर, अवकाश, समय, मौक़ा, विराम, ठहराव ।

सं० अवसन्न (अव + सन्न, सद्=बैठना) क० पु० थका हुआ, गिरा हुआ, समाप्त, उदास, ग़मगीन, हारा हुआ ।

सं० अवसान (अव + सो=नाशकरना) पु० अन्त, समाप्ति, मौत, २ हद्द ।

प्रा० अवसेरी स्त्री० देर, प्रत्याशा,

इन्तिज़ारी ।

सं० अवस्था (अव + स्था=ठहरना) स्त्री० दशा, उमर, आयुर्दा, हालत ।

सं० अवस्थित क०पु० ठहराहुआ, मुक़ीम ।

सं० अवहित (अव + हित, धा=रखना) मनोयोगी, सावधान, मुतवज्जेह, २ प्रख्यात, मशहूर ।

प्रा० अवाई (आना) स्त्री० आने की ख़बर, आना, २ मैलख़ोरा वा ज़ीनपोश झालर समेत ।

सं० अविकारी (अ=नहीं, विकार =दोष) क० पु० विकाररहित, बेऐब ।

सं० अविगत (अ + वि + गत, गम्=जाना) क० पु० व्यापक, सब जगह मौजूद ।

सं० अविचल (अ=नहीं, विचल=चलना) गु० अचल, अटल, जो चलेनहीं, दृढ़, मज़बूत ।

सं० अविद्या (अ=नहीं, विद्या=ज्ञान) स्त्री० अज्ञान, मूर्खपन, २ माया ।

सं० अविनय (अ + वि + नी=लेजाना) भा० पु० ढिठाई, शोख़ी, बेअदबी ।

सं० अविनाशी (अ=नहीं, विनाशी =नाश होनेवाला, नश्=नाश होना) गु० जिसका कभी नाश न हो, सदा रहनेवाला, परमेश्वर ।

सं० अविरल (अ=नहीं, विरल=महीन, विल्=ढकना, छिपाना) गु० गहरा, गाढ़ा, मोटा, निबिड़, निरन्तर, सदा, हमेशा ।

सं० अविरोध (अ + वि + रोध, रुध्=रोकना) भा० पु० मेल, इत्तिफ़ाक़, सम्मति ।

सं० अविवेक (अ=नहीं, विवेक=विचार) पु० अज्ञान, अविचार, मूर्खपन, बेतमीज़ी ।

सं० अविवेकता भा० स्त्री० अज्ञानपन, बेतमीज़ी, जिहालत ।

सं० अविवेकी (अविवेक) क० पु० अज्ञानी, मूर्ख, नहीं विचारनेवाला, बेतमीज़ ।

सं० अव्यक्त (अ=नहीं, व्यक्त=प्रकट) कर्म० पु० अलख, अदृश्य, छिपाहुआ, पु० विष्णु, परमेश्वर ।

सं० अव्यय (अ० नहीं, व्यय=नाश वा ख़र्च) पु० व्याकरण में ऐसा शब्द जो किसी तरह से बदलता नहीं वैसाही बना रहता है जैसे और, अथवा, फिर, पुनि, आदि, २ विष्णु, परमेश्वर, गु० अविनाशी ३ कृपण, कंजूस ।

सं० अव्यवस्थित (अ=नहीं, व्यवस्थित=अचल) गु० चंचल, उतावला, अचेत, बेहोश, २ अनुचित, तित्तर बित्तर ।

सं० अव्याहत (अ=नहीं, व्याहत =निराश, वि + आ + हन्= मारना) कर्म० पु० जो नहीं रोका जाय, आशावान् ।

सं० अशकुन (अ=नहीं वा बुरा, शकुन=सगुन) पु० बुरे सगुन, अपसगुन ।

सं० अशक्त (अ=नहीं, शक्त=समर्थ) क० पु० निर्बल, कमज़ोर, दुबला, असमर्थ ।

सं० अशक्य (अ=नहीं, शक्=सकना) असम्भव, ग़ैरमुमकिन, जो नहीं होसक्ता ।

सं० अशंक गु० निर्भय, बेख़ौफ़ ।

सं० अशन (अश्=खाना) भा० पु० खाना, भोजन ।

सं० अशनि (अश्=ताड़ना, मारना) पु० वज्र, बिजली, इन्द्रका शस्त्र।

सं० अशिक्षित (अ=नहीं,शिक्षित=सीखाहुआ, शिक्ष=सीखना, सिखाना) गु० अनसीखा, मूर्ख ।

सं० अशित (अश्=खाना) कर्म० पु० खायाहुआ, भुक्त, खुर्दा ।

सं० अशिव (अ०नहीं, शिव=शुभ) गु० अशुभ, अमंगल, बुरा ।

सं० अशुद्ध (अ=नहीं, शुद्ध=पवित्र) गु० अपवित्र, ठीक नहीं, ग़लत ।

सं० अशुद्धता भा० स्त्री० भूल, ग़लती, ग़लतफ़हमी, नापाकी ।

सं० अशुभ (अ=नहीं,शुभ=अच्छा) गु० बुरा, अमंगल, पु० बुराई, आपदा, दुःख ।

सं० अशुभचिन्तकता भा० स्त्री० बुरा सोचना, बदअंदेशी ।

सं० अशोक(अ=नहीं, शोक=शोच) पु० सुख, चैन, आराम, २ एक वृक्ष का नाम, गु० प्रसन्न, चैनसे, ख़ुश, बे फ़िक्र ।

सं० अश्म } पु० पत्थर ।
अश्मन् }

सं० अश्व (अश्=फैलना वा खाना) पु० घोड़ा, तुरंग ।

सं० अश्वतर पु० ख़च्चर, वह जानवर जो घोड़ी और गधे से पैदा हो ।

सं० अश्वपति (अश्व=घोड़ा,पति=मालिक) पु० घोड़े का मालिक, २ सवार, घुड़चढ़ा ।

सं० अश्वमेध (अश्व=घोड़ा, मेध =यज्ञ) पु० घोड़ेका यज्ञ, एक प्रकार का यज्ञ जिसमें घोड़ा होमा जाता है ।

सं० अश्ववार (अश्व=घोड़ा, वृ= पसंद करना वा ढकना) पु० सवार, घुड़चढ़ा ।

सं० अश्वशाला (अश्व=घोड़ा, शाला=जगह) स्त्री० घुड़साल, घोड़ों का तबेला ।

सं० अश्वशिक्षक क० पु० चाबुक-

सवार ।

सं० अश्वसेवक क० पु० साईस ।

सं० अश्विनी (अश्व=घोड़ा अर्थात् जिसका आकार घोड़े के शिरसा है) स्त्री० एक नक्षत्र का नाम, पहला नक्षत्र ।

सं० अश्विनीकुमार (अश्विनी=घोड़ी, कुमार=बेटा अर्थात् सूर्य की स्त्री एकबार घोड़ीका रूप बन गई थी तब घोड़े का रूप सूर्य बना था उस समय के पैदा हुए दो लड़कों का नाम अश्विनीकुमार है) पु० देवताओं के वैद्य ।

सं० अषाढ़ (अषाढ़ा, एक नक्षत्र का नाम जो इस महीने की पूर्णमासी को होताहै और इस महीने में पूरा चांद इस नक्षत्र के पास रहता है) पु० बरस का तीसरा महीना ।

सं० अष्टधातु (अष्ट=आठ, धातु=धात) स्त्री० आठभांति की धातु जैसे १ सोना, २ रूपा, ३ तांबा, ४ पीतल, ५ रांगा, ६ कांसा, ७ सीसा, ८ लोहा ।

प्रा० अष्टधाती (सं० अष्टधातु) गु० आठ धातका बना हुआ ।

सं० अष्टमी (अष्टम=आठवां, अष्ट=आठ) स्त्री० पक्षकी आठवीं तिथि ।

सं० अष्टसिद्धि (अष्ट=आठ, सिद्धि=मन का मनोरथ) स्त्री० आठ प्रकार की सिद्धि १ अणिमा बहुत छोटा बनजाने की शक्ति, २ महिमा बहुत बड़ा बनजाने की शक्ति, ३ लघिमा हलका बनजाने की शक्ति, ४ प्राप्ति चाहे जितनी दूर पर जो चीज़ हो उसको ले लेने की शक्ति, ५ प्राकाम्य चाहे जैसे मनोरथ को पूरा करना, ६ ईशित्व ऐश्वर्यरखना, ७ वशित्व सबके वश करने की शक्ति, ८ कामावसायिता सांसारिक सारी इच्छा को पूरा करना अर्थात् किसी बात की इच्छा नहीं रखना ॥ अणिमा लघिमा प्राप्तिः प्राकाम्यं महिमा तथा । ईशित्वं च वशित्वं च तथा कामावसायिता १॥

सं० अष्टांगप्रणाम (अष्टांग=आठ अंग, प्रणाम=नमस्कार) पु० आठ अंगों से दंडवत् करना अर्थात् १ हाथों २ पैरों ३ जांघ ४ हिरदा ५ आंखों ६ शिर ७ वचन ८ मन से प्रणाम करना ।

सं० असंख्य (अ=नहीं, संख्या=गिन्ती) गु० अनगिनत, अगणित, बेशुमार, बेहिसाब ।

सं० असंग्रह (अ=नहीं, सं=सब, ग्रह=लेना) गु० पु० संचयहीन, नहीं इकट्ठा ।

प्रा० अस गु० ऐसा, ऐसी, क्रि०

वि० इस तरह से, इस प्रकार से ।

सं० असत्य (अ=नहीं, सत्य=सांच) गु० झूठा, मिथ्या, पु० झूठ, दरोग़ ।

सं० असत्यसंध गु० कपटपरायण, दग़ाबाज़ ।

सं० असफल (अ=नहीं,स + फल=सहित फल) गु० पु० फलरहित, असिद्ध, फल न देनेवाला, बेकाम, बेमुराद, बेमक़सद ।

सं० असभ्य (अ=नहीं, सभ्य=सभा के योग्य) गु० गँवार, अनाड़ी, जो सभा के योग्य न हो, बेतहज़ीब ।

सं० असमंजस (अ=नहीं) समञ्जस=ठीक, सम्=साथ, अंजसा=सचाई से,अंज्=शुद्ध करना) पु० संदेह, द्विविधा, अनिश्चय, शक, शुबहा, पशोपेश, राजासगर के पुत्रका नाम ।

सं० असमर्थ (अ=नहीं, समर्थ=बलवान्) गु० दुबला, निबला ।

सं० असमर्थता भा० स्त्री० लाचारी, बेताक़ती, निर्बलता ।

सं० असमय, (अ=नहीं, समय=काल) गु० कुसमय, बेऋतु, बेवक़ ।

सं० असमशर (असम=विषम,शर=तीर) पु० कामदेव ।

सं० असम्भव (अ=नहीं, सम्भव=होने योग्य) गु० अनहोना, नहीं होनेवाला, नहीं होसकनेवाला, ग़ैरमुमकिन ।

सं० असत्यवादी (अ=नहीं,सत्य=सांच, वद्=कहना) क० पु० झूठ बोलनेवाला, मिथ्यावादी, दरोग़गो ।

सं० असह्य (अ=नहीं, सह्य=सहने योग्य, सह=सहना) गु० जो सहा नहीं जाय, कठोर, कड़ा, कड़ुवा, बेबरदाश्त ।

प्रा० असवार } (सं० अश्ववार)
सवार } पु० घुड़चढ़ा ।

सं० असाधु (अ=नहीं,साधु=सीधा) गु० अधर्मी, पापी, दुष्ट, बुरा ।

सं० असाध्य (अ=नहीं, साध्य=सिद्ध होनेयोग्य) गु० कठिन, २ असम्भव, ३ जिसका इलाज नहीं होसके, लादवा ।

सं० असार (अ=नहीं, सार=गूदा, तत्त्व) गु० छूछा, पोला, सूखा, २ वृथा, बेफ़ायदह, निष्फल, जिसमें कुछ सार न हो ।

सं० असावधान (अ=नहीं,सावधान=चौकस, होशियार) गु० अचेत, बेसुध, बेसुरत, बेख़बर, ग़ाफ़िल ।

सं० असावधानी भा० स्त्री० बेचौकसाई, बेख़बरी, ग़फ़लत ।

सं० असि (अस्=फेंकना वा चमकना) स्त्री० तलवार, खांड़ा, खड्ग,

शमशेर ।

सं० असित (अ=नहीं, सित=धौला) गु० काला, कृष्णपक्ष ।

सं० असिद्ध (अ=नहीं,सिद्ध=पूरा) गु० अधूरा, अनबना, २ बिनपका, ३ झूठ, झूठा ।

सं० असिद्धता भा० स्त्री० नाकामयाबी, झुठाई ।

प्रा० असीस } (सं०आशिस्) स्त्री०
आसीस } आशीर्वाद, दुआ ।

सं० असु (अस्=फेंकना) भा०पु० प्राण, श्वास, रूह, जान ।

सं० असुर (अस्=फेंकना, जो देवताओं को फेंकते हैं) पु० दिति के बेटे, राक्षस, दैत्य, दानव ।

सं० असुरसेन गयातीर्थ ।

सं० असूयक (असू+य+अक, असू=निरादर करना) क०पु० निन्दक, चुगुलखोर, बुराई बतलानेवाला ।

सं० असूया भा० स्त्री० गुणमें दोष लगाना, ऐबजोईकरना, निन्दा करना ।

अं० असोसियेशन्=मेल, सभा, समाज, मजलिस ।

सं० अस्खलित (अ=नहीं,स्खल्=गिरना) कर्म०पु०अच्युत,अपतित ।

सं० अस्त (अस्=फेंकना) पु०सूर्य का छिपना वा डूबना, गुरूबहोना ।

प्रा० अस्तहोना क्रि० अ० बोल० सूर्य का डूबना, सूर्य छिपना ।

सं० अस्तव्यस्त (अस्=फेंकना) गु० तित्तर बित्तर, जुदाजुदा, उलटा पुलटा, तीनतेरह, इधर उधर, जहां तहां, छिन्नभिन्न, तहोबाला ।

सं० अस्ताचल (अस्त=सूर्य डूबना, अचल=पहाड़) पु० पश्चिम की ओर एक पहाड़ जहां हिन्दूलोग मानते हैं कि सूर्य डूबता है ।

सं० अस्ति स्त्री० विद्यमान, मौजूद ।

प्रा० अस्तुत } सं० (स्तुति) स्त्री०स-
अस्तुति } राह, तारीफ़, प्रशंसा, भजन ।

सं० अस्त्र (अस्=फेंकना) पु० ऐसा हथियार जिसको फेंकके मारें जैसा बाण तोपका गोला आदि, २ तलवार आदि सब हथियारों को भी कभी कभी अस्त्र कहते हैं ।

सं० अस्थि (अस्=फेंकना) पु० हाड़, हड्डी ।

प्रा० अस्सी (सं० अशीति) गु० चारबीसी ।

सं० अहमिति स्त्री० अहंकार, अभिमान, गरूर, खुदी ।

सं० अहंकार (अहम्=मैं, कार=करनेवाला, कृ=करना) पु० घमंड, अभिमान, अकड़मकड़, गर्व, मद, ऐंठ, मरोड़, शेखी ।

सं० अहंकारी (अहंकार) पु० घमंडी, अकड़बाज़, अकड़ैत, शेखी-

बाज़, अभिमानी ।

सं० अहन् पु० दिन, रोज़, अहर् ।

सं० अहर्निशि स्त्री० रातदिन, शबरोज़ ।

सं० अहल्या (अहल्य, अ=नहीं, हल्य=वैरूप्य) स्त्री० गौतम ऋषि की स्त्री ।

प्रा० अहार (सं० आहार) पु० खाना, भोजन ।

प्रा० अहाहाहा
सं० अहह } (अहह, अहम्=मैं,हा=छोड़ना) वि० बो० अचंभा, दुःख और खुशी आदिको जतलानेवाला शब्द, आहा, आह, हाय ।

प्रा० अहहिं (सं० अस्ति=है, अस्=होना) क्रि० अ० है, विद्यमान है, मौजूद है ।

सं० अहिंसा (अ=नहीं, हिंसा=मारना) स्त्री० दया, किसी को नहीं मारना, किसीको नहीं सताना ।

सं० अहि (अ=चारों ओर से, हन्=मारना) पु० सांप, सर्प, नाग ।

सं० अहिगति (अहि=सांप,गति=चलना, जाना) स्त्री० सांप की चाल, टेढ़ीचाल, कजरफ़्तारी ।

प्रा० अहिछार (सं० अहिक्षार) पु० सांप का विष ।

सं० अहित (अ=नहीं, हित=प्यार, भला) पु० वैरी, शत्रु, २ वैर, विरोध ।

सं० अहितकारी (अ=नहीं, हित=भलाई, कारी=कृ=करना) क० पु० अप्रिय करनेवाला, बुराई करने वाला ।

सं० अहिनी स्त्री० सांपिन, सर्पिणी ।

सं० अहिपति (अहि=सांप, पति=मालिक) पु० सांपोंका राजा, शेषजी, २ वासुकी ।

सं० अहिफेन पु० अफ़ीम ।

प्रा० अहिलव (अभिप्लव, अभि=सामने, प्लव=डुबाना) बाढ़, २ संपोला, सांपका बच्चा ।

प्रा० अहिवात (सं० अस्तिपति, अस्ति=है, पति=भर्ता, ख़ाविंद) पु० सुहाग, पतिके जीनेका चिह्न ।

सं० अहीन (अहि=सांप, इन=मालिक) पु० सांपोंका राजा, शेषजी, शेषनाग ।

सं० अहीश (अहि=सांप, ईश=मालिक) पु० सांपोंका राजा, शेषजी ।

प्रा० अहीर (सं० आभीर आ=चारों ओर से, भी=डर, रा=देना वा आ, ईर=भेजना) पु० ग्वाला ।

प्रा० अहीरणी
अहीरी } (अहीर) स्त्री० ग्वालिनी ।

सं० अहे
अहो } वि० बो० संबोधन का सूचक, शोच, दुःख,

दया, अचंभा, बड़ा, सराह आदि अर्थों में बोले जाते हैं ।

प्रा० अहेर (सं० आखेट) स्त्री० शिकार, मृगया, आखेट ।

प्रा० अहेरिया } (सं० आखेटकी)
अहेरी } पु० शिकारी, बहेलिया, आखेटकी ।

प्रा० अहो (सं० अहह) वि० बो० आश्चर्य, तअज्जुब, कष्ट, हर्ष, दुःख ।

सं० अहोरात्रि (अहन्=दिन, रात्रि =रात) क्रि० वि० रातदिन, दिनरात ।

आ

सं० आ, वि० बो० हाय, आह, दुःख अथवा दया को जतानेवाला शब्द ।

सं० आ, उपस० से (जैसे आकौमारम्=बालकपन से) २, तक, तलक, लग, तोड़ी (जैसे आगोपाल=ग्वाल तक, अथवा आमरणम्=मरनेतक) ३, चारों ओर से, ४ कुछ, कुछेक, सा (जैसे आपीत=कुछेक पीला, अथवा पीला सा), ५ पहले, ६ वाक्य के उलटे अर्थ में ।

सं० आ पु० शिव, महादेव, २ ब्रह्मा ।

प्रा० आंक (सं० अङ्क) पु० अङ्क, संख्या, रक़म, २ चिह्न, निशान, ३ कपड़े के थानपर का चिह्न जिससे उसका मोल जाना जाता है, निश्चय ।

प्रा० आंकना (सं० अङ्क=चिह्न करना (क्रि० स० जांचना, परखना, २ मोल करना, मोल ठहराना, ३ चिह्न करना ।

प्रा० आंकुश (सं० अंकुश) पु० अंकुश, आंकड़ी, लोहे का कांटा जिससे हाथी को चलाते हैं ।

प्रा० आंकुश मारना बोल० वश करना ।

प्रा० आंख (सं० अक्षि) स्त्री० नेत्र, नयन, चक्षु, चषु ।

प्रा० आंख आना बोल० आंख में जलन होनी, आंख लाल होजाना ।

प्रा० आंख खटकना बोल० आंख दुखना, आंखमें दर्द होना ।

प्रा० आंख चढ़ाना बोल० क्रोध करना, गुस्सा करना, २ मस्त होना, मतवाला होना, नशेमें होना ।

प्रा० आंख चीर चीरके देखना बोल० खूब ध्यान लगाके देखना, २ अथवा क्रोध से देखना ।

प्रा० आंख चुराना बोल० ध्यान नहीं देना, २ शर्मसे आंख फेर लेना, ३ किसी से आंख बचाना ।

प्रा० आंख छिपाना बोल० किसी बुरे काम के करने से लजाना ।

प्रा० आंख. ठंढीकरना बोल० मित्रों के मिलने से प्रसन्न होना, प्रसन्न होना ।

प्रा० आंखडबडबाना बोल० आंखों में आंसू भरलाना ।

प्रा० आंखदिखाना
आंखदिखलाना बोल० धमकाना, घुरकना ।

प्रा० आंखपथराना बोल० चकाचौंदा होना, चौंधियाना ।

प्रा० आंखफड़कना बोल० आंख फटकना, आंख के पपोटों का हिलना (जब कि पुरुष की दाहिनी और स्त्री की बाईं आंख फड़कती है तो हिन्दूलोग उसको अच्छा सगुन मानते हैं और सोचते हैं कि कुछ अच्छा होनेवाला है पर जब पुरुष की बाईं और स्त्री की दाहिनी आंख फड़कती है तब सोचते हैं कि कुछ बुरा होनेवाला है)।

प्रा० आंखफूटना बोल० अंधा होना ।

प्रा० आंखफूटी पीरगई बोल० यह मुहावरा उस समय बोला जाता है कि जब दो आदमी किसी एक चीज़ के लिये झगड़ते हों और उस चीज़ के खोय जानेपर उनका झगड़ा बन्द होजाय ।

प्रा० आंखफेरना
आंखमोड़ना बोल० मित्रोंसे मित्रताई तोड़ना, मित्रों से बैर करना ।

प्रा० आंखबंदकरलेना
आंख मूंदना बोल० दूसरे से मुँह मोड़ना, दूसरे की खबर न लेना, २ मरना ।

प्रा० आंखबचाना बोल० आंखचुराना, आंख बराबर न कर सकना, शर्माना ।

प्रा० आंखभरके देखना बोल० किसी अनोखी चीज़ को खूब देखना कि संतोष होजावे ।

प्रा० आंखभरलाना बोल० आंखों में आंसू भरलाना, आंखडबडबाना, रोनी सूरत बनाना ।

प्रा० आंखमारना बोल० आंख मटकाना, सैन करना, इशारा करना, आनाकानी करना ।

प्रा० आंखमिचजाना बोल० मरना, मरजाना ।

प्रा० आंखमिचौवल
प्रा० आंखमिचौली
प्रा० आंखमुंदौरा (आंखमिचौलना, मूँदना) बोल० एक खेलका नाम ।

प्रा० आंखमिलाना बोल० मित्रताई करना, दोस्ती करना ।

प्रा० आंखरखना बो० प्यार करना, प्यार की बातें करना, २ आशा करना, ३ देखना, ताकना, ४ किसी स्त्री को बुरी दृष्टि से देखना ।

प्रा० आंखलगाना बोल० किसी के प्यार में फँसना, प्यार करना,

दोस्ती करना ।

प्रा० **आंखलड़ना** बोल० अपने प्यारे से अचानक मिलजाना, अपने प्यारे के देखने से उसके प्रेमके वश होना ।

प्रा० **आंखलड़ाना** बोल० आंख मारना, सैन करना, इशारा करना, २ छिपी बात को इशारों से जतलाना ।

प्रा० **आंखलालकरना** बोल० क्रोध करना, खिसियाना, गुस्सा करना।

प्रा० **आंखसेंकना** बोल० किसी के रूपको अथवा सुन्दरता को देखना ।

प्रा० **आंख से गिरना** बोल० हलका होना, तुच्छ होजाना, बेक़दर होना ।

प्रा० **आंखैं नीली पीली करना** बोल० बहुत गुस्से से मुंह का रंग बदलना ।

प्रा० **आंखोंपरबैठना** बोल० प्यारा होना, ऊंचा बैठना, प्रतिष्ठित होना, आंखों में जगह पाना ।

प्रा० **आंखों में आना** बोल० नशे में होना, मदिरा के नशे में मस्त होना।

प्रा० **आंखों में घर करना** बोल० प्यारा होना, प्रतिष्ठित होना ।

प्रा० **आंखों में चरबीछाना** बोल० धनके मदसे घमंड करके अपने पुराने मित्रों को नहीं पहँचानना, जानबूझ के अन्धा होना ।

प्रा० **आंखोंमें फिरना** }
आंखों में बसना } बोल० सदा याद रहना, मन में सदा किसी का ध्यान बँधा रहना ।

प्रा० **आंखोंमेंरातकाटना** }
आंखोंमेंरातलेजाना } बोल० सबरात जागते बिताना ।

प्रा० **आंग** (सं० अङ्ग) पु० शरीर, देह, अंग, शरीर का एक भाग।

प्रा० **आंगन** }
आंगना } (सं० अङ्गन) पु० चौक, अंगनाई, सहेन ।

प्रा० **आंच** स्त्री० गरमी, आग का लूका भभूका ।

प्रा० **आंचर** }
आंचल } (सं० अंचल) पु० अंचला, कपड़े का किनारा, २ लुगाई की छाती ।

प्रा० **आंजना** (सं०अञ्जन) क्रि० स० अंजन डालना, सुरमा लगाना, काजल लगाना ।

प्रा० **आंट** (सं० आनद्ध, आ=चारों ओर से, नह्=बांधना) स्त्री= गांठ, २ वैर, विरोध, डाह ।

प्रा० **आंत** (सं० अन्त्र) स्त्री० अंतड़ी ।

प्रा० **आंधी** (सं० अन्धकार) स्त्री० झकड़, तूफ़ान, तेज़ हवा ।

प्रा० **आंव** (सं० आम, अम्=बीमार होना) स्त्री० पेट में एक तरह का

रोग, २ आमाशय, शूल ।

प्रा० आंसू (सं० अश्रु, अश्=फैलना) पु० आंख का पानी ।

प्रा० आंसूभरलाना बोल० आंख डबडबाना, रोनी सूरत बनाना ।

प्रा० आक (सं० अर्क) पु० एक पेड़ का नाम, अकवन, मदार ।

सं० आकर (आ=चारों ओर से, कॄ=बिखरना अर्थात् जहां धातु बिखरी रहती हैं) स्त्री० खान, खानि ।

सं० आकर्णित र्म्म० पु० सुना गया, श्रुत ।

सं० आकर्ण्य अव्य० सुनकर ।

सं० आकर्ष (आ+कृष्=खींचना) भा०पु०खींचना,ऐंचना, बटोरना ।

सं० आकर्षक (आ=से, कृष्=खैंचना) पु० चुम्बक पत्थर, खैंचनेवाली चीज़, क० पु० खैंचनेवाला ।

सं० आकर्षण (आ=से, कृष्=खैंचना) भा० पु० खिंचाव, खींचने की शक्ति ।

सं० आकर्षित (आ=से, कर्ष+इत, कृष्=खींचना) र्म्म० पु० खींचा गया ।

सं० आकांक्षा (आ=चारों ओर से, कांक्षा=चाहना) स्त्री० चाह, चाहना, इच्छा, वांछा, अभिलाष, ख़्वाहिश ।

सं० आकांक्षक (आ=से, कांक्ष्+अक, कांक्ष=चाहनेवाला) क०पु० इच्छुक, वांछक, अभिलाषक ।

सं० आकांक्षी (आ=से, कांक्ष+इ) क० पु० तथा ।

सं० आकार (आ, कृ=करना) ग० पु० रूप, डौल, स्वरूप, सूरत, मूरत, २ चिह्न, निशान, ३ आ अक्षर ।

सं० आकाश (आ=चारों ओर से, काश्=चमकना) पु० आस्मान, गगन, शून्य ।

सं० आकाशवृत्ति (आकाश=आस्मान, वृत्ति=जीविका) स्त्री० जो आजीविका नियत नहीं है, अस्थिर जीविका, बेकयामरोज़ी ।

सं० आकाशवाणी (आकाश=आस्मान, वाणी=शब्द) स्त्री० आकाश से जो कुछ बात सुनी जाती है, वाणी जो आकाश से होती है ।

सं० आकीर्ण (आ=चारों ओर से, कॄ=बिखरना वा फैलना)र्म्म० पु० परिपूर्ण, व्याप्त, भराहुआ ।

सं० आकुञ्चन (आ=चारों ओरसे, कुञ्च्=सिमटना) भा० पु० संकोचन, सिकुड़ना ।

सं० आकुल (आ=चारों ओर से, कुल्=दुःखी होना) गु० घबराया हुआ, व्याकुल, दुःखी, परेशान।

सं० आकुलित (आ=से, कुल्+इत) कर्म० दुःखित, क्लेशित, रंजीदा ।

सं० आकृति (आ, कृ=करना) स्त्री० रूप, स्वरूप, मूरत, सूरत, डौल ।

सं० आकृष्ट (आ=चारों ओर से, कृष्+त, कृष्=खींचना) कर्म० पु० खींचाहुआ, आकर्षित ।

सं० आकृष्टि (आ=से, कृष्+ति) भा० पु० आकर्षण, खींचना, घसीटना ।

सं० आक्रमक (आ=सब ओर से, क्रम्+अक, क्रम्=जाना) क० पु० घेरनेवाला, हमला करनेवाला ।

सं० आक्रमण (आ=से, क्रम्+अन, क्रम्=जाना वा हमला करना) भा० पु० व्यापन, घेरना, हमला करना, मुहासरा करना ।

सं० आक्रम्य (आ=से, क्रम्+य) धा० अव्य० घेरकर, हमला करके ।

सं० आक्रान्त (आ=से, क्रम्+त) कर्म० पु० घेराहुआ, घेरा गया, हमला कियागया, क० २ श्रान्त, थका हुआ ।

सं० आक्रीड (आ=चारों ओर से, क्रीड्=खेलना) पु० राजाका उपवन, बादशाहीबाग़ ।

सं० आक्रोश (आ=चारों ओर से, क्रुश्=रोना) भा० पु० क्रोध, रोना, ग़ुस्सा, गिरियावज़ारी ।

सं० आक्षेप (आ, क्षिप्=फेंकना) पु० बुरीबात, निन्दा, दुर्वचन, २ फेंकना, ३ एक अर्थालंकारका नाम ।

प्रा० आखर (सं० अक्षर) पु० अक्षर, वर्ण, हर्फ़ ।

सं० आखु मूषक, मूश, मूसा, चूहा ।

सं० आखुभुक् (आखु = मूश, भुज्=भक्षण करना) क० पु० बिलार, मार्जार, गुर्बा ।

सं० आखेट (आ=से, खिट्=डराना, सताना) स्त्री० शिकार, अहेर, मृगया ।

सं० आख्य } (आ=सबप्रकार से,
आख्या } ख्या=कहना, प्रसिद्ध होना) पु० नाम, संज्ञा, इस्म ।

सं० आख्यात (आ=से, ख्या+त) कर्म० उक्त, मज़कूर, कहाहुआ ।

सं० आख्यायिका स्त्री० कहानी, कथा, रवायत, फ़िसाना ।

सं० आख्यान (आ=से, ख्या=प्रसिद्ध होना) पु० बात, कथा, वृत्तान्त, वर्णन, इतिहास ।

प्रा० आग (सं० अग्नि) स्त्री० आगी, अग्नि, अनल ।

प्रा० आगउठाना बोल० बखेड़ा मचाना, क्रोधितकरना, ग़ुस्सा बढ़ाना, खिजलाना ।

प्रा० आगकरना बोल० बहुतही बहुत गर्म करना, २ क्रोध अथवा डाह बढ़ाना ।

प्रा० आगदेना बोल० मुर्दाजलाना।

प्रा० आगपड़ना बोल० गुस्से होना, खिसियाना,क्रोधकरना,भड़कना।

प्रा० आगबरसना बोल० यह मुहावरा उससमय बोला जाता है जब बहुत गर्मी पड़ती है, अथवा लड़ाई में तोप के गोले चलते हैं।

प्रा० आगबुझाना
आगमें पानी डालना } बोल० ठंढा करना, झगड़ा बंद करना, बखेड़ा मिटाना।

प्रा० आगभखना
आगफांकना } बोल० निकम्मीबातें करना, वृथा बकवाद करना, २ डींग मारना, शेखीकरना, अपनी बड़ाई करना, घमंड करना।

प्रा० आग में लोटना बोल० सोच से दुःखी होना।

प्रा० आगलगना बोल० जलना, क्रोधित होना, खिसियाना, गुस्से होना, २ बहुत भूख लगना।

प्रा० आगलगाके पानी ले दौड़ना बोल० जिसझगड़े को आप छेड़ा हो उसके मिटानेका बहाना करना, २ छल करना, छलना, ठगना।

प्रा० आगलगाना बोल० जलाना, फूंकना, गुस्से में करना, क्रोधित करना, भड़कना।

प्रा० आगसुलगाना बोल० आग जलाना, बखेड़ा मचाना, छुपे छुपे दंगा बखेड़ा उठाना।

प्रा० आगहोना बोल० गुस्से होना। क्रोधित होना, खिसियाना।

सं० आगत (आ=चारों ओर से, ग+त,गम्=जाना)क०पु० आया हुआ, पहुँचा, उपस्थित, आयात।

सं० आगन्ता
आगन्तुक } क०पु०आनेवाला, अजनबी।

सं० आगम (आ, गम्=जाना,और आ उपसर्ग के साथ आने से अर्थ हुआ आना) पु० शास्त्र, तन्त्रशास्त्र जिसमें मन्त्रों का वर्णन है, और उसको महादेव ने बनाया है संस्कृत में आगम का यह लक्षण लिखाहै "आगतं शिववक्त्रेभ्यो, गतश्च गिरिजाश्रुतौ। मतश्च वासुदेवस्य तस्मादागम उच्यते" अर्थ महादेव ने कहा और पार्वती ने सुना और विष्णु ने माना इस लिये इसको आगम कहते हैं और यहां आ का अर्थ आया (महादेव से) ग का अर्थ गया (पार्वती के पास) और म का अर्थ माना (विष्णु ने) है २ आना, ३ भविष्यत्, आनेवाला, आमदनी।

प्रा० आगमबांधना बोल० अगली बात को ठीककरना, वा अगली बातका बिचार करना, २ आगे से जताना, आगमकहना।

सं० आगमन (आ, गम्=जाना)

भा० पु० आना, अवाई ।

प्रा० **आगा** (सं० अग्र) पु० अगवाड़ा, साम्हना ।

प्रा० **आगा पीछा करना** बोल० दुबिधा में होना, संदेह रखना, हिचकना, ठिठकना, झझकना ।

सं० **आगामी** (आ + गम् + ई, गम्=जाना) क० पु० आनेवाला, भावी, जो आगे आनेवाला है ।

सं० **आगार** (आ, गृ=निगलना) धि०पु० घर, स्थान, जगह, मकान ।

सं० **आगुल्फ** (आ=तक, गुल्फ=टखना) गु० टखनातक ।

प्रा० **आगे** (सं० अग्रे) क्रि० वि० पहले, साम्हने, सन्मुख, इसके पीछे, बढ़के २ तब, फिर ।

प्रा० **आगेधरलेना** बोल० आगे बढ़ना, आगे जाना, किसी को पीछे छोड़ना ।

सं० **आग्रह** (आ=चारों ओर से, ग्रह=ग्रहण करना, वा लेना)भा० पु० पकड़ना, छीनना, लेना, कसना, छेड़ना, घेरना, हठकरना, कोशिश, ज़िद पकड़ना, मिहरबानी, मुरव्वीपन ।

सं० **आघात** (आ=से, हन्=मारना) पु० चोट, खड़का, मारना, भिड़ना २ मारने की जगह ।

सं० **आघातित** (आ=सब प्रकारसे, घात् + इत, हन्=मारना) र्म्म० पु० मारा हुआ, चोट खाया हुआ ।

सं० **आघूर्णन** (आ=से, घूर्ण=घूमना वा ताकना) भा० पु० देखना, घूरना, ताकना ।

सं० **आघूर्णित** (आ + घूर्ण् + इत) र्म्म० पु० देखागया, घूरागया ।

सं० **आघ्राण** (आ=से, घ्रा=सूंघना) भा० पु० सूंघना, गंधलेना ।

सं० **आघ्रात** (आ + घ्रा + त)र्म्म० पु० सूंघाहुआ, गंधग्रहण ।

सं० **आघ्रेय** र्म्म० पु० सूंघनेयोग्य ।

सं० **आचमन** (आ, चम्=खाना) भा० पु० खाने के पीछे हाथ मुँह पानी से साफ़ करना, २ संध्या करने के समय चुल्लू से तीनबार मुँहमें पानी लेना ।

सं० **आचरण** (आ, चर्=चलना) भा० पु० चालचलन, व्यवहार, रीति भांति, चलन ।

सं० **आचरित** (आ + चर् + इत) र्म्म० पु० मानलीजाय, तसलीम करलीजाय ।

सं० **आचार** (आ, चर्=चलना) भा० पु० आचरण, व्यवहार, रीति, चलन, २ पवित्रता, सफ़ाई, शुद्धता, तरीक़ा ।

सं० **आचारी** (आचार) क० पु० आचार रखनेवाला, शास्त्रके अनुसार चलनेवाला ।

सं० **आचार्य्य** (आ, चर्=चलना)

पु० गुरू, पढ़ानेवाला, शिक्षक, उपदेश करनेवाला, वेदशास्त्र पढ़ानेवाला ।

सं० आच्छादक (आ + छद् + अक) क० पु० ढांकनेवाला, छिपानेवाला, मूंदनेवाला ।

सं० आच्छादन (आ=से, छद्=ढकना) भा० पु० ढकनेका कपड़ा, चद्दर, २ ढकना ।

सं० आच्छादित
आच्छिन्न } र्म० पु० मुँदा हुआ, ढका हुआ, आवृत ।

प्रा० आछें
आछैं } (सं० अच्छ अच्छा) गु० अच्छा ।

प्रा० आज (सं० अद्य) आजका दिन, वर्त्तमान दिन ।

प्रा० आजकल बोल० इनदिनों में कुछ दिनों से ।

प्रा० आजकल करना
आजकल बताना } बोल० टालना, हां हूं करना ।

प्रा० आजा (सं० आर्य्यक) पु० दादा, पितामह ।

सं० आजीव (आ + जीव्=जीना) रोजगार, जीविका, पेशा ।

सं० आजीविका (आ=से, जीव्=जीना) स्त्री० जीविका, निर्बाह, जीने का उपाय, रोज़ी, रिज़क ।

सं० आज्ञा (आ=से, ज्ञा=जानना) स्त्री० हुक्म, आदेश, आयसु ।

सं० आज्ञाकारी (आज्ञा=हुक्म, कारी=पूरा करनेवाला, कृ=करना) गु० आज्ञा माननेवाला, हुक्ममाननेवाला, सेवक, आधीन, ताबेदार ।

सं० आज्ञानुवर्त्ती (आज्ञा=हुक्म, अनु=पीछे, वृत्=मानना) क०पु० आज्ञाकारी, फ़र्मांबरदार, वशीभूत, आधीन ।

सं० आज्ञापक (आ=सब प्रकारसे, ज्ञापक=हुक्म करनेवाला) आदेशकरनेवाला, हुक्म करनेवाला, हाकिम ।

सं० आज्ञापन (आ=से, ज्ञापन=जताना) भा० पु० विज्ञापन, चिताना, इत्तलाअ देना, हुक्म देना ।

सं० आज्ञप्त (आ + ज्ञप्त) र्म० पु० आज्ञापाया हुआ, महकूम ।

सं० आज्ञापत्र (आज्ञा=हुक्म, पत्र=काग़ज़) पु० हुक्मनामा लिखीहुई आज्ञा फ़र्मान ।

सं० आज्य (अञ्ज् + य, अञ्ज्=लेप करना) पु० घृत, घी, घीव, सर्पिष्, रोग़नज़र्द ।

सं० आटोप (आ=चारों ओर से, तुप्=ढकना, मारना) पु० घमण्ड, अभिमान, दर्प, अहङ्कार ।

प्रा० आठ (सं० अष्ट) गु० अष्ट, एक गिन्ती का नाम ।

प्रा० आठ आठ आंसू रोना बोल० बहुत रोना, फूट २ के रोना ।

प्रा० आठपहर बोल० रात दिन,

हर घड़ी, हर आन, सदा, नितउठ।

प्रा० **आड़** स्त्री० ओट, परदा, रोक।

सं० **आडम्बर** (आ=चारों ओर से, डम्ब्+अरन्, डम्ब=फेंकना) पु० हर्ष, घमंड, ग़रूर, पाखंड, छत्र, मेघ, नक़ारा, तुरहीका शब्द, खटला, उद्योग, बनावट, बनाव, आयोजन, आरम्भ, मेघका गरजना, संरम्भ, लिबास, भेष।

प्रा० **आड़ा** गु० तिरछा, टेढ़ा, बांका।

प्रा० **आड़ी** गु० रक्षक, मुहाफ़िज, स्वरविशेष।

प्रा० **आड़े आना** बोल० बचावना, बीच में पड़ना।

सं० **आढ़क** परिमाणविशेष, अढ़ैया, द्रोण का चौथा भाग।

सं० **आढ़की** स्त्री० अरहर।

प्रा० **आढ़त** स्त्री० अड्डा, माल का चलान।

प्रा० **आढ़तिया** पु० बैपारी, महाजन, दलाल।

सं० **आतङ्क** (आ=से, तकि=दुख से जीना) पु० डर, भय, ख़ौफ़, २ दुख, ३ पीड़ा, रोग, सन्ताप।

सं० **आततायी** अग्निलगाना, बिष देना, शस्त्रघात करना दूसरे का धन स्त्री भूमि अन्याय से लेलेना इन ६ कर्म करनेवाले को आततायी कहा है।

सं० **आतप** (आ=चारों ओर से, तप्=तपाना) ण० पु० धूप, घाम, सूर्य्य की गर्मी।

सं० **आतपत्र** (आतप=धूप, त्रै=बचाना) पु० छतरी, छाता, छत्र।

सं० **आतर** (आ=से तॄ=जाना वा, तैरना) ण० पु० अन्तर, बीच, फ़र्क़, उतराई।

सं० **आतिथेय** पु० अतिथि के निमित्त भोजनादि देनेवाला, अतिथिसेवक, महँमानिवाज़, मेज़बान।

सं० **आतिथ्य** भा० पु० अतिथि सेवा, सन्मान, महिमानदारी, महँमानिवाज़ी।

सं० **आतुर** (आ, तुर=जल्दी करना) गु= घबराया हुआ, व्याकुल, बेचैन, दुखी, २ रोगी, क्रि० वि० शीघ्र, झटपट जल्दी।

सं० **आत्मघात** (आत्मन्=अपने को, घात=नाश, मारना) पु० आत्महत्या, अपने तईं मारडालना, खुदकुशी।

सं० **आत्मज** (आत्मन्=अपनीआत्मासे जन्=पैदा होना) पु० पुत्र, बेटा, सन्तान।

सं० **आत्महत्या** (आत्मन्=अपने को हन्=मारना) स्त्री० आत्मघात, अपने तईं मारडालना।

सं० **आत्महन** क० पु० आत्मघाती, खुदकुश, आधमान, वायुरोग।

सं० **आत्मा** (आ, अत्=जाना)

स्त्री० जीव, प्राण, आप, मन ।

प्रा० आदिअन्त (सं० आद्यन्त, आदि=पहले, अन्त=पीछे) गु० पहले से पीछेतक, आरंभ से समाप्ति तक, अव्वलसे आख़िरतक ।

सं० आदर (आ + दृ=आदर करना) पु० मान, सन्मान, प्रतिष्ठा, ख़ातिर ।

सं० आदरणीय (आदर् + अनीय) र्म्म० पु० सन्मानयोग्य, ख़ातिर के लायक़ ।

प्रा० आदा (आर्द्र वा आर्द्रक) पु० आर्द्रक, कच्ची और गीली सोंठ ।

सं० आदान (आ + दान, दा= देना) भा० पु० ग्रहण, लेना, स्वीकार, मंज़ूर ।

सं० आदानप्रदान भा० पु० देन लेन, दादसितद ।

सं० आदि (आ=पहले, दा=देना, लियाजाना) गु० पहला, प्रथम, आरम्भ, मूल, २ और, इत्यादि, वग़ैरह ।

सं० आदिकवि (आदि=पहला, कवि=कविता बनानेवाला) पु० पहला कवि, ब्रह्मा, वाल्मीकि ।

सं० आदित्य (अदिति=देवताओं की मा, अर्थात् अदिति का बेटा) पु० सूर्य, रवि, भानु, २ देवता ।

सं० आदित्यवार (आदित्य=सूर्य वार=दिन) पु० एतवार ।

सं० आदिपुरुष (आदि=पहला, पुरुष) पु० पहला पुरुष, विष्णु, परमेश्वर ।

सं० आदिष्ट (आ + दिश् + त, दिश्=देना) र्म्म० पु० आज्ञप्त, अनुमत, हुक्म दियागया, आज्ञा पाया हुआ, महकूम ।

सं० आदेश (आ + दिश्=देना) पु० आज्ञा, हुक्म, २ योगियों का प्रणाम, ३ व्याकरण में एक अक्षर को दूसरे अक्षर से बदलना ।

सं० आदेशी } (आ + दिश् + इन्)
आदेष्टा } (आ + दिश् + तृ)
क० पु० आज्ञादायक, हाकिम ।

सं० आद्योपान्त (आद्य + उपान्त) गु० अव्वल से आख़िरतक ।

सं० आदृत (आ + दृ + त) र्म्म पु० मान कियागया, इज़्ज़त कियागया ।

प्रा० आधा (सं० अर्द्ध) गु० अर्द्ध, दो बराबर हिस्सों में का एक, निस्फ़, नीम ।

सं० आधान (आ + धा=रखना) पु० गर्भधारण, गर्भ, गाभ, हमल ।

सं० आधार (आ, + धृ=रखना) पु० आसरा, २ पालनेवाला, ३ आहार, खाना, ४ पात्र, अधिकरण ।

प्रा० आधासीसी (सं० अर्द्ध= आधा, शीर्ष=शिर) स्त्री० अधकपाली, आधे शिर में पीड़ा ।

सं० आधि स्त्री० मनकी पीड़ा, उदासी ।

सं० आधिक्य } भा० स्त्री० बहुता-
आधिक्यता } यत, अधिकाई, कसरत ।

सं० आधिपत्य भा०पु० प्रधानता, अधिकार, स्वामित्व, वश, अख़्तियार ।

प्रा० आधीन (सं० अधीन) गु० आज्ञाकारी, वश, ताबेदार ।

सं० आधेय (आ + धा=धरना) र्म० धरने योग्य, जो वस्तु धरीजाय ।

प्रा० आन स्त्री० कान, मर्याद, लाज, संकोच, २ यश ।

प्रा० आन (सं० अन्य=और) गु० और, दूसरा ।

प्रा० आन (सं० आज्ञा) स्त्री० आज्ञा, २ प्रतिज्ञा, सौगन्द ।

सं० आनक (आ + नी=लाना जो ख़ुशी को लाता है) पु० नगारा, नक़ारा, दुंदुभी ।

सं० आनन (आ=से, अन्=जीना) पु० मुँह, मुख ।

सं० आनन्द (आ=चारों ओर से, नन्द=प्रसन्न होना) पु० हर्ष, सुख, चैन, ख़ुशी ।

सं० आनन्ददायी (आनन्द + दायी, दा=देना) क० पु० आनन्ददाता, ख़ुशी देनेवाला ।

सं० आनन्दपूर्वक (आनन्द=हर्ष, पूर्वक=सहित) शब्दयो० अव्य० हर्ष सहित, ख़ुशीके साथ ।

सं० आनन्दित (आ + नन्द् + इत) र्म० पु० प्रसन्न, हर्षित, ख़ुश, बश्शास ।

सं० आनन्दी (आ + नन्द् + इन्) क० पु० आनन्दयुक्त, प्रसन्न ।

प्रा० आनना (सं० आनयन, आ + नी=लाना) क्रि० स० लाना ।

अं० आनरेब्ल प्रतिष्ठित, इज़्ज़तदार ।

प्रा० आना } (सं० आगमन) क्रि०
आवना } अ० पहुँचना, आवना, पु० रुपये का सोलहवाँ भाग ।

प्रा० आनिहौं (आनना, लाना) क्रि० स० लाऊंगा लेआऊंगा ।

सं० आनीत र्म०पु० लाया हुआ ।

सं० आनेता (आ + नी + तृ, नी=लाना) क० पु० लानेवाला ।

सं० आन्दोलन (आन्दोल् + अन, दोल्=फेंकना) भा० पु० चलन, खिसकाना, हिलाना, हरकतदेना, ध्यान, झूलना, झूला, अनुसंधान ।

प्रा० आप सर्वना० अपने आप, स्व, अपना, ख़ुद, २ बड़े आदमी को तुम की जगह आप बोलते हैं ।

सं० आप (आप=फैलना) पु० पानी ।

प्रा० आपकाजी (आप=अपना, कार्य्य=काम) गु० स्वार्थी, आप मतलबी ।

सं० आपक्व क० पु० थोड़ापकाहुआ ।

सं० आपण (आ + पण्=वाणिज्य) धि० दूकान, हाट, हट्ट ।

सं० आपणिक (आ + पण् + इक) क०पु० वणिक्, बनिया, दूकानदार ।

सं० आपत्ति, आपद्, आपदा (आ, पद्=जाना) स्त्री० बिपत्ति, बिपत, अभाग, बला, बुरे दिन, दुख ।

सं० आपन्न (आ, पद्=जाना) क० पु० अभागा, बिपत में फंसा हुआ, दुखी, २ पायाहुआ, ३ शरण में आयाहुआ, शरणागत ।

प्रा० आपस (आप) सर्वना० एक दूसरे को, परस्पर, भाई बन्द ।

सं० आप्त (आप्=फैलना, लाभ) कर्म० पु० विश्वासित, लब्ध, सत्य, यथार्थ, भ्रमरहित ।

सं० आपाक (आ=चारों ओर से, पाक=पच्=पकाना) धि० पु० आवा, पजावा, मिट्टी के बरतनों के पकाने की जगह ।

सं० आपान (आ + पान, पा=पीना) धि० मद्यपानस्थान, शराब की दूकान पु० मद्यप मतवालों का झुंड ।

अं० आफ़िस धि०पु० कार्य्यशाला, कचहरी ।

प्रा० आफू (सं० अ=नहीं, फेन=झाग, स्फायी=फूलना) पु० अफ़ीम, अमल ।

सं० आफूक=अफ़ीम ।

सं० आभरण (आ=चारों ओर से. भृ=धारण करना वा पहनना) पु० गहना, भूषण, अलङ्कार, ज़ेवर, आभरण १२ बारह हैं १ नूपुर २ किंकिणी ३ चूरी ४ मुंदरी ५ कङ्कन ६ बाजूबंद ७ हार ८ कंठश्री ९ बेसर १० बिरिआ ११ टीका १२ शीशफूल ।

सं० आभा (आ=चारों ओरसे, भा=चमकना रोशनी) भा० स्त्री० चमक, शोभा, भड़क ।

सं० आभाष (आ=चारों ओर से भाष्=कहना) पु० भूमिका, मुखबन्ध, तमहीद, पेशबन्दी ।

सं० आभाषण (आभाष् + अन) भा० पु० कथन, कहना, बोलना ।

सं० आभूषण (आ=चारों ओर से भूष्=शोभना) पु० गहना, आभरण, अलंकार ।

सं० आभास (आ=से, भास=चमकना) भा० पु० प्रकाश, रोशन होना, अभिप्राय, समाजाना ।

सं० आभिज्ञ(आभि+ज्ञ=जानना) क० पु० ज्ञाता, जनुका, आगाह, वाक़िफ ।

सं० आभीर अहीर, गोप, ग्वाल ।

प्रा० आम (सं० आम्र) पु० एक फलका नाम ।

सं० आम (अम=बीमार होना) पु० एक प्रकार का रोग, पेटका रोग अपच, अजीर्ण कच्चा ।

सं० आमय (आमरोग या जाना अथवा अम बीमार होना) पु० रोग

बीमारी, पीड़ा ।

सं० आमर्ष } (अ=नहीं, मृष्=
अमर्ष } सहना) पु० क्रोध, गुस्सा, कोप, २ डाह।

प्रा० आमला } (सं० आमलक, आ
आवला } =चारों ओर से, मल्=धारणकरना, पकड़ना) पु० एक पेड़ और उसके फल का नाम आंवरा ।

सं० आमाशय (आम=आंव आशय=जगह) पु० पेटमें एक थैली सी होती है जो खाना खाते हैं पहले उसमें पहुँचता है, ओझरी, पचौनी ।

सं० आमिष (अम्=खाना) पु० मांस, २ खाने की चीज़, भोजन।

सं० आमिषाशी (आमिष + अश् =भोजनकरना, खाना) क० पु० मांसभक्षी, मांसाहारी ।

सं० आमोद (आ, मुद्=प्रसन्न होना) भा० पु= सुगन्ध, सुवास, २ आनन्द, हर्ष, खुशबू, खुशी ।

सं० आमोदित (आमोद् + इत) र्म० पु० हर्षित, खुश, प्रसन्न ।

सं० आमोद्दी (आमोद् + ई) क० हर्षयुक्त, खुश होनेवाला ।

सं० आम्र (अम्=जाना, खाना) पु० आम, आंवका फल वा पेड़ ।

प्रा० आम्राई (सं० आम्रराजि, आम्र=आम, राजि=पांत) स्त्री० आंबों का बाग़ ।

सं० आमन्त्रण भा० पु० निमन्त्रण, न्योता, दावत ।

सं० आय (आ + इ=फैलना) पु० लाभ, धनागम, आमदनी, फ़ायदा ।

सं० आयत (आ, यम्=रोकना, पर आ के साथ आनेसे इसका अर्थ फैलना होजाता है) गु० लंबा, चौड़ा, फैला हुआ पु० ऐसा खेत जिसकी आमने सामने की भुजा बराबर हों और सब कोने भी समकोन हों ।

सं० आयतन (आ, यत्=जतन करना अथवा रखाना) धि० पु० घर, जगह, स्थान ।

प्रा० आयसु (सं० आदेश) स्त्री० आज्ञा, हुक्म ।

सं० आयात (आ, यात, या=जाना) क० पु० आगत, आया, पहुँचा ।

सं० आयास (आ, यस्=मिहनत करना) स्त्री० मिहनत, परिश्रम, यतन ।

सं० आयु (इण्=जाना) स्त्री० उमर, आयुर्दा, जीवनकाल ।

सं० आयुध (आ=से, युध्=लड़ना) पु० शस्त्र, हथियार ।

प्रा० आर पु० कांटा, पैना, २ अंकुश ३ मंगल, शनिश्चर ४ लोहार ५ चमार, तांबा, रीति ।

सं० आरण्य (अरण्य=जंगल) गु० जंगली, बनका, बनैला ।

प्रा० आरज (सं० आर्य्य) गु० बड़ा, श्रेष्ठ, पूज्य, महाराज, पु० ससुर ।

प्रा० आरत (सं० आर्त्त, आ, ऋ=जाना) गु० दुखी, घबराया हुआ, पीड़ित, व्याकुल ।

प्रा० आरति (सं० आर्त्ति, आ, ऋ=जाना) स्त्री० दुख, पीड़ा, रोग, कष्ट ।

प्रा० आरती स्त्री० } (सं० आरात्रिक, अ=नहीं,
आरता पु० }
रात्रि=रात, अर्थात् जो दिन में भी दिखाई जाती है) पूजा में देवता के साम्हने दीपक दिखाना, दीपदर्शन, २ व्याह की एक रीति विशेष ।

सं० आरब्ध र्म्म० पु० उपक्रांत, आरम्भित, शुरूअ किया गया ।

सं० आरम्भ (आ, रभि=शुरूअ करना) पु० शुरूअ, आरम्भ, उपक्रम ।

सं० आरा स्त्री, क्रकच, करांत, छेदनी, सूजा ।

सं० आरात् अव्य० दूर, समीप ।

सं० आराति (आ=चारों ओर से, रा=देना दुखको) पु० वैरी, शत्रु, दुश्मन ।

सं० आराधक (आ, राध्=सिद्ध करना, पूराकरना) क० पु० आराधना करनेवाला, पूजनेवाला, सेवक, भक्त, आबिद ।

सं० आराधन भा० पु० } (आ,
आराधना स्त्री० } राध्=
पूराकरना) पूजा, सेवा, इबादत, भक्ति ।

सं० आराम (आ=चारों ओर से, रम्=खुशी करना) पु० बाग़, बागीचा, फुलवाड़ी, उपवन ।

सं० आरूढ़ (आ, रुह्=चढ़ना) गु० चढ़ाहुआ, सवार ।

सं० आरोग्य (अरोग=निरोग) पु० निरोगता, आराम, तंदुरुस्ती, कुशल !

सं० आरोप } (प्रा० रुह्=उगना,
आरोपन } चढ़ना) भा० पु०
जमाना, स्थापन करना, क़ायम करना ।

सं० आरोपित (आ, रुह्=उगना, चढ़ना) र्म्म० पु० सौंपा हुआ, रक्खा हुआ, २ रोपा हुआ, बोया हुआ, ३ बदलाहुआ ।

सं० आर्द्र (अर्द=जाना) गु० गीला, भीगा, ओदा, तर, सीला ।

सं० आर्य्य (ऋ=जाना) गु० बड़ा, श्रेष्ठ, कुलीन, अच्छे घराने का, पूज्य, पूजनीय, महाराज, पु० हिंदू।

सं० आर्य्यावर्त्त (आर्य=हिंदू वा उत्तमकुल के मनुष्य, आवर्त=ढका हुआ, वृत्=होना) पु० हिंदुस्थान

की वह पवित्र धरती जो पूर्व समुद्रसे पश्चिम समुद्रतक फैली हुई है और उत्तर और दक्खिन की ओर हिमालय और विंध्याचल से घिरी हुई है मनु ने इसी को आर्यावर्त्त लिखा है जैसे " आ समुद्रात्तु वै पूर्व्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात् । हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्ये आर्य्यावर्त्त प्रचक्षते ॥ १ ॥ आर्य्यावर्त्तः पुण्यभूमिर्मध्यं विन्ध्यहिमालयोः"।

सं० आलम्ब / **आलम्बन** (आ=से, लबि=ठहरना)पु०आसरा, सहारा, अवलंब ।

सं० आलय (आ=चारों ओरसे, ली=लेना, मिलना)पु० घर,स्थान, जगह ।

सं० आलवाल (आ=चारों ओरसे, ला=लेना) पु० थाला, घेरा, पेड़की जड़के आस पास का घेरा।

सं० आलस्य / **प्रा० आलस** (अलस, अ=नहीं लस्=शोभना, खेलना) पु० सुस्ती, आस्कत,ढील ।

प्रा० आलसी गु० सुस्त, काहिल ।

प्रा० आला (सं०आलय) पु०दीप रखने के लिये भीत में वा खंभे में छोटा सा खोह, दीया का ताक़, ताक़, ताखा ।

सं० आलान (आ=से, ला वा ली=लेना)पु० हाथी के बांधने का खूंटा अथवा रस्सा, बेड़ी, ज़ंजीरआदि।

अ० आलान इश्तिहार, विज्ञापन।

सं० आलाप (आ, लप्=बोलना) भा० पु० बातचीत, बोलचाल, कहना बोलना, २ स्वरका मिलान।

सं० आलापनीय (आलाप्+अनीय) कर्म० पु० भाषण योग्य, कहने लायक़ ।

सं० आलिंगन (आ=चारों ओर से, लिगि=छाती से लगाना, मिलना) पु० प्यार से मिलना, गले लगाना, प्यार से स्त्री पुरुष का आपस में मिलना ।

प्रा० आली (सं० आलि, अल्=शोभना) स्त्री० सखी, सहेली, सहचारिणी ।

सं० आलीढ़ (आ, लिह्=स्वाद लेना) कर्म० पु० चारा, भुक्त, स्वाद लिया ।

सं० आलेख्य (आ, लिख्=लिखना) कर्म० पु० लिखा ।

सं० आलोक (आ, लोक्=देखना) पु० दर्शन, दृष्टि,देखना, २ चमक, ज्योति, बड़ाई, यश, बखानना, विरद, झरोखा, रोशनदान ।

सं० आलोकन भा० पु० दर्शन, देखना ।

सं० आलोचना (आ, लोच्=देखना) भा० पु० विचारना, शुद्ध करना, चर्चाकरना, नज़रसानी करना ।

सं०आलोच्य,धातु,अव्य०विचारकर।

सं० आलोड़न (आ, लुड्=मथना वा घोटना) भा० पु० मथना, तलाश करना, अन्वेषण ।

सं० आलोल गु० चंचल, अति चंचल ।

प्रा० आल्हा पु० एक हिंदू शूरवीर और कवि का नाम जिसके नाम से एक प्रकार की कविता का नाम भी आल्हा है ।

सं० आवरण (आ=से, वृ=ढकना) पु०ढाल, २ ढकना, ढकनेकी कोई चीज़, पर्दा, आच्छादन ।

प्रा० आवभक्ति
आवभगत
आवभगति (हिं०आना, सं० भक्ति=सेवा) स्त्री० आदर मान, सत्कार ।

सं० आवर्ज्जन (आ, वृज्=फेंकना) मना करना, रोकना ।

सं० आवर्त्त (आ=चारों ओर, वृत् =होना, घूमना) पु० भँवर, चक्र, फेर, घुमाव ।

सं० आवलि (आ=चारों ओर से वल्=घेरना, ढकना) स्त्री० पांत, पंक्ति, श्रेणी, अवली ।

सं० आवश्यक (अवश्य) गु० निश्चय, ज़रूरी, कर्त्तव्य ।

सं०आवश्यकता भा०स्त्री०ज़रूरत।

प्रा० आवर्दा
आव (सं० आयुर्दाय, इण्=जाना) स्त्री० उमर, अवस्था ।

प्रा० आवागमन
आवागवन (हिं० आना सं० गमन=जाना) पु० आना जाना, आमद रफ़्त ।

सं० आवाहन (आ, वह्=लेजाना, पास लाना) भा० पु० बुलाना, पूजा अथवा होम के समय देवता को मंत्रों से बुलाना ।

सं० आविर्भाव भा० पु० प्रकट होना, ज़ाहिर होना ।

सं० आविर्भूत (आविर्=प्रकट, भू=होना)गु०प्रकट, ज़ाहिर, प्रत्यक्ष ।

सं० आविष्कार
आविष्कृत भा० पु० प्रकट होना, कर्म० निकला हुआ ।

सं० आविष्ट (आ, विश्=प्रवेश करना) क० पु० बैठा, घुसा ।

सं० आवृत (आ, वृत्=होना, ढाकना) कर्म० पु० आच्छादित, वेष्टित, ढाका हुआ, घेरा हुआ ।

सं० आवृत्ति (आ, वृत्=लौटना पौटना) भा० पु० अभ्यास, बार २ कहना, उधरना ।

सं० आवेदन (आ, विद्=ज्ञान वा समझ)भा०पु०निवेदन,गुज़ारिश।

सं० आवेद्यसंग्रह पु० वाजिबुल् अर्ज़, वह पत्र जिसमें ज़मींदार अपना स्वत्व अर्थात् हकूक़ सरकार में दाख़िल करते हैं !

सं० आवेश (आ, विश्=घुसना) पु० प्रवेश, घुसना, २ घमंड, ३ क्रोध, गु० पकड़ा हुआ, ग्रस्त ।

सं० आवेशन प्रवेश, २ शिल्पशाला ।

सं० आशंसा (आ, शंस्=सराहना, पर आ उपसर्ग के साथ आने से इस का अर्थ चाहना होताहै) भा० स्त्री० इच्छा, चाह, चाहना, अभिलाष ।

सं० आशक्त **आसक्त** (आ=से, सञ्ज्=मिलना) क० पु० लगाहुआ, मोहित, लीन, आशिक्र ।

सं० आशङ्का (आ=से, शङ्कि=संदेह करना) स्त्री० डर, भय, २ संदेह ।

सं० आशय (आ, शी=सोना) पु० मतलब, अभिप्राय, तात्पर्य, २ स्थान, जगह, शरण ।

सं० आशा (आ=चारोंओर, अश्=फैलना) स्त्री० आस, भरोसा, आसरा, उम्मेद, २ दिशा, ओर, तरफ़ ।

सं० आशातीत (आशा + अतीत) गु० आशा से अधिक, उम्मैद से ज़ियादा ।

सं० आशिष् (आ, शास्=सिखाना पर आ उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ चाहना होता है) स्त्री० आशीर्वाद, आसीस, वर, दुआ ।

सं० आशीर्वचन **आशीर्वाद** (आशिस्=असीस, वचन वा बात कहना) पु० असीस, आशीस, दुआ ।

सं० आशु (अश्=फैलना) क्रि० वि० शीघ्र, जल्द, तुरन्त, झटपट ।

सं० आशुतोष (आशु=तुरंत, तोष =प्रसन्न होनेवाला, तुष्=प्रसन्न होना) पु० महादेव, शिव ।

सं० आश्चर्य (आ, चर=चलना) पु० अचंभा, अचरज, विस्मय, गु० अनोखा, अद्भुत ।

सं० आश्रम (आ, श्रम्=तपकरना) धि० पु० ऋषियों के रहने की जगह, मठ, २ धर्म के अनुसार अवस्था के चार भेद १ ब्रह्मचर्य २ गृहस्थ ३ वानप्रस्थ ४ संन्यास, कलियुग में केवल गृहस्थ और संन्यास ये दोही आश्रम हैं, जैसे “ गृहस्थो भिक्षुकश्चैव, आश्रमौ द्वौ कलौयुगे ” ।

सं० आश्रय (आ=चारों ओरसे, श्रि =सेवा करना) भा० पु० आसरा, शरण, अवलम्ब, २ घर, जगह, ३ पास, समीपता ।

सं० आश्रयभूत (आश्रय + भूत) गु० आसरागीर ।

सं आश्रयस्थान (आश्रय + स्थान, स्था=ठहरना) धि० पु० सहारा की जगह, उम्मेदगाह ।

सं० आश्रित (आ, श्रि=सेवा करना) र्म्म० पु० शरणागत, आधीन, ताबेदार ।

सं० आश्रितस्वत्वाधिकारी क०

पु० हक़दार, मातहत ।

सं०आश्लेष (आ, श्लिष्=मिलना) पु० आलिंगन, जुड़ना, मिलना ।

सं०आश्वासन } (आ, श्वासन, श्वस्=समझाना) भा०पु० प्रबोध करना, भरोसा देना, शिक्षा करना ।
आश्वास }

सं० आश्वास्य धा० अव्य० समझाकर ।

सं० आश्विन (अश्विनी एक नक्षत्र का नाम, इस महीने में पूरा चांद इस नक्षत्र के पास रहता है और पूनों के दिन अश्विनी नक्षत्र होता है) पु० कुँआर, आसोज, बरस का छठा महीना ।

प्रा०आषर(सं०अक्षर)पु०हर्फ़, चिह्न ।

सं० आषाढ़ (आषाढ़ा एक नक्षत्र का नाम इस महीने में पूरा चांद इस नक्षत्र के पास रहता है और पूनों के दिन आषाढ़ा नक्षत्र होता है) पु० बरस का तीसरा महीना, असाढ़ ।

प्रा० आस } (सं० आशा) स्त्री० आसा, भरोसा, आसरा, २ दिशा ।
आसा }

सं० आसन (आस्=बैठना) धि० पु० डाभ वा ऊनकी बनी हुई चीज़, जिसपर हिंदूलोग सन्ध्या पूजा करने के समय बैठते हैं, २ बैठना, योगियों के बैठने का ढंग जैसे पद्मासनादि योग का एक अंग, ३ जांघ के भीतर की ओर ।

प्रा० आसनतलेआना बोल० बस होना, आधीन होना, ताबे होना ।

प्रा० आसन से आसन जोड़ना बोल० दूसरे आदमी के बहुतपास बैठना ।

सं० आसन्न (आ, सद्=बैठना) गु० पास, नगीच, समीप, निकट ।

सं० आसव (आ, सू=पैदा होना, मदिरा बनाना) स्त्री० मदिरा, मद्य, दारू, शराब, मद, प्राण ।

प्रा० आसावसन भा० पु० नंगा, तृष्णाहीन, बेतमअ ।

प्रा० आसिख (सं०आशिष्) स्त्री० असीस, आशीर्वाद, दुआ ।

प्रा० आसिन (सं० आश्विन) पु० बरसका छठा महीना,कुँआर, आश्विन, आसोज ।

प्रा० आसीन (आस्=बैठना) गु० बैठाहुआ ।

सं० आस्तिक (अस्=होना) क० पु० जो लोग ईश्वर का और परलोक का होना मानते हैं, ईश्वरवादी, परमेश्वर में विश्वास रखने वाला, विश्वासी ।

सं० आस्पद धि० पु० पद, स्थान, उपाधि, उहदा, जीना, मर्तबा ।

सं० आस्य (अस्=फेंकना, जिसमें खाना फेंकाजाताहै) पु०मुँह, मुख ।

सं० आस्वाद (आ, स्वद=स्वाद
आस्वादन लेना) भा० पु० रस, स्वाद, चाट ।

सं० आस्वादक (आ, स्वद + अक) कृ० पु० स्वादग्राहक, स्वाद लेनेवाला ।

प्रा० आहट पु० खटका, शब्द, आवाज़, पैरों का शब्द ।

प्रा० आहर जाहर बोल० आना जाना ।

सं० आहार (आ, हृ=लेना, आ उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ खाना होताहै) पु० खाना, भोजन ।

प्रा० आहि (सं०अस्ति, अस्=होना) क्रि० अ० है ।

सं० आहुति (आ, हु=होम करना) स्त्री० मन्त्रसे देवताओं के लिये होम की सामग्रीको आगमें होमना, देवताओंके लिये होमने की सामग्री ।

सं० आह्निक (अहन्=दिन) पु० हरएक दिनका धर्मका काम स्नान संध्या तर्पण आदि, २ हरएक दिन का, दिनसम्बन्धी, रोज़मर्रा ।

सं० आह्लाद (आ, ह्लाद=प्रसन्न होना) पु० आनन्द, हर्ष, हुलास, खुशी ।

सं० आह्वान (आ, ह्वे=बुलाना) आवाहन, बुलाना ।

इ

सं० इ पु० कामदेव का नाम विस्मय, निन्दा, सम्बोधन, खेद वि० बो० आह ।

प्रा० इन्दारा (सं०अन्धकुआं, अन्ध्=अंधाहोना, नहीं दीखना वा अम=जाना वा शब्द करना) पु० कुआं, पक्का बँधाहुआ कुआं ।

प्रा० इक (सं० एक) गु० एक ।

प्रा० इकछत्रराज (सं० एकछत्रराज्य) पु० चक्रवर्त्ती राज, सारे संसार का राज ।

प्रा० इकटक (इक=एक, टकना वा तकना, देखना) पु० एकताक़, टकटकी ।

प्रा० इकट्ठा (सं० एकत्र वा एक
इकठौर स्थान) गु० संग्रह,
इकठौरा संचय, एकजगह ।

प्रा० इकलौता (सं०एक) गु० एक ही केवल ।

प्रा० इकसार (सं० एकसार, एक, सृ=जाना) गु० बराबर, सारीखा, सरीखा, समान, सदृश ।

प्रा० इकसंग (सं० एकसंग) गु० एकसाथ ।

प्रा० इक्का (सं० एक) गु० अकेला, अनूठा, अनूप, उत्तम, पु० एक घोड़े की हलकी गाड़ी, इक्का, बग्घी और पालकी गाड़ी आदि सवा-

रियों से बहुत ही हलके दर्जे की सवारी है और पटना में इसकी सवारी का बहुत चलन है ।

सं० **इक्षु** (इष्=चाहना) स्त्री० ऊख, ईख, केतारी, गन्ना ।

सं० **इक्षुरस** (इक्षु=ऊख, रस) पु० ऊख का रस, राब ।

सं० **इक्ष्वाकुवंशी** (इक्ष्वाकु=सूर्यवंशियों का पहला राजा, वंशी=घराने के) गु० इक्ष्वाकु राजा के घराने के, सूर्यवंशी, अयोध्या के राजा ।

प्रा० **इछन** }
इच्छन } (सं० ईक्षण, ईक्ष=देखना) पु० आंख, नेत्र, २ दृष्टि, देखना ।

सं० **इच्छा** (इष्=चाहना) स्त्री० चाह, वांछा, आकांक्षा, चाहना, अभिलाष, कामना, ख़्वाहिश, चाह।

सं० **इच्छुक** (इष् + उक) कृ० पु० चाहनेवाला, आकांक्षी, अभिलाषी, ख़्वाहिशमन्द ।

सं० **इज्या** (यज्=पूजना) स्त्री० पूजा, सेवा, यज्ञ ।

सं० **इड़ा** (इल्=जाना) स्त्री० गौ, पृथ्वी, वाणी, नाड़ी, स्वर्ग, वाम नासिका ।

प्रा० **इत** (सं० अत्र=यहां) क्रि० वि० यहां, इधर ।

सं० **इतर** अव्य० अन्य, भिन्न, नीच।

सं० **इति** (इण्=जाना) क्रि० वि० इस प्रकार, ऐसे, २ यहां तक, पूरा, संपूर्ण, समाप्त, यह शब्द अध्याय और पुस्तक और चिट्ठी पत्री के अन्त में लिखा जाता है और इस का अर्थ यह है कि यह अध्याय अथवा बात पूरी हो गई, ख़त्म ।

सं० **इतिहास** (इतिह=परंपरा की बात, इति=ऐसा, ह=निश्चय, अस्=होना वा आसु=रहना) पु० पुरानी कथा जैसे महाभारतआदि, वृत्तान्त, तवारीख़ ।

सं० **इत्थम्** (इदम्=यह) क्रि० वि० इस प्रकार, इस तरह ।

सं० **इत्यादि** (इति=ऐसा, आदि=और भी) क्रि० वि० इससे लेके और सब, वग़ैरह ।

सं० **इदानीम्** क्रि० वि० अबहीं, अभी, इसी वक़् ।

सं० **इन** (इण्=जाना) कृ० पु० सूर्य, समर्थ, राजा, पति, ईश, हस्त नक्षत्र, १२ गिनती ।

अं० **इनकम् टैक्स** आय पर कर, आमदनी पर महसूल ।

सं० **इङ्ग** (इग्=जाना वा चिह्न करना) चराचर, अभिप्रायानुसार, चेष्टा, अद्भुत, ज्ञान ।

सं० **इङ्गित** (इग् + इत) भा० पु० सैन, इशारा, चिह्न ।

सं० **इन्दिरा** (इदि=ऐश्वर्य रखना) स्त्री० लक्ष्मी ।

सं० इन्दविर (इन्दी=लक्ष्मी, वर =चाहा हुआ) पु० नीलकमल, नीलोत्पल ।

सं० इंदु (उन्द्=भिगोना, जो अपनी किरणों से धरती को ठंढा करता है) पु० चांद, चंद्रमा, २ कपूर।

सं० इन्दुर पु० मूस, चूहा ।

सं० इन्द्र (इदि=ऐश्वर्य रखना) पु० देवताओं का राजा, स्वर्ग का राजा, शक्र, २ परमेश्वर, ३ राजा, सब से बड़ा अथवा श्रेष्ठ, ऐश्वर्य ।

सं० इन्द्रजाल (इन्द्र=ऐश्वर्य अर्थात् चतुराई, जाल आंखों को ढकना, जल्=ढकना) पु० मन्त्र अथवा औषधी से चीज़ें और तरह से दीखना, बाज़ीगरी, छल कपट, फरफंद, धोखा ।

सं० इन्द्रजित् (इन्द्र=देवताओं का राजा, जित्=जीतनेवाला, जि=जीतना) पु० रावण का बेटा, मेघनाद ।

सं० इन्द्रधनुष (इन्द्र=देवताओं का राजा, धनुष=धनुष, कमान) पु० धनुष, पनसूखा, बरसात के दिनों में मेह के कणों पर सूर्य की किरण पड़ने से जो आकाश में धनुष के आकार रंग दिखाई देता है, क़ौस कुज़ा ।

सं० इन्द्रप्रस्थ (इन्द्र=देवताओं का राजा, प्रस्थ=पहाड़ पर रहने के योग्य जगह, अर्थात् इन्द्र का स्थान जो सुमेरु पहाड़ पर है उसके बराबर) पु० दिल्ली ।

सं० इन्द्रवधू (इन्द्र=देवताओं का राजा, वधू=स्त्री) स्त्री० इन्द्राणी, २ लाल कीड़ा, बीरबहूटी ।

सं० इन्द्राणी (इन्द्र) स्त्री० इन्द्र की स्त्री, शची, २ एक प्रकार की ओषधि ।

सं० इन्द्रासन (इन्द्र=देवताओं का राजा, आसन=सिंहासन) पु० इन्द्र का सिंहासन, राजा इन्द्र का तख़्त ।

सं० इन्द्रिय
प्रा० इन्द्री (इन्द्र परमेश्वर अर्थात् जिनके द्वारा परमेश्वर का ज्ञान होता है, या परमेश्वर की बनाई हुई) स्त्री० जिनसे रूप रस अथवा करना चलना आदिका ज्ञान होताहै अर्थात् १ हाथ २ पांव ३ वाक् ४ लिङ्ग ५ गुदा ये पांच कर्मेन्द्रिय कहलाती हैं और १ आंख २ नाक ३ कान ४ जीभ और ५ शरीर पर का चमड़ा ये पांच ज्ञानेन्द्रिय कहलाती हैं ।

सं० इन्धन
प्रा० ईंधन (इन्ध्=जलाना) पु० जलावन, लकड़ी ।

प्रा० इम्ली (सं० अम्लीका, अम्ल =खट्टा) स्त्री० अम्ली, एक पेड़ का नाम

प्रा०इमि क्रि० वि० ऐसे, इस प्रकार से, इस तरह से ।

प्रा०इम्रती } (सं०अमृत) स्त्री० एक
इमरती } भांतिकी मिठाई ।

प्रा० इलायची (सं० एला, इल्=जाना, फेंकना) स्त्री० एलाची, एला,एकभांति का गरम मसाला ।

सं० इव (इव=फैलना) क्रि० वि० वरावर, जैसे, सदृश, समान, वरावरी को जतलानेवाला शब्द ।

अ़०इस्तआरा (सं० लक्षणा) मांगना, ऊपर से लेना ।

फ़ा०इस्तकता (सं०प्रज्ञापत्र) किसी बातका निर्णय चाहना ।

सं० इषु पु० बाण, शर ।

सं०इषुधि (इषु=बाण, धा=रखना) धि०पु०तूण, तरकश, बाणाधार।

सं० इष्ट (इष्=चाहना) कर्म० पु० चाहाहुआ,पूजने योग्य,माना हुआ, प्यारा,पु० अपना देवता, २ अपना प्यारा,आदमी ३ चाही हुई चीज़।

सं० इष्टदेव (इष्ट=चाहाहुआ, देव=देवता) पु० माना हुआ देवता, अपना देवता, पूज्य देवता, पूजनीय।

प्रा०इहि (सं० इह=यहां) क्रि० वि० यहां,इसमें,इस जगह, २ इस तरह ।

ई

सं० ई पु० कामदेव, स्त्री० लक्ष्मी, वि० बो० आह ।

प्रा०ईंट (सं० इष्टका, इष्=चाहना) स्त्री० ईंटा, मिट्टी की बनाई हुई चीज़ जिससे मकान बनाये जाते हैं ।

प्रा०ईंडुआ पु० सिरपर बोझा रखने के लिये टेकन जो कपड़े वा सन का बनाया जाता है, उढ़कन, टेकन ।

सं०ईक्षक (ईक्ष्+अक) क० पु० दिखैया, देखनेवाला, नाज़िर ।

सं०ईक्षण (ईक्ष्=देखना) पु०आंख, नेत्र, २ देखना, दर्शन, दृष्टि ।

सं० ईक्षित (ईक्ष्+इत) कर्म० दर्शित, देखा हुआ ।

प्रा०ईख (सं०इक्षु) स्त्री०ऊख,गन्ना ।

प्रा०ईठ (सं०इष्ट) कर्म०पु०वाञ्छित, इष्ट, चाहा हुआ ।

सं०ईड़ा (ईड़=स्तुति करना) भा० स्त्री० स्तुति करना, बड़ाई करना, तारीफ़करना ।

सं०ईति (ई=जाना) स्त्री० उपद्रव, आपदा, "अतिवृष्टिरनावृष्टिः शलभा मूषिकाः खगाः । अत्यासन्नाश्च राजानः षडेताईतयःस्मृताः" । अर्थ—१ बहुत पानी बरसना, २ पानी नहीं बरसना, ३ टिड्डी आना, ४ चूहों के बहुत होने से अथवा, ५ पखेरुओं की बहुतायत से खेतीका बिगाड़, ६ अपने देशके राजा पर दूसरे देशके राजा का चढ़ आना, इन छः भांति की विपत को ईति कहते हैं ।

सं०ईदृश
ईदृक्ष (इदम्=यह, दृश्=देखना) गु० ऐसा, इस भांति का, इस प्रकार का ।

सं० ईप्सा (आप्=चाहना) स्त्री० पाने की इच्छा, चाह, वाञ्छा ।

सं०ईप्सित (ईप्स्+इत) र्म्म० पु० चाहाहुआ, अपेक्षित, वाञ्छित ।

सं० ईर्ष्या
प्रा० ईर्षा (ईर्ष्य=डाहकरना) स्त्री० डाह, द्रोह, द्वेष, किसी की बढती देखकर जलना, हसद ।

सं०ईर्षी (ईर्ष्य+ई) क०पु०द्रोही, द्वेषी, हासिद ।

सं० ईश (ईश्=ऐश्वर्यरखना) पु० ईश्वर, परमेश्वर, २ शिव, महादेव, ३ राजा, स्वामी, प्रभु, धनी, मालिक ।

सं०ईशान (ईश=महादेव) पु०शिव, महादेव, २ पूर्व उत्तर के बीच का कोन, जिसका दिक्पाल महादेव है ।

सं०ईशिता स्त्री०
ईशित्व पु० (ईश्=ऐश्वर्य रखना) बड़प्पन, बड़ाई, आठ सिद्धिमें की एक सिद्धि ।

सं० ईश्वर (ईश्=ऐश्वर्य रखना) पु० परमेश्वर, सृष्टिकर्ता, प्रभु, २ महादेव, ३ मालिक, धनी ।

सं०ईश्वरता (ईश्वर) स्त्री० प्रभुता ।

सं० ईश्वरकृत र्म्म० पु० ईश्वर रचित, ईश्वरनिर्मित ।

सं०ईश्वरोक्त (ईश्वर+उक्त) र्म्म० पु० ईश्वरकथित, ईश्वर का कहा हुआ, वेद, कलामइलाही ।

प्रा० ईस (सं० ईश) पु० परमेश्वर, २ महादेव, ३ राजा, स्वामी ।

सं० ईषत् क्रि० वि० थोड़ा, किंचित् ।

सं० ईहा (ईह्=यतन करना) स्त्री० यतन, चेष्टा, उपाय, २ इच्छा ।

उ

सं० उ (उ=शब्द करना) पु० महादेव, डालना, नियोग, कोपवचन, २ वि० बो० संबोधक का सूचक है, ३ तर्क अर्थ में बोला जाता है ।

प्रा० उकटना (सं०उत्=ऊपर, कड्=तोड़ना) क्रि० स० गड़ी हुई चीज़ को खोदना, २ उखाड़ना, ३ भेद लेना, ४ छिपीबात को खोल देना ।

प्रा० उकसना (उत्=ऊपर, कस=जाना) क्रि० अ० ऊंचा होना, उठना, चलना ।

सं०उक्त (वच्=बोलना) र्म्म० पु० कहा हुआ बोला हुआ, कथित ।

सं० उक्ति (वच्=बोलना) भा० स्त्री० कहना, बोलना, बोलने की शक्ति, भाषण, बोलचाल, वचन, क़लाम, दलील ।

प्रा०उकताना (सं० उत्=ऊपर, कठ्=दुखसे जीना, शोच करना) क्रि० अ० घबराना, उदासहोना, थकना ।

प्रा० उखड़ाना } (सं० उत्=ऊपर,
उखाड़ना } खड्=तोड़ना,
क्रि० स० जड़से तोड़ डालना, २ उजाड़ना, नाश करना ।

प्रा० उखल, पु० } (सं० उदूखल,
उखली, स्त्री० } वा उलूखल,
उत्=ऊपर, ख=शून्य, ला=लेना) ऊखली, ओखली, जिसमें चांवल आदि कूटते हैं ।

प्रा० उगना (सं०उत्=ऊपर, गम्=जाना) क्रि० अ० पैदा होना, बढ़ना, निकलना ।

प्रा० उगतेही जलजाना बोल० यह मुहावरा उस जगह बोला जाता है कि जब किसी की आश शुरूअ ही में टूट जाय ।

प्रा० उगलना (सं०उत्=ऊपर, गॄ=निगलना) क्रि० स० मुँह में कोई चीज़ लेके पीछे निकाल देना, वमन करना, उलटी करना, कय करना ।

प्रा० उगाहना (सं० उत् , ग्रह=लेना) क्रि०स०इकट्ठा करना, बटोरना, जमाकरना, तहसीलकरना ।

सं० उग्र (उच्=इकट्ठा होना वा वज्=कठोर होना) गु० कठोर, डरावना, भयंकर, क्रोधित, कड़ा, पु० महादेव का नाम ।

सं० उग्रता भा० स्त्री० कठोरता, तेज़ी, सख़्ती ।

सं० उग्रस्वभाव (उग्र+स्वभाव) कठोर चित्त, तेज़ मिज़ाज ।

सं० उग्रसेन (उग्र=डरावनी, सेना=फ़ौज)पु० मथुरा का राजा, आहुक राजा का बेटा देवक का भाई और पवनरेखा का पति जिसके द्रुमलिकनाम राक्षस से कंस पैदा हुआ ।

प्रा० उघड़ना } क्रि० अ० खुल
उघरना } जाना, प्रकट होना,
२ नङ्गा होना ।

प्रा० उघाड़ना } क्रि० स० खोल-
उघारना } ना, प्रकट करना,
२ नङ्गा करना ।

प्रा० उचकना क्रि० अ० कूद उठना, कूदना, उछलना ।

प्रा० उचक्का पु० ठग, उठाईगीरा, गांठकट्टा, जेबकतरा, चौर, छली, पाखण्डी ।

प्रा० उचटना (सं० उत् , चट्=तोड़ना) क्रि० अ० अलग अलग होना, उखड़ना, बिखरना, पिछलना, उदास होना, मन नहीं लगना, २ नींद का टूटना ।

प्रा० उचरना } (सं० उच्चरण,
उच्चरना } उत्=ऊपर, चर्=
चलना, पर उत् उपसर्ग के साथ आनेसे अर्थ बोलना होता है) क्रि० स० बोलना, कहना, शब्दों का उच्चारण करना ।

प्रा० उचाटना (सं० उच्चाटन, उत्=ऊपर, चट्=तोड़ना) क्रि० स०

जुदा २ करना, अलग २ करना ।

प्रा० उचाट होना बोल० उदास होना, जी नहीं लगना, उचाटी लगना ।

सं० उचित (उच्=इकट्ठाहोना वा वच्=बोलना) क० पु० योग्य, ठीक, चाहिये, मुनासिब ।

सं० उच्च (उत्=ऊपर, चि=इकट्ठा करना) गु० ऊंचा, लम्बा, उन्नत, प्रांशु, उदग्र, तुंग, उच्छ्रित ।

प्रा० उच्चशिखाकी शिक्षा स्त्री० आलादर्जा की तअलीम ।

सं० उच्चस्वर पु० बड़ा शब्द, बुलन्द आवाज़ ।

सं० उच्चार (उत्=ऊपर, चर्=चलना)पु० उच्चारण, कथन, वर्णन, मल, विष्ठा ।

सं० उच्चारण (उत्=ऊपर, चर्=चलना, उत् उपसर्ग के साथ आने से अर्थ, बोलना होता है) भा० पु० बोलना, तलफ़्फ़ुज़ ।

सं० उच्चरित (उत्+चर्+इत) र्म्म० पु० कथित, कहा हुआ ।

सं० उच्छिन्न (उत्=ऊपर, छिद्=काटना) र्म्म० पु० कटा हुआ, उखड़ा हुआ, निर्मूल ।

सं० उच्छिन्नता भा० स्त्री० नाश, ख़राबी, बरबादी ।

सं० उच्छिष्ट (उत्, शिष्=बाक़ी रहना) र्म्म० पु० जूठा, खाने के पीछे बचाहुआ खाना, भुक्तावशिष्ट ।

सं० उच्छेद (उत्+छिद्=काटना) भा० पु० विनाश, ख़राबी, काटना, कतरना ।

सं० उच्छेदी (उच्छेद्+ई) क० पु० नाशक, काटनेवाला ।

प्रा० उछंग (सं०उत्सङ्ग,उद्=ऊपर, षञ्ज्=मिलना) स्त्री० गोदी, गोंद ।

प्रा० उछरना } (सं० उत्=ऊपर,
उछलना } चल्=चलना)
क्रि० अ० कूदना, कूद उठना, ऊपर उठना, कुदकना ।

प्रा० उछाह (सं०उत्साह,उद्,सह्=सहना) पु० आनंद, हर्ष, ख़ुशी ।

प्रा० उजागर गु० नामवर, नामी, प्रतापी, प्रसिद्ध, विख्यात, यशस्वी ।

प्रा० उजाड़ना (सं० उत्पाटन, उत्=ऊपर, पट्=जाना, अथवा, उत्=ऊपर,जट्=इकट्ठा होना) क्रि०स० नाश करना, चौपटकरना, बरबाद करना ।

प्रा० उजाला } (सं०उज्ज्वल, उत्
उजियारा } =ऊपर, ज्वल्=चमकना) भा०पु०प्रकाश,तेज, चमक ।

प्रा० उज्जल } (उद्, ज्वल्=चम-
सं० उज्ज्वल } कना) क० पु०
साफ़, स्वच्छ, निर्मल, चमकीला, प्रकाशित, दीप्तिमान् ।

सं० उज्ज्वलन भा० पु= उद्दीपन, प्रकाश करना, चमकना ।

प्रा० उझकना क्रि० स० ताकना, झांकना ।

प्रा० उझड़ } गु० गँवार, अनघड़,
उज्झड़ } अखड़, मूर्ख ।

प्रा० उलझना (सं० उज्झलन, उदूझ=छोड़ना) क्रि० स० एक बरतन से दूसरे बरतन में डालना ।

सं० उज्झालित कर्म० छोड़ा हुआ, डाला हुआ ।

सं० उट पु० तृण, तिनका, ऊर्ण, पत्ता ।

सं० उठज (उट + जन्=पैदा होना वा बनाना) पु० पर्णशाला, पत्तों का घर, मुनिगृह ।

प्रा० उठना (सं० उत्थान, उद्=ऊपर, स्था=ठहरना) क्रि० अ० खड़ा होना, २ उगना, ३ दूर होना, मौक़ूफ़ होना, अवालिश होना ४ ख़र्च होना, बरख़ास्त करना ।

प्रा० उठबैठ बोल० बेचैनी, उठना बैठना, कसरत ।

प्रा० उठाईगीरा गु० चोट्टा, ठग, उचक्का, हथमार ।

प्रा० उठाना (सं० उत्थापन, उद्=ऊपर, स्था=ठहरना) क्रि० स० खड़ा करना, ऊंचा करना, २ उगाना, ३ दूर करना, ४ ख़र्च करना, ५ सहना, ६ उभारना, भड़काना ।

प्रा० उठादेना बोल० दूर करना, २ उभारना, भड़काना ।

प्रा० उड़ना (सं० उत्=ऊपर, डी=उड़ना) क्रि० अ० परवेरू का आकाश में चलना ।

प्रा० उड़ाऊ (उड़ाना) गु० लुटाऊ, बहुत ख़र्च करने वाला, वृथा ख़र्च करने वाला ।

प्रा० उड़ाना (सं० उत्=ऊपर, डी=उड़ना) क्रि० स० परवेरूको उड़ने के लिये छोड़ना, २ लुटाना, गँवाना, फेंकना, नशाना, वृथा ख़र्च करना, ३ चुराना, ले लेना, ४ किसी चीज़ को हवा में छोड़ना ।

प्रा० उड़ाना पुड़ाना बोल० लुटाना, गँवाना, नशाना, वृथा ख़र्च करना

सं० उड्डीन भा० पु० उड़ना, परवाज़ होना ।

सं० उड्डीयमान (उत्=ऊपर, डी=उड़ना) क० पु० उड़नेवाला, आकाशगामी, नभचर ।

सं० उडु (उड्=मिलना, वा उत्=ऊपर डी=उड़ना) पु० तारा, नक्षत्र ।

सं० उडुगण (उडु=तारा, गण=समूह) पु० तारों का समूह ।

सं० उडुप (उडु=नक्षत्र, जल, पा=पीना वा पालना) क० पु० चन्द्र, चांद, २ डोंगा, प्लव, कोल ।

प्रा० उढ़ाना (सं० ऊर्णु, ढकना)

क्रि० स० ढकना, कपड़ा पहनाना ।

प्रा० उढ़ैया (सं० ऊर्णु, ढकना) क०पु०ओढ़ने वाला, पहननेवाला

प्रा० उतंग (सं० उत्तुङ्ग, उद्=ऊपर, तुङ्ग ऊंचा) गु० बहुत ऊंचा ।

प्रा० उत क्रि० वि० उधर, वहां ।

प्रा० उतरनहोना (सं० उत्तीर्ण, उद्=ऊपर, तॄ=पार होना) क्रि० अ० उऋण होना, ऋण से छूटना क़र्ज़ से रिहा होना ।

प्रा० उतरना (सं० उत्तरण, उद्=ऊपर, तॄ=पार होना) क्रि० अ० नीचे आना, २ ठहरना, टिकना, डेरा करना, वासलेना, विश्राम करना, ३ किनारे पहुँचना, पार होना, लांघना, ४ घटना, कम होना, मंदाहोना ५ उदास होजाना, फीका पड़ना, (जैसे "उसका रंग उतरगया ") ६ उऋण होना, क़र्ज़ से छुटना, ७ नशा कम होजाना, ८ किसी पद अर्थात् ओहदे से मौक़ूफ़ होजाना ।

सं० उत्कट गु० मत्त, अधिक, तीव्र, क्रोधी, गर्वी, भयानक, पु० क्रोध, गर्व, कठोर, उग्र, दुःसह ।

सं० उत्कण्ठा (उद्=ऊपर, कठ=सोचना, वा चाहसे याद करना) भा० स्त्री० लालच, चाह, चाहना, इच्छा, अभिलाषा ।

सं० उत्कण्ठित क० पु० उत्सुक, अभिलाषी, ख़्वाहिशमन्द ।

सं० उत्कर्ष (उद्=ऊपर, कृष्=खैंचना) भा० पु० बड़ाई, सराह, प्रशंसा, उत्तमता, श्रेष्ठपन ।

सं० उत्कर्षता=भा० स्त्री० श्रेष्ठता, प्रबलता, उत्तमता ।

सं० उत्कृष्ट (उद्=ऊपर, कृष्=खैंचना) गु० उत्तम, सबसे अच्छा वा बड़ा, श्रेष्ठ, प्रधान ।

सं० उत्खात (उत्=ऊपर, खन्=खोदना) र्म्म० पु० उन्मूलित, उखड़े हुये ।

सं० उत्तम (उद्=ऊपर, तम=बहुत ही बहुत) गु०श्रेष्ठ, सबसे अच्छा, मुख्य, पहला, प्रधान, मुखिया ।

सं० उत्तमर्ण पु० ऋणदाता, ब्योहरा, क़र्ज़ देनेवाला ।

सं० उत्तमांग (उत्तम=सबसे अच्छा वा मुख्य, अंग=शरीर का एकभाग) पु० शिर, माथा, मस्तक ।

सं० उत्तर (उद्=ऊपर, तॄ=पारहोना पु० जवाब, उत्तर दिशा, प्रतिवाक्य, दिक्, सिम्त, गु० पिछला, पीछे ।

सं० उत्तराधिकारी (उत्तर=पीछे, अधिकारी=वारिस अथवा मालिक) पु० वारिस, जानशीन ।

सं० उत्तानपात्र पु० तवा, तावा ।

सं० उत्तरायण (उत्तर=उत्तरदिशा, अयन=चाल) पु० आधा बरस

जब कि सूर्य विषुवत् रेखा के उत्तर की ओर रहता है, माघ से असाढ़ तक के छः महीने ।

सं० उत्तरार्द्ध (उत्तर=पिछला, अर्द्ध=आधा) पु० पिछला आधा ।

सं० उत्तीर्ण (उत्=ऊपर,=पार जाना) क० पु० उल्लंघन, पारगत, पारपहुंचा, कामयाब ।

प्रा०उत्तू पु० परत, तह, चुनत घड़ी ।

प्रा०उत्तूकरना बोल० तह जमाना, चुनना ।

सं०उत्तेजक क० पु० धमकानेवाला, प्रेरणा करनेवाला ।

सं०उत्तेजना (उत्=ऊपर, तिज्=तीक्ष्णकरना) भा० स्त्री० प्रेरणा करना, व्यग्रता करना, तीक्ष्णकरना, धमकाना, भड़काना, तेज़करना ।

सं० उत्तेजित पु० प्रेरित, धमकाया गया, भड़काया गया ।

सं० उत्तोलन (उद्=ऊपर, तुल्=तोलना) पु० तोलना, ऊपर को उठाना ।

सं० उत्थान (उद्=ऊपर, स्था=ठहरना) भा० पु० उठाना, उठाव, उद्योग ।

सं०उत्थान एकादशी (सं०उत्थान =उठना, एकादशी ग्यारहवीं तिथि) स्त्री० कातिक सुदी ११ जिस दिन विष्णु नींद से उठते हैं ।

सं० उत्थापन (उद्=ऊपर, स्था=ठहरना) भा० पु० उठाना, उठाकर रखना ।

सं०उत्पतन (उत्=ऊपर, पत्=गिरना) भा० पु० ऊपर से गिरना ।

सं० उत्पत्ति (उद्=ऊपर, पद्=जाना स्त्री० जन्मना, पैदा होना, पैदावारी, उगना ।

सं०उत्पन्न (उद्=ऊपर, पद्=जाना) गु० पैदा हुआ, जन्माहुआ २ लाभ पाया हुआ ।

सं०उत्पल (उद्=ऊपर, पल=जाना) पु० कमल, कँवल, नीलाकमल ।

सं०उत्पाटन (उत्=पट=लपेटना वा उखाड़ना) भा० पु० उखाड़ना ।

सं० उत्पात (उद्=ऊपर, पत्=गिरना) पु० उपद्रव, बखेड़ा, बिगाड़, हानि, अन्धेर ।

सं० उत्पादक क० पु० जनक, उत्पन्नक० ।

सं० उत्पादन भा० पु० जनना, पैदा करना ।

सं०उत्प्रेक्षा (उद्=ऊपर, प्र=बहुत, ईक्ष्=देखना भावना करना) भा० स्त्री० बराबरी, उपमा, तुल्यता, एक अलंकार का नाम, ढील, देर ।

सं०उत्प्लुत (उत् + प्लु=कूद जाना) क० पु० तर ऊपर होजाना, लौट पौटजाना ।

सं० उत्सव (उद्=ऊपर, सू=पैदा होना) पु० आनन्द का काम, जैसे

ब्याह, नाच, राग, रंग, आदि, पर्व, त्योहार, बड़ादिन ।

सं० उत्सर्ग (उत्+सृज्=छोड़ना वा पैदाकरना) भा० पु० न्याय, त्याग, दान, रोकना, अर्पणकरना ।

सं० उत्साह (उद्=ऊपर, सह्=सहना) पु० आनन्द, उछाह, खुशी, २ यतन, उद्योग ।

सं० उत्सुक (उद्+सू=पदाहोना) गु० चाहनेवाला ।

प्रा० उथलना क्रि० स० उलटना, औंधाना, तलेऊपर करना ।

प्रा० उथलपुथल बो० उलट पुलट, उलटा पुलटा, ऊपर नीचे, तले ऊपर, गटपट गड़बड़, इधर का उधर उधर का इधर ।

सं०उद **उत** (उ=शब्द करना) उप० ऊपर, ऊंचा, ऊपर की ओर, ऊंचाकिया हुआ, प्रकट, बड़ाई बल आदि अर्थों में भी आता है और जगह बल और पद अर्थात् दर्जे की अधिकाई में भी बोला जाता है और अधः का उलटा है ।

सं०उद **उदक** (उन्द्=भिगोना) पु० पानी, जल ।

सं० उदग्र (उद्=ऊपर, अग्र=सिरा वा नोक) गु० ऊंचा, तीखा, डरावना ।

सं०उदधि (उद=पानी, धा=रखना) पु० समुद्र, सागर, जलनिधि ।

सं०उदय (उद्=ऊपर, इ=जाना) पु० एक पहाड़ का नाम जहां से हिंदू मानते हैं कि सूर्य निकलता है, २ उगना, निकलना, ३ जोत, प्रकाश, ४ बढ़ना, बढ़ती, वृद्धि, उन्नति, भागमानी ।

सं० उदयास्तावधि (उदय + अस्त+अवधि) स्त्री० निकलने और डूबने की सीमा ।

प्रा०उदयहोना क्रि० अ० सूर्य का निकलना, २ वृद्धि होना, उन्नति होना, भाग जागना, फूलना फलना ।

सं०उदर (उद्=ऊपर, ऋ=जाना, वा उद, दृ=फाड़ना) पु० पेट ।

सं० उदरम्भरि पु० पेटार्थी, पेटू ।

सं० उदर्चि पु० अग्नि, अग्निकी चिनगारी ।

सं० उदात्त (उत्=ऊपर, आ=से, दा=देना) पु० ऊंचा स्वर, ऊंचे स्वर से बोलना, २ दान, ३ एक प्रकार का अलंकार ।

सं० उदार (उद्=ऊपर, आ-से, रा=देना) गु= दातार, दाता, दानी, देनेवाला, बड़ा, सीधा, सरल, गंभीर ।

सं० उदारता (उदार) भा०स्त्री० दातारी, सख़ावत ।

सं० उदास (उद्=ऊपर, आस्=बैठना) पु० बैराग्य, एकान्त में

बैठना, गु० मलिन, अनमना, चिंता करताहुआ, दुःखित, दुःखी, संतापी, २ बे परवाह ।

सं०उदासी (उदास) गु० वैरागी, एकांत में रहनेवाला, मित्र और बैरी की बराबर देखने वाला, २ मलिन, स्त्री० शोच, मलिनता, चिंता, फ़िक्र, दुःख, संताप ।

सं० उदासीन (उद्=ऊपर, आस्= बैठना) पु० संन्यासी, वैरागी, योगी, अतिथि, वनवासी, तपसी, जिसने संसार छोड़ दिया और जिसके मित्र और बैरी बराबर हों, त्यागी, वानप्रस्थ ।

सं० उदाहरण (उद्=ऊपर, आ= से, हृ=लेना)पु०दृष्टान्त,मिसाल।

सं० उदित (उद्=ऊपर, इ=जाना) र्म्म० पु०कहा हुआ,निकला हुआ, प्रकाशित, प्रकट, बढ़ा हुआ ।

सं० उदीची=उत्तरदिशा ।

सं० उदीरण (उत्, ईर्=प्रेरणा क०) भा० पु० कथन, कहना ।

सं० उदीरित र्म्म०पु० कथित, कहा गया ।

सं० उद्गार (उद्=ऊपर, गॄ=निगलना)पु० वमन, डकार, सुख, दुःख, बिस्मय ।

प्रा० उघारना (सं० उद्घाटन,उत् =ऊपर, घट्=खोलना) क्रि०स० खोलना, उघारना ।

सं० उद्दाल (उद्=ऊपर, दल्=दो टुकड़े करना) पु० एक ऋषिका नाम जो छः महीने में एकबार खाता था ।

सं० उद्दिष्ट र्म्म० पु० लक्षित, दिखाया गया ।

सं० उद्देश (उद्=ऊपर, दिश्= देना) पु० चाह, २ अनुसंधान, खोज, पता, प्रयोजन, मतलब, जिसके विषय में कुछ कहा जाय ।

सं० उद्धरण (उद्=ऊपर,हृ=लेना) भा० पु० उद्धार करना, मुक्ति देना।

सं० उद्धार (उद्=ऊपर, हृ=लेना) पु० बचाव, छुटकारा, मुक्ति, निस्तारा ।

सं० उद्धृत र्म्म० पु० ऊंचा किया गया, उठाया गया ।

सं० उद्भव (उद्=प्रकट, भू=होना) पु० पैदा होना, जन्म, उत्पत्ति ।

सं० उद्यत (उद्=ऊपर, यम्=रोकना) गु० तैयार, लगाहुआ, प्रवृत्त, पु० अध्याय ।

सं० उद्यम (उद्=ऊपर, यम्=रोकना, पर उद् उपसर्ग के साथ आनेसे यत्न करना होता है) भा० पु० यत्न, उपाय, परिश्रम, मिहनत, कोशिश, उद्योग, पेशा ।

सं० उद्यान(उद्=ऊपर,या=जाना) भा० पु० बाग़, बग़ीचा, उपवन, २ मतलब, प्रयोजन ।

सं० उद्यानपाल (उद्यान=फुलवाड़ी, पाल=पालना) क० पु० माली, बाग़बान ।

सं० उद्योग (उद्=ऊपर, युज्=मिलना) पु० उपाय, उद्यम, यत्न, परिश्रम, चेष्टा ।

सं० उद्योत (उद्=ऊपर, द्युत्=चमकना) पु० चमक, उजाला, प्रकाश ।

सं० उद्वाह पु० बिवाह, ब्याह ।

सं० उद्विग्न (उद्=ऊपर, विज्=डरना, कांपना) गु० ब्याकुल, उदास, शोच में ।

सं० उद्वेग(उद्=ऊपर, विज्=डरना, कांपना) पु० घबराहट, ब्याकुलता, चिंता, शोच, डर ।

प्रा० उधारना (सं० उद्धारण, उद्=ऊपर, हृ=लेना) क्रि० स० मुक्ति देना, छुटकारा करना, पार करना, बचाना, तारना ।

प्रा० उधेड़ना क्रि० स० खोलना, सुलझाना ।

प्रा० उधेड़बुन(उधेड़ना + बुनना) बोल० मिहनत, झंझट, काम, धंधा ।

सं० उन्नत (उद्=ऊपर, नम्=झुकना) गु० ऊंचा, लम्बा, वर्द्धित ।

सं० उन्नति (उद्=ऊपर, नम्=झुकना) स्त्री० उँचाई, २ बढ़ती, बढंति, वृद्धि, उदय, तरक़्क़ी ।

सं० उन्नमित (उत्=ऊपर, नम् + इत) कर्म० पु० झुकायागया, लचायागया ।

सं० उन्मत्त ⎫ (उद्=ऊपर, मद्=
उन्मद ⎭ मस्त होना) क० पु० मतवाला, पागल, सिड़ी, बौराहा, नशेबाज़, प्रमादी ।

सं उन्माद (उद्=ऊपर, मद्=मस्त होना) क० पु० सिड़ीपन, बौराहापन, पागलपन, अचेतता ।

सं० उन्मान तुलादि की तौल तराज़ू की तौल ।

सं० उन्मीलन (उत्,मील=मींचना) भा० पु० खिलना, फूलना, बिकसना ।

सं० उन्मुख अभिमुख, सन्मुख, सामने, उत्सुक, उत्कंठित ।

सं० उन्मूलन (उत्=ऊपर, मूल=जमाना, रोपना, उत् उपसर्ग से उखाड़ना अर्थ होगया) भा० पु० उत्पाटन,उखाड़ना, ऊपर खींचना।

सं० उप उपस० समीप, पास, बराबर, छोटा, कम, न्यून, अधिक, आरंभ, पूजा, शुरूअ, नाश, यह उपसर्ग दुर् का उलटा है ।

सं० उपकार (उप=पास, कृ=करना) पु० कृपा, भला, सहायता ।

सं० उपकारी (उपकार) क० पु० उपकार करनेवाला, भला करने वाला, सहायक, कृपाल ।

सं० उपकारिणी स्त्री० उपकार करनेवाली ।

सं० उपक्रम (उप=आरंभ, क्रम्=जाना अर्थात् शुरूअ होना) भा० पु० प्रारंभ, आरंभ, शुरूअ, तितिम्मा, ज़मीमा, सूचना, भूमिका, उपधा ।

प्रा० उपखान (सं० उपाख्यान, ख्या=कहना) पु०कथा, इतिहास ।

सं० उपगम (उप=समीप, गम्=जाना) पु० यात्रा, प्राप्ति, स्वीकार, पासजाना, उदय ।

सं० उपगुरु छोटा पाठक, छोटा मास्टर, मानीटर ।

सं० उपचार (उप=पास, चर=चलना) पु०सेवा, मन्त्र का जपना, २ वैद्यका काम, इलाज, चिकित्सा,उपाय,यत्न, ३ घूस, रिशवत ।

प्रा०उपज (सं० उप=पास, जन्=पैदा होना) स्त्री० बिन सोचने के जो कुछ बात उसी दम कही जाय वा कुछ गाया जाय, गान, तान, अन्तरा ।

प्रा० उपजना (सं०उप=पास, जन्=पैदा होना वा उत्पन्न होना) क्रि०स०उगना,बढ़ना,पैदा होना, अंकुर निकलना ।

प्रा० उपजाऊ (उपजना)गु० उर्वरा ।

सं० उपजाप (उप=पास, जप्=जपना) भा०पु०मक्र, फ़रेब, कपट ।

सं० उपजीवी (उप + जीव=जीना) क० पु० आश्रयी, आसरागीर, अवलम्बी ।

प्रा० उपड़ना (सं० उत्पाटन, उद्=ऊपर, पट्=जाना) क्रि० अ० उखड़ना ।

प्रा० उपदंश (उप + दंश=काटना) पु०गर्मीका रोग, सांपका काटना ।

सं० उपदा (उप,दा=देना)स्त्री०भेंट।

सं०उपदेश (उप=पास, दिश्=देना) भा०पु० शिक्षा, सीख, सिखावन, नसीहत, सम्मति, सलाह, २ मन्त्रदेना।

सं० उपदेशक
उपदेशी
उपदेष्टा } (उपदेश) क०पु० उपदेश देनेवाला, शिक्षक, गुरु, आचार्य्य ।

सं० उपद्रव (उप=पास, द्रु=जाना) पु०बखेड़ा, उत्पात, उपाधि, बिगाड़, अन्याय, अन्धेर ।

सं० उपद्वीप (उप=छोटा,द्वीप=धरती का टुकड़ा)पु०टापू,छोटाद्वीप ।

सं० उपधान (उप=पास वा ऊपर, धा=रखना) पु० तकिया ।

सं० उपनयन पु० यज्ञोपवीत, उपनीत, जनेऊ ।

सं० उपनिषद् (उप=पास, नि=अच्छी तरहसे, सद्=पाना) पु० वेद का उत्तम भाग, वेद का अंग, वेदान्त शास्त्र ।

सं० उपनेत्र (उप=पास, नेत्र=आंख) पु० चश्मा, आंखों का सहायक कांच ।

सं० उपन्यास (उप=ऊपर, न्यास=रखना) भा० पु० त्याग, हाथ, कथन करना, रखना, स्थापन ।

सं०उपपत्ति (उप=पास,पद्=जाना) स्त्री० युक्ति, योग्यता, २ सबूत, शोधन, समाधान, प्रमाण ।

सं० उपपातक (उप=छोटा,पातक=पाप) पु० छोटा पाप, पाप जैसे गोहत्या,लड़कीको बेचना आदि ।

सं० उभयपक्षीय गु० तर्फ़ैन, दोनों ओर के ।

सं० उपमा (उप=बराबर, मा=नापना) भा० स्त्री० बराबरी, समानता, सादृश्य, तुल्यता, दृष्टांत, मिसाल, एक अलंकार का नाम ।

सं० उपमान (उप=बराबर, मान=माप) पु० पूर्णगुण वाला, मुशब्बा बिही, अवर्ण्य ।

सं० उपमेय (उप=बराबर, मेय=कियाजाय) न्यून गुणवाला, मुशब्बा, वर्ण्य ।

सं० उपयुक्त (उप=बराबर, युज्=मिलना) गु० योग्य, ठीक, उचित, शामिल ।

सं० उपयोग पु० इस्तअमाल, युक्त करना ।

सं० उपयोगी (उप=बराबर, युज्=मिलना) गु० अनुकूल, सहायक, योग्य,ठीक, इस्तअमाल के लायक।

प्रा० उपरना पु० दुपट्टा, एकपट्टा, २ ओढ़नी, अचला ।

सं० उपराम (उप+रम) स्त्री० शान्ति, स्थिरता, सुख ।

सं० उपराग (उप=पास, रञ्ज्=रँगना) पु० ग्रहण, गहन ।

प्रा० उपरांत (सं० उपरि=ऊपर, अन्त=सिरा) क्रि० वि० पीछे, फिर, इसके पीछे ।

सं० उपरोक्त (ऊपर + उक्त, वच्=कहना) र्म० ऊपर कहाहुआ, मज़कूराबाला ।

प्रा० उपरोहित (सं० पुरोहित) पु० कुलगुरु, पुरोधा, पुरोहित ।

सं० उपल (उप=पास, ला=देना या लेना उप उपसर्ग के साथ आने से अर्थ फैलाना हुआ अर्थात् जिससे पहाड़ फैल जाता है) पु० पत्थर, पाषाण ।

सं० उपलब्धि (उप=ऊपर, लभ्=लाभ) भा०स्त्री० प्राप्ति, हासिल, मिलना ।

सं० उपलसित (उपल=पत्थर, सित=सफ़ेद) पु० संगमर्मर ।

सं० उपवन (उप=बराबर, वन=जंगल) पु० बाग़, बग़ीचा, फुलवाड़ी, बाड़ी, वाटिका ।

सं० उपवास (उप, वस्=रहना,

पर उप उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ उपास करना होता है) भा० पु० व्रत, लंघन, उपास, अनाहार, भूखों रहना ।

सं० उपवीत (उप=पास, अज्= जाना) पु० जनेऊ, यज्ञसूत्र ।

सं० उपवेद (उप=बराबर, वेद) पु० १ आयुस् २ गन्धर्व ३ धनुष ४ स्थापत्य इन्हीं चार विद्याओं को उपवेद कहते हैं जो वेद से निकली हैं । इनमें से आयुस् विद्या ब्रह्मा, इन्द्र और धन्वन्तरि आदि से फैली है । उसमें रोगों की पहचान और औषधी आदि का वर्णन है । दूसरी गन्धर्वविद्या को भरत ने निकाली और फैलाई । और तीसरी धनुषविद्या को विश्वामित्र ने राजपूतों को शस्त्रों के काम में लाने के लिये निकाली । और चौथी स्थापत्यविद्या को ६४ कलाओं के काम में लाने के लिये विश्वकर्म्मा ने निकाली ।

सं० उपवेष्टन (उप=ऊपर, विष्= लपेटना) भा० पु० लपेटना, वसना, जामा ।

सं० उपशम (उप+शम्=रोकना, वा दबाना) भा० पु० शान्ति, शमता, समाई, इन्द्रियनिग्रह ।

सं० उपसर्ग (उप=पास, सृज्=पैदा होना) पु० अव्यय जो क्रिया के साथ लगाये जाते हैं, जैसे प्र, परा, अप, सम, अनु, अव आदि, २ उपद्रव, पीड़ा, प्रेत, ग्रह, उत्पात, अमंगल, उत्पत्ति ।

सं० उपस्थान (उप=पास, स्था= ठहरना) भा० पु० उपस्थित, मौजूदगी, सेवा, नज़दीकी, हाज़िरी, स्तुति, पूजा ।

सं० उपस्थित (उप=पास, स्था= ठहरना) गु० तैयार, हाज़िर, सामने, पास ठहरा हुआ, पास आया हुआ ।

सं० उपस्थितिपत्र पु० नक़शाहाज़िरी ।

सं० उपहार (उप=पास, हृ=लेना) पु० भेंट, पूजा ।

सं० उपहास (उप=दोषकहना, हास =हँसी, हस्=हँसना) भा० पु० ठट्ठा, हँसी, निन्दा के साथ हँसी करना, बोली ठोली बोलना, परिहास, ठट्ठा ।

सं० उपहासक (उप+हास्+ अक) क० पु० हँसनेवाला, मसखरा ।

सं० उपहास्य (उप+हास्+य) कर्म० पु० हँसने योग्य, निन्दा योग्य, निन्दनीय ।

सं० उपाख्यान (उप, आ, ख्या= प्रकट करना) पु० पुरानी कहानी इतिहास, बात, कहानी, कथा ।

प्रा० उपाड़ना (सं० उत्पाटन, उद्=

ऊपर, पट्=जाना) क्रि० स० उखाड़ना ।

प्रा० उपाध (सं० उप, आ, धा=रखना) स्त्री० बखेड़ा, बिगाड़, उपद्रव, अन्याय ।

सं० उपाधान (उप+आधान) धि० तकिया, बालीन ।

सं० उपाधि (उप=पास, आ=से, धा=रखना) स्त्री० धर्मकी चिन्ता, २ विशेषण, नाम, पदवी, ३ छल, कपट ।

सं० उपाधिकारक (उपाधि+कारक, कृ=करना) क० पु० झगड़ालू, मुफ़सिद, फ़सादी ।

सं० उपाध्याय (उप=पास, आ=से, अधि+इ=पढ़ना) पु० अध्यापक, पढ़ानेवाला, पाठक, शिक्षक, मुदर्रिस, गुरू ।

सं० उपानह् (उप, आ, नह्=बांधना) पु० जूता, पगरखी, पनही, पापोश ।

प्रा० उपाना (सं० उत्पन्न) क्रि० स० पैदाकरना, इकट्ठाकरना, कमाना ।

सं० उपाय (उप=पास, अय्=जाना वा, उप, आ, इण्=जाना) पु० यत्न, तदबीर, उद्यम, उद्योग, मिहनत, साधन, २ इलाज ।

सं० उपायी क० साधक, यत्नी, तदबीरी ।

सं० उपायन पु० भेंट, नज़र, उपहार, पास जाना ।

सं० उपार्ज्जन (उप=पास, अर्ज=इकट्ठाकरना) भा० पु० इकट्ठा करना, संग्रह, संचय, कमाई ।

सं० उपार्ज्जित कर्म० पु० संचित, जोड़ा हुआ ।

सं० उपार्ज्जनीय (उपार्ज्जन+अनीय) कर्म० संग्रहयोग्य, जोड़ने लायक़ ।

सं० उपालम्भ (उप+आ, लभ्=कठोर वचन क०) भा० पु० शिकायत, गिला, उरहना, वार्ता, बातें ।

सं० उपालम्भन भा० पु० लअनत, मलामत, झिड़की ।

सं० उपासक (उप=पास, आस्=बैठना) क० पु० उपासनाकरनेवाला, पूजनेवाला, सेवक, दास, भक्त ।

सं० उपासना (उप=पास, आस्=बैठना) स्त्री० सेवा, पूजा, टहल, भक्ति, देवता की पूजा, आराधना ।

प्रा० उपास (सं० उपवास) पु० व्रत, लंघन, अनाहार, उपवास, भूखारहना ।

सं० उपासनीय (उप+आस्+अनीय) कर्म० सेवायोग्य, आराध्य, सेव्य, ख़िदमत के लायक़ ।

सं० उपास्य (उप=पास, आस्=बैठना) कर्म० उपासना करने योग्य, पूजने योग्य, आराधनाकरने योग्य ।

सं० उपेक्षा (उप=पास+ईक्ष्=देखना, उपके लगने से छोड़ना अर्थ होगया) भा० स्त्री० त्याग,

ढील, ग़फ़लत ।

सं० उपेक्षित (उप + ईक्षित) कर्म० पु० छोड़ागया, त्यक्त ।

सं० उपेत (उप + इ + त, इ=जाना) क० शामिल, युक्त ।

सं० उपेन्द्र (उप=छोटा, इन्द्र=देवताओं का राजा) पु० वामन, इन्द्र का छोटा भाई, विष्णु ने जब वामन अवतार लिया तब इन्द्र के छोटे भाई हुये थे ।

प्रा० उफनना (सं० उद्=ऊपर, फण=जाना) क्रि० अ० बहुत आंच लगने से दूध अथवा और किसी चीज़ का हांडी अथवा बटलोही से बाहर निकल आना ।

सं० उबकना क्रि० अ० वमनहोना, क़ै होना, उलटी होना, रद्दकरना ।

प्रा० उबटन } (सं० उद्वर्त्तनः उद्,
उबटना } वृत्=होना) पु० शरीर का मैल उतारने के लिये आटा सरसों बेसन आदि की बनी हुई चीज़ ।

प्रा० उबलना (सं० उद्=ऊपर, बल=जाना) क्रि० अ० उबलना, खौलना, ओटना, मीलना, खलबलाना, उसीजना ।

प्रा० उबसना क्रि० अ० सड़ना, गलना, पचना, बिगड़ना ।

प्रा० उबारना (सं० उद्धारण) क्रि० सं० बचाना, छुड़ाना, रखना ।

सं० उभय } गु० दो०, दोनों,
प्रा० उभौ } आपस में ।

प्रा० उभरना (सं० उद्=ऊपर, भृ=भरना) क्रि० अ० उमड़ना, बढ़ना, बहुत भरना, निकलना, निकलआना, २ उठना, उठआना ।

प्रा० उभारना क्रि० स० फुलाना, उकसाना, खड़ाकरना, भड़काना।

प्रा० उमंग स्त्री० बहुत खुशी, आनंद, मग्नता, २ चाह, इच्छा, अभिलाष, ३ धुन, तरंग, लहर।

प्रा० उमंडना } क्रि०अ०छलकना,
उमडना } बहुत भरने से फूट निकलना, झलकना, बहना, जल थल होना ।

प्रा० उमंड उमंडकर रोना बोल० फूट फूट के रोना ।

सं० उमा (उ=शिव, मा=मानना, वा "ओः शिवस्य मा=लक्ष्मीः" शिव की लक्ष्मी, वा उ=हे, मा=मत "हे वत्स मा कुरु" जैसे कुमारसंभवकाव्य में लिखाहै "उमेति मात्रा तपसो निषिद्धा, पश्चादुमाख्यां सुमुखी जगाम" अर्थात् जब पार्वती तप करने को जाती थीं तब उनकी मां ने कहा कि हे बेटी! तप मतकर) स्त्री० पार्वती, दुर्गा, शिवा, शिवरानी, गिरिजा, भवानी, रुद्राणी ।

सं० उमापति (उमा=पार्वती, पति

=भर्ता) पु० महादेव, शिव ।

सं० उमासुत (उमा=पार्वती, सुत =बेटा) पु० कार्त्तिकेय, देवताओं का सेनापति ।

सं० उमेश (उमा=पार्वती,ईश=पति) पु० महादेव, शिव ।

प्रा० उर (सं० उरस्, ऋ=जाना) पु०छाती,हिरदा,हृदय, वक्षस्थल ।

सं० उरग (उरस्=छाती, गम्=चलना जो छाती से चले) पु० सांप, नाग, सर्प, भुजंग ।

सं० उरगाद (उरग=सांप, अद्=खाना) पु०गरुड़,विष्णु का वाहन।

सं० उरगारि (उरग=सांप, अरि=वैरी) पु०गरुड़, विष्णुका वाहन।

सं० उरु (ऊर्णु=ढकना) गु० चौड़ा, विशाल, बड़ा, बहुत, अधिक ।

प्रा० उरिण (सं० अनृण, अन्=नहीं, ऋण=क़र्ज़) गु०बिन क़र्ज़, ऋणसे छूटना, उतरना, उद्धार ।

सं० उर्व्वरा (उरु=बड़ा,चौड़ा,ऋ=जाना) स्त्री० उपजाऊ धरती ।

सं० उर्वशी उरु=बहुत, अश्=वश करना, जो अपने रूप से बहुतों को वश कर लेती है, स्त्री० एक अप्सराका नाम, स्वर्ग की वेश्या ।

सं० उर्व्वी (उरु=बड़ा, चौड़ा) स्त्री० धरती, पृथ्वी, ज़मीन ।

सं० उर्व्विजा (उर्व्वी=धरती, जन्=पैदा होना) स्त्री० सीता, जानकी, कहते हैं कि जब राजा जनक यज्ञ के लिये धरती जोतते थे तब ज़मीन में से सीताजी निकली थीं।

प्रा० उलझना क्रि० अ० फँसना, लिपटना, २ झगड़ना ।

प्रा० उलटना क्रि० स० फेरना, पलटना, दोहराना, मोड़ना, तले ऊपर करना, नीचे ऊपर करना, औंधाना ।

प्रा० उलट पुलट बो० उथल पुथल, ऊपर नीचे, तले ऊपर, गटपट, गड़बड़, इधर का उधर, उधर का इधर ।

प्रा० उलथा पु० तर्जुमा, अनुवाद ।

प्रा० उलहना (सं०उपालम्भ, उप आ, लभ्=पाना) पु० शिकायत, पुकार, निन्दा, दोष ।

प्रा० उलहना देना बो० शिकायत करना, पुकारना ।

प्रा० उलीचना क्रि० स० उड़ेलना, जल सींचना, पानी लेना ।

सं० उलूक (वल्=घेरना)पु०उल्लू, घुघुआ ।

सं० उल्का (उष्=जलाना) स्त्री० लूका आग वा तारा जो आकाश से गिरता है ।

सं० उल्लङ्घन (उद्=ऊपर, लघि=पार होना) पु० उलटा करना, रीति तोड़ना, २ लांघना ।

सं० उल्लास (उद्=ऊपर, लस्=खेलना, खुशी करना) पु० हर्ष, आनंद, हुलास, खुशी, प्रसन्नता, २ अध्याय, परिच्छेद ।

सं० उल्लङ्घन (उद्=ऊपर, लघ्+अन, लघ=जाना) भा० पु० पारहोना, पार उतरना, लांघजाना, फांद-जाना ।

प्रा० उल्लू (सं० उलूक) पु० घुघुआ, पेचा, उलूक, एक जानवर का नाम, २ गँवार, मूर्ख, उज्जड़ ।

सं० उल्लेख (उद्, लिख्=लिखना) भा० पु० वर्णन, बखान, २ एक अलंकार का नाम ।

सं० उशना (वश्+उशन, वश्=रहना)पु० शुक्राचार्य्य, दैत्यगुरू।

सं० उषा (उष्=चमकना)पु० भोर, तड़का, पोह, प्रभात, स्त्री० बाणासुर की बेटी और अनिरुद्ध की स्त्री ।

सं० उष्ट्र (उष्=मारना) पु० ऊंट ।

सं० उष्ण (उष्=जलाना) पु० गरम।

सं० उष्णीष पगड़ी, सिरबन्द ।

सं० उष्णता (उष्ण=गरम) स्त्री० गरमी ।

सं० उष्मा (उष्=जलाना, वा गरम होना) स्त्री० गरमी, धूप, ताप ।

प्रा० उसरना (सं० अपसरण, अप=पीछे, सृ=जाना) क्रि० अ० टलना, पीठदेना, हटना ।

प्रा० उसारा पु० ओसारा, डिहुड़ी, बराम्दा ।

प्रा० उसास (सं० उच्छ्वास, उद्=ऊंचा, श्वास=सांस) पु० सांस, ऊंचा सांस ।

प्रा० उसीसा (सं० उच्छीर्षक, उद्=ऊपर, शीर्ष=सिर) पु० सिरहाना तकिया ।

सं० ऊ (अव्=बचाना) पु० महादेव, ब्रह्मा, (प्रश्नवाक्य) बन्धर्न, मोक्ष प्रधान, २ चांद, वि० बो० हे ।

प्रा० ऊंघना क्रि० अ० निद्रालु होना, झपकी लेना, आंख लगाना ।

प्रा० ऊंच
ऊंचा (सं० उच्च) गु० लंबा, ऊपर ।

प्रा० ऊंचा बोलबोलना बोल० घमंड से बोलना, अभिमान से बोलना ।

प्रा० ऊंचासुनना बोल० कमसुनना।

प्रा० ऊंचाकानी बो० बहरापन ।

प्रा० ऊंचेबोलका बोल नीचा बोल० जो कोई किसी को घमंड का बोल बोलता है वह अन्त में आप हलका और नीचा होता है ।

प्रा० ऊंट (सं० उष्ट्र, उष्=मारना) पु० एक जानवर का नाम ।

प्रा० ऊंटकटारा पु० एक तरह के कँटीले पेड़ का नाम जिसको ऊंट चरते हैं, भरभांड, ऊंटकटाई ।

प्रा० ऊख (सं० इक्षु) स्त्री० ईख, केतारी, गन्ना ।

प्रा० ऊद } (सं० उद्र, उन्द्=
ऊदबिलाव } भिगोना) पु=एक पानी के जानवर का नाम ।

प्रा० ऊदा (सं० अवदात, अव, दै =शुद्ध करना) गु० भूरा, धुंधला ।

प्रा० ऊधो (सं० उद्धव) पु० श्रीकृष्ण का मित्र और चचा ।

प्रा० ऊन (सं० ऊर्णा, ऊर्णु=ढकना) स्त्री० भेड़ी बकरी के पीठ पर के बाल, पशम ।

सं० ऊन } (ऊन=कम होना) गु०
प्रा० ऊना } कम, कमती, थोड़ा, न्यून, हीन ।

प्रा० ऊपर (सं० उपरि) क्रि० वि० ऊंचा, ऊर्ध्व, २ अधिक ।

प्रा० ऊपरसे बोल० ऊपर के ऊपर ।

प्रा० ऊपरी (ऊपर) गु० विदेशी, परदेशी, २ ऊपर का ।

प्रा० ऊघट (सं० अववाट, अव= बुरा, वाट=रास्ता) पु० औघट, विकट रास्ता, बुरा रास्ता ।

सं० ऊरू पु० जंघा, जांघ ।

सं० ऊर्ध्व (उद्=ऊपर, हा=छोड़ना) गु० ऊपर, ऊंचा, लंबा ।

प्रा० ऊर्द्धपुण्ड्र(सं० ऊर्ध्वपुण्ड्र, ऊर्ध्व =लंबा-पुण्ड्र=तिलक, पुडि=मलना) पु० लंबातिलक जो वैष्णवलोग करते हैं, वैष्णवी तिलक ।

सं० ऊर्ध्वबाहु (ऊर्ध्व=ऊंची, बाहु =भुजा) गु० ऊंचा हाथ रखने वाला, तपसी, तपस्वी जो अपना हाथ ऊंचा रखता है ।

प्रा० ऊर्द्धसांस (सं० ऊर्ध्वश्वास, ऊर्ध्व=ऊपर, श्वास=सांस) पु० उसास, ऊपर का दम, सांस, दम ।

सं० ऊर्म्मि (ऋ=जाना) स्त्री० लहर, तरंग ।

सं० ऊषर (ऊष्=बीमार होना) गु० खारी धरती, बनजर धरती, ऐसी धरती जिसमें बोनेसे कुछ नहीं उपजता ।

सं० ऊषा (ऊष्=चमकना) स्त्री० बाणासुर की बेटी और अनिरुद्ध की स्त्री, पु० भोर, तड़का, पोह, प्रभात ।

सं० ऊषाकाल (ऊषा=भोर, काल =समय) पु० प्रातःकाल, बिहान, भोर, प्रभात ।

सं० ऊहा (ऊह्=तर्क करना) स्त्री० तर्क, वितर्क, दलील ।

ऋ

सं० ऋ स्त्री० अदिति, देवताओं की मा, पु० सूर्य, गणेश, विष्णु ।

सं० ऋक् (ऋच्=सराहना) पु० ऋग्वेद, पहला वेद ।

सं० ऋक्ष (ऋष्=जाना) पु० रीछ, भालू, २ नक्षत्र ।

सं० ऋग्वेद (ऋक् + वेद) पु० पहला वेद ।

सं० ऋचा (ऋच्=सराहना) स्त्री० वेदका मन्त्र, वेदका कांड, काण्डिका।

प्रा० ऋछेश (सं० ऋक्षेश, ऋक्ष= रीछ, ईश=राजा) पु० जामवन्त रीछों का राजा ।

सं० ऋजु (ऋज्=जाना, इकट्ठा करना) (वा, अर्ज=इकट्ठा करना) गु० सीधा, सरल,सूधा, सोझा ।

सं० ऋण (ऋ=जाना) पु० उधार, क़र्ज़ देना, २ बीजगणित में घटाव का चिह्न, मनफ़ी ।

सं० ऋणपत्र तमस्सुक ।

सं० ऋणमुक्तपत्र फ़ारिग़ख़ती ।

प्रा० ऋणिया
सं० ऋणी
प्रा० ऋनियां
प्रा०ऋनी
(ऋण=क़र्ज़) गु० क़र्ज़दार, देनदार, जिसके शिर क़र्ज़ हो, २ इहसानमंद, धन्यवाद करनेवाला, शुकरगुज़ार।

सं० ऋत (ऋत=जाना,दान=देना,) पु० सत्य, मोक्ष, जल, पूजन, इतर, दीप्त, और शिलोंछ, कटे खेत से बाली बीनना ।

सं० ऋतु (ऋ=जाना) स्त्री० मौसम, वसंतआदि छः ऋतु १ वसन्त (चैत और वैशाख) २ ग्रीष्म (ज्येष्ठ और आषाढ) ३ वर्षा (सावन और भादों) ४ शरद् (कुंवार और कातिक) ५ हिम (अगहन और पूस) ६ शिशिर (माघ और फागुन) एक ऋतु दो महीने रहती है, २ स्त्रीधर्म, स्त्रियोंके कपड़ों से होने का समय ।

सं० ऋते अव्य० क्रि० वि० विना, छोड़के, रहित, बिदून ।

सं० ऋतुमती (ऋतु=स्त्रीधर्म,मती= वाली) स्त्री० कपड़ों से, रजस्वला, हैज़ से ।

सं० ऋतुराज (ऋतु=मौसम, राजन्=राजा) पु० वसंतऋतु, मौसम बहार,

सं० ऋतुस्नान (ऋतु=स्त्रीधर्म,स्नान =न्हाना) पु० स्त्रियोंका कपड़ों में होनेके पीछे चौथे दिनका न्हाना वा स्नान ।

सं० ऋत्विज् (ऋतु=समय,यज्=यज्ञ करना) क० पु० यज्ञ करनेवाला, पुरोहित, याजक ।

सं० ऋद्धि (ऋध्=बढ़ना) स्त्री० संपदा, संपत्ति, धन, दौलत, बढ़ती, २ एक औषधी का नाम, ३ पार्वती, गिरिजा, रुद्राणी ।

सं० ऋषि (ऋष्=जाना)पु०मुनि, तपस्वी , यती, ऋषि सात प्रकार के हैं १ श्रुतर्षि जिसने पवित्र कथा सुनी हो, २ काण्डर्षि जो वेदका कोई मुख्यकाण्ड सिखलाता है, ३ परमर्षि जिसमें मुनि भेलआदि हैं, ४ महर्षि जिस में व्यास आदि हैं, ५ राजर्षि जैसे विश्वामित्र, ६ ब्रह्मर्षि जिसमें बसिष्ठ हैं, ७ देवर्षि जिस में नारद आदि हैं ।

सं० ऋषीश (ऋषिमुनि,ईश=स्वामी,

राजा) पु० ऋषियों में मुख्य वा प्रधान ।

सं० ऋष्यमूक (ऋष्य=हरिण, ऋष्=जाना, मूक=गूंगा) पु०एक पहाड़ का नाम जो किष्किन्धापुरी के पास है ।

ॠ

सं० ॠ स्त्री० देवताओं की मा, २ दानवों की मा, पु० शिव, भैरव, राक्षस, वि० बो० भय और निन्दा को जतलानेवाला, अव्यय ।

ए

सं० ए (इण्=जाना) पु० विष्णु, वि० बो० हे, संबोधन का सूचक ।

सं० एक (इण्=जाना) गु० गिन्ती का पहला अंक, २ मुख्य, प्रथम, पहला, प्रधान, केवल, सिर्फ़ ।

प्रा० एकआध बोल० कुछ, थोड़ा, एक या आधा ।

प्रा० एककी दशसुनाना बोल०यह बोल चाल वहां बोला जाता है जब कि कोई आदमी किसी को एक बुरी बात कहे अथवा एक गालीदे तो उसके बदले में बहुत सी बुरी बातें कहें और बहुतेरी गालियां दें ।

सं० एकचित्त (एक, चित्त=मन) गु० एक मन, जिसका ध्यान किसी एकही चीज़ पर हो ।

सं० एकत्र (एक + त्र, जगह अर्थमें प्रत्यय) क्रि० वि० इकट्ठा, एकठौरा, एक जगह ।

सं० एकत्रित कर्म० पु० इकट्ठाकिया हुआ ।

सं० एकदा (एक + दा, समय अर्थ में प्रत्यय) क्रि० वि० एक बार, एक समय ।

सं० एकधा (एक + धा, प्रकार अर्थ में प्रत्यय) क्रि० वि० एक भांति, एक प्रकार ।

प्रा० एकनएक बोल० एक या दूसरा ।

प्रा० एकरत्ती बोल० बहुत थोड़ा ।

सं० एकरस पु० जो एकसा रहै, जन्ममरण रहित ।

सं० एकरूप (एक, रूप=डौल) पु०बराबर, एकसा, सरीखा, सदृश ।

प्रा० एकला, एकेला (सं० एकल, एक, ला=लेना) गु० अकेला, केवल, निराला, सिर्फ़, तनहा ।

प्रा० एकलौता (सं० एकल) गु० एकही (बेटा)।

सं० एकसर (एक, सृ=जाना) क्रि० वि० एक साथ ।

प्रा० एकसे दिन न रहना बोल० सदा कोई धनवान् रहता है न गरीब, दशा का फेरफार होना ।

प्रा० एका (सं० ऐक्य=एकपन) पु० मेल, मिलाप किसी काम के करने के लिये आपस में एक सलाह करना, साज़िश ।

अं० एकाउण्ट लेखा, हिसाब ।

प्रा० एकाएकी (सं० एक) क्रि० वि० अचानक, एकबार में, दफ़ाअतन् ।

सं० एकाक्ष (एक, अक्षि=आंख) पु० काना, एक आंख वाला, एक चश्म, कोर, २ कागा, कौआ ।

सं० एकाग्र (एक, अग्र=आगे)गु० एकाचित्त,एकमन, एकादिल, किसी काम में लगाहुआ ।

सं० एकादशी (एक + दशन्=दश) स्त्री० ग्यारहवीं तिथि, हिंदी महीने के पख में ग्यारहवां दिन ।

सं० एकाधिपति (एक, अधिपति, राजाधिराज) पु० चक्रवर्तीराजा।

सं० एकान्त (एक, अन्त=हद्द) गु० एक ओर, एक तरफ़, अलग, निराला, किनारे, जुदा, आपही आप, भिन्न, निर्जन ।

अं० एग्रीकलचरलकान्फ्रेंस कृषी विषयक सभा, खेतोंके बारे में कमेटी ।

अं० एञ्जिनियर यन्त्रज्ञ, इमारत बनानेवाला ।

अं० एज्यूकेशनल शिक्षा,तअ़लीम ।

प्रा० एड़ स्त्री० एड़ी, २ एड़ी की मार, घोड़े के चलाने के लिये एड़ी की ठोकर ।

प्रा० एड़मारना बोल० ठोकर मारना, एड़ी की ठोकर मारके घोड़े को चलाना ।

प्रा० एड़ी स्त्री० पैरका पिछला भाग ।

अं० एड्रस अभिवादनपत्र, सिपासनामा, पता, सिरनामा, लिफ़ाफ़ा, बयान करना, अर्ज़ करना ।

सं० एतत् सर्वना० यह ।

सं० एतदर्थ इस वास्ते ।

प्रा० एतवार (सं० आदित्यवार) पु० इतवार, रविवार, आदित्यवार।

सं० एतादृश गु० इसी तरहसे, ऐसाही।

सं० एतावत् गु० इतना, इतनी ।

सं० एरण्ड (ईर्=जाना) पु० अरंड, रेंड, एक पेड़ का नाम ।

सं० एला (इल्=जाना, भेजना) स्त्री० इलायची, एलाची ।

सं० एवम् (इण्=जाना) समुच्च० इस प्रकार, इस भांति, इस तरह ।

ऐ

सं० ऐ पु० शिवाबुलाना, संबोधन ।

अं० ऐक्ट नियम, क़ायदा ।

सं० ऐक्यता भा० पु० मेल, इत्तिफ़ाक़, एकमत । [उर्दू ।

अं० ऐंग्लोवर्नाक्यूलर अंगरेज़ी–

प्रा० ऐंचना क्रि०स०खैंचना,तानना।

प्रा० ऐंठ (ऐंठना) स्त्री० बल,बट, मरोड़, अकड़, २ गांठ ।

प्रा० ऐंठना क्रि०स०कतना, तानना, खींचना, जकड़ना, क्रि० अ०अकड़ना, मरोड़खाना, बलखाना, २ इतराना, फूलना, ऐंठ के चलना, अकड़ के चलना ।

सं० ऐरावण ऐरावत (इरावत् समुद्र, इरा=पानी, इर=जाना अर्थात् जो समुद्र से पैदा हुआ) पु० इन्द्र का हाथी ।

सं० ऐरावती (इरा=पानी) स्त्री० एक नदी का नाम, रावी नदी का नाम, २ एक नदी जो ब्रह्मा देश में है ।

सं० ऐरेय बुद्धिवर्द्धक मदिरा जो कम नशा करती है अंगूर आदि से बनती है ।

सं० ऐश्वर्य्य (ईश्वर) पु० प्रताप, बड़ाई, सम्पदा, सम्पति, विभव, हशमत जाह व मनाल ।

प्रा० ऐसा (इस + सा, स=ईदृश) गु०इस प्रकार का, इसके बराबर।

प्रा० ऐसा तैसा ऐसावैसा बोल० कुछ यों हीं, न भला न बुरा, न वाहवाह, न छीछी ।

प्रा० ऐहैं (ब्रजभाषा) क्रि० अ० आवेंगे ।

ओ

सं० ओ पु०ब्रह्मा, विष्णु, शिव,वि० बो० आह, आहा, संबोधन का सूचक, मन्त्रराज ।

सं० ओं पु० प्रणव, ओंकार जो अ+उ+म्,से बना है,अ=विष्णु का वाचक,उ=महेश्वर का वाचक, म्=ब्रह्मा का वाचक है ।

प्रा० ओंठ ओठ (सं० ओष्ठ)पु०होंठ, अधर, लब ।

प्रा० ओंड़ा औंड़ा गु० गहरा, गंभीर, अमीक़ ।

प्रा० ओंधा औंधा गु०उलटा,तले ऊपर।

प्रा० ओखली (सं० उलूखल) स्त्री० ऊखली ।

सं० ओघ (उच्=इकट्ठा करना)पु० समूह, इकट्ठा, २ जल का वेग ।

प्रा० ओछा गु० हलका, नीच ।

सं० ओज ओजरा पु० बल, दीप्ति, तेज, प्रकाश, २विषम, प्रथम, तृतीय, पांचवाँ, सातवाँ आदि ।

सं० ओङ्कार (ओम् तीनों देवताओं का मन्त्र, अव्=बचाना, कार, कृ=करना)पु०बीजमन्त्र, ब्रह्मा, विष्णु, शिव इन तीनों देवताओं का नाम।

प्रा० ओझल स्त्री० ओट, आड़, परदा, टट्टी, छिपाव, एकान्त ।

प्रा० ओझलकरना बो० छिपाना, ओट करना, परदा करना, आड़ करना ।

प्रा० ओझल होना बो० छिपना ।

प्रा० ओट (सं० वट्=घेरना) स्त्री० बचाव, छांव, आड़, परदा, ओझल, टट्टी, छिपाव, २ पक्ष ।

प्रा० ओटकरना बो० छिपाना, ओझल करना, आड़ करना, परदा करना ।

प्रा० ओटहोना बोल० छिपना ।

प्रा० ओढ़न स्त्री० ढाल, फरी ।

प्रा० ओड़ा पु० टोकरा, खांचा ।

प्रा० ओढ़ना (सं० ऊर्णु=ढकना) क्रि० स० पहनना, पहरना, पु० चद्दर, पट्टू, लोईआदि ओढ़ने की चीज़ ।

प्रा० ओढ़नी (सं० ऊर्णु=ढकना) स्त्री० स्त्रियों के ओढ़ने का कपड़ा, साड़ी ।

सं० ओदन (उद्=भिगोना) पु० भात, रींधे हुए चांवल ।[गीला ।

प्रा० ओदा (सं० आर्द्र) गु० भीगा,

प्रा० ओप स्त्री० चमक, झलक, दमक, चमचमाहट, सुन्दरता, घोट, चिकनाहट ।

प्रा० ओपदेना बोल साफ़ करना, चिकना करना, ओपना, घोटना ।

सं० ओम् (अव्=बचना, या अ विष्णु, उ शिव, म् ब्रह्मा) पु० तीनों देवताओं का मंत्र ॐकार का बीजमंत्र प्रणव ।

प्रा० ओर स्त्री० तरफ़, अलग, पार, २ रस्ता, ३ हद्द, सीमा ।

फ़ा० ओल बदला, एवज़, बदले में किसी आदमी को देना ।

अं० ओरीयंटलकम्पनी पूर्वीसमूह, पूर्वी गिरोह ।

प्रा० ओला (सं० ओल=भीगा, अ, उन्द्=भिगोना) पु० पानीके बने हुए पत्थर जैसे टुकड़े जो कभी कभी बरसते हैं, २ चीनी की बनीहुई मिठाई जिसको गर्मियों में ठंढाई के लिये पानी में घोल कर पीते हैं ।

प्रा० ओलाहोजाना बोल० खूब ठंढा होजाना ।

प्रा० जों सिरमुड़ायातोंओलेपड़े बो० यह मुहावरा उस समय बोला जाता है जब कोई आदमी किसी काम को शुरूअ करे और शुरूअ करतेही बिगड़ जाय ।

सं० ओषधि
औषधि } (ओष=गरमी, उष्=गर्म करना, धा=रखना) स्त्री० ओषद, दवा दारू, रोग दूर करने की चीज़ ।

सं० ओषधालय
औषधालय } धि० पु० दवा खाना, हास्पिटल ।

सं० ओष्ठ (उष्=गर्म करना) पु० होंठ, ओंठ, ओठ, लब ।

प्रा० ओस पु० शीत जो रात को छोटी २ फुहार पड़ती है, शबनम् ।

प्रा० ओसरा (सं० अवसर) पु० बारी, पारी ।

प्रा० ओसीसा पु० तकिया ।

प्रा० ओहो वि० बो० वाहवाह, आहा ।

औ

सं० औ पु० अनन्त, वि० बो० ओह, आहा ।

प्रा० औंगी चुप, गूंगापन, मौन ।

प्रा० औगुण (सं० अवगुण) पु० दोष, कलंक, खोट, चूक, बुराई ।

प्रा० औघट (सं० अवघट्ट, अव=बुरा वा कठिन, घट्ट=रस्ता, घट्=जाना) गु० ऊबट, ख़राब रस्ता, अगम्य रस्ता ।

प्रा० औतार (सं० अवतार) पु० जन्म, प्रकट, (अवतार शब्द को देखो)

प्रा० औदात (सं० अवदात) गु० धौला, सफ़ेद, श्वेत, शुक्ल ।

प्रा० औनेपौने बोल० कमती बढ़ती ।

प्रा० औबट (सं० अववाट, अव=बुरा वा कठिन, वाट=रस्ता) गु० ऊबट, औघट, बुरारस्ता, दुर्गम ।

प्रा० और समुच्च० फिर, पुनि, भी गु० अधिक, २ दूसरा ।

प्रा० औरएक बोल० दूसरा कोई, और कोई, और भी ।

प्रा० औरही बोल० बिलकुलदूसरा, अनूठा, जुदा बिलकुल, फ़रक़ ।

सं० औरस (उरस्=हृदय) पु० ब्याही हुई स्त्री से पैदा हुआ लड़का ।

सं० और्ध्वदैहिकक्रिया स्त्री० दशगात्र, सपिंडी, तेरही ।

सं० और्व गु० बड़वानल, दावानल ।

प्रा० औसर (सं० अवसर) पु० समय, मौक़ा, अवकाश, फुरसत ।

प्रा० औसान पु० चेतना, चेत, हौसिला, सुरत, साहस, हिम्मत, होशियारी ।

प्रा० औसेर स्त्री० चिंता, खटका ।

क

सं० क पु० ब्रह्मा, २ पवन, हवा, ३ सूर्य, ४ आत्मा, ५ यम, ६ आग, ७ विष्णु, ८ शिर, ९ पानी, १० सुख, ११ शुभ, सुन्दर, १२ दंभ, १३ मयूर, १४ कामदेव, १५ दक्ष, १६ गरुड़ ।

सं० कङ्क (कक्=जाना) पु० कौआ, २ केकड़ा, ३ कपट, ४ ब्राह्मण, ५ युधिष्ठिर, ६ देशविशेष, म्लेच्छजाति, ८ बूतीमार, बगुला ।

प्रा० कंकर (सं० कर्कर, कॄ=हानि पहुँचाना) पु० छोटे छोटे पत्थर के टुकड़े, कांकर, रोड़ा ।

प्रा० कंक्रेला (कङ्कर) गु० पथरेल, पथरीला, किरकिरा, कंक्रीला, बलुवा ।

प्रा० कङ्गन (सं० कङ्कण) पु० स्त्रियों के पहुँचे में पहनने का गहना, बाला, कड़ा ।

प्रा० कङ्गनी स्त्री० एक प्रकार का अनाज, २ चूड़ी, कङ्गन, कङ्गना, ककनी ।

प्रा० कङ्गार (स्कन्धाधार) क० कहार ।

प्रा० कङ्गाल गु० दरिद्री, दीन, दुखी,

कमलिनी जो रात को खिलती है और दिन को बंद हो जाती है ।

प्रा० कमोरी स्त्री० मटकी, गगरी ।

सं० कम्प } (कम्प्=काँपना) भा०
कम्पन } पु० थरथराहट, कम्प कम्पी, लर्ज़ा ।

प्रा० कम्पना (सं० कम्पन, कम्प्= कांपना) क्रि० अ० थरथराना, काँपना ।

सं० कम्पित (कम्प्=कांपना) कर्म० कांपता हुआ, थरथराता हुआ, कम्पायमान ।

सं० कम्बल (कम्ब्=जाना वा कम् =चाहना) पु० कामरी, लोई, ऊनी कपड़ा, दोशाला ।

सं० कम्बु (कम्=चाहना) पु० शंख, हस्ती, शम्बूक, घोंघा, सूती चूड़ी गु० चित्रवर्ण, अर्थात् चितकबड़ा ।

सं० कम्बुग्रीवा (कम्बु=शंख, ग्रीवा =गरदन) गु० जिसकी गरदन शंख ऐसी हो ।

सं० कर (कृ=करना) पु० हाथ, २ हाथी की सूंड़, ३ (कॄ=बिखेरना, फैलाना) किरन, ४ महसूल, मालगुज़ारी, ५ जड़, हस्तनक्षत्र ।

प्रा० कर्करा (सं० कर्कर, कृ=करना) पु० खोटा सिक्का, २ एक पखेरूका नाम गु० कठोर, कड़ा ।

प्रा० करगहना (सं० कर=ग्रहण, कर=हाथ, ग्रह=लेना, पकड़ना) क्रि० स० ब्याह करना, ब्याह में दुलहिन का हाथ पकड़ना ।

सं० करटक पु० नाम शृगाल, सियार, कलेला ।

सं० करघर्षण (कर=हाथ, घर्षण= मलना, घृष्=घिसना, गलना) भा० पु० हाथमलना, हाथमींजना ।

सं० करज (कर + जन्=पैदा होना) पु० नख, नाखून ।

सं० करण (कृ=करना) पु० साधन, काम सिद्ध करने का उपाय, हथियार, औज़ार, २ व्याकरण में तीसरा कारक, ३ इंद्रिय, ४ काम, ५ काया, शरीर, ६ कारण, ७ छत्र, ८ करण, कायस्थ, ९ ज्योतिष में एक तरह के समय के विभागों को करण कहते हैं वे ११ हैं, उनमें से ७ चल हैं और ४ स्थिर हैं और दो करण मिलके एक चन्द्र दिनके बराबर होते हैं ।

प्रा० करणी (सं० करणीय, करने योग्य, कृ=करना) स्त्री० काम, धंधा, २ थापी ।

सं० करणी (कृ=करना) स्त्री० गणितविद्या में ऐसी राशि को कहते हैं जिसका ठीक मूल नहीं मिले ।

सं० करण्ड (कृ + अण्डन्) पु० काक पक्षी, कौवा, २ डिब्बा, डिबिया, पात्र, मधुचक्र, शहद का छत्ता,

पानपात्र, पुष्पपात्र ।

प्रा० करतब (सं० कर्त्तव्य, कृ=करना) पु० काम, करनेयोग्य काम, २ चाल, ३ गुण, हुनर, ४ परख, तजरुबा ।

सं० करतल(कर=हाथ, तल=नीचा) पु० हथेली, हाथ का तल ।

सं० करताल (कर=हाथ, ताल=एक बाजे का नाम) पु० एक बाजे का नाम, कठताल ।

सं० करताली (कर=हाथ, तड्=पीटना, बजाना) स्त्री० हाथ बजाना, हाथ बजाने का शब्द ।

प्रा० करतूति (सं० कर्त्तव्यता) स्त्री० काम, धंधा, करतव ।

सं० करदपत्र ख़िराजनामा ।

प्रा० करना (सं० करण, कृ=करना) क्रि० स० बनाना, रचना, सुधारना, २ पु० एक खट्टे फल का नाम।

सं० करनिकर गु० करसमूह, हस्तसमूह ।

सं०करपाल (कर=हाथ, पाल्=बचाना)पु०तलवार, खड्ग,मोजा, दस्ताना ।

सं० करपुट हाथ जोड़ना, दोनों हाथ मिलाना ।

सं० करवाल (कर=हाथ,वल्=जाना वा ढकना) पु० तलवार ।

सं० करवालिका स्त्री० छुरी,कटारी।

प्रा० करवी, स्त्री० जुआर अथवा बाजरे के पुवाल ।

सं० करभ पु० ऊंट, हाथीका बच्चा।

सं० करभूषण पु०कंकण, बिजायठ ।

प्रा० करम (सं० कर्म्म, कृ=करना) पु० काम, धंधा, २ भाग, भाग्य, क़िस्मत ।

प्रा० करवट स्त्री० पसवाड़ा, पांजर, तरफ़ ।

सं० करवीर (कर=जड़, वीर=प्रकट होना, वा कर=हाथ, वीर=पराक्रम करना) पु० कंडीर का फूल अथवा पेड़, कनेल, २ तलवार ।

सं० करशाला धि० स्त्री० चुंगीघर, महसूलघर ।

प्रा० करांत
करोत्त (सं० करपत्र, कर=हाथ, पत्=गिरना, जो हाथ से लकड़ी पर गिरता है) पु० आरा, अर्रा, क्रकच, लकड़ी चीरने का एक औज़ार ।

प्रा० करारा
करार पु० नदी का ऊंचा किनारा, २ (सं० कर्कर) गु० कठिन कड़ा, सख़्त, भयंकर, काला कौवा ।

सं० कराल (कृ=हिंसा करना, मारना) गु० भयानक, भयंकर, डरावना, २ बड़ा लम्बा ।

सं० करालाकृति (कराल + आकृति) स्त्री० भयंकर स्वरूप, ख़ौफ़नाकसूरत ।

प्रा० कराहना क्रि० अ० किसी

पीड़ा अथवा दुःखके कारण आह मारना, कहरना ।

सं० करिण (कर=सूँड़ अर्थात् सूँड़ वाला) पु० हाथी, गज, मतंग ।

सं० करीर (कॄ=फैलाना, वा मारना) पु० बांसका अंकुर, २ करील, एक प्रकार का कँटीला वृक्ष जो मरुस्थल में उगता है और उसको ऊंट खाते हैं ।

सं० करुणा (कृ=करना, वा कॄ=फेंकना) स्त्री० दया, कृपा, अनुग्रह, २ नाम वृक्षका, ३ नवरस में एकरस।

सं० करुणानिधान (करुणा=दया, निधान=ख़ज़ाना) गु० करुणा के ख़ज़ाना, कृपालु, दयालु ।

सं० करुणामय (करुणा=दया, मय =रूप) गु० दया के रूप, दयामय, दया करनेवाला, दयालु, कृपालु ।

सं० करुणायतन (करुणा + आयतन) पु० दया के स्थान ।

सं० करुणार्द्र (करुणा=दया, आर्द्र =गीला) पु० करुणानिधान, करुणामय, दयालु ।

प्रा० करुवा (सं० करक, कृ=करना) पु० कमंडलु, करवा, कठारी, मिट्टी का कोरा बरतन, करवाचौथ=एक पर्व अथवा त्योहार जो कातिक के महीने में होता है ।

सं० करेणु पु० हाथी, हस्ती ।

प्रा० करेला (सं० कटिल्ल, कट्=घेरना) पु० एक तरकारी का नाम जो कुछ कड़वी होती है ।

प्रा० करोनी स्त्री० दूध की खुर्चन ।

प्रा० करौंदा (सं० करमर्दक, कर =हाथ, मृद्=मलना) पु० एक फल का नाम ।

सं० कर्क (कृ=करना, वा कॄ=फैलना) पु० कैंकड़ा, २ चौथीराशि ।

सं० कर्कट (कृ=करना) पु० कैंकड़ा, गिंगटा, २ चौथीराशि, सर्ता ।

सं० कर्कश (कर्क=कठिनता, वा कॄ =फेंकना, कश्=मारना) गु० कठोर, कठिन, कड़ा, निर्दय, लड़ाका ।

सं० कर्कशा स्त्री० लड़ाका, झगड़ा करनेवाली, कलही ।

सं० कर्कन्धु स्त्री० बदरीवृक्ष, बेरका पेड़।

सं० कर्ण (कृ=करना, अर्थात् शब्द का ज्ञान करना) पु० कान, २ (कर्ण=भेदना, वा कॄ=फैलाना) पतवार, ३ त्रिभुज खेतमें भुज और कोटि को छोड़ तीसरी भुजाका नाम, ४ चौकोने खेत में उस लकीर का नाम जो सामने के कोनों से खींची जाती है, आध काट, ५ कुंती का बेटा जो सूर्य के अंश से पैदा हुआ ।

सं० कर्णधार (कर्ण=पतवार, धृ= रखना) पु० मांझी, चदनदार, जहाज़ चलानेवाला, नाविक, केवट, मल्लाह ।

सं० कर्णफूल (कर्ण=कान, फूल, अर्थात् कानका फूल)पु० कान में पहनने का गहना, कर्णभूषण ।

सं० कर्णवेध
कर्णवेधन } (कर्ण=कान, विध्=छेदना) पु० कान बिन्धाना, कानछिदाना ।

सं० कर्णमण्डक (मण्ड्=शोभा देना) क० पु० कर्णफूल, बिरिया, २ मधुरशब्द ।

सं० कर्णाट पु० कर्णाटक देश ।

सं० कर्णिका (कर्ण + इक, कर्ण छेदना) स्त्री० हाथी की सूँड़ की नोक, हाथ की बीच की अंगुली, मध्यमा, क़लम, लेखनी, कुट्टिनी, कर्णभूषण, कर्णफूल ।

सं० कर्त्तन (कृत्=काटना) पु० कतरन, काटना, छांटना ।

सं० कर्त्तरिका
कर्त्तरी } (कृत्=काटना)स्त्री० कतरनी, क़ैंची ।

सं० कर्त्तव्य (कृ=करना) कर्म०पु० करने योग्य, जो कुछ करना चाहिये, अवश्य उचित, योग्य, वाजिब।

सं० कर्त्ता (कृ=करना) पु० करने वाला, बनानेवाला, २ सृष्टि पैदा करनेवाला, ईश्वर, ३ व्याकरण में पहला कारक, ४ ग्रन्थ बनाने वाला, ५ पति, मालिक, स्वामी, अधिकारी ।

प्रा० कर्त्तार (सं० कर्त्ता) पु०करने वाला, २ पैदा करनेवाला, ईश्वर, सिरजनहार, सृष्टिकर्त्ता ।

सं० कर्द
कर्दम } (कर्द्=बुरा शब्दकरना) पु०कीचड़, काँदो, चहला।

प्रा० कर्धनी (सं० कटिधारणीय, कटि=कमर, धारणीय=पहनने योग्य, धृ=धारणकरना वा कटिबन्धन, कटि=कमर, बन्धन=बांधना) स्त्री० कंधनी, कमर में पहनने का गहना ।

सं० कर्पूर (कृप्=समर्थ होना) पु० कपूर, बाहुभूषण ।

सं० कर्बूर (कर्ब्=जाना) पु० स्वर्ण, हरिताल, राक्षस ।

सं० कर्म्म (कृ=करना) पु० काम, धंधा, २ धर्मसंबंधी काम, जैसे यज्ञ, होम, दान आदि, ३ पहले जन्म में किया हुआ, ४ कर्मकारक, दूसरा कारक (व्याकरण में), ५ भाग, क़िस्मत ।

सं० कर्म्मकाण्ड (कर्म=काम, कांड =समूह) पु० कर्मों का समूह, २ जप होम यज्ञ आदि, ३ वेद का एक भाग ।

सं० कर्म्मकार (कर्म=काम, कार =करनेवाला, कृ=करना) पु० काम करनेवाला, २ लुहार ।

सं० कर्म्मनाशा (कर्म्म=अच्छे काम, वा पुण्य, नाश्=नष्ट करना) स्त्री० एक नदी जो बनारस और बिहार के बीच में है ।

सं० कर्म्मनिपुणाई भा० स्त्री०

कर्म्मकुशलता, काम की चतुराई, कारीगरी ।

सं० कर्म्मपथ स्त्री० कर्म्ममार्ग, वेद की रीति, तरीक़े शरई ।

सं० कर्म्मभोग (कर्म्म=पहले जन्म में किये हुये काम का फल, भोग =भोगना) पु० भले बुरेका फल, प्रारब्ध के फल का भोग ।

सं० कर्म्मेन्द्रिय (कर्म=काम, इंद्रिय=इंद्री) स्त्री० काम करने की इंद्री जैसे हाथ पांव आदि (इंद्रिय शब्द को देखो) ।

सं० कर्ष (कृष्=खींचना) पु० वैर, विरोध, रोष, ईर्षा, जैसे " बातहि बात कर्ष बढ़ि आई " (रामायण) २ सोलह माशे का तोल ।

सं० कर्षक (कृष्=खींचना, हल जोतना) पु० किसान, जोता, जोतनेवाला ।

सं० कर्षण (कृष्=खींचना, हल जोतना) पु० खैंच, तान, २ जोतना, खेती करना ।

प्रा० कल, काल (सं०कल्य,कल्=गिनना)पु०आजका पहला वा पिछला दिन ।

प्रा० कलकीबात बोल० थोड़े दिनों की बात, जो कुछ थोड़े दिन पहले हुआ हो ।

प्रा० कल स्त्री० चैन, आराम, सुख, राहत ।

प्रा० कलमकल बोल० बेचैनी, बेआरामी, बेकली, दुःख, तकलीफ़ ।

प्रा० कल (सं० कला, कल्=शब्द करना) स्त्री० जन्त्र, यन्त्र, २ बंदूक़ की कल, चाप, ३ दांव, पेंच ।

प्रा० कलकाआदमी बोल० बहुत दुबला आदमी, २ पुतला ।

प्रा० कलका घोड़ा बोल० बहुत अच्छा सिखाया हुआ और अधीन घोड़ा ।

सं० कल (कल्=शब्द करना) पु० मीठा शब्द, २ (कड्=प्रसन्नहोना) वीर्य्य, बीज, गु० मीठा, सुन्दर ।

सं० कलकण्ठ (कल=मीठा वा सुन्दर, कंठ=गला) स्त्री० कोयल, कोकिला, गु० सुन्दर वा मीठे कण्ठवाली ।

सं० कलकल (कल्=शब्द करना) पु० कोलाहल, कलकल, ऐसा शब्द कचकच, झकझक, बकबक ।

सं० कलङ्क (क=मुख, वा आत्मा, लकि=बिगाड़ना, वा कल्=जाना) पु० दाग़, दोष, चिह्न, लछनत, लाञ्छन ।

प्रा० कलजिभा (सं० कालजिह्व, काल=काली, जिह्वा=जीभ) गु० बुरा चीतनेवाला, दुर्जन, बुरा चाहनेवाला ।

सं० कलत्र (कल=वीर्य्य, त्रा=बचाना वा गड्=खींचना, यहां ग को

क और ड को ल हो जाता है) स्त्री० पत्नी, भार्या, लुगाई, स्त्री ।

सं० कलधौत (कल=मैल, धौत=धोगया) गु० मलरहित, २सोना ।

सं० कलन (कल्=गिनना) भा० पु० गिनना, चिह्न ।

प्रा० कलप पु० बालों के रंगने का रंग, ख़िज़ाब, माँड़, लेई ।

प्रा० कलपना (सं० कल्पन, कृप्=दुबला होना) क्रि० अ० कुढ़ना, पछताना, बिलखना, दुःखीहोना, दुःख पाना ।

प्रा० कलपाना (कलपना) क्रि० स० कुढ़ाना, सताना, दुःख देना ।

सं० कलभ (कल्=शब्द करना) पु० हाथी का बच्चा ।

अ० क़लम्म लेखनी ।

प्रा० कलमकल स्त्री० घबरानि, दुःख ।

प्रा० कलमलाना क्रि० अ० चुलबुलाना, छटपटाना, कुलबुलाना, हिलना ।

प्रा० कलवार पु० कलाल, कलार, सुंडी, मदिरा खींचनेवाला और बेचनेवाला ।

सं० कलश (कल=शब्द, श=जाना) पु० घड़ा, गगरा, पानी रखने का बरतन, २ मन्दिरों के ऊपर का शिखर ।

प्रा०कलशिरा } (सं०काल=काला,
कलसिरा } शीर्ष=शिर) गु० काले शिरवाला, काले शिर का पु० मनुष्य, आदमी ।

सं० कलस (क=पानी, लस=शो भना) पु० घड़ा, कलश, २ मन्दि का शिखर ।

सं० कलहंस (कल=सुन्दर, हंस पु० राजहंस ।

सं० कलह (कल=मीठा शब्द, ह =मारना) पु० लड़ाई, झगड़ा विरोध, गु० कलहकार=झगड़ालू लड़ाई करनेवाला, २ कलहका रिणी=झगड़ालू स्त्री, लड़ाई क नेवाली ।

सं० कला (कल्=गिनना, जाना स्त्री० बहुत छोटा भाग, अंश क साठवां हिस्सा, २ चन्द्रमण्डल सोलहवां भाग, ३ समयका हिस्स साठ सेकंड, ४ छल, कपट, बहाना फ़रेब, ५ गुण, हुनर, गाना बजा ना आदि ६४ कला ।

कला चौंसठ हैं—

१–गीत गाना अर्थात् स्वरों रा और रागिनियों को जानना औ उनको अभ्यास करना ।

२–वाद्य बाजा बजाना ।

३–नृत्य नाचना ।

४–नाट्य नक़ल करना, नाटक खे लना ।

५–आलेख्य लिखना और चि कारी यानी मुसव्वरी करना ।

६-विशेषक छेद्य अनेक प्रकार के खौर और तिलक लगाने के सांचे बनाना ।

७-तण्डुलकुसुमवलिविकारक्रिया विना टूटे चावल और फूलों के चौक देवमंदिरों में पूरना ।

८-पुष्पास्तरण फूलों की सेज बनाना ।

९-दशनवसनांगराग दांतों के मंजन मिस्सी आदि और वस्त्र और अंगराग बनाना और लगाना ।

१०-मणिभूमिकाकर्म गर्मी के दिनोंमें रहने के लिये गृह विशेष बनाना ।

११-शयनरचन पलँग बिछाना ।

१२-उदकवाद्य पानीमें बाजा बजाना या जलतरंग ।

१३-उदकघात पानीके खेल, छींटा देना या पानी हाथों से दबाकर ऊपर उठाना ।

१४-चित्रयोग १ नपुंसक करना, २ जवान को बुड्ढा और ३ बुड्ढा को जवान करना ।

१५-माल्यग्रन्थनविकल्प देवपूजा के लिये अनेकप्रकार के माला और वस्त्र बनाना ।

१६-शेखरापीड़योजन शिर में अनेक प्रकारके फूलों की रचना ।

१७-नेपथ्यप्रयोग देशकालानुसार वस्त्र पहिनना ।

१८-कर्णपत्रभंग हाथीदांत और शंखादि के कर्णफूल बनाना ।

१९-गन्धियुक्ति अनेक प्रकार के सुगन्धित पदार्थ बनाना और लगाना ।

२०-भूषणयोजना गहने पहनना ।

२१-ऐन्द्रजाल बाज़ीगरोंकी तरह शोबिदे अर्थात् लीला दिखलाना ।

२२-कौचुमारयोग कुरूप को सुन्दर करना ।

२३-हस्तलाघव हाथकी फुरती और हलकेपने से काम में लाना ।

२४-चित्रशाकापूपभक्ष्य विकार क्रिया अनेक प्रकार की तरकारियां और भोजन के व्यंजन बनाना ।

२५-पानकरसरागासवयोजन अनेक प्रकार के पीने के शर्बत या अर्क़ और शराब बनाना ।

२६-सूचीकर्म सीना और बुनना ।

२७-सूत्रक्रीड़ा रंग बरंग के तागे दिखलाना साबित को टूटा और टूटे को साबित दिखाना ।

२८-प्रहेलिका पहेली सीखना और कहना ।

२९-प्रतिमाला बैतबाज़ी या श्लोक के अन्तिम अक्षर से दूसरा श्लोक कहना ।

३०-दुर्वाचकयोग कठिन शब्दोंका पढ़ना ।

३१-पुस्तकवाचन शृंगारादि अलंकार और गान के साथ पुस्तक पढ़ना ।

३२-नाटकाख्यायिकादर्शन छोटे बड़े नाटक देखना और दिखलाना ।

३३-काव्यसमस्यापूर्ण दी हुई, समस्या से श्लोक को पूराकरना ।

३४-पट्टिकावेत्रबाणविकल्प तरह२ की खाट चुनना ।

३५-तर्कवातक्षकर्म्म दलीलैं करना वा शिल्पकारी वा शान चढ़ाना ।

३६-तक्षण बढ़ईका काम करना ।

३७-वास्तुविद्या घर वग़ैरह बनाना, सामान रखना ।

३८-रूप्यरत्नपरीक्षा सोना, चांदी और रत्नों का पहिंचानना ।

३९-धातुवाद कच्ची धातु का साफ़ करना ।

४०-मणिरागकरज्ञान मणियों के रंग और उनकी खानि जानना और पहिंचानना ।

४१-वृक्षायुर्वेदयोग वृक्षों का तरतीबवार जमाना और पालन पोषण करना ।

४२-मेषकुक्कुटलावकयुद्ध विधि मेढ़े मुर्ग़े लावक के युद्धकी रीति ।

४३-शुकसारिकाप्रलापन सुआ और मैना को पढ़ाना ।

४४-उत्सादन उपटन बनाना और लगाना और शरीर का दाबना ।

४५-केशमार्जनकौशल बालों का मलना और तेल लगाना ।

४६-अक्षरमुष्टिकाकथन संक्षेप लिखा हुआ पढ़ना ।

४७-म्लेक्षितविकल्प शब्दों का गू अर्थ समझना जैसे अग्नि से की संख्या और वेद से ४ की संख्या आदि ।

४८-देशभाषाविज्ञान देश देशकी भाषा जानना ।

४९-पुष्पशकटिका बालकों के लिये फूलों की गाड़ी बनाना ।

५०-निमित्तज्ञान शुभाशुभदेश परिज्ञान फल-गुप्त बात का वर्त्तमान दशा देखकर बतलाना ।

५१-यन्त्रमात्रिका लड़ाई के लिये यन्त्रों की घटना जानना ।

५२-धारणमात्रिका स्मरणशक्ति का बढ़ाना जिससे सुनते ही याद होजावे ।

५३-समवाच्यसमपाठ्य विना पढ़े हुये को दूसरे का पढ़ना सुनकर उसके समानही पढ़ते या बांचते जाना ।

५४-मानसीकाव्यक्रिया उसी क्षण काव्य बनाना दूसरे के मन की बात जानना ।

५५-अभिधान कोष कोषबनाना ।

५६-छन्दोज्ञान तरह तरह के छन्दों का पहिंचानना ।

५७-क्रियाविकल्प काव्यों के अलङ्कार जानना ।

५८-छलितक योग वंचन करने या मोहने के हेतु वेष बदलना अर्थात् ऐयारी ।

५९-वस्त्रगोपन फटे कपड़ों का ऐसा पहिनना कि मालूम न पड़े या इच्छित प्रकार से पहिनना ।

६०-द्यूतविशेष जुआ खेलना ।

६१-आकर्ष्यक्रीड़ा पाँसा खेलना ।

६२-बालक्रीड़न कर्म्म बालकों के लिये खिलौने बनाना ।

६३-वैनयिकी वैजयिकी विद्या विनय और विजय के उपाय ।

६४-वैतालिकीव्यायामिकीविद्या भूत प्रेत और दांव पेंच आदि ।

प्रा० कलाई स्त्री० पहुँचा ।

सं० कलाधर (कला+धृ=धरना) क० पु० चन्द्रमा, महताब ।

सं० कलाप (कला=भाग, आप्=पाना) पु० समूह, २ संस्कृत भाषा का व्याकरण, ३ मोरकी पूंछ ।

सं० कलापक (कलाप्+अक) क० मोर, मयूर, ताऊस ।

सं० कलापी (कला+मोर की पूंछ) पु० मोर, मयूर ।

प्रा० कलाबत्तून पु० सोना चांदी का तार ।

प्रा० कलार ⎫ पु० कलवार, मदिरा
कलाल ⎭ खेंचनेवाला और बेंचनेवाला ।

प्रा० कलारिन स्त्री० कलार की स्त्री ।

प्रा० कलावंत पु० गानेवाला, गवैया, ढाढ़ी ।

सं० कलि (कल्=गिनना) पु० चौथा युग, कलियुग, कलयुग, (युगशब्द को देखो) २ लड़ाई, झगड़ा ।

सं० कलिका ⎫ (कल्=जाना, वा
कली ⎭ गिनना) स्त्री० कोंपल, बिन खिला हुआ फूल ।

सं० कलिङ्ग (कलि=झगड़ा, गम्=जाना) पु० कटक से मंदराजतक का देश ।

सं० कलियुग (कलि, युग=समय) पु० चौथायुग, कलियुग (युग शब्द देखो) ।

सं० कलुष (क=सुख वा आत्मा, लुष्=नाश करना) पु० पाप, गंदला, नाराज़ ।

प्रा० कलेऊ ⎫ (सं० कल्याहार,
कलेवा ⎭ कल्य=कल, आहार=खाना) पु० कल का बचा खाना, ठंढा खाना, बासी खाना, भोर का खाना, नाश्ता ।

प्रा० कलेजा पु० कलेजा, जिगर, २ साहस, हिम्मत ।

प्रा० कलेजाउलटना बोल० बहुत

Digitized by Arya Samaj Foundation Chenhai and eGangotri

कै करने से थक जाना ।

प्रा० कलेजाफटना बोल० दुख अथवा डाह से बेकल होना ।

प्रा० कलेजाठंढाकरना बोल० अपनी चाह पूरी करना, आराम पाना, चैन करना ।

प्रा० कलेजाजलना बोल० दुख पाना, कुढ़ना, पछताना, सोचकरना ।

प्रा० कलेजाकांपना बोल० डरना, सहमना, थरथराना ।

प्रा० कलेजेपरसांपफिरना बोल० डाह से जलना ।

प्रा० कलेजेसेलगारखना }
कलेजे से लगालेना } बोल० प्यार करना, गलेलगाना, बहुतही बहुत प्यार करना ।

प्रा० कलेजेमेंडालरखना बोल० बहुत प्यार करना, बहुतही बहुत चाहना ।

सं० कलेवर (कल=वीर्य्य, वर=श्रेष्ठ, वा, कल्=जाना) पु० देह, शरीर ।

प्रा० कलेश } (सं० क्लेश, क्लिश
कलेस } =दुःख पाना) पु० दुख, कष्ट, पीड़ा, २ झगड़ा, दंगा ।

प्रा० कलोल (सं० कल्लोल, कल्=शब्द करना) स्त्री० खेलकूद, क्रीड़ा, चञ्चलाहट, आनन्द, बड़ीलहर ।

प्रा० कलौंजी स्त्री० मगरेला, एक तरह का बीज जो दवाई में काम आता है ।

सं० कल्की पु० विष्णुका दशवां अवतार ।

सं० कल्प (कृप्=समर्थ होना वा नाश होना) पु० वेद के छः अंगों में का एक अंग, २ ब्रह्मा का एक दिन रात जो मनुष्यों के हज़ार चौयुगी अथवा ४३२००००००० का होता है, ३ प्रलय, ४ विकल्प, संदेह, ५ अभिप्राय, मतलब, कामना, मनोरथ, ६ योग्यता, उचितता ।

सं० कल्पतरु } कल्प=मनोरथ, वा
कल्पद्रुम } कामना, तरु वा द्रुम
कल्पवृक्ष } वा वृक्षका अर्थ पेड़) पु० मनोकामना देनेवाला वृक्ष जो इन्द्र के बाग़ में है ।

सं० कल्पना (कृप्=विचारना) स्त्री० विचार, बनावट, मानना, युगत, जालसाज़ी, नक़ल ।

सं० कल्पांत (कल्प=ब्रह्माका दिन रात, अन्त=पूरा होना) पु० प्रलय, युगान्त, कल्प का अन्त ।

सं० कल्पित (कृप्=विचारना) त्रि० बनाया हुआ, माना हुआ, कृत्रिम, २ झूठा, असत्य ।

सं० कल्मष (कर्म्म=अच्छा काम वा पुण्य, सो=नाश करना यहां र् को ल्, और स को ष होगया) पु० पाप, नरक, मल ।

सं० कल्याण (कल्य=नीरोग, अण्=जीना, वा कल्य=प्रभात, अण्=

शब्द करना) पु० कुशल, मंगल, शुभ, २ एक रागिनी का नाम ।

सं० कल्ल पु० बधिर, बहिरा ।

प्रा० कल्लर गु० ऊषर, खारी ।

प्रा० कल्ला पु० जबाड़ा, जबड़ा ।

सं० कवच (क=हवा, वंच्=ठगना, वा कु=शब्द करना) पु० झिलम, बख़्तर, वर्म ।

सं० कवल (क=पानी, वल्=ढकना) पु० ग्रास, कवर, कवा, कौर, लुक़मा ।

सं० कवि (कु=शब्द करना) पु० काव्यबनानेवाला, जैसे बाल्मीकि, कालीदास आदि, शाअर, पंडित, बुद्धिमान्, २ भाट, चारण ।

प्रा० कवित्त (सं० कवित्व, कवि) पु० कविता, काव्य, शाअर ।

सं० कविता (कवि) स्त्री० कवि की बनाई हुई रचना, काव्य, पद्य, श्लोक, छन्द आदि, शाअरी ।

प्रा० कविताई (कविता) स्त्री० पद्यरचना, तसनीफ़ ।

सं० कवीश्वर (कवि, ईश्वर=स्वामी) पु० बड़ा कवि, बाल्मीकि ।

सं० कव्य (कु=शब्द करना) पु० पितरों के लिये जो अन्न आदि पदार्थ ।

सं० कश्मल पु० मोह, अज्ञानता ।

सं० कश्य पु० मदिरा, घोड़ेका तंग ।

सं० कश्यप (कश्य=सोमलता, सोमवल्ली, पा=पीना) पु० एक मुनि का नाम, मरीचि ऋषि का बेटा और देवता राक्षस और मनुष्यों का पुरुषा, प्रजापति, कश्यप शब्द यथार्थ में पश्यक था आदि अन्त अक्षरों के विपर्य्यय अर्थात् बदलने से कश्यप बना इसका अर्थ हुआ सर्वज्ञ, २ अज्ञाननाशक, ३ विशेषज्ञानवान् , ४ आत्मज्ञानी, ५ परब्रह्म, ६ सृष्टिकर्त्ता ।

सं० कष्ट (कष्=मारना, हानि पहुँचाना) पु० दुख, कलेश, पीड़ा, तकलीफ़, संकट ।

प्रा० कस गु० कैसा, पु० परख, ताव, २ ज़ोर, बल, कैसा ।

प्रा० कसक स्त्री० पीड़ा, दुख, टसक, टीस ।

प्रा० कसना (सं० कृष्=खैंचना, वा कष्=जांचना) क्रि० सं० खैंचना, तानना, जकड़ना, २ सोनेकी कसौटी पर घिसके परखना, जांचना, परखना, ३ तलना, घीमें भूनना ।

प्रा० कसमसाना क्रि० अ० हिलना, अंग मरोड़ना, कलमलाना ।

प्रा० कसार पु० एक तरह की मिठाई जो चावल और शकर से बनाई जाती है ।

प्रा० कसेरा (सं० कांस्यकार, कांस्य=

कांसा, कार=करनेवाला, कृ=करना) पु० ठठेरा, भरतिया ।

प्रा० **कसौटी** (सं० कष्=कसना, जांचना) स्त्री० एक पत्थर जिस पर सोना चांदी कसा जाता है, धातु परखने का पत्थर ।

सं० **कस्तूरी** (कस्=जाना, अर्थात् जिससे सुगन्ध निकलती है) स्त्री० सुगन्धित चीज़ जो हरिण की नाभि में मिलती है, मृगमद, मुश्क ।

प्रा० **कहना** (सं० कथन, कथ्=कहना) क्रि० स० बोलना, जताना, आज्ञा करना ।

प्रा० **कहदेना** बोल० जता देना, आज्ञा देना ।

प्रा० **कहनावत** / **कहावत** (सं० कथावत्, कथा=बात, वत्=बराबर, तुल्य) स्त्री० बात, दृष्टांत, मिसाल, मसल ।

प्रा० **कहरना** / **कहराना** क्रि० अ० कराहना, किसी दुख अर्थात् पीड़ा के कारण आह मारना ।

प्रा० **कहां** (सं० क्व) क्रि० वि० किस जगह ।

प्रा० **कहांतक** क्रि० वि० कितनी दूर तक, २ कितनी देरतक, ३ कितना ।

प्रा० **कहांसे** क्रि० वि० किस जगह से, किस तरफ़ से, किधर से ।

प्रा० **कहांकाकहां** बोल० कितना, २ हद्द से बाहर, बहुतही बहुत ।

प्रा० **कहानी** (सं० कथन, कथ्=कहना) स्त्री० बात, कथा, क़िस्सा ।

प्रा० **कहार** (सं० कर्म्मकार, कर्म्म=काम, कार=करनेवाला) पु० महरा, भोई, पालकी उठानेवाला ।

प्रा० **कहीं** (सं० क्वापि, क्व=कहां, अपि=भी) क्रि० वि० किसी जगह, जहां कहीं, कहुँ ।

प्रा० **कहीं न कहीं** बोल० इस जगह या उस जगह, यहां अथवा वहां, किसी न किसी जगह ।

प्रा० **कहुँ** क्रि० वि० कहीं, किसी जगह ।

प्रा० **कांकर** पु० कंकर, रोड़ा, पत्थर के छोटे २ टुकड़े ।

प्रा० **कांख** (सं० कक्ष) स्त्री० बग़ल, कक्ष, पार्श्व ।

प्रा० **कांचुली** (सं० कञ्चुक, कचि=बांधना) स्त्री० अंगिया, चोली, कंचुकी ।

प्रा० **कांजी** (सं० काञ्जिक) पु० खट्टा मांड, तुरानी पीछ ।

प्रा० **कांटा** (सं० कण्टक) पु० शूल, शाल, कण्टक, २ सोना अथवा दवाई आदि तोलने की छोटी तराज़ू, परयानी, ३ मछली पकड़ने की बंसी, ४ मछली की हड्डी ।

प्रा० **कांटासा निकल जाना** बोल० दुख अथवा हानि से छुटजाना ।

प्रा० कांटोंपर घसीटना बोल० बहुत सराहना, किसी की योग्यता से अधिक बड़ाई करना (जब कोई किसी आदमी की बहुत सराहना करता है तब वह आदमी नम्रता से ऐसा कहता है)।

प्रा० कांटेबोने बोल० अपने लिये आपही दुख पैदा करना, अपनी बुराई आप करना, किसी को दुख देना ।

प्रा० कांठा (सं० कण्ठ) पु० पास, नगीच, निकट ।

प्रा० कांदा (सं० कन्द) पु० प्याज़ ।

प्रा० कांदू (सं० कान्दविक) पु० भड़भूजा, २ चीनी का हंडा ।

प्रा० कांधा (सं० स्कन्ध) पु० कंधा, कांध, कंध ।

प्रा० कांधादेना बोल० सहायता देना, २ मुर्दे को लेजाना ।

प्रा० कांपना (सं० कंपन, कंप्=कांपना) क्रि० अ० हिलना, थरथराना, डुलना, कंपना, धड़धड़ाना ।

प्रा० कांस (सं० काश, काश्=चमकना) पु० एक प्रकार की घास ।

प्रा० कांसा (सं० कांस्य) पु० एक प्रकार की धातु ।

सं० काक (कै=शब्द करना) पु० कौवा, काग, वायस ।

सं० काकतालन्याय कौवा श्रमकर ताड़ के वृक्षपर जाकर फल को खाता है तात्पर्य्य यह है कि श्रम से सब पदार्थ प्राप्त होते हैं ।

सं० काकपक्ष (काक=कौवा, पक्ष =पंख, अर्थात् कौवे का पंख जैसे) पु० पट्टा, जुल्फ़ी ।

प्रा० काका }
कका } पु० चचा, बाप का छोटा भाई, पितृव्य ।

सं० काकिणी स्त्री० छदाम, कच्ची दो दमड़ी ।

प्रा० काकी स्त्री० चची, चचा की स्त्री, किसकी ।

प्रा० काकातूआ पु० सूये की जात का पक्षी ।

प्रा० काकबधू कवयी ।

प्रा० काग }
कागा } (सं० काक) पु० कौवा ।

प्रा० कागर पु० किनारा, कोर, औंठ, २ सर्प की केंचली ।

सं० कांक्षा (कांक्ष=चाहना) स्त्री० चाह, इच्छा, चाहना, अभिलाष, ख़्वाहिश ।

अं० कांग्रेस मेल, मिलाप ।

सं० काच (कच्=चमकना) पु० शीशा, आईना, २ एक तरह की आंखों की बीमारी ।

प्रा० काचा गु० कच्चा, २ अधूरा, अज्ञानी ।

प्रा० काछ (सं० कच्छ, कच्=बांधना) स्त्री० धोती का पल्ला जो पीछे खेंचकर बांधा जाता है, लांग,

२ जांघ के ऊपर का भाग।

प्रा० **काछन** स्त्री० काछी की स्त्री।

प्रा० **काछनी** स्त्री० लंगोटी, कोपीन, जांघिया।

प्रा० **काछी** पु० कुंजरा, माली।

प्रा० **काज** } (सं० कार्य्य) पु०
काजा } काम, धंधा, कारज।

प्रा० **काजल** (सं० कज्जल) पु० सुरमा, अंजन।

सं० **काञ्चन** (काचि=चमकना) पु० सोना, सुवर्ण, स्वर्ण, तिला।

प्रा० **काट** (काटना) पु० चीरा, ज़ख़म, घाव, २ मैल, छांटन, तलछट, ३ कड़वाहट, तेज़ी, ४ धार।

प्रा० **काटकरना** बोल० घायल करना, ज़ख़मी करना, काटना।

प्रा० **काटकूट** बोल० छांटछूंट, कतरन, छांटन, छीलन, टुकड़ा।

प्रा० **काटकूटकरना** बोल० कतरना, काटना, तराशना, काट डालना, २ काटलेना, लेलेना, मुजरा लेना।

प्रा० **काटखाना** बोल० दांतमारना, दांत काटना, भंभोड़ना, पकड़ना, काटना, डसना, मुँह डालना।

प्रा० **काटना** (सं० कर्त्तन, कृत्= काटना) क्रि० स० छेदना, तोड़ना, कतरना, चीरना, टुकड़े टुकड़े करना, २ काटखाना, खाना, खाजाना, खालेना, ३ लौनी, कढ़नी करना, ४ आरे से चीरना, आरा चलाना, ५ बिताना (समय), चलना, जाना, तै करना (रस्ता)।

प्रा० **काटडालना** बोल० काटकाढ़ना, साफ़ करना, उतार डालना, छांट डालना।

प्रा० **काठ** (सं० काष्ठ) पु० लकड़ी।

प्रा० **काठकबाड़** बोल० लकड़ी की चीज़ें।

प्रा० **काठका उल्लू** बोल० मूर्ख, बेवक़ूफ़, घामड़, बिलल्ला, भुच्च, मियांमिट्ठू, मसख़रा, गावदी।

प्रा० **काठकीभंवो** बोल० मूर्ख, विलल्ली, भुच्च स्त्री, बेवक़ूफ़ लुगाई।

प्रा० **काठचबाना** बोल० दुख से निबाह करना, दुख से जीना, कठिनता से गुज़रान करना।

प्रा० **काठमें पांव देना** बोल० क़ैद होना, क़ैदी होना।

प्रा० **काठहोना** बोल० कड़ा होना, सूखजाना, पथराना, पत्थर होजाना।

प्रा० **काठपुतली** } (सं० काष्ठपुत्तली)
कठपुतली } स्त्री० लकड़ीकी बनी हुई मूरत।

प्रा० **काठकीड़ा** (सं० काष्ठकीट) पु० खटमल, उड़ीस, खाटकीड़ा, २ घुन, एक कीड़ा जो लकड़ीको काटता है और खाता है।

प्रा० **काठड़ा** } (सं० काष्ठ) पु०
कठड़ा } लकड़ी का बरतन।

प्रा० **काठी** (सं० काय, वा काष्ठ)

स्त्री० जीन, २ शरीर, ३ डीलडौल।

प्रा० काढ़ना क्रि० अ० निकालना, खेंचना, बाहर लेना, उधेड़ना, बाहर निकालना, कपड़े पर सूई से फूल बनाना, कसीदा निकालना ।

प्रा० काढ़ा पु० जोश दिया हुआ दवाईका पानी, क्वाथ, कसैलारस ।

प्रा० काणा (सं० काण, कण्=आंख ढकना) गु० एक आंखवाला, एकाक्ष, २ (फल) जिसका गूदा सड़ गया हो, अथवा जिसमें कुछ गूदा न हो, ३ मूर्ख, बेवकूफ़, पु० काग, कौवा ।

सं० काण्ड (कण्=शब्दकरना, वा जाना, वा कई विभाग करना) पु० सर्ग, खंड, प्रकरण, अध्याय, भाग, बाब, विभाग, २ समूह, ३ डंठल, ४ समय, ५ बाण, ६ सेन, ७ घोड़ा, ८ तन्ना ।

प्रा० कातना (सं० कर्त्तन, कृत्=लपेटना) क्रि० स० सूत कातना, चरखे पर रूई से सूत बनाना ।

सं० कातर (का=थोड़ा, तॄ=पार होना, यहां कु=को का होगयाहै) गु० कायर, डरपोक, व्याकुल, घबराया हुआ ।

प्रा० कातिक (सं० कार्त्तिक) पु० सातवां हिंदी महीना, कार्त्तिक ।

प्रा० कादर (सं० कातर) गु० कायर, डरपोक ।

प्रा० कांदा ⎫
कांदौं ⎭ (सं० कर्दम) पु० कीचड़, चहला, पंक।

प्रा० कान (सं० कर्ण, कृ=करना, शब्द ज्ञान को) पु० सुनने की इन्द्रिय, श्रवण, सुनने की राह ।

प्रा० कान ऐंठना ⎫
कानअमेठना ⎭ बोल० कान खींचना, ताड़ना करना, सज़ा देना ।

प्रा० कानभरना बोल० विरोध डालना, चुगली खाकर झगड़ा खड़ा करना, बखेड़ा डालना, तोड़ फोड़ करना ।

प्रा० कानपर जूं न चलना बोल० बहुत असावधान होना, बहुत ढीला होना ।

प्रा० कानपर रखना बोल० याद रखना ।

प्रा० कानपर हाथ धरना बोल० मुकरना, नहीं करना, न मानना, ऊंहूं करना, न करना ।

प्रा० कान पकड़ना बोल० अपने तई छोटा मान लेना, अपनी छोटाई अथवा निचाई को मान लेना ।

प्रा० कानफूटना बोल० बहिराहोना।

प्रा० कान फोड़ना बोल० शोर करना, गुल करना, गुहार करना, हल्ला करना, हा हू करना ।

प्रा० कानफूंकना बोल० चुगली खाना, भेद कहना, झगड़ा उठाना,

२मंत्र देना, सिखाना, शिक्षा देना।

प्रा० कान झुकाना बोल० सुनने को चाहना, सुना चाहना।

प्रा० कान दबाकर चले जाना बोल० भागजाना, पलाना, रमजाना।

प्रा० कानधरना बोल० सुनना, ध्यान देना।

प्रा० कान दे सुनना बोल० ध्यान देकर सुनना।

प्रा० कानदेना बोल० सुनना, ध्यान देना।

प्रा० कान काटना बोल० बढ़ निकलना, बढ़चलना, थकाना, हराना, पीछे देना।

प्रा० कान खड़े होना बोल० चौंकना, डरना, भड़कना।

प्रा० कान खोल देना बोल० जताना, चिताना, सावधान करना, सुचेत करना।

प्रा० कान लगना बोल० भरोसे वाला होना, विश्वासी होना।

प्रा० कान मलना बोल० ताड़ना करना, सज़ा देना, डाटना, कान ऐंठना, कान अमेठना।

प्रा० कान में उँगली दे रहना बोल० कान बंद करना, बहिरा बनना, सुनी अनसुनी करना।

प्रा० कान में बात मारना बोल० नहीं सुनने का बहाना करना, कान में तेल डालना।

प्रा० कान में तेलडालना बोल० नहीं सुनने का बहाना करना, कान में बात मारना।

प्रा० कान में तेल डालके सो रहना बोल० असावधान होना, अचेत होना, वे परवाह होना, ग़ाफ़िल होना।

प्रा० कान में कहना }
कान में डालना } बोल० कानाफूसी करना कानाकानी करना, कानाबाती करना, कहदेना।

प्रा० कान न हिलाना बोल० चुप रहना।

प्रा० कान हिलाना बोल० राज़ी होना, प्रसन्न होना, हां हूं करना।

प्रा० कान होने बोल० समझना, बूझना, पहुँचना।

प्रा० कानाबाती करना बोल० कान में बात कहना, कानाफूसी करना, कानाकानी करना, खुस फुस करना, २ सलाह करना।

प्रा० कानाफूसी बोल० कानाबाती, कानाकानी, फुसफुसाहट, खुसर फुसर।

प्रा० कानाकानी करना कानाबाती करना, कानाफूसी करना, खसफस करना।

प्रा०कानोकानकहना बोल० कानाबाती करना, कानाफूसी करना।

प्रा० कान स्त्री० लाज, संकोच, मर्यादा, मान, परदा, अदब ।

प्रा० कान करना बोल० शरमाना, लजाना ।

प्रा० कान छोड़ना बोल० बेशरम होना, निर्लज्ज होना, ढीठ होना, गुस्ताख़ होना ।

प्रा० कान न करना
कान न मानना } बोल० ढिठाई करना, गुस्ताख़ी करना, अदब नहीं मानना ।

सं० कानन (कन्=चमकना, शोभना, वा क=पानी, अन्=जीना, अर्थात् जो पानी से फलता फूलता है) पु० जंगल, वन, विपिन, २ (क=ब्रह्मा, आनन=मुँह) ब्रह्मा का मुँह ।

प्रा० कानी (सं० काणी) स्त्री० गु० एक आंखवाली स्त्री ।

प्रा० कानीकौड़ी (सं० काणी=कानी, कौड़ी=कपर्द) स्त्री० बोल० ऐसी कौड़ी जिसमें छेद हो, फूटी कौड़ी ।

प्रा० कानी स्त्री० वैर, द्वेष, डाह ।

सं० कान्त (कन्=चमकना, वा कम्=चाहना) पु० स्वामी, भर्त्ता, पति, कंत, गु० सुन्दर, मनोहर, प्यारा, प्रिय, चाहा हुआ ।

सं० कान्ता (कन्=चमकना, वा कम्=चाहना) स्त्री० पत्नी, लुगाई, स्त्री, भार्य्या, घरवाली, प्यारी, प्रिया, सुन्दरी, २ कान्ति, सुन्दरता ।

सं० कान्ति (कम्=चाहना) स्त्री० शोभा, सुन्दरताई, चमक, दमक, ख़ूबसूरती, दीप्ति, प्रकाश, २ चाह, इच्छा ।

अं० कान्फ्रेन्स सभा, समाज, मजलिस, जलसा ।

सं० कान्यकुब्ज (कन्या=लड़की, कुब्जा=कुबड़ी) पु० क़नौजदेश, २ ब्राह्मणों की एकजाति, क़नौजिया ।

प्रा० कान्ह
कान्हर } (सं० कृष्ण) पु० श्रीकृष्ण का नाम ।

प्रा० कान्हड़ा पु० एक रागिणी का नाम ।

सं० कापुरुष (का=बुरा, पुरुष=मनुष्य) पु० खोटा मनुष्य, बुरा मनुष्य, २ डरपोक ।

अ० काफ़ी पर्याप्त, अलम् ।

सं० काम (कम्=चाहना) पु० चाह, मक़सद, इच्छा, कामना, मनोरथ, चाही हुई चीज़, चाहा हुआ विषय, २ कामदेव, प्यार का देवता, ३ सुख, ४ शहवत ।

प्रा० काम (सं० कर्म्म) पु० काज, कार्य, धंधा ।

प्रा० कामआना बोल० काम में आना, बरता जाना, २ माराजाना, लड़ाई में मारा जाना ।

प्रा० काम पूरा करना बोल० काम

सिद्ध करना, काम पार करना, निबेड़ना, निपटाना, भुगताना, २ मार डालना, जान से मार डालना, खपाना ।

प्रा० **काम पूरा होना** बोल० काम सिद्ध होना, काम पार होना, निबड़ना, निपटना, काम होचुकना, २ मरना, मारा जाना, मर जाना, खपना ।

प्रा० **काम चलाना** बोल० काम निकालना, काम जारी रखना ।

प्रा० **काम में लाना** बोल० बरतना, इस्तअमाल करना ।

प्रा० **काम निकालना** बोल० काम चलाना, २ किसी की चाह पूरी करना ।

प्रा० **कामकाज** (सं० कर्म्म + कार्य्य) बोल० काम, धंधा, कारबार ।

सं० **कामकेलि** (काम=कामदेव, वा स्त्रीसंग, केलि=खेल, किल्=खेलना) स्त्री० रंगरस, दुलार, प्यार, स्त्रीसंग, रति, मैथुन, सुरत, स्त्री पुरुष का मिलाप, केलि करना ।

सं० **कामद** (काम=इच्छा, कामना, दा=देना) गु० मनोवांछित फल का देनेवाला, चाहेहुएका देनेवाला।

प्रा० **कामद गाई** (सं० कामदगो, कामद=चाहे हुए को देनेवाली, गो=गाय) स्त्री० कामधेनु ।

सं० **कामदेव** (काम=इच्छा, वा प्यार, देव=देवता) पु० प्यार का देवता, मदन ।

सं० **कामधेनु** (काम=मनोरथ, धेनु =गाय) स्त्री० इंद्र की गाय जिससे जो कुछ मांगो सो देती है, २ गाय जो बहुत दूध देती हो ।

सं० **कामना** (कम्=चाहना) स्त्री० चाहना, चाह, इच्छा, अभिलाष, वासना, ख़्वाहिश ।

प्रा० **कामरि** }
कामरी } (सं० कम्बल) स्त्री० लोई, कम्मल।

सं० **कामरूप** (काम=इच्छा, रूप =आकार) गु० चाहे जैसा रूप बना लेनेवाला, २ सुन्दर, सुहावना, मनोहर, पु० एक देश का नाम जो आसामका एक भाग है।

सं० **कामरूपी** (काम + रूप) गु० सुन्दर, सुहावना, २ स्वेच्छाचारी, बहुरूपिया ।

सं० **कामातुर** }
कामार्त्त } (काम=प्यार, इश्क़, आतुर वा आर्त्त= घबराया हुआ) गु० कामी, मस्त, काम से पीड़ित ।

सं० **कामारि** (काम=कामदेव, अरि =वैरी) पु० महादेव, शिव, २ काम को नाश करनेवाली धातु ।

सं० **कामिनी** (कामी, कम्=चाहना) स्त्री० परमसुन्दरी, रमणीक स्त्री, प्यारी, प्रिया ।

सं० कामी (काम) पु० कामातुर, कामके वश, शहवतपरस्त ।

सं०कामुक क०कामी, ऐयाश,मस्त ।

सं० काम्य कर्म० कमनीय, सुन्दर ।

सं० काय पु० } (चि=इकट्ठाकरना)
काया स्त्री० } शरीर, देह, तन ।

प्रा० कायफल (सं० कटुफल) पु० एक दवाई का नाम ।

प्रा० कायर (सं० कातर) गु० डरपोक, हेठा ।

सं० कायस्थ (काय=शरीर, स्था=ठहरना अर्थात् जो ब्रह्मा के शरीर से पैदाहुए) पु०कायथ, एक जाति के मनुष्य जिनका धंधा लिखने पढ़ने का है, २ (काय=शरीर में, स्था=ठहरना) ब्रह्म, परमात्मा ।

सं० कायिक (काय) गु० शरीर का, शारीरिक, काया का, देह का, देही, शरीरी ।

सं० कारक (कृ=करना) क० पु० करनेवाला, २ (व्याकरण में) क्रिया से संबंध करनेवाला जैसे कर्त्ता कर्म आदि ।

प्रा०कारज(सं०कार्य)पु०कामकाज ।

सं० कारण (कृ=करना) पु० सबब, हेतु, निमित्त, लिये ।

सं० कारणकरण क० पु० महत्तत्वादिका कर्त्ता, पंचतत्त्व से सृष्टि का करनेवाला ।

सं० कारागार (कारा=बंदीघर, कृ=मारना, आगार=स्थान) पु० क़ैदख़ाना, जेलख़ाना, बंदीख़ाना, बंधिगृह ।

सं० कारी (कृ=करना) क०पु० करनेवाला, कर्त्ता ।

सं० कारुणिक (करुणा=दया) क० पु०दयालु,कृपालु, करुणानिधान, दयावान् ।

सं० कार्त्तिक (कृत्तिका एक नक्षत्र का नाम, इस महीने की पूर्णमासी के दिन कृत्तिका नक्षत्र होता है और इस महीने में पूरा चांद इस नक्षत्र के पास रहता है) पु० कातिक ।

सं० कार्पण्य } भा०स्त्री०कृपणता,
कार्पण्यता } बख़ीली ।

सं० कार्य्याधिकारी क० पु० कारिन्दा, कारकुन ।

सं० कार्म्मुक (कृ=करना) पु० धनुष्, इषुधि ।

सं० कार्य्य (कृ=करना) पु० काम, काज, कारज, २ प्रयोजन, ३ कारण, हेतु ।

सं० कार्यकलाप }
कार्यप्रवृत्ति } काररवाई,
कार्य्यवाही } कारगुज़ारी ।

सं० कार्यदक्ष गु० कारगुज़ार ।

सं० कार्य्यदक्षता भा० स्त्री० कारगुज़ारी ।

सं० कार्य्यनिष्ठ (कार्य्य=काम,

निष्ठ=लगा,स्था=ठहरना)गु० काम में लगा हुआ, काम में मशगूल ।

सं० काल (क=कुत्सित,बुरा,अल्=पाना) गु० काला, कृष्णवर्ण, असित (कल्=गिनना, बिताना, वा प्रेरणा करना, चलाना) यमराज, २ मौत, मृत्यु, ३ समय, ऋतु ।

प्रा० कालबिताना
कालकाटना
कालगँवाना } बोल० समय बिताना, दिन काटना, वक़्त काटना ।

प्रा० काल (सं० अकाल)पु०महँगी ।

प्रा० काल (सं० काल, काला) पु० सांप ।

प्रा० काल (सं० कल्य) पु०कल, कल का दिन (ब्रजभाषा में) ।

सं० कालकूट (काल=मौत,कूट=ढेर, कूट्=ढकना, अर्थात् मौतका ढेर वा काल=यमराज, कूट्=जलाना, जो यम को भी जलासके) पु० विष, ज़हर, हलाहल, २ सांप का विष ।

सं० कालक्षेप (काल=समय, क्षिप्=फेंकना) पु० समय बिताना, दिन काटना, वक़्त काटना ।

सं० कालनेमि (काल=मौत,नेमि=पहिये का घेरा) पु० एक राक्षस का नाम ।

सं० कालरात्रि (काल=मौत वा अंधेरी, रात्रि=रात) स्त्री० मौतकी रात, प्रलय की रात, कल्पान्तरात्रि, २ दुर्गा का एक नाम, ३ दिवाली, दीपमालिका की रात्रि ।

प्रा० काला (सं० काल) गु० काला रंग, कृष्णवर्ण, कलौटा, कलझौंहा, पु० सांप, २ समय, ३ श्रीकृष्ण का नाम ।

प्रा० कालाचोर बोल० नहीं जाना हुआ मनुष्य, बेजान पहँचान का आदमी, चाहे जैसा आदमी ।

प्रा० काला मुँह करना बोल० फिटकारना, निकाल देना, हांकना, खदेड़ना, २ बे इज़्ज़त करना ।

प्रा० कालेकोस बोल० बहुत दूर ।

सं० कालिका
काली } (काल=काला) स्त्री० काली देवी, काली माई, दुर्गा देवी, शक्ति ।

सं० कालिदास (काली=दुर्गा, दास=सेवक) पु० एक कवि का नाम जिसके रघुवंश, कुमारसंभव, नलोदय और शकुन्तलानाटक आदि बहुत से काव्य प्रसिद्ध हैं ।

सं० कालिन्दी (कलिन्द एक पहाड़ का नाम जहां से यमुना नदी निकली, अथवा कलिन्द सूर्य, अर्थात् सूर्य की बेटी) स्त्री० यमुना नदी, २ सूर्य की बेटी जो श्रीकृष्णको ब्याही थी ।

सं० कालिन्दीभेदन (कालिन्दी=

यमुना, भेदन=तोड़ना, मोड़ना) पु० श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलदेव जी जिन्होंने अपने हलसे यमुना को मोड़ली थी ।

प्रा० कालिमन, कालिमा गु० कारिख,स्याही, कालापन ।

प्रा० कालिया, काली (सं० कालिय, काल=काला) पु० एक सांप का नाम जिसके एक सौ दश फन थे जिसको श्री कृष्ण ने कालीदह से बाहर निकाला ।

प्रा० कालीदह (सं० कालियह्रद, कालिय=सांप, ह्रद=गहरापानी) पु० यमुना नदी में एक भँवर जिसमें काली सांप रहता था ।

प्रा०कावादेना बोल०घोड़ेको चक्कर देना, घोड़ेको गोलाकार घुमाना ।

सं० कावेरी (क=पानी, बेर=शरीर) स्त्री० एक नदी का नाम ।

सं० काव्य (कवि, अर्थात् कवि का) पु० कविता, रचना, छन्द, पद्य, कविका बनाया हुआ ग्रन्थ ।

सं० काश (काश=चमकना) पु० कांस, एक प्रकारकी घास, २ खांसी, खोखी ।

सं० काशि क० पु० सूर्य ।

सं० काशी (काश्=चमकना)स्त्री० बनारस, जो वरुणा और असी नदी के मध्य में बसी है ।

सं० काशीराज, काशीनाथ काशी=बनारस, राजा वा नाथ=स्वामी) पु० महादेव, शिव, २ काशी का राजा ।

सं० काश्मीर (काश्मीर अर्थात् जो काश्मीर में पैदा हो) पु० केशर ।

सं० काष्ठ (काश्=चमकना) पु० काठ, लकड़ी, ईंधन ।

प्रा० काहू गु० सर्वना० किसीको, कोई, कौन, कुछ ।

प्रा० काहे सर्वना०किसलिये,क्यों ।

प्रा० कि समुच्चयक अव्यय, पूर्वोक्त वर्णन, काफ़ बयानिया ।

सं० किंवदन्ती (किम्=कुछ, वद=कहना) स्त्री० लोगों का कहना, ग़प, अफ़वाहन् ।

सं० किंशुक (किम्=कुछ, शुक्=जाना)पु० पलाश, टेसू, छिउल ।

प्रा० किकियाना क्रि० अ० चिल्लाना, चिचियाना ।

सं० किङ्कर (किम्=कुछ, कर=करने वाला, कृ=करना) पु० दास, नौकर, चाकर, सेवक, ताबेदार ।

सं० किङ्किणी (किम्=कुछ, क्रिण=शब्द) स्त्री० कंदोरा, कंधनी, कटिबंधन, क्षुद्रघंटिका, कर्धनी ।

प्रा० किचकिचाना क्रि०अ० दांत पीसना ।

प्रा०किचपिच पु०कांदा,कीचड़,पङ्क।

सं० किञ्चित् (किम्=क्या, कुछ)

गु० थोड़ा,कुछ,कुछेक,अल्प, कम।

प्रा० **किड़किड़ाना** क्रि० अ० क्रोध से दांत पीसना ।

प्रा० **कित** (सं० कुत्र, कहां) क्रि० वि० कहां, किधर, २ कितना ।

प्रा० **कितना** गु० किस अंदाज़का, प्रमाणवाचक ।

प्रा०**कितनाही** बोल० चाहे जितना।

प्रा० **किदारा** (सं० केदार) पु० एक रागिणी का नाम जो गर्मी में आधीरातके समय गाई जाती है ।

प्रा०**किधर** क्रि०वि०किसतरफ़,कहां।

प्रा० **किनारी** स्त्री० गोटा, कोर ।

सं० **किन्तु** (किम्=क्या, तु=फिर) समुच्च० पर, परन्तु, लेकिन ।

सं० **किन्नर** (किम्=कुछ, अथवा बुरा, नर=मनुष्य) पु० गन्धर्व, देवताओं का गवैया, कुबेर के सेवक जिनके घोड़े का मुँह और आदमी की धड़ है ।

सं० **किम्** सर्वना०क्या,कौन,कैसा।

सं० **किम्पुरुष** (किम्=कुछ, पुरुष= मनुष्य) पु० किन्नर, गन्धर्व, देवताओं का गवैया ।

सं० **किंवा** (किम्=क्या वा अथवा) समुच० अथवा ।

प्रा० **कियारी** } (सं० केदार, क=
क्यारी } पानी, दॄ=फटना)
स्त्री० फूलों का तख़ता, मेंड़ ।

सं० **किरण** (कॄ=फैलना प्रकाशका) स्त्री०सूर्य का तेज, चांदका प्रकाश, रश्मि, शुआ ।

सं० **किरात** (कॄ=मारना, हिंसा करना)पु० भील, निषाद, जंगली मनुष्यों की एक जाति ।

प्रा० **किराना** (सं० क्रयण,क्री=लेन देन करना) पु० चीज़ जो पंसारि बेचते हैं, मसाला ।

प्रा० **किरिया** (सं० क्रिया, कृ= करना) स्त्री० सोंह, सौगंद, शपथ, क़सम ।

सं० **किरीट** (कॄ=बिखेरना प्रकाश का) पु० मुकुट, शिरका गहना, ताज ।

प्रा० **किर्च** स्त्री० फ़ांस, खपाच, तलवार ।

सं० **किल** क्रि० वि० निश्चयही, सुनते हैं ।

प्रा० **किलकिलाना** (सं० किलकिला, किल्=खेलना) क्रि०अ० चिड़चिड़ाना, चिड़चिड़ा होना, गर्जना, गुर्राना ।

प्रा० **किलकारी** (सं० किलकिला) स्त्री० चिल्ली मारना, बहुत ज़ोर से पुकारना, वानर का शब्द ।

सं० **किसलय** (किम्=कुछ, षल्= जाना) पु० नये पत्ते, नई डाली, नवपल्लव ।

सं० **किल्बिष** पु० अपराध, पाप, रोग, अनिष्ट ।

सं० किशोर (किम्=कुछ, शूरवीर, अर्थात् इस अवस्था में कुछ कुछ वीरता देखी जाती है) पु० दश बरस से पंद्रह बरस तक की उमर का लड़का, २ जवानी की शुरूअ अवस्था, तरुणावस्था ।

सं० किष्किन्धा (किष्क्=मारना) स्त्री० एक पुरी का नाम जिसका राजा बालि वानर था फिर उस को मारके श्रीरामचन्द्र ने उस पुरी का राज्य सुग्रीव को दिया ।

प्रा० किसनई (सं० कृषि=खेती) स्त्री० किसान का काम, खेती ।

प्रा० किसान (सं० कृषाण वा कृषिमान्) पु० खेती करनेवाला, जोतहार ।

प्रा०किसानमात्र महज़ काश्तकार ।

प्रा० किसारी स्त्री० एक प्रकार का नाज जिसकी दाल बनती है, चटरी ।

प्रा० कीकड़ पु० बबूल, कटीला पेड़ ।

सं० कीचक पु० नाम दैत्य का, २ वेणुरन्ध्र, अंकुररहित बांस जो वायु लगने से बोलते हैं, बांस छिद्र ।

प्रा० कीच } (सं०कच्चर) पु०कांदो,
कीचड़ } पांका, मैला ।

सं० कीट (कीट्=रंग रंग का होना) पु० कीड़ा, पतंग, लखेरी ।

प्रा० कीड़ा (सं० कीट) पु० कीट, पिलुआ ।

सं० कीदृक् } गु० कैसा, किस
कीदृक्ष } प्रकार ।

प्रा०कीना } (करना) क्रि० स०
कीन्हा } किया ।

सं० कीर (की=ऐसा शब्द, ईर्=भेजना) पु० तोता, सूगा, सूआ ।

प्रा० कीरति } (कृत्=सराहना)
सं० कीर्त्ति } स्त्री० यश, नामवरी, सराह, सुयश ।

सं० कीर्त्तन (कृत्=सराहना) भा० पु० गुणवर्णन, यश बखानना, सराह, २ गाना, ३ कहना ।

सं० कील (कील्=बांधना) स्त्री० कीला, खूँटी, कांटा, मेख, खूंटा ।

सं० कीलक (कील्+अक) क० पु० खूंटा, बन्धक, गौओं के बांधने का खंभा ।

सं० कीलकाँटा बोल० औज़ार, साज़ सामान, कल कांटा ।

प्रा० कीलना (सं० कीलन, कील्=बांधना) क्रि० स० मंत्र फूंकना, बंध करना, सांपको मंत्र से वश करलेना ।

सं० कीश (कि=हनुमान्, क=हवा अर्थात् हवा का बेटा, और ईश=मालिक अर्थात् जिनका मालिक हनुमान् है) पु० बन्दर, वानर ।

सं० कु उपस० बुरा, अधम, नीच, निंदित, २ कम, थोड़ा, ३ झूठा, (जैसे कुतर्क, झूठी तर्क) ।

सं० कु स्त्री० धरती, पृथ्वी, ज़मीन।

प्रा० कुंगड़ा गु० बलवान्, संड मुसंड, पहलवान।

प्रा० कुंचकी (सं० कंचुक, कचि=बांधना) स्त्री० चोली, अँगिया, कांचुली।

प्रा० कुंजड़ा पु० एक जाति, जिसका काम तरकारी और फलफलारी बेचने का है।

प्रा० कुंजी (सं० कुंचिका, कुञ्च=टेढ़ा होना वा खींचना, कसना) स्त्री० चाबी, ताली।

प्रा० कुंदी स्त्री० कपड़ों का घोटना।

प्रा० कुंदीकरना बोल० कपड़ों का घोटना, पीटना।

प्रा० कुंवर (सं० कुमार)पु० बेटा, लड़का, २ राजा का बेटा, राजकुमार, राजपुत्र।

प्रा० कुंवरी (सं० कुमारी) स्त्री० बेटी, लड़की, २ राजा की बेटी, राजकन्या, राजपुत्री।

प्रा० कुंवारा (सं० कुमार) पु० अनब्याहा लड़का, गु० अनब्याहा।

प्रा० कुंवारी (सं० कुमारी) स्त्री० अनब्याही लड़की, गु० अनब्याही।

सं० कुकर्म (कु=बुरा, कर्म=काम) पु० बुरा काम, अन्याय, पाप, दुष्कर्म।

सं० कुक्कुट (कु=शब्द करना, वा कुक=लेना) पु० मुर्ग़ा, कुकड़ा।

सं० कुक्कुर (कुक्=लेना वा कुर्=शब्द करना) पु० कुत्ता, श्वान।

सं० कुक्षि (कुष्=निकालना) स्त्री० पेट, कोख।

सं०कुंकुम (कुक्=लेना अथवा लिया जाना) पु० केशर, सुगन्धितद्रव्यविशेष, २ रोरी।

प्रा० कुंकुमा (सं० कुंकुम) पु० गुलाल रखने का बरतन।

सं० कुच (कुच्=बांधना, वा मिलाना) पु० छाती, चूंची, थन, स्तन, पिस्तां।

सं० कुचन्दन (कु=कम अर्थात् बिन सुगन्ध, चन्दन) पु०लालचन्दन, रक्तचन्दन।

सं० कुचकुड्मल पु० कुचकली, चूंची की घुंडी।

प्रा० कुचर गु० निंदक, दोष ढूँढनेवाला।

प्रा०कुचलना क्रि० स० चूर करना, मसलाना।

प्रा० कुचला पु० एक ज़हरीली औषध का नाम।

प्रा० कुचाल (कु=बुरी, चाल=रीति) स्त्री० कुरीति, बुरा चलन, कुटेव, बुरा चालचलन।

प्रा० कुचाह स्त्री० बुरी ख़बर, बद ख़बर, २ न चहना, स्नेह।

प्रा० कुचेला गु० मैला, मैले कपड़े पहने हुए।

प्रा० कुछ (सं० किञ्चित्=थोड़ा) गु० थोड़ा, कम, कुछ, एक आध, जो कुछ, थोड़ा बहुत ।

प्रा० कुछ और गाना बोल० झूठी बात बनाना, २ औरही बात कहना ।

प्रा० कुछेक बोल० थोड़ा बहुत, कुछ कुछ, कुछ ।

**प्रा०कुछसे कुछ होना
कुछका कुछ होना** } बोल० बिलकुल बदल जाना, सबका सब बदल जाना ।

प्रा० कुछकुछ बोल० थोड़ासा, कुछेक, थोड़ाएक, थोड़ा बहुत, कुछ ।

प्रा० कुछ न कुछ बोल० थोड़ा बहुत, थोड़ासा ।

प्रा० कुछ नहीं बोल० कोई और चीज़ नहीं, कुछ और नहीं, २ निकम्मा, काम का नहीं ।

प्रा० कुछहो बोल० चाहे सो हो, जो कुछ हो ।

सं० कुज (कु=पृथ्वी, जन्=पैदा होना) क० पु० पृथ्वीपुत्र, मंगल, भौम, सेशम्बा ।

**प्रा० कुजलीबन
कजलीबन** } (सं० कुञ्जरवन, कुञ्जर=हाथी, वन=जंगल) पु० हाथियों का वन, जिस जंगल में हाथी बहुत हों ।

सं० कुजाति (कु=बुरी, जाति=ज़ात) गु० नीचजातिका, कमीना, नीच, अधम ।

सं० कुञ्चित (कुञ्च्=टेढ़ा होना) कर्म० टेढ़ा, सिमटा हुआ, घुँघराला ।

सं० कुञ्ज (कु=धरती, जन्=पैदा होना) पु० वह जगह जहां सघन पेड़ और बेली आदि हों, गुंजान, २ हाथी की ठुड्डी ।

सं० कुञ्जर (कुञ्ज=हाथी की ठुड्डी वा कुञ्ज=सघन वृक्षों की जगह, रा=लेना, अर्थात् जो कुञ्जमें रहता है) पु० हाथी, हस्ती, मतंग ।

प्रा० कुटकी (सं० कटुका, कटु=कड़ुआ) स्त्री० एक दवाई का नाम ।

प्रा० कुटकी स्त्री० एक प्रकार का मच्छर, एक जानवर का नाम ।

सं० कुटज (कुट=पहाड़, जन्=पैदा होना) पु० एक दवाई व कुरैया का नाम ।

प्रा० कुटनी (सं० कुट्टनी, कुट्ट=काटना, निंदा करना) स्त्री० दूती, पराई स्त्री को पराये पुरुष से मिलानेवाली, दल्लाला ।

सं० कुटिल (कुट्=टेढ़ा होना) क० पु० टेढ़ा, कपटी, खोटा, कड़ा, क्रूर, मगरा ।

**सं० कुटी
कुटीर** } (कुट्=टेढ़ा होना) स्त्री० झोपड़ी, मढ़ी ।

प्रा० कुटुम (सं० कुटुम्ब, कुटुम्ब=कुल का पालन करना) पु० कुनबा, परिवार, घराना, कुल, ख़ानदान ।

सं० कुटुम्बी (कुटुम्ब) पु० घरवाला,

घरबारी, गृहस्थ, ख़ानदानी ।

प्रा० कुटेव (सं० कु=बुरी,हिं०टेव=स्वभाव) स्त्री० कुचाल, बुराचलन ।

सं० कुठार (कुठ=वृक्ष,कुट्=काटना और ऋ=जाना, अर्थात् जो वृक्षों पर काटने के लिये चलाया जाता है) पु० कुल्हाड़ी, बसूला, टांगी ।

प्रा० कुठाहर (सं०कुस्थान,कु=बुरी, स्थान=जगह) स्त्री० बुरी जगह ।

प्रा०कुड़कना क्रि०अ० कुड़कुड़ाना, कुटकुटाना, कड़कड़ाना, २ क्रोधसे बोलना ।

सं० कुड़व पु० प्रस्थ का चौथाभाग, चारपल, आधपाव ।

प्रा० कुढ़ना (सं०क्रुध्=क्रोध करना) क्रि० अ० कलपना, दुख करना, शोच करना, २ ग़ुस्सा करना, क्रोध करना, ३ जलना, दूसरे की बढ़ती देखकर मनमें दुख करना ।

सं० कुण्ठक (कुण्ठ्+अक) क०पु० मूर्ख, मन्द, जाहिल, रूठनेवाला।

सं० कुण्ठित (कुण्ठ्=भोथा होना, वा सुस्त होना) क० पु० भोथा, २ आलसी, ३ लज्जित,ख़फ़ाहुआ।

सं० कुण्ड (कुडि=जलाना, वा बचाना) पु० जल के रहनेकी जगह, हौज़, चश्मा, २होम की आग रखने का गढ़हा, होम का कुण्ड ।

सं० कुण्डल (कुडि=बचाना, वा जलाना) पु० कानमें पहननेका गहना, कर्णभूषण, २ घेरा, मंडल।

प्रा० कुंडलिया (सं० कुण्डलिका) पु० एक छंद का नाम १४४ मात्रा का छन्द ।

सं० कुण्डली (कुण्डल घेरा) स्त्री० घेरा,२सांप, ३ जन्मपत्री,ज़ायचह।

प्रा० कुण्डी (सं०कुण्ड्=बचाना)स्त्री० दरवाज़े की सिंकली या ज़ंजीर।

प्रा० कुतरना (सं० कर्त्तन, कृत्=काटना) क्रि०स०दाँतोंसे काटना।

सं० कुतर्क (कु=बुरी, वा झूठी,तर्क=दलील) स्त्री० बुरी तर्क, झूठी तर्क, हुज्जत ।

सं० कुतूहल (कुतू=कुप्पा, हल्=लिखना, अर्थात् कुछ खेल करना) पु० खेल, कौतुक ।

प्रा० कुत्ता (सं० कुक्कुर) पु० एक जानवर का नाम, श्वान ।

सं० कुत्सा (कुत्स=निंदा करना) भा० स्त्री० निंदा, बुराई, अवज्ञा, अपमान।

सं० कुत्सित (कुत्स=निंदा करना) कर्म० निंदित, नीच, बुराई करने योग्य, नीचा, कमीना ।

प्रा० कुदार
कुदाल } (सं० कुद्दाल, कु=धरती, उद्=दल, टुकड़ा करना) स्त्री० मिट्टी खोदने का औज़ार, कुदाली, बेल, बेलचा।

सं० कुदृष्टि (कु=बुरी, पापकी, दृष्टि=दीठ) स्त्री० बुरी दीठ, पापदृष्टि,

पाप से देखना, बदनज़र, बुरी निगाह ।

सं० कुधर } (कु=धरती, धृ=रखना)
कुध्र } पु०पहाड़, पर्वत, शैल।

सं० कुधातु (कु=बुरी, अथवा सब से नीच, धातु=धात) स्त्री० लोहा, लोह ।

प्रा० कुनबा (सं० कुटुम्ब) पु० घराना, कुटुम्ब, कुल, ख़ानदान।

सं० कुनारी (कु=बुरी, नारी=स्त्री) स्त्री० दुष्टनारी, ख़राब औरत ।

सं० कुनीति (कु=बुरी, नीति=चाल़) स्त्री० कुचाल़, बुरी चाल, कुरीति।

सं० कुन्त (कु-बुरा, अन्त=आख़िर) पु० बरछी, भाला ।

सं० कुन्ती (कम्=चाहना) स्त्री० शूरसेन की वड़ी बेटी, श्रीकृष्ण की फूफी, पांडु की स्त्री और युधिष्ठिर अर्जुन और भीमसेन की मां ।

सं० कुन्द (कु=धरती, दो=काटना, वा दै=शुद्ध करना, वा क=पानी, उन्द्=भिगोना अर्थात् जो पानी से सींचाजाता है) पु० मोगरा, एक तरह का सफ़ेद फूल ।

प्रा० कुन्दन पु० अच्छा सोना, साफ़ सोना, उत्तम सोना ।

सं० कुपथ (कु=बुरा, पथ=रास्ता) पु० कुमार्ग, बुरी राह, बुरारास्ता, कुपंथ, २ बुराई, बुरा चलन ।

सं० कुपात्र (कु=बुरा, पात्र=दान देने योग्य ब्राह्मण, वा बरतन) गु० अयोग्य, नालायक़ ।

सं० कुपित (कुप्=कोपना) गु० क्रोधित, कोपित ।

सं० कुपुरुष (कु=बुरा, पुरुष=मनुष्य) गु० बद आदमी, निषिद्ध मनुष्य।

प्रा० कुप्पा (सं०कुतु, कु=बुरी तरह से, तनु=फैलाना) पु० घी अथवा तेल रखने का चमड़े का बरतन ।

प्रा० कुप्पा होना बोल० बहुत मोटा होना ।

सं० कुफल (कु=ख़राब, फल=नतीजा) गु० ख़राब नतीजा, बुरा फल ।

प्रा० कुब } (सं०कौब्ज्य, कुब्ज)
कूब } पु० कूबड़, पीठ का झुकाव ।

प्रा० कुब्जा (सं० कुब्ज, कु=बुरी तरह से अथवा थोड़ा, उब्ज्=सीधा होना) स्त्री० कुबड़ी कुबड़ा, टेढ़ी पीठका, जिसकी पीठ झुकी हुई हो, २ स्त्री० कंस की एक दासी का नाम जिसको श्रीकृष्ण ने सीधी की थी ।

सं० कुभार्य्या (कु=बुरी, भार्य्या =पत्नी) स्त्री० बुरी लुगाई, कलहिनी, लड़ाका स्त्री, कुलटा ।

सं० कुमति (कु=बुरी, मति=बुद्धि) स्त्री० बुरी समझ, कुमत, २ गु०

मूर्ख, दुर्बुद्धि, कुबुद्धि ।

सं० **कुमार** (कुमार=खेलना, वा कु=बुरा अथवा थोड़ा, मार=कामदेव) पु० कुंवर, कुमार, बालक, बिनब्याहा, कुंवारा ।

सं० **कुमार्ग** (कु=बुरा, मार्ग=रास्ता) पु० कुपथ, बुरी राह, कुचाल ।

सं० **कुमार्गगामी** (कुमार्ग=बुरी मार्ग, गम् + ई, गम्=जाना) क० पु० बुरीराह चलनेवाला, बदराह चलनेवाला ।

सं० **कुमुद** (कु=धरती, मुद्=प्रसन्न होना या करना) पु० कुमोदनी, कोई, धौला कमल जो रात को खिलता है और दिन को मुंद जाता है, २ एक वानर का नाम ।

सं० **कुमुदबन्धु** पु० चन्द्र, चांद ।

सं० **कुमुदिनी** (कुमुद) स्त्री० कमलिनी, २ कमलों का समूह, ३ वह जगह जहाँ कमल पैदा हो ।

सं० **कुम्भ** (कु=पृथ्वी, उम्भ्=भरना, वा क=पानी, उम्भ्=भरना, वा कुंभ्=ढकना) पु० घड़ा, कलश, कलसा, २ हाथी का शिर, ३ ज्योतिष में ग्यारहवीं राशि—कुम्भ का मेला=मेला जो हरिद्वार में बारहवें बरस होता है, कुम्भी=मेला जो छठे बरस होता है ।

सं० **कुम्भकर्ण** (कुम्भ=हाथी का शिर वा घड़ा, कर्ण=कान, जिसके कान हाथी के शिर के बराबर हों) पु० रावण का भाई ।

सं० **कुम्भकार** (कुम्भ=घड़ा, कार=करनेवाला) पु० कुम्हार, कुलाल ।

सं० **कुम्भज** (कुंभ=घड़ा, जन्=पैदा होना) पु० अगस्ति ऋषि का नाम ।

सं० **कुम्भशाला** स्त्री० घड़ा रखने की जगह, घनौची ।

सं० **कुम्भसंभव** (भू=होना) पु० अगस्ति ऋषि, वशिष्ठऋषि, द्रोणाचार्य्य, ये मित्रावरुण के पुत्र हैं ।

सं० **कुम्भिका** } (कुम्भ्=ढकना)
कुम्भी } स्त्री० एक वृक्ष का नाम ।

सं० **कुम्भीपाक** (कुम्भी=तेल का कड़ाह, पाक=पचाना) पु० एक नरक का नाम, जहां पापी गर्म तेल के कड़ाहों में डाले जाते हैं ।

सं० **कुम्भीर** (कुम्भिन्=हाथी, ईर=पीड़ा देना) पु० मगरमच्छ, घड़ियाल, ग्राह ।

प्रा० **कुम्हार** (सं० कुम्भकार) पु० मिट्टी के बरतन बनानेवाला, कुलाल

सं० **कुयोग** (कु=बुरा, योग=मेल) पु० कुसंगत, बुरी संगत, बुरा संयोग ।

सं० **कुर्** पु० शब्द, आवाज़, शब्दकर्त्ता, राजा, ज़मींदार, किसान ।

सं० **कुररी** स्त्री० चीलह, भेड़ी ।

सं० **कुरंग** (कु० पृथ्वी, रङ्ग्=खुशी

करना) पु० हिरन, मृग ।

प्रा० **कुरी** पु० सबलोग, सबजाति, जाति, कुल ।

सं० **कुरीर** (कुर् + ईर,कुर्=बोलना) ज़िम्मा, मारफ़त ।

सं० **कुरीति** (कु=बुरी,रीति=चाल) पु० कुचाल, कुटेव, बुरीचाल ।

सं० **कुरु** (कृ=करना) पु० दिल्ली के एक पुराने राजा का नाम ।

सं० **कुरुक्षेत्र** (कुरु=एक राजा का नाम, क्षेत्र=जगह, वा कुरु=पाप, कु=बुरी तरह से, रु=रोना, क्षेत्र= जगह, अर्थात् पाप को दूर करने वाली जगह) पु० दिल्ली के पास एक जगह है जहां कौरवों और पाण्डवों में लड़ाई हुई थी ।

सं० **कुरूप** (कु=बुरा, रूप=स्वरूप) गु० भोंड़ा, कुडौल, भदेसा, बुरी सूरत का ।

प्रा० **कुर्मी** पु० एक जाति का नाम जो खेती का धन्धा करते हैं ।

प्रा० **कुर्याल** स्त्री० पखेरूके चैन और बचाव से बैठने की दशा, कि जब वह चोंचसे अपने पंखोंको सँवारता है, (इसीसे) २ चैन, सुख, आराम, बचाव ।

प्रा० **कुर्याल में गुलेला लगना** बोल० निराश होना, अथवा चैन के समय दुख में गिरना ।

प्रा० **कुर्री** स्त्री० चबनी, नरमहड्डी ।

सं० **कुल** (कुल्=इकट्ठा होना, वा बांधना) पु० वंश, घराना,कुनबा, जाति, वर्ण ।

सं० **कुलघाती** (कुल=वंश, हन्= नाश करना, ह का घ होजाता है) कृ० पु० कुलनाशक ।

सं० **कुलतारण** (कुल=वंश, तारण= पार करनेवाला) पु० कुल को बचानेवाला लड़का, सपूत लड़का, गुणवान् लड़का जिससे कुल शोभता है ।

सं० **कुलद्रोही** (कुल=वंश, द्रोही= विरोधी) गु० कुलका नाश करने वाला, बुरे काम करने से अपने कुलकी निन्दा करानेवाला ।

सं० **कुलधर्म्म** (कुल=वंश, धर्म= मत) पु० अपने वंशका धर्म, कुल-व्यवहार, कुलकी चाल ।

सं० **कुलपालक** (कुल=वंश,पाल्= पालना) कृ० पु० कुटुम्बपोषक, खानदानपरवर ।

सं० **कुलपूज्य** (कुल=वंश, पूज्य= पूजने योग्य) गु० सब घराने का पूजनीय, २ कुलदेवता, ३ अपने घराने का पुरोहित ।

प्रा० **कुलबुलाना** क्रि० अ० खुजलाना, २ कलमलाना ।

सं० **कुलवन्ती** (कुल=घराना,वन्ती =वाली) स्त्री० अच्छे घराने की स्त्री, पतिव्रता, सती, सुशीला ।

सं॰ कुलवान् (कुल=घराना, वान् =वाला) गु॰ अच्छे घराने का, कुलीन, श्रेष्ठ ।

सं॰ कुलक्षण (कु=बुरा, लक्षण= चिह्न) पु॰ बुरा चलन, कुस्वभाव, कुचाल ।

प्रा॰ कुलांच स्त्री॰ कूद, फांद, उछाल, लपक, छलांग ।

प्रा॰ कुलांचमारना बोल॰ छलांग मारना, फांदना।

प्रा॰ कुम्हलाना क्रि॰ अ॰ मुरझाना, सूखना ।

फ़ा॰ कुलह
कुलाह } टोपी, ऊंचीटोपी ।

सं॰ कुलाचार (कुल=घराना, आचार=चलन, वा धर्म) पु॰ कुलधर्म्म, कुलव्यवहार, खानदानी रस्म ।

सं॰ कुलाल (कुल्=इकट्ठा करना) पु॰ कुम्हार, मिट्टी के बरतन बनानेवाला, कुम्भकार ।

प्रा॰ कुल्हिया स्त्री॰ कुलहड़ी, मिट्टी का एक छोटा गोल बरतन ।

प्रा॰ कुल्हिया में गुड़ फोड़ना बोल॰ किसी काम को छुपे २ करना, जो काम बहुतों से होता है उसको थोड़े आदमियों के साथ करने के लिये परिश्रम करना ।

प्रा॰ कुल्हाड़ी (सं॰ कुठारी) स्त्री॰ बसूला, कुल्हाड़ी ।

सं॰ कुलिश (कु=बुरी तरह से, लिश =थोड़ा करना, वा कुलित्=पहाड़, शी=नाश करना, वा कुलि=हाथ, शी=सोना) पु॰ वज्र, इन्द्रका शस्त्र।

सं॰ कुलीन (कुल) गु॰ कुलवान्, अच्छे घराने का, श्रेष्ठ, शरीफ़ ।

सं॰ कुवलय (कु=धरती, वलय= कंकण) पु॰ कमल, कोई, सफ़ेद या नीला कमल, नील़ोफर ।

सं॰ कुवलयापीड (कुवलय=कोकाबेली, आपीड=मर्दनेवाला) पु॰ कंस के हाथी का नाम जिसमें १००००हाथियों का बल था जिसको श्रीकृष्णने मारा।

सं॰ कुविहङ्ग (कु=बुरा, विहस्= आकाश, गम्=जाना) पु॰ बाज़, जुर्रा, शाहीन ।

सं॰ कुबेर (कुब्=फैलाना अपने धन को, वा कु=पृथ्वी, वृ=ढकना, अपने धन से, वा कु=बुरा, बेर=शरीर) पु॰ धन का देवता, यक्षोंका राजा, उत्तर दिशाका दिक्पाल ।

सं॰ कुश (कु=पृथ्वी, शी=सोना, वा कु=पाप, शो=नाश करना, वा कुश्=मिलना) पु॰ एक प्रकारकी घास, दर्भ, डाभ, कुशा, २ रामचन्द्र का बेटा ।

सं॰ कुशल (कुश्=मिलना, वा कु =पृथ्वी, शल्=जाना) पु॰ कल्याण, मंगल, चैन चान, गु॰ चतुर ।

सं॰ कुशलक्षेम (कुशल+क्षेम)

पु० कुशल मंगल, चैनचान।

प्रा० कुशलात
कुसरात (सं०कुशल) स्त्री० कुशल क्षेम, चैन चान, अमन अमान।

सं० कुशाग्रबुद्धि (कुश + अग्र + बुद्धि) स्त्री० तेज़अक्ल, पैनीबुद्धि, तीव्रबुद्धि।

सं० कुशूला पु० डहरी, कुठिली।

सं० कुष्ठ (कुष्=निकालना) पु० कोढ़, एक प्रकार का रोग जो अठारह प्रकार का है, उनमें से सात तरह का तो बड़ा कठोर और दुःखदायी होताहै, और ११ तरह का हलका और थोड़ा दुःख देता है।

सं०कुष्ठनाशिनी (कुष्ठ=कोढ़, नाशिनी=नाश करनेवाली) स्त्री० एक बेली का नाम, सोमराज बेली।

सं० कुष्ठी (कुष्ठ) गु० कोढ़ी।

सं० कुष्माण्ड
कूष्माण्ड (कु=थोड़ी, उष्मा=गरमी, अण्ड=बीज, अर्थात् जिसके बीच में थोड़ी गरमी है) पु० कोहड़े का फल।

सं० कुसंग (कु=बुरा, सङ्ग=साथ) पु० बुरी संगति, बुरों का साथ, बद सोहबत।

सं० कुसुम (कुस्=मिलना, वा कु=पृथ्वी, स्मि=खिलना) पु० फूल, २ लाल फूल जिससे कपड़े लाल रँगे जाते हैं।

सं० कुसुमशर (कुसुम=फूल, शर=बाण) पु० कामदेव।

सं० कुसुमित (कुसुम) गु० खिला हुआ, फूलाहुआ, प्रफुल्लित।

सं० कुसुम्भ (कुस्=मिलना, वा कु=पृथ्वी, शुम्भ्=चमकता) पु० कुसुम, लाल फूल जिससे कपड़े लाल रँगे जाते हैं, स्वर्ण, सोना।

प्रा० कुसुम्भा (सं० कुसुम्भ) पु० कुसुमका रंग, २ छानी हुई भंग।

सं० कुस्वप्न (कु=बुरा, स्वप्न=सपना) पु० बुरा सपना।

सं० कुहक (कुह् + अक, कुह्=आश्चर्य्य) क० पु० कुटिल, फ़रेबी, छली, मायावी, इन्द्रजाली, बाज़ीगर।

प्रा० कुहड़
कुम्हड़ (सं० कूष्मांड) पु० कोहड़े का फल।

प्रा० कुहराम पु० विलाप, रोना, कलपना।

प्रा० कुहाव भा० स्त्री० रूठना, रूठ जाना।

प्रा० कुहासा (सं० कुहेलिका, कु=धरती, हेड्=घेरना) पु० कुहर, कोहर, धूंध।

प्रा० कुहुक
सं० कुहू (कुह्=अचंभा करना) स्त्री० कोयलकी बोली।

प्रा० कुआं
कुआ (सं० कूप) पु० कुवा, इन्दारा।

प्रा० कूंची (सं० कूची, कू=शब्द

करना) स्त्री० झाड़ने की चीज़, पोचारा देनेकी बढ़नी ।

प्रा० कूंडी स्त्री० भांग आदि पीसने का बरतन, लोहे की टोपी ।

प्रा० कूंतना **कूतना** क्रि० स० मोल ठहरना, मोल जांचना, मोल अटकलना ।

प्रा० कूकना (सं०कू=शब्द करना) क्रि० अ० चिल्लाना, बोलना, कुहूकुहू करना ।

प्रा० कूकर (सं०कुक्कुर)पु० कुत्ता ।

प्रा० कूजना (सं०कूजन, कूज्=शब्द करना) क्रि० अ० शब्द करना, बोलना ।

सं० कूट (कूट्=जलना, वा ढकना) पु० पहाड़ की चोटी, २ ढेर, ३ छल, कपट, झूठ ।

प्रा० कूट पु० गला हुआ कागज़ जो दफ़्ती बनाने के काम में आता है, २ स्त्री० नक़ल, भड़ैती, बंदरबाज़ी ।

प्रा० कूटना (सं० कुट्टन, कुट्ट=काटना) क्रि० स० टुकड़े २ करना, चूरना, कुचलना, तोड़ना, २ पीटना, मारना, लठियाना ।

प्रा० कूड़ा पु० झाड़न, बुहारन, कर्कट, घास पात, अगड़ बगड़, घास फूस, कचरा ।

प्रा० कूडि स्त्री० लोहे की टोपी ।

प्रा० कूढ़ गु० मूर्ख, मूढ़, भोंदू, गँवार ।

प्रा० कूदना **कुदकना** (सं० कूर्दन, कूर्द्=खेलना) क्रि० अ० उछलना, फांदना, २ प्रसन्न होना, खुश होना ।

सं० कूप कू=शब्द करना, जिसमें मेंढक शब्द करते हैं, वा कु=थोड़ा, आप=पानी (जिसमें) पु० कूवा, कूआं, इंदारा ।

प्रा० क्रूर (सं० क्रूर) गु० निठुर, निर्दयी, कठोर, २मूर्ख, भोंदू, गँवार, कूढ़ ।

सं० कूर्म्म (कु=बुरा वा थोड़ा, ऊर्मि=वेग जिसका) पु० कछुवा, कच्छप, कमठ ।

सं० कूल (कूल्=घेरना, ढकना, वा रोकना) पु० तीर, तट, किनारा ।

सं० कूलद्रुम, पु० तटस्थवृक्ष, नदीके किनारे के वृक्ष ।

प्रा० कूला पु० पूठ, चूतड़, नितम्ब ।

प्रा० कूली **कुली** पु० मज़दूर, बोझा ढोने वाला, पोटिया, मोटिया ।

सं० कृच्छ्र भा०पु० कठिनता, सख़्ती ।

सं० कृत (कृ=करना) कर्म० क्रिया हुआ, बनाया हुआ, रचित, पु० सतयुग, २ फल ।

सं० कृतकार्य्य (कृत=क्रिया, कार्य्य=काम) कर्म० पु० फलीभूत, कामयाब, काम पूरा हुआ ।

सं० कृतकार्य्यता भा० स्त्री० कामयाबी, काम की पूर्णता ।

सं० कृतकृत्य (कृत=क्रिया, कृत्य=करने योग्य, कृ=करना) र्म० पु० योग्य काम को जिसने क्रिया हो, कृतार्थ, कृतकार्य्य, धन्य ।

सं० कृतघ्न } (कृत=किया हुआ, हन्=मारना) क०
प्रा० कृतघ्नी } पु० जो उपकार को नहीं माने, गुण नहीं माननेवाला, नमकहराम, नाशुकरा, इहसानफ़रामोश ।

सं० कृतघ्नता भा० स्त्री० इहसानफ़रामोशी, उपकारहन ।

सं० कृतज्ञ (कृत=कियाहुआ, ज्ञा=जानना) क० पु० जो उपकार को माने, गुण माननेवाला, उपकार माननेवाला, नमकहलाल ।

सं० कृतविद्य (कृत=किया हुआ, विद्=जानना) र्म० पु० मशकूर, धन्यवादित, शास्त्रज्ञ, अधीतविद्या ।

सं० कृतवीर्य्य पु० पिता, नृपविशेष ।

सं० कृतान्त (कृत=किया, अन्त अर्थात् नाश करनेवाला) पु० यम, काल, मौत ।

सं० कृतार्थ (कृत=किया, अर्थ=प्रयोजन) र्म० पु० जिसने अपना प्रयोजन पूरा किया हो, जिसकी इच्छा पूरी होगई हो, कामयाब, संतुष्ट ।

सं० कृति (कृ=करना) स्त्री० कार्य्य, काम, हिंसा, आचरण, उपकार, कारण ।

सं० कृत्ति स्त्री० चर्म्म, चमड़ा, भोजपत्र, कृत्तिका नक्षत्र, चमड़े की रस्सी ।

सं० कृत्तिकर (कृत्ति=काम, कृ=करना) क० पु० सेवक, किंकर, उपकारी ।

सं० कृत्तिका (कृत्=काटना) स्त्री० तीसरे नक्षत्र का नाम ।

सं० कृतिन } क० स्त्री० पण्डित,
कृती } योग्य, लायक़, पुण्यवान्, निपुण, साधु, कृतार्थ ।

सं० कृत्य (कृ=करना) पु० काम करने योग्य काम, कर्त्तव्य कर्म, र्म० करने योग्य, कर्त्तव्य ।

सं० कृत्रिम (कृ=करना) र्म० पु० किया हुआ, बनाया हुआ, बनावट का, कल्पित, जो असली न हो, मसनुई ।

सं० कृत्रिमपुत्र (कृत्रिम=कियाहुआ, पुत्र=बेटा) पु० गोद लिया हुआ लड़का, धर्मशास्त्र में बारह प्रकार के पुत्र गिनाये हैं उनमें से एक प्रकार का बेटा ।

सं० कृत्स गु० मध्यगत, आवृत, ढकाहुआ, जलान्तर्गत, डूबाहुआ, पु० संपूर्ण, जल, गंडूष अर्थात् कुल्ला ।

सं० कृत्स्न पु० सम्पूर्ण, सब, जल, कुक्षि, पुट्ठा, कूला, समग्र ।

सं० कृपण (कृप्=दुबला होना) पु० कंजूस, सूम, चुष्ट, बख़ील ।

सं० कृपणता भा० स्त्री० चुष्टता, कंजूसी, बख़ीली ।

सं० कृपा (कृप्=कृपा करना) स्त्री० दया, अनुग्रह, मिहरबानी ।

सं० कृपाण (कृप्=समर्थ होना, वा कृपा=दया, नुद्=जाना) स्त्री० तलवार, खड्ग, खांड़ा, शमशेर ।

सं० कृपानिधान (कृपा=दया, निधान=जगह) धि० पु० कृपा के घर, दयालु, कृपालु, कृपा करने वाला, जायमिहरबानी ।

सं० कृमि } (क्रम्=जाना) पु०
क्रिमि } कीड़ा, पतंगा, मकोड़ा, परवाना ।

अं० कृमिनल फ़ौजदारी ।

सं० कृश (कृश्=पतला होना) गु० दुबला, पतला, दुर्बल, क्षीण, लाग़र, नक़ीह ।

सं० कृशाक्षी (कृश्=मन्द, अक्षि=आंख) गु० मन्दहष्टि, कोताहनज़र ।

सं० कृशानु (कृश्=पतला करना) पु० आग, अग्नि, आगी, अनल ।

सं० कृषक } (कृष्=हल जोतना)
कृषाण } पु० किसान, हल जोतनेवाला ।

सं० कृषि (कृष्=हल जोतना) स्त्री० खेती, २ धरती ।

सं० कृषिकर्म्म पु० खेती, काश्तकारी ।

सं० कृषिकारक (कृषि + कारक) क० पु० किसान, काश्तकार ।

सं० कृष्ण (कृष्=खैंचना, वा काला रंग होना) गु० काला, अंधेरा, पु० विष्णु का आठवां अवतार, वासुदेव, देवकीनंदन । "कृषिर्भूवाचकः शब्दः णश्च निर्वृत्तिवाचकः । तयोरैक्यं परब्रह्म कृष्ण इत्यभिधीयते" वायस, कौवा, कलियुग, कोकिल ।

सं० कृष्णपक्ष (कृष्ण=अँधेरा, वा काला, पक्ष=पख) पु० अन्धेरा पख, वदि ।

सं० कृष्णमय (कृष्ण=श्रीकृष्ण, मय =रूप वा मिलाहुआ) गु० कृष्ण के ध्यान में लगा हुआ, श्रीकृष्णरूप।

सं० कॢप्त (कृप्=कल्पना करना) पु० नियमित, बाक़ायदा ।

सं० कृष्णसार पु० काला मृग ।

प्रा० केँचुवा (सं० किंचुलुक, किम् =कुछ, चुलुम्प्=हिलाना, वा काटना) पु० ज़मीन का कीड़ा, एक प्रकार का कीड़ा ।

प्रा० केकड़ा (सं० कर्कट) पु० गँगटा, एक जानवर का नाम ।

सं० केकयी } (केकय एक राजा का
कैकयी } नाम) स्त्री० केकयराजा
कैकेयी } की बेटी, राजा दशरथ की स्त्री, और भरत की मा ।

सं० केकी (केका=मोर की बोली) पु० मोर, मयूर ।

प्रा० केतकी (सं० केतक, किन्=

रहना) स्त्री० एक फूल का नाम।

प्रा० केता (सं० कति) क्रि० वि० कितना, कित्ता ।

प्रा० केतिक (सं० कति) गु० थोड़े, दोचार, अल्प, कितना, कितनाही ।

सं० केतन धि० पु० गृह, २ ध्वजा, ३ निमंत्रण, ४ आलस, ५ क्रीड़ा, ६ कोड़ा, ७ काम, ८ चिह्न ।

सं० केतु (चाय्=पूजना, वा कित्=जानना) पु० नवां ग्रह, २ झंडा, ध्वजा, पताका, ३ पूंछल तारा, धूमकेतु ।

सं० केन्द्र पु० जहां से पृथ्वी का नाप होता है और वे दो हैं १ उत्तर केन्द्र, दक्षिण केन्द्र, २ वृत्त का बीच, मर्कज़ ।

सं० केयूर पु० अंगद, बहूंटा, बिजायठ ।

सं० केरल पु० मालवादेश, २ ग्रंथ, स्त्री० ३ नवीनविद्या, देशविद्या, देश का इल्म ।

प्रा० केला (सं० कदली) पु० एक पेड़ का अथवा उसके फल का नाम ।

सं० केलि (केल्=हिलना, वा किल्=खेलना) स्त्री० खेल, क्रीड़ा, विहार ।

प्रा० केवड़ा, केओड़ा (सं० केतक) पु० एक फूल का नाम ।

प्रा० केवट (सं० कैवर्त्त) पु० धीवर, मछुवा, मल्लाह, नाव चलानेवाला।

सं० केवल (केव्=सेवाकरना) गु० एकही, निराला, अकेला, मुख्य, ख़ास ।

प्रा० केवाड़, किंवाड़ (सं० कपाट) पु० किंवाड़ी, दरवाज़ा ।

प्रा० केवान पु० कँवल, कमल ।

सं० केश (क्लिश्=दुःख देना, वा रोकना, वा क=शिर, ईश=मालिक, वा क=शिर, शी=सोना) पु० बाल, रोम, लोम, कच ।

सं० केशर (के=पानी में, अथवा शिर पर, शॄ=फूटना, वा विकसना, वा फैलना) पु० कुंकुम, जाफ़रान, एक सुगंधित चीज़, २ सिंह की गरदन पर के बाल ।

सं० केशरी (केशर) पु० सिंह, मृगराज, शेर, हनुमान् के बापका नाम।

सं० केशव (के=पानी में, शी=सोना, वा केश, बाल, वन्त=वाला) पु० श्रीकृष्ण, विष्णु ।

सं० केशी (केश) पु० एक राक्षस का नाम जिसको कंसने श्रीकृष्ण के मारने के लिये भेजा था उसको श्रीकृष्ण ने मारा, गु० अच्छे बालों वाला, जिसके अच्छे और बहुत बाल हों ।

सं० केसर (के=पानी, सृ=जाना) स्त्री० केशर, कुंकुम, नागकेशर, जाफ़रान ।

प्रा० केसरिया (सं० केसर) गु० केसर में रँगाहुआ, पीला ।

प्रा० **केहरी** (सं० केशरी) पु० सिंह, मृगराज, शेर, एक बंदर का नाम ।

प्रा० **कैंचली** (सं० कंचुक, कचि=बांधना, वा चमकना) स्त्री० सांप की खाल, सांप की खोल ।

सं० **कैटभ** (कीट=कीड़ा, भा=चमकना जो कीड़े के बराबर चमकताहो) पु० एक राक्षस का नाम ।

सं० **कैतव** पु० कपट, २ द्यूत, जुआं, ३ वैडूर्य्यमणि, ४ धतूर का फूल ।

प्रा० **कैथी** (सं० कायस्थ) स्त्री० हिंदी अक्षर जो कायथ लोग लिखते हैं, कायथी हिंदी अक्षर जो सूबै बिहार के पटना, गया आदि ज़िलों में लिखे जाते हैं ।

सं० **कैरव** (के=पानी में, रु=शब्द करना) पु० कुमुदिनी, कँवलनी, कमोदनी, सफ़ेद कँवल ।

प्रा० **कैरी** स्त्री० बिन पकाहुआ छोटा आम ।

सं० **कैलास** (कैल=खेल, वा आनंद, आस्=रहना या बैठना, अर्थात् जहां आनंद से रहते हैं) पु० एक पहाड़ हिमालय की श्रेणी में है जो महादेव और कुबेर के रहने की जगह है ।

सं० **कैवर्त** ⎫ (के=पानीमें, वृत्=रह-
कैवर्तक ⎭ ना) पु० केवट, धीवर, मछवा, मल्लाह, नावचलानेवाला ।

सं० **कैवल्य** (केवल एकही) पु० मुक्ति, मोक्ष, परमगति, निर्वाण ।

प्रा० **कैसा** (किस + सा, सं० कीदृश) क्रि० वि० किस प्रकार का, किस तरह का ।

प्रा० **कैसाही** बोल० चाहे जैसाही, कितनाही, किसी ही तरह का ।

प्रा० **को** (सं० कः, कौन) सर्वना० कौन, २ कर्म और संप्रदानकारक का चिह्न ।

प्रा० **कोई** ⎫ (सं० कोपि, कः=कौन,
कोऊ ⎭ अपि=भी) सर्वना० अनिश्चयवाचक ।

प्रा० **कोईसा** बोल० कोई आदमी, कोई चीज़ ।

प्रा० **कोई न कोई** बोल० यह अथवा वह, कोई एक ।

प्रा० **कोईदममें** बोल० तुरन्त, अभी, थोड़ी देर में, बहुत जल्द ।

प्रा० **कोएड़ी** ⎫ पु० एकजातिजिसका
कोएरी ⎭ धंधा खेती करनेकाहै ।

प्रा० **कोपल** (सं० कोरक, कुर=शब्द करना) स्त्री० अंकुर, मंजरी, कली ।

सं० **कोक** (कुक्=लेना) पु० चकवा, चक्रवाक, —कोकी=चकवी ।

प्रा० **कोका** पु० दूधभाई, धायभाई, कटिया, कमल ।

सं० **कोकिल** (कुक्=लेना) स्त्री० कोयल ।

प्रा० **कोख** (सं० कुक्षि) स्त्री० गर्भ, पेट ।

प्रा० कोखबंध (सं० कुक्षि=बन्ध्या) गु०बांझ,बंध्या,जिस स्त्रीके लड़का वाला न हो ।

प्रा० कोट (सं० कोट्ट, कुट्ट=काटना) पु० गढ़, क़िला, दुर्ग ।

सं० कोटर (कोट=टेढ़ापन, कुट्=टेढ़ा होना, और रा=लेना) स्त्री० पेड़ में खोखली जगह, खोंड़कल, खोढ़रा ।

सं० कोटि (कुट्=टेढ़ा होना, वा हिस्सा करना) स्त्री० त्रिभुज की एक भुजा, २ धनुष का अगला भाग, गु० करोड़, सौ लाख ।

प्रा० कोठरी (सं० कोष्ठ, कुष्= निकालना) स्त्री० छोटा घर, कमरा ।

प्रा० कोठा (सं० कोष्ठ) पु० घर, पटा हुआ घर, पक्काघर, ऊपर का मकान ।

प्रा० कोठी (सं०कोष्ठ) स्त्री०छोटा, पक्काघर, २ भंडार,अम्बार,गोदाम, चीज़ वस्तु रखने की जगह,गोला, अनाज रखनेकी जगह, ३ हुंडीवाल की दूकान, महाजनी घर, ४ बड़ा मकान, बंगला, ५ कारख़ाना, ६ कोख,गर्भ–कोठीवाल=हुंडीवाल, बड़ासेठ, बड़ासौदागर, बड़ा व्यौपारी, साहूकार, महाजन ।

प्रा० कोड़ना क्रि० स० खोदना, खखोरना, खोखला करना, गढ़ा करना, खुरचना ।

प्रा० कोड़ा पु० चाबुक ।

प्रा० कोड़ा करना बोल० कोड़ा मारना, चाबुक लगाना, २ वश में करना, ३ कोड़ा मार के घोड़े को तेज़ करना ।

प्रा० कोड़ामारना चाबुक लगाना ।

प्रा० कोड़ी स्त्री० बीसी, बीस २० ।

प्रा० कोढ़ (सं० कुष्ठ) पु० एकप्रकार का रोग, महारोग ।

प्रा० कोढ़ में खाज निकलाना बोल० एक दुख में दूसरे दुख का आना, दुख पर दुख गिरना ।

प्रा० कोढ़ी (सं० कुष्ठी) गु० जिसके कोढ़ निकला हो, कुष्ठी, महारोगी ।

सं० कोण (कुण्=बुलाना) पु० कोना, दो लकीरों का झुकाव ।

प्रा० कोतल पु० ख़ाली घोड़ा ।

प्रा० कोथमीर पु० कची धनियां, धनियां की हरी पत्ती ।

प्रा० कोतली स्त्री० थैली, बटुआ ।

प्रा० कोदो, कोदौं (सं० कोद्रव, कु=धरती, द्रु=जाना) स्त्री० एक तरह का धान ।

सं० कोदण्ड (को=बांस, कु=शब्द करना, दंड=डंडा) पु० धनुष, कमान ।

प्रा० कोना (सं० कोण) पु० खूंट, कोन, दो लकीरों का झुकाव ।

प्रा० कोनाकुथरा बोल० कोई कोना किधरहो, किसी जगह, कहीं ।

सं० कोप (कुप्=क्रोध करना) पु० क्रोध, गुस्सा, रोस, खिसियाहट ।

प्रा० कोपना(सं०कुप्=कोप करना) क्रि०अ०क्रोध करना, गुस्सा होना ।

प्रा० कोपर पु० कटोरा, कटोरी, पियाला ।

सं० कोपि (कः+अपि) सर्वना० कौन ।

सं० कोपित (कोप्+इत) क०पु० क्रुद्ध, कोपयुक्त ।

सं० कोपी (कोप) गु० क्रोधी, तामसी ।

प्रा० कोपीन (सं० कौपीन) स्त्री० लंगोटी ।

प्रा० कोबी
गोबी } स्त्री० एक तरकारी का नाम ।

सं० कोमल (कम्=चाहना, वा कु=शब्द करना) गु० नर्म, नम्र मृदु, मुलायम, मृदुल, मनोहर, पु० पानी, जल ।

सं० कोमलता (कोमल) भा०स्त्री० नरमाई, मृदुलता, कोमलताई ।

प्रा० कोयण
कोये } (सं० कोन) पु० आंखका सफ़ेद ढेला, आंखका कोना ।

प्रा० कोयल (सं० कोकिला) स्त्री० एक पखेरू का नाम, कोकिला, पिक, २ एक फूल का नाम ।

प्रा० कोर स्त्री० किनारा, छोर, कगर ।

प्रा० कोरा गु० नया, टटका, नहीं बरता हुआ, जो काम में नहीं आया हो (यह शब्द मिट्टी के बरतन, और कपड़ा और काग़ज़ के लिये बहुत बार बोला जाता है)।

प्रा० कोरेरहना बोल० निराश होना, योंही रहजाना, कुछ नहीं मिलना।

अं० कोर्ट आफ़ इन्क्काइरी पूंछ जांचकी सभा, तहक़ीक़ात का दरबार।

प्रा० कोल पु० खाड़ी, खाल, २ सकड़ी गली, ३ जंगली मनुष्यों की जाति, पर्वतनिवासी, म्लेच्छ भेद ।

सं० कोलाहल (कोल्=ढेर, हल्=करना) पु० कलकल, कलाहल, बहुत मनुष्यों का शब्द, रौला, कलमल, धूमधाम, गुलगपाड़ ।

प्रा० कोल्हू पु० तेल निकालने की कल, धानी ।

सं० कोविद (क=ब्रह्म, अथवा वेद, विद्=जानना) पु० पण्डित, बुद्धिमान् ।

प्रा० कोशना
कोसना } (सं०क्रोशन, क्रुश=रोना) क्रि० स० सरापना ।

सं० कोशला
कोषला } (कोश वा कोष=भंडार, ला=लेना) पु० स्त्री० अयोध्यापुरी, अवध ।

सं० कोष (कुष्=निकालना) पु० भंडार, ख़ज़ाना, २ डिक्शनरी, अने-

कार्थ, अभिधान, ऐसी पुस्तक जिसमें शब्दों के अर्थ मिलें, ३ अंडकोष, ४ मियान, नियाम, खाप, तलवार का घर ।

सं० कोषलाधीश, कोशलाधीश (कोषला वा कोशला=अयोध्या, अधीश=राजा) पु० श्रीरामचन्द्र, २ अयोध्या के राजा ।

सं० कोषाध्यक्ष (कोष=ख़ज़ाना, अध्यक्ष=मालिक) पु० ख़ज़ांची, भंडारी ।

सं० कोष्ठ (कुष्=निकालना) पु० कोठा, खत्ता, कोठरी, जगह ।

प्रा० कोस (सं० क्रोश, क्रुश्=बुलाना) पु० आठ हज़ार हाथ का रस्ता, दो मील, कोई कोई चार हज़ार हाथ का भी कोस मानते हैं ।

प्रा० कोह (सं० कोप) पु० क्रोध, ग़ुस्सा ।

प्रा० कुहवर, कोहबर पु० ब्याह का घर, कौतुकघर, देवताघर ।

प्रा० कोहाना (सं० कोप) क्रि० अ० रूठना, कोप करना, क्रोध करना, रिसियाना ।

प्रा० कोही (सं० कोपी) गु० क्रोधी ।

प्रा० कौंधना क्रि० अ० चमकना, प्रकाश होना ।

प्रा० कौंधा (कौंधना) स्त्री० बिजली ।

प्रा० कौंला पु० शन्तरा एक फल का नाम ।

प्रा० कौड़ा (सं० कपर्द) पु० बड़ी कौड़ी, नारंगी ।

प्रा० कौड़ियाला पु० एक प्रकार का सांप ।

प्रा० कौड़ी (सं० कपर्दिका, क=पानी, वा सुख, परा=पूर्णता, दा=देना) स्त्री० छोटा शंख जो व्यवहार में लेन देन में चलता है, २ धन, दौलत, ३ कमाई ।

प्रा० फूटीकौड़ी, कानी कौड़ी बोल० कुछ नहीं, कौड़ी नहीं ।

सं० कौतुक (कुतुक) पु० कुतूहल, हँसी खुशी, आनंद, हर्ष, खेल, मन बहलाना ।

सं० कौतुकी (कौतुक) गु० खेल खिलाड़ी, हँसमुख, कौतुक करनेवाला ।

सं० कौतुकशाला स्त्री० तमाशाघर ।

प्रा० कौन (सं० कः) प्रश्नवाचक सर्वनाम ।

प्रा० कौनसा बोल० कैसा, किस तरह का ।

अं० कौंसिल सभा, दरबार ।

सं० कौमार (कुमार=बालक) पु० बालकपन, लड़कपन, युवावस्था, जवानी ।

सं० कौमुदी (कुमुद=चांद, अथवा कुमुद=कमोदनी अर्थात् जिसमें कमोदनी खिलती है, कु=पृथ्वी, मुद्=प्रसन्न करना) स्त्री० चांदनी, चंद्रिका, २ एक व्याकरण का ग्रंथ ।

प्रा० कौर (सं० कवल) पु० ग्रास, कवा, लुक़मा, नवाला।

सं० कौरव (कुरु=एक राजा का नाम) पु० कुरुवंशी, धृतराष्ट्र और पांडु दोनोंके बेटे पोतों को कुरुवंशी कह सके हैं पर विशेष करके धृतराष्ट्र के बेटों को कौरव, और पांडु के बेटों को पांडव कहते हैं।

सं० कौलिक[१] (कुल) गु० कुलका, अपने कुल के धर्ममें चलानेवाला, २ शक्तिक, ३ वाममार्गी।

प्रा० कौवा (सं० काक) पु०काग, कागा, वायस।

सं० कौशल्या (कोशल) स्त्री० कोशल देश के राजा की बेटी, और राजा दशरथ की पत्नी और श्रीरामचन्द्र की मा।

सं० कौशिक(कुशिक=विश्वामित्र का बाप, गाधि) पु० विश्वामित्र मुनि का नाम, उल्लू, गीध, इन्द्र, नेवला।

सं० कौशिकी (कुशिक) स्त्री०एक नदी का नाम जो विश्वामित्र की बहिन कौशिकी के नाम से प्रसिद्ध है।

सं० कौस्तुभ (कुस्तुभ=विष्णु, वा समन्दर, कु=पृथ्वी, स्तु वा स्तुभ्=सराहना, वा स्तुम्भ=रोकना) पु० विष्णु की मणि जो समन्दर में से निकली।

प्रा० क्या (सं० किम्) प्रश्नवाचक अव्यय।

प्रा० क्यों (सं० किम्) क्रि० वि० किस लिये, काहेको।

प्रा० क्योंकर क्रि० वि० किस प्रकार से, कैसे।

प्रा० क्योंकि क्रि० वि० किसलियेकि

प्रा० क्योंनहीं बोल० किसलिये नहीं, निश्चयही।

सं० क्रतु (कृ=करना) पु० यज्ञ, याग।

सं० क्रम (क्रम्=जाना) पु० रीति, परिपाटी, राह, सिल्सिला।

सं० क्रमशः क्रि० वि० क्रमसे, सिलसिलेवार, तरतीब से।

सं० क्रमुकी स्त्री० सुपारी, डली, पूंगीफल।

सं० क्रय (क्री=मोल लेना) पु० मोल लेना, ख़रीदना, वस्तु।

सं० क्रयविक्रय (क्रय + विक्रय, क्री=मोल लेना) भा० पु० लेन देन, वणिज्, ब्यौपार, ख़रीद फ़रोख़्त, जिन्स।

सं० क्रयणीय (क्री + अनीय) गु० ख़रीदने लायक़।

सं० क्रयिक } (क्री + इक) क० पु०
क्रयी } क्रेता, ख़रीददार।

सं० क्रय्य भा० वस्तु, जिन्स बाज़ारी वस्तु जो दूकान में धरी है।

सं० क्रव्य पु० मांस, गोश्त।

सं० क्रव्याद् क० पु० राक्षस, मांसभक्षक।

---

(१) अन्तःशाक्ता बहिःशैवाःसभामध्ये तु वैष्णवाः। नानारूपधराः कौला विचरन्ति महीतले॥

प्रा० क्रान्ति (सं० कान्ति) स्त्री० चमक, प्रकाश, दीप्ति ।

सं० क्रान्ति (क्रम्=जाना) स्त्री० जाना, चढ़ना, २ खगोल में सूर्य का रस्ता, खगोलके गोले में टेढ़ी गोल रेखा ।

सं० क्रान्तिमण्डल (क्रांति+मण्डल) पु० खगोलमें उस वृत्तका नाम जो सूर्यका मार्ग जतलाताहै ।

सं० क्रामक
क्रायक } क०क्रेता,खरीददार ।

सं० क्रियमाण कर्म० करने योग्य ।

सं० क्रिया (कृ=करना) स्त्री० काम, काज, व्यवहार, २ क्रिया कर्म, ३ धर्मसंबंधी काम, ४ व्याकरण में ऐसा शब्द जो धातु से बनाहो और उसमें कोई समय पाया जाय, ५ सौगन्द, शपथ ।

सं० क्रियादक्ष पु० काममें निपुण ।

सं० क्रीडा
क्रीडन } (क्रीड्=खेलना) भा० स्त्री० खेल, हँसीखुशी, मन बहलाना, कौतुक ।

सं० क्रीडक
क्रीडित } क० पु० खिलाड़ी ।

सं० क्रुद्ध (क्रुध्=क्रोध करना) क० पु० क्रोध किये हुए, क्रोधित ।

सं० क्रूर (कृत्=काटना) गु०निठुर, निर्दयी, कठोर, कड़ा ।

सं० क्रूरता भा०निठुराई,कठोरपना।

सं० क्रोडपत्र (क्रुड्=जोड़ना, चपकाना, जमा करना) पु०संयोजित, ज़मीमा; पीछे से लगाया गया ।

सं० क्रोध (क्रुध्=क्रोध करना) पु० कोप, रिस, गुस्सा ।

सं० क्रोधवान्
क्रोधवन्त } (क्रोध=कोप, वान्=वाला) गु० क्रोधी, कोप करनेवाला ।

सं० क्रोधावेश (क्रोध=कोप, आवेश=घुसना, आ, विश्=घुसना) गु० क्रोधयुक्त, क्रोधके वश ।

सं० क्रोधी (क्रोध) गु० कोप करने वाला, गुस्सा करनेवाला, रिसहा ।

सं० क्रोधना क० स्त्री० कोपवती, कोप करनेवाली ।

सं० क्रोश (क्रुश्=बुलाना) पु० कोस, कोई ८००० हाथ और कोई ४००० हाथ का कोस मानते हैं ।

सं० क्रोष्टा (क्रुश्=बोलना, चिल्लाना) क० पु० शृगाल, सियार, २ गधा ।

सं० क्रौञ्च (क्रुञ्च=जाना) पु० बगुला, २ एक द्वीपका नाम ।

सं० क्लान्त (क्लम्=थकना) क०पु० थका, मांदा, थकित, थका हुआ ।

सं० क्लान्ति (क्लम्=थकना) भा० स्त्री० थकावट, कलेश, परिश्रम ।

सं० क्लिन्न (क्लिद्=भीगना,रोना) क० पु० आर्द्र, ओदा, सजल,तर, दुखी ।

सं० क्लिष्ट (क्लिश्=दुखपाना) क० पु० कड़ा, सख़्त, कठिन ।

सं० क्लीब (क्लीब्=नपुंसक होना)

पु० नपुंसक, नामर्द, खोजा, हिजड़ा, गु० डरपोक, कायर ।

सं० क्लेद (क्लिद्=बसाना) ण० पु० पूय, पीब, मवाद ।

सं० क्लेश (क्लिश्=दुख पाना) पु० दुख, कष्ट, पीड़ा ।

सं० क्लेशक क० पु० क्लेशयुक्त, क्लेशदाता, दुःखदाता ।

सं० क्लेशन भा० पीड़ा, दुःख ।

सं० क्लेशित र्म० पु० दुखी, पीड़ित, कष्टित ।

सं० क्वचित् (क्व=कहां) क्रि० वि० कहीं, कहीं २ ।

सं० क्वणन (क्वण्=बोलना) भा० पु० शब्द, आवाज़ ।

सं० क्वाथ पु० निर्यास, गोंद, काढ़ा ।

सं० क्वाथित (क्वथ्=पचाना) र्म० पु० पचाया हुआ ।

प्रा० क्षई (सं० क्षय) स्त्री० क्षय रोग, राजरोग, दम की बीमारी ।

सं० क्षण (क्षण्=नाश करना) स्त्री० पल, दम, दश पल का समय, चार मिनट का समय ।

सं० क्षणिक क० पु० थोड़ी देर का ।

सं० क्षत (क्षण्=नाश करना) पु० घाव, चोट, चीरा, ज़खम, व्रण ।

सं० क्षत पु० व्रण घाव, ज़खम, चोट, र्म० नष्ट, घातित, विदीर्ण, भग्न ।

सं० क्षत्ता पु० शूद्र, दासीपुत्र ।

सं० क्षति (क्षण्=नाश करना) स्त्री० हानि, घटी, नुक़सान, बिगाड़, अपकार ।

सं० क्षत्र पु० शरीर, जिस्म ।

सं० क्षत्रिय
क्षत्री (क्षत=घाव, त्रै=बचाना) पु० राजपूत, दूसरा वर्ण, राजन्य ।

सं० क्षत्रीकुलद्रोही क० पु० क्षत्री कुल का वैरी, परशुराम ।

सं० क्षयण (क्षय्+अण, क्षय=फेंकना) क० पु० निर्लज्ज, बेशरम, बेहया, प्रेरण, गैंड़ा, गिरगिट ।

सं० क्षमता (क्षम्=सहना) स्त्री० सहनशीलता, सहना, योग्यता, सामर्थ्य ।

प्रा० क्षमना
क्षमाकरना (सं० क्षम्=सहना) क्रि० स० माफ करना, सहना, छोड़ना ।

सं० क्षमा (क्षम्=सहना) भा० स्त्री० माफी, माफ करना, संतोष, माफ, शान्ति, २ रहम, ग़म, बरदाश्त ।

सं० क्षमित
क्षमी क० पु० शान्त, क्षमाशील, ग़मख़्वार ।

सं० क्षय (क्षि=नाश करना) भा० पु० नाश, २ हानि, नुक़सान, घटी, ३ क्षयरोग, क्षयी ।

सं० क्षरण (क्षर्+अण, क्षर्=बहना, टपकना) भा० पु० च्युत होना, गिरना ।

सं० क्षान्त (क्षम्=सहना) गु० सहनेवाला, धीरजवान्, क्षमावान्,

सन्तोषी ।

सं० क्षान्ति (क्षम्=सहना) स्त्री० क्षमा, धीरज, संतोष ।

सं० क्षाम पु० क्षीण, दुर्बल, झूरा ।

सं० क्षार (क्षर=गिरना, नाशहोना) स्त्री० खार, २ राख, भस्म ।

सं० क्षालन (क्षल्=शुद्ध करना) पु० धोना, पोंछना, साफ़ करना, खँगालना ।

सं० क्षालक (क्षल्+अक) क० पु० धोनेवाला ।

सं० क्षालित (क्षल्+इत) कर्म० पु० धोया हुआ, धौत ।

सं० क्षिति (क्षि=रहना, बसना) स्त्री० धरती, पृथ्वी, ज़मीन, धरणी ।

सं० क्षितिधर (क्षिति=धरती, धर=रखनेवाला, धृ=रखना) पु० पहाड़, पर्वत ।

सं० क्षितिप } (क्षिति=धरती, पा
क्षितिपति } =बचाना) पु० राजा ।

सं० क्षितिपाल (क्षिति=पृथ्वी, पाल्=बचाना) पु० राजा, महाराज ।

सं० क्षिपक (क्षिप्+अक) क० पु० योद्धा, बहादुर ।

सं० क्षिप्र (क्षिप्=फेंकना) गु० जल्द, तुरंत, शीघ्र ।

सं० क्षीण (क्षि=नाश करना) गु० दुबला, निर्बल, दुर्बल, ग़रीब ।

सं० क्षीर (घस्=खाना) पु० दूध, २ पानी ।

सं० क्षुण्ण (क्षुद्+त, क्षुद्=पीसना) कर्म० पु० पीसा हुआ, चूर्णीकृत ।

सं० क्षुद्र (क्षुद्=चूर,चूर=होना) गु० छोटा, नीच, अल्प, सूक्ष्म ।

सं० क्षुद्रा स्त्री० वेश्या, नटी, मधुमक्षिका, भटकटैया ।

सं० क्षुधा (क्षुध्=भूखा होना) भा० स्त्री० भूख, खाने की चाह ।

सं० क्षुधातुर क० पु० भूख से व्याकुल, भूखा ।

सं० क्षुधार्त्त (क्षुधा=भूखा, आर्त्त=घबराया हुआ) गु० भूखा, बहुत ही भूखा ।

सं० क्षुधावन्त (क्षुधा=भूख, वत्=वाला) गु० भूखा ।

सं० क्षुधित(क्षुधा=भूख) क० पु० भूखा ।

सं० क्षुभित } (क्षुभ=काँपना) क०
क्षुब्ध } पु० डरा हुआ, घबराया हुआ, व्याकुल ।

सं० क्षुर (क्षुर्=काटना) भा० पु० उस्तरा, छुरा, २ खुर ।

सं० क्षुरभाण्ड (क्षुर=छुरा, भाण्ड =पिटारी) धि० पु० किस्वत, नाइयों की किस्वत ।

सं० क्षेत्र (क्षि=बसना, रहना) पु० खेत, २ पवित्रधरती, पुण्यभूमि, ३ देह, शरीर, ४स्त्री, पत्नी, भार्या ।

सं० क्षेत्रज(क्षेत्र=स्त्रीउदर, जन्=पैदा करना) क० पु० अपनी स्त्री में दूसरे से पुत्र जन्माना, जारपुत्र, पाण्डवा ।

सं० क्षेपक (क्षिप्=फेंकना) क०पु० फेंका हुआ, २ फेंकनेवाला ।

सं० क्षेपण (क्षिप्=फेंकना) भा० पु० फेंकना, प्रेरण ।

सं० क्षेपणी (क्षिप् + अन + ई) क० स्त्री० गुफनी, ढिलवासी ।

सं० क्षेम (क्षि=रहना) पु० कुशल, कल्याण, चैन, बचाव, चैनचान ।

सं० क्षेमकरी स्त्री० सफ़ेद मूड़की चील ।

सं० क्षोणि
क्षौणि } (क्षु=शब्दकरना) स्त्री० पृथ्वी, धरती, ज़मीन ।

सं० क्षोभक (क्षुभ् + अक) क०पु० भयकर्त्ता, डरवाने वाला ।

सं० क्षोभ (क्षुभ्=कांपना, डरना) पु० डर, मोह, छोह, घबराहट, हड़बड़ाहट, हिलाव डुलाव ।

सं० क्षोभित कर्म० पु० डराहुआ, खौफ़ खायाहुआ ।

सं० क्षौर (क्षुर=उस्तरा) स्त्री० हजामत, मुण्डन, नाई का काम ।

सं० क्ष्मा (क्षम्=सहना) स्त्री० पृथ्वी, धरती, ज़मीन ।

ख

सं० ख पु० आकाश, आस्मान, स्वर्ग, शून्य, २ इन्द्रिय, ३ गृह, खेट ।

प्रा० खंगालना (सं० प्रक्षालन) क्रि० स० धोना, साफ़ करना ।

प्रा० खंगार
खखार } स्त्री० थूक, कफ, श्लेष्मा, जुक़ाम ।

प्रा० खागे गु० कमपड़े, कमहुये ।

प्रा० खंजर पु० कटार, कटारी ।

प्रा० खंजरी स्त्री० एक बाजेका नाम ।

प्रा० खंडर
खंडहर } (सं० खंड=टुकड़ा) पु० टूटे फूटे मकान ।

प्रा० खखोरना क्रि० स० कोड़ना, खुरचना ।

सं० खग (ख=आकाश, गम्=जाना) पु० पक्षी, परवेरू, २ ग्रह, ३ हवा, ४ तीर, ५ मन ।

सं० खगपति (खग=परवेरू, पति =राजा) पु० गरुड़ ।

सं० खगान्तक (खग=परवेरू, अंत =नाशकरनेवाला) पु० बाजपक्षी ।

सं० खगेन्द्र (खग=परवेरू, इंद्र= राजा) पु० गरुड़ ।

सं० खगेश (खग=परवेरू, ईश= राजा) पु० गरुड़ ।

सं० खगोल (ख=आकाश, गोल= गोला) पु० आकाशमण्डल ।

सं० खगोलविद्या (खगोल + विद्या) स्त्री० तारा नक्षत्र आदि की चाल जानने की विद्या ।

प्रा० खग्ग (सं० खड्ग) पु० तलवार, खड्ग ।

प्रा० खचना (सं० खच्=बांधना, दृढ़ करना) क्रि० स० जड़ना, मिलाना, साटना ।

प्रा० खचित (खच्=बांधना, दृ करना) कर्म० पु० जड़ित, जड़ाहुआ ।

प्रा० खच्चर पु० घोड़े और गधे की ज़ात का जानवर ।

प्रा० खजूर (सं० खर्ज्जूर) पु० छुहारा, छुहारे या खजूर का वृक्ष ।

सं० खञ्ज पु० लंगड़ा, लूला, पंगु ।

सं० खञ्जन (खञ्ज्=लँगड़ाके चलना) पु० एक पखेरू का नाम ।

सं० खञ्जरी स्त्री० वाद्यविशेष, खञ्जरी, डफुली ।

प्रा० खटकना क्रि० अ० लगना, चुभना, गड़ना, खुभना, सालना, २ बाजना, आहट होना ।

प्रा० खटका, पु० खटक, स्त्री० (खटकना) संदेह, डर, शंका, धोखा, दुविधा, मीन मेख, २ पैर का आहट, खड़का ।

प्रा० खटखटाना क्रि० स० ठकठकाना, ठोंकना, खट खट करना, थपथपाना ।

प्रा० खटछप्पर (सं० खट्वा=खाट, छप्पर) पु० छप्परखट, सेज, मसहरी समेत पलंग ।

प्रा० खटना, खटाना क्रि० अ० टिकना, रहना, ठहरना ।

प्रा० खटपट स्त्री० झगड़ा, लड़ाई, तकरार, झंझट, बिगाड़, रगड़ा, झगड़ा, अनरस, खैंचातानी, खटराग, खटापटी ।

प्रा० खटमल (सं० खट्वामल्ल, खट्वा=खाट, मल्ल=पहलवान) माकड़, खटकीड़ा, उड़ीस ।

प्रा० खटमीठा पु० खट्टा और मीठा मिला हुआ स्वाद, गु० खट्टा और मीठा, मनभावन, मनमान्ता, सुस्वाद, मज़ेदार ।

प्रा० खटराग (सं० षट्राग, षट्=छः, राग=काम क्रोध आदि) पु० फूट, अनबनत, अनमेल, झगड़ा, रगड़ा, झंझट, जंजाल ।

प्रा० खटापटी स्त्री० लड़ाई, झगड़ा, तकरार, झंझट, बिगाड़, खटपट ।

प्रा० खटास भा० स्त्री० खट्टापन, खटाई, तुर्शी ।

प्रा० खटिया (सं० खट्वा) स्त्री० खाट, चारपाई, २ रथी ।

प्रा० खटीक (सं० खट्टिक, खट्=ढकना) पु० अहेरी जिसका काम जानवरों के मारने और बेचने का है ।

प्रा० खटोला (सं० खट्वा) पु० छोटी खाट, २ पालना, झूलना ।

प्रा० खट्टा गु० तुर्श, चूक, अम्ल, जैसे इम्ली आदि ।

सं० खट्वा (खट्=चाहना, वा खट्=ढकना) खाट, पलँग, चारपाई ।

प्रा० खड़ंख गु० सूखा, सूखा हुआ ।

प्रा० खड़क स्त्री० गोशाला, गौख़ाना, २ आहट ।

प्रा० खड़कना क्रि० अ० खड़खड़ाना, झंझनाना, बाजना ।

प्रा० **खड़कजाना** बोल० सावधान होजाना, ख़बर पाना, संदेशापाना।

प्रा० **खड़खड़ाना** क्रि० अ० ठकठकाना, झंझनाना, बाजना, २ दांत पीसना, ३ खर्राटा मारना, घुरघुराना।

प्रा० **खड़ा** गु० सीधा, उठा, ऊंचा।

प्रा० **खड़ा करना** बोल० उठाना, ठहराना, ऊंचा करना।

प्रा० **खड़ाहोना** बोल० उठना, सीधा होना।

प्रा० **खड़ेखड़े** बोल० अभी, तुरन्त, झटपट, इसीदम।

प्रा० **खड़ाऊं** स्त्री० पादुका।

प्रा० **खड़िया** (सं० खटिका, खट्=चाहना, वा खड़िका, खड्=टुकड़े२ करना) स्त्री० खड़ी, खल्ली, चाक।

सं० **खड़ी** (खड्=टुकड़े २ करना) स्त्री० खड़िया, खड़ी मिट्टी, खल्ली, चाक।

सं० **खड्ग** (खड्=फाड़ना, चीरना) स्त्री० तलवार, तरवार।

सं० **खण्ड** (खड्=तोड़ना) पु० टुकड़ा, भाग, हिस्सा, २ खन, मकान का कोई हिस्सा, ३ ज़मीन का कोई टुकड़ा, देश, ४ पुस्तक का एक भाग, ५ खांड़।

सं० **खण्डखण्ड** पु० टुकड़ाटुकड़ा।

सं० **खण्डक** (खड्+अक) क०पु० तोड़नेवाला।

सं० **खण्डन** (खड्=तोड़ना) भा०पु० तोड़ना, टुकड़े करना, छिन्न भिन्न करना, २ किसी की बात को रद्द करना, झुठलाना, बात में हराना, मात करना, भंजन करना, तरदीद करना।

प्रा० **खण्डन करना** (सं०खण्डन) क्रि० स० तोड़ना, टुकड़े २ करना, २ मात करना, झुठलाना।

सं० **खण्डना** भा० स्त्री० आपत्ति, आफ़त।

सं० **खण्डित** (खड्=टुकड़े २ करना) कर्म० पु० टूटा हुआ, टुकड़े २ किया हुआ, कटा हुआ, छिन्न भिन्न, तित्तर बित्तर, बिखरा हुआ, २ मात किया हुआ, शिकस्त।

प्रा० **खत्ता** (सं० खात, खन्=खोदना) पु० कोठा, नाज रखनेका खड्डा, गड्ढा।

प्रा० **खत्री** (सं० क्षत्रिय) पु० राजत, २ एक जाति।

प्रा० **खदबदाना** क्रि० अ० सनसनाना, सीजना, छनछनाना।

प्रा० **खदेड़ना** क्रि० स० पीछाकरना, रगेदना।

सं० **खद्योत** (ख=आकाश, द्युत्=चमकना) पु० जुगनू, अगिया, चमकनेवाला कीड़ा।

प्रा० **खन** (सं०खण्ड) पु० घरका हिस्सा, कोठड़ी, कमरा, महला।

सं० खनक (खन्+अक, खन्=खोदना) क०पु०मूषक,मूश,चूहा ।

प्रा० खनकना क्रि०अ०ठनठनाना, शब्द करना, बाजना ।

सं० खनन (खन्+अन, खन्=खोदना) भा० पु० खोदना ।

सं० खनि (खन्=खोदना) कर्म० स्त्री० खानि, आकर ।

सं० खनित्र (खन्=खोदना) पु० कुदाल,कुदाली,खोदनेकाऔज़ार।

सं० खनित्री (खन्=खोदना) स्त्री० कुदाली, कसी, फावड़ा, पड़ुहा, खंती ।

प्रा० खपत (खपना) स्त्री० बिक्री, बिकाव, ख़र्च, उठान ।

सं० खपना क्रि० अ०सोख जाना, सूखना, २ मरना, ३ बिकना, ख़र्च होना, उठना ।

प्रा० खपरा पु०नरिया,पटरी, चौका जिससे मकान छाया जाता है ।

प्रा० खपरैल (खपरा) स्त्री० खपरे का घर ।

प्रा० खपाच स्त्री० फांस, किर्च, बांस का टुकड़ा ।

प्रा० खपाना क्रि० स० नाशकरना, पूरा करना, मार डालना ।

प्रा० खप्पर (सं० खर्प्पर, कृप्=सामर्थ्य रखना) पु० खोपरी, २ योगी लोगों का मिट्टी का बरतन, योगियों का पात्र ।

प्रा० खम (सं० स्तम्भ) पु० ताल, भुजा, खम्भ ।

प्रा० खम ठोकना बोल० ताल ठोकना, कुश्ती करने के समय अपने हाथों से बाहु को ठोकना ।

सं० खमणि (ख=आकाश, मणि=रत्न) पु० सूर्य ।

प्रा० खम्बा ⎫ सं० स्तम्भ पु०थंभा,
खम्भ ⎭ थूनी, खंभा, लाठ, मीनार ।

सं० खर (खड्=तोड़ना) पु० तीखा, कठोर ।

सं० खर (ख=शून्य, रा=लेना) पु० गधा, खच्चर, २ एक राक्षस का नाम, ३ तीक्ष्ण, चतुर, ४ तृण ।

प्रा० खर ⎫ सं० खड्=टुकड़े करना
खढ़ ⎭ पु० तिनका,तृण,घास।

सं० खरतर ⎫ गु०अतितीक्ष्ण,बहुत
खरतल ⎭ तेज़, कड़ा मिज़ाज।

सं० खरधार ⎫ गु० तेज़धार=बड़ी
खरधारा ⎭ धार ।

प्रा० ख़रबर, स्त्री० ⎫ हलबल,खड़-
खरभर, स्त्री० ⎪ बड़, खलब-
खलबल, स्त्री० ⎬ ली,हलचल,
खभार, पु० ⎭ खड़बड़ी ।

प्रा० खरल (सं०खल्ल,खल्=गिरना) स्त्री० औषध पीसने के लिये पत्थर का बरतन ।

प्रा० ख़रहा पु० खरगोश, शशा ।

प्रा० खरा गु० सच्चा, सीधा, सरल,

उत्तम, श्रेष्ठ, चोखा, प्रमाणिक ।

सं० खरी स्त्री० गधी, खली ।

प्रा० खर्ज्जुर पु० खजूर, छुहारा, २ ज़ुक़ाम, श्लेष्मा ।

सं०खर्ब्ब (खर्ब्=जाना)पु०सौअरब, गु०बामना,नाटा,छोटा, २ नीच ।

सं० खर्ब्बित र्म० अल्पीकृत, संक्षिप्त, मुख़्तसर ।

सं० खल (ख=शून्य,ला=लेना, वा खल्=चलना,वा गिरना)गु० दुष्ट, नीच,कठोर,निर्दयी, क्रूर,बेरहम ।

प्रा० खल (सं० खलि, खल्=जाना, वा गिरना) स्त्री० खरी, तिल की सीठी ।

सं० खल गु० दुष्ट,अधम,नीच,निंदक, क्रूर, पु० कल्क, खली ।

सं० खलन (खल्+अन) भा० पु० खालीकरना, रीता करना ।

प्रा० खलबलाना क्रि० अ० उबलना, खौलना ।

सं० खलित (खल्+इत) क० पु० पतित, गिरा, खाली हुआ ।

प्रा० खलियान (सं० खल्या, खल्=जाना, वा गिरना)पु० उसजगह का नाम जहां भूसे मेंसे अनाज निकालकर ढेर लगाते हैं,खलिहान ।

सं० खलु अव्य० निश्चय, हेतु, यक़ीन, विश्वास, वीप्सामान, निषेध, प्रश्न ।

सं० खल्वाट गु० गंजा, चंदुला, जिसके शिर में बाल न हों ।

प्रा० खवा
खंवा } पु० कंधा ।

प्रा० खसकाना क्रि०स०दूर करना, सरकाना, हटाना, पीछे खेंचना, २ ले भागना ।

प्रा० खसखस (सं० खस्=ख़स) पु० पोस्त का दाना, ख़शख़ाश ।

प्रा० खसना क्रि० अ० गिरना, गिरपड़ना ।

प्रा० ख़सरा पु०बही,खेत के हिसाब की किताब, खर्रा, किसी हिसाब का खर्रा, २ खुजली ।

प्रा० खांड़ (सं० खण्ड) स्त्री०शक्कर।

सं० खाण्डव पु० इन्द्रप्रस्थनगर के निकट का वन ।

प्रा० खाडा (सं० खड्ग) पु० एक तरह की तलवार, तेग़ा ।

प्रा० खांड़े की धार पर चलना बोल० न्याय पर चलना, न्याय करना ।

प्रा० खांसी(सं० काश, कश्=शब्द करना) स्त्री० खोखी, धांसी ।

प्रा० खाई (सं० खात, खन्=खोदना)स्त्री० खंदक, नाला, गड़हा, गढ़ के बाहर का नाला ।

प्रा० खाऊ (खाना) गु०पेटू, पेटार्थी, बहुत खानेवाला ।

प्रा० खाग (सं० खङ्ग) पु० गैंड़े का सींग ।

प्रा० खाज (सं० खर्जू, खर्ज्=दुख देना) स्त्री० खुजली ।

प्रा० खाजा (सं० खाद्य=खानेयोग्य) पु० एक तरह की मिठाई ।

प्रा० खाट (सं० खट्वा) स्त्री० चारपाई, खटिया ।

सं० खात (खन्=खोदना) कर्म० पु० खाई, खेय, परिखा, दुर्गवेष्टन, खन्दक़ ।

प्रा० खाता पु० लेखाबही, रोज़के हिसाब की बही, खसरा, हिसाब ।

प्रा० खाती पु० बढ़ई, मिस्तरी ।

सं० खादक (खाद् + अक) क० पु० ऋणी, क़र्ज़दार, खवैया ।

सं० खादन (खाद् + अन्) भा० पु० भक्षण, भोजन, ख़ुराक ।

सं० खाद्य (खाद्=खाना) कर्म० खाने योग्य, पु० खाना, खानेकी चीज़ ।

प्रा० खान } (सं० खानि वा खनि,
खानी } खन्=खोदना) स्त्री० खानि, आकर, मादन, २ ढेर, ३ घर ।

प्रा० खाना (सं० खादन, खाद्=खाना) क्रि० स० भोजन करना, २ खाजाना, उड़ाना, चोरीकरना, मारखाना, चाटजाना, निगलना, डकार जाना, हज़म करजाना, चट करना, हाथ मारना, पु० खाने की चीज़, भोजन, आहार ।

प्रा० खाजाना बोल० खालेना, डकारना, चट करना, हज़म करना, मारखाना, निगलना, उड़ाना ।

प्रा० खानापीना बोल० भोजन, ख़ुराक, खाना ।

सं० खानिक (खन्=खोदना) क० जो खानि में पैदा हो, स्त्री० खानि ।

प्रा० खार (सं० क्षार) पु० लोना, एक सफ़ेद खारी चीज़ जिससे बहुत बार धोबी कपड़े साफ़ करते हैं ।

प्रा० खारा (सं० क्षार) गु० लोना, नमक़ीन ।

प्रा० खारुआ } पु० एक तरह का
खारुवा } गोटा, लालकपड़ा ।

प्रा० खाल (सं० खल्ल) स्त्री० चमड़ा, २ धौंकनी, ३ खाड़ी, कोल ।

प्रा० खालखैंचना बोल० मनुष्य की देह से चमड़ा उतारलेना, बहुत दुख देकर मारडालना, चमड़ा लेना, चमड़ा उधेड़ना, खलियाना ।

प्रा० खिंचना क्रि० अ० तनना, ऐंठना ।

प्रा० खिजलाना } (सं० खिद्=दुख
खिजाना } देना) क्रि० स० सताना, चिढ़ाना, छेड़ना, दुख देना, तकलीफ़ देना, क्रोधित करना ।

प्रा० खिड़की स्त्री० झरोखा, दरीची ।

सं० खिन्न (खिद्=दुखदेना वा दुख पाना) कर्म० पु० दुखी, दुखित,

थका हुआ, थकित, सतायाहुआ।

प्रा० **खिरनी** (सं० क्षीरिणी, क्षीर =दूध) स्त्री० एक फल और उसके पेड़ का नाम ।

प्रा० **खिलखिलाना** (सं० किलकिला) क्रि० अ० बहुत ज़ोर से हँसना ।

प्रा० **खिलना** क्रि० अ० फूलना, २ हर्षित होना, प्रसन्न होना, हँसना।

प्रा० **खिलाड़** (खेल) गु० चंचल, चपल ।
खिलाड़ी

प्रा० **खिलौना** (खेल) पु० खेलने की चीज़ ।

प्रा० **खिसलना** क्रि० अ० फिसलना, खिसकना, सरकजाना ।

प्रा० **खिसियाना** (सं० क्लिश्=दुख पाना) क्रि० अ० चिड़चिड़ाना, क्रोध करना, खीसना ।

प्रा० **खीजना** (सं० खिद्=दुखदेना वा दुखपाना) क्रि० अ० क्रोधित होना, क्रोध करना, दुखित होना, दुखी होना ।

प्रा० **खीर** (सं० क्षीर) पु० दूध और चाँवल सेबनी हुई एकखाने की चीज़, जाउर, पायस ।

प्रा० **खीरा** स्त्री० एक प्रकार की ककड़ी ।

प्रा० **खील** स्त्री० भूना हुआ चाँवल, लावा ।

प्रा० **खीली** स्त्री० पान की बीड़ी ।

प्रा० **खीसना** क्रि० स० नाशकरना, उजाड़ना, बिगाड़ना, २ खिसियाना ।

प्रा० **खीस** भा० स्त्री० ख़राब हुई, २ दाँत निकालना ।

प्रा० **खीसा** (फ़ा० खीसह) पु० जेब, ख़लीता ।

प्रा० **खुजलाना** (सं०खर्ज़्=दुखदेना) क्रि०अ०कलकलाना, चुलचुलाना, सहलाना, खरोटना, खरोंचना ।

प्रा० **खुजलाहट**
खजलाहट (सं० खर्ज़ू, खर्ज़् =दुख देना) स्त्री० खुजलाना, खुजली, सुरसुरी, गुदगुदी ।

प्रा० **खुजली** (सं०खर्ज़ू, ख़र्ज़्=दुख देना) स्त्री०खाज, पामा, ख़ारिश।

प्रा० **खुटाना** क्रि० अ० कम होना, घटजाना ।

प्रा० **खुटानी** स्त्री० क्षीण हुई, कम हुई, नाश हुई ।

प्रा० **खुदवाना** (सं०ख़न्=खोदना वा क्षुद्=चूर २ करना) क्रि० स० खुदाना ।

प्रा० **खुनस** स्त्री० रोष, वैर, क्रोध, कोप, लाग, रिस ।

प्रा० **खुनसाना** क्रि० अ० क्रोधित होना, खिसियाना, क्रोध करना, कोप करना, रिसाना ।

प्रा० **खुबना**
खुभना क्रि० अ० चुभना, बिंधना, पैठना, असर

करना, मन में जँच जाना ।

सं० खुर (खुर्=काटना) पु० सुम, घोड़े गाय आदि के पैरका नख ।

प्रा० खुरपा (सं० खुर्=काटना) पु० घास खोदने का औज़ार ।

प्रा० खुरमा (फ़ा० खर्मह) पु० एक तरह की मिठाई ।

प्रा० खुलना क्रि० अ० खुल जाना, प्रकट होना, नहीं ढकना, बिखरना (जैसे बादल), साफ़ होजाना, स्वच्छ होजाना (जैसे आकाश), टूटना, छूटजाना (जैसे ध्यान)।

प्रा० खूँट पु० कोना, कोन, २ कान का मैल ।

प्रा० खूँदना (सं० क्षुद्=चूर २ करना) क्रि० स० पैरों से धरती को खोदना, टाप मारना ।

सं० खेचर (खे=आकाश में, चर=चलनेवाला, चर्=चलना) पु० ग्रह, वायु, तारागण, पक्षी, प्रेत, २ विद्याधर देवता, गु० आकाश में चलनेवाला ।

सं० खेट (खिट्=सताना) पु० ग्रह, २ पक्षी, ३ अधम, ४ भय, ५ खेत, ६ शिकार ।

सं० खेटक (खिट्=डराना, सताना) क० पु० शिकार, अहेर, २ ढाल, ३ भय, ४ कुत्सित, ५ ग्राम, ६ कफ़, ७ अधम ।

प्रा० खेड़ा (सं० खेट, खेट्=खाना) पु० पुरवा, गाँव ।

प्रा० खेड़ी स्त्री० अच्छा लोहा, फ़ौलाद, ईस्पात ।

प्रा० खेत (सं० क्षेत्र) पु० जगह जहाँ अनाज तरकारी आदि बोते हैं, २ पवित्र धरती, ३ धरती, ज़मीन, ४ लड़ाई का मैदान ।

प्रा० खेतछोड़ना बोल० लड़ाई से भाग जाना ।

प्रा० खेत रहना बोल० लड़ाई में रहजाना, माराजाना ।

प्रा० खेती (खेत) स्त्री० किसनई, काश्तकारी, ज़िराअत, फ़सल ।

प्रा० खेतीबाड़ी बोल० खेतीकाधंधा, किसनई, काश्तकारी, ज़िराअत ।

सं० खेद (खिद्=दुखपाना) पु० दुख, शोच, शोक, पछतावा, कष्ट, तकलीफ़, पीड़ा, व्यथा ।

सं० खेदित (खिद्=दुख पाना) कर्म० दुखित, दुखी, पीड़ित ।

प्रा० खेप (सं० क्षेप, क्षिप्=फेंकना, भेजना) स्त्री० सफर, समंदर की यात्रा, २ जहाज़ का बोझा ।

प्रा० खेप हारना बोल० नुक़सान उठाना, हानि होना ।

प्रा० खेल (सं० खेला, खेल्=हिलना, चलना) पु० क्रीड़ा, विहार ।

प्रा० खेवट }
खेवटिया } (सं० कैवर्त्त) पु० नाव चलानेवाला, माँझी, मल्लाह, डाँडी, खेवक ।

प्रा० खेवना (सं० क्षेपण) क्रि० स० डाँड मारना, नाव चलाना ।

प्रा० खेवा (सं० क्षेप्य) पु० उतराई, नाव की उतराई का भाड़ा, २ नदी पार होना ।

प्रा० खेस पु० एक कपड़े का नाम ।

प्रा० खैंचना क्रि० स० तानना, कसना, ऐंचना, २ तसवीर में रंग भरना, तसवीर उतारना, तसवीर बनाना ।

प्रा० खैंचाखैंची बोल० खैंचातानी, लड़ाई, मारामारी ।

प्रा० खैर (सं० खदिर) पु० एक वृक्ष का नाम, खदिर पेड़ का गूदा ।

प्रा० खोंता पु० घोंसला, पखेरू का घर ।

प्रा० खोंसना क्रि० स० ठाँसना, ठोंसना, भरना ।

प्रा० खोखला (सं० कोटर) गु० खाली, छूछा, थोथा, पोला ।

प्रा० खोखा पु० वह हुंडी जिसके रुपये दिये जा चुके हों ।

प्रा० खोज पु० पता, निशान, ठिकाना, चिह्न ।

प्रा० खोट स्त्री० चूक, भूल, दोष, अवगुण ।

प्रा० खोटा गु० झूठा, नमकहराम, ख़राब ।

प्रा० खोदना (सं० खन्=खोदना वा क्षुद्=चूर चूर करना) क्रि० स० खनना, गोड़ना, कुरेदना ।

प्रा० खोना (सं० क्षय) क्रि० स० गँवाना, उड़ाना, नाश करना, हारना ।

प्रा० खोपरा (सं० खर्पर) पु० नारियल की गरी ।

प्रा० खोपरी (सं० खर्पर) स्त्री० कपाल की हड्डी, शिर की हड्डी, खोपड़ी ।

प्रा० खोह स्त्री० गुफा, गुहा, गड़हा ।

प्रा० खोरि }
खोरी } (सं० खोड़्=टेढ़ी चाल) भा० स्त्री० खुटाई, दोष, क़सूर ।

प्रा० खोल स्त्री० खोखला, २ मियान ।

प्रा० खोह स्त्री० गुफा, कंदला ।

प्रा० खौड़ स्त्री० तिलक, त्रिपुंड्र ।

प्रा० खौलना क्रि० अ० उबालना, उबलना, बहुत गर्म होना ।

सं० ख्यात (ख्या=प्रसिद्ध होना) कर्म० नामवर, प्रसिद्ध, प्रतिष्ठित, विदित, मशहूर, उजागर ।

सं० ख्याति (ख्या=प्रसिद्ध होना) भा० स्त्री० यश, नाम, कीर्ति, सराह, नामवरी ।

अं० ख्रीष्ट ईसवी ।

प्रा० ख्याल (खेल) पु० तमाशा, कौतुक, नक़ल, स्वाँग, खेल ।

फ़ा० ख्वाहिश क़ामना, चाह ।

ग

सं० ग (गै=गाना) पु० गन्धर्व,

२ गणेशजी, ३ यात्री, ४ गीत ।

प्रा० गंग (सं० गङ्गा) स्त्री० गंगा नदी ।

प्रा० गंज स्त्री० चाईचूंई, बादख़ोरा ।

प्रा० गंजा (गंज) गु० जिसके शिर में गंज हो, चँदला ।

प्रा० गंजना क्रि० स० नाश करना ।

प्रा० गँठजोरा (सं० ग्रन्थिजोड, ग्रंथि=गाँठ, जुड्=बाँधना) पु० गाँठ बाँधना ।

प्रा० गँठजोड़ाबाँधना बोल० ब्याह में दुलहा दुलहिन के आँचल से गाँठ बाँधना ।

प्रा० गँठकटा
गठकटा (सं०ग्रन्थि=गाँठ, कृत्=काटना)पु० जेब कतरा ।

प्रा० गंडा (सं० गण्डक)पु० घेरा, २ चार् कौड़ी, चार, ३ गँठीला तागा जो बालकों के गलेमें बाँधा जाता है, तावीज़ ।

प्रा० गंडासा पु० फरसा, तबल ।

प्रा० गंडेरी (सं० ग्रन्थि) स्त्री० ऊख का टुकड़ा ।

प्रा० गंधी (सं० गान्धिक)पु० अतरगुलाबजल आदि बेचनेवाला ।

प्रा० गँव
गौं पु० अवसर, दाँव, सुभीता, अवकाश, मौक़ा ।

प्रा० गँवाना (सं० गम्=जाना) क्रि० स० खोना, उड़ाना, फेंकना, खर्च करना ।

प्रा० गँवार (सं० ग्राम्य) गु० गाँव में रहनेवाला, २ अनपढ़, मूर्ख ।

प्रा० गँवी
गँवई (ग्राम्य)गु० गाँव का, गँवेला, दिहाती, पु० गाँव, दिहात ।

सं० गगण
गगन (गम्=जाना)पु० आकाश, आस्मान ।

प्रा० गगरी
गागरी (सं०गर्गरी, गर्गऐसा शब्द, रा=लेना) स्त्री० मटकी, कलशी, छोटाघड़ा, ठिलिया ।

सं० गङ्गा (गम्=जाना) स्त्री० एक नदी का नाम, भागीरथी, जाह्नवी, सुरसरी ।

प्रा० गङ्गाजमुनी(सं० गङ्गा + यमुना) स्त्री० कानका गहना, बाली, २ घोड़े अथवा बैलों की धौली और काली झूल, ३ धौला और काला मिलाहुआ रंग ।

सं० गङ्गाजल (गङ्गा=नदी का नाम, जल=पानी) पु० गङ्गाका पानी।

सं० गङ्गाद्वार (गङ्गा=नदी का नाम, द्वार=दरवाज़ा) पु० गंगोत्तरी, हरिद्वार, वह जगह जहाँ गङ्गा निकल कर बहती हैं ।

सं० गङ्गाधर (गङ्गा=नदी का नाम, धर=रखनेवाला, धृ=रखना) पु० शिव, महादेव, जिन्होंने पहले गङ्गा को अपनी जटा में रखलिया था।

सं० गङ्गासागर (गङ्गा, सागर=

समुद्र) पु० वह जगह जहाँ गङ्गा समुद्र से मिलती हैं ।

प्रा० गच्चपच्च बोल० भीड़भाड़, घना, गहरा, कशमकश ।

सं० गज (गज्=मस्त होना, शब्द करना) पु० हाथी ।

फ़ा० गज़ पु० दो हाथ का नाप, ३३ इंच वा ३६ इंच का नाप ।

सं० गजगामिनी (गज=हाथी, गम्=जाना) स्त्री० जिस स्त्री की चाल हाथी कीसी हो ।

प्रा० गजगाह (गज=हाथी, गाह=गहना) पु० हाथी व घोड़ों का गहना ।

सं० गजपति (गज=हाथी, पति=मालिक) पु० राजा, २ हाथी का मालिक अथवा हाथी पर चढ़ने वाला, ३ बड़ा हाथी ।

सं० गजपाल (गज=हाथी, पाल=पालनेवाला, पाल्=पालना) पु० महावत, हाथीवान ।

प्रा० गजमोती (सं० गजमुक्ता) पु० हाथी के शिर का मोती, गजमणि ।

सं० गजयूथ (गज=हाथी, यूथ=टोला, झुण्ड) पु० हाथियों का टोला, हाथियों का झुण्ड ।

प्रा० गजरा (सं० गर्जर) पु० गाजर का पत्ता, २ हाथ में पहनने का गहना ।

सं० गजराज (गज=हाथी, राजन्=राजा) पु० बड़ा हाथी, गजेन्द्र ।

सं० गजवदन (गज=हाथी, वदन=मुँह) पु० गणेशजी ।

सं० गजानन (गज=हाथी, आनन=मुँह) पु० गणेशजी ।

सं० गजारि (गज=हाथी, अरि=वैरी) सिंह, शेर ।

सं० गजेन्द्र (गज=हाथी, इन्द्र=राजा) पु० हाथियों का राजा, गजराज, २ इन्द्र का हाथी ।

सं० गञ्ज (गञ्ज्=मस्त होना वा शब्द करना) पु० ढेर, ख़ज़ाना, भंडार, २ हाट, बाज़ार ।

सं० गञ्जना भा० स्त्री० यातना, पीड़ा, तकलीफ़, जाँकन्दनी ।

सं० गञ्जित (गञ्ज् + इत) कर्म० लांछित, दूषित ।

प्रा० गटपट क्रि० वि० उलटपुलट, गड़बड़ ।

सं० गठक (गठ् + अक, गठ=निर्माण करना, बनाना) क० पु० बनानेवाला, मुसन्निफ़ ।

सं० गठन (गठ् + अन) भा० पु० निर्माण करना, तसनीफ़ करना ।

सं० गठित (गठ् + इत) कर्म० निर्मित, बनी हुई ।

प्रा० गट्ठा (सं० ग्रन्थि) पु० गठड़ी, बस्ता, २ लहसुन व प्याज़ आदि की गाँठ अथवा जड़, ३ जरीब का बीसवाँ हिस्सा, गट्ठा ।

प्रा० गठड़ी } (सं० ग्रन्थि) स्त्री०
गठरी } गाँठ, मोट, मोटरी ।

प्रा० गठिया (सं० ग्रन्थि) स्त्री० गठड़ी, गाँठ, एक प्रकार का वात रोग, फुलाव ।

प्रा० गठीला (गाँठ) क० गाँठदार, गाँठवाला, २ हरमुस्टा, संडमुसंड ।

प्रा० गड़गड़ाना क्रि० अ० गर्जना, गुड़गुड़ाना ।

प्रा० गड़गूदड़ पु० चिथड़ा, फटा पुराना कपड़ा ।

प्रा० गड़बड़ क्रि०वि० गटपट, उलट पुलट ।

प्रा० गड़रिया (गाडर=भेड़ी) पु० भेड़ी बकरी को चरानेवाला, रखवाला, चरवाहा, मेषपाल ।

प्रा० गड़हा } (सं० गर्त) पु० ग-
गढ़ा } ढ़ेला, खड्डा ।

प्रा० गड्डी स्त्री० काग़ज़के दश दस्ते ।

प्रा० गढ़ पु० कोट, दुर्ग, गढ़ा ।

प्रा० गढ़ना क्रि० स० ठोंकना, बनाना, सुधारना ।

प्रा० गढ़वार (सं० गाढ) गु० मोटा, गाढ़ा ।

सं० गण (गण्=गिनना) पु० समूह, थोक, झुंड, २ शिव के दूत, ३ सेना जिसमें २६ रथ ८१ घोड़े और १३५ पैदल हों, ४ गण आठ हैं जिनका काम वर्णरूप छंदमें पड़ताहै १ भगण २ जगण ३ सगण ४ यगण ५ रगण ६ तगण ७ मगण ८ नगण इनके जानने के वास्ते दोहा—

आदि मध्य अवसान में, भजस होहिं गुरु जान । यरत होहिं लघु क्रमहिं सो, मन गुरु लघु सब जान॥

सं० गणक (गण्=गिनना) क०पु० गिननेवाला, गणितज्ञ, ज्योतिषी, नजूमी ।

सं० गणता भा०समूहत्व, जमाअत ।

सं० गणना (गण्=गिनना) स्त्री० गिन्ती, संख्या ।

सं० गणनाथ (गण=शिव के दूत, नाथ=स्वामी) पु० गणेशजी ।

सं० गणनायक (गण, नायक=मालिक) पु० गणेशजी ।

सं० गणपति (गण,पति=मालिक) पु० गणेशजी, गजानन ।

प्रा० गणराऊ (सं० गणराज) पु० गणेशजी ।

सं० गणाधिप (गण + अधिप=मालिक) पु० गणेशजी, गणराज ।

सं० गणिका (गण=समूह, अर्थात् जिसके बहुत से पति हों) स्त्री० वेश्या, पतुरिया, कंचनी ।

सं० गणित (गण=गिनना) पु० हिसाब, अङ्कविद्या ।

सं० गणितज्ञ (गणित=हिसाब, ज्ञा=जानना) पु० हिसाब जाननेवाला ।

सं० गणेश (गण=महादेव के दूत, ईश=स्वामी) पु० गजानन, गणपति,

महादेव का बेटा ।

सं० गण्ड (गडि, मुँह का एक भाग होना) पु० गाल, २ हाथी का गाल ।

सं० गण्डकी (गडि=सींचना)स्त्री० एक नदी का नाम ।

सं० गुण्य (गण्=गिनना) कर्म० गिनने योग्य ।

सं० गत (गम्=जाना) क० गया हुआ, २ पाया हुआ, प्राप्त, ३ जाना हुआ ।

प्रा० गत } (गम्=जाना)स्त्री०चाल-
सं० गति } चलन, २ दशा, हाल, ३ रीति, राह, रास्ता, ४ ज्ञान, ५ उपाय, ६ क्रिया कर्म, ७ मोक्ष, मुक्ति ।

सं० गतागत (गत + आगत) भा० पु० जाना आना, आमदरफ़्त ।

सं० गताक्ष(गत=गई, अक्षि=आँख) गु० वह मनुष्य जिसकी आँख की रोशनी जाती रही, अंधा ।

सं० गतानुगतिक (गत=गया, अनुगतिक=पीछे चलनेवाला) क० एक के पीछे चलनेवाला, अनुयायी, अनुगामी, उमर खतम होगई ।

सं० गतायुः (गत=गई, आयुस्=उमर) गु० वह मनुष्य जिसकी उमर पूरी होगई ।

सं० गतिपरिपाटी स्त्री० फ़ौजी क़वायद ।

सं० गद पु० रोग, बीमारी, मर्ज़ ।

प्रा० गद्का (सं० गदा) पु० पटा।

प्रा० गदहा } (सं० गर्दभ, गर्द=
गधा } शब्द करना) पु० एक जानवर का नाम, खर ।

सं० गदहा (गद=रोग, हन्=नाश करना)क०पु०वैद्य, हकीम, डाक्टर।

सं० गदा (गद्=शब्द करना)स्त्री० सोंटा, लाठी, चोब ।

सं० गदाधर (गदा=सोंटा, धर=रखनेवाला, धृ=रखना) पु० विष्णुका नाम ।

सं० गदित (गद् + इत, गद्=कहना) कर्म० कहाहुआ ।

सं० गदी (गद + इ)क०पु०विष्णु, २ रोगी, मरीज़ ।

प्रा० गदेला पु०मोटा बिछौना, बिछौना जिसमें रूई बहुत भरी हुईहो।

सं० गद्गद (गद्=स्पष्ट, और गद=बोलना वा गद्गद् पूरा बोल नहीं निकलना) पु० मारेखुशी के पूरा बोल नहीं निकलना, गु० आनन्दित, प्रसन्न, प्रफुल्ल, बाग़बाग़, ख़ुश।

प्रा० गद्दी } स्त्री० बिछौना, २
गादी } आसन, ३ राजा का सिंहासन, तख़्त ।

सं० गद्य (गद्=बोलना) पु० छन्दरहित वाक्य, बिना छन्द का वाक्य, वार्त्तिक, नस्र ।

प्रा० गनना (सं० गणना, गण्=गिनना) क्रि० स० गिनना, शुमार

करना, गिन्ती करना ।

सं० गन्ता (गम् + ता, गम्=जाना) क० पु० गमनकर्ता, जानेवाला ।

सं० गन्तु क०पु०पथिक, मुसाफ़िर ।

सं० गन्ध (गन्ध=घूमना) स्त्री० बास, महक, सुगन्ध, सौरभ ।

सं० गन्धक (गन्ध) पु० एक पीले रंग की धातु ।

सं० गन्धमादन (गन्ध=महक, मादन =मस्त करनेवाला, मद्=मस्त करना) पु० एक पहाड़ का नाम, २ वंदरों के एक सरदार का नाम, ३ गन्धक ।

सं० गन्धराज (गन्ध=महक, राज= शोभना) पु० चन्दन, २ सुगन्धित फूल ।

सं० गन्धर्ब (गन्ध=सुगन्ध, अर्व्= जाना) पु० स्वर्ग का गवैया ।

सं० गन्धवह }
गन्धवाह } (गन्ध=सुगन्ध, वह= लेजाना) पु० हवा, पवन, वायु, २ कस्तूरिया हरिण, ३ नाक, नासिका ।

सं० गन्धसार (गन्ध=सुगन्ध, सार= तत्त्व) पु० चन्दन, श्रीखण्ड ।

सं० गन्धार (गन्ध=सुगन्ध, ऋ=जाना) पु० एक राग का नाम, २ क़न्धार देश ।

प्रा० गन्धारी (सं० गान्धारी, गान्धार=क़ंधारदेश) स्त्री० क़ंधारदेश के राजा की बेटी, धृतराष्ट्र की पत्नी और दुर्योधन की मां ।

प्रा० ग़प स्त्री० इधर उधर की झूठ सच बात, बक-बक, झक-झक ।

प्रा० ग़पमारना बोल० झूठी सच्ची बातें करना ।

प्रा० ग़पशप बोल० झूठी सच्ची बात, ग़प ।

सं० गम्भीर }
गम्भीर } (गम्=जाना) गु० गहरा, अथाह, अवगाह, २ धीर, धीमा, सोची, भारी, गरुवा, निगूढ़, अमीक़, हलीम ।

सं० गमन (गम्=जाना) भा० पु० चलना, जाना, चलन, यात्रा ।

सं० गमनागमन (गमन + आगमन) भा० पु० आना जाना, आमदरफ़्त ।

सं० गमी क० पु० जानेवाला ।

प्रा० ग़मी क० पु० ग़म करनेवाला, रंज करनेवाला ।

सं० गम्य (गम्=जाना) कर्म० जाने योग्य, पाने योग्य, जानने योग्य ।

प्रा० गयन्द }
गैंद } (सं० गजेन्द्र) पु० बड़ा हाथी, गजेन्द्र ।

सं० गया (गै=गाना वा गय एक राक्षस का नाम) स्त्री० सूबे बिहार में एक नगर है जो हिंदुओं का बड़ा तीर्थस्थान है ।

प्रा० गयाली }
गयावाल } (सं० गयालय, गया =नगर का नाम, आलय=घर) पु० गया के ब्राह्मण जो यात्रियों को पिण्ड श्राद्ध आदि

कराते हैं ।

सं० गर (गॄ=निगलना वा निकाल देना)पु०विष,ज़हर,२रोग,गला।

प्रा० गरजना (सं० गर्जन)क्रि०अ० गूँजना, घड़घड़ाना, बादलों का अथवा सिंह का शब्द करना ।

सं० गरल (गॄ=निगलना वा निकालदेना) पु० विष, ज़हर, माहुर, हलाहल ।

प्रा० गरवा (सं०गौरव)गु० भारी, गम्भीर, धीर, मुतहम्मिल, बुर्दबार, २ बड़ा, प्रतिष्ठित ।

सं० गरिमा(गुरु=बड़ा)स्त्री०गुरुता, बड़ाई, गरुआई, बोझ, अहंकार ।

सं० गरिष्ठ
गरीय } गु० भारी, गरुआ ।
गरीयान्

प्रा० गरी स्त्री० नारियल का गूदा, खोपरा ।

प्रा० गरुआई } (सं०गुरुता)भा०
गुरुआई } स्त्री० भार, बोझ ।

सं० गरुड़(गरुत्=पंख,डी=उड़ना) पु० पक्षियों का राजा, विष्णुका वाहन, एक तरह के पखेरूका नाम।

सं० गरुड़ध्वज (गरुड़=पखेरुओं का राजा, ध्वजा=पताका, अर्थात् जिसकी ध्वजा में गरुड़ का चिह्न है) पु० विष्णु भगवान् ।

सं० गरुत् (गॄ=शब्द करना वा निकालना) पु०पंख, पाख, पर ।

सं० गर्ग (गॄ=बोलना वा जानना वा जतलाना) पु० एक मुनि का नाम जो ब्रह्मा का बेटा और वसुदेव जी का कुलगुरु था ।

सं० गर्ज } (गर्ज=गर्जना)पु० बा-
गर्जन } दलों का शब्द, सिंहका शब्द, गाजना ।

सं० गर्त (गॄ=निकालना वा निगलना)पु० गढ़ा, गड़हा, खड्डा।

सं० गर्दभ (गर्द्=शब्द करना) पु० गधा ।

सं० गर्ब } (गर्ब् वा गर्व्=घमंड
गर्व } करना)पु० घमंड,अहंकार, दर्प, अभिमान, ग़रूर ।

सं० गर्भ (गॄ=शब्द करना) पु० गाभ, पेट, कोख, हमल, सन्धि, कटहर, कंटक ।

सं० गर्भवती } (गर्भ) स्त्री० पेट
गर्भिणी } से, गाभिन, दोजीवा, दो जीव से ।

सं० गर्भश्राव } (गर्भ=गाभ,श्रु वा
गर्भस्राव } स्रु=गिरना) पु० गर्भ का गिरना, गाभ गिरना, गर्भपात ।

सं० गर्व भा० घमंड, ग़रूर ।

सं० गर्वित (गर्व्=घमंड करना) गु०घमंडी, अहंकारी, अभिमानी, मग़रूर ।

सं० गर्हक (गर्ह्+अक,गर्ह्=निन्दा करना) क० पु० निन्दक, चुगुल ।

सं० गर्हण (गर्ह्+अण) भा० पु० निन्दा, मज़म्मत ।

सं० गर्हित (गर्ह्+इत) कर्म० निन्दित, मज़मूम ।

सं० गल (गल्=खाना, वा गृ=निगलना) पु० गला, गरदन ।

प्रा० गलदेना बोल० फाँसी देना ।

प्रा० गलबहियाँ (सं० गलबाहु, गल=गला, बाहु=भुजा) स्त्री० गलबाँह, गले में हाथ डालना ।

प्रा० गलबहियाँ डालना बोल० किसी के गले में हाथ डालना।

प्रा० गलना (सं० गलन, गल्=गिरना) क्रि०अ० पिघलना, नर्म होना, २ सड़ना, बिगड़ना ।

प्रा० गला (सं० गल) पु० कण्ठ, गरदन, ग्रीवा, नरेटी, २ स्वर, आवाज़, गु० सड़ाहुआ, पिघलाहुआ।

प्रा० गलाबैठना } बोल० आवाज़ बैठना, भारी शब्द होना, गला घनघनाना, गला खर्खराना ।
गलापड़ना

प्रा० गलाफाँसना बोल० फाँसी देना, गलदेना, गला दबाना, दम बन्द करना ।

प्रा० गलादबाना बोल० गला घोंटना, नरेटी दबाना, फाँसी देना ।

प्रा० गलाघोंटना बोल० नरेटी दबाना, गला दबाना, दम बन्द करना।

प्रा० गलेपड़ना बोल० खुशामद करना, जो मनुष्य प्रीति नहीं करना चाहता उससे प्रीति किया चाहना।

प्रा० गलेपड़ी बजायेसिद्ध बोल० जो काम आपड़े उसको करनाही चाहिये ।

प्रा० गले का हार होना बोल० किसीसे बड़ी लगन के साथ प्यार करना, मन हर लेना, सदा मन में बसना ।

प्रा० गलेलगना बोल० मिलना, छाती से लगाना ।

प्रा० गलाना (गलना) क्रि०स० पिघलाना, २ सड़ाना ।

सं० गलित (गल्=गिरना) कृ० गलाहुआ, पड़ाहुआ, सड़ाहुआ, गिरा हुआ, जो गिर पड़ा हो ।

प्रा० गली स्त्री० छोटा रास्ता, तंग रास्ता ।

प्रा० गलीगली बोल० एक गली से दूसरी गली तक, हर गली ।

प्रा० गवन (सं० गमन) भा० पु० जाना, चलना, कूच ।

सं० गवय (गो=गाय) पु० गाय के जैसा जानवर, वन की गाय, २ एक वानर का नाम ।

अं० गवर्नमेण्ट राजकीय नियम जो पार्लीमेण्ट और लेजिसलेटिव कौंसिल या सभा में बनते हैं उन्हीं नियमों के अनुसार राज काज किये जाते हैं ।

प्रा० **गवहि** (सं० गमन) भा० मौके से जाना, गौं से जाना ।

सं० **गवाक्ष** (गो=गाय वा किरण, अक्षि=आँख वा छेद) पु० झरोखा, मोखा, झंझरी, जाली, २ गाय की आँख, ३ एक वानर का नाम ।

प्रा० **गवासा** (सं० गवाश, गो=गाय, अश=खाना) पु० गाय को खानेवाला, क़साई ।

प्रा० **गवैया** (सं०गायक) कृ० पु० गानेवाला ।

सं० **गव्य** (गो=गाय) पु० दूध आदि, गु० गाय का ।

प्रा० **गहगहाना** (सं० गह्=गहरा होना) क्रि० अ० बाजना, नक़ारोंका बाजना, २ हिलोरना, लहकना ।

प्रा० **गहण** (सं० ग्रहण) भा० पु० ग्रहण, लेना ।

सं० **गहन** (गह्=घना होना वा गाह्=मथना) पु० वन, कुंज, झाड़ी, गु० गहरा, सघन, विकट ।

प्रा० **गहना** (सं०ग्रहण, ग्रह्=लेना) क्रि० स० पकड़ना, लेना, ग्रहण करना ।

प्रा० **गहना** पु० ज़ेवर, भूषण, २ गिरो, गिरवी, बंधक ।

प्रा० **गहनेधरना** }
गहनोधरना } बोल० गिरो रखना, गिरवी रखना, बंधक रखना ।

प्रा० **गहरा** (सं० गम्भीर) गु० गम्भीर, अथाह ।

प्रा० **गहरु** स्त्री० देरी, देर, विलम्ब ।

प्रा० **गहवा** (गहना=पकड़ना) पु० संडसी, चिमटा ।

प्रा० **गह्वर** (सं० गह्वर, गाह्=मथना वा पैठना) स्त्री० गुफा, गुहा, कंदरा, गु० सघन, कुंज ।

प्रा० **गाँजा** (सं० गञ्जिका, गज्=मस्त होना) पु० एक नशेकी चीज़ ।

प्रा० **गाँठ** (सं० ग्रन्थि) स्त्री० गिरह, जोड़, बंध, २ गिल्टी, फुसड़ी, फुन्सी, ३ गठड़ी, मोटड़ी ।

प्रा० **गाँठ उखड़ना** बोल० जोड़ का सरक जाना, जोड़का उतरना, जोड़का खुलजाना, गाँठ या हड्डी या नस का बिचलना ।

प्रा० **गाँठ पड़ना** बोल० किसी के मन में किसी के साथ दुश्मनी अथवा वैर अथवा विरोधका जमना ।

प्रा० **गाँठका पूरा** बोल० धनवान, दौलतमन्द, धनवन्त, धनी, मालदार ।

प्रा० **गाँठका खोना** बोल० अपनी हानि करना, अपना नुक़सान आप करना ।

प्रा० **गाँठखोलना** बोल० बहुत खर्च करना, थैली खोलना, २ पक्षपात का छोड़ना ।

प्रा० **गाँठगठीला** बोल० गाँठदार (जैसे लकड़ी), ठोस, गाढ़ा ।

प्रा० **गाँठना** (सं० ग्रन्थन, ग्रन्थ्=

जोड़ना) क्रि० स० बाँधना, जकड़ना, मिलाना, जोड़ना, जुटाना, लगाना, साटना, २ वश में करना, वश में लाना, अपना करना, लुभाना, मोहलेना ।

प्रा० गाँडर पु० काँस, एक तरह की घास ।

प्रा० गाँड़ा पु० गन्ना, ईख, ऊख ।

प्रा० गाँव } (सं० ग्राम) पु० बस्ती,
गाम } खेड़ा ।

प्रा० गाई (सं० गौ) स्त्री० गाय, गैया ।

प्रा० गागर } (सं० गर्गरी) स्त्री०
गागरी } गगरी, मटकी, कलशी ।

प्रा० गाछ (सं० गच्छ, गम्=जाना) पु० पेड़, वृक्ष ।

प्रा० गाजना (सं० गर्जन) क्रि० अ० गर्जना, बादलों का अथवा सिंह का शब्द करना, २ प्रसन्न होना, हर्षित होना ।

प्रा० गाजर (सं० गर्जर) स्त्री० एक तरह का कन्द अथवा मूल जिसकी तरकारी होती है और ऐसे भी खाते हैं ।

प्रा० गाजाबाजा (गाजनाबाजना) बोल० कई एक बाजों का शब्द, आनन्द ।

प्रा० गाड़ना (सं० गर्तन, गृ=निकालना या निगलना) क्रि० स० तोपना, मिट्टी देना, समाध देना, २ जमाना, खड़ा करना, पक्का करना, दृढ़ करना, लगाना ।

प्रा० गाड़ (सं० गर्त) गड़हा, खत्ता, खौं ।

प्रा० गाडर स्त्री० भेड़ी, भेड़ ।

प्रा० गारुड़ (गारुड़ अर्थात् जिसका देवता गरुड़ है) पु० साँप के विष उतारने का मन्त्र, विष झाड़ने का मन्त्र ।

प्रा० गाड़ा (सं० गन्त्री) पु० छकड़ा, लहड़ू, शकट, २ (गर्त) खाई, गड़हा, ३ घात, दाँव ।

प्रा० गाड़ी (सं० गन्त्री, गम्=जाना) स्त्री० मंझोली, शकटी, रथ, बहल ।

प्रा० गाड़ीवान (गन्त्रीवाह) पु० गाड़ीवाला, कोचवान, सारथि ।

प्रा० गाढ़ा (सं० गाढ, गाह्=मथना) गु० मोटा, पोढ़ा, २ मजबूत, दृढ़, ३ पक्का, चतुर, होशियार ।

सं० गाण्डिव (गाण्डि=गाँठ, अर्थात् जिसमें गाँठ हो) पु० अर्जुन का धनुष्, २ कोई धनुष्, चाहे जैसा धनुष् ।

प्रा० गात (सं० गात्र) पु० शरीर, देह, अंग, तन, २ कपड़ा, वसन, वस्त्र ।

प्रा० गाता पु० पूठा, पिठौता, गत्ता, जिल्द ।

सं० गात्र (गा=जाना) पु० शरीर, देह, तन, अंग ।

सं० गाथक (गै=गाना) कृ० पु०

गाने वाला, गवैया, गायक, कथक ।

सं० गाथा (गै=गाना) स्त्री० गीत, गाना, कथा, २ श्लोक, पद्य, छन्द ।

प्रा० गाद स्त्री० तलछट, मैल, झाग ।

प्रा० गाथना } (सं० ग्रन्थन, ग्रन्थ्=
गाँथना } जोड़ना) क्रि० स० गूँथना, बनाना ।

सं० गाधि (गाध्=ठहरना वा चाहना) पु० विश्वामित्र ऋषि का बाप ।

सं० गाधितनय (गाधि+तनय=बेटा) पु० विश्वामित्र ऋषि ।

प्रा० गाधिसुवन (सं० गाधिसूनु, गाधि+सूनु=बेटा, सू=पैदा होना) पु० विश्वामित्र ऋषि ।

सं० गान (गै=गाना) भा० पु० गीत, नग़मा, गाना ।

प्रा० गाना (सं० गान) क्रि० स० अलापना, राग उच्चारना, २ कहना ।

सं० गान्धर्व (गन्धर्व) गु० गन्धर्व का, पु० गाना, गीत, २ एक तरह का ब्याह जो केवल दुलहा और दुलहिन की मर्ज़ी से होजाता है ।

सं० गान्धार (गन्ध=सुगन्ध, ऋ=जाना) पु० एक रागका नाम, २ कंधार-देश ।

सं० गान्धारी स्त्री० गान्धार राजा की बेटी, धृतराष्ट्र की स्त्री ।

प्रा० गाभ (गर्भ) पु० गर्भ, पेट ।

प्रा० गाभा (गर्भ) पु० केले के पेड़ का नया पत्ता ।

प्रा० गाभिन (सं० गर्भिणी) स्त्री० गर्भवती (जैसे गाय भैंस आदि) ।

सं० गामी } (गम्=जाना) कृ०
गामुक } पु० जानेवाला, चलनेवाला, गामिनी=चलनेवाली ।

प्रा० गाय (सं० गौ) पु० गैया, गाय, धेनु ।

प्रा० गायगोठ } (सं० गो+गोष्ठ
गाइगोठ } गो=गाय, स्था=ठहरना) स्त्री० गोशाला ।

सं० गायक (गै=गाना) पु० गानेवाला, गवैया ।

सं० गायत्री (गायन=गानेवाले को, त्रै=बचाना) स्त्री० एक प्रकार का मन्त्र, वेदमाता, सूर्य की वन्दना, २ एक छन्द का नाम जिसके हरएक पाद में छः अक्षर होते हैं ।

सं० गायन (गै=गाना) पु० गानेवाला, गवैया ।

अ० ग़ारत बरबाद, नष्ट, तबाह ।

प्रा० गार } (सं० गालि, गल्=गि-
गारी } रना) स्त्री० बुरी बात, बुरावचन, गाली ।

प्रा० गारि पु० तावा, तवा ।

प्रा० गारुड़ी (सं० गारुडिक, गरुड) पु० विष उतारनेवाला, विष झाड़ने वाला ।

प्रा० गाल (सं० गल, गल्=खाना) पु० कपोल, आँखों के नीचे का

भाग, २ चोचला ।

प्रा० गालकरना
गालबजाना बोल० चोचला करना, बकवाद करना ।

सं० गालव पु० एक ऋषि का नाम ।

प्रा० गाली (सं०गालि, गल्=गिरना) स्त्री० गार, गारी, बुरी बात, बुरा वचन ।

प्रा० गालीगलौज बोल० आपस में गाली देना, झगड़ा, लड़ाई, तकरार ।

प्रा० गालीदेना बोल० गाली बकना, बुराभला कहना, झिड़कना, बुरा कहना, थुथकारना ।

प्रा० गावदी गु० भोला, मूर्ख, बेवकूफ, अज्ञानी ।

प्रा० गावघी (सं० गोघृत) पु० गाय का घी ।

प्रा० गाह (सं०ग्राह) पु०मगर, ग्राह ।

प्रा० गाहक (सं०ग्राहक, ग्रह्=लेना) पु० मोल लेनेवाला, सौदा खरीदनेवाला, खरीददार, लेनेवाला ।

प्रा० गाहना (सं० गाह्=मथना) क्रि०स० ढूँढ़ना, खोजना, तलाश करना, २ कुचलना, मलना, दबाना ।

प्रा० गाहा (सं०गाथा) स्त्री० कथा, २ समूह ।

प्रा० गिड़गिड़ाना क्रि० अ०घिघियाना, बिनती करना, चिरौरी करना ।

प्रा० गिणती
गिन्ती (सं० गणित, गण्=गिनना) स्त्री० संख्या, गिनना, हिसाब ।

प्रा० गिणना
गिनना (सं० गणन) क्रि० स० गिन्ती करना, हिसाब करना, शुमार करना ।

प्रा० गिद्ध (सं० गृध्र) पु० गीध, एक पखेरू का नाम, शकुनी ।

प्रा० गिरगिट पु० एक कीड़ा, छिपकली, टिकटिकी ।

प्रा० गिरना क्रि० अ० पड़ना, गिरपड़ना ।

प्रा० गिरतेपड़ते बोल० बहुत कठिनता से ।

सं० गिरा (गॄ=निगलना वा निकालना) स्त्री० वाणी, वचन, २ सरस्वती, शारदा, ३ कविताई ।

सं० गिरि (गॄ=निगलना वा निकालना) पु० पहाड़, पर्वत, २ संन्यासी, गु० पूज्य, पूजनीय, प्रतिष्ठित, मान्य ।

सं० गिरिजा (गिरि=पहाड़, जन्=पैदा होना) स्त्री० पार्वती, गौरी, उमा, हिमालय की बेटी ।

सं० गिरिधर
गिरिधारी (गिरि=पहाड़, धर वा धारी=उठानेवाला, धृ=रखना) पु० श्रीकृष्ण, गु० पहाड़ को उठानेवाला ।

प्रा० गिरिन्दा (सं० गिरीन्द्र) पु० बड़ा पहाड़, सुमेरु पहाड़, हिमा-

लय पहाड़।

सं० गिरिराज (गिरि=पहाड़, राज=राजा) पु० पहाड़ों का राजा, गोवर्द्धन, हिमालय, सुमेरु, २ श्रीकृष्ण का नाम।

सं० गिरिवर (गिरि=पहाड़, वर=बड़ा) पु० बड़ा पहाड़।

सं० गिरिसुता (गिरि=पहाड़, सुता=बेटी) स्त्री० पार्वती, गौरी, गिरिजा, उमा।

सं० गिरीन्द्र (गिरि=पहाड़, इन्द्र=राजा) पु० हिमालय, सुमेरु, गिरीश।

सं० गिरीश (गिरि=पहाड़, ईश=स्वामी) पु० महादेव, शिव, २ हिमालय।

प्रा० गिलई भा० स्त्री० निगलजाइ।

सं० गिलन (गॄ=निगलना वा खाना) भा० पु० भक्षण, खाना।

अं० गिलन छः बोतलका पैमाना।

सं० गिलित (गिल्+इत) कर्म० स्त्री० खादित, भक्षित, खाई हुई।

सं० गीतिका एक छन्द का नाम।

प्रा० गिलहरी स्त्री० एक जानवर का नाम, रूखी, चीखुर।

प्रा० गिलौरी स्त्री० पान की बीड़ी।

सं० गीत (गै=गाना) पु० गान, भजन।

सं० गीता (गै=गाना) स्त्री० एक पुस्तक का नाम जिसमें श्रीकृष्ण और अर्जुन का संवाद है और उस को भगवद्गीता कहते हैं इसके सिवाय रामगीता, पाण्डवगीता आदि और भी गीता हैं पर इन सबमें भगवद्गीता बहुत प्रसिद्ध है।

प्रा० गीदड़ पु० शियाल, शृगाल।

प्रा० गीध (सं० गृध्र) पु० गिद्ध, गृध्र।

प्रा० गीला गु० ओदा, भीगा, सीला।

सं० गु कर्म० विष्ठा, ग़लीज़।

प्रा० गुंजान गु० गहरा, सघन, घना, पासपास।

प्रा० गुजरात (सं० गुर्जर) स्त्री० एक देशका नाम, हिंदुस्तान का एक सूबा।

प्रा० गुजराती गु० गुजरात का।

सं० गुञ्जन भा० गूँजना।

सं० गुञ्ज (गुजि=गुजरना) ण० पुष्पस्तवक, गुलदस्ता, फूलों का गुच्छा।

प्रा० गुञ्ज }
सं० गुञ्जा } (गुजि=शब्द करना) पु० घुंघची लाल, एक बेली का नाम।

सं० गुटिका (गु=शब्द करना) स्त्री० दवाई की गोली, २ चाहे जैसी गोली।

सं० गुड़ (गुड्=चूर्ण करना) पु० मीठा, ऊखके रस से बनी हुई मीठी चीज़।

सं० गुडाकेश (गुडाका + ईश) क० पु० गुडाका=निद्रा, ईश=जीतने वाला, निद्रा जीतनेवाला।

वेदार, महाराज अर्जुन का नाम ।

प्रा० गुडंबा } (सं० गुडाम्र) पु०
गुड़ुंबा } केरी पाक, गुड़ के
रस में पकाया हुआ कच्चा आम ।

प्रा० गुड़गुड़ी स्त्री० छोटा हुक़ा ।

प्रा० गुड़िया स्त्री० लड़कियों का खिलौना ।

प्रा० गुड्डी स्त्री० पतंग, तिलंगी, कनकौवा ।

सं० गुण (गुण्=बुलाना वा गुनना) पु० स्वभाव, विशेषण, २ हुनर, चतुराई, प्रवीणता, विद्या, ३ रस्सी, डोरी, ४ सत्त्व रज तम ये तीन गुण, ५ कृपा, मेहरबानी, भला, भलाई, ६ गुना हुआ, बार ।

प्रा० गुणकरना बोल० भला करना, भलाई करना ।

प्रा० गुणका पलटा देना बोल० भलाई का बदला देना, भलाई के पलटे भलाई करना ।

प्रा० गुणमानना बोल० भला मानना, अहसान मानना ।

सं० गुणक (गुण्=गुनाकरना) क० पु० वह अंक जिससे गुणा किया जाता है, मज़रूबफ़ीह ।

प्रा० गुणगाहक (सं० गुणग्राहक) क० पु० गुण जाननेवाला, गुणग्राही, क़दरदान ।

सं० गुणग्राही } (गुण=विद्या, हु-
गुणग्राहक } नर, ग्राही=लेनेवाला, ग्रह्=लेना) क० पु० गुण को जाननेवाला, गुणग्राहक ।

सं० गुणज्ञ (गुण, ज्ञा=जानना) क० पु० गुण को जाननेवाला ।

सं० गुणन } (गुण्=गुणना) भा०
गुणना } पु० गुना करना, समझना, अभ्यास करना ।

सं० गुणवान् } (गुण=हुनर, वत्=
गुणवन्त } वाला) गु० गुणी, चतुर, प्रवीण, पण्डित ।

सं० गुणित (गुण्=गुणना) कर्म० गुणा हुआ ।

सं० गुणी (गुण) गु० गुणवान्, विद्यावान्, निपुण, प्रवीण, हुनरमन्द ।

सं० गुण्य (गुण्=गुणना) कर्म० पु० जो अंक गुणाजाय, मज़रूब ।

प्रा० गुन (सं० गुण) पु० (गुण शब्द को देखो) ।

प्रा० गुनगुना गु० थोड़ा गर्म ।

सं० गुप्त } (गुप्=छिपाना वा बचाना)
गोपित } कर्म० छिपाहुआ, ढकाहुआ, लुका हुआ, २ बचा हुआ, रक्षित ।

सं० गुप्ति भा० स्त्री० रक्षण, पोशीदगी ।

प्रा० गुप्ती (सं० गुप्त) स्त्री० छिपी हुई तलवार, लाठी के भीतर छोटी तलवार ।

सं० गोप्ता (गुप्+ता) क० पु० रक्षक, मुहाफ़िज़ ।

सं० गोप्य कर्म० गुह्य, छिपानेयोग्य ।

प्रा० गुफा (सं० गुहा) स्त्री० खोह,

कंदरा, गुहा, पहाड़के बीचकी जगह।

सं० गुरु (गॄ=निकालना, अज्ञान को) वा (गॄ=उपदेश करना, धर्मका) पु० मंत्र देनेवाला, मंत्र उपदेशक, धर्म सिखानेवाला, आचार्य, उपदेशक, २ बाप, अथवा अपना और कोई बड़ा पुरुषा, ३ शिक्षक, पढ़ानेवाला, ४ बृहस्पति, देवताओं का गुरु, ५ द्विमात्रिक अक्षर, दीर्घस्वर, अनुस्वार और विसर्गवाला स्वर, संयोगी, अक्षरों के पहले का स्वर, गु० भारी, बड़ा, पूज्य, पूजनीय ।

सं० गुम्फ (गुम्फ्=गुहना, पिरोना) भा० पु० गूँथना, ग्रंथन, बाहुभूषण ।

सं० गुम्फित कर्म० ग्रंथित, गुहीहुई ।

सं० गुरुतर गु० अतिगरुआ ।

सं० गुरुतम गु० अत्यन्त गरुआ, बहुतही भारी ।

प्रा० गुरुमुखहोना बोल० गुरु से मंत्र लेना, किसीका चेला होना ।

सं० गुरुजन (गुरु=बड़े, जन=मनुष्य) पु० बड़े लोग, बुज़ुर्ग लोग ।

सं० गुरुत्व (गुरु) भा० पु० बोझ, भार, २ बड़ाई, गंभीरता, हिल्म, बुर्दबारी ।

सं० गुरुवार (गुरु=बृहस्पति, वार=दिन) पु० बृहस्पतिवार, जुमेरात ।

सं० गुर्विणी } (गुरु=भारी, अर्थात्
गुर्वी } जिसके गर्भ हो)
स्त्री० गर्भवती, गर्भिणी, हामिला ।

प्रा० गुलाई (सं० गोलता) भा० स्त्री० गोलाई, गोलापन, मुहीत ।

प्रा० गुलाबजामन पु० एक तरह की मिठाई, एक तरह का फल ।

प्रा० गुलेल } स्त्री० एक तरह का
गुलैल } धनुष ।

सं० गुल्फ पु० पैरकी गाँठ, टखना ।

सं० गुल्म (गुड्=रक्षा करना, लपेटना) पु० वायुगोला, प्लीहा, २ झाड़, लता, ३–९ गज ८ रथ ८ अश्व ४५ पदाति सेना की संख्या, ४ त्रिष्णु, ५ आवरण ।

सं० गुह (गुह्=ढकना) पु० निषाद, शृंगवेरपुरका राजा और श्रीरामचन्द्र का मित्र, २ कार्त्तिकेय ।

प्रा० गुहना (सं० गुम्फन, गुम्फ्=गूँथना) क्रि० स० गूँथना, पिरोना ।

सं० गुहा (गुह्=ढकना) स्त्री० गुफा, खोह, कंदरा ।

प्रा० गुहार स्त्री० पुकार, शोर, हाहू, २ सहाय ।

सं० गुह्य (गुह्=ढकना, छिपाना) कर्म० छिपाने योग्य, गुप्त, पु० शरीर के ढके हुए अंग ।

सं० गुह्यक (गुह्=छिपाना) पु० कुबेर के दूत, एक प्रकार के देवता ।

प्रा० गुसाईं } (सं० गोस्वामी)
गोसाईं } पु० मालिक, स्वामी,
२ संन्यासी ।

प्रा० गूँगा गु० मुँहबंधा, अनबोलता,

मूक, मौन ।

प्रा० गूँजना (सं० गुञ्जन, गुजि=शब्द करना) क्रि० अ० भिनभिनाना, २ पीछी आवाज़ आना, प्रतिध्वनि होना, गूँज रहना, ३ गर्जना, घुर्राना ।

प्रा० गूँझा पु० एक तरहकी मिठाई ।

प्रा० गूँथना (सं० गुम्फन, गुम्फ्=गूँथना) क्रि०स० पिरोना, लड़ियाना, गुहना ।

प्रा० गूजर (सं० गुर्जर=गुजरात) पु० एक जाति जिसका धंधा दूध बेंचने का है और जो गुज़रात से फैली है, ग्वाला, गोप, अहीर, स्त्री० गूजरी=अहीरी, गोपी, गूजर की स्त्री ।

प्रा० गूजरी स्त्री० लुगाइयों के हाथ में पहनने का एक गहना ।

सं० गूढ़ (गुह्=छिपाना) गु०सूक्ष्म, कठिन, २ छिपा, गुप्त ।

प्रा० गूदा (सं० गोर्द) पु० सार, भेजा ।

प्रा० गूलर पु० अंजीर, डूमर, एक फल का नाम ।

सं० गृध्नु क० पु० लोभी, लालची ।

सं० गृध्र (गृध्=चाहना) पु०गीध, गिद्ध ।

सं० गृध्रराज (गृध्र=गीध, राज=राजा) पु० जटायु पक्षी जिसका वर्णन रामायण में है ।

सं० गृह (ग्रह वा गृह्=लेना) पु० घर, बासा, गेह, मकान, वास करने की जगह, रहने की जगह, डेरा, २ स्त्री, घरवाली ।

सं० गृहस्थ (गृह=घर,स्था=ठहरना) पु० घरवाला, घरबारी, दूसरा आश्रम, २ किसान ।

सं० गृहस्थाश्रम (गृहस्थ + आश्रम) पु० गृहस्थ का धर्म अथवा काम, दूसरा आश्रम (आश्रम शब्द को देखो) ।

सं० गृहागत (गृह + आगत,आ + गम् + त) क० पु० आगन्तुक, अतिथि, मेहमान, पाहुन, प्राघुण ।

सं० गृहिणी (गृह=घर) स्त्री० घरवाली, लुगाई, जोरू, भार्या, स्त्री, पत्नी ।

सं० गृही (गृह) पु० घरवाला, गृहस्थ ।

सं० गृहीत (गृह्=लेना) कर्म०पु० लियाहुआ, पकड़ा हुआ, स्वीकार कियाहुआ, ग्रहण किया हुआ ।

प्रा० गेंड़ा (सं० गण्ड) पु० एक जानवर का नाम जिसके पुट्ठों पर के चाम की ढाल उत्तम बनती है ।

प्रा० गेंद (सं० गेण्डु, गम् वा गा=जाना) स्त्री० लड़कों के खेलनेकी कपड़े की या चमड़े की गोल चीज़, कन्दुक ।

प्रा० गेंदतड़ी खेलना बोल० डंडे

से गेंद को मारके खेलना।

प्रा० गेंदा (सं० गेण्डक, गम् वा गा=जाना) पु० एक फूल का नाम, २ गेंद।

सं० गेय (गा=गाना) कर्म० गाने योग्य।

प्रा० गेरू (सं०गैरिक, गिरि=पहाड़) स्त्री० पहाड़ की लाल मिट्टी।

प्रा०गेरुआ (गेरु) गु० गेरू से अथवा गेरु जैसा रंगा हुआ।

सं० गेह (ग=गणेशजी, ईह्=चाहना अर्थात् घर की नेंव डालने के दिन ही से घर में गणेशजी को स्थापन करते हैं) पु० घर, मकान।

प्रा० गेहूँ (सं०गोधूम, गुध्=ढकना) पु० गोहूँ, एक प्रकार का अनाज, गंदुम।

प्रा० गेहुँआ } (गेहूँ) पु० गेहूँ का
गेहुँवा } रंग, २ एक प्रकार की घास, गु० गेहूँवरणा, साँवला, गेहूँ के रंग जैसा।

प्रा० गेगली स्त्री० बोदी, फूहड़, लुथरी, बेसलीक़ा।

प्रा० गैया } (सं० गौ, गम्=जाना)
गइया } स्त्री० गाय।

प्रा० गैल पु० रास्ता, मार्ग, पैंड़ा, बाट।

सं० गो (गम्=जाना) पु० स्त्री० गाय, गैया, धेनु, २ स्वर्ग, ३ किरण, ४ पृथ्वी, धरती, ५ पानी, ६ वाणी, बोली, ७ इन्द्रिय, ८ स्वर्ग, किरण, ९ वज्र।

प्रा० गोई (सं० गुप्त) गु० छिपा हुआ, गुप्त, क्रि० स० छिपाया।

सं० गोकर्ण पु० पुरुष विशेष, मृग।

सं० गोकुल (गो=गाय, कुल=समूह वा घर) पु० व्रज, मथुरा के पास एक गाँव जहाँ नन्दजी रहते थे और जहाँ श्रीकृष्ण ने अपना बालपन बिताया, श्रीकृष्ण का जन्मस्थान, २ गायों का समूह, ३ गायों के रहने की जगह।

प्रा० गोखुरू (सं० गोखुर, गो=गाय, खु=खुर) पु० एक पौधेका नाम, २ एक प्रकार का गहना।

सं० गोचर (गो=इन्द्रिय, चर=चलना जिसमें इन्द्रियां जाती हैं) पु० इन्द्रियों के विषय जैसे रूप, रस, गन्ध, शब्द और स्पर्श, गु० जो इन्द्रियों से जाना जाय।

प्रा० गोट (सं० गुटिका) स्त्री० चौपड़ वा शतरंज की गोटी, २ संजाफ, कोर।

प्रा० गोटा पु० सोना या चाँदी के बुने हुए तार, किनारी, तागतोड़।

प्रा० गोटी (सं० गुटिका) स्त्री० शीतला का दाग़, चेचक का दाग़।

प्रा० गोड़ पु० पाँव, पैर, पिंडली, टाँग।

प्रा० गोड़ना क्रि० स० खोदना, खुर्चना ।

प्रा० गोण (सं० गोणी, गुण=बढ़ाना) स्त्री० थैला, बोरा, अनाज डालने का थैला ।

प्रा० गोत (सं० गोत्र) पु० वंश, ज्ञात, कुल ।

सं० गोतम पु० एक ऋषिका नाम, जिसने न्यायशास्त्र बनाया ।

सं० गोतमनारी स्त्री० गोतम की स्त्री, अहल्या ।

प्रा० गोतिया } (गोत) पु० जातिभाई,
गोती } सम्बन्धी, कुटुम्बी ।

सं० गोत्र (गो=पृथ्वी, त्र=बचाना) पु० गोत, कुल, वंश, जाति, २पहाड़ ।

सं० गोत्रज (गोत्र=गोत, जन्=पैदा होना) पु० गोतिया, गोती, एक गोत का, संबंधी ।

सं० गोतीत (गो=इन्द्रिय, अतीत=परे) पु० जो इन्द्रियोंसे नहीं देखा जाय, अगोचर ।

प्रा० गोद } (सं० क्रोड) स्त्री०
गोदी } अँकवार ।

सं० गोदान (गो=केश, गौ, दान=देना) पु० मुण्डन, केशान्तरूप, संस्कार भेद, अथास्य गोदानविधेरनन्तरमितिरघुः, गौपुण्यकरना ।

प्रा० गोदपसारना बोल० माँगना, जाँचना ।

प्रा० गोदलेना बोल० ले पालना, बेटा करलेना, पोस पूत करना ।

सं० गोदावरी (गो=स्वर्ग, दा=देना) स्त्री० एक नदी का नाम जो दक्षिण में है ।

सं० गोधन (गो + धन) पु० गोरूप धन ।

सं० गोधूम पु० गेहूँ ।

सं० गोधूलि (गो=गाय, धूलि=रज, अर्थात् जिस समय जंगल से शहर में आने से गायों के पैर से रज उड़ती है) स्त्री० संध्या, सायंकाल, सूर्य के अस्त होनेका समय ।

प्रा० गोना } (सं० गोपन) क्रि०
गोवना } स० छिपाना ।

सं० गोप (गो=गाय, पा=पालना) पु० ग्वाला, अहीर, घोसी ।

प्रा० गोप पु० गले में पहनने का एक गहना ।

सं० गोपन (गुप्=छिपाना, बचाना) पु० छिपाव, लुकाव, दुराव, बचाव ।

सं० गोपनीय (गुप्=छिपाना) कर्म० छिपाने योग्य, गुह्य ।

सं० गोपाल } (गो=गाय, पाल्=
गोपालक } पालना) पु० गोप, ग्वाला, अहीर, गायों को पालने वाला ।

सं० गोपी (गोप) स्त्री० ग्वालिन, अहीरी ।

सं० गोपीनाथ (गोपी=ग्वालिन, नाथ=स्वामी) पु० श्रीकृष्ण, गोपियों का पति ।

सं० गोप्य (गुप्+य,गुप्=छिपाना) कर्म० छिपाने योग्य ।

प्रा० गोबरगणेश गु० मोटा, स्थूल ।

प्रा० गोभी स्त्री० एक तरकारी और पौधे का नाम ।

सं० गोमती (गो=गाय वा पानी, मती=वाली) स्त्री० एक नदी का नाम ।

सं० गोमय (गो=गाय) पु० गोबर ।

सं० गोमायु (गो=बुरी वाणी, मा =फेंकना वा शब्द करना) पु० सियाल, गीदड़, शृगाल ।

सं० गोमुखी (गो=गाय, मुख=मुँह, जिसका मुँह गाय कासा है) स्त्री० बनातकी बनीहुई थैली जिसमें हिंदू लोग माला डालकर जप करते हैं, २ हिमालय पहाड़में एक गुफा जहाँसे गङ्गा निकली हैं, गङ्गोत्तरी ।

सं० गोमेध (गो=गाय, मेध=यज्ञ) पु० गायकी बली, गोवध यज्ञ ।

सं० गोरस (गो+रस) पु० दूध दही मट्ठा आदि ।

प्रा० गोरा (सं० गौर) गु० उजला, श्वेत, गौर ।

प्रा० गोरू (सं० गौ) पु० बैल, बछड़ा, गौ ।

सं० गोलक (गुड्+अक) पु० विधवासे जार पुत्र, २ कन्दुक, ३ गोलोक, ४ गुड़, ५ कलश, घड़ा जिसमें महसूल के रुपये पैसे डाले जाते हैं, ६ नेत्रस्थान ।

प्रा० गोला (सं० गोल, गुड्=बचाना) पु० घेरा, मंडल, वृत्त, २ तोप का गोला, लोहे का गोल गोल पिंडा, ३ नारियलका गूदा, ४ अनाज रखनेका कोठा, खत्ता, अनाजकी मंडी ।

प्रा० गोलाकार (गोल+आकार) पु० गोलरूप ।

प्रा० गोली (सं० गोल) स्त्री० छोटा गोला ।

प्रा० गोलीमारना बोल० गोली चलाना, बंदूक चलाना, बंदूक छोड़ना, मारना ।

सं० गोवर्द्धन (गो=गाय, वर्द्धन= बढ़ानेवाला) पु० वृन्दावनमें एक पहाड़ है जिसको जब इन्द्र ने कोप करके मूसलाधार मेह बरषाया था तब श्रीकृष्णने सब व्रजवासियों को बचाने के लिये अपनी छंगुनी अंगुली पर उठाया था ।

सं० गोविन्द (गो=वेद की भाषा, विद्=पाना अर्थात् जो वेदसे जाने जाते हैं अथवा गो=गाय, विद्= पाना अथवा गो=स्वर्ग, विद्=पाना अर्थात् जिसकी भक्ति करनेसे स्वर्ग पाते हैं) पु० श्रीकृष्ण का नाम, विष्णु भगवान्, वेदलभ्य ।

सं० गोशाला (गो=गाय, शाला= जगह) स्त्री० गाय बाँधने की

जगह, खड़क, गाय का घर, गाय का बाड़ा ।

सं० गोष्ठ (गो=गाय, स्था=ठहरना) पु० गोशाला, गाय का बाड़ा ।

सं० गोष्ठी (गो=बोली, स्था=ठहरना अर्थात् जहाँ बहुत बातचीत होती है) स्त्री० सभा ।

प्रा० गोसैयाँ } (सं० गोस्वामी)
गुसैयाँ } पु० ईश्वर, परमेश्वर।

सं० गोस्वामी (गो=स्वर्ग वा इन्द्रिय वा गाय, स्वामी=मालिक) पु० ईश्वर, २ गुरु, महन्त, ३ गुसाईं।

प्रा० गोह (सं० गोधा, गुध्=ढकना) पु० बिसखपरा, टिकटिकी ।

प्रा० गोहार पु० हुल्लड़, रौला ।

प्रा० गोहूँ (सं० गोधूम)पु० गेहूँ।

प्रा० गौं पु० अवसर, सुभीता, अवकाश, दाँव, घात ।

सं० गौड़ पु० मध्य बंगाला, २ एक पुराने शहर का नाम जो पहले बंगाले की राजधानी था, ३ ब्राह्मणों की एक ज़ात ।

सं० गौड़ी (गुड़) स्त्री०गुड़की बनी हुई मदिरा ।

सं० गौण भा० पु० अमुख्य, जो ठीक नहीं ।

प्रा० गौन (सं० गमन) पु०जाना, गवन, गमन, कूच, बढ़ाई ।

प्रा० गौना (सं० गमन) पु० ब्याह के कुछ महीने अथवा बरस के पीछे दुलहिन को अपने घर लाना, रुखसती ।

सं० गौर (गु अथवा गुर्=जाना अर्थात् जिसमें मन जाता है) गु० गोरा, श्वेत, उजला ।

सं० गौरव (गुरु=बड़ा) भा० पु० बड़ाई, गुरुता, मान ।

प्रा० गौरिया स्त्री० चिड़िया ।

सं० गौरी (गौर) स्त्री० पार्वती, गिरिजा, २ आठ बरस तक की कन्या, ३ एक रागिणी का नाम, ४ गोरे रंग की, ५ तुलसी, ६ गोरोचन ।

सं० गौरीश (गौरी=पार्वती, ईश=पति) पु० महादेव, शिव ।

प्रा० ग्यारह } (सं० एकादश) गु०
इगारह } ग्यारह, एकादश, ११।

सं० ग्रथित (ग्रन्थ्=गूँथना) कर्म० गूँथा हुआ, बँधा हुआ, पिरोया हुआ, मुन्सलिक ।

सं० ग्रन्थ (ग्रन्थ्=जोड़ना, इकट्ठा करना) पु० पुस्तक, शास्त्र, २ गुरू नानक की बनाई हुई सिक्खों की धर्मपुस्तक ।

सं० ग्रन्थकर्त्ता } (ग्रन्थ=शास्त्र, कर्ता
ग्रन्थकार } वा कार=बनानेवाला, कृ=करना) पु० शास्त्र बनानेवाला, पुस्तक बनानेवाला ।

सं० ग्रन्थि (ग्रन्थ्=जोड़ना, बाँधना) स्त्री० गाँठ, सन्धि, जोड़ ।

सं० ग्रस्त (ग्रस=खाना) कर्म० खाया

हुआ, लियाहुआ, पकड़ाहुआ ।

सं० ग्रह (ग्रह्=लेना) पु० सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चर, राहु और केतु ये नवग्रह, नौग्रह, ग्रहदशा=शनैश्चरी, बुरे दिन, ग्रहपीड़ा ।

सं० ग्रहण (ग्रह्=लेना) पु० लेना, पकड़ना, २ गहन, सूर्य और चाँद को राहु के ग्रसन का समय, सूर्य और चाँदके बीच में धरती के आने से जब धरती की छाया चाँद में पड़ती है तब चन्द्रग्रहण होता है और जब धरती और सूर्य के बीच में चाँद आजाता है तब उसको सूर्यग्रहण कहते हैं ।

सं० ग्राम (ग्रस्=खाना, अर्थात् जहाँ खाने पीने के लिये कुछ मिले) पु० गाँव, बस्ती, खेड़ा, पुरा, २ समूह, बहुतायत ।

सं० ग्राम्य (ग्राम=गाँव) गु० गाँव का वासी, गँवार, असभ्य, मूर्ख, ग्राम्य भाषा, गँवारू बोलचाल, गाँव की बोली ।

सं० ग्रास (ग्रस्=खाना) पु० कवल, कौर, कवर, लुक़मा ।

सं० ग्राह (ग्रह्=लेना) पु० हाँगर, मगरमच्छ, घड़ियाल, कुम्हीर ।

सं० ग्राहक (ग्रह्=लेना) क० पु० लेनेवाला, मोल लेनेवाला, गाहक, ख़रीदार ।

सं० ग्राही क० पु० लेनेवाला, ख़रीदार ।

सं० ग्राह्य (ग्रह्=लेना) गु० लेने योग्य, ग्रहण करने योग्य ।

सं० ग्रीवा (गॄ=निगलना) स्त्री० गरदन, गला, कंठ ।

सं० ग्रीष्म (ग्रस्=खाना वा पकड़ना) स्त्री० गर्मी की ऋतु (ऋतु शब्द को देखो) ।

सं० ग्लानि (ग्लै=मलिन होना वा हर्ष का नाश करना) स्त्री० घिन, नफ़रत, घृणा, २ थकावट, माँदगी ।

प्रा० ग्वाल, ग्वाला (सं० गोपाल) पु० अहीर, गोप ।

प्रा० ग्वालिन (ग्वाल) स्त्री० गोपी, अहीरी ।

प्रा० ग्वैंड़, ग्वैंड़े क्रि० वि० पास, समीप, निकट ।

प्रा० ग्वैंड़ा पु० नगर का आसपास ।

सं० ग्लौ पु० प्रकाश, कपूर, चन्द्रमा, हर्ष, आनन्द ।

घ

सं० घ पु० घंटा, २ घर्घरशब्द, ३ मेघ, घाम ।

प्रा० घर्घरा पु० घाँघरा, लहँगा, साया ।

सं० घट (घट्=बनाना) पु० घड़ा, २ देह, कूट, कपट, कुम्भराशि ।

सं० घटक (घट्+अक) क० पु० मध्यस्थ, दलाल, बिचवैया, फलोत्पत्ति, कार्यकर्ता, योजक, मिलानेवाला ।

प्रा० घट पु० मन,जी, अन्तःकरण ।

सं० घटज (घट=घड़ा, जन्= पैदा होना) पु० अगस्त्यऋषि, कुंभज ।

सं० घटयोनि (घट=घड़ा, योनि= पैदा होनेकी जगह) पु० अगस्त्य ऋषि जो घड़े में पैदा हुए ।

प्रा० घटती (घटना) स्त्री० कमती, घटी, टोटा ।

प्रा० घटना क्रि० अ० कम होना, कमती, न्यून होना, २ योजना, हादसा, वाक़िया, संयोग ।

प्रा० घटाव } (घट्=इकट्ठा होना)
घटनि } स्त्री० बादलोंका समूह, वादलोंका उमंडना, बादल, २समूह, आडम्बर ।

सं० घटाटोप (घटा=समूह, आटोप =ढकना)पु० पालकी अथवा रथ के ढकनेका कपड़ा, वहुत वादल ।

प्रा० घटाना क्रि० स० कम करना, थोड़ा करदेना ।

प्रा० घटाव भा० पु० कमती, न्यूनता, उतार, २ घटाने का चिह्न, ऋण ।

प्रा० घटिया गु० थोड़े मोल का, सस्ता ।

प्रा० घटी स्त्री० घाटा, हानि, नुक़सान ।

सं० घटी } (घट्=बनाना) स्त्री०
घटिका } घड़ी, साठ पल, मुहूर्त, २ छोटा घड़ा ।

सं० घट्ट (घट्=बनाना) पु० घाट, २ रस्ता ।

प्रा० घड़घड़ाना क्रि० अ० गर्जना, कड़कड़ाना ।

प्रा० घड़ना क्रि० स० गढ़ना, बनाना, गहना बनाना या और कोई धातु को गढ़ना ।

प्रा० घड़ा (सं० घट) पु० मिट्टी का बरतन, गगरा, कलश, कुम्भ ।

प्रा० घड़ियाल (सं० घटिका वा घटी) स्त्री० घण्टा, २मगरमच्छ, कुंभीर ।

प्रा० घड़ी (सं० घटी) स्त्री० साठ पल का समय, चौबीस मिनट, २ समय जानने की कल ।

प्रा० घड़ीमेंतोला घड़ीमेंमाशा बोल० यह उस आदमी के लिये बोला जाता है जिसका स्वभाव या मन घड़ी घड़ी में बदलता हो ।

सं० घण्टा (हन्=मारना) पु० घड़ी, घड़ियाल ।

सं० घण्टाली (घण्टा) स्त्री० छोटी घण्टी जो बैलों के गले में डालते हैं, घण्टी ।

सं० घन (हन्=मारना) पु० बादल, घटा, बादलों का समूह, २हथौड़ा, निहाई, ३ हिसाब में एकही अंक को उसीसे तीन बार गुणने को घन कहते हैं जैसे ३ का घन २७, ४ रेखागणितमें ऐसी चीज़ जिसमें लंबाई, चौड़ाई और मुटाई ये तीनों

पाई जायँ, गु० ठोस, दृढ़, निविड़, गहरा, घना ।

सं० घनघोर (घन=बादल, घोर=डरावना) पु० गहरा बादल, घटा, घनगर्ज, डरावना शब्द ।

सं० घननाद (घन=बादल, नाद=शब्द) पु० रावण का बेटा, मेघनाद, इन्द्रजित् ।

सं० घनमूल (घन+मूल) पु० घन का मूल; जिस संख्या का घन किया गया, जैसे २७ का घनमूल ३ ।

सं० घनरस पु० सघन, गोंद, अवलेह, द्रव, गुर्च, कपूर, जल, सिद्धरस ।

सं० घनश्याम (घन=बादल, श्याम =काला) पु० श्रीकृष्ण, २ काली घटा, गु० बादल जैसा काला ।

सं० घनसार पु० कपूर, पारा, जल ।

प्रा० घना (सं० घन) गु० गहरा, सघन, २ बहुत, ढेर ।

प्रा० घनेरा } (स० घन) गु० बहुत,
घनेरी } घनेरी, अधिक, गुंजान, बहुतघनी ।

प्रा० घबराना क्रि० अ० व्याकुल होना, हड़बड़ाना ।

प्रा० घबराहट (घबराना) भा० स्त्री० हड़बड़ी, झंझट, धड़का, व्याकुलता, बेकली, उलझेड़ा, हलचल ।

प्रा० घवरि पु० गुच्छा ।

प्रा० घमंड पु० अहंकार, गर्व, अभिमान, दर्प, गरूर ।

प्रा० घमंडी गु० अभिमानी, गर्वीला ।

प्रा० घमसान (सं० घोरश्मशान) पु० लड़ाई, युद्ध, संग्राम, बड़ी लड़ाई ।

प्रा० घमोई स्त्री० नरसल, नरकट, बेत, सरकण्डा, नल ।

प्रा० घर (सं० गृह) पु० मकान, रहने की जगह, वास, वासा, डेरा, २ खाना, खन ।

प्रा० घरघालना बोल० उजाड़ना, नाश करना, घर नाश करना ।

प्रा० घरचलाना बोल० घरका खर्च चलाना, घरका काम चलाना ।

प्रा० घरजाना बोल० घरका नाश होना, उजड़ना, बिगड़ना ।

प्रा० घरडुबोना बोल० किसीका घर बिगाड़ना, किसी के घराने का नाश करना ।

प्रा० घरडूबना बोल० नाश होना, घरका नाश होना, उजड़ना ।

प्रा० घरबैठना } बोल० सर्वस्व नाश
घरबैठजाना } होना, सब नाश होजाना, घर डूबना, घरजाना ।

प्रा० घरहोना बोल० स्त्री और पुरुष के आपसमें प्रीतिहोना या मन मिलना ।

प्रा० घरणी } (सं० गृहिणी) स्त्री०
घरनी } घरवाली, लुगाई, भार्या, पत्नी, स्त्री ।

प्रा० घरनई (सं० घटनौका, घट=घड़ा, नौका=नाव) स्त्री० घड़ोंसे बनाई हुई नाव, चौघड़ा, बेड़ा ।

प्रा० घरबार पु० घराना, कुनबा ।

प्रा० घरबारी गु० गृहस्थी, कुटुंबी ।

प्रा० घराना पु०कुटुम्ब,घरके लोग ।

प्रा०घरी स्त्री०तह,घड़,चुनत,२घड़ी ।

प्रा० घरेला (घर) गु० घरका, पालतू ।

सं० घर्म (घृ=सींचना) पु० गर्मी, घाम, धूप ।

सं० घर्षक (घृष्+अक) क० पु० घिसनेवाला, घिसैया ।

सं० घर्षित (घृष्+इत) कर्म० पु० घिसा हुआ ।

सं० घर्षण (घृष्=रगड़ना) पु० घिसना, रगड़ना ।

प्रा० घसना } (सं०घर्षण)क्रि०स०
घिसना } रगड़ना, मलना ।

प्रा० घसियारा (सं० घासहारक) पु० घास काटनेवाला ।

प्रा० घसीटना (सं० घृष्=रगड़ना) क्रि० स० खींचना, खींचलेजाना ।

प्रा० घांटी स्त्री० टेंटुवा, नरेटी ।

प्रा० घाघ गु० बूढ़ा, जिसने बहुत देखा सुना हो ।

प्रा० घाघरा (सं० घर्घर, घृ=सींचना) स्त्री० सरयू नदी का नाम, २ पु० लहँगा ।

प्रा० घाट (सं० घट्ट) पु० नदी या तालाब आदि में नहाने की अथवा उतरने की जगह ।

प्रा० घाट पु० डौल, रूप, सूरत, २ घटी, कमी, गु० कम ।

प्रा० घाटा पहाड़का चढ़ाव, पहाड़ में रास्ता,२ घटी, कमी, नुक़सान ।

प्रा० घाटिया (घाट) पु० घाटपर रहनेवाला, ब्राह्मण, गङ्गापुत्र ।

प्रा० घाटी (सं० घट्ट) स्त्री० पहाड़ में गली, पहाड़ में तङ्ग रास्ता, दरा ।

सं० घात (हन्=मारना)पु० मारना, चोट, प्रहार, हत्या, दाँव, मौक़ा ।

प्रा० घात स्त्री० दाँव,विचार,इरादा, दाँव की जगह, पेच ।

प्रा० घातकरना बोल० घात लगाना, घातमें रहना, छिपके बैठना ।

प्रा० घाततकना बोल०गौं तकना, अवसर देखना, दाँव पाना ।

सं० घातक } (हन्=मारना)क०पु०
घातुक } मारनेवाला,हत्यारा ।

सं० घाती (हन्=मारना) क०पु० मारनेवाला, स्त्री० घातिनी=नाश करनेवाली, मारनेवाली ।

प्रा० घानी स्त्री० कोल्हू, तिलसे तेल निकालने की कल,२ऊख से रस निकालने की कल ।

प्रा० घाम (सं०घर्म)स्त्री०धूप, गर्मी ।

प्रा० घामड़ गु०भोला,सीधा,उल्लू ।

प्रा० घायल (घाव=चोट, सं० ला=लेना) गु० घाव लगा, ज़ख़मी ।

प्रा० घालक क०पु० नाश करनेवाला।

प्रा० घालना क्रि० स० उजाड़ना, नाश करना, २डालना, घुसेड़ना।

प्रा० घाला र्म्म० नाश किया।

प्रा० घाव पु० चोट, व्रण, ज़ख़म।

सं० घास (घस्=खाना) पु० तृण, फूस, चारा, गोरू, गाय आदि का खाना।

प्रा० घिघियाना डरसे या ख़ुशी से बोल नहीं निकलना, २ फुसलाना, बहलाना, ३ लड़खड़ाना, तुतलाना, हकलाना, ४ लल्लोपत्तो करना, गिड़गिड़ाना, बहुत ग़रीबी से प्रार्थना करना, बिनती करना।

प्रा० घिघीबँधजाना बोल० तुतलाना, हकलाना, २मारे लाजके या डरके मुँहसे बोल नहीं निकलना।

प्रा० घिण ⎫ (सं० घृणा) स्त्री० न-
घिन ⎭ फ़रत, गलानि, अवज्ञा, घिन्ना।

प्रा० घिया स्त्री० घियातुरई, एक तरकारी का नाम।

प्रा० घिरना क्रि० अ० घिरजाना, बन्द होजाना, घेरे में आजाना, बादलों का उमड़ना।

प्रा० घिरनी (सं० घूर्ण=घूमना) स्त्री० चरख़ी, छोटा पहिया, बल विद्या में एक कल का नाम, २ रस्सी बटने की कल, ३ लोटन कबूतर, एक तरह का कबूतर।

प्रा० घिरनीखाना बोल० लोटन खाना, गोल गोल जाना, गोल घूमना।

प्रा० घी (सं० घृत) पु० घृत, घी।

प्रा० घुंडी स्त्री० बटन, बूताम।

प्रा० घुटना पु० ठेवना, गोड़ा, जानू।

प्रा० घुटनोंचलना बोल० टिहुनों से चलना (जैसे बालक), खिसकना।

प्रा० घुड़ (घोड़ा) पु० घोड़ा।

प्रा० घुड़चड़ा पु० घोड़े पर चढ़ने वाला, सवार।

प्रा० घुड़दौड़ स्त्री० घोड़ों का दौड़ना, वह जगह जहाँ शर्त करके दो दो आदमी घोड़ा दौड़ाते हैं।

प्रा० घुड़बहल चार पहियों का रथ जिसमें घोड़े जुतते हैं।

प्रा० घुड़मुँहा गु० जिसका मुँह घोड़े कासा हो।

प्रा० घुड़साल पु० तबेला, अस्तबल।

सं० घुण (घुण्=घूमना) पु० एक कीड़ा जो लकड़ी को और अनाज को खाकर थोथा कर डालता है।

प्रा० घुणा (सं० घुण) गु० घुणका खाया हुआ, थोथा, पोला।

सं० घुणाक्षरन्याय (घुण+अक्षर+न्याय) पु० घुनके खाने से जो लकड़ी में कभी अक्षर का सा रूप बन जाता है तात्पर्य यह है कि कोई वस्तु अकस्मात् संयोग से प्राप्त होजाय तो ऐसे स्थल पर

यह कहा जाता है ।

प्रा० घुप गु० अन्धेरा ।

प्रा० घुमँड़ना क्रि० अ० बादलों का घिरना ।

प्रा० घुमाना (घूमना) क्रि० स० गोल गोल फिराना, फिराना, २ बहकाना ।

प्रा० घुरकना घुरकाना (सं० घुर=डरना) क्रि० स० धमकाना, झिड़की देना, डराना ।

प्रा० घुरकी (घुरकना) स्त्री० धमकी, झिड़की ।

प्रा० घुरनाना क्रि० स० खर्राटा मारना, नाक खरखराना ।

प्रा० घुसना क्रि० अ० पैठना, भीतर जाना ।

प्रा० घूँगर घूँघर पु० लहरायेहुये बाल, मुड़ेहुये बाल, अँगूठिये बाल ।

प्रा० घूँघची घुंगची (सं० गुञ्जा) स्त्री० लाल चिरमिटी, रत्ती ।

प्रा० घूँघट पु० आँचल की आड़, बुरका, ओढ़नी के आँचल से मुँह ढाँकना ।

प्रा० घूँघटकाढ़ना बोल० ओढ़नी से मुँह ढाँकना, लाज करना ।

प्रा० घूँघटकरना बोल० ओढ़नीसे मुँह ढाँकना, बुरका डालना, मुँह छिपाना, लाज करना ।

प्रा० घूँघरू घुँघरू (सं० घर्घरा) पु० छोटी घंटी, क्षुद्रघंटिका, पाँव में पहनने का एक प्रकार का गहना ।

प्रा० घूँस स्त्री० बड़ा मूसा, बड़ा चूहा ।

प्रा० घूँसा पु० मुक्का, मुक्की, धप्पा, मूका ।

प्रा० घूघू पु० उल्लू एक जानवरका नाम ।

प्रा० घूमघुमाला बोल० घेरदार ।

प्रा० घूमना (सं० घूर्ण=घूमना) क्रि० अ० फिरना, गोल गोल फिरना, चक्कर खाना ।

प्रा० शिरघूमना बोल० शिरमें कुछ दर्द होना, शिर फिरना, शिर चकराना ।

प्रा० घूरना क्रि० स० ताकना, ताक लगाना, २ कोपकी आँखसे देखना, क्रोध से देखना ।

सं० घूर्णन (घूर्ण=घूमना) भा० पु० भ्रमण, घूमना ।

सं० घूर्णित क० पु० भ्रमित ।

प्रा० घूस स्त्री० बड़ामूसा, २ रिशवत, अकोर, मुँहभरी, मुँहतोपी ।

सं० घृणा (घृ=सींचना) स्त्री० घिन, ग्लानि, नफ़रत, अवज्ञा, २ धिक्कार, ३ करुणा, दया ।

सं० घृणित (घृण + इत) कर्म० निन्दित, अनादरित, गन्दा, मकरूह ।

सं० घृत (घृ=सींचना) पु० घी, घिउ, सर्पिष ।

सं० घृष्ट (घृष्=घिसना) कर्म० घर्षित, घिसाहुआ ।

सं० घृष्टि (घृष्+ति) भा० पु० घिसना, मारना, शूकर, स्त्री० विष्णुक्रान्ता, शूकरी, सुवरी ।

प्रा० घेंटा पु० सुवरका बच्चा ।

प्रा० घेगा ⎫ पु० गलगण्डरोग, गले
घेघा ⎭ का रोग ।

प्रा० घेर (घेरना) पु०घेरा,मण्डल ।

प्रा० घेरा (घेरना) पु० मण्डल, गोलाकार, २ नाकाबन्दी, छेकना, क़िलाबन्दी, बेंढ़, अहाता ।

प्रा० घेराडालना बोल० चारोंओर से छेकना, घेरलेना, रोकलेना, नाकाबन्दी करना, अहाताकरना ।

प्रा० घेरे में पड़ना बोल० घिरजाना,घेरेमें आजाना,बन्द होजाना ।

प्रा० घेवर पु० एक तरहकी मिठाई ।

प्रा० घोंघा पु० एक जानवर का नाम, शम्बूक ।

प्रा० घोंटना ⎫ क्रि० स० साफ़ क-
घोटना ⎭ रना, चिकना करना, ओपना, रगड़ना, मलना, २ पु० लोढ़ा, पत्थर जिससे चीज़ घोटी जाती है ।

प्रा० घोंसला पु० खोंता, पखेरुओं का वासा, पखेरुओं का घर ।

प्रा० घोखना (सं० घुष्=शब्द करना) क्रि० स० दोहराना, पाठ सुनाना, बराबर कहना,चिन्तना, ज़ोर से बोलना ।

प्रा० घोटन भा० घोटना,हल करना।

प्रा० घोटा (घोटना) पु० घोटने की लकड़ी ।

प्रा० घोड़ा (सं० घोटक, घुट्=रोकना वा फिरना) पु० एक जानवर का नाम, अश्व, तुरंग, वाजि, घोटक, २ बंदूक की टोंटी ।

प्रा० घोड़े को सरपट हाँकना बोल० घोड़े को बहुत जल्दी से दौड़ाना ।

सं० घोर (घुर्=डरावना होना)गु० डरावना, भयानक, २ गहरा, ३ पु० शिव, महादेव, ४ डरावना काम, ५ ढोल का शब्द ।

सं० घोरनिद्रा (घोर=गहरी, निद्रा =नींद) स्त्री० गहरी नींद ।

सं० घोल (घुड्=रोकना) पु० मट्ठा, छाँछ, मही ।

प्रा० घोलघुमाव पु० टालमटोल, बहाना, छल ।

सं० घोष (घुष्=उच्चस्वर से बोलना) धि० पु० अहीरों का ग्राम, आभीरपल्ली, शब्द, अहीर, गोपाल ।

सं०घोषक क०पु०विलापकर्ता,शब्दकर्ता, बुलानेवाला, रटनेवाला ।

सं० घोषण भा० पु० याद करना, रटना, प्रचार करना ।

सं०घोषणपत्र पु०एलान,इश्तिहार।

प्रा० घोसी (सं० घोस) पु० मुस-

लमान ग्वाला ।

सं० घ्राण (घ्रा=सूँघना) पु० सुगन्ध, गन्ध, बू, बास, सूँघना, २ नाक, नासिका ।

सं० घ्राणेन्द्रिय (घ्राण + इन्द्रिय) ए० स्त्री० सूँघने की इन्द्रिय, नाक, नासिका ।

सं० घ्रायक क० पु० गंधग्राहक, सूँघनेवाला ।

च

सं० च पु० शिव, २ चाँद, ३ चौर, ४ कछुवा, ५ दुष्ट, ६ निर्बीज-समुच्च० और, फिर, पुनि ।

फ़ा० चंग स्त्री० गुड्डी, पतंग, २ बीन, किंगरी, मुरचंग ।

प्रा० चंगा गु० नीरोगी, नीरोग, सुखी, भलाचंगा ।

प्रा० चंगाकरना बोल० अच्छा करना, बीमारी से अच्छा करना ।

प्रा० भलाचंगा बोल० नीरोग, अच्छा, सुखी ।

प्रा० चंगेर पु० फूल रखनेका बरतन ।

प्रा० चंगेरा पु० खाँचा, कठरा, टोकरा, स्त्री० चंगेरी, टोकरी, खचिया, कठरी ।

प्रा० चंचनाना क्रि० अ० टीसमारना, सनसनाना, २ चनचन ऐसा शब्द करना ।

प्रा० चंडोल पु० डोला, पालकी, डोली, चौपाला, २ एक पखेरू का नाम, ३ एक खिलौने का नाम ।

प्रा० चँदला गु० गंजा ।

प्रा० चँदवा पु० चाँदनी, छोटा सामियाना ।

प्रा० चंदा (सं० चन्द्र) पु० चाँद, २ बाछ, उगाही, लगती, लगान, बिहरी ।

प्रा० चँदेला (सं० चंद्र) पु० राजपूतों की एक ज़ात जो अपने तईं चंद्रवंशी बतलाते हैं ।

प्रा० चँवर (सं०चमर)पु० सुरहगाय की पूँछ का बनाहुआ चमर जो राजाओं के शिर पर मक्खी आदिको दूर करनेके लिये हिलाया जाता है ।

प्रा० चक (सं० चक्र) पु० जागीर, इजारा, जोती बोई हुई धरती ।

प्रा० चकई (सं० चक्रवाकी) स्त्री० चकवी, २ (सं० चक्र) एक खिलौने का नाम ।

प्रा० चकनाचूर पु० टुकड़ा, टूक, छोटेछोटे टुकड़े, करतल ।

प्रा० चकनाचूरहोना बोल० टूक टूक होना, चूरचूर होना, टुकड़े टुकड़े होना ।

प्रा० चकनाचूरकरना बोल० चूर चूर करना, टुकड़े टुकड़े करना, टूक टूक करना ।

प्रा० चकमा पु० एक भाँतिका ऊनी कपड़ा, २ मोज़ा ।

प्रा० चकरबा पु० धमधाम, चकरग ।

प्रा० चकरबामचाना बोल० धूम धाम करना ।

प्रा० चकरा पु० दाल का बड़ा ।

प्रा० चकराना क्रि० अ० अचंभे में होना ।

प्रा० चकरानी (चाकर) स्त्री० टहलुई, दासी ।

प्रा० चकला (सं० चक्र) पु० पतुरिया का घर, वेश्यालय, २ एक भाँतिका कपड़ा जो रेशम और रूई से बनाया जाता है, गु० चौड़ा ।

प्रा० चकला (सं० चक्रल) पु० देश का एक भाग जिसमें बहुतसे परगने होते हैं, मंडल, प्रदेश ।

प्रा० चकलेदार पु० चकले का हाकिम ।

प्रा० चकवा (सं० चक्रवाक) पु० एक पखेरू का नाम, २ (सं० चक्र) भँवर ।

प्रा० चकाचौंध } स्त्री० तिरमिरी,
चकाचौंधी } अँधियारी ।

प्रा० चकावी स्त्री० भैंसियादाद ।

सं० चकित (चक्=अचंभा करना वा भ्रान्ति करना) पु० अचंभित, अचंभे में विस्मित, २ व्याकुल, घबराया हुआ, डरा हुआ ।

प्रा० चकोत्रा पु० एक फलका नाम ।

सं० चकोर (चक्=तृप्तहोना, प्रसन्न होना) पु० एक पखेरू का नाम जो चाँद को देखकर बड़ी प्रसन्नता से आकाश में ऊँचा उड़ता है ।

प्रा० चकौंदा } (सं० चक्रमर्दक,
चकौंड़ } चक्र=गोल गोल दाद, मर्दक=नाश करनेवाला) पु० एक पौधा जो दाद की दवाई में काम आता है ।

प्रा० चक्का (सं० चक्र=गोल) पु० दही जमाहुआ, दूध, २ गाड़ी का पहिया, ३ घेरा, गु० गोल, गाढ़ा, ४ जमा हुआ (जैसे दही) ।

प्रा० चक्की (सं० चक्र=गोल) स्त्री० पाट, जाँता, चाकी, २ खुरिया, चपनी, घुटने की ढकनी, ३ गाज, बिजली, ४ लड़कों के एक खिलौने का नाम ।

प्रा० चक्कू पु० छुरी, चाकू ।

प्रा० चक्कर (सं० चक्र) पु० भँवर, २ बगूला, बवंडर, ३ एक गोल शस्त्र जिसको विशेष करके सिक्ख लोग रखते हैं, ४ गोल चाल, कावा, ५ विपत्ति, जंजाल, घबराहट, ६ ओर, तरफ़, दिशा ।

प्रा० चक्करदेना बोल० फिराना, घुमाना, २ ठगना, छलना, धोखादेना ।

प्रा० चक्करखाना बोल० फिरना, घूमना, २ धोखे में आना, ठगा जाना ।

प्रा० चक्करमारना बोल० गोलगोल घुमाना, फिराना ।

प्रा० घोड़ेकोचक्करदेना बोल० कावा

देना, घोड़ेको गोल गोल फिराना।

सं० चक्र (कृ=करना) पु० पहिया, २ कुम्हार का चाक, ३ विष्णु का अस्त्र, ४ घेरा, वृत्त, ५ व्यूहरचना, सेना को चक्रके आकार पर सजाना, ६ हाथ में एक चिह्न जो भाग्यवानीका लक्षण है, ७ भीड़, ८ सेना, ९ भूमण्डल, देश, मुल्क, राज्य, १० चकवा पक्षी, वज़ीर।

सं० चक्रपाणि (चक्र=सुदर्शनचक्र, पाणि=हाथ) पु० विष्णु जिनका अस्त्र सुदर्शनचक्र।

सं० चक्रवर्ती (चक्र=सारी पृथ्वी, वर्ती=होनेवाला, वृत्=होना) क० पु० सार्वभौम, सब पृथ्वीका राजा, २ बंगालेके ब्राह्मणोंकी एकपदवी।

सं० चक्रवाक (चक्र=इस शब्दकरके, वाक=कहा जावे, वच्=कहना) पु० चकवा, एक तरह का पखेरू।

प्रा० चकित (सं० चकित) गु० अचंभित, विस्मित, अचंभे में।

सं० चक्षुः (चक्ष्=देखना) पु० आँख।

प्रा० चख }
चखु } (सं० चक्षु) स्त्री० आँख, नेत्र, नयन, लोचन।

फ़ा० चख़ाचख़ी स्त्री० बिगाड़, विरोध।

प्रा० चखाना पु० खिलाना, चसका देना।

प्रा० चखना }
चाखना } (सं० चषण, चष्=खाना) क्रि० स० स्वाद
चीखना } लेना, रस लेना, थोड़ा थोड़ा खाना।

प्रा० चङ्गा गु० अच्छा, नीरोग, सुखी।

प्रा० चचेरा (चचा) गु० चचा का, जैसे चचेराभाई=चचेका बेटा भाई, चचेरीबहन=चचेकी बेटी बहन।

प्रा० चचोरना क्रि० स० चूसना, लोहू चूसना, निचोड़ना।

सं० चञ्चरीक (चर=जाना) पु० भौंरा, भ्रमर।

सं० चञ्चल (चञ्च=चाल, ला=लेना वा चञ्च् अथवा चल्=चलना) गु० उतावला, चपल, अस्थिर, २ खेलवाड़ी।

प्रा० चञ्चलाई (सं० चञ्चलता) भा० स्त्री० उतावली, चपलता, अस्थिरता।

सं० चञ्चु (चञ्च्=जाना) स्त्री० चौंच, मिन्कार, ठोंठ।

प्रा० चट (सं० झटिति) क्रि० वि० झटपट, तुरंत, उसीदम, स्त्री० रगड़, घिसाव, २ तोड़ने का शब्द, तड़ाका, धड़ाका।

प्रा० चटदे तोड़ना }
चटसे तोड़ना } बोल० चटकाना, तड़काना, तोड़ना।

प्रा० चट (चाट) स्त्री० चाट, स्वाद, खाना।

प्रा० चटकरना बोल० खाजाना, उड़ादेना।

प्रा० चटहोना बोल० पूरा होना,

खायाजाना ।

प्रा० चटक स्त्री० कड़क, कड़ाका, २ फुरती, जल्दी, चमक, भड़क, शोभा, पिपरामूल ।

सं० चटक (चट्=तोड़ना) पु० चिड़ा, गौरैया ।

प्रा० चटकना
चटखना क्रि० अ० तड़कना (जैसे कोयले अथवा जलती हुई लकड़ी का), फटना, टूटना, चिरना ।

प्रा० चटकीला गु० चमकीला, भड़कीला ।

प्रा० चटपट (सं० झटिति=जल्दी, पट्=जाना) क्रि० वि० झटपट, तुरंत ।

प्रा० चटपटाना (चटपट) क्रि० अ० घबराना, व्याकुल होना, फड़फड़ाना, तड़फड़ाना ।

प्रा० चटपटी (चटपट) स्त्री० उतावली, जल्दी, हड़बड़ी, घबराहट ।

प्रा० चटशाल (सं० चटुशाला वा छात्रशाला, चटु वा छात्र=लड़का, शाला=जगह) स्त्री० पाठशाला, पढ़ने की जगह, मदर्सा ।

प्रा० चटाई स्त्री० बोरिया पाटी ।

प्रा० चटाका पु० धड़ाका, कड़ाका ।

प्रा० चटान
चट्टान स्त्री० शिला, पत्थर, पाषाण ।

प्रा० चटिया (सं० छात्र) पु० विद्यार्थी, शिष्य, छात्र, चेला, शागिर्द ।

सं० चटु पु० सुन्दर, मनोहर, प्रिय, चीखना, गर्जना, चिल्लाना, चिग्घारना, पेट, तोंद ।

सं० चटुल पु० मनोहर, सुन्दर, प्रिय, रूपवान्, पूर्ण, प्रसन्न, कम्पित, पथिक, स्त्री० ज्योति, विद्युत्, बिजली ।

प्रा० चटोरा (चाटना) गु० पेटू, जीभचला, खाऊ ।

प्रा० चट्टा (सं० चटु वा छात्र) पु० विद्यार्थी, पाठशाला का लड़का, स्कूल का लड़का ।

प्रा० चड़चड़ाना क्रि० अ० तड़कना, फटना ।

सं० चड़ (चड़=कोप करना) पु० क्रोध, कोप, गु० क्रोधी, गुस्सेवर ।

प्रा० चढ़ती (चढ़ना) स्त्री० बढ़ती, लाभ ।

प्रा० चढ़ना क्रि० अ० ऊपर जाना, २ आगे बढ़ना, धावा मारना, चढ़ाई करना, ३ सवार होना ।

प्रा० चढ़न्दार पु० चढ़नेवाला, चढ़नेहारा, २ कर्णधार ।

प्रा० चढ़ाई (चढ़ना) भा० स्त्री० धावा, चढ़ाव, हल्ला, हमला, २ चढ़ने का भाड़ा ।

प्रा० चढ़ाना क्रि० स० सवार करना, २ भेंट करना, बलिदान करना, ३ तार चढ़ाना, डोरी लगना, ४ ढोल कसना,

५ ऊँचा करना, खड़ा करना,
६ कपड़े पर रंग चढ़ाना ।

प्रा० चढ़ाव (चढ़ना) भा० पु० उँचाव, उँचाई, उठाव, पहाड़ में ऊपर रास्ता, २ चढ़ाई, धावा, ३ बढ़ती, ४ समुद्र की बाढ़ ।

सं० चणक (चण्=देना) पु० चना, बूट ।

सं० चण्ड (चडि=क्रोध करना) गु० डरावना, भयानक, क्रोधित, तेज़, उग्र, तीखा, तीव्र, तीक्ष्ण, गर्म, २ पु० एक दैत्य का नाम ।

सं० चण्डाल / चाण्डाल } (चडि=क्रोध करना) पु० नीच, कुजाति, नीच ज़ात का मनुष्य जिसका बाप शूद्र और माँ ब्राह्मणी हो, वर्णसंकर, श्वपच, निठुर, निर्दयी, पापी, दुराचारी ।

सं० चण्डांशु (चण्ड + अंशु) क० पु० सूर्य, आफ़ताब ।

सं० चण्डिका / चण्डी } (चडि=क्रोध करना) स्त्री० दुर्गा, देवी, काली, २ क्रोध करनेवाली स्त्री ।

सं० चण्डिल (चण्ड् + इल) क० पु० शिव, रुद्र, २ क्रोधी, ३ नापित, नाई ।

सं० चण्डु (चण्ड् + उ) पु० मूषक, मर्कट, २ छोटा बन्दर ।

सं० चतुर (चत्=माँगना) गु० निपुण, प्रवीण, स्याना, सयाना, बुद्धिमान्, २ छली, कपटी, धूर्त, चालाक, नटखट ।

सं० चतुर् (चत्=माँगना) गु० चार ।

सं० चतुरस्र गु० चौखूँटा, चौकोन ।

प्रा० चतुर पु० बुद्धिमान्, होशियार ।

प्रा० चतुराई (सं० चतुरता) भा० स्त्री० निपुणता, प्रवीणता, स्यानपन, बुद्धिमानी, २ धूर्तता, कपट, नटखटी, चालाकी ।

सं० चतुरंगिनी (चतुर्=चार, अङ्गिनी=अंगवाली) स्त्री० सेना जिसमें हाथी, रथ, घोड़े और पैदल चारों हों ।

सं० चतुरानन (चतुर्=चार, आनन =मुँह) पु० ब्रह्मा ।

सं० चतुर्थ (चतुर्=चार) गु० चौथा ।

सं० चतुर्दशी (चतुर्=चार, दश= दस) स्त्री० चौदस, चौदहवीं तिथि ।

सं० चतुर्भुज (चतुर्=चार, भुज= भुजा) पु० विष्णु, चारभुजा, २ चौखूँटा खेत, चौकोर, गु० चार हाथवाला ।

सं० चतुर्मुख / चतुर्वक्त्र } (चतुर्=चार, मुख वा वक्त्र=मुँह) पु० ब्रह्मा ।

सं० चतुर्वर्ग (चतुर्=चार, वर्ग= समूह) पु० धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ।

सं० चतुल पु० विश्वस्त, विश्वासी, निष्कपट, मनोहर, सुन्दर ।

सं० चतुष्क स्त्री० मशकहरी अर्थात् मशहरी, २ नदी विशेष, झील ।

सं०चतुष्पद(चतुर्=चार,पद=पाँव) पु० पशु, चौपाया, मवेशी ।

सं० चतुष्पदी (चतुर्=चार, पद= चरण) स्त्री० चारपदवाला छंद ।

सं० चतुष्षष्टि (चतुर्=चार, षष्टि= साठ) स्त्री० चौंसठ ।

प्रा० चना (सं० चणक) पु० बूट, छोला, चणा ।

प्रा० चन्द (सं० चन्द्र) पु० चाँद ।

सं० चन्दन (चदि=प्रसन्न होना) पु० एक सुगन्धित लकड़ी, मलयागिरि का सुगन्धितकाठ, गन्धसार, श्रीखंड ।

सं० चन्द्र (चदि=प्रसन्न होना वा चमकना) पु० चाँद, चन्द्रमा, चन्द्र, सोम, २ कपूर ।

सं० चन्द्रकला (चन्द्र=चाँद, कला= अंश) स्त्री० चाँद का सोलहवाँ अंश, १ अमृता, २ मानदा, ३ पूषा, ४ पुष्टि, ५ तुष्टि, ६ रति, ७ धृति, ८ शशिनी, ९ चन्द्रिका, १० कान्ति, ११ ज्योत्स्ना, १२ श्री, १३ प्रीति, १४ अङ्गदा, १५ पूषणा, १६ पूर्णा ।

सं० चन्द्रगुप्त पु० राजा का नाम, महानन्द राजा का पुत्र जो मुरा नाम्नी नाइन से उत्पन्न हुआ चाणक्य ब्राह्मण ने महानन्द को पुत्रों सहित नाश करके चन्द्रगुप्त को राजगद्दी दी ।

सं०चन्द्रमणि (चन्द्र=चाँद, मणि= रत्न) पु० चन्द्रकान्तमणि, एक रत्न का नाम ।

सं० चन्द्रमण्डल (चन्द्र=चाँद, मण्डल=घेरा) पु० चाँद का घेरा, चन्द्रलोक ।

सं०चन्द्रमा (चन्द्र=कपूर, मा=मापना वा बराबर करना अर्थात् जो अपने प्रकाश से सब चीज़ों को कपूर के बराबर साफ़ कर दिखाता है) पु० चाँद, २ एक ऋषि का नाम ।

सं० चन्द्रमुखी } (चन्द्र=चाँद,
प्रा० चन्दमुखी } मुख=मुँह) स्त्री० जिस स्त्री का मुँह चाँद कासा हो, चन्द्रवदनी, सुमुखी, सुन्दरी ।

सं०चन्द्रमौलि(चन्द्र=चाँद, मौलि= शिर वा शिखा) पु० शिव, महादेव ।

सं० चन्द्रलोह पु० चाँदी, २ राँगा, ३ फूल ।

सं० चन्द्रवंशी (चन्द्र=चाँद, वंश= घराना) पु० क्षत्रियों की एक जाति जो अपने को चाँदसे पैदा हुए बतलाते हैं, पुरूरवा से हुआ वंश ।

सं० चन्द्रवदनी } (चन्द्र = चाँद,
प्रा० चन्दवदनी } वदन=मुँह) स्त्री० चन्द्रमुखी, सुन्दरी ।

सं० चन्द्रशाला (चन्द्र + शाला) स्त्री० अट्टालिका, अटारी, गृहशिखर ।

सं० चन्द्रशेखर (चन्द्र=चाँद, शेखर=शिरका गहना) पु० शिव, महादेव ।

सं० चन्द्रहार (चन्द्र=चाँद, हार=माला) पु० गले में पहनने की माला ।

सं० चन्द्रहास (चन्द्र=चाँद, हास=चमक, हस्=हँसना अर्थात् जिसकी चमक चाँद कीसी हो) स्त्री० तलवार, खड्ग, चमेली, कुमुदिनी ।

सं० चन्द्रायत (चन्द्र + आयत) पु० गृहशिखर, छत, २ चाँदनी, छपा ।

सं० चन्द्रापीड पु० शिव, महादेव ।

सं० चन्द्रिका (चन्द्र) स्त्री० चाँदनी, चाँद का उजाला, चाँद की जोत, कौमुदी, ज्योति, प्रकाश ।

सं० चन्द्रिकापायिन् (चन्द्रिका + पायिन्) क० पु० चकोर, २ पर्वत ।

सं० चन्द्रिल पु० शिव ।

प्रा० चपकन स्त्री० एक तरह का अँगरखा ।

प्रा० चपकना क्रि० अ० चिपटना, मिलना, जुड़ना ।

सं० चपट (चप्=लगना) स्त्री० चपेट, धक्का ।

प्रा० चपटा गु० चौरस, सब ओर से बराबर ।

प्रा० चपत स्त्री० थपेड़, धौल ।

प्रा० चपना क्रि० अ० शरमाना, लज्जित होना, २ दबना, दबजाना ।

प्रा० चपनी स्त्री० ढकनी, ढपनी, घुटने की ढकनी ।

प्रा० चपरासी पु० चपरास रखने वाला, नौकर ।

सं० चपरि स्त्री० तुरंत, शीघ्र ।

सं० चपल (चप्=जाना) गु० चंचल, उतावला ।

सं० चपला (चपल) स्त्री० लक्ष्मी, २ बिजली, चंचला ।

प्रा० चपाती स्त्री० रोटी, फुलका ।

प्रा० चपाना क्रि० स० दबाना, दाबना, २ लजाना ।

सं० चपेट } (चप्=जाना) स्त्री०
चपेटिका } धप्पा, थप्पड़, धौल, हथेली ।

प्रा० चप्पा पु० चार अंगुल का नाप ।

प्रा० चबाना (सं० चर्वण) क्रि० स० चाबना, दाँत से कुचलना, २ होंठ काटना ।

प्रा० चबूतरा पु० चौतरा, अथाई, चौपाड़, बैठक, २ चौकी, ३ थाना ।

प्रा० चभक पु० डंक ।

प्रा० चमक (चमकना) स्त्री० झलक, भड़क, चटक, दमक, शोभा ।

प्रा० चमकतमक } बोल० शोभा,
चमकदमक } भड़क, झलक ।

प्रा० चमगादड़ } पु० स्त्री० एक प-
चमगीदड़ } खेरू जो रातको
चमगुदड़ी } देखता है और

दिन को नहीं देखता, चमगादुर, चमचड़ख ।

प्रा० चमचमाहट भा० स्त्री० चमकाहट, चमक, भड़क ।

प्रा० चमड़ा (सं० चर्म) पु० चाम, खाल ।

प्रा० चमड़ा उधेड़ना
चमड़ा छुड़ाना
चमड़ा निकालना } बोल० खाल खींचना, चमड़ा खींचना ।

सं० चमत्कार (चमत्=अचंभा, कार =करना) पु० अचंभा, विस्मय, २ प्रकाश ।

सं० चमर
चामर } (चम्=खाना) पु० चमरी गाय, सुरहगाय, २ चँवर, सुरहगाय की पूँछ ।

प्रा० चमार (सं० चर्मकार) पु० मोची, जूता बनानेवाला ।

सं० चमस पु० चमचा, चम्मच ।

सं० चमू (चम्=खाना) स्त्री० सेना, कटक, दल, फ़ौज जिसमें ७२ हाथी, ७२९ रथ, २१८७ घोड़े और ३६४५ पैदल हों ।

प्रा० चमेटा (सं० चपेट) पु० थप्पड़, धप्पा, चपेटा ।

प्रा० चमोटा पु०
चमोटी स्त्री० } (सं० चर्म) चमड़े की पट्टी जिसपर उस्तरा तेज़ करते हैं ।

सं० चम्पक (चपि=जाना) पु० चंपा जिसके फूल पीले रंग के और सुगन्धित होते हैं ।

प्रा० चम्पत क्रि० वि० छिपा, अन्तर्धान, अदृश्य ।

प्रा० चम्पतहोना बोल० छिपजाना, भाग जाना, चला जाना, अलख होना ।

प्रा० चम्पा (सं० चम्पक) पु० एक पेड़का नाम जिसके फूल पीले और सुगन्धित होते हैं ।

प्रा० चम्पाकली (चम्पा + कली) स्त्री० एक प्रकारकी माला जिसका हरएक दाना चम्पाकी कली सा होता है ।

प्रा० चम्बू पु० एक तरह का पानी का बरतन ।

प्रा० चम्बेली स्त्री० एक प्रकार का फूल ।

सं० चय (चि=इकट्ठा करना) पु० ढेर, समूह, राशि ।

सं० चर (चर्=चलना, खाना) पु० दूत, धावन, २ खाना, भक्षण, गु० चलनेयोग्य, चलनेवाला, जङ्गम ।

सं० चरक (चर्=जाना वा खाना) क० पु० वैद्यकशास्त्रका बनानेवाला, २ वैद्यकशास्त्रका नाम, ३ कोढ़, ४ मुख़बिर ।

फ़ा० चरख़ा पु० सूत कातनेकी कल, रहँटा, घिरना ।

फ़ा० चरख़ी स्त्री० घिरनी, २ रहँटी ।

प्रा० चरचना (सं० चर्चा) क्रि० स० शरीर में चन्दन लगाना, चन्दन से शरीर को लेपना ।

सं० चरण (चर्=चलना) ग० पु० पाँव, पैर, २ श्लोक का एक पद, मिसरा।

सं० चरणायुध (चरण + आयुध, युध्=लड़ना) पु० मुर्ग़, कुक्कुट।

प्रा० चरणपीठ (सं०चरणपृष्ठ, चरण=पाँव, पृष्ठ=पीठ) स्त्री०खड़ाऊँ ।

सं०चरणामृत (चरण=पाँव, अमृत=अमी)पु० देवता की मूरत अथवा साधुजन के पैरों का पानी, पानी जिससे देवता की मूरत वा साधु जन के पैर धोये हों, चरणोदक ।

सं० चरणारविन्द (चरण=पाँव, अरविन्द=कमल) पु० चरण कमल, कमल जैसे पाँव, मुबारक क़दम ।

सं० चरणोदक(चरण=पाँव, उदक=पानी) पु० चरणामृत, पैरों का पानी ।

प्रा०चरना (सं० चरण, चर्=खाना) क्रि० स० चुगना, घास खाना ।

प्रा० चरपरा गु० तीता, कड़ुवा, तेज़, २ फुर्तीला ।

सं० चरम गु० पिछले, परे, पीछेके ।

प्रा० चरवाई (चरना) स्त्री० चराई, चराने का दाम ।

प्रा० चरवाहा (चराना) पु० भेड़ बकरी का चरानेवाला, गड़रिया, रखवाला ।

प्रा० चरस पु०एक नशेकी चीज़, २ चमड़े की मोट,चमड़े का बड़ा डोल।

प्रा० चरसा पु० अधौड़ी, खाल ।

प्रा० चराई (चराना) स्त्री० चराने की मज़दूरी, चरवाई ।

सं० चराचर(चर्=चलनेवाला,अचर=नहीं चलनेवाला)पु० जीव जन्तु वृक्ष पत्थर आदि सब पदार्थ जो सृष्टि में हैं, स्थावर जंगम, संसार, सृष्टि ।

प्रा० चराना (चरना) क्रि० स० चुगाना, घास खिलाना,खिलाना।

सं०चरित } (चर्=जाना)पु० कथा
चरित्र } वार्त्ता, वृत्तान्त, हाल, शील स्वभाव, चाल चलन,व्यवहार, आचार, लीला, काम ।

सं० चरित्रबन्धक क० पु० भाट, कवि, पिंगलज्ञ ।

सं० चरु स्त्री० खीर,हव्यान्न, जाउरि।

प्रा० चरुवा(सं० चरु, चर=खाना) पु० भांडा, हांडा ।

सं० चर्चरी स्त्री० उत्सव, गानविशेष, केशरचना, शाक, महाकाल ।

सं० चर्चरीक पु० महाकाल केशविन्यास,बाल सम्हारना,शाक,साग ।

सं० चर्चा(चर्च्=पढ़ना,बोलना) स्त्री० प्रस्ताव, ज़िक्र, बतकहाव, तर्क, २ पूजा, ३ शरीर में चन्दन लगाना ।

सं० चार्चित (चर्चा) कर्म० चरचा हुआ, चन्दन लगाया हुआ ।

सं० चर्म (चर्=जाना) पु० चमड़ा, अजिन, खाल, २ ढाल ।

सं० चर्मकार (चर्म=चमड़ा, कार =करनेवाला) पु०चमार,मोची।

सं० चर्मज(चर्म+जन्=पैदा होना) पु० रुधिर, केश, बाल, चमड़े से बनी हुई ।

सं० चर्वण(चर्व्=खाना) पु० चाबना, दाँत से पीसना ।

सं० चलचित्त (चल=चलाहुआ, चित्त=मन) गु० चंचल, चपल, स्थिर ।

सं० चलत क० पु० चलनशील, चलनेहार ।

सं० चलन (चल्=चलना) भा०पु० चलना,जाना,चाल,गति, २रीति, व्यवहार, चालचलन, ३ रिवाज, प्रचार, चाल, चर्चा,गु० प्रचलित।

प्रा० चलना (सं० चलन) क्रि० अ० जाना,गमन करना, आगे बढ़ना, हिलना, सरकना, फिरना, २ प्रचलित होना, रिवाज होना, प्रचार होना, फैलना(जैसे सिक्का), ३ छूटना (जैसे बंदूक), ४ बहना (जैसे हवा), ५ व्यवहार होना ।

प्रा० चलदेना बोल० कूच करना, भागजाना, चलाजाना ।

प्रा० चलनिकलना बोल० निकल चलना, हद्द से बाहर निकलना, खराब अथवा व्यसनी होना ।

प्रा० चलेचलना बोल० आगे बढ़ना, चलेजाना ।

प्रा० चलनी (सं० चालनी, चल्= चलना) स्त्री० पीतल व लोहे अथवा चमड़े की बनीहुई एक चीज़ जिसमें बहुत छेद होते हैं और उसमें आटा छानते हैं ।

सं० चलपूंजी स्त्री० जायदाद मन्कूला, जो चीज़ एक जगह से दूसरी जगह चल सके ।

सं० चलित (चल्=चलना) गु० चलाहुआ, प्रचलित, व्यवहारिक, हिलता हुआ ।

प्रा० चबाई (सं०चर्वणावादी) पु० निंदक, लावालुतरा, चुग़लीखोर ।

प्रा० चबाव (सं० चर्वणावाद) पु० निंदा, चुग़ली, झूठा, कलंक, लिप् ।

सं० चष (चष्=भक्षण, वध) पु० भोजन, खाना, मारण, मारना, क्लेश ।

सं० चषक (चष्+अक) क० पु० जलपात्र, आबखोरा, पानपात्र, मदिरापात्र, मयजाम, शहद, मदिरा।

सं० चषति पु० भोजन, मारण, स्त्री० मूर्च्छा, मदान्धता ।

सं० चषाल पु० यज्ञके खंभा का कड़ा, यूपकटक, होमकुण्ड, कुशा ।

प्रा० चसका पु० प्यार, लालसा, चाट, स्वाद, चाल, टेव ।

सं० चह (चह=छलना, प्रतारण) पु० अहंकार, पाखण्ड, परिकल्कन, गु० अहंकारी, दम्भकृत, छली ।

प्रा० चहकना क्रि० अ० चहचहाना, चिड़ियों का बोलना ।

प्रा० चहचहा गु० गहरा रँगाहुआ,

प्रा० चहचहाना क्रि० अ० पखेरुओं का बोलना ।

प्रा० चहलपहल स्त्री० आनन्द, हँसी खुशी, चुहुल, रंग रस ।

प्रा० चहला } पु० कीचड़, काँदा,
चिहला } पाँका, पंक, दलदल ।

प्रा० चहुँ } (सं० चतुर्) गु० चार,
चहूँ } चारों—चहुँ ओर=चारों तरफ़, सब तरफ़ ।

प्रा० चहुँचक } (सं० चतुश्चक्र, चतुर्
चहुँचक्र } =चार, चक्र=देश) क्रि० वि० चारों ओर, सब ओर, चारों खूँट में, चहुँदिस ।

प्रा० चहुँदिस (सं० चतुर्दिश, चतुर्=चार, दिश=ओर) क्रि० वि० सब ओर, चारों ओर, चहुँ ओर, चहुँ चक्र ।

प्रा० चाकी स्त्री० बिजली ।

प्रा० चाँद (सं० चन्द्र) पु० चन्द्रमा, चन्द्र, सोम, चन्द, २ एक गहने का नाम ।

प्रा० चाँदरात स्त्री० महीने का अन्त, पूनों की रात

प्रा० चाँद्मारना बोल० निशाना मारना ।

प्रा० चाँद् ने खेतकिया बोल० चाँद उगा ।

प्रा० चाँद्ना (सं० चन्द्र) पु० प्रकाश, ज्योति, तेज ।

प्रा० चाँद्नापख पु० उजाला पख, शुक्ल पक्ष, सुदी ।

प्रा० चाँद्नी (सं० चांद्री, चंद्र=चाँद) स्त्री० चाँदकी उजियाली, चाँद का प्रकाश, अँजोरी, चंद्रिका, २ एक फूल का नाम, ३ सफ़ेद कपड़ा जो दरी पर बिछाया जाता है, ४ सफ़ेद और चमकीली चीज़ ।

प्रा० चाँद्नीचौक बोल० चौड़ा बाज़ार, गली, चौक ।

प्रा० चाँदी (सं० चांद्री) स्त्री० अच्छा रूपा, २ टटरी, टाँट, खोपरी ।

प्रा० चाँपना क्रि० स० दाबना, दबाना, ठाँसना, २ जोड़ना ।

फ़ा० चा स्त्री० एक पौधे की पत्ती जिसको पीने से शरीर में फुर्ती रहती है ।

प्रा० चाक (सं० चक्र) पु० कुम्हार की चक्की अथवा पहिया जिसपर बरतन बनाये जाते हैं, २ पाट, चक्की ।

प्रा० चाका (सं० चक्र) पु० पहिया ।

प्रा० चाकी (सं० चक्र) स्त्री० चक्की जाँता, बिजली ।

प्रा० चाचा पु० चचा, काका ।

प्रा० चाट (चाटना) स्त्री० चसका, स्वाद, रस, लालसा, उत्कण्ठा, रुचि, २ स्वभाव ।

प्रा० चाटना क्रि० स० स्वाद लेना, लपलप खाना, चबड़चबड़ खाना ।

सं० चाटु प्यारीबात, चापलूसी, लल्लोपत्तो, ख़ुशामद ।

सं० चारुपटु पु० भाण्ड, मशख़रा, ख़ुशामदी ।

सं० चाटुलक्ष्मी क० पु० ख़ुशामदी बातें, चिकनी चुपड़ी बातें ।

प्रा० चाड़ स्त्री० चाह, २ चोट, ३ ढेंकली, उठंगन ।

सं० चाणक्य पु० चाणक मुनि के गोत्र का, विश्वगुप्त ।

सं० चाणूर पु० कंस का प्रधान मल्ल, बड़ा पहलवान ।

सं० चाण्डाल पु० श्वपच, डोम, नीच ।

सं० चातक (चत्=माँगना, अर्थात् बादलों से पानी माँगना) पु० पपीहा ।

सं० चातुर (चतुर) गु० चतुर, प्रवीण, बुद्धिमान्, २ धूर्त, ३ चार ।

सं० चातुरी (चातुर) स्त्री० चतुराई, निपुणता, २ धूर्तता ।

सं० चातुर्वर्ण्य ब्राह्मण, २ क्षत्री, ३ वैश्य, ४ शूद्र, 'चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टमिति गीता' ।

प्रा० चातृक (सं० चातक) पु० पपीहा ।

सं० चान्द्रायण (चंद्र=चाँद, अयन=चाल, वा चांद्र=चंद्रलोक, अय्=पाना 'जिस व्रत से'), पु० एक व्रत जिसमें अँधेरे पख में जब चाँद की कला घटती है, हर एक दिन खाने में एक ग्रास घटाते हैं और चाँदने पख में ज्यों चंद्रमा की कला बढ़ती है त्यों हर एक दिन एक एक ग्रास बढ़ाते हैं, रोज़ा कमरी ।

सं० चाप (चप=बाँस अर्थात् बाँस का बना हुआ, चप्=जाना) पु० धनुष्, कमान ।

सं० चापखण्ड (चाप + खण्ड) धनुष् के टुकड़े ।

प्रा० चापी स्त्री० दबाई ।

प्रा० चाबना (सं० चर्वण) क्रि० स० चबाना, दाँत से कुचलना, चिकलना ।

प्रा० चाबी स्त्री० कुंजी, ताली ।

प्रा० चाम (सं० चर्म) पु० चमड़ा, खाल ।

सं० चामुण्डा (चम्=खाना, वा चमू=सेना, ला=लेना अर्थात् खा जाना) स्त्री० दुर्गा, देवी, काली, योगिनी, चण्ड मुण्ड राक्षसों की मारनेवाली देवी ।

सं० चार (चर्=चलना) पु० दूत, जासूस ।

प्रा० चार (सं० चतुर्) गु० दो का दुगुना, ४ ।

प्रा० चारआँखें बोल० चौनज़र, मिलना, भेंट होजाना ।

प्रा० चारटूक बोल० टूक टूक, टुकड़े टुकड़े ।

प्रा० चारण (चर्=लेजाना, अर्थात् जो यश को फैलाता है) पु० भाट, यश बखाननेवाला ।

प्रा० चारा (सं० चर्=खाना) पु० पशुओं का खाना, घास ।

सं० चारु (चर्=चलना) गु० सुन्दर, मनोहर, सुहाना, मनभावन ।

प्रा० चाल(सं० चल्=चलना) भा० स्त्री० चलना, चलन, गति, गमन, २ रीति रसम, रीति भाँति, ढंग, राह, चालचलन ।

प्रा० चालपकड़ना बोल० फैलना, चलना, प्रचलित होना ।

प्रा० चालचलना बोल० निबाहना, व्यवहार करना ।

प्रा० चालढाल बोल० चालचलन, रीति भाँति ।

प्रा० चालना (सं० चालन, चल्=चलना) क्रि० स० छानना (जैसे आटा) झारना, फटकना, देखना ।

सं० चालनी (चल्=चलना) स्त्री० चलनी ।

प्रा० चालीस (सं० चत्वारिंशत्) गु० दो बीसी, ४० ।

प्रा० चाव ⎫ (सं० इच्छा) पु० बड़ी
चाय ⎭ चाह, उत्कण्ठा, रुचि, अभिलाष, चोप, शौक़, २ चार अंगुल, ३ एक तरह का बाँस ।

प्रा० चावचोचला बोल० प्यार, दुलार, अनुराग, प्रेम, स्नेह, किलोल ।

प्रा० चावल ⎫ पु० एक प्रकार का
चाँवल ⎭ अनाज ।

प्रा० चाषु (सं० चाष, चष्=भक्षण करना) पु० नीलकण्ठ, कटनाश ।

प्रा० चासा पु० किसान, जोतहा, हल चलानेवाला ।

प्रा० चाह (सं० इच्छा) स्त्री० चाहना, अभिलाष, इच्छा, प्यार, प्रेम, प्रीति, पसंद ।

प्रा० चाहना क्रि० स० इच्छाकरना, माँगना, याचना, प्यार करना, प्रेम करना, मानना, पसंद करना, मनमें भाना, आवश्यकता होना, प्रयोजन पड़ना ।

प्रा० चिंघाड़ (सं० चित्कार, चित् ऐसा शब्द, कार=करना) स्त्री० हाथी का शब्द ।

प्रा० चिंघाड़मारना बोल० चित्कारना, चिंघाड़ना, हाथी का शब्द करना ।

प्रा० चिक पु० परदा, जवनिका, २ कमर में दर्द ।

प्रा० चिकना (सं० चिक्कण) गु० घोटाहुआ, साफ़, २ सुन्दर, ३ चपड़ा हुआ, तिलहा, तेलसा, तेलमय, चिक्कण, ४ निर्लज्ज, बेशरम, लंपट, चंचल ।

प्रा० चिकनाघड़ाबनना बोल० किसीकी कुछ शिक्षा नहीं मानना, निर्लज्ज होना ।

प्रा० चिकनाचाँदा (सं० चिक्कणचन्द्र) बोल० सुन्दर, मनोहर, सुहावना ।

प्रा० चिकनाई (सं० चिक्कणता) भा० स्त्री० ओप, घोट, सँवार, सफ़ाई, चिकनाहट, २ चर्बी, ३ चंचलता, चंचलाई ।

सं० चिकित्सक (कित्=इलाज करना, चंगा करना) क० पु० वैद्य, हकीम, डाक्टर ।

सं० चिकित्सा (कित्=इलाज करना, चंगा करना) भा० स्त्री० औषध करना, इलाज, बैदाई, रोगप्रतीकार ।

सं० चिकित्सालय (चिकित्सा + आलय) धि० पु० शिफ़ाख़ाना, हास्पिटल ।

सं० चिकित्साशास्त्र पु० इल्म=डाक्टरी, तिबाबत ।

सं० चिकीर्षा (कृ=करना) स्त्री० करने की इच्छा, आकांक्षा ।

सं० चिकीर्षु क० पु० आकांक्षी ।

सं० चिकुर (चि=इकट्ठा करना, वा चि=ऐसा शब्द, कुर=शब्द करना) पु० बाल, केश, घूँघर ।

प्रा० चिकुला बच्चा, बालक ।

प्रा० चिट स्त्री० टुकड़ा, लीर, धज्जी ।

प्रा० चिट्टा गु० गोरा, श्वेत, सफ़ेद, पु० रुपया, मुद्रा ।

प्रा० चिट्ठी स्त्री० पाती, पत्ती, पत्रिका, ख़त, काग़ज़ ।

प्रा० चिट्ठीपत्री
चिट्ठीपाती } पु० लिखापढ़ी, चिट्ठी का आना जाना, ख़त किताबत ।

प्रा० चिड़चिड़ा गु० खुनसाहा, झनझना, कर्कश, रिसाहा, पु० एक पेड़ का नाम ।

प्रा० चिड़ना क्रि० अ० खुनसाना झुँझलाना, कुढ़ना, खिसियाना, झट क्रोध करना ।

प्रा० चिड़िया
चिड़ी } (सं० चटक) स्त्री० गौरिया, पखेरू, पक्षी ।

प्रा० चिड़ीमार पु० चिड़िया पकड़ने और मारनेवाला, बहेलिया, ब्याधा ।

प्रा० चित (सं० चित्त) पु० मन, बुद्धि, हृदय, अन्तःकरण, हिया, हिय, जी, सुध, स्मरण, स्मृति, याद ।

प्रा० चितचाय बोल० मनभावन, जो मनको अच्छा लगे ।

प्रा० चितचेता बोल० मनमाना, पसंद आना ।

प्रा० चितचोर बोल० मन हरनेवाला।

प्रा० चितदेना बोल० ध्यान देना, मन लगाना ।

प्रा० चितलगना बोल० मनोरंजन, मनभावन ।

प्रा० चितलाना बोल० सचेत होना, तत्पर होना, मन लगाना, ध्यान देना ।

प्रा० चित (सं० चित्=जानना) स्त्री० चितवन, दृष्टि, दीठ, नज़र, अवलोकन, २ समझ बूझ, बोध, ज्ञान, विचार, गु० पट, सीधा, अन्ताचित, चितांग ।

प्रा० चित करना बोल० उलटाना, चित गिराना (जैसे कुश्ती में), जीतना, मात करना, हराना, परास्त करना ।

प्रा० चितकबरा (सं० चित्रकर्बुर) गु० कबरा, रंगरंग का, चितला।

प्रा० चितरना (सं० चित्र) क्रि०स० चीतना, रंगदेना, रंगना, चित्र करना।

प्रा० चितला (सं० चित्रल, चित्र=रंग, ला=लेना) गु० चितकबरा।

प्रा० चितवन स्त्री० दृष्टि, नज़र, अवलोकन, चित्त, झाँक, कटाक्ष।

प्रा० चितवना, चितना } क्रि०स० देखना ।

सं० चिता (चि=इकट्ठा करना) स्त्री० जगह जिसपर मुर्दा जलाया जाता है, चिताखा, मसान, मरघट।

प्रा० **चिताना**, **चितावना** } (सं० चेतन, चित्=याद करना, सोचना) क्रि०स० जताना, जतलाना, जनाना, चौकस करना, ख़बरदार करना, सूचित करना, याद दिलाना, बताना ।

प्रा० **चितेरा** (सं० चित्रकार) पु० लकड़ी पर अथवा दीवार पर बेल बूटे खींचनेवाला, चित्र खींचने वाला ।

सं० **चिति** स्त्री० समूह, ढेर, राशि, जमअत ।

सं० **चित्त** (चित्=जानना वा याद करना) पु० मन, अन्तःकरण, बुद्धि, हृदय, जी, चित, ज्ञान ।

सं० **चित्तताप**, **चित्तोत्ताप** } पु० मन का खेद, दिलीरंज ।

प्रा० **चितौनी** स्त्री० सूचना, विज्ञापन, जताना ।

सं० **चित्कार** पु० रेंकना, विलाप, चिल्लाहट, चीख़मारना, चूहा, निउला, छछूँदर ।

सं० **चित्र** (चित्र्=कई प्रकारके रंगोंसे रँगना, वा चित्=मन, त्रै=बचाना) पु० तसवीर, बेल बूटे, छवि, रूप, सूरत, लेख, लिपि, २ यम, गु० अद्भुत, अनोखा, रंग रंग का रँगा रंग, भाँति भाँति का ।

सं० चित्रकण्ठ (चित्र=रंग रंग का, कण्ठ=गला) पु० कबूतर, कपोत।

सं० चित्रकर }
चित्रकार } (चित्र=तसवीर, कृ=करना) पु० चितेरा, मुसव्विर।

सं० चित्रकारी (चित्रकार) स्त्री० चितेरे का काम, बेलबूटे बनाना, तसवीर बनाना, चित्र लिखना।

सं० चित्रकूट (चित्र=अनोखी वा भाँति भाँतिकी, कूट=चोटी) पु० एक पहाड़ का नाम जो बुन्देलखंड में है जहाँ श्रीरामचन्द्र अपने वनवास के समय पहलेही पहल रहे थे।

सं० चित्रगुप्त (चित्र=लेख, गुप्त=बचाना वा चित्र लिखना छिपी हुई बात का) पु० यम का नाम, २ यमराज का लेखक जो मनुष्यों के पाप पुण्य को लिखता है, कायस्थों का पुरुखा।

सं० चित्ररेखा }
चित्रलेखा } (चित्र=तसवीर, लिख्=लिखना) स्त्री० ऊषा की सहेली, बाणासुर के प्रधान कूष्माण्ड की बेटी।

सं० चित्रलिखित (चित्र=तसवीर, लिखित=लिखा हुआ) कर्म० तसवीर में लिखा हुआ।

सं० चित्रविचित्र (चित्र=रंग, विचित्र=रंग रंगका) गु० रंग रंग का, नाना वर्णका, अनेक रंग का।

सं० चित्रा (चित्र्=रंगना) स्त्री० चौदहवाँ नक्षत्र, २ श्रीकृष्ण की सखी।

सं० चित्राक्षी }
चित्रनेत्रा }
चित्रलोचना } चित्र=रंगरंग की, अक्षि, वा नेत्र, वा लोचन=आँख) स्त्री मैना पक्षी।

सं० चित्र विद्यासार, वसूल नक्शाकशी, चित्र खींचने का मूल।

सं० चित्राङ्ग (चित्र=रंग रंग का, अङ्ग=शरीर) पु० चितकबरा साँप, २ एक पौधेका नाम, ३ एक प्रकार का रंग, गु० चितकबरा, चित्रित, चित्र विचित्र।

सं० चित्रिणी (चित्र्=रंगना) स्त्री० दूसरे प्रकार की स्त्री, चार प्रकार की स्त्रियों में की एक प्रकार की स्त्री, (१ पद्मिनी, २ चित्रिणी ३ हस्तिनी, ४ शङ्खिनी, ये चार प्रकार की स्त्रियाँ होती हैं)।

सं० चित्रित (चित्र्=रंगना) कर्म० रँगा रंग, रँगा हुआ, चित्र किया हुआ, नाना वर्ण का, तसवीर खिंचा हुआ, २ अद्भुत, अनोखा।

प्रा० चिथड़ा पु० फटा कपड़ा, लत्ता, गुदड़ा।

सं० चिदाकाश (चित्=चैतन्य, आकाश अर्थात् आकाश के समान निर्विकार वा सब का आधार) पु० ब्रह्म, शुद्धस्वरूप।

सं० चिदात्मा पु० परमात्मा ।

सं० चिद्रूप (चित् + रूप) पु० चैतन्यस्वरूप, तेजरूप ।

सं० चिदानन्द (चित्=ज्ञान वा चैतन्य, आनन्द=हर्ष) पु० चैतन्य, ज्ञानानन्द, -परमानन्द, ब्रह्म, परमेश्वर, परमात्मा ।

प्रा० चिनचिनाना क्रि० अ० चिल्लाना, चीख़ना ।

सं० चिन्तन (चिति=याद करना, सोचना) भा० पु० याद, स्मरण, सोचना, ध्यान, चिन्ता, विचार ।

सं० चिन्ता (चिति=याद करना, सोचना) भा० स्त्री० सोच विचार, भावना, ध्यान, याद, स्मरण, स्मृति, २ फ़िक्र, खटका, दुबिधा, संदेह, सोच, डर ।

सं० चिन्ताकीमुद्रा स्त्री० शोच की दशा, फ़िक्र की हालत ।

सं० चिन्तामणि (चिन्ता=सोची हुई 'वस्तु देनेवाली', मणि=रत्न) स्त्री० एक प्रकार की मणि, पारस ।

सं० चिन्तित (चिति=सोचना) ग्र्म० चिन्ता करता हुआ, सोची, भावित, फ़िक्रमन्द, चिन्ता करने योग्य, उदास, व्याकुल ।

सं० चिह्न (चिह्न=चिह्न करना) पु० संकेत, निशान, पहचान, लक्षण, अंक, दाग़ ।

सं० चिह्नित ग्र्म० अङ्कित, संकेतित, दाग़ी ।

सं० चिबुक
चिवुक (चीब्=ढकना वा बोलना) स्त्री० ठुड्डी, ठोढ़ी ।

प्रा० चिमटना क्रि० अ० लिपटना, चिपकना ।

प्रा० चिमटा पु० चुमटा, मुचना, स्यूठा ।

सं० चिरबाधित ग्र्म० इहसानमन्द ।

सं० चिर
चरम् (चि=इकट्ठा करना) गु० बहुत काल, बहुत कालीन, बहुत दिनका, बहुत दिनतक ।

प्रा० चिरंजी (सं० चिरंजीवी) गु० बहुतसमयतक जीनेवाला, दीर्घायु ।

सं० चिरजीवी
चिरंजीवी (चिर=बहुतसमय तक, जीवी=जीनेवाला, जीव्=जीना) गु० चिरंजी ।

सं० चिरात् अव्य० अर्सा से, बहुत काल से ।

सं० चिरना पु० पुराना, प्राचीन, स्त्री० चिरानी=पुरानी ।

सं० चिरस्थायी पु० दवामी, हमेशगी, चिरकाल तक रहनेवाली ।

प्रा० चिरौंजी स्त्री० एक प्रकार की मेवा ।

प्रा० चिलकना (सं० ज्वल्=चमकना) क्रि० अ० चमकना, झलकना ।

प्रा० चिलम स्त्री० मिट्टी की बनी हुई चीज़ जिसमें तम्बाकू डालकर पीते हैं ।

प्रा० चिलमची स्त्री० हाथ धोने का बरतन ।

प्रा० चिल्लाना (सं० चित्कार) क्रि० अ० पुकारना, ज़ोरसे बोलना, चीख़ना ।

प्रा० चींटी } (सं० चिट्टकी) स्त्री० **चींवटी** } कीड़ी, चेंवटी ।

प्रा० चीखुर स्त्री० गिलहरी ।

प्रा० चीतना (सं० चित्र) क्रि० स० चित्र करना, रँगना, चित्रकारी करना, चित्र उतारना, रंग देना, २ (सं० चिन्तन) चाहना, सोचना ।

प्रा० चीतल (सं० चित्रल, चित्र=रंग; ला=लेना) पु० तेंदुवा, चीता, गु० चितकबरा ।

प्रा० चीता (सं० चित्रक, चित्र=रंग) पु० तेंदुवा, चीतल, २ एक पौधे का नाम, ३ (सं० चेतना) चाह, ४ समझ, बुद्धि, विचार, ५ (चीतना) रँगना, रंग देना ।

सं० चीन (चि=इकट्ठा करना) पु० एक देश का नाम, २ एक प्रकार की घास, ३ एक प्रकार का कपड़ा ।

प्रा० चीनी (सं० चीनीय) चीनदेश की, अर्थात् जो कदाचित् चीन देश से इस देश में पहलेही पहल आई हो) स्त्री० बहुत अच्छी और साफ़ शक्कर, गु० चीन देश का, चीन देश सम्बन्धी ।

प्रा० चीन्हना (सं० चिह्न=चिह्न करना) क्रि० स० पहचानना, जानना ।

सं० चीय (चि=इकट्ठा करना) पु० प्राप्ति, ग्रहण, धारण, गु० लेने वाला, पहरनेवाला, स्त्री० झिल्ली, झींगुर ।

सं० चीर (चि=इकट्ठा करना) पु० कपड़ा, वस्त्र, साड़ी ।

प्रा० चीर (चीरना) पु० खोंच, चीरना, फाड़ना ।

प्रा० चीर निकलना बोल० सेनाके बीच में होके निकल जाना, सेना की क़तार को तोड़ डालना ।

प्रा० चीरना क्रि० स० फाड़ना, टुकड़े टुकड़े करना, मसकना, बिदारना ।

प्रा० चीरा (सं० चीर) पु० पगड़ी, २ काट, फाड़, घाव ।

सं० चीरि पु० रींवा जन्तु, झींगुर, पलक, घोड़ोंके आँखपर बाँधने की अँधियारी ।

सं० चीर्ण गु० प्राचीन, प्रवीण, पुराना, फटाहुआ ।

सं० चीर्णपर्ण पु० नींबवृक्ष, प्राचीन पत्र, पुराना पत्ता, खजूरवृक्ष ।

सं० चीवर पु० प्राचीन वस्त्र, जीर्ण वस्त्र, फटा वस्त्र, चिथड़ा, प्राचीन, पुराना ।

प्रा० चील (सं० चिल्ल, चिल्ल्=ढीला होना) स्त्री० एक पखेरू का नाम ।

प्रा० चीलझपट्टा मारना बोल० छीनना, छीन लेना, झपट लेना ।

प्रा० चीलर
चील्हड़ } स्त्री० जूं, जूंई, ढील ।

प्रा० चुआन (सं० च्यु=जाना, चूमना) स्त्री० कोट के आस पास की गहरी खाईं जिसमें पानी भरा रहता है, २ कुंड, जलाशय ।

प्रा० चुंगी स्त्री० महसूल का इतना अनाज जितना कि हाथ में समावे जो कि अनाज के ब्यौपारियों से सदा उगाहा जाता है ।

प्रा० चुकाना (चुकना) क्रि० स० निपटाना, पूराकरना, मोलठहराना ।

सं० चुक्र पु० खट्टा का वृक्ष, चूक, सिरका, गु० खट्टा, अम्ल, अमलबेत ।

प्रा० चुगना क्रि० स० चोंच से खाना, चरना, खाना, २ चुनना, बीनना, टूँगना ।

प्रा० चुगलेना बोल० छाँटना, वराय लेना, चुनलेना, पसंद करना ।

सं० चुचि पु० स्तन, कुच, चूँची ।

सं० चुचक पु० स्तनाग्रभाग, कुचाग्रभाग, चूँची की बुएडी ।

प्रा० चुटकुला पु० चुहुल, परिहास, हँसी, ठठोली, हँसी की बात, आनन्द, रस ।

प्रा० चुड़ैल स्त्री० डायन, प्रेतनी, डाकिनी, २ फूहड़ स्त्री, मैली कुचैली स्त्री ।

प्रा० चुनत (चुनना) स्त्री० चुनन, परत, उच्चू, घड़ी, पुट, तह ।

प्रा० चुनरी स्त्री० एक तरह का रँगा हुआ कपड़ा जिसमें कई तरह के रंग होते हैं ।

प्रा० चुँधला गु० तिरमिरा, चकचूँधा ।

प्रा० चुनना क्रि० स० चुगना, इकट्ठा करना, बीनना, छाँटना, बराय लेना, पसंद करना, बटोरना, इंतिख़ाब करना, २ अपनी अपनी जगहपर रखना, सजाना, ठीकठाक करना, ३ तह जमाना, कपड़ों की घड़ी बनाना ।

प्रा० चुनाहुआ मुन्तख़िब ।

प्रा० चुनौती सौगन्द, क़सम ।

प्रा० चुन्नी स्त्री० लाल ।

प्रा० चुप गु० मौन, अनबोल, अवाक्, वि० बो० चुप रहो, मत बोलो ।

प्रा० चुपचाप बोल० चुप, अनबोल ।

प्रा० चुपड़ना क्रि० स० चिकना करना, चिकनाना, घी अथवा तेल लगाना, २ तेल मलना ।

प्रा० चुभकी डुबकी, ग़ोता ।

प्रा० **चुभना** क्रि० अ० छिदना, घुसना, पैठना, पारहोना, धसना, गड़ना ।

सं० **चुम्बक** } (चुबि=चूमना) क०
चुम्बकी } पु० चुम्बक पत्थर जो लोहे को खींचताहै, २चूमनेवाला, थोड़ा थोड़ा पढ़के छोड़नेवाला ।

सं० **चुम्बन** (चुबि=चूमना) भा० पु० चूमना, चूमा, बोसा, चूमालेना ।

सं० **चुम्बित** कर्म० पु० चूमा हुआ, बोसा लियागया ।

प्रा० **चुराना** (सं० चोरण, चुर्=चुराना) क्रि० स० चोरी करना ।

प्रा० **चुरी** (सं० चूड़ा) स्त्री० चूड़ी ।

प्रा० **चुलबुला** बोल० चंचल, रंगीला ।

प्रा० **चुलाना** क्रि० स० चुवाना, टपकाना ।

सं० **चुल्ल** (चुल्ल्=चालना, चलना) पु० प्रकाश, उजाला जिसके नेत्र में कीचड़ भरा है, चूल्हा, स्त्री० चिन्ता, उद्धारना ।

सं० **चुल्लि** स्त्री० चूल्ही, चूल्हा ।

प्रा० **चुल्लू** (सं० चुलुक, चुल्=इकट्ठा करना वा होना) पु० लपभर, मुट्ठीभर, वुक्का, दोनों हाथोंको इस तरह मिलाना कि उसके बीच में पानी रह सके ।

प्रा० **चुल्लूभरपानी में डूबमरना** बोल० बहुतही बहुत लजाना ।

प्रा० **चुल्लू में उल्लू होना** बोल० चुल्लू भर नशे में मस्त होना ।

प्रा० **चुसकी** स्त्री० पानी का घूँट, मुँहभर पानी ।

प्रा० **चुहल** स्त्री० हँसी, विनोद, हर्ष, हुलास, ठट्ठा ।

प्रा० **चुहुलकरना** बोल० आनन्द करना, हँसी खुशी करना, विनोद करना ।

प्रा० **चुकौता** पु० निपटारा, फ़ैसला ।

प्रा० **चूँची** } (सं० चूचुक, चूष्=दूध
चूची } पीना वा चूसना) स्त्री० स्तन, थन, कुच, छाती ।

प्रा० **चूक** (चूकना) स्त्री० भूल, खोट, दोष, भ्रम, अपराध ।

प्रा० **चूक** (सं० चुक्र, चुक्=तृप्त होना) गु० खट्टा ।

प्रा० **चूकना** क्रि० अ० भूलना, भूल करना, बिसरना, अशुद्ध करना ।

सं० **चूड़ा** स्त्री० चोटी, चुटिया, शिखा, झुटैया ।

सं० **चूड़ाकरण** (चूड़ा=चोटी, करण=करना) पु० मुण्डन ।

सं० **चूड़ामणि** (चूड़ा=चोटी, मणि=रत्न) स्त्री० स्त्रियों के चोटी में पहनने का गहना, चोटी की मनी ।

प्रा० **चूड़ी** } (सं० चूड़ा, चुल्=इक-
चूरी } ट्ठा होना) स्त्री० स्त्रियों के हाथ में पहननेकी काच आदि की बनी हुई चीज़ ।

सं० चूत } पु० आम्रवृक्ष, क्षरण,
चूतक } स्राव, वहन, ढपना ।

प्रा० चून (सं० चूर्ण) पु० आटा, २ चूना ।

प्रा० चूना (सं० च्यवन, च्यु=जाना) क्रि० अ० टपकना, रसना, झरना, (सं० चूर्ण) पु० चून, एक चीज़ जिससे मकान बनाये जाते हैं ।

प्रा० चूनालगाना बोल० बदनाम करना, लिम लगाना ।

प्रा० चूमना (सं० चुम्बन) क्रि० स० चूमा लेना ।

प्रा० चूमा (सं०चुम्बन) पु०चुम्बा, बोसा ।

प्रा० चूमाचाटी बोल० दुलार, प्यार, रंग, रस, रावचाव ।

प्रा० चूर (सं० चूर्ण) पु० बुकनी, भुरभुरा, चूर्ण, रेतन, गु० चूर किया हुआ ।

प्रा० चूरचूर बोल० टूक टूक, खण्ड खण्ड ।

प्रा० चूर रहना बोल० मस्त रहना, डूबा रहना ।

प्रा० चूर करना बोल० टुकड़े टुकड़े करना ।

प्रा० चूर होना बोल० टुकड़े टुकड़े होना, २ किसी के प्यार में फँसना, अत्यन्त प्यार वा स्नेह करना, ३ थकना ।

प्रा० नशे में चूर होना बोल० मस्त होना, मतवाला होना ।

प्रा० चूरण } (सं० चूर्ण) पु०
चूरन } पाचक औषध जिससे खाना पचता है ।

प्रा० चूरा (सं० चूर्ण) पु० रेतन, चूर ।

सं० चूर्ण (चूर्ण=पीसना, बुकनी करना) पु० बुकनी, रेतन, चूर, चूरा, धूलि, २ चूरन, एक पाचक औषध ।

सं० चूर्णन भा० पु० पीसना ।

सं० चूर्णक (चूर्ण्+अक) क०पु० पीसनेवाला ।

सं० चूर्णित (चूर्ण्+इत) कर्म०पु० पीसा हुआ ।

प्रा० चूर्ना (सं० चूर्ण) क्रि० स० टुकड़े टुकड़े करना ।

प्रा० चूर्मा (सं० चूर्ण=चूरना) पु० एक प्रकार का मीठा खाना ।

प्रा० चूल पु० लकड़ी का जोड़ वा कील जिसपर किंवाड़ फिरता है ।

प्रा० चूल्हा (सं० चुल्ली) पु० आग रखने की जगह ।

सं० चूषक (चूष्+अक, चूष्=चूसना) क० पु० चूसनेवाला ।

सं० चूषण भा० पु० चूसना ।

सं० चूषित कर्म० चूसा हुआ ।

प्रा० चूसना (सं० चूष्=चूसना) क्रि० स० पी लेना, सोखना, चचोड़ना ।

प्रा० चूहा पु० मूसा, मूषिक ।

प्रा० चेत (सं० चेतस्, चित्=सोचना) पु० सुध, याद, स्मरण, विचार, बोध, ज्ञान, अनुभव, सावधानी, चौकसी ।

सं० चेतन (चित्=सोचना) पु० जीव, आत्मा, प्राण, २ ज्ञान, बुद्धि, विचार, विवेचना, समझ, गु० चैतन्य, जीताहुआ, सचेत, प्राणी ।

सं० चेतना (चित्=सोचना) स्त्री० बुद्धि, ज्ञान, चेत ।

प्रा० चेतना (सं० चेतन) क्रि०स० याद करना, स्मरण करना, सुध करना, मन में रखना, सोचना, २ चेत में आना, होश में आना ।

प्रा० चेता (सं० चित्त) पु० चित्, चेत, मन, २ उपदेशक, ज्ञानदाता ।

प्रा० चेपना क्रि० स० साटना, लगाना, चिपटाना ।

प्रा० चेरा (सं० चेड वा चेट, चिट्=भेजना) पु० नौकर, दास, चाकर ।

प्रा० चेरी स्त्री० दासी ।

प्रा० चेला (सं० चेड वा चेट, चिट्=भेजना) पु० शिष्य, विद्यार्थी, २ दास ।

प्रा० चेवली स्त्री० एक प्रकार का रेशमी कपड़ा ।

सं० चेष्टक (चेष्ट्+अक) क०पु० यत्नकारी, उपायी, तदबीरी ।

सं० चेष्टा (चेष्ट्=परिश्रम वा यत्न करना) भा० स्त्री० यत्न, उद्यम, परिश्रम, उद्योग, काम, शरीर का व्यापार ।

प्रा० चैत (सं० चैत्र) पु० एक महीने का नाम ।

सं० चैतन्य (चेतन) भा० पु० जीवात्मा, परमात्मा, ब्रह्म, २ बुद्धि, ज्ञान, विचार, विवेचना, चेत, चेतना, गु० सचेत, चेत में, चौकस, सज्ञान, चेतन, सुचेत ।

सं० चैत्र (चित्रा एक नक्षत्र का नाम, पु० चैत, हिंदुओं के बरस का बारहवाँ महीना जिसमें पूरा चाँद चित्रा नक्षत्र के पास रहता है और उस महीने की पूर्णमासी के दिन चित्रा नक्षत्र होता है ।

सं० चैत्ररथ पु० कुबेर का बाग़ ।

प्रा० चैन पु० सुख, आराम, आनन्द, हर्ष ।

प्रा० चोंगा पु० नली, नलुवा, नल ।

प्रा० चोंच (सं० चञ्चु) स्त्री० ठोंठ, पखेरुओं की चंचु ।

प्रा० चोंडा (सं० चूड़ा) पु० चोटी, बाल का जूड़ा ।

प्रा० चोंप
चौंप
चोप } स्त्री० इच्छा, चाह, रुचि, उछाह, लालसा, फुर्ती, २ स्त्रियों के दाँतों में पहनने का सोने का गहना ।

प्रा० चोआ } पु० सुगन्धित चीज़,
चोवा } अर्गजा ।

प्रा० चोखा गु० साफ़, सच्चा, खरा, अच्छा, तीखा, तीक्ष्ण ।

प्रा० चोचला पु० खिलाड़पन, मान, नख़रा, मीठीबातें, प्यारीबातें, भोलीबातें, हावभाव ।

प्रा० चोट पु० मार, पीट, चपेट, मुक्का, घूँसा, धक्का, आघात, पछाड़ ।

प्रा० चोटपर चोट बोल० दुख पर दुख, एक विपत् पर दूसरी विपत् का आना ।

प्रा० चोटखाना बोल० पिटना, मार खाना, २ नुक़सान उठाना ।

प्रा० चोटी (सं० चूड़ा, चुल्=इकट्ठा होना) स्त्री० शिखा, शिरके पिछले बाल, २ शिखर, पहाड़ का शृंग ।

प्रा० चोटी आस्मानपर घिसना बोल० बहुत घमंडी होना, बहुत अभिमान करना ।

प्रा० चोटीकट बोल०दास, २शिष्य ।

प्रा० चोटीकटवाना बोल० दास होना, २ शिष्य होना ।

प्रा० चोटी किसी की हाथ में आना बोल० किसी पर अधिकार रखना, किसी को वश में करना, दबाना, नवाना ।

प्रा० चोट्टा (सं० चोर) पु० चोर ।

सं० चोर (चुर्=चोरी करना) पु० चोट्टा, चोरी करनेवाला, ठग, लुटेरा, तस्कर ।

प्रा० चोरचकार बोल० चोर ।

प्रा० चोरख़ाना } बोल० छिपा
चोरघर } हुआ मकान, एकान्त घर, गुप्तघर ।

प्रा० चोररस्ता बोल० छिपी राह, गुप्तराह, पगडंडी, लीक ।

प्रा० चोरलगना बोल० बिगाड़ होना, हानि होना, नुक़सान उठाना ।

प्रा० चोरी (सं० चौर्य, चोर, चुर् =चोरी करना) स्त्री० चुराने का काम, डकैती, ठगी ।

सं० चोली (चुल्=इकट्ठा होना) स्त्री० अँगिया, काँचुली ।

प्रा० चौ (सं० चतुः=चार) गु० चार पु० हल का फाल ।

प्रा० चौअन्नी (चौ=चार, आना) स्त्री० चारआनी, सूकी, चारआना ।

प्रा० चौंकना क्रि० अ० झिझकना, भड़कना, डर उठना, ठठकना, चमकना, नींद टूटना, नींद उचटना ।

प्रा० चौंकउठना बोल०भड़क उठना, झिझक उठना, चमक उठना ।

प्रा० चौंकपड़ना बोल० उछल पड़ना, चौकड़ी भरना, भड़क जाना, चमक जाना ।

प्रा० चौंतरा पु० (चबूतरा) शब्द को देखो ।

प्रा० **चौंतीस** (सं० चतुस्त्रिंशत्)
चौतीस गु० तीस और चार, ३४ ।

प्रा० **चौंधियाना** क्रि० अ० घबराना, व्याकुल होना, डरना, अचंभे में होना, तिरमिराना ।

प्रा० **चौंसर** (सं० चतुश्शारि
चौसर चतुः=चार, शारि=गोटी) पु० एक खेल का नाम जो पाँसों से खेला जाता है, चौपड़, २ फूलों की माला ।

प्रा० **चौक** पु० बाज़ार, हाट, गुदड़ी, आटेकी वेदी, पेठ, २ नगर का चौराहा, चौहट्टा, ३ आँगन, अँगना ।

प्रा० **चौकड़ा** पु० दो मोतीका बाला ।

प्रा० **चौकड़ी** स्त्री० कूद, फाँद, फलाँग, उछल ।

प्रा० **चौकड़ी भरना** बोल० कूदना, फाँदना, उछलना ।

प्रा० **चौकड़ी भूलना** बोल० मोह जाना, मोह में आना, भूलासा रह जाना, होश ठीक न रहना ।

प्रा० **चौकड़ी मार बैठना** बोल० उकड़ू बैठना, सिमट बैठना, सुकड़ बैठना, चार ज़ानूं बैठना ।

प्रा० **चौकन्ना** गु० सावधान, सुचेत, चौकस, फुर्तीला ।

प्रा० **चौकस** गु० सावधान, सुचेत, चालाक, फुर्तीला ।

प्रा० **चौका** पु० रसोई, वह जगह जहाँ हिन्दू खाना पकाते और खाते हैं, २ चौकोनी चीज़, चौकोनी जगह, ३ आगे के चार दाँत ।

प्रा० **चौकी** स्त्री० कुर्सी, पीढ़ा, चौकोनी काठकी बनी हुई चीज़, २ रखवाली, चौकसी, पहरा, ३ थाना जहाँ चौकीदार और पहरादार रहते हैं, ४ एक गहना जिसको गले में पहनते हैं ।

प्रा० **चौकीदार** गु० चौकी देनेवाला, पहरा देनेवाला, पहरुआ ।

प्रा० **चौकीदारी** स्त्री० चौकीदार का काम, २ चौकीदार की मज़दूरी, चौकीदारी, टिक्कस ।

प्रा० **चौकीदेना** बोल० रखवाली देना, पहरा देना ।

प्रा० **चौकीमारना** बोल० चोरी से महसूली वस्तु लाना वा भेजना, घाट मारना, महसूल चुराना ।

प्रा० **चौकोना** (सं० चतुष्कोण)
चौकोर गु० चौखूँटा, चार कोना ।

प्रा० **चौखट** (सं० चतुष्काष्ठ) स्त्री०
चौकट दरवाज़े का ढाँचा ।

प्रा० **चौखूँटा** (सं० चतुष्कोण) गु० चौकोर, चौकोना ।

प्रा० **चौगुणा** (सं० चतुर्गुण) गु०
चौगुना चारगुना, चार बार लिया हुआ ।

प्रा० **चौड़ा** गु० फैला हुआ, विशाल ।

प्रा० चौड़ाचकला बोल० चिपटा, फैलाऊ, विस्तृत, फैला हुआ, चौड़ा ।

प्रा० चौतनी चौगोशिया टोपी ।

प्रा० चौतारा पु० चार तार का बाजा ।

प्रा० चौताल स्त्री० एक रागिणी का नाम ।

प्रा० चौथ (सं० चतुर्थी) स्त्री० चौथी तिथि, २ (सं० चतुर्थांश) चौथा हिस्सा, कर अथवा ख़िराज जो मरहटे उगाहा करते थे ।

प्रा० चौथा (सं० चतुर्थ) गु० चारहवाँ, चौथा ।

प्रा० चौथेपन, चौथापन } (चौथा=चारहवाँ) पु० बुढ़ापा, मनुष्य के उमर का चौथा अथवा सबसे पिछला हिस्सा ।

प्रा० चौदस (सं० चतुर्दशी, चतुर्=चार, दश=दस) स्त्री० चौदहवीं तिथि, चतुर्दशी ।

प्रा० चौदह (सं० चतुर्दश) गु० दस और चार, १४ ।

प्रा० चौदानिया पु०, चौदानी स्त्री० } (चौ=चार, दाना) चार मोती का बाला ।

प्रा० चौधरी पु० पञ्च, प्रधान, ज़मींदार की पदवी ।

प्रा० चौपट गु० उजाड़, बरबाद, नष्ट, वरावर किया हुआ, चपटा ।

प्रा० चौपटकरना बोल० उजाड़ना, नष्ट करना, बरबाद करना, ढहा देना, विनाश करना, बराबर करना ।

प्रा० चौपड़ (सं० चतुष्पुटी वा चतुष्पादिका, चतुर्=चार, पुट=तह वा पद पैर) स्त्री० पाँसों का खेल, २ कपड़ा जिसपर यह खेल खेला जाता है ।

प्रा० चौपाई (सं० चतुष्पदी) स्त्री० चार पद का छन्द ।

प्रा० चौपाड़ (सं० चतुष्पटिका) पु० बैठकघर, २ (सं० चतुष्पाद) चौपाया ।

प्रा० चौपाया (सं० चतुष्पाद) पु० चारपाया, पशु, जानवर ।

प्रा० चौपाला (सं० चतुष्पाद) पु० पालकी, डोली ।

प्रा० चौबारा (सं० चतुष्पाटिका) पु० ऊपर का कोठा, उसारा ।

प्रा० चौबीस (सं० चतुर्विंशति) गु० बीस और चार ।

प्रा० चौबे (सं० चतुर्वेदी) पु० ब्राह्मण जो चारों वेद जानता हो, अब एक जाति के ब्राह्मणों को चौबे कहते हैं चाहे वेद पढ़े हों वा न पढ़े हों ।

प्रा० चौमासा (सं० चतुर्मास, चतुर्=चार, मास=महीना) पु० बरसात, वर्षाऋतु, असाढ़ से कुँवार तक के चार महीने ।

प्रा० **चौमुखा** (सं० चतुर्मुख) पु० चौमुहाँ दीया ।

प्रा० **चौमुखी** (सं० चतुर्मुखी) स्त्री० देवी, चारमुँहवाली दुर्गा, २ रुद्राक्ष का दाना ।

प्रा० **चौरस** (चौ=चार, रस=बराबर) गु० चारों ओर से बराबर, समान, सब ओर से बराबर ।

प्रा० **चौरानबे** (सं० चतुर्नवति, चतुर्=चार, नवति=नब्बे) गु० नब्बे और चार ।

प्रा० **चौरासी** (सं० चतुरशीति, चतुर्=चार, अशीति=अस्सी) गु० अस्सी और चार ।

प्रा० **चौवन**, **चव्वन** (सं०चतुष्पञ्चाशत्) गु०पचास और चार ।

प्रा० **चौवाई** (सं० चतुर्वायु, चतुर्=चार, वायु=हवा, अर्थात् चारों दिशा से हवा का बहना) स्त्री० आँधी, अन्धड़, झक्कड़ ।

प्रा० **चौसठ** (सं० चतुःषष्टि) गु० साठ और चार ।

प्रा० **चौहटा**, **चौहट्टा** (सं० चतुर्हट्ट, चतुर्=चार, हट्ट=हाट) पु० चौराहा, चौक, चौराहा बाज़ार ।

प्रा० **चौहत्तर** (सं० चतुःसप्तति) गु० सत्तर और चार ।

प्रा० **चौहान** पु० राजपूतों की एक जाति ।

सं० **च्युत** (च्यु=गिरना) कृ० पु० च्युत, गिरा, टपकपड़ा, पतित, आर्द्र, नष्ट ।

सं० **च्युति** (च्युत + इ) भा० स्त्री० पतन, हानि, खिन्नता ।

छ

सं० **छ** (छो=काटना) गु० काटने वाला, २ निर्मल, ३ चंचल, छेदक, नाशक ।

प्रा० **छः** (सं० षट्) गु० दुगुना तीन, ६ ।

प्रा० **छई** (सं० क्षय) स्त्री० एक रोग का नाम ।

प्रा० **छई** (सं० छदिः, छद्=ढकना) स्त्री० नाव का छप्पर ।

प्रा० **छकड़ा** (सं० शकट) पु० गाड़ी, रहडू, अरावा ।

प्रा० **छकना** क्रि०अ० अघाना, तृप्त होना, संतुष्ट होना, २ व्याकुल होना, अचंभे में होना, ३ मस्त होना ।

प्रा० **छकाना** क्रि०स० अघाना, तृप्त करना, २ ठीक करना, सीधा करना ।

प्रा० **छक्का** (सं० षट्क, षप्=छः) पु० छः का समूह, २ एक तरह का पिंजरा ।

प्रा० **छक्कापंजाकरना** बोल० ठगना, छलना, धोखा देना, जुआ खेलना ।

प्रा० **छक्केछूटजाना** बोल० घबराना, हक्का बक्का रहजाना ।

सं० छग } (छो=काटना) पु० बकरा,
छगल } छाग, भेड़ा, स्त्री० भेड़ी, बकरी ।

प्रा० छटाक (सं० षट्टङ्क, षट्=छः, टङ्क=एक प्रकार का तोल) स्त्री० सेर का सोलहवाँ भाग, कनवा ।

सं० छटा (छो=काटना) स्त्री० चमक भड़क, शोभा, दमक, चमचमाहट, उजाला ।

सं० छटाफल पु० नारियल वृक्ष, तालवृक्ष ।

सं० छटाभा स्त्री० बिजली ।

प्रा० छट्टी } (सं० षष्ठी) स्त्री० पखकी
छठ } छठवीं तिथि ।

प्रा० छट्ठी } (सं० षष्ठी) स्त्री० छठवीं,
छठी } लड़का के पैदा होने के पीछे छठे दिन की रीति ।

प्रा० छड़ा पु० पैर का गहना, मोती की लड़ी, गु० अकेला ।

प्रा० छड़ी स्त्री० बेत, हाथ में रखने की लकड़ी, २ फूलों का गुच्छा ।

प्रा० छण (सं० क्षण) स्त्री० पल, दम, क्षण, छिन ।

प्रा० छत } (सं० छत्र, छद्=ढकना)
छात } स्त्री० घर के ऊपर का पटाव, गच, पु० फोड़ा, घाव ।

प्रा० छत्ता (सं० छत्र, छद्=ढकना) पु० मधुमक्खियों का छाता ।

प्रा० छत्तीस (सं० षट्त्रिंशत्, षट्=छः, त्रिंशत्=तीस) गु० तीस और छः ।

सं० छत्र (छद्=ढकना) पु० राजाओं के शिरपर रखने का छाता, छतरी ।

सं० छत्रक (छत्र) क० पु० भुइँफोर, कुकुरमुत्ता, धरती का फूल ।

सं० छत्रधारी (छत्र=छाता, धारी =रखनेवाला, धृ=रखना) क० पु० राजा, महाराज, छत्रपति ।

सं० छत्रपति (छत्र=छाता, पति= मालिक) पु० राजा, महाराज, छत्रधारी ।

सं० छत्रभङ्ग (छत्र=छाता, भङ्ग= टूटना) पु० पति का मरना, रंडापा, विधवापन, २ राजा का मरण ।

प्रा० छत्री (सं० छत्र) स्त्री० छोटा छाता, २ चँदवा, ३ बैठने की जगह ।

प्रा० छत्री (सं० क्षत्री) पु० राजपूत ।

सं० छत्वर पु० गृह, कुंज, कोटरी, खोढ़र ।

सं० छद (छद=ढापना) पु० पंख, आच्छादन, पत्ताढाँक, तमालवृक्ष ।

सं० छदन भा० पु० पत्ता, आच्छादन, छान, छत, मियान, ग़िलाफ़ ।

प्रा० छदाम स्त्री० पैसेका चौथाभाग, दो दमड़ी, ६ दाम ।

सं० छद्म पु० कपट, छप्पर, पत्ता, अपदंश वा हुज्जत, उज़र, दलील ।

प्रा० छनाक पु० गर्म चीज़ पर पानी के गिरने का शब्द ।

सं० छन्द (छदि=ढकना और चाहना) पु० श्लोक, काव्य, पद्य, मात्राओं का मिलाव, २ वेद, ३ वेदका छन्द जैसे गायत्री आदि, ४ इच्छा, अभिलाषा ।

सं० छन्दपातन (छन्द+पातन, पत्=गिरना) पु० कपट, कुटिलता, मकर, बहाना ।

सं० छन्दोग पु० कवि, सामवेद का गानकर्ता, वेदपाठी ।

सं० छन्न कर्म० पु० एकान्त, गुप्त, छिपाहुआ, रुका ।

प्रा० छन्ना पु० पानी छाननेका कपड़ा, कोई चीज़ छाननेका कपड़ा ।

प्रा० छपना क्रि० अ० छापा होना, मुद्रित होना ।

प्रा० छपाई स्त्री० छापने की मज़दूरी, छापने का काम ।

प्रा० छप्पन (सं० षट्पञ्चाशत्, षट्=छः पञ्चाशत्=पचास) गु० पचास और छः ।

प्रा० छप्पय (सं० षट्पदी, षट्=छः, पद=चरण) छः पदका छन्द ।

प्रा० छप्पर पु० फूस की छावनी ।

प्रा० छप्परखट पु० पलंग, खाट ।

प्रा० छबीला गु० सुन्दर, सुहावना ।

प्रा० छब्बीस (षट्विंशति, षट्=छः, विंशति=बीस) गु० बीस और छः ।

प्रा० छयासठ, छियासठ } (सं० षट्+षष्टि, षट्=छः, षष्टि=साठ) गु० साठ और छः ।

प्रा० छरे गु० छटे, चुने सुबुक ।

सं० छर्द् (छर्द=वमन करना, क़य करना) पु० वमन, क़य ।

सं० छर्दन (छर्द्+अन) भा० पु० छाँट, वमन, क़य, अलम्बुष ।

सं० छर्दि स्त्री० छाँट, क़य ।

प्रा० छर्रा पु० छोटी छोटी गोली ।

सं० छल (छो=काटना) पु० कपट, धोखा, फ़रेब, बहाना, मिष, जाल, ठगाई ।

प्रा० छलबल बोल० कपट, धोखा, छलछिद्र ।

प्रा० छलकना (सं० उच्चलन, उत्=ऊपर, चल्=चलना) क्रि० अ० उमंडना, ढलकना, बहचलना, फूट निकलना, बोरना ।

सं० छलछिद्र (छल+छिद्र) पु० छलबल, कपट, धोखा ।

सं० छलविनय स्त्री० कपटसे बड़ाई, फ़रेब के साथ तअरीफ़ ।

प्रा० छलाँग स्त्री० फलाँग, फाँद, कूदफाँद ।

प्रा० छलाँगें मारना बोल० कूदना, उछलना, झपटना, कुलाच मारना ।

प्रा० छलिया, छली } (सं० छल) गु० कपटी दग़ाबाज़,

धोखा देनेवाला ।

प्रा० छल्ला पु० मुंदरी, अंगूठी ।

सं० छवि (छो=काटना, अंधेरेको) स्त्री० शोभा, सुन्दरता, चमक, प्रकाश ।

प्रा० छाँ (सं० छाया) स्त्री० छाया, आड़, प्रतिबिम्ब, परछाईं ।

प्रा० छाँटना क्रि० स० वमन करना, उलटी करना, क्षय करना, २ अनाज से भूसा अलग करना, फटकना, ३ काटना, कतरना, काट कूट करना, ४ सँवारना, साफ़ करना, ५ चुन लेना, पसंद करना ।

प्रा० छाँटकरना बोल० वमन करना, क्षय करना ।

प्रा० छाँटलेना बोल० चुन लेना, बराय लेना, पसंद करना ।

प्रा० छाड़ना क्रि० स० उगेलना, निकालना, २ छोड़ना ।

प्रा० छाँव
छाँह (सं० छाया) स्त्री० छाया, छाँ, प्रतिबिम्ब, परछाईं ।

प्रा० छाक पु० कलेवा, जलखाना ।

सं० छाग
छागल (छो=काटना) पु० बकरा, खस्सी ।

प्रा० छाछ
छाछी स्त्री० मट्ठा, मही ।

प्रा० छाज पु० सूप, डगरा ।

प्रा० छाजना (सं० छादन, छद्=ढकना) क्रि० स० छाना, २ फबना, सोहना, छजना, खुलना, योग्य होना ।

प्रा० छाँड़ना क्रि० स० छोड़ना, त्यागना, तजना ।

प्रा० छाता (सं० छत्र) पु० छतरी, २ मधुमक्खियों का छत्ता ।

प्रा० छाती स्त्री० हिरदा, उर, वक्षस्थल, २ चूँची, कुच ।

प्रा० छातीभर बोल० छाती जितना ऊँचा, छाती तक ।

प्रा० छाती भर आना बोल० रोना, आँसू ढालना, मोह आना।

प्रा० छाती पर पत्थर रखना बोल० संतोष करना, सबर करना, धीरज धरना, सहलेना ।

प्रा० छाती पर मूँग दलना बोल० किसी के सामने ऐसा काम करना कि जिससे वह दुख पावे, किसी को कुढ़ाना, खिझाना, सताना ।

प्रा० छाती फटना बोल० दुख अथवा फ़िक्र से घबराना, ग़म खाना।

प्रा० छातीपीटना बोल० रोना, विलाप करना, शोक करना, बिलखना ।

प्रा० छाती ठोकना बोल० साहस देना, हिम्मत बाँधना, भरोसा देना ।

प्रा० छाती ठंढी होना बोल० प्रसन्न होना, बहुतही बहुत आनन्दित होना ।

प्रा० छातीकापत्थर
छातीकाजम } बोल० दुःखदायी, कंटक।

प्रा० छाती खोलकर मिलना बोल० सच्चे मनसे मिलना, सरलता से मिलना, निष्कपट होकर मिलना।

प्रा० छातीलगाना
छातीसेलगाना } बोल० प्यारकरना, दुलारना।

प्रा० छाती निकालकर चलना बोल० अकड़ कर चलना, ऐंठकर चलना।

सं० छात्र (छद्=ढकना, गुरुके दोषों को) पु० विद्यार्थी, शिष्य, चेला।

सं० छात्रवृत्ति स्त्री० वज़ीफ़ा, पारितोषिक, स्कालरशिप।

सं० छादन (छद्=ढकना) पु० ढकने का कपड़ा, ढकना, २ पत्ता।

प्रा० छान (सं० छादन) स्त्री० छप्पर, ठठरी।

प्रा० छानबिनान
छानबीन } बोल० खोज, ढूँढ़, परीक्षा, विचार, विवेचना।

प्रा० छानबे
छियानबे } (सं० षण्णवति) गु० नब्बे और छः।

प्रा० छानन (छानना) पु० चोकर, भूसी, तुष, बूर।

प्रा० छाना (सं० छादन, छद्=ढकना) क्रि० स० छाया करना, पाटना, ढकना।

प्रा० छाजाना बोल० ढकजाना, छाया होना, पटजाना, घिरजाना,

प्रा० छालेना बोल० अँधेरा करना, ढकलेना।

प्रा० छानना क्रि० स० निखारना, गारना, झारना, चालना, फटकना, २ खोजना, ढूँढ़ना, ढूँढ़ मारना।

प्रा० छानमारना बोल० खोजना, ढूँढ़ना, ढूँढ़मारना।

प्रा० छाप (छापना) स्त्री० ठप्पा, मुद्रा, छापीहुई वस्तु, अंक, चिह्न, २ मोहर, ३ अंगुली में पहनने का गहना।

प्रा० छापना क्रि० स० छापाकरना, मुद्रित करना।

प्रा० छापा (छापना) पु० ठप्पा, मुद्रा, छापी हुई वस्तु, अंक, चिह्न, २ शंख, चक्र, गदा, पद्म आदिका चिह्न जिसको वैष्णवलोग अपने शरीर पर लगाते हैं।

प्रा० फ़ा० छापाख़ाना पु० छपनेका घर, छापाकी जगह, यन्त्रालय, मतबअ, प्रिंटिंगप्रेस।

सं० छाया (छो=काटना, अर्थात् उजाले को रोकना) स्त्री० छाँह, छाँव, छाँ, परछाई, प्रतिबिम्ब, २ अँधेरा, ३ भूत, प्रेत, ४ शनैश्चर की माता, सूर्य की स्त्री।

सं० छायापथ पु० आकाश, पोला, अवकाश, आसमान।

सं० छायामृत (छाया + अमृत) पु० चन्द्रमा।

प्रा० छार (सं० क्षार) स्त्री० राख, भस्म, धूलि, ख़ाक ।

प्रा० छाल (सं० खल्ल, वा छल्ली, छद् =ढकना) स्त्री० छिलका, बकला, पोस्त ।

प्रा० छाला पु० फुनसी, फुंसी, फफोला, फुल्का ।

प्रा० छालिया स्त्री० एक प्रकारकी सुपारी ।

प्रा० छावनी (छाना) स्त्री० पलटन के रहनेकी जगह, सिपाहियों के रहने के घर, २ छाने का काम ।

प्रा० छिंगुली स्त्री० छोटी अंगुली, कन अंगुली ।

प्रा० छिछला गु० उथला, पैतला, अगंभीर ।

प्रा० छिछोड़ा पु० हलका, ओछा, चिचिल्ला ।

प्रा० छिटकना क्रि० अ० बिखरना, फैलना, छितरना, बिथरना ।

प्रा० छिटकनाचाँदनीका बोल० चाँदनी का फैलना ।

प्रा० छिटकाना क्रि० स० बिखेरना, फैलाना, छितराना, बिथराना ।

प्रा० छिड़कना क्रि० स० छींटना, तरकरना, सींचना ।

प्रा० छिड़काव (छिड़कना) पु० पानी का छिड़कना, सिंचाई, सींचना ।

प्रा० छितरना क्रि० अ० बिखरना, फैलना, पसरना, छिटकना, बिथरना ।

प्रा० छिति (सं० क्षिति) स्त्री० धरती, ज़मीन, पृथ्वी, भूमि, धरणी ।

प्रा० छिद्‌ना (सं० छेदन, छिद्= काटना) क्रि० अ० बिंधना, पार होना, धसना, चुभना ।

सं० छिद्र (छिद्=भेदना, वा छिद्= छेदना) पु० छेद, गढ़ा, रंध्र, विवर, बिल, २ दोष, दूषण ।

सं० छिद्रित (छिद्र + इत) मर्म० पु० बेधित, छेद किया गया ।

प्रा० छिन (सं० क्षण) स्त्री० पल, क्षण, निमेष ।

प्रा० छिनभरमें बोल० एक पल में, पल भर में ।

प्रा० छिनाल स्त्री० वेश्या, व्यभिचारिणी ।

प्रा० छिनाला (छिनाला) पु० छिनालपन, व्यभिचार ।

सं० छिन्न (छिद्=काटना) मर्म० टूटा हुआ, खंडित, भाग किया हुआ, टुकड़े किया हुआ ।

सं० छिन्नभिन्न (छिन्न + भिन्न) मर्म० अलग अलग, तित्तर बित्तर, कटा हुआ, टूटा हुआ ।

प्रा० छिपकली } टिकटिकी, एक
छिपकी } जानवरका नाम ।

प्रा० छिपना } क्रि० अ० लुकना, अ-
छुपना } लख होना, दबकना,
अदृश्य होना ।

प्रा० छिमा (सं० क्षमा) स्त्री०

क्षमा, माफ़ी ।

प्रा० छियालीस (सं०षट्चत्वारिंशत्, षट्=छः,चत्वारिंशत्=चालीस)गु० चालीस और छः ।

प्रा० छियासी (सं० षडशीति, षट्=छः, अशीति=अस्सी) गु० अस्सी और छः ।

प्रा०छिलका(सं०छल्ली,छद्=ढकना) पु० छाल, बकला, त्वचा, पोस्त ।

प्रा० छिहत्तर (सं० षट्सप्तति, षट्=छः, सप्तति=सत्तर)गु० सत्तर और छः ।

प्रा० छी वि० बो० तुच्छ और घिन करने का शब्द ।

प्रा० छींक (सं० छिक्का, छिक् ऐसा शब्द, कृ=करना) स्त्री० शब्द जो नाक से होता है ।

प्रा० छींका (सं० शिक्य, शि=छेदना) पु० झूला, बहँगीकी डोरी, जाल कीतरह बनीहुई चीज़ जिसमें कोई चीज़ रखके लटका देते हैं ।

प्रा० छींट (सं० चित्र रंग रंगका) स्त्री० एक प्रकार का रँगा हुआ कपड़ा ।

प्रा० छींटना क्रि० स० छिड़कना, सींचना ।

प्रा० छींटा पु० छाँटा, टपका, बिन्दु ।

प्रा० छीजना क्रि० अ० घटना, कम होना, सूखना, झूरना, 'देखादेखी कीजै योग, छीजै काया बाढ़े रोग ' कहावत, जो कोई किसी की देखादेखी तप अथवा व्रत आदि करता है उसका शरीर दुबला हो जाता और बीमारी बढ़ती है ।

प्रा० छीन (सं० क्षीण) गु० मन्द, पतला, दुबला, कृश, घटा हुआ, लाग़र ।

प्रा० छीनना क्रि० स० लेलेना, खींचलेना, ज़बरदस्ती से लेलेना, झपट लेना ।

प्रा० छीनाछानी करना बोल० झपट लेना, झपटा झपटी करना, छीना झपटी करना ।

प्रा० छीर (सं० क्षीर) पु० दुग्ध, दूध ।

प्रा० छीलना क्रि० स० काटना, छिलका उतारना ।

प्रा० छुछूँदर (सं०छुच्छुन्दरी, छुच्छु ऐसा शब्द, दृ=फाड़ना) पु० एक जानवर का नाम ।

प्रा० छुछूंदरछोड़ना बोल० चुग़ली खाना, कलङ्क लगाना, बुराई करना, निन्दा करना, भड़काना, बहकाना ।

प्रा० छुट (सं० छुट्=जुदा जुदा करना) क्रि० वि० सिवाय, २ गु० छोटा, थोड़ा ।

प्रा० छुटकारा (छूटना) पु० छुड़ाव, उद्धार, मुक्ति, मोक्ष, रिहाई ।

प्रा० छुट्टी स्त्री० छुटकारा, रुखसत,

अवकाश, फ़ुरसत, समय ।

सं० छुड़ (छेदना) पु० आच्छादन, आवरण, नीच, स्वल्प, मिथ्यावादी, तुच्छ, पेच, फेर, किरण, भूषण ।

प्रा० छुड़ौती (छुड़ाना) स्त्री० छुड़ाने का मोल ।

सं० छुर पु० छुरा स्त्री० छुरी, छूरा, चूना, नींबू ।

सं० छुरिका
छूरी } (छुर्=काटना) स्त्री० चक्कू, चाकू ।

प्रा० छुहारा पु० खजूर, एक फल का नाम ।

प्रा० छूछा गु० खाली, खोखला, शून्य, वृथा, निष्फल, पु० टोना, टोटका, जादू ।

प्रा० छूट (छूटना) स्त्री० छोड़ना, वट्टा, छुड़ाव ।

प्रा० छूत (छूना) स्त्री० छूना, अपवित्रता, किसी से छूआ जाना ।

सं० छृद (छृद=प्रकाश करना) पु० प्रकाश, दीप्ति, वमन, विलाप, गु० प्रकाशक, प्रकाशवान् ।

प्रा० छेंकना क्रि० स० रोकना, अटकाना, घेरना ।

प्रा० छेड़ (छेड़ना) स्त्री० खिजावट, सताना ।

प्रा० छेड़छाड़
छेड़खानी } बोल० टोकटाक, ताना, खिजावट, ठेढ़ीबात ।

सं० छेद (छिद्=काटना) पु० काटा हुआ, भिन्न का हर, भाग ।

प्रा० छेद (सं० छिद्र) पु० गड़हा, खड्डा, मांद ।

प्रा० छेदना (सं० छेदन, छिद्=काटना) क्रि० स० बेधना, पार करना, धसाना, चुभाना, नाथना ।

प्रा० छेनी स्त्री० रुखानी, टाँकी, छेवनी ।

सं० छेमण्ड पु० मुरहा, माता पिता रहित बालक, यतीम, बेवारिस, अनाथ ।

प्रा० छेरी (सं० छागी, छो=काटना) स्त्री० बकरी ।

प्रा० छेदा (सं० छेदन, छिद्=काटना) पु० चिह्न, लकीर ।

प्रा० छैल
छैला } पु० बाँका, अकड़ैत, चिकनियाँ ।

प्रा० छैलाचिकनियाँ बोल० बाँका, छैला ।

प्रा० छोकरा पु० लड़का, बालक ।

प्रा० छोकरी स्त्री० लड़की, कन्या ।

प्रा० छोटा (सं० क्षुद्र) गु० लघु, लहुरा, कनिष्ठ ।

सं० छोटिका (छुट्+इका) स्त्री० उच्छाल, स्पर्श, छूना, अंगुष्ठ, अंगूठा, कोपीन, लँगोटा, कछौटा, कछाँट ।

प्रा० छोर पु० अन्त, किनारा ।

सं० छोरण (छुर्+अन, छुर्=छेदना) पु० त्याग, पैना करना, कर्तन,

काटना ।

सं० छोरंग पु० नींबू, खट्टा, चूना, सफ़ेदी, सफ़ेदा, करौंदा ।

प्रा० छोह (सं० क्षोभ) पु० प्यार, स्नेह, मोह, प्रीति ।

प्रा० छोही (छोभ) पु० प्रेमी, प्यारा, स्नेही, अनुरागी ।

प्रा० छौना पु० जानवर का बच्चा ।

ज

सं० ज (जन्=पैदा होना, वा जि=जीतना) पु० शिव, २ विष्णु, ३ जन्म, ४ माता पिता, उत्पत्ति, सुरमा, अंजन, शेष, राक्षस, जीव, शरीर आदि ।

प्रा० जक पु० गाड़े धन का रक्षक ।

प्रा० जकड़ना क्रि० स० कसना, कसके बाँधना, खींचना, बाँधना, तानना ।

प्रा० जग (सं० जगत्) पु० संसार, जगत्, दुनिया, जंगम, वायु ।

प्रा० जग (सं० यज्ञ) पु० यज्ञ, बलि, २ उत्सव, पर्व ।

प्रा० जगजगाहट स्त्री० चमक, चमकाहट, प्रकाश, उजलाई ।

प्रा० जगजागी स्त्री० संसार में विदित हुई, दुनिया में ज़ाहिर हुई ।

सं० जगत् (गम्=जाना) पु० संसार, जग, दुनिया ।

सं० जगती (गम्=जाना) स्त्री० पृथ्वी, धरती, २ लोग ।

सं० जगदम्बा (जगत्=संसार, अम्बा=माँ) स्त्री० जगमाता, महामाया, देवी, दुर्गा ।

सं० जगदाधार (जगत्=संसार, आधार=आसरा) पु० अनन्त, शेषजी, संसार का आसरा, २ हवा, वायु ।

सं० जगदीश (जगत्=संसार, ईश=स्वामी) पु० परमेश्वर, संसार का कर्ता, जगन्नाथ, विष्णु ।

प्रा० जगना (सं० जागरण, जागृ=जागना) क्रि० अ० नींद से उठाना, सचेत होना, जागना ।

सं० जगन्नाथ (जगत्=संसार, नाथ=स्वामी) पु० विष्णु, जगदीश, जगत्पति, जगन्नाथ का मन्दिर उड़ीसा में जगन्नाथपुरी में है जहाँ बहुत से यात्री जाया करते हैं ।

प्रा० जगमगा गु० चमकीला, चमकदार, झलाझल ।

प्रा० जगमाता (सं० जगन्माता, जगत्=संसार, माता=माँ) स्त्री० संसार की माँ, जगदम्बा, देवी, दुर्गा, सरस्वती ।

प्रा० जगह } स्त्री० ठौर, स्थान,
जागह } ठिकाना ।

प्रा० जगह छोड़ना बोल० काग़ज़ में कुछ जगह बिन लिखी रखना ।

प्रा० जगह सिर खरचना बोल० मौक़े पर ख़र्च करना, यथोचित

खर्चना, जहाँ चाहिये वहाँ खर्च करना ।

प्रा० **जगह सिर होना** बोल० किसी काम पर होना, ठीक होना, यथोचित होना, जैसा चाहिये वैसा होना ।

प्रा० **जगाज्योति** (सं० जाग्रज्ज्योतिः) स्त्री० चमक, भड़क, जगजगाहट, बहुत अथवा बड़ी जोत ।

सं० **जङ्गम** (गम्=जाना) गु० चलने वाला, जिसमें चलने की शक्ति हो, २ पु० योगी जिनके सिर पर जटा होती है और छोटी घंटी को बजाया करते हैं और महादेव के भजन गाया करते हैं ।

सं० **जङ्गल** (गल्=गिरना) पु०, वन, झाड़ी ।

प्रा० **जङ्गली** (सं० जङ्गल) गु० बनैला, वनवासी ।

सं० **जग्ध** (अद्=भोजन करना) कर्म० पु० भुक्त, खायागया ।

सं० **जग्धि** (अद्+ति) भा० पु० भोजन ।

सं० **जघन** (जन+घन) पु० स्त्रियों के कटि का अग्रभाग, जंघा, करिहाँव, कटिदेश, ऊरुस्थल ।

सं० **जघन्य** (जग+हन्य) कर्म० पु० अधम, नीच, पिछला ।

सं० **जघन्यज** पु० कनिष्ठ, शूद्र, अधम ।

सं० **जङ्घा** (हन्=टेढ़ा जाना, वा जन्=पैदा होना) स्त्री० जाँघ, जानु, जानू ।

प्रा० **जचना** क्रि० स० अटकल होना, नज़र में खटाना ।

प्रा० **जचावट** (जाँचना) भा० स्त्री० जाँच, परख ।

प्रा० **जंजाल** (सं० जनजाल, जन=मनुष्य, जाल=फंदा) पु० उलझेड़ा, उलझाव, कलेश, झंझट, घबराहट, व्याकुलता, कठिनता ।

सं० **जटा** (जट्=इकट्ठा करना) स्त्री० बालों का जूड़ा, बिखरेबाल, मिले हुये बाल, २ जड़, वृक्ष की जड़ ।

सं० **जटाजूट** (जटा+जूट=जूड़ा) पु० जटाका जूड़ा, जटा का बंध।

सं० **जटाधारी** (जटा+धारी=रखने वाला, धृ=रखना) पु० शिव, जटा रखनेवाला ।

सं० **जटामांसी** (जटा, मन्=रखना) स्त्री० एक औषध का नाम ।

सं० **जटायु** (जटा और या=जाना, वा जट=बहुत, आयु=उमर जिसकी) पु० एक गीध का नाम जिसका वर्णन रामायण में है ।

सं० **जटित** (जट्=मिलाना, जोड़ना) कर्म० जड़ाऊ, जड़ा हुआ ।

सं० **जटिल** (जटा) गु० जटावाला, जटाधारी, पु० सिंह, २ ब्रह्मचारी, ३ शिव ।

सं० जठर (जन्=पैदा होना) पु० पेट, उदर, गर्भ, कोख, गु० कठोर, दृढ़, २ बूढ़ा ।

सं० जठराग्नि ⎫ (जठर=पेट, अग्नि
जठरानल ⎭ वा अनल=आग)
स्त्री० पेट की आग जिससे खाना पचता है, २ भूख, ३ पेटका रोग ।

सं० जड़ (जल्=ढकना) पु० मूर्ख, सुस्त, ठंढा, अज्ञानी, निर्बोध, गावदी, भकुआ ।

प्रा० जड़ (सं० जटा, जट्=इकट्ठा करना) स्त्री० मूल, कारण, नींव, ठहराव ।

प्रा० जड़ना (सं० जटन, जट्=मिलाना) क्रि० स० मारना, झटकारना, २ जोड़ना, लगाना, साटना, ३ नग बैठाना, खोद कर बनाना ।

प्रा० जड़ पेड़ स्त्री० मूल समेत पेड़, सब का सब ।

प्रा० जड़पेड़सेउखाड़ना बोल० उखाड़ डालना, जड़ से खोद डालना, मूल समेत उखाड़ डालना ।

सं० जड़मति (जड़ + मति) स्त्री० निर्बुद्धि, बेवक़ूफ़ ।

प्रा० जड़हन पु० अगहनी धान ।

प्रा० जड़ाई (जड़ाना) भा० स्त्री० जड़ानेका मोल, जड़ाने का काम ।

प्रा० जड़ाऊ गु० जड़ित, जड़ा हुआ ।

प्रा० जड़ित (सं० जटित) कर्म० पु० जड़ा हुआ ।

प्रा० जड़िया क० पु० जड़नेवाला, जौहरी ।

प्रा० जड़ी (सं० जटा) स्त्री० औषधी की बेल की जड़ ।

प्रा० जड़ीबूटी स्त्री० दवाई, रूखड़ी, बेली ।

प्रा० जतन (सं० यत्न) पु० उपाय, उद्योग, परिश्रम, मिहनत, २ इलाज ।

प्रा० जताना (सं० यत्=यत्न करना) क्रि० स० चिताना, बुझाना, बताना, बतलाना, चेतना, सुध करना, २ प्रकट करना ।

प्रा० जती (सं० यति) पु० जितेन्द्रिय, संन्यासी, भिखारी, योगी ।

सं० जतुक पु० लाख, हींग ।

प्रा० जथा (सं० यथा) क्रि० वि० जैसे, जिसप्रकार से ।

प्रा० जत्था (सं० यूथ) पु० मण्डली, दल, समूह, समाज, टोली, झुंड ।

प्रा० जत्थाबाँधना बोल० झुंड बनाना, गोल बाँधना ।

सं० जन (जन्=पैदा होना) पु० मनुष्य, लोग, आदमी, मनुष्य जाति व्यक्ति, २ दुष्ट वा नीच मनुष्य ।

सं० जनक (जन्=पैदा करना) क० पु० बाप, पिता, २ मिथिला के राजा और सीताके बाप का नाम ।

सं० जनकतनया ⎫ (जनक=एक
जनकसुता ⎭ राजाका नाम,

तनया वा सुता=बेटी) स्त्री० सीता, जानकी ।

सं० जनकपुर (जनक=एक राजा का नाम, पुर=शहर) पु० तिरहुत में एक शहर है जो राजा जनक की राजधानी था ।

प्रा० जनकौरा (सं० जनक) पु० जनक का ।

सं० जनता स्त्री० जनसमूह, मनुष्य-समूह ।

प्रा० जनना (सं० जनन, जन्=पैदा होना) क्रि० अ० जन्म होना, पैदा होना ।

सं० जननी (जन्=पैदा होना) स्त्री० माँ, मैया, माता, महतारी ।

सं० जनपद (जन+पद) पु० देश, ग्राम, लोक, जाति, क़ौम, जनस्थान ।

सं० जनप्रवाद पु० किंवदन्ती, अफ़वाह, बदगोई, मज़म्मत, शुहरत, ख़बर, कलह ।

सं० जननीय (जन्+अनीय) कर्म० संतान, उपजाया गया, पैदा किया हुआ ।

सं० जनमेजय (जन=संसार, एज=चमकना, वा जन=दुष्ट लोग, एज=कंपाना) पु० राजा परीक्षित का बेटा ।

सं० जनयिता (जन्+इ+तृ, जन्=पैदा करना) क० पु० पिता, जनक, बाप, जन्मदाता ।

सं० जनयित्री (जनयितृ+ई) क० स्त्री० माता, जननी, माँ, महतारी ।

सं० जनलोक (जन=मनुष्य, लोक=जगह) पु० सात लोकों में का एक लोक जहाँ धर्मात्मा मनुष्य मरने के पीछे रहते हैं ।

प्रा० जनवासा (सं० जन्यवास, जन्य=दुलहे के मित्र आदि, वास=जगह) पु० बरातियों के उतरने की जगह ।

सं० जनाश्रय (जन=मनुष्य, आश्रय=अवलम्ब) पु० विश्रामस्थान, टिकासरा, २ अधिकार, मन्त्री ।

सं० जनश्रुति (जन=मनुष्य, श्रुति=सुनी हुई) स्त्री० ख़बर, समाचार, किंवदन्ती, संदेशा, अफ़वाह ।

प्रा० जनाना (जनना) क्रि० स० पैदा करना, जन्माना, २ (जानना) चिताना, जताना, चेताना, बुझाना ।

प्रा० जानब (जनाना) भा० पु० सैन, संकेत, लखाव, चेताव, सूचना ।

फ़ा० जनाब अन्नभवान्, उच्चपद, उच्चस्थान ।

सं० जनार्दन (जन=दुष्टलोग, अर्द=पीड़ा देना, मारना, वा जन=मनुष्यों से, अर्द=जाँचा जाना अर्थात् जिससे मनुष्य जाँचते हैं)

पु० विष्णु, भगवान्, नारायण ।

प्रा० जनि
जिन } क्रि० वि० मत, नहीं ।

सं० जनि (जन् + इ) भा० स्त्री० जन्म, पैदाइश, उत्पत्ति ।

सं० जनित (जन्=पैदा होना) कर्म० पु० पैदाहुआ, उत्पन्न, भया, जन्मा ।

सं० जनुस् पु० उत्पत्ति, पैदाइश, स्त्री० जनु, उत्पत्ति, जनन ।

प्रा० जनेऊ (सं० यज्ञोपवीत) पु० सूत का तार जिसको तीन वर्ण के लोग गले में पहनते हैं, उपवीत, यज्ञोपवीत, २ जनेऊ जैसा चिह्न जो हीरे आदि रत्नों में होता है ।

प्रा० जनेत (सं० जन्य) पु० बराती, स्त्री० बरात ।

प्रा० जञ्जाल पु० झगड़ा, बखेड़ा, सांसारिक कार्यों का समूह ।

प्रा० जन्ता (सं० यंत्र) पु० तार खींचने का औज़ार ।

सं० जन्तु (जन्=पैदा होना) पु० जीवधारी, प्राणी, जीव, जानवर, पशु, देहधारी, देही ।

प्रा० जन्त्र (सं० यन्त्र) पु० कल, २ बाजा, ३ गंडा, तावीज़, जन्तर, टोटका ।

सं० जन्म (जन्=पैदा होना) पु० उत्पत्ति, पैदा होना, पैदाइश ।

सं० जन्मद (जन्म + द=देनेवाला, दा=देना) पु० जन्मदाता, बाप, पिता ।

सं० जन्मदिन (जन्म + दिन) पु० पैदा होने का दिन, बरसगांठ, बरसवाँदिन, सालगिरह ।

सं० जन्मपत्री (जन्म + पत्री) स्त्री० लग्नकुण्डली, जन्मपत्र, ज़ायचा ।

सं० जन्मभूमि (जन्म + भूमि) स्त्री० अपना देश, उत्पत्तिस्थान, वतन ।

सं० जन्मान्तर (जन्म=पैदाइश, अन्तर=और) पु० दूसरा जन्म, नया जन्म, पुनर्जन्म, फिर जन्मना ।

सं० जन्मान्ध (जन्म + अन्ध) गु० जन्म का अन्धा, सूरदास ।

सं० जन्माष्टमी (जन्म+अष्टमी) स्त्री० श्रीकृष्ण का जन्मदिन, भादौं बदी ८ ।

सं० जन्मोत्सव (जन्म + उत्सव) पु० जन्मदिन का उत्सव, २ जन्माष्टमी के दिन का उत्सव ।

सं० जन्य (जन्=पैदा करना) कर्म० पु० संग्राम, निन्दितवाद, तलाव, कौलीन, हट्ट, उत्पाद्य, सेवक, भृत्य, मित्र, ज्ञाति, बाप, २ दुलहे के मित्र और साथी आदि ।

सं० जप (जप्=जपना) पु० परमेश्वर का नाम लेना, माला फेरना, मन्त्रपाठ ।

प्रा० जपत (सं० जपित, जप्=जपना) कर्म० जपता हुआ, माला

फेरता हुआ ।

सं० जपमाला (जप+माला) पु० सुमिरनी, जप करने की माला, माला ।

प्रा० जब } (सं० यदा, यद्=जो)
जद् } क्रि० त्रि० जिस समय, जिस काल में ।

प्रा० जबतक } क्रि० त्रि० जबलग,
जबतलक } जबलों, जिस समय
जबतोड़ी } तक ।

प्रा० जबतब बोल० कभीकभी ।

प्रा० जबजब बोल० जब कभी ।

प्रा० जबनतब बोल० कभी न कभी, सदा ।

प्रा० जबड़ा पु० जभा, चौहड़, जभड़ा ।

प्रा० जमकना क्रि० अ० ठहरना, निभना ।

प्रा० जम (सं० यम) पु० यमराज, काल, मौत ।

प्रा० जमदूत (सं० यमदूत) पु० मौत के दूत ।

प्रा० जमदीया (सं० यमदीपक) पु० जो दिया कातिक वदी १३ को जम के नाम से जलाते हैं ।

प्रा० जमघट (यम=रोकना, घट=शरीर, जहाँ बहुत भीड़ से आदमी चलने से रुक जाते हैं) पु० मण्डली, भीड़ भाड़, झुंड ।

प्रा० जमधर (सं० यमधार, यम=मौत, धार=तीखीनोक) पु० कटार ।

प्रा० जमना (सं० जन्=पैदा होना) क्रि० अ० उगना, उपजना, पनपना, बढ़ना, २ दृढ़ होना, गाढ़ा होजाना, ठोस होजाना (जैसे पाला अथवा घी), ३ इकट्ठा होना, ४ ठीकबैठना, लगना, सटना ।

प्रा० जम्हाई (सं० जृम्भा, जृम्भ्=जम्हाना) स्त्री० आलस में आकर मुँह खोलना, आलस्य, सुस्ती ।

प्रा० जमहाना (सं० जृम्भ्=जमहाना) क्रि० अ० मुँहखोलना, जमहाईलेना ।

प्रा० जमाई } (सं० जामाता) पु०
जँवाई } दामाद, बेटी का पति ।

प्रा० जमालगोटा पु० एक दवा का नाम, दतुइनिया ।

प्रा० जमुना } (सं० यमुना)
जमन } स्त्री० एक नदी का
जमना } नाम ।

सं० जम्बु } (जम्=खाना) पु०
जम्बू } जामन ।

सं० जम्बुक } (जम्=खाना) पु०
जम्बूक } गीदड़, सियार, शृगाल ।

सं० जम्बुद्वीप } (जम्बु वा जम्बू=
जम्बूद्वीप } जामन, द्वीप=खंड) पु० सात द्वीपों में का पहला द्वीप, जिसमें नौ खंड हैं उसका यह भरतखंड अथवा हिंदुस्थान एक खंड है, (द्वीप शब्द को देखो) ।

सं० जय (जि=जीतना) भा० स्त्री०

जीत, विजय ।

सं० जयजयकार बोलबाला, फ़तेह ।

सं० जयपताका (जय + पताका) स्त्री० जीतका झंडा, फ़तेह का निशान ।

सं० जयपत्र पु० जीतने का पत्र, अश्वमेध यज्ञ, दस्तूरुल्अमल, प्रोग्राम ।

सं० जयन्त (जि=जीतना) पु० इन्द्र का बेटा ।

सं० जयमाल (जय=जीत, माल =माला) स्त्री० जीत की माला, स्वयंवर में लड़की जिसको पसन्द करके उसके गले में जो माला डालती है वह भी जयमाल कहलाती है ।

सं० जयी (जय) क० पु० जीतने वाला, विजयी, जयवान् ।

प्रा० जर (सं०ज्वर) स्त्री०तप, ताप, ज्वर, २ (जड) जड़, मूल ।

सं० जरठ (जॄ=बूढ़ा होना) गु० बूढ़ा, वृद्ध, पुराना, २ कठोर, कठिन, क्रूर ।

सं० जरत
जरी } क० पु० बूढ़ा, वृद्ध ।

सं० जरती स्त्री० बुढ़िया, वृद्धा ।

प्रा० जरनी (जलना) स्त्री० जलन, चिन्ता, फ़िक्र ।

सं० जरा (जॄ=बूढ़ा होना) स्त्री० बुढ़ापा, वृद्धावस्था, २ एक राक्षसी का नाम ।

सं० जरायुज (जरायु + ज) क० पु० पिण्डज, मनुष्यादि ।

सं० जरासन्ध (जरा=एक राक्षसी का नाम, सन्ध=जोड़ा हुआ) पु० मगध देश का प्रसिद्ध राजा जो कंस का ससुर श्रीकृष्ण का वैरी था । कहते हैं कि जब वह जन्मा था तब उसके शरीर की दो फाँकें थीं जिनको जरा नाम राक्षसी ने जोड़ा और उसने यह वर दिया कि जबतक इसके जोड़ न फटेंगे यह किसी से न मरेगा पर इसी तरह से भीम ने उसको चीर डाला ।

अ० जरीब स्त्री० खेत नापने की डोरी जो ६० गज़ अथवा २० गट्ठे की होती है ।

सं० जर्जर (जॄ=पुराना होना) गु० पुराना, जीर्ण, निर्बल, पु० इन्द्रका झंडा, शैवाल, सिवार, इंद्रधनुष् ।

सं० जल (जल्=ढकना) पु०पानी ।

सं० जलक पु० वराटिका, कौड़ी, शुक्तिका, सूती, शंख, घोंघा ।

सं० जलकरङ्क पु० शंख, घोंघा, वराटिका, नारियल का फल दूधयुक्त, सिवार, काई ।

सं० जलकाक पु० गोताखोर, बतक, पनडुब्बी ।

सं० जलकुक्कुट (जल=पानी, कुक्कुट

=मुर्ग़ा) पु० जलमुर्ग़ा, मुर्ग़ाबी ।

सं० जलकूपी स्त्री० तड़ाग, हौज़ ।

सं० जलगुल्म पु० जलभौंर, कछुआ, बर्फ़, हिम, पाला ।

सं० जलक्रीड़ा (जल + क्रीड़ा) स्त्री० पानी में खेल करना ।

सं० जलचर (जल=पानी, चर=चलनेवाला, चर्=चलना) पु० जल के जीव मकर, मछली, ग्राह आदि ।

सं० जलचरकेतु (जलचर=मकर, केतु=झंडा, अर्थात् जिसके झंडे पर मकर का चिह्न है) पु० कामदेव, मदन, मकरध्वज ।

सं० जलज (जल=पानी, ज=पैदा होनेवाला, जन्=पैदा होना) पु० कँवल, कमल, पंकज, २ मछली, ३ शङ्ख, ४ चन्द्रमा, ५ मोती ।

सं० जलजात (जल=पानी, जात=पैदा हुआ, जन्=पैदा होना) पु० कँवल, कमल ।

सं० जलत्र (जल + त्र, त्र=रक्षा करना) छत्र, छाता, नौका, नाव ।

प्रा० जलथल (सं० जलस्थल) पु० आधी धरती पानीसे ढकीहुई और आधी सूखी, दलदल ।

सं० जलद (जल=पानी, द=देनेवाला, दा=देना) पु० बादल, मेघ, घन, घटा, वारिद, मोथा, घास, कलश, घड़ा, गु० पानी देनेवाला ।

सं० जलधर (जल=पानी, धर=रखनेवाला, धृ=रखना) पु० बादल, २ समंदर, ३ एक प्रकार का घास, गु० पानी को रखनेवाला ।

सं० जलधारा (जल=पानी, धारा =धार) स्त्री० झरना, प्रवाह, सोता, स्रोत, पानी का गिरना ।

सं० जलधि (जल=पानी, धा=रखना) पु० समंदर ।

प्रा० जलन (सं० ज्वलन) स्त्री० जलना, तपन, २ तप, ३ रिस, क्रोध, कुढ़न ।

सं० जलनिर्गम पु० मोरी, पानी का निकास ।

प्रा० जलना (सं० ज्वलन, ज्वल् =जलना) क्रि० अ० बलना, दहना, सुलगना, भड़कना, आँच लगना, २ क्रोध करना, कोप करना, कुढ़ना ।

प्रा० जलउठना बोल० भड़कउठना, जलजाना ।

प्रा० जलबुझना बोल० राख हो जाना ।

प्रा० जलेपर नोनलगाना बोल० दुखिया मनुष्य को फिर सताना ।

सं० जलनिधि (जल=पानी, निधि=ख़ज़ाना) पु० समंदर, सागर ।

सं० जलनीली स्त्री० काई, सिवार ।

प्रा० जलन्दर
जलन्धर (सं० जलोदर, जल=पानी, उदर=पेट) पु० पेटमें पानी का इकट्ठा होना, एक प्रकार का पेटका रोग, २ दैत्य विशेष, ३ जलाशय, कूपादि ।

सं० जलपति (जल=पानी, पति=राजा) पु० वरुण देवता, २ समंदर ।

सं० जलपान (जल=पानी, पान=पीना) पु० कलेवा, कलेऊ, जल खाना ।

सं० जलयान (जल=पानी, यान=सवारी) पु० नाव, नौका, जहाज़ ।

सं० जलराशि (जल=पानी, राशि=ढेर) पु० समुद्र ।

सं० जलरुह (जल=पानी, रुह्=उगना) पु० कँवल ।

सं० जलबाण (जल=पानी, बाण=तीर) पु० पानी के तीर ।

सं० जलबिन्दु पु० पानी का बूंद ।

सं० जलविहङ्ग पु० जलपक्षी ।

सं० जलशायिन् (जल+शायिन्, शी=सोना) क० पु० विष्णु, जलचर ।

सं० जलाकर (जल+आकर) पु० सोत, झरना ।

सं० जलाञ्चल (जल+अंचल) पु० झरना, नाला, सोता ।

सं० जलाशय (जल=पानी, आशय=जगह) पु० तालाब, झील, सरोवर, समंदर ।

प्रा० जलेबी स्त्री० एक प्रकार की मिठाई ।

सं० जलौका (जल=पानी, ओक=वास) स्त्री० जोंक, जलिका, जलुका ।

सं० जल्प (जल्प=वृथा बकना) वृथा बकवाद, झूठा झगड़ा, वाद ।

सं० जल्पक (जल्प+अक) क० पु० वावदूक, वाचाल, फ़ज़ूलगो, ग़प्पी, बकवादी ।

सं० जल्पना (सं० जल्पन, जल्प्=बकना) क्रि० अ० बकना, बोलना, वृथा बकवाद करना, झूठा, झगड़ा करना ।

सं० जल्पित (जल्प्=वृथा बकना) कर्म० पु० बकते हुए, बकवाद करते हुए ।

प्रा० जव
जौ (सं० यव) पु० एक अनाज का नाम ।

सं० जवनिका (जु=जाना, जिसमें) स्त्री० परदा, क़नात, काई ।

प्रा० जवान (सं० युवन्, यु=मिलना) पु० तरुण, सोलह बरसकी उमरका ।

प्रा० जवार पु० समंदर की बाढ़, २ एक प्रकार का अनाज ।

प्रा० जवारभाटा पु० समुद्र का उतार चढ़ाव ।

प्रा० जवासा (सं० यवास, यु=मिलना) पु० एक प्रकार की घास जिसकी गर्मी के दिनों में टट्टी बनाई जाती हैं और इसपर बरसात का पानी गिरने से सूख जाता है ।

प्रा० जस (सं० यश) पु० कीर्ति, नामवरी ।

प्रा० जस क्रि० वि० जैसे, जिस प्रकारसे ।

प्रा० जसोदा } (सं०यशोदा) स्त्री०
जसुमति } नन्दजी की स्त्री, श्रीकृष्ण की दूसरी माँ ।

प्रा० जस्त } पु० एक प्रकार की
जस्ता } धातु ।

सं० जहक (ज+हक, हाक=छोड़ना) पु० समय, बालक, केंचुल, गु० त्यागी, छोड़नेवाला ।

प्रा० जहँ } (सं० यत्र) क्रि० वि०
जहाँ } जिस जगह ।

प्रा० जहाँतहाँ बोल० हर एक जगह, सब ठौर ।

प्रा० जहाँकातहाँ बोल० जहाँ था वहीं, उसी जगह ।

प्रा० जहाँजहाँ बोल० जिस जिस जगह ।

प्रा० जहाँकहीं बोल० चाहे जहाँ, किसी जगह ।

प्रा० जहाँतहाँफिरना बोल० भटकना, इधर उधर फिरना ।

सं० जह्नु पु० चन्द्रवंशियों में एक राजर्षि का नाम जो गंगाको उतरने के समय पीगया था (पुराणों के अनुसार) ।

सं० जह्नुतनया (जह्नु + तनया=बेटी) स्त्री० गंगा, कहते हैं कि जब राजा जह्नु तप करते थे तब गंगा की धारा से व्याकुल हुए तो गंगा को पी गये फिर देवताओं के कहने से पीछे पेट से निकाल दी इसलिये गंगाको जह्नु की बेटी कहते हैं ।

प्रा० जाई (सं०जाता,जन्=जन्मना) स्त्री० बेटी, लड़की, जनी, गु० पैदा हुई, २ (सं० जाती) चमेली ।

प्रा० जाँघ (सं० जङ्घा) स्त्री० रान, जंघा ।

प्रा० जाँघिया (जाँघ) पु० कछनी ।

प्रा० जाँचना क्रि० स० परखना, अटकलना, कसना ।

प्रा० जाँता (सं० यंत्र) स्त्री० चक्की, पाट, पेषणी ।

प्रा० जाकड़ पु० बन्धक, धरोहर, कोई चीज़ शर्त पर लेना ।

प्रा० जागना (सं० जागरण, जागृ=जागना) क्रि० अ० नींद से उठना, सचेत होना ।

सं० जागर } (जागृ=जागना) भा०
जागरण } पु० रतजगा, जगौती रात को जागकर परमेश्वर का ध्यान करना ।

सं० जागरित
जागरिता
जागरी
जागरूक
जाग्रत्
क० पु० जगैया, निद्रोत्थित, सचेत, बेदार ।

सं०जाङ्गल पु०गौरैया पक्षी,गरगौटा।

प्रा० जाचक (सं०याचक) पु०माँगनेवाला, भिखारी, याचनेवाला ।

प्रा० जाचना (सं० याचन) क्रि० स० माँगना, चाहना ।

प्रा० जाजम स्त्री० शतरंजी, दरी, बिछौना ।

प्रा० जाट पु० हिंदुओं में एक जाति ।

प्रा० जाड़ा (सं०जड,जल्=ढकना) पु० सर्दी, ठंढ, शीतकाल ।

सं० जात (जन्=पैदा होना) गु० जन्मा हुआ, पैदाहुआ, उत्पन्न ।

अ० ज़ात (सं० जाति) स्त्री०जाति, वंश, कुल, वर्ण, गोत, २ प्रकार, भेद, गण, वर्ग ।

सं० जातक (जन्=पैदा होना) पु० बेटा, २ बृहज्जातक आदि ज्योतिष् के ग्रन्थ, ३ जातकर्म ।

सं० जातकर्म (जात=जन्म, कर्म=काम) पु० जन्मके समयकी एक रीति ।

प्रा० जातपाँत (सं० जातिपंक्ति) स्त्री० वंशावली, वंश, उत्पत्ति, पीढ़ी ।

सं० जातरूप पु० सोना, चाँदी ।

सं० जाति (जन्=पैदा होना) स्त्री० ज़ात, वर्ण, गोत्र, वंश, २ उत्पत्ति ।

सं०जातकर्म पु०नांदीमुखश्राद्धादि।

सं० जाती (जन्=पैदा होना) स्त्री० चमेली, जावित्री ।

सं० जातीफल पु० जायफल ।

सं० जातुधान (जातु=कभी,धान=पास, अर्थात् जो समय पाकर मनुष्यों के पास आजाता है) पु० राक्षस, असुर ।

प्रा० जात्रा (सं०यात्रा) स्त्री० तीर्थ को जाना, देशाटन, सफ़र, कूच।

प्रा० जात्री (सं० यात्री) पु० यात्रा करनेवाला, तीर्थ को जानेवाला, मुसाफ़िर ।

फ़ा० जान रूह, जीव, आत्मा ।

सं० जानकी (जनक=राजाका नाम) स्त्री० जनक राजाकी बेटी, सीता, वैदेही, श्रीरामचन्द्रकी पत्नी ।

प्रा० जानना (सं० ज्ञान, ज्ञा=जानना) क्रि० स० समझना, बूझना, पहचानना, जानबूझके, बोल० मन से, जीसे, समझ बूझ कर ।

प्रा० जाना (सं० यान, या=जाना) क्रि० अ० गमन करना, चलना, बीतना, पहुँचना, जारी रहना, चला जाना ।

प्रा० जातारहना बोल० खोया जाना, चला जाना, अदृश्य होना, अलोप होजाना, मर जाना, चंपत

होना, बिलाय जाना ।

प्रा० जानेदेना बोल० छोड़देना, क्षमा करना, कुछ ध्यान नहीं करना ।

सं० जानु (जनू=पैदा होना) पु० घुटना, टखना, टेंवना, ऊरू, ज़ानूं ।

सं० जाप (जप्=जपना) कृ० पु० जप, रटना, माला फेरना, मन्त्र जपना ।

सं० जापक (जप्=जपना) कृ०पु० जप करनेवाला, जपनेवाला ।

प्रा० जाम (सं० याम) स्त्री० पहर, दिन रात का आठवाँ भाग, तीन घण्टा ।

प्रा० जामन (सं० जम्बु, जम्=खाना) पु० एक पेड़ और उसके फल का नाम ।

सं० जामाता (जाया=पत्नी, मा=आदर करना) पु० जमाई, बेटी का पति, दामाद ।

प्रा० जामिनी (सं० यामिनी) स्त्री० रात, रात्रि ।

प्रा० जाम्बवन्त (सं० जाम्बवान्, जाम्ब=जामन, वत्=वाला) पु० रीछों का राजा जो श्रीरामचन्द्र का मित्र और श्रीकृष्णका ससुर था ।

सं० जाम्बूनद पु० सुवर्ण, स्त्री० जाया, विवाहिता स्त्री ।

प्रा० जायफल (सं० जातिफल) पु० एक तरह का गर्म मसाला ।

प्रा० जाय क्रि० वि० वृथा ।

सं० जाया (जन्=पैदा होना) स्त्री० भार्या, पत्नी, ब्याही हुई स्त्री ।

सं० जायानुजीवी (जाया+अनुजीवी) पु० नट, वेश्यापति, भडुआ, बकपक्षी ।

सं० जायापती दम्पती, स्त्री पुरुष ।

सं० जार (जॄ=दुबला होना, अर्थात् स्त्री के सच्चे पतिका प्यार घटानेवाला) पु० यार, दूसरा पति, उपपति ।

सं० जारज (जार=यार, जन्=पैदा होना) पु० जार से पैदा हुआ लड़का, हरामी बेटा ।

प्रा० जारना (सं० ज्वलन) क्रि० स० जलाना, सुलगाना, भड़काना, आँच लगाना ।

सं० जाल (जल्=ढकना, घेरना) स्त्री० फंदा, पाश, २ जालीदार खिड़की, झरोखा, ३ माया, इन्द्रजाल, जादू, ४ समूह ।

सं० जालक (जाल्+अक) कृ० पु० फ़रेबी, मक्कार, २ मछली का जाल, ३ स्त्री० जालीलोट कपड़ा, ४ शिलाजीत, ५ जोंक, ६ राँड़, रंडा, ७ झिल्लम, बख़्तर, ८ व्याध, बहेलिया, मल्लाह ।

सं० जालगणिका स्त्री० मथेनी, मथनी, रयी ।

प्रा० जाला (सं० जाल, जल=

ढकना) पु० मकड़ी का फांदा, २मोतियाबिंद,आँख की बीमारी ।

प्रा० **जाली** (सं० जाल) स्त्री० एक तरह का कपड़ा, २ झंझरी, जालीदार खिड़की, झरोखा ।

सं० **जाल्म** पु० जार, धूर्त, पामर, अधम, क्रूर, ढीठ ।

प्रा० **जावक** (सं० यावक, यु=मिलना) पु० महावर, अलता ।

प्रा० **जावित्री** (सं० जातीपत्री)
जायपत्री स्त्री० एक प्रकार का गर्म मसाला ।

प्रा० **जासु** (सं० यस्य) सर्वना० जिसका, जिससे ।

प्रा० **जाहि** सर्वना० जिसको ।

सं० **जाह्नवी** (जह्नु=एक राजर्षि का नाम) स्त्री० गँगा, भागीरथी, (जह्नुतनया देखो) ।

सं० **जिगमिषा** (गम्=जाना) भा० स्त्री० गमनेच्छा, जानेका इरादा ।

सं० **जिगीषा** (जि=जीतना) भा० स्त्री० जीतने की इच्छा, जय की इच्छा, हिसका ।

सं० **जिघत्सा** (अद्=भक्षण करना) भा० स्त्री० भोजनेच्छा, खाने का इरादा ।

सं० **जिघत्सु** (अद्=खाना) क० पु० बुभुक्षु, भोजन करनेकी इच्छा करनेवाला ।

सं० **जिघांसा** (हन्=मारना) भा० स्त्री० मारने की इच्छा करना ।

सं० **जिघांसु** (हन्=मारना) क० पु० मारने की इच्छा करनेवाला ।

सं० **जिज्ञासा** (ज्ञा=जानना) भा० स्त्री० जानने की इच्छा, पूछना, प्रश्न ।

सं० **जिज्ञासु** क० पु० पूछनेवाला ।

प्रा० **जित** (सं० यत्र) क्रि० वि० जहाँ, जिधर, २ जीतागया, हारा हुआ ।

सं० **जितेन्द्रिय** (जित=जीतली वा वश करली,इन्द्रिय=इन्द्रियां, जिसने) गु० इन्द्रियजित्, जिसने इन्द्रियों को वश में करलिया हो, ऋषि, मुनि, यति, संन्यासी ।

सं० **जिन** (जि=जीतना) पु० बुद्ध, जैनियों का देवता, जैनमत में २४ जिन हुए बतलाते हैं ।

फ़ा० **जिन्स** ज़ात, क़ौम ।

प्रा० **जिमाना** (सं० जेमन, जिम्=खाना) क्रि० स० खिलाना ।

प्रा० **जिमि** क्रि० वि० जैसे, जिस प्रकार ।

प्रा० **जिय** (सं०जीव) पु०जीव,
जियरा प्राण, आत्मा, रूह ।

प्रा० **जियाना** (सं० जीवन) क्रि० स० जिलाना, प्राणदेना, २ पालना, पोषना ।

प्रा० **जिहिं** सर्वना० जिनको, जिस को, जिसके, जो ।

सं० जिह्वा (लिह्=स्वाद लेना) स्त्री०रसज्ञानइन्द्रिय, जीभ, रसना ।

प्रा० जी (सं० जीव) पु० जीव, प्राण, आत्मा, जिय, २मन, चित्त ।

सं० जिह्वल क० पु० चटोरा, आस्वादक, जिभोर ।

प्रा० जीउठाना बोल० मन खींच लेना, किसीसे मित्रता छोड़देना ।

प्रा० जीबुराकरना बोल० जीमिचलाना, वमन करना या किया चाहना, रद्द किया चाहना ।

प्रा० जीबढ़ाना बोल० मनमें किसी चीज़की चाह पैदा होना, जी में उत्साह होना, हौसिला होना ।

प्रा० जीबिखरना बोल० अचेत होना, मूर्च्छित होना, मूर्च्छा आना।

प्रा० जीभरजाना बोल० सन्तोष होना, मन तृप्त होजाना, आसूदा होना, अघाजाना ।

प्रा० जीआजाना बोल० किसी चीज़ पर अचानक मन लग जाना, किसी से प्रसन्न होना ।

प्रा० जीभरआना बोल० मन में दया का उपजना, दया हर्ष अथवा शोच से मुँहसे बोल न निकलना ।

प्रा० जीबहलाना बोल० मन बहलाना ।

प्रा० जीपाना बोल० किसीके स्वभाव को जानना ।

प्रा० जीपानीकरना बोल०सताना, दुखदेना, खिझाना, पीड़ादेना ।

प्रा० जीपरखेलना बोल० अपने को जोखिम में डालना, जी देने पर उद्यत होना ।

प्रा० जीपसीजना }
जीपिघलना } बोल० दया आना, मोह आना ।

प्रा० जीपकड़ाजाना बोल० शोच में होना, उदास होना ।

प्रा० जीफटजाना बोल० दिल टूट जाना, निराश होना ।

प्रा० जीफिरजाना बोल० किसी चीज़को नहीं चाहना, सन्तुष्ट होना, तृप्तहोना, किसी चीज़ से अघा जाना ।

प्रा० जीजलना बोल० मनमें दुख पाना, कुढ़ना ।

प्रा० जीजलाना बोल० सहाय करना, कृपा करना, आप दुख सहकर दूसरेका उपकार करना, २ सताना, खिझाना, दिल दुखाना, कलपाना ।

प्रा० जीचाहना बोल० किसी चीज़ की इच्छा करना, दिल ललचाना, मनमें किसी की चाह पैदा होना ।

प्रा० जीछिपाना }
जीचुराना } बोल० किसी कामको सुस्ती से करना, असावधानी करना ।

प्रा० जीचलाना बोल० किसी काम को वीरता से करना ।

प्रा० जीचलना बोल० चाहना,

इच्छा करना ।

प्रा० जीदान बोल० बचाना, मरने से बचाना ।

प्रा० जीदानकरना बोल० किसी के प्राण बचाना, बड़े दोषको क्षमा करना, जान बख़्श देना ।

प्रा० जीधड़कना बोल० डर से अथवा शोच से दिल धुकड़ पुकड़ करना, दिल काँपना ।

प्रा० जीडूबजाना बोल० अचेत होना, मूर्च्छा आना, जी बिखरना, ग़श आना, बेहोश होना ।

प्रा० जीरखना बोल० झटपट प्रसन्न होजाना, प्रसन्न करना, दिल ख़ुश करना ।

प्रा० जीसे उतर जाना बोल० नहीं चाहना, दिलसे गिरना ।

प्रा० जीसे मारना बोल० मार डालना, जानसे मार डालना ।

प्रा० जीकरना ⎫ बोल० चाहना,
जीहोना ⎭ किसी चीज़ की चाह मनमें पैदा होना ।

प्रा० जीखोलकेकुछकरना बोल० किसी काम को चाह से अथवा प्रसन्नता से करना ।

प्रा० जीपरआना बोल० मुश्किल पड़ना, जी क्लेश में होना ।

प्रा० जीघटजाना बोल० किसी चीज़ से मन हट जाना, घिनाना, अवज्ञा करना, उदास होना ।

प्रा० जीलगना बोल० किसी से प्यार करना, किसीकी चाह होना।

प्रा० जीलगाना बोल० किसी चीज़ पर मन लगाना, किसी की चाह मन में पैदा होना ।

प्रा० जीलेना बोल० किसी के मन की बातको जानना, २मार डालना।

प्रा० जीमारना बोल० किसी की इच्छा को तोड़ना, निराश करना, अप्रसन्न करना ।

प्रा० जीमिलाना बोल० किसी से मित्रता करना, मुहब्बत बढ़ाना।

प्रा० जीमेंआना बोल० कोई बात सूझना, याद पड़ना ।

प्रा० जीमेंजलजाना बोल० डाह से दुख पाना ।

प्रा० जीमेंजीआना बोल० सुख पाना, चैन होना, प्रसन्न होना।

प्रा० जीमेंघरकरना बोल० मन भाना, किसीको बहुत चाहना।

प्रा० जीनिकलना बोल० मरना, २ बेकल होना, ३ बहुत डरना।

प्रा० जीहारना बोल० हिम्मत हारना, घबराना, साहस नहीं रखना, निराश होना ।

प्रा० जीहटजाना बोल० मन हट जाना, जी घट जाना ।

प्रा० जी अव्य० हाँ, २ साहिब, आप ।

प्रा० जीत (सं०जित, जि=जीतना)

स्त्री० विजय, जय, फ़तह।

प्रा० जीतना (सं० जि=जीतना) क्रि० स० जय करना, पराजय करना, हराना।

प्रा० जीतब (सं० जीवन वा जीवितव्य) पु० जीना, जीवन, ज़िंदगी।

प्रा० जीता ('जीना) गु० जीता हुआ, चलता, चैतन्य, २ अधिक, ऊपर।

प्रा० जीतेजी बोल० जबतक जीता है।

प्रा० जीना (सं० जीवन) क्रि० अ० जीता रहना।

प्रा० जीभ (सं० जिह्वा) स्त्री० जिह्वा, रसना, ज़बान।

प्रा० जीभबढ़ाना बोल० बातैं बनाना, बकबक करना, निंदा करना।

प्रा० जीभपकड़ना बोल० चुप होना वा करना, २ किसी की बात काटना, ३ छोटे छोटे दोष निकालना।

प्रा० जीभचाटना बोल० बड़ी लालसा करना, जी ललचाना, बहुत चाहना।

प्रा० जीभनिकालना बोल० बहुत ही बहुत थकजाना या प्यासा होना, हाँफना।

प्रा० जीभी (जीभ) स्त्री० जीभ साफ़ करने की चीज़।

प्रा० जीमना
जेवना } (सं० जेमन, जिम्=खाना) क्रि० स० खाना, भोजन करना।

प्रा० जीमूत पु० मेघ, २ पर्वत, ३ मोथा, ४ दण्डकारण्य, ५ शेष, ६ धूम, ७ इन्द्रिय।

प्रा० जीरा (सं० जीर, ज्या=पुराना होना) पु० एक मसाले का नाम।

सं० जीर्ण (जॄ=बूढ़ा होना, पुराना होना) पु० बूढ़ा आदमी, गु० पुराना मुर्झायाहुआ, पचाहुआ।

सं० जीर्णोद्धार (जीर्ण+उद्धार) मरम्मत, लेसपोत।

प्रा० जील स्त्री० गाने में ऊँचा स्वर, तीखा राग।

सं० जीव (जीव्=जीना) पु० प्राण, जी, आत्मा, २ जीवधारी जन्तु, जानवर, ३ जीविका।

सं० जीवक (जीव्+अक) क० पु० सेवक, किंकर, कृपण।

सं० जीवन पु० जीना, जीतब, २ जीविका, वृत्ति, ३ पानी, ४ बेटा, पुत्र।

सं० जीवनचर्या जीवनवृत्तान्त, हाल, सवानह उम्री।

सं० जीविका स्त्री० जीने का उपाय, आजीविका, वृत्ति, निबाह, रोज़ी।

सं० जीवित
जीवी } गु० जीताहुआ, जीता, पु० जीना, जीवन,

वर्तमान ।

प्रा० जीह (सं० जिह्वा) स्त्री०
जीहा जीभ, रसना ।

प्रा०जुआरी (सं०द्यूतकारी) क०
जुवारी पु० जूआ खेलनेवाला ।

प्रा० जुग (सं० युग) पु० सत्य, त्रेता, द्वापर, कलि ये चार जुग कहलाते हैं, समय, २ जोड़ा ।

प्रा० जुगानजुग (सं० युगानुयुग, युग + अनु + युग) बोल० कई युग, कई बरस, बहुत बरस तक ।

प्रा० जुगजुग बोल० सदा, नित, सर्वदा, हमेशह ।

प्रा० जुगत (सं०युक्ति) स्त्री० चतुराई, निपुणता, बनावट, हिकमत ।

प्रा०जुगनी स्त्री०चमकनेवाला कीड़ा ।

प्रा० जुगल (सं० युगल) गु० दो, जोड़ा ।

प्रा० जुगवना क्रि० स० देखना, यत्न करना, ख़बर लेना, रखना, रक्षा करना ।

प्रा० जुगालना क्रि० अ० उगा-
जुगालीकरना लना, पागुराना, राउथ करना ।

प्रा० जुगाली स्त्री० पागुर, उगाल, रोमंथ ।

सं०जुगुप्सा (गुप्=निन्दा करना) भा० स्त्री० निन्दा, बुराई, असूया ।

सं० जुगुप्सित र्म० पु० निन्दित, बदनाम ।

प्रा० जुझाऊ (सं० युद्धीय=लड़ाई का) गु० लड़ाई का जुझाऊ बाजा, लड़ाई का बाजा ।

प्रा० जुझार (सं० योद्धा) क० पु० लड़ाका, वीर, भट, लड़नेवाला, बहादुर ।

प्रा० जुटना (सं०युक्त,युज्=मिलना) क्रि० अ० भिड़ना, मिलना, लड़ने को सामने होना ।

प्रा० जुड़ना (सं०जुड्=जुड़ना) क्रि० अ० मिलना, सटना ।

प्रा० जुड़ाना क्रि० स० छाती
जुराना ठंढी करना, ठंढा होना, २ मिलाना, जोड़ना ।

प्रा० जुन्हरी स्त्री० ज्वार, एक प्रकार का अनाज ।

प्रा० जुवार स्त्री० एक प्रकार का अनाज ।

प्रा० जुहार पु० सलाम, रामराम, पालागन, दण्डवत्, नमस्कार ।

प्रा० जूआ (सं० द्यूत) स्त्री० पाँसा खेलना, दाँव लगाना ।

प्रा० जूआ (सं० युग) पु० एक
जूवा लकड़ी की चीज़ जो बैलों के गले में बाँधते हैं, जूआठ ।

प्रा० जूँ स्त्री० जुवाँ जो शिरके बालों में मैल से पैदा होते हैं ।

प्रा० जूझना (सं० युध्=लड़ना) क्रि० अ० लड़ना, लड़ाई करना,

२ लड़ाई में मरना ।

प्रा० जूझमरना बोल० लड़ाई में लड़कर मरना ।

सं० जुष्ट (जुष्=सेवा करना) कर्म०पु० जूँठा, सेवित, सेवा किया गया ।

सं० जूट (जुट्=बाँधना) पु० केशों का बंध, जटाका जूड़ा, २ समूह ।

प्रा० जूड़ा (सं० जूट) पु० बँधे हुए बाल, २ (जड़) ठंढ ।

सं० जुड़ित
जुड़िया (जुड् + इत) कर्म०पु० मिलित, तौश्रम, दो लड़के जुड़े हुए ।

प्रा० जूड़ी (सं०जड़=जाड़ा) स्त्री० ज्वर, शीतज्वर, कंपज्वर, जाड़ा, लरज़ा ।

प्रा० जूता
जूती पनही, पगरखी, जोड़ा, चर्मपादुका ।

प्रा० जूहा (सं०यूथ) पु०समूह, झुंड ।

प्रा० जूही
जुही (सं० यूथी, यु=मिलना) स्त्री०एक फूल का नाम ।

सं० जृम्भ
जृम्भा
जृम्भण (जृम्भ=जम्हाना) भा०स्त्री०जम्हाई, आलस्य ।

प्रा० जेट स्त्री० ढेर, ढेरी, समूह, परत ।

प्रा० जेठ (सं० ज्येष्ठ) पु० पति का बड़ा भाई, २ एक महीने का नाम ।

प्रा० जेठा (सं० ज्येष्ठ) गु० बड़ा, पहलौठा, २ पु० कुसुम का बहुत अच्छा और गाढ़ा रंग ।

प्रा० जेठानी
जिठानी (जेठ) स्त्री० जेठ की स्त्री ।

प्रा० जेठीमधु (सं०यष्टीमधु, यष्टी=ताँत, मधु=शहद) स्त्री० मुलहठी, एक दवाई ।

प्रा० जेठौत (जेठ) पु० जेठ का बेटा ।

प्रा० जेब स्त्री० ख़लीता, पाकट ।

प्रा० जेबकतरा पु० उचक्का, जेब कतरनेवाला ।

सं० जेता (जि=जीतना) क० पु० विजयी, जीतनेवाला, फ़ताह ।

सं० जेमन (जिम्=खाना) भा० पु० भोजन, खाना, भोज्यपदार्थ, खाने की वस्तु ।

प्रा० जेवड़ी
जेवरी स्त्री० रस्सी, डोरी ।

प्रा० जेहर पु० स्त्रियों के पहनने का एक गहना ।

प्रा० जै गु० जितना ।

प्रा० जै (सं० जय) स्त्री० जीत, विजय, जय, फ़तेह ।

प्रा० जैजैकार (सं० जयकार) पु० आनन्द, उत्सव, हर्ष, जीत, विजय, जय, बोलबाला ।

प्रा० जैजैकारकरना बोल० जय का शब्द करना ।

सं० जैन (जिन=अर्हण, बुध) पु० जिनधर्मको माननेवाला, बौद्धमती ।

सं० जैनी क० पु० जैन मतको माननेवाला, श्रावक, सरावक ।

प्रा० जैसा (सं० यादृश्, यत्=जो, दृश्=देखना) क्रि० वि० जिस तरह, जिस प्रकार ।

प्रा० जैसाचाहिये बोल० यथोचित, ठीक ।

प्रा० जैसाकातैसा बोल० ठीक, जैसा चाहिये, ज्यों का त्यों ।

प्रा० जैहैं (व्रजभाषा) क्रि० अ० जायगा, जावेगा, जावेंगे ।

प्रा० जों क्रि० वि० जैसे, जिसतरह, जब ।

प्रा० जोंतों, जोंतोंकरके बोल० किसी तरहसे ।

प्रा० जोंकातों बोल० जैसा का तैसा, जैसाथा वैसाही, ठीक वैसाही ।

प्रा० जोंक (सं० जलौका) स्त्री० जल का कीड़ा, जलौका ।

प्रा० जोंहीं क्रि० वि० जभी, तुरंत ।

प्रा० जोखना क्रि० स० तौलना, नापना ।

प्रा० जोखिम, जोखों स्त्री० बीमा, २ डर, चिंता, शङ्का, कठिन काम ।

प्रा० जोखिमउठाना बोल० अपने तईं चिंता में डालना, कठिन काम के करने का साहस करना ।

प्रा० जोट, जोटा (सं० जोड़, जुड्=मिलाना) पु० जोड़ी, साथी, सम, बराबरी के, गु० बराबर ।

सं० जोड़ (जुड्=बाँधना, मिलाना) पु० मेल, मिलाव, इकट्ठा, मीज़ान, टोटल, २ गाँठ, संधि ।

प्रा० जोड़देना बोल० गिनना, हिसाब करना, मीज़ान देना, ठीक करना, जोड़ना ।

प्रा० जोड़तोड़ बोल० बनावट, बंधान, हिकमत, जुगत, २ गाँठ ।

प्रा० जोड़जाड़ बोल० बचत, बचाव, थोड़ा थोड़ा करके इकट्ठा करना ।

प्रा० जोड़ना, जोरना (सं० जुड्=मिलाना) क्रि० स० मिलाना, इकट्ठा करना, २ गाँठना, थेगली लगाना, पैवन्द लगाना, ३ गिनना, हिसाब करना, मीज़ान देना, जोड़ देना, ४ बनाना, लगाना, चिपटाना, साटना, पीछे लगा देना ।

प्रा० जोड़ा (सं० जुड्=जोड़ना) पु० दो मनुष्य अथवा दो चीज़, युग्म, २ जूता, ३ कपड़े का जोड़ा ।

प्रा० जोतना (सं० योजन, युज्=मिलाना) क्रि० स० जुआमें लगाना, हल जोतना, चासना ।

प्रा० जोति, जोत (सं० ज्योति) स्त्री० चमक, उजाला, प्रकाश, किरण, तेज, दीप्ति, रोशनी, दीपक का प्रकाश, २ दृष्टि, दीठ ।

प्रा० जोतिस्वरूप (सं० ज्योतिः स्वरूप) गु० आपसे प्रकाशित, दीप्तिमान्, प्रकाशरूप, परमेश्वर का गुण वा विशेषण ।

प्रा० जोतिष (सं० ज्योतिष्) पु० ग्रह नक्षत्र आदि जानने का शास्त्र ।

प्रा० जोतिषी जोतषी } (सं० ज्योतिषिक) क० पु० जोतिष विद्या जाननेवाला, जोषी, गणक, दैवज्ञ, नजूमी ।

प्रा० जोती स्त्री० तराज़ू के पलड़े की रस्सी ।

प्रा० जोधा (सं० योधा) पु० लड़ाका, बीर, बहादुर, भट, जुझार ।

प्रा० जोना जोवना } क्रि० स० देखना, चितवना, ताकना ।

प्रा० जोबन (सं० यौवन) पु० जवानी, तरुणाई ।

प्रा० जोय जोरू } (सं० जाया) स्त्री० पत्नी, भार्या, स्त्री, लुगाई ।

प्रा० जोरी जोड़ी } (सं० युज्=मिलना) स्त्री० जोड़ा, युगल, युग्म, दो ।

सं० जोषित् जोषिता } (जुष्=प्रसन्न करना, तृप्त करना) स्त्री० नारी, लुगाई ।

प्रा० जोषी जोसी } (सं० ज्योतिषी) पु० ज्योतिषी, ब्राह्मणों की एक जाति ।

प्रा० जोहना क्रि० स० बाट देखना, बाट निहारना, अपेक्षा करना, देखना, खोजना, ढूँढ़ना ।

प्रा० जोही गु० खोजी, ढुँढैया, मुतलाशी ।

प्रा० जौलौं जौलग } क्रि० वि० जबतक ।

प्रा० जौ (सं० यव) पु० जव, एक प्रकार का अनाज ।

प्रा० जौन (सं० यद् वा यः=जो) सर्वना० जो, जिस ।

प्रा० जौनार जेवनार } (सं० जेमन) स्त्री० भोजन, भोज, खाना, उत्सव, अपने भाई बंधु अथवा मित्रों को खिलाना ।

सं० ज्ञात (ज्ञा=जानना) कर्म० पु० जाना हुआ, समझा हुआ, जाना गया, विदित ।

सं० ज्ञाता (ज्ञा=जानना) क० पु० जनैया, वाक़िफ़ ।

सं० ज्ञाति (ज्ञा=जानना) पु० पिता, बाप, २ सम्बन्धी, जातिभाई ।

सं० ज्ञान (ज्ञा=जानना) पु० जानना, बोध, बुद्धि, समझ, विज्ञता ।

सं० ज्ञानवान् ज्ञानी } (ज्ञान) गु० बुद्धिमान्, पण्डित, विद्वान्, विज्ञ, विचारवान् ।

सं० ज्ञानवापी (ज्ञान, वापी=बावली) स्त्री० एक बावली का नाम जो बनारस में श्रीविश्वनाथजी के मन्दिर में है ।

सं० ज्ञानेन्द्रिय (ज्ञान+इन्द्रिय) स्त्री० इन्द्रियाँ जिनसे देखने, सुनने, सूँघने, स्वाद लेने और छूने आदि का ज्ञान होता है अर्थात् आँख

कान, नाक, जीभ, त्वचा अर्थात् शरीर पर का चमड़ा, अन्तःकरण, मन ।

सं० **ज्ञापक** (ज्ञप्=जनाना) क० पु० जतलानेवाला, बतलानेवाला, आज्ञा देनेवाला ।

सं० **ज्ञापन** (ज्ञप्+अन, ज्ञप्=जनाना) भा० पु० जनाना, विदित करना, २ निदेश, हुक्म ।

सं० **ज्ञापित** | कर्म० पु० जानाहुआ,
ज्ञाप्य } जानने योग्य ।
ज्ञेय |

सं० **ज्या** (ज्या=पुराना होना वा बूढ़ा होना) स्त्री० माँ, माता, २ पृथ्वी, धरती, ३ धनुष का चिल्ला ।

सं० **ज्येष्ठ** (वृद्ध, यहाँ वृद्ध को ज्या आदेश होजाता है) गु० बड़ा, प्रधान, श्रेष्ठ, उत्तम, जेठा, पहलौठा ।

सं० **ज्येष्ठा** (ज्या=बूढ़ा वा बड़ा वा पुराना होना) स्त्री० अठारहवाँ नक्षत्र, २ बिचली अंगुली, ३ गंगा ।

सं० **ज्येष्ठ** (ज्येष्ठा) पु० जेठ का महीना जिसकी पूर्णमासी के दिन ज्येष्ठा नक्षत्र होता है और पूरा चाँद इस नक्षत्र के पास रहता है ।

प्रा० **ज्यों** क्रि० वि० जैसे ।

प्रा० **ज्योंकात्यों** बोल० ठीक, वैसाही, ठीक ठीक ।

सं० **ज्योतिः** (द्युत्=चमकना) भा० स्त्री० जोत, उजाला, प्रकाश, चमक, दीप्ति, प्रभा ।

सं० **ज्योतिश्शास्त्र** (ज्योतिस्+शास्त्र) पु० ग्रह नक्षत्र आदिकी चाल जानने का शास्त्र, ज्योतिष, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण आदि जानने का शास्त्र, पंचाङ्गशास्त्र ।

सं० **ज्योतिर्विद्** (ज्योतिः+विद्, विद्=जानना) क० पु० ज्योतिषी, नजूमी ।

सं० **ज्योतिष** (ज्योतिः) पु० ज्योतिष शास्त्र, ज्योतिश्शास्त्र ।

सं० **ज्योत्स्ना** (द्युत्=चमकना) स्त्री० चाँदनी, चन्द्रिका, चाँदकी किरण ।

सं० **ज्वर** (ज्वर्=बीमार होना) पु० तप, ताप, ज्वर ।

सं० **ज्वराग्नि** (ज्वर+अग्नि) पु० तप की गरमी ।

सं० **ज्वलन** (ज्वल्=जलना, चमकना) भा० स्त्री० जलन, तपन, दाह, २ आग ।

सं० **ज्वलित** (ज्वल्=चमकना) क० पु० प्रकाशित, जलता हुआ ।

प्रा० **ज्वार** स्त्री० एक प्रकार का अनाज ।

सं० **ज्वाला** (ज्वल्=चमकना) स्त्री० आँच, लौ, लपट, लूका, चमक ।

सं० ज्वालामुखी (ज्वाला=आग का लूका, मुख=मुँह) स्त्री० वह जगह जहाँ से आग निकलती है, आग का पहाड़, २ देवी, अम्बिका, दुर्गा ।

झ

सं० झ पु० बृहस्पति, २ इन्द्र, ३ शब्द-ध्वनि, ४ नैपथ्य, ५ झंकोर, ६ मिलाप, ७ स्थिति ।

सं० झङ्कार (झम्=ऐसा शब्द, कृ=करना) पु० झंझनाहट, झंझना होने का शब्द ।

प्रा० झंखना क्रि० अ० बड़बड़ाना, चड़चड़ाना, टैं टैं करना, बकना, २ पछताना, बिलपना ।

प्रा० झंखाड़ पु० बिन पत्ते का पेड़ ।

प्रा० झंगा } पु० अंगा, कुरता, ऊपर पहननेका कपड़ा ।
झगा

प्रा० झंझट पु० घबराहट, झगड़ा, रगड़ा ।

प्रा० झंझनाना (सं० झणत्कार, झणत्=ऐसा शब्द, कृ=करना) क्रि० अ० ठनठनाना, बाजना ।

प्रा० झंझरी स्त्री० जाली, झरोखा ।

प्रा० झंडा पु० निशान, ध्वजा, पताका, फरहरा ।

प्रा० झंप }
झंव } स्त्री० मूर्च्छा ।

प्रा० झक स्त्री० कोप, क्रोध, रिस, सनक, २ लहर ।

प्रा० झकमारना बोल० वृथा काम करना, निरर्थक काम करना, यह बोल० दूसरे की हलकाई जताने के लिये बोला जाता है ।

प्रा० झकझोरी स्त्री० छीनाछीनी, झपटाझपटी, खींचाखींची, लूटपाट ।

प्रा० झकाझक गु० झलाझल, जगामग, २ सुथरा, साफ़ ।

प्रा० झकोरना क्रि० स० हिलाना, कंपाना, झकोरादेना, झोका देना ।

प्रा० झक्कड़ (सं० झंकार) पु० आँधी, चौवाई, तूफ़ान, हवा का बौंडल ।

प्रा० झक्की गु० वृथा बकवाद करनेवाला, बकी, प्रलापी, लहरी, तरंगी ।

प्रा० झखना क्रि० अ० बड़बड़ाना, ठींकना, बकना ।

प्रा० झगड़ना क्रि० अ० लड़ना, लड़ाई करना, बखेड़ा करना, वाद विवाद करना, कलह करना ।

प्रा० झगड़ा पु० लड़ाई, रगड़ा, बखेड़ा, विवाद ।

प्रा० झगड़ालू (झगड़ना) क० पु० लड़नेवाला, लड़ाक, लड़ाईख़ोर, झगड़ेल, झगड़ा करनेवाला ।

प्रा० झगुला पु० बालक के पहनने का कुर्ता, चोला ।

प्रा० झझू पु० लंबबाल ।

सं० झञ्झा स्त्री० वायु, वर्षाऋतु,

झकोरा, झाँझ ।

सं० झंझानिल (झंझ + अनिल) पु० वर्षाऋतु, ग्रीष्म का वायु, झकोरा ।

प्रा० झंझट पु० बखेड़ा, झगड़ा ।

प्रा० झट (सं० झटिति, झट= उलझना, मिलना) क्रि० वि० तुरन्त, शीघ्र, उसी दम, जल्दी ।

प्रा० झटसे }
झटपट } बोल० तुरन्त,शीघ्र, उसी दम, जल्दी, शीघ्रता से ।

प्रा० झटकना क्रि०स०खींच लेना, खसोटना, क्रि० अ० दुबला होना, २ हिलना ।

प्रा० झटका पु० झटके से मारने का शब्द, २ खिंचाव, खींच, गु० झटके से मारा हुआ ।

सं० झटिति अव्य० शीघ्र, जल्दी ।

प्रा० झड़ स्त्री० झड़ी, २ आँच, ३ एक तरह का ताला ।

प्रा० झड़ना क्रि० अ० गिरना (जैसे पेड़से फल अथवा पत्ते), टपकना, चूना, २ बाजना (जैसे नौबत) ।

प्रा० झड़पना क्रि० अ० लड़ना, चिल्लाना, झपटाझपटी करना, झड़पाझड़पी करना ।

प्रा० झड़बेर पु० }
झड़बेरी स्त्री० } (झाड़झाड़ी सं०बदरी=बेर) बेर की झाड़ी, बेर का पेड़ ।

प्रा० झड़ी स्त्री० लगातार मेह बरसना, बराबर बरसते रहना ।

प्रा० झप क्रि० वि० झट, तुरन्त ।

प्रा० झपसे बोल० झटपट, झटसे ।

प्रा० झपकना क्रि० स० झलना, पंखा झलना, क्रि० अ० लपकना, झपटना, २पलक मारना, ऊँघाना ।

प्रा० झपकी स्त्री० झपट, लपक, २ ऊँघाई, पलक मारना, पलक लगाना ।

प्रा० झपट भा० स्त्री० छीन खसोट, खींचाखींची, २ लपक, उछल ।

प्रा० झपटलेना बोल० छीनलेना ।

प्रा० झपट्टा बोल० धावा, चढ़ाव, लपक, २ छीन, खसोट ।

प्रा० झपट्टामारना बोल० झपट लेना, छीन लेना ।

प्रा० झपाझपी स्त्री० उतावली, हड़बड़ी ।

प्रा० झपास स्त्री० फूही, फुहार, झींसी, झड़ी ।

प्रा० झब्बा पु० फूंदा, लटकन, गुच्छा ।

सं० झम (झम्=खाना) क० पु० भोक्ता, खानेवाला, भोजन ।

प्रा० झमझम }
झमाझम } क्रि० वि० लगातार ।

प्रा० झमझमाना क्रि० अ० चमकना, झलकना ।

प्रा० झमरझमर क्रि० वि० बूँद बूँद से ।

प्रा० झर स्त्री० झड़ी, मेह का लगातार बरसना, २ आँच, लूका ।

प्रा० झरना (सं० झरण) पु० सोता, चश्मा, २ झरनी, कर्छनी, क्रि० अ० चूना, टपकना, बहना, जारी होना, ३ गिरना (जैसे फल पत्ते आदि) ।

प्रा० झरोखा पु० जाली, खिरकी, मोखा, दरीची ।

सं० झर्झरा स्त्री० वेश्या, पतुरिया ।

सं० झर्झरी स्त्री० खंजरी, डफली ।

प्रा० झल(सं०ज्वल) स्त्री० ज्वाला, २ क्रोध ।

प्रा० झलक स्त्री० चमक, उजाला, जगमगाहट ।

प्रा० झलकना (सं० ज्वलन) क्रि० अ० चमकना ।

प्रा० झलकी स्त्री० चमक, दमक, कटाक्ष ।

प्रा० झलझलाना (सं० ज्वलन) क्रि० अ० चमकना, झलझल करना, २ क्रोध करना, टीसना ।

प्रा० झलझलाहट स्त्री० चमक, झलक ।

प्रा० झलना क्रि० अ० झपकना, पंखा चलाना वा हाँकना ।

प्रा० झलाझल (सं० ज्वलन) गु० चमकीला, जगमगा ।

सं० झष (झष्=मारना) पु० मच्छ, मकरमच्छ, बड़ी मछली, पाठीन ।

सं० झषकेतु (झष=मकरमच्छ, केतु=झंडा अर्थात् जिसके झंडे पर मकर का चिह्न है) पु० कामदेव ।

प्रा० झाँकना क्रि० स० छिपकर देखना, ढाकना, निहारना, कनखी से देखना ।

प्रा० झाँख पु० बारहसिंगा, हरिण ।

प्रा० झाँझ (सं० झर्झ, झर्झ्=शब्द करना) पु० मंजीरा, एक तरह का बाजा, २ क्रोध, गुस्सा, चिड़चिड़ाहट ।

प्रा० झाँपना क्रि० स० ढकना, बंद करना, तोपना, ढाँपलेना ।

प्रा० झाँवली स्त्री० चोंचला, हाव भाव, नखरा ।

प्रा० झाऊ (सं० झाबु, झ=ऐसा शब्द वा=लेजाना, बहना) पु० एक वृक्ष का नाम ।

प्रा० झाग पु० फेन, गाज ।

प्रा० झाखा पु० झखना, रोना, खीझना ।

प्रा० झाझा पु० गाँजा भंग नशेकी चीज़ ।

प्रा० झाड़ पु० झाड़ी, कँटीला वन, २ एक प्रकार की आतिशबाज़ी, ३ बत्तियों का झाड़, पंजशाखा, ४ जुल्लाब, ५ लगातार मेह, झाड़ी ।

प्रा० झाड़बाँधना बोल० लगातार मेह बरसना ।

प्रा० झाड़झंखाड़ बोल० कटीली और सूखी झाड़ी।

प्रा० झाड़खण्ड (झाड़=झाड़ी, सं० खण्ड=टुकड़ा) पु० वन, जङ्गल, वैजनाथ महादेव का वन।

प्रा० झाड़न (झाड़ना) स्त्री० बुहारना, कूड़ा कचरा, कर्कट, २ असबाब पोंछने का मोटा कपड़ा।

प्रा० झाड़ना क्रि० स० बुहारना, झाड़ू लगाना, २ कूँची मारना या कूँची से कपड़ा साफ़ करना, साफ़ करना, ३ चकमक से आग झाड़ना।

प्रा० झाड़पछाड़करदेखना बोल० जाँचना, परखना, ख़ूबदेखना।

प्रा० झाड़नाफूंकना बोल० भूत उतारना, मन्त्र पढ़ना, टोटका करना।

प्रा० झाड़डालना ⎫ बोल० साफ
झाड़देना ⎭ कर डालना, बुहार डालना।

प्रा० झाड़झटक बोल० झाड़ना बुहारना।

प्रा० झाड़झूड़ बोल० झाड़न, बुहारन, झाड़, झटक, २ ऊपरी पैदा, दस्तूरी, ३ जंगल, झाड़ी।

प्रा० झाड़न्त क्रि० वि० सबके सब, संपूर्ण रूप से।

प्रा० झाड़ा पु० दस्त, मलका त्याग।

प्रा० झाड़े झपटे जाना बोल० पाख़ानेजाना, झाड़े फिरना।

प्रा० झाड़ाझपटालेना बोल० ढूँढ़ना, खोजना, तलाशी लेना।

प्रा० झाड़ादेना बोल० तलाशी देना।

फ़ा० झाड़ूकश (झाड़ू=बुहारी, फ़ा० कश=खींचना) भंगी, मिहतर, हलालख़ोर।

प्रा० झावा पु० तेल नापने का बरतन, २ मुर्ग़ी बंद करने का टापा।

प्रा० झारी (सं० झर) स्त्री० सुराही जिसकी नाली लंबी होती है और उसके एक टोंटी लगी रहती है।

प्रा० झारी पु० सब, समूह।

प्रा० झाल स्त्री० बड़ाटोकरा, २तेज़ी, ३ धातु के टूटे बरतन को जोड़ना।

प्रा० झालना क्रि० स० ओपना, घोटना, २ जोड़ना।

प्रा० झालर स्त्री० किनारा, सूत या रेशमकी जाली।

प्रा० झालरा (सं० झर) पु० पानी का बड़ा कुंड, झरना।

प्रा० झिझकना क्रि० अ० चौंकना, भड़कना, डर उठना।

प्रा० झिड़कना क्रि० स० धमकाना, डराना, घुरकना, डाटना।

प्रा० झिड़की (झिड़कना) स्त्री० धमकी, घुरकी, झिड़क।

प्रा० झिनझिनी स्त्री० सनसनाहट,

झनझनाहट, सनसनी जो हाथ पैर सो जाते हैं तब मालूम होती है ।

प्रा॰ **झिलम** पु॰ लोहे की कुर्ती, कवच, बख़्तर ।

प्रा॰ **झिलमिली** स्त्री॰ दरवाज़े की झँझरी, झिलमिल, जाली ।

प्रा॰ **झिल्ली** स्त्री॰ पतला चमड़ा, झिंगुरी ।

प्रा॰ **झींकना** } क्रि॰ अ॰ पछतावा
झींखना } करना, रोना, हाय हाय करना ।

प्रा॰ **झींगा** स्त्री॰ एक तरह की मछली ।

प्रा॰ **झींगुर** पु॰ एक प्रकार का कीड़ा ।

प्रा॰ **झीन** } (सं॰क्षीण)पु॰ पतला,
झीना } पतील ।

प्रा॰ **झील** स्त्री॰ सरोवर, सरवर, जलाशय ।

प्रा॰ **झीसी** स्त्री॰ फूही, फुहार, झपास, झड़ी ।

प्रा॰ **झुकना** क्रि॰ अ॰ नवना, निहुरना, नीचा शिर करना, ऊँघना, प्रणाम करना, सलाम करना, नीचे लटक आना (जैसे वृक्षकी डाली), २ क्रोध करना, क्रोधित होना, चिढ़ना, जैसे "झुकी रानि अरहू अरगानी" (रामायण) ।

प्रा॰ **झुँझलाना** क्रि॰ चिड़चिड़ा होना, चिढ़ना, खिसियाना, झटपट क्रोधित होजाना, क्रोध करना, क्रोधित होना ।

प्रा॰ **झुटलाना** } (झूठ) क्रि॰ स॰
झुठलाना } झूठा करना, झूठा कलङ्क लगाना, झूठा ठहराना ।

प्रा॰ **झुठालना** (झूठ) क्रि॰ स॰ झूठाकर दिखाना, झूठा ठहराना, २ उच्छिष्ट करना, कुछ खाके छोड़ देना ।

प्रा॰ **मुँहझुठालना** बोल॰ कुछ खाना ।

प्रा॰ **मुँहामुँहझुठालना** बोल॰ किसीको उसके मुँहपर वा सामने झूठा ठहराना ।

प्रा॰ **झुंड** पु॰ समूह, भीड़भाड़, दल, यूथ, ठट्ठ, २ पेड़ों की कुंज ।

प्रा॰ **झुनझुना** पु॰ बालकों का एक खिलौना ।

प्रा॰ **झुनझुनी** स्त्री॰ घूँघरू, नूपुर ।

प्रा॰ **झुमका** } पु॰ ढेढी, कर्णमूल,
झूमका } २ फूलों का वा फलों का गुच्छा, ३ एक फल का नाम ।

प्रा॰ **झुरना** क्रि॰ अ॰ मुरझाना, कुम्हलाना, २ झरना ।

प्रा॰ **झुरी** स्त्री॰ चुनत, सकोड़ ।

प्रा॰ **झुलसना**(सं॰ज्वल्=जलाना) क्रि॰ अ॰ जलना, झुलसना ।

प्रा॰ **झुलाना** क्रि॰ स॰ डोलाना, हिलाना, झूला देना, २लटकाना ।

प्रा० झूंझल स्त्री० चिड़चिड़ाहट, खुन्स ।

प्रा० झूठ जूठ (सं० जुष्ट, जुष्=तृप्त होना) गु० झूठा, स्त्री० उच्छिष्ट, खाने के पीछे बचा खाना ।

प्रा० झूठ स्त्री० मिथ्या, असत्य ।

प्रा० झूठमूठ बोल० झूठ, अशुद्ध, मिथ्या ।

प्रा० झूठा (झूठा) गु० झूठ बोलनेवाला, मिथ्यावादी, २ झूठा खाना, खाने के पीछे बचा हुआ खाना ।

प्रा० झूठाझाठा बोल० झूठा खाना ।

प्रा० झूमना क्रि० अ० हिलना, लहरना, २ ऊँघना, शिरको ऊँचा नीचा घुमाना, ३ बादलों का घिर आना ।

प्रा० झूमझूम बोल० बादलों का उमंडना ।

प्रा० झूरना (सं० चूर्णन) क्रि० स० कूटना, चूर चूर करना, पीसना, २ पेड़ से फल हिलाना, क्रि० अ० ३ झुरना, किसी की याद में शोच करना, कलपना, पछताना ।

प्रा० झूल स्त्री० चौपायों के शरीर पर ओढ़ाने का कपड़ा, झोला ।

प्रा० झूलना (सं० दोलन, दुल्=झूलना) क्रि० अ० डोलना, हिलाना, लटकना, पु० एक तरह की कविता ।

प्रा० झूला (सं० दोला, दुल्=झूलना) पु० हिंडोला, पालना, डोला, एक रस्सी जिसपर झूलते हैं ।

प्रा० झूसी पु० फूही, फुहार, झीसी, २ इलाहाबाद के सामने एक शहर जिसको पहले प्रतिष्ठानपुर कहते थे और चन्द्रवंशियों की राजधानी था ।

प्रा० झोंक स्त्री० ढकल, झूलने में ढकेलना, २ हवाका झोंका ।

प्रा० झोंकदेना बोल० आग में पुवाल डालना, जलाना, जला देना, २ धूलि फेंकना वा डालना, ३ फेंक देना, किसीको जोखिम में डालना ।

प्रा० झोंकना क्रि० स० डालना, फेंकना, घुसेड़ना, चूल्हे में ईंधन डालना ।

प्रा० झोंटा (सं० जटा) पु० शिरके पिछले बाल, चोटी, २ हिंडोले का झोंका ।

प्रा० झोंकादेना बोल० किसीका शिर अथवा शिर के बाल पकड़कर ज़ोर से हिलाना ।

प्रा० झोंपड़ा पु० झोंपड़ी स्त्री० मढ़ी, कुटी, मठिया ।

प्रा० झोंरा पु० फल का गुच्छा ।

प्रा० झोंका पु० झकोरा, हवा की झोंक, ठोकर, ठेस ।

प्रा० झोठा } (सं० उच्छिष्ट) गु०
झूठा } खाने के पीछे बचा हुआ खाना ।

प्रा० झोला पु० अर्द्धांग, लकवा, २ थैला ।

प्रा० झोली स्त्री० कोथली, थैली ।

प्रा० झौंरा गु० गेहूँवर्ण, साँवला ।

प्रा० झौड़ पु० झगड़ा, बखेड़ा, टंटा ।

ट

सं० ट पु० वामन, शब्द, ध्वनि, चन्द्रमा, गान, रुद्र, अंकुश, वृद्धावस्था ।

प्रा० टंकना क्रि० अ० सियाजाना, लगाया जाना, लटकना, लगना ।

प्रा० टंगना क्रि० अ० लटकना ।

प्रा० टंगड़ा } (टङ्का, टकि=बाँधना) स्त्री० पिंडली,
टंगरी } गोड़, पैर का एक भाग ।

प्रा० टंटा पु० झगड़ा, लड़ाई, बखेड़ा, रगड़ा ।

प्रा० टक स्त्री० स्वभाव, २ ताक, दृष्टि ।

प्रा० टकबाँधना बोल० ताकना, घूरना ।

प्रा० टकलगाना बोल० बाट देखना ।

प्रा० टकटकी स्त्री० ताक, घूर, यकटक ।

प्रा० टकटकीबाँधना बोल० ताकना, घूरना, एक टक देखना ।

प्रा० टकराना (टक्कर) क्रि० स० टक्कर खिलाना, टक्कर देना ।

प्रा० टकसाल (सं० टङ्कशाला, टङ्क=सिक्का, शाला=जगह) स्त्री० मुद्रालय, वह जगह जहाँ सिक्का तैयार होता है ।

प्रा० टकसालकाखोटा बोल० शिक्षा अथवा उपदेश में बिगड़ा हुआ ।

प्रा० टकसालचढ़ना बोल० शिक्षा पाना, उपदेश पाना, सिखाया जाना ।

प्रा० टकसालबाहर सं० अनपढ़, कुपढ़, अनघड़, २ खोटा, ख़राब ।

प्रा० टका (सं० टङ्क=सिक्का) पु० दो पैसा ।

प्रा० टकुआ } (सं० तर्कु, कृत
टकुवा } =काटना) पु० तकला, तकुवा, फिर्की ।

प्रा० टकोर स्त्री० ढोल का शब्द, धुनि, थाप, चुमकार ।

प्रा० टक्कर स्त्री० धक्का, ठोकर, ठेलाठेली, रेला, ढकेल, झोक, ठेस ।

प्रा० टक्करखाना बोल० ठोकर खाना, किसी चीज़ से भिड़जाना, २ दुःख में गिरना, नुक़सान उठाना ।

प्रा० टक्करमारना बोल० धक्का लगाना, ठोकर मारना, ढकेलना, रेलना, पटकना, ठेस मारना ।

प्रा० टखना पु० ठेवना, गुल्फ, घूटी ।

सं० टङ्क (टकि=बाँधना) स्त्री० टाँक, चार माशे का तौल, २ टाँकी, छेनी, पत्थर काटने का औज़ार, ३ तलवार, ४ क्रोध, ५ अहंकार, ६ सुहागा, ७ खुरपी ।

सं० टंककशाला (टङ्कक=टकशा, शाला=मकान) स्त्री० टकशाल, रुपये बनाने का घर ।

सं० टंक पु० खनित्र, खंता, खुरपा, फरुहा, टाँकी, तलवार का मियान ।

सं० टंकार (टम्=ऐसा शब्द, कृ=करना) पु० धनुष् के चिल्ले का शब्द, २ अचंभा, ३ नामवरी ।

प्रा० टटका गु० नया, ताज़ा, तुरंत का ।

प्रा० टटड़ी स्त्री० चाँदी, टाँट, २ घेरा, मेड़ ।

प्रा० टटपूँजिया गु० थोड़ी पूँजी वाला, दिवालिया ।

प्रा० टटवानी (टट्टू) स्त्री० छोटी घोड़ी ।

प्रा० टटोलना क्रि० स० टोवाटोई करना, टोना, छूने से ढूँढ़ना (जैसे अंधे लोग ढूँढ़ते हैं) ।

प्रा० टट्टर पु० बड़ी टट्टी, टट्टा, झाँप ।

प्रा० टट्टी स्त्री० टटिया, चटाई का बनाहुआ छोटा टट्टर, ओट, आड़, (टट्टी खसखस की और फूस आदि की भी बनती है), शिकार की टट्टी की ओट बैठना=छिप के करना, घात में बैठना ।

प्रा० टट्टू पु० टाँगन, पहाड़ी घोड़ा ।

प्रा० टपकना टूट पड़ना, गिर पड़ना, चूना ।

प्रा० टपका पु० पानी का बूँद, २ पक्के फल का गिरना ।

प्रा० टपना क्रि० स० नाँघना, फाँदना, कूदना ।

प्रा० टपाना क्रि० स० नँघवाना, कुदवाना ।

प्रा० टप्पा पु० डाक का घर, डाकख़ाना, २ एक प्रकार का गीत अथवा रागिणी, ३ गेंद अथवा गोली का उछालना, ४ कूद, उछाल ।

प्रा० टप्पाखाना बोल० गोली अथवा गेंद का उछलताहुआ जाना ।

प्रा० टरना } (सं० टल्=व्याकुल
टलना } होना वा घबराना) क्रि० अ० हटना, सरकना, चंपत होना, चलेजाना, दबकरहना, लौट पौट जाना, अस्तव्यस्त होना ।

प्रा० टर्रा गु० मगरा, दुष्ट, २ बक्की, ३ ज़ोरावर ।

प्रा० टर्राना क्रि० स० टेंटें करना, बकबक करना, चिड़चिड़ाना ।

सं० टलन (टल्=घबराना) भा० पु० चंचल होना, शोक, उलटा पलट ।

प्रा० टसक स्त्री० टीस, पीड़ा, कह-

राना ।

प्रा० टसकना क्रि० अ० हिलना, चलना, सरकना, उकसना, २ कहराना ।

प्रा० टहनी स्त्री० डाली, छोटी डाली ।

प्रा० टहल
टहलटकोर } स्त्री० घर का काम काज, सेवा, नौकरी, दास का काम ।

प्रा० टहलटकोर करना बोल० सेवा करना ।

प्रा० टहलना क्रि० अ० फिरना, चलना, हवा खानेको बाहरजाना ।

प्रा० टहलनी
टहलवी } (टहल) स्त्री० घर का काम काज करनेवाली, दासी ।

प्रा० टहलुवा (टहल) पु० घर का काम काज करनेवाला, दास, सेवक, नौकर, चाकर ।

प्रा० टाँक (सं० टङ्क) स्त्री० चार माशे का तोल, २ एक तरह की सुई, ३ सीवन ।

प्रा० टाँकना क्रि० स० सीना, टाँका मारना, तुरपना ।

प्रा० टाँका पु० सीवन, टाँक, जोड़ना ।

प्रा० टाँके लगाना बोल० सीना जोड़ना ।

प्रा० टाँकी (सं० टङ्क) स्त्री० रुखानी, छेनी, २ नासूर, फोड़ा, खर्बूजे का चौकोर टुकड़ा जो उसको अच्छा बुरा देखने के लिये काटा जाताहै ।

प्रा० टाँग (सं० टङ्गा) स्त्री० टंगड़ी, पिंडली, गोड़ ।

प्रा० टाँगन पु० पहाड़ी घोड़े की एक ज़ात ।

प्रा० टाँगना क्रि० स० लटकाना ।

प्रा० टाँट स्त्री० चाँदी, टटड़ी, शिर का बिचला भाग ।

प्रा० टाँडा पु० खेप, बनजारे की चीज़ वस्तु ।

अं० टाउनहाल सभास्थान, मजलिस, दरबार ।

प्रा० टाट पु० सन का कपड़ा, अजाड़ ।

प्रा० टाटी स्त्री० टट्टी, टटिया, झाँप, आड़ ।

प्रा० टाप स्त्री० घोड़े के अगले पैर की आहट, चलने में घोड़े के खुर का शब्द, २ मछली पकड़ने के लिये बाँस का बना हुआ ढाँचा ।

प्रा० टापू पु० धरती का वह टुकड़ा जो चारों ओर पानी से घिरा हो, उपद्वीप ।

प्रा० टारना
टालना } (टलना) क्रि० स० हटाना, सरकाना, दूरकरना, २ बहाना करना, देरी करना, ढील करना ।

प्रा० टालटोल
टालमटोल } बोल० बहाना, छल, ढीलढाल, चक्रमक्रर, घोल घुमाव, लपेट

सपेट, बनावट ।

प्रा० टाल पु० बहाना, टाल टोल, टालमटोल, २ स्त्री० ढेर (अनाज वा लकड़ी आदि का), तूदा, अंबार, अटाल, सूखी घास का गंज ।

प्रा० टाला पु० टालमटोल, घोल घुमाव, बनावट, लपेट सपेट, २ ढेर, तूदा, गंज, टाल ।

प्रा० टालाबाला बताना बोल० टालना, घोलघुमाव करना, टालमटोल बताना, टालटोल करना ।

प्रा० टिकटिकी स्त्री० छिपकी, छिपकली ।

प्रा० टिकठी स्त्री० तिपाई, तिखूँटी ।

प्रा० टिकना क्रि० अ० रहना, ठहरना, बसना, मुक़ाम करना ।

प्रा० टिकली पु० बेंदी, बिन्दु, २ पतली रोटी ।

प्रा० टिकाना क्रि० स० रखना, ठहराना ।

प्रा० टिकिया स्त्री० कोयले की गोल गोल टिकली, २ पतली और छोटी रोटी ।

प्रा० टिक्कड़ पु० मोटी रोटी ।

प्रा० टिटीहरी (सं० टिट्टिभ) स्त्री० एक पखेरू का नाम ।

सं० टिट्टिभ (टिट्टि ऐसा शब्द, भाष्=बोलना) पु० टिटीहरी, एक पखेरू का नाम ।

प्रा० टिड्डा पु० फनगा, पतंगा ।

प्रा० टिड्डी स्त्री० शलभ, अनाज को नाश करनेवाला कीड़ा ।

प्रा० टिप्पन }
सं० टिप्पनी } (टिप्=फेंकना) स्त्री० टीका, विवरण, व्याख्या, अर्थ, टिपनी, शरह ।

प्रा० टिहरा पु० पुरा, पुरवा, छोटी बस्ती ।

प्रा० टीक स्त्री० गलेका एक गहना ।

सं० टीका (टीक्=जाना) स्त्री० शरह, टिप्पनी, विवरण, कठिन शब्दोंके अर्थ और गूढ़ अभिप्राय को अच्छी तरह से समझाना ।

प्रा० टीका (सं० तिलक) पु० तिलक, ललाट पर चन्दन केशर आदि का चिह्न, २ स्त्रियों के ललाट पर पहननेका एक सुवर्ण का गहना, ३ ब्याहमें दुलहिन के घर से जो भेंट जाती है, ४ गोटी का खुदवाना, छापा ।

प्रा० टीकाभेजना बोल० ब्याह के शुरूअ में दुलहिन के घर से दुलहे के घरमें वस्त्र रुपया नारियल आदि भेंट भेजना ।

प्रा० टीकालेना बोल० ब्याह की भेंटको लेना वा ग्रहण करना वा स्वीकार करना ।

प्रा० टीडी स्त्री० टिड्डी, शलभ ।

प्रा० टीप स्त्री० टिपनी, बोहरे का तमस्सुक जिसमें मूल और ब्याज के रुपयोंके पलटे फ़सलपर अनाज

आदि जिन्स देनेको लिख देते हैं, २ गाने में राग को ऊँचा लेजाना, ३ जल्दी में कोई बात लिखलेना या अटका लेना वा टाँक लेना, ४ दबाव, दबाहट ।

प्रा० टीला पु० मेड़, ऊँची धरती, पहाड़ी ।

प्रा० टीस स्त्री० पीड़ा, टपक, व्यथा, धड़क ।

प्रा० टीसमारना बोल० पीड़ा होना ।

प्रा० टुक (सं० स्तोक, ष्टुच्=प्रसन्न होना) गु० थोड़ा, कम, अल्प, ज़रा, ज़रासा ।

प्रा० टुकड़ा } (सं० स्तोक, ष्टुच्=
टूक } प्रसन्न होना) पु० खंड, भाग, हिस्सा, चिट, अंश, परमाणु ।

प्रा० टुचा पु० पोच, ओछा, बेहूदा, वाही ।

प्रा० टुंड गु० ठूठा, काटाहुआ अंग ।

प्रा० टुँडी } (सं० तुन्दि, तुद्=पीड़ा
टूँडी } देना) स्त्री० नाभि, तोंदी, गु० बिन हाथ की ।

प्रा० टुंडियाँकसना }
टुंडियाँचढ़ाना } बोल० पीठ पीछे हाथों को बाँधना,
टुंडियाँबाँधना }
मुसकें बाँधना ।

प्रा० टुसकना क्रि० अ० रोना, बिलखना, सुसकना ।

प्रा० टूट (टूटना, सं० त्रुटि) स्त्री० टूटन, फूटन, खंडन, २ टोटा, कमी, हानि, नुक़सान, ३ कोई बात जो पुस्तक के लिखने में भूल से छूट जाती है और हाशिये पर पीछे से लिखी जाती है ।

प्रा० टूटना (सं० त्रोटन, त्रुट्=काटना) क्रि० अ० टुकड़ा होना, फूटना, फटना, २ चढ़ना, चढ़ाई करना, धावा करना ।

प्रा० टूटा (टूटना) गु० टूटाहुआ, फूटा हुआ, पु० टोटा, कमी, हानि, नुक़सान, घटी ।

प्रा० टूटाफूटा बोल० टुकड़े टुकड़े, खंडहर ।

प्रा० टूसी स्त्री० कली, कोंपल ।

प्रा० टेंट पु० करील का फल, कपास का फल, आँख की फुल्ली ।

प्रा० टेंटुवा पु० साँसी, नरेटी, नरी ।

प्रा० टेंटें पु० चेंचें, किलकिलाहट ।

प्रा० टेक भा० स्त्री० थूनी, टिकाव, सहारा, अवलम्ब, टेंकन, खम्भा, रोक, २ प्रण, प्रतिज्ञा, हठ, संकल्प ।

प्रा० टेकी गु० प्रतिज्ञापालक, बात का पूरा करनेवाला, बात का धनी ।

प्रा० टेकरा पु० टीला, ऊँचीधरती ।

प्रा० टेढ़ा गु० वक्र, बाँका, तिरछा, अकड़ा, बेंड़ा ।

प्रा० टेढ़ाकरना बोल० झुकाना, बाँका करना, तिरछा करना ।

प्रा० टेढ़ाबेढ़ा बोल० टेढ़ा, बाँका,

कुटिल ।

प्रा० टेम स्त्री० बत्तीकी जलन वा फूल ।

प्रा० टेर गु० लय, स्वर, तान, ताल, राग, २ पुकार, हाँक, फ़र्याद, पुकार ।

प्रा० टेरना क्रि० स० पुकारना, ललकारना, बुलाना, हाँक मारना, अलापना ।

प्रा० टेव स्त्री० चाल चलन, रीति, बात, स्वभाव, आदत, चाट, चस्का ।

प्रा० टेवकी स्त्री० थूनी, खंभा, टेक, टेकन ।

प्रा० टेवना } क्रि० स० तीखा करना,
टेना } चोखा करना, बाढ़देना, धार लगाना, पैनाना ।

प्रा० टेवा पु० जन्मपत्री, २ टेव, स्वभाव, चाट, चस्का ।

प्रा० टेसू पु० पलाश का फूल, टेसू, २ एक प्रकार का खेल ।

प्रा० टेहला पु० ब्याहकी एक रीति ।

प्रा० टोवाटोई स्त्री० टटोलना, ढूँढ़ ।

प्रा० टोंटा पु० पटाखा, मुर्रा, बाँस की गाँठ, २ कारतूस, गु० जिसका हाथ टूटा हुआ हो ।

प्रा० टोंटी स्त्री० नली, नल ।

प्रा० टोक (टोकना) स्त्री० रोक, रुकाव, अटकाव, २ बुरी दृष्टि, नज़र, दीठ ।

प्रा० टोकना क्रि० स० रोकना, २ पूछना, ३ डाह करना, ४ बुरी नज़र से देखना, दीठ लगाना ।

प्रा० टोकरा पु० डला, खाँचा, बड़ी टोकरी, छटवा, पलड़ा ।

प्रा० टोकरी स्त्री० डलिया, पलड़ी, खचिया ।

प्रा० टोटका पु० मन्त्र, यन्त्र, गंडा, तावीज़, टोना, मोहन, लटका, वशीकरण ।

प्रा० टोटा पु० घटी, घाटा, कमी, नुक़सान, २ टोंटा, कारतूस ।

प्रा० टोड़ी स्त्री० एक रागिणी का नाम ।

प्रा० टोना पु० मोहन, टोटका, जादू, सेहर, लटका, क्रि० स० टटोलना ।

प्रा० टोनाटानी } बोल० मन्त्र, यन्त्र
टोनाटामन } टोना, टोटका ।

प्रा० टोप पु० बड़ी टोपी, २ टाँका, सीवन ।

प्रा० टोपा पु० टोप, शिरका ढकना ।

प्रा० टोपी स्त्री० छोटा टोप, शिर का ढकना ।

प्रा० टोल पु० } थोक, झुण्ड,
टोली स्त्री० } जत्था, सभा, ठट्ठ ।

प्रा० टोला पु० महल्ला, खंड, शहर का एक हिस्सा ।

अं० ट्यम्परेन्स सुसायटी ट्यम्परेन्स=पवित्र, परहेज़गार, सुसायटी=समूह, जमाअत ।

अं० ट्रष्टी विश्वस्त, मुअतमिद,

जातविश्वास ।

अं० **ट्राई** कोशिश, उद्योग, परिश्रम, चेष्टा ।

अं० **ट्रेडऐसोसियेशन** सौदागरों की कमेटी ।

अं० **ट्रैन्सलेटर** पु० मुतरज्जिम, अनुवादक, उल्था करनेवाला ।

ठ

सं० **ठ** पु० शिव, २ चन्द्रबिम्ब, ३ मण्डल, ४ शून्य, ५ महाध्वनि, ६ मूर्ति, ७ जनसमूह ।

प्रा० **ठकठक** पु० कठिन काम, २ शब्द ।

प्रा० **ठकठकाना** क्रि० स० ठोंकना, खट खट करना, कूटना, मारना ।

प्रा० **ठक्कुर** (सं० ठक्कुर) पु० ठाकुर शब्द को देखो ।

प्रा० **ठकुराई** (सं० ठक्कुरता) भा० स्त्री० ईश्वरता, प्रधानता, स्वामीपन, बड़प्पन ।

प्रा० **ठग** पु० ठगनेवाला, बटमार, चोर, दगाबाज़, बहकानेवाला, छली, कपटी ।

प्रा० **ठगबाजी** } **ठगविद्या** } स्त्री० बोल० ठगाई, कपट, छल, माया ।

प्रा० **ठगलाना** बोल० ठगना, छलना, धोखा देना, बहकाके लेलेना ।

प्रा० **ठगलेना** बोल० छलना, धोखा देना, छल से लेना ।

प्रा० **ठगई** (ठग) भा० स्त्री० ठगाई, ठग का काम, छल, धोखा ।

प्रा० **ठगना** क्रि० स० छलना, भुलावा देना, धोखा देना, बहकाना ।

प्रा० **ठगाई** (ठग) भा० स्त्री० ठगई, छल, धोखा ।

प्रा० **ठगौरी** (ठग) स्त्री० ठगाई, भुलावा, माया, छल, धोखा ।

प्रा० **ठट्ठ** } **ठठ** } पु० भीड़भाड़, झुण्ड, मण्डली, समूह ।

प्रा० **ठट्ठा** पु० हँसी, ठठोली, खिल्ली, चुहल ।

प्रा० **ठट्ठाकरना** बोल० हँसीकरना, ठठोली करना, हँसना, उपहास करना, मसखरापन ।

प्रा० **ठट्ठेबाज़** बोल० गु० ठठोल, हँसोड़, रसिक, मसख़रा ।

प्रा० **ठट्ठेबाज़ी** बोल० स्त्री० ठट्ठा करना, हँसोड़पन, खेल, दिल्लगी ।

प्रा० **ठट्ठामारना** बोल० हँसी करना, ठठोली करना, हँसना, उपहास करना ।

प्रा० **ठठरी** स्त्री० ठट्ठर, ठाठ, २ रथी, ३ ढाँचा, पाँजर, अस्थिपंजर, हड्डियों का ढाँचा, बहुत दुबला मनुष्य ।

प्रा० **ठठकना** क्रि० अ० रुकना, ठहरना, हटना, खड़ा रहजाना, अचंभे में खड़ा रहजाना, झझ-

कना, हिचकना, चिहुँकना ।

प्रा० ठठाना क्रि० स० मारना, पीटना, कूटना, २ दुख में अपना शिर पीटना, ३ अपने को दुख में डालना ।

प्रा० ठठेरा पु० कँसेरा, भर्तिया ।

प्रा० ठठोर }
ठठोल } गु० हँसोड़, रसिक, ठट्ठेबाज़ ।

प्रा० ठठोली स्त्री० ठट्ठा, हँसी, खिल्ली, हाँसी ।

प्रा० ठण्ढ स्त्री० जाड़ा, सर्दी, शीत, शीतकाल ।

प्रा० ठण्ढक स्त्री० ठण्ढाई, शीतलता ।

प्रा० ठण्ढा गु० शीतल, सर्द ।

प्रा० कलेजाठण्ढाकरना बोल० प्रसन्न होना, अपने मित्र अथवा बेटा आदि को देखने से आनन्द में होना, २ बदला लेने से मन प्रसन्न होना ।

प्रा० ठण्ढा करना बोल० शीतल करना, सर्द करना, २ बुझाना, बुताना (जैसे आग), ३ शान्त करना, स्थिर करना, धीरज देना, दिलासा देना ।

प्रा० ठण्ढापरना बोल० कम होना, घटना (जैसे क्रोध, पौरुष, चंचलाहट का) ।

प्रा० ठण्ढाहोना बोल० सर्द होना, शीतल होना, २ बुझना, बुतना, ३ शान्त होना, धीरज धरना, स्थिर होना ।

प्रा० ठण्ढाई स्त्री० ठंढी औषध (जैसे सौंफ़ कासनी आदि), २ भंग, ३ सर्दी, शीतलता ।

प्रा० ठण्ढीसाँसभरना बोल० हा मारना, आह भरना, लंबी साँस लेना ।

प्रा० ठनकना क्रि० अ० टीसना, टीस मारना, शिर में दर्द होना, झनकना, झंझनाना, ठनठनाना ।

प्रा० ठनठनाना क्रि० अ० झनझनाना, झनकना, ठनकना ।

प्रा० ठनाक पु० झनकार, झनझनाहट, ठनकार ।

प्रा० ठप्पा पु० छापने की चीज़, छापा, मोहर ।

प्रा० ठरक }
ठरर } पु० खर्राटा, घुर्रा ।

प्रा० ठरिया पु० एक तरहका मिट्टी का हुक़ा ।

प्रा० ठवनि स्त्री० चाल ।

प्रा० ठसक स्त्री० भड़क, छैलपन, अहंकार, धूमधाम ।

प्रा० ठस्सा पु० साँचा, ढाँचा, अहंकार, घमंड ।

प्रा० ठहरना (सं० ष्ठा=ठहरना) क्रि० अ० टिकना, रहना, बसना, खड़ा रहना, रुकना, अटकना, उतरना, डराकरना, ठिकानाहोना,

निर्णय होना, निश्चित होना, सिद्ध होना, पक्का होना, दृढ़ होना, निपटना ।

प्रा० ठहराना (ठहरना) क्रि० स० टिकाना, रखना, खड़ा करना, रोकना, अटकाना, उतारना, डेरा देना, निर्णय करना, सिद्ध करना, ठिकाना करना, पक्का करना, निपटाना, दृढ़ करना, निश्चित करना, नियत करना, ठानना, विचारना, लगाना ।

प्रा० ठहराव (ठहरना) भा० पु० टिकाव, स्थापन, निर्णय, निश्चय ।

प्रा० ठाँ, ठाँव, ठाम (सं० स्थान) पु० स्त्री० ठौर, जगह, ठिकाना, स्थान, स्थल ।

प्रा० ठाँसना, ठासना क्रि० स० दबा दबा के भरना, घुसेड़ना, ठूसना, दबाना ।

प्रा० ठाकुर (सं० ठक्कुर=देवता की मूर्ति, प्रतिष्ठित पदवी) पु० देवता, ईश्वर, २ देवता की मूर्ति, ३ स्वामी, मालिक, प्रधान, प्रभु, नाथ, नायक, मुखिया (राजपूतों में), ४ ज़मीन्दार, ५ नाई ।

प्रा० ठाकुरद्वारा (सं० ठक्कुरद्वार) पु० मन्दिर, देवालय, देवस्थान ।

प्रा० ठाकुरबाड़ी (सं० ठक्कुरवाटी) स्त्री० मन्दिर, देवालय, ठाकुरद्वारा ।

प्रा० ठाठ पु० ठठरी, २ तैयारी, रचना, धूमधाम, साज़, भड़क, तजल्ली, शान, हशमत, ३ भीड़-भाड़, झुंड, समूह, बहुतायत ।

प्रा० ठाढ़ा गु० खड़ा, सीधा ।

प्रा० ठाढ़ारहना क्रि० अ० खड़ा रहना ।

प्रा० ठानना क्रि० स० ठहराना, मन में पक्का करना, बिचारना, निश्चय करना ।

प्रा० ठानी स्त्री० ठहराई, बिचारी, निश्चय की ।

प्रा० ठाला गु० बेकार, बिन काम, खाली ।

प्रा० ठाहर, ठाहरु (सं० स्थान) स्त्री० ठौर, जगह, जागह, ठाँ, ठाँव, स्थान ।

प्रा० ठिकरा पु० घड़े वा मटकी का टुकड़ा ।

प्रा० ठिकाना (सं० स्थान) पु० जगह, वास, स्थान, ठौर, जागह, २ पता, ३ सीमा, हद ।

प्रा० ठिकानाढूँढ़ना बोल० बासा ढूँढ़ना, काम ढूँढ़ना ।

प्रा० ठिकानेलगना बोल० मारा जाना, मरना, २ पूरा होना ।

प्रा० ठिकानेलगाना बोल० मार डालना, २ पूरा करना, खपाना ।

प्रा० ठिंगना गु० नाटा, छोटा, वामना, पस्तक़द ।

प्रा० ठिठकना
ठिठकजाना
ठिठकरहना } क्रि० अ० अचंभे में होना, थोड़ी देर ठहर जाना।

प्रा० ठिठरना क्रि० अ० जमना, जड़ना, अकड़ना ।

प्रा० ठिनकना क्रि०अ० सिसकना, सिसकी भरना, धीरे धीरे रोना ।

प्रा० ठिलिया स्त्री० गगरी, छोटा घड़ा ।

प्रा० ठीक गु० पूरा, बराबर, सही, शुद्ध, खरा, साफ़, योग्य, उचित, सच, यथार्थ, जैसा चाहिये ।

प्रा० ठीकआना बोल० मिलना, बराबर होना, बराबर आजाना ।

प्रा० ठीककरना बोल०सही करना, निश्चय करना, २ मारना ।

प्रा० ठीकठाक बोल० सही, शुद्ध, सच, ठीकठाक ।

प्रा० ठीकठाककरना बोल० सही करना, जाँचना, निश्चय करना ।

प्रा० ठीकरा पु० मिट्टी के फूटे बरतन का टुकड़ा ।

प्रा० ठीका पु० भाड़ा, ठहराया हुआ मोल, २ इजारा, मुक्ाता, मुस्ताजिरी, कटकना, चुकौता, लिखापढ़ी ।

प्रा० ठुड्डी स्त्री० ठोढ़ी, चिबुक, २ भूँजा अनाज ।

प्रा० ठुमकना क्रि० अ० अच्छी चाल चलना, ऐंठकर चलना ।

प्रा० ठुसकना क्रि० अ० धीरे धीरे रोना ।

प्रा० ठूँठ पु० ठुंडा, बिन पत्ते की डाल, २ कटाहुआ हाथ ।

प्रा० ठेउना
ठेवना } पु० घुटना ।

प्रा० ठेंगा पु० लाठी, लट्ठ, २ अंगूठा।

प्रा० ठेंगाबाजना बोल० लाठी चलना, २ बिगड़ना ।

प्रा० ठेंठी स्त्री० कानका मैल, २ डट्टा, ठेपी, ३ घुटने तक की धोती ।

प्रा० ठेक स्त्री० टेकनी, टेक, सहारा, अवलंब, २ नाज का भरा हुआ बोरा ।

प्रा० ठेकाधिकारी क० पु० मुस्ताजिर, मुक्ातादार ।

प्रा० ठेठ गु० निष्केवल, ख़ालिस, असल, साफ़, बेमेल, ठीक, निपट, २ झगड़ालू ।

प्रा० ठेपी स्त्री० ठेंठी, डट्टा, डाट।

प्रा० ठेपी मुँह में देना बोल० चुप रहना, अवाक् होना ।

प्रा० ठेलना क्रि० स० ढकेलना, रेलना, धक्का देना, झोंकना ।

प्रा० ठेला पु० धक्का, ढकेल, झोंक, माल लादने की गाड़ी ।

प्रा० ठेलाठेली बोल० धक्कमधक्का, रेलपेल ।

प्रा० ठेंस स्त्री० ठोकर, चोट, चपेट।

प्रा० ठेंसना क्रि० स० { छेदना,

बेधना, २ ठोकरदेना, ठोकराना, ३ ठाँसना ।

प्रा० ठोंकना
ठोकना क्रि० स० मारना, गढ़ना, गाड़ना, २ थपथपाना, पीटना (जैसे ढोलक आदि बाजे को) ।

प्रा० ठोकदेना बोल० गाड़ देना, गढ़ देना, पीटना ।

प्रा० पीठठोंकना बोल० पीठ थपथपाना (जब किसीको सराहते अथवा उसकी हिम्मत बढ़ाते हैं) ।

प्रा० ठोंठ (सं० त्रोटि, त्रुट्=काटना) चोंच, ठोर ।

प्रा० ठोकर स्त्री० पैरकी मार, लात ।

प्रा० ठोकरखाना बोल० गिर पड़ना, लुढ़कना, २ भूलना, चूकना, ३ घटी सहना ।

प्रा० ठोकरलगना बोल० पैर में चोट लगना ।

प्रा० ठोढ़ी स्त्री० ठुड्डी, चिबुक ।

प्रा० ठोर (सं० त्रोटि, त्रुट्=काटना) स्त्री० चोंच, ठोंठ ।

प्रा० ठोस पोला नहीं, घना, कठोर, कड़ा, दृढ़, भारी, पोढ़ा, गाढ़ा ।

प्रा० ठोसना क्रि० स० ठाँसना, दबा दबा के भरना, दबाना, भरना ।

प्रा० ठोसा पु० ठेंगा, अंगूठा दिखलाना ।

प्रा० ठौर स्त्री० जगह, ठाँव, ठिकाना, स्थान ।

प्रा० ठौररहना बोल० खेत रहना, माराजाना, मररहना ।

ड

सं० ड पु० शिव, २ डर, ३ शब्द, ४ वाड़वाग्नि ।

प्रा० डकराना क्रि० अ० कूक मारके रोना ।

प्रा० डकार स्त्री० डेकार, ढकार, उद्गार ।

प्रा० डकरना क्रि० अ० डकारलेना, २ राँभना, हूंकारना, गर्जना, भोंकारना, ३ पचाजाना ।

प्रा० डकारजाना
डकारबैठना बोल० उड़ा जाना, खाजाना, पचाजाना, पचाबैठना ।

प्रा० डकारलेना बोल० डकारना, ढकार लेना ।

प्रा० डकैत पु० डाकू, बटपार, लुटेरा, चोर ।

प्रा० डकैती स्त्री० डाका, बटपारी, लूट, चोरी ।

प्रा० डकौत
डकौतिया पु० एक जाति के लोग जो ब्राह्मण से ग्वालिनके पैदा हुए और ये लोग शनैश्चर का दान लेतेहैं और ज्योतिषविद्या में पक्के होते हैं ।

प्रा० डग स्त्री० फाल, पद, लंबी चाल ।

प्रा० डगना क्रि० हिलना ।

प्रा० डगमगाना क्रि० अ० लड़

खड़ाना, डगडगाना, हिलना, डोलना, काँपना।

प्रा० डगर पु० रस्ता, राह, मार्ग, पैंड़ा, पथ, सड़क।

प्रा० डगरना क्रि० अ० यात्रा करना, रस्ते चलना, घूमना।

प्रा० डगरा पु० सूप, बाँसका बना हुआ बरतन।

प्रा० डङ्क (सं० दंश,दंश्=काटना वा डंक मारना) पु० चभक, बिच्छूका दाँत जिसमें ज़हर भरा रहता है।

प्रा० डङ्कमारना बोल० काटना, (बिच्छू घिर्नी आदिका)।

प्रा० डङ्का (सं० ढक्का, ढक् ऐसा शब्द, कै=शब्द करना) पु०नक्कारा बजाने का डंडा, २ धौंसा, नक्कारा, बड़ा ढोल।

सं० डङ्गर पु० भूसा,खीरा,धूर्त,खल, सेवक, प्रक्षेप, स्त्री० ककरी।

प्रा० डटना क्रि० अ० थमना, रुकना, जमजाना।

प्रा० डट्टा पु० ठेंठी, ठेपी, डाट।

प्रा० डढ़मुंडा (सं० मुण्डितश्मश्रु) गु० डाढ़ीमुंडा, बिन डाढ़ी का।

प्रा० डढ़ियल गु० लम्बी दाढ़ीवाला।

प्रा० डण्ड (सं०दण्ड) पु० भुजा, एक तरहकी कसरत अथवा व्यायाम जिसमें हाथों को धरती पर टेक कर नीचे को इस तरह से झुकना होता है कि छाती से ज़मीन छू जाय, डंडपेल=डंड पेलनेवाला, डंड करनेवाला।

प्रा० डण्डा (सं०दण्ड) पु० सोंटा, लट्ठ, छड़ी, झंडे की लकड़ी।

प्रा० डण्डिया पु० स्त्रियों का एक प्रकार का कपड़ा, स्त्रियों के ओढ़ने का दुपट्टा वा ओढ़नी।

प्रा० डण्डी (सं० दण्डी) स्त्री० डंडा, बेंट, पकड़ने की लकड़ी, २ तराज़ू का डण्डा अथवा धारण, ३ लकीर, पु० संन्यासी जो अपने हाथ में दण्डरखते हैं, पगडण्डी=पदचिह्न, चोरराह, लीक, गुप्तराह।

प्रा० डण्डीर स्त्री० धारी, लीक, लकीर।

प्रा० डपटना क्रि० अ० पुकारना, सर्पटना, डाँटना, झिड़कना, घुड़कना।

प्रा० डफ (फ़ा०दफ़) स्त्री० खंजरी।

प्रा० डफाली (डफ) गु० एक प्रकार के मुसलमान फ़क़ीर जो डफ बजा कर भीख माँगा करते हैं।

प्रा० डबगर पु० चमड़ा कमाने वाला, दब्बाग़।

प्रा० डबडबाना क्रि० स० आँखों में आँसू भर लाना।

प्रा० आँखेंडबडबाना }
आँसूडबडबाना } बोल० रोनी सूरत बनाना।

प्रा० डबरा पु० गँदले पानी का छोटा तालाब, डाबर, ताल ।

प्रा० डबोना क्रि० स० डुबाना, गोता खिलाना, डुबकी देना, बोरना, २ उजाड़ना, बरबाद करना ।

प्रा० डब्बा पु० बड़ी डिबिया, २ कुप्पा ।

सं० डमरू (डम्=ऐसा शब्द, ऋ=जाना) पु० एक प्रकार का बाजा ।

सं० डयन (डी=आकाशमें उड़ना) भा० पु० उड़ना, आकाशगमन ।

प्रा० डर (सं० दर, दृ=डरना) पु० भय, त्रास, शंका, आतंक, दबदबा ।

प्रा० डरना, डरपना (सं० दृ=डरना) क्रि० अ० भय खाना ।

प्रा० डरपोकना (डर) गु० कायर, भीरु, डरवैया, डरनेवाला ।

प्रा० डराऊ (डर) गु० भयानक, भयावना, डरावना ।

प्रा० डराना, डरावना (डरना) क्रि० स० भय दिखाना, त्रास दिखाना, गु० भयानक, भयावना, डराऊ ।

प्रा० डलवा पु० टोकरा, छटवा, झवई ।

प्रा० डला पु० ढेला, ईंटा, लोंदा, २ टोकरा, बड़ी दौरी ।

प्रा० डलिया स्त्री० टोकरी, दौरी ।

प्रा० डली पु० टुकड़ा, खंड, टूक (चीनी मिश्री अथवा मांस का) ।

प्रा० डसना (सं० दंशन, दंश्=काटना) क्रि० स० साँप का काटना, डङ्क मारना, चभकना ।

प्रा० डहकाना क्रि० स० बहकाना, निराश करना, बिगाड़ना, धोखा देना, ठगना ।

प्रा० डहडहा गु० खिलाहुआ, हरा भरा, फूला हुआ, प्रफुल्लित, प्रसन्न, हर्षित ।

प्रा० डहडहाना क्रि० अ० खिलना, फूलना, विकसना ।

प्रा० डाँग स्त्री० लाठी, २ पहाड़ की ऊँची चोटी, ३ डगर, पगडंडी, रास्ता, ४ टहनी, डाली ।

प्रा० डाँगर गु० दुबला, पतला, पु० दुबला पशु, २ मूली वा सरसों का पत्ता वा फूल ।

प्रा० डाँटना क्रि० स० डपटना, धमकाना, घुड़कना, झिड़कना, ताड़ना ।

प्रा० डाठी स्त्री० डण्ठा, डाली, डाँठ, डण्डी ।

प्रा० डाँड़ (सं० दण्ड) पु० दण्ड, वाग्दण्ड, धिग्दण्ड, जुर्माना या धनदण्ड, पलटा, बदला, सज़ा, २ नाव खेने का बाँस, बल्ली, ३ रीढ़, पीठ की हड्डी, ४ लकड़ी, लाठी, डण्डा ।

प्रा० डाँड़भरना बोल० जुर्माना देना, दण्ड देना ।

प्रा० डाँड़लेना बोल० दण्ड लेना, जुर्माना लेना ।

प्रा० डाँड़ना क्रि० स० दण्ड देना, बदला लेना ।

प्रा० डाँवरू पु० बाघ का बच्चा ।

प्रा० डाँवाडोल (सं० धावनदोलन) गु० इधर उधर भटकना, तीन तेरह, वासहीन, डगमग ।

प्रा० डाँस (सं० दंश) पु० बड़ी मक्खी, मच्छड़, २ डंक, हूल ।

प्रा० डाक स्त्री० ठप्पा, चिट्ठी डालने की जगह, २ घोड़े की अथवा पालकी की चौकी, ३ लगातार वमन करना ।

प्रा० डाका पु० लुटेरों का धावा, छापा ।

प्रा० डाकापड़ना बोल० लुटजाना, लूटाजाना, चोरी होना ।

प्रा० डाकाडालना } बोल० लूटना,
डाका देना } राह मारना, ज़ोर से छीन लेना, मार लेना ।

सं० डाकिनी स्त्री० डाइन, चुड़ैल, प्रेतनी ।

प्रा० डाकिया पु० डाकू, २ डाकदौड़ाहा, डाकवाला, चिट्ठीरसाँ ।

प्रा० डाकी गु० खाऊ, पेटू, बहुत खानेवाला ।

प्रा० डाकू पु० डकैत, बटपार, लुटेरा, चोर ।

प्रा० डाट (डाटना) स्त्री० धमकी, घुड़की, झिड़की, डपट ।

प्रा० डाटना क्रि० स० डपटना, घुड़कना, धमकाना ।

प्रा० डाढ़ (सं० दंष्ट्रा, दंश्=काटना) स्त्री० दाढ़, पीसने के दाँत, पिछले बड़े दाँत ।

प्रा० डाढ़ा क्रि० अ० जलाना, मुँह काला होना ।

प्रा० डाढ़ी (सं० श्मश्रु) स्त्री० ठुड्डी पर के बाल, रीश ।

प्रा० डाब (सं० दर्भ) पु० डाभ, कुशा, २ पु० तलवार का परतला, ३ कच्चा नारियल ।

प्रा० डाबर गोल तालाब, डबरा, गड़हा, गु० गँदला, मैला ।

प्रा० डाभ (सं० दर्भ) पु० डाब, कुशा, २ (सं० दाव) जंगल, वन ।

प्रा० डायन (सं० डाकिनी) स्त्री० डाकिनी, चुड़ैल ।

अं० डायरी स्त्री० दिनचर्या, रोज़नामचा, रोज़नामा ।

प्रा० डार स्त्री० डाल, डाली, टहनी, शाखा ।

प्रा० डार (सं० धारा) स्त्री० क़तार, पाँत, पंक्ति ।

प्रा० डारकीडार बोल० झुंड का झुंड, जत्था, दल, टोली, समूह ।

प्रा० डारना डालना क्रि० स० फेंकना, झोंकना, चलाना, उड़ेलना, उझलना, भीतर फेंकना, रख देना, धर देना, जल्दी से गिरा देना, घुसेड़ना ।

प्रा० डाल स्त्री० डाली, डार, टहनी, शाखा, एकडाल बोल० एक मेलका ।

प्रा० डाली पु० फल आदिकी भेंट, २ फलों की टोकरी, ३ डाल, टहनी, शाखा ।

प्रा० डासना क्रि० स० बिछाना ।

प्रा० डासी स्त्री० बिछाई ।

प्रा० डाह (सं० दाह=जलन) स्त्री० लाग, वैर, जलन, द्रोह, द्वेष, कुनस, गाँठ, ईर्षा, हसद, रश्क ।

प्रा० डाहना (सं० दाहन=जलना) क्रि० अ० डाह रखना, डाह से जलना, दुःख देना, २ क्रि० स० धातु को गलाना वा पिघलाना, धातु को धिकाना वा गर्म करना ।

अं० डिक्शनरी अभिधान, कोष, लुग़त ।

प्रा० डिगना क्रि० अ० हिलना, डगमगाना, थरथराना, काँपना, २ हटना, टलना ।

सं० डिण्डिम (डिण्डि ऐसा शब्द, मि=फेंकना अर्थात् करना या निकालना) डमरू, ढोल, डुगडुगी, मनादी, २ एक पेड़ का नाम ।

अं० डिपार्टम्यण्ट पु० मुहकमा, सरिश्ता, विभाग, प्रकरण ।

अं० डिस्ट्रिक्टबोर्ड (डिस्ट्रिक्ट=ज़िला वा खण्ड, बोर्ड=कमेटी) ज़िला की कमेटी, खण्डसभा ।

प्रा० डिबिया स्त्री० छोटा डिब्बा, डिब्बी ।

प्रा० डिब्बा पु० बड़ी डिबिया, डब्बा ।

सं० डिभ पु० संग्राम, पाखण्ड, पाखण्डी, प्रलय ।

सं० डिम संग्राम, प्रलय ।

सं० डिम्ब पु० पाखण्ड, डाका, लूटपाट, बे हथियार की लड़ाई, अण्ड, फुप्फुस, रेड़वृक्ष ।

प्रा० डिम्भ पु० पाखण्ड, जवान पशु, शिशु, बालक, मूर्ख, अनारी, अज्ञान ।

अं० डिमीआफ़िशल आधा सरकारी और आधा निजका लेख जिस में आधा महसूल देना पड़ता है ।

अं० डिस्ट्रिक्ट ज़िला, खण्ड, विभाग ।

प्रा० डींग स्त्री० बड़ाई, घमंड, शेख़ी, अहंकार, अभिमान, दर्प ।

प्रा० डींगमारना बोल० शेख़ी करना, घमंड करना, बड़ाई करना ।

प्रा० डीठ (सं० दृष्टि) स्त्री० ताक, दीठ, नज़र, दृष्टि, देखना ।

प्रा० डीठबन्दी बोल० जादूसे नज़र बन्द होजाना, नज़रबन्दी, इन्द्रजाल, नटमाया ।

सं० डीन भा० पु० पक्षी की गति, उड़ान ।

प्रा० डील पु० शरीर, देह, २ डौल ।

प्रा० डुबकी स्त्री० चुभकी, ग़ोता, डूब, जल में पैठना ।

प्रा० डुबाना डुबोना } क्रि० स० डुबोना, ग़ोता खिलाना, डुबकी देना, २ उजाड़ना ।

प्रा० डुमरी डूमर } (सं० उडुम्बर) पु० गूलर का वृक्ष ।

प्रा० डुरियाना (सं० डोर) क्रि० स० बागडोर हाथ में लेकर घोड़े को ख़ाली लेचलना ।

प्रा० डुलाना डोलाना } (सं० दोलन, दुल्=झुलाना) क्रि० स० हिलाना, झुलाना ।

प्रा० डूबना क्रि० अ० डुबकी मारना, ग़ोताखाना, २ बोरना, बूड़ना, पानी में मग्न होना, ३ अस्त होना, बैठ जाना, ४ उजड़ना, बरबाद होना, नष्ट होना, ५ लय होजाना, मग्न होजाना, लग जाना (जैसे किसी काम अथवा पढ़ने आदि में), दिल डूबना बोल० मूर्च्छित होना, अचेत होना ।

प्रा० डेढ़ गु० एक और आधा ।

प्रा० डेढ़पाव गु० पाव और आध पाव, छः छटाँक ।

प्रा० डेढ़पावा पु० डेढ़ पाव का तौल ।

प्रा० डेढ़गत पु० एक तरहका नाच ।

प्रा० डेरा पु० बासा, घर, २ तम्बू, ख़ीमा, गु० भेंगा, टेढ़ा देखनेवाला ।

प्रा० डेवढ़ा गु० डेढ़गुना ।

प्रा० डेवढ़ी डेहुड़ी } स्त्री० उसारा, दालान, डेवढ़ीदार =द्वारपाल ।

प्रा० डैन (सं० डयन, डी=उड़ना) पु० पाँख, पंख, पखेरू का पर ।

प्रा० डोंगा पु० उडुप, प्लव, छोटी नाव, २ कठरा ।

प्रा० डोंगी स्त्री० छोटी नाव, २ करछी ।

प्रा० डोंडी स्त्री० ढँढोरा, मनादी ।

प्रा० डोकरा पु० बुड्ढा, बूढ़ा ।

प्रा० डोकरी स्त्री० बुढ़िया ।

प्रा० डोब (डूबना) पु० डूब, ग़ोता, डुबकी, कपड़े को रङ्ग में डुबोना ।

प्रा० डोबदेना बोल० कपड़े को रङ्ग में डुबोना ।

प्रा० डोम पु० एक नीच जाति, २ मुसलमान जाति के लोग जिनकी स्त्रियाँ केवल स्त्रियोंही के सामने गाती और नाचती हैं और मर्द गवैये और बजन्त्री होते हैं ।

प्रा० डोमड़ा पु० डोम, अत्यन्त नीच ज़ात ।

प्रा० डोमनी स्त्री० डोमकी स्त्री ।

प्रा० डोर स्त्री० रस्सी, डोरी, जेवड़ी, सूतली ।

प्रा० डोरा पु० तागा, धागा, तार, सूत, लीक, लकीर, २ तलवार की धार, आँख का डोरा=आँख में लोहूकी लाल लाल लकीर या चिह्न ।

प्रा० डोरिया पु० एक तरह का कपड़ा ।

प्रा० डोरी स्त्री० रस्सी, डोर, जेवड़ी, सूतली ।

प्रा० डोल पु० पानी निकालने का लोहे या चमड़े का बरतन ।

प्रा० डोलची स्त्री० चमड़े का छोटा डोल ।

प्रा० डोलना (सं० दोलन, दुल्= डोलना) क्रि० अ० हिलना, झुलना, २ फिरना, भटकना ।

प्रा० डोला (सं० दोल, दुल्=झूलना) पु० एक तरह की पालकी, २ नीचे घरानेकी रानी जो बड़े राजा को ब्याही जाती है और इस रानी का दर्जा बराबर घराने की रानियों से नीचा होता है ।

प्रा० डोलादेना बोल० शूद्रलोगों की जब बेटी राँड़ होजाती है तब वे अपनी जाति में बेटीको दूसरे पति को देदेते हैं उसे डोलादेना कहते हैं, लड़की ब्याह देना ।

प्रा० डोली (सं० दोला) स्त्री० चौपाला, दोला, स्त्रियों की पालकी ।

प्रा० डौढ़ी स्त्री० डेवढ़ी, उसारा, २ गु० डेढ़गुनी, ३ गाने में ऊँचा स्वर ।

प्रा० डौल पु० प्रकार, रीति, ढब, भाँति, रूप, आकार ।

ढ

सं० ढ पु० बड़ा ढोल, २ ध्वनि ।

प्रा० ढंग पु० चलन, रीति, प्रकार, डौल, चाल, लक्षण ।

प्रा० ढंढोरा (सं० ढुण्ढन, ढुण्ढ् =खोजना) पु० डुगडुगी, डौंडी, मनादी ।

प्रा० ढक पु० तौल विशेष, बटखरा, बाँट ।

प्रा० ढकना क्रि० स० ढाँपना, ढपना, तोपना, मूँदना, बन्दकरना, २ छिपाना, ३ बचाना, ४ मढ़ना, ५ छाना, पु० ढकनी, ढकनेकी चीज़ ।

प्रा० ढकनी स्त्री० चपनी, ढकने की चीज़, सरपोश ।

प्रा० ढकार स्त्री० डकार ।

प्रा० ढकेल पु० रेल, ठेल, पेल, धक्का ।

प्रा० ढकेलना क्रि० स० ठेलना, रेलना, पेलना ।

प्रा० ढकेलू क० पु० ढकेलनेवाला, पेलनेवाला, हटा देनेवाला ।

प्रा० ढक्का पु० बड़ा ढोल, डंका ।

प्रा० ढड़कौवा पु० जंगली कौवा ।

प्रा० ढड़बा पु० मैना की जाति का पखेरू ।

प्रा० ढनमनाना क्रि० अ० लुढ़कना, गिरना, डगमगाना, काँपना ।

प्रा० ढपढपाना क्रि० स० ढोल को पीटना (जैसे लड़के करते हैं) ।

प्रा० ढपना क्रि० अ० ढक जाना, छिपना, लुकना, पु० ढकना, ढकने की चीज़ ।

प्रा० ढब पु० डौल, चाल, रीति, रूप, बनावट, हथौड़ी ।

प्रा० ढबरा गु० गँदला, मैला, कीचड़ ।

प्रा० ढबुआ पु० पैसा, ताम्रमुद्रा ।

प्रा० ढलकना क्रि० अ० ढुलकना, बहजाना, डगरना, छलकना ।

प्रा० ढलना क्रि० अ० साँचे में पिघलना (जैसे धातु), २ ढलकना, छलकना, लोटना, लुढ़कना, डगरना, ३ झुकना, नवना, दिन ढलना, बोल० दिन घटना, दिन का बीतना ।

प्रा० ढलती फिरती छाँव बोल० संसार के कामों की बदलने योग्य या अस्थिर दशा, संसार के कामों में एरा फेरी ।

प्रा० ढलमलाना क्रि० अ० डगमगाना, काँपना ।

प्रा० ढलाना क्रि० स० साँचे में ढालना, २ बहाना ।

प्रा० ढलैत (ढाल) पु० ढाल तलवार बाँधनेवाला, गोड़इत ।

प्रा० ढवाना क्रि० स० गिरवाना, ढहाना, खसवाना, उजड़वाना, गिरा देना, जड़से उखाड़ डालना ।

प्रा० ढाई (सं० सार्द्धद्वय) गु० अ० ढ़ाई, दो और आधा ।

प्रा० ढाँकना क्रि० स० ढाँपना, ढकना, छिपाना, बंद करदेना ।

प्रा० ढाँग स्त्री० कंदला, शिखर, शृंग, पहाड़ की चोटी ।

प्रा० ढाँचा पु० साँचा, डौल, घर, ठाठ ।

प्रा० ढाँपना क्रि० स० ढाँकना, बंद करना, छिपाना, लुकाना ।

प्रा० ढाक पु० पलाशवृक्ष, तेज, प्रताप, शुहरत, शुहरा ।

प्रा० ढाटा पु० दुपट्टा जो डाढी और कानोंपर बाँधाजाता है, बड़ी पगड़ी जो मारवाड़ और उदयपुर आदि राजपूताने के लोग बाँधा करते हैं ।

प्रा० ढाड़स
ढाढ़स
ढारस (सं० दार्ढ्य, दृढ़=कठोर या स्थिर) स्त्री० मनकी दृढ़ता, साहस, भरोसा, दिलासा, धैर्य, धीरज, शूरमापन, हिम्मत ।

प्रा० ढाढ़सदेना बोल० दिलासा देना, हिम्मत बँधाना ।

प्रा० ढाढ़सबँधाना बोल० भरोसा देना, साहस देना, धीरज देना, हियाव रखना ।

प्रा० ढाढ़िन स्त्री० ढाढ़ी की स्त्री ।

प्रा० ढाढ़ी पु० गाने बजानेवाला,

बजंत्री, कलावत, क़व्वाल ।

प्रा० ढाना } क्रि० स० गिराना,
ढहाना } उजाड़ना, नेत्र से उखाड़ डालना ।

प्रा० ढाबर गु० मैला ।

प्रा० ढाबा पु० जाल, ओरी, ओलती ।

प्रा० ढाल पु० फरी, २ उतार, ढलाव, झुकाव ।

प्रा० ढालना क्रि० स० साँचे में उतारना, धातु को साँचे में पिघलाना, २ बहाना, ३ बिगाड़ना ।

प्रा० ढालवाँ गु० उतारू, ढालू । ढाला हुआ, साँचे में ढाला हुआ (जैसे धातु) ।

प्रा० ढालू गु० उतारू, ढालवाँ, २ बिगाड़ू ।

प्रा० ढाहा पु० नदी का ऊँचा क़िनारा, करारा ।

प्रा० ढिग (सं० दिक्=दिशा) स्त्री० तरफ़, ओर, दिशा, क्रि० वि० पास, समीप, नगीच, निकट ।

प्रा० ढिठाई (सं० धृष्टता) स्त्री० मगराई, मचलाई, गुस्ताख़ी, चंचलता, निर्लज्जता, साहस, प्रगल्भता ।

प्रा० ढिमढिमी स्त्री० डमरू, खंजरी ।

प्रा० ढीठ } (सं० धृष्ट) गु० मगरा,
ढीठा } मचला, साहसी, निर्लज्ज, मिलाजुला, वीर, निडर, प्रगल्भ, गुस्ताख़ ।

प्रा० ढील स्त्री० ढिलाई, २ आसक्त, सुस्ती, अचेती, ३ देरी, देर, विलम्ब ।

प्रा० ढीला गु० बेकसा हुआ, छुटा, शिथिल, २ धीमा, आलसी, सुस्त, अचेत, मंद ।

प्रा० ढीहा पु० टीला, डूंगर, खंडल, पहाड़ी ।

प्रा० ढुलना क्रि० अ० ढलना, गिरना, बहना, लुढ़कना ।

प्रा० ढूँढ़ना (सं० ढुण्ढन, ढुण्ढ=खोजना) क्रि० स० खोजना, हेरना, तलाश करना ।

प्रा० ढूँढ़नाढाँढ़ना } बोल० खो-
ढूँढ़ढाँढ़करना } जना, हेरना, तलाश करना, ढूँढ़ना, जुस्तजू करना ।

प्रा० ढूढ़िया पु० जैनियोंका भिखारी ।

प्रा० ढूकना बंधकरना, २ पास आना, ३ पैठना ।

प्रा० ढूसर पु० हिंदुओं में वैश्यों की एक जाति ।

प्रा० ढेऊ स्त्री० लहर, तरंग ।

प्रा० ढेकली स्त्री० ढेंकुवा, पानी निकालने की कल, बल विद्या में यह एक प्रकार की डंडी है जिसमें जो लम्बी लकड़ी उसको सहारा देती है वह तो टेक है और जो पानी का डोल निकाला जाता

वह बोझ है और जो दूसरी ओर ज़मीन का अथवा पत्थर का बोझ है वही ज़ोर है।

प्रा० ढेंका पु० कूटने की कल।

प्रा० ढेंड़ी स्त्री० पोस्त का फूल, २ कर्णफूल, स्त्रियों के कानमें पहनने का एक गहना।

प्रा० ढेक पु० सारस पक्षी।

प्रा० ढेढ़ पु० चमार, २ कौवा।

प्रा० ढेढ़ी स्त्री० एक कान का गहना।

प्रा० ढेर पु० राशि, ढेरी, अटाला, संचय, इकट्ठा किया हुआ, समूह, गु० बहुत।

प्रा० ढेरी स्त्री० राशि, ढेर।

प्रा० ढेला पु० पिण्डा, लोंदा, मिट्टी का टुकड़ा।

प्रा० ढेलाचौथ स्त्री० भादों सुदी ४ जिस दिन हिन्दूलोग एक दूसरे के घर में पत्थर फेंकते हैं और जो कोई गाली देता है तो उसको अच्छा सगुन मानते हैं।

प्रा० ढैया पु० अढ़ैया, अढ़ाई सेर का तोल।

प्रा० ढोकना क्रि० स० पीना, घूटना, निगलना।

प्रा० ढोका पु० पत्थर का टुकड़ा, २ पाँच की गिन्ती जो कंडे मोल लेने में बोलते हैं।

प्रा० ढोटा पु० लड़का, बालक।

प्रा० ढोना क्रि० स० लेजाना, बहना।

प्रा० ढोर पु० गाय, गोरू, भैंस आदि चौपाये, पशु।

प्रा० ढोल एक बाजा, दमामा।

प्रा० ढोलक
ढोलकी } स्त्री० छोटा ढोल।

प्रा० ढोलकिया पु० ढोल बजानेवाला।

प्रा० ढोला पु० हिन्दुओं में एक प्रसिद्ध प्रेमी का नाम, २ लड़का।

प्रा० ढोली पु० ढोल बजानेवाला, २ दोसौ पान की आँटी।

प्रा० ढोंचा
ढौंचा } गु० साढ़ेचार।

ण

सं० ण (णख=जाना) पु० बिंदुदेव, भूषण, गुणरहित, निर्णय, ज्ञान, बुद्धि, हृदय, शिव, दान, अस्त्र, उपाय, विद्वान्, जलस्थान, निर्वाण, त्रिगुणाकर।

त

सं० त (तक्=सहना वा हँसना) पु० चोर, २ म्लेच्छ, ३ पूँछ, ४ रत्न, ५ पुण्य, ६ अनृत, ७ तीव्र, ८ कुटिल, ९ तैरना।

प्रा० तई स्त्री० एक प्रकार की लोहे की कड़ाही।

प्रा० तईं (सं० स्थान) क्रि० वि० तक, तलक, लग, लौं, पर्यन्त, २ को।

प्रा० तक क्रि० वि० तलक, लौं,

तई, पर्यन्त, पु० लकड़ी या भूसा तौलने की तराज़ू ।

प्रा० तकना क्रि० स० ताक लगाना, देखा करना, टकटक देखना, चितवना ।

प्रा० तकान पु० हिलाव, थकाव ।

प्रा० तकला (सं० तर्कु, कृत्=काटना) पु० टकुवा, फिरकी, कतुवा, सूत कातने का यंत्र ।

सं० तक्र (तक्=सहना, वा तञ्च्=जाना) पु० छाँछ, मट्ठा, मही जिस में चौथा हिस्सा पानी मिला हो ।

सं० तक्ष (तक्ष्=काटना वा पतला करना) भा० पु० आच्छादन, कर्तन, काटना, चर्म, चित्रा नक्षत्र ।

सं० तक्षक (तक्ष्=काटना वा पतला करना) क० पु० लकड़ी काटनेवाला, बढ़ई, २ पाताल का बड़ा साँप, ३ विश्वकर्मा, ४ सूत्रधार, ५ एक वृक्ष का नाम ।

सं० तक्षशिला स्त्री० एक शहर का नाम जो पंजाब में था जिसको यूनानी अपने इतिहास में Taxila लिखा है, भरतके पुत्रकी राजधानी ।

प्रा० तखरी स्त्री० तुला, तखड़ी, तराज़ू ।

सं० तगर पु० मरुआवृक्ष, सुगंधित काठ ।

प्रा० तंगा पु० दो पैसे, टका ।

प्रा० तज (सं० त्वच्) पु० तेजपात का वृक्ष अथवा उसकी छाल ।

प्रा० तजना ⎫ (सं० त्यज्=छोड़ना)
त्यजना ⎭ क्रि० स० छोड़ना, त्यागना, त्याग करना, छोड़देना ।

सं० तज्ज्ञ (तद् + ज्ञ, ज्ञा=जानना) तत्त्वज्ञाता, पण्डित ।

अ० तज़रुबत भा० तजरुबा, आज़मायश, विचार, अनुमान, अनुभव, यथार्थज्ञान ।

सं० तट (तट्=ऊँचा होना) पु० तीर, किनारा, कड़ारा, २ निकट, पास ।

सं० तटस्थ (तट=तीर, स्था=ठहरना) गु० तीर पर ठहरनेवाला, तीर पर के, तीरवासी, २ उदासीन ।

सं० तटिनी क० स्त्री० नदी, नहर ।

सं० तटी क० पु० कूल, किनारा, तटवाला ।

प्रा० तड़ पु० पक्ष, दल, धड़ा, मारना, जत्था, टोली, २ तड़ ऐसा शब्द ।

प्रा० तड़कना क्रि० अ० फटना, फूटना, टूटना, चटकना, दड़कना ।

प्रा० तड़का पु० भोर, विहान, प्रभात, प्रातःकाल, भिनुसार, पोह, सवेरा ।

प्रा० तड़के क्रि० वि० सवेरे, भोर के समय, पोह फटे ।

प्रा० तड़फ स्त्री० बेकली, व्याकुलता, धड़क, घबराहट, निढालपन, धड़धड़ाहट ।

प्रा० तड़फड़ाना क्रि० अ० धड़कना, छटपटाना, व्याकुल होना, घबरा जाना, धकधकाना, तड़फना, तड़पना।

प्रा० तड़फड़ाहट स्त्री० धुकधुकी, धड़क ।

प्रा० तड़फना } क्रि० अ० छटपटाना,
तड़पना } घबराना, व्याकुल होना, धकधकाना, २ कुदकना, उछलना, ३ किसी चीज़ के लिये बहुत विकल होना, किसी चीज़ को बहुतही बहुत चाहना ।

प्रा० तड़ाका पु० आहट, आवाज़ मारने का शब्द ।

प्रा० तड़ाग (तड्=पीटना वा चमकना) पु० तलाव, तालाब, सरवर, सरोवर, पोखरा, जलाशय ।

सं० तड़ित् (तड्=भिड़ाना, एक बादल को दूसरे बादल से) स्त्री० बिजली, दामिनी, विद्युत्, बर्क़ ।

सं० तण्डक (तड्+अक, तड्=भिड़ाना) क० पु० मायावी, पाखण्डी, २ समग्र, ३ खंजन अर्थात् भारद्वाज पक्षी, खड़रैंचा, खड़ैंचा, ४ धन्नी, कड़ी, ५ गृह ।

सं० तड़ित्वान् क० पु० मेघ, बादल ।

सं० तड़ित्समाचार (तड़ित्=तारबर्क़ी, समाचार=हाल) पु० तारबर्क़ी के समाचार, तार द्वारा वृत्तान्त ।

सं० तण्डुल (तड्=पीटना वा कूटना) कर्म० पु० चाँवल, कूटा हुआ धान।

सं० तत्काल (तत्=वह, काल=समय) क्रि० वि० उसी दम, उसी समय, वही क्षण ।

सं० तत्क्षण (तत्=वह, क्षण=समय) क्रि० वि० उसी पल में, उसी समय, तुरन्त, तत्काल, उसी क्षण।

प्रा० तत्ता (सं० तप्त) गु० गर्म, उष्ण, २ क्रोधी ।

सं० तत्पर (तत्=वह, पर=लगा हुआ) गु० किसी काम में लगा हुआ, उद्यमी, परिश्रमी ।

सं० तत्र (तत्=वह) क्रि० वि० वहाँ, तहाँ, उस जगह ।

सं० तत्रभवान् आँजनाब ।

सं० तत्रभवती आँजनाबा ।

सं० तत्त्व (तत्=वह, त्व=भाव अर्थ में प्रत्यय, अर्थात् उस परमेश्वर का) पु० सार, मूल, यथार्थ, सत्य, आदिकारण, पञ्चभूत (जैसे १ मिट्टी, २ पानी, ३ आग, ४ हवा, ५ आकाश), २ परमात्मा, ब्रह्म, ३ सारवस्तु, ४ सांख्यशास्त्र में प्रकृति आदि पचीस पदार्थ ।

सं० तत्त्वज्ञान (तत्त्व=सच्चा वा परमेश्वरका ज्ञान) पु० ब्रह्मज्ञान, यथार्थज्ञान, परमार्थज्ञान, परमेश्वर का ज्ञान ।

सं० तत्त्वतः अव्य० ठीक ठीक, यथार्थ, हक़ीक़त में ।

सं० तथा (तत्=वह, था प्रकार अर्थ में प्रत्यय) क्रि० वि० उस प्रकार से, वैसाही, उसी तरह से, वही, तैसा, तिस प्रकार ।

सं० तथापि (तथा=तैसे, अपि=भी) समुच्च० वा क्रि० वि० तौ भी, तब भी, तिसपर भी ।

सं० तथास्तु (तथा=तैसे, अस्तु=होवे, अस्=होना) समुच्च० क्रि० वि० वैसाही हो, हाँ ।

सं० तत्थ्य पु० सत्य, निष्कपट, मिथ्यारहित ।

प्रा० तद (सं० तदा) क्रि० वि० तब, उस समय, फिर, इसके पीछे, उस दशा में ।

सं० तदनन्तर } (तत्=उसके, अनन्तर=पीछे)क्रि०
तदुपरान्त } वि० वा समुच्च० उसके पीछे, तिसके पीछे ।

सं० तदपि (तत् + अपि) समुच्च० तब भी, तोभी ।

सं० तदा } (तत्=वह)क्रि०वि०तब,
तदानीम् } तद, उस समय ।

सं० तद्धित (तत् + हित) पु० उस का हित, दूसरे की भलाई, २ व्याकरण में नाम से नाम बनाये जाने को कहते हैं जैसे विष्णु से वैष्णव, शिव=शैव ।

प्रा० तधी (सं० तदाहि) क्रि० वि० तभी ।

प्रा० तन (सं०तनु) पु० शरीर, देह, काया, अङ्ग, २ ओर, तरफ़ ।

प्रा० तनदेना बोल० ध्यानदेना ।

प्रा० तनक (सं०तनुक,तन्=फैलना) गु० थोड़ा, अल्प, छोटा, ज़रा ।

प्रा० तनना } (सं० तन्=फैलना)
तन्ना } क्रि० अ० फैलना, खिचना, विस्तार देना ।

सं० तनय (तन्=फैलाना, वंश को) पु० बेटा, पुत्र, सन्तान, औलाद ।

सं० तनया (तनय)स्त्री०बेटी, कन्या ।

प्रा० तनी (सं० तनया) स्त्री० बेटी, २ अँगरखे का बन्द ।

सं० तनु } (तन्=फैलाना) पु०
तनू } शरीर, देह, तन, काया, अङ्ग, २ गु० पतला, थोड़ा, अल्प, सूक्ष्म ।

सं० तनुज } (तनु=शरीर, जन्=पैदा
तनूज } होना) पु० बेटा, पुत्र ।

सं० तनुजा } (तनु=शरीर, जन्=
तनुजाता } पैदाहोना)स्त्री०बेटी,
तनूजा } लड़की ।

सं० तनुत्र (तनु=शरीर, त्रै=बचाना) पु० कवच, बख़्तर ।

सं० तनुरुह (तनु=शरीर, रुह्=उगना) पु० बाल, केश ।

सं० तन्ति (तन्=फैलाना) पु० बुननेवाला, जुलाहा, ताँती ।

सं० तन्तु (तन्=फैलाना)पु० सूत, तागा, धागा, २ वंश, सन्तान ।

सं० तन्तुकीट (तन्तु=तागा, कीट= कीड़ा) पु० रेशम का कीड़ा, पाट कीट ।

सं० तन्तुवाय (तन्तु=सूत, वै=फैलाना वा बुनना) पु० बुननेवाला, जुलाहा, ताँती, कोरी ।

सं० तन्त्र (तन्=फैलाना)पु० एक शास्त्र का नाम जिसमें महादेव और पार्वती का संवाद है इसलिये तान्त्रिक लोगों के येही दोनों मुख्य देवता हैं, इस शास्त्रके बहुत से ग्रन्थ मिलते हैं जैसे रुद्रयामल मेरुतन्त्र आदि । मन्त्रशास्त्र, २ मन्त्र, मन्त्र यन्त्र, टोना टोटका, ३ सिद्धान्त, प्रमाण, ४ प्रधान, ५ वश, आधीन, ६ अमल, काम ।

सं० तन्त्रि } स्त्री० निद्रा, नींद,
तन्त्री } उँघाई, ऊँघ ।

सं० तन्द्रा (तन्द्रा=आलस करना, वा आलसी होना) स्त्री० आलस, थकावट, थकाई, श्रम, काहिली, सुस्ती ।

सं० तन्द्रालु (तन्द्रा) गु० आलसी, सुस्त, निद्रालु ।

सं० तन्मात्र पु० शब्द, २ रस, ३ रूप, ४ गन्ध, ५ स्पर्श, उतनाही, जितनाही ।

सं० तन्मय पु० तद्रूप, अभेद, उसी रूप का ।

सं० तन्वी (तनु) क० स्त्री० जिस स्त्री का शरीर पतला हो, कृशाङ्गी ।

सं० तप (तप्=तपना) पु० गर्मी, उष्णता, २ गर्मी की ऋतु, ३ तपस्या, रियाज़त ।

प्रा० तपत (सं० तप्त) स्म० स्त्री० गर्मी, गु० तत्ता, गर्म, तपा हुआ ।

सं० तपन (तप्=तपना) भा० पु० सूर्य, २ एक नरक का नाम, ३ गर्मी, जलन, उष्णता, ४ ग्रीष्म ऋतु, गर्मी की ऋतु ।

प्रा० तपना (सं० तपन) क्रि० अ० गर्म होना, दहकना, २ भागवान् होना, तेजोवान् होना, ऐश्वर्यवान् होना ।

सं० तपस्या (तपस्, तप्=तप करना) स्त्री० तप, योग, काया को कष्ट देना, रियाज़त ।

सं० तपस्वी (तपस्विन्, तपस्, तप्=तप करना) गु० तपस्या करनेवाला, योगी, योग साधनेवाला, तापस, तपसी, रियाज़ी ।

प्रा० तपाना (तपना) क्रि० स० गर्म करना, तत्ता करना, गर्माना ।

प्रा० तपी } (सं० तपस्वी) गु० तपस्या
तप्सी } करनेवाला, तपस्वी, योगी ।

सं० तपोधन (तपस्=तप, धन= दौलत, अर्थात् जिनके तपही

है) पु० तपस्वी, तप करनेवाला, योगी, तप्सी ।

सं० तपोवन (तपस्=तपस्या, वन =जङ्गल) पु० तपस्या करने का वन, वह वन जिसमें योगीलोग तप करते हैं, २ एक तीर्थ का नाम ।

सं० तप्त (तप्=तपना) स्म० पु० गर्म, तपा हुआ, तत्ता, उष्ण, गर्मी अथवा पीड़ा अथवा शोच से जला हुआ ।

प्रा०तब (सं०तदा) क्रि० वि० तिस समय, उस समय, तद, फिर, इसके पीछे ।

सं० तम (तम्=सताना व दुःखदेना) पु० तमोगुण, २ अन्धेरा, अन्धकार, अज्ञान, ३ राहु, ४ अत्यन्त अर्थ में प्रत्यय, सिफ़त, कुलकाहर्फ़ ।

सं० तमः (तम्=सताना वा दुःख देना) पु० अन्धेरा, अन्धकार, २ तमोगुण, ३ पाप, ४ शोक, शोच, ५ राहु ।

प्रा० तमक (सं० तमः) स्त्री० घमण्ड, अभिमान, २ क्रोध, गुस्से से मुँह लाल होजाना ।

प्रा० तमकना क्रि० अ० गुस्से से मुँह लाल होजाना, खिसियाना, क्रोध करना ।

प्रा० तमतमाना क्रि० अ० लाल होना, झलझलाना, चमकना, मुँह लाल होजाना ।

सं० तमस (तम्=सताना वा दुःख देना, वा अन्धेरा होना) पु० अन्धेरा, २ तमोगुण, ३ एक नरक का नाम, ४ राहु ।

सं० तमसा (तम्=चाहना) स्त्री० एक नदी का नाम ।

सं० तमारि (तम्=अन्धेरा, अरि=वैरी) पु० सूर्य ।

सं० तमाल (तम्=अन्धेरा होना वा चाहना) पु० एक वृक्ष का नाम जिसकी पत्तियाँ काली होती हैं, २ चन्दन का टीका, ३ तमाखू, ४ मोरपंख ।

सं० तमि
तमी } (तम=अन्धेरा) स्त्री० रात, रात्री, रजनी ।

सं० तमीचर (तमी=रात, चर=चलनेवाला, वा खानेवाला, चर्=चलना, वा खाना) पु० राक्षस, निशाचर ।

सं० तमोगुण (तमस्=अन्धेरा, गुण) पु० तीसरा गुण, तीन गुणों में का एक गुण, क्रोध, ग़ज़ब, गुस्सा, मोह, अज्ञान आदि ।

सं० तमोघ्न (तमस् + हन्) हन् को घ्न आदेश हो गया पु० सूर्य, २ चन्द्र, ३ अग्नि, ४ दीप, ५ गुरु, ६ ज्ञानी ।

प्रा० तम्बू डेरा, पाल, रावटी, छोलदारी, कपड़कोठा ।

प्रा० तम्बूरा अरबी तम्बूरह, पु०

एक बाजे का नाम ।

प्रा० तम्बोली (सं० ताम्बूली, ताम्बूल=पान) क० पु० पान बेचनेवाला ।

प्रा० तर } (सं०तल,तल्=ठहरना)
तरे } क्रि० वि० नीचे, तले ।

सं० तर गु० अधिक अर्थ में प्रत्यय, जैसे श्रेष्ठतर ।

प्रा० तरई (सं० तारा) स्त्री० तारा, तरैया, नक्षत्र ।

प्रा० तरकना क्रि० अ० कूदना ।

प्रा० तरकारी स्त्री० भाजी, साग ।

सं० तरङ्ग (तृ=पार होना) स्त्री० लहर, ढेऊ, हिलकोरा, २ उमंग, ललक, मौज ।

सं० तरङ्गिणी (तरङ्ग) स्त्री० नदी ।

सं० तरङ्गी (तरङ्ग) गु० लहरी, चञ्चल मन, उछाहवाला, तरल ।

सं० तरण (तृ=पार होना) पु० तैरना, पार होना, उद्धार, बचाव, २डोंगा,नाव, ३स्वर्ग, गु० पारहोनेवाला,तरनेवाला,मुक्तिपानेवाला ।

सं० तरणि (तृ=पार होना)पु० सूर्य, स्त्री० २ किरण, ३ नाव, नौका ।

प्रा० तरना (सं० तरण) क्रि० अ० पार होना, २ मुक्त होना, छुटकारा पाना, उद्धार होना ।

प्रा० तरफना क्रि० अ० तड़पना, व्याकुल होना ।

प्रा० तरबूज (फ़ा० तरबूज़)पु० एक फल का नाम ।

सं० तरल(तृ=पार होना)गु० चञ्चल, तरङ्गी, अस्थिर, ओछा, पु० हार, २ हार के बीच की मणि ।

प्रा० तरव (सं० तरु)पु० वृक्ष, पेड़, गाछ ।

प्रा० तरवर (सं० तरुवर, तरु=पेड़, वर=बड़ा)पु० बड़ावृक्ष ।

प्रा० तरवारिया (तरवार) क० पु० तलवार रखनेवाला, खड्गधारी, २ तलवार ।

प्रा० तरवार } (सं० तरवारि, तर
तलवार } चाल [वैरियों की]
तृ=पार होना, और वृ=रोकना, अर्थात् जो वैरियों की चालको रोक देती है) स्त्री० खड्ग, खांडा ।

प्रा० तरसना (सं०तर्षण,तृष्=प्यासा होना) क्रि० अ० बहुत चाहना, जी लगा रहना, रटना ।

प्रा० तरईन (सं० तारागण) पु० तारे, नक्षत्र ।

प्रा० तराई स्त्री० दलदल, धरती, जलाभूमि, २ चौगान, चरनेकी जगह ।

सं० तरि } (तृ=पार होना)स्त्री०नाव,
तरी } डोंगी, नौका, तरणी ।

सं० तरु (तृ=पार होना, अर्थात् जिसका लगानेवाला तरजाता है) पु० वृक्ष, पेड़, रूख, तरवर, गाछ, दरख्त ।

सं० तरुण (तॄ=बीत जाना, वा चलाजाना) गु० जवान, युवा ।

प्रा० तरुणाई (सं० तरुणता) भा० स्त्री० जवानी, जोबन, यौवन ।

सं० तरुणी (तरुण) स्त्री० जवान स्त्री, युवती ।

प्रा० तरेरना क्रि० अ० घूरना, त्योरी चढ़ाना, आँख दिखाना ।

प्रा० तरैया (सं० तारा) स्त्री० तारा, तरंगण ।

सं० तर्क (तर्क=तर्ककरना) स्त्री० वाद, विवाद, शास्त्रार्थ, न्याय संबन्धी बातचीत, शङ्का, दलील, २ न्यायशास्त्र, ३ (न्यायशास्त्र में) अनुमान, कल्पना ।

सं० तर्कवितर्क स्त्री० शङ्का, संदेह ।

सं० तर्कविद्या (तर्क + विद्या) स्त्री० न्यायशास्त्र ।

सं० तर्जक (तर्ज् + अक) क० पु० कूदनेवाला ।

सं० तर्जन (सं० तर्ज्=धमकाना) पु० कोप, क्रोध, ताड़न, धमकी, गर्ज ।

प्रा० तर्जना (सं०तर्जन) क्रि० स० क्रोध करना, कूदना, धमकाना ।

सं० तर्जनी (तर्ज्=धमकाना, जिससे) स्त्री० दूसरी अँगुली, अँगूठे के पास की अँगुली ।

सं० तर्जित (तर्ज् + इत) कर्म० पु० कूदा, धमकाया गया ।

सं० तर्पण (तृप्=तृप्त होना) पु० तृप्ति, संतोष, परिपूर्णता, २ पितरों को जल देना ।

सं० तर्पक (तृप् + अक) क० पु० तृप्तिदेनेवाला, संतोष करनेवाला ।

सं० तर्पित (तृप् + इत) कर्म० पु० तृप्त, सन्तुष्ट, आसूदा ।

सं० तर्ष (तृष्=प्यासा होना) स्त्री० प्यास, २ चाह, इच्छा, तृष्णा ।

प्रा० तर्स स्त्री० दया, कृपा, करुणा ।

प्रा० तर्सखाना बोल० दयाकरना ।

प्रा० तर्साना (तरसना) क्रि० स० ललचाना, लुभाना ।

प्रा० तर्सों क्रि० वि० परसों के आगे का दिन, आजसे पहला वा पिछला तीसरा दिन ।

प्रा० तल (तल्=ठहरना) पु० तला, नीचा, नीचे का भाग, नीचे की जगह, थाह, २ तलवा, तला, तली ।

प्रा० तलघर वि० पु० तहखाना, ताखाना ।

प्रा० तलछट स्त्री० मैल, निचोड़, खूद, मल ।

प्रा० तलपना
तलफना } क्रि० अ० तलफना, छटपटाना, २ रोना, हाथ मारना ।

प्रा० तलमलाना क्रि० अ० ललचाना, तरसना, २ कलपना, तड़फना ।

प्रा० तला सं० तल पु० पेंदा, थाह, २ जूते के नीचे का चमड़ा, तल्ला, तली ।

प्रा० तलाब (सं० ताल और फ़ा० तालाब) पु० तालाब, सरोवर, जलाशय ।

प्रा० तली (सं० तल) स्त्री० तला, नीचा, पेंदा, २ जूते के नीचे का चमड़ा, ३ चूर्ण ।

प्रा० तलुवा
तलवा } (सं० तल) पु० पाँव का तला, पगतली ।

प्रा० तलुवाचाटना
तलुवेतलेहाथधरना } बोल० चापलूसी करना, लल्लोपत्तोकरना, खुशामद करना ।

प्रा० तले (सं० तल) क्रि० वि० नीचे, उतर के, घट के ।

प्रा० तले ऊपर बोल० नीचे ऊपर, उलट पुलट ।

सं० तल्प पु० पलँग, शय्या, २ अट्टालिका, अटारी, ३ नारी, अबला ।

सं० तल्लिका स्त्री० कुंजी, ताली, २ कूर्चिका, कूची, ३ तरुणी ।

सं० तव सर्वना० तेरा, तुम्हारा ।

प्रा० तसर पु० एक प्रकार का रेशम ।

सं० तस्कर (तत्=वह, कृ=करना) क० पु० चोर, चोरी करनेवाला, चोट्टा ।

प्रा० तस्म पु० चमोटा, चमोटी, तस्मा ।

प्रा० तस्मई स्त्री० खीर ।

सं० तस्मै सर्वना० तुम्हारे लिये ।

प्रा० तस्सू पु० इंच, एक प्रकार का नाप ।

प्रा० तहसनहस गु० नाश, नष्ट, तित्तर बित्तर, चौपट, उजाड़ ।

प्रा० तहाँ (सं० तत्र) क्रि० वि० तिस जगह, वहाँ ।

प्रा० ता सर्वना० उसको, उसे, तिसको ।

प्रा० तांगा पु० एक तरह की गाड़ी ।

प्रा० तांत (सं० तन्तु) स्त्री० चमड़े का तार, चमड़े की डोरी, बाजे का तार, २ तांती का यन्त्र ।

प्रा० तांता (सं० तंति, तन्=फैलाना) पु० पांत, श्रेणी, क़तार (जैसे घोड़े, हाथी, ऊँटों की) ।

प्रा० तांती (सं० तन्ति) पु० जुलाहा, बुननेवाला, क़तार ।

प्रा० तांबा (सं० ताम्र) पु० एक धातु का नाम ।

प्रा० ताइत (अरबी تعوذ तावीज़) पु० गण्डा, यन्त्र ।

प्रा० ताई स्त्री० बाप के बड़े भाई की स्त्री ।

प्रा० ताऊ पु० बापका बड़ा भाई ।

प्रा० ताक (सं० तर्क) स्त्री० दृष्टि, दीठ, झांक, टकटकी ।

प्रा० ताकना (ताक) क्रि० स० झांकना, घूरना, देखना ।

प्रा० ताग }
तागा } पु० डोरा, सूत, धागा।

प्रा० तागतोड़ पु० गोटा, किनारी।

सं० ताटङ्क }
ताड़ङ्क } (ताड़ वा ताटपीटना) (तड्=पीटना और अङ्क, चिह्न) पु० ढेडी, कर्णभूषण, कान का गहना, ढारैं।

प्रा० ताड़ (सं० ताल) पु० ताल का वृक्ष, २ ताड़ना, स्त्री० पहचान।

सं० ताड़का (तड्=पीटना) स्त्री० एक राक्षसी का नाम।

सं० ताडक (तड् + अक) कृ० पु० पीटनेवाला, सज़ा देनेवाला, नाम दैत्य का, २ एक मन्त्र।

सं० ताड़न पु० }
ताड़ना स्त्री० } (तड्=पीटना) दण्ड, झिड़की, सज़ा, मार, डांट, धमकी।

प्रा० ताड़ना क्रि० स० जानना, पहँचानना।

सं० ताड़नी स्त्री० चाबुक, औगी, पैना, कोड़ा।

प्रा० ताड़ी (ताड़) स्त्री० ताड़ का रस जिसमें नशा होताहै, २ कटार की मूठ।

सं० ताड़ित (तड् + इत) र्म्म० पु० मारा गया, पीटा गया।

सं० ताड्यमान र्म्म० पु० मारने योग्य, पीटने लायक़।

सं० ताण्डव (तण्ड एक ऋषि का नाम जिसने पहले पहल इस नाच को निकाला और सिखलाया, वा तडि=पीटना) पु० महादेव और उनके गणों का नाच, २ पुरुषों का नाच, जैसे "पुंनृत्यं ताण्डवं प्रोक्तं स्त्रीनृत्यं लास्यमुच्यते" उद्धतनृत्य, तृणविशेष।

सं० तात (तत्=फैलाना अपने वंश को वा बल को) पु० बाप, २ प्यारा, जैसे "तात प्रणाम तात सन कहेऊ" (रामायण) यहाँ पहले 'तात' शब्द का अर्थ प्यारा और दूसरे 'तात' शब्द का अर्थ बाप है, ३ प्यार का शब्द जो मा बाप अपने लड़के बालों के लिये और गुरु अपने शिष्यों के लिये बोलते हैं, जैसे "कहहु तात जननी बलिहारी" (रामायण) ४ भाई, ५ मित्र, सखा, गु० बड़ा, पूज्य, आर्य।

प्रा० तात }
ताता } (सं० तप्त) गु० गर्म, उष्ण।

प्रा० तातनी सर्वना० उसको।

प्रा० तातनौ सर्वना० उसका।

प्रा० ताते }
तातैं } सर्वना० उससे, तिससे।

सं० तात्कालिक (तत्काल) गु० उसी दम का, उसी समय का।

सं० तात्पर्य (तत्पर) पु० अभिप्राय, आशय, अर्थ, मतलब।

सं० तादर्थ्य पु० तिसके लिये, तिस

के अर्थ, तिसवास्ते ।

सं० तादृश (तत्=वह, दृश्=देखना) वैसाही, उसीके बराबर, उसीके समान, उसका सा ।

सं० तान (तन्=फैलाना) स्त्री० राग का उच्चारण, स्वर, राग, ताल ।

प्रा० तानतोड़ना बोल० ठट्टा मारना, ताल पूरी करना ।

प्रा० ताना (सं० तन्=फैलाना) पु० कपड़ा बुनने की कलपर सूत का फैलाना, ताना सूत, तानी ।

प्रा० ताना, तावना (सं०तपन, वा तापन, तप्=तपाना) क्रि० स० गर्म करना, ताव देना, परखना ।

सं० तान्त्रिक (तन्त्र) क० पु० तन्त्रशास्त्र का जाननेवाला, पण्डित ।

प्रा० तान्ना (सं० तनन, तन्=फैलाना) क्रि० स० फैलाना, खैंचना, कसना, तम्बू तानना, बोल० डेरा खड़ा करना ।

सं० ताप (तप्=गर्म होना) पु० गर्मी, २ दुःख, पीड़ा, सन्ताप, ३ शोच, फ़िक्र, शोक, खेद, उदासी, स्त्री० तप, ज्वर, जर ।

सं० तापक (तप्+अक) क० पु० दुःखदायी, दुःखद, दुःखदाता ।

सं० तापित (ताप्+इत) कर्म० पु० दुःखित, तापयुक्त ।

प्रा० तापतिल्ली स्त्री० प्लीहा, पिलही, तेहाल ।

प्रा० तापना (सं० तापन, तप्=तपाना) क्रि० अ० गर्माना, देह सेकना, शरीर गर्म करना, जाड़े में आग के पास बैठकर देहको गर्माना, घाम खाना ।

सं० तापस (तपस्=तप) पु० तपसी, तपस्वी, तप करनेवाला, योगी ।

प्रा० तामड़ा (सं० ताम्र) पु० तांबे जैसे रङ्ग का एक हलके मोल का रतन ।

सं० तामरस (तामर=पानी, सम्=सोना) पु० कमल, कँवल, २ तांबा ३ सोना ।

सं० तामस (तमस्=तमोगुण, वा अन्धेरा) गु० तमोगुणी, तामसी, क्रोध मोह आदि में लगा हुआ, पु० अन्धेरा, २ तमोगुण, ३ दुष्ट, ४ अहंकार, क्रोध मोह आदि ।

प्रा० तामसी (सं० तामसिक) गु० क्रोधी, तमोगुणी, रिस करनेवाला ।

प्रा० तामेश्वर (सं० ताम्रेश्वर, ताम्र+ईश्वर) पु० तांबे की राख, ताम्र, वङ्ग ।

सं० ताम्बूल (तम्=चाहना) पु० पान, नागरवेल का पत्ता ।

सं० ताम्बूली, ताम्बूलिक पु० तमोली, पान बेचनेवाला ।

सं० ताम्र (तम्=चाहना) पु० तांबा, २ लालरङ्ग ।

सं० **ताम्रकार** क० पु० ठठेरा,
ताम्रकुट्टक तांबा पीटनेवाला।

फ़ा० **तार** पु० लोहे आदि धातु का खिंचा हुआ तागा जो सितार आदि बाजों में लगाया जाता है,—तार बाँधना, बोल० किसी काम को लगातार जारी रखना,—तार टूटना, बोल० अलग होजाना, छूटजाना, किसी काम का बंद होजाना।

सं० **तारक** (तॄ=पार करना, वा बचाना) क० पु० बचानेवाला, रक्षक, उद्धार करनेवाला, पु० एक राक्षस का नाम, २ एक प्रकार का मन्त्र, ३ तारा, सितारा, नक्षत्र, ४ आँख का तारा, पुतली, ५ नाविक।

सं० **तारण** (तॄ=पार करना, बचाना) गु० पार करनेवाला, पु० उद्धार, पार करना, २ घरनई, बेड़ा।

सं० **तारणतरण** (तॄ=पार करना) गु० पार करनेवाला, और पार होनेवाला।

प्रा० **तारणा** (सं० तारण) क्रि०
तारना स० पार करना, बचाना, उद्धार करना, मुक्ति देना, मुक्त करना।

सं० **तारतम्य** भा० पु० फ़र्क़, अन्तर, दर्जा बदर्जा।

प्रा० **तारतोड़** पु० कारचोबी, बूटा निकालना, बूटेका काम, बूटेकारी।

सं० **तारा** (तॄ=पार होना, अर्थात् जाना) पु० नक्षत्र, सितारा, २ आँख की पुतली, स्त्री० बालि वानर की स्त्री और अङ्गद की मा, २ बृहस्पति की स्त्री, ३ देवी का नाम।

प्रा० **तारेगिनना** बोल० नींद नहीं आना, नींद न पड़ना।

सं० **तारिक** पु० उतराई, स्त्री० ताड़ी, तालरस।

सं० **तार्किक** (तर्क) क० पु० नैयायिक, तर्कशास्त्री।

सं० **ताल** (तल्=ठहरना, वा तड्=पीटना) पु० एक वृक्ष का नाम, ताड़, खजूर, २ ताली बजाने का शब्द, ३ गान का परिमाण, ४ झाँझ, मँजीरा, ५ ताला, ६ तालाब, ७ कुश्ती करने में भुजा पर हाथ मारने का शब्द।

प्रा० **ताल मारना** बोल० कुश्ती
ताल ठोंकना करने में भुजा को हाथ से ठोंकना।

प्रा० **तालमखाना** पु० एक पौधे का नाम।

सं० **तालवृन्त** पु० पंखा, व्यजन,
तालवृन्तक बेना, बादकश।

सं० **तालव्य** (तालु) गु० जो तालु से बोले जायँ, जैसे "इ, ई, च,

छ, ज, झ, ञ, य, श " ।

प्रा० ताला (सं० ताल) पु० बन्द करने की कल, कुलफ, क़ुफ़्ल ।

सं० तालाङ्क (ताल + अङ्क) पु० बलराम, २ महादेव, ३ नाचने वाला, ४ ताल का लक्षण, ५ आरा, ६ ग्रन्थ ।

प्रा० ताली (सं० ताल) स्त्री० कुञ्जी, चाभी, २ हाथ बजाना, ३ एक प्रकार का ताड़ वृक्ष ।

प्रा० ताली एक हाथसे बजाना बोल० यह मुहावरा अनहोना जतलाने के लिये बोलाजाता है ।

प्रा० ताली बजाना }
ताली मारना } बोल० हाथ पर हाथ मारना, हाथ बजाना, २ धिक्कारना, धुतकारना, हूहूकरना ।

सं० तालु (तॄ=पार होना अर्थात् जहां से अक्षर निकलते हैं) पु० तालुवा, तालू ।

प्रा० ताव (सं०ताप, फ़ा०ताफ़) पु० ताप, गर्मी, २ क्रोध,कोप, तमक, ३ बल, ज़ोर, ४ चमक, तेज, प्रताप, ५ ऐंठ, मरोड़, बल, बट, अकड़,६ काग़ज़ की परत, ७ जांच, परख, कस, ८ शीघ्रता, उतावली, हड़बड़ी ।

प्रा० तावदेना बोल० मरोड़ना, बटना, ऐंठना, २ मोछों पर हाथ फेरना, मोछें सँवारना, ३ गर्म करना (जैसे लोहे को) ।

प्रा० तावपेचखाना बोल० गर्म होना,क्रोधित होना,गुस्सा होना ।

सं० तावत् (तत्=वह) क्रि० वि० उतना, इतना, यहां तक, यहां लों, तब तक ।

प्रा० तावना (सं० तपन,वा तापन, तप्=तपाना) क्रि० स०गर्म करना, गर्माना, २ ताव देना, परखना, कसना, जांचना, ३ ऐंठना, मरोड़ना ।

प्रा० ताश पु० लप्पा, बादला, बूटेदार पट्टू ।

प्रा० तास पु० गंजफ़ा, २ लप्पा, बादला, बूटेदार पट्टू ।

प्रा० तासु (सं० तस्य) सर्वना० उसका, तिसका ।

प्रा० तासों (सं० तस्मात्) सर्वना० उससे, तिससे ।

प्रा० ताहि (सं० तम्) सर्वना० उसको, उसे, तिसको, तिसे ।

प्रा० तिकोनिया (सं० त्रिकोण) गु० तिखूंटा ।

सं० तिक्त (तिज्=तीखा करना) गु० तीता, कड़ुवा ।

प्रा० तिगुन (सं० त्रिगुण, त्रि=तीन, गुण=गुना) गु० तिगुना, तीन गुना, तिहरा ।

सं० तिग्म (तिज्+म) म्र्म० पु० तीक्ष्ण, पैना, तेज़ ।

प्रा० तिच्छन } (सं०तीक्ष्ण) गु०
तिछन } तीखा, तीता, कठोर, कड़ा।

प्रा० तिजारी (सं० तृतीयज्वर, तृतीय=तीसरा, ज्वर=तप) स्त्री० जो तप एक दिन बीच में न आकर तीसरे दिन फिर आवे, अन्तरिया ज्वर।

सं० तिजिल (तिज्+इल्, तिज्=क्षमा करना) क० पु० चन्द्रमा।

प्रा० तित (सं० तत्र) क्रि० वि० वहां, तहां, तिधर।

सं० तितिक्षक क० पु० सहनशील, क्षमी।

सं० तितिक्षा (तिज्=सहना) भा० स्त्री० धीरज, क्षमा, सहनशीलता, धैर्य, सहना।

सं० तिथि (अत्=जाना) स्त्री० हिन्दी महीनों के दिन, हिन्दी महीनों की तारीख।

प्रा० तिनका (सं० तृण) पु० खर, डांठी, घास का टुकड़ा।

प्रा० तिनकादाँतोंमेंलेना बोल० आधीन होना, जी दान माँगना, जी की अमन माँगना।

प्रा० तिबारा (सं० त्रि=तीन, बार=दरवाज़ा) पु० तीन दरवाज़े का मकान, कमरा, तिदरी, २ गु० तीनबार, तीनदफ़े।

सं० तिमिर (तिम्=भिगोना, वा तम्=अन्धेरा होना) पु० अन्धेरा, अन्धकार, २ एक प्रकार का आंख का रोग।

प्रा० तिमी स्त्री० बड़ी मछली।

प्रा० तिय (सं० स्त्री) स्त्री० नारी, लुगाई, स्त्री।

प्रा० तिरखा (सं० तृषा) स्त्री० प्यास, पीने की चाह, पियास, २ तृष्णा, चाह।

प्रा० तिरछा } (सं० तिर्यञ्च्,
तिर्छा } तिरस्=टेढ़ा, अञ्च्=जाना) गु० टेढ़ा, बांका, आड़ा।

प्रा० तिरछादेखना बोल० कनआँखियों देखना, टेढ़ी आंखसे देखना, तिरछी चितवनसे देखना।

प्रा० तिरना (सं० तरण) क्रि० अ० पैरना, हेलना, तैरना।

प्रा० तिरपन (सं० त्रिपञ्चाशत्, त्रि=तीन, पञ्चाशत्=पचास) गु० तीन और पचास, ५३।

प्रा० तिरपौलिया (त्रि=तीन, पोल=दरवाज़ा) पु० तीनदरवाज़े का मकान, २ तिराहा।

प्रा० तिरसठ (सं० त्रिषष्टि, त्रि=तीन, षष्टि=साठ) गु० तीन और साठ, ६३।

सं० तिरस्कार (तिरस्=अवज्ञा, वा अनादर, कृ=करना) पु० अपमान, अवज्ञा, अनादर, निन्दा, घिन, धिक्कार।

सं० तिरस्कृत र्म०पु०अपमानिता, बेइज़्ज़ती।

सं० तिरस्क्रिया (तिरस्+क्रिया) अनादर, त्याग।

प्रा० तिराना (तिरना) क्रि० स० तैराना, पैराना, हेलाना।

प्रा० तिरानबे (सं० त्रिनवति, त्रि=तीन, नवति=नब्बे) गु० नब्बे और तीन, ९३।

प्रा० तिरासी (सं० त्र्यशीति, त्रि=तीन, अशीति=अस्सी) गु०अस्सी और तीन, ८३।

प्रा० तिरिया (सं० स्त्री) गु० नारी, लुगाई, स्त्री।

प्रा० तिरियाचरित्र (सं० स्त्रीचरित्र) पु० स्त्रियों के छल बल, स्त्रियों के फ़रेब।

सं० तिरोधान पु० आच्छादन, गुप्त, अन्तर्द्धान।

सं० तिरोहित (तिरस्=छिपा, धा=रखना) गु० छिपा हुआ, गुप्त, लुका हुआ।

प्रा० तिर्मिराना क्रि० अ० चौंधियाना, २ लहकना, हिलना, फड़फड़ाना, ३ पानी पर तेलका तैरना।

सं० तिर्यक् गु० टेढ़ा, तिरछा, कुटिल, पु० पशु, पक्षी।

प्रा० तिर्हुत
तिरहुत
तिरहुति } (सं० तीरभुक्ति) पु० एक ज़िला का नाम जो सूबे बिहार में है और जिसका मुख्य नगर मुज़फ़्फ़रपुर है।

सं० तिल (तिल्=चिकना होना) पु० एक पौधा अथवा उसका बीज जिसका तेल निकलता है, २ देह में एक काला चिह्न।

सं० तिलक (तिल्=जाना) पु० टीका, ललाट में चन्दन वा केशर वा रोली आदिका चिह्न, गु० श्रेष्ठ, प्रधान, मुख्य, सर्वोत्तम, अग्रगण्य, जैसे "रघुकुलतिलक सदा तुम उथपन थापन" अर्थात् रघुवंशियों में प्रधान वा श्रेष्ठ, (जानकीमङ्गल)।

प्रा० तिलकुट (तिल, कुट=कूटा हुआ) पु० एकतरह की मिठाई जिसमें तिल कूटकर मिलाते हैं।

प्रा० तिलङ्गा (सं० तैलङ्ग, करनाटक देश) पु० तैलङ्ग देश का वासी, पहलेही पहल अंगरेज़ी सेना में तैलङ्ग अर्थात् करनाटक देशके लोग भरती हुयेथे इसलिये अंगरेज़ी सेना के सब सिपाहियों को तिलङ्गे कहते हैं।

प्रा० तिलङ्गी स्त्री० गुड्डी, पतङ्ग, चङ्ग।

प्रा० तिलड़ा (सं० त्रि, प्रा० लड़, लड़ी) पु० तीन लड़ का हार।

प्रा० तिलहा (तैल) गु० तेलिया, तेल सा चिकना।

प्रा० तिलुवा (तिल)पु०तिलके लड्डू।

प्रा० तिल्ली स्त्री० पिलई, तापतिल्ली।

सं० तिलोत्तमा स्त्री० स्वर्गवेश्या ।

सं० तिलोदक (पु० तिल + उदक) तिल और जल, तर्पण, पितरों का पानी ।

सं० तिलौदन (तिल + ओदन) कृसरान्न अर्थात् खिचड़ी ।

प्रा० तिष (सं० तृष्) स्त्री० प्यास, पियास ।

प्रा० तिसरायत (तीसरा) पु० तीसरा मनुष्य, बिचवैया, मध्यस्थ, पञ्च, तिहायत ।

प्रा० तिहत्तर (सं० त्रिसप्तति, त्रि=तीन, सप्तति=सत्तर) गु० सत्तर और तीन, ७३ ।

प्रा० तिहरा (त्रीणि=तीन) पु० तिलड़ा, गु० तिगुना ।

प्रा० तिहाई (सं० तृतीय) स्त्री० तीसरा भाग ।

प्रा० तिहायत (तीसरा) पु० तीसरा मनुष्य, तिसरायत, बिचवैया, मध्यस्थ, पञ्च ।

प्रा० तिहारा (सं० तव) सर्वना० तेरा, तुम्हारा ।

प्रा० तिहिं सर्वना० उन्हों को ।

प्रा० तिहुँ }
तिहूँ } (सं० त्रि) गु० तीन ।

सं० तीक्ष्ण (तिज्=तीखा होना) गु० तीखा, चोखा, पैना, तेज़, तीव्र, २ तीता, कडुवा, ३ उत्साही, फुर्तीला, चालाक, तेज़, ४ चतुर, प्रवीण, ५ क्रोधी ।

प्रा० तीखा (सं० तीक्ष्ण) गु० चोखा, पैना, तेज़, तीक्ष्ण, तीव्र, २ तीता, कडुवा, ३ क्रोधी ।

प्रा० तीज (सं० तृतीया) स्त्री० तीसरी तिथि ।

प्रा० तीत }
तीता } (सं० तिक्त) गु० चरपरा, कडुवा, कटु, २ तीखा, तीक्ष्ण, तीव्र ।

प्रा० तीतर (सं० तित्तिरि, तित्ति ऐसा शब्द, रा=लेना) पु० एक पखेरू का नाम ।

प्रा० तीतरके मुँह लछमी }
तीतरके मुँह कुशल } जब कि कोई कमसमझ मनुष्य किसी बात को निर्णय करने के लिये नियत किया जाय जिसके निर्णय करने में वह योग्य नहीं है तब उस मनुष्य के लिये यह कहावत बोली जाती है ।

प्रा० तीतरी स्त्री० तितली, पांखों वाला कीड़ा ।

प्रा० तीन (सं० त्रि) गु० दो और एक, तीन, ३ ।

प्रा० तीनतेरह तित्तर-बित्तर, डाँवाडोल, छिन्न-भिन्न, ख़राब, सत्यानास, चौपट, तहस-नहस ।

प्रा० तीय (सं० स्त्री) स्त्री० लुगाई, नारी, स्त्री, भार्या ।

प्रा० तीयल (तीय) स्त्री० स्त्रियोंके कपड़ों का जोड़ा ।

सं० तीर (तीर्=पार हो जाना, वा पूरा करना) पु० किनारा, तट, कूल, २ बाण, क्रि० वि० पास, ढिग ।

सं० तीर्थ (तॄ=पारहोना) पु० पवित्र जगह, पुण्यस्थान, यात्रा की जगह, जैसे प्रयाग, काशी, गया, जगन्नाथपुरी आदि विशेष कर ये जगह जिनके पास पवित्र नदियां (जैसे गङ्गा यमुना आदि) बहती हों और उनके आस पास की जगह ।

सं० तीर्थराज (तीर्थ + राजा) पु० तीर्थों का राजा, प्रयाग, इलाहाबाद ।

प्रा० तीली (सं० तूली) स्त्री० सींक, सलाई ।

सं० तीव्र) तीव्=मोटा होना, वा तिज्=तीखा होना) गु० तीखा, तीक्ष्ण, २ तीता, चरपरा, बहुत कडुवा, ३ अत्यन्त, अपार ।

प्रा० तीस (सं० त्रिंशत्) गु० बीस और दश, ३० ।

प्रा० तीसरा (सं० तृतीय) गु० तीजा, तिहायत ।

प्रा० तीसी (सं० अतसी) स्त्री० अलसी, अत्सी ।

प्रा० तुक स्त्री० दोहे-चौपाई आदि छन्द में पद के अन्त के अक्षरों का मिलान, यमक, जमक, क़ाफ़िया, सम्बन्ध, २ छन्द का एकपद ।

प्रा० तुकली } स्त्री० छोटी गुड्डी,
तुक्कल } छोटी पतङ्ग ।

सं० तुङ्ग (तुञ्च्=बचाना, वा दृढ़ होना) गु० ऊँचा, लम्बा, पु० एक पेड़ का नाम, २ पहाड़ ।

सं० तुङ्गभद्रा स्त्री० एक नदी का नाम जो मैसूर में है ।

सं० तुच्छ (तुद्=दुःखसे, छो=काटना) पु० पुवाल, तुस, गु० नीचा, नीच, शून्य, छूछा, निष्फल, अवज्ञा करने योग्य, घृणा के योग्य, अधम, हलका, निकम्मा, ओछा ।

सं० तुट पु० संग्राम, टूटफूट ।

सं० तुण्ड (तुड्=तोड़ना) पु० मुख, टोंट, थोटरी, नोक, चोंच ।

प्रा० तुतराना } क्रि० अ० हिचक
तुतलाना } हिचकके बोलना, हकलाना, अटक अटकके बोलना, अधूरा बोलना, साफ़ नहीं बोलना, जैसे छोटे बालक बोलते हैं ।

प्रा० तुपक स्त्री० बन्दूक़, पिस्तोल ।

प्रा० तुम (सं० त्वम्) सर्वना० मध्यमपुरुष का बहुवचन ।

प्रा० तुमाना क्रि० स० धुनवाना, पिजाना ।

सं० तुमुल पु० अत्यन्त रोमहर्षण युद्ध, घोरयुद्ध ।

सं० तुम्बुर पु० तम्बूरा, नाम गन्धर्व ।

सं० तुम्बरी स्त्री० बीन, वीणा ।

प्रा० तुरई स्त्री० एक तरकारी का नाम ।

प्रा० **तुरग** **तुरी** (तुर=वेग से, गम्=जाना) पु० घोड़ा।

सं० **तुरङ्ग** **तुरङ्गम** (तुर=वेग से, गम्=जाना) पु० घोड़ा, तुरग, अश्व, वाजी।

प्रा० **तुरत** **तुरन्त** (सं० त्वरित, त्वर्=जल्दी करना) क्रि० वि० झटपट, तुरत फुरत, शीघ्र, जल्दी, अभी।

प्रा० **तुरपन** (तुरपना) स्त्री० एक तरह का टांका।

प्रा० **तुरपना** क्रि० स० सीना, टांकना।

प्रा० **तुरही** **तुरी** (सं० तूर्य) स्त्री० रणसिंगा, नफ़ीरी, सहनाई, करनाई, नरसिंहा।

प्रा० **तुराई** स्त्री० सेज, शय्या, तोशक, बिछौना, २ (त्वरा) गु० वेग से।

सं० **तुरीय** (चतुर्=चार) गु० चौथा, पु० निर्गुण ब्रह्म, स्त्री० एक अवस्था।

प्रा० **तुरुक** मुसल्मान, तुर्किस्तान का रहनेवाला।

प्रा० **तुल** **तूल** (सं० तुल्य) गु० बराबर, समान।

प्रा० **तुलकरखड़ेहोना** बोल० लड़ने के लिये आमने सामने खड़े होना।

प्रा० **तुलना** (सं० तुलन, तुल्=तोलना) क्रि० अ० तोला जाना, २ उपमा, बराबर होना, लड़ने को खड़े होना।

प्रा० **तुलसिका** **तुलसी** (तुला=बराबरी, अस्=फेंकना, अर्थात् जिसके बराबर सृष्टि में कोई नहीं) एक पौधे का नाम।

सं० **तुलसी** **तुलसीदास** पु० हिन्दी रामायण कर्त्ता।

सं० **तुला** (तुल्=तोलना) स्त्री० बराबरी, २ तराज़ू, ३ सातवीं राशि (ज्योतिष में)।

सं० **तुलाधार** (तुला+आधार) क० पु० वैश्य, बनिया, बक़्क़ाल।

सं० **तुलित** र्म० पु० तौला हुआ।

सं० **तुल्य** (तुल्=तोलना, वा तुलना) गु० बराबर, समान, सदृश, सम।

सं० **तुष** भूसी, छिलका, चोकर।

सं० **तुषार** (तुष्=प्रसन्न करना, वा होना) पु० शीत, पाला, हिम, बर्फ़, ओस, गु० ठण्ढा।

सं० **तुष्ट** (तुष्=प्रसन्न होना) क० पु० तृप्त, सन्तुष्ट, प्रसन्न, आनन्द, हर्षित, साबिर।

सं० **तुष्टि** (तुष्=प्रसन्न होना) भा० स्त्री० तृप्ति, सन्तोष, आनन्द, प्रसन्नता।

सं० **तुहिन** (तुह्=मारना, वा हानि पहुँचाना) पु० पाला, बर्फ़, हिम।

प्रा० **तू** (सं० त्वम्) सर्वना० मध्यम पुरुष, एकवचन।

प्रा० **तूतू** कुत्ते को पुकारने का शब्द ।

प्रा० **तूंबा** (सं०तुम्ब,तुबि=मांगना) पु० तुम्बा, एक तरह का बरतन जिसमें साधुलोग पानी रखते हैं ।

सं० **तूण** }
तूणीर } (तूण्=भरना, वा सिकुड़ना)पु० भाथा,तर्कश, तीर रखने की पेटी, निषङ्ग ।

प्रा० **तूतक** }
तूतिया } (सं० तुत्थ, तुत्थ्=फैलाना, वा ढकना) पु० नीलाथोथा ।

प्रा० **तून** (सं० तुन्न, तुद्=पीड़ा देना) पु० एक पेड़ का नाम जिस की लकड़ी की मेज़ कुरसी आदि बनती हैं उसके फूल पीले होते हैं जिससे कपड़े रंगे जाते हैं ।

सं० **तूर्ण** (तूर् वा त्वर्=जल्दी करना) क्रि० वि० झटपट, तुरन्त, शीघ्र ।

सं० **तूल** (तूल्=निकालना, वा भरना) स्त्री० रूई, निर्बीज रूई ।

सं० **तूली** (तूल्=भरना) स्त्री० चितेरे की कूची, तीली, सींक ।

प्रा० **तूवर** }
तूंवर } पु० राजपूतों की एक जाति ।

सं० **तूष्णीम्** (तूष्=सन्तोष करना, वा सन्तुष्ट होना) क्रि० वि० चुपचाप, मौन, खामोश ।

सं० **तृण** (तृह्=नाश करना) पु० घास, चारा, घासफूस, तिनका, खर ।

सं० **तृणवत्** (तृण=तिनका, वत्=बराबर) गु० तिनके के बराबर, तुच्छ, हलका ।

सं० **तृतीय** (त्रि=तीन)गु०तीसरा।

सं० **तृतीया** (तृतीय) स्त्री० तीसरी तिथि ।

सं० **तृप्त** (तृप्=तृप्तहोना) क० पु० सन्तुष्ट, हर्षित, आनन्दित, सुखी।

सं० **तृप्ति** (तृप्=तृप्त होना)भा०स्त्री० सन्तोष, हर्ष, प्रसन्नता, अघाना।

सं० **तृष्** }
तृषा } (तृष्=प्यासा होना)भा० स्त्री० पियास, प्यास, तृष्णा, पिपासा ।

सं० **तृषार्त्त** (तृषा=पियास, आर्त्त=घबराया हुआ) गु० पियास से व्याकुल, बहुत प्यासा ।

सं० **तृषावन्त** (तृषा=पियास,वन्त=वाला) क० पु० पियासा,प्यासा।

सं० **तृषित** (तृषा)क०पु० पियासा, प्यासा ।

सं० **तृष्णा** (तृष्=प्यासा होना, वा लोभ करना) स्त्री०पियास, प्यास, २ लोभ, लालच, ३ चाह, इच्छा, लालसा, जो वस्तु नहीं मिली हो उसकी चाह ।

सं० **ते** सर्वना० वे, २ तेरा ।

प्रा० **ते** }
तें } अव्य० से ।

प्रा० **तैंतालीस** (सं०त्रयश्चत्वारिंशत्,त्रि=तीन,चत्वारिंशत्=चालीस)

गु० चालीस और तीन, ४३ ।

प्रा० तैंतीस (सं० त्रयस्त्रिंशत्, त्रि=तीन, त्रिंशत्=तीस) गु० तीस और तीन, ३३ ।

प्रा० तेंदुवा पु० चीता, बाघ ।

प्रा० तेईस (सं० त्रयोविंशति, त्रि=तीन, विंशति=बीस) गु० बीस और तीन, २३ ।

प्रा० तेज (सं० तेजस्, तिज्=तीखा होना) भा० पु० प्रताप, ऐश्वर्य, पराक्रम, प्रभाव, चमक, २ बल, ३ आग, ४ तीक्ष्णता ।

सं० तेजित कर्म० पु० शाणित, पैनाया गया ।

प्रा० तेजपात (सं० तेजपत्र, तेज =तीखा, पत्र=पत्ता) पु० तेज की पत्ती, एक तरह का गरम मसाला ।

प्रा० तेजमान
तेजवन्त (सं० तेजस्विन्) गु० प्रतापी, ऐश्वर्यवान् ।

प्रा० तेता (सं० तावत्) क्रि० वि० तितना ।

प्रा० तेतो क्रि० वि० तितना ।

प्रा० तेरस (सं० त्रयोदशी) स्त्री० तेरहवीं तिथि ।

प्रा० तेरह (सं० त्रयोदश) गु० तीन और दश, १३ ।

प्रा० तेरुस (सं० तृतीय) पु० तीसरा बरस ।

प्रा० तेल (सं० तैल) पु० तिलों से निकला हुआ चिकना पदार्थ ।

प्रा० तेलचढ़ाना बोल० ब्याह में दुलहा और दुलहिन के शिर व कन्धे और हाथ पैरों में तेल और हल्दी मलना (यह ब्याहकी एक रीति है)।

प्रा० तेलिया (सं० तैल) गु० एक प्रकार का रङ्ग ।

प्रा० तेली (सं० तैली) पु० तेल बेचनेवाला ।

प्रा० तेलिन स्त्री० तेली की लुगाई ।

प्रा० तेवरी स्त्री० घुड़की, धमकी, झिड़की ।

प्रा० तेवरीचढ़ाना बोल० घुड़कना, आँख दिखलाना, भौं चढ़ाना ।

प्रा० तेवहार पु० पर्व, उत्सव, मेला ।

प्रा० तेह
तेहा पु० क्रोध, कोप, गुस्सा, रिस, झाँझ ।

प्रा० तेहर पु० स्त्रियों के पाँव का गहना ।

प्रा० तेहि सर्वना० उसने, उसको, उनको, तिससे, उससे ।

अ० तैयार व्यवस्थित, उद्यत, मौजूद ।

प्रा० तैरना (सं० तरण) क्रि० अ० हेलना, पैरना, तिरना, पार होना ।

सं० तैलङ्ग पु० कर्णाटकदेश ।

प्रा० तोंद (सं० तुन्द, तुण्=खाना) स्त्री० बड़ा पेट ।

प्रा० तोंदैल
तोंदैला (तोंद) गु० मोटा पेटवाला ।

प्रा० तोड़ (तोड़ना) पु० टूट, फूट,

खण्डन, २ नदी का वेग, ३ दूध का पानी ।

प्रा० तोड़जोड़ बोल० काट छाँट, काट कूट, बात को ठीक ठाक करके बोलना ।

प्रा० तोड़डालना बोल० तोड़ना, और नाश करना, गिराना, टुकड़े टुकड़े करना ।

प्रा० तोड़देना बोल० तोड़ना, बिगाड़ना ।

प्रा० तोड़लेना बोल० खींचना, नोचना, खींचलेना (जैसे पेड़से फल फूल आदि) ।

प्रा० तोड़ना (सं० त्रोटन, त्रुट्=तोड़ना) क्रि० स० फोड़ना, फाड़ना, टुकड़े करना, २ रुपया भुनाना, ३ खींच लेना (पेड़से फल फूल आदि) ।

प्रा० तोड़ा पु० कमी, घटी, २ हज़ार रुपयों की थैली, ३ पलीता, ४ रस्सीका टुकड़ा, ५ सिंकली, ६ पाँवमें पहनने का गहना ।

प्रा० तोतला गु० हकला, लड़बड़हा ।

प्रा० तोता पु० सुग्गा, सुआ, सूगा ।

प्रा० तोपना क्रि० स० ढाँकना, छिपाना, गाड़ना ।

प्रा० तोबड़ा पु० एक प्रकार की थैली जिसमें घोड़ा दाना खाता है ।

सं० तोमर (तु=नाश करना, और मृ=मारा जाना, वा तो=गये हुये, तु=जाना और मृ=मारा जाना अर्थात् जो उसके सामने जाते हैं वे मारेजाते हैं) पु० बरछी, साँगी, एक शस्त्रका नाम, २ एक छन्दका नाम ।

सं० तोय (तु=जाना, वा बढ़ना वा तु=पूर्णता, तु=भरना और या=जाना अर्थात् जो हरएक चीज़ को भरदेता है) पु० पानी, जल, नीर, वारि ।

सं० तोयद (तोय=पानी, द=देने वाला, दा=देना) पु० बादल, मेघ, घटा ।

प्रा० तोयधर (तोय=पानी, धर=रखनेवाला, धृ=रखना) पु० बादल, मेघ, घन ।

सं० तोयनिधि (तोय=पानी, निधि=खज़ाना) पु० समुद्र, सागर, समन्दर ।

सं० तोयाशय धि० पु० जलस्थान, तड़ागादि ।

प्रा० तोर सर्वना० तेरा, तुम्हारा ।

सं० तोरण (तुर्=जल्दी करना) पु० घर के द्वार के बाहर सिंह के आकार काठ जो ब्याह में अथवा और कोई उत्सव में बाँधा जाता है, २ फूलों की माला जो पर्व अथवा किसी उत्सव में फाटक पर बाँधी जाती है ।

सं० तोलक क० पु० तौला, तौलवैया ।

प्रा० तोल } (सं०तुल्=तौलना)
तौल } पु० माप, जोख, नाप।

प्रा० तोला (सं० तुल्=तौलना) पु० बारह माशे की तौल ।

सं० तोषक(तुष्+अक)क०पु०तृप्तिकारक,संतोषी,प्रसन्न करनेवाला ।

सं० तोष (तुष्=प्रसन्न होना) भा० पु०सन्तोष,हर्ष, आनन्द,प्रसन्नता।

प्रा० तोहि सर्वना० तुझको, तुझे ।

प्रा० तौलना (सं० तुल्=तौलना) क्रि० स० जोखना, तौल करना, वज़न करना ।

सं० त्यक्त (त्यज्=छोड़ना) कर्म० पु० छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ ।

सं० त्याग (त्यज्=छोड़ना) भा० पु० छुड़ाव, तजना, २ दान, ३ विरक्ति, वैराग्य ।

प्रा० त्यागना (सं० त्याग) क्रि० स० छोड़ना,तजना, त्याग करना।

सं० त्यागशील क० पु० दाता, दानी, फ़य्याज़ ।

सं०त्याजित कर्म० पु० छोड़ा हुआ, विसर्जित ।

सं० त्यागी (त्यागिन्, त्याग) क० पु० छोड़नेवाला, २ वैरागी, ३ उदार, दाता ।

सं० त्याज्य कर्म० पु० त्यागने योग्य, छोड़ने लायक़ ।

सं० त्रपा स्त्री० लज्जा, कीर्त्ति, यश, ख्याति ।

सं० त्रपाक क० पु० लज्जालु, लज्जाशील ।

सं० त्रपित (त्रप्+इत, त्रप्=लजाना) कर्म० पु० लज्जित, शर्माया हुआ ।

सं० त्रयोदशी (त्रय=तीन, दश=दश) स्त्री० तेरस, तेरहवीं तिथि ।

सं० त्रस्त (त्रस्=डरना, या ऊबना) क० पु० डराहुआ,डरपोका, भीत, डरौवा ।

सं० त्राण (त्रै=बचाना) भा० पु० बचाव, रक्षा, पालन, २ मुक्ति, मोक्ष, निस्तार, छुटकारा, उद्धार, ३ कवच, लोहेकी कुरती ।

सं० त्राणकर्त्ता (त्राण+कर्त्ता) क० पु० बचानेवाला, मुक्तिदाता, उद्धार करनेवाला,मोक्ष देनेवाला।

सं० त्राता (त्रै=बचाना) क० पु० बचानेवाला, रक्षक, त्राणकर्त्ता, मुक्तिदाता ।

सं० त्रास (त्रस्=डरना) भा०पु० डर, भय, शङ्का, धाक ।

सं० त्रासक (त्रास्+अक) क० पु० डरवानेवाला ।

सं० त्रासित (त्रस्=डरना) कर्म० डरा हुआ, भयान्वित, भयभीत ।

प्रा० त्राह (सं०त्राहि, त्रै=बचाना) वि० बोल० बचाओ, दयाकरो ।

प्रा० त्राहत्राहकरना बोल० विलाप करना,हाय हाय करना, दया

के लिये पुकारना, २ दोष लगाना, बुरा कहना ।

सं० त्रि (तॄ=पार होना) गु० तीन, ३ ।

सं० त्रिकटु (त्रि=तीन, कटु=करुई वस्तु) पु० सोंठ मिर्च पीपर ।

सं० त्रिकालदर्शी (त्रि=तीन, काल =समय, दर्शी=देखनेवाला, दृश् =देखना) पु० भूत, वर्त्तमान और भविष्यत् इन तीनों समय की बात जाननेवाला, त्रिकालज्ञ, सर्वज्ञ, २ ऋषि, मुनि ।

सं० त्रिकूट (त्रि=तीन, कूट=चोटी) पु० एक पहाड़ का नाम जिस पर लङ्कापुरी बसती है, जैसे "गिरि त्रिकूट ऊपर बस लङ्का । तहँ रह रावण सहज अशङ्का" (तुलसीकृत रामायण) ।

सं० त्रिकोण (त्रि=तीन, कोण= कोना) पु० तिकोन, तिखूँट, त्रिभुज ।

सं० त्रिगुण कर्म० पु० तीन से गुणा हुआ पु० तीन गुण, सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण ।

सं० त्रिजटा स्त्री० एक राक्षसी का नाम जिसका वर्णन रामायण में है ।

सं० त्रिदश (त्रि=तीन, दशा=अवस्था अर्थात् १ जन्मना, २ विद्यमान रहना, ३ नाश होना ये तीन दशा जिनकी हों, अथवा त्रि=तीन, त्रिदश=तीस अर्थात् तेंतीस, यहाँ इस एकही त्रि शब्द का अर्थ दो बार लिया जाता है मुख्य देवता ३३ हैं, जैसे १२ सूर्य, ११ रुद्र, ८ वसु और २ विश्वेदेव) पु० देवता, देव, सुर ।

सं० त्रिदोष (त्रि=तीन, दोष=बिगाड़) पु० वात पित्त कफ का रोग ।

सं० त्रिधा (त्रि=तीन, धा=प्रकार अर्थ में प्रत्यय) क्रि० वि० तीन प्रकार से, त्रिविध ।

सं० त्रिनयन / **त्रिनेत्र** } (त्रि=तीन नयन वा नेत्र=आँख, अर्थात् तीन आँखवाला) पु० शिव, महादेव ।

प्रा० त्रिपुण्ड[1] (सं० त्रिपुण्ड्र, त्रि= तीन, पुण्ड्र=लकीर, पुडि=मलना) पु० तीन रेखा का तिलक, शिव और शक्ति मतवालों का तिलक ।

सं० त्रिपुर (त्रि=तीन, पुर=नगर) पु० एक दैत्य का नाम जिसने तीन पुर बनाये थे ।

सं० त्रिपुरदहन (त्रिपुर=एक राक्षस का नाम, दहन=जलानेवाला, दह् =जलाना) पु० शिव, महादेव ।

सं० त्रिपुरान्तक (त्रिपुर + अन्तक, नाश करनेवाला) पु० शिव, महादेव ।

सं० त्रिपुरारि (त्रिपुर, अरि= वैरी) पु० शिव, महादेव ।

प्रा० त्रिफला (त्रि=तीन, फल) पु० हड़ बहेड़ा आँवला ।

---

[1] "त्रिपुण्ड्रं शिवरूपेण सतीरूपेण विन्दुकी" (इति तन्त्रशास्त्रम्) ॥

सं० **त्रिभङ्गी** (त्रि=तीन, भङ्ग=टूटा हुआ) गु० टँगड़ी कमर और गरदन को झुका कर खड़े होने की दशा जैसे "त्रिभङ्गीछवि" स्त्री० एक छन्द का नाम ।

सं० **त्रिभुज** (त्रि=तीन, भुजा=बाहु) पु० त्रिकोण, तिखूँट, तिकोन ।

सं० **त्रिभुवन** (त्रि=तीन, भुवन=लोक) पु० तीन लोक (स्वर्ग व मर्त्य और पाताल) ।

प्रा० **त्रिया** (सं० स्त्री) स्त्री० स्त्री, नारी, लुगाई, तिरिया, तिय, तीय ।

सं० **त्रियामा** (त्रि=तीन, याम=पहर) स्त्री० रात, रजनी, रात्रि ।

सं० **त्रिलोक** (त्रि+लोक) पु० तीन भुवन, (स्वर्ग मर्त्य पाताल) ।

सं० **त्रिलोकी** (त्रिलोक) स्त्री० तीन लोकों का समूह, स्वर्ग व मर्त्य और पाताल ।

सं० **त्रिलोकीनाथ** (त्रिलोकी+नाथ) पु० तीन लोक के नाथ, विष्णु, ईश्वर ।

सं० **त्रिलोचन** (त्रि=तीन, लोचन=आँख) पु० महादेव, शिव, २ तीन आँखवाला ।

सं० **त्रिविक्रम** (त्रि=तीनों लोक में वि=सब तरफ़ से, क्रम्=पाँव रखना) अर्थात् जिन्हों ने अपने पैर से तीनों लोक को नापा, जैसे हरिवंश में लिखा है कि (त्रिरित्येव त्रयो लोकाः कीर्त्तिता मुनिसत्तमैः । क्रमते तान्विशेषेण त्रिविक्रम उदाहृतः) पु० विष्णु, वामनावतार में राजा बलि को बाँधने के समय विष्णु का विराट् रूप ।

सं० **त्रिविध** (त्रि=तीन, विध=प्रकार) गु० तीन प्रकार का, तीन तरह का ।

सं० **त्रिवेणी** (त्रि=तीन, वेणी=धारा) स्त्री० गङ्गा यमुना और सरस्वती का संगम जो प्रयाग में हुआ है, तीन नदियों का संगम ।

सं० **त्रिशिर** (त्रिशिरस्, त्रि=तीन, शिरस्=सिर, अर्थात् जिसके तीन सिर हों) पु० एक राक्षस का नाम, रावण का बेटा वा भाई ।

सं० **त्रिशूल** (त्रि=तीन, शूल=लोहे का तीखा काँटा) पु० एक अस्त्र का नाम जिसके लोहेके तीन तीखे काँटे होते हैं, महादेव का अस्त्र ।

सं० **त्रिशूलपाणि** (त्रिशूल+पाणि=हाथ, अर्थात् जिसके हाथ में त्रिशूल है) पु० महादेव, शिव, २ त्रिशूल रखनेवाला ।

सं० **त्रिसन्ध्या** (त्रि=तीन, सन्ध्या=समय) स्त्री० प्रभात, दोपहर और साँझ, प्रातः, मध्याह्न, सायंकाल ।

सं० **त्रुटि** (त्रुट्=तोड़ना) स्त्री० टूट, हानि, कमी, न्यूनता, (टूट शब्द को देखो) ।

सं० त्रेता (त्रि=तीन, इता=पाया, वा त्रय=तीन) स्त्री० यज्ञ की तीन पवित्र अग्नि (जैसे १ दक्षिणाग्नि, २ गार्हपत्य, ३ आहवनीय) २ दूसरा युग जो १२९६००० बरस का था ।

सं० त्रैराशिक (त्रि=तीन, राशि=समूह) स्त्री० तीन जानी हुई राशियों का हिसाब ।

सं० त्रैलोक्य (त्रिलोक) भा०पु० त्रिलोकी,आकाश पाताल पृथ्वी ।

सं० त्रोटक (त्रुट्=तोड़ना) पु० एक छन्द का नाम ।

सं० त्रोटी (त्रुट्=तोड़ना) स्त्री० चञ्चु, चोंच, टोंट, २ पखेरू ।

सं० त्र्यम्बक (त्रि=तीन, अम्बक=आँख) पु० महादेव, शिव, त्रिनयन, त्रिलोचन ।

सं० त्वक् } (त्वच्=ढकना) स्त्री०
त्वचा } चमड़ा छूनेकी इन्द्रिय, स्पर्शइन्द्रिय, छाल, छिकला, बकला, शरीर पर का चाम ।

सं० त्वरा (त्वर्=जल्दी करना) स्त्री० शीघ्रता, जल्दी, उतावली, तेज़ी ।

सं० त्वरित (त्वर्=जल्दी करना) क० पु० तुरन्त, झटपट, जल्दी, क्रि० वि० जल्दी से, वेग से ।

सं० त्वष्टा (त्वक्ष्=दुर्बल होना) क० पु० ब्रह्मा, विश्वकर्मा, नज्जार, बढ़ई ।

सं० त्विषा भा० स्त्री० रश्मि, किरण, ज्योति ।

सं० त्विषि (त्विष्=दीप्ति,उजाला) भा० स्त्री० किरण ।

थ

सं० थ (थुड्=ढकना) पु० पहाड़, २ खाना, ३ रोग, ४ डर, ५ चुचाव, ६ मङ्गल ।

प्रा० थई स्त्री० कपड़ोंका ढेर,घड़,घड़ी।

प्रा० थम्ब } (सं० स्तम्भ) पु०
थम्भ } खम्भा, खम्भ, थँभ, थूनी, सितून, पाया ।

प्रा० थँभना (सं० स्तम्भन, ष्टम्भ वा स्तम्भ=रोकना वा ठहरना) क्रि० अ० ठहरना, स्थिर होना, रुकना, २ सँभलना ।

प्रा० थकना } (सं० स्थगन, स्थग्
थाकना } =ढकना) क्रि० अ० माँदा होना, खेदित होना, अकुलाना, हारना ।

प्रा० थकित (सं० स्थगित, स्थग्=ढकना) क० पु० थकाहुआ, २ अचम्भित, विस्मित, अचम्भे में, तअज्जुब में ।

प्रा० थन (सं० स्तन) पु० गाय भैंस आदिकी चूँची, लेवा ।

प्रा० थपक पु० थपथपाने का शब्द, थोप, थप्पड़, चपेटा ।

प्रा० थपड़ा पु० थाप, थपेड़ा, चपेटा, तमाचा ।

प्रा० थपड़ी स्त्री० ताली, हाथताली, करताली, थपेड़ ।

प्रा० थपेड़ा पु० चपेटा, धौल, थाप, थपेड़ा, तमाचा ।

प्रा० थप्पड़ पु० स्त्री० थपड़ा, थपेड़ा, धौल, चपेटा ।

प्रा० थम (सं० स्तम्भ) पु० खम्भा, खम्भ, थाँभ, थूनी ।

प्रा० थमना (सं० स्तम्भ) क्रि० अ० ठहरना, स्थिर होंना, रुकना, २ सँभलना ।

प्रा० थरथर गु० डगमग, काँपता हुआ ।

प्रा० थरथराना }
थरहराना } क्रि० अ० काँपना, हिलना, डगमगाना ।
थर्राना }

प्रा० थरथराहट }
थरथरी } स्त्री० कँपाहट, कँपकँपी, डोल, हिलाव, कंपन ।

प्रा० थल (सं० स्थल) धि० पु० जगह, सूखी जगह, ठाँव, धरती, स्थान ।

प्रा० थलकना क्रि० अ० धड़कना, फड़कना, तड़पना ।

प्रा० थलचर (सं० स्थलचर) क० पु० धरती पर चलनेवाला पशु आदि, भूचर, भूमिचर ।

प्रा० थलथलकरना }
थलथलाना } क्रि० अ० डगमगाना, लहराना, हिलोरना, हिलना (जैसे मोटे आदमी का ढीला मांस) ।

प्रा० थलिया (सं० स्थाली, स्था वा स्थल्=ठहराना) स्त्री० थाली, थाल, छोटा थार ।

प्रा० थाँग स्त्री० चोरों की माँद अथवा घात की जगह ।

प्रा० थाँभ (सं० स्तम्भ) पु० खम्भ, खम्भा, थम्ब, थम्भ, थम, थूनी ।

प्रा० थाँभना (सं० स्तम्भ, ष्टम्भ् वा स्तम्भ्=रोकना वा ठहरना) क्रि० स० सहारना, ठहराना, सँभालना, सहारा देना, टेक देना, आड़ देना, २ हाथ पकड़ना, बचाना, पालन करना, रक्षाकरना, ३ रोकना, अटकाना, छेंकना, ४ ठहरा देना, खड़ा करना (जैसे घोड़े को) ।

प्रा० थाँवला (सं० स्थल, स्थल्=ठहराना) पु० पेड़की जड़ के आस पास मिट्टी की मेंड़ अथवा घेरा, क्यारी, आलवाल, थाला ।

प्रा० थिति (सं० स्थिति, स्था=ठहरना) भा० स्त्री० ठहराव, रुकाव, रोंक, क़याम ।

प्रा० थाती }
थाथी } (सं० स्थापित, स्था=ठहरना) स्त्री० धरोहर, गिरों, जाकड़, बन्धक, अमानत ।

प्रा० थान (सं० स्थान) पु० जगह, २ सारा कपड़ा, ३ घोड़े अथवा गाय बैल के रहने की जगह, चरनी,

४ सिक्का (जैसे एक थान अशरफ़ी अथवा मोहर)।

प्रा० थाना (सं० स्थान) पु०चौकी, कोतवाली, २ बाँस का टाल ।

प्रा० थाप स्त्री० धौल, थप्पड़, थपक, २ छोटे ढोल के बजाने का शब्द, ३ मर्य्याद, नामवरी ।

प्रा० थापना (सं० स्थापन) क्रि० स० थोपना (जैसे गोबर),२थपथपाना, ठोंकना, ३ रखना, स्थापन करना, ठहरा देना, धरना ।

प्रा० थापना (सं० स्थापना) स्त्री० नवरात्र में एक कोरे घड़े में पानी भर करके दुर्गादेवी के सामने रख के दुर्गादेवी की पूजा करना, आश्विन सुदी अथवा चैत सुदी परिवा को जो देवी की पूजा होती है उसे थापना की पूजा कहते हैं।

प्रा० थापा पु० चौपाये के पाँव का चिह्न ।

प्रा० थापी स्त्री०थपथपाने का शब्द, २ मोंगरी जिससे कुम्हार मिट्टी कूटते हैं वा छत पीटी जाती है ।

प्रा० थाम (सं० स्तम्भ) पु० खम्भा, सितून, थाँभ, थूनी, टेक ।

प्रा० थार ⎫ (सं० स्थाल, स्था वा
थाल ⎭ स्थल्=ठहरना) पु० बड़ी थाली ।

प्रा० थाला (सं० स्थल, स्थल्=ठहरना) पु० थाँवला, पेड़ के आस पास का घेरा जिसमें पानी सींचते हैं, एक गड़हा अथवा खोखली जगह जिसमें पेड़ उगाया जाता है, २ (सं० स्थाल) बड़ी थाली ।

प्रा० थाली (सं० स्थाली, स्था वा स्थल्=ठहरना) स्त्री० थलिया, टठिया ।

प्रा० थाह (सं० स्था=ठहरना) पु० तला, पेंदा, पानी के नीचे की धरती ।

प्रा० थिर ⎫ (सं० स्थिर, स्था=ठह-
थीर ⎭ रना) गु० ठहरा हुआ, अटल, अचल, २ शान्त, सुस्थिर।

प्रा० थिरता (सं० स्थिरता) स्त्री० ठहराव, २ शान्ति, चैन, आराम।

प्रा० थुतकारना ⎫ क्रि० स० दुर-
थुथकारना ⎭ दुराना, अनादर के साथ निकाल देना, अपमान के साथ हटाना ।

प्रा० थुथनी स्त्री० ऊँट घोड़े आदि का मुँह ।

प्रा० थुथाना क्रि० अ० भौं चढ़ाना, तेवरी चढ़ाना ।

प्रा० थूक पु० खखार, कफ, राल, लार।

प्रा० थूकचाटना बोल० वचन तोड़ना, कही अनकही करना, मुकर जाना, बात को बदलना ।

प्रा० थूकना क्रि० अ० मुँह में से खखार फेंकना ।

प्रा० थूणी } (सं० स्थाणु, स्था=
थूनी } ठहरना) स्त्री० थम्भ,
खम्भा, टेक, थाँभ, धरन ।

प्रा० थूथड़ा पु० मुँह, गु० बुरा, ख़राब ।

प्रा० थूहर } पु० स्त्री० एक काँटेदार
थोहर } पौधे का नाम ।

प्रा० थेई थेई पु० स्त्री० नाचने में खुशीका शब्द ।

प्रा० थेगली स्त्री० जोड़, चिप्पी, पैवन्द ।

प्रा० थैला पु० बोरा, गोन ।

प्रा० थैली स्त्री० छोटा थैला, कोथली ।

प्रा० थोक पु० ढेर, राशि, २ रोंक, रोकड़, ३ हिस्सा, भाग ।

प्रा० थोड़ा पु० कम, तनक, अल्प, कुछ, किंचित्, ज़रा ।

प्रा० थोड़ाथोड़ा बोल० कुछ कुछ, धीरे धीरे, कम कम ।

प्रा० थोड़ाथोड़ाहोना बोल० लज्जित होना, २ कम कम होना ।

प्रा० थोड़ाबहुत बोल० घाट बाढ़, कमोबेश, कम व कास्त ।

प्रा० थोड़ेसेथोड़ा बोल० बहुत थोड़ा, निहायत कम ।

प्रा० थोथा गु० बिन फल, फलहीन, खाली, छूछा, पु० बिन फल अथवा बिन अणी का तीर, २ एक दवा का नाम ।

प्रा० थोथीबात बोल० वृथा बात, अनर्थक वाक्य, अर्थहीन बात, सटर पटर, बेमतलब ।

प्रा० थोपना (सं० स्तुप्=ढेरी लगाना, बटोरना) क्रि० स० सहारना, थाँभना, २ लेपना, थापना, छोपना, ३ बटोरना, इकट्ठाकरना ।

प्रा० थोपी स्त्री० धक्का, थापी, मुक्की ।

द

सं० द (दा=देना, वा दैप्=शुद्ध करना, वा दो=काटना) गु० देने वाला, दाता, पु० दानदेना, २ पर्वत, ३ खण्डन, काटना, स्त्री० भार्या, पत्नी, ४ शोधन, शुद्ध करना, ५ रक्षा, ६ कलत्र, ७ मेघ ।

प्रा० दई (सं० दैव) पु० ईश्वर, २ देवता, ३ भाग्य, क़िस्मत, स्त्री० ईश्वरता ।

प्रा० दईमारा बोल० अभागा, दुर्भागी, अभाग्यवान्, अभिशापित, धिक्कार, शापित ।

सं० दंश (सं० दंश्=काटना, डसना) पु० डाँस, २ डङ्क, ३ दाँत, ४ दोष, ५ कवच, ६ महिष, भैंसा ।

सं० दंशक } (दंश्=काटना, डसना)
दंशी } क० पु० डङ्क मारने
वाला, पु० डाँस, २ साँप ।

सं० दंशन (दंश्=काटना) भा० पु० दाँतों से काटना, डङ्क मारना, २ कवच ।

सं० दंशित (दंश्+इत) कर्म० पु० काटा हुआ, काटा गया ।

सं० दंष्ट्रा (दंश्=काटना) जिससे काटते हैं ण० स्त्री० दाढ़,बड़े दाँत।

सं० दक पु० पानी, रस।

प्रा० दक्खन
दखन
दखिन (सं०दक्षिण) पु० दक्षिणदिशा, २ हिन्दुस्थान का दक्षिण भाग।

सं० दक्ष (दक्ष्=बाढ़ना) पु० ब्रह्मा का बेटा, एक प्रजापति का नाम, कहते हैं कि दक्ष ब्रह्मा के दहने हाथ के अँगूठे से पैदा हुआ था और उसके ६० बेटियां थीं जिन में से २७ तो चाँदको ब्याहीं (वेही सत्ताईस नक्षत्र कहलाते हैं) और एक उसकी बेटी सती महादेव को ब्याही थी और १३ कश्यप मुनिको ब्याहीं जो सब सृष्टि की माता थीं और १० धर्मको ब्याहीं (एक बार दक्षने यज्ञ किया था उसमें महादेव को नहीं बुलाया और सती का निरादर किया इस लिये सती उस यज्ञ के कुण्ड में जल के मर गईं तब महादेव ने दक्ष का शिर तोड़ डाला) २ एक मुनि का नाम, ३ महादेव के बैल का नाम, गु०चतुर,निपुण,प्रवीण,४समर्थ।

सं० दक्षसावर्णि पु० नववाँ मनु, चौदह मनु में एक मनु।

सं० दक्षकन्या
दक्षसुता (दक्ष+कन्या वा सुता=बेटी) स्त्री० दक्ष की बेटी, सती, दुर्गा।

सं० दक्षिण (दक्ष्=बढ़ना) गु० चतुर, प्रवीण, निपुण, २ दहना, ३ दक्षिण दिशा का, ४ खरा, सच्चा, ५ पु० दक्खन, दक्षिणदिशा, ६ दहना भाग, ७ सब नायिकाओं में बराबर सनेह रखनेवाला नायक।

सं० दक्षिणा (दक्ष्=बढ़ना) स्त्री० दान, ब्राह्मण को खिलाके कुछ देना, गुरु की भेंट, २ दुर्गा की एक मूरत।

सं० दक्षिणायन (दक्षिण=दक्खिन दिशा की ओर, अयन=चाल वा जाना) पु० दक्षिणदिशा की ओर सूर्य के जाने का समय जो सावन से पूस अथवा कर्क की संक्रान्ति से धन की संक्रान्ति तक रहता है।

प्रा० दखनी
दखिनी (दक्षिण) गु० दक्खिन का,दक्खिन का आदमी वा चीज़।

प्रा० दगधना (सं० दग्ध) क्रि० स० जलाना, २ सताना, छेड़ना, ३ सज़ादेना, धमकाना, डाटना, घुड़कना, ताड़ना करना।

प्रा० दगला पु० रूईदार अँगरखा, रूई भरा अँगरखा।

सं० दग्ध (दह्=जलना) कर्म० गु० जलाहुआ, झुलसाहुआ, भस्म,

ज्वलित, विप्लुष्ट, जलाया भया, भस्मन्त ।

सं० दग्धिक पु० दहीभात ।

प्रा० दङ्गा पु० झगड़ा, रौला, बलवा, हुल्लड़ ।

प्रा० दङ्गैत (दङ्गा) गु० दङ्गा करने वाला, झगड़ालू, लड़ाक ।

सं० दग्ध (दह्=जलाना) पु० त्याग, हिंसा, नाश ।

प्रा० दच्छ } पु० दक्ष शब्द को
दछ } देखो ।

प्रा० दच्छिना } स्त्री० दक्षिणा
दछना } शब्द को देखो ।

प्रा० दड़कना } क्रि० अ० फटना,
दरकना } चिरना, तड़कना ।

प्रा० दड़ेड़ा (सं० दृढ) पु० मेहकी बड़ी झड़ी, भारी वर्षा, प्रचण्ड झड़, असाढ़ की वर्षा ।

प्रा० दढ़मुण्डा (दाढ़ी + मुण्डा) गु० दाढ़ी मूँडाहुआ, बिन दाढ़ी का ।

प्रा० दढ़ियल (दाढ़ी) गु० लम्बी दाढ़ीवाला ।

सं० दण्ड (दण्ड्=सज़ा देना वा दम्=वश करना वा शान्त करना) पु० लाठी, सोंटा, २ ताड़ना, सज़ा, शासन, जुर्माना, प्रकाण्ड, राजाओं का चौथा उपाय अर्थात् वध, दण्ड, फाँसी, ३ एक घड़ी, साठ पल का समय, ४ यमराज, ५ चक्राव्यूह, ६ इक्ष्वाकु राजा का पुत्र, ७ क़तल, ८ दमन ।

सं० दण्डक (दण्ड्=सज़ा देना) पु० एक राजा का नाम, एक छन्द का नाम ।

सं० दण्डकारण्य (दण्डक + अरण्य) दण्डक नाम राजा का देश (शुक्राचार्य अथवा भृगु मुनिके शाप से नष्ट होकर जंगल हो गया) पु० हिन्दुस्तान के दक्षिण में दण्डक नाम वन जहाँ वनवास के समय श्रीरामचन्द्र कुछ दिन रहे थे ।

सं० दण्डदास पु० शोक, गदा, आयुध, यम, किङ्कर, सज़ा देने वाला ।

सं० दण्डधर (दण्ड + धर, धृ= धरना) क० पु० यमराज, कुलाल अर्थात् कुम्हार, लकुटधारी, राजा, दण्डी, संन्यासी, द्वारपाल, सिपाही, आसाबरदार ।

सं० दण्डनायक पु० यमराज, मुलाज़िम फ़ौजदारी ।

सं० दण्डपांशुल पु० सिपाह, चौकीदार ।

सं० दण्डपाशिक क० पु० बधिक, फाँसी देनेवाला, जल्लाद ।

सं० दण्डवत् (दण्ड=लाठी, वत्= बराबर, अर्थात् लाठी के समान गिर कर प्रणाम करना) स्त्री० प्रणाम, नमस्कार ।

सं० दण्डधात्री स्त्री० फ़ौजदारी ।

सं० दण्डादण्डी (दण्ड=लाठी) स्त्री० लाठा लाठी, लाठी से लड़ना, गदायुद्ध ।

सं० दण्डी (दण्डिन्, दण्ड=लाठी अर्थात् लाठी रखनेवाला) पु० एक प्रकार के संन्यासी जो हाथ में दण्ड रखते हैं, २ यमराज, ३ राजा, ४ द्वारपाल, ५ काव्यादर्श के बनानेवाले कवि का नाम, गु० लाठी रखनेवाला, लठैल, चोबदार ।

प्रा० दतवन } (सं० दन्तधावन) पु०
दतौन } दतुन, दाँतन, दाँत साफ़ करने की लकड़ी ।

सं० दत्त (दा=देना) र्म० पु० दिया हुआ, समर्पित, पु० वैश्यों का उपनाम, उर्फ़ ।

सं० दत्तक (दा=देना) र्म० पु० गोद लियाहुआ, लेपालक, दत्तक पुत्र=गोद लियाहुआ लड़का, पोष्य पुत्र, सुतबन्ना ।

सं० दत्तात्रेय पु० अत्रि ऋषि का पुत्र, विष्णु का अवतार भेद, बड़े ज्ञानी थे २४ गुरु किये ।

सं० ददन पु० दान देना, त्याग ।

सं० दद्रू पु० दाद रोग, फुजाव ।

प्रा० ददोड़ा पु० फोड़ा, गुमड़ा ।

सं० दधि (दध्=रखना) पु० दही चक्का ।

प्रा० दधिकाँदौ (सं० दधि+कर्दम, दधि=दही, कर्दम=कीच) पु० श्रीकृष्ण के जन्मदिन अर्थात् जन्माष्टमी का उत्सव जिसमें मनुष्य दही और हल्दी मिलाकर आपस में एक दूसरे पर डालते हैं और खेलतेहैं जिससे कीच मच जातीहै।

सं० दधीचि (दध् वा धा=रखना) पु० एक ऋषि का नाम जिसने अपने शरीर का हाड़ इन्द्र और सब देवताओं को दिया तब इन्द्र ने उसका वज्र बना के वृत्रासुर को मारा ।

सं० दधिसार पु० मक्खन, नवनीत, नैनू ।

सं० दनुज (दनु=कश्यपमुनि की स्त्री और दक्षप्रजापति की बेटी, ज=पैदा होना) पु० दनु के बेटे, दानव, दैत्य, असुर, राक्षस ।

सं० दन्त (दम्=तोड़ना, वा वश करना) पु० दाँत, ३२ की संख्या।

सं० दन्तच्छद (दन्त=दाँत, छद्=ढकना) पु० होठ, ओंठ, ओष्ठ।

सं० दन्तधावन (दन्त=दाँत, धाव्=धोना) पु० दाँतुन, दँतवन ।

सं० दन्तवेष्टन (दन्त=दाँत, वेष्ट=लपेटना) पु० मस्कुर, मसूढ़ा।

सं० दन्तशठ पु० कैथा, नींबू, नारंगी, करौंदा ।

सं० दन्तालिका (दन्त+आलिका

अलू=भूषण करना, रोंकना) लगाम।

सं० दन्ती (दन्त=दाँत अर्थात् जिसके बड़े दाँत होते हैं) पु० हाथी, हस्ती, गज, गु० दन्तैल, दन्तीला।

प्रा० दन्तीला (सं० दन्तुर, दन्त=दाँत) गु० दाँतवाला, दन्तैल, जिसके बड़े और ऊँचे दाँत हों, शूकर, वृक, सुअर, भेड़िया।

सं० दन्त्य (दन्त) गु० जो दाँतों से बोले जायँ "लृ, लॄ, त, थ, द, ध, न, ल, स" ये अक्षर दन्त्य कहलाते हैं।

प्रा० दन्दनाना क्रि० अ० आराम से रहना, चैन करना, गाजना, विराजना।

प्रा० दपट (दपटना) स्त्री० दौड़, सर्पट, बाग छूट दौड़, घोड़े की बड़ी दौड़।

प्रा० दपटना क्रि० अ० सर्पटजाना, झपटना, दौड़ना, टूट पड़ना, २ डाटना, धमकाना, झिड़कना, घुड़कना।

प्रा० दबकना क्रि० अ० छिपरहना, लुकजाना, घात में बैठना, २ डर जाना।

प्रा० दबकजाना } दबकरहना } बोल० छिप रहना, लुक रहना, जी छिपाना, जी चुराना।

प्रा० दबंग गु० कुशील, कुढंग, धृष्ट, मूढ़, निठुर, गँवार, जड़, मूर्ख, गधा, पशु।

प्रा० दबना क्रि० अ० झुकना, नवना, चपना, सिकुड़ना, २ आधीन होना, डरना, ३ लजाना, ४ छिपरहना, दबकना।

प्रा० दबचलना } दबनिकलना } बोल० वश होना, आधीन होना, डर जाना।

प्रा० दबजाना बोल० चलाजाना, हटजाना, पीछे फिरना, हारजाना।

प्रा० दबमरना बोल० कुचल जाना, चूर चूर होना।

प्रा० दबेपाँव बोल० धीमें, धीरे, हौले।

प्रा० दाबना (दबना) क्रि० स० दाबना, चापना, जीतना, २ तंग करना, ३ ज़बरदस्ती से कराना, ४ डाटना, झिड़कना, ५ रोकना, थाँमना, ६ नीचा करना, झुकाना, नवाना, ७ छिपाना, ८ जीतना, हराना, पराजय करना।

प्रा० दबामरना बोल० कुचल डालना, चूर चूर करना, २ हराना, जीतना।

प्रा० दबालेना बोल० चढ़जाना, चढ़ाई करना, धावा करना।

प्रा० दबाव (दबाना) पु० दाब, चाँप, २ ज़ोर, पराक्रम, अधिकार, ३ आधीनता।

प्रा० दबावमानना बोल० धाक

मानना, डरना, अदब करना ।

प्रा० दबैल (दबना) आधीन, वश में, पु० प्रजा, रइयत ।

प्रा० दबोचना क्रि० स० दबा डालना, दाबना ।

सं० दम (दम्=वश करना, वा शान्त करना) पु० इन्द्रियों को वश में करना, इन्द्रियों की इच्छा को रोकना, २ ताड़ना, सज़ा, ३ वश करना ।

सं० दमक (दम् + अक) क० पु० वश करनेवाला, रोकनेवाला ।

प्रा० दमक (दमकना) स्त्री० चमक, झलक, शोभा, भड़क ।

सं० दमघोष पु० शिशुपाल का पिता, चँदेरी का राजा ।

प्रा० दमकना क्रि० अ० चमकना, झलकना ।

प्रा० दमकना पु० आग बुझाने की कल ।

प्रा० दमड़ा (सं० द्रम्म) पु० धन, दौलत, विभव, सम्पत्ति ।

प्रा० दमड़ी (सं० द्रम्म) स्त्री० पैसे का आठवाँभाग ।

प्रा० दमड़ीके तीन तीन होना बोल० उजड़ना, नष्ट होना, सत्यानाश होना, बरबाद होना ।

सं० दमन (दम्=वश करना, वा शान्त करना) पु० वश करना, नाश करना, २ एक फूल का नाम ।

सं० दमनीय (दम् + अनीय) कर्म० पु० दाबने के लायक़, तोड़ने योग्य ।

सं० दमयन्ती (दम्=वश करना) स्त्री० नल राजा की पत्नी, विदर्भ देश के राजा भीमसेन की बेटी ।

फ़ा० दमामा पु० नगारा, धौंसा, डङ्का ।

सं० दमी (दम् + ई) क० पु० योगी, इन्द्रियजित् ।

सं० दम्पति (जाया=पत्नी, पति= भर्त्तार, यहाँ जाया को दम् आदेश होजाता है) पु० स्त्री पुरुष, जोड़ा, जायापति ।

सं० दम्भ (दम्भ्=छल करना) पु० पाखण्ड, कपट, छल, २ घमण्ड, दर्प, अहंकार, जवान बैल ।

सं० दम्भी (दम्भ) गु० पाखण्डी, कपटी, छली, २ घमण्डी, अभिमानी ।

सं० दया (दय्=देना, पालना) स्त्री० कृपा, करुणा, किसी के दुःख दूर करने की इच्छा, मेहरबानी, रहम ।

सं० दयायुत (दया=कृपा, युत= मिला हुआ) गु० दयालु, कृपालु, दया करनेवाला ।

प्रा० दयाल (सं० दयालु) गु० कृपालु ।

प्रा० दयावन्त } (दया=कृपा, वत्
सं० दयावान् } =वाला) गु० कृपालु, दयालु ।

सं० दयित पु० प्रिय, पति, ख़ाविंद ।

सं० दयिता (दय्=देना वा पालना) स्त्री० पत्नी, भार्या, स्त्री, प्रिया, प्यारी ।

सं० दर (दृ=फाड़ना वा डरना) पु० छेद, गुफा, खोह, खड्डा, २ डर, ३ शङ्ख, गु० थोड़ा ।

प्रा० दर पु० मोल, भाव, दाम ।

सं० दरद पु० म्लेच्छजाति, २ भयानक, भय, ३ हिंगुल, हींग, ४ शिंगरफ़, मुर्दाशङ्ख, पारा, स्त्री० पीड़ा, त्रास, भय ।

फ़ा० दरबार पु० कचहरी, सभा ।

प्रा० दरदरा गु० मोटा पीसा हुआ, दलिया, अधपीसा ।

प्रा० दरस (सं० दर्श) पु० दर्शन, देखना, दीठ ।

सं० दरा / दरी (दृ=फाड़ना) स्त्री० गुफा, खोह, कन्दरा ।

प्रा० दराँती (सं० दात्र, दा=टुकड़े करना) स्त्री० हँसुवा, हँसिया ।

प्रा० दरार (सं० दृ=फाड़ना) स्त्री० फटी हुई जगह, दरज, शिगाफ़, चीर, फटा, दरका, फाड़ ।

सं० दरिद्र (दरिद्रा=दुर्दशा होना) गु० कङ्गाल, निर्धन, रङ्क, दीन, दुःखी, ग़रीब, मुफ़लिस ।

सं० दरिद्रता (दरिद्र) भा० स्त्री० कङ्गालपन, निर्धनता, ग़रीबी, दीनता, दुःख, दुर्दशा ।

प्रा० दरिद्री (सं० दरिद्र) गु० कङ्गाल, निर्धन, दीन, दुःखी, ग़रीब, दरिद्र ।

सं० दर्दुर (दु=दुःख देना (कानों को शब्द करके) वा दृ=फाड़ना) पु० दादुर, मेंडक, बेंग, भेक, २ मेघ, ३ एक बाजे का नाम, ४ एक पहाड़ का नाम ।

सं० दर्प (दृप्=घमण्ड करना) पु० घमण्ड, अभिमान, अहंकार, दाप, ग़रूर ।

सं० दर्पण (दृप्=चमकना) पु० काच, आईना, आरसी, मुकुर ।

सं० दर्पित क० पु० अहंकारी, घमण्डी, मग़रूर ।

सं० दर्वी (दृ=फाड़ना) क० स्त्री० कलछुली, कर्छी, चमची, डोई ।

सं० दर्भ (दृभ्=गाथना, बाँधना) पु० डाभ, कुशा, एक प्रकार की घास ।

प्रा० दर्राना क्रि० अ० निधड़क और बिनठहरे सीधा चलाजाना ।

सं० दर्श (दृश्=देखना) पु० दर्शन, देखना, दृष्टि, २ अमावस्या जिस दिन चाँद और सूर्य एक जगह देखे जाते हैं ।

सं० दर्शक (दृश्=देखना) क० पु० दिखानेवाला, पु० द्वारपाल, पौरिया ।

सं० दर्शन (दृश्=देखना) भा० पु०

देखना, दृष्टि, दीठ, २ भेंट, एक दूसरे को देखना, ३ रूप, आकार, दिखाव, ४ आँख, ५ सपना, ६ दर्पण, ७ न्याय आदि छः शास्त्र, (१ न्याय-इसका आचार्य गौतम-ऋषि, २ वैशेषिक-इसका आचार्य कणाद मुनि, यह बहुत बातों में न्याय से मिलताहै और बहुतमें नहीं मिलता, ३ मीमांसा-इसका आचार्य जैमिनिऋषि, इसमें यज्ञ,व्रत,तप, दान, और वेद पढ़ना आदि कर्मोंके करने से मुक्ति पाना लिखा है, ४ वेदान्त-इसका आचार्य व्यासदेव, ५ सांख्य-इसका आचार्य कपिलमुनि इस मतके माननेवाले सृष्टि का कोई कर्त्ता नहीं मानते और कहते हैं क्रि संसार नित्य है और कोई इसका बनानेवाला नहीं है, ६ पातञ्जल-इसका आचार्य पतञ्जलिमुनि, यह और सब बातों से सांख्यसे मिलताहै परसांख्यवाले सृष्टिका कोई कर्त्ता नहीं मानते, और इसमें ईश्वर को सृष्टि का कर्त्ता माना है)।

प्रा० **दर्शनी** (सं० दर्शनीय=देखने योग्य) स्त्री० वह हुंडी जो देखनेही से पट जाय, २ भेंट, चढ़ावा, गु० सुन्दर, सुडौल, रूपवान्, मनोहर, देखने योग्य ।

सं० **दर्शनप्रतिभू** पु० हाज़िर ज़ामिनी ।

सं० **दर्शन्त** भा० पु० देखना, देख पड़ना ।

सं० **दल** (दल्=फाड़ना वा टुकड़े २ करना) पु० वृक्ष का पत्ता, २ बड़ी सेना, ३ ढेर, समूह, ४ खण्ड, टुकड़ा, ५ कीचड़, ६ आधा, दलदार, गु० मोटा, गाढ़ा ।

प्रा० **दलक** (दलकना) स्त्री० चमक, झलक ।

प्रा० **दलकना** क्रि० अ० चमकना, झलकना, झझकना, थरथराना।

प्रा० **दलदल** (सं० दल=कीचड़) पु० कीचड़, पाँका, काँदौ, धसान, धसाव, पङ्क ।

सं० **दलन** (दल्=टुकड़े करना) भा० पु० टुकड़े २ करना, मर्दन, नाश, गु० नाश करनेवाला, टुकड़े करनेवाला, मर्दन करनेवाला ।

प्रा० **दलना** (सं० दलन) क्रि० स० मोटा पीसना, भुरभुराना, दो टूक करना (जैसे दाल को)।

सं० **दलनी** स्त्री० दुर्मुट, लोह की मुगरी, लोह का मुगदर ।

प्रा० **दलबादल** (सं० दलवारिद, दल=सेना वा समूह, वारिद=बादल) पु० बादलों की सेना, बादलों का समूह, २ बड़ी सेना, ३ बड़ा डेरा ।

प्रा० **दलमलना** } (सं० दलन)
दलमसलकरना } क्रि० स० पीस

डालना, मींजना, तोड़ डालना, मर्दन करना ।

सं० दलित (दल्=इत) कर्म० पु० मर्दित, रौंदा गया, फाड़ागया ।

प्रा० दलिद्र (सं० दारिद्र) भा० पु० कङ्गालपन, निर्धनता, ग़रीबी, दीनता, दुःख, दुर्दशा ।

प्रा० दलिद्री (सं० दारिद्री) गु० कङ्गाल, निर्धन, दीन, दुःखी, ग़रीब ।

प्रा० दलिया(सं० द्वि + दल, द्वि= दो दल=टुकड़ा) पु० दलाहुआ अनाज ।

प्रा० दलैंती (सं० दलयती) स्त्री० चक्की, जाँती ।

सं० दव (दु=जलना, वा पीड़ा होना) पु० वन, जंगल, २ जंगल की आग, ३ पीड़ा, दुःख ।

सं० दवाग्नि (दव + अग्नि) स्त्री० वन की आग ।

प्रा० दवारी (सं० दावानल) स्त्री० वन की आग ।

सं० दविष्ठ पु० वहुत दूर ।

सं० दवीयस पु० दूर ।

सं० दश गु० दश, पाँच के दूने, काटना, अञ्चल ।

सं० दशकण्ठ (दश + कण्ठ) पु० रावण, दशकन्धर, दशानन ।

सं० दशकन्धर (दश + कन्धर) पु० रावण ।

सं० दशग्रीव (दश + ग्रीवा) पु० रावण ।

सं० दशन (दंश्=काटना) पु० दाँत, दन्त, २ कवच, ३ शिखर ।

सं० दशम (दश) गु० दशवां ।

सं० दशमहाविद्या (दश, दस महाविद्या=महामाया) स्त्री० दस प्रकार की दुर्गा, जैसे १ काली, २ तारा, ३ षोडशी, ४ भुवनेश्वरी, ५ भैरवी, ६ छिन्नमस्ता, ७ धूमावती, ८ बगला, ९ मातङ्गी, १० कमला ।

सं० दशमलव (दशम + लव) पु० दशमांश, दशवां हिस्सा, कसूर अशारिया ।

सं० दशमी (दशम) स्त्री० दशवीं तिथि ।

सं० दशमुख (दश + मुख) पु० रावण ।

सं० दशमुखान्तक (दशमुख=रावण, अन्तक=नाश करनेवाला) पु० श्रीरामचन्द्र ।

सं० दशरथ (दश (दसों दिशा में) रथ (रथ की गति है जिसकी) अर्थात् जिसने दसों दिशा को जीत लिया) पु० अयोध्या का राजा और श्रीरामचन्द्र का वाप ।

प्रा० दशशीस (सं० दश=दस, शीर्ष=शिर) पु० रावण, दशकन्धर, दशानन ।

सं० दशहरा (दश दशजन्मके पाप, हृ=हरना) पु० जेठ सुदी दशमी जो गङ्गा का जन्मदिन है, इस दिन जो कोई गङ्गा में नहाता है उसके दश जन्म के अथवा दश प्रकार के पाप दूर होजाते हैं, २ (दश(दशमुख)रावण, हृ=नाश करना) कुंवार सुदी दशमी जिस दिन रामचन्द्र रावण को मारने के लिये चढ़े थे इस लिये इस को विजयदशमी भी कहते हैं ।

सं० दशा (दंश्=काटना, विभाग करना) स्त्री० अवस्था, हालत, गति, दशा दशप्रकार की हैं १ गर्भवास, २ जन्म, ३ बालकपन, ४ लड़कपन, ५ किशोर, ६ जवानी, ७ अधबुढ़ापा, ८ बुढ़ापा, ९ प्राणरोध अर्थात् मरने के समय की अवस्था, १० नाश वा मरना ।

सं० दशांश (दश+अंश) पु०दशवां भाग, दशवां हिस्सा ।

सं० दशानन (दश+आनन)पु० रावण, दशमुख, दशकण्ठ, दशकन्धर, दशग्रीव, दशशीस ।

प्रा० दस (सं० दश) गु० पाँच का दूना ।

प्रा० दशहरा पु० दशहरा शब्द को देखो ।

प्रा० दसोंद्वार (सं०दशद्वार) पु० व०व० शरीर के दश रस्ते, २आँखें, २ कान, २ नाकके नथुना, सातवां मुँह, आठवां लिङ्ग इन्द्रिय, नववां गुदा, दशवां ब्रह्माण्ड अर्थात् शिर का बिचला भाग, संस्कृत और हिन्दी के वहुत से ग्रन्थों में नौ द्वारही लिखे हैं वहाँ दशवाँ द्वार ब्रह्माण्ड नहीं माना है, नवद्वार शब्दको देखो ।

प्रा० दशोंधी पु० भाट, राय, स्तावक, प्रशंसक ।

सं० दस्यु (दस=देखना, चुराना) पु० शत्रु, चोर, तस्कर, ३ अग्नि, ४ खल, ५ बड़ा साहसी, ६ लुटेरा।

सं० दस्र पु० अश्विनीकुमार, गधा, पशु स्त्री० अश्विनीनक्षत्र ।

प्रा० दह (सं० ह्रद) पु० बहुत गहरा पानी, गहराव, भँवर, (जैसे कालीदह) ।

प्रा० दहकना (सं० दहन) क्रि० अ० जलना, २ खेद करना ।

प्रा० दहड़दहड़ (सं०दहन) क्रि० वि० बल से, ज़ोर से, वेग से, प्रचण्डता से ।

प्रा० दहड़दहड़जलना बोल० बहुत वेग से जलना, बहुत ज़ोर से आग का लहकना ।

सं० दहन (दह्=जलाना)भा०पु० आग, अग्नि, आगी, २ जलाना, जलन, दाह, ३ चित्रक वृक्ष, गु० जलानेवाला ।

प्रा० दहना (सं० दहन) क्रि० अ० जलना।

प्रा० दहना } (सं० दक्षिण) गु०
दहिना } दाहिना, दक्षिण।

सं० दहर (दह्=जलाना) पु० सूक्ष्म, ह्रस्व, २ बालक, ३ मूषक, चूहा, ४ छोटा भाई, ५ बहन, ६ हृदय, आकाश।

प्रा० दहलना क्रि० अ० काँपना, डरना।

प्रा० दहाड़ना क्रि० अ० गरजना।

प्रा० दहाना (सं० दहन) क्रि० स० जलाना, २ बोराबन्दी।

प्रा० दही (सं० दधि) पु० जमा हुआ दूध।

प्रा० दहेंड़ी (सं० दधि=हण्डी) स्त्री० दही की हाँडी।

प्रा० दाई (सं० दायक) कृ० पु० देनेवाला, (जैसे सुखदाई)।

प्रा० दाई (फ़ा० दायह) स्त्री० धाय, दूध पिलानेवाली, २ दाई, जनाई, ३ दासी, चकरानी, लौंड़ी।

प्रा० दाऊ पु० बड़ा भाई, २ बाप, ३ बलदेवजी का नाम।

प्रा० दाऊदी (अरबी दावदी) स्त्री० एक झाड़ का अथवा उसके फूल का नाम, २ एक तरह की आतशबाज़ी, ३ सफ़ेदी।

प्रा० दाँड (सं० दण्ड) पु० सज़ा, ताड़ना, दण्ड, जुर्माना, २ घटी, ३ डाँड।

प्रा० दाँत (सं० दन्त) पु० दन्त, दशन, रदन।

प्रा० दाँतउँगलीकाटना बोल० अचम्भे में आकर दाँतों से उँगली काटना, अचरज करना, विस्मय करना।

प्रा० दाँत कचकचाना बोल० खीस निकालना, खिसियाना, दाँत पीसना।

प्रा० दाँतकटकटाना बोल० दाँत पीसना, किचकिचाना।

प्रा० दाँतकाटीरोटीखाना बोल० किसीका जीसे मित्र होना, दिली-दोस्त होना, पक्की मिताई होना।

प्रा० दाँतखट्टे करना बोल० मन तोड़ना, मन मारना, हरा देना, बे हिम्मत करना, सताना, क्रोधित करना।

प्रा० दाँततलेउँगलीदबाना वा काटना बोल० हका बका रह जाना, भैचक रहना, अचम्भे में होना, मुतहैयर होना।

प्रा० दाँतनिकालना बोल० हँसना, मुसकुराना, २ अपनी अयोग्यता और बेबशी जतलाना, अथवा मानना।

प्रा० दाँतपरचढ़ाना बोल० किसी की भलाई अथवा नामवरी को मिटाना, कलङ्क लगाना।

प्रा० दाँतपीसना बोल० दाँत कड़कड़ाना, खिसियाना, दाँत कचकचाना, कटकटाना, क्रोध करना, खीस निकालना ।

प्रा० दाँतबजना या बाजना बोल० टेंटें करना, चेंचें करना, बकबक करना, झगड़ना ।

प्रा० दाँतरखना, या होना किसी पर बोल० किसी वस्तु को बहुत ही बहुत चाहना, २ अवज्ञा करना, तुच्छ जानना ।

प्रा० दाँतुन (सं० दन्तधावन) पु० दतवन, दतून ।

प्रा० दाँताकिलकिल (सं० दन्तकिलकिला) स्त्री० झगड़ा, लड़ाई ।

प्रा० दाँव पु० घात, जाल, पेंच, २ अवसर, मौक़ा, गौं, बारी, समय, ३ कुश्ती में पेंच ।

प्रा० दाँवचलना बोल० वररहना, जीतना, सरस होना, बढ़ चलना, दाल गलना ।

प्रा० दाँवचलाना बोल० क़ाबू चलाना, गौं पाना, चोट करना ।

प्रा० दाँवपकड़ना बोल० कुश्ती करना, कुश्तीलड़ना, पेंच करना, दाँव करना ।

प्रा० दाँवबैठना बोल० घात में बैठना, दबकना ।

सं० दाक्षायणी स्त्री० सती, पार्वती, अश्विन्यादि नक्षत्र, दन्तीवृक्ष, जमालगोटा का वृक्ष ।

सं० दाक्षाय्य पु० गृद्धपक्षी ।

सं० दाक्षिण भा० पु० कथन, उपाय, अधिकार, दक्षिण देशीय ।

सं० दाक्षिणात्य पु० नारियलवृक्ष, दाक्षिणीय ।

सं० दाक्षिण्य भा० पु० उदारता, होशियार, मददगार, अनुकूल ।

प्रा० दाख (सं० द्राक्षा) स्त्री० अंगूर, मुनक्का, किशमिश ।

प्रा० दाग़ (फ़ा० दाग़ और सं० दग्ध) पु० चिह्न, कलङ्क, दोष, गर्म लोहे से जलने का चिह्न ।

प्रा० दाग़चढ़ाना, या लगाना बोल० कलङ्क लगाना, बदनाम करना ।

प्रा० दाग़देना बोल० गर्म लोहे से चिह्न करना, गुल देना, दागना, जलाना, २ दोष लगाना, कलङ्क लगाना ।

प्रा० दाग़लगना बोल० बदनाम होना, अपकीर्त्ति होना ।

प्रा० दाग़लाना बोल० कलङ्क लगना, तोहमत लगना ।

प्रा० दाग़ना क्रि० दाग़ देना, गुल देना, गर्म लोहे से चिह्न करना, २ बन्दूक़ अथवा तोप छोड़ना ।

सं० दाघ गु० दाह, जलना ।

सं० दाडक पु० दाँत, दाढ़, दंष्ट्रा ।

सं० दाड़िम } (दल्=फटना) स्त्री०
दालिम } अनार ।

प्रा० दाढ़ (सं० दाढ़ा, दा=काटना, दंष्ट्रा, दंश्=काटना) स्त्री० बड़े दाँत, पिछलेदाँत, पीसने के दाँत ।

प्रा० दाढ़ी (सं० दाढ़िका) दाढ़ अर्थात् दाढ़ के पास, स्त्री० ठोढ़ी पर के बाल ।

प्रा० दाढ़ीबनाना या मुड़ाना बोल० हजामत बनाना, ख़तबनाना, क्षौरकराना ।

सं० दाता (दा=देना) क०पु० देने वाला, दानी, उदार, दानशील, दयालु, हितकारी, सख़ी, फ़ैयाज़ ।

प्रा० दातार (सं० दातृ, दा=देना) क० पु० देनेवाला, दाता ।

सं० दात्र (दा=काटना, छेदना) पु० हँसिया, बसूला ।

प्रा० दाद (सं० दद्रु, दद्=रखना, वा दृ=फाड़ना) पु० दिनाय, चकवाई ।

सं० दाद पु० दान, देना ।

प्रा० दादा पु० बाप का बाप, पितामह, २ बड़ा भाई ।

प्रा० दादी स्त्री० बाप की मा ।

प्रा० दादुर (सं० दर्दुर) पु० मेंडक, मिभकुर, बेंग ।

प्रा० दादू पु० एक बड़ा साधु जिसने एक नया मत चलाया जो दादूपन्थ के नाम से प्रसिद्ध है ।

प्रा० दादूपन्थी पु० दादू के धर्म को माननेवाला ।

प्रा० दाधना (सं० दग्ध) क्रि० अ० दग्धना, जलना, दहना ।

सं० दान (दा=देना) पु० देना, त्याग, पुण्यार्थ वा नामके लिये देना, २पुण्य, ख़ैरात, भीख, दक्षिणा, ३ भेंट, समर्पण, अर्पण, ४ गजमद ।

सं० दानपत्र पु० हिबानामा ।

सं० दानव (दनु) पु० दनुके बेटे दनुज, असुर, दैत्य, राक्षस ।

सं० दानशील (दान=देना, शील=स्वभाव) गु० दान करने का जिसका स्वभाव हो, दानी, दाता, उदार ।

सं० दानशौण्ड पु० बड़ादानी, दानशूर, बहुप्रद, बड़ादाता ।

प्रा० दाना (फ़ा० दाना) पु० अनाज, अन्न, बीज ।

फ़ा० दाना गु० बुद्धिमान्, अक़्लमन्द, ज्ञाता ।

प्रा० दानापानी बोल० अन्नजल, संयोग, पु० खाना पीना ।

सं० दानी (दा=देना) गु० दाता, देनेवाला, उदार, दानशील, पुण्यात्मा, फ़ैयाज़, परोपकारी ।

सं० दान्त (दम्=दबाना) पु० जितेन्द्रिय, तपी ।

सं० दान्ति (दम्=ति) भा० स्त्री० इन्द्रियनिग्रह, दमन, इन्द्रियवश

करना, नफ़सकुशी ।

प्रा० दाबना (दबना) क्रि० स० दबाना, दमन करना, चापना, २ निचोड़ना ।

प्रा० दाबरखना बोल० छिपालेना, चुरालेना, २ पकड़ रखना, दबाउ रखना ।

प्रा० दाप (सं० दर्प) पु० घमण्ड, अभिमान, अहंकार, ग़रूर, शेखी ।

सं० दाम (दामन्, दो=काटना) स्त्री० रस्सी, जेवरी, डोरी, २माला ।

प्रा० दाम पु० एक पैसेका पचीसवां भाग, २ मोल, भाव, क़ीमत ।

सं० दामाञ्चन (दाम + अञ्चन= बाँधना) पु० घोड़े की अगाड़ी पिछाड़ी की रस्सी ।

प्रा० दामिनी (सं० सौदामिनी) स्त्री० बिजली, तड़ित्, कौंधा, बर्क़ ।

सं० दामोदर (दामन्=रस्सी, उदर= पेट अर्थात् जिसके पेट पर रस्सी बाँधी गई हो, श्रीकृष्ण ने एक बार दूध दही के बरतन फोर डालेथे तब उनकी माता यशोदा ने उनके पेट पर रस्सी बाँधी थी तब दामोदर ऐसा नाम हुआ वा दामन्=लोक, उदर=पेट, अर्थात् जिस के पेट में बहुत से लोक हैं जैसे " दामानि लोकनामानि तानि यस्योदरान्तरे । तेन दामोदरो देव ") पु० श्रीकृष्ण का नाम, विष्णु ।

सं० दाम्पत्यमुक्तिपत्र पु० तलाक़नामा, स्त्री और पुरुष के छुड़ौती बोलने का पत्र ।

सं० दाय (दा=देना) पु० बाप दादों का धन, पैत्रिकधन, बपौती, २ दान, ३ दायजा, यौतुक ।

सं० दायक (दा=देना) क० पु० देनेवाला, दानी, दाता, उदार, दानशील ।

प्रा० दायजा (सं० दाय) पु० दहेज़, दैजा, यौतुक ।

सं० दायभाग (दाय + भाग) पु० बाप दादों के धनका हिस्सा, पैत्रिक धन का विभाग, २ एक ग्रन्थ का नाम ।

सं० दायाद (दाय=पैत्रिक धन, आ + दा=लेना) पु० बेटा, पुत्र, २ स्वकुटुम्बी, नातेदार, रिश्तेदार, भाई बन्ध, ३ उत्तराधिकारी, वारिस ।

सं० दार
दारा } (दॄ=फाड़ना, जो भाइयों के सनेह को घटा देती है) स्त्री० भार्या, पत्नी, जोरू, स्त्री, जाया ।

सं० दारक (दॄ=फाड़ना, भेदना) पु० १ बालक, २ सुअर, क० फाड़नेवाला भेदक, काटनेवाला ।

सं० दारकर्म पु० विवाह, ब्याह ।

प्रा० दारचीनी (सं० दारु=लकड़ी, चीनीय=चीनदेश की) स्त्री० दाल-

चीनी, एक पेड़ की मसालेदार छाल।

सं० दारण भा० पु० भेदन, विदारण, कर्तन, काटना।

सं० दारद पु० विषभेद, २ पारा, ३ शिंगरफ, समुद्र।

सं० दारिका (दारक=बालक) स्त्री० बालिका, बेटी, पुत्री, लड़की, कन्या।

प्रा० दारिद (सं० दारिद्र) पु० दरिद्रता, कंगालपन, दीनता।

सं० दारिद्र } (दरिद्रा=दुर्दशा होना)
दारिद्रा } पु० कंगालपन, निर्धनता, ग़रीबी, दीनता, दुःख, दुर्दशा।

सं० दारु (दॄ=फटना वा फाड़ना) स्त्री० लकड़ी, काठ, काष्ठ, २ देवदारु वृक्ष।

सं० दारुक (दॄ=फाड़ना) पु० श्री कृष्ण के सारथी का नाम, २ देवदारु वृक्ष, ३ काठ, लकड़ी, स्त्री० कठपुतली।

सं० दारुगर्भा स्त्री० गुड़िया, पुत्तलिका, कठपुतली।

सं० दारुण (दॄ=फाड़ना, मनको, वा डराना) गु० भयानक, भयंकर, डरावना, विकट, कराल, कठिन, कठोर, पु० भयानकरस, रौद्ररस, २ चित्रक वृक्ष।

सं० दारुहस्तक पु० काष्ठ का चिमचा, काठकी कलछली, करछी।

प्रा० दारू स्त्री० मदिरा, मद, शराब, २ बारूत, बरूद।

प्रा० दारूड़ा } पु० मदिरा, मद,
दारूड़ी } स्त्री० शराब, दारू।

सं० दाल (दल्=टुकड़े करना) स्त्री० दलेहुये मूंग, चने, उड़द, मोठ, मसूर, अरहर आदि, दलहन, दाली।

प्रा० दालगलनी, किसी की बोल० सरस होना, वर रहना, जीतना, गठाव गाँठना, डौल बाँधना, युक्ति करना, काम बनाना।

प्रा० दालिद्र (सं० दारिद्र) भा० पु० कंगालपन, ग़रीबी, निर्धनता, दीनता, दुःख, दुर्दशा।

सं० दाव (दु=जलाना) पु० जंगल, वन, २ वनकी आग, ३ गर्मी, पीड़ा, सन्ताप।

सं० दावन भा० पु० पीड़न, नाशन, दाबना, दबाना।

सं० दावाग्नि } (दाव=जंगल,
दावानल } अग्नि वा अनल=आग) स्त्री० वन की आग, जंगल की आग।

सं० दाश (दाश्=देना जिस को दरमाहा आदि देते हैं) पु० नौकर, सेवक, २ (दश्=काटना, मारना, जो मछलियों को मारता है) मछुवा, धीवर।

सं० दाशरथ (दशरथ) पु० दशरथ राजा के बेटे श्रीरामचन्द्र ।

सं० दाश्व पु० दानी, दाता ।

सं० दास (दास्=देना जो अपनी आत्मा को देता है अथवा जिसको धन आदि देते हैं) पु० नौकर, सेवक, किंकर, टहलुवा, २ शूद्र, ३ शूद्रों का उपनाम ।

सं० दासी (दास) स्त्री० लौंड़ी, बांदी, चेरी, शूद्रा, पीत भण्डी, बेंदी ।

सं० दासेय पु० दासीपुत्र, सेवक, गुलाम ।

सं० दाह } (दह्=जलाना) भा०पु०
दाहन } जलाना, जलन, ताप, राख करना, भुलसाव ।

प्रा० दाहदेना बोल० मुर्दा जलाना ।

सं० दाहक (दह्=जलाना) क०पु० जलानेवाला, पु० चित्रक वृक्ष ।

प्रा० दाहना (सं० दाहन) क्रि० स० जलाना ।

प्रा० दाहना } (सं० दक्षिण) गु०
दाहिना } दहना, दक्षिण, दहिना ।

सं० दिक्पति } (दिश्=दिशा, पति,
दिक्पाल } राजा, वा पाल=पालनेवाला) पु० दिशाओं के राजा, (श्लोक) " इन्द्रो वह्निः पितृपतिर्नैर्ऋतो वरुणो मरुत् । कुबेर ईशः पतयः पूर्वादीनां दिशां क्रमात्" जैसे १ पूर्व का इन्द्र, २ अग्निकोण का अग्नि, ३ दक्षिण का यमराज, ४ नैर्ऋत्यकोण का नैर्ऋत, ५ पश्चिम का वरुण, ६ वायव्यकोण का पवन, ७ उत्तर का कुबेर, ८ ईशानकोण का महादेव, ९ ऊपर की दिशा का ब्रह्मा, १० नीचे की दिशा का अनन्त वा विष्णु—अथवा (श्लोक) " सूर्यः शुक्रः क्षमापुत्रः सैंहिकेयः शनिः शशी । सौम्यस्त्रिदशमन्त्री च पूर्वादीनामधीश्वराः " १ जैसे पूर्व का दिक्पति सूर्य, २ अग्निकोण का शुक्र, ३ दक्षिण का मङ्गल, ४ नैर्ऋतकोण का राहु, ५ पश्चिम का शनैश्चर, ६ वायव्यकोण का चन्द्रमा, ७ उत्तर का बुध, ८ ईशान कोण का बृहस्पति कहलाता है ।

सं० दिक्शूल } (दिश् वा दिशा=
दिशाशूल } ओर, शूल=कांटा, वा दुःख) पु० वह दिशा जिस तरफ़ किसी विशेष दिन को यात्रा करना अशुभ है (श्लोक) "शनौ चन्द्रे त्यजेत्पूर्वां दक्षिणाख्यां दिशं गुरौ । रवौ शुक्रे पश्चिमां च बुधे भौमे तथोत्तराम् " जैसे शनैश्चर और सोमवार को पूर्व में, बृहस्पति को दक्षिण में, रविवार और शुक्र

वार को पश्चिम में, बुधवार और मङ्गलवार को उत्तर में दिशाशूल होता है।

प्रा० दिखलाना, दिखाना (देखना) क्रि० स० बताना, बुझाना, बतलाना, समझाना, जताना, प्रकाशकरना, प्रकटकरना, लखाना, बुझाना, दर्शाना।

प्रा० दिखलाईदेना, दिखाईदेना बोल० जान पड़ना, देख पड़ना, मालूम होना।

प्रा० दिखाऊ (दिखाना) गु० देखने योग्य, सुन्दर, सजीला, सुहावना, रूपवान्।

सं० दिगन्त (दिक्+अन्त) पु० दिशाका अन्त।

सं० दिगन्तराल पु० आकाश, आसमान।

सं० दिगम्बर (दिक्=दिशा वा शून्य, अम्बर=कपड़ा, अर्थात् जिस के दिशाही कपड़ा है) गु० नङ्गा, नग्न, वस्त्रहीन, पु० शिव का नाम, २ बौद्धमत का अथवा जैनमत का भिखारी।

सं० दिग्गज (दिक्=दिशा, गज=हाथी) पु० दिशाओं के हाथी, दिग्गज कहाते हैं। वे आठ हैं जैसे कि (श्लोक) "ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः। पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः" १ ऐरावत, २ पुण्डरीक, ३ वामन, ४ कुमुद, ५ अञ्जन, ६ पुष्पदन्त, ७ सार्वभौम, ८ सुप्रतीक।

सं० दिग्ध पु० विषलपेटा बाण, २ अग्नि, ३ स्नेह, ४ लेप, ५ लिप्त।

सं० दिग्विजय (दिक्=दिशा, विजय=जीत) स्त्री० चारों दिशा का जीतना।

प्रा० दिग्गी, दिघी (सं० दीर्घिका, दीर्घ=लम्बा) स्त्री० लम्बा पोखरा, तालाब।

सं० दिति (दो=टुकड़े करना) स्त्री० दैत्यों की मा, दक्षप्रजापति की बेटी और कश्यपमुनि की पत्नी।

सं० दित्सा (दा=देना) भा० स्त्री० दानेच्छा, देनेकी इच्छा।

सं० दिदृक्षा स्त्री० देखनेकी इच्छा।

सं० दिन (दो=नाश करना, अन्धेरा को) पु० दिवस, दिवा, वासर, घस्र।

प्रा० दिनकाटना बोल० दुःख से समय बिताना।

प्रा० दिनको दिन रातको रात न जानना बोल० शोच में अथवा काम में डूब जाना।

प्रा० दिनखुलना बोल० भागजागना, दुःख के दिन चले जाना और सुख के दिन आना, दिन फिरना, बढ़ती होना, फलना फूलना।

प्रा० दिनगँवाना बोल० असाव-

धानीसे अथवा वृथा समय बिताना ।

प्रा० दिनचढ़ना बोल० दिन आना, दिन बढ़ना, २ स्त्रियों के कपड़ों से होने का समय बढ़ जाना ।

प्रा० दिनचढ़ाना बोल० किसी काम को देर से शुरूअ करना ।

प्रा० दिनढलना बोल० दिन घटना, दिन पलटना ।

प्रा० दिनधौले बोल० दिन दोपहर, दिन दिया ।

प्रा० दिनपड़ना बोल० दुःख आना, दुःख पड़ना ।

प्रा० दिनफिरना बोल० क़िस्मत खुलना, भाग जागना, बढ़ती होना, फलना, फूलना ।

प्रा० दिनबदिन } बोल० हर एक
दिनदिन } दिन, प्रत्येक दिन, प्रतिदिन ।

प्रा० दिनभरना बोल० दुःख और कष्ट में समय बिताना ।

प्रा० दिनमुँदना बोल० दिन छिपना, सूर्य अस्त होना, सूर्य छिपना ।

सं० दिनकर (दिन, कर=करनेवाला, कृ=करना, वा कर=किरण जिसकी किरण दिन में दिखाई देती है) पु० सूर्य, रवि ।

सं० दिनमणि (दिन + मणि) पु० सूर्य ।

सं० दिनमान (दिन, मान=मापना) पु० दिनका नाप, दिनका परिमाण ।

प्रा० दिनमुख पु० प्रातःकाल, प्रभात ।

प्रा० दिनाई स्त्री० दाद ।

सं० दिनान्त (दिन + अन्त) पु० दिनका पूरा होना, सांझ, सन्ध्या, सायंकाल, शाम होना ।

सं० दिनेश (दिन + ईश) पु० सूर्य, दिनकर, दिनपति ।

प्रा० दिया (सं० दीप) पु० दीवा, दीपक, चिराग़, २ (देना) क्रि० स० देना, देदिया ।

सं० दिलीप पु० रघुराजा का पिता ।

सं० दिव (दिव्=खेलना, चमकना, चाहना) पु० स्वर्ग, आकाश ।

सं० दिवस } (दिव्=खेलना, चम-
दिवा } कना वा व्यवहार करना) पु० दिन, बासर, रोज़ ।

सं० दिवाकर (दिवा=दिन, कर=करनेवाला) पु० सूर्य, भानु, रवि, दिनेश, दिनकर ।

सं० दिवान्ध (दिवा=दिन, अन्ध=अन्धा) गु० दिन में अन्धा, पु० उल्लू, २ चिमगादर ।

प्रा० दिवाला पु० ऋण चुकाने की असमर्थता, कोठी अथवा दुकान का बिगड़ना ।

प्रा० दिवाली (सं० दीपावलि, दीप=दिया, अवलि=पांत) स्त्री० दीपमालिका, कातिक में एक तिवहार ।

सं० दिविषद् (दिव्=स्वर्ग, षद् प्रकाश करना) पु० देवता, अमर।

सं० दिवौकस (दिव्=स्वर्ग, आकाश +ओकस्=आश्रय) पु० देवता, अमर, चातक, पपीहा ।

सं० दिव्य (दिव्=स्वर्ग, दिव्=चमकना) गु० स्वर्ग का, स्वर्गीय, २ सुन्दर, मनोहर, स्वच्छ, मनभावन, पु० शपथ, गूगुल, जौ ।

सं० दिव्यदृष्टि (दिव्य + दृष्टि) स्त्री० चमत्कारी ज्ञान, अलौकिक ज्ञान, ऐसी नज़र जिससे सब जगह की चीज़ें देख सकें ।

सं० दिश् दिशा (दिश्=देना, व दिखलाना) स्त्री० तरफ़, ओर, दिशा दश हैं, १ ऊपर, २ नीचे, ३ पूर्व, ४ अग्निकोण, ५ दक्षिण, ६ नैर्ऋत्यकोण, ७ पश्चिम, ८ वायव्यकोण, ९ उत्तर, १० ईशानकोण, दन्तक्षत, ईषत्, अलम् ।

प्रा० दिसावर (सं० देश) पु० देश, विलायत, परदेश, मुल्क ।

प्रा० दिसावरी (दिसावर) पु० एक तरह के पान, गु० दिसावर का (माल आदि) ।

प्रा० दिहरा देहरा (सं० देवगृह) पु० देवता का मन्दिर ।

प्रा० दिहली (सं० देहली) स्त्री० दोनों किवाड़ों के बीच का काठ दहलीज़, २ फाटक, द्वार, डेवढ़ी, नाम शहर का ।

सं० दीक्षक (दीक्ष् + अक, दीक्ष्= मन्त्र देना) क० पु० मन्त्रदाता, गुरु।

सं० दीक्षा (दीक्ष्=यज्ञ करना, मन्त्र देना) स्त्री० गुरुसे मन्त्रलेना, गुरुमुख होना, मन्त्र उपदेश, २ यज्ञ, याग ।

सं० दीक्षित (दीक्ष्=यज्ञ करना, मन्त्रदेना) पु० मन्त्र देनेवाला, गुरुयज्ञ करनेवाला, कर्म० मन्त्रलिया हुआ ।

प्रा० दीखना (सं० दृश्=देखना) क्रि० अ० देख पड़ना, दिखलाई देना ।

प्रा० दीठ (सं० दृष्टि) स्त्री० दृष्टि, ताक, दर्शन, नज़र ।

सं० दीधिति स्त्री० किरण, मरीचि, रश्मि ।

सं० दीन (दी=नाश होना) गु० कंगाल, निर्धन, दरिद्र, दुःखी, ग़रीब, दुखिया, २ आधीन, नम्र, विनीत ।

सं० दीनता (दीन) भा० स्त्री० ग़रीबी, कंगलापन, २ आधीनता, नम्रता ।

सं० दीनदयालु (दीन+दयालु) गु० ग़रीबों पर दया करनेवाला, भक्तों पर कृपा करनेवाला, ईश्वर का नाम ।

सं० दीनबन्धु (दीन + बन्धु) पु० ग़रीबोंके अथवा भक्तोंके भाई अथवा मित्र, ईश्वर का नाम ।

प्रा० दीनानाथ (सं० दीननाथ) पु० ग़रीबों के अथवा भक्तों के स्वामी, ईश्वर का नाम ।

सं० दीनार (दी=नाश होना) पु० सोने का एक सिक्का, २ सोने का एक तौल, सुवर्णकर्ष, निष्कपरिमित (अशर्फ़ी) ।

सं० दीप (दीप्=चमकना) पु० दिया, दीवा, दीपक, चिराग़ ।

प्रा० दीप (सं० दीप) पु० द्वीप शब्द को देखो ।

सं० दीपक (दीप्=चमकना) पु० दिया, दीवा, दीप, चिराग़, २ एक राग का नाम, ३ एक अलंकार का नाम, गु० चमकीला, दीप्तिमान् ।

सं० दीपमालिका (दीप=दिया, मालिका=पांत) दिवाली, एक तिवहार का नाम ।

सं० दीप्त (दीप्=चमकना) गु० प्रकाशित, चमकीला, प्रज्वलित, पु० सोना ।

सं० दीप्ति (दीप्=चमकना) स्त्री० चमक, प्रकाश, झलक, तेज, शोभा ।

सं० दीप्तिमान् (दीप्ति=तेज, चमक, मान्=वाला) गु० तेजस्वी, प्रतापी, शोभावान्, शोभायमान ।

सं० दीप्यमान (दीप्य + म्=आन) प्रकाशता हुआ, चमकता हुआ, शोभायमान ।

प्रा० दीमक (फ़ा० दीवक) स्त्री० दीयां, बल्मीक, एक प्रकार की सफ़ेद चिउँटी ।

सं० दीर्घ (दृह्=बढ़ना, वा दृ=फाड़ना, वा डराना) गु० लम्बा, बड़ा, ऊंचा, पु० द्विमात्रिकस्वर, २ सालवृक्ष ।

सं० दीर्घग्रीव (दीर्घ=लम्बी, ग्रीवा =गरदन) पु० ऊँट, लम्बी गरदनवाला ।

सं० दीर्घजङ्घ पु० सारसपक्षी, ऊँट ।

सं० दीर्घजीवी (दीर्घ=लम्बा अर्थात् बहुत दिनोंतक, जीवी=जीनेवाला) दीर्घायु ।

सं० दीर्घदर्शी (दृश्=देखना) क० पु० दूरदर्शी, विवेकी ।

सं० दीर्घरोमन् पु० भालू, रीछ ।

सं० दीर्घवक्त्र (दीर्घ=बड़ा, वक्त्र=मुख) पु० हस्ती, हाथी ।

सं० दीर्घसूत्री (दीर्घ=लम्बा अर्थात् बहुत देर से, सूत्र=चाहे हुए काम को करना) गु० आलसी, सुस्त, हर एक काम में देरी करनेवाला, धीमा, शिथिल ।

सं० दीर्घायुः (दीर्घ=लम्बी, आयुष्=उमर) गु० चिरंजीवी, दीर्घजीवी, बहुत दिनोंतक जीनेवाला, पु० कौवा, २ सेमल का वृक्ष, ३ मार्कण्डेय ऋषि ।

प्रा० दीवा (सं० दीप) पु० दीपक, दिया, चिराग़।

प्रा० दीसना (सं० दृश्=देखना) क्रि० अ० दीखना, दिखाई देना, देख पड़ना, सूझना, प्रकट होना।

प्रा० दुख
सं० दुःख } (दुःख=दुखकरना) पु० पीड़ा, कष्ट, कलेश, तकलीफ़, व्यथा, आपदा, विपदा।

प्रा० दुखका मारा बोल० दुखी, दुखारी।

सं० दुःखद (दुःख+द, दा=देना) दुःखदाता, दुख देनेवाला।

प्रा० दुखपाना बोल० कुढ़ना, कलपना, दुखभरना, दुखी होना।

प्रा० दुखभरना बोल० परिश्रम करना, दुखपाना, दुखी होना।

प्रा० दुखड़ा (सं० दुःख) पु० दुख, आपदा, अभाग, दुर्गति, तकलीफ़।

प्रा० दुखदाई (सं० दुःखदायी) क० पु० दुख देनेवाला।

प्रा० दुखना (सं० दुःखन, दुःख=दुख पाना) क्रि० अ० पिराना, दर्द होना, पीड़ा होना, कलेश होना, जलना, चरपराना।

सं० दुःखसागर (दुःख+सागर) पु० दुख का समुन्दर, बड़ा भारी दुख, २ संसार, दुनिया।

सं० दुःशील (दुः=बुरा, शील=स्वभाव) गु० दुष्टस्वभाव, बदमिज़ाज।

प्रा० दुखाना (दुखना) क्रि० स० दुख देना, सताना, पीड़ा देना, कलपाना।

प्रा० दुखारी
दुखियारी
दुखिया
दुखियारा } (सं० दुःखी) गु० दुखी, दरिद्री, कंगाल, पीड़ित, उदास।

सं० दुःखावह (दुःख+वह्=भोगना) क० पु० दुखिया, दुःखित, तकलीफ़ उठानेवाला।

सं० दुःखित (दुःख) गु० दुखी, दुखियारी, दुखिया, पीड़ित।

सं० दुःखी (दुःख) गु० दुःखित।

सं० दुःशासन (दुर्=दुखसे, शास्=सिखाना) पु० धृतराष्ट्र राजाका बेटा और दुर्योधन का छोटा भाई।

सं० दुःसह (दुर्=दुखसे, सह=सहना) गु० जो दुखसे सहाजाय, असह्य, बहुत कठिन, नहीं सहने योग्य।

प्रा० दुकड़ा (सं० द्वि=दो) पु० दो दमड़ी, छदाम, पैसे का चौथा भाग।

प्रा० दुकान (फ़ा० दूकान) पु० हाट, सौदा रखने बेचने की जगह।

सं० दुकूल पु० कपड़ा, वस्त्र, रेशमी कपड़ा, महीन कपड़ा।

प्रा० दुगुन (सं० द्विगुण) पु० दूनी, राग।

प्रा० दुगुना (सं० द्विगुण, द्वि=दो, गुण=गुनाहुआ) गु० दूना, दोगुना।

सं० दुग्ध (दुह्=दुहना) कर्म० पु० दूध, क्षीर, पय।

प्रा० दुचित } दुचिता } (सं०द्विचित्त, द्वि=दो, चित्त=मन) गु० जिस को दुबिधा लगी हो, दोमना, दुबधैल, व्याकुल।

प्रा० दुत (सं० दूर वा दुर्) वि० बो० दूर हो, परे जा, निकल भाग, चला जा।

प्रा० दुतकार, पु० **दुतकारी,** स्त्री० } झिड़की, घुरकी, ताड़ना, दुतकारना, डाटना, झिड़कना, घुरकना।

प्रा० दुतदबक्क बोल० झिड़की, घुरकी, डाट।

प्रा० दुत } दुति } (सं० द्युति) स्त्री० चमक, चटक, भड़क, सुन्दरता, प्रकाश।

प्रा० दुधार } दुधैल } (दूध) गु० दूधदेने वाली, दुधारी।

सं० दुन्दुभि (दुन्दु ऐसे शब्द से, उभ्=भरना) पु० धौंसा, नगाड़ा, डङ्का, भेरी, २ वरुण, ३ एक राक्षस जिसको वालि ने मारा।

प्रा० दुपट्टा (सं०द्वि=दो, पट=कपड़ा) पु० दो पाट का कपड़ा जिसको दोनों कांधों पर डालते हैं, बहुत बार एक पाटके कपड़े को भी दुपट्टा बोलते हैं।

प्रा० दुपट्टातानकेसोना बोल० असावधानी से अथवा वेफ़िक्र होके सोरहना।

प्रा० दुपट्टाहिलाना वा फिराना बोल० सन्धि के लिये मोहलत या अवकाश चाहने के लिये झण्डा हिलाना, क़िला या गढ़ वैरी को सौंप देना।

प्रा० दुपहरिया (दोपहर) पु० एक प्रकार का फूल, मध्याह्नपुष्प, गु० दोपहर का।

प्रा० दुबिधा (सं० द्वैविध्य, द्वि=दो, विध=प्रकार) स्त्री० सन्देह, खटका, दुचिताई, पसोपेश, संकल्प-विकल्प।

प्रा० दुबला (सं० दुर्बल) गु० कमज़ोर, दूबर, निर्बल, २ पतला, कृश, क्षीण।

प्रा० दुभाषिया (सं० द्वि=दो, भाषा=बोली) क० पु० दोनों ओर की बोली समझाने वाला, एक बोली से उलथा करके दूसरी बोली में समझाने वाला।

सं० दुर } दुस् } उपस० बुरा, दुष्ट, अशुभ, नीच, तुच्छ, अवज्ञा करने योग्य (जैसे दुर्वचन, दुर्जन, दुर्बुद्धि, दुर्दिन आदि) २ अनुचित, उलटा, असत्य, झूठ (जैसे दुस्तर्क) ३ निषेध, कम, नहीं, ४ कठिनता से, दुख से, यह उपसर्ग सु का उलटा है।

प्रा० दुरना क्रि० अ० छिपना, लुकना।

सं० दुरन्त (दुर्+अन्त) गु० अशान्त, चञ्चल, दुष्ट, ढीठ, कुकर्मी।

सं० दुरतिक्रम (दुर् + अतिक्रम) गु० दुस्तर, कठिन ।

सं० दुराग्रह (दुर् + आग्रह, ग्रह= लेना) मर्म० पु० दुःखग्राह्य, दुःख से लिया जाय ।

सं० दुराचार (दुर्=बुरा, आचार= चलन) भा० पु० बुराचलन, बुरा व्यवहार, अन्याय, अधर्म, पाप, गु० दुष्ट, जिसका बुरा चाल चलन हो ।

सं० दुराचारी (दुराचार) गु० दुष्ट, पापी, अन्यायी, अधर्मी, भ्रष्ट, पापात्मा ।

सं० दुरात्मा (दुर्=दुष्ट, आत्मा= चित्त, मन) गु० दुष्ट, पापी, अधर्मी ।

सं० दुराधर्ष (दुर्=दुःख से, आ + धृष्=जीतना, दबाना) गु० जो दुःख से जीता जाय, जो शत्रु से नहीं दबे ।

ग्रा० दुराना क्रि० स० छिपाना, लुकाना ।

सं० दुरालाप (दुर्=बुरा, आलाप= बोलना) पु० गाली, दुर्वचन ।

ग्रा० दुराव (दुराना) भा० पु० छिपाव, लुकाव ।

सं० दुराशा (दुर्=बुरी, आशा= आस) स्त्री० बुरी आशा, नीच आशा ।

सं० दुरित (दुर्=बुरी जगह, इण्= जाना) पु० पाप, अधर्म ।

सं० दुरुक्त (दुर्=बुरा, उक्त=कहा हुआ, वच्=कहना) पु० शाप, बददुआ, दुर्वचन, बदकलाम ।

सं० दुरुक्ति (दुर् + उक्ति) स्त्री० भ्रष्ट रीति से कहना, मुहमिल कहना, जैसे पानी-आनी, रोटी-ओटी ।

सं० दुरोदर पु० जुआ का खेल, जुआरी, कपटी, धूर्त, व्यवहार, व्यवहारी ।

सं० दुर्ग (दुर्=कठिनता से वा दुःख से, गम्=जाना जहाँ) पु० गढ़, कोट, क़िला, घाटा, २ एक राक्षस का नाम, गु० कठिन, अगम्य, दुर्गम्य ।

सं० दुर्गत (दुर्=दुःख से, गम्= जाना) गु० दुःखी, दीन, कंगाल, ग़रीब, दरिद्र, २ छीछालेदर ।

सं० दुर्गति (दुर्=बुरी, गति=दशा) भा० स्त्री० बुरी दशा, दुर्दशा, बरबादी, ख़राबी, ग़रीबी, नीचपन, अधमता, २ नरक ।

सं० दुर्गन्ध (दुर्=बुरी; गन्ध=बास) स्त्री० बुरीबास, कुबास, बुरी महक, बदबू ।

सं० दुर्गम (दुर्=कठिनतासे, गम्= जाना) गु० कठिन, औघट, अगम्य, त्रिकट, दुश्वार, गुज़ार, २ गम्भीर ।

सं० दुर्गा (दुर्ग एक राक्षस का नाम उसको मारनेवाली देवी) जैसे दुर्गा पाठ में लिखा है कि "तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम्। दुर्गादेवीति विख्याता" अर्थ-देवी कहती है कि मैं वहां दुर्ग नाम असुर को मारूंगी तब मेरा नाम "दुर्गा" प्रसिद्ध होगा, स्त्री० देवी, भवानी, काली, भगवती, २ दुर्गापाठ, दुर्गामाहात्म्य, दुर्गाचरित्र, जिसमें दुर्गा की महिमा लिखी है।

सं० दुर्घट (दुर्=कठिन, घट=चेष्टा) गु० कठिन, औघट, विकट, अगम्य ।

सं० दुर्जन (दुर्=दुष्ट, जन=मनुष्य) पु० दुष्टमनुष्य, गु० दुष्ट, बुरा, नीच, बुरा करनेवाला ।

सं० दुर्जय (दुर्=कठिनता से, जि=जीतना) गु० जो कठिनता से जीतने में आवे ।

सं० दुर्दशा (दुर्=बुरी, दशा=हालत, अवस्था) स्त्री० बुरी हालत, आपदा, विपदा, अभाग, बुरी अवस्था, दुर्दिन ।

सं० दुर्दिन (दुर्=बुरा, दिन) पु० बुरा दिन, ऐसा दिन जिसमें बादल घिरे हुए हों और अन्धेरा होजाय ।

सं० दुर्नीति स्त्री० दुष्टनीति, बुरा न्याय, खराब इन्साफ़ ।

सं० दुर्बल (दुर्=थोड़ा वा नहीं, बल=ज़ोर) गु० निर्बल, निबल, दुबला, असमर्थ, बलहीन, कमज़ोर ।

सं० दुर्बुद्धि (दुर्=बुरी, बुद्धि=समझ) गु० मूर्ख, भोंदू, अनाड़ी, अज्ञान, नासमझ, मन्दबुद्धि, बदअक़ल ।

सं० दुर्भगा (दुर्=बुरा, भग=भाग) स्त्री० वह स्त्री जिसको उसका पति नहीं चाहता हो ।

सं० दुर्भाग्य (दुर्=बुरा, भाग्य=भाग) गु० अभागा, भाग्यहीन, कमबख़्त ।

सं० दुर्भिक्ष (दुर्=नहीं, भिक्षा=खाने की वस्तु) पु० काल, अकाल, कुसमय, असमय ।

सं० दुर्मति (दुर्=बुरी, मति=बुद्धि) गु० मूर्ख, अज्ञान, दुर्बुद्धि, मन्दबुद्धि, स्त्री० बुरीसमझ, बदअक़्ल।

सं० दुर्मद (दुर्=बुरा, मद=अभिमान) गु० जिसको बहुत अथवा बुरा घमण्ड हो, पु० एक राक्षस का नाम ।

सं० दुर्मुख (दुर्=बुरा, मुख=मुँह) गु० जिसका मुँह बुरा हो, २ कड़ी बात बोलनेवाला, पु० एक बन्दर का नाम, २ एक राक्षस का नाम।

सं० दुर्योधन (दुर्=दुःख से वा बुरी तरह से, युध्=लड़ना) पु० धृतराष्ट्र का बड़ा बेटा और कौरवों का मुखिया जिसने अपने चचेरे भाई

युधिष्ठिर आदि पाण्डवों से लड़ाई की थी वह लड़ाई महाभारत कहलाती है ।

सं० दुर्लभ (दुर्=कठिनता से, लभ्=पाना) गु० जो दुःख से मिले, दुष्प्राप्य, अलभ्य, २ अनोखा ।

सं० दुर्वचन (दुर्=बुरा, वचन=बोल) पु० गाली, बुरी बात, बुरा वचन, दुर्वाद ।

सं० दुर्वाद (दुर्=बुरा, वाद कहना) पु० गाली, बुरा वचन, दुर्वचन, बुरी बात, दुष्णाम ।

सं० दुर्वासना (दुर्=बुरी, वासना =इच्छा) स्त्री० बुरी इच्छा, ख़राब ख़्वाहिश ।

सं० दुर्वासाः (दुर्=बुरा, वा डराना, वासस्=कपड़ा) पु० एक ऋषि का नाम जो अत्रि ऋषि का बेटा और शिव का अंश था, २ मैला कपड़ा, मलिन वस्त्र ।

सं० दुर्विपाक (दुर्=बुरा, विपाक =फल) पु० बुराफल, बदनतीजा, बदक़िस्मती, दुर्दैव, अभाग्य ।

सं० दुर्बोध्य (दुर्+बुध्+य, बुध् =जानना) कर्म० पु० कठिनता से जानने योग्य, मुश्किल से जाना जाय ।

प्रा० दुलकी स्त्री० घोड़े की एक चाल, कूकर चाल ।

प्रा० दुलड़ा (दो लड़) पु० दो लड़ की माला, गु० दुगुना ।

प्रा० दुलत्ती (दु=दो, लात पाँवकी मार) स्त्री० पिछले दो पैरों से लात मारना ।

प्रा० दुलत्तीमारना
दुलत्ती छाँटना
बोल० लात मारना, पिछले दो पैरों से लात मारना, पुश्तक झाड़ना ।

प्रा० दुलहन
दुलहिन
स्त्री० बनी, बनरी, लाड़ी ।

प्रा० दुलहा
दुल्हा
पु० बर, बनरा, बना ।

प्रा० दुलाई (दु=दो + लाय=परत) स्त्री० रज़ाई, दुलैया ।

प्रा० दुलार पु० प्यार, सनेह, प्रीति, प्रेम ।

प्रा० दुवार (सं० द्वार) पु० दरवाज़ा ।

प्रा० दुशाला पु० शाल का जोड़ा ।

सं० दुश्चरित (दुः + चरित, चर= चलना) भा० पु० दुराचार, बदचलन, दुष्ट व्यवहार ।

सं० दुष्कर (दुर्=दुःख से, कृ= करना) कर्म० पु० कठिन, असाध्य, जो करने में कठिन हो, मुश्किल ।

सं० दुष्कर्म (दुर्=बुरा, कर्म=काम) पु० बुरा काम, कुकर्म, पाप, नीच कर्म ।

सं० दुष्कर्मी (दुष्कर्म) क० पु० पापी, दुरात्मा, अधर्मी, कुकर्मी ।

सं० दुष्ट (दुष्=बिगड़ना, भ्रष्ट होना, वा बुरा करना) गु० बुरा, दुर्जन, कुजन, नीच ।

सं० दुष्णाम्म (दुष्+नाम) पु० बुरा नाम, गाली, अयश, बदनाम ।

सं० दुष्टता (दुष्ट) स्त्री० बुराई, खोटाई ।

सं० दुष्प्राप्य (दुस्=कठिनता से, प्राप्य=पाने योग्य) गु० दुर्लभ, दुःख से वा कठिनता से पाने योग्य ।

प्रा० दुसह (सं० दुःसह) गु० दुःसह शब्द को देखो ।

सं० दुस्तर (दुस्=दुःख से, तृ=पार होना) गु० कठिन, जिसका पार होना कठिन हो ।

प्रा० दुहना (सं० दोहन, दुह्=दुहना) क्रि० स० दोहना, गाय के थनों में से दूध निकालना ।

प्रा० दुहराना क्रि० स० दूना करना, २ दोहरा कर कहना, बारबार कहना ।

प्रा० दुहाई (सं० द्वौ=दो, हाहा=हाय, अर्थात् दोनों हाथ ऊँचे करके पुकारना) स्त्री० न्याय के लिये पुकारना, पुकार, २ सौगन्द, शपथ, जैसे " नन्ददुहाई " ।

प्रा० दुहाई तिहाई करना बोल० बारबार पुकारना ।

सं० दुहिता (दुह्=देना, वा दुहना जो मा बाप के धन को दुहाको या जिसको देते रहैं) स्त्री० बेटी, लड़की, कन्या, पुत्री, सुता ।

प्रा० दुहूं (सं० द्वौ) गु० दो, दोनों

प्रा० दूज (सं० द्वितीया) स्त्री० दूसरी तिथि ।

प्रा० दूजबर (सं० द्विजायावर, द्वि=दूसरी, जाया=पत्नी, वर=दुलहा) पु० वह मनुष्य जो दूसरा ब्याह करता है ।

प्रा० दूजा (सं० द्वितीय) गु० दूसरा, और

सं० दूत (दू=जाना) पु० समाचार लेजानेवाला, संदेशा पहुँचानेवाला, एलची, हरकारा ।

सं० दूतिका }
दूती } (दूत) स्त्री० समाचार पहुँचानेवाली, संदेशा लेजानेवाली, २ कुटनी, नायिका ।

प्रा० दूध (सं० दुग्ध) मर्म० पु० दुग्ध, पय, क्षीर, २ किसी जड़ी का अथवा पौधे का रस ।

प्रा० दूधाधारी (सं० दुग्धाहारी) क० पु० दूध पीके जीनेवाला ।

प्रा० दूधाभाती (दूध + भात) स्त्री० ब्याह के चौथे दिन एक रीति होती है जब दुलहा और दुलहिन एक साथ बैठकर खीर खाते हैं ।

प्रा० दूना (सं० द्विगुण) गु० द्विगुना, दोहरा ।

प्रा० दूब (सं० दूर्वा, दूर्व=हिंसा

करना अर्थात् काटना) स्त्री० एक प्रकार की घास ।

प्रा० दूबर (सं० दुर्बल) गु० दुबला, कमज़ोर, २ दुर्वह: (दुर्=दु:ख से, वह्=लेजाना) कठिन ।

सं० दूर (दुर्=दु:ख से, इण्=जाना) स्त्री० बीच, दूरी, गु० परे, अनन्तर, अलग, न्यारा, बीच ।

प्रा० दूरभागना बोल० छोड़ना, मुँह फेरना, हाथ उठाना, घिन करना, अवज्ञा करना, ख़राब करना, बचना, टलजाना, अलग रहना ।

प्रा० दूरकरना बोल० हटाना, सरकाना, टालना, हँकादेना, निकाल देना ।

प्रा० दूरहोना बोल० हटना, अलग होना, टलना, निकलजाना, सरकना ।

प्रा० दूर हो बोल० चला जा, परे हो, निकल भाग ।

सं० दूरदर्शिता भा० पु० दूर से देखना, पाण्डित्य, विवेकता, दूरंदेशी ।

सं० दूरदर्शी (दूर=दूर से अर्थात् पहले से, दर्शी=देखनेवाला, दृश्=देखना) क० पु० दूर से देखनेवाला, पहले से जानने वाला, अग्रशोची, पु० पण्डित, विवेकी, ज्ञानी, २ गीध ।

सं० दूषक (दुष्=दोषी होना) क० पु० निन्दक ।

सं० दूषण (दुष्=दोषी होना) भा० पु० दोष, निन्दा, चूक, अपराध, अपवाद, भूल, २ एक राक्षस का नाम ।

सं० दूषणीय (दूष्+अनीय) र्म० पु० निन्दायोग, दुष्ट, बदनाम ।

सं० दूषित (दुष्=दोषी होना) र्म० पु० निन्दित, बुरा, ख़राब, भ्रष्ट, बदनाम, कलङ्कित, बिगड़ा हुआ ।

सं० दूष्य (दूष्+य) र्म० पु० अयोग्य, दूषणयोग्य ।

प्रा० दूसर } (सं० द्वितीय) गु०
दूसरा } दूजा, और ।

प्रा० दृग् (सं० दृक्, दृश्=देखना) ग० पु० आँख, चक्षु ।

सं० दृढ़ (दृह्=बढ़ना) गु० कड़ा, कठोर, मज़बूत, पोढ़ा, पक्का, अचल, गाढ़ा, ठोस ।

सं० दृढ़ता (दृढ) भा० स्त्री० पकावट, मज़बूती, पोढ़ाई, कठिनता, ठोसपन ।

प्रा० दृढ़ाना (सं० दृढ) क्रि० स० मज़बूत करना, पक्का करना, पोढ़ा करना, सबल करना ।

सं० दृश्य (दृश्=देखना) र्म० पु० देखने योग्य, दर्शनीय, २ सुन्दर, सुहावना, मनोहर ।

सं० दृश्यमान र्म० पु० देखनेयोग्य, दर्शनीय, देखने क़ाबिल ।

सं० दृष्ट (दृश्=देखना) कर्म० पु० देखाहुआ, प्रकट, जो देखने में आवे ।

सं० दृष्टकूट पु० पहेली, क्लिष्ट, कठोर, कड़ा ।

सं० दृष्टान्त (दृष्ट=देखा, अन्त=आखिर, पार) पु० उदाहरण, उपमा, बराबरी ।

सं० दृष्टि (दृश्=देखना) भा० स्त्री० देखना, दर्शन, दीठ, नज़र, २ आँख ।

सं० दृष्टिपात (दृष्टि+पात, पत्=गिरना) पु० दर्शन, कटाक्ष, घूरना, देखना ।

सं० दृष्टिशशि पु० महादेव, शिव ।

प्रा० देखना (सं० दृश्=देखना) क्रि० स० लखना, दृष्टि करना, ताकना, निहारना ।

प्रा० देखनाभालना बोल० अच्छी तरह से देखना, देखना, ताकना, निहारना ।

प्रा० देखादेखी बोल० हिस्काहिस्की, बराबरी, देखने से, २ आपस में देखना ।

सं० देदीप्यमान क० पु० चमकीला, जाज्वल्यमान, चमकदार ।

प्रा० देनलेन (देनालेना) भा० पु० व्यवहार, पलटा, व्यापार, बनिज, बैपार, देवालेई, साहूकारी ।

प्रा० देना (सं० दान, दा=देना) क्रि० स० देदेना, देडालना, सौंपना, त्यागना ।

प्रा० देनापाना बोल० हानिलाभ, देनालेना ।

प्रा० देमारना बोल० पटक देना, पछाड़ डालना ।

सं० देय (दा=देना) कर्म० पु० दे योग्य ।

सं० देव (दिव्=खेलना, वा सराहना) पु० देवता, २ परमेश्वर, ३ राजा, ४ देवर, ५ ब्राह्मणों क उपनाम, ६ बादल, मेघ, गु० पूज्य, पूजने योग्य ।

सं० देवक (दिव्=खेलना, वा चम कना) पु० श्रीकृष्ण का नाना और देवकी का बाप ।

सं० देवकार्य (देव=देवता, कार्य=काम) पु० पूजा-पाठ-होम आदि ।

सं० देवकी
दैवकी (देवक) स्त्री० देवक राजा की बेटी, वसुदेव की स्त्री और श्रीकृष्ण की मा ।

सं० देवकीनन्दन (देवकी+नन्दन=बेटा) पु० श्रीकृष्ण ।

सं० देवगुरु (देव+गुरु) पु० देवताओं का गुरु बृहस्पति ।

सं० देवगृह (देव+गृह) पु० मन्दिर, देवालय, देहरा, ठाकुरद्वारा ।

प्रा० देवठान (सं० देवोत्थान) पु० कातिकसुदी ११ जिस दिन विष्णु चार महीने की नींद से

जागते हैं ।

सं० देवता (देव) पु० देव, अमर ।

सं० देवदारु (देव + दारु अर्थात् जिस पेड़की लकड़ी देवताओं को प्यारी होती है) पु० एक वृक्ष का नाम ।

सं० देवदेव (देव + देव) पु० देवताओं का देवता, महादेव ।

सं० देवनागरी (देव=देवता, नागरी=नगर की) स्त्री० देवताओं के नगर के अक्षर अथवा देवताओं के नगर की भाषा, शास्त्री अक्षर, शुद्ध हिन्दी अक्षर, २ हिन्दीभाषा, नागरी बोली ।

सं० देवर दिव्=खेलना पु० पतिका छोटा भाई । जैसे " पश्यति देवरस्ते " ।

प्रा० देवल (सं० देवालय) पु० मन्दिर, ठाकुरद्वारा, देहरा ।

सं० देवलोक (देव + लोक) पु० देवताओंके रहने का स्थान, स्वर्ग, सात लोकों में का एक लोक (लोक शब्द को देखो) ।

सं० देववाणी (देव + वाणी) स्त्री० देवताओं की बोली, संस्कृतभाषा ।

सं० देवस्थान (देव + स्थान) पु० मन्दिर, देवालय, देवल, ठाकुरद्वारा, देहरा ।

प्रा० देवा (सं० देव) पु० देवता, २ (देना) देनेवाला ।

प्रा० देवाल (देना) पु० देनेवाला ।

सं० देवालय (देव=देवता, आलय=जगह) पु० मन्दिर, देवस्थान, देवली, ठाकुरद्वारा, देहरा, २ स्वर्ग ।

सं० देवतरङ्गिनि (देव=देवता, तरङ्गिनि=नदी) स्त्री० गङ्गा, भागीरथी ।

सं० देवध्वनि स्त्री० आकाश गङ्गा ।

सं० देवी (दिव्=क्रीड़ा करना खेलना) स्त्री० भवानी, दुर्गा, जगदम्बा, २ देवता की स्त्री, ३ रानी ।

सं० देवोत्थान (देव=विष्णुभगवान्, उत्थान=उठना) पु० कातिक सुदी ११ जिस दिन विष्णु चार महीने की नींद से जागते हैं ।

सं० देश (दिश्=देना) पु० मुल्क, देश, पृथ्वी का खण्ड, मण्डल, चक्र, प्रदेश, स्थान ।

सं० देशदशाभिज्ञ क० पु० देश की दशाका ज्ञाता, मुल्क की हालत का जाननेवाला ।

प्रा० देशनिकाला (देश + निकालना) पु० अपने देश से निकालना ।

सं० देशभाषा (देश + भाषा) स्त्री० देशीभाषा, देशकी बोली ।

सं० देशस्थ (देश + स्थ) क० पु० देश में टिका, मुल्क में ठहरा हुआ ।

सं० देशाचार (देश + आचार) पु० देशका व्यवहार, देशकी रीति भाँति ।

सं० देशाटन (देश=मुल्क, अटन=

फिरना) पु० देश में फिरना, सफ़र करना ।

सं० देशाधिपति (देश + अधिपति) पु० देश का राजा, देश का स्वामी।

सं० देशाधीश (देश + अधीश) पु०देश का राजा, देश का स्वामी।

सं० देशान्तर (देश=मुल्क,अन्तर= दूसरा वा दूरी) पु० दूसरा देश, विदेश, २ मध्याह्नरेखासे पूर्व अथवा पश्चिमकी किसी जगह की दूरी-इंगलैंडके भूगोल जाननेवाले ग्रीनच शहरसे और हिन्दुस्तान के ज्योतिषी लङ्का से देशान्तर का हिसाब करते हैं ।

सं० देशहितैषी क० पु० देश की भलाई की इच्छा करनेवाला, ख़ैरख़्वाह मुल्क ।

प्रा० देशी (सं० देशी) गु० देश का।

सं० देशोन्नति (देश + उन्नति) स्त्री० देशकी बढ़ती,देश की वृद्धि, मुल्क की तरक़्क़ी ।

सं० देह (दिह्=बढ़ना) स्त्री० शरीर, तन ।

प्रा० देहदुराना बोल० गुप्त अङ्गों को ढकना ।

प्रा० देहसंभालना बोल० सचेत होना, चैतन्य होना, ढारस रखना, आपमें आना ।

सं० दोग्धा (दुह्+तृ, दुह्=दुहना) क०पु०वत्स, बछड़ा, २ अहीर ।

सं० दोग्ध्री (दुह्+तृ+ई) स्त्री० धेनु, गौ, गाय ।

सं० देहत्याग (देह + त्याग) पु० मरण, मौत, मीच, प्राणत्याग ।

प्रा० देहरा (सं० देवगृह) पु० देवता का मन्दिर, देवल, ठाकुरद्वारा, देवालय ।

सं० देहली (देह=लेपन, लिह्= लेपना और ला=लेना) स्त्री० दोनों किवाड़ों के बीच का काठ, दिहली, दहलीज़, २ फाटक, द्वार, डेवढ़ी ।

सं० देही (देह्) क० पु० प्राणी, जीवधारी ।

प्रा० देही (सं० देह) स्त्री० देह, शरीर, तन ।

सं० दैत्य (दिति) पु० दिति के बेटे, राक्षस, असुर ।

सं० दैत्यगुरु (दैत्य + गुरु) पु० राक्षसों का गुरु, शुक्राचार्य ।

सं० दैत्यारि (दैत्य + अरि) पु० विष्णु ।

सं० दैवज्ञ (दैव + ज्ञ=जानना) क० पु० ज्योतिषी, नजूमी ।

सं० दैन्य भा० पु० दीनता, दुःखीपन, ग़रीबी, लाचारी, बेबसी ।

सं० दैनिक भा० पु० दिनका, रोज़ाना, रोज़-रोज़ ।

सं०दैनिकवेतन पु०रोज़की मज़दूरी।

सं० दैव (देव=ईश्वर, अर्थात् ईश्वर

से आया हुआ, वा ईश्वर का) पु० भाग, प्रारब्ध, कर्म का फल, २ संयोग, ३ ईश्वर, विधाता, गु० ईश्वर का ।

सं० दैवात् } दैवी } (दैव) क्रि० वि० संयोगसे, अचानक, एकाएकी, अकस्मात् ।

सं० दैवानुरागी (दैव + अनुरागी) क० पु० ईश्वर का प्रेमी, ईश्वर भक्त, खुदापरस्त ।

सं० दैविक गु० देवताओंसे, आसमानसे ।

सं० दैहिक गु० देहकी, शरीर की, जिस्मानी ।

प्रा० दैहौं (देना) क्रि० स० दूंगा ।

प्रा० दो (द्वि) गु० दूसरी संख्या, एक और एक, २ ।

प्रा० दोऊ (सं० द्वौ) गु० दोनों ।

प्रा० दोजीवा (सं० द्विजीवा, द्वि=दो, जीव=प्राणी) स्त्री० गर्भिणी, गर्भवती, पेटसे ।

प्रा० दो जीसे होना बोल० पेट से होना, गर्भिणी होना ।

प्रा० दोना } दौना } पु० पत्तों का बना हुआ बरतन जिस में तरकारी मिठाई आदि लेकर खाते हैं ।

प्रा० दोनाली (सं० द्विनाल) स्त्री० दो नल की बन्दूक ।

प्रा० दोनों (सं० द्वौ) गु० दोऊ, उभय।

प्रा० दोवे (सं० द्विवेदी, दो वेद जाननेवाला) पु० ब्राह्मणों की एक पदवी अथवा जाति ।

सं० दोला (दुल्=झूलना) पु० हिंडोला, झूलना ।

सं० दोलन (दुल् + अन) भा० पु० झूलना, पैंगना ।

सं० दोलिका (दुल्=झूलना) स्त्री० झूला, हिंडोला ।

सं० दोष (दुष्=दोषी होना) भा० पु० चूक, भूल, अवगुण, अपराध, कसूर ।

सं० दोषा स्त्री० रात्रि, रात ।

प्रा० दोषना (दोष) क्रि० स० दोषलगाना, कलङ्क लगाना, दाग़ लगाना ।

सं० दोषारोपण (दोष + आरोपण, रुप्=जमाना वा लगाना) भा० पु० दोषलगाना, कलङ्क लगाना, ऐबलगाना ।

सं० दोषी (दोष) गु० पापी, अपराधी ।

प्रा० दोसाद पु० नीचजाति जिस का धन्धा सुअर पालने का है ।

सं० दोहता (सं० दौहित्र, दुहितृ=बेटी) पु० बेटी का बेटा, नाती,

---

१ " आखर मधुर मनोहर दोऊ । वर्ण विलोचन जनजिय जोऊ " (इति रामायणम्) ।

दोहती=बेटी की बेटी, नतिनी ।

प्रा० दोहना (सं० दोहन, दुह्=दुहना) क्रि० स० दुहना, दूध खींचना ।

सं० दोहनी (दुह्=दुहना जिसमें) स्त्री० दूध दुहने का बरतन ।

प्रा० दोहर (दो) स्त्री० दोहरा कपड़ा, २ मियान ।

प्रा० दोहरा (दो) गु० दूना, पु० दोहा ।

प्रा० दोहा (सं० द्विपदा) पु० दोपद का छन्द ४८ मात्रा का छन्द प्रथम तृतीय चरण में तेरह २ और द्वितीय चतुर्थ चरण में ग्यारह २ मात्रा होती हैं ।

प्रा० दौंगड़ा पु० भारी वर्षा ।

प्रा० दौड़धूप भा० स्त्री० परिश्रम, मिहनत ।

प्रा० दौड़धूपकरना बोल० बहुत मिहनत करना, परिश्रम करना ।

प्रा० दौड़ना (सं० धोर=ज़ोर से चलना) क्रि० अ० भागना, जल्दी से चलना, डपटना, चढ़ना ।

प्रा० दौड़ादौड़ी बोल० धावाधावी हड़बड़ी, उतावली ।

प्रा० दौड़ाहा (दौड़ना) गु० दौड़ने वाला, हलकारा, अगुवा, दूत ।

प्रा० दौरी स्त्री० टोकरी, चंगेरी ।

सं० द्युति (द्युत्=चमकना) स्त्री० चमक, प्रकाश, सुन्दरता, दीप्ति ।

सं० द्युतित (द्युत्+इत) क० पु० प्रकाशयुक्त, प्रकाशवान् ।

सं० द्युषत् (दिव्+सद्, दिव्=स्वर्ग, सद्=रहना) क० पु० स्वर्गस्थ, स्वर्गनिवासी, बिहिश्त का रहनेवाला ।

सं० द्यूत (दिव्=खेलना) पु० पाशा खेलना, जुआ ।

सं० द्यूतकार (द्यूत=जूआ, कार=करनेवाला, कृ=करना) पु० जुवारी, जूआ देखनेवाला ।

सं० द्यो (द्युत्+डो, द्यु+विच्) क० पु० स्वर्ग, देवलोक ।

सं० द्योत (द्युत्+अ) पु० प्रकाश, दीप्ति ।

सं० द्योतक (द्युत्=चमकना) क० पु० चमकनेवाला, प्रकाश करने वाला ।

सं० द्योतन (द्युत्+अन) भा० पु० प्रकाश करना, ज़ाहिर करना, प्रकट करना ।

प्रा० द्योरानी (सं० देवर) स्त्री० देवर की स्त्री ।

सं० द्रव (द्रु=जाना) पु० रस, अर्क, २ वेग, गु० पिघला हुआ, बहता हुआ ।

प्रा० द्रवना (सं० द्रव) क्रि० अ० पिघलना, २ कृपालु होना, कोमल चित्त होना ।

सं० द्राविण पु० धन, रुपिया, पैसा ।

सं० द्रव्य (द्रु=जाना) पु० धन, दौलत, २ सारवस्तु, पदार्थ, ३ न्याय में नौ प्रकार के द्रव्य हैं (१ धरती, २ पानी, ३ आग, ४ हवा, ५ आकाश, ६ समय, ७ दिशा, ८ आत्मा, ९ मन) ४ औषध, दवाई ।

सं० द्रष्टव्य (दृश्+तव्य, दृश्=देखना) कर्म० पु० देखनेयोग्य, दर्शनीय, क़ाबिलदीद ।

सं० द्रष्टा (दृश्+तृ) क० पु० दर्शक, देखनेवाला, नाज़िर ।

सं० द्राक्षा (द्राक्ष्=चाहना) स्त्री० दाख, अंगूर ।

सं० द्राघण (द्राघ्+अन, द्राघ्=आयाम वा श्रम) पु० श्रम, मेहनत ।

सं० द्राघित (द्राघ्+इत) कर्म० पु० श्रमित, थकित ।

सं० द्रावक } (द्रु=बहना) क० पु०
द्रावी } बहनेवाला, पतला होनेवाला ।

सं० द्राव (द्रु=बहना, चलना) भा० पु० बहाव, स्रवण, चाल, अर्क़, शङ्खद्राव ।

सं० द्रुत (द्रु=जाना) गु० जल्द, तुरन्त, शीघ्र, झटपट ।

सं० द्रुम (द्रु=डाली, अर्थात् जिसके डालियां हों, द्रु=जाना) पु० वृक्ष, पेड़, रूख, तरवर, तरु ।

सं० द्रुमारि (द्रुम+अरि) पु० गज, हस्ती, कुठार, कुल्हाड़ा, प्रचण्ड वायु, तेज़हवा ।

सं० द्रुमेश्वर (द्रुम+ईश्वर) पु० चन्द्रमा, तालवृक्ष, अश्वत्थवृक्ष, पीपर ।

सं० द्रोण (द्रुण्=टेढ़ा करना, वा द्रु=जाना) पु० द्रोणाचार्य जिसने पाण्डवों और कौरवों को धनुषविद्या सिखलाई थी, २ चार आढक का परिमाण अथवा आठसेर, ३ काला कौवा या डोम कौवा ।

सं० द्रोह (द्रुह्=बुरा चीतना) पु० वैर, लाग, द्वेष, डाह, ईर्षा, विरोध ।

प्रा० द्रोहिया (सं० द्रोही) गु० द्रोही, द्वेषी, वैरी ।

सं० द्रोही (द्रोह) गु० वैरी, द्वेषी, विरोधी, द्रोहिया, डाही, दुष्ट ।

सं० द्रौपदी (द्रुपद) स्त्री० पञ्चाल देश के राजा द्रुपद की बेटी और पाँचों पाण्डवों की स्त्री ।

सं० द्वन्द्व (द्वौ द्वौ=दो दो) पु० जोड़ा, युगल, २ कलह, झगड़ा, बखेड़ा, ३ व्याकरण में एक समास का नाम, ४ रागद्वेष ।

सं० द्वादश (द्वि=दो, दश=दस) गु० बारह, बारहवां ।

सं० द्वादशी (द्वादश) स्त्री० बारहवीं तिथि ।

सं० द्वापर (द्वि=दो, पर=पीछे, अर्थात् दो के पीछे) पु० तीसरायुग जो ८६४००० बरस का था ।

सं० द्वार (द्वृ=ढकना) पु० दरवाज़ा, किवाड़, २ राह, मार्ग, उपाय, कारण ।

सं० द्वारका (द्वार=उपाय, अर्थात् मोक्ष का उपाय जहाँ हो) स्त्री० एकपुरीका नाम जिसको श्रीकृष्ण ने समन्दर के तीर पर बसाई ।

सं० द्वारपाल (द्वार=दरवाज़ा, पाल=ख़बर रखनेवाला) पु० डेवढ़ीवान्, पौरिया ।

सं० द्वारा (द्वृ=ढकना) क्रि० वि० कारण से, हेतु से, सहायता से, मदद से ।

सं० द्वारावती } **द्वारका** (द्वार=मोक्ष का उपाय जहाँ हो) स्त्री० द्वारका, श्रीकृष्ण की पुरी ।

सं० द्विगुण (द्वि=दो, गुण=गुना हुआ)गु० दूना, दुगुना, दोहरा ।

सं० द्विज (द्वि=दोबार, जन्=पैदा होना) गु० दोबार जन्मा हुआ पु० ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इन तीन वर्णों के मनुष्यों को द्विज कहते हैं क्योंकि ये एक बार तो अपनी मा के गर्भ से पैदा होते हैं और दूसरी बार यज्ञोपवीतादि संस्कार से, जैसे स्मृति में लिखा है कि “ जन्मना जायते शूद्रः संस्कारैर्द्विज उच्यते ” अर्थ–जन्मसे शूद्र पैदा होता है और संस्कार से द्विज कहलाता है, और भी “ मातुरग्रेऽधिजननं द्वितीयं मौञ्जिबन्धनम् ” अर्थ-एक बा मा के गर्भ से पैदा होना और दूसरीबार मौञ्जीबन्धन संस्कार से, २ दाँत, ३ पक्षी आदि अण्डे से पैदा होनेवाले जीव ।

सं० द्विजराज (द्विज=ब्राह्मण, राजन्=राजा) पु० चन्द्रमा, चाँद, गरुड़, विप्र, शिव ।

सं० द्विजाति पु० द्विजशब्दको देखो

सं० द्वितीय (द्वि=दो) गु० दूसरा दूजा ।

सं० द्विधा (द्वि=दो, धा=प्रकार क्रि० वि० दो प्रकारसे, दो तरहसे

सं० द्विप (द्वि=दोसे, पा=पीना, हा पहले अपनी शुण्ड में पानी भ कर फिर अपने मुँह में उतारता है पु० हाथी, गज, वृक्ष, नागकेशर

सं० द्विपद (द्वि=दो, पद=चलना पु० मनुष्य, राक्षस, देवता, द पैर से चलनेवाले ।

सं० द्विपायिन् (द्वि=दो, पा=पीना पु० हस्ती, गज ।

सं० द्विविद (द्वि=दो, विद्=जानना पु० एक वानर का नाम ।

सं० द्वीप (द्वि=दोनों ओर, आप्= पानी, अर्थात् जिसके सब ओर पानी हो) पु० धरती का वह बड़ टुकड़ा जिसके चारों ओर पानी हो, हिन्दुओं के शास्त्र में सात द्वी

लिखे हैं और हर एक द्वीप एक एक समुद्र से घिरा है, सातों द्वीपों के नाम, १ जम्बूद्वीप, २ कुश, ३ प्लक्ष, ४ शाल्मली, ५ क्रौञ्च, ६ शाक, ७ पुष्कर।

सं० द्वीपिन् पु० व्याघ्रभेद, चीता, गुलबघा।

सं० द्विरेफ पु० भ्रमर, मधुप, भौंरा।

सं० द्वेष (द्विष्=वैरकरना) पु० द्रोह, वैर, ईर्ष्या, शत्रुता, अदावत, दुश्मनी।

सं० द्वेषक (द्विष् + अक) क० पु० वैरी, द्रोही, शत्रु, दुश्मन।

सं० द्वेषी (द्वेष) क० पु० वैरी, विरोधी, शत्रु, द्रोही।

सं० द्वेष्टा क० पु० वैरी, शत्रु, दुश्मन।

प्रा० द्वै (सं० द्वौ) गु० दो।

सं० द्वैधीभाव भा० पु० तोड़ फोड़, लड़ाई, झगड़ा, आपस की नाइत्तिफ़ाक़ी।

सं० द्वैपायन पु० व्यासजी।

सं० द्वैमातुर पु० गणेश, जरासन्ध, जो दो माताओं से उत्पन्न हो।

ध

सं० ध (धा=रखना, वा धे=पीना) पु० धर्म, २ कुबेर, ३ ब्रह्मा, ४ धन।

प्रा० धन्धक पु० काम करनेवाला, उद्यमी।

प्रा० धन्धा पु० काम काज, पेशा, उद्यम, कार्य, व्यवहार।

प्रा० धन्धारी (धन्धा + अरी=शत्रु) शिथिल, उदासी, ढीला, पेशा न करने वाला।

प्रा० धँसना क्रि० अ० पैठजाना, गड़जाना, घुसजाना।

प्रा० धकधकी स्त्री० कँपकँपी, धड़क, थरथरी, धड़धड़ाहट, घबराहट, हड़बड़ी।

प्रा० धकधकाना क्रि० अ० काँपना, धड़कना, थरथराना, धड़धड़ाना, फड़कना।

प्रा० धकेलना क्रि० स० ढकेलना, रेलना, धक्कादेना, ठेलना, हूलना, पेलना।

प्रा० धकेलदेना बोल० ढकेलना, धक्का देना, झोंकादेना।

प्रा० धक्का पु० ढकेल, ठेल, झोंक, रोला, रेल, टक्कर, हूल।

प्रा० धक्कादेना बोल० ढकेलना, ठेलना, रेलना, पेलना, झोंकना, हूलना।

प्रा० धक्कमधक्का बोल० ठेलाठेली, रेलपेल, ठेलमठेल, कशमकश।

प्रा० धज (सं० ध्वज, ध्वज्=जाना) स्त्री० रूप, डौल, आकार, चालढाल, रविश, आन, दशा, अवस्था, सजधज, वज़अ।

प्रा० धजा (सं० ध्वजा) स्त्री० पताका, झंडा ।

प्रा० धजीला गु० सुडौल, सजीला, स्वरूपवान्, सुन्दर ।

प्रा० धज्जी (सं० ध्वज) स्त्री० कपड़े का अथवा काग़ज़ का टुकड़ा, लीर, कतरन, काटन, टुकड़ा ।

प्रा० धज्जियाँ उड़ाना बोल० बदनाम करना, बातों से हराना ।

प्रा० धज्जियाँकरना बोल० टुकड़े टुकड़े करना ।

प्रा० धड़ } (सं० धृ=रखना) स्त्री०
धर } बिनशिर की देह, रुण्ड, शरीर, काया ।

प्रा० धड़क (धड़कना) स्त्री० धड़धड़ाहट, धुकधुकी, फड़क, थरथराहट, २ डर, भय ।

प्रा० धड़कना क्रि० अ० काँपना, धुकधुकाना, धकधकाना, थरथराना, धड़धड़ाना, फड़कना, मारना ।

प्रा० धड़का पु० डर, संदेह, दुबिधा, २ कँपकँपी, धड़क, धड़धड़ाहट, ३ कड़क, गर्ज ।

प्रा० धड़काना क्रि० स० डराना, भयदिखाना, कँपाना, दहलाना ।

प्रा० धड़धड़ाना क्रि० अ० धड़कना, काँपना ।

प्रा० धड़क्का पु० ठनक, ठोकने की आवाज़, २डर, दहलना, ३भीड़ ।

प्रा० धड़ा पु० जत्था, समूह, तरफ़, ओर, पक्ष, २ तौल, जोख ।

प्रा० धड़ाका पु० कड़क, धमक शब्द, आवाज़ ।

प्रा० धड़ी स्त्री० पाँच सेर की तौल ।

प्रा० धत स्त्री० हाथी चलाने का शब्द, दुदकारना, हिक़ारत करना ।

प्रा० धतूरा (सं० धत्तूर, धा=रखना धातुओं को) पु० एक प्रकार का पौधा, कनक ।

प्रा० धतूरिया (धतूरा) गु० छली, बहुरूपिया ।

प्रा० धधकना (सं० दहन) क्रि० अ० भभकना, बरना ।

प्रा० धधच्छुर } (सं० दग्धाक्षर=
दधच्छुर } जलाने वाले अक्षर) पु० कविता में वे अक्षर जिनको कवि अशुभ गिनते हैं (जैसे (ह, ग, न) कविता के शुरूअ में, (र, ज, स) बीच में और (क, ट, ज्ञ) अक्षर कवित के अन्त में अशुभ गिनेजाते हैं)।

सं० धन (धन्=पैदा होना) पु० दौलत, द्रव्य, लक्ष्मी, सम्पत्ति, सम्पदा, २ गणित में जोड़ का चिह्न + ।

प्रा० धनक पु० जड़ाव, कारचोबी ।

सं० धनञ्जय (धनम्=दौलत को, जि=जीतना) पु० अर्जुन का नाम, २ आग, ३ एक वृक्ष का नाम ।

सं० धनतृष्णा (धन + तृष्णा) स्त्री०

धनका लालच, धनकी लालसा, लोभ ।

प्रा० धनत्तर गु० धनी, धनवान्, अड़ियल, सेठ, कोठीवाल ।

सं० धनद (धन=दौलत, दे=पालना, दा=देना) पु० कुबेर, धनपति, गु० दातार, उदार, धन देनेवाला ।

सं० धनपति (धन+पति) पु० कुबेर, धनका देवता ।

सं० धनवन्त / धनवान् (धन=दौलत, वत्=वाला) गु० धनी, दौलतमन्द, मालदार, धनिक, लक्ष्मीवान्, धनाढ्य ।

सं० धनहीन (धन+हीन) गु० मुफ़लिस, निर्धन, दरिद्र, कंगाल, ग़रीब ।

सं० धनाढ्य (धन=द्रव्य, आढ्य=युक्त)गु० धनवान्, धनी, मालदार ।

सं० धनाधार धि० पु० धनागार, भण्डार, ख़ज़ाना रखनेका मकान ।

सं० धनाधिप (धन+अधिप) पु० कुबेर ।

सं० धनाध्यक्ष (धन+अध्यक्ष)पु० कुबेर, २ ख़ज़ानची, भण्डारी ।

सं० धनान्ध (धन+अन्ध) गु० धन से अन्धा, धनके मद से घमण्डी, धनगर्वित ।

सं० धनार्थी (धन+अर्थी) गु० लोभी, लालची, कृपण ।

सं० धनाशा (धन+आशा) स्त्री० धनेच्छा, धनकी चाह ।

प्रा० धनासरी (सं० धनेश्वरी) स्त्री० एक रागिणी का नाम, एक छन्द का नाम ।

सं० धनिक (धन) गु० धनवान्, धनी, पु० महाजन, उधार देने वाला ।

प्रा० धनियाँ पु० एक मसाला ।

सं० धनिष्ठा (धन्=पैदाहोना) स्त्री० चौबीसवें नक्षत्र का नाम ।

सं० धनी (धन) गु० धनवान्, दौलतमन्द, मालदार, लक्ष्मीवान्, पु० मालिक, स्वामी, अधिकारी, पति ।

प्रा० धनु / धनुक (सं० धनुष्) पु० कमान, चाप ।

प्रा० धनुकधारी (सं० धनुर्धारी) पु० तीरन्दाज़, कमठैत ।

सं० धनुस् / धनुष् (धन्=शब्द करना) पु० धनुक, कमान, चाप, २ ज्योतिष में नवीं राशि ।

सं० धनुर्धर (धनुष्=कमान, धृ=रखना) क० पु० कमान चढ़ाने वाला, धनुर्धारी, तीरन्दाज़, कमठैत ।

प्रा० धनुटंकार (सं० धनुष्टङ्कार) पु० कमान के चिल्ले का शब्द, रोदा की आवाज़ ।

सं० धनुर्विद्या (धनुष्+विद्या) स्त्री० तीर चलाने की विद्या

तीरन्दाज़ी, बाणचलाना ।

सं० धनेश } (सं० धन + ईश वा
धनेश्वर } ईश्वर) पु० कुबेर, धनाधिप ।

प्रा० धनेसा (सं० धनेश) पु० कुबेर ।

प्रा० धन्नासेठ } (सं० धनश्रेष्ठ)
धनासेठ } गु० बहुत धनवान्, कृतार्थ, धनका घमण्ड ।

सं० धन्य (धन) गु० सराहने योग्य, भाग्यवान्, श्रीमान्, वि० बो० शाबाश, वाहवाह, धन, प्रशंसा को जतलानेवाला शब्द ।

प्रा० धन्यमानना } बोल० धन्यवाद
धनमानना } करना, उपकार मानना ।

सं० धन्यवाद (धन्य, वद्=कहना) पु० सराह, स्तुति, आशिष्, शुकरगुज़ारी, अहसानमन्दी ।

सं० धन्वन्तरि (धन्वन्=वैद्यकशास्त्र वा शिल्पशास्त्र, री=जाना अर्थात् वैद्यक शास्त्र के पार जानेवाला) पु० समुद्र मथने के समय उसमें से प्रकट देवताओं का वैद्य जो हुआ, २ एक पण्डित का नाम जो विक्रमादित्य की सभा में था ।

सं० धन्वी (धन्वा=धनुष्, धन्व्=दौड़ना) धनुर्धर, तीरन्दाज़, कमठैत, धनुर्धारी ।

प्रा० धब्बा पु० कपड़े पर दाग़ ।

प्रा० धमक स्त्री० पाँव की आहट, २ ताड़न ।

प्रा० धमका पु० भारी चीज़ के गिरने का शब्द, २ झिड़की, ३ बड़ी धूप वा गरमी ।

प्रा० धमकाना क्रि० स० झिड़कना, डाँटना, डराना, घुड़कना ।

प्रा० धमकाहट } स्त्री० झिड़की,
धमकी } घुरकी, डाट, भबकी ।

सं० धमनी (धम् + अन् + ई, धम =चलना वा शब्द करना) स्त्री० नाड़ी, नाटिका, नब्ज़, रग ।

प्रा० धमाका पु० एकतरहकी तोप जो हाथी पर लेजाई जाती है ।

प्रा० धमाल स्त्री० ताल, २ एक तरह का गीत जो होली में गाया जाता है ।

सं० धरण (धृ=रखना) स्त्री० कड़ी, बरँगा, २ नाभी, अथवा नाभी में की नस ।

सं० धरणा स्त्री० पृथिवी, धरती ।

प्रा० धरणडिगना } बोल० नाभ
धारणउखड़ना } टलना, पेट की रग बिगड़ना ।

सं० धरणि } (धृ=रखना, वा पक-
धरणी } ड़ना) स्त्री० धरती, पृथ्वी, ज़मीन ।

सं० धरणिधर } (धरणि, वा धर-
धरणीधर } णी=धरती, धर=

रखनेवाला, धृ=रखना) पु० शेषजी, अनन्त, २ विष्णु का नाम, ३ पहाड़, ४ कछुवा ।

सं० धरणिसुता (धरणी=धरती, सुता=बेटी) स्त्री० सीता, जानकी ।

प्रा० धरती (सं० धरित्री) स्त्री० पृथ्वी, धरणी, भूमि ।

प्रा० धरना (सं० धरण, धृ=रखना, पकड़ना) क्रि० स० रखना, रख देना, २ सौंपना, ३ पकड़ना, पकड़ लेना, गहना ।

प्रा० धरनादेना, धरनाबैठना } जब कोई मनुष्य किसी से रुपये माँगता हो और वह नहीं दे तब रुपये माँगनेवाला उसके दरवाज़े पर आ बैठता है और जबतक उसके रुपये का कुछ निबेड़ा नहीं होता तबतक न आप कुछ खाता है और न उसको खाने देता है उसको धरना देना वा धरना बैठना कहते हैं ।

प्रा० धरषना (सं० धर्षण, धृष्=क्रोध करना वा अनादर करना) क्रि० स० दबाना, क्रोध करना ।

सं० धरा (धृ=रखना) स्त्री० धरती, पृथ्वी, धरणी, ज़मीन ।

सं० धरातल (धरा + तल) स्त्री० पृथ्वी का तल, भूतल, तह ज़मीन ।

सं० धराधर (धरा=धरती, धर=धारण करनेवाला, धृ=रखना)पु० वराहरूप विष्णु, २ पहाड़, शेषनाग ।

सं० धरित्री (धृ=रखना) स्त्री० धरती, पृथ्वी, ज़मीन ।

प्रा० धरोहर (धरना) स्त्री० गिरो, थाती, अमानत, बन्धक ।

सं० धर्ता पु० ऋणी, धारणिक, क़र्ज़दार ।

सं० धर्म (धृ=रखना) पु० पुण्य, पवित्र, काम, न्याय, नेकी, २ पन्थ, मत, मज़हब, जाति व्यवहार, ३ क़ानून, व्यवस्था, ४ कर्तव्य कर्म, करने योग्य काम, ५ यमराज ।

सं० धर्मक्षेत्र (धर्म + क्षेत्र) पु० पवित्र जगह, कुरुक्षेत्र ।

सं० धर्मज्ञ (धर्म + ज्ञ=जाननेवाला, ज्ञा=जानना) क० धर्मात्मा, धर्मज्ञानी ।

सं० धर्मधुरन्धर (धर्म=पुण्य, धुरन्धर=बोझा उठानेवाला) गु० धर्म के काम में प्रधान, धर्मात्मा ।

सं० धर्मध्वजी (धर्म=पुण्य, ध्वजी=ध्वजावाला) गु० पाखण्डी, कपटरूप जो जीविका के लिये जटा आदि बढ़ा लेता है ।

सं० धर्मपत्नी (धर्म + पत्नी) स्त्री० पहली स्त्री जो एकही जाति की हो और धर्म की रीति से ब्याही जाय ।

सं० धर्मपुत्र (धर्म=धर्मराज, पुत्र=बेटा) पु० युधिष्ठिर ।

सं० धर्ममूर्ति (धर्म + मूर्ति) पु० धर्म का स्वरूप, धर्मात्मा, धर्मावतार ।

सं० धर्मराज (धर्म=न्याय, राज=राजा, राज्=शोभना, अर्थात् जो धर्म से सोहता है अथवा धर्म का राजा) पु० यमराज, २ युधिष्ठिर का नाम, ३ न्यायी राजा ।

सं० धर्मशाला (धर्म + शाला) धि० स्त्री० वह मकान जहाँ ग़रीबों को ख़ैरात बाँटी जाती है, २ विचारस्थान, न्याय करने की जगह, कचहरी ।

सं० धर्मशास्त्र (धर्म + शास्त्र) पु० व्यवस्थाशास्त्र, क़ानून की किताब जैसे " मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य, अत्रि, विष्णु, हारीत, उशना, अङ्गिरा, यम, आपस्तम्ब, संवर्त, कात्यायन, बृहस्पति, पराशर, व्यास, शङ्ख, लिखित, दक्ष, गौतम, शातातप और वसिष्ठ " ये धर्मशास्त्रके प्रवर्तक हैं ।

सं० धर्मशील (धर्म+शील=स्वभाव) गु० साधु, पुण्यवान्, धर्मात्मा, नेक ।

सं० धर्मशीलता भा० पु० साधुता, नेकी, धर्मकी प्रकृति ।

सं० धर्मात्मा (धर्म + आत्मा) गु० पवित्र मनुष्य, साधु, नेक, पुण्यात्मा ।

सं० धर्माधिकरण पु० जज ।

सं० धर्माध्यक्ष (धर्म=न्याय, अध्यक्ष=स्वामी) पु० न्यायी, न्याय करनेवाला, मजिस्ट्रेट, जज ।

सं० धर्मनिष्ठ
धर्मरत } स्म० पु० धर्म में ठहरा हुआ, धर्म में तत्पर, धर्म पर आरूढ़ ।

सं० धर्मावतार (धर्म + अवतार) पु० धर्म का अवतार, धर्मस्वरूप, धर्ममूरत ।

सं० धर्मिष्ठ
धर्मी } (धर्म) गु० पुण्यवान्, न्यायी, साधु, धर्मात्मा, नेक ।

सं० धव (धु वा धू=कँपाना) पु० पति, स्वामी, भर्ता, २ एक वृक्ष का नाम ।

सं० धर्ष (धृष्=क्रोध करना) पु० प्रगल्भ, धृष्ट ।

सं० धर्षक (धृष् + अक) क० पु० साहसी, दिलेर, धैर्यवान् ।

सं० धर्षण भा० पु० दिलेरी करना, साहस करना ।

सं० धवल (धाव्=शुद्ध करना, वा धव=कँपाना और ला=लेना) गु० धौला, श्वेत, सफ़ेद, २ सुन्दर, पु० शुक्लवर्ण, धौलारङ्ग, ३ एक वृक्ष का नाम ।

प्रा० धसकना क्रि० अ० गड़ना, धस जाना, गिरना, पड़ना, बैठ जाना ।

प्रा० धसना क्रि० अ० खुबना,

चुभना, छिदना, २ गड़ना, कीचड़ में पाँव डूब जाना, धस जाना ।

प्रा० धसान } (धसा) पु० दलदल,
धसाव } पाँका ।

प्रा० धाँगर पु० किसान, कुली ।

प्रा० धाँधना क्रि० स० भखना, भकोसना, अफरना ।

प्रा० धाँधल स्त्री० नटखटी, झगड़ा, बेईमानी, लुट्टस, लूट ।

प्रा० धाँसना क्रि० अ० खाँसना, खोखना ।

प्रा० धाँसी स्त्री० खाँसी, खोखी ।

प्रा० धाई } (सं० धात्री) स्त्री०
धाय } लड़के को दूध पिलाने वाली, दाई ।

प्रा० धाक स्त्री० डर, भय, धमकी, आतङ्क, २ ठाठ, धूमधाम, ३ नाम, यश, कीर्ति ।

प्रा० धागा पु० डोरा, तागा, सूत ।

प्रा० धात (सं० धातु) स्त्री० धातु शब्द को देखो ।

सं० धाता (धा=रखना, पालना) पु० ब्रह्मा, विष्णु, क० पालने वाला ।

सं० धातु (धा=रखना) स्त्री० मनुष्य के शरीर का सार अंश, जैसे (वात्त-पित्त-कफ) २ बीज, वीर्य, ३ सोना, रूपा, ताँबा आदि खानि से निकलीहुई चीज़, ४ व्याकरण में शब्दों का मूल अर्थात् ऐसा शब्द जिससे क्रिया आदि शब्द बनें ।

सं० धातुविलेपक (धातु=राँगा, पारा, विलेपक=लेप करनेवाला) क० पु० क़लईसाज़, क़लईगर ।

सं० धात्री (धा=पालना) स्त्री० धाय, धाई, २ मा, माता, ३ आँवला ।

प्रा० धान (सं० धान्य) पु० बिन कूटा चावल ।

प्रा० धाना } (सं० धावन, धाव्=
धावना } जाना) क्रि० अ० दौड़ना, जल्दी से चलना, २ परिश्रम करना, ३ (सं० ध्यान) पूजना, अर्चना, आराधना करना ।

प्रा० धानी (धान) स्त्री० एक प्रकार का बिन कूटा चावल, २ हलका हरा रंग ।

सं० धान्य (धा=पोषना, पालना, जिससे शरीर का पोषण होता है) पु० सब प्रकार का अनाज, पर विशेष करके बिन कूटा चावल, धान ।

प्रा० धाभाई (सं० धात्रीभ्रावा) पु० दूधभाई, कोकी ।

सं० धाम (धा=धारण करना, रखना) पु० घर, स्थान, गेह, मकान, मसकन, जगह ।

प्रा० धायमारना } बोल० पुकारके
धायमाररोना } रोना, हाय मार के रोना ।

प्रा० धार (सं० धारा, धृ=पकड़ना वा गिरना) स्त्री० लकीर, २ बहाव, सोता, प्रवाह, ३ नोक, तीखी अनी, ४ तीक्ष्णता, बाढ़, चोखाई।

प्रा० धारमारना ⎫ बोल० तुच्छ
धारपरमारना ⎭ जानना, हलका जानना।

सं० धारक (धृ=रखना) क० पु० ऋणी, मक़रूज़, उधरहा।

सं० धारण (धृ=रखना) भा० पु० पकड़ना, रखना, सँभालना, सहारना।

प्रा० धारना (सं० धारण) क्रि० स० स्मरण, चेत, याददाश्त रखना, पकड़ना, २ पहनना।

सं० धारा (धृ=गिरना) स्त्री० बहाव, प्रवाह, सोता, चश्मा।

सं० धारावाहिक (धारा + वाहिक, वह=चलना) क० पु० परम्परागतिक, क़दीम राहपर चलनेवाला।

सं० धारासार पु० भारी वर्षा।

प्रा० धारि स्त्री० सेना, फ़ौज।

प्रा० धारी (सं० धारा) स्त्री० लकीर, रेखा, २ एक पौधे का नाम गु० रखनेवाला, धरनेवाला।

सं० धार्मिक (धर्म) गु० धर्मात्मा धर्मिष्ठ, पुण्यवान्, साधु, पुण्यात्मा।

सं० धार्य (धृ=धरना) कर्म० पु० धरने योग्य, लेनेलायक़।

सं० धावक (धाव्=दौड़ना) क० पु० दूत, दौड़ाहा, चलनेवाला, क़ासिद।

सं० धावन (धाव्=दौड़ना) पु० जाना, दौड़ना, गमन, २ दौड़ाहा, दूत।

सं० धावमान गु० दौड़ता हुआ, भागता हुआ।

प्रा० धावा (सं० धावन) पु० दौड़, चढ़ाई, हल्ला, हमला।

प्रा० धावामारना बोल० चढ़ाई करना, छापा मारना, हमला करना।

प्रा० धाह स्त्री० हाय, कूक, चिंघार।

सं० धिक् वि० बो० फिट, छी छी, निन्दा को जतलानेवाला शब्द।

सं० धिक्कार (धिक्=छी छी, कृ=करना) पु० फिटकार, तिरस्कार, शाप, छी छी, लअनत।

प्रा० धिक्कारना (सं० धिक्कारण) क्रि० स० फिटकारना, तिरस्कार करना, लअनत देना।

प्रा० धिया (सं० धी) स्त्री० बेटी।

प्रा० धिरकार (सं० धिक्कार) पु० धिक्कार, फिटकार, अपमान।

सं० धी (ध्यै=सोचना) स्त्री० बुद्धि, मति, अक़्ल, ज्ञान, २ बेटी, पुत्री।

सं० धीमत गु० अक़्लमन्द, बुद्धिमान्।

प्रा० धीमा ⎫ (सं० धीर) गु० ढीला,
धीरा ⎭ धीरा, सुस्त, आलसी,

क़ाहिल, २ कोमल, शान्त, ठण्ढा, स्थिर, गम्भीर ।

प्रा० धीमे धीमे क्रि० वि० बोल० धीरे-धीरे, हौले-हौले, आहिस्ता-आहिस्ता ।

सं० धीमान् (धी=बुद्धि, मत्=वाला) पु० बुद्धिमान्, चतुर, निपुण, अक़्लमन्द ।

सं० धीर (धी=बुद्धि, रा=लेना) पु० धीरज रखनेवाला, साहसी, धीर, स्थिर, क्षमावान्, संतोषी, साबिर, गम्भीर, शान्त, बुद्धिमान्, पण्डित ।

प्रा० धीरज (सं० धैर्य) स्त्री० साहस, स्थिरता, सहनशीलता, बरदाश्त, सब्र, संतोष, धीरता, गम्भीरता, दृढ़ता ।

सं० धीवर (धा=रखना, वा पकड़ना) पु० मछुवा, कैवर्त, मछली पकड़नेवालों की जाति ।

प्रा० धुआँ } (सं० धूम) पु० धुवाँ,
धुवाँ } धूम, भाफ़, २ मरण, मरना, जैसे " धुवाँ देखि खरदूषण केरा, जाइ सुपनखा रावण प्रेरा " ।

प्रा० धुकड़पुकड़ } स्त्री० धड़क,
धुकुड़पुकुड़ } थरथराहट, धड़धड़ाहट, हिलाव डुलाव ।

प्रा० धुकधुकी स्त्री० लटकन, गलेमें पहनने का गहना, २ घबराहट, हड़बड़ी, व्याकुलता, सोच ।

सं० धुत (धु=कँपना) क० पु० कम्पित, भीत, डराहुआ ।

प्रा० धुत्ता (सं० धूर्त्तता) पु० धोखा, छल ।

प्रा० धुत्तादेना बोल० धोखादेना, फ़रेब करना, छलना ।

प्रा० धुन (सं० ध्यान) स्त्री० इच्छा, चाह, लहर, तरङ्ग, लौ, अभ्यास ।

प्रा० धुन } (सं० ध्वनि) स्त्री० शब्द,
धुनि } आवाज़, स्वर, नाद ।

प्रा० धुनिया (धुन्ना) पु० रूई तूमनेवाला, नद्दाफ़ ।

प्रा० धुन्ना } (सं० धुनना, धु=काँ-
धुनना } पना) क्रि० स० तूमना, रूई को सुधारना, २ हिलाना, कँपाना, पीटना, सिरधुनना, बोल० दुख से सिर हिलाना या पीटना ।

सं० धुर् (धृ=रखना, वा धुर्व्=मारना) पु० बोझा, भार, २ जूवा, ३ अन्त, किनारा ।

प्रा० धुर पु० आरम्भ, शुरूअ, २ अवधि, अन्त ।

प्रा० धुरसेधुरतक बोल० आदिसे अन्ततक ।

सं० धुरन्धर (धुरम्=भार को, धृ=रखना) क० बोझ उठानेवाला, २ भारवाहक संतोष के साथ काम पूराकरनेवाला, ३ मुखिया, प्रधान, सरदार ।

प्रा० धुरपद (सं० ध्रुवपद) पु० एक प्रकार का गीत ।

सं० धुरा (धृ=धरना) स्त्री० चिन्ता, भार, रथ की धुरी ।

प्रा० धुरी (सं० धुरा, धृ=रखना, वा धुर्व्=मारना) स्त्री० गाड़ी के पहिये का लोहे का डंडा ।

सं० धुरीण (धुर्=बोझ) क० पु० धुरन्धर, बोझ उठानेवाला, २ प्रधान, मुखिया, बैल, रथ; वृषभ, लाँगला अर्थात् बंब ।

सं० धुर्य (धुर्=बोझ) क० पु० धुरन्धर, बोझ उठानेवाला, २ प्रधान, सरदार ।

प्रा० धुलाई (धुलाना) भा० स्त्री० कपड़े धोने की मज़दूरी ।

प्रा० धुलाना (धोना) क्रि० स० धुवाना, कपड़े साफ़ कराना ।

प्रा० धुलेंड़ी धुलैंड़ी स्त्री० होली का दूसरा दिन जिसमें धूल उड़ाते हैं ।

प्रा० धुस्सा पु० लोई, एक प्रकार का ऊनी कपड़ा ।

प्रा० धूआ धूवाँ (सं० धूम) पु० धुवाँ धूम, धूम्र, भाफ़ ।

प्रा० धूवाँधार (सं० धूमाधार) पु० बहुत धुवाँ, गु० धुवाँसा, हराया, भगाया, २ सुन्दर, सँवारा हुआ, शोभित ।

प्रा० धूंवारा (सं० धूम) पु० धुएँके निकलने का मोखा अथवा राह ।

प्रा० धूनी (सं० धूम) स्त्री० धुवाँ, २ आग जिसको तपस्वी तपस्या करनेके लिये जलाते हैं, ३ किसी दवाको आग पर रखकर उसका धुवाँ पिलाना वा भूत प्रेत झाड़ने के समय किसी चीज़ को आगपर रखकर उसको महक सुँघाना, ४ किसी चीज़ के माँगने के लिये आग जला कर धरनादेना ।

प्रा० धूनीदेना बोल० धरनादेना, बार बार माँगना, २ धुवाँ, आग सुलगाना, पिलाना ।

प्रा० धूनीलगाना बोल० हठ करना अथवा बराबर माँगा करना ।

प्रा० धूनीलेना बोल० धुवाँ पीना, बफ़ारा लेना ।

सं० धूप (धूप्=तपना, वा चमकना, वा महकना) पु० गूगल और लोबान आदि सुगन्धित वस्तु जिसको पूजा के समय देवता के आगे आग पर रखते हैं ।

प्रा० धूप (सं० धूप=तपना) स्त्री० घाम, तपिश ।

सं० धूम (धू=काँपना) पु० धुवाँ, भाफ़ ।

प्रा० धूम स्त्री० रौला, बखेड़ा, कोलाहल, हलचल, खड़बड़ी, हाहू, चर्चा, शोहरत, नामवरी ।

सं० धूमकेतु (धूम=धूआँ, केतु=

झंडा) पु० पूंछलतारा, २ आग, ३ केतु, ४ एक राक्षस का नाम ।

प्रा० धूमधाम स्त्री० भड़क, शोभा, ठाठ बाट, २ हूहा, रौला, कोलाहल, भीड़भाड़ ।

सं० धूमयन्त्र रेलका एंजन ।

प्रा० धूमरा (सं० धूम्र वा धूम्रल,
धूमला धूम=धुवाँ, रा=लेना)
धूमा गु० धूएँ सा रंग लाल
और काला मिला हुआ ।

सं० धूमवाहनी (धूम + वाहनी) स्त्री० रेल, रेलका एंजन ।

प्रा० धूर (सं० धूलि) स्त्री० धूल,
धूल खाक, रेत, रज, रेणु ।

प्रा० धूर स्त्री० बिस्वे का बीसवाँ हिस्सा, बिस्वांसी ।

सं० धूर्जटि (धूर्=बोझ, जटि वा जटा=केशों का समूह) पु० शिव का नाम, जटाधारी ।

सं० धूर्त (धूर् वा धुर्व्=मारना, हानि पहुँचाना) क० नटखट, छली, फ़रेबी, मक्कार, कपटी, ठग, उचक्का, दुष्ट, हानि पहुँचानेवाला ।

सं० धूर्तता (धूर्त) भा० स्त्री० नटखटी, मक्कारी, फ़रेब, ठगाई, छल कपट ।

सं० धूलि (धू=काँपना) स्त्री०
धूली धूर, धूल, रज, रेत, रेणु ।

सं० धूसर (धू=काँपना) गु० कबरा, भूरा, धुँधला, ख़ाकी, मिटिया ।

सं० धृत (धृ=रखना) कर्म० पु० धारण किया हुआ, रक्खा हुआ, पकड़ा हुआ ।

सं० धृतराष्ट्र (धृत=रक्खा है, राष्ट्र=राज्य, जिसने) पु० दुर्योधनका बाप और पाण्डवों का चचा ।

सं० धृति (धृ=रखना) स्त्री० धीरज, सन्तोष, स्थिरता, मज़बूती, धैर्य, इस्तक़लाल ।

सं० धृतिमान् गु० बुद्धिमान्, मतिमान्, अक़्लमन्द ।

सं० धृतिसंख्या गु० अठारह, दश और आठ ।

सं० धृष्ट (धृष्=ढीठ होना) क० पु० ढीठ, धीठ, साहसी, २ निर्लज्ज, ३ मगरा, मचला, गुस्ताख़ ।

सं० धृष्टता भा० स्त्री० ढिठाई, शोख़ी, साहसपन, गुस्ताख़ी ।

सं० धृष्णु क० पु० ढीठ, साहसी, शोख़, २ निर्लज्ज ।

प्रा० धेगामुष्टि स्त्री० बोल० घूँसमघूँसा, धक्कमधक्का, मुक्कमुक्का ।

सं० धेनु (धे=पीना, जिसका दूध आदि पीते हैं वा जो अपने बछड़ों को दूध पिलाती है) स्त्री० गाय, दूध देनेवाली गाय ।

सं० धेनुक (धेनु) पु० एक राक्षस का नाम ।

सं० धेनुमती(धेनु=गाय, मती=वाली) स्त्री० गोमती नदी ।

प्रा० धेला पु० आधा पैसा,

(अधेला शब्द को देखो)।

सं० धैर्य (धीर) स्त्री० धीरज, स्थिरता, दिलेरी, हिम्मत।

प्रा० धोक स्त्री० देवता की मूरत के सामने झुकना, दण्डवत् प्रणाम।

प्रा० धोकड़ गु०महाबली, बलवान्, पराक्रमी, पहलवान, ताक़तवर।

प्रा० धोखा पु० छल, कपट, दग़ा, ठगाई, २ चूक, भूल, भ्रम, निराश, ३ संदेह, ४ मृगतृष्णा, कोई कल्पित वस्तु।

प्रा० धोखाखाना बोल० धोखे में आना, ठगा जाना, बहकना, भूलना, भुलावे में आना।

प्रा० धोखादेना बोल० ठगना, छलना, बहकाना, भुलावा देना, दग़ा देना, फ़रेब में लाना।

प्रा० धोती (सं० धौत्र, धाव्=धोना) स्त्री० एक कपड़े का नाम।

प्रा० धोना (सं०धावन, धाव्=धोना) क्रि०स०पखारना, साफ़ करना।

प्रा० धोप स्त्री० एकप्रकारकीतलवार।

प्रा० धोब } (धोना) पु० धोना,
धोप } साफ करना, पखारना।

प्रा० धोबी (धोना) पु० कपड़े धोनेवाला।

प्रा० धौ (सं० धातकी, धा=रखना) स्त्री० एक प्रकार की लकड़ी।

प्रा० धोरी पु० बैल, वर्ध, वृषभ।

प्रा० धौं अव्य० न जाने, कि, याकि क्या।

प्रा० धौंकना (सं० ध्मा=फूँकना) क्रि० स० फूँकना।

प्रा० धौंकनी (धौंकना) स्त्री०आग फूँकने की चमड़े की भाथी, धौंकी।

प्रा० धौंताल (सं० धनवन्त) गु० धनवान्, मालदार, २ मज़बूत, बलवान्, ३ शूरमा, वीर, ४ दुष्ट, दुर्जन।

प्रा० धौंन (आध मन) पु० बीस सेर, आधा मन।

प्रा० धौंसा पु० बड़ा नगाड़ा।

सं० धौत (धाव्=धोना) र्म० पु० धोया हुआ, प्रक्षालित।

प्रा० धौरा } (सं० धवल) गु०श्वेत,
धौला } शुक्ल, सफ़ेद।

प्रा० धौल स्त्री० धप्पा, थप्पड़, थाप।

प्रा० धौल जड़ना } बोल० ठठाना
धौल मारना } मुक्का मारना,
धौल लगाना } थाप मारना,
थप्पड़ मारना।

प्रा० धौल लगना बोल० घटी सहना, हानि सहना, नुक़सान उठाना, घटी होना।

प्रा० धौलधप्पा बोल० धप्पा धप्पी, मारकूट, चोट चपेट।

प्रा० धौलागिरि (सं० धवलगिरि, धवल=धौला, गिरि=पहाड़) पु० हिमालय पहाड़ की एक चोटी।

सं० ध्यात (ध्यै=चिन्ता करना) र्म० पु० चिन्तित, विचारित।

सं० ध्यातव्य (ध्यै + तव्य) कर्म० पु० ध्यानयोग्य, याद के लायक़ ।

सं० ध्याता क० पु० चिन्तक, विचारकर्त्ता, शोचक ।

सं० ध्यान (ध्यै=सोचना) पु० सोच, विचार, चिन्ता, परमेश्वर में मन लगाना, लौ, लगन ।

प्रा० ध्याना (सं० ध्यान) क्रि० स० ध्यान करना, लौ लगाना, मन लगाना ।

सं० ध्यानी (ध्यान) क० पु० ध्यान करनेवाला, विचार करनेवाला, सोचनेवाला, योगी, भक्त ।

सं० ध्यानीय (ध्यै + अनीय) कर्म० पु० चिन्तनीय, विचारणीय, विचार योग्य, भजन योग्य, याद के लायक़ ।

सं० ध्यायक (ध्यै + अक) क० पु० चिन्तक, विचारी, योगी, भक्त ।

सं० ध्येय (ध्यै=विचारना) कर्म० पु० ध्यान योग्य, विचारणीय, ध्यानार्ह ।

सं० ध्रुव (ध्रु=ठहरना) गु० ठहरा हुआ, पक्का, दृढ़, अटल, २ ठीक, किल, सच, निश्चय, पु० विष्णु, एक भक्त का नाम जो उत्तानपाद राजा का बेटा था, ३ ध्रुव का तारा, ४ उत्तर केन्द्र ।

सं० ध्वंस } (ध्वंस्=नाश करना)
ध्वंसन } भा० पु० नाश, क्षय, हानि ।

सं० ध्वंसक (ध्वंस् + अक) क० पु० नाशक, क्षयकारक, हानिकर्त्ता ।

सं० ध्वंसित (ध्वंस् + इत) कर्म० पु० नाशित, क्षयकृत, हानिकृत ।

प्रा० ध्वजा (सं० ध्वज, ध्वज्=जाना) स्त्री० पताका, केतु, झंडा ।

सं० ध्वन् } (ध्वन्=शब्द करना)
ध्वनि } भा० स्त्री० शब्द, स्वर, नाद, आवाज़ ।

सं० ध्वनित (ध्वन् + इत) कर्म० पु० शब्दित, उदित, कथित ।

सं० ध्वस्त (ध्वंस्=नीचे गिरना) कर्म० पु० गिरा हुआ, नीचे पड़ा हुआ, मात किया गया, हत किया गया ।

सं० ध्वान्त पु० अन्धकार, तम ।

न

सं० न क्रि० वि० नहीं, निषेध, अभाव, सूर्य, शनैश्चर, दीर्घ, मनुष्य ।

प्रा० न } व्रजभाषा में और कविता
नि } में बहुवचन का चिह्न जैसे "वेगि करहु किन आँखिन ओटा" "तब कपीश चरननि शिरनावा" ।

प्रा० नंग } (सं० नग्न) गु० उघाड़ा,
नंगा } बिन कपड़े, वस्त्रहीन, दिगम्बर, २ निर्लज्ज, बेशरम ।

प्रा० नंगाझूरी बोल० ढूंढना, ढूंढ ढांढ, झाड़ाझूड़ी ।

प्रा० नंगामुंगा
नंगामुनंगा
नंगधड़ंग } बोल० बिलकुल नंगा, दिगम्बर, वस्त्रहीन, नंगा, मादरज़ाद ।

प्रा० नंगेसिर बोल० खुले सिर, उघाड़े सिर ।

प्रा० नक (सं० नासिका) पु० नाक, नासिका, नासा ।

प्रा० नकघिसनी बोल० दण्डवत् करने में या आधीनी से ज़मीनपर नाक रगड़ना ।

प्रा० नकचढ़ा बोल० चिड़चिड़ा, खुनसाहा, रिसहा, क्रोधी, जिसका बुरा स्वभाव हो ।

प्रा० नकटा (नाक कटा) गु० नाक कटा हुआ, बिन नाक का, २ निर्लज्ज, बेशरम ।

प्रा० नकसीर (सं० नासिका नाक और शिरा नस) स्त्री० नाक की नस अथवा रग ।

प्रा० नकसीरफूटना
नकसीरचलना } बोल० नाकसे लोहू बहना ।

सं० नकार (न=नहीं, कृ=करना) पु० नहीं, निषेध, न मानना, (अरबी में इनकार) ।

प्रा० नकारना (सं० नकार) क्रि० स० नहीं मानना, निषेध करना, स्वीकार नहीं करना ।

सं० नकुल (न=नहीं, कुल=वंश जिसके) गु० निर्वंश, कुलरहित, जिसके वंश न हो पु० युधिष्ठिरका भाई, पाँच पाण्डवों में का चौथा, २ नेवला जानवर, ३ महादेव ।

प्रा० नकेल (नाक) स्त्री० लकड़ी अथवा लोहे की बनी हुई एक चीज़ जो ऊँटके नाक में डाली जाती है और उस में डोरी डाल कर ऊँट को चलाते हैं ।

प्रा० नक्कू गु० अपयशी, निखट्टू, बदनाम, नकारा, बुरा, नीच, निकम्मा ।

सं० नक्त (नज्=लजाना) रात, रजनी ।

सं० नक्तक पु० लघुवस्त्र, २ मलिन, ३ धूम्रवर्ण, धुमैला रंग ।

सं० नक्र (न=नहीं, क्रम्=दूरजाना) पु० मगर ।

सं० नक्रराज (नक्र + राज) पु० ग्राह, हांगर ।

प्रा० नक्षत्र (नक्ष=पहुँचना व जाना) पु० तारा, नक्षत्र २७ हैं जैसे १ अश्विनी, २ भरणी, ३ कृत्तिका, ४ रोहिणी, ५ मृगशिरा, ६ आर्द्रा, ७ पुनर्वसु, ८ पुष्य, ९ आश्लेषा, १० मघा, ११ पूर्वाफाल्गुनी, १२ उत्तराफाल्गुनी, १३ हस्त, १४ चित्रा, १५ स्वाती, १६ विशाखा, १७ अनुराधा, १८ ज्येष्ठा, १९ मूल, २० पूर्वाषाढ़,

२१ उत्तराषाढ, २२ श्रवण, २३ धनिष्ठा, २४ शतभिष, २५ पूर्वाभाद्रपद, २६ उत्तराभाद्रपद, २७ रेवती।

सं० नक्षत्री (नक्षत्र, अर्थात् जो अच्छे नक्षत्रों में पैदा हुआ हो) गु० भाग्यवान्।

सं० नक्षत्रेश (नक्षत्र + ईश) पु० चन्द्र, चाँद।

सं० नख (न=नहीं, ख=छेद जिसमें, अथवा, नह्=बाँधना) पु० नाखून, नखर, बीस की संख्या, विभाग, गुड़, खाँड़, स्त्री० सीप, शुक्ति।

प्रा० नखशिख से } बोल० शिरसे
नखसे शिखतक } पाँव तक, सब का सब, बिलकुल।

प्रा० नख (फ़ा० नख) पु० पतङ्ग की डोरी।

प्रा० नखत (सं० नक्षत्र) पु० नक्षत्र।

सं० नखमुख पु० नम्रता, २ बाण, धन्वा।

सं० नखायुध (नख + आयुध) गु० व्याघ्र, कुक्कुट, बिल्ली, नृसिंह, मोर।

सं० नखी (नख) गु० फाड़नेवाले वे जानवर जिनके नख और पंजा होते हैं, नखैल।

प्रा० नग पु० नगीना, अँगूठी में जड़ने का पत्थर।

सं० नग (न=नहीं, गम्=चलना) पु० पहाड़, पर्वत, २ वृक्ष, ३ सात की संख्या।

प्रा० नगचाना (सं० निकट) क्रि० अ० पास आना, पहुँचना।

प्रा० नगन (सं० नग्न) गु० नंगा।

सं० नगपति } (नग=पहाड़, पति वा
नगाधिराज } अधिराज=राजा) पु० पहाड़ों का राजा, हिमालय पहाड़, सुमेरु।

सं० नगर (नग=वृक्ष वा पहाड़ अर्थात् जिसमें वृक्ष वा पहाड़ हों) पु० शहर, पुर, पत्तन या पट्टन।

सं० नगरनारी (नगर + नारी) स्त्री० वेश्या, पतुरिया।

सं० नगरी (नगर) स्त्री० पुरी, छोटा शहर।

सं० नग्न (नज्=लजाना) गु० नंगा, उघाड़ा, वस्त्रहीन, बिन कपड़े, पु० नंगा साधु वा भिखारी, बौद्ध वा जैन मत का दिगम्बर।

प्रा० नचवाना } (नाचना) क्रि०
नचाना } स० नाच कराना।

प्रा० नचवैया (नाच) क० पु० नाचनेवाला, नृत्यक।

सं० नट (नट्=नाचना) पु० नटवा, नर्तक, जायाजीवी, नटुआ, नटवर, स्वाँगी, इन्द्रजाली।

प्रा० नटखट (सं० नट) गु० कपटी

---

१ हिमालयो नाम नगाधिराजः।

छली, पाखण्डी, धूर्त, फ़रेबी, फरफन्दी, गँठीला ।

प्रा० नटखटी स्त्री० हरामज़दगी, दग़ाबाज़ी, फ़रेब, छल, कपट, धूर्तता ।

सं० नटन (नट् + अन) भा० पु० नाचना, नृत्य करना ।

सं० नटवर (नट + वर) पु० बड़ा नट, नटवा ।

सं० नटमाया (नट + माया) स्त्री० छलविद्या, बाज़ीगरी, नटका खेल, धोखा, फरफन्द, प्रपञ्च ।

सं० नटी (नट) स्त्री० नटिनी, नटकी स्त्री, २ वेश्या, नाचनेवाली, पतुरिया ।

सं० नत (नम्=झुकना, नवना) र्म्म० पु० झुका हुआ, नमाहुआ, नम्र, नमित ।

प्रा० नतरु (सं० नान्यतर, न=नहीं अन्यतर और प्रकार) क्रि० वि० नहीं तो ।

सं० नताङ्गी (नत=झुक गया है स्तन और जाँघ आदि के भार से अङ्ग शरीर जिसका) स्त्री० स्त्री, नारी, सुन्दरी ।

सं० नति (नम्=झुकना) स्त्री० नवना, झुकना, नमस्कार, प्रणाम ।

प्रा० नतिनी (सं० नप्त्री) स्त्री० दोहती, बेटी की बेटी ।

प्रा० नतैत (नाता) गु० नातेदार, सगा, रिश्तेदार ।

प्रा० नथ, नथनी } (सं० नाथ=पति, अर्थात् पतिके जीने का चिह्न) स्त्री० नाक का गहना, नाक की बाली, एक गहना जो चौड़ा और गोल होता है जिसको वही स्त्री नाक में पहनती है जिसका पति जीता हो ।

प्रा० नथना पु० नाक का छेद ।

सं० नद (नद्=शब्द करना) पु० बड़ी नदी जैसे ब्रह्मपुत्र, शोणभद्र और सिन्धु आदि ।

सं० नदिता क० पु० शब्दकर्त्ता, शब्द करनेवाला ।

सं० नदी (नद्=शब्द करना) स्त्री० बहता हुआ पानी, जलधारा, जल का प्रवाह जैसे गङ्गा यमुना आदि ।

सं० नदीश (नदी + ईश) पु० समुद्र, सागर ।

सं० नदेश (नद + ईश) पु० समुद्र सागर ।

प्रा० ननँद (सं० ननन्दा, न=नहीं, नन्द=प्रसन्न होना, अर्थात् जो बहुत कुछ देने से भी राज़ी नहीं होती है) स्त्री० पति की बहन, ननँदिया, ननँदी ।

प्रा० ननँदिया, ननँदी } (सं० ननन्दा) स्त्री० ननँद, पति की बहन ।

प्रा० ननिहाल (नाना) पु० नाना का घर ।

सं० ननु अव्य० प्रश्न, निश्चय, अवधारण, अनुमति, अनुज्ञा, अनुनय, आमन्त्रण, सम्बोधन, परकृत अविकार, संभ्रम, स्तुति, आक्षेप, उत्प्रेक्षा, विरोधोक्ति ।

सं० नन्द (नन्द्=आनन्द करना, वा प्रसन्नहोना) पु० श्रीकृष्ण का पालनेवाला बाप, आनन्द, हर्ष ।

सं० नन्दन (सं० नन्द्=आनन्द करना, प्रसन्न होना) पु० बेटा, पुत्र, २ इन्द्र का बाग़, गु० सुखदायक, आनन्द देनेवाला ।

सं० नन्दनन्दन (नन्द + नन्दन) पु० नन्द का बेटा, श्रीकृष्ण, नन्दलाल ।

सं० नन्दलाल (नन्द + लाल=प्यारा) पु० नन्द का बेटा, नन्दनन्दन, श्रीकृष्ण ।

सं० नन्दि (नन्द्=आनन्द करना) पु० शिवका द्वारपाल, द्यूतक्रीड़ा, जुआं खेलना ।

सं० नन्दिघोष (नन्दि + घोष) पु० अर्जुन का रथ, बन्दीजनों का शब्द, भाटों की स्तुति ।

सं० नन्दिनी स्त्री० पार्वती, गङ्गा, ननँद, वसिष्ठमुनि की गौ ।

प्रा० नन्दोई
नन्दोसी (सं० ननन्दापति) पु० ननँद का पाति ।

सं० नद्ध (नह्=लगना) कर्म० पु० लगाहुआ, नाधा हुआ ।

प्रा० नन्हा
ननका (सं० न्यून) गु० छोटा, लघु, प्यारा, लाड़ला, पु० छोटा लड़का, बेटा ।

सं० नपुंसक (न=नहीं, पुंसक=पुरुष) पु० हिजड़ा, खोजा, क्लीब, नामर्द, गु० डरपोक, कायर, हेठा ।

फ़ा० नफ़ीरी स्त्री० तुरही, सहनाई, सहनाय ।

सं० नभ
नभस् (नह=बाँधना) पु० आकाश, गगन, आस्मान, २ सावनका महीना, सूर्य, मेघ, वर्षा ।

सं० नभग (नभ=आकाश, गम्=जाना) पु० पखेरू, पक्षी ।

सं० नभगनाथ
नभगेश (नभग=पखेरू, नाथ वा ईश=राजा) पु० गरुड़ ।

प्रा० नभचर (सं० नभश्चर, नभस्=आकाश, चर=चलनेवाला, चर=चलना) पखेरू, पक्षी, २ विद्याधर, ३ मेघ, ४ हवा, पवन, गु० आकाश में चलनेवाला ।

सं० नभोधूम पु० मेघ, वारिद ।

सं० नमः (नम्=नमना) अव्य० नमस्कार, प्रणाम, २ दान ।

सं० नमस्कार (नमस्=प्रणाम, कृ=करना) पु० प्रणाम, दण्डवत् ।

सं० नमित (नम्=झुकना) कर्म० झुकाहुआ, लचाहुआ ।

सं० **नम्र** (नम्=नमना, झुकना) गु० झुकाहुआ, अधीन, विनयी, मिलनसार ।

सं० **नम्रता** (नम्र) भा० स्त्री० आधीनता, विनय ।

सं० **नय** (नी=लेजाना, चलाना, वा पाना) स्त्री० नीति, इन्साफ़ ।

सं० **नयन** (नी=लेजाना, पहुँचाना, वा पाना) पु० आँख, नेत्र, लोचन ।

सं० **नयनपट** (नयन=आँख, पट=पड़दा) पु० पलक ।

प्रा० **नयना** (सं० नयन) स्त्री० आँख की पुतली, आँख का तारा ।

सं० **नयनागर** (नय=नीति, नागर =चतुर) गु० नीति में निपुण, नीति में चतुर अथवा प्रवीण, नीति जाननेवाला ।

सं० **नयनामृत** (नयन + अमृत) पु० अञ्जनविशेष, सुरमा, काजल ।

प्रा० **नया** } (सं० नव) गु० नवेला,
नवा } नवीन, टटका, नूतन ।

प्रा० **नयेसिरसे** बोल० फिरसे, दूसरी वारसे ।

सं० **नर** (नृ=लेजाना वा चलाना) पु० मनुष्य, पुरुष, मर्द, मनुष्यजाति, २ परमेश्वर, ३ नरावतार, अर्जुन ।

सं० **नरक** (नर=मनुष्य, कै=शब्द करना, जहाँ पापी रोते हैं, वा नृ=लेजाना, जहाँ पापी लोग ले जाये जाते हैं) पु० पापों के फल भुगतने की जगह, दोज़ख़ १ तामिस्र २ अन्धतामिस्र ३ रौरव ४ महारौरव ५ कुम्भीपाक ६ कालसूत्र ७ असिपत्रवन ८ शूकरमुख ९ अन्धकूप १० कृमिभोजन ११ सन्दंश १२ तप्तभूमि १३ वज्रकण्टक १४ शाल्मली १५ वैतरणी १६ पूयोद १७ प्राणरोध १८ विशसन १९ लालाभक्ष २० सारमेयादन २१ अवीचिरयःपान २२ क्षारकर्दम २३ रक्षोगणभोजन २४ शूलप्रोत २५ दन्दशूक २६ अवनिरोधन २७ पर्यावर्तन २८ सूचीमुख ।

सं० **नरककुण्ड** (नरक + कुण्ड) पु० वह कुण्ड जिसमें पापीलोग दुःख भुगतने के लिये डाले जाते हैं ८६ हैं वह ब्रह्मवैवर्त्तपुराण में वर्णन किये गये हैं ।

प्रा० **नरकट** } (सं० नलकाण्ड)
नरकल } पु० सरकण्डा, एक प्रकार का बाँस ।

सं० **नरकासुर** (नरक + असुर) पु० एक राक्षस का नाम जो कंस का मित्र था ।

सं० **नरकेशरी** (नर=मनुष्य, केशरी =सिंह) पु० नरसिंह अवतार, विष्णु का चौथा अवतार ।

सं० **नरकान्तक** (नरक + अन्तक) पु० विष्णु ।

सं० **नरकदेवता** स्त्री० अभाग्य,

दृढ़ि, यमराज, चित्रगुप्त ।

सं० नरकामय (नरक + आमय) पु० कोढ़रोग, जिससे शरीर नरक सम होजाय ।

सं० नरङ्ग } पु० नारङ्गी, नारङ्ग,
नारङ्ग } कौला ।

सं० नरनारायण (नर + नारायण) पु० श्रीकृष्ण और अर्जुन का अवतार, दो मुनि ।

सं० नरपति (नर + पति) पु० मनुष्योंका राजा, राजा, महाराज, भूपाल ।

सं० नरपुर (नर + पुर) पु० मर्त्यलोक, पृथ्वी, यह लोक ।

सं० नरमेध (नर=मनुष्य, मेध=यज्ञ) पु० नरबलि, वह यज्ञ जिसमें मनुष्य होमा जाता है ।

प्रा० नरसिंगा (सं० नलशृङ्ग, नल=नली, शृङ्ग=सींग) पु० तुरही, सींगी, एक प्रकार का बाजा ।

सं० नरसिंह (नर + सिंह) पु० विष्णु का चौथा अवतार जो हिरण्यकशिपु को मारने के लिये और प्रह्लाद के बचाने के लिये हुआ था, २ मनुष्यों में श्रेष्ठ मनुष्य, नरश्रेष्ठ ।

प्रा० नरसों पु० आज से चौथा दिन (पहला अथवा पिछला)।

सं० नरहरि (नर=मनुष्य, हरि=सिंह) पु० नरसिंह, विष्णु का चौथा अवतार, २ तुलसीदास के गुरु का नाम ।

सं० नराधम (नर + अधम) पु० मनुष्योंमें नीच, पापी, नीच, कमीना।

सं० नराधिप (नर=मनुष्य, अधिप= =राजा) मनुष्यों का राजा, नरपति, बादशाह ।

प्रा० नरिया पु० खपरा ।

प्रा० नरेटी स्त्री० गला, घाँटी, गर्दन, टेंटुवा ।

प्रा० नरेटीदबाना बोल० गला घोटना ।

सं० नरेन्द्र (नर + इन्द्र) पु० राजा, नरपति ।

सं० नरेश } (नर=मनुष्य, ईश वा
नरेश्वर } ईश्वर=स्वामी) पु० राजा, नरेन्द्र, नरपति ।

सं० नर्तक (नृत्=नाचना) क० पु० नाचनेवाला, नट ।

सं० नर्तकी (नर्तक) क० स्त्री० नाचनेवाली, नटिनी ।

सं० नर्तन (नृत्=नाचना) भा० पु० नाच, नृत्य ।

सं० नर्तनप्रिय गु० जिसको नाचना अच्छा लगे, मोर ।

सं० नर्दक (नर्द्=शब्द करना) क० पु० बोलनेवाला फ़ा० नर्द स्त्री० गोट ।

सं० नर्मद (नर्म=हँसी वा आनन्द, दा=देना) क० पु० सुखद, सुख-

दायक, आनन्दकारी, ख़ुशी देने वाला ।

सं० नर्मदा (नर्म=हँसी वा आनन्द, दा=देनेवाली, दा=देना) स्त्री० एक नदी का नाम जो दक्षिण में है, रेवा, मेकलसुता ।

सं० नल (नल्=बाँधना) पु० सरकंडा, सेंठा, नरकट, नेज़ा, बाँस, २ नली, फोंफी, चोंगा, टोंटा, टोंटी, ३ नाली, प्रणाली, ४ एक राजा का नाम, ५ एक बन्दर का नाम, ६ एक राक्षस का नाम ।

सं० नलकूबर पु० कुबेर के दो बेटे जो नारदमुनि के शापसे पेड़ हो गये थे ।

सं० नलनीर पु० फ़व्वारा ।

सं० नलिन (नल्=बाँधना) पु० कमल, पद्म, २ पानी, ३ सारस ।

सं० नलिनी (नलिन) स्त्री० कमलिनी, कुमुदिनी, २ कमलों का समूह, ३ कमलों से भरा तालाब ।

प्रा० नली (सं० नल) स्त्री० फोंफी, चोंगा, टोंटी, २ नरेटी, साँसी, ३ बंदूक की नाल, ४ टँगड़ी की हड्डी ।

सं० नव (नु=सराहना) गु० नया, नवीन, नूतन, २ नौ संख्या, ९ ।

सं० नवखण्ड (नव=नौ, खण्ड= भाग) पु० भरतखण्ड आदि पृथ्वी के नौ खण्ड ।

सं० नवग्रह (नव+ग्रह) पु० सूर्य आदि नौ ग्रह जैसे १ सूर्य, २ चन्द्र, ३ मङ्गल, ४ बुध, ५ बृहस्पति, ६ शुक्र, ७ शनि, ८ राहु, ९ केतु ।

सं० नवदुर्गा (नव+दुर्गा) स्त्री० दुर्गा की नौ मूर्ति, जैसे १ शैलपुत्री, २ ब्रह्मचारिणी, ३ चन्द्रघण्टा, ४ कूष्माण्डा, ५ स्कन्दमाता, ६ कात्यायनी, ७ कालरात्री, ८ महागौरी, ९ सिद्धिदा ।

सं० नवद्वार (नव+द्वार) पु० शरीरके नौ रस्ते, २ आँखें, २ कान, २ नाकके छेद, सातवाँ मुँह, आठवाँ लिङ्ग, नवाँ गुदा जैसे "नवद्वार का पींजरा यामें पंछी पौन" (कबीर)।

सं० नवनिधि[1] (नव=नौ, निधि=ख़ज़ाना) स्त्री० संपदा, कुबेर का धन, कुबेर का ख़ज़ाना ।

प्रा० नवनी (सं० नवनीत) स्त्री० मक्खन, नैनू ।

सं० नवनीत (नव=नया, नी=ले जाना) पु० मक्खन, माखन, नैनी, नवनी ।

सं० नवबाला (नव=नई, बाला= जवान स्त्री वा लड़की) स्त्री० नवयौवना, सोलह बरस की लड़की।

---

[1] "महापद्मश्च पद्मश्च शंखो मकर-कच्छपौ । मुकुन्द-कुन्द-नीलाश्च खर्वश्च निधयो नव" (इत्यमरव्याख्यायाम्) ।

जवान स्त्री ।

सं० नवम (नव) गु० नवाँ ।

सं० नवमी (नवम) स्त्री० नवमी, नवीं तिथि ।

सं० नवयौवना (नव=नई, यौवना =जवान स्त्री) स्त्री० जवान स्त्री, नववाला, नवोढ़ा ।

सं० नवरत्न (नव + रत्न) पु० नौ जवाहिर (अर्थात् १ हीरा, २ पन्ना, ३ माणिक, ४ नीलम, ५ लहसुनिया, ६ पुखराज, ७ गोमेद, ८ मोती, ९ मूँगा) २ विक्रमादित्य की सभा के नौ पण्डित (१ धन्वन्तरि, २ क्षपणक, ३ अमरसिंह, ४ शंकु, ५ वेतालभट्ट, ६ घटकर्पर, ७ कालिदास, ८ वाराहमिहिर, ९ वररुचि) ३ हाथ में पहनने का एक गहना जिसमें नौरत्न जड़े हों ।

सं० नवरात्र (नव=नौ, रात्र=रातों का समूह) पु० आश्विनसुदी परिवा से ले नवमीतक के नौ दिन रात, आश्विन, चैत, असाढ़ और माघ के शुक्लपक्ष के नौ दिन-रात नवरात्र कहलाते हैं, दुर्गापूजा के नौ दिन ।

सं० नवल (नव=नया, ला=लेना) गु० नया, नवा, नवीन, सुन्दर, मनोहर, पु० एक पौधेका नाम ।

सं० नवशिक्षक (शिक्ष्=सीखना) क० पु० नया पढ़नेवाला, मुबतदी।

सं० नवांश (नव + अंश) पु० नववां भाग ।

प्रा० नवाड़ा (नाव) पु० एक प्रकार की नाव, छोटी नाव ।

प्रा० नवाना (सं० नमन, नम्=झुकना) क्रि० स० झुकाना, नीचे करना, २ वश करना ।

सं० नवीन (नव, नु=सराहना) गु० नया, नवा, नूतन ।

सं० नवोढ़ा (नव+नवीना, ऊढ़ा=स्त्री) स्त्री० नई ब्याही हुई, नई स्त्री, बनी ।

सं० नव्य गु० नया ।

सं० नश्वर (नश्=नहीं दीखना, नाश होना) क० पु० नाश होने वाला, विनाशी, २ हानि करने वाला, हिंसक ।

सं० नष्ट (नश्=नाश होना) क० पु० जो नाश हुआ, भ्रष्ट, विनष्ट, मलमेट, मटियामेट ।

सं० नष्टा स्त्री० व्यभिचारिणी, भ्रष्टा, दुष्टा ।

प्रा० नसाना } (सं० नाशन, नश्=
नसावना } नाश होना) क्रि० स० नाश करना, बिगाड़ना ।

प्रा० नहनी } (सं० नखहरणी) क०
नहरनी } स्त्री० नख काटने का औज़ार ।

प्रा० नहलाना (न्हाना) क्रि० स०

स्नान कराना, अङ्ग धोना ।

प्रा० नहान (न्हाना) पु० स्नान ।

प्रा० नहाना } (सं० स्नान, वा
न्हाना } अवगाहन) क्रि० अ० स्नान करना, शरीर शुद्ध करना, अङ्गधोना ।

प्रा० नहानी (न्हाना) कपड़ों से होने का समय, रज फूल ।

प्रा० नहारुआ पु० नार, जाँघ में अथवा और कहीं शरीर में एक सूतसा रोग जो निकलता है ।

प्रा० नहियर पु० पीहर, मैका ।

प्रा० नहीं (सं० नहि, नह्=बाँधना, रोकना) क्रि० वि० निषेध, नमना, नाँह ।

प्रा० नाइन स्त्री० नाई की स्त्री ।

प्रा० नाई } (सं० नापित) पु०
नाऊ } हज्जाम, हजामत बनाने वाला, उस्ता ।

प्रा० नाई स्त्री० भाँति, तरह ।

प्रा० नाँदिया (सं० नन्दि) पु० महादेव का वाहन बैल ।

प्रा० नांव } (सं० नाम) पु० नाम
नाऊं } संज्ञा, २ यश, नामवरी ।

प्रा० नांह (सं० न, वा नहि) क्रि० वि० नहीं, निषेध, न ।

प्रा० नाक (सं० नासिका) पु० स्त्री० नासा, नासिका, सूँघने की इन्द्रिय ।

प्रा० नाक कटाना बोल० अपमान करना, अनादर करना, पानी उतारना, २ बदनाम होना ।

प्रा० नाककटी होना बोल० अपना मान खोना, अपनी बड़ाई को मिटाना, बदनाम होना ।

प्रा० नाक का बाल बोल० जिस का बहुत मान हो, प्यारा, जिसका बहुत आदर किया जाय ।

प्रा० नाक चढ़ाना बोल० क्रोधित होना, अप्रसन्न होना, गुस्सा होना, नाराज़ होना ।

प्रा० नाक रखना बोल० अपना यश बना रखना, अपनी इज़्ज़त को बना रखना ।

प्रा० नाक सकोड़ना बोल० नाक चढ़ाना, अप्रसन्न होना, नाराज़ होना ।

सं० नाक (न=नहीं, अक=दुःख अर्थात् जहाँ दुःख नहीं है और अक=बना है, अ=नहीं और क= सुख, अर्थात् सुख नहीं दुःख) पु० स्वर्ग, देवलोक ।

सं० नाकपति (नाक=स्वर्ग, पति =राजा) पु० स्वर्ग का राजा, इन्द्र ।

सं० नाकनटी (नाक=स्वर्ग, नटी= नाचनेवाली) स्त्री० स्वर्ग की

---

१ उणाद्यन्तं कृदन्तं च तद्धितं च समासजम् । शब्दानुकरणं चैव नाम पञ्चविधं स्मृतम् ॥ १ ॥

अप्सरा ।

प्रा० नाका पु० रस्ते का अन्त, २ सुई का छेद या बेह, ३ गली, राह, नाकेबन्दी, बोल० रस्ता बन्द करना ।

प्रा० नाका (सं० नक्र) पु० मगर, घड़ियाल, हांगर ।

सं० नाग (न=नहीं, अग=ठहरा हुआ) पु० कश्यपमुनि की स्त्री कद्रू के बेटे जिन का मुँह मनुष्य कासा और फण और पूंछ सांप कीसी होती है जो पाताल में रहते हैं और देवता कहलाते हैं, साँप, सर्प, २ हाथी, ३ नागकेशर ।

सं० नागकन्या (नाग + कन्या) स्त्री० नागों की अथवा पाताल के देवताओं की लड़कियाँ जो बहुत रूपवती और सुन्दर होती हैं ।

सं० नागकेशर पु० फूलों के एक पेड़ का नाम ।

सं० नागदन्त, नागदन्तक (नाग=हाथी, दन्त=दाँत) पु० हाथीदाँत, २ दो काँटों का टेकन जो हाथी के दाँत की तरह होता है, स्त्री० खूँटी ।

सं० नागपञ्चमी (नाग + पञ्चमी) स्त्री० सावनसुदी पञ्चमी जिस दिन हिन्दू लोग साँप की पूजा करते हैं ।

सं० नागपाश (नाग=साँप, पाश=फन्दा) स्त्री० वरुण का अस्त्र, फन्दा, फाँसी, फाँस ।

प्रा० नागफाँस (सं० नाग + पाश) स्त्री० वरुण का अस्त्र, फन्दा, फाँसी, पाश ।

प्रा० नागबेल (सं० नागवल्ली) स्त्री० पान की बेल ।

सं० नागर (नगर=शहर) गु० नगर का वासी, चतुर, प्रवीण, २ गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति ।

सं० नागरी (नागर) स्त्री० चतुर स्त्री, २ नागर की स्त्री, ३ देवनागरी अक्षर वा भाषा ।

सं० नागरिपु (नाग=हाथी, रिपु=वैरी) पु० सिंह, शेर, बाघ ।

प्रा० नागल (सं० लाङ्गल, लगि=मिलना वा जाना) पु० हल ।

सं० नागलोक (नाग + लोक) पु० नागों का लोक, पाताल ।

प्रा० नागा (सं० नग्न) पु० नंगे संन्यासी ।

प्रा० नागिन, नागिनी (सं० नागी) स्त्री० नागकीस्त्री, साँपिनी, सर्पिणी ।

प्रा० नाँघना (सं० लङ्घन) क्रि० अ० लाँघना, पार होना, उतरना, कूदना ।

प्रा० नाच (सं० नाट्य, वा नृत्य) पु० नाचना, नृत्य, नाट्य ।

प्रा० नाचनचाना बोल० खिझाना,

चिढ़ाना, सताना ।

फ़ा० नाज़ नखरा, घमण्ड, मान ।

सं० नाट (नट्=नाचना) पु०कर्णाटक देश, नाच, नृत्य ।

सं० नाटक (नट्=नाचना) क०पु० एक प्रकार का काव्य जिसमें नट नटी के खेल की रीति पर वर्णन होताहै जैसे "शकुन्तलानाटक" "विक्रमोर्वशी" "वेणीसंहार" "उत्तर रामचरित आदि", २ नट, नाचनेवाला ।

सं० नाटन भा० पु० नाचना, नर्तन ।

प्रा० नाटा गु० बावना, ठिगना, पस्तक़द ।

सं० नाटेय पु० नटीसुत, वेश्यापुत्र ।

सं० नाट्य (नट) पु० नटों का काम जैसे नाचना, गाना और बजाना ।

सं० नाट्यशाला (नाट्य + शाला) स्त्री० नाचघर, रङ्गशाला, जहाँ नाटक होता हो ।

प्रा० नाट पु० नास्ति, शून्यता, अभाव, नाश ।

सं० नाडि } (सं० नड=गिरना)
नाडी } स्त्री० धमनी, शिरा, नब्ज़, नस ।

सं० नाडीव्रण पु० नसोंका घाव, नासूर ।

प्रा० नातर (सं० नान्यतर, वा नान्यथा, न=नहीं, अन्यतर वा अन्यथा=और प्रकार) क्रि० वि० नहीं तो ।

प्रा० नाता (सं० ज्ञातेय, ज्ञाति=जाति भाई) पु० सम्बन्ध, अपनायत, रिश्तेदारी ।

प्रा० नातिन (सं० नप्त्री) स्त्री० बेटी की बेटी ।

प्रा० नाती (सं० नप्ता, न=नहीं, पत्=गिरना, अर्थात् नाती के होने से पितर अर्थात् पुरुषे नीचे नहीं गिरते हैं) पु० बेटी का बेटा, दोहता ।

सं० नाथ (नाथ्=माँगना, जिससे माँगते हैं) पु० स्वामी, मालिक, पति, धनी, २ योगियों की पदवी जैसे गोरखनाथ, गम्भीरनाथ, सुमेरुनाथ आदि कहलाते हैं ।

सं० नाथ (नाथ=सताना, दुःख देना) स्त्री० रस्सी जो बैल के नाक में डाली जाती है ।

प्रा० नाथना (सं० नाथन, नाथ=सताना वा दुःख देना) क्रि० स० बैलकी नाक छेदना ।

सं० नाद (नद्=शब्द करना) पु० शब्द, गर्ज, आवाज़, ध्वनि, मिट्टी का बर्तन ।

सं० नादन (नाद + अन) भा०पु० शब्द करना, गर्जना, नाद करना ।

प्रा० नानक पु० सिखों के मत का चलानेवाला ।

प्रा० नानकपन्थी, नानकशाही } पु० नानक के मत को मानने वाला, सिख ।

सं० नाना अव्य० अनेक प्रकार, भाँति भाँति, उभयार्थ ।

प्रा० नाना पु० माँ का बाप, मातामह ।

सं० नानार्थ (नाना + अर्थ) पु० बहुत अर्थ, अनेक प्रयोजन, बहुत आशय ।

सं० नान्दी (नद्=शब्द करना) स्त्री० देवता पितर जहाँ आनन्द का शब्द करें, प्रशंसा, नक़ारा, नगारा, स्तुतिसंयुक्त आशीर्वाद ।

सं० नान्दीमुख पु० वृद्धिश्राद्ध, वृद्धिश्राद्धभुक् पितृगण, कुवाँ के ढाँपने का पट, कूपमुखबन्धन ।

प्रा० नाप (सं० मापना, वा नापना) पु० माप, परिमाण, नापजोख, बोल० नापतौल ।

प्रा० नापना (सं० मापनं, मा=मापना) क्रि० स० मापना, परिमाण करना ।

सं० नापित पु० नाई, हज्जाम ।

सं० नाभि (नह=बाँधना) स्त्री० नाभ, नाभी, तोंदी, तुण्डी, कस्तूरी, पु० नाम राजा का ।

सं० नाम (नम्=पुकारना) पु० नावँ, संज्ञा, पदवी, २ यश, ख्याति ।

सं० नामकरण (नाम + करण) पु० लड़के का नाम रखना, नाम देना, लड़के के पैदा होनेके पीछे दशवें दिन नाम रखने का संस्कार अर्थात् रीति ।

प्रा० नामकरना बोल० नामी होना, नामवर होना, यशस्वी होना, विख्यात होना, प्रसिद्ध होना ।

प्रा० नाम डुबोना बोल० अपना यश खोना, बदनाम होना ।

प्रा० नाम देना बोल० नाम रखना ।

प्रा० नाम धरना बोल० नाम रखना, नाम ठहराना, किसी नाम से पुकारना, ख़राब करके कहना, बुरा नाम रखना ।

सं० नामधेय पु० नाम, संज्ञा, नामवाचक ।

प्रा० नाम निकालना बोल० नामी होना, नाम करना, २ दोषी का नाम निर्णय करना ।

प्रा० नाम रखना बोल० नाम धरना, नाम देना ।

प्रा० नाम लेकर माँग खाना बोल० दूसरे मनुष्यके नाम से भीख माँग खाना ।

प्रा० नाम लेना बोल० सराहना, प्रशंसा करना, २ परमेश्वर का नाम लेना, जप करना, माला फेरना ।

प्रा० नामहोना बोल० यश होना, यश फैलना ।

प्रा० नामी (सं० नाम) गु० विख्यात, यशस्वी, उजागर ।

प्रा० **नामी होना** बोल० नामवर होना, प्रसिद्ध होना, विख्यात होना, उजागर होना ।

सं० **नायक** (नी=लेजाना वा चलाना) पु० अगुवा, मुखिया, सरदार, प्रधान, २ सेनापति, थोड़ी सी सेना का सरदार, ३ प्रेमाभिलाषी पुरुष, ४ नाचने और गाने में निपुण पुरुष ।

प्रा० **नायन** स्त्री० नाई की स्त्री ।

सं० **नायिका** (नायक) स्त्री० नायक की स्त्री, जवान स्त्री वा लड़की, २ कुटनी, दूती, ३ रूपवती स्त्री, सुन्दर स्त्री, साहित्य में नायिका तीन प्रकार की हैं (१ स्वकीया जो केवल अपने पतिही से प्रेम करे, २ परकीया जो पराये पुरुषसे प्रीति करे, ३ सामान्या जो धन लेकर किसी से प्रीति करे) जैसे दोहा "स्वकिया ब्याही नायिका, परकीया परवाम। सो सामान्या नायिका, जाके धन सों काम" अवस्था भेद से प्रत्येक नायिका आठ प्रकारकी हैं(१ प्रोषितपतिका, २ खण्डिता, ३ कलहान्तरिता, ४ विप्रलब्धा, ५ उत्कण्ठिता, ६ वासकशय्या, ७ स्वाधीनपतिका, ८ अभिसारिका)।

प्रा० **नार** (सं० नारी) स्त्री० लुगाई, स्त्री, २ (सं० नाल) बंदूक की नाल वा नली, ३ कमलों की नाल, ४ गरदन ।

प्रा० **नारकी** (नरक) गु० नरकवासी, नरक भोगनेवाला जीव, २ नरक।

प्रा० **नारंगी** }
नारंज } (सं० नारङ्ग) स्त्री० केवला, कौला, एक प्रकार का खटमीठा फल ।

सं० **नारद** (नार=ज्ञान, नरसमूह या जलसमूह, दा=देना या खण्डित करना) पु० एक ऋषिका नाम, ब्रह्मा का बेटा और दश देवऋषियों में का एक देवऋषि ।

सं० **नाराच** (नार=मनुष्यों का समूह, आ=चारों ओर से, चम्=खाना) पु० तीर, बाण ।

सं० **नारायण** (नार=मनुष्यों का समूह, अयन=स्थान, अर्थात् जिन में सब मनुष्य रहते हैं, वा नार=पानी, अयन=स्थान, अर्थात् जो क्षीरसमुद्र में सोते हैं) पु० विष्णु का नाम, आदिपुरुष ।

सं० **नारायणी** (नारायण) स्त्री० विष्णु की पत्नी, लक्ष्मी, २ गङ्गा, ३ शतावरी ।

सं० **नारिकेल** (नारि=डाँठी, क=हवा वा पानी, इल=चलना, अर्थात् जिसकी डाँठी हवा से वा पानीसे बढ़ती है) पु० नारियल, श्रीफल।

प्रा० **नारियल** (सं० नारिकेल) पु० श्रीफल, नारिकेल, एक फल का नाम ।

सं० **नारी** (नर) स्त्री० लुगाई, स्त्री, औरत, अबला, वनिता, ज़न ।

प्रा० **नारू** नहारु शब्द को देखो ।

सं० **नाल** (नल्=बाँधना व चमकना) स्त्री० नली, २ बंदूक़ की मुहरी वा नली, ३ मृणाल, कमलकी डाँठी, डाँडी, जुआँकी चिराग़ी ।

प्रा० **नाला** पु० नहर, छोटी नदी, सोता, २ पनाला, मोरी ।

प्रा० **नालकी** स्त्री० एक प्रकार की पालकी ।

सं० **नालिक** (नाल्+इक) क० स्त्री० बन्दूक़, भुशुण्डी ।

प्रा० **नाव** (सं० नौ) स्त्री० नौका, डोंगी, तरणी ।

प्रा० **नावना**
नाना } (सं० नमन, नम्=झुकना) क्रि० स० झुकाना, निहुराना, शिरझुकाना, नमस्कार करना ।

प्रा० **नावरि** स्त्री० नाव झुकाना, नाव फेरना, नाव पर का खेल ।

सं० **नाविक** (नौ) क०पु० माँझी, कर्णधार, केवट, मल्लाह ।

सं० **नाश** (नश्=नाश होना) भा० पु० ध्वंस, बरबादी, नष्ट होना, क्षय, हानि, बिगाड़ ।

सं० **नाशक** (नश्=नाश करना) क० पु०नाशकरनेवाला, उजाड़ू, बिगाड़ करनेवाला, हानि करने वाला ।

सं० **नाशन** (नाश्+अन) भा० पु० नाश करना, बिगाड़ देना, उड़ा देना ।

सं० **नाशवान्** क० पु० नाश होने वाला ।

सं० **नाशनीय**
नाशितव्य
नाश्य } कर्म० पु० नाश करनेयोग्य, उजाड़ने लायक़ ।

सं० **नाशी** (नाश्+ई) क० पु० नाश करनेवाला, उड़ाऊ, उजाड़ू ।

प्रा० **नास** (सं० नाश) पु० नाश, २ (सं० नस्य, नासा=नाक) स्त्री० हुलास, सुँघनी ।

सं० **नासमझ** गु० अबोध, अज्ञान ।

प्रा० **नासना** (सं० नाश) क्रि० अ० भागना, पलाना, पीठ देना, २ क्रि० स० नाश करना ।

सं० **नासा**
नासिका } (नास्=शब्द करना) स्त्री० नाक, सूँघने की इन्द्रिय ।

सं० **नासीर** (नास्=शब्द करना) पु० सेना का मुख, आगे चलने वाली सेना ।

सं० **नास्ति** (न=नहीं, अस्ति=है, अस्=होना) नहीं है, नाहीं, अभाव ।

सं० **नास्तिक**[1] (नास्ति=नहीं है

---

[1] नास्ति परलोके मतिर्यस्येति नास्तिकोऽनीश्वरभाषी भाषित इति ॥

अर्थात् परलोक और ईश्वर वा सृष्टि का कर्ता नहीं है ऐसा कहनेवाला) पु० ईश्वर और परलोक को नहीं माननेवाला, अनीश्वरवादी ।

सं० **नास्तिकवाद** भा० पु० ईश्वर को न मानना, नास्तिकों का झगड़ा, कुफ़्र की बातें ।

सं० **नास्तित्व** भा० पु० अभाव, शून्यता, नाठ ।

प्रा० **नाह** (सं० नाथ) पु० स्वामी, मालिक, नाथ, पति ।

प्रा० **नाहर** पु० बाघ, शेर ।

प्रा० **नाहिं** } (सं० नहिं) क्रि०वि०
नाहीं } नहीं, न ।

सं० **नि** उपस० नहीं, बिन, रहित, २ नीचे, ३ नित्य, सदा, ४ हास, ५ निश्चय, ६ अच्छीतरह से, सब तरहसे, ७ बीच में, मध्य, भीतर, ८ बाहर, ९ क्षेप, १० कौशल, ११ आश्रय, १२ दान, १३ मोक्ष, १४ भाव, १५ बन्धन, १६ स्थापन, १७ निवेश ।

सं० **निःशङ्क** (निर्=नहीं, शङ्का=डर) गु० निडर, निर्भय ।

सं० **निःशेष** (निर्=नहीं, शेष=बाक़ी) गु० पूरा, समाप्त, जहाँ कुछ नहीं बचे ।

सं० **निःश्वास** (निर्=बाहर, श्वास =साँस) पु० मुँह और नाक से बाहर निकली हुई हवा, पवन, साँस, प्राणवायु, २ पछतावा, हाय, ठण्ढी साँस, लम्बी साँस ।

सं० **निःसंदेह** (निर्=बिन, संदेह =शक) गु० बिन संदेह, निश्चय, बेशक ।

सं० **निःसरण** (निर् + सृ=जाना) भा० पु० निकलना, द्वार, मार्ग, मृत्यु, उपाय, मोक्ष, निर्गम ।

सं० **निःसारण** भा० पु० निकालना, निछावर, घरके निकलने का दरवाज़ा ।

सं० **निःस्पृह** } (निर् वा नि=नहीं,
निस्पृह } स्पृहा=इच्छा) गु० जिसको किसी बात की इच्छा न हो, इच्छारहित, अनिच्छुक, बेख़्वाहिश ।

सं० **निःस्वादु** (निर्=बिन, स्वादु=रस) गु० बेस्वाद, बेरस, फीका, अलोना ।

सं० **निकट** (नि=पास, कट=जाना) क़रीब, पास, नगीच, नज़दीक, समीप ।

सं० **निकटस्थ** (निकट + स्था) क० पु० पास रहनेवाला, क़रीबी, नज़दीकी ।

प्रा० **निकण्टक** (सं० निष्कण्टक) गु० अकण्टक, बिनशत्रु, आराम से, सुखी, बेख़रख़शा ।

सं० **निकन्द** } (नि=नहीं, कन्द=
निकन्दन } जड़) पु० नाश

२ नाश करनेवाला, उखड़ा हुआ।

प्रा० निकम्मा (सं० निष्कर्म, निर्=बिन, कर्म=काम) गु० जो कुछ काम का न हो, बेकाम ।

सं० निकर (नि, कॄ=बिखेरना, फैलना) पु० समूह, भीड़भाड़ ।

प्रा० निकलना (सं० नि, कस्=जाना) क्रि० अ० बाहरआना, बाहरजाना, निकसना, फटना, उत्पन्न होना, बढ़ आना ।

प्रा० निकलचलना बोल० भागना, टलजाना, २ बढ़चलना, आगे निकलना, ३ बहुत बोलना अथवा अपना गुण दिखलाना ।

प्रा० निकलजाना बोल० भाग जाना, चलाजाना ।

प्रा० निकलपड़ना बोल० बाहर आजाना ।

प्रा० निकलभागना बोल० भाग जाना ।

प्रा० निकसना (सं० नि, कस्=जाना) क्रि० अ० निकलना, बाहर आना ।

प्रा० निकाई (फ़ा० नेक) भा० स्त्री० शोभा, भलाई, अच्छाई ।

सं० निकाम (नि=नहीं, कम्=चाहना) गु० जिसको किसी बात की इच्छा न हो, इच्छारहित, निःस्पृह, बेतमअ़, कामनारहित, क्रि०वि० आपसे, इच्छासे, मनसे ।

सं० निकाय (नि, चि=इकट्ठाकरना) पु० समूह, २ घर, स्थान, शरीररहित, परमात्मा ।

प्रा० निकाल (निकालना) पु० निकास, निसार, बाहर आना, २ उपाय, युक्ति, जोड़, तोड़ ।

प्रा० निकालडालना बोल० काटना, काट डालना, ख़ारिज कर देना, अलग करना ।

प्रा० निकालदेना बोल० छुड़ा देना, बाहर करना, अलग कर देना, दूरकरना ।

प्रा० निकाललाना बोल० लेआना, बचालाना, ढूँढ़लाना ।

प्रा० निकाललेना बोल० लेजाना, उखाड़लेना, काढ़लेना, छाँटलेना।

प्रा० निकालना } निकासना } (सं०निष्कासन, नि,कस्=जाना) क्रि० स० बाहरलाना, बाहर करना, ले लेना, उखाड़ना, प्रकट करना, काढ़ना, बनाना ।

सं० निकृष्ट (नि=नीचे, कृष्=खैंचना) र्म०पु०नीच, अधम, तुच्छ, जाति से निकाला हुआ ।

सं० निकेत } निकेतन } (नि=अच्छी तरह से, कित्=रहना,बसना) धि० पु० घर, स्थान ।

सं० निक्षिप्त (नि=नीचे, क्षिप्=फेंकना) र्म० फेंका हुआ, डाला हुआ, छोड़ा हुआ, रक्खा हुआ ।

सं० निक्षेप कर्म० पु० धरोहर, अमानत, प्रक्षेप, न्यास ।

प्रा० निखट्टू गु० सुस्त, आलसी, उड़ाऊ, निर्दयी, कठोर, निठुर, निकम्मा ।

सं० निषङ्ग पु० तरकश, तूण ।

प्रा० निखरना क्रि० अ० साफ़ होना, चमकना, उजलना, उजला होना, फर्छा होना ।

सं० निखर्व पु० अधिक, दीर्घ, ह्रस्व, बौना, दश खर्ब ।

प्रा० निखारना क्रि० स० मैल छाँटना, साफ़ करना, उजला करना, फर्छा करना ।

सं० निखात (नि, खन्=खोदना) कर्म० पु० खत्ता, गर्त, ख़न्दक़ ।

सं० निखिल (नि=नहीं, खिल=शेष, बाक़ी) गु० पूरा, सम्पूर्ण, सब, सारा ।

सं० निगड़ पु० बेड़ी, हथकड़ी, शृङ्खला, ज़ंजीर, आँदू, मोटी जंजीर ।

सं० निगड़ित (नि, गल=बाँधना) कर्म० पु० बँधा हुआ, कसा हुआ ।

सं० निगद (नि, गद्=कहना) भा० पु० कहना, औषध ।

सं० निगदित कर्म० पु० कथित, कहाहुआ ।

सं० निगम (नि, गम्=जाना) पु० वेद, पवित्र लेख ।

सं० निगमनिवासी (निगम=वेद, निवासी=रहनेवाला) पु० वेदों में रहनेवाला, विष्णु, २ ब्रह्मा ।

प्रा० निगलना (सं० नि, गल्=खाना, वा गॄ=निगलना) क्रि० स० लीलना, गले उतारना, घोंटना, खा जाना, गट करना ।

सं० निगूढ़ (नि + गूढ़) गु० गहरा, सूक्ष्म, गम्भीर, गुप्त, छिपा हुआ ।

प्रा० निगोड़ा (नि=नहीं, गोड़=पाँव, तो इसका अक्षरार्थ हुआ बिन पैर का) गु० निकम्मा, अकर्मी, २ कुकर्मी, दुष्ट, चण्डाल ।

सं० निग्रह } (नि, ग्रह=लेना) भा०
निग्रहण } पु० रोंक, विरोध, २ कलह, युद्ध, भर्त्सन, जलाना, ३ मर्यादा, ४ पराभव, ५ मानखण्डन, ६ चिकित्सा, ७ हठ, ८ क़ैद, बन्धन, ९ घुड़की, धमकी, १० रोष ।

सं० निघण्टु (नि, घट्=इकट्ठा करना) पु० औषधकोषसंग्रह, औषधों का गुण दोषसूचकग्रन्थ ।

सं० निचय } (नि, चि=चुनना,
निचाय } इकट्ठा करना) पु० राशि, ढेर, समूह, समुच्चय ।

प्रा० निचन्त } (सं० निश्चिन्त)
निचिन्त } गु० बे फ़िक्र, बे सोच, अशोची, सावधान ।

प्रा० निचितहोना बोल० काम पूरा करना, निबटाना, बे फ़िक्र

होना, फ़ुरसत पाना ।

प्रा० निचाई (नीच) स्त्री० नीचपन, तुच्छता ।

प्रा० निचोड़ (निचोड़ना) पु० किसी काम का अन्त, सिद्धान्त, नतीजा, निष्पत्ति, बोझ, भार, वह चीज़ जिस पर कोई दूसरी चीज़ ठहरे ।

प्रा० निचोड़ना क्रि० स० गीले कपड़ेसे पानी निकालना, मरोड़ना, दबाना, गारना, पेरना ।

प्रा० निछावर स्त्री० उतारा, बलिदान, क़ुरबान, बलिहारी ।

सं० निज (नि, जन्=पैदा होना) गु० सर्वना० अपना, स्व, आपका, आत्मीय ।

सं० निजगति स्त्री० अपनी दशा, अपनी हालत ।

सं० निजवृत्ति स्त्री० अपनी जीविका, अपना पेशा ।

सं० निजतन्त्र पु० स्वतन्त्र, स्ववश, खुदमुख़्तार ।

प्रा० निठल्ला गु० निकम्मा, सुस्त, आलसी ।

प्रा० निठुर (सं० निष्ठुर) गु० कठोर, निर्दय, कठिन, बड़ा क्रूर, जिसका दिल पत्थर सा कड़ा हो ।

प्रा० निठुरता } (सं० निष्ठुरता)
निठुराई } भा० स्त्री० कठोरता, निर्दयता, कड़ापन, बेरहमी ।

प्रा० निडर (सं० निर्दर, निर्=नहीं, दृ=डरना) गु० निर्भय, निधड़क, निःशङ्क, ढीठ, बेडर, अशङ्क, बेख़ौफ़ ।

प्रा० निढाल } (सं० निर्दोल, निर्
निढोल } =नहीं, दुल्=हिलाना) गु० अचेत, सूनसान, निश्चल, अचल ।

प्रा० नित (सं० नित्य) क्रि० वि० सदा, सर्वदा, निरन्तर, हमेश, हमेशह, रोज़ रोज़ ।

प्रा० नितउठ } बोल० सदा, नि-
नितउठके } रन्तर, रोज़ रोज़, हमेशह, हरदम, हमेश ।

प्रा० निततनित बोल० सदा, नित उठ, हरदम, रोज़ रोज़, निरन्तर, हमेशह ।

सं० नितम्ब (नि=नीचे, तम्ब=जाना, वा स्तम्भ=ठहरना) पु० कमरके नीचे का भाग, पुट्ठा, कूला, चूतड़ ।

प्रा० नितप्रति (सं० प्रतिनित्य, प्रति=हर एक, नित्य=सदा) क्रि० वि० नित नित, नितउठ, सदा, हररोज़, रोज़ रोज़, हमेशह ।

सं० नितान्त पु० एकान्त, अतिशय, निरन्तर ।

सं० नित्य (नि=निश्चय, अर्थात् जो निश्चयही हो) क्रि० वि० सदा, सर्वदा, नित, हमेशह, सनातन, निरन्तर, लगातार, मामूली ।

सं० नित्यकर्म (नित्य=सदा का,

कर्म=धर्म का काम) पु० स्नान, सन्ध्या, वन्दन, तर्पण, पूजा, जप, तप आदि षट्कर्म, हर एक दिन का अवश्य करने योग्य काम ।

सं० **नित्यानित्य** (सं० नित्य + अनित्य) क्रि० वि० निरन्तर, हमेशा, हमेशगी, जावेदानी ।

सं० **नित्यानन्द** (नित्य + आनन्द) पु० सदासुख, सदाहर्ष ।

प्रा० **निथरा** गु० फर्छा, स्वच्छ, निर्मल ।

प्रा० **निथारना** क्रि० स० ढालना, उझलना, २ निखारना, पानी को अथवा और किसी रसको साफ़ करना, निर्मल करना ।

प्रा० **निदरना** (सं० निरादर) क्रि० स० निरादर करना ।

सं० **निदर्शन** (नि, दृश्=दिखाना) पु० उदाहरण, दृष्टान्त, प्रमाण ।

सं० **निदाघ** (नि, दह्=जलाना, नाश करना) पु० ग्रीष्मकाल, ग्रीष्म ऋतु, घाम, उष्ण, पसीना ।

सं० **निदान** (नि=निश्चय, दा=देना) क्रि० अ० अन्त में, पीछे, पु० आदिकारण, मूलकारण, सबूत, हुक्म, नज़ीर ।

सं० **निदेश** (नि, दिश्=हुक्मदेना) पु० आज्ञा, हुक्म, निकट, भाजन, बर्तन ।

सं० **निद्रा** (नि, द्रा=सोना) स्त्री० नींद ।

सं० **निद्रालु** (निद्रा) गु० निन्दालु, उँघासा, निंदासा, जिसको नींद आती हो ।

सं० **निद्राशन** (निद्रा + अशन) पु० सोना और खाना, ख़्वाब व खुर ।

सं० **निद्रित** कर्म० पु० सोया हुआ, नींदमें भराहुआ ।

प्रा० **निधड़क** (सं० निर्दर, निर्=नहीं, दृ=डरना) गु० निडर, निर्भय, अशंक ।

सं० **निधन** (नि, हन्=मारना) पु० मौत, मरण, मृत्यु, २ (नि=नहीं, धन=दौलत) गु० निर्धन, कंगाल, ग़रीब ।

सं० **निधनता** (निधन) स्त्री० कंगालपन, ग़रीबी ।

सं० **निधान** (नि=भीतर, धा=रखना) पु० घर, आधार, स्थान, जगह, ठाँव, २ कुबेरका भण्डार, ख़ज़ाना, निधि ।

सं० **निधि** (नि=भीतर, धा=रखना) पु० कुबेर का भण्डार, ख़ज़ाना, संपदा, कोष, २ आधार, जगह, स्थान, घर, आसरा ।

सं० **निनीषा** (नी=प्राप्त करना, पैदा करना) स्त्री० लेने की इच्छा, हासिल करने का इरादा ।

सं० **निनीषु** क० पु० प्राप्ति की इच्छा करनेवाला ।

सं० **निनेता** क० पु० सरदार, नायक ।

सं० **निन्दक** (निन्द्=बुराई करना) क० पु० निन्दा=करनेवाला, बुराई करनेवाला, हजो करनेवाला ।

प्रा० **निन्दना** (सं० निन्दन, निन्द्=

बुराई करना) क्रि० स० कलङ्क लगाना, दूषना, बुरा कहना, निन्दा करना ।

सं० निन्दा (निन्द्=निन्दा करना) स्त्री० बुराई, कलङ्क, दोष, अपवाद, कुत्सा, धिक्कार ।

सं० निन्दित (निन्द्=निन्दा करना) त्रर्प० पु० दोष लगाया हुआ, दूषित, बुरा, बदनाम ।

सं० निन्द्य (निन्द्=निन्दा करना) त्रर्प० पु० निन्दा के योग्य, बुराई करनेके लायक़ ।

सं० निन्द्यकर्म पु० कुत्सितकर्म, बुरा काम ।

प्रा० निन्नानबे (सं० नवनवति, नव=नौ, नवति=नब्बे) गु० नब्बे और नौ, ९९ ।

प्रा० निन्नानबे के फेर में पड़ना बोल० धन के इकट्ठा करनेही में लगा रहना, २ दुःख में फँसना ।

प्रा० निपट गु० बहुत, अधिक, अत्यन्त ।

सं० निपतन (नि=नीचे, पत्=गिरना) भा० पु० नीचे गिरना ।

सं० निपात[1] (नि=नीचे, पत्=गिरना) भा० पु० गिरना, मौत, मृत्यु, मरण, २ व्याकरण में च आदि और प्र आदि अव्यय ।

सं० निपातक (निपात् + अक) नाशक, उजाड़नेवाला, ढहानेवाला ।

प्रा० निपातना (सं० निपात) क्रि० स० गिराना, नाशकरना, मारना ।

सं० निपात्त त्रर्प० पु० नाश किया, उजाड़ दिया ।

सं० निपातित त्रर्प० पु० अधःपतित, निक्षिप्त, नीचे गिरा, उजाड़ा हुआ ।

सं० निपान (नि + पा=पीना) धि० जलाधार, चरही, कुएँका चहबच्चा, दोहनी, दूध दुहने का पात्र, कठरा ।

सं० निपीडन (नि + पीड=मारना, मथना) भा० पु० पीड़ा देना, तकलीफ़ देना ।

सं० निपीडित त्रर्प० पीड़ा दिया गया, घातित, निचोड़ा गया ।

सं० निपुण (नि + पुण्=पवित्र होना) गु० प्रवीण, चतुर, बुद्धिमान् ।

प्रा० निपुणाई भा० स्त्री० चतुराई, अक़्लमन्दी ।

प्रा० निपूता (सं० निष्पुत्र) गु० जिसके लड़का न हो, पुत्रहीन, निःसन्तान, बे औलाद, अनपत्य ।

प्रा० निबड़ना } (सं० निवर्तन)
निबटना } क्रि० अ० होचुकना, निपटना, ख़र्च होना, नाश होना, पूरा होना, ख़तम होना ।

सं० निबन्धन (बन्ध=बाँधना) भा०

---

[1] निपाताश्चोपसर्गाश्च धातवश्चेति ते त्रयः । अनेकार्थाः स्मृताः सर्वे पाठस्तेषां निदर्शनम् ॥

पु० बन्धन, बन्धेज, रोक, क़ैद ।

सं० निबन्ध भा० पु० प्रमाण, बन्धन, प्रबन्ध, कारण, आनाह रोग, मूत्रादिरोग, ग्रन्थ की वृद्धि, संग्रहविशेष, माहवारी, सालीना, दैवीसम्पत् ।

प्रा० निबल (सं०निर्बल) गु० दुबला, दुर्बल, कमज़ोर ।

प्रा० निबाह (सं० निर्वाह) पु० पूरा करना, निर्वाह, पूरा, समाप्त, गुज़ारा, बसर ।

प्रा० निबाहना (सं० निर्वहण, निर्=निश्चय, वह्=सहना, ले जाना) क्रि० स० पूरा करना, सिद्ध करना, समाप्त करना, पार लगाना, २ बचाना, रक्षा करना, ३ वचन पूरा करना, अपना विश्वास बना रखना, ४ व्यवहार करना ।

प्रा० निबेड़ना, निवेड़ना (सं० निवर्तन) क्रि० स० पूरा करना, निपटाना, चुकाना ।

प्रा० निबेड़ा, निवेड़ा (सं० निवर्तन) पु० निबटारा, छुटकारा, पूरा करना ।

प्रा० निबुकना क्रि० अ० छुड़ाना, छुटकारापाना, २ सुकुड़ना, छोटा होना ।

सं० निभ (नि=पास, भा=चमकाना) गु० बराबर, समान, सदृश, पु० कपट, छल, व्याज ।

प्रा० निभना (सं० निर्वहण) क्रि० अ० पार लगना, होना, पूरा होना, बन आना ।

सं० निभृत (नि, भृ=भरना) गु० नम्र, अचल, निश्चल, एकाग्र, २ निर्जन, ३ बुद्धिमान् , ४ र्म्म० गृहीत, लिया गया, छिपा, खुफ़िया।

सं० निभृतम् अव्य० बलात्कार, हठ, आग्रह ।

सं० निम पु० सूची, सूजा, कर्तन, कतरनी, २ घोसला, ३ क्लेश ।

सं० निमग्न (नि=नीचे, मस्ज्=डूबना) गु० डूबा हुआ, मग्न।

सं० निमज्जन (नि=नीचे, मस्ज्=डूबना) पु० स्नान, न्हाना, जल में डूबना, ग़ुस्ल करना ।

सं० निमन्त्रण (नि, मन्त्र=बुलाना) पु० नेवता, बुलाहट, नौता ।

सं० निमन्त्रित र्म्म० न्योता गया, बुलाया गया ।

सं० निमि एक राजा का नाम जो इक्ष्वाकु राजा का पुत्र था ।

सं० निमित्त (नि, मिद्+त) क्रि० पु० कारण, हेतु, सबब, लिये, २ भाग्य, भाग, शकुन, फल, शक्य ।

सं० निमीलन (मील्=मीचना) भा० पु० संकोचन, आँखमीचना, मृत्यु, तन्द्रा, ऊँघ, बड़ी नींद ।

सं० निमीलित र्म्म० पु० मुद्रित,

बन्द करलिया ।

सं० निमिष } (नि, मिष्=पलक
निमेष } मारना) पु०पलक, पल, क्षण, लव ।

सं० निम्न (नि=नीचे, म्ना=अभ्यास करना, याद करना) गु० नीचे, ज़ैल, २ गहरा ।

सं० निम्नगा(निम्न=नीचे,गम्=जाना) स्त्री० नदी ।

सं० नियत (नि, यम्=रोकना) कर्म० पु० रोका हुआ, २ ठहरा हुआ, निश्चित, मुक़र्रर किया हुआ, क्रि० वि० लगातार ।

सं० नियन्ता (नि,यम् + तृ) क०पु० शिक्षक, सारथी,पशुप्रेरक ।

सं० नियति स्त्री०प्रमाण,इमान,धर्म ।

सं० नियम (नि, यम्=रोकना, ठहराना) पु० वचन, शर्त, प्रतिज्ञा, संकल्प, वाचा, २ धर्म का काम जैसे व्रत, जागरण, प्रार्थना यज्ञ आदि, ३ रीत, चलन, व्यवहार, क़ायदा ।

प्रा० नियर (सं० निकट) क्रि० वि० पास, नज़दीक जैसे “ नियरे गड़वा, सियरे पानी ” ।

प्रा० नियराना (नियर) क्रि०अ० पास आना, नगचाना, पहुँचना, क़रीब आना ।

सं० नियुक्त (नि, युज्=मिलना) क० पु० लगाहुआ,ठहराया हुआ, स्थापित, मुक़र्रर किया, मशगूल ।

सं० नियुत (नि, यु=मिलना) गु० दसलाख ।

सं० नियोग (नि, युज्=मिलना) पु० आज्ञा, प्रेरणा, हुक्म, ताकीद, २ काम, शुग़ल, अनुमति ।

सं० नियोगी क० पु० अशुभचिन्तक, बदख़्वाह, अहल्कार, कारकुन ।

सं० नियोजन (नि, युज्=मिलना) भा० पु० प्रेरणा, ताकीद, लगाना, मिलाना ।

सं० निर् उपस० नहीं, बिन, २ निश्चय, ३ बाहर, ४ अच्छी तरह से ।

प्रा० निरङ्कार (सं० निराकार) गु० आकाररहित, बिन आकार, अस्वरूप, पु० परमेश्वर, विष्णु ।

सं० निरंकुश (निर्=बिन,अंकुश=आँकुश) गु० बिन रुकावट, नहीं रोका हुआ, स्वेच्छाचारी, अपनी इच्छा के अनुसार चलने वाला, स्वतन्त्र, बे अदब ।

प्रा० निरखना (सं० निरीक्षण) क्रि० स० देखना, ताकना ।

सं० निरञ्जन(निर्=चलागया है, अञ्जन=मल अथवा अन्धकार तमोगुण आदि) गु०निर्मल,निस्पृह,स्वच्छ, निर्दोष, काम व क्रोध से रहित, बेमक्र, बेरिया, परमेश्वर, परब्रह्म ।

सं० निरत (नि=भीतर, रत=लगा हुआ) गु० लगा हुआ, नियुक्त,

आसक्त, तत्पर, मशगूल ।

सं० निरति स्त्री० अप्रीति, बेग़र्ज़ी ।

सं० निरधार भा० पु० निश्चय, निर्णय, ठीक ।

सं० निरन्तर (निर्=नहीं, अन्तर=बीच) क्रि० वि० लगातार, नितउठ।

सं० निरपराध (निर्=नहीं, अपराध=पाप) गु० निष्पाप, निर्दोष, शुद्ध ।

सं० निरय पु० नरक, दुर्गति, दोज़ख़।

सं० निरर्गल (निर्=नहीं, अर्गल=संकली) गु० निर्बाध, बेरोक, निरंकुश, बे ज़ंजीर, बेसांकर का ।

सं० निरर्थक (निर्=नहीं, अर्थ=प्रयोजन) गु० निष्प्रयोजन, वृथा, निष्फल, अर्थहीन, बेफ़ायदा ।

सं० निरवकाश (निर+अवकाश) गु० बे फ़ुरसत, बे छुट्टी ।

सं० निरवद्य (निर्=नहीं, अवद्य=दोष) गु० निर्दोष, बे ऐब ।

सं० निरस (नि=बिन, रस=स्वाद) गु० फीका, बेस्वाद, अलोना, फीका ।

सं० निरसन (निर्+असन, अस्=फेंकना) पु० परित्याग, अतिक्षेप, वध, निकारना ।

सं० निरस्त कर्म० पु० हारगया, फेंकागया, मारा गया, भर्त्सित, जलायागया, लस्तपस्त ।

प्रा० निरा (सं० निरालय, निर्=बाहर, एकान्त, आलय=जगह) गु० केवल, मात्र, बिलकुल, सिर्फ़।

सं० निराकार (निर्=नहीं, आकार=रूप) गु० अस्वरूप, निरंकार, पु० परमेश्वर, अरूप ।

सं० निरादर (निर्=नहीं, आदर=मान) पु० अपमान, अमान, अप्रतिष्ठा, बेइज़्ज़ती, बेक़दरी ।

सं० निरामय (निर्=नहीं, आमय=रोग) गु० तन्दुरुस्त, नीरोग, सुखी, पु० सुअर, २ वनका बकरा।

सं० निरामिष(निर्=नहीं, आमिष=मांस) गु० मांस विना, बिन मांस का (भोजन) ।

सं० निरायुध (निर्=नहीं, आयुध=शस्त्र) गु० बिन शस्त्र, बे हथियार।

प्रा० निराला (सं० निरालय, निर=बाहर, एकान्त, आलय=जगह) गु० एकान्त, निर्जन, अलग, २ निरा, केवल, मात्र, ३ अनूठा ।

प्रा० निरावना क्रि० स० खेती से कूड़ा करकट जुदा करना, साफ़ करना, पछोड़ना ।

सं० निराश (निर्=नहीं, आश=उम्मैद) गु० आशाहीन, नाउम्मैद, बेसहारा, बेभरोसा ।

सं० निराश्रय (निर्=नहीं, आश्रय=आसरा) गु० बिन आसरे ।

सं० निराहार (निर्=बिन, आहार=खाना) पु० उपवास, उपास, फ़ाका, गु० बिनभोजन, बिनखाये।

सं० निरीक्षण (निर्=निश्चय, ईक्ष्=देखना) भा० पु० देखना, दर्शन, दृष्टि, नजरकरनी, ताक ।

सं० निरीह (निर्=नहीं, ईहा=इच्छा, चेष्टा) गु० जिसको किसी बात की अथवा चीज़की इच्छा न हो, बे चेष्टा, निःस्पृह, बे नयाज़, बे लालच ।

सं० निरुक्त (निर्=निश्चय, उक्त=कहा हुआ, वच्=कहना) पु० वेद का एक अङ्ग जिस में वेद के शब्दों का अर्थ लिखा, वेद का व्याकरण और कोष, गु० कहा हुआ, कथित ।

सं० निरुत्तर (निर्=नहीं, उत्तर=जवाब) गु० चुप, अवाक्, लाजवाब, बेजवाब ।

सं० निरुत्साह (निर्=बिन, उत्साह=उमङ्ग) गु० जिसके मन में किसी बात की उमङ्ग न हो, सुस्त, आलसी, ढीला ।

सं० निरुपम (निर्=नहीं, उपमा=बराबरी) गु० जिसकी बराबरी नहीं होसके, अनूप, अनुपम, अतुल्य, अपूर्व, बे मिस्ल ।

सं० निरुपाधि (निर्=नहीं, उपाधि=गुण नाम, विशेषण वा छल) गु० उपाधिरहित, गुणरहित, निर्गुण, शुद्ध, निर्मल, बेखशखशा, बेझगड़ा ।

सं० निरूप (नि=नहीं, रूप=आकार) गु० निराकार, अस्वरूप, अरूप, बे सूरत, पु० परमेश्वर ।

सं० निरूपण (नि=निश्चय, रूप्=आकार बाँधना, वा देखना) पु० वर्णन, निर्णय, निर्द्धार, विचार, दर्शन, देखना ।

सं० नीरोग (निर्=नहीं, रोग=बीमारी) गु० भला, चङ्गा, अरोग, तन्दुरुस्त ।

सं० निर्गत (निर्=बाहर, गम्=जाना) क० निकलाहुआ, बाहर गया हुआ ।

सं० निर्गन्ध (निर्=नहीं, वा बिन, गन्ध=बास) गु० विना बास, बिन महक, गन्धरहित ।

सं० निर्गम (निर्=बाहर, गम्=जाना) भा० पु० निकलना, बाहर जाना ।

सं० निर्गुण (निर्=नहीं, गुण=हुनर, चतुराई, वा सत, रज, तम) पु० परमेश्वर, परमात्मा, परब्रह्म, गु० निर्विकार, निराकार, निरञ्जन, सत रज और तम इन तीनों गुणों से रहित, २ मूर्ख, गुणहीन, निकम्मा ।

सं० निर्घर्षण (निर्=निश्चय, घर्ष=रगड़ना) भा० पु० घिसना, रगड़ना ।

सं० निर्घोष (निर्+घुष=शब्द क-

रना) शब्द, आवाज़ ।

सं० निर्जन (निर्=बिन, जन=मनुष्य) गु० एकान्त, जहाँ कोई मनुष्य न हो ।

सं० निर्जर (निर्=नहीं, जरा=बुढ़ापा) पु० देवता, २ अमृत, गु० अजर, अमर ।

सं० निर्जल (निर्=बिन, जल=पानी) पु० जंगल, मैदान, मरुस्थल, ऐसी जगह जहाँ पानी न मिले, गु० ऊसर, उजाड़, बिन पानी, जल बिन, सूखी (धरती) ।

सं० निर्जित (निर्=नहीं, जि=जीतना) गु० अजय, अपराजित, अजीत, २ परास्त, पराजित, जीता गया ।

सं० निर्जीव (निर्=बिन, जीव=प्राण) गु० अचेत, जड़, प्राणहीन ।

सं० निर्झर (निर्=नीचे, झॄ=उमर का घटना वा गिरना) पु० झरना, पहाड़ का सोता, चश्मा ।

सं० निर्णय (निर्=निश्चय, नी=पाना वा चलाना) पु० निश्चय, विचार, विवेचना, मीमांसा, फ़ैसला ।

सं० निर्णीत र्म० पु० निश्चयकृत, फ़ैसलहुआ, विचारित ।

प्रा० निर्त (सं० नृत्य) पु० नाच ।

प्रा० निर्दई (सं० निर्दयः, निर्=बिन + दया) गु० जिसके मन में दया न हो, कठोर, कड़ा, दयाहीन, जिसका दिल पत्थर सा कड़ा हो, संगदिल, निठुर ।

सं० निर्दम्भ गु० निश्छल, निष्कपट, बेमक्र ।

सं० निर्दिष्ट (निर्=अच्छीतरह से, दिश्=देना वा दिखाना, जताना) र्म० पु० अच्छीतरह से कहा हुआ, दिखलाया हुआ, निर्णय किया हुआ, नियत किया गया ।

सं० निर्दोष (निर्=बिन, दोष=अपराध) गु० निरपराध, दोषहीन, बिन चूक, बे क़सूर ।

सं० निर्द्वन्द्व (निर्=बिन, द्वन्द्व=दो, वा बखेड़ा) गु० बिन बखेड़े, बे झगड़े, आराम से, चैनसे ।

सं० निर्धन (निर्=बिन, धन=दौलत) गु० ग़रीब, कंगाल, दरिद्री ।

सं० निर्धार **निर्धारण** (निर्=निश्चय, धृ=रखना) पु० निश्चय, निर्णय, २ पृथक् करण, जुदा करना ।

सं० निष्पक्ष (निर्=बिन, पक्ष=सहाय) गु० असहाय, बेबश, अनाथ, बे मदद ।

सं० निष्फल (निर् + फल) गु० निष्फल, वृथा, व्यर्थ ।

सं० निर्बन्ध[1] (निर् + बन्ध=बन्धना)

---

[1] " निर्बन्धं तस्य तं ज्ञात्वा विचिन्त्यानकदुन्दुभिः " (इति भागवतम्) ॥

भा० पु० आग्रह विशेष, ज़िद, बेरोक, बेक़ैद, बेसहारा, बेरोज़गार ।

सं० **निर्बल** (निर् + बल) गु० निबल, दुर्बल, दुबला, कमज़ोर ।

सं० **निर्बुद्धि** (निर् + बुद्धि) गु० मूर्ख, असमझ, अनसमझ, अज्ञान ।

सं० **निर्भय** (निर्=नहीं, भय=डर) गु० निडर, बेखौफ़ ।

सं० **निर्भर** (निर्=निश्चय, भृ=भरना) गु० पूरण, पूरा, बहुत, अत्यन्त, अतिशय ।

सं० **निर्मल** (निर्=बिन, मल=मैल) गु० पवित्र, शुद्ध, स्वच्छ, उजला, साफ़ ।

सं० **निर्माणक** क० पु० मुसन्निफ़, कर्ता ।

सं० **निर्माण** (निर्, मा=नापना, वा बनाना) पु० बनावट, रचना, तसनीफ़, २ सार ।

सं० **निर्माण करना** क्रि० स० बनाना, रचना ।

सं० **निर्माल्य** (निर्मल से, अथवा निर् और माल्य फूल वा फलों की माला) भा० पु० देवता का जूँठा प्रसाद, देवता को चढ़ाया हुआ नैवेद्य, २ पवित्रता, सफ़ाई, फर्छाई, गु० पवित्र, साफ़, शुद्ध ।

सं० **निर्मित** (निर्, मा=नापना, वा बनाना) कर्म० बनाया हुआ, रचित, कल्पित ।

सं० **निर्मूल** (निर्=बिन, मूल=जड़) गु० उखड़ाहुआ, जड़से खोदा हुआ, बिन जड़, निर्बीज, बे ठिकाने, २ उजड़, नाश, ध्वंस ।

सं० **निर्मोही** (निर्=बिन, मोह=प्यार) गु० निर्दय, कठोर, कड़ा ।

सं० **निर्यास** (निर्, यस्=निकलना) पु० वृक्षरस, गोंद, गन्ध ।

सं० **निर्लज्ज** (निर्=बिन, लज्जा=लाज) गु० निर्लज्ज, बेशर्म, नकटा ।

सं० **निर्लेप** (निर्=नहीं, लिप्=लेपना) गु० बेलाग, बिनलगाव, अलेप, बेलौस ।

सं० **निर्लोभ** / **निर्लोभी** } (निर्=बिन, लोभ=लालच) गु० जिस को लालच न हो, लोभहीन, बेतमा ।

सं० **निर्वंश** (निर्=बिन, वंश=कुल) गु० वंशहीन, जिसके वंश न हो, अपूता, निपूता, बे औलाद, लावल्द ।

प्रा० **निरवहे** गु० बीतगये, छूटगये ।

सं० **निर्वाचन** (निर्, वच्=कहना) भा० पु० चुनना ।

सं० **निर्वाचक** क० पु० चुननेवाला ।

सं० **निर्वाण** (निर्, वा=बहना, जाना) पु० मुक्ति, मोक्ष, लय होना, गु० बुता हुआ, बुझा हुआ, ठण्ढा किया हुआ, २ नष्ट ।

सं० **निर्वात** गु० वायुरहित स्थान,

वे हवा का।

सं० निर्वास (निर्+वास=रहना) भा० पु० निकालना, बाहर करना, मारना, मना करना।

सं० निर्वासक (निर्वास्+अक) क० पु० निकालनेवाला।

सं० निर्वासित र्म्म० पु० निकाला गया।

सं० निर्वाह (निर्=निश्चय, वह्=लेजाना) पु० निबाह, पूरा करना, समाप्ति।

सं० निर्विकल्प (निर्=नहीं, वि-कल्प=भेद भ्रम) गु० भेद और भ्रम से रहित, बेशक शुबहा।

सं० निर्विकार (निर्=बिन, विकार=बदलना) गु० नहीं बदला हुआ, जिसमें किसीतरह का विकार वा दोष न हो, एक भाव, एक रंग।

सं० निर्विघ्न (निर्=बिन, विघ्न=विगाड़) गु० विघ्नरहित, बिन बिगाड़, बेखटके।

सं० निर्बीज (निर्+बीज) गु० निर्मूल, बीजरहित, बिन बीज।

सं० निलय (नि=भीतर, ली=लेना वा मिलना) पु० घर, स्थान।

सं० निवर्तन (नि, वृत्=बर्तना, रोकना) क्रि० स० लौटना, वापस आना।

सं० विवारण (नि, वृ=घेरना, रोकना) पु० रोक, रुकावट, अटकाव, बाधा दूरकरना, हटाना, निवारना।

प्रा० निवारना (सं० निवारण) क्रि० स० रोकना, दूर करना, अटकाना।

सं० निवास (नि=भीतर, वस्=रहना) पु० बासा, घर, मकान, डेरा, जगह।

सं० निवासी (निवास) गु० रहनेवाला, बसनेवाला, वासी।

सं० निविड (नि=बहुत, विड्=इकट्ठा होना) गु० गहरा, घना, सघन, गुंजान।

सं० निवृत्त (नि=नहीं, वृत्=वर्तना) क० पु० छूटाहुआ, मुक्त, फरागत पाया हुआ।

सं० निवृत्ति भा० स्त्री० छुट्टी, रिहाई, सुख, सिद्धि।

सं० निवेदन (नि=अच्छी तरह से, विद्=जानना) पु० बिनती, प्रार्थना, विज्ञापन, विनयपत्र, दरख़्वास्त।

सं० निश } **निशा** } (नि=सब तरह से, शो=पतला करना, अर्थात् कामों को पूरा करना) स्त्री० रात, रात्री, २ हल्दी।

सं० निशाकर (निशा=रात, कर=करनेवाला, कृ=करना) पु० चाँद, चन्द्र, चन्द्रमा।

सं० निशाचर (निशा=रात, चर=चलनेवाला वा खानेवाला, चर=

चलना वा खाना) पु० राक्षस, २ भूत, ३ उल्लू, ४ चौर, ५ गीदड़, गु० रात को चलनेवाला वा खानेवाला ।

सं० निशाचरी (निशाचर) स्त्री० राक्षसी, २ वेश्या, व्यभिचारिणी, कुलटा, ३ केशिनी नाम गन्धद्रव्य ।

सं० निशानन
निशामुख
रात्रिमुख } (निशा + आनन) सायङ्काल, प्रदोष, शाम ।

सं० निशानाथ
निशापति } (निशा=रात, नाथ वा पति=राजा) पु० चाँद, चन्द्रमा, चन्द्र ।

सं० निशिनाथमुखी स्त्री० चन्द्रमुखी वा चन्द्रवदनी ।

प्रा० निशि
निसि } (सं० निश् वा निशा) स्त्री० रात, रात्री, रजनी ।

प्रा० निशिचर
निसिचर } (सं० निशाचर, निशि=रात में, चर=चलनेवाला) पु० राक्षस ।

सं० निशित (नि=अच्छी तरह से शि=तीखा करना) पु० तीखा, तीक्ष्ण, चोखा, शाणित, पैना किया हुआ ।

सं० निशीथ (नि=अच्छी तरह, शी=सोना) पु० अर्द्धरात्र, आधी रात ।

सं० निशीथिनी स्त्री० रात्रि ।

सं० निशुम्भ (नि=निश्चय, शुम्भ्=मारना) पु० एक राक्षस का नाम, जिसको दुर्गा ने मारा ।

सं० निशेश (निशा=रात, ईश=राजा) पु० चाँद, शशि ।

सं० निश्चय (निर्=अच्छीतरह से, चि=इकट्ठा करना) भा० पु० निर्णय, ठीक करना, पक्का करना, भरोसा, विश्वास, गु० ठीक, सच, असंशय ।

सं० निश्चर (निश्=रात, चर=चलनेवाला, चर्=चलना) पु० राक्षस ।

सं० निश्चल (निर्=नहीं, चल्=चलना) गु० अचल, अटल, स्थिर, ठहरा हुआ, जो नहीं चले ।

सं० निश्चला स्त्री० पृथ्वी, ज़मीन ।

सं० निश्चित (निर्=अच्छीतरह से, चि=इकट्ठा करना) र्म० पु० निश्चय किया हुआ, निर्णय किया हुआ ।

सं० निश्चिन्त (निर्=नहीं, चिन्ता=शोच) गु० निचिन्त, बे फ़िक्र, बिनचिन्ता, चिन्तारहित ।

सं० निश्वास (नि=बाहर, श्वस्=साँस आना वा लेना) पु० मुँह और नाक से बाहर निकली हुई हवा, साँस, निसास ।

सं० निषङ्ग (नि, षञ्ज्=मिलना) पु० भाथा, तूण, तूणीर, तर्कश ।

सं० निषण्ण (नि=नहीं, षद्=चलना) र्म० पु० बैठा हुआ, आसीन, आसन्न ।

सं० निषाद (नि, षद्=मारना)

पु० चण्डाल, जो ब्राह्मण से शूद्री के गर्भ में पैदा हो, मल्लाह, २ एक राग का नाम ।

सं० निषिद्ध (नि, षिध्=जाना, पर नि उपसर्ग के साथ आनेसे अर्थ हुआ रोकना) र्म्म० रोका हुआ, निवारित, वर्जित ।

सं० निषेधक (नि, षिध्=अक) क० पु० रोकनेवाला, मनअ करनेवाला ।

सं० निषेध (नि, षिध्=रोकना) पु० रोक, रुकाव, बाधा, नाहीं ।

सं० निष्क पु० अशर्फ़ी, सोनेका रुपया, दीनार ।

सं० निष्कण्टक (निर्=बिन, कण्टक=कांटा) गु० बिन दुःख, अकण्टक, बिन शत्रु ।

सं० निष्कर (निर्=बिन, कर=लगान) गु० बेलगान, मुआफ़ी ।

सं० निष्कपट (निर्=बिन, कपट =छल) गु० बिन छल, सीधा, सरल, सच्चा ।

सं० निष्कलङ्क गु० निर्दोष, बेदाग़, बेअयब ।

सं० निष्काम (निर्=बिन, काम= इच्छा) गु० निकाम, जिसको किसी बातकी इच्छा न हो, निःस्पृह ।

सं० निष्कारण गु० बेप्रयोजन, बेसबब ।

सं० निष्केवल (निर्+केवल) गु० अकेला, तनहा ।

सं० निष्क्रमण (निर्+क्रम=चलना) भा० पु० बाहर निकलना, शिशु को चौथे महीने बाहर निकालते हैं उसको कहते हैं ।

सं० निश्चेष्ट गु० बेकाम, चेष्टाहीन, तदबीर से ख़ाली ।

सं० निष्ठा भा० स्त्री० धर्म में तत्परता, श्रद्धा, विश्वास, क्लेश, व्रत, उत्पत्ति, नाश, अन्त, उत्कर्ष ।

सं० निष्ठुर (नि, स्था=ठहरना) गु० निठुर, निर्दयी, कठोर, कड़ा, कठिन।

सं० निष्पक्षपात गु० मित्रतारहित, बेसहायता, बिलातरफ़दारी, नहीं हराना, और न लेना, मदद न देना, बेतअस्सुब ।

सं० निष्पत्ति (निर्=अच्छी भाँति से, पद्=जाना) स्त्री० सिद्धि, पूरा होना, सिद्ध होना ।

सं० निष्पन्न (निर्, पद्=जाना) गु० सिद्ध, पूरा, पूर्ण, पूरा कियाहुआ।

सं० निष्पाप (निर्=नहीं, पाप=अपराध) गु० निरपराध, निर्दोष, बेगुनाह ।

सं० निष्फल (निर्+फल) गु० वृथा, विफल, निरर्थक, फलहीन।

सं० निस् उपस० नहीं, २ निश्चय, ३ सब तरह से, सब प्रकार से ।

प्रा० निसरना (सं० निःसरण, निर्=बाहर, सृ=जाना) क्रि० अ० निकलना, निकसना ।

सं० **निसर्ग** (नि, सृज्=उपजाना) पु०स्वभाव, स्वरूप, सृष्टि, खिलक़त।

प्रा० **निसास** (सं० निःश्वास) पु० साँस, उसास, पछतावा ।

प्रा० **निसेनी**
निसैनी (सं० निःश्रेणी) स्त्री०सीढ़ी, सोपान।

सं० **निसूदन** (नि, सूद्=खोदना) भा० पु० मारना, वध करना, क़तल करना, खोदना ।

सं० **निस्तार** (निर्=निश्चय, तॄ=पार होना) पु० उद्धार, मुक्ति, मोक्ष, पार होना, बचाव, छुटकारा, त्राण, जन्म मरण का निबेड़ा, फ़राग़त।

प्रा० **निस्तारना** (सं० निस्तारण) क्रि० स० बचाना, उबारना, मुक्ति देना, जन्म मरणसे छुटकारा करना।

प्रा० **निस्तारा** (सं० निस्तार) पु० छुटकारा, निबेड़ा, मोक्ष, मुक्ति, २ वर, आशिष ।

सं० **निस्त्रिंस** स्त्री०संगीन बन्दूक़ की।

सं० **निस्संदेह** (निर्=बिन, संदेह =शक) गु० निश्चय, बेशक ।

सं० **निहत** (निहन्=मारडालना) कर्म० पु० मारागया, वधकियागया।

सं० **निहित**(नि=निश्चय, धा=धरना) कर्म०स्थापित, गुप्त, स्थित, निक्षिप्त ।

प्रा० **निहाई** स्त्री० घन, हथौड़ा ।

प्रा० **निहार** पु० कुहर, कुहिरा ।

प्रा० **निहारना** क्रि० स० ताक लगाना, देखना ।

प्रा० **निहाल** गु० प्रसन्न, सुखी, आनन्दित, हर्षित, बढ़ा हुआ ।

प्रा० **निहाली** स्त्री० रज़ाई, फ़र्द ।

प्रा० **निहुरना** क्रि० अ० झुकना, नमना, दबना ।

प्रा० **निहोरा** पु० उपकार, २ बिनती, इहसान ।

प्रा० **नींद**
नीद (सं० निद्रा) स्त्री० सोने की चाह, ऊँघाई ।

प्रा० **नींदउचाटहोना** बोल० नींद नहीं आना, नींद का टूटना, आँख नहीं मिलना ।

प्रा० **नींदभर सोना** बोल० गहरी नींद आना, चैन से सोना ।

प्रा० **नींबू** (सं० निम्बूक, निम्बू =सींचना) पु० लेमू, एक प्रकार का खट्टा फल ।

प्रा० **नीका**
नीकौ (फ़ा० नेक) गु० भला, सुन्दर, अच्छा, सुडौल, २ चंगा ।

प्रा० **नीगुने** (सं० निर्गण) गु० बेगिनत, बेशुमार, अनगिनत, नहीं गिना हुआ ।

सं० **नीच** (नि=नीचे, अञ्च्=जाना अथवा नि=नीच संपदा को, चम् =खाना, भोगना) गु० नीचा, अधम, छोटा, निकम्मा, निकृष्ट, कमीना।

प्रा० **नीचा** (सं० नीच) गु० नीच, अधम, छोटा, पु० तलातल ।

प्रा० **नीचा ऊँचा** बोल० ना बरा-

बर ज़मीन, न हमवार ।

प्रा० नीच (सं० नीचैस्) क्रि० वि० तले ।

सं० नीचगा (नीच=नीचे, गम्=जाना) स्त्री० नदी, दरिया ।

सं० नीड़(नि=अच्छीतरह से, इल्=सोना जिसमें) पु० पखेरुओं का घर, घोंसला, खोंता, आशियाना ।

सं० नीत (नी + त, नी=ले जाना) म्म० पु० प्राप्त, लाया गया ।

सं० नीति (नी=ले जाना) स्त्री० अच्छा चलन, उचित व्यवहार, राजनीति, देशप्रबन्धीविद्या, न्याय ४ प्रकार के हैं साम, दाम, दण्ड, भेद ।

सं० नीतिकला स्त्री० राजनीति, हिकमत अमली, पालसी ।

सं० नीतिधात्री }
नीतिविधायक } मुहकमा दीवानी।

सं० नीतिज्ञ(नीति + ज्ञा=जानना) पु० नीति जाननेवाला, सजज्ञानी ।

प्रा० नीम } (सं० निम्ब, निम्ब्=
नींब } सींचना) पु० एक वृक्ष का नाम ।

सं० नीर (नी=पाना) पु० पानी, जल, २ रस ।

सं० नीरज (नीर=पानी, जन्=पैदा होना) पु० कमल, कँवल, २ ऊद-बिलाव, गु० पानी में पैदा हुई चीज़ ।

सं० नीरद (नीर=पानी, दा=देना) पु० बादल, मेघ, घन ।

सं० नीरधर (नीर=पानी, धृ=रखना) पु० बादल, मेघ ।

सं० नीरनिधि (नीर=पानी, निधि =ख़ज़ाना) पु० समंदर, समुद्र, सागर ।

सं० नीरस (निर्=बिन, रस=स्वाद) गु० निरस, फीका, असार, रसहीन।

सं० नील (नील्=नीला होना) गु० नीला, काला, कृष्ण, २ सौसख़रब। स्त्री० एक पौधा जो नीला रँगने के काम में आता है, २ एक नदी का नाम जो मिसर देश में है, ३ पु० एक पहाड़ का नाम, ४ एक वानर का नाम, ५ कुबेर की नव निधि अथवा ख़ज़ाने में का एक ख़ज़ाना ।

सं० नीलकण्ठ (नील=नीला, कण्ठ =गला) पु० महादेव जिन्होंने समुद्र मथने के समय जो विष निकला था उसको पिया इस लिये उनका गला नीला होगया, २ मोर, मयूर, ३ एक पखेरूका नाम कटनास।

प्रा० नीलगाव (सं० नीलगौ) स्त्री० नीली गाय, रोझ ।

सं० नीलग्रीव (नील=नीली, ग्रीव =गरदन) पु० महादेव, शिव, गु० नीला गलावाला, जिसका गला नीला हो, २ मोर ।

प्रा० नीलम (सं० नीलमणि) पु० नीले रंग का रतन, ज़मुर्रुद ।

सं० नीलमणि (सं० नील=नीला,

मणि=रतन) स्त्री० नीलम, ज़मुर्रद ।

प्रा० नीला (सं० नील) गु० नील में रँगा हुआ, नीलवर्ण ।

प्रा० नीलाथोथा पु० तूतिया, नीलाञ्जन ।

प्रा० नीलाम (पोर्तुगालकी भाषा के शब्द "लेलाम" "Leilam" का अपभ्रंश) पु० किसी चीज़ को एक मोल पर नहीं बल्कि पहले कुछ मोल बोलना फिर ज्यों ज्यों ग्राहक मोल बढ़ाते जाते हैं अन्त में जो सबसे अधिक बोले उसी को बेचदेना ।

सं० नीलाम्बर (नील=नीला, अम्बर=कपड़ा जिसके हो) पु० बलदेव, २ शनैश्चर, ३ नीला कपड़ा ।

सं० नीलोपल } नीलोत्पल } नील=नीला, उपल=पत्थर, उत्पल=कमल, पु० नीला पत्थर, नीलमणि वा नीलाकमल ।

सं० नीवार नी,वृ=आच्छादनकरना (घेरना) पु० तिन्नी का वृक्ष, तालाव का चावल ।

सं० नीवी स्त्री० बनियों का मूलधन, पूँजी, कमरबन्द, ईज़ारबन्द, नारा ।

सं० नीवृत् पु० देश, जनपद, जनस्थान ।

सं० नीशार (नी+शॄ=मारना) पु० तम्बू, क़नात डेरा, कमल, रेशमीवस्त्र ।

सं० नीहार (नी, हृ=लेना) पु० घनापाला, ओस, कुहर, शिशिर ।

सं० नूतन } नूत्न } (नव, नु=सराहना) पु० नया, नवीन, टटका ।

प्रा० नून } नोन } (सं० लवण) पु० निमक, नमक, लोन, खार ।

सं० नूपुर (नू=गहना, पुर=आगे जाना, अर्थात् जो सब गहनों के आगे रहता है) पु० बिछिया, पाँव की अँगुलियों में पहनने का गहना, नूपुर ।

सं० नृ (नी=लेजाना वा चलना) पु० मनुष्य, पुरुष, नर, मर्द ।

सं० नृग पु० एक सूर्यवंशी राजा का नाम ।

सं० नृत्त } नृत्य } (नृत्=नाचना) पु० नाच, नर्त्तन ।

सं० नृत्यक (नृत्=नाचना) पु० नाचनेवाला, नचवैया ।

सं० नृप (नृ=मनुष्य, प=पालनेवाला, पा=पालना) पु० राजा, भूपाल, भूपति ।

सं० नृपघाती (नृप=राजा, हन्=मारना) क० पु० राजाओं का मारनेवाला, परशुराम ।

सं० नृपति (नृ=मनुष्य, पति=स्वामी, मालिक) पु० राजा ।

सं० नृपाल (नृ=मनुष्य, पाल्=

पालना) पु० राजा ।

सं० नृशंस (नृ=मनुष्य, शंस्=मारना) गु० मारनेवाला, दुष्ट, दुःखदायी, क्रूर, परद्रोही, बेहया, बदकार।

सं० नृसिंह (नृ + सिंह) पु० नरसिंह अवतार ।

सं० नृहरि (नृ=मनुष्य, हरि=सिंह) पु० नरसिंह अवतार ।

प्रा० नेक } गु० कुछ, थोड़ा, अल्प,
नेकु } तनक, ज़रा ।

फ़ा० नेकनाम नामवर, यशस्वी, सुयशी ।

सं० नेक्ता (निज् + तृ, निज्=पोषण करना) क० पु० पोषक, पालक, पोषणकर्ता ।

प्रा० नेग } पु० ब्याह में अथवा
नेगचार } और किसी उत्सव में अपने नातेदारों को कुछ देना, ब्याह में पुरोहित की दक्षिणा, २ बाँटा हिस्सा ।

प्रा० नेगी (नेग) गु० बँटानेवाला, हिस्सेदार, २ परजा, मँगता ।

सं० नेजक (निज् + अक, निज्=शुद्ध करना) क०पु० धोबी, परिष्कारक ।

सं० नेजन भा० पु० शोधना ।

सं० नेता (नी=लेजाना) क०पु० लेजानेवाला ।

सं० नेतव्य कर्म०पु० लेजाने योग्य ।

सं० नेति (न=नहीं, इति=यह) गु० ऐसा नहीं, यह नहीं, जिसका पार नहीं, अनन्त, परमेश्वर का गुण ।

प्रा० नेती (सं० नेत्र, नी=लेजाना वा चलाना) स्त्री० दही मथने की रस्सी ।

सं० नेत्र (नी=लेजाना वा चलाना वा पहुँचाना वा पाना) पु० आँख, नयन, लोचन, २ नेती, गु० नायक, चलानेवाला ।

सं० नेत्रच्छद (नेत्र=आँख, छद्=ढकना) पु० नेत्रपुट, आँखपट ।

सं० नेत्राम्बु (नेत्र=आँख, अम्बु=पानी) पु० आँसू, आँखका पानी।

सं० नेपथ्य } पु० पर्दा से रास्ता,
नैपथ्य } आड़ का रास्ता, विनय के लिये सजी भूमि, मतान्तर, अलंकार, पन्थ ।

सं० नेपाल पु० एक देश का नाम।

प्रा० नेपुर (सं० नूपुर) पु० नूपुर।

सं० नेम गु० अर्द्ध, आधा, निस्फ़।

प्रा० नेम (सं० नियम) पु० वचन, प्रण, प्रतिज्ञा, संकल्प, वाचा, होड़, हठ, २ व्रत संयम आदि ।

सं० नेमि स्त्री० धुरी जिसमें पहिया लगे पु० तिन्नी, जंगली चावल।

प्रा० नेमधर्म (सं० नियम धर्म) पु० उपवास, व्रत, २ अच्छा चलन।

प्रा० नेरे } (सं० निकट) नित्य,
नेरौ } पास, समीप, नगीच।

प्रा० नेव } स्त्री० भीत की जड़।
नींव }

प्रा० नेवतना } (सं० निमन्त्रण)
न्योतना } क्रि०स०न्योतादेना, खिलाने के लिये बुलाना ।

प्रा० नेवता } (सं०निमन्त्रण) पु०
नोता } बुलाहट,खिलाने के
न्योता } लिये बुलाना ।

प्रा० नेवर } पु० घोड़े के पाँव का
नेवल } घाव, अथवा रोग ।

प्रा० नेवल } (सं०नकुल) पु०एक
नेवला } जानवर का नाम ।

प्रा० नेवार } (फ़ा०नेवार)स्त्री० एक
निवार } प्रकार की चौड़ी पट्टी या कोर जिससे पलँग बुनेजाते हैं।

प्रा० नेह (सं० स्नेह) पु० प्यार, प्रीति, मोह, मुहब्बत ।

प्रा०नेही (सं०स्नेही)गु०प्यारा,मित्र।

प्रा० नैन } (सं० नयन) पु० आँख,
नैना } नेत्र, लोचन ।

सं० नैमित्तिक भा० पु०निमित्त सम्बन्धी, निमित्त से आया, ग़ैरमअ्मूली, जो रोज़ न हो ।

सं० नैमिष (निमिष, अर्थात् जहाँ विष्णु ने पलभर में एक राक्षस को मारा था) पु० एक तीर्थ का नाम।

सं० नैमिषारण्य(नैमिष + आरण्य) पु० एक जंगल का नाम जहाँ बहुत ऋषि रहते थे और जहाँ सूतजी ने इन सनकादि ऋषियों को महाभारत और पुराण आदि सुनाये थे ।

सं० नैयायिक (न्याय) पु० न्यायशास्त्र जाननेवाला, न्यायशास्त्र का पण्डित, मुन्सिफ़ ।

सं० नैराश्य भा० पु० निरासरा, न उम्मैदी, आशाशून्य, आशारहित ।

सं० नैर्ऋत्य (नैर्ऋत=एक राक्षस का नाम जो इस कोण का दिक्पाल है)पु० दक्षिण पश्चिम का कोण।

सं० नैवेद्य (निवेद) पु० देवता का भोग, प्रसाद, चढ़ावा, बलि ।

सं० नैसर्गिक भा० पु० स्वाभाविक, तबयी, दिली ।

सं० नैष्ठिक भा०पु० धार्मिक, मुअ्तक़िद, विश्वासिक, स्त्री० नैष्ठिका, धार्मिका, विश्वासिका ।

प्रा० नैहर पु० पीहर, मैका, स्त्री के बाप का घर ।

प्रा० नोकचोक बोल० स्त्री० संकेतों से बातें करना, इशारों से बातें करना, २ लागडाट ।

प्रा० नोकझोक बोल०स्त्री० खैंचाखैंची, चढाउपरी ।

प्रा० नोचना क्रि० स० खसोटना, बकोटना, खरोटना, छीलडालना, नख से उखाड़ना ।

अं० नोट याददाश्त, २ हुण्डी, ३ हाशिया, ४ निशान ।

फ़ा० नौकर पु०चाकर,सेवक, दास ।

"नैराश्यं परमं सुखम्" (इति भागवतम्) ।

फ़ा० **नौकरी** स्त्री० चाकरी, सेवा ।

सं० **नौ** / **नौका** (तुद्=चलाना) स्त्री० नाव, तरणी ।

प्रा० **नौखण्ड** (सं० नव खण्ड) पु० पृथ्वी के नव भाग, १ भरत, २ इलावृत, ३ किम्पुरुष, ४ भद्र, ५ केतुमाल, ६ हिरण्य, ७ कुरु, ८ रम्य, ९ हरिवर्ष ।

प्रा० **नौगरी** स्त्री० स्त्रियों के हाथ में पहनने का गहना, नौगिरही ।

प्रा० **नौछावर** स्त्री० निछावर, सदका, उतारा, बलिहारी ।

प्रा० **नौज़** क्रि० वि० ऐसा न हो ।

प्रा० **नौढ़ाना** (सं० नमन, नम्=झुकाना) क्रि० स० सिरझुकाना ।

प्रा० **नौतना** (सं०निमन्त्रण) क्रि० स० नेवतना, न्योतना ।

प्रा० **नौता** (सं० निमन्त्रण) पु० नेवता, न्योता ।

प्रा० **नौमी** (सं० नवमी) स्त्री० नवीं तिथि ।

प्रा० **नौसादर** पु०एकतरह का खार।

सं० **न्याय** (नि, निश्चय,इ=जाना) पु० धर्म, विचार, इन्साफ़, नीति, २ तर्कशास्त्र ।

सं० **न्यायकारी** / **न्यायी** क० पु० न्याय करनेवाला, मुन्सिफ़, आदिल ।

सं० **न्यायालय** (न्याय+आलय) धि०अदालत,कचहरी,न्यायसभा ।

सं० **न्याय्यी** (न्याय) क० पु० न्याय करनेवाला, धार्मिक, धर्मात्मा, २ न्यायशास्त्र का जाननेवाला।

प्रा० **न्यार** (सं० न्याद, नि, अद्=खाना) पु० चारा, सूखी घास ।

प्रा० **न्यारा** (सं० निरालय) गु० जुदा, अलग, एकान्त ।

प्रा० **न्यारिया** पु० एक जाति के मनुष्य जो सोने चाँदी आदि धातुओं को मैल, मिट्टी से जुदा करके निकालते हैं ।

प्रा० **न्याव** (सं० न्याय) पु० धर्म-विचार, इन्साफ़ ।

अं० **न्यशनलकांग्रेस** जातीय महासभा, क़ौमी दरबार ।

सं० **न्यस्त** (नि + अस्त, अस=देना)कर्म० पु० स्थापित, अर्पित, दियागया ।

सं० **न्यास** (नि + अस्) पु०अर्पण, निक्षेप, विन्यास,संन्यास, स्थापन, उपनिधि, धरोहर ।

सं० **न्युब्ज** (नि + उब्ज्=कोमल करना) पु० अधोमुख, नीचा मुँह, कुब्जमुख, टेढ़ामुख ।

सं० **न्यून** (नि=निश्चय, ऊन=थोड़ा, कम होना) गु० थोड़ा,कम, २ दोषी, पामर, नीच ।

सं० **न्यूनता** (न्यून) भा०स्त्री०कमी घटी, २ छोटापन, क्षुद्रता, निचाई

सं० **न्यूनाधिक** (न्यून+अधिक

गु० थोड़ा बहुत, घटबढ़, कमबेश ।

प

सं० प (पत्=गिरना वा पा=बचाना, पा=पीना) पु० हवा, पवन, २ पत्ता, ३ पीना, गु० बचानेवाला, २ पीनेवाला, ३ तीव्र, ४ लालरङ्ग का, ५ शूरवीर ।

प्रा० पवाँर (सं० प्रमर, प्र=बहुत, मृ=मारना) पु० राजपूतों की एक जाति, ३६ में से ।

प्रा० पँवारा पु० कहानी, कथा, इतिहास ।

प्रा० पँवारिया (पँवारा) पु० भाट, कहानी कहनेवाला, नक़लिया ।

प्रा० पँवारी (सं० पर्णवाटी) स्त्री० पान की बाड़ी ।

प्रा० पंख (सं० पक्ष) पु० पाँख, पर ।

प्रा० पंखडी (सं० पक्ष) स्त्री० फूल की पत्ती, कली, पखड़ी ।

प्रा० पंखा (सं० पक्ष) पु० बिजना, बेना ।

प्रा० पंखी (सं० पक्षी) पु० पखेरू, पक्षी, स्त्री० छोटा पंखा ।

प्रा० पंगत (सं० पङ्क्ति) स्त्री० पाँत पाँती, श्रेणी ।

प्रा० पँगला (सं० पङ्गु) गु० लँगड़ा, टेढ़े पाँवका, अपङ्ग ।

प्रा० पंछी (सं० पक्षी) पु० पखेरू, परिंद ।

प्रा० पकड़ना क्रि० स० गहना, हाथ में लेना, धरना, २ रोकना, बाधा करना, टोकना, तर्क करना, ३ दोष निकालना ।

प्रा० पकना (सं० पचन, पच्=पकाना) क्रि० अ० रँधना, २ पक्काहोना ।

प्रा० पकापकाया बोल० तैयार, पकाहुआ ।

प्रा० पकवान (सं० पक्वान्न, पक्व=पकाहुआ, अन्न=अनाज) पु० पका हुआ अन्न, तली हुई चीज़, मिठाई ।

प्रा० पका }
पक्का } (सं० पक्व) गु० पका हुआ, कच्चा नहीं (जैसे फल) २ रींधा हुआ, ३ पूरा, चतुर, होशियार, निपुण, प्रवीण, सावधान, ४ दृढ़, मज़बूत, पोढ़ा, ५ सिद्ध किया हुआ, साबित किया हुआ ।

सं० पक्ति (पच+ति, पच्=पकना, पकाना) स्त्री० पचन, पकना, पकाना, पाक, सिद्धि, पकाई ।

सं० पक्व (पच्=पकना) गु० पक्का, पाका, पका हुआ, पका, २ दृढ़, ३ चतुर, प्रवीण ।

सं० पक्ष (पक्ष्=लेना वा पकड़ना) पु० पख, पाख, अँधेरा उजेला पाख, आधा महीना, २ पंख, पाँख, पर, डेना, ३ सहाय, बल, ४ तरफ़, ओर, ५ अङ्ग, पार्श्व, पाँजर, ६ जत्था, दल, टोली, तड़, ७ मित्र, ८ आधा, शरीर का

आधा भाग, ९ तीरका पंख, १० तरफ़दार, ११ जुल्फ़, ज़ूरा, कबरी अर्थात् पटियां ।

सं० पक्षक (पक्ष् + अक) क०पु० खिड़की, मित्र, मददगार ।

सं० पक्षद्वार पु० खिड़की ।

सं० पक्षपात (पक्ष=तरफ़ अथवा अनुचित सहाय, पत्=गिरना) पु० अन्याय से सहायता देना, तरफ़दारी, पक्ष, पल्लेदारी, अन्याय ।

सं० पक्षपाती (पक्षपात) पु० पक्षपात करनेवाला, अन्याय से सहाय करनेवाला, पक्ष करनेवाला, तरफ़दार, सहायक ।

सं० पक्षाघात (पक्ष=शरीर का एक भाग, आघात=मारना) पु० अर्द्धाङ्ग, झोला ।

सं० पक्षान्तर (पक्ष=तरफ़, अन्तर =दूसरी) पु० दूसरी ओर, विपक्ष ।

सं० पक्षिराज (पक्षिन्=पखेरू, राजन्=राजा) पु० पखेरुओं का राजा, गरुड़ ।

सं० पक्षी }
पक्षीय } (पक्ष) पु० पखेरू, परिन्द, २ बान, तीर, ३ सहायक, हिमायती ।

सं० पक्ष्म क० पु० अतिलोभी, २ खिन्न, ३ पलक ।

प्रा० पख }
पाख } (सं० पक्ष) पु० पखवारा, आधा महीना, पक्ष, २ तरफ़, जत्था, ३ सहाय ।

प्रा० पखड़ी (सं० पक्ष=पंख) स्त्री० फूल की पत्ती ।

प्रा० पखवारा (सं० पक्ष) पु० पाख, पख, पन्द्रहदिन, आधा महीना ।

प्रा० पखान (सं० पाषाण) पु० पत्थर ।

प्रा० पखारना }
पखालना } (सं० प्रक्षालन) क्रि० स० धोना, खँघालना, शुद्धकरना, साफ़करना ।

प्रा० पखाल (सं० पयःखल्ल, पयस् =पानी, खल्ल=खाल) स्त्री० एक प्रकार का चमड़े का बड़ा थैला जिसमें पानी लायाजाता है और वह बैल पर भैंसे पर अथवा ऊँट पर लादी जाती है ।

प्रा० पखावज स्त्री० मृदङ्ग, ढोलक, एक प्रकार का बाजा ।

प्रा० पखावजी पु० पखावज बजानेवाला ।

प्रा० पखेरू (सं० पक्षी) पु० पंछी, पक्षी, परिन्द ।

प्रा० पग (सं० पद) पु० पाँव, पैर, गोड़ ।

प्रा० पगपटतारबजाना बोल० नाचने में पाँवों से गत बजाना ।

प्रा० पगडण्डी }
पगदण्डी } (पग=पाँव, दण्डी= लकीर) स्त्री० छोटा वा संकेत रस्ता, पदचिह्न, चोरराह, लीक, गुप्तमार्ग ।

प्रा० पगड़ी स्त्री० पगा, पगिया, चीरा, दस्तार, अम्मामा, शमला, मन्दीर ।

प्रा० पगधारना (पग=पैर, धारना =रखना) क्रि० अ० पगधारना, सिधारना, जाना, आना ।

प्रा० पगना } क्रि० अ० मिलना,
पागना } लीन होना, रस में डूबना ।

प्रा० पगला गु० पागल, बावला, मूर्ख ।

प्रा० पगार पु० गारा, गीली मिट्टी ।

सं० पङ्क (पचि=फैलाना) पु० कीचड़, कर्दम, बोदा, कीच, काँदो, दलदल, २ पाप ।

सं० पङ्कज (पङ्क=कीचड़, जन्=पैदा होना) कृ० पु० कमल, पद्म, कँवल ।

सं० पङ्कनिधि (पङ्क=कीचड़, निधि =खजाना) पु० समुद्र, सागर ।

सं० पङ्करुह } (पङ्के=कीचड़ में, रुह्
पङ्केरुह } =उगना) पु० कमल, कँवल ।

सं० पङ्क्ति (पचि=फैलना, वा फैलाना) स्त्री० पाँति, पाँत, पंगत, धारी, लकीर, श्रेणी, क़तार ।

सं० पंगु (खजि=लँगड़ा के चलना) गु० लँगड़ा, पँगुला, अपङ्ग ।

प्रा० पचखना (सं० पञ्च=पाँच, खण्ड=भाग) गु० (घर) जिसमें पाँच खण्ड हों ।

सं० पचन (पच्=पचना) भा० पु० पचना, २ पाक, पका हुआ, ३ आग, ४ पकानेवाला ।

प्रा० पचना (सं० पचन) क्रि० अ० गलना, हज़म होना, २ सड़ना, जलना, बिगड़ना, ३ मिहनत करना, जतन करना ।

सं० पचनीय (पच्+अनीय) र्म० पु० पाकयोग्य, पकाने के लायक़ ।

प्रा० पचपन (सं० पञ्च + पञ्चाशत्, पञ्च=पाँच, पञ्चाशत्=पचास) गु० पचास और पाँच, ५५ ।

प्रा० पचमहला (सं० पञ्च=पाँच, और अरबी महल) गु० पचखना, पचकोठा ।

सं० पचमान कृ० पु० पकानेवाला या पकाता हुआ ।

प्रा० पचलड़ी स्त्री० पाँच लड़की माला ।

प्रा० पचानबे (सं० पञ्चनवति, पञ्च=पाँच, नवति=नब्बे) गु० नब्बे और पाँच, ९५ ।

प्रा० पचास (सं० पञ्चाशत्) गु० पाँच गुना दश ।

प्रा० पचासी } (सं० पञ्चाशीति,
पाचियासी } पञ्च=पाँच, अशीति =अस्सी) गु० अस्सी और पाँच, ८५ ।

सं० पचिण पु० आग, अग्नि ।

प्रा० **पचीस**, **पच्चीस** (सं० पञ्चविंशति, पञ्च=पाँच, विंशति =बीस) गु० बीस और पाँच, २५।

प्रा० **पचौनी** (सं० पच्=पचना) स्त्री० ओझरी, आमाशय, पेट में एक थैली सी होती है जो खाना खाते हैं सो पहले उसमें पहुँचता है।

प्रा० **पच्चर** पु० फणी, ठेका, कील, खूँटी, मेख़।

प्रा० **पच्चरमारना** बोल० खिझाना, सताना, दुखदेना, आड़देना, किसी का काम अड़ा देना।

प्रा० **पच्ची** गु० लगा हुआ, संयुक्त, सटा हुआ।

प्रा० **पच्चीहोना** बोल० आपस में सटाना जैसे लेई से, २ बहुत प्यार होना।

प्रा० **पच्चीकारी** स्त्री० जड़ाई, खुदाई, २ रफूकरना, टाँका मारना।

प्रा० **पच्छिम**, **पाच्छिम** (सं० पश्चिम) स्त्री० पछाहँ, पश्चिमदिशा।

प्रा० **पच्छी** (सं० पक्षी) पु० सहायी, साथी, सहायक, २ पखेरू, पक्षी।

सं० **पच्यमान** कर्म० पु० पकायागया।

प्रा० **पछताना** (सं० पश्चात्तापन, पश्चात्=पीछें, तप्=जलना) क्रि० अ० पछतावा करना, सोचना, पीछे दुख करना, हाथ मलना, शोक वा अनुताप वा खेद करना, कुढ़ना, कलपना।

प्रा० **पछतावा** (सं० पश्चात्ताप) पु० पस्तावा, खेद, सोच, अनुताप, चिन्ता, शोक, सन्ताप, अफ़सोस।

प्रा० **पछवा**, **पछियाव** (सं० पश्चिमवात, पश्चिम=पच्छिम, वात=हवा) स्त्री० पश्चिमकी हवा।

प्रा० **पछाड़** (पछाड़ना) भा० स्त्री० पटकना, गिराना, नीचे गिरना, २ फटकन, पछाड़।

प्रा० **पछाड़खाना** बोल० सिर के बल गिरना।

प्रा० **पछाड़ना** क्रि० स० गिराना, पटकना, अधीन करना।

प्रा० **पछोड़ना** (सं० स्फुट्=जुदा २ करना) क्रि० स० फटकना।

प्रा० **पजावा** (फ़ा० पज़ावा) पु० आँवा, ईंट पकने की जगह।

प्रा० **पजेब** (फ़ा० पाज़ेब, पा=पैर, ज़ेब=शोभा वा गहना) स्त्री० पाज़ेब, पैर में पहनने का गहना, किंकिणी।

सं० **पञ्च** (पचि=फैलना) गु० पाँच, पु० पञ्चायत में बैठकर विचार करने वाला, मध्यस्थ, विचारकर्त्ता।

सं० **पञ्चक** (पञ्च=पाँच) पु० ज्योतिषमें धनिष्ठादि रेवतीपर्यन्त पाँच नक्षत्रों का एक जगह पर आना, २ पाँच का समूह, गु० पाँच, पाँच सम्बन्धी।

सं० **पञ्चगव्य** (पञ्च=पाँच, गव्य= गायका) पु० गाय के पाँच पदार्थ

(जैसे १ दूध, २ दही, ३ घी, ४ गोबर, ५ गोमूत्र)।

सं० पञ्चतत्त्व (पञ्च=पाँच, तत्त्व=भूत वा पदार्थ) पु० पाँच भूत अर्थात् १ पृथ्वी, २ पानी, ३ आग, ४ हवा, ५ आकाश।

सं० पञ्चतन्मात्र पु० शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, पञ्चतत्त्वों के गुण।

सं० पञ्चता भा० स्त्री०
पञ्चत्व भा० पु० } (पञ्च=पाँच पदार्थ अर्थात् शरीर के पाँचों तत्त्वों का पाँचों में मिलजाना) मौत, मृत्यु, मरण।

सं० पञ्चतीर्थी (पञ्च=पाँच, तीर्थ=पवित्र जगह) स्त्री० प्रयाग, पुष्कर आदि पाँच तीर्थ, २ कार्त्तिक सुदी ११ से पूनौ तक के पाँच दिन।

सं० पञ्चदश (पञ्च+दश) गु० पन्द्रह, १५।

सं० पञ्चधा (पञ्च=पाँच, धा=प्रकार) क्रि० वि० पाँच प्रकार से, पञ्चविध।

सं० पञ्चनख पु० पाँच नखवाला, हस्ती, कच्छप, व्याघ्र, कृकलास, स्त्री० बिस्तुइया, पल्ली, छपकली।

सं० पञ्चनद (पञ्च+नद) पु० पञ्जाब अर्थात् जिस देश में १ सतलज, २ व्यासा, ३ रावी, ४ चनाब, ५ झेलम ये पाँच नदियाँ बहती हैं।

सं० पञ्चपात्र (पञ्च+पात्र) पु० एक बरतन जो शायद पाँच धातुओं का बना होता है और पूजा के समय काम आता है, २ पाँच पात्रों का समूह।

सं० पञ्चप्राण (पञ्च=पाँच, प्राण=साँस) पु० पाँच प्रकार की हवा जिनके साँस लेने से मनुष्य जीता है और उनके नाम ये हैं (१ प्राण, २ अपान, ३ व्यान, ४ उदान, ५ समान)।

सं० पञ्चभूत (पञ्च+भूत) पु० पाँच तत्त्व (अर्थात् १ पृथ्वी, २ पानी, ३ आग, ४ हवा, ५ आकाश)।

सं० पञ्चभूतात्मा (पञ्चभूत+आत्मा) पु० मनुष्य जो पाँच तत्त्वों से बना हुआ है, २ देही।

सं० पञ्चम (पञ्च) गु० पाँचवाँ, पु० एक रागका नाम।

सं० पञ्चमी (पञ्चम) स्त्री० पाँचवीं तिथि, पाँचे।

सं० पञ्चमुख (पञ्च+मुख) पु० शिव, महादेव, २ सिंह, शेर।

सं० पञ्चरत्न (पञ्च+रत्न) पु० पाँच रतन (जैसे १ सोना, २ हीरा, ३ मोती, ४ लाल, ५ नीलम, और कहीं कहीं सोने की जगह मूँगा गिनते हैं)।

सं० पञ्चवक्त्र (पञ्च=पाँच, वक्त्र=

मुँह) पु० शिव, महादेव, २ सिंह ।

सं० **पञ्चवटी** (पञ्च=पाँच, वट=वृक्ष) स्त्री० एक जगह का नाम जो गोदावरी के पास थी जहाँ रामचन्द्र वनवास के समय रहे थे और जहाँ १ पीपल, २ बिल्व, ३ बड़, ४ धात्री, ५ अशोक ये पाँच वृक्ष थे ।

सं० **पञ्चबाण** } **पञ्चशर** } (पञ्च=पाँच, बाण वा शर=तीर) पु० कामदेव का नाम, जिसके पाँच बाण कहे जाते हैं, जैसे "सम्मोहनोन्मादनौ च, शोषणस्तापनस्तथा । स्तम्भनश्चेति कामस्य, शराः पञ्च प्रकीर्त्तिताः" अर्थ १ मोहना, २ मस्त करना, ३ सुखाना, ४ सताना या जलाना, ५ शिथिल अथवा अचेत करना ये पाँच कामदेव के बाण कहलाते हैं ।

सं० **पञ्चशाख** पु० हाथ, कर, पाँचशाखा अर्थात् अँगुली ।

सं० **पञ्चसूना** (पञ्च=पाँच, सूना =जीववधस्थान) स्त्री० चुल्ली, चूल्हा, पेषणी, चक्की, कण्डनी, गाली वा ओखली, उपस्कर, बढ़नी, उदकुम्भ, घनौची वा घड़ा रखने का स्थान ।

सं० **पञ्चाङ्ग** (पञ्च + अङ्ग) पु० तिथिपत्र, पत्रा (जिससे १ तिथि, २ वार, ३ नक्षत्र, ४ योग, ५ करण ये पाँच जाने जायँ) पञ्जिका, "चन्दनागुरुकर्पूरकुङ्कुमं गुग्गुलुस्तथा । पञ्चाङ्गमुच्यते धीरैर्धूपदानविधाविदम्" १ चन्दन, २ अगुर, ३ कर्पूर, ४ केशर, ५ गुग्गुलु, १ फल, २ फूल, ३ जड़, ४ पत्ता, ५ डार ।

सं० **पञ्चानन** (पञ्च=विस्तृत, या पाँच, आनन=मुँह) पु० सिंह, केशरी, शेर, २ शिव, महादेव ।

सं० **पञ्चामृत** (पञ्च + अमृत) पु० १ दूध, २ दही, ३ चीनी, ४ घी, ५ शहद इन पाँचों से बनी हुई वस्तु ।

प्रा० **पञ्चायत** (सं० पञ्च) स्त्री० सभा जहाँ पाँच आदमी मिलकर विचार करते हैं, विचार करने की सभा ।

सं० **पञ्चाल** पु० पंजाब देश ।

सं० **पञ्चालिका** स्त्री० कठपुतली, गुड़िया, गुड्डा, २ द्रौपदी ।

सं० **पञ्चावस्था** स्त्री० बाल्य, कुमार, पौगण्ड, युवा, वृद्धा ।

सं० **पञ्चेन्द्रिय** (पञ्च + इन्द्रिय) स्त्री० पाँच इन्द्री, (इन्द्रिय शब्द को देखो) ।

सं० **पञ्जर** (पजि=रोकना वा घेरना) पु० पँसली, ठठरी, पँसलियों का समूह, २ पिंजरा ।

सं० **पट** (पट्=घेरना वा बैठना) पु० कपड़ा, पल्ला, २ परदा, आड़, ओट ।

प्रा० **पट** (सं० पटत्, पट्=जाना)

पु० गिरने या मारने का शब्द, २ किवाड़, झिलमिल, गु० ऊपर, नीचे, उलटा, औंधा ।

सं० पटक क० पु० डेरा, क़नात, पड़ाव, छावनी, फ़ौज रहने की जगह ।

सं० पटकार क० पु० जुलाहा, कोरी, बुननेवाला ।

सं० पटच्चर पु० जीर्णवस्त्र, चिथड़ा, २ चोर, सेंध देनेवाला, ठग ।

प्रा० पटकन (पटकना) स्त्री० पछाड़, चोट ।

प्रा० पटकनखाना बोल० पछाड़ खाना, नीचे गिरना ।

प्रा० पटकना क्रि० स० पछाड़ना, नीचे गिराना, दे मारना ।

प्रा० पटका (सं० पट्ट=बैठना वा लपेटना) पु० कमरबन्धा, दुपट्टा ।

प्रा० पटड़ा
पटरा } (सं० पट्ट, पट्=घेरना) पु० तख़्ता, पाटा, पीढ़ा ।

प्रा० पटतर गु० बराबर, समान ।

प्रा० पटना क्रि० अ० मिलना, भर पाना (जैसे हुंडी का पटना) २ पानी सींचा जाना, पनियाना, ३ भरना, ४ छाया जाना, ढकजाना ।

प्रा० पटना (सं० पाटलिपुत्र) पु० एक शहर का नाम जो सूबे बिहार में है ।

प्रा० पटनि पु० कपड़े, वस्त्र, ढकना ।

प्रा० पटरानी
पाटरानी } (पाट + रानी) स्त्री० पहली और बड़ी रानी, महारानी ।

प्रा० पटरी (सं० पट्ट, पट्=घेरना) स्त्री० लिखने की पट्टी, पटिया, तख़्ती, २ कच्ची सड़क ।

सं० पटल (पट=कपड़ा, वा आड़, ला=लेना) पु० ढकने का कपड़ा, परदा, २ आँख का परदा, ३ समूह ।

प्रा० पटली स्त्री० पाँत, पंक्ति, श्रेणी ।

सं० पटवाय पु० क़नात, तम्बू, डेरा ।

प्रा० पटवारी पु० गाँवका हिसाब रखनेवाला ।

प्रा० पटह पु० बाना, पटा, २ डंका, नक़ारा, नगारा ।

प्रा० पटा (सं० पट्ट, पट्=घेरना) पु० पाट, पाटा, आसन जिस पर हिन्दूलोग बैठ कर पूजा करते हैं अथवा खाना खाते हैं, २ गदका ।

प्रा० पटाका
पटाखा } पु० टोंटा, मुर्रा, छुछूंदर ।

प्रा० पटाना क्रि० स० सींचना, पानी देना, पनियाना, २ चौका देना, लीपना, थोपना, ३ छत को कड़ी अथवा धरन से छाना, ४ हुंडी के रुपये पाना, ५ झगड़ा शान्त होना, आग शान्त होना ।

प्रा० पटाव भा० पु० सिंचाई, २ छत बनाना, द्वारके ऊपर का काठ ।

प्रा० पटिया (सं० पट्टिका) स्त्री०

पटरी, पट्टी, स्लेट, २ पु० गले में पहनने का एक गहना, ३ शिर के गुहे बार ।

सं० पटीर पु० बसफोड़, २ चन्दन, ३ घटा, ४ मूल, ५ केदार, क्यारी, ६ कामदेव, ७ चलनी, ८ पपीहा, ९ राँग, १० खदिर, ११ उदर ।

सं० पटु (पट्=जाना वा चमकना) गु० चतुर, निपुण, प्रवीण, तेज़, होशियार ।

सं० पटुत्व भा० पु० } (पटु)
पटुता भा० स्त्री० } चतुराई, निपुणाई, प्रवीणता ।

प्रा० पटुवा (पाट) क० पु० रेशम का काम करनेवाला, रेशमसे माला और मोती आदि पिरोनेवाला ।

प्रा० पटेल पु० चौधरी, गाँव का मुखिया ।

प्रा० पटेला } पु० एक प्रकार की
पटैला } नाव, २ जिससे धरती बराबर करते हैं, धरन ।

सं० पटोल पु० परिवर, परवर ।

सं० पट्टन पु० नगर, शहर ।

प्रा० पट्टा (सं० पट्ट) पु० बाल, अलक, २ पटिया जो कुत्ते के गले में डालते हैं, ३ चकनामा, ठेका अथवा किसी ज़मीनका काग़ज़ ।

प्रा० पट्टू (पाट) पु० लोई, कम्बल ।

प्रा० पट्ठा पु० जवान, पहलवान, २ पाठा, नस, शिरा ।

सं० पठन (पठ्=पढ़ना) भा० पु० पढ़न, पाठ, पढ़ना, अध्ययन, सबक़।

प्रा० पठाना क्रि० स० भेजना ।

प्रा० पठावनी } स्त्री० मज़दूरी, मे-
पठौनी } हनत ।

सं० पठित (पठ्=पढ़ना) कर्म० पु० पढ़ा हुआ ।

सं० पठनीय }
पाठ्य } कर्म० पढ़ने योग्य ।

प्रा० पठिया स्त्री० जवान स्त्री, यौवना, २ छोटी बकरी ।

प्रा० पड़ना (सं० पतन, पत्=गिरना) क्रि० अ० गिरना, २ लेटना, ३ आजाना, संयोग होना, ४ पड़ाव डालना, डेरा करना, ५ टपकना, चूना।

प्रा० पड़रहना } बोल० बेबश रह-
पड़ेरहना } ना, सोरहना, लेट रहना ।

प्रा० पड़ाव (पड़ना) पु० ठहरने की जगह, ठहराव, २ छावनी, डेरा, कम्पू, ३ सेना, ४ भीड़ ।

प्रा० पड़िया स्त्री० भैंस का बच्चा ।

प्रा० पड़ोस (सं० प्रतिवास) पु० पास बसना, समीपता, सहवास ।

प्रा० पड़ोसी (सं० प्रतिवासी, वा पार्श्वी) पु० पास रहनेवाला ।

प्रा० पढ़न (सं० पठन) भा० पु० पढ़ना।

प्रा० पढ़ना (सं० पठन) क्रि० स० पाठ करना, बाँचना, सीखना, रटना, जपना ।

प्रा० पढ़न्त (सं० पठन) स्त्री० पढ़न, पढ़ना, पाठ, सन्था, २ मन्त्र, टोना, जादू ।

प्रा० पढ़ागुणा }
पढ़ालिखा } बोल० गु० पढ़ा हुआ, पण्डित, प्रवीण, निपुण ।

प्रा० पढ़ाना (पढ़ना) क्रि० स० सिखाना, सीखदेना, शिक्षादेना ।

सं० पण (पण्=व्यवहार करना) पु० प्रतिज्ञा, वचन, होड़, शर्त, बाज़ी, २ बीस गंडे अथवा ८० कौड़ी का परिमाण, ३ व्यवहार, लेनदेन, मूल्य, वेतन, शाक, साग, क़रार ।

सं० पणन भा० पु० विक्रय, बेचना ।

सं० पणित कर्म० पु० बेचागया, २ स्तुत ।

सं० पणव (पण्=व्यवहार वा जाना अथवा पण्=सराहना) पु० छोटा ढोल ।

सं० पण्डा (पण्=सराहना) स्त्री० बुद्धि, मति, समझ ।

प्रा० पण्डा (सं० पण्डित) पु० पुजारी ।

सं० पण्डित[1] (पण्डा=बुद्धि) पु० बुद्धिमान्, विद्यावान्, पढ़ा हुआ, विद्वान्, २ पढ़ानेवाला, पाठक, शिक्षक ।

सं० पण्डितम्मन्य क० पु० विद्याभिमानी, मूर्ख ।

प्रा० पण्डु (सं० पाण्डु) पु० दिल्ली का पुराना राजा, कुन्ती का पति और युधिष्ठिर आदि पाँचों पाण्डवों का बाप ।

सं० पण्य (पण्=लेन देन करना, वा सराहना) भा० पु० बेचने योग्य, लेन देन करने योग्य, व्यवहार करने योग्य, बेचने की वस्तु, वाणिज्य, २ सराहने योग्य ।

सं० पण्यशाला (पण्य=लेन देन करने योग्य, शाला=जगह) स्त्री० दूकान, हाट, बाज़ार ।

सं० पण्यस्त्री (पण्य + स्त्री) स्त्री० वेश्या, नगरनारी, पतुरिया, रण्डी ।

प्रा० पत (सं० पद्=अधिकार) स्त्री० प्रतिष्ठा, इज़्ज़त, आबरू, बड़ाई, नामवरी, २ (सं० पति) पु० स्वामी, प्रभु, धनी, मालिक, भर्त्ता, ३ (सं० पत्र) पत्ता ।

सं० पतङ्ग (पतन=गिरता हुआ, गम्=जाना) पु० सूर्य, २ फड़ङ्ग, पतङ्गा, टिड्डी, उड़नेवाला कीड़ा, ३ गुड्डी, कनकव्वा, ४ एक लकड़ी जिससे रङ्ग निकलता है, पारा ।

प्रा० पतङ्गा पु० चिनगारी, चिनगी ।

सं० पतञ्जलि पु० शेष, महाभाष्य का बनानेवाला ऋषीश्वर ।

---

[1] "यस्य सर्वे समारम्भाः कामसंकल्पवर्जिताः । ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पण्डितं बुधाः" (इति गीतायाम्) ॥

प्रा० पतझड़ (पत=पत्ता, झड़=झड़ना) स्त्री० एक ऋतुका नाम जिसमें वृक्षों के पत्ते झड़ जाते हैं, शिशिर ।

सं० पतन (पत्=गिरना) पु० पड़ना, गिरना, पछाड़, पटकन, गिर पड़ना ।

सं० पतत्र पु० पंख, पक्ष, पर ।

सं० पतद्ग्रह पु० पीकदान, अवशेष, सेना, लशकर ।

प्रा० पतला (सं० प्रतनु) गु० पतील, झीना, मिहीन, बारीक, २ दुबला ।

प्रा० पतवार स्त्री० जहाज़ में एक चीज़ जिससे जहाज़ चलाया जाता है, नाव का करण ।

प्रा० पता पु० ठिकाना, चिह्न,खोज ।

सं० पताका (पत्=जाना वा गिरना वा जानना) स्त्री० ध्वजा, झण्डा, चिह्न, फरहरा ।

सं० पति (पा=बचाना)पु०स्वामी, मालिक, धनी, २ भर्ता, खाविंद, इज़्ज़त ।

सं० पतित (पत्=गिरना) गु० गिरा हुआ, भ्रष्ट, पापी, नष्ट, दुष्ट, धर्म से गिरा हुआ ।

सं० पतितपावन (पतित=पापी, पावन=पवित्र करनेवाला) गु० पापियों को शुद्ध करनेवाला, परमेश्वर का नाम और गुण ।

सं० पतिदेवता (पति + देवता) स्त्री० वह स्त्री जिसके पतिही देवता के बराबर हो, पतिव्रता ।

प्रा० पतिया } (सं०पत्रिका) स्त्री०
पाती } चिट्ठी, पत्री, पत्र, खत, २ प्रतीतपत्र; जिसमें पण्डित लोग अपनी सम्मति लिखकर देते हैं ।

प्रा० पतियाना (सं० प्रत्ययन=विश्वास, प्रति=फिर, इण्=जाना) क्रि० स० भरोसा करना, विश्वास करना, प्रतीत करना ।

प्रा० पतियारा (सं० प्रत्यय) पु० भरोसा, विश्वास, प्रतीत ।

सं० पतिंवरा स्त्री० स्वेच्छा से विवाह करनेवाली ।

सं० पतिव्रता पति=भर्ता, व्रत=नियम अर्थात् (जिसके पति की सेवा करना ही नियम है) स्त्री० सती, कुलवती, पतिदेवता स्त्री, पतिसेवा करनेवाली स्त्री ।

प्रा० पतील गु० पतला, झीना, मिहीन, बारीक ।

सं० पतितस्त्री पतितत्रिया,पतुरिया।

प्रा० पतुरिया } स्त्री० वेश्या,
पतारिया } गणिका ।

प्रा० पतोह } (सं० पुत्रवधू) स्त्री०
पतोहू } बेटा की स्त्री, बहू ।

सं० पत्तन (पद्=जाना) पु० नगर, शहर ।

प्रा० पत्तर (सं० पत्र) पु० पता, २ चिट्ठी, ३दानपत्र जो तांबे पर खोदा जाता है, ४ सोने चाँदी का वर्क़ ।

प्रा० पत्तल (सं० पत्रावली, पत्र=पत्ता, अवली=पाँत) स्त्री० पनवारा, पत्तों की बनी हुई चीज़ जिसमें खाना खाते हैं ।

प्रा० पत्ता (सं० पत्र) पु० पात, दल, गहना, पाता ।

प्रा० पत्ताहोना बोल० भाग जाना, चम्पतहोना ।

सं० पत्ति पु० पैदल, गर्त, गड़हा, मूल, वीरभेद, सैन्यभेद, एक रथ, एक हाथी, तीन घोड़े, पाँच पैदल जिस फ़ौज में हों उसकी पत्तिसंज्ञा है, गति, चाल, प्राप्ति ।

प्रा० पत्ती (सं० पत्र) स्त्री० पाती, पंखड़ी, भाँग, भङ्ग, बूटी, सब्ज़ी ।

प्रा० पत्थर (सं० प्रस्तर, प्र=बहुत, स्तृ=फैलाना) पु० पाषाण, पाथर, शिला ।

प्रा० पत्थर छातीपर रखना बोल० सब्र करना, संतोष करना, चुप होरहना, वश नहीं चलना ।

प्रा० पत्थरपसीजना बोल० पिघलना, नर्म होना, कोमलचित्त होना, नर्मदिल होना, कठिन काम सहज होना ।

प्रा० पत्थरपानीहोजाना बोल० कोमलचित्त होना, नर्मदिल होना।

प्रा० पत्थरसाफेंकमारना बोल० किसी की बात को बिन समझे उत्तर देना, कड़ी बात कहना ।

प्रा० पत्थरसेसिरफोड़ना बोल० मूर्ख को शिक्षा देना ।

प्रा० पत्थरहोना बोल० भारी होना, २ अचल होना, अटल होना, चुप खड़ा रहना, ३ निर्दयी होना, कठोरचित्त होना ।

प्रा० पत्थरकला } (सं० प्रस्तरकला)
पथरकला } स्त्री० बंदूक, तुपक।

सं० पत्न्याट (पत्नी + आट, अट= घूमना, सैर करना) पु० मङ्गली पुरुष, खुशदिल, खुशतबअ, पुंश्चल जो औरत को लेकर सैर करै ।

सं० पत्रणा स्त्री० गोटा, लरी, रोदा, कपड़ों का छीर ।

सं० पत्ररेखा स्त्री० तिलक की रेखा, चन्दनादिका लगाना ।

सं० पत्रदाता क० पु० चिट्ठीरसाँ, पोस्टमैन ।

सं० पत्रदारक क० पु० अश्रु, आँसू, बालक, वायु, आरा, आरी ।

सं० पत्रपरशु पु० सुवर्णादि कतरने की कैंची ।

सं० पत्रपाश्या स्त्री० सोने का टीका, सोने की खौरि ।

सं० पत्ररञ्जन पु० पत्र लिखना, चित्र लिखना, शृङ्गार करना ।

सं० पत्नी (पति) स्त्री० भार्या, स्त्री,

जोरू, ब्याही हुई स्त्री ।

सं॰ पत्र (पत्=गिरना) पु॰ पत्ता, २ चिट्ठी, ३ पुस्तक का पत्रा, ४ सोने चाँदी अथवा और किसी धातु का पत्तर, सवारी, दिस्ता, रथ, बाण, पंख ।

प्रा॰ पत्रा (सं॰ पत्र) पु॰ तिथिपत्र, पञ्चाङ्ग, २ पन्ना, सफ़हा ।

सं॰ पत्रालय धि॰ डाकख़ाना, पोस्टआफ़िस ।

सं॰ पत्रिका } (सं॰ पत्र) स्त्री॰ चिट्ठी,
पत्री } पत्र, २ पक्षी, ३ वृक्ष, ४ कमल ।

सं॰ पत्सल पु॰ सड़क, रास्ता, पथ, राजमार्ग ।

सं॰ पथ (पथ्=जाना) पु॰ रस्ता, मार्ग, बाट, पैंड़ा, डगर ।

प्रा॰ पथराना (पत्थर) क्रि॰ अ॰ बड़ा होना, पत्थर मारना ।

प्रा॰ पथरी (सं॰ प्रस्तर) स्त्री॰ कंकरी, २ चकमक, ३ पेट में पथरीरोग, ४ पत्थर का बरतन ।

प्रा॰ पथरीला (पत्थर) गु॰ कंकरीला ।

सं॰ पथिक (पथ्=जाना) पु॰ बटोही, यात्री, मार्गू, राही, मुसाफ़िर ।

सं॰ पथिल } क॰ पु॰ मार्गगामी,
पथी } मुसाफ़िर ।

सं॰ पथिवाहक (पथि=राह, वह=चलना) क॰ पु॰ कहार, मजूर ।

सं॰ पथ्य (पथ=मार्ग, राह, जो इलाज के मार्ग में अर्थात् इलाज के लिये हितकारी हो) स्त्री॰ पु॰ रोगी के हितकारी खाना, बीमार के खाने योग्य चीज़, पुथ, उचित, हित ।

सं॰ पथ्या स्त्री॰ हरीतकी, हड़ ।

सं॰ पद (पद्=चलना जिससे चलते हैं) पु॰ पाँव, पैर, चरण, २ पदचिह्न, पाँवका चिह्न, ३ स्थान, जगह, ४ प्रतिष्ठा, बड़ाई, अधिकार, उहदा, लक़ब, पदवी, उपाधि, ५ शब्द, विभक्तिसमेत शब्द, ६ श्लोक का पाद, ७ वस्तु, पदार्थ ।

सं॰ पदचर } (पद=पाँव, चर=च-
पदचारी } लना) पु॰ पैदल ।

सं॰ पदज (पद=पाँव, जन्=पैदा होना) पु॰ पाँवकी अंगुली ।

सं॰ पदत्याग पु॰ इस्तीफ़ा, अधिकारत्यागपत्र ।

सं॰ पदत्राण (पद=पैर, त्रा=बचाना) पु॰ जूता, पगरखी, पनही ।

प्रा॰ पदम } (सं॰ पद्म) पु॰ कमल,
पदुम } कँवल, २ सौ नील ।

प्रा॰ पदवी (सं॰ पद) स्त्री॰ बड़ाई, प्रतिष्ठा, अधिकार, उपनाम ।

सं॰ पदवी (पद्=जाना) स्त्री॰ मार्ग, रस्ता ।

सं॰ पदाति (पद=पाँव, अत्=चलना) पु॰ पैदल, पियादा, पैदल सेना ।

सं० पदाम्भोज (पद=पैर, अम्भोज =कँवल) पु० चरणकमल, कमल जैसे पाँव, पदारविन्द ।

सं० पदारविन्द (पद=पैर, अरविन्द=कमल) पु० चरणकमल, कमलकेसे पाँव ।

सं० पदार्थ (पद=शब्द, अर्थ=अभिप्राय) पु० वस्तु, चीज़, उत्तम वस्तु, न्यायशास्त्र में सात पदार्थ माने हैं (१द्रव्य, २गुण, ३ कर्म, ४ सामान्य, ५ विशेष, ६ समवाय, ७ अभाव, कोई कोई नैयायिक सोलह पदार्थ मानते हैं) शब्द का अर्थ, पद का अर्थ ।

सं० पद्धति (पद्=पाँव से, हन्=मारना) स्त्री० मार्ग, रस्ता, २ पङ्क्ति, ३ पूजा का ग्रन्थ ।

सं० पद्म (पद्=जाना) पु० कमल, कँवल, २ सौ नील, ३ व्यूह ।

सं० पद्मगर्भ (पद्म=कमल, गर्भ= उत्पत्ति) पु० ब्रह्मा जो विष्णु के नाभिकमल से उत्पन्न हुआ ।

सं० पद्मनाभ (पद्म=कमल, नाभ= नाभि, अर्थात् जिनकी नाभि में कमल हो) पु० विष्णु ।

सं० पद्मराग (पद्म=कँवल, राग= रङ्ग, अर्थात् जिसका रङ्ग लाल कमल जैसा हो) पु० लालमणि, माणिक ।

सं० पद्मलाञ्छन पु० राजा विशेष, ब्रह्मा, सूर्य, कुबेर ।

सं० पद्मस्नुषा(पद्म + स्नुषा=कन्या) स्त्री० लक्ष्मी, दुर्गा, गङ्गा ।

सं० पद्मा (पद्म=कँवल अर्थात् जिसके हाथ में कमल हो) स्त्री० लक्ष्मी, विष्णुपत्नी, कमला ।

सं० पद्माकर (पद्म=कँवल, आकर =खान) पु० कमलों का बड़ा तालाब ।

सं० पद्मावती (पद्म=कँवल, वती= वाली) स्त्री० एक नदी का नाम, २ एक स्त्री का नाम, ३ मनसा देवी ।

सं० पद्मिनी (पद्म) स्त्री० सुन्दर स्त्री, उत्तम स्त्री, २ कमलिनी, (स्त्रियाँ चार प्रकार की होती हैं–१ पद्मिनी, २ चित्रिणी, ३ शंखिनी, ४ हस्तिनी) ।

सं० पद्य (पद=चरण अथवा श्लोक आदिका पाद) पु० श्लोक, छन्द, कविता, छन्दप्रबन्ध, नज़्म ।

प्रा० पधारना (सं० पदधारण, पद=पाँव, धारण=रखना) क्रि० अ० जाना, सिधारना, पग धारना, आना, तशरीफ़लाना वा लेजाना ।

प्रा० पन (सं० पण) पु० वचन, होड़, शर्त ।

प्रा० पन भाववाचक संज्ञा का चिह्न जैसे लड़कपन, भलापन आदि ।

प्रा० पनघट (सं० पानीय=पानी, घट्ट=घाट) पु० पानी भरने का घाट ।

प्रा० पनच (सं० प्रत्यञ्चा, प्रति=सामने, अञ्च्=जाना) स्त्री० चिल्ला, धनुष् की रस्सी, जिह, रोदा ।

प्रा० पनचक्की (सं०पानीय=पानी, चक्र=चक्की) स्त्री० पानी के वेग से चलनेवाली चक्की ।

प्रा० पनपना क्रि० अ० मोटा होना, बढ़ना ।

प्रा० पनबट्टा पु० पान रखने का डब्बा, गिलौरीदान ।

प्रा० पनवाड़ी (सं० पर्णवाटी,
पनवारी पर्ण=पान,वाटी=बाड़ी) स्त्री० पान की बाड़ी ।

प्रा० पनवारा (सं० पर्णावली, पर्ण=पत्ता, अवली=पाँत) पु० पत्तल, पत्रावली ।

सं० पनस (पन्=सराहना) पु० कटहर, २ बन्दर का नाम ।

प्रा० पनसारी (सं० पण्य=बेचने योग्य वस्तु, सृ=फैलाना) पु० पसारी ।

प्रा० पनसोई स्त्री० छोटी नाव ।

प्रा० पनहारिन (सं० पानीय-
पनहारी हारिणी,पानीय=पानी, हारिणी=लानेवाली) स्त्री० पानी भरनेवाली ।

प्रा० पनही (सं०पन्नद्धी, पद=पाँव, नह्=बाँधना) स्त्री० जूता, जूती, पगरखी ।

प्रा० पनारी (सं० प्रणाली)
पनाली स्त्री० मोरी, नाली, प्रणाली ।

प्रा० पनिया (सं० पानीय) पु० पानी, जल, गु० पानी का ।

प्रा० पनियाना (पानीय) क्रि० स० सींचना, पानी देना ।

प्रा० पन्थ (सं० पन्था, पथ्=जाना) पु० रस्ता, मार्ग, राह,२ मत, धर्म।

सं० पन्नग (पन्न=गिरता हुआ, वा नीचे मुँह किये, गम्=चलना, वा पद=पैर, न=नहीं, गम्=चलना, जो पैरों से न चले) पु० साँप, सर्प, नाग ।

सं० पन्नगारि (पन्नग=साँप, अरि=वैरी) पु० गरुड़, विष्णु का वाहन।

सं० पन्नगाशन (पन्नग=साँप, अश्=खाना) गरुड़, विष्णु का वाहन।

प्रा० पनही (सं० पन्नद्धा वा पन्नद्धी, नह्=बाँधना) स्त्री० उपानह्,जूता, पदत्राण ।

प्रा० पन्ना (सं० पर्ण) पु० पत्र, पत्रा, २ नीलमणि ।

सं० पपि (पा=पीना) क० पु० पीनेवाला, जैसे कि "रामः सोमं पपिर्यज्ञे" याग में रामने सोमरस का पान किया ।

सं० पपिस् पु० सूर्य, चन्द्रमा,
पपी रक्षक, पीनेवाला ।

प्रा० पपनी स्त्री० आँख की बरुनी।

प्रा० पपिहा } पु० एक पखेरू जो
पपीहा } बरसात में बहुत बोला करता है।

सं० पपु (पा=पालना) क० पु० पालक, पालनेवाला, रक्षा, रक्षक, पिता, पालक, स्त्री० माता, धात्री, दाई, उपमाता, धाय।

प्रा० पपोटा पु० पलक, आँख का पुट।

सं० पयः[1] (पा=पीना) पु० दूध, २ पानी, जल।

प्रा० पयनिधि (सं० पयोनिधि) पु० समुद्र।

सं० पयमुख पु० दूध पीनेवाला, शीरखोरा।

सं० पयस्विनी (पयस्=पानी वा दूध) स्त्री० नदी, २ दुधार गाय, दुधेल गाय, भेड़ी, बकरी।

प्रा० पयान (सं०प्रयाण) पु० चलना, कूच, विदा, प्रस्थान, यात्रा।

प्रा० पयाल (सं० पलाल, पल्=जाना वा बचाना) पु० पुआल, खर, तिनका, विचाली।

सं० पयोद (पयस्=पानी, द=देनेवाला, दा=देना) पु० बादल, बदल।

सं० पयोधर (पयस्=पानी वा दूध, धर=रखनेवाला, धृ=रखना) पु० मेघ, बादल, २ स्त्रीकी चूँची, स्तन, ३ नारियल, ४ गन्ना, ५ सुगन्धित घास, ६ पर्वत, दुग्धवृक्ष।

सं० पयोधि (पयस्=पानी, धा=रखना) पु० समुद्र, सातो सागर।

सं० पयोनिधि (पयस्=पानी, निधि=खज़ाना) पु० समुद्र, सागर।

सं० पयोराशि (पयस्=पानी, राशि=समूह, ढेर) पु० समुद्र, सागर।

सं० पर (पृ=भरना) गु० दूसरा, पराया, और, भिन्न, अन्य, विदेशी, परदेशी, २ दूर, परे, अन्तर, पर, ३ पिछला, ४ उत्तम, श्रेष्ठ, शिरोमणि, प्रधान, सबसे बड़ा, ५ विरोधी, प्रतिकूल, ६ बहुत, अत्यन्त, अधिक, तत्पर, लगा हुआ, पु० वैरी, शत्रु, क्रि० वि० केवल, इसके पीछे, समुच्च० परन्तु, किन्तु, लेकिन।

प्रा० पर (सं० उपरि) नित्य सं० ऊपर, पै, जैसे कि कोठे पर।

सं० परकीया (पर दूसरा) स्त्री० दूसरे की स्त्री, पराये पुरुषके पास जानेवाली स्त्री।

प्रा० परख (सं० परीक्षा) स्त्री० जाँच, इम्तिहान, परीक्षा, कसौटी।

प्रा० परखना (सं० परीक्षण) क्रि० स० जाँचना, परीक्षा करना, देखना, निरखना।

---

[1] "पयः क्षीरं पयो जलम्" (इति अनेकार्थमञ्जर्य्याम्)।

प्रा० **परचूनिया** पु० आटा दाल बेचनेवाला, मोदी, बनियां ।

प्रा० **परछना** क्रि० स० दुलहा और दुलहिन की आरती उतारना ।

प्रा० **परजंक** (सं०पर्यङ्क) पु० पलंग ।

सं० **परजात** (पर=अन्य, जात=उत्पन्न) मर्म० पु० अन्य से उत्पन्न, दूसरे से पैदा हुआ, वर्णसंकर, जारज, यार से पैदा किया गया, २ दूसरी जाति का, दूसरे क़ौम का ।

प्रा० **परत** स्त्री० पुट, तह, चुनत, लड़, थाक, २ नक़ल, कापी ।

सं० **परतन्त्र** (पर=दूसरा, तन्त्र=प्रधान है जिसका, अथवा पर=दूसरे के, तन्त्र=वश में) गु० परवश, पराधीन, दूसरे के वश ।

प्रा० **परतला** पु० तलवार की पट्टी ।

प्रा० **परती** (पड़ना) स्त्री० पड़ी धरती, बिन बोई धरती, बंजर ।

सं० **परत्र** अव्य० अन्यत्र, परलोक, और जगह, दूसरी जगह, जैसे कि (परत्र मोक्षमाप्नुयात्) परलोक में मुक्ति को पाता है ।

सं० **परत्व** भा० पु० भिन्नता, जुदाई, फ़ासला, शत्रुता, श्रेष्ठता, महत्त्व ।

सं० **परदेश** (पर=दूसरा, देश=मुल्क) पु० विदेश, पराया देश, और मुल्क ।

सं० **परदेशी** (परदेश) गु० विदेशी ।

सं० **परन्तप** पु० शत्रु, दुष्ट, गु० शत्रुनाशक, जीतनेवाला ।

प्रा० **परनाना** (सं० परिणय, परि=आपस में, नी=लेजाना) क्रि० स० ब्याह करना, शादी करना ।

प्रा० **परनाना** पु० नाना का बाप, प्रमातामह ।

सं० **परन्तु** (परम् + तु) समुच्च० पर, किन्तु, लेकिन ।

प्रा० **परपराना** क्रि० अ० चरपराना, जलना ।

प्रा० **परबस** (सं० परवश) गु० पराधीन ।

सं० **परब्रह्म** (पर=सबसे बड़ा, ब्रह्म=ईश्वर) पु० सर्वशक्तिमान, ईश्वर, परमेश्वर, परमात्मा ।

सं० **परभृत** (भृ=पालना) पु० काक पक्षी, कोयल पक्षी, गु० शत्रुका सहायक, अन्य से पालागया ।

सं० **परम** (पर=उत्तम, सबसे अच्छा, मा=नापना, अथवा पृ=भरना) गु० बहुत अच्छा, बहुत श्रेष्ठ, उत्तम, मुख्य, प्रधान, सब से पहला, भला ।

सं० **परमगति** (परम=उत्तम, गति=दशा) स्त्री० मोक्ष, मुक्ति, २ उत्तम दशा ।

सं० **परमत** (पर=भिन्न अथवा दूसरे की मत=सलाह वा सम्मति) पु० दूसरे की सलाह, २ भिन्न सम्मति ।

सं० **परमधाम** (परम=उत्तम, धाम

=जगह) पु० वैकुण्ठ, परमपद, स्वर्ग ।

सं० परमपद (परम=उत्तम, पद=जगह) पु० सबसे अच्छी जगह, स्वर्ग, वैकुण्ठ, २ मुक्ति, मोक्ष " यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं पदम् " जहाँ जाकर कोई नहीं लौटते हैं उस धाम को परमपद (परमधाम) कहते हैं ।

सं० परममित्र (परम=मुख्य, मित्र=दोस्त) पु० पक्का दोस्त, सबसे अच्छा मित्र ।

सं० परमब्रह्म (परम=सबसे बड़ा, ब्रह्म=ईश्वर) पु० परमेश्वर, परब्रह्म ।

सं० परमहंस (परम=उत्तम, हंस=आत्मा, अर्थात् जिसकी आत्मा उत्तम हो) पु० संन्यासी, योगी, स्त्री० शोभा, कान्ति, छवि ।

सं० परमा स्त्री० बड़ी, उत्तमा, शोभा, कान्ति ।

सं० परमाणु (परम=बहुतही, अणु=छोटा) पु० बहुत ही छोटी वस्तु, कन, कनिका, ज़र्रा, रेज़ा, २ पल, बहुत थोड़ा समय ।

सं० परमात्मा (परम=उत्तम वा सबसे बड़ा, आत्मा=जीव) पु० परब्रह्म, परमेश्वर ।

सं० परमानन्द (परम=बहुत, आनन्द=हर्ष) पु० बहुत खुशी, अत्यन्त आनन्द ।

सं० परमार्थ (परम=उत्तम, अर्थ=प्रयोजन) पु० उत्तम पदार्थ, सब से अच्छा विषय वा प्रयोजन, २ यथार्थज्ञान, पवित्रज्ञान, ३ उत्तम अथवा पहला काम, धर्म, पुण्य ।

सं० परमायुस् (परम+आयुस्) पु० बड़ी उमर, दीर्घावस्था, दीर्घायु, दराज़उमर ।

सं० परमेश्वर (परम+ईश्वर) पु० सर्वशक्तिमान्, परमात्मा, ईश्वर ।

सं० परमेष्ट (परम+इष्ट) पु० श्रेष्ठ, महान्, परमेश्वर, ब्रह्मा, देवता ।

सं० परमेष्ठिन् परमेष्ठी } (परम=व्योम, चिदाकाश, स्था=ठहरना) पु० ब्रह्मपद में टिकनेहारा, ब्रह्मा, गुरु ।

सं० परमोदार (परम=बड़ा, उदार=दातार) गु० बड़ा दातार, श्रेष्ठ, उत्तम ।

सं० परम्परा (परम्=बहुत, पृ वा पृ=पूरा करना वा भरना) स्त्री० सन्तान, वंश, पीढ़ी, २ रीति, परिपाटी, क्रम, अनुक्रम, पुराने समय की रीति, क़दामत, परंपरा से, क्रि० वि० पहले से, अगले समय से ।

प्रा० परला (सं० पर) गु० दूसरी ओर का, उस तरफ़ का ।

सं० परलोक (पर+लोक) पु० स्वर्ग, दूसरा लोक, मृत्यु, शत्रुजन,

अन्यजन, श्रेष्ठजन ।

सं० **परवश** (पर=दूसरे के, वश=आधीन) गु० पराधीन ।

सं० **परशु** / **पर्शु** } (पर=वैरी, शॄ=मारना, नाश करना) पु० फरसा, कुल्हाड़ी, टांगी ।

सं० **परशुधर** (परशु=फरसा, धृ=रखना) पु० परशुराम ।

सं० **परशुराम** (परशु + राम, अर्थात् फरसा रखनेवाला राम) पु० जमदग्नि ऋषि का बेटा और विष्णु का छठा अवतार जिसने राजा सहस्रार्जुन को मारा और इक्कीस बार पृथिवी के सब क्षत्रियों को नाश किया ।

सं० **परवश** गु० पराधीन, पराया भरोसा, पराया सहारा ।

प्रा० **परस** (सं० स्पर्श) पु० छूना, छुहावट, स्पर्श ।

प्रा० **परसत** क्रि० वि० छूतेही, स्पर्श करते ही ।

प्रा० **परसना** (सं० स्पर्शन, स्पृश्=छूना) क्रि० स० छूना ।

प्रा० **परसों** (सं० परश्वस्, पर=पिछला वा दूसरा, श्वस्=कलका दिन) क्रि० वि० आगे वा पीछे का तीसरा दिन ।

प्रा० **परस्थौ** पु० रहना, वास करना, ठहरना ।

सं० **परस्पर** (पर=दूसरा, पर=दूसरा) क्रि० वि० आपस में, दोनों में, अन्योन्य, एक दूसरे को, बाहम ।

सं० **परा** उपस० उलटा, पीछे, विपरीत, २ प्रभुता, बड़ाई, ३ विरोध, ४ अहंकार, ५ अनादर, तिरस्कार, ६ बहुत, अधिक, ७ ज़ोर, बल, सामर्थ्य, ८ से ।

प्रा० **परा** पु० पाँत, श्रेणी, दल, समूह, मण्डली, टोली ।

प्रा० **पराँठा** / **पराठा** } पु० एक तरह की रोटी जो घी या तेल लगा कर कई पर्त देकर बनाई जाती है ।

सं० **पराक्रम** (परा=ज़ोर से, क्रम्=जाना, वा पाँव रखना) पु० बल, ज़ोर, सामर्थ्य, साहस ।

सं० **पराक्रमी** (पराक्रम) गु० बलवान्, ज़ोरावर, महाबली, बलवन्त, साहसी, शूरवीर ।

सं० **पराग** (परा=बहुत, गम्=जाना) पु० फूलों की सुगन्धित धूलि, पुष्परज ।

सं० **पराङ्मुख** (पराङ् + मुख) गु० विमुख, रहित, भिन्न, लज्जित, अधोमुख, शरमिन्दा, बाग़ी ।

सं० **पराजय** (परा=उलटा, जय=जीत, अर्थात् जीत का उलटा) भा० स्त्री० हार, पराभव, तिरस्कार, शिकस्त ।

सं० **पराजित** कर्म० पु० पराभूत, शिकस्त, हाराहुआ ।

पराजेता क०पु० पराजयकर्ता, जीतनेवाला, फ़त्ताह ।

परात स्त्री० थाल, बड़ीथाली ।

पराधीन (पर=दूसरे के, आ-धीन=वश) गु० दूसरे के आधीन, परवश ।

पराना } (सं० पलायन,
पलाना } परा=उलटा, अय्=जाना) क्रि० अ० भागजाना, पीठ देना, पीठ दिखाना, चंपत होना ।

पराभव (परा=तिरस्कार, भू=होना) स्त्री० हार, पराजय, तिरस्कार ।

सं० पराभूत र्म० पु० पराजित, शिकस्त, हारा हुआ ।

सं० परामर्श (परा=बहुत, मृश्=सोचना) पु० विचार, मन्त्र, उपदेश, मन्त्रणा, सलाह, विवेक, भेद, राज़ ।

सं० परामर्शक क० पु० मन्त्री, वज़ीर, सलाही ।

सं० परामर्शित र्म० पु० विवेचित, उपदेशित ।

सं० परामृष्ट र्म० पु० उपदेशित, सलाह दिया गया ।

सं० परामर्ष पु० क्रोध, ग़ुस्सा, तीव्र सहन, क्षमा ।

सं० परायण (पर=लगा हुआ वा बहुत, अय्=जाना) गु० लगा हुआ, तत्पर, मगन, अत्यासक्त, मशगूल ।

प्रा० पराया (सं० पर) दूसरा, और, ऊपरी, बाहरी, विदेशी, २ दूसरे का ।

सं० पराशर पु० व्यासजी का बाप ।

सं० पराश्रय (पर=दूसरे के, आश्रय=आसरे में) गु० पराधीन, परवश ।

सं० परास्क र्म० पु० पराजित, प्रक्षिप्त, निरस्त, प्रहत, शिकस्त ।

सं० परास्त (परा=तिरस्कार वा अनादर, अस्=फेंकना या निकालना) र्म० पु० हारा हुआ, पराजित किया हुआ ।

सं० पराह (पर + अहः) पु० दूसरा दिन, परदिन ।

सं० पराह्ण (पर + अह्न) पु० दिन का पिछला भाग, दोपहरके पीछे का दिन, सेहपहर ।

सं० परि (पृ=भरना) उपस० चारों ओर से, २ सब तरह से, सम्पूर्ण रूप से, ३ बहुत, अतिशय, ४ पहले, ५ पास, आसपास, ६ आपस में, ७ बुरा ।

सं० परिकर (परि=चारों ओर से, कृ=करना) पु० कमर, २ नौकर चाकर, सेवक, अनुचर, ३ परिवार, ४ समूह, ५ साज़, ६ तैयारी ।

सं० परिक्रमा (परि=चारों ओर, क्रम्=पाँव रखना) स्त्री० प्रदक्षिणा,

चारों तरफ़ घूमना ।

सं० परिक्षित } (परि=पहले, क्षि=
परीक्षित } नाश करना, क्योंकि परीक्षित को अपनी मा के गर्भ में ही अश्वत्थामा ने मार डाला था पर श्रीकृष्ण ने उसको जिलाया था इसकी कथा श्रीमद्भागवत और महाभारत में है) पु० अर्जुन का पोता, और अभिमन्यु का बेटा और हस्तिनापुर का राजा ।

सं० परिखा (परि=चारों ओर से, खन्=खोदना) स्त्री० खाईं, खंदक़, क़िले के चारों ओर का नाला ।

सं० परिगत (गम्=जाना) कर्म० पु० विस्मृत, भूला हुआ, वेष्टित, लपेटा हुआ, गया हुआ ।

सं० परिग्रह भा० पु० स्त्री, औरत, परिवार, मूल, स्वीकार, शपथ, सौगन्द, शाप, सूर्यग्रहण ।

सं० परिग्राहक क० पु० गाहक, स्वीकारक ।

सं० परिघ (परि=चारोंओर से, हन् =मारना) पु० लोहे की लाठी, गदा, लोहे का मुद्गर ।

सं० परिघोष पु० गाली, शब्द, मेघशब्द ।

सं० परिचय (परि=चारों ओर से, चि=इकट्ठा करना) पु० जानपहचान, बहुत मिताई ।

सं० परिचर्या (परि=सब तरह से, चर्=जाना) पु० सेवा, पूजा, उपासना ।

सं० परिचारक (परि=चारों ओर चर्=जाना) पु० दास, सेवक, नौकर, आलापकर्ता, प्रसिद्धकर्ता ।

सं० परिच्छद पु० पुरस्कर, उपयोगी वस्तु, साज़, बिछौना, ढपना, सभारक्षक, आस्तरण, हाथियों का झूल असबाब ।

सं० परिच्छन्न कर्म० पु० आच्छादित, महसूर, घिराहुआ ।

सं० परिचित कर्म० पु० ज्ञात, जाना हुआ, पहचाना हुआ ।

सं० परिच्छेद (परि, छिद्=काटना पु० भाग, खण्ड, विभाग, अध्याय, पर्व ।

सं० परिजन (परि=पास के, जन= मनुष्य) पु० परिवार, कुटुम्ब, घराना, घरके लोग, २ नौकर चाकर, अनुचर ।

सं० परिणत (परि, नम्=झुकना) क० पु० भक्त, नम्र, पकाहुआ, झुका हुआ ।

सं० परिणति (परि, नम्=झुकना) भा० स्त्री० नमस्कार, नम्रता, झुकाव, प्राप्त ।

सं० परिणय (परि + नी=लेजाना) पु० विवाह, नम्रता, प्राप्ति ।

सं० परिणाम (परि, नम्=झुकना, पर परि उपसर्ग के साथ आने से

सका अर्थ बदलना होता है) पु० न्त, समाप्ति, बदलना, भिन्न-ाव, अन्तकी अवस्था, फल ।

परिणामदर्शी (परिणाम= ल, दर्शी=देखनेवाला, दृश्= खना) क० पु० पहलेसे हरएक ामका भला बुरा फल जाननोला, अग्रशोची, बुद्धिमान् ।

परिणायक (परि + नी=लोना) क० पु० पांसोंका खेलनोला, पति, वर ।

परिणाह पु० चौड़ाई, विस्तार, निबन्धन, सम्बन्ध, रिश्ता ।

परितः अव्य० सर्वतः, चारों तरफ़, चारों ओर ।

परिताप (परि=चारों ओर से, तप्=तपना) पु० दुःख, शोक, सोच, पीड़ा, संताप, कष्ट, एक नरक का नाम ।

परितुष्टि (परि + तुष्=तुष्टि) भा० स्त्री० सन्तुष्टि, इतमीनान ।

परितृप्त (परि + तृप् + त, तृप् =सन्तोष) क० पु० सब प्रकार से तृप्त, आसूदा ।

परितोष (परि=सब तरह से, तुष्=प्रसन्न होना) पु० संतोष, तृप्ति, हर्ष, आनन्द, प्रसन्नता, खुशी ।

सं० परित्यक्त र्म० पु० छोड़ागया, सम्यक्त्यक्त, जल्द छोड़ागया ।

सं० परित्याग (परि=सब तरहसे, त्यज्=छोड़ना) पु० त्याग, छोड़ना, तजना ।

सं० परित्राण (परि=सब तरह से, त्रै=बचाना) पु० बचाव, रक्षा, उद्धार, डरसे अथवा बुराईसे बचाना, रक्षण, हिफ़ाज़त ।

सं० परित्रात र्म० पु० रक्षित, महफ़ूज़ ।

सं० परित्राता क० पु० रक्षक, महाफ़िज़ ।

सं० परिदान (परि=सब प्रकार, दा=देना) पु० दानादान, देन लेन, त्याग, प्रक्षेप, धरोहर धरना, तिरस्कार, निवारण ।

सं० परिदेवक (परि=सब तरह से, देव्=क्रीड़ा) क० पु० विलापकर्ता, रोनेवाला, जुआरी, जीतनेवाला, व्यवहारी, स्तुतिकर्ता, शोभायमान ।

सं० परिदेवन (देव=स्तुति, क्रीड़ा) भा० पु० विलाप, रोदन, क्रीड़ा, जिगीषा, द्यूतकर्म, जुआ खेलना, स्तुति ।

सं० परिधान (परि=चारों ओर से, धा=पहनना) पु० पहनने का कपड़ा, नाभि से नीचे पहनने का कपड़ा ।

सं० परिधि (परि=चारों ओर से, धा=रखना अर्थात् घेरना) स्त्री० गोल लकीर जिससे वृत्त घेरा

जाता है, घेरा, मण्डल, २ सूर्य का अथवा चाँदका मण्डल ।

सं० **परिधेय** (परि=चारों ओर से, धा=पहनना) र्म्म० पु० पहनने योग्य कपड़ा ।

सं० **परिध्वंस** (परि=चारों ओर से, ध्वंस्=नाश होना) पु० नाश, बिगाड़, हानि ।

सं० **परिपक्व** (परि=बहुत, पक्व=पका हुआ) र्म्म० पु० खूब पका हुआ, २ पक्का, चतुर, बुद्धिमान् ।

सं० **परिपाक** भा० पु० फल, नतीजा।

सं० **परिपन्थक** पु० (परि, पन्थ=क्लेश देना, मारना) क० पु० शत्रु, ठग, चोर, लुटेरा, पापी, कुमार्गी, उन्मादी ।

सं० **परिपाटी** (परि=सब तरह से, वा चारों ओर से, पट्=जाना) स्त्री० रीति, दस्तूर, अनुक्रम, परम्पराकी रीति ।

सं० **परिपूर्ण** (परि=सब तरह से, पूर्ण=पूरा) गु० पूरा, भरा हुआ, संपूर्ण, समाप्त ।

सं० **परिभव** } (परि=अनादर, भू=
परिभाव } होना) पु० अनादर, अवज्ञा, तिरस्कार, नफ़रत ।

सं० **परिभाषा** (परि=चारों ओर से, भाष्=कहना) स्त्री० लक्षण, व्याख्या, संज्ञा ।

सं० **परिभ्रमण** (परि=चारों ओर, भ्रम=घूमना) पु० फिरना, घूमना

सं० **परिमाण** (परि=चारों ओ से, मा=नापना) पु० माप, नाप तौल, अंदाज़ ।

सं० **परिमार्ज्जित** (परि + मार्जित, मृज्=शुद्ध करना, साफ़ करना) र्म्म० पु० शुद्ध, संशोधित, पा साफ़ ।

सं० **परिमित** (परि=चारों ओर से मा=नापना) र्म्म० पु० नापाहुआ मापा हुआ, नियमित ।

सं० **परिमिति** भा० स्त्री० परिमाण हद, किनारा ।

सं० **परिरम्भ** (परि + रम्भ्=उत्सु होना) पु० आलिङ्गन, भेटन श्लेष, मुलाक़ात ।

सं० **परिवर्जन** (परि + वृज्=त्या गना) भा० पु० मारना, त्या करना ।

सं० **परिवर्त्तन** (परि + वृत्=होना पर परि उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ बदलना होता है) पु० बदल, एराफेरी, पलटना, तबा दिला ।

प्रा० **परिवा** (सं० प्रतिपदा) स्त्री० पखकी पहिली तिथि, पहली तारीख़ ।

सं० **परिवाद** (परि=बुरा, वद्= कहना) पु० गाली, निन्दा, अप वाद, दुर्वाद ।

सं० परिवादक क० पु० निन्दक, बदगो ।

सं० परिवार (परि=चारों ओर से, वृ=घेरना वा ढकना) पु० घराना, कुटुम्ब, परिजन ।

सं० परिवारण (परि, वृ=घेरना) भा० पु० माँगना, तक़ाज़ा करना ।

सं० परिवाह (परि, वह्=बहना) पु० उपद्रव, जलका उछलना, बहाव, चहबच्चा, तरङ्ग, लहर ।

सं० परिवृत (परि=चारों ओर से, वृत=रहना) र्म्म० पु० रक्षित, आच्छादित, घिराहुआ, परिवेष्टित ।

सं० परिवेष्टन (परि, वेष्ट्=लपेटना) भा० पु० लपेटना, लिफ़ाफ़ा ।

सं० परिव्राज } (परि=सब तरफ़
परिव्राजक } वा सबकाम छोड़ के, व्रज्=फिरना) क० पु० संन्यासी, यती, योगी, गुसाईं ।

सं० परिशिष्ट (परि, शास्=सिखाना) क० पु० अवशेष, तितिम्मा, बाक़ी, अवशिष्ट ।

सं० परिशोधन (परि, शुध्=शुद्ध करना) भा० पु० ऋणचुकाना, क़र्ज़ा अदा करना, फ़र्चा करना ।

सं० परिश्रम (परि=चारों ओर से, श्रम=मिहनत करना) पु० मिहनत, श्रम, थकावट ।

सं० परिश्रान्त र्म्म० पु० थकगया ।

सं० परिश्रमी क० पु० मेहनती ।

सं० परिषद् (परि + षद्=जाना) अनुचर, सेवक, सभासद ।

सं० परिष्कार (परि + कार, कृ=करना) भा० पु० सफ़ाई, स्वच्छता, शुद्धता ।

सं० परिष्कृत र्म्म० पु० अलंकृत, भूषित ।

सं० परिष्वङ्ग पु० आलिङ्गन, भेटना, हमागोश होना ।

प्रा० परिहरना (सं० परिहरण परि, हृ=लेना) क्रि० स० छोड़ना, दूर करना ।

सं० परिहार (परि + हार, हृ=हरना, लेना) भा० पु० हरना, लेना, छीनना, अवज्ञा, अपमान, त्याग ।

सं० परिहास (परि=बहुत, हस्=हँसना) भा० पु० हँसी, ठट्ठा, कौतुक, खेल, मसख़री, लोकापवाद ।

सं० परिहास्य र्म्म० पु० हँसी के लायक़, हँसने योग्य ।

सं० परिहित र्म्म० पु० आच्छादित, घेरा हुआ, आच्छन्न, गुप्त, पोशीदा ।

सं० परीक्षक (परि=चारों ओर से, ईक्ष्=देखना) भा० पु० परीक्षा करनेवाला, परखनेवाला, इम्तिहान लेनेवाला ।

सं० परीक्षा (परि=चारों ओर से, ईक्ष्=देखना) भा० स्त्री० परख,

जाँच, इम्तिहान।

सं० **परीक्षित** पु० परिक्षित शब्द को देखो।

सं० **परीक्षोत्तीर्ण** (परीक्षा+उत्तीर्ण, तॄ=पारजाना) गु० परीक्षा में पूरा, इम्तिहान पास, फ़ेल नहीं, पास।

सं० **परुष** (पॄ=भरना) गु० कठोर, कड़ा, पु० कुवचन, गाली।

प्रा० **परे** (सं० पर) क्रि० वि० उधर, उस ओर, दूर, परे रहना, बोल० दूर रहना।

प्रा० **परेखा** (सं० परीक्षा) स्त्री० परख, जाँच, २ पछतावा, पश्चात्ताप।

सं० **परेत** (परा, इण्=जाना) पु० भूत, पिशाच, शैतान, गु० मुर्दा, मृतक।

प्रा० **परेता** पु० रहटा, चर्खा, चर्खी।

प्रा० **परेवा** पु० कपोत, कबूतर, प्रतिपदा।

सं० **परेद्युस्** अव्य० दूसरा दिन, कल, फ़र्दा।

सं० **परोक्ष** (पर=परे, अक्ष=आँख) गु० नहीं देखा हुआ, आँखों के परे।

सं० **परोपकार** (पर=दूसरे का, उपकार=भला) पु० दूसरे का भला, पराये का हित।

सं० **परोपकारी** (परोपकार) गु० दूसरे का भला करनेवाला।

प्रा० **परोस** पु० समीपता, ग्वेड़ा, नज़दीकी।

प्रा० **परोसना** (सं० परिवेषण, परि=चारों ओर से, विष्=फैलाना) क्रि० स० खाना पत्तलों में रखना, खाना चुनना, पत्तल लगाना।

प्रा० **परोहा** (सं० परीवाह, परि=सब ओर से, वह्=ले जाना) पु० चरस, मोट, पुर।

सं० **पर्कटि** स्त्री० पाकरि, पकरिया।

प्रा० **पर्चा** } (सं० परीक्षा) पु० परख,
पर्चौ } जाँच, परीक्षा।

प्रा० **पर्चाना** (सं० परिचयन) क्रि० स० भेंट कराना, मिलाना, बातों में लगाना।

प्रा० **पर्छाईं** (सं० प्रतिच्छाया, प्रति=अपने रूप, छाया=छाँव) स्त्री० प्रतिबिम्ब, अक्स।

सं० **पर्जन्य** (पृष्=सींचना, गर्ज=गर्जना) क० पु० मेघ, इन्द्र, मेघगर्जन, नवीन मेघ, बरसाती मेघ।

सं० **पर्ण** (पर्ण्=हरा होना, वा पॄ=भरना) पु० पत्ता, पान।

सं० **पर्णकार** क० पु० बरई, तम्बोली।

सं० **पर्णशाला** (पर्ण=पत्ता, शाला=घर) स्त्री० पत्तों की बनी कुटी, झोपड़ी।

सं० **पर्णी** क० पु० वृक्ष, पेड़।

सं० **पर्व** (पर्व=जना वा पूरा होना)

ग्रन्थि, गाँठ, गिरह ।

सं० पर्यङ्क (परि=पास, अङ्क=गोद, अकि=जाना वा चिह्न करना) पु० पलँग ।

सं० पर्यटक क० पु० मुसाफ़िर, पथिक ।

सं० पर्यटन (परि=चारों ओर, अट=घूमना) भा० पु० घूमना, भ्रमण करना, सफ़र करना, सैर करना ।

सं० पर्यन्त (परि=पास, अन्त=सीमा) पु० अन्त, सीमा, हद, अव्य० तक, तलक ।

सं० पर्याप्त (परि=चारों तरफ़, आप्=व्याप्त होना) पु० समर्थ, क्षम, योग्य ।

सं० पर्याय (परि=चारों ओर से, इण्=जाना) पु० एक अर्थ का शब्द, एकार्थी शब्द, २ अनुक्रम, रीति, ३ प्रकार, ४ अवसर, ५ उर्फ़, हमनामी ।

सं० पर्यायवाचक क० पु० एकार्थबोधक, मुतरादिफ़ ।

सं० पर्यालोचना (परि+आलोचना) भा० पु० विचार करना, ग़ौर करना, यहतियात करना, चौकसी करना, सब प्रकार से देखना ।

सं० पर्व (पृ=भरना) पु० त्योहार, उत्सव, २ अध्याय, परिच्छेद, ३ गाँठ ।

सं० पर्वणी } पर्विणी } (पृ=भरना) स्त्री० त्योहार, उत्सव, तिवहार ।

सं० पर्वत (पर्व=भरना) पु० पहाड़, शैल, गिरि, भूधर ।

सं० पर्वतारि (पर्वत+अरि) पु० इन्द्र ।

सं० पर्वतीय (पर्वत) गु० पहाड़ी, पहाड़ का ।

सं० पल (पल्=जाना) स्त्री० घड़ी का साठवाँ भाग, निमेष, दम, आन, लहमा ।

प्रा० पलगारि क्रि० वि० निकार, कर, निकारी, दूर की ।

प्रा० पलभरमें बोल० तुरन्त, उसी दम, पलमारते ।

प्रा० पलमारते बोल० तुरत, पल भरमें ।

प्रा० पलक स्त्री० आँख का पुट, पपोटा, बरुनी, पपनी, २ पल, क्षण ।

प्रा० पलँग (सं० पल्यङ्क परि+अङ्क) पु० सेज, शय्या, खाट, चारपाई ।

प्रा० पलटन (अं० बैटालियन) पु० हज़ार सिपाहियोंका यूथ या थोंक, जत्था ।

प्रा० पलटना क्रि० अ० पीछा आना, फिरजाना, लौटजाना, २ बदलना, बदललेना, ३ नकारना, इन्कार करना ।

प्रा० पलटा (पलटना) पु० बदला, एराफेरी, बट्टा, अदला बदला, २ प्रतिफल, पीछा, उपकार करना, ३ पीछा बैर लेना ।

प्रा० पलटालेना बोल० पीछा ले लेना, लौटा लेना, २ बदला लेना, बैर लेना, बैर मारना ।

प्रा० पलड़ा पु० तराजू का एकपल्ला ।

सं० पलाण्डु पु० प्याज़, सलग़म ।

प्रा० पलथी स्त्री० कूला टेक कर ज़मीन पर बैठना, एक प्रकार का आसन वा बैठने का ढंग ।

प्रा० पलना (सं० पलन, पल्=बचाना) क्रि० अ० पनपना, प्रतिपालित होना ।

प्रा० पलवल (सं० पटोल, पट्=जाना) पु० परवल, एक तरकारी का नाम ।

प्रा० पलवार पु० एकप्रकार की नाव ।

प्रा० पला पु० बड़ाचमचा, कलछुल, दर्वी, डोई, तेल आदि निकालने का बरतन ।

सं० पलायन (परा से, अथवा उलटा, अय्=जाना) पु० भागना, भागाभाग ।

सं० पलायक क० पु० भगोड़ा ।

सं० पलायित क० पु० भगोड़ा, प्रस्थित, चम्पत ।

सं० पलाश (पल्=चलना, अश्=फैलाना वा खाना) पु० टेसू का वृक्ष, ढाक का वृक्ष ।

सं० पलित (पल्=पालना, जाना) भा० पु० वृद्धत्व, बुढ़ापा, सफ़ेद बाल, गु० वृद्ध, शिथिल, पुराना ।

प्रा० पली स्त्री० चमची, जिससे तेल आदि निकाला जाता है ।

प्रा० पलीत (सं० प्रेत) पु० भूत, पिशाच, प्रेत ।

प्रा० पलीता (फ़ा० पतीला वा फ़तीला) पु० बत्ती, २ बंदूक का तोड़ा, जामगी ।

प्रा० पलेथन पु० सूखा आटा जो रोटीपर बेलने के समय लगाया जाता है ।

प्रा० पलेथननिकालना बोल० बहुत मारना, बहुत पीटना ।

प्रा० पलोटना क्रि० स० धीरे २ पाँव दाबना ।

सं० पल्ल पु० गोला, गोली ।

सं० पल्लव (पल्=जाना, और लू=काटना, अथवा पल्ल्=जाना) पु० नया पत्ता, अङ्कुर, कैल ।

सं० पल्लवग्राही (ग्रह्=लेना) क० पु० पत्रा बाँधनेवाला, पुरोहित ।

सं० पल्लवित (पल्लव) गु० नये पत्तों वाला, नयेपत्तोंसे युक्त, २ पुलकित, रोमाञ्चित, हर्षित, प्रसन्न ।

प्रा० पल्ला पु० अन्तर, दूरी, टप्पा, २ सहायता, ३ कपड़े का छोर, अञ्चल, ४ छोर, किनारा, ५

किवाड़, ६ तीनमन बोझका ।

सं० पल्ली स्त्री० छपकिली, २ स्वल्प ग्राम, छोटा गाँव, ३ कुटी, झोपड़ी, ४ कुटनी ।

प्रा० पल्लू पु० कपड़े का खूँट, आँचल, अंचल, छोर ।

प्रा० पल्लूदार पु० कपड़ा जिसका पल्ला सुनहरी वा रुपहरी हो ।

सं० पल्वल पु० तलैया, पानी का भरा गड़हा, छोटा तलाव ।

सं० पवन (पू=पवित्र करना) स्त्री० हवा, वायु, बयार, बतास, बाव, अनाजका उसाना वा पसाना ।

सं० पवनकुमार (पवन=हवा, कुमार=बेटा) पु० हनुमान्, पवन का बेटा ।

सं० पवनतनय (पवन=हवा, तनय =बेटा) पु० हनुमान् ।

सं० पवनायन पु० झरोखा, खिड़की, मोखा ।

सं० पवनरेखा (पवन=हवा, रेखा=लकीर) स्त्री० राजा उग्रसेन की रानी और कंस की मां ।

सं० पवनाशन (पवन=हवा + अशन=भोजन, अश्=खाना) पु० वायुभक्षक, सर्प, साँप ।

सं० पवनसुत (पवन=हवा, सुत=बेटा) पु० हनुमान्, पवन का पुत्र ।

प्रा० पवारना क्रि० स० फेंकना, डालना, भेजना ।

सं० पवि (पू=शुद्ध करना, अर्थात् दुष्ट जनों को मार पीटकर शुद्ध करना) पु० वज्र, इन्द्र का शस्त्र, हीरा ।

सं० पवित्र (पू=शुद्ध करना) गु० शुद्ध, निर्मल, पापरहित, साफ़, विमल, पु० यज्ञोपवीत, जनेऊ, २ कुश, ३ ताँबा, जल ।

सं० पवित्रता (पवित्र) भा०स्त्री० निर्मलता, शुद्धता, सफ़ाई ।

प्रा० पवित्री (सं० पवित्र) स्त्री० कुश घास की अथवा सोना, चाँदी और ताँबा इन तीनों धातु की बनी हुई अँगूठी जिसको हिंदूलोग पूजा करते समय पहनते हैं ।

सं० पश (पश्=जाना, बाँधना) पु० स्पर्श, बाँधना, मथना, पीड़ा, गु० छूनेवाला, बाँधनेवाला, शत्रु ।

सं० पशु (दृश्=देखना, जो सब को बराबर देखता है और भले बुरे का विचार नहीं करता) पु० चौपाया जन्तु, जीव, गाय भैंस घोड़ा आदि, २ देवता ।

सं० पशुपति (पशु=देवता, जीव अथवा चौपाया (बैल) पति=स्वामी) पु० महादेव, शिव ।

सं० पशुपाल
पशुपालक } (पशु=चौपाया, पाल्=बचाना) क० पु० ग्वाला, अहीर ।

सं० पशुराज (पशु=चौपाया, राज

=राजा) पु० सिंह ।

सं० **पश्चात्** क्रि० वि० पीछे, इसके पीछे, २ पश्चिम दिशा की ओर ।

सं० **पश्चात्ताप** (पश्चात्=पीछे, ताप=दुःख) पु० पछतावा, पस्तावा, अनुताप ।

सं० **पश्चिम** (पश्चात्=पीछे) स्त्री० पश्चिमदिशा, पछाँह, गु० पश्चिम का ।

सं० **पश्यतोहर** (पश्यतः=देखते २, हर=चुरा लेना) पु० सुनार, २ मृत्यु, ३ चोर ।

प्रा० **पषान** (सं० पाषाण) पु० पत्थर, शिला ।

सं० **पस** (पस्=बाँधना, गाँठ देना) पु० बाँधना, छूना, गु० बाँधनेवाला, छूनेवाला ।

प्रा० **पसरना** (सं० प्रसरण, प्र=बहुत, सृ=जाना वा फैलना) क्रि० अ० फैलना ।

प्रा० **पसली** (सं० पार्श्व) स्त्री० पाँसुली, पञ्जर, पाँजर ।

प्रा० **पसाना** (सं० प्रस्रावण,प्रस्रु=चूना या टपकना) क्रि० स० माँड़ निकालना, रींधेहुये चाँवलों में से पानी निकालना ।

सं० **पसारना** (सं० प्रसारण, प्रसृ=जाना वा फैलना) क्रि० स० फैलाना, बिछाना ।

प्रा० **पसारी** पु० पनसारी शब्द को देखो ।

प्रा० **पसीजना** (सं० प्रस्वेदन, प्र, स्विद्=पसीना निकलना) क्रि० अ० पिघलना, नर्म होना, पसीना निकलना, २ कोमलचित्त होना ।

प्रा० **पसूजना** क्रि० स० तुर्पना, तागना, डोरा डालना ।

प्रा० **पसीना** (सं० प्रस्वेद, प्र, स्विद्=पसीना होना) पु० पसेव, स्वेद ।

प्रा० **पसेव** (सं० प्रस्वेद) पु० पसीना, २ प्रसन्नता, खुशी ।

प्रा० **पस्ताना** (सं० पश्चात्ताप) क्रि० अ० पछताना, पश्चात्ताप करना ।

प्रा० **पह** स्त्री० भोर, तड़का, पोह, भिनसार, सबेरा ।

प्रा० **पहफटना**
पौफटना } बोल० भोर होना, तड़का होना, रोशनी फैलना, दिन निकलना ।

प्रा० **पहचान** (पहचानना) स्त्री० जानना, जान पहचान, ज्ञान, चिन्हार, लक्षण, चिन्हानी, चिह्न ।

प्रा० **पहचानना**
पहिचानना } (सं० प्रतिज्ञान) क्रि० स० जानना, चीन्हना, लक्षण करना ।

प्रा० **पहनना**
पहरना
पहिरना } (सं० परिधान) क्रि० स० कपड़ा ओढ़ना, कपड़ा पहनना, शरीर पर कपड़ा धारण

करना ।

प्रा० पहनावा (पहनना) पु० पहिराव, पोशाक ।

प्रा० पहर (सं० प्रहर, प्र=पहले, हृ=लेना) स्त्री० दिन रात का आठवाँ भाग, तीन घण्टा, आठ घड़ी ।

प्रा० पहरा (पहर) पु० चौकी, २ गश्त, फेरा, ३ एक नायक अथवा जमादार और छः चौकीदार ।

प्रा० पहराना (सं० परिधान) क्रि० स० पहराना, उढ़ाना ।

प्रा० पहरादेना बोल० जागता रहना, चौकस रहना, चौकी देना, रखवाली करना ।

प्रा० पहरे में डालना बोल० हवालातमें रखना, पहरुए को सौंपना ।

प्रा० पहरे में पड़ना बोल० हवालात में रहना ।

प्रा० पहरावनी (सं० परिधान) स्त्री० ब्याह में दुल्हन के घर से बरातियों को जो कपड़ा रुपया आदि दिया जाता है ।

प्रा० पहरिया, पहरुआ, पहरू (सं० प्रहरी, प्रहर=पहर) पु० चौकीदार, चौकी देनेवाला, रक्षा करनेवाला, रखवाली करनेवाला, पौरिया ।

प्रा० पहल पु० रूई का गाला, रूई का फाहा, २ प्रारम्भ, आरम्भ, शुरूअ, आदि, ३ खेत की भुजा ।

प्रा० पहला, पाहिला (सं० प्रथम) गु० प्रथम, आदि ।

प्रा० पहाड़ पु० पर्वत, शैल, गिरि ।

प्रा० पहाड़सीरातें बोल० लम्बी रातें, बड़ी रातें, दुःख की रातें ।

प्रा० पहाड़ा पु० जोड़ती, गुना का नक़शा ।

प्रा० पहाड़िया, पहाड़ी गु० पहाड़ का, पर्वती ।

प्रा० पहाड़ी स्त्री० छोटा पहाड़, टीला, टेकरी ।

प्रा० पहिया पु० पया, चाका, चक्का, चक्र ।

प्रा० पहिला (सं० प्रथम) गु० अगिला, आगे का ।

प्रा० पहिलौटा गु० पहिला, जेठा, ज्येष्ठ ।

प्रा० पहुँच (पहुँचना) स्त्री० आना, आगमन, २ शक्ति, सकत, सयानापन, अच्छी समझ, ३ पैठ, पैसार, प्रवेश, दख़ल, गुज़र, घुस पैठ, ४ रसीद ।

प्रा० पहुँचना क्रि० अ० आजाना, दाख़िल होना, उतरना, आरहना, जाना, फैलना, चलना, बढ़जाना, पूगना, पास आना ।

प्रा० पहुँचा पु० कलाई ।

प्रा० पहुँची स्त्री० पहुँचे में पहनने का गहना, कङ्कण, कँगना ।

प्रा० पहुड़ना क्रि० अ० लेटना, सोना, आराम करना ।

प्रा० पहुनई (सं० प्राघुणता) स्त्री० आदर, मान, मनुहार, अतिथि-सेवा, मेहमानी ।

प्रा० पहुप } (सं० पुष्प) पु० फूल,
पुहप } सुमन ।

प्रा० पहेली (सं० प्रहेलि अथवा प्रहेलिका, प्र=बहुत, हेल् वा हेड्=अनादरकरना) स्त्री० दृष्टकूट, गूढ़ प्रश्नश्लेष, बुझ॰व्वल ।

प्रा० पाँक } (सं० पङ्क) पु० कीचड़,
पाँकां } दलदल, काँदा ।

प्रा० पाँच (सं० पञ्च) गु० दो और तीन ।

प्रा० पाँचसात बोल० घबराहट, व्याकुलता, झंझट, जंजाल ।

प्रा० पाँजर (सं० पञ्जर) पु० पँसली, पार्श्व ।

प्रा० पाँडे } (सं० पण्डित) पु०
पाँड़े } ब्राह्मणों की पदवी, २ पाठक, अध्यापक, पढ़ानेवाला ।

प्रा० पाँत } (सं० पङ्क्ति) स्त्री० क़तार,
पाँती } श्रेणी, लकीर, अवली,
पाँति } सिपाहियों का पर्रा ।

प्रा० पाँयती (सं० पादान्त, पाद=पाँव+अन्त) स्त्री० पायतल, बिछौने के पैर की ओर ।

प्रा० पाँव (सं० पाद, और फ़ा० पा) पु० पैर, पद, चरण, गोड़ ।

प्रा० पाँव उठाना वा चलाना बोल० झट झट चलना, जल्दी जल्दी चलना ।

प्रा० पाँवउतरना बोल० पाँवका जोड़ टलना, पाँव गाँठ से उखड़ना ।

प्रा० पाँव काँपना या थरथराना बोल० किसी काम के करने से डरना ।

प्रा० पाँव किसीका उखाड़ना बोल० किसीको किसी काम पर जमने नहीं देना ।

प्रा० पाँव किसीका गलेमें डालना बोल० किसी मनुष्य को उसी की बातोंसे अथवा तर्कसे दोषी अथवा अपराधी ठहराना ।

प्रा० पाँवचलजाना बोल० डगमगाना, अस्थिर होना ।

प्रा० पाँवजमाना बोल० दृढ होके ठहरना, मज़बूती से ठहरना ।

प्रा० पाँव ज़मीन पर न ठहरना बोल० बहुत प्रसन्न होना, बहुत ख़ुश होना, २ बहुत घमण्ड करना ।

प्रा० पाँवडालना बोल० किसी बड़े काम के करने के लिये तैयार होना और उसको शुरूअ करना ।

प्रा० पाँवडिगना बोल० फिसलना, खिसकना, रपटना, किसी कामसे हिम्मत हार जाना ।

प्रा० पाँवतले मलना बोल० किसी

को दुख देना, खिजाना, सताना, पीड़ा देना, खराब करना ।

प्रा० पाँव तोड़ना बोल० किसी के मिलने से रुक रहना, २ किसी मनुष्य से मिलने के लिये कईबार जाना, ३ थक जाना ।

प्रा० पाँवधोधोपीना बोल० बहुत मानना, किसी का बहुत विश्वास करना, बहुत खुशामद करना ।

प्रा० पाँवनिकालना बोल० अपनी मर्यादा अथवा हद से बढ़ जाना, २किसी बड़े कामके करनेसे फिरना, ३ किसी अपराध के करने में मुखिया होना ।

प्रा० पाँव पकड़ना बोल० ग़रीबी अथवा अधीनी से बिनती करना, २ किसी को जाने से रोकना, ३ अधीन होना, शरण लेना ।

प्रा० पाँवपड़ना बोल० घिघियाना, गिड़गिड़ाना , ग़रीबी से बिनती करना, खुशामद करना ।

प्रा० पाँवपर पाँवरखना बोल० दूसरे मनुष्य का चाल चलन ग्रहण करना अथवा ले लेना, दूसरे की चाल चलना, २ ऐल फैल बैठना, आराम से बैठना, एक पैर को दूसरे पैर पर रखकर बैठना, बड़ा तक़ाज़ा करना ।

प्रा० पाँवपाँव
पाँवोंपाँवों } बोल० पैदल, पियादेपाँव, पैरों ।

प्रा० पाँवपीटना बोल० अधीरतासे पाँव पटकना, २ वृथा कोशिश करना ।

प्रा० पाँवपूजना बोल० किसीको बड़ा जानना, २ किसी से बचना, अलग रहना, दूर रहना ।

प्रा० पाँव फूँकफूँकरखना बोल० हर एक काम को सावधानी से करना, सम्हल कर काम करना ।

प्रा० पाँव फैलाकरसोना बोल० सुखी रहना, चैनसे रहना, बचाव से रहना, बेखटके रहना, निडर रहना ।

प्रा० पाँवफैलाना बोल० हठ करना, अड़ना ।

प्रा० पाँव भरजाना बोल० पाँव ठिठरना, २ पाँव सो जाना ।

प्रा० पाँवरगड़ना बोल० वृथा और मूर्खता से भटकता फिरना, वृथा चक्करखाना, २ मरनेके दुखमें होना ।

प्रा० पाँवलगना बोल० प्रणाम करना, नमस्कार करना ।

प्रा० पाँव से पाँवबाँधना बोल० किसी के पास बराबर बैठा रहना अथवा किसी की खूब रखवाली रखना ।

प्रा० पाँवसे पाँवभिड़ाना बोल० पासहोना ।

प्रा० पाँवसोना बोल० पाँव सुन हो जाना ।

प्रा० पाँवदबेआना बोल० धीरे से आना ।

प्रा० पाँवड़ा (पाँव) पु० वह कपड़ा अथवा शतरंजी व ग़लीचा आदि जिस पर बड़े आदमी पैर रखकर चलते हैं ।

सं० पांशव (पांशु=बाँधना) पु० पाँगा नमक ।

सं० पांशु पु० मिट्टी, धूलि, रेणु, रजोधर्म, हैज़, शुष्क गोमय, सूखा गोबर, गोबर का ढेर, पांस, कर्पूर ।

सं० पांशुका स्त्री० रेणु, धूलि, रजस्वला स्त्री, वेश्या ।

सं० पांशुपत्र पु० बथुआ शाक ।

सं० पांशुल पु० शिव, धूलियुक्त ।

सं० पांशुला स्त्री० कुलटा स्त्री, वेश्या, जैसे "अपांशुलानां धुरि कीर्त्तनीया" इति रघुः (अ=नहीं, पांशुला=कुलटा अर्थात् पातिव्रता)।

प्रा० पाई (सं० पाद चौथा भाग) स्त्री० एक आने का चौथा भाग, एक पैसा, अँगरेज़ी पाई एक आने का बारहवां हिस्सा होता है ।

सं० पाक (पच्=पकना वा पकाना) पु० रींधना, पचन, रसोई, पकवान. पकाई हुई दवाई अथवा और कोई वस्तु, २ उल्लू, ३ एक दैत्य का नाम, ४ फलप्राप्ति, ५ दशा, ६ सफ़ेदबाल (पा=पीना) बालक, शिशु, छोटा लड़का ।

सं० पाकपुटी पु० स्थाली, चूल्हा, चूल्ही, पजावा, आवां, भट्ठा, पाकशाला ।

प्रा० पाकड़ (सं० पर्कटी, पृच्=मिलाना वा छूना) पु० एक वृक्ष का नाम, पाकड़िया, एक प्रकार का गूलर वृक्ष ।

सं० पाकरिपु (पाक=एक असुर का नाम, रिपु=वैरी) पु० इन्द्र ।

सं० पाकशाला (पाक=पकाना, शाला=घर) धि० स्त्री० रसोईघर, पाकस्थान, पकानेकी जगह ।

सं० पाकशासन (पाक=एक राक्षस का नाम, शास्=दण्डदेना) पु० इन्द्र।

सं० पाकुक क० पु० पकानेवाला, रसोईबर्दार ।

सं० पाक्षिक गु० सहायक, हिमायती, मदद देनेवाला ।

प्रा० पाखर (सं० प्रखर) पु० घोड़े हाथी को बचाने के लिये बख़्तर, झूल ।

सं० पाखण्ड (पा=तीनों वेदों का धर्म, खण्ड=खण्डितकरना) पु० दम्भ, डिम्भ, पाखण्ड, छल ।

सं० पाखण्डी गु० दम्भी, छली, प्रकार ।

---

[१] "पालनाच्च त्रयीधर्मः पाशब्देन निगद्यते । तं खण्डयन्ति ते तस्मात्पाखण्डास्तेन हेतुना" ॥१॥ (इति पीयूषव्याख्यायाम्) ॥

प्रा० पाग स्त्री० पगड़ी ।

प्रा० पागल पु० पगला, सिड़ी, उन्मत्त, बावला, बौराहा, मूर्ख ।

सं० पाचक } (पच्=पकाना) क०
पाचुक } पु० पचानेवाली वस्तु जैसे चूर्ण आदि, २ आग, रसोइयाँ ।

सं० पाचिका स्त्री० पकानेवाली ।

सं० पाञ्चजन्य (पञ्चजन=दैत्य से हुआ अर्थात् बना) पु० विष्णु का शङ्ख ।

सं० पाञ्चाल पु० नाम-देश ।

सं० पाञ्चाली स्त्री० द्रौपदी ।

प्रा० पाछे } (सं० पश्चात्) क्रि०
पाछें } वि० पीछे, इसके बाद, इसके अनन्तर, पीठ पीछे, परे ।

प्रा० पाट पु० कपड़े की अथवा नदी की चौड़ाई, २ सन, सनई ।

प्रा० पाट (सं० पट्ट, पट्=घेरना) पु० रेशम, २ चक्की का पत्थर, ३ सिंहासन जैसे राजपाट, राजा का सिंहासन, ४ चौकी, तख़्ता, पटरा, पाटा ।

सं० पांसक (पांस्+अक, पस्=बाधा करना) क० पु० मिथ्या, कुत्सित, झूँठा, अधम, नाशक, दूषक, जैसे कुलपांसक ।

सं० पांसु पु० धूलि, रज, रेणु, पांस, पाप, कलङ्क ।

प्रा० पाटना क्रि० स० छाना, ढकना, २ भरना, भरपूर करना, रेल पेल करना, ३ सींचना ।

प्रा० पाटम्बर (सं० पट्टाम्बर, पट्ट=रेशम, अम्बर=कपड़ा) पु० रेशमी कपड़ा, रेशम का कपड़ा ।

प्रा० पाटरानी (पाट+रानी) स्त्री० पटरानी, महारानी ।

सं० पाटल (पट्=जाना वा चमकना) पु० एक पेड़ का नाम, २ गुलाबी रङ्ग, श्वेत रक्तवर्ण, लाल सफ़ेद रङ्ग, गुलाब का फूल, गुलाबी रङ्ग ।

सं० पाटलिपुत्र पु० पटना नगर ।

सं० पाटव (पटु=चतुर) भा० पु० चतुराई, प्रवीणता, होशियारी ।

प्रा० पाटा (सं० पट्ट) पु० पटरा, तख़्ता, २ धोबी के कपड़ा धोनेका तख़्ता ।

प्रा० पाटी (सं० पट्टिका, पट्=जाना) स्त्री० खाट की पटिया, २ एकतरह की चटाई, ३ तख़ती जिस पर लड़के लिखना सीखते हैं, ४ बालों की पट्टी ।

सं० पाठ (पठ्=पढ़ना) भा० पु० पढ़ना, सन्था, सबक़, २ अध्याय ।

सं० पाठक (पठ्=पढ़ना वा पढ़ाना) क० पु० शिक्षक, अध्यापक, पढ़ानेवाला, मुअल्लिम, मुदर्रिस, पण्डित, २ पढ़नेवाला, विद्यार्थी, शिष्य, ३ ब्राह्मणों की पदवी ।

सं० पाठन भा० पु० पढ़ना वा

पढ़ाना ।

सं॰ **पाठशाला** (पाठ=पढ़ना, शाला =जगह) धि॰ स्त्री॰ पढ़ाने की जगह, चटशाला, स्कूल, कालिज, मदर्सा ।

प्रा॰ **पाठा** पु॰ जवान जानवर, २ मल्ल ।

सं॰ **पाठित** र्म॰ पु॰ पढ़ायागया, पढ़ा हुआ ।

सं॰ **पाठी** कृ॰ पु॰ पढ़नेवाला ।

सं॰ **पाठ्य** र्म॰ पु॰ पढ़ाने योग्य ।

सं॰ **पाठीन** (पठि=पीठ, नम्=झुकना) पु॰ एक प्रकार की मछली ।

प्रा॰ **पाड़ना** (सं॰ पातन, पत्=गिरना) क्रि॰ स॰ गिराना, मारना, पूराकरना, २ काजल इकट्ठाकरना ।

प्रा॰ **पाढ़ा** (सं॰ पृषत्, पृष=सींचना) पु॰ एक जंगली जानवर का नाम ।

सं॰ **पाण** पु॰ क्रय विक्रय व्यवहार, स्तुति, तअरीफ़ या बड़ाई ।

सं॰ **पाणि** (पण्=लेन देन करना) पु॰ हाथ, हस्त, कर, दस्त ।

सं॰ **पाणिग्रहण** (पाणि=हाथ, ग्रह =पकड़ना) पु॰ ब्याह, विवाह, शादी, हाथ पकड़ना ।

सं॰ **पाणिघ** (पाणि=हाथ, हन्=मारना) पु॰ तबला वा ढोलक या मृदङ्ग का बजानेवाला ।

सं॰ **पाणिनि** (पणनं पणः, ततः अस्तीति पणी पणिनो गोत्रापत्यं पुमान् पाणिनिः, अर्थात् पणिगोत्र से उत्पन्न हुआ अथवा पणि का शिष्य, पण्=स्तुति करना) पु॰ अष्टाध्यायी व्याकरण आदि का बनानेवाला मुनि ।

सं॰ **पाणिनीय** (पाणिनि) गु॰ पाणिनि ऋषि का बनाया हुआ (व्याकरण शास्त्र आदि) ।

सं॰ **पाण्डर** (पडि=जाना वा मिलना) गु॰ पीला और धौला, सीठा, फीका, पु॰ कुन्दफूल, श्वेतपुष्प ।

सं॰ **पाण्डव** (पाण्डु=युधिष्ठिर आदि पाँचों भाइयों का बाप) पु॰ पाण्डु के बेटे युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव ।

सं॰ **पाण्डित्य** (पण्डित) भा॰ पु॰ पण्डिताई, विद्या, विद्वत्त्व ।

सं॰ **पाण्डु** (पडि=जाना) पु॰ दिल्ली का एक पुराना राजा और युधिष्ठिर आदि पाँचों पाण्डवों का बाप, २ धौला और पीला रङ्ग, श्वेत रङ्ग, ३ एक फूल और पौधे का नाम, गु॰ पीला और धौला, सीठा, फीका ।

प्रा॰ **पात** (सं॰ पत्र) पु॰ पत्ता, २ कान में पहनने का एक तरह का गहना, गिरना, राहु, लत्ता पात आदि में का एक योग ।

सं० पातक (पत्=गिरना) पु० पाप, दोष, अपराध, गुनाह ।

सं० पातकी (पातक) क० पु० पापी, दोषी, अपराधी, गुनहगार।

सं० पातञ्जल (पतञ्जलि) पु० पतञ्जलि ऋषि का बनाया हुआ योगशास्त्र आदि ।

प्रा० पातर स्त्री० वेश्या, पतुरिया, कञ्चनी, गणिका, गु० पतला, दुबला ।

सं० पाता (पा=रक्षण करना) क० पु० रक्षक, पालक ।

सं० पाताल (पत्=गिरना, जहाँ पापी गिराये जाते हैं, अथवा पात =गिरना, आलय=स्थान) पु० नीचे का लोक, नागलोक, नरक, पाताल ७ हैं (१ अतल, २ वितल, ३ सुतल, ४ तलातल, ५ महातल, ६ रसातल, ७ पाताल) ।

सं० पाति पु० माता, पिता, गुरु, पति, सूर्य, चन्द्र, विश्व ।

सं० पातित कर्म० पु० अधःक्षिप्त, नीचे गिरायागया ।

प्रा० पाती (सं० पत्री, पत्त्री) स्त्री० चिट्ठी, २ (सं० पत्र) पत्ता ।

सं० पात्र (पा=बचाना वा पीना जिससे) पु० बरतन, बासन, आधार, प्याला, कटोरा, २ दान देने योग्य विद्यावान् ब्राह्मण, गु० उचित, योग्य ।

सं० पात्रता भा० स्त्री० } (पात्र=
पात्रत्व पु० } योग्य)
योग्यता, लियाक़त ।

सं० पाथ } (पा=पीना) पु० पानी,
पाथस् } तोय, जल, अनिल ।

प्रा० पाथर (सं० प्रस्तर, प्र=बहुत, स्तृ=फैलाना) पु० पत्थर, पाषाण, शिला ।

सं० पाथेय (पथ=रस्ता) पु० रस्ते का खाना, रस्तेकी खुराक, राहखर्च ।

सं० पाथोज (पाथस्=पानी, जन् =पैदा होना) पु० कमल, कँवल, पद्म ।

सं० पाथोद (पाथस्=पानी, दा= देना) पु० बादल, मेघ, अभ्र ।

सं० पाथोधर (पाथस्=पानी, धृ= रखना) पु० बादल, मेघ ।

सं० पाथोधि (पाथस्=पानी, धा= रखना) पु० समुद्र, सागर, सिन्धु ।

सं० पाथोनिधि (पाथस्=पानी, निधि=खज़ाना) पु० समुद्र, सागर, सिन्धु ।

सं० पाद (पद्=जाना जिससे चलते हैं) पु० पाँव, पैर, चरण, २ चौथा भाग, चतुर्थांश, ३ वृक्षकी जड़ ।

प्रा० पाद (सं० पर्द, पर्द=नीचेकी तरफ़ हवा छोड़ना) पु० फुसकी, हुसकी, नीचे की हवा, अपशब्द, बावसरना, गूज़ ।

सं० पादकटक पु० घूंघरू, कड़ा पैरका।

सं० पादग्रहण (पाद=पैर, ग्रहण=पकड़ना) पु० चरणस्पर्श, पैर छूना।

सं० पादचारी }
पादचारिणी } (पाद=पैर, चर्=चलना) पु० पैदल, पैरों से चलनेवाला व चलनेवाली।

सं० पादत्राण (पाद=पैर, त्रा=रक्षा करना) पु० जूता, खड़ाऊं, मोज़ा पैरके।

सं० पादधारिणी स्त्री० पैकड़ा, रिकाब घोड़े की।

सं० पादप (पाद=पैर वा जड़, पा=पीना जो पैर अर्थात् जड़ से पानी खींचते हैं) पु० वृक्ष, पेड़, २ (पाद=पाँव, पा=बचाना) पादुका, पादपीठ।

सं० पादप्रक्षालन (पाद=पैर, प्रक्षालन=धोना) पु० पाँव धोना।

सं० पादप्रहार (पाद=पैर, प्रहार=चोट) पु० लातकी मार।

सं० पादार्घ्य पूज्यजनों को पैर धोने को जल देना।

सं० पादसंवाहन भा० पु० पैर दबाना, पैचप्पी करना, गोड़दबाना।

सं० पादुका (पाद=पैर) स्त्री० खड़ाऊं, पाँवड़ी, २ जूता।

सं० पादोदक (पाद=पैर, उदक=पानी) पु० देवता अथवा ब्राह्मण के पाँव धोने का पानी, पाद्य।

सं० पाद्य (पाद=पाँव) पु० पाँव धोने का पानी।

प्रा० पाधा (सं० उपाध्याय) पु० शिक्षक, गुरू।

प्रा० पान (सं० पर्ण) पु० पत्ता, २ ताम्बूल।

सं० पान (पा=पीना) पु० पीना।

सं० पानपात्र (पान=पीना, पात्र=बरतन) पु० पियाला, गिलास।

प्रा० पाना }
पावना } (सं० प्रापण, प्र=बहुत, आप्=पाना) क्रि० स० मिलना, लेना, इकट्ठा करना, हासिल करना, बाक़ी होना, भोग करना, बिलसना, भुगतना, सहना, पकड़ना, धरना, पहुँचना, पास आना।

सं० पानाहार (पान+आहार) पीना, खाना, खुर्दनोश, अन्न जल।

प्रा० पानी (सं० पानीय, पा=पीना) पु० जल, नीर, २ बीज, वीर्य, धात, ३ चमक, भड़क, ४ यश, कीर्त्ति, मान, मर्यादा, नाम।

प्रा० पानीकरना बोल० लजाना, चपाना, लज्जित करना, २ सहज करना, सुगम करना, आसान करना।

ग्रा० पामी का बुलबुला बोल० अस्थिर, चञ्चल, यह बोलचाल अस्थिरता जतलाने के लिये बोला जाता है ।

ग्रा० पानी देना बोल० पितरों को जल देना, तर्पण करना ।

ग्रा० पानी न माँगना बोल० तलवार आदि के एकही वार से तुरत मरजाना ।

ग्रा० पानी पड़ना बोल० मेह बरसना, पानी बरसना, २ शर्मिन्दा होना ।

ग्रा० पानी पी पी कोसना बोल० बहुत सरापना, बददुआ देना ।

ग्रा० पानी भरना बोल० नीचा होना, तुच्छ होना, निचाई को मानलेना, शरमा जाना, वशहोना ।

ग्रा० पानी मरना बोल० सूखजाना, २ लजाना, लाज लगना, किसी बातका इशारा करना ।

ग्रा० पानी में आग लगाना बोल० जो झगड़ा मिट गया हो उसको फिर उठाना ।

ग्रा० पानीसे पतला करना बोल० लज्जित करना, लजाना, चपाना, तुच्छ करना, हक़ीर करना ।

सं० पान्थ (पथिन्=रस्ता, पथ्=जाना) कृ० पु० पथिक, बटोही, मार्गी, मुसाफ़िर, राह चलनेवाला, राही ।

सं० पाप (पा=बचाना अर्थात् जिससे अपने को बचाना) पु० अपराध, दोष, पातक, बदी, बुराई, गुनाह ।

सं० पापजनक (जन्=पैदा करना) कृ० पु० पापोत्पादक, पापी, गुनहगार ।

प्रा० पापड़ (सं०पर्पट, पर्प्=जाना) पु० उड़द वा मूँग की पतली रोटी सी चीज़ ।

प्रा० पापड़ बेलना बोल० बहुत मिहनत करना अथवा दुखसहना ।

सं० पापभाक् (पाप + भाक्, भज्=सेवा) कृ० पु० पाप करनेवाला, अपराधी, गुनहगार ।

सं० पापरूप (पाप=अपराध, रूप=सूरत) पु० पाप की मूरत, बड़ा पापी, दुष्ट, आसी, गुनहगार ।

सं० पापात्मा (पाप + आत्मा)गु० जिसकी आत्मा पापयुक्त हो, जिस का मन पाप में लगा रहे, पापी, दुष्ट, कुकर्मी ।

प्रा० पापिन } (पाप) गु० स्त्री०
सं० पापिनी } दुष्टा स्त्री, बुरी स्त्री, वह स्त्री जिसका मन पाप में लगा रहे, अपराधिनी ।

सं० पापिष्ठ (पाप) कृ० पु० पापी, पापात्मा ।

सं० पापी (पाप) गु० अपराधी, दुष्ट, पापात्मा, कुकर्मी, पापिष्ठ ।

सं० पामर (पा=तीनों वेद का धर्म (पा, में धातु है पा=बचाना) और मृ=नष्ट होना जिससे वैदिक धर्म नष्ट होताहै वा पामन् खुजली अर्थात् दुख, रा=देना) गु० नीच, अधम, दुष्ट, मूढ़ ।

सं० पामा (पा=बचना जिससे) स्त्री० खुजली, खाज, दाद ।

सं० पामारि (पामा=खुजली, अरि =वैरी) पु० गन्धक जिसके लगाने से खुजली मिटजाती है, २ पमार के बीज ।

प्रा० पायँती (सं०पादान्त, पाद + अन्त) स्त्री० खाट के पैर की ओर, पायतल, पैता, पैंताना ।

प्रा० पायल (सं० पाद=पाँव) स्त्री० पैरों में पहनने का गहना, पैरी, पायज़ेब, २ बाँस की सीढ़ी ।

सं० पायस (सं० पयस्=दूध) पु० खीर, जावर ।

प्रा० पाया (सं० पाद, अथवा फ़ा० पाया) पु० खाट वा मेज अथवा कुरसी आदि का पावा ।

प्रा० पायिक
पायक
पाहक } (सं० पादिक वा पदातिक फ़ा० पैक) पु० दूत, पियादा, नट, ध्वजा, पैदल ।

सं० पायी (पा=पीना) क० पु० पीनेवाला ।

सं० पार (पृ वा पार्=पूरा होना) पु० नदी अथवा समुद्र का परला तीर, दूसरी ओर, २ समाप्ति, पूर्णता, ३ अन्त, शेष, नित्य, सं० वा क्रि० वि० आर पार, वार पार, उस ओर, उससे परे, उस तीर ।

सं० पारक (पार् + अक) क० पु० कर्मसमाप्तिकर्ता, उतरनेवाला, पार जानेवाला ।

प्रा० पारकरना बोल० पार उतारना, नाँघना, २ पूरा करना, कोई काम पार उतारना, निबाहना, ३ छेदना, बेधना, फोड़ना ।

सं० पारग (पार=अन्त, गम्=जाना) क० पु० समर्थ, पारगन्ता ।

प्रा० पारखी (सं० परीक्षक) क० पु० परखनेवाला, परखैया, जौहरी ।

सं० पारण (पार=काम पूरा होना) पु० व्रत के दूसरे दिन भोजन करना, २ (पॄ=भरना) मेघ, बादल ।

सं० पारद (पॄ=भरना वा पूरा करना) पु० पारा, २ (पार=पार करना, दा=देना) गु० पार करने वाला, मोक्षकरनेवाला, उद्धार करनेवाला ।

सं० पारदारिक क० पु० पराई स्त्री गमन करनेवाला, परस्त्रीगामी ।

प्रा० पारना (सं०पारण) पु० व्रत के दूसरे दिन भोजन करना, क्रि०

स० निवेड़ना, पूरा करना ।

सं० पारभृत (पार=अन्त, भृ=भरना) पु० दान, समर्पण ।

सं० पारमार्थिक क० पु० श्रेष्ठ, योग्य, परोपकारी ।

सं० पारशव पु० ब्राह्मण से शूद्र की कन्या में पैदा हुआ, परस्त्रीपुत्र, परशुधारी ।

प्रा० पारस (सं० स्पर्शमणि, स्पर्श=छूना, मणि=रतन) पु० ऐसा पत्थर जिसको कहते हैं कि लोहे के छूने से लोहे का सोना हो जाता है ।

प्रा० पारस (सं० पारस, अथवा पारसीक) पु० फ़ारस देश, ईरान ।

प्रा० पारसनाथ (सं० पार्श्वनाथ) पु० जैनियों का तेईसवाँ जिन ।

प्रा० पारसी (सं० पारसी, अथवा पारसीक) पु० पारस देश का रहनेवाला, ईरानी, २ ज़रदुश्त का मत माननेवाला, ३ स्त्री० फ़ारसी बोली, ४ तुरकी या अरबी घोड़ा, तुरुक, म्लेच्छ ।

प्रा० पारा (सं० पार, वा पारद) पु० एक प्रकार की धातु ।

सं० पारायण (पार=पूर्णता, अय्=जाना) पु० पूर्णता, समाप्ति, पुराण का पाठ, सात दिन श्रीमद्भागवत का पाठ सुनाना ।

सं० पारलौकिक पु० परलोक का काम, उक़बा का काम ।

सं० पारावत पु० कपोत, कबूतर ।

सं० पारावार (पार=उस पार, अवार=इस पार) पु० समुद्र, २ नदी के दोनों तीर, ३ वारापार, वार पार, इस उस पार, ४ हद्द, सींव ।

सं० पाराशर (पराशर) पु० पराशर ऋषि का बेटा वेदव्यास, २ पराशर के बनाये हुये ग्रन्थ जैसे पराशरस्मृति, भिक्षुसूत्र आदि ।

सं० पाराशर्य पु० पराशरका पुत्र वेदव्यास ।

सं० पारिजात (पारी=समुद्र, जन्=पैदा होना) पु० देवताओं का वृक्ष, तूबा, देवतरु, सुरद्रुम, २ मूँगा ।

सं० परिणाह्य (परि=बहुत, नह्=सम्बन्ध करना) भा० पु० सम्बन्ध, बन्धन, रिश्तेदारी, बिरादराना, निबन्धनता, चौड़ाई ।

सं० पारितथ्य स्त्री० बेंदी, टिकुली, पु० तिलक, यथार्थ ।

सं० पारिपन्थिक गु० चोर, ठग, बधिक, लुटेरू ।

सं० पारितोषिक (परि=बहुत, तुष=प्रसन्न होना, संतुष्ट होना) पु० इनाम, दान, भेंट, प्रतिफल, दायज, दैजा, दक्षिणा ।

सं० **पारिन्द्र** पु० सिंह, अजगर, सर्प।

सं० **पारिपात्र**
पारियात्र पु० एक पहाड़ का नाम जो विन्ध्याचल की श्रेणी का पश्चिमी भाग है और मालवा की सींव पर है, यौतुक, दहेज ।

सं० **पारी** (पॄ=भरना) स्त्री० पानी की ठिलिया ।

प्रा० **पारी** स्त्री० बारी, अवसर, उसरी ।

सं० **पार्थ** (पृथा=कुन्ती) पु० कुन्ती के बेटे युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम ।

सं० **पार्थिव** (पृथ्वी) गु० पृथ्वीका, पु० राजा, २ शिव, पार्थिवी, स्त्री० सीता, जानकी ।

सं० **पारिपार्श्विक** पु० नट, नटी, विदूषक, भाँड़ ।

सं० **पारिभाव्य** पु० कूट औषध, ज़मानत, ज़ामिनी, अविश्वास, अनादरता ।

सं० **पारिषद** गु० सेवक, सभासद् ।

सं० **पार्वण** (पर्व + अन, पर्व=पूर्ण करना) भा० पु० पर्व अमावस आदि में जो हो, उत्सव ।

सं० **पार्वती** (पर्वत=पहाड़) स्त्री० हिमालय की बेटी, शिवरानी, दुर्गा ।

सं० **पार्श्व** (स्पृश्=छूना, वा पर्शु=पसली) पु० पाँजर, पाखा, २ बग़ल के नीचे का भाग, ३ पसलियों का समूह, गु० पास, नगीच, नज़दीक, समीप ।

सं० **पार्श्ववर्त्ती** (पार्श्व=पास, वर्ती=होने या रहनेवाला, वृत्=होना या रहना) पु० पास रहनेवाला, निकटस्थ, समीपवर्ती, पास का, क़रीबी ।

प्रा० **पाल** पु० नाव का बादवान, २ छोटा तम्बू, ३ घास और पत्ते आदि का तह जिसमें रख कर कच्चे आम पकाते हैं, ४ पालना ।

सं० **पालक** (पाल्=पालना) कृ० पु० पालनेवाला, बचानेवाला, रक्षक, मुहाफ़िज़ ।

प्रा० **पालक** (सं० पालङ्क, पाल्=बचाना और अङ्क=जाना) पु० एक तरह का साग, २ (सं० पल्यङ्क) पलँग ।

सं० **पालकता** भा० स्त्री० परवरिश, दयालुता ।

प्रा० **पालकी** (सं० पर्यङ्क, वा पल्यङ्क) स्त्री० एक प्रकार की सवारी, चौपाला, डोली ।

सं० **पालन** (पाल्=पालना) भा० पु० पालना, पोषण, रक्षा, बचाव, बचाना ।

प्रा० **पालना** (सं० पालन) क्रि० स० पोसना, बचाना, रक्षा करना, २ पु० हिंडोला, झूलना ।

सं० **पालनीय** (पाल्+अनीय)

र्म० पु० पालनेयोग्य, रक्षायोग्य ।

प्रा० पाला (सं० प्रालेय, प्र=बहुत आ=चारों ओरसे, ली=पिघलना) पु० हिम, बर्फ़, ठार, तुषार, २ (सं० पालन) भरोसा, विश्वास, अमानत बचाना, ३ कबड्डी के खेल में रेत की मेड़ जो बीच में बनाई जाती है, ४ झड़बेरी के पत्ते ।

प्रा० पालागन (सं० पादलग्न, पाद=पैर, लग्न=लगना) पु० पाँव का छूना, प्रणाम करना ।

सं० पालि (पाल्=बचाना) स्त्री० मागधी प्राकृतभाषा, मगधदेश की मातृभाषा ।

सं० पालित (पाल्=पालना) कर्म० पु० रक्षित, बचाया हुआ, पाला हुआ ।

सं० पाली स्त्री० पङ्क्ति, कोण, प्रशंसा, कल्पित भोजन, प्रान्त, कर्णपत्र, कर्णफूल, सेतु, चिह्न, अस्त्रों की धार, अश्रु, क्रोड़, गोद, उत्सङ्ग, कनियाँ ।

प्रा० पाले (सं० पालन=बचाव) अधीन, बचाव में, हाथ में, वश में ।

प्रा० पाले पड़ना बोल० दूसरे के वश में आजाना, जैसे "आज करउँ खल काल हवाले, परेउ कठिन रावण के पाले" (रामायण) ।

प्रा० पाव (सं० पाद) पु० चौथाई, चौथा भाग, चौथ, चतुर्थांश ।

सं० पावक (पु=पवित्र करना) पु० आग, अग्नि, गु० पवित्र ।

सं० पावन (पू=पवित्र करना) गु० पवित्र, पवित्र करनेवाला, स्वच्छ, पु० पानी, २ आग, ३ गोबर, ४ कुशा, ५ घृत, ६ स्त्री, ७ गङ्गा, ८ गौर ।

प्रा० पावला (पाव) पु० चार आना, मुद्रा अर्थात् सिक्के का चौथा भाग ।

प्रा० पावस (सं० प्रावृष्, प्र=बहुत, वृष्=बरसना) पु० वर्षाकाल, वर्षा ऋतु, बरसात ।

सं० पाश (पाश्=बाँधना जिससे) स्त्री० फन्दा, फाँसी, जानवरों के बाँधने की डोरी ।

सं० पाशक क० पु० पाँसा, अक्ष, जल्लाद, फाँसी ।

प्रा० पाशा } (सं० पाशक, पश्=
पासा } छूना वा जाना) पु० चौपड़ खेलने की एक छः पहलू चीज़, अक्ष ।

सं० पाशित कर्म० पु० बन्द, बँधा हुआ ।

सं० पाशी क० पु० पाशधर, जल्लाद, वरुण, व्याध, यमराज ।

प्रा० पाषण्ड (सं० पाषण्ड्य, पाषण्ड) पु० कपट, छल, छिद्र, फ़रेब ।

सं० पाषण्ड } (पा, वेदका धर्म्म,
पाखण्ड } प=बचाना और
पाषण्डी } षण्ड=निष्फल क-

रना, वा खण्ड=खण्डन करना, अर्थात् वेदके धर्म्मको निष्फल करनेवाला, वा खण्डन करने वाला) पु० नास्तिक, धर्मको नहीं माननेवाला, कपटी, छली, ठग, दम्भी ।

सं० पाषाण (पिष्=चूर करना) पु० पत्थर ।

सं० पाषाणदारण (दृ=फाड़ना) ण० पु० पत्थर टाँकनेकी टाँकी, वज्र ।

प्रा० पास (सं० पाश) स्त्री० फाँसी, फन्दा ।

प्रा० पास (सं० पार्श्व) नित्य सं० नगीच, समीप, निकट ।

प्रा० पासी (सं० पाश) स्त्री० फंदा, फाँसी, २ रस्सी जिससे घोड़े के पैर बाँधे जाते हैं, ३ (सं० पाशी) पु० बहेलिया, चिड़ीमार ।

प्रा० पासी (सं० पासी, पाश) पु० एक जाति के मनुष्य जिनका धंधा ताड़ी बेचने का है और जब वे ताड़ पर चढ़ते हैं तब अपने पैरोंके चौफेर रस्सी बाँधते हैं ।

प्रा० पाहन, पाहान (सं० पाषाण) पु० पत्थर, पाथर ।

सं० पाहि (पा=बचना) क्रि० स० बचाओ, रक्षा करो। जैसे "शूलेन पाहिनो देवि" अहो देवि ! हमारी त्रिशूल से रक्षा करो ।

प्रा० पाहीं नित्य सं० पास, निकट, समीप ।

प्रा० पाहुन, पाहुना (सं० प्राघुण, प्र=बहुत, आ=चारों ओर, घुण्=फिरना) पु० महमान, अतिथि ।

प्रा० पिउ, पिऊ (सं० प्रिय) गु० प्यारा पु० पति, स्वामी, प्रियतम, भर्त्ता ।

सं० पिक (पि ऐसा शब्द, कै=बोलना वा अपि बार बार, कै=शब्द करना, यहाँ भागुरि के मत में अपि के 'अ' का लोप होगया है) स्त्री० कोयल, कोकिल ।

प्रा० पिकबयनी, पिकबैनी (सं० पिक=कोयल, वाणी=बोली) स्त्री० गु० जिस स्त्री की कोयल सी बोली हो, मीठी बोलने वाली स्त्री ।

प्रा० पिघलना (सं० प्रगलन, प्र=बहुत, गल्=टपकना) क्रि० अ० गलना, टिघलना, पानी होना ।

सं० पिङ्ग (पिजि=रँगना) गु० पीला, कपिल, पीतवर्ण ।

सं० पिङ्गल (पिङ्ग=पीला रङ्ग, ला=लेना) गु० पीला, पीतवर्ण, २ दीया

---

१ "वष्टिभागुरिरल्लोपमवाप्योरुपसर्गयोः । आपं चैव हलन्तानां यथा वाचा निशा दिशा" ॥१॥

की लौ, सारङ्ग, पु० छन्द शास्त्र का कर्त्ता, छन्दग्रन्थ, कपिल वर्ण, चिमगादर, सूर्य ।

प्रा० पिंगूरा पु० हिंडोला, झूला ।

प्रा० पिचकारी स्त्री० पिचिका, दमकला ।

सं० पिचरिडल कृ० पु० तोंदवाला, स्थूल, बड़े पेटवाला ।

सं० पिचु पु० रुई, कपास, कर्ष, नाम असुर, शस्यभेद, कुष्ठभेद ।

सं० पिचुमन्द (पिचु=कुष्ठ, मन्द= जड़ करना) नींब वृक्ष ।

सं० पिच्छ पु० पूँछ, मोरपंख, मुकुट, मोर, हिंसा, कपास वृक्ष, केला, सेमर, भात का माँड़, घोड़े के पैर का रोग ।

प्रा० पिछलना क्रि० अ० फिसलना, खिसलना ।

प्रा० पिछलपाई स्त्री० चुड़ैल, भूतनी ।

प्रा० पिछला (पीछा) गु० पीछेका, पिछाड़ी का, नया ।

प्रा० पिछवाड़ा पु० } (पीछे)
पिछवाड़ी स्त्री० } पीछे का भाग, पीछा ।

प्रा० पिछेत (पीछा) पु० घर का पिछला भाग ।

प्रा० पिछौरा पु० } दोहर, चद्दर,
पिछोरी स्त्री० } दुपट्टा, ओढ़नी ।

सं० पिञ्जन पु० मारण, रुई का ओटना, रुईधुनना, धनुही ।

सं० पिञ्जर (पिजि=शब्दकरना, वा रहना जिसमें पखेरू शब्द करते हैं वा रहते हैं, वा पिजि=रँगना) पु० पिंजरा, पखेरुओं का घर, २ पीला रङ्ग, लाल और पीला मिला हुआ रङ्ग, भूरा रङ्ग ।

प्रा० पिञ्जरा (सं० पिंजर) पु० पखेरुओं के रहने का काठ का घर, पिंजरा होना, बोल० दुबला होना ।

सं० पिञ्जल गु० अतिसघन, मिला हुआ पु० बिजायठ, कङ्कण, जौशन, विष्टर अर्थात् कुशा, व्याकुल सेना ।

प्रा० पिञ्जियारा (पींजना) पु० धुनियाँ, रुई पींजनेवाला, रुई धुननेवाला ।

सं० पिञ्जूल पु० वर्तिका, बत्ती, मशअल् ।

सं० पिञ्जूष पु० मोम, संदूक, पिटारा, पिटारी, लीझी, खड़ी ।

सं० पिट पु० संदूक, टोकरी, पिटारा, शोर, हल्ला, फोड़ा ।

प्रा० पिटना (सं० पिट्=मारना) क्रि० अ० मारखाना ।

प्रा० पिटारा (सं० पेटा वा पेटिका, पिट्=इकट्ठा करना) पु० टोकरा, मञ्जूषा, कपड़े रखने का झोला ।

प्रा० पिटारी (सं० पिटक, पिट्= इकट्ठा करना) स्त्री० कपड़े रखने

की चमड़े की मञ्जूषा, छोटापिटारा, अं० पिटीशन अर्ज़ी ।

सं० पिण्ड (पिण्ड्=इकट्ठा करना) पु० पितरों के लिये अन्न आदि का पिण्डा, २ देह, शरीर, ३ गोल वस्तु, गोला ।

प्रा० पिण्डछुड़ाना बोल० बचना, भागना, पीछा छुड़ाना, टलना ।

प्रा० पिण्डली (सं० पिण्ड) स्त्री० पिण्डरी, फिल्ली, टँगड़ी ।

प्रा० पिण्डा (सं० पिण्ड) पु० शरीर, देह, २ मिट्टी आदि का ढेला, ३ डोरी का गोला अथवा गेंदा, ४ पितरों के लिये अन्न आदि का पिण्डा ।

प्रा० पिण्डारा (सं० पिण्ड, अन्न का पिण्डा, और फ़ा० आर, लाने वाला) पु० लुटेरों की एक ज़ात, लुटेरा, ठग, डकैत ।

सं० पिण्डित र्म० पु० राशिकृत, इकट्ठा कियाहुआ ।

सं० पिण्डूक पु० पिण्डकी, पिढुकी, पेढुकी नामक पक्षी ।

प्रा० पितर (सं० पितृ) पु० पुरुषा, पुर्खा, पूर्वपुरुष, पूर्वजलोग ।

प्रा० पितलाना (पीतल) क्रि० अ० ताँबे-पीतल के बरतन में रखने से खट्टी चीज़ का बिगड़ना ।

सं० पिता (पा=बचाना) पु० रक्षक, बाप ।

सं० पितामह (पिता) पु० दादा, आजा, २ ब्रह्मा, पितामही=दादी ।

सं० पितृकर्म } (पितृ=पितर, कर्म
पितृकार्य } वा कार्य=काम) पु० श्राद्ध पिण्डदान आदि ।

सं० पितृकानन पु० पितृवन, श्मशान, गयाक्षेत्र, पितृलोक ।

सं० पितृगण पु० पितृसमूह, प्रजापतिपुत्राः, यथा मरीचि, अत्रि, भृगु, अङ्गिरा, पुलह, क्रतु, वशिष्ठ, अग्नीध्र, अग्निष्वात्ता ।

सं० पितृगृह धि० पितृस्थान, पितृलोक ।

सं० पितृतिथि स्त्री० अमावास्या, श्राद्ध दिन ।

सं० पितृदान पु० पिण्डदान ।

सं० पितृपक्ष (पितृ=पुर्खा, पक्ष=पखवारा) पु० श्राद्धपक्ष, आश्विन का अँधेरा पाख ।

सं० पितृप्रसू स्त्री० पिता की माता ।

सं० पितृव्य पु० चचा ।

सं० पितृष्वसा स्त्री० फूफी, पिता की बहिन ।

सं० पित्त (अपि, दो=काटना, यहाँ अपि के 'अ' का लोप और 'द' को 'त' हुआ है) पु० शरीर की एक प्रकार की धातु ।

प्रा० पित्ता (सं० पित्त) पु० पित्त, पित्तकी थैली, पित्ताधार, २ क्रोध ।

प्रा० पित्तानिकालना बोल० दप

देना, ताड़ना करना, सज़ा देना ।

पित्तामारना बोल० क्रोध घटना, क्रोध ठण्ढा पड़ना ।

पित्तपापड़ा (सं० पर्पट, पर्प्= जाना) पु० एक औषध का नाम ।

पिदड़ी स्त्री० एक छोटा सा पखेरू, फुदकी ।

पिधायक क० पु० पिहना, ढकना।

पिधान भा० पु० पिहना, ढकना ।

पिनकी स्त्री० पीनक, उँघाहट, अफ़ीम का नशा ।

पिनाक (पा=बचाना सृष्टि का) पु० शिव का धनुष, २ शिव का त्रिशूल ।

पिन्नी स्त्री० चाँवल का लड्डू ।

पिनाकिन् क० पु० प्रमथाधिप, शिव ।

पिपासातुर(पिपासा + आतुर) गु० बहुत प्यासा ।

पिपासा (सं० पा=पीना) स्त्री०पीनेकी इच्छा, प्यास, तृषा ।

पिपीलिका (अपि, पील्= रोकना) स्त्री० लाल चिउँटी ।

पिप्पल (पा=बचाना) पु० पीपल, पीपर, एक वृक्ष का नाम ।

पिय } **पिया** } **पी.** } (सं० प्रिय) पु० स्वामी, प्रियतम, भर्ता, गु० प्यारा ।

प्रा० **पियार** (सं० प्रेम वा प्रीति) पु० प्यार, प्रेम, प्रीति, नेह, छोह, दुलार, मुहब्बत ।

प्रा० **पियारा** (सं० प्रिय) गु० पु० प्रेमी, सनेही ।

प्रा० **पियारी** (सं० प्रिया) गु० स्त्री० प्यारी, प्रिया, २ मनोहरा ।

प्रा० **पियास** (सं० पिपासा) स्त्री० तृषा, तृष्णा, पीने की इच्छा, प्यास ।

प्रा० **पियासा** (सं० पिपासित, पा= पीना) गु० प्यासा, तृषावन्त ।

प्रा० **पिराना** (सं० पीड़न, पिड्= दुःख देना) क्रि० अ० दुखना, दर्द करना, पीड़ा होना ।

प्रा० **पिरीते** (सं० प्रियतम) गु० प्यारा जैसे "हे रघुनन्दन प्राणपिरीते + तुम बिनु जियत बहुत दिन बीते"। (इति रामायणम्)।

प्रा० **पिरोजा** (सं० पेरोज, और फ़ारसी में पीरोज़ा अथवा फ़ीरोज़ा) पु० जंगाली रंग की मणि ।

प्रा० **पिरोना** क्रि० स० गूँथना, सूई में तागा डालना, लड़ियाना ।

प्रा० **पिलई** (सं० प्लीहा, प्लिह्= जाना) स्त्री० तापतिल्ली, पिलही ।

प्रा० **पिलना** (सं० पेलन, पिल्= प्रेरणा करना, या फेंकना वा पेल्= जाना) क्रि० स० धावा मारना,

---

+ "मैं बैरी सुग्रीव पियारा । कारण कवन नाथ म्वहिं मारा" (इति रामायणम्) ।

ठेलना, धकेलना, ज़ोरकरना, क्रि० अ० कुचल जाना, पिसजाना, चूर होना, लड़ने को आगे बढ़ना ।

प्रा० **पिलपिला** गु० नर्म, पिचपिचा, कोमल, ढीला ।

प्रा० **पिलुवा** / **पिल्लू** (सं० पीलु, पील्=रोकना)पु० कीड़ा ।

प्रा० **पिल्ला** (सं० पिल्ल, चुँधला) पु० कुत्ते का बच्चा ।

सं० **पिशाच** (पिशित=मांस, अश्=खाना वा पिशित=मांस, आ=चारों ओर से, चम्=खाना) पु० प्रेत, भूत, शैतान ।

सं० **पिशित** (पिशि=टुकड़े करना) पु० मांस ।

सं० **पिशुन** (पिश्=टुकड़े करना)गु० चुग़ल, निन्दक, दुष्ट, नीच, भेदिया, जासूस ।

प्रा० **पिसान** (सं० पिष्ट, पिष्=पीसना) पु० आटा, पिष्टक, मर्प० पु० पीठी, चौरेठा, पिन्नी ।

सं० **पिहित** (अपि + धा=धारण करना) मर्प० पु० गुप्त, आच्छादित, छिपा हुआ ।

प्रा० **पीछा** (सं० पश्चात्) पु० पिछला भाग, पिछवाड़ा, २ रगेदना, खदेरना, भगादेना ।

प्रा० **पीछाकरना** बोल० खदेरना, रगेदना, पीछे पीछे जाना ।

प्रा० **पीछाफेरना** बोल० लौटा देना, पीछा दे देना, फेर लेना ।

प्रा० **पीछे** (सं० पश्चात्) क्रि० वि० नित्य सं० पीठ पीछे, परे, इसके बाद, अन्त में, निदान ।

प्रा० **पीछेडालना** बोल० पीछे छोड़ना, आगे निकलजाना, आगे बढ़ जाना ।

प्रा० **पीछेपड़ना** बोल० पीछे दौड़ना, दबाना, बार बार माँगना, सताना, छेड़ना, खिझाना, दुख देना, २ पीछे रहजाना ।

प्रा० **पीछेलगना** बोल० पीछे जाना, साथ होना, साथ लगना, लगा रहना ।

प्रा० **पींजना** क्रि० स० रूई धुनना, रूई साफ़ करना ।

प्रा० **पीटना** (सं० पिट्=पीटना, वा पीड्=दुख देना) क्रि० स० मारना, कूटना, ठोंकना, खटखटाना, चूर चूर करना, छाती पीटना, विलाप करना, रोना, पछतावा करना, दुख करना ।

प्रा० **पीठ** (सं० पृष्ठ) स्त्री० पिछाड़ी का अङ्ग ।

प्रा० **पीठ के पीछे डाललेना** बोल० बचाना, पक्ष करना, रक्षा करना ।

प्रा० **पीठ के पीछे पड़ना** बोल० शरण लेना, पनाह लेना ।

प्रा० **पीठ ठोंकना** बोल० ढाढ़स देना, साहस देना, हिम्मत बँधाना ।

प्रा० पीठ देना बोल० भागजाना, फिरना, हटना, टलना, २ अप्रसन्न होकर फिरजाना ।

प्रा० पीठपर हाथ फेरना बोल० पीठ थपथपाना, शाबाशी देना, ढाढ़स देना ।

प्रा० पीठफेरना बोल० चलाजाना, भागना, हटना ।

प्रा० पीठलगना पीठ पर घाव होना (जैसे घोड़े के), २ घोड़े पर चढ़ना ।

सं० पीठ (पिठ्=मारना, ठोकना) पु० आसन, पीढ़ा ।

प्रा० पीठी (सं० पिष्टिका, पिष्= चूर करना) स्त्री० पिसी हुई उड़द की दाल ।

प्रा० पीड़ (सं० पीड़ा) स्त्री० बालक के पैदा होने के समय का दुःख जो लुगाई को होता है ।

सं० पीड़ा (पीड़=दुःख देना) स्त्री० दुःख, दर्द, व्यथा, वेदना ।

सं० पीड़ित (पीड़=दुःखदेना) क० पु० दुःखित, दुःखी, बीमार ।

सं० पीड्यमान कर्म० पु० पीड़ायुक्त, पीड़ाविशिष्ट ।

प्रा० पीढ़ा (सं० पीठ) पु० पटरा, मोढ़ा, मचिया ।

प्रा० पीढ़ी (सं० पीठिका) स्त्री० मचिया, २ वंशावली, वंश की परम्परा ।

सं० पीत (पा=पीना अर्थात् आँखों से दिखाई देना) गु० पीला, पु० पीला रङ्ग, पिया हुआ, पानकृत ।

प्रा० पीत } (सं०प्रीति) स्त्री०प्यार,
पीति } प्रेम, नेह, स्नेह, छोह ।

प्रा० पीतम (सं० प्रियतम) गु० बहुत प्यारा, पु० स्वामी, भर्त्ता ।

प्रा० पीतल (सं० पित्तल वा पीतलका, पीत=पीला, ला=लेना) पु० एक प्रकार की पीली धातु ।

सं० पीताम्बर (पीत=पीला, अम्बर =कपड़ा) पु० पीला रेशमी कपड़ा, २ जिसके कपड़े पीले हों, ३ श्रीकृष्ण ।

सं० पीन (पै वा प्याय्=बढ़ना, मोटा होना) गु० मोटा, स्थूल, पुष्ट ।

प्रा० पीनक स्त्री० अफ़ीम के नशे से ऊँघाई ।

प्रा० पीनस पु० पालकी, रोगविशेष ।

प्रा० पीनसवारे गु० पीनसरोगवाला जिसके नाक में कीड़े पड़गये हों ।

प्रा० पीना (सं० पान) क्रि० स० पान करना, २ तमाकू का धूआँखींचना ।

प्रा० पीजाना पु० पीना, पीलेना, २ सोखना, ३ क्रोध को पीना मारना, चुपरहना, ४ उत्तर देने से रुकना ।

प्रा० पीपल (सं० पिप्पल) पु० एक वृक्ष का नाम जिसको हिन्दू पवित्र मानते हैं, २ (सं० पिप्पली, पा= बचाना) स्त्री० एक तरह का गर्म मसाला ।

प्रा० पीपलामूल (सं०पिप्पलीमूल) पु०पीपल अथवा पिप्पली की जड़।

सं० पीयूष (पीय्=पीना वा
पेयूष तृप्त होना)पु०अमृत, अमी, सुधा, आबहयात, २ दूध।

प्रा० पीर (सं० पीड़ा) स्त्री० पीड़, दर्द, दुःख, व्यथा, वेदना।

प्रा० पीरा (सं० पीत) गु०पीत
पीला वर्ण।

प्रा० पीलाम (यह शब्द चीनी है) बोल० साटिन, एकतरह का रेशमी कपड़ा।

प्रा० पीसना (सं० पेषण, पिष्=पीसना) क्रि०स० चूर चूर करना, बुकनी करना, चूर्ण करना, आटा करना, दलना, चकनाचूर करना, २ कड़कड़ाना, (जैसे दाँत पीसना)।

प्रा० पीहर पु० स्त्री के बाप का घर, नैहर, मैका।

सं० पुंलिङ्ग (पुम्=पुरुष, लिङ्ग
पुँल्लिङ्ग =चिह्न या निशान) पु० पुरुषचिह्न, पुरुषत्व, २ पुरुष का वाची शब्द।

प्रा० पुकार स्त्री०हाँक,गोहार, डाक, चिल्लाना, चिल्लाहट।

प्रा० पुकारना क्रि० स० हाँक मारना, चिल्लाना, बुलाना।

प्रा० पुखराज पु०एक रत्न का नाम।

सं० पुङ्ग पु० सुपारी, पूगीफल।

सं० पुङ्गव (पुम्=पुरुष, गों=गाय) पु० बैल,वृषभ, और जब यह किसी दूसरे पद के पीछे आवे तब इसका अर्थ होता है श्रेष्ठ, उत्तम-जैसे नरपुङ्गव=मनुष्यों में श्रेष्ठ, नरप्रधान।

प्रा० पुङ्गीफल (सं० पूगफल,पू
पूगीफल =पवित्र होना)पु० सुपारी, डली।

प्रा० पुजना (सं०पूर्=भरना) क्रि० अ० पूरा होना, २ प्रतिष्ठापाना।

प्रा० पुजवाना (सं०पूज्=पूजना)
पुजाना क्रि० स० पूजा कराना, (सं० पूर्ण) पु० पूरा कराना, भराना।

प्रा० पुजापा (सं० पूजा) पु० पूजा की सामग्री।

सं० पुञ्ज (पुम्=पुरुष, जी=जीतना वा जन्=पैदा होना अर्थात् जो पुरुषों से इकट्ठा किया जाता है) पु०ढेर, समूह, राशि, थोक, जत्था।

सं० पुट (पुट्=मिलना) पु०दोना, २ मिलाव, मिलना, ३ ढकना।

सं० पुटक पु० दोना, पद्म।

सं० पुटकिनी स्त्री० पद्मिनी,दुनिया।

सं० पुटित क० पु० युक्त, शामिल।

प्रा० पुट्ठा पु० जानवर का चूतड़,पूठ।

प्रा० पुड़िया (सं०पुटी,पुट्=मिलना) स्त्री० काग़ज़ की छोटी सी गाँठ।

सं० पुण्डरीक (पुडि=मसलना, मलना) पु० कमल, श्वेतकमल,

२ अग्निकोण के हाथी का नाम, ३ बाघ, ४ एक प्रकार का साँप, ५ एक प्रकार का कोढ़, ६ सफ़ेद छाता।

सं० पुण्डरीकाक्ष (पुण्डरीक=कमल, अक्ष=आँख) पु० विष्णु, जिसकी आँखें कमल सी हों।

सं० पुण्य (पू=पवित्र होना) भा० पु० पवित्र काम, सुकृत काम, धर्म, गु० पवित्र, शुद्ध, पावन, २ सुन्दर, ३ सुगन्धित।

सं० पुण्यकृत् क० पु० धार्मिक, सुकृती।

सं० पुण्यजनक क० पु० पुण्योत्पादक, पुण्यकर्ता।

सं० पुण्यभूमि (पुण्य=पवित्र, भूमि=धरती) स्त्री० पवित्र धरती, आर्यावर्त्त, अन्तर्वेद।

सं० पुण्यवान् (पुण्य=धर्म, वत्=वाला) गु० धर्मात्मा, धार्म्मिक।

सं० पुण्यात्मा (पुण्य=पवित्र, आत्मा=मन, जिसकी आत्मा धर्म में लगी हो) गु० पुण्यवान्, धर्मात्मा, पवित्रात्मा।

प्रा० पुतला } (सं० पुत्तल) पु०
पूतला } मूर्ति, काठ की बनी हुई मूर्ति।

प्रा० पुतली } (सं० पुत्तली) स्त्री०
पूतली } आँख का तारा, २ काठ की मूर्ति।

सं० पुत्तिका स्त्री० पुतली, २ क्षुद्र मक्षिका।

सं० पुत्र (पुत्=एक नरक का नाम, त्रै=बचाना, जो पुत् नाम नरक से अपने बाप को बचावे या पवित्र करे) पु० बेटा।

सं० पुत्रिका } (पुत्र) स्त्री० बेटी,
पुत्री } लड़की, कन्या, २ गुड़िया।

प्रा० पुन } (सं० पुनर्) समुच्च०
पुनि } फिर, बहुरि, पीछे।

सं० पुनःपुना (पुनर्=बारबार, पू=पवित्र करना) स्त्री० पुनपुन नदी जो पटने से पाँच कोस गया के रास्ते पर है, "कीकटेषु गया पुण्या, नदी पुण्या पुनःपुना" (वायुपुराण) अर्थ—कीकट अर्थात् मगध देश में गया और पुनपुन नदी पवित्र हैं।

सं० पुनःपुनर् अव्य० बारम्बार, फिर फिर।

सं० पुनर् अव्य० प्रथम, निश्चय, अधिकार, भेद, पक्षान्तर, फिर फिर, और।

सं० पुनरागमन (पुनः+आगमन) भा० पु० फिर आना, लौटना।

सं० पुनरुक्ति (पुनर्=फिर, उक्ति=कहना) स्त्री० फिर कहना, दो बार कहना।

सं० पुनर्जन्म (पुनर्=फिर, जन्म=पैदा होना) पु० दूसरा जन्म।

सं० पुनर्भव पु० नख, नहँ, पुनर्जन्म, दूसरी पैदायश ।

सं० पुनर्वसु (पुनर्=फिर, वसु=रहना) पु० सातवाँ नक्षत्र, गन्धर्व, मुनिभेद ।

प्रा० पुनीत (सं० पूत, पू=पवित्र होना) गु० पवित्र, शुद्ध, निर्मल, स्वच्छ ।

सं० पुमान् क० पु० पुरुष, आदमी, मनुष्य ।

सं० पुर (पुर्=आगे जाना वा पॄ=भरना) पु० नगर, शहर, २ घर, ३ देह, ४ एक राक्षस का नाम ।

स० पुरजन क० पु० पुर के मनुष्य ।

सं० पुरञ्जन पु० जीव जैसे (पुरञ्जनोपाख्यान) ।

सं० पुरःसर (पुरस्=आगे, सृ=जाना) गु० अगुवा, अग्रगामी, पेशवा ।

सं० पुरट (पुर=आगे जाना) पु० सोना, कञ्चन ।

सं० पुरतः अव्य० अग्रे, आगे, पेश ।

सं० पुरन्दर (पुर=नगर, दॄ=फाड़ना) क० पु० इन्द्र जो राक्षसों के नगरों को नाश करता है, २ चोर ।

सं० पुरन्ध्री स्त्री० कुटुम्बिनी, भिल्लिन ।

सं० पुरारि (पुर=दैत्य, अरि=शत्रु) पु० महादेव, शिव ।

सं० पुरवासी (पुर=नगर, वासी=रहनेवाला) पु० शहर का रहनेवाला, नगरनिवासी ।

सं० पुरस्कार (पुरस्=आगे, कृ=करना) पु० आदर, सत्कार, पूजा, दान, फल, इनाम, बदला ।

सं० पुरस्तात् अव्य० आगे, अग्रे, पेश्तर, पूर्व, पूर्व में ।

प्रा० पुरा (सं० पुर) पु० गाँव ।

सं० पुरा अव्य० प्राचीन, पुराना, पुराण, निकट, अतीत, भावी, पूर्व समय, पिछला वक़ ।

सं० पुराकृत (पुरा=पहले, कृत=किया) कर्म० पु० पहले का किया हुआ, पूर्वजन्म ।

सं० पुराण (पुरा=पुराना, पुर=आगे जाना अर्थात् जिसमें पुराने समय की बातें हों, अथवा जो पुराने समय में बने हों) पु० वे ग्रन्थ जिसमें से बहुतों को व्यास जी ने बनाये अथवा इकट्ठे किये, पुराण सब पद्य में लिखे हुए हैं और उनको हिन्दू पवित्र मानते हैं, हरएक पुराण में विशेष करके इन पाँच बातों का वर्णन है जैसे-

" सर्गश्च प्रतिसर्गश्च "
" वंशो मन्वन्तराणि च "
" वंशानुचरितं चैव "
" पुराणं पञ्चलक्षणम् "

अर्थात् १ संसार की उत्पत्ति, प्रलय और प्रलय के पीछे फिर

संसार की उत्पत्ति, ३ देवता और शूरवीरों की वंशावली, ४ मनुओं का राज, और ५ उनके वंश के लोगों का व्यवहार और चलन, पुराण अठारह हैं १ ब्रह्मपुराण, २ पद्मपुराण, ३ ब्रह्माण्डपुराण, ४ अग्निपुराण, ५ विष्णुपुराण, ६ गरुड़पुराण, ७ब्रह्मवैवर्त्तपुराण, ८शिवपुराण, ९ लिङ्गपुराण, १० नारदपुराण, ११ स्कन्दपुराण, १२मार्कण्डेयपुराण, १३भविष्यत्पुराण, १४मत्स्यपुराण, १५वराहपुराण, १६ कूर्मपुराण, १७वामनपुराण, १८ श्रीमद्भागवतपुराण । इनसब पुराणोंमें चारलाखश्लोक गिनेगये हैं और अठारह उपपुराण भी हैं, प्राचीन, जीव गु० पुराना, पहले का, सबसे पहला, बूढ़ा, ८० कौड़ी की संख्या, मूल्य ।

सं० पुराणपुरुष (पुराण=पुराना वा सबसे पहला, पुरुष=मनुष्य) पु० विष्णु, भगवान्, २ बूढ़ा आदमी ।

सं० पुरातन (पुरा=पुराना) गु० पुराना, प्राचीन, अगले समय का ।

प्रा० पुरातम (सं० पुरातन) गु० पुराना, क़दीम, प्राचीन ।

प्रा० पुराना (सं० पुराण) बोल० अगले समय का, प्राचीन, पुरातन, बोदा, बहुत दिन का, बूढ़ा ।

प्रा० पुराना (सं० पूर्=पूरा करना) क्रि० स० भरदेना, भरना, पूरा करना ।

सं० पुराराति
पुरारि (पुर=एक राक्षस का नाम, आराति वा अरि=वैरी) पु० शिव, महादेव जिन्होंने पुर नाम दैत्यको मारा था ।

सं० पुरी (पुर) स्त्री० नगरी ।

सं० पुरीष (पृ=भरना) विष्ठा, गूह, मल ।

सं० पुरु (पृ=भरना) पु० एक चन्द्रवंशी राजा का नाम ।

प्रा० पुरुखा
पुरखा
पुर्खा (सं० पुरुष) पु० बड़े, बापदादे, दादे परदादे, पूर्वपुरुष ।

सं० पुरुष (पुर्=आगे जाना) पु० मनुष्य, नर, परमेश्वर, २ पुरुखा ।

सं० पुरुषासिंह (पुरुष + सिंह) पु० पुरुषों में सिंह, श्रेष्ठ मनुष्य ।

सं० पुरुषार्थ (पुरुष=मनुष्य, अर्थ=प्रयोजन) पु० धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, २ बल, ज़ोर, वीरता, साहस, पराक्रम, परोपकार ।

सं० पुरुह
पुरूह गु० प्राचीन, बहुल, बहुत, अधिक ।

सं० पुरोगम (पुरस्=आगे, गम्=जाना) गु० श्रेष्ठ, अग्रगामी, पेशवा ।

सं० पुरुषोत्तम (पुरुष=मनुष्य, उत्तम=श्रेष्ठ) पु० विष्णु, नारायण, २ उत्तममनुष्य ।

सं० पुरोडाश (पुरस्=आगे, दाश्=देना) पु० होम की सामग्री घी आदि हविस्, खीर ।

सं० पुरोधा / पुरोहित (पुरस्=आगे, धा=रखना) पु० कुलगुरु, उपाध्याय ।

प्रा० पुर्वा / पुर्वैया (सं० पूर्ववायु) स्त्री० पूर्व की हवा ।

प्रा० पुर्सा (सं० पौरुष) गु० मनुष्य की उँचाई के बराबर, पु० मनुष्य के डील की उँचाई के बराबर विस्तार, चार हाथ का नाप ।

सं० पुल (पुल्=ऊँचा होना) पु० सेतु, बन्ध, बाँध, गु० श्रेष्ठ, उत्तम ।

सं० पुलक (पुल्=बढ़ना वा ऊँचा वा खड़ा होना) पु० मारे खुशी के रोवाँ खड़ा होना, रोमाञ्चित होना, प्रसन्न होना, रोमाञ्च, गजभोजन, हरताल, गड़हा, तुच्छधान्य ।

सं० पुलकित (पुल्=बढ़ना वा ऊँचा होना) कर्म० पु० रोमाञ्चित, हर्षित, आनन्दित ।

सं० पुलस्ति / पुलस्त्य (पुल्=बड़ा होना) पु० ब्रह्मा का बेटा, रावण का दादा, सप्तऋषियों में का एक ऋषि ।

सं० पुलिन (पुल्=ऊँचा होना) पु० नदी के बीच में बालू का टापू, तट, किनारा ।

सं० पुलिन्द पु० भिल्ल, निषाद, शबर, म्लेच्छ ।

प्रा० पुलिन्दा पु० पार्सल, गठरी, गठिया, गाँठ ।

सं० पुलोमजा (पुलोमा=असुरभेद, जा=उससे पैदा) स्त्री० इन्द्रप्रिया, शची, इन्द्राणी ।

प्रा० पुवाल (सं० पलाल, पल्=जाना वा बचना) पु० पुआल, खर, तिनका, बिचाली, डांठी, पयाल ।

सं० पुषा स्त्री० पुष्टि, पालन ।

सं० पुष्कर (पुष्=बढ़ना वा पालना) पु० कँवल, २ आकाश, ३ पानी, ४ एक तीर्थ का नाम जो अजमेर से तीन कोस पर है, ५ सातद्वीपों में का एक द्वीप, ६ पोखरा, ७ तालाब, ८ कमल, ९ हाथी की सूँड़, १० ढोल, ११ सर्प, १२ तूर्यबाजा, तुरही ।

सं० पुष्करिणी स्त्री० तलैया, हथिनी, पुष्करमूल, पुहकरमूल, पद्मसमूह ।

सं० पुष्कल (पुष्=अधिक होना) गु० बहुत, ढेर, तृप्त, सम्पूर्ण, तुष्ट, २ श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा, मेरु पर्वत, कस्तूरी ।

सं० पुष्ट (पुष्=पालना वा बढ़ना) गु० पाला हुआ, २ मोटा ताज़ा ।

सं० पुष्टि स्त्री० पालना, पोषण, वृद्धि, असगन्ध औषध, मातृकाभेद विवाहों में सोलह मातृका पूजी

जाती हैं उनमें की एक ।

सं० पुष्टाङ्ग (पुष्ट=मोटा, अङ्ग=शरीर) गु० मोटा ताज़ा, जिसका शरीर पुष्ट हो ।

सं० पुष्प (पुष्प्=फूलना, विकसना) पु० फूल, कुसुम, सुमन, २ स्त्री का रजस्, ३ कुबेर का विमान, ४ एक प्रकार का आँखोंका रोग ।

सं० पुष्पक (पुष्प=फूल, अर्थात् फूल सा हलका) पु० कुबेर का विमान, कङ्कण, रसौंत, लोहपात्र, अँगीठी, लोहा, काँसाधातु ।

सं० पुष्पकरण्डक पु० पुष्पचयनपात्र, बाँसकी बनी हुई फूल चुन कर रखने की पिटारी, फूलों की पिटारी ।

सं० पुष्पचाप पु० कामदेव ।

सं० पुष्पदन्त पु० वायुदिशा का दिग्गज, विद्याधर, गन्धर्ब ।

सं० पुष्पपुर पु० कुसुमपुर, पाटलिपुत्र, पटना ।

सं० पुष्पमास पु० चैत्र ।

सं० पुष्परस (पुष्प + रस) पु० फूलों का रस, मकरन्द, मधु ।

सं० पुष्पलिट् (पुष्प=फूल, लिह्=स्वादलेना)कृ०पु० भ्रमर, भौंरा ।

सं० पुष्पवाटी (पुष्प=फूल, वाटी=बाड़ी) स्त्री० फूलों की बाड़ी ।

सं० पुष्पविमान (पुष्प + विमान) पु० फूलों का विमान, देवताओं का विमान, कुबेर का विमान ।

सं० पुष्पाञ्जली (पुष्प + अञ्जली) स्त्री० दोनों हाथों में फूल लेकर और कुछ मन्त्र पढ़ कर देवता को चढ़ाना, निछावर, भेंट ।

सं०पुष्पित (पुष्प्=विकसना) कर्म० फूला हुआ, विकसा हुआ ।

सं० पुष्य (पुष्=पुष्ट करना किसी कामको) पु० आठवाँ नक्षत्र ।

सं० पुस्तक (पुस्त=आदरकरना वा बाँधना)स्त्री० पोथी, ग्रन्थ,किताब ।

प्रा० पूआ (सं० पूप,पू=शुद्धकरना) पु० मालपुआ ।

प्रा० पूंछ (सं० पुच्छ, पुच्छ=मस्त होना, जिसके बल पशु मस्त रहते हैं) स्त्री० दुम, लाङ्गूल, पुच्छ ।

प्रा० पूंजी (सं० पुञ्ज) स्त्री० धन, मूलधन, असलधन, सम्पत्ति, सर्माया, सम्पदा ।

सं० पूग (पू=पवित्र होना)पु० सुपारी, २ समूह, ३ एक वृक्षका नाम।

प्रा० पूछ (पूछना) स्त्री० खोज, अन्वेषण, प्रश्न ।

प्रा० पूछपाछ बोल० पूछना, निर्णय करना, प्रश्न ।

प्रा० पूछना (सं० प्रच्छन, प्रच्छ्=पूछना) क्रि० स० प्रश्न करना, सवाल करना, जिज्ञासा करना ।

सं० पूजक (पूज्=पूजना) कृ०पु० पुजारी, पूजनेवाला, सेवक ।

सं० पूजन (पूज्=पूजना) भा० पु० अर्चा, पूजा, अर्चन ।

प्रा० पूजना (सं० पूजन) क्रि०स० परस्तिश करना, पूजा करना, अर्चना, भजना, ध्याना, बहुतमानना, २ (सं० पूर्ण) क्रि० अ० पूरा होना ।

सं० पूजनीय
पूजमान (पूज्=पूजना) कर्म० पु० पूजने योग्य, मान्य, क़ाबिलपरस्तिश ।

सं० पूजयिता क०पु० पूजक, पूजनेवाला ।

सं० पूजा (पूज्=पूजना) स्त्री० अर्चा, परस्तिश, पूजन, अर्चन, आदर, सन्मान, सेवा ।

प्रा० पूजारी
पुजारी (सं० पूज्=पूजना) क०पु० पूजनेवाला, सेवक ।

सं० पूजित (पूज्=पूजना) कर्म० पु० पूजा हुआ, अर्चित, ख़िदमत कियागया ।

सं० पूज्य (पूज्=पूजना) कर्म०पु० पूजने योग्य, पूजनीय, पु० ससुर, गुरुजन ।

प्रा० पूठ पु० कूला, चूतड़, पुट्ठा ।

प्रा० पूठा (सं० पट्टिका) पु० गत्ता जिल्द ।

प्रा० पूणी स्त्री० रुई का पहल जो कातने के लिये बनायाजाता है ।

सं० पूत (पू=पवित्र करना) पु० पवित्र, सफ़ा, शुद्ध, सच्चाई, सफ़ाई, कुश, शङ्ख ।

प्रा० पूत (सं० पुत्र) पु० बेटा ।

सं० पूतना (पू=पवित्र करना) स्त्री० एक राक्षसी जिसको श्रीकृष्ण ने मारा ।

सं० पूति भा० स्त्री० पवित्रता, सफ़ाई, स्वच्छता, निर्मलता, महक ।

प्रा० पूनियां
पूनों
पूनौं (सं० पूर्णिमा) स्त्री० पूर्णमासी, हिन्दी महीनेकापिछलादिन ।

सं० पूप (पू=शुद्ध करना) पु० पूआ, मालपुआ ।

सं० पूय गु० निषिद्ध, कुत्सित, पीव, बिगड़ारक्त ।

सं० पूरक (पूर्=भरना) क० पु० भरनेवाला, पूर्ण करनेवाला, २ प्राणायाममें हवाको ऊपर खेंचना ।

सं० पूरण (पूर्=पूरा करना) गु० भरा, पूरा, सारा, सब ।

सं० पूरणीय (पूर् + अनीय) कर्म० पु० पूरा होने योग्य ।

प्रा० पूरब (सं०पूर्व) पु० पूर्वदिशा ।

प्रा० पूरा (सं०पूर्ण) गु० सब, सारा, भरा, समाप्त, बस, ठीक, तमाम, पक्का ।

सं० पुरुष (पुर्=पूरा करना) पु० मनुष्य, नर, पुरुष ।

सं० पूर्ण (पूर्=पूराकरना) गु० पूरा, भरपूर, भरा, सब, सारा, तमाम, समस्त, समाप्त, ठीक, पक्का ।

सं० पूर्णमासी (पूर्ण=पूरा, मास= चाँद वा महीना) स्त्री० पूनौं, पूर्णिमा ।

सं० पूर्णाहुति(पूर्ण + आहुति)स्त्री० होममें सबके पीछे आहुति वा बलि ।

सं० पूर्णिमा, पूर्णमा (पूर्ण=पूरी अर्थात् जिस दिन चाँद की कला पूरी होती है) स्त्री० पूनौं, पूर्णमासी ।

सं० पूर्त म्म० पु० पूरा, समाप्त, पूरित, पु० बावली, तालाब, कुआँ, बागीचा, देवमन्दिर ।

सं० पूर्तिन् क० पु० पूर्णकर्ता ।

सं० पूर्ब, पूर्व (पूर्व=रहना वा बुलाना) पु० पूरब दिशा, गु० पूरब दिशा का, पूर्बी, २ पहला, क्रि० वि० पहले, प्रथम, आगे ।

सं० पूर्वज (पूर्व=पहले, जन्=पैदा होना) पु० बड़ा भाई ।

सं० पूर्वार्द्ध (पूर्व=पहला, अर्द्ध= आधा) पु० पहला, आधा ।

प्रा० पूर्बिया, पूर्बी (सं० पौर्विक) गु० पूर्वदेशी, पूर्व का ।

सं० पूर्वोक्त (पूर्व=पहले, उक्त=कहा हुआ) म्म० पु० पहले कहा हुआ, मज़कूर ।

सं० पूर्वलिखित (पूर्व=पहले का, लिख्=लिखना) म्म० पु० पहले का लिखा हुआ ।

प्रा० पूला (सं० पूल, पूल=ढेर लगाना) घास का बोझा अथवा गट्ठा ।

सं० पूषन् (पूष्=बढ़ना) पु० सूर्य ।

प्रा० पूस (सं० पौष, पुष्य एक नक्षत्र का नाम) पु० चन्द्रवर्ष का नवां महीना जिसमें पूरा चाँद पुष्य नक्षत्र के पास रहता है और पूर्णमासी के दिन यह नक्षत्र होता है ।

सं० पृक्त (पृच्=मिलना) क० पु० मिश्रित, मिला हुआ, मुरक्कब ।

सं० पृच्छक (पृच्छ् + अक, प्रच्छ्= पूछना, प्रश्नकरना) क०पु० प्रश्नकर्ता, जिज्ञासु, पूछनेवाला ।

सं० पृच्छन भा० पु० पूछना, प्रश्न ।

सं० पृतना स्त्री० सेना, फ़ौज २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२९ घोड़े, १२१५ मनुष्य जिस फ़ौज में हों ।

सं० पृथक् (पृथ=फेंकना) गु० क्रि० वि० जुदा, अलग, भिन्न, न्यारा ।

सं० पृथक्करण (पृथक्=जुदा, करण= करना) पु० जुदा करना, अलग करना ।

सं० पृथक्क्षेत्र पु० भिन्नक्षेत्र, अलग का खेत, जारजपुत्र, वर्णसंकर की माता जो यारसे पुत्र पैदाकरे ।

सं० पृथा स्त्री० कुन्ती, पाण्डु की स्त्री और युधिष्ठिर अर्जुन और भीम की मां, विस्तार, प्रक्षेप ।

सं० पृथवी }
पृथिवी } (प्रथ्=विख्यात होना फैलना) स्त्री० धरती, धरणी, भूमि, ज़मीन ।

सं० पृथिवीनाथ }
पृथिवीपति } (पृथिवी=धरती, नाथ वा पति=मालिक) पु० राजा, नृपति, भूपति ।

सं० पृथिवीपाल (पृथिवी=धरती, पाल=बचाना) पु० राजा, पृथिवीनाथ, भूपति ।

सं० पृथु }
पृथुक } (पृथ्=फेंकना, वा प्रथ्=विख्यात होना) पु० सूर्यवंशियों का पाँचवां राजा गु० बड़ा, मोटा, २ चतुर, विशाल, ३ बालक, ४ चिउरा ।

सं० पृथिकु (प्रथ्=विख्यात होना) पु० यदुवंशियों का एक राजा और श्रीकृष्ण का पुरुषा ।

सं० पृथुल क० पु० महत्, बड़ा ।

सं० पृथ्वी (पृथु=बड़ी, चौड़ी, प्रथ्=विख्यात होना, फैलना) स्त्री० धरती, धरणी, भूमि, ज़मीन ।

सं० पृष पु० सींचना, क्लेश, छोटा, दान, लाभ, ओदा करना ।

सं० पृषत् पु० मृगभेद, विभाग, हिस्सा, बिन्दु, बूँद, छींट, बेल बूटा, सूक्ष्म, पतला, वायु, हवा, सिंह ।

सं० पृषोदर (पृष+उदर) गु० सूक्ष्मोदर, कृशोदर, छोटे पेटवाला ।

सं० पृष्ठ (पृष्-सींचना) स्त्री० पीठ, पिछाड़ी का अङ्ग, हर एक चीज़ का पिछला भाग, पु० पिठौता, पुस्तक के पत्रे की एक ओर ।

सं० पृष्ट (प्रच्छ्=पूछना) र्प० जिज्ञासित, पूछा गया ।

प्रा० पेई (सं० पेटक पिट्=इकट्ठा करना) स्त्री० पिटारी ।

प्रा० पेंग स्त्री० झूला का हिलाना ।

प्रा० पेंठ स्त्री० हाट, बाज़ार, मंडी ।

प्रा० पेंदा पु० तला, नीचे का भाग ।

प्रा० पेखना (सं० प्रेक्षण) क्रि० स० देखना, निरखना ।

प्रा० पेखना पु० स्वाँग, खेल ।

सं० पेचक (पचि=फैलाना) पु० उल्लू, उलूक, पेचा ।

प्रा० पेचा (सं० पेचक)पु० उल्लू ।

सं० पेट (पिट्=इकट्ठा करना) पु० उदर, जठर, २ गर्भस्थान, कोख, गर्भाधान, ३ बंदूक़ आदि की मुहड़ी, ४ छेद, खोह, कन्दरा, बन्दूक़, पिटारा, पिटारी, टोकरी, डब्बा, डिबिया ।

प्रा० पेटआना बोल० पेट चलना, बहुत झाड़ा फिरना, बहुत दस्त होना, दस्त की बीमारी होना ।

प्रा० पेटका दुखदेना बोल० भूखों मरना ।

प्रा० पेटका पानी न हिलना यह

बोल चाल उस जगह बोला जाता है कि जब घोड़ा ऐसी चाल चले कि सवार हिले डुले नहीं और न किसी तरह का दुःख पावे।

प्रा० पेटकी आग बोल० मां बाप का प्यार, २ सन्तान, औलाद, लड़के का दुःख न देख सकना।

प्रा० पेटकी आग बुझाना बोल० कुछ खाना, भूखे को कुछ खिलाना।

प्रा० पेटकी बातें बोल० मन की बातें, गुप्त बातें, छिपी बातें।

प्रा० पेटगड़गड़ाना बोल० पेट गड़बड़ाना, पेट बोलना, पेट हड़बड़ाना।

प्रा० पेटगिरना बोल० गर्भगिरना, गाभ गिरना, अधूरा जाना, स्त्री के पेट से कच्चे बच्चे का गिरना।

प्रा० पेटजलना बोल० बहुत भूखा होना।

प्रा० पेट दिखाना बोल० अपनी गरीबी और भूख को जताना।

प्रा० पेटपालना बोल० अपना निर्वाह करना, गुज़रान करना, २ स्वार्थी होना।

प्रा० पेटपीठएकहोना बोल० बहुत दुबला होना, लाग़र होना।

प्रा० पेटपोछन बोल० स्त्री का सबसे पिछला बालक।

प्रा० पेटपोसू खाऊ, पेटू, पेटार्थू, पेटपाल।

प्रा० पेटफूलना बोल० बहुत हँसना, हँसी के मारे लोट पेट होना, २ गर्भ रहना।

प्रा० पेटबढ़ाना बोल० बहुत खाना, २ दूसरे के हिस्से पर हाथ बढ़ाना।

प्रा० पेटबाँधना बोल० भूखसे कम खाना।

प्रा० पेटभर बोल० जीभर, भरपेट, अघाके।

प्रा० पेटभरना बोल० खाना, खा चुकना, अघाना, तृप्त होना।

प्रा० पेटमारना बोल० आत्मघात करना, अपघात करना, खुदकुशी करना।

प्रा० पेटमें पैठना बोल० दूसरे का भेद लेना, २ खुशामद की बातें करके मित्र बन जाना।

प्रा० पेटमें लेना बोल० सहना, संतोष रखना।

प्रा० पेटरहना बोल० पेटसे होना, गर्भिणी होना, गर्भ रहना।

प्रा० पेटलगजाना बोल० भूखों मरना, बहुत भूखा होना।

प्रा० पेटलगरहना बोल० बहुत भूखा होना।

प्रा० पेटवाली ⎫ बोल० गर्भिणी,
पेटसे ⎭ गर्भवती।

प्रा० पेटसे होना बोल० गर्भिणी होना, पेट रहना।

प्रा० पेट हड़बड़ाना बोल० दस्त की हाजत होना, पेट गड़बड़ाना ।

सं० पेटार्थी
प्रा० पेटार्थू (सं० पेट, और अर्थी=चाहनेवाला, अर्थ=चाहना वा माँगना) गु० खाऊ, पेटू, पेटपालू ।

सं० पेटिका (पिट्=इकट्ठा करना) स्त्री० सन्दूक़, पिटारा, पेटी, टोकरी, डब्बा ।

प्रा० पेटिया (पेट) पु० सीधा, हर एक दिनका खाना ।

सं० पेटी (पिट्=इकट्ठा करना) स्त्री० पिटारी, २कमरबन्द, पेट पर बाँधने की चमड़े की बन्धनी, ३ छाती ।

प्रा० पेटू (पेट) गु० अपना पेट भरनेवाला, पेटार्थू, पेटार्थी, मभूखा, पेटपालू, खाऊ ।

प्रा० पेटौखा (पेट) पु० पेट चलना, अतिसार रोग, आँव ।

प्रा० पेठा पु० कूष्माण्ड, कुम्हड़ा ।

प्रा० पेड़ पु० रूख, तरु, वृक्ष, पौधा ।

प्रा० पेड़ा (सं० पिण्ड) पु० एक प्रकार की मिठाई ।

प्रा० पेड़ी स्त्री० छोटा पेड़ा, २ एक तरह का पान, ३ नील की डाँठी ।

प्रा० पेडू (पेट) पु० नाभि के नीचे का भाग, तलपेट, पेटतल ।

प्रा० पेम (सं०प्रेम) पु० प्यार, स्नेह ।

प्रा० पेमी (सं० प्रेमी) गु० प्यारा, प्रीतम, प्रेमी, छोही, मित्र ।

सं० पेयं[1] (पा=पीना) पु० पानी, २ दूध, गु० पीने योग्य ।

प्रा० पेलना (सं० पेलन, पिल् वा पेल्=जाना) क्रि० स० ठेलना, ढकेलना रेलना, धक्का देना, २ ठाँसना, ३ निचोड़ना, ४ आज्ञा भङ्ग करना, वचन तोड़ना ।

सं० पेश
पेशल गु० सुन्दर, दक्ष, कोमल, चतुर, निर्मल, मनोहर, रुचिर ।

प्रा० पेशाब (सं० प्रस्राव प्र, स्रु=चूना, बहना) पु० मूत, मूत्र ।

सं० पेशि (पिश्=अङ्गविभाग) पु० वज्र, अण्डा ।

सं० पेशी स्त्री० भृङ्गी, बड़ी कली, मियान, मांस, पुञ्ज, समूह ।

सं० पेषक क० पु० मर्दक, पीसनेवाला ।

सं० पेषण भा० पु० पीसना ।

सं० पोषित कर्म० पु० पीसा हुआ ।

सं० पेषणि
पेषणी (पिष्=पीसना) गु० स्त्री० चक्की, दलैंती, जाँता ।

सं० पोषि पु० लोटा, बट्टा ।

प्रा० पैंचा पु० हाथ उधार, उधार ऋण ।

---

[1] "पेयं पेयं श्रवणपुटके रामनामाभिरामम्" ॥

प्रा० **पैंड़** (सं० पण्ड, पण्ड्=जाना) पु० पाँव, डग, क़दम, पद, २ उँचान, ऊँची धरती ।

प्रा० **पैंड़ा** (सं० पण्ड, पण्ड्=जाना) पु० रस्ता, मार्ग, बाट, सड़क ।

प्रा० **पैंताना** (सं० पादान्त, पाद + अन्त) पु० पाँयती पाँयतल ।

प्रा० **पैंतालीस** (सं० पञ्चचत्वारिंशत्, पञ्च=पाँच, चत्वारिंशत्=चालीस) गु० चालीस और पाँच, ४५ ।

प्रा० **पैंतीस** (सं० पञ्चत्रिंशत्, पञ्च=पाँच, त्रिंशत्=तीस) गु० तीस और पाँच, ३५ ।

प्रा० **पैंसठ** (सं० पञ्चषष्टि, पञ्च=पाँच, षष्टि=साठ) गु० साठ और पाँच, ६५ ।

प्रा० **पै** (सं० पयस्) पु० दूध, पानी, २ (सं० उपरि) संकेतवर्ण० पर, ऊपर, ३ (सं० पर) समुच्च० परन्तु पर ।

प्रा० **पैज** पु० पण, होड़, प्रतिज्ञा, अहेद, क़ौल, वचन ।

प्रा० **पैठ** स्त्री० हुंडी की दूसरी नक़ल जब हुंडी खोय जाती है तब पैठ कराते हैं, २ पैठना, पहुँच, ३ भरोसा ।

प्रा० **पैठना** (सं० प्रविष्ट) क्रि० अ० घुसना, धसना, प्रवेश करना ।

प्रा० **पैड़ी** स्त्री० सीढ़ी, जीना, निसेनी ।

प्रा० **पैतृक** (पितृ) गु० पिता का, बापका, बपौती, मौरूसी ।

प्रा० **पैदल** (सं० पादात वा पदाति) पु० पियादा, पैरोंसे चलनेवाला ।

प्रा० **पैन** (सं० पानीय) पु० नाली, नाला ।

प्रा० **पैना** पु० आर, अङ्कुश, आँकुस, बैल के मारने का चाबुक, तीखा काँटा, गु० तीखा ।

प्रा० **पैया** पु० पहिया, चक्र, चक्का ।

प्रा० **पैर** (सं० पद) पु० पाँव, चरण, क़दम ।

प्रा० **पैरना** क्रि० अ० तैरना, हेलना ।

प्रा० **पैराक** क० पु० तैरनेवाला, पैरनेवाला ।

प्रा० **पेवँदीबेर** पु० बड़े २ बेर ।

प्रा० **पैसा** पु० ताँबे का सिक्का, २ धन, दौलत, रोक, रोकड़, संपत्ति ।

प्रा० **पैसाउड़ाना** बोल० बहुत ख़र्च करना, अन्धाधुन्ध ख़र्च करना, २ दूसरे का धन चुरालेना या ठग लेना ।

प्रा० **पैसाखाना** बोल० पैसा उड़ाना, बहुत ख़र्च करना, २ मज़दूरी करके पेट भरना, ३ रिशवत लेना, ४ डकारजाना, विश्वासघात करके ले लेना ।

प्रा० **पैसाडुबोना** बोल० धन गँवाना ।

प्रा० **पैसाडूबना** बोल० धन बरबाद

होना, रुपया पैसा खोयाजाना ।

प्रा० पैसे लगाना बोल० धन खर्च करना, धन लगाना ।

प्रा० पैसेवाला गु० धनवान्, दौलतमन्द, २ एक पैसे का ।

प्रा० पैसोंसे दरबारबाँधना बोल० रिशवत देना, घूस देना ।

प्रा० पैसार पु० पहुँच, पैठ, प्रवेश ।

प्रा० पैहैं (पाना) क्रि० स०पावेगा, पाओगे ।

प्रा० पोइस (सं० पश्य=देख) क्रि० वि० अलग हो, दूर हो, अरे, जब कि रस्तेपर बहुत से आदमी हों तब उनको अलग करने और नहीं छुआने के लिये भङ्गी यह शब्द बहुतबार बोला करता है ।

प्रा० पोंगी स्त्री० बाँसुरी जिसको साँप पकड़नेवाले बजाते हैं, मौहर ।

प्रा० पोंछना क्रि० स० झाड़ना, फर्छा करना, साफ़ करना ।

प्रा० पोखर ⎫ (सं० पुष्कर) पु०
पोखरा ⎭ तालाब,ताल,झील, तड़ाग ।

सं० पोगण्ड गु० विकलाङ्ग, नपुंसक, अङ्गहीन, कुपुरुष, पु०सोलह वर्षकी अवस्था ।

प्रा० पोच (फ़ा० "पुच") गु० नीच, तुच्छ, बुरा ।

प्रा० पोट स्त्री० मोट, गाँठ, गठरी ।

प्रा० पोटला पु० बड़ी गठरी ।

प्रा० पोटली स्त्री० छोटी गठरी, मोटरी ।

प्रा० पोढ़ा ⎫ (सं० प्रौढ) गु० बल-
पौढ़ा ⎭ वान्, २कड़ा, ठोंस, दृढ ।

प्रा० पोढ़ाई ⎫ (सं० प्रौढता) भा०
पौढ़ाई ⎭ स्त्री०बल, २कड़ापन, दृढता, ठोंसाई ।

सं० पोत (पू=शुद्ध करना) पु० बच्चा, बालक, २ स्त्री० नाव ।

प्रा० पोत पु० स्वभाव, प्रकृति, गुण, बनावट, २ काँचका दाना ।

सं० पोतक (पू=शुद्ध करना) पु० बालक, बच्चा ।

प्रा० पोतड़ा पु० बच्चे का बिछौना ।

प्रा० पोतना क्रि० स० लीपना, लेसना ।

प्रा० पोता (सं० पौत्र) पु० बेटे का बेटा ।

प्रा० पोतिया स्त्री० नहाने के समय पहनने का कपड़ा, गँवार लोगों के शिर पर बाँधने का कपड़ा, २ एक खिलौने का नाम ।

प्रा० पोती (सं० पौत्री) स्त्री० बेटे की बेटी ।

प्रा० पोथा (सं० पुस्त, पुस्त्=आदर करना, वा बाँधना) पु० बड़ी पुस्तक ।

प्रा० पोथी (स० पुस्ती, पुस्त्=आदर करना, वा बाँधना) स्त्री० पुस्तक, बही, किताब ।

प्रा० पोदना एक पखेरू का नाम ।

प्रा० पोना क्रि० स० पिरोना, गाथना, गूथना, गुहना, २ रोटी बेलना वा बनाना ।

प्रा० पोपला गु० बेदाँत, दाँतरहित, अदाँत, जिसके दाँत गिरगये हों ।

प्रा० पोमचा पु० एक तरह का रँगीला कपड़ा ।

प्रा० पोर (सं० पर्व) स्त्री० गाँठ, गिरहा, दो गाँठों का बीच ।

प्रा० पोरी (सं० पर्व) स्त्री० बाँस की अथवा गन्ने की गाँठ ।

प्रा० पोला गु० ख़ाली, छूछा, कोमल, नर्म ।

अं० पोलेटिकलएजेण्ट=राज्य प्रबन्धकर्ता ।

अं० पोलेटिकलसभा=राजनैतिक सभा ।

अं० पोलेटिकलएजूकेशन=राजनीतिशास्त्र ।

अं० पोलेटिकल आफ़िसर=राजनैतिक कर्म्मचारी ।

अं० पोलेटिकलडिपार्टम्यण्ट=पोलेटिकल=राजनैतिक, डिपार्टम्यण्ट=प्रकरण, विभाग ।

सं० पोषक (पुष्=पोसना पालना) क० पु० पोसनेवाला, पालनेवाला, रक्षक ।

सं० पोषण (पुष्=पोसना) भा० पु० पालन, भरण, रक्षा ।

प्रा० पोषना
पोखना
पोसना (सं० पोषण) क्रि० स० पालना, रक्षा करना, प्रतिपालन करना ।

सं० पोषणीय (पुष्+अनीय) र्म्म० पु० रक्षायोग्य, पालनयोग्य ।

सं० पोषयित्नु क०पु० भर्ता, स्वामी, ख़ाविंद ।

सं० पोष्टा क० पु० पालन करने वाला ।

सं० पोष्यपुत्र (पोष्य=पाला हुआ, पुत्र=लड़का) र्म्म० पु० लेपालक, दत्तकपुत्र, गोद लिया हुआ बेटा, मुतबन्ना ।

प्रा० पोह स्त्री० भोर, तड़का, बिहान, सुबह ।

प्रा० पोहना क्रि० स० रोटी बनाना ।

प्रा० पौ स्त्री० पासे में का एका, २ वह जगह जहाँ बटोहियों को पानी पिलाया जाता है ।

प्रा० पौंड़ा (सं० पुण्ड् वा पौण्ड, पुडि=मलना) पु० एक प्रकार की ऊख ।

प्रा० पौढ़ना क्रि० अ० सोना, लेटना, आराम करना ।

सं० पौत्र (पुत्र) पु० पोता, बेटेका बेटा ।

सं० पौत्री (पुत्र) स्त्री० पोती, बेटे की बेटी ।

प्रा० पौधा पु० नया पेड़, केड़ा ।

प्रा० **पौन** (सं०पवन) स्त्री० हवा, वायु ।

प्रा० **पौन** (सं०पादोन, पाद=चौथा हिस्सा, ऊन=कम) गु० तीन चौथाई, चौथे हिस्से तीन, चार भाग का तीन ।

प्रा० **पौना** पु० झरना, झरनी, एक लोहे की चीज़ जिसमें बहुत से छेद होते हैं और उससे पकौड़ी आदि तली जाती हैं ।

प्रा० **पौर** स्त्री० बड़ा दरवाज़ा, द्वार फाटक ।

सं० **पौराणिक**(पुराण) पु० पुराणवक्ता, पुराण बाँचनेवाला, पुराण पढ़ा हुआ, पण्डित ।

प्रा० **पौरिया** (पौर) पु० डेवढ़ीवान, द्वारपाल ।

प्रा० **पौरी** स्त्री० पौर, डेवढ़ी, द्वार ।

सं० **पौरुष** (पुरुष) पु० पुरुषत्व, पुरुषार्थ, पराक्रम, बल, ज़ोर, २ पुर्सा ।

सं० **पौर्णमासी** (पूर्ण=पूरा, मास=महीना, वा चाँद) स्त्री० पूर्णमासी, पूर्णिमा, पूनौं ।

प्रा० **पौली** स्त्री० पौर, पौरी ।

प्रा० **पौवा** (सं०पाद=चौथाभाग) पु० चौथाभाग, पावभरका बाँट ।

सं० **पौष** पूष शब्दको देखो ।

प्रा० **प्यार** (सं० प्रीति, वा प्रेम) पु० पियार, प्रेम, प्रीति, नेह, छोह, दुलार, मुहब्बत ।

प्रा० **प्यारा** (सं० प्रिय) गु० पु० प्रेमी, स्नेही ।

प्रा० **प्याराजानना** बोल० आदर करना, सन्मानकरना, श्रेष्ठसमझना।

प्रा० **प्यारी** (सं० प्रिया) गु० स्त्री० पियारी, प्रिया, २ मनोहर।

प्रा० **प्यास** (सं०पिपासा) स्त्री० पियास, तृष्णा, तृषा, पीने की चाह।

प्रा० **प्यास बुझाना** बोल० प्यास मिटाना, कुछ पीलेना, पानी पिलाना ।

प्रा० **प्यासलगना** बोल० प्यासा होना ।

प्रा० **प्यासा** (सं० पिपासित) गु० पियासा, तृषावन्त, पानी चाहनेवाला ।

प्रा० **प्यासे मरना** बोल० बहुत प्यासा होना ।

सं० **प्र** उपस० पहले, २ आगे बढ़के, ३ दूर, ४ श्रेष्ठ, प्रधान, बड़ा, ऊपर, मुख्य, ५ बहुत, अधिक, अतिशय, ६ प्रारम्भ, शुरूअ, ७ चारों ओरसे, सब तरह से, ८ उत्पत्ति, पैदा होना।

सं० **प्रकट** (प्र= सब तरह से कट =घेरना) पु० प्रकट, प्रत्यक्ष, चौड़े, ज़ाहिर, स्पष्ट, खुलासा ।

सं० **प्रकटन** भा०पु० प्रकाश करना, ज़ाहिर करना ।

सं० **प्रकटित** र्म्म० पु० प्रकाशित, रौशन ।

सं० प्रकम्प (प्र=बहुत, कम्प=काँपना) पु० काँपना, थरथराहट, कँपकँपी ।

सं० प्रकरण (प्र=बहुत वा शुरूअ, कृ=करना) पु० भूमिका, आशय, बात, वृत्तान्त, प्रस्ताव, प्रसङ्ग, काण्ड, खण्ड, विषय, अध्याय, सरिश्ता, अवसर, मौक़ा, विभाग ।

सं० प्रकर्ष (प्र=बहुत वा ऊपर, कृष=खींचना) भा० पु० उत्तमता, बड़ाई, श्रेष्ठता, उत्कर्ष ।

सं० प्रकाण्ड पु० वृक्ष की जड़ और डाली के बीच की लकड़ी, वृक्ष का धड़ वा स्तम्भ, प्रशस्तवाणी, आशीर्वाद ।

सं० प्रकाम गु० यथेच्छ, यथेष्ट, इच्छापूर्वक ।

सं० प्रकार (प्र, कृ=करना) पु० भेद, भाँति, ढङ्ग, डौल, तरह, रीति, सादृश्य, क़िस्म ।

सं० प्रकाश (प्र=बहुत, काश्=चमकना) पु० उजाला, ज्योति, रोशनी, धूप, तेज़, चमक, २ फैलाव, प्रसिद्ध, गु० प्रकट, प्रसिद्ध, विख्यात, चमकीला, उज्ज्वल, उजागर, प्रकाशित, चमकता, क्रि० वि० खुले खुले, साफ़ साफ़ ।

सं० प्रकाशक (प्रकाश) क० पु० प्रकाश करनेवाला, रोशन करनेवाला, ज़ाहिरकुनिन्दा ।

सं० प्रकाशात्मन् (प्रकाश + आत्मन्) पु० सूर्य, परमेश्वर ।

सं० प्रकाशनीय }
प्रकाश्य } कर्म० पु० प्रकाशनार्ह, प्रकाशयोग्य ।

सं० प्रकाशित (प्रकाश) कर्म० प्रकट, प्रत्यक्ष, ज़ाहिर, उजागर, प्रसिद्ध ।

सं० प्रकीर्ण (कॄ=फैलाना) कर्म० पु० विक्षिप्त, विस्तृत, फैलाहुआ पु० चमर, चौर, अश्व ।

सं० प्रकृत (प्र=शुरूअ, वा पहले, कृ=करना) कर्म० पु० किया हुआ, शुरूअ कियाहुआ, २ ठीक ठीक, यथार्थ, सच ।

सं० प्रकृति (प्र=बहुत, कृ=करना) स्त्री० स्वभाव, गुण, २ माया, परमेश्वर की शक्ति, ३ किसी वस्तु की असली दशा, ४ एक छन्द का नाम जिसके हरएक पद में इक्कीस अक्षर होते हैं, ५ राजा, मन्त्री, मित्र, ख़ज़ाना, देश, गढ़ और नोस इन सबके समूह को भी प्रकृति कहते हैं ।

सं० प्रकीर्तन (प्र=बहुत, कृत=कहना) भा० पु० वर्णन, कथन, भजा ।

सं० प्रकीर्तित कर्म० पु० कथित, वर्णित ।

सं० प्रकीर्य (कॄ=फैलाना) कर्म० बिथरा हुआ, छिटका हुआ ।

सं० प्रकृष्ट (प्र=बहुत अथवा ऊपर, कृष्=खींचना) गु० उत्तम, मुख्य, उत्कृष्ट, श्रेष्ठ ।

सं० प्रकोष्ठ पु० कोठे के नीचे का

कोठा, अटारी, हाथ की कलाई से कोहनीतक, कलाई और कोहनी के मध्य का भाग।

सं० प्रक्रम (प्र=शुरूअ, क्रम=जाना) पु० प्रारम्भ, शुरूअ, पर्यटन, २ जाना, ३ अवकाश, अवसर, ४ गणना।

सं० प्रक्रिया (प्र + कृ=करना) स्त्री० विभाग, प्रकरण, २ रीति, प्रकार, विधि, व्यवहार, ३ बढ़ती, उन्नति, ४ महिमा, प्रभाव, प्रताप, ५ गणना, ६ स्थल, ७ अधिकार।

सं० प्रक्लिन्न (क्लिद्=तर होना) कृ० पु० तृप्त, अघाना, आसूदा।

सं० प्रक्षालन (प्र=बहुत, क्षल्=शुद्ध करना) प्र० पखालना, धोना, शुद्ध करना।

सं० प्रक्षेप (क्षिप्=फेंकना) पु० फेंकना, त्याग करना।

सं० प्रखर (प्र=बहुत, खर=तीखा) गु० बहुत तीखा, तेज, पु० घोड़े हाथी का बख़्तर, पाखर, घोड़े का चारजामा।

सं० प्रखरांशु पु० तीक्ष्ण किरण, तीव्र किरण।

सं० प्रख्यात (प्र=बहुत, ख्या=प्रसिद्ध होना) गु० प्रसिद्ध, विख्यात, नामवर, प्रतिष्ठित, मुअज़्ज़िज़।

प्रा० प्रगट } **परगट** (सं० प्रकट) गु० प्रसिद्ध, ज़ाहिर, प्रत्यक्ष।

प्रा० प्रगटना (सं० प्रकट) क्रि० अ० प्रगट होना, प्रत्यक्ष होना, पैदा होना, उत्पन्न होना, जन्म लेना।

सं० प्रगल्भ (प्र=बहुत, गल्भ्=ढीठ होना) गु० धृष्ट, शोख़, ढीठ, निठुर, साहसी, दृढ़, प्रबल, सामर्थी।

सं० प्रगल्भता (प्रगल्भ) स्त्री० ढीठपन, साहस, पराक्रम, दृढ़ता, ढिठाई।

सं० प्रगाढ़ गु० दृढ़, कठोर, अधिक, बहुत।

सं० प्रग्रह पु० लगाम, हथकड़ी, बेड़ी, तराज़ूकी रस्सी, किरण, चन्दन, वेध, भुजा, बाँधनेकी रस्सी।

सं० प्रग्राह पु० पगहा, बाँधने की रस्सी।

सं० प्रघाण पु० बराण्डा, बराम्दा, मकान के आगे का सायबान।

सं० प्रचण्ड (प्र=बहुत, चण्ड=डरावना) गु० बहुत डरावना, भयानक, २ बहुत तीखा, प्रबल, ३ बहुत क्रोधी, ४ अत्यन्तगर्म अथवा जलता हुआ, ५ अनसहा, नहीं सहने योग्य, असह्य, अत्युग्र, उत्कृष्ट, तेज़।

सं० प्रचलित (प्र=आगे, चल्=चलना) गु० व्यवहारी, चलनी, वर्तमान, जिसका चलन हो, जो चलता हो अथवा व्यवहार में आता हो जैसे प्रचलित सिक्का, प्रचलित भाषा।

सं० प्रचार (प्र=बहुत वा आगे, चर्=जाना) पु० चलन, व्यवहार, रीति, २ प्रकट करना, ३ फैलाव, विस्तार ।

सं० प्रचारक क० पु० प्रकाशक, प्रेरक, विस्तारक, फैलानेवाला ।

प्रा० प्रचारना (सं० प्रचारण, प्र= आगे, चर्=जाना) क्रि० स० ललकारना, पुकारना ।

सं० प्रचुर अव्य० बहुत, अधिक ।

सं० प्रचुरवर्ग पु० साथी, संगती, हमराही ।

सं० प्रच्छद (छद्=आच्छादन) ण०पु० उत्तरीय, दुपट्टा, ढप्पन ।

सं० प्रच्छदपट पु० परदा, क़नात, चिक ।

सं० प्रच्छन्न (छद्=ढापना) कर्म० पु० गुप्त, ढपाहुआ, अदृश्य ।

सं० प्रजा (प्र=बहुत, जन्=पैदा होना) स्त्री० सन्तान, २ प्राणी, सृष्टि, ३ राज के लोग, रइयत, अधिकार, स्थितजन ।

सं० प्रजापति (प्रजा + पति) पु० सृष्टि का स्वामी, सृष्टि का बनाने वाला, ब्रह्मा, दक्ष, कश्यप आदि दश मुनि जिनको ब्रह्मा ने पहले ही पहल पैदा किया और सृष्टि बनाने का काम सौंपा उनके नाम—१ मरीचि, २ अत्रि, ३ अङ्गिरा, ४ पुलस्त्य, ५ पुलह, ६ क्रतु, ७ प्रचेता, ८ वशिष्ठ, ९ भृगु, १० नारद और कितने एक आचार्य कहते हैं कि प्रजापति सात हैं और कितने एक दक्ष, नारद और भृगु इन तीनों हीको प्रजापति कहते हैं और कितने एक ग्रन्थकार इक्कीस प्रजापति बतलाते हैं, २ राजा, ३ बाप, पिता, ४ जँमाई, जामाता, ५ सूर्य, ६ आग, कुम्हार ।

सं० प्रजाधिकारीराज्य पु० जम्हूरी सल्तनत जिस राज्य की प्रजा सब राज काज करे राजा कोई न हो ।

सं० प्रजाशन (प्रजा + अशन, अश्= भक्षण करना) भा० पु० प्रजा को दुःख देना, प्रजा का नाश करना ।

सं० प्रजाशासन (प्रजा + शासन, शास्=सिखाना) भा० पु० प्रजा को सिखाना, दण्ड देना, सज़ा देना ।

प्रा० प्रजारना (सं० प्रज्वलन) क्रि० स० जारना, जलाना ।

सं० प्रजेश } (प्रजा+ईश वा ईश्वर)
प्रजेश्वर } पु० दक्षप्रजापति ।

सं० प्रज्ञ क० पु० पण्डित, बुद्धिमान् ।

सं० प्रज्ञा (प्र=बहुत, ज्ञा=जानना) स्त्री० बुद्धि, मति, समझ, २ सरस्वती ।

सं० प्रज्ञाचक्षु धृतराष्ट्र, चक्षुहीन, बुद्धिचक्षु वाला ।

सं० प्रज्ञापत्र (फ़ा० इस्तफ़ता) उसे कहते हैं जिसमें गुरु अथवा आचार्य से पूछकर सांसारिक कार्य किये जावें।

सं० प्रज्वलित (प्र=बहुत, ज्वल्=जलना वा चमकना) क० पु० ज्योतिमान्, प्रकाशित, उज्ज्वल, चमकीला।

सं० प्रडीन (प्र, डी=उड़ना) भा० पु० उड़ना, पक्षी की गति।

प्रा० प्रण (सं० पण) पु० प्रतिज्ञा, बन, होड़, नियम, पण, क़ौल।

सं० प्रणत (प्र=बहुत, नम्=झुकना) क० पु० अधीन, झुका हुआ, नम्र, भक्त, दीन, शरणागत।

सं० प्रणतपाल भा० पु० दीनपालक।

सं० प्रणति (प्र=बहुत, नम्=झुकना) स्त्री० नमस्कार, प्रणाम, दण्डवत्।

सं० प्रणय (प्र, नी=लेजाना) पु० प्यार, प्रेम, २ प्यार से माँगना, ३ भरोसा, ४ मुक्ति, ५ नम्रता, सुशीलता, ६ बिनती, स्तुति।

सं० प्रणव (प्र=बहुत, नु=स्तुति करना) पु० ओम्, ओङ्कार तीनों देवताओं का मन्त्र।

सं० प्रणष्ट (नश्=नाश करना) कर्म० पु० नाश होगया, विशेष नाश।

सं० प्रणाम (प्र=बहुत, नम्=झुकना) पु० नमस्कार, दण्डवत्, प्रणत।

सं० प्रणमित क० पु० प्रणाम करने वाला, प्रणामकर्ता या प्रणाम करायाहुआ।

सं० प्रणम्य कर्म० प्रणाम योग्य, नमस्करणीय या प्रणामकर।

सं० प्रणाली (प्र=बहुत अथवा चारों ओर से, नल्=बाँधना वा नद्=गिरना) स्त्री० नाली, पनाला, २ परम्परा की रीति, क़दामत।

सं० प्रणिधान (धा=धारण, पोषण करना) भा० पु० मन में ध्यान करना, बग़ौर सोचना, समाधिभेद।

सं० प्रणिधि (प्रणि+धा=धारण करना) क० पु० चर, दूत, जासूस।

सं० प्रणिपात (प्र=बहुत, नि=नीचे और पत्=गिरना) पु० प्रणाम, दण्डवत्, सलामी।

सं० प्रताप (प्र=बहुत, तप्=तपना) पु० तेज, ऐश्वर्य, महिमा, शोभा, अक़बाल।

सं० प्रतापवान् } (प्रताप) गु० तेजस्वी, ऐश्वर्यवान्।
प्रतापी }

सं० प्रतारण (तॄ=पार जाना, तैरना) भा० पु० प्रवञ्चना, छलना।

सं० प्रति उपस० को, केतईं, की ओर, २ पास, ३ साम्हने, ४ विरुद्ध, उलटा, विपरीत, ५ इसकी

अपेक्षा, इसके देखते, बनिस्बत, ६ ऊपर, पर, ७ लगभग, ८ लिये, वास्ते, ९ विषय में, १० अनुसार से, ११ हर एक की एक एक, सब, १२ पीछे, फिर, पीछा, १३ एवज़, बदले में, पलटे में, जगह में, स्थान में, १४ आपस में, १५ बराबर, समान, सदृश, १६ नक़ल, १७ पुस्तक, जिल्द ।

प्रा० **प्रतिउपकार** (सं० प्रत्युपकार, प्रति=पीछा, उपकार=भला) पु० पीछा उपकार, उपकारका बदला ।

सं० **प्रतिकार** **प्रतीकार** } (प्रति=बदले में, कृ=करना) पु० वैर का बदला, पलटा, २ दुःख दूर करने का उपाय, इलाज, निवारण, वर्जन, बदला, एवज़ ।

सं० **प्रतिकारक** क० पु० निवारक, नासिख़ ।

सं० **प्रतिकार्य** कर्म० निवार्य, रोकने योग्य ।

सं० **प्रतिकूल** (प्रति=उलटा वा विरुद्ध, कूल=पक्ष, कूल्=ढकना) गु० उलटा, विरुद्ध, विमुख, बर्ख़िलाफ़ ।

सं० **प्रतिक्षण** (प्रति=हरएक, क्षण=पल) क्रि० वि० पलपल में, हर एक पल, हरदम, हरवक़् ।

सं० **प्रतिग्रह** (प्रति=बुरा, ग्रह=लेना) दान लेना, ख़ैरात लेना ।

सं० **प्रतिघात** (प्रति=पीछा, घात=मारना) पु० पीछा मारना, मारके बदले मार ।

सं० **प्रतिच्छा** स्त्री० इन्तिज़ारी ।

सं० **प्रतिच्छाया** (प्रति=बराबर, छाया) स्त्री० प्रतिबिम्ब, पर्छाईं ।

सं० **प्रतिज्ञा** (प्रति=आपस में, ज्ञा=जानना) स्त्री० वचन, पण, नेम, क़ौलक़रार ।

सं० **प्रतिज्ञापत्र** पु० प्रणपत्र, अहदनामा ।

सं० **प्रतिदान** भा० पु० दानोपरि दान, दान के पीछे दान ।

सं० **प्रतिदिन** (प्रति=हरएक, दिन) क्रि० वि० हरएक दिन, दिन दिन ।

सं० **प्रतिध्वनि** (प्रति=पीछा अथवा बराबर, ध्वनि=शब्द) स्त्री० प्रतिशब्द, गूँज, शब्द प्रति शब्द ।

सं० **प्रतिनिधि** (प्रति=एवज़ वा बराबर, नि=में, धा=रखना) पु० एवज़, एक की जगह दूसरा, २ सदृशता, प्रतिमा, मूर्ति, मुख़तार ।

सं० **प्रतिपक्ष** (प्रति=उलटा, पक्ष=तरफ़) पु० वैरी, शत्रु, रिपु, दुश्मन ।

सं० **प्रतिपत्ति** (पत्=गिरना) स्त्री० प्रवृत्ति, बोध, निष्पत्ति, प्राप्ति, आगल्भ गौरव, पदप्राप्ति, दान, प्रक्षेप, दीनता ।

सं० **प्रतिपद्** (प्रति, पद्=जाना,

और प्रति उपसर्ग के साथ आने से अर्थ हुआ शुरूअ होना) स्त्री० परिवा, पहली तिथि ।

सं० प्रतिपन्न (पद्=जाना) कर्म० विज्ञात, अङ्गीकृत, प्राप्त, शरणागत ।

सं० प्रतिपादन भा० पु० त्याग, कथन, दान, प्रतिपत्ति, निरूपण, समर्पण, बोध करना, जताना ।

सं० प्रतिपादक क० पु० कहनेवाला, निरूपक, मुआरिज़ ।

सं० प्रतिपाद्य कर्म० पु० बोधनीय, विश्वास योग्य, कथनयोग्य ।

सं० प्रतिपाल (प्रति, पाल्=पालना) पु० पोषण, भरण, पालन, प्रतिपालन ।

सं० प्रतिपालक (प्रति, पाल्=पालना) क० पु० पालनेवाला, पु० राजा, रक्षक ।

सं० प्रतिपालन (प्रति, पाल्=पालना) पु० पोषण, भरण, पालन, रक्षा, बचाव, परवरिश ।

प्रा० प्रतिपालना (सं० प्रतिपालन) क्रि० स० पालना, पोषना ।

सं० प्रतिपालित कर्म० पु० रक्षित, महफ़ूज़ ।

सं० प्रतिफल पु० बदला, मावज़ा, एवज़ ।

सं० प्रतिबन्धक (प्रति, बन्ध्=बाँधना) क० पु० बाधक, रोकनेवाला, पु० रुकाव, रोक, बाधा ।

सं० प्रतिबन्धन भा० पु० रोज़ीना, निबन्धन ।

सं० प्रतिभा (प्रति, भा=चमकना) स्त्री० समझ, बुद्धि, बुद्धि की तेज़ी, २ जोत, चमक ।

सं० प्रतिभू (प्रति=प्रतिनिधि वा एवज़, भू=होना) पु० ज़ामिन ।

सं० प्रतिभूति स्त्री० ज़मानत, ज़ामिनी ।

सं० प्रतिमा (प्रति=बराबर, मा=नापना, अर्थात् किसी के बराबर बनाना) स्त्री० मूर्ति, पुतली ।

सं० प्रतिमाला स्त्री० जयमाला, मण्डल, परिधि, बैतबाजी ।

सं० प्रतिमास (प्रति=हरएक, मास=महीना) क्रि० वि० महीने का महीने, हर महीने, महीने महीने ।

सं० प्रतियोगिन् (युज्=मिलना, जोड़ना) गु० विरुद्धपक्ष, विरोधी, उद्योगी, प्रतिकूल ।

सं० प्रतिरम्भ (रभ्=उत्सुक होना) पु० भेंट, मिलाप, आलिङ्गन, २ क्रोध, कोप ।

सं० प्रतिरूप (प्रति=बराबर, रूप=आकार) पु० प्रतिबिम्ब, मूर्ति, गु० समान, सदृश ।

सं० प्रतिरोध (प्रति + रुध्=रोंकना) पु० निरोध, रोक, प्रतिबन्ध, निरादर, अविष्टम्भ ।

सं० प्रतिलेखक क० पु० मकतूबअलेह या जिसको पत्र लिखाजाय ।

सं० प्रतिलोम गु० विलोम,

उलटा, वाम, बायें, विपरीत, अधम, नीच, कुत्सित पु० रोम रोम, हर एक रोम ।

सं० **प्रतिलोमन** गु० वर्णसंकर, शूद्रपुरुष और उत्तम वर्ण की स्त्री से उत्पन्न ।

सं० **प्रतिवादी** क० पु० विरोधी, मुद्दआश्रलेह ।

सं० **प्रतिविधान** भा० पु० कथनोपकथन, कहेको कहना, दोबारा कहना ।

सं० **प्रतिवासी** (वस्=रहना) क० पु० परोसी, हमसाया ।

सं० **प्रतिबिम्ब** (प्रति=पीछा, वा समान, बिम्ब=छाया) पु० पर्छाईं, छाया, प्रतिरूप, अक्स ।

सं० **प्रतिश्रव** (श्रु=सुनना) भा० पु० अङ्गीकार, मंज़ूर ।

सं० **प्रतिश्रुत** र्म्म० पु० अङ्गीकृत, स्वीकृत ।

सं० **प्रतिषेध** (सिध्=सिद्ध करना) भा० पु० निषेध, निरोध, मुमानिअत, मनअ करना ।

सं० **प्रतिष्ठा** (प्रति, ष्ठा=ठहरना) स्त्री० बड़ाई, गौरव, मान, यश, आदर, इज़्ज़त, सन्मान, नाम, २ देवता के नये मन्दिर को अथवा देवता की नई मूर्ति को संस्कारों से पवित्र करना, स्थापना ।

सं० **प्रतिष्ठासूचक** (प्रतिष्ठा + सूच=जताना) क० पु० इज़्ज़त का ज़ाहिर करनेवाला ।

सं० **प्रतिष्ठित** (प्रतिष्ठा) र्म्म० पु० नामी, नामवर, प्रतिष्ठावाला, यशस्वी, गौरवयुत, सन्मानित, आदरित, मुअज़्ज़म, मुकर्रम, गिरामी २ स्थापित, संस्कार किया हुआ ।

सं० **प्रतिहत** (प्रति, हन्=मारना) र्म्म० पु० नष्ट, हर्षहीन, उद्विग्न, तिरस्कृत, अपमानित ।

सं० **प्रतिहार** पु० द्वारपाल, डिवढ़ीदार, सिपाह, द्वार, दरवाज़ा, त्याग, ग्रहण, उपाय ।

सं० **प्रतिहारक** (प्रति, हृ=हरना) पु० इन्द्रजाली, मायावी, बाजीगर, उद्योगी, उद्धारक ।

सं० **प्रतीकार** (प्रति, कृ=करना) पु० उपाय, यत्न, तदबीर, चारा ।

सं० **प्रतिसर्ग** (प्रति, सृज्=पैदा करना) पु० प्रलय, नाश, क़यामत ।

सं० **प्रतीक्षा** (प्रति=हर एक बार, ईक्ष्=देखना) स्त्री० बाट देखना, प्रत्याशा, इन्तिज़ारी, अपेक्षा ।

सं० **प्रतीक्षक** क० पु० राहदेखनेवाला, प्रत्याशी, मुन्तज़िर ।

सं० **प्रतीत** (प्रति, इण्=जाना) र्म्म० पु० प्रसिद्ध, विख्यात, नामी, जाना हुआ, सिनासा, हर्षित ।

प्रा० **प्रतीत** (सं० प्रतीति पु० इण्=जाना) स्त्री० भरोसा, विश्वास ।

प्रा० **प्रतीतकरना** बोल० परीक्षा करना, २ भरोसा करना ।

सं० **प्रतीति** (प्रति + इति) भा० स्त्री० विश्वास, निश्चय, एतमाद, आदर, हर्ष ।

सं० **प्रतीप** (प्रति + अप्=जाना) गु० प्रतिकूल, नाफ़र्मांबरदार, विपरीत, पु० शस्त्र, राजा शंतनु का पिता ।

सं० **प्रत्यक्ष** (प्रति=साम्हने, अक्ष =आँख) गु० सन्मुख, साम्हने, आगे, प्रकट, प्रसिद्ध ।

सं० **प्रत्यय** (प्रति=फिर, इण्=जाना) पु० भरोसा, विश्वास, प्रतीत, श्रद्धा, एतबार, २ ज्ञान, ३ व्याकरण में ऐसा शब्द जो धातु और शब्द के अन्त में जोड़ाजाता है, हरूफ़मानवी ।

सं० **प्रत्याख्यान** (प्रति + आख्यान, ख्या=कहना) पु० त्याग, तिरस्कार, खण्डन, तरदीद करना, मनअ करना, रोक देना ।

सं० **प्रत्याशा** (प्रति=फिर, आशा= आस) स्त्री० आशा, भरोसा, उम्मेद, २ बाट देखना, इन्तिज़ारी, प्रतीक्षा, ३ चाह, इच्छा ।

सं० **प्रत्याशी** क० पु० मुन्तज़िर, राह देखनेवाला ।

सं० **प्रत्याहार** (प्रति=फिर, आ= चारों ओर से, हृ=लेना) पु० व्याकरण में वर्णमाला के दो अथवा अधिक अक्षरों का समूह-, जैसे "अइउण्, ऋलृक्" आदि, २ समाधि, योग ।

सं० **प्रत्युत्तर** (प्रति=पीछा, उत्तर =जवाब) पु० उत्तर का उत्तर, पीछे जवाब ।

सं० **प्रत्यूह** (प्रति + ऊह=तर्क करना) पु० विघ्न, उपद्रव, हर्ज ।

सं० **प्रतीकार** (प्रति + कृ=करना) पु० उपाय, यत्न, उद्धार, निर्वाह, तदबीर, चारा ।

सं० **प्रत्येक** (प्रति + एक) गु० एक एक, हरएक, अलग अलग ।

सं० **प्रथम** (प्रथ्=नामवर होना) गु० पहला, प्रधान, उत्तम, मुख्य, आदि, क्रि० वि० पहले, पहलेही ।

सं० **प्रथा** स्त्री० ख्याति, यश, विस्तार, प्रक्षेप, कीर्ति, नामवरी, पाण्डुकी स्त्री कुन्ती ।

सं० **प्रथित** (प्रथ्=प्रसिद्ध होना) कर्म० पु० ख्यात, प्रसिद्ध ।

सं० **प्रद** (प्र=बहुत, द=देनेवाला, दा=देना) गु० देनेवाला ।

सं० **प्रदक्षिण** (प्र=प्रारम्भ, दक्षिण =दाहिनी ओरसे) स्त्री० दाहिनी ओर से देवता के चारों ओर फिरना, परिक्रमा, तवाफ़ ।

सं० **प्रदर्शक** (प्र=आगे, दर्शक= दिखानेवाला) पु० दिखानेवाला,

शिक्षक, बतानेवाला ।

सं० **प्रदर्शनी** भा० स्त्री० नुमायश, शोभा, सजाव ।

सं० **प्रदर्शनस्थान** धि० पु० नुमायशगाह ।

सं० **प्रदान** भा० पु० दान, ख़ैरात ।

सं० **प्रदीप** (प्र=बहुत, दीप्=चमकना) पु०दीपक, दिया, चिराग़, सूर्य, प्रकाश ।

सं० **प्रदेश** (प्र=मुख्य, देश=देस) पु० मुख्यदेश, मुल्क, ज़िला, परगना, २ परदेश, दूसरा मुल्क ।

सं० **प्रदोष** (प्र=प्रारम्भ, दोष=रात, दुष्=बदलना वा बिगड़ना) पु० सन्ध्या, सायंकाल, सूर्य डूबने के पीछे दो घड़ीतक का समय, रजनीमुख, सफ़क़ ।

सं० **प्रदोषकाल** पु० सायंकाल, शाम का वक़्त ।

सं० **प्रद्युम्न** (प्र=बहुत, द्युम्न=बल, दिव्=चमकना) पु० कामदेव का अवतार, श्रीकृष्ण का बेटा ।

सं० **प्रधान** (प्र=बहुत, धा=रखना) पु० प्रकृति, माया, २ ईश्वर, ३ मुखिया, राजा का मुख्य मन्त्री सेनापति आदि, अधिपति, गु० मुख्य, श्रेष्ठ, बड़ा ।

सं० **प्रधी** गु० श्रेष्ठ, प्रधान कर्मचारी, बड़ा बुद्धिमान् मीरमुन्शी, बुद्धियुक्त ।

सं० **प्रध्वंस** (प्र=बहुत, ध्वंस्=नाश करना) पु० नाश, विध्वंस, हानि, विनाश, क्षय ।

सं० **प्रपञ्च** (प्र=बहुत, पचि=फैलाना) पु० विस्तार, फैलाव, २ विरोध, विपरीतता, ३ छल, धोखा, कपट, ठगाई, चूक, भूल, ४ संसार, जगत्, माया, दिखाव ।

सं० **प्रपा** (प्र=बहुत, पा=पान करना) स्त्री० पनघट, पानी का घर ।

सं० **प्रपात** (प्र=बहुत, पत्=गिरना) पु० निर्झर, कूल, किनारा, तटहीन, पर्वतस्थान, निरवलम्ब, बेसहारा, भृगु, पतन, गिरना ।

सं० **प्रपितामह** (प्र=पैदा हुआ है, पितामह=दादा (जिससे) वा प्र=बड़ा, पितामह=दादा) पु० परदादा, २ पुरुखा, ३ ब्रह्मा ।

सं० **प्रपूर्ति** (पूर्=पूरा करना) स्त्री० संपूर्णता, तमाम, इख़्तिताम ।

सं० **प्रपौत्र** (प्र=आगे वा उत्पन्न हुआ, पौत्र=पोता से) पु० पोते का बेटा, परपोता ।

सं० **प्रफुल्ल** }
प्रफुल्लित } (प्र=बहुत, फुल्ल्=विकसना वा फूलना) गु० फूला हुआ, खिला हुआ, विकसा हुआ, २ प्रसन्न, आनन्दित, हर्षित, ३ चमकता हुआ, दीप्तिमान् ।

सं० **प्रफुल्लवदन** (प्रफुल्ल=प्रसन्न,

वदन=मुँह) गु० जिसके मुँह से ख़ुशी प्रकट होती हो, जो प्रसन्न देखा जाय ।

सं० **प्रवञ्चक** (वञ्च्=छलना) क० पु० प्रतारक, छली, दग़ाबाज़ ।

सं० **प्रवञ्चना** भा० पु० प्रतारणा, छलना ।

सं० **प्रबन्ध** (प्र=बहुत अथवा चारों ओरसे, बन्ध=बाँधना) भा० पु० बन्दोबस्त, २ काव्य की रचना, जमक, उपाय, इन्तिज़ाम, क़ायदा ।

सं० **प्रबन्धक** क० पु० प्रबन्धकर्ता, मुन्तज़िम ।

सं० **प्रबल** (प्र=बहुत, बल=ज़ोर) गु० बलवान, ज़ोरावर, सामर्थी, बली, धृष्ट, तीव्र, साहसी ।

सं० **प्रवाल** (प्र=बहुत, वल्=काँपना) पु० नवीन पल्लव, नयापत्ता, २ मूँगा, रक्तवर्ण, वीणादण्ड ।

सं० **प्रबुद्ध** (प्र=बहुत, बुध्=जानना) गु० जागता हुआ, सुचेत ।

सं० **प्रबोध** (प्र=बहुत, बुध्=जानना) पु० ज्ञान, उपदेश, समझ, चेतना, २ सावधानी, नींद से अथवा अज्ञानता से जागना वा चैतन्य होना ।

सं० **प्रबोधन** (प्र=बहुत, बुध्=जानना) भा० पु० जगाना, चिताना, सावधान करना, सिखाना, जतलाना, बताना ।

सं० **प्रभञ्जन** (प्र=बहुत, भञ्ज=तोड़ना) भा० पु० हवा, पवन, वायु, विदारण, तोड़ना, टूटना, गु० विदारक, तोड़नेवाला ।

सं० प्रा० **प्रभञ्जनजाया** (सं० प्रभञ्जन=पवन, प्रा० जाया=पैदा हुआ) पु० हनुमान् ।

सं० **प्रभञ्जनसुत** (प्रभञ्जन+सुत) पु० हनुमान, उ

सं० **प्रभव** (प्र+भू=पैदा होना, जिससे) पु० उत्पत्ति, जन्मकारण, जिससे पैदा होते हैं, जैसे मां बाप, उत्पत्ति स्थान, २ ज़ोर, पराक्रम, ३ जन्म ।

सं० **प्रभा** (प्र=बहुत, भा=चमकना) स्त्री० चमक, झलक, ज्योति, जोत, प्रकाश, दीप्ति ।

सं० **प्रभाकर** (प्रभा=प्रकाश, कर=करनेवाला, कृ=करना) क० पु० सूर्य, २ चाँद, ३ आग ।

सं० **प्रभात** (प्र=बहुत, भा=चमकना) पु० भोर, बिहान, प्रातःकाल, फ़जर, सुबह ।

सं० **प्रभाव** (प्र=बहुत, भू=होना) पु० तेज, प्रताप, बल, शक्ति ।

सं० **प्रभास** (प्र=बहुत, भास्=चमकना) पु० एक तीर्थ की जगह ।

सं० **प्रभु** (प्र=पहले वा बहुत, भू=होना) पु० नाथ, स्वामी, धनी, मालिक, पति, पालक, ईश्वर, २ विष्णु, गु० बड़ा, समर्थ, बलवान् ।

सं० **प्रभुत्व** भा० पु० } (प्रभु) बड़प्पन,
प्रभुता भा० स्त्री० } ईश्वरता, स्वामीपन, बड़ाई, महत्त्व, महिमा, ऐश्वर्य, हकूमत ।

सं० **प्रभृति** (प्र=बहुत, भृ=भरना) स्त्री० प्रकार, भाँति, २ आदि, इत्यादि, और सब ।

सं० **प्रमथ** (प्र=बहुत, मथ्=मथना) पु० महादेव के एक गण का नाम, २ घोड़ा ।

सं० **प्रमथाधिप** (प्रमथ + अधिप) पु० शिव, महादेव ।

सं० **प्रमदा** (प्र=बहुत, मद्=प्रसन्न होना, जिसको देख कर) स्त्री० स्त्री, नारी, सुलक्षणा स्त्री, रूपवती नारी, सुन्दर स्त्री, उत्तम स्त्री ।

सं० **प्रमा** (प्र=बहुत, मा=नापना) स्त्री० यथार्थज्ञान, सच्चाज्ञान, ऐसा ज्ञान जिसमें किसी तरहका भ्रम न हो, प्रमाण, उपमा ।

सं० **प्रमाण** (प्र=बहुत, मा=नापना) पु० नाप, माप, तौल, अन्दाज़ा, परिणाम, २ साख, साक्षी, गवाही, सिद्धान्त, सबूत, निश्चय, सच्चा ठहराना, निर्णय, निष्पत्ति, ३ कारण, ४ हद, सीमा, ५ उदाहरण, दृष्टान्त, ६ ऐसा शास्त्र जिसका पवित्र प्रमाण मिले, गु० सच्चा, सही, ठीक ठीक, यथार्थ, मानने योग्य ।

प्रा० **प्रमाणिक** (सं० प्रामाणिक) गु० भरोसावाला, विश्वासपात्र, योग्य, प्रतिष्ठित, पु० सभापति ।

सं० **प्रमातामह** (प्र=उत्पन्न हुआ है, मातामह=नाना जिससे) पु० परनाना ।

सं० **प्रमाथ** (मन्थ्=मथना) पु० नाश, मरण, विलोडन, मथना, विघ्न, हानि ।

सं० **प्रमाद** (प्र=बहुत, मद्=मस्त होना) पु० नशा, २ मतवालापन, मस्ती, उन्मत्तता, पागलपन, ३ असावधानी, भूल, चूक, असावधानता ।

सं० **प्रमादी** (प्रमाद) क० पु० उन्मत्त, बावला, बौड़हा, २ नशे में मस्त, ३ असावधान, अचेत, बेहोश, हठी, ज़िद्दी ।

सं० **प्रमित** (प्र, मा=नापना) कर्म० पु० नापा हुआ, मापा हुआ, जाँचा हुआ, २ जाना हुआ ।

सं० **प्रमिति** स्त्री० यथार्थज्ञान, ठीक समझ ।

सं० **प्रमीला** (प्र, मील्=नेत्रमीचना) भा० स्त्री० तन्द्रा, उनींदा, उत्साह शून्य, काहिल ।

सं० **प्रमुख** गु० मान्य, प्रधान, मुख्य, श्रेष्ठ, मुखिया, सन्मुख, पु० मुनि, आरम्भ ।

सं० **प्रमुदित** (प्र=बहुत, मुद्=

प्रसन्न होना) क० पु० प्रसन्न, हर्षित, आनन्दित, प्रफुल्ल, खुश ।

सं० **प्रमेह** (प्र, मिह्=सींचना) पु० धातु बिगाड़ रोग, वीर्य में का रोग यह रोग इक्कीस प्रकार का है, जिरियान ।

सं० **प्रमोद** (प्र=बहुत, मुद्=प्रसन्न होना) पु० हर्ष, आनन्द, सुख, खुशी, हुलास ।

सं० **प्रयत** (प्र=बहुत, यम्=शान्ति) गु० पवित्र, नियमयुक्त आचारी, पवित्र, शुद्ध, नियत, तैयार ।

सं० **प्रयत्न** (प्र=बहुत, यत्=जतन करना) पु० बहुत परिश्रम, लगातार मिहनत, बहुत सावधानी ।

सं० **प्रयाग** (प्र=बहुत, यज्=यज्ञ करना) पु० हिन्दुओं का एक बड़ा तीर्थ जिसको इन दिनों में "इलाहाबाद" भी कहते हैं जहाँ गङ्गा और यमुना इन दोनों नदियों का प्रकट सङ्गम हुआ है और कहते हैं कि तीसरी नदी सरस्वती का सङ्गम धरती के नीचे गुप्त हुआ है उस जगह को त्रिवेणी कहते हैं और यहाँ ब्रह्मा ने शङ्खासुर राक्षस से वेदों को लाकर दश अश्वमेधयज्ञ किये, २ यज्ञ ।

सं० **प्रयाण** (प्र=पहले वा दूर वा बहुत, या=जाना) पु० धावा, कूच, गवन, गमन, यात्रा, जाना, प्रस्थान ।

सं० **प्रयास** (प्र=बहुत, यस्=जतन करना वा परिश्रम करना) पु० परिश्रम, मेहनत, थकावट, यतन ।

सं० **प्रयोग** (प्र=बहुत, युज्=मिलना) पु० अनुष्ठान, वशीकरण, वशकरना, २ दृष्टान्त, उदाहरण, ३ कारण, प्रयोजन, फल, ४ काम, कार्य, व्यापार, ५ नियुक्त करना, नियत करना, ठहराना, लगाना, इस्तअमाल करना, निदर्शना, उदारण, सूक्ष्म, थोड़ा, अमलदरामद, बर्ताव करना ।

सं० **प्रयोजक** क० पु० प्रेरक, प्रेषक, नियोग करनेवाला, लगानेवाला, उपाय करनेवाला ।

सं० **प्रयोजन** (प्र=बहुत, युज्=मिलना) पु० कारण, अभिप्राय, मतलब, आशय, मनोरथ ।

सं० **प्ररोह** (प्र, रुह=बीजजमना, निकलना) भा० पु० ऊपरजाना, निकलना, चढ़ना, अंकुर ।

सं० **प्रलम्ब** (प्र=आगे, लबि=रोकना, ठहराना वा लटकाना) गु० लम्बा, विशाल, नीचे लटका हुआ, बड़ा, पु० एक राक्षस का नाम जिसको बलदेवजी ने मारा ।

सं० **प्रलय** (प्र=बहुत वा चारों ओर से, ली=गलना वा मिलना) पु० कल्प का अन्त, जब सारा संसार नष्ट होजाता है, युगान्त ।

सं० प्रलाप (प्र=बहुत, लप्=बोलना) पु०वृथा बकवाद, निरर्थक बात, अनर्थक वाक्य ।

सं० प्रलापी (प्रलाप) क० पु० बहुत बकनेवाला, वृथाबकनेवाला।

सं० प्रलोभन (प्र=बहुत वा चारों ओर से, लुभ्=लुभाना) भा० पु० मोहन, लुभाव, लोभ, लालच, फुसलाहट, लुभाना ।

सं० प्रवण (प्रु=चलना) पु० गमन,पशु, नीची जगह, उदर, नम्र, आयत, गुण, क्षण, प्लुत, स्निग्ध, चिक्कना, आसक्त, क्षीण ।

सं० प्रवर (प्र=बहुत, वर=अच्छा, वृ=पसंद करना) पु० संतान, २ गोत्र, गोत, ३ एक मुनि का नाम जिसने हर एक कुल का गोत्र ठहराया, ४ उनचास गोत्र में का एक गोत्र, गु० श्रेष्ठ, उत्तम ।

सं० प्रवर्त्तक (प्र, वृत्=होना, पर, प्र उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ, शुरूअ करना, आगे बढ़ना, लगना, इत्यादि होते हैं)क० पु० आरम्भ करनेवाला, उठानेवाला, करनेवाला, उभाड़नेवाला, प्रेरक, लगाहुआ, आदिकर्त्ता,मूलकारक।

सं० प्रवर्त्तन (प्र + वृत्=काम में लाना) भा० पु० प्रवृत्ति, आज्ञापन, प्रेरण, प्रेषण, पठावना ।

सं० प्रवर्तित कर्म० पु० आज्ञापित, प्रेरित, प्रेषित ।

सं० प्रवर्षण (प्र=बहुत, वृष्=बरसना) पु० एक पहाड़ का नाम जो किष्किन्धापुरी के पास था उस पर श्रीरामचन्द्र और लक्ष्मण बरसात की ऋतु में रहे थे ।

सं० प्रवास (प्र=दूर, वस्=रहना) पु० विदेश, परदेश में रहना ।

सं० प्रवासन भा० पु० प्रक्षेप मारण, देहत्याग, निकारना, भगाना, परदेश भेजना ।

सं०प्रवासी क०पु०परदेशी,विदेशी ।

सं० प्रवाह (प्र=बहुत वा लगातार, वह्=बहना) पु० धारा, बहाव, सोता, स्रोत ।

सं० प्रवाहक क० पु० गाड़ीवान, संग्रहणी, दस्त ।

सं०प्रविष्ट(प्र + विश्=घुसना,जाना) क० पु० घुसनेवाला, पैठनेवाला ।

सं० प्रवीण (प्र, वीणा, वीन, अर्थात् जो वीणा बजाके गावे, पर यह पद रूढ है इसलिये इसका अक्षरार्थ ठीक नहीं लगता) गु० चतुर, निपुण, बुद्धिमान्, स्याना, होशियार ।

सं० प्रवीणता (प्रवीण) स्त्री० चतुराई, निपुणता, स्यानपन, लियाक़त।

सं० प्रबुद्ध (प्र=बहुत, बुध्=ज्ञान) क० पु० जागृत, जगैया, जगाहुआ ।

सं० प्रवृत्ति (प्र, वृत्=होना) स्त्री० किसी काममें लगना, २ अभ्यास,

३ समाचार, वार्ता, ख़बर, ४ प्रवाह, ५ इच्छा।

सं० प्रवेश (प्र, विश्=घुसना) पु० घुसना, पैठना, पहुँचना।

सं० प्रवेशक क० पु० प्रवेशकारी, घुसनेवाला।

सं० प्रबोधन (प्र+बुध=समझाना) भा०पु० समझाना, उपदेश करना।

सं० प्रबोधक क० पु० समझाने वाला, प्रव्रजित (व्रज्=चलना) क० पु० भिक्षुक, फ़क़ीर।

सं० प्रव्रज्या स्त्री० यत्याश्रम ख़ानक़ाह।

सं० प्रशंसनीय (प्रशंसा) र्म०पु० प्रशंसा के योग्य, सराहने योग्य, स्तुति करने योग्य।

सं० प्रशंसा (प्र=बहुत, शंसा=सराहना) स्त्री० सराह, बड़ाई, स्तुति, तारीफ़, श्लाघा।

सं० प्रशंसित ⎫ र्म० पु० स्तुत्य,
प्रशंस्य ⎭ तारीफ़ के लायक़।

सं० प्रशमन (प्र=बहुत, शम्=ठण्ढा करना) पु० ठण्ढा करना, शान्त करना, दूर करना, २ मारना।

सं० प्रशस्त (प्र=बहुत, शस्=सराहना) क०पु० सराहने योग्य, श्रेष्ठ, यथोचित, यथायोग्य, सत्य, योग्य, उत्तम, बहुत अच्छा, सुफल, अमोघ, समन्वित।

सं० प्रशस्ति (प्र=बहुत, शंस्=सराहना) स्त्री० सराह, बड़ाई, प्रशंसा, तारीफ़, अलक़ाब।

सं० प्रश्न (प्रच्छ्=पूछना) पु० पूछना, सवाल, जिज्ञासा, जाननेकी इच्छा।

सं० प्रश्रय (प्र+श्रि=सेवा करना) पु० प्रणय, नम्रता, प्रेम, सेवा, आराधन।

सं० प्रशान्त भा०पु० रफ़ादफ़ा होगया।

सं० प्रश्रित क० पु० विनीत, आश्रित, निर्मद।

सं० प्रष्टव्य (प्रच्छ्=पूछना) र्म० पु० पूछने योग्य।

सं० प्रष्टा क०पु० जिज्ञासु, प्रच्छक, पूछनेवाला।

सं० प्रसङ्ग (प्र=पहले, सञ्ज्=मिलना) पु० प्रस्ताव, सङ्गम, मेल, चर्चा, बात, कथा, सम्बन्ध।

सं० प्रसन्न (प्र=अच्छी तरह से, सद्=बैठना) क०पु० हर्षित, आनन्दित, ख़ुश, २ कृपालु, दयावान्, अनुकूल, ३ निर्मल।

सं० प्रसन्नता (प्रसन्न) भा०स्त्री० हर्ष, आनन्द, ख़ुशी, २ कृपा, दया।

सं० प्रसन्नमुख ⎫ (प्रसन्न=हर्षित,
प्रसन्नवदन ⎭ मुख वा वदन=मुँह) गु० जिसके मुँह पर ख़ुशी बरसती हो, प्रसन्न, आनन्दित।

सं० प्रसर (प्र, सृ=जाना) पु० प्रभव, वेग, समूह, युद्ध, प्रेम, फैला।

सं० प्रसव (प्र, सू=पैदा होना) र्म० पु० जन्मना, उत्पत्ति, जन्म।

सं० प्रसाद (प्र, सद्=जाना वा बैठना) भा० पु० देवता का भोग, देवता का चढ़ाया देवता का नैवेद्य, गुरु की जूठन, २ कृपा, अनुग्रह, प्रसन्नता, ३ निर्मलता, सफ़ाई, फ़ैज़, बरक़त, तबर्रुक, तुफ़ैल।

सं० प्रसादित र्म्म० पु० फ़ैज़याब, अनुगृहीत, मेहरबानी किया गया।

सं० प्रसाधक क०पु० बनानेवाला।

सं० प्रसाधन (प्र + साध्=सिद्ध करना) पु० बनाना, सँवारना।

सं० प्रसाधिका स्त्री० शृङ्गार कराने वाली, वस्त्राभूषणादि पहराने वाली, मश्शाता।

सं० प्रसारण (प्र + सृ=जाना) प्र उपसर्ग से अर्थ बदल गया भा० पु० फैलाना, जारी करना, पसारना।

सं० प्रसिद्ध (प्र=पहले वा बहुत वा दूर, सिद्ध=जाना) गु० विख्यात, नामी, यशी, २ प्रकट, प्रकाशित, ज़ाहिर, ३ शोभित, भूषित, सँवारा हुआ, सिंगार किया हुआ।

सं० प्रसिद्धि (प्र, सिध्=जाना वा पूरा करना) स्त्री० नाम, यश, नामवरी, विख्याति, कीर्त्ति, २ पूराकरना, ३ गहना, आभूषण, ४ प्रकट होना।

सं० प्रसू (प्र, सू=पैदा होना) स्त्री० माँ, माता, जननी, घोड़ी, हरणी, लता।

सं० प्रसूति स्त्री० प्रसव, अपत्य, पुत्र, उदर, माता।

सं० प्रसूतिका (प्र, सू=पैदा होना) स्त्री० वह स्त्री जिसके बालक जन्मा हो।

सं० प्रसून (प्र=बहुत, सू=पैदा होना) पु० फूल, पुष्प, २ फल, गु० जन्मा हुआ, पैदा हुआ।

सं० प्रस्तर (प्र=बहुत, स्तॄ=फैलाना) पु० पत्थर, पाषाण, २ रत्न, जवाहिर।

सं० प्रस्तार भा०पु० फैलाव, तृणका वन, पत्तोंकीरचीशय्या, छन्दोंकाग्रन्थ।

सं० प्रस्ताव (प्र=बहुत, स्तु=सराहना, कहना) पु० अवसर, प्रसङ्ग, प्रकरण, बात, कथा, चर्चा।

सं० प्रस्तावना भा० स्त्री० भूमिका, दीबाचा, आरम्भ, तमहीद, तजवीज़ करना, स्तुति, प्रार्थना, प्रशंसा, वर्णन।

सं० प्रस्ताविक (प्रस्ताव) गु० समयपर, समयअनुसार।

सं० प्रस्तावित र्म्म० पु० प्रारम्भित, विस्तारित।

सं० प्रस्तुत (प्र=बहुत, स्तु=सराहना) गु० सराहा हुआ, प्रशंसित, कहा हुआ, २ किया हुआ, पूरा किया हुआ, ३ उद्यत, उतारू, तैयार, उपस्थित।

सं० प्रस्थ (प्र + स्था=ठहरना) पु० विस्तार, आधसेर।

सं० प्रस्थान (प्र=आगे वा दूर, स्था=ठहरना) पु० गमन, गवन, यात्रा,

कूच, युद्धके लिये कूच करना ।

सं० प्रस्फुटित(प्र + स्फुट्=फूलना) गु० खिला हुआ, फूला हुआ ।

सं० प्रस्फुरित गु० प्रकाशित, दीप्तिमान्, चमकनेवाला ।

सं० प्रस्नवण पु० चुआन, बहाव ।

सं० प्रस्नाव (स्नु=बहना) पु० मूत्र ।

सं० प्रहर (प्र=बहुत, हृ=हरण) पु० दिनका आठवाँ भाग, पहर ।

सं० प्रहसन् (प्रहस्+अन्, हस=हँसना) भा० पु० हास्य, हँसी, परिहास, व्यङ्ग वचन ।

सं० प्रहस्त (प्र=बहुत, हस्त=हाथ) भा० रावण का बेटा, गु० बड़े अथवा फैले हुए हाथवाला ।

सं० प्रहार (प्र, हृ=लेना, पर, प्र उपसर्ग के साथ आने से मारना अर्थ होता है) भा० पु० चोट, आघात, मार, मारना ।

सं० प्रहारी (प्रहार) पु० मारने वाला, नाश करनेवाला, घातक, २ दूर करनेवाला ।

सं० प्रहृष्ट (प्र=बहुत, हृष्=प्रसन्न होना)पु० सन्तुष्ट, तुष्ट, पुष्ट, प्रसन्न ।

सं० प्रहेलिका (प्र=बहुत, हेड् वा हेल्=अनादर करना) स्त्री० पहेली, दृष्टकूट, गूढ़प्रश्न, श्लेष, बुझव्वल ।

सं० प्रह्लाद (प्र=बहुत, ह्लाद=प्रसन्न होना) पु० हिरण्यकशिपु का बेटा, और परमेश्वर का भक्त, २ हर्ष, आनन्द, खुशी ।

सं० प्रह्व (ह्वे=बुलाना) गु० श्रेष्ठ, नम्र, भक्त, विख्यात ।

अं० प्राईवेटसेक्रेटरी स्त्री० स्वकीय लेखक, ज़ातीमीरमुंशी ।

सं० प्राक् (प्र=पहले, अञ्चू=जाना) क्रि० वि० पहले, पूर्व, आगे, आदि ।

सं० प्राक्तन गु० पुराना, पहला, पूर्वदिशा ।

सं० प्रकार (प्र=चारों ओर, कृ=फैलाना) पु० घेरा, कोटकी भीत, फसील, सफील, गढ़, पक्कामहल ।

सं० प्राकृत (प्र=बहुत, अकृत=बुरा काम अथवा ईर्ष्या जिसके मन में हो) गु० नीच, अधम, नीचा, क्षुद्र, सामान्य, २ (प्रकृति) गु० स्वाभाविक, प्रकृतिसम्बन्धी, माया का विकार, ३ पु० एक प्रकारकी भाषा जो संस्कृत से बिगड़ कर बनी है और संस्कृत नाटकों में बहुत जगह लिखी जाती है ।

सं० प्रागज्योतिषपुर (प्राक्=पहले, ज्योतिष=चमकीला, पुर =स्थान या नगर) पु० कामरूप देश, आसाम का एक भाग और भौमासुर की पुरानी राजधानी ।

सं० प्राघुण (प्र + आ, घुण्=घूमना) पु० पाहुन, अभ्यागत, महमान ।

सं० प्राङ्गण (प्र + अङ्गण) पु०

आँगन, सहन, मृदङ्ग, पखावज ।

ं० **प्राची** (प्राक्) स्त्री० पूर्वदिशा।

ं० **प्राचीन** (प्राक्=पहले) गु० पुराना, अगला, पहले समय का, २ पूर्व दिशा का ।

ं० **प्राचीर** (चि=चुनना) पु० चहारदीवारी, शहरपनाह, नगर का घेरा ।

ं० **प्राज्ञ** (प्र=बहुत, ज्ञा=जानना) पु० पण्डित, २ (प्रज्ञा) गु० बुद्धिमान्, विज्ञ, प्रवीण, चतुर ।

ं० **प्राज्ञमानी** } क० पु० विद्या-
प्राज्ञमन्य } भिमानी ।

ा० **प्राडविवाक** क० पु० पञ्च, न्यायाधीश, अक्षदर्शक, वकील, लीडर ।

ं० **प्राण** (प्र=बहुत, अन्=जीना वा सांस लेना) ग०पु० सांस, श्वास, वायु, २ जीव, जीवन, गु० प्यारा, प्यारी, प्रिय, प्रिया, प्राण पाँच हैं (१ प्राण, २ अपान, ३ व्यान, ४ समान, ५ उदान)।

ं० **प्राणनाथ** } (प्राण=जीवन, नाथ
प्राणपति } वा पति=स्वामी) पु० पति, पीतम, खाविंद, स्वामी।

० **प्राणान्त** (प्राण + अन्त) पु० प्राण का अन्त, मरना, मरण ।

० **प्राणयात्रा** स्त्री० निर्वाह, जीविका, रोज़ी ।

० **प्राणायाम** (प्राण=साँस, आ=चारों ओरसे, यम्=रोकना) भा० पु० साँस का रोकना, योगकी एक विधि जिसमें नाक के दहिने नथने को बन्द करके बाँयें नथने से साँस को ऊपर खैंचते हैं उसको "पूरक" कहते हैं, और फिर दोनों नथनों को बन्द करके साँस को भीतर रोकते हैं उसको " कुम्भक " कहते हैं, और फिर उस साँस को धीरे धीरे दाहिने नथने की राहसे निकाल देते हैं उसको "रेचक" कहते हैं।

सं० **प्राणी** (प्राण) पु० जीवधारी, जीव, जन्तु, गु० प्राणवाला ।

सं० **प्राणिमात्र** पु० सब जीव, जीवमात्र ।

सं० **प्राणेश** (प्राण=जीवन, ईश=मालिक या स्वामी) पु० प्राणनाथ, प्राणपति, स्वामी ।

सं० **प्रातः** (प्र=पहले, अत्=जाना) क्रि० वि० भोर, बिहान, तड़का, प्रभात, सबेरा ।

सं० **प्रातःकाल** (प्रातर्=भोर, काल=समय) पु० भोर का समय, बिहान, प्रभात, तड़का ।

सं० **प्रातराश** पु० प्रभात के भोजन।

सं० **प्रादुर्भाव** (प्रादुस्=प्रकट, भू=होना) पु० प्रकट होना, प्रत्यक्ष, प्रकाश होना, निकलना, उगना ।

सं० **प्रान्त** (प्र + अन्त) पु० अन्त, छोर, किनारा, अन्तभाग, प्रदेश,

खण्ड, सूबा, चारोंतरफ़ ।

सं० प्रापक (प्र + आप् + अक, आप् =पाना) क०पु० पैदा करना, प्राप्ति करना, हासिल करनेवाला ।

सं० प्राप्त (प्र=बहुत, आप्=पाना) गु० पाया हुआ, मिला हुआ, लब्ध, उचित, वसूल ।

सं० प्राप्ति (प्र=बहुत, आप्=पाना) स्त्री० पाना, लाभ, मिलना, वृद्धि, उदय ।

सं० प्राप्य (प्र=बहुत, आप्=पाना) कर्म० पु० पानेयोग्य ।

सं० प्रामाणिक (प्रमाण) गु० विश्वासवाला, २ प्रधान, ३ प्रत्यक्ष आदि प्रमाण से सिद्ध, शास्त्रसिद्ध ।

सं० प्रामाण्य (प्रमाण) गु० पु० प्रमाण करने के योग्य, विश्वास के योग्य, प्रमाण, सिद्धान्त ।

सं० प्रायः (प्र + अय्=जाना)
प्राय क्रि०वि० बहुधा, कभी कभी, लग भग, फेर फेर, बार बार, बहुत बार, पु० तप ।

सं० प्रायश्चित्त (प्रायस्=तप, चित्त =निश्चय, जैसे-" प्रायो नाम तपः प्रोक्तं चित्तं निश्चय उच्यते । तपो निश्चयसंयुक्तं, प्रायश्चित्तमिति स्मृतम् " ॥ अथवा 'प्रायः पापं विजानीयात्, चित्तं तस्य विशोधनम् " अर्थात् "प्रायस्" पाप को कहते हैं और "चित्त" उससे शुद्ध करने को कहते हैं) पु० पाप को दूर करने का साधन, जैसे चान्द्रायण व्रत आदि ।

सं० प्रारब्ध (प्र + आ, रभ्= शुरूअ करना) पु०
प्रालब्ध स्त्री० भाग्य, पूर्वकृत कर्म, कर्म में लिखाहुआ, दैव, योग्य, संयोग, गु० शुरूअ किया हुआ ।

सं० प्रारम्भ (प्र + आ, रभ्=शुरूअ करना) पु० आरम्भ, शुरूअ, प्रथम, उपक्रम ।

अँ० प्रायमिनिष्टर क० पु० वज़ीर-आज़म, महामन्त्री ।

सं० प्रार्थक क० पु० याचक, माँगनेवाला, मुस्तदई ।

सं० प्रार्थना (प्र=बहुत, अर्थ्=माँगना वा चाहना) स्त्री० विनती, चाहना, याचना, माँगना, वाञ्छना, परमेश्वर से अपने पापों की माफ़ी चाहना ।

सं० प्रार्थनीय कर्म०पु० याचनीय,
प्रार्थित याचित ।

सं० प्रार्थयिता क० पु० चाहनेवाला, आशिक़, आसक्त ।

सं० प्रावृट् (प्र=बहुत, वृष्=
प्रावृष् बरसना) स्त्री० वर्षा-
प्रावृषा काल, वर्षाऋतु, बरसात, जैसे

" प्रावृट शरद पयोद घनेरे "
" लरत मनहुँ मारुत के प्रेरे "

(रामायण)

अं० **प्राविंश** सूबा, खण्ड, प्रान्त ।

अं० **प्राविंशनलसर्विस** सूबे की नौकरी ।

सं० **प्रास** (प्र + अस्=फेंकना) पु० भाला, आयुध, फाँसी, क्रोच, त्याग।

सं० **प्रासाद** (प्र=अच्छी तरह से, सद्=बैठना) पु० महल, राजभवन, राजमन्दिर, २ देवता का मन्दिर ।

सं० **प्रिय** (प्री=प्यार करना वा प्रसन्न होना) पु० प्रीतम, पति, स्वामी, भर्त्ता, गु० प्यारा, सनेही ।

सं० **प्रियतम** (प्रिय=प्यारा, तम=बहुतही बहुत) गु० बहुत प्यारा, अत्यन्त प्यारा, पु० प्रीतम, पति।

सं० **प्रियभाषण** (प्रिय=प्यारा, भाषण=बोलना) पु० प्यार से बोलना, प्यारा बोल, प्यारीबात ।

सं० **प्रियंवद** कृ० पु० प्रियवादी, शीरींकलाम ।

सं० **प्रियंवदक** } (वद्=कहना)
प्रियवक्ता } कृ० पु० प्रियवादी, शीरींकलाम ।

सं० **प्रियवादिनी** (प्रिय=प्यारा, वद्=बोलना) गु० स्त्री० प्यारी बात बोलनेवाली, मीठी बात बोलनेवाली ।

सं० **प्रियवादी** (प्रिय=प्यारा, वद्=बोलना) गु० पु० मीठी और प्यारी बातें बोलनेवाला, मिष्टभाषी।

सं० **प्रिया** (प्रिय) स्त्री० गु० प्यारी स्त्री, भार्या, जोरू ।

प्रा० **प्रीत** (सं० प्रीति) स्त्री० प्यार, प्रेम।

प्रा० **प्रीतम** (सं० प्रियतम) गु० बहुतप्यारा, अत्यन्तप्यारा, पु० पति।

सं० **प्रीति** (प्री=प्यार करना वा तृप्त होना) स्त्री० प्यार, प्रेम, सनेह, मोह, दुलार, २ हर्ष, तृप्ति ।

सं० **प्रुष्ट** (प्रुष्=जलाना) कर्म० पु० दग्ध, जला ।

सं० **प्रेक्षक** (प्र + ईक्ष् + अक) कृ० पु० द्रष्टा, देखनेवाला, नाज़िर ।

सं० **प्रेक्षण** (प्र + ईक्ष्=देखना) पु० देखना, दर्शन, २ आँख, दृष्टि ।

सं० **प्रेक्षणीय** (प्र + ईक्ष् + अनीय) कर्म० पु० देखने योग्य, दृश्य ।

सं० **प्रेत** (प्र=दूर, इण्=जाना) पु० भूत, पिशाच, मुर्दा, मृतक, गु० मरा हुआ, मरा ।

प्रा० **प्रेतनी** (प्रेत) स्त्री० भूतनी, पिशाचनी ।

सं० **प्रेम** (प्री=प्यार करना वा प्रसन्न होना) पु० प्यार, प्रीति, सनेह, लाड़, दुलार जैसे प्रेम रँगराता=प्रेम में रँगा हुआ, बहुत प्यार में डूबा हुआ ।

सं० **प्रेमसागर** (प्रेम=प्यार, सागर=समुद्र) पु० प्यार का समंदर, श्रीमद्भागवत के दशमस्कन्ध का

हिन्दी भाषा में उलथा, श्रीलल्लूजीलाल कवि का किया हुआ ।

सं० प्रेमी (प्रेम) गु० प्यार करनेवाला, प्यारा, प्रियतम, सनेही ।

सं० प्रेयान् पु० प्रिय, प्यारा ।

सं० प्रेयसी स्त्री० प्रिया, प्यारी ।

सं० प्रेरक (प्र, ईर्=भेजना) पु० भेजनेवाला, पठवैया, २ ताकीद करनेवाला, प्रेरणा करनेवाला ।

सं० प्रेरण पु० } (प्र, ईर्=भेजना)
प्रेरणा स्त्री० } भेजना, २ आज्ञा करना, ताकीद करना, ३ उभाड़ना ।

प्रा० प्रेरना } (सं० प्रेरण) क्रि० स०
प्रेरा } भेजना, पठाना, २ उभाड़ना, जैसे

" धुआँ देखि खर दूषण केरा "
" जाइ सुपनखा रावण प्रेरा "
(रामायण)

प्रा० प्रेरित (प्र + ईर्=भेजना) क० पु० भेजा हुआ, पठाया हुआ, प्रेरण किया हुआ, आज्ञा किया हुआ ।

सं० प्रोक्त (प्र=पहले, उक्त=कहा हुआ) गु० पहले कहा हुआ ।

अं० प्रेस पु० यन्त्रालय, मतबअ ।

अं० प्रेसीड्यण्ट सभापति, मीरमजलिस ।

अं० प्रोक्लेमेशन मुनादी, ढँढोरा ।

अं० प्रोविनशलक्लब जनपद समूह ।

सं० प्रेषण (प्रेष्=जाना) भा० पु० प्रेरणा करना, पठावना ।

सं० प्रेषित कर्म० पु० प्रेरित, भेजागया ।

सं० प्रोषित (प्र=दूर, वस्=रहना) गु० जो विदेश में हो, विदेश गया हुआ, विदेशी ।

सं० प्रोषितपतिका } (प्रोषित +
प्रोषितभर्तृका } पति वा भर्ता=स्वामी) स्त्री० नायिका जिसका पति परदेश में हो ।

प्रा० प्रोहित (सं० पुरोहित) पु० पुरोहित, पुरोधा, कुलगुरु, उपाध्याय ।

सं० प्रोक्षक (प्र=बहुत, उक्ष् + अक, उक्ष्=सींचना) क० पु० सींचनेवाला ।

सं० प्रोक्षण (प्र + उक्ष् + अण) भा० पु० सींचना, वध, यज्ञार्थ पशुको वध करना ।

सं० प्रोक्षित कर्म० पु० सिक्त, सींचागया ।

सं० प्रौढ़ (प्र=बहुत, वह्=लेजाना) गु० बड़ा, मोटा, पूर जवान, पूरा बढ़ा हुआ, २ साहसी, ३ निगुण ।

सं० प्रौढ़ा (प्रौढ़) स्त्री० जवान स्त्री, तीस बरस से ५५ बरस तक उमर की स्त्री ।

सं० प्लक्ष (प्लक्ष्=खाना) पु० पाकर वृक्ष, पीपलवृक्ष, २ भोजन, ३ दरवाज़े की चौखट, बाज़ू, ४ सात द्वीपों में का एक द्वीप ।

सं० प्लव (प्लु=कूद जाना) क० पु० डोंगा, मेंढक, वानर, श्वपच, चाण्डाल, बगुला, सारस ।

प्लवक (प्लु + अक) क०पु० नर्तक, नाचनेवाला, खड्गधारी, नट ।

प्लवग } (प्लवन्=कूदता हुआ,
प्लवङ्ग } प्लु=कूदना और गम्= जाना) पु०वानर, बंदर, २ हरिन, मेंढक ।

प्लवङ्गम पु० मर्कट, वानर, भेक, मेंढक, मृगा ।

प्लीहा (प्लिह्=जाना) स्त्री० पिलही, तापतिल्ली ।

प्लुत (प्लु=कूदना अथवा ऊँचा जाना) पु० स्वरों का तीसरा भेद जिसके बोलने में ह्रस्व से तिगुना समय लगता है, गु० कूदा हुआ, उछला हुआ ।

प्लुष (प्लुष्=जलाना) पु०दाह, जलन, जलना, अग्नि, शोक, उष्ण, नाश ।

प्लुष्ट (प्लुष् + त) कर्म०पु०दग्ध, जला हुआ ।

प्लोष भा०पु० दाह, जलना ।

प्लोषिता (प्लुष् + तृ) क० पु० जलानेवाला या फूंकनेवाला ।

(फ)

फ पु० पकड़, फटकार, वृथावार्ता साधन, वायु का झकोरा ।

फंका पु० मुट्ठी भर चीज़ जो एक बार मुँह में डाली जावे ।

फंकामारना बोल० मुट्ठी भर चीज एक बार मुँह में लेजाना ।

प्रा० फँदाना (सं० पश्=बाँधना) क्रि० अ० फँसना, उलझना, अटकना, बझना ।

प्रा० फंदा } (सं० पाश) पु० पाश,
फाँदा } फाँसी, जाल, फँसड़ी, २ जंजाल, झंझट, कठिनाई ।

प्रा० फँसना } (सं०पश्=बाँधना)
फसना } क्रि०अ० उलझना, बझना, पकड़ा जाना, दूसरे के वश में आना ।

सं० फक्क (फक्क्=दुराचार) पु०असदाचार, बदचलन, मन्दगति, रिंगना ।

प्रा० फक्कड़ गु० ओवाशरिन्द, बखेड़िया, लड़ाका ।

सं० फक्किका (फक्क्=बुरा व्यवहार करना या धीरे धीरे चलना) स्त्री० फाँकी, तर्क, लपेटकी बात, पेंच, उलझेड़े की बात, चाल, कपट, छल ।

प्रा० फगुवा (फागुन) गु० होली का पर्व अथवा त्योहार ।

सं० फट गु० प्रफुल्लित, विकसित, खिलाहुआ, अव्य० फटकार, मन्त्रास्त्र ।

प्रा० फटकना (सं० स्फोटन, स्फुट् =जुदा २ करना) क्रि० स० पछोड़ना, उसाना, जुदा करना, नाज को पछाटना, छाँटना, २झाड़ना, ३ क्रि० अ० पास जाना, जा निकलना ।

प्रा० फटकी स्त्री० चिड़ीमार का जाल, २ बड़ा पिंजरा, ३ एक रस्सी जिसकी आवाज़ से पखेरुओं को डराते हैं ।

प्रा० फटना (सं० स्फटन, स्फट्=फटना) क्रि० अ० चिरना, तड़कना, तार तार होना ।

प्रा० फटिक (सं० स्फटिक) पु० बिल्लौर का पत्थर, स्फटिक ।

प्रा० फड़ स्त्री० जुवाँ खेलने की जगह, २ वह जगह जहाँ बेचने के लिये माल असबाब रहता है, ३ गाड़ी का डंडा ।

प्रा० फड़कना } (सं० स्फुट्=फटना
फरकना } वा विकसना)क्रि० अ० फड़फड़ाना, धड़धड़ाना, उछलना, हिलना (जैसे आँख का पपोटा) टास मारना, तड़फना, २ बहुत खुश होना ।

प्रा० फड़फड़ाना क्रि० अ० फड़कना, तलफना, हिलना ।

प्रा० फडिङ्गा पु० झींगुर, एक प्रकार का पतङ्गा ।

सं० फण (फण्=जाना) पु० साँप का फैलाया हुआ शिर वा ठुड्डी ।

सं० फणधर (फण, धृ=रखना) पु० साँप, सर्प ।

सं० फणिक (फण) पु० साँप, सर्प ।

सं० फणिज्झक पु० छोटे पत्ता, मरुवा या दवना ।

सं० फणी (फण) पु० साँप, सर्प ।

सं० फणीन्द्र } (फणी=साँप, इन्द्र
फणीश्वर } वा ईश्वर=राजा)पु० सर्पराज, अनन्त, २ वासुकी ।

अं० फण्ड समूह, पुञ्ज, पूँजी, सरमाया ।

प्रा० फनगा (सं० पतङ्ग)पु० टिड्डा, आँख फोड़ा ।

प्रा० फफसा गु० फूला, पोला, २ फीका ।

प्रा० फफूँदी स्त्री० गीली सड़ी हुई चीज़ पर एकतरह की सफ़ेद सी तह ।

प्रा० फफोला (सं० स्फोट, स्फुट्=फटना) पु० फुलका, फाला, छाला ।

प्रा० फफोले फूटने बोल० दिल दुख पाना, मन में चिन्ता होना, दुख पाना ।

प्रा० फफोले दिलके फोड़ने बोल० मनकी चाह पूरी करना ।

प्रा० फब } स्त्री० शोभा, सजावट ।
फबन }

प्रा० फबती कहना बोल० चुटकुला कहना, चुहल करना, किसी के पहरावे की हँसी करना ।

प्रा० फबना क्रि० अ० सोहना, छाजना, खुलना, भला लगना, अच्छा लगना, ठीक होना ।

प्रा० फरछा गु० निर्मल, स्वच्छ, खरा ।

प्रा० फरफन्द (सं० प्रपञ्च) पु० छल, कपट, धोखा, दुष्टता ।

प्रा० फरसा (सं० परशु) पु० कुल्हाड़ी, बसूला ।

प्रा० फरहरा पु० } ध्वजा, पताका,
फरहरी स्त्री० } झंडी का कपड़ा जो हवा में उड़ता है, गु० अधसूखा ।

प्रा० फरी (सं० फर, फल्=जाना वा भेदना) स्त्री० ढाल ।

प्रा० फर्राना (सं० स्फुरण) क्रि० अ० हिलना, उड़ना, फहरना (जैसे झंडा) ।

सं० फल (फल्=फलना, सिद्ध होना वा भेदना) पु० मेवा, २ काम की सिद्धि, लाभ, फ़ायदा, प्रयोजन, मतलब, परिणाम, नतीजा, ३ संतान, वंश, सन्तति, औलाद, ४ प्रतिफल, बदला, प्रतिकार, पारितोषिक, ५ बाण के आगे का लोहा, फाल, ६ (गणित में) लब्धि, ७ ढाल, फरी, ८ भाले अथवा तलवार की नोक ।

प्रा० फलपाना बोल० भले या बुरे काम का पलटा मिलना, बदला मिलना ।

प्रा० फलफलारी बोल० नाना प्रकार के फल ।

प्रा० फलफूल बोल० वनस्पति ।

सं० फलक (फल्=जाना वा भेदना) पु० ढाल, २ ललाट की हड्डी, ३ मूठि, तह, परत, क़बज़ा, तख़्त, पटेरा ।

सं० फलद (फल, दा=देना) गु० फलदायक, फल देनेवाला, पु० वृक्ष ।

सं० फलदाता (फल + दाता) गु० फल देनेवाला ।

प्रा० फलना (सं० फलन, फल्=फलना) क्रि० अ० फल लाना, फल देना, फल लगना, (जैसे वृक्ष का) २ सफल होना, फलदायक होना, ३ भाग्यवान् होना, सुखी होना, फूलना, ख़ुशरहना, ४ वंश बढ़ना ।

सं० फलप्राप्ति (फल + प्राप्ति) स्त्री० मनोरथ सिद्धि, मतलब पूरा होना ।

प्रा० फलना फूलना बोल० भाग्यवान् होना, सुखी होना ।

प्रा० फलबुझौवल पु० एक खेल का नाम जिसको 'मनकेला' भी कहते हैं, जैसे-मन में कोई अङ्क मान लो फिर उसको दूना करो और उसमें दश जोड़ दो फिर उस में से पाँच निकाल लो तो बाक़ी कितना रहा ?-इकीस तो वह अङ्क आठ है-इत्यादि ।

सं० फलवान् (फल, वान्=वाला) सफल, सार्थक, फलयुक्त ।

सं० फलश्रेष्ठ पु० आम्रफल ।

सं० फलाध्यक्ष (फल + अध्यक्ष)

पु० खिरिणी या खिन्नी ।

प्रा० फलांग (सं० लङ्घन, लघ्=लाँघना, कूदना) स्त्री० कूद, उछलना, डग ।

सं० फलित (फल्=फलना) कर्म० पु० फला हुआ, सफल ।

सं० फलितज्ञ (फलित + ज्ञ=जानना) क० पु० ज्योतिषी, नजूमी ।

सं० फलितार्थ पु० तात्पर्य, सिद्धि ।

प्रा० फली (सं० फल) स्त्री० छीमी (जैसे मटर आदि की) ।

सं० फलेग्रहि (फले + ग्रह्=लेना) क० पु० फलका लेनेवाला ।

सं० फलोत्तमा (फल + उत्तमा) स्त्री० दाख या मुनक्का ।

सं० फलोदय (फल + उदय) पु० लाभ, प्राप्ति, २ आनन्द, हर्ष ।

सं० फल्गु (फल्=फल देना) स्त्री० एक नदी का नाम जिसके तीर पर गया नाम शहर बसता है, २ एक प्रकार का अंजीर का पेड़, ३ गुलाल, ४ असार ।

प्रा० फहराना } फर्राना } (सं० स्फुरण, स्फुर्=हिलना) क्रि० अ० उड़ना, लहराना, हिलना (जैसे झंडा) ।

प्रा० फाँक स्त्री० टुकड़ा, चकती, ककड़ी आदि फल का टुकड़ा ।

प्रा० फाँकना क्रि० स० फंका मारना ।

प्रा० फाँकी (सं० फक्किका) स्त्री० लपेट की बात, उलझेड़ की बात, तर्क, फक्किका ।

प्रा० फाँदना (सं० फालन, फल्=उछलना) क्रि० स० कूदना, उछलना, लाँघना ।

प्रा० फास स्त्री० बाँस आदि का बहुतही छोटा टुकड़ा, अथवा काँटा अथवा सींक ।

प्रा० फाँसी (सं० पाश) स्त्री० फंदा, फँसड़ी, एक रस्सी जो गले में डाल कर खींच लेतेहैं तो गरदन की रग दब कर आदमी मरजाता है ।

प्रा० फाँसी देना बोल० गला दबाना, मारडालना, फाँसी पर चढ़ाना या लटकाना ।

प्रा० फाँसी पड़ना बोल० फाँसी दिया जाना, मारा जाना, लटकाया जाना ।

प्रा० फाँसीलगाना बोल० गला घोंटना, गला दबाना, मारडालना ।

प्रा० फाग (सं० फल्गु) पु० होली में गुलाल आदि, २ होली के खेल ।

प्रा० फागखेलना बोल० अबीर उड़ाना, होली खेलना ।

प्रा० फागुन (सं० फाल्गुन) पु० बारहवां हिन्दी महीना ।

प्रा० फाटक पु० बड़ादरवाज़ा, द्वार, किंवाड़, २ रोक, अटकाव ।

प्रा० फाड़ना (सं० स्फाटन) क्रि० स० चीरना, टुकड़े २ करना ।

प्रा० फाड़खाना बोल० भँभोड़ना, २ सताना, ३ बहुत क्रोध करना।

अं० फारेनसेक्रेटरी विदेशीय व्यापारियों के मन्त्री ।

सं० फाल (फल्=फाड़ना) पु० नोकदार लोहा जो हल में लगाया जाता है ।

प्रा० फालसा पु० एक फल का नाम।

सं० फाल्गुन (फाल्गुनी एक नक्षत्र का नाम) पु० फागुन, इस महीने में पूनोंके दिन “ पूर्वाफाल्गुनी ” नक्षत्र होता है ।

प्रा० फावड़ा पु० धरती खोदकर मिट्टी फेंकने या उठाने का एक औज़ार ।

प्रा० फाहा रूई का पहल अथवा छोटा गाला, २ वह कपड़ा जिस पर मरहम लगाकर घावपर बाँधते हैं ।

प्रा० फिकारना क्रि० स० शिर नंगा करना ।

प्रा० फिट पु० फिटकार, सराप, क्रि० वि० छीछी ।

प्रा० फिटफिट बोल० धिक्धिक्, छीछी ।

प्रा० फिटकार स्त्री० गाली, सराप ।

प्रा० फिटकारना क्रि० स० धिक्कारना, सरापना, छीछी करना ।

प्रा० फिर समुच्च० पीछे, पुनि, इसके बाद ।

प्रा० फिरकी (फिरना) स्त्री० फिरनी, चकई, एक खिलौने का नाम ।

प्रा० फिरना (शायद सं० परिक्रम से) क्रि० अ० घूमना, चक्करखाना, पलटना, टहलना, चलना, भटकना, रमना, भ्रमण करना, बलवाकरना।

प्रा० फिरजाना बोल० पलटना, २ बलवा करना, बाग़ी होना, ३ ऐंठना, बलखाना, ४ टेढ़ा होना ।

प्रा० फिल्ली स्त्री० पिंडली, टँगड़ी ।

प्रा० फिसलना क्रि० अ० खिसलना, डिगना, रपटना, खिसकना, उलट जाना, लुढ़कना, गिरना, लड़खड़ाना ।

प्रा० फींचना क्रि० स० धोना, साफ़ करना, खँघालना ।

प्रा० फीका गु० बेस्वाद, बेनमक, मीठा, २ पीला, बदरंग, कमरंग, ३ हलका, (जैसे रंग) ।

प्रा० फुंकार (सं० फुत्कार, फुत्= ऐसा शब्द, कृ=करना) स्त्री० साँप के साँस लेने का शब्द, फुफकार, फुस्कार ।

प्रा० फुंहार स्त्री० मेह की छोटी २ बूँदें, फुही, फोंहार ।

प्रा० फुंहारा (फुंहार) पु० फ़व्वारा।

प्रा० फुकना पु० मूत्राधार, थैली ।

प्रा० फुट (सं० स्फुट) गु० अलग २, भिन्न, विषम, अयुग्म ।

प्रा० फुटकर (सं० स्फुट्=अलग २

होना) गु० भिन्न, फुट, अयुग्म, विषम, अलग २, एक एक ।

प्रा० फुदकना क्रि० अ० कुदकना, उछलना, कूदना ।

प्रा० फुनगी स्त्री० कली, कोंपल, मञ्जरी, अङ्कुर ।

प्रा० फुनसी स्त्री० छोटा फोड़ा ।

प्रा० फुप्फा पु० फुफ्फी का पति ।

प्रा० फुप्फी स्त्री० बाप की बहिन ।

प्रा० फुफकार स्त्री० फुन्कार, फुत्कार ।

प्रा० फुफेरा **फुफेरी** गु० फुफ्फी का जैसे फुफेरा भाई=फुफ्फी का बेटा, फुफेरी बहिन=फुफ्फी की बेटी ।

प्रा० फुर गु० सच, सच्चा, ठीक, यथार्थ ।

प्रा० फुरफुराना (सं० स्फुर्=हिलना) क्रि० अ० काँपना, हिलना ।

प्रा० फुर्त **फुर्ती** (सं० स्फूर्त्ति, स्फुर्=हिलना) स्त्री० जल्दी, चटपटी, शीघ्रता, वेगता, चालाकी ।

प्रा० फुर्तीला (फुर्त) गु० चालाक, चटपटिया, जल्दबाज़ ।

प्रा० फुलका (सं० फुल्ल्=फूलना) गु० फूला हुआ, २ हलका, पु० फफोला, छाला, ३ पतली रोटी ।

प्रा० फुलकारी (सं० फुल्लाकार, फुल्ल=फूल, आकार=डौल) स्त्री० एक प्रकार का कपड़ा जिस पर फूलनिकले होतेहैं, नैनू, जामदानी ।

प्रा० फुलझड़ी स्त्री० एक तरह की आतशबाज़ी ।

प्रा० फुलवारी **फुलवाड़ी** (सं० फुल्लवाटी, फुल्ल=फूल, वाटी=बाड़ी) स्त्री० पुष्पवाटिका, फूलों का बग़ीचा ।

प्रा० फुलेल (सं० फुल्लतैल) पु० सुगन्धित तेल, फूल का तेल ।

प्रा० फुलौरी स्त्री० पकौड़ी ।

सं० फुल्ल पु० पुष्पयुक्त वृक्ष, विकसना, खिलना, हर्ष ।

प्रा० फुल्ली (सं० फुल्ल) स्त्री० एक आँख की बीमारी जिससे आँख में एक सफ़ेद बुन्दा सा होजाता है ।

प्रा० फुसफुसाना क्रि० अ० कानाफूसी करना, कानाकानी करना ।

प्रा० फुसलाना क्रि० स० दिलासा देना, भुलाना, झाँसा देना, धोखा देना, बहकाना, दमदेना, बहलाना ।

प्रा० फूँक (फूँकना) स्त्री० दम, साँस ।

प्रा० फूँकदेना बोल० आगलगादेना ।

प्रा० फूँकना (सं० फुत्कार) क्रि० स० मुँहसे हवा निकालना, २ आग लगाना, जलाना, सुलगाना, ३ बजाना (जैसे तुरही, सींगी आदि)।

प्रा० फूँकफूँककर पाँवधरना बोल० बहुत सावधानी से काम करना या रहना ।

प्रा० फूंकारना (सं० फुत्कार) क्रि० अ० फनफनाना, फुंकार मारना,

फुत्कारना (जैसे साँप का) ।

प्रा० फूंही ⎫ स्त्री० छोटी छोटी मेह
फौंहार ⎬ की बूँदें, झींसी, मन्द
फूहार ⎭ मन्द वर्षा ।

प्रा० फूट (सं० स्फुटि, स्फुट्=फूटना वा टूटना) स्त्री० एक तरह की ककड़ी, पकी हुई ककड़ी, २ (स्फुट) बिगाड़, वैर, विरोध, बखेड़ा, झगड़ा, असम्मति, अनमेल, ३ जुदा होना, अलगाव, बिलगाव, ४ खण्डन, टूट, सेंध, दरार ।

प्रा० फूटपड़ना बोल० बखेड़ा मचना, विरोध होना, झगड़ा उठना, बीच पड़ना ।

प्रा० फूटफूटकररोना बोल० उमँड उमँड कर रोना, बहुत रोना ।

प्रा० फूटहोना बोल० किसी की सम्मति नहीं मिलना, एक मता न होना ।

प्रा० फूटरहना बोल० अलग होजाना ।

प्रा० फूटना (सं० स्फुटन, स्फुट्=फूटना) क्रि० अ० टूटना, २ छिन्न भिन्न होना, बिखरना, अलग होना, ३ फटना, चिरना, ४ उठना, फैलना (जैसे सुगन्ध), ५ कलीका खिलना, ६ भेद खुल जाना, ७ वैरी से मिलजाना ।

प्रा० फूटीसहें पर काजल न सहें कहावत—थोड़ी घटी नहीं सहना और सबका सब नुक़सान सहना ।

प्रा० फूफा पु० फूफी का पति ।

प्रा० फूफी ⎫ स्त्री० बाप की बहिन ।
फूफू ⎭

प्रा० फूल (सं० फुल्ल, फुल्ल्=फूलना) पु० पुष्प, पुहुप, कुसुम, सुमन, २ स्त्री का रज, निहानी, ३ मुर्दे की हड्डियां जो जल जाने के पीछे चुनी जाती हैं, ४ एक प्रकार का काँसा जो बहुत साफ़ और सफ़ेद होताहै, ५ फुलाव, सूज, गु० बहुत हलका ।

प्रा० फूलजाना बोल० सूजजाना, २ प्रसन्न होना, आनन्दित होना, ३ मोटा होना ।

प्रा० फूलझड़ना बोल० सुन्दरताई से बोलना, मीठा बोलना, २ दीपक से जलेहुए तेलके टपकों का गिरना।

प्रा० फूलपड़ना बोल० आग लगजाना, जलजाना ।

प्रा० फूल बैठना बोल० खुश होना, प्रसन्न होना, हर्षित होना, बहुत प्रसन्न होकर बैठना ।

प्रा० फूलगोबी स्त्री० गोबी, करमकल्ला ।

प्रा० फूलना (सं० फुल्लन, फुल्ल्=फूलना) क्रि० अ० खिलना, विकसना, डहडहाना, २ प्रसन्न होना, ख़ुश होना, हुलसना, नीरोग रहना, बढ़ना, पनपना, फलना, ३ सूजना, मोटा होना, वायु से भरना,

वायुसे फूलना, ४ घमंड करना ।

प्रा० फूलताफिरना बोल० अत्यन्त प्रसन्न होना ।

प्रा० फूला (सं० फुल्ल) गु० फूला हुआ, सूजा हुआ, २ खिला हुआ, विकसा हुआ, डहडहा हुआ ।

प्रा० फूलानसमाना बोल० मगन होना, अत्यन्त आनन्दित होना, आनन्द से फूल जाना ।

प्रा० फूस पु० सड़ा और सूखा घास ।

प्रा० फूस में चिनगारी डालना बोल० बखेड़ा मचाना, झगड़ा उठाना ।

प्रा० फूहड़ गु० अनसीखी, मूर्ख, घामड़, भोंड़ी (यह शब्द स्त्री के लिये बोला जाता है) स्त्री० मैली कुचैली स्त्री ।

प्रा० फूहा पु० रूईका फाहा जिस को दूध में भिगो कर बच्चे के मुँह में निचोड़ते हैं जब कि बच्चा अपनी मां की चूंची से दूध नहीं पीसकता हो ।

प्रा० फेंकना (सं० क्षेपण, क्षिप्= फेंकना) क्रि० स० डालना, बीगना, दूर गिराना, अलग करना, बगफूट दौड़ाना, (घोड़े को) सरपट जाना ।

प्रा० फेंकदेना बोल० दूर गिरा देना ।

प्रा० फेंट } फैंट } स्त्री० कमरबन्द, पटका, कटिबन्ध ।

प्रा० फेंट बाँधना बोल० किसी काम के करने के लिये तैयार होना, ठानना ठहराना, कमर बाँधना ।

प्रा० फेंटा } फैंटा } पु० स्त्री० कमरबन्द, २ छोटी सी पगड़ी ।

सं० फेन (स्फाय्=बढ़ना) पु० झाग, कफ, फेना, समुद्रफल ।

सं० फेनावाहिन् पु० जल, रस, दुग्ध, दूध, समुद्र ।

प्रा० फेनी (सं० फेन) स्त्री० एक भाँति की मिठाई ।

सं० फेर पु० शृगाल, गीदड़ ।

प्रा० फेर (फेरना) पु० घुमाव, बाँका, चक्कर, पेंच, २ तबदील, बदली, विकार, ३ बुरे दिन, बुरा भाग, अभाग्य, ४ कठिनता, ५ दूरी, क्रि० वि० दूसरीवार, पीछा, फिर, उलटा ।

प्रा० फेरखाना बोल० घूमना, चक्कर खाना, २ दुखपाना, तकलीफ़ उठाना ।

प्रा० फेरदेना बोल० उलटा देना, पीछा दे देना, लौटा देना ।

प्रा० फेरपड़ना बोल० फ़रक़ पड़ना, बीच रहना, २ चक्कर पड़ना, दुःख होना ।

प्रा० फेरफार बोल० छल, फ़रेब, धोखा, दग़ा, २ ओसरा, ओसरी, परस्पर फेराफेरी ।

प्रा० फेरफार करना बोल० अदल बदल करना, परिवर्त्तन करना, २ कपट करना, धोखा देना ।

प्रा० फेराफेरी बोल० आपस में किसी चीज़को लेना और पीछे देना ।

फेरना क्रि० स० उलटना, घुमाना, लौटाना, पीछा दे देना, हटाना, दूर करना, २ पोतना (जैसे चूना, कलई आदि)।

सिरपरहाथफेरना बोल० फुसलाकर ठगना।

हाथ फेरना बोल० प्यार करना, दुलार करना, छोह करना।

फेअ्ल फेल } काम, क्रिया।

फेलक (फेल्+अक, फेल=जाना) कृ० पु० उच्छिष्ट, जूंठ।

फेलन भा० पु० फेंकना।

फेलित कर्म० पु० फेंका हुआ।

फेलोज म्यम्बर, अङ्ग।

फैलना क्रि० अ० बिछना, पसरना, बिथरना, बिखरना, २ चौड़ा होना, ३ प्रसिद्ध होना।

फैलाना क्रि० स० बिछाना, पसारना, छितराना, २ खोल देना, ३ चौड़ा करना, ४ प्रसिद्ध करना, प्रकट करना, ५ हिसाब करना।

फैलाव पु० प्रचार, बिछाव, पसराव, चौड़ाई।

फोंफी स्त्री० नली, छूछी, २ पोली चीज़।

फोटो प्रतिविम्ब, अक्स।

फोटोग्राफ़र चित्रलेखक, मुसव्विर।

फोड़ना (सं० स्फोटन, स्फुट्=फटना) क्रि० स० तोड़ना, फाड़ना, चीरना, टुकड़े २ करना, २ प्रकट करना, भेद खोल देना।

प्रा० फोड़ा (सं० स्फोटक, स्फुट्=फूटना) पु० घाव, ज़ख़म, फुनसी।

प्रा० फोला पु० फफोला, छाला।

फ़ा० फ़ौरन् क्रि० वि० सद्यः, तुरन्त, उसीदम, तत्काल, तत्क्षण।

अं० फ्रीटेड स्वाधीन, परदेशीय, वाणिज्य।

(ब)

सं० ब पु० वरुण, २ घड़ा, ३ समुद्र, ४ पानी।

प्रा० बंकाई (सं० वङ्कता, वङ्क, वकि=टेढ़ा होना) भा० स्त्री० टेढ़ापन, टेढ़ाई, तिरछापन, बाँकापन, फेर, घुमाव।

प्रा० बंगड़ी स्त्री० स्त्रियों के हाथ में पहनने का एक गहना।

प्रा० बंगला पु० एक तरहका मकान जो चारों ओर से खुला रहता है, २ (सं० वङ्ग) एक तरह का पात, ३ बंगाली बोली।

प्रा० बंगाला (सं०वङ्ग) पु० बंगाल देश का नाम।

प्रा० बंगाली (सं० वङ्ग) पु० बंगाले का रहनेवाला, स्त्री० बंगाले की बोली।

प्रा० बंचना (सं० वचन, वच्=कहना)क्रि० स० पढ़ना, बाँचना।

प्रा० बंदनवार (सं० बन्ध=बाँधना, और वार=दरवाज़ा) स्त्री० फूल और पत्तों की माला जो ब्याह अथवा कोई उत्सव और पर्व के दिन दरवाज़े पर बाँधते हैं ।

प्रा० बंदर (सं० वानर) पु० एक जानवर जिसका डील, डौल और मुँह आदमी से बहुत मिलता है ।

प्रा० बंदरकीसी आँख बदलना बोल० तुरत रिसाना, जल्द ग़ुस्से में होना ।

प्रा० बंदरकी तरह नचाना बोल० बड़ा कठिन काम करवाना ।

प्रा० बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद कहावत-मूर्ख आदमी अच्छी चीज़ों का गुण नहीं जानता ।

प्रा० बंदवा
बँधुवा } (सं० बन्ध्=बाँधना) पु० क़ैदी ।

प्रा० बंदी (सं०वन्दी,वदि=सराहना वा झुकना, नमस्कार करना) पु० बँधुवा, क़ैदी, २ भाट ।

प्रा० बंदी स्त्री० स्त्रियों के ललाट पर पहनने का एक गहना, बन्दिया।

प्रा० बंदीगृह (सं० वन्दीगृह, वन्दी =क़ैदी,गृह=घर) पु० जेलख़ाना, क़ैदख़ाना, कारागार ।

प्रा० बंदीजन (सं०वन्दी + जन) पु०भाट,चारण,यशबखाननेवाले।

प्रा० बंदोड (सं० बंध=बाँधना) स्त्री० दासी, लौंड़ी, बाँदी ।

प्रा० बक (सं० वक, वकि=टेढ़ा होना) पु० बगुला ।

प्रा० बकध्यानलगाना बोल० पाखण्ड करना, काट करना ।

प्रा० बक (सं० वाक्) स्त्री० बकवाद, बकबक, गपसप, बड़बड़ाहट, झक, गुलगपाड़, वृथा बातें ।

प्रा० बक झक बोल० बकबक, गपसप, बकवाद, वृथा बातें ।

प्रा० बकझककरना
बकबककरना } बोल० टेंटें करना, चेंचें करना, बकबक करना, बकवाद करना, बड़बड़ाना, वृथाबकना ।

प्रा० बकलगाना बोल० हूहा करना, गुल मचाना, हुल्लड़ करना ।

प्रा० बकना (सं०वाक्) क्रि० अ० बड़बड़ाना, बकझक करना, हुल्लड़ करना, गुल मचाना ।

प्रा० बकरा (सं०वर्कर, वृक्=लेना) पु० छागल, अज ।

प्रा० बकरी स्त्री० छेरी, अजा ।

प्रा० बकला
बक्कल } (सं० वल्कल, वल =ढकना) स्त्री० छाल, छिलका, पोस्त ।

प्रा० बकवाद (बक=बड़बड़ाहट, और वाद=झगड़ा) स्त्री० बकबक, बकझक, वृथा बातें ।

प्रा० बकवादी (बकवाद) गु० झक्की, बक्की, बकवाद करनेवाला।

प्रा० बकासुर (सं० बक=बगुला,

असुर=राक्षस) पु० एक राक्षसका नाम जो बगुला बनकर श्रीकृष्ण के मारने को गया था उसको श्रीकृष्ण ने मारा ।

ा० बक्रिया स्त्री० छूरी, चक्कू ।

ं० बकी स्त्री० पूतना राक्षसी का नाम ।

ा० बक्की (बकना) गु० गप्पी, झक्की, बकवादी, (सं० वक्ता) ।

ा० बक्रदन्त (सं० वक्र=बाँका, दन्त=दाँत) पु० शिशुपाल के भाई का नाम ।

ा० बखान (सं० व्याख्यान) पु० वर्णन, व्याख्या, बयान, स्तुति, सराह ।

ा० बखानना } क्रि० स० सराहना, स्तुति करना, तारीफ़ करना, वर्णन करना ।
बखानकरना

ा० बखार पु० } अनाज रखने का भण्डार ।
बखारी स्त्री०

० बखिया पु० एक तरह का टाँका, मज़बूत टाँका, दृढ़ सीवन ।

० बखेड़ा पु० झगड़ा, लड़ाई, दंगा, रौला ।

० बखेड़ा चुकाना बोल० झगड़ा मिटाना ।

० बखेड़ा मचाना बोल० दंगा करना, बलवा करना ।

० बखेड़िया क० पु० झगड़ालू, लड़ाँका, दंगई ।

प्रा० बखेरना (सं० विकीर्ण, वि, कॄ=बिखरना) क्रि० स० फैलाना, अलग २ करना, छिटकना, छितराना, बिथराना, छींटना ।

प्रा० बग (सं० बक) पु० बगुला ।

प्रा० बगछूट (बग=बागडोर, छूट=छुटना) स्त्री० सरपट, धावा ।

प्रा० बगछूटदौड़ना बोल० सर्पट जाना, तेज़ दौड़ना ।

प्रा० बगला } (सं० बक) पु० एक जलका जीव, बग ।
बगुला

प्रा० बगलाभक्त बोल० कपटी, छली, पाखण्डी, कपटधर्मी, फ़रेबी ।

प्रा० बगलामारे पंख हाथआये कहावत—ग़रीब को दुःख देने से बहुत लाभ नहीं होता है ।

प्रा० बगार पु० चरागाह, रमना, दरख़्तों की क़तार, बाग़ ।

प्रा० बगूला (.वात अथवा वायुसे) पु० हवाका चक्कर जिस में धूल ऊँची उठती है बवण्डर, चक्रवात ।

प्रा० बघार पु० छौंकना, घी और कुछ मसाला गर्म करके दाल आदि तरकारियों में डालना ।

प्रा० बग्घी } स्त्री० एक तरह की अँगरेज़ी गाड़ी जिसमें घोड़ा जोता जाता है ।
बग्गी

प्रा० बघेला (बाघ) पु० एक जाति के राजपूत, २ बाघ का बच्चा ।

प्रा० बच (सं० वचस, वच्=बो-

लना) पु० वचन, वाक्य ।

प्रा० बचकाना (फ़ा० बच्चासे) गु० छोटा, पु० कथकका लड़का, २ छोटा जूता, बच्चों का जूता ।

प्रा० बचत स्त्री० शेष, बाक़ी, बक़िया, बक़ाया, अवशेष ।

प्रा० बचन (सं० वचन) पु० बात, वाक्य, कहना, २ क़ौल, क़रार, पण, होड़, शर्त ।

प्रा० बचनचूक बोल० अविश्वासी, बेएतबार ।

प्रा० बचनछोड़ना बोल० वचन तोड़ना, क़ौल छोड़ना ।

प्रा० बचनतोड़ना बोल० कही हुई बात से फिर जाना, शर्त से फिर जाना ।

प्रा० बचनदेना बोल० पक्का क़ौल करना, पण करना, प्रतिज्ञा करना ।

प्रा० बचननिभाना या पालना बोल० कहेको पूरा करना, अपनी बात पर पक्का रहना ।

प्रा० बचनबन्धकरना बोल० वचन लेना, इक़रार करना ।

प्रा० बचनबन्धहोना बोल० वचन देना ।

प्रा० बचनमानना बोल० बात मानना, आज्ञा पालन करना ।

प्रा० बचनलेना बोल० इक़रार करना ।

प्रा० बचनहारना बोल० मानलेना, इक़रार कर लेना ।

प्रा० बचना क्रि० अ० रक्षापाना, २ अलग रहना, ३ बाक़ी रहना ।

प्रा० बचपन भा० पु० लड़कपन, लड़काई ।

प्रा० बचाना क्रि० स० रक्षा करना, रखवाली करना, २ जवाब देना, उत्तर देना ।

प्रा० बचाव भा० पु० रक्षा, रखवाली, उद्धार, २ हिमायत, आश्रय ।

प्रा० बच्चा (सं० वत्स और फ़ा० बच्चा) पु० छोटा लड़का वा लड़की, २ छोटी उमर का जानवर ।

प्रा० बछड़ा } (सं० वत्स) पु० गाय
बछडू } का बच्चा ।

प्रा० बछिया स्त्री० गाय की बछड़ी ।

प्रा० बछेरा (वत्स) पु० घोड़े का बच्चा ।

प्रा० बच्छ (सं० वत्स) गु० लाल, प्यारा, पु० बच्चा, लड़का, २ बछड़ा ।

प्रा० बच्छल (सं० वत्सल) क० पु० प्यारा, छोही, प्रेमी, दयालु, कृपालु ।

प्रा० बच्छासुर (सं० वत्स=बछड़ा, असुर=राक्षस) पु० एक राक्षस जो कंस के कहने से बछड़ा बनकर श्रीकृष्ण के मारने को गया था ।

प्रा० बजना (सं० वाद्य, वद्=शब्द करना) क्रि० अ० शब्द वा स्वर निकलना ।

प्रा० बजन्त्री (सं० वाद्य=बाजा, यन्त्री=बजानेवाला) पु० बाजा,

बजानेवाला समाजी ।

प्रा० बजरबट्टू पु० एक जङ्गली फल का नाम जो रीछ नचानेवाले बच्चों के लिये देते हैं इस लिये कि बुरी नज़र नहीं लगे ।

प्रा० बजरा पु० बड़ी नाव जिस पर बैठ कर बड़े आदमी नदी की सैर करते हैं ।

प्रा० बजयट स्त्री० आय व्यय का लेखा, आमदनी और ख़र्च का हिसाब ।

प्रा० बज्र (सं० वज्र, वज्=जाना) पु० इन्द्र का अस्त्र, बिजली, गाज, २ हीरा, गु० कड़ा, कठिन ।

प्रा० बजरङ्ग (सं० वज्राङ्ग, वज्र + अङ्ग अर्थात् जिसका शरीर वज्रसा कड़ा है) पु० हनूमान् का नाम, महावीर ।

प्रा० बजरङ्गी पु० एक प्रकार का तिलक जो हनुमान् के भक्त निकालते हैं ।

प्रा० बझाना क्रि० स० फँसाना, उलझाना, पकड़ा जाना ।

प्रा० बटखरा (सं० वण्टक, वण्ट=बाँटना) पु० बाँट, तौलनेका तौला ।

प्रा० बटन स्त्री० बूताम, २ समेट, शिकन ।

प्रा० बटना (सं० वट्=लपेटना) क्रि० स० बलदेना, ऐंठना, २ (वट्=बाँटना) पाना, ३ क्रि० अ० बाँटा जाना, हिस्सा होना ।

प्रा० बटपाड़
बटपार } (बाट=रस्ता, पाड़ना=गिराना अर्थात् लूटना) पु० लुटेरा, डाकू ।

प्रा० बटलोही स्त्री० एक तरह का बरतन जिसमें दाल भात आदि पकाते हैं, बटुवा, भरतिया, पतेली ।

प्रा० बटवार (सं० वट्=बाँटना) पु० कर उगाहनेवाला ।

प्रा० बटवारा (सं० वट्=बाँटना) पु० बाँट, भाग, अंश ।

प्रा० बटाऊ (बाट) पु० बटोही, मुसाफ़िर, राही, पथिक, २ बटपार ।

प्रा० बटुवा
बटवा } (सं० वट्=घेरना) पु० कपड़े की एक छोटी थैली, २ बटलोही ।

प्रा० बटेर (सं० वर्त्तक, वृत्=होना) स्त्री० एक पखेरू का नाम ।

प्रा० बटोरना क्रि० स० इकट्ठा करना, चुनलेना ।

प्रा० बटोही (बाट) गु० मार्गू, मुसाफ़िर, रस्ते चलनेवाला ।

प्रा० बट्टा पु० जो कुछ सिक्के के बदलने के समय दिया जावे, २ कमी, घटी, ३ कलङ्क, दोष, दाग़, ४ गोला, (लकड़ी वा पत्थर का) ५ डिब्बा ।

प्रा० बट्टाढाल गु० बराबर, सपाट ।

प्रा० बट्टालगना बोल० दाग़लगना, कलङ्क लगना ।

प्रा० बड़
बर } (सं० वट) पु० एकवृक्ष का नाम जिसकी छाया

गहरी और बड़ी चौंड़ी होती है, बरगद।

प्रा० बड़ गु० बड़ा।

प्रा० बड़बोला बोल० शेख़ीबघारनेवाला।

प्रा० बड़भकुवा बोल० मूर्ख।

प्रा० बड़पेटा बोल० बहुतखानेवाला।

प्रा० बड़ना क्रि० अ० घुसना, पैठना।

प्रा० बड़बड़ाना क्रि० स० मुँहही मुँहमें कुछ कहना, कुड़कुड़ाना, बकबक करना।

सं० बड़वा (बड़=बल, वा=जाना) स्त्री० ब्राह्मणी, सूर्यकी स्त्री जिससे अश्विनीकुमार हुए हैं, कुम्भदासी, अश्विनी, घोड़ी।

सं० बड़वाकृत } पु० दासीपुत्र,
बड़वाहृत } भक्तदास।

सं० बड़वामुख पु० समुद्रका कालानल, समुद्राग्नि।

सं० बड़वाग्नि } (बड़वा=घोड़ी,
बड़वानल } अग्नि वा अनल=आग) स्त्री० समुद्र के भीतर की आग जो घोड़ी के मुँह से निकलती है (हिंदुओंके शास्त्र अनुसार)।

प्रा० बड़हल पु० एक फल का नाम।

प्रा० बड़ा } (सं० बड़ा, वड्=विभाग
बरा } करना वा घेरना) पु० पीसी हुई दाल की टिकिया जिसको घी अथवा तेल में तलकर खाते हैं, चक्र।

प्रा० बड़ा (सं० वड्, बल्=घेरना) गु० जेठा, प्रधान, मुखिया, बड़ी उमर का, महा।

प्रा० बड़ाकरना बोल० बढ़ाना, २ चिराग़ को बुझा देना।

प्रा० बड़ाबोल बोल० घमंड की बात।

प्रा० बड़ेबोलकासिरनीचा बोल० घमंड से ख़राबी होती है।

प्रा० बड़ारास्तापकड़ना बोल० मर जाना, क़ज़ा करना।

प्रा० बड़ेपेटवालाहोना बोल० संतोषी होना, धीर होना, क्षमावान् होना।

प्रा० बड़ाई (सं० वड्ता) भा० स्त्री० बड़ापन, बड़प्पन, महत्त्व, २ सराहना, स्तुति, प्रशंसा, ३ घमंड, अभिमान।

प्रा० बड़ाईकरना } बोल० सरा-
बड़ाई मारना } हना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, २ घमंड करना, शेख़ी बघारना, डींग मारना, लम्बी चौंड़ी हाँकना, अपनी सराहना करना।

प्रा० बड़ाईदेना बोल० आदर देना, इज़्ज़त देना।

प्रा० बड़ी (सं० वटी) स्त्री० एक तरह की खाने की चीज जो दाल की बनती है और उसकी तरकारी की जाती है, २ (बड़ा) बड़ी उमर की स्त्री, ३ गु० बड़ाशब्द का स्त्रीलिङ्ग।

प्रा० बड़ीबातनहीं बोल० कुछ

कठिन नहीं ।

०**बढ़ई** (सं० वर्द्धकि, वृध्=बढ़ाना) पु० खाती, सुतार, मिस्तरी ।

०**बढ़ती** } (सं० वृद्धता, वृध्=ब-
बढ़ंती } ढ़ना) स्त्री० अधिकाई, वृद्धि, सम्पदा का बढ़ना, तरक़्क़ी, उन्नति ।

०**बढ़ना** (सं० वर्द्धन, वृध्=बढ़ना) क्रि० अ० अधिक होना, बहुत होना, ऊँचा होना, २ आगे चलना ।

०**बढ़चलना** बोल० ढीठ होना, अभिमानी होना ।

०**बढ़जाना** बोल० अन्दाज़ से बाहर होजाना ।

०**बढ़नी** स्त्री० झाड़ू, बुहारी !

०**बढ़ाना** क्रि० स० अधिक करना, बहुत करना, बड़ा करना, २ ऊँचा करना, लम्बा करना, ३ आगे लाना, ४ उठा लेजाना, अलग करदेना, ५ बन्द करना (दूकान को) ।

०**बढ़ाव** (बढ़ना) भा० पु० बढ़ती, अधिकाई, २ चढ़ाव, उभार ।

०**बढ़ावा** (बढ़ाना) पु० ख़ुशामद, तारीफ़, बड़ाई, २ उभाड़ ।

०**बढ़िया** (बढ़ना) गु० बहुत मोलका, महँगा, बहुमूल्य ।

०**वणिक्** (पण्=लेनदेन करना) पु० बनिया, महाजन, ब्योपारी, सौदागर ।

०**वणिक्पथ** पु० हट्ट, हाट, बाज़ार ।

प्रा० **बणिज** (सं० वाणिज्य) पु० ब्योपार, लेन देन, सौदागरी ।

प्रा० **बणिश्रा** } (सं० वणिक्) पु०
बनिया } महाजन, ब्योपारी, वैश्य, सौदागर, दूकानदार ।

प्रा० **बत** बात, क़ौल ।

प्रा० **बतबढ़ाव** बोल० बात बढ़ाना ।

प्रा० **बतबना** बोल० बातूनी, बात बतानेवाला ।

प्रा० **बतक़** (अ० बत्तख़) स्त्री० एक जल का जीव ।

प्रा० **बतकहाव** पु० } (सं० वा-
बतकही स्त्री० } र्त्ता, कथन) बातचीत ।

प्रा० **बतक्कड़** गु० बक्की, बातूनी, वाचाल, गपोड़िया ।

प्रा० **बतराना** (सं० वार्त्ता) क्रि० अ० बतियाना, बात चीत करना ।

प्रा० **बतलाना** } (सं० वद्=क-
बताना } हना) क्रि० स० जताना, चिताना, सुझाना, बुझाना, दिखाना, सिखलाना, समझाना, संकेत करना, इशारा करना, व्याख्या करना, अर्थ करना ।

प्रा० **बतास** (सं० वात) स्त्री० हवा, पवन, बाव, बयार, वायु ।

प्रा० **बतासा** } (बतास, हवा) पु०
बताशा } एकतरह की मिठाई, २ बुलबुला ।

प्रा० **बत्ती** (सं० वर्त्ति, वृत्=होना)

स्त्री० बाती, २ पलीता, ३ बाँस आदि की छड़, ४ लाख की डंडी, ५ पगड़ी जिसको सिपाही लपेट कर गोल कर लेते हैं ।

प्रा० **बत्तीजलाना** बोल० चिराग़ जलाना, दीया जलाना ।

प्रा० **बत्तीचढ़ाना** बोल० घाव में बत्ती डालना ।

प्रा० **बत्तीस** (सं० द्वात्रिंशत्) गु० तीस और दो, ३२ ।

प्रा० **बत्तीसी** स्त्री० दाँतों की लड़ी, सब दाँत, बत्तीसी दिखाना, बोल० दाँत दिखाना, हँसना ।

प्रा० **बत्तीसी** स्त्री० बत्तीस सुपारी और बत्तीस छुहारा और रुपया जो दुलहा दुलहिन के ननिहाल को जाता है उसे बत्तीसी कहते हैं ।

प्रा० **बथुवा** (सं० वास्तूक) पु० एक तरह का साग ।

प्रा० **बदना** (सं० वदन, वद्= कहना) क्रि० स० दाँव लगाना, मानना, २ रचना, भाग में लिखा जाना ।

सं० **बदर** (बद्=दृढ़होना या ठहरना) पु० बेर का वृक्ष, बिनौला, कपासबीज ।

सं० **बदरि** (बद्=दृढ होना) पु० बेर, एक फल का नाम ।

सं० **बदरिकाश्रम** (बदरिका + आश्रम) पु० बदरिनाथ, बदरिनाथ का पहाड़ ।

प्रा० **बदलना** (अ० बदल) क्रि० स० पलटना, बदला करना, उलटना, और तरह से बना देना ।

प्रा० **बदली** (बादल) स्त्री० बादल, मेघ ।

प्रा० **बदली** (बदलना) स्त्री० तबदीली, एक जगह से दूसरी जगह जाना ।

प्रा० **बदा** (सं० वद्=कहना) गु० होनहार, भवितव्य ।

सं० **बदि** } स्त्री० अँधेरा पाख,
बदी } कृष्णपक्ष, महीने का पहिला पाख ।

प्रा० **बद्दल** (सं० वारिद) पु० बादल, मेघ, घटा ।

सं० **बद्ध** (बन्ध्=बाँधना) र्म० पु० बाँधा हुआ, रुका हुआ, दृढ, रचित, वृत्तभेद ।

सं० **बध** (बध्=मारना) पु० मारण, हिंसा, हत्या, हनना ।

प्रा० **बधना** (सं० वधन, वध्=मारना) क्रि० स० मारडालना ।

प्रा० **बधना** } पु० लोटे ऐसा
बदना } एक मिट्टी का छोटा बरतन ।

प्रा० **बधाई** स्त्री० } मङ्गलाचार,
बधावा पु० } आनन्दमङ्गल, आनन्द के गीत, जयजयकार, मुबारकबादी, खुशी का बाजा ।

सं० बधक बधिक बधी (बध्=मारना) क०पु० शिकारी, बहेलिया, आखेटकी, मारने वाला।

सं० बधनीय (बध्+अनीय) र्म्म० पु० बधार्ह, मारने योग्य।

प्रा० बधिया (सं० बन्ध्=बाँधना) पु० नपुंसक बैल, आख़्ता।

सं० बधिर (बन्ध्=बन्ध होना अर्थात् जिसकी सुनने की इन्द्रिय बँधी हुई हो) गु० बहरा, कनफूटा।

सं० बधू (बन्ध्=बाँधना वा वह्=लेजाना) स्त्री० बहू, लड़के की स्त्री, २ भार्या, पत्नी, जोरू, स्त्री-कुलबधू=उत्तम घराने की स्त्री, देवबधू=देवी, देवता की स्त्री।

सं० बधूटी (बधू) स्त्री० युवती स्त्री, पत्नी, भार्या, जोरू।

सं० बध्य (बध्=मारना) र्म्म० पु० मारने योग्य।

सं० बध्यस्थान धि० फाँसी देने की जगह, बधभूमि।

प्रा० बन (सं० वन) पु० जंगल, आपसे उगे वृक्ष।

प्रा० बनजात्रा (सं० वनयात्रा) स्त्री० व्रजके ८४ वन की यात्रा।

प्रा० बनज बनिज (सं० वाणिज्य) पु० ब्योपार, लेन देन, सौदागरी।

प्रा० बनजर (सं० बन्ध्या) स्त्री० पड़ती धरती, ऊषर, वह धरती जिसमें कुछ नहीं उपज सक्ता।

प्रा० बनजारा (सं० वणिज्) पु० जो नाज आदि वणिज् की चीज़ों को बैलों पर लाद कर लेजाते हैं।

प्रा० बनठनके क्रि० पु० सज धज के, सिंगार करके।

प्रा० बनत स्त्री० गोटा किनारी का काम।

प्रा० बनमानुष (सं० वनमानुष) पु० एक जानवर जिसका डील डौल आदमी का सा होता है, २ जंगली, वनवासी।

प्रा० बनमाल (सं० वनमाला) स्त्री० फूलों की माला जो पैरों तक लम्बी बनाई जाती है और बहुत बार तुलसी, कुन्द, मन्दार, पारिजात और कमलके फूलों से बनती है।

प्रा० बनरा बना पु० दुलहा, वर।

प्रा० बनरी बनी स्त्री० दुलहिन।

प्रा० बनसी (सं० बडिश) स्त्री० मछली पकड़ने का काँटा, २ (सं० वंशी) मुरली, बांसुरी।

प्रा० बनात स्त्री० ऊनी कपड़ा जो दलदार मोटा होता है।

प्रा० बनाना क्रि० स० रचना करना, तैयार करना, निर्माण करना, २ ठीक करना, ३ उठाना (जैसे मकान,

दीवार आदि), ४ इकट्ठा रखना, मिलाना, ५ ग्रन्थरचना, ६ सँवारना, सिंगारना, ७ मेल कराना, मिलाना, मनाना, ८ पकाना, ९ सुधारना, मरम्मत करना, १० निकालना, ११ शुद्ध करना, १२ खिजलाना, चिढ़ाना, ठट्ठा करना, चुहल करना, १३ सिरजना, पैदा करना, १४ पूरा करना, १५ शरमाना, लजाना, १६ फबती कहना ।

प्रा० बनाव (बनाना) भा० पु० सिंगार, सँवार, २ मेल, मिलाप, बनाव करना, बोल० सँवारना, सिंगार करना ।

प्रा० बनावट (बनाना) भा० स्त्री० डौल, २ रचना, ३ कल्पना, झूठी दिखावट ।

प्रा० बनिक (सं० वणिक्) पु० बनिया, महाजन, ब्योपारी, सौदागर ।

प्रा० बनेला, बनैला (सं० वन्य) गु० जङ्गली।

प्रा० बनैटी, बनेटी स्त्री० एक लकड़ी जिसके दोनों ओर मशाल बाँध कर गोल गोल फिराते हैं जिससे आग का दोहरा चक्कर बनजाता है ।

सं० बन्ध (बन्ध्=बाँधना) पु० बाँधना, २ गाँठ, पट्टी, ३ क़ैद ।

प्रा० बन्ध में पड़ना या आना बोल० क़ैदी होना, क़ैद में आना।

सं० बन्धक (बन्ध्=बाँधना) पु० धरोहर, थाती, गिरों, २ बाँधना, क़ैद ।

सं० बन्धकदाता (बन्धक=ऋण, दाता=देनेवाला, दा=देना) क० पु० राहिन ।

सं० बन्धकधारी क० पु० मुरतहिन।

सं० बन्धनपत्र रेहन्नामा ।

सं० बन्धनालय (बन्धन+आलय) धि० पु० क़ैदख़ाना ।

सं० बन्धन (बन्ध्=बाँधना) पु० बाँधना, २ गाँठ, ३ क़ैद, ४ रोक, रुकाव, ५ लगाव, जुड़ाव ।

प्रा० बन्धना (सं० बन्धन) क्रि० अ० बन्ध होना, रुकना, अटकना, २ गिरह लगना, जोड़ा जाना ।

सं० बन्धान भा० पु० रोज़ाना, वज़ीफ़ा ।

सं० बन्धित (बन्ध्+इत) र्म० पु० बाँधागया, मुक़य्यद ।

सं० बन्धु (बन्ध्=बाँधना, जो स्नेह से आपस में अपने मनोंको बाँधते हैं) पु० भाई, सगोत्र, नातेदार, नतैत, मित्र, सखा ।

प्रा० बन्धुआ पु० क़ैदी ।

सं० बन्धूक (बन्ध्=बाँधना) पु० एक तरह का लाल फूल गुलदुपहरिया, लालबूटी, लालछीट ।

सं० बन्धुर पु० मुकुर, तिलकल्क, बधिर, हंस, विरण्ड, विहङ्ग, गु० रम्य, नम्र, ऊँच नीच, स्त्री० वेश्या,

सत्तू ।

सं० बन्धुल पु० असतीपुत्र, गु० रम्य, सुन्दर, नम्र ।

प्रा० बन्धेज (सं० बन्ध्=बाँधना) पु० किफ़ायत, कमख़र्ची, २ दृढ़ता, ३ रोज़ीना, वज़ीफ़ा ।

सं० बन्ध्या (बन्ध्=बाँधना) स्त्री० बाँझ स्त्री, अपुत्रवती ।

प्रा० बन्ना }
बनना } क्रि० अ० होना, तैयार होना, २ सुधरना, मरम्मत होना, ठीक होना, ३ सफल होना, सिद्ध होना, बन पड़ना ।

प्रा० बनआना बोल० हो सकना, २ भाग जागना, क़िस्मत खुलना ।

प्रा० बनजाना बोल० होजाना, सम्हल जाना ।

प्रा० बनपड़ना बोल० सुधारना, भलाहोना, बन्ना, होसकना, सफलहोना, सिद्धहोना ।

प्रा० बनबनकरबिगड़ना बोल० तैयार होकर ख़राब होजाना ।

प्रा० बनाचुना बोल० सँवाराहुआ, सिंगाराहुआ, सजाहुआ ।

प्रा० बन्नाठन्ना बोल० ख़ूब सिंगार करना, आरास्ता होना ।

प्रा० बनाबनाया बोल० तैयार, पूरा, सिद्ध, कामिल ।

प्रा० बनारहना बोल० ठहरारहना, क़ायमरहना ।

प्रा० बपुरा गु० बेवश, अनाथ, दीन, कंगाल ।

प्रा० बपौती (बाप) स्त्री० पैतृक धन, विरासत, बाप की द्रव्य ।

प्रा० बफारा (सं० बाष्प=भाफ़) पु० भाफ़ ।

प्रा० बफारालेना बोल० भाफ़को बन्द करके शरीर में जाने देना ।

प्रा० बबूर }
बबूल } (सं० वर्वुर) पु० एक कँटीले वृक्ष का नाम ।

सं० बभ्र पु० गमन, चाल, मर्यादा, गु० चलनेवाला ।

सं० बभ्रिक पु० पालक, रक्षक, सुखदायी ।

सं० बभ्रु (बभ्रु=गमन करना) पु० शिव, विष्णु, नकुल, न्योला, वह्नि, मुनिभेद, देशभेद, गु० धूसरवर्ण, पीतवर्ण, सुन्दर ।

सं० बभ्रुधातु पु० सोना, धतूरा, गेरू ।

प्रा० बया (सं० वयस्, अज्=जाना) पु० एक पखेरू जो सिखलाने से स्त्रियों की टिकुली उतार लाता है ।

प्रा० बयार (सं० वायु) स्त्री० हवा, पवन, बाव, बतास, वायु, बयार ।

प्रा० बयालीस (सं० द्विचत्वारिंशत्) गु० चालीस और दो, ४२ ।

प्रा० बयासी (सं० द्व्यशीति, द्वि=दो, अशीति=अस्सी) गु० अस्सी और दो, ८२ ।

प्रा० बर (सं० वर, वृ=पसन्द करना) पु० वरदान, आशिष, चाही हुई

चीज़, २ पति, स्वामी, दुलहा, ३ जँवाई, गु० सबसे अच्छा, श्रेष्ठ, उम्दा ।

प्रा० बरखना बरसना } (सं० वर्षण, वृष्=बरसना) क्रि० अ० पानी पड़ना, मेह गिरना, वर्षा होना ।

प्रा० बरजना (सं० वर्जन, वृज्=छोड़ना) क्रि० स० रोकना, मनअ करना, निषेध करना ।

सं० बरट पु० हंस, बर्र, भिड़ ।

प्रा० बरत (सं० व्रत) पु० उपास, उपवास, रोज़ा ।

प्रा० बरतन बर्तन } पु० बासन, पात्र, भाँड़ा ।

प्रा० बरतना बर्तना } क्रि० स० काम में लाना, इस्तअमाल करना ।

सं० बरदान (बर=चाही हुई चीज़, दा=देना) पु० आशिष, दुआ ।

प्रा० बरध (सं० बलीवर्द) पु० बैल ।

प्रा० बरन (सं० वरम्) समुच्च० बल्कि, २ (वर्ण शब्द को देखो) ।

प्रा० बरनन (सं० वर्णन) पु० बखान, बयान, २ सराह, स्तुति ।

प्रा० बरननकरना बरनना } क्रि० स० बखान करना, बयान करना, सराहना ।

प्रा० बरना (सं० वृ=पसन्द करना) क्रि० स० ब्याह करना, विवाह करना, शादी करना ।

प्रा० बरबरी (बार बैरी barbary एक जगह आफ्रिका में है वहाँ की बकरी मोटी और बड़ी होती है) स्त्री० एक तरह की बकरी ।

प्रा० बरबस पु० बरयाई स्त्री० } बरज़ोरी, ज़ोरावरी, बल, ज़ोर, बड़ाई, क्रि० वि० ज़ोरावरी से, ज़बरदस्ती से, हठसे ।

प्रा० बरमा बर्मा } पु० बढ़हियों का एक औज़ार जिससे लकड़ी छेदतेहैं ।

प्रा० बरराना क्रि० स० नींदमें कुछ कहना ।

प्रा० बरवा पु० एक छन्दका नाम, २ एक रागिणी का नाम ।

प्रा० बरस (सं० वर्ष) पु० साल, संवत् ।

प्रा० बरसगाँठ (सं० वर्षग्रन्थि, वर्ष=साल, ग्रन्थि=गाँठ) स्त्री० सालगिरह, जन्मदिन ।

प्रा० बरसौढ़ी (सं० वार्षिक) स्त्री० सालियाना महसूल, बरस का कर ।

प्रा० बरहा पु० गायों के चरने का खेत, चरागाह, २ खेत में पानी लेजाने की राह ।

प्रा० बरही पु० मोर, मयूर ।

प्रा० बरात (सं० व्रात, वृ=पसन्द करना) स्त्री० दुलहे की सवारी की धूमधाम ।

० बराना क्रि० स० बचाना, दूर हाँकना, हरादेना, हटादेना।

० बराह (सं० वराह, वर=हित अर्थात् अपने हित के लिये और आ+हन्=मारना या खोदना अर्थात् अपने खानेकी चीज़ ढूंढनेमें जो ज़मीन को खोदता है) पु० सुअर, शूकर, २विष्णुका तीसरा अवतार।

० बरिबण्ड गु० बलवान्, तेजस्वी, ज़ोरावर, २ दुष्ट, बद।

० बरी (वर) स्त्री० वह कपड़ों का जोड़ा जो दुलहाके घर से दुलहिन को भेजा जाता है, २ (वटी) बड़ी।

० बरु (सं० वर) क्रि० वि० चाहे, परन्तु, लेकिन, भला, अच्छा।

० बरुण (सं० वरुण, वृ=घेरना वा पसन्द करना) पु० पानी का देवता और पश्चिम दिशा का दिक्पाल।

० बरुणालय (बरुण + आलय) वि० पु० समुद्र, सागर।

० बरुणी (सं० वरुणी, वृ=रुकना) स्त्री० पपनी, आँख परके बाल, बिन्ने, मिज़गां।

० बर्छी स्त्री० शक्ति, सांग, सेल।

० बर्बर (बर्ब=जाना) गु० मूर्ख, जंगली, हबशी, बक्की, चर्बज़बान।

० बर्ष (सं० वर्ष, वृष्=बरसना या पैदाहोना) पु० साल, बरस, संवत्।

० बर्षा, बर्खा (सं० वर्षा, वृष्=बरसना) स्त्री० बरसात, मेह, २ वर्षाऋतु।

प्रा० बर्सात (सं० वर्षा) स्त्री० वर्षाऋतु, चतुर्मास, पावसऋतु, वर्षाकाल, ऐयाम बारिश।

प्रा० बर्सी (बरस) स्त्री० बरसवें दिन का श्राद्ध।

सं० बर्ह पु० मोरपंख, २पल्लव, पत्ता।

सं० बल (बल्=जीना) पु० ज़ोर, शक्ति, सामर्थ्य, २ बलदेवजी का नाम, ३ सेना, ४ स्थूलता, मुटाई, ५ गन्धरस, ६ रूप, ७ शुक्र, बीज, वरुणवृक्ष, ८दैत्यभेद, ९ काकपक्षी।

प्रा० बल (सं० बलि) स्त्री० बलि, बलिदान, चढ़ावा।

प्रा० बल स्त्री० ऐंठ, मरोड़, वट।

प्रा० बलखाना बोल० ऐंठजाना, क्रोध करना, गुस्सा करना।

सं० बलज पु० क्षेत्र, पुरद्वार, अन्न, संग्राम, दर्पण, शीशा, स्त्री० पृथ्वी, श्रेष्ठ स्त्री, जाही जूही।

प्रा० बलदेना बोल० मरोड़ना, ऐंठना।

प्रा० बलबे बोल० शाबाश, वाहवाह।

प्रा० बलजाना, बलबलजाना बोल० बलिहारीजाना, निछावर होना।

प्रा० बलदेना, बलकरना बोल० बलिदान करना, क़ुर्बानीकरना।

प्रा० बलदाऊ (सं० बलदेव) पु० श्रीकृष्ण का बड़ा भाई।

सं० बलदेव (बल+देव) पु०

श्रीकृष्ण का बड़ा भाई ।

प्रा० **बलना**
बरना } क्रि० अ० जलना ।

सं० **बलनिधि** (बल + निधि) गु० बलवान्, बहुत बली, ज़ोरावर ।

सं० **बलभद्र** (बल + भद्र) पु० बलराम, श्रीकृष्ण का बड़ा भाई ।

सं० **बलराम** (बल=ज़ोर, रम्=खेलना) पु० बलदेव, शेषजी का अवतार और श्रीकृष्णका बड़ाभाई।

सं० **बलवत्** गु० बलयुक्त, बली, पुष्ट, मल्ल, बलवान् ।

सं० **बलवन्त**
बलवान् } (बल=ज़ोर, वत्=वाला) गु० ज़ोरावर, बली, सामर्थी ।

सं० **बलबीर** (बल=बलदेव जी, बीर=भाई) पु० श्रीकृष्णका नाम ।

प्रा० **बलवा** पु० दंगा, झगड़ा, फ़साद, बग़ावत ।

सं० **बलानुज** (बल=बलभद्र, अनुज=छोटा भाई) पु० श्रीकृष्ण ।

सं० **बलाराति** (बल=असुर, आराति=शत्रु) पु० इन्द्र, देवराज ।

सं० **बलाका** स्त्री० बकपंक्ति, बगुलाओं की क़तार ।

सं० **बलात्** अव्य० हठात् ।

सं० **बलात्कार** पु० हठ, बरज़ोरी, ज़बरदस्ती ।

सं० **बलाहक** (बलाह=पानी, बल=जाना वा घेरना, अर्थात् जिसमें पानी हो अथवा बल=कंपन, हा=छोड़ना) पु० बादल, बद्दल, मेघ, घन, दैत्य, नागभेद ।

सं० **बलि** (बल्=जीना) पु० एक राजा का नाम जिसको विष्णु भगवान्ने वामनावतार लेके पाताल में भेज दिया, २ नैवेद्य, देवता का भोग, भेंट, क़ुर्बानी ।

सं० **बलिदान** (बलि + दान) पु० देवता के सामने बकरा आदि पशुको मारके चढाना, देवता के लिये भोग, नैवेद्य ।

सं० **बलिसद्म** पु० अंकुश, चाबुक, कोड़ा, बन्दरों का समूह ।

सं० **बलिष्ठ** गु० बड़ा बलवाला ।

प्रा० **बलिहारी** (सं० बलि) स्त्री० निछावर, तसद्दुक़, क़ुर्बान जाना ।

प्रा० **बलिहारीजाना** बोल० निछावर होना, बलजाना, बलबलजाना।

सं० **बली** (बल) गु० ज़ोरावर, बलवान्, पराक्रमी ।

सं० **बलीबर्द** पु० साण्ड, साँड़ ।

सं० **बलीमुख**
बलिमुख } (बली वा बलि=ढीलाचमड़ा, बल्=हिलना वा घेरना, मुख=मुँह अर्थात् जिसके मुँह पर का चमड़ा ढीला हो) पु० वानर, बंदर, कपि, मर्कट ।

सं० **बलीयस्**
बलीयान् } गु० अत्यन्तबली, बड़ा ज़ोरावर ।

प्रा० **बलुवा** (बालू) गु० बालूका,

बालूमय, रेतला, करकरा ।

बल्लम पु० भाला, सेल, बर्छा, नेज़ा ।

बल्ली स्त्री० नाव का डंडा, लग्गी, बल्ली मारना, बोल० नावचलाना ।

बवासीर पु० अर्शरोग, गुदा में मस्सों का रोग ।

बस (सं० वश, वश्=चाहना) पु० क़ाबू, बल, ज़ोर, २ अधिकार, गु० आधीन, वश करना, बोल० आधीन करना, दबाना, वश में आना, क़ाबू में आना, आधीन होना ।

बस (بس) गु० बहुत, पूरा, बहुतेरा, चुपबसकरना, बोल० ठहरना, करचुकना ।

बसन (सं० वसन, वस्=पहनना) पु० कपड़ा, जोड़ा, वस्त्र, लूगा ।

बसना (सं० वसन, वस्=रहना) क्रि० अ० रहना, टिकना, बासा करना, आबाद होना, घर बनाना ।

बसन्त (सं० वसन्त, वस्=रहना या सुगन्ध आना) स्त्री० एक ऋतु का नाम जो चैत और कुछ वैशाख के महीने तक रहती है, २ एक राग का नाम, बसन्त फूलना, बोल० सरसों के फूलों का खिलना, आँखों में बसन्त फूलना, बोल० तिरमिराना, -बसन्त के घरकी भी ख़बर है, -कहावत-यह जानते भी हो क्या हो रहा है ।

प्रा० **बसन्ती** (वसन्त) पु० एक प्रकार का पीलारंग, गु० पीला ।

प्रा० **बसाना** (बसना) क्रि० स० आबाद करना, बस्ती कराना, आदमियों से भरना, २ (वस्=सुगन्धित होना) सुगन्धित करना ।

प्रा० **बसूला** पु० वह औज़ार जिस से बढ़ई लकड़ी छीलते हैं ।

प्रा० **बसेरा** (सं० वास) पु० बासा, रहने की जगह, पखेरू का घोंसला अथवा अड्डा, पखेरू के रात को रहने का बासा ।

प्रा० **बसुदेव** (सं० वसुदेव, वसु=धन, दिव्=चमकना) श्रीकृष्ण का बाप और शूरसेन का बेटा ।

प्रा० **बस्ती** (सं० वसती, वस्=रहना) स्त्री० छोटा गाँव, आबादी ।

प्रा० **बस्त** / **बस्तु** } (सं० वस्तु, वस्=रहना या ढकना) स्त्री० चीज़, पदार्थ ।

प्रा० **बस्त्र** (सं० वस्त्र, वस्=पहनना) पु० कपड़ा, लूगा, वसन ।

प्रा० **बहकना** क्रि० स० धोखा खाना, २ नशे में कुछ कहना, ३ नींद में कुछ बोलना, ४ बढ़के कहना ।

प्रा० **बहकाना** क्रि० स० धोखा देना, भुलाना ।

प्रा० **बहँगी** (सं० विहंगी) स्त्री०

बहँगी वा काँवरि ।

प्रा० बहत्तर (सं० द्विसप्तति) गु० सत्तर और दो, ७२ ।

प्रा० बहधा (सं० बाधा) पु० दुःख, आपदा, २ रुकाव ।

प्रा० बहन
बहिन (सं० भगिनी) स्त्री० मांकी बेटी, सहोदर, २ सखि, बहना ।

प्रा० बहना (सं० वह्=बहना या ले जाना) क्रि० अ० चलना, पानी का जारी होना, २हवाका चलना ।

प्रा० बहते पानी में हाथ धोना कहावत—जबतक अपना काम बना रहे तबतक अच्छा काम करलेना ।

प्रा० बहनेऊ
बहनोई (सं० भगिनीपति) पु० बहिन का पति ।

प्रा० बहरा
बहिरा (सं० बधिर) गु० वह आदमी जिसके सुनने की इन्द्रिय ख़राब होगईहो, कनफूटा।

प्रा० बहल
बहली स्त्री० एक तरह की गाड़ी ।

प्रा० बहलाना क्रि० स० प्रसन्न करना, २ भुलाना, बहकाना, किसी बात में लगा रखना ।

प्रा० बहेलिया पु० शिकारी, धनुर्धारी ।

प्रा० बहाना (बहना) क्रि० स० चलाना, पानी जारी करना, २ पु० छल, कपट, हीला ।

प्रा० बहादेना बोल० उजाड़ना, नाश करना ।

प्रा० बहा फिरना बोल० भटकता फिरना, इधरउधर फिरना या घूमना।

प्रा० बहाव (बहना) भा० पु० पानीका जारी होना, बाढ़, चढ़ाव।

प्रा० बहिर्मुख (सं० बहिर्=बाहर, मुख=मुँह) गु० धर्मविमुख, अधर्मी, बाग़ी ।

प्रा० बही स्त्री० महाजनों के हिसाब रखने की किताब जो एक किनारे की ओर सीं जाती है ।

प्रा० बहीर
बहीड़ स्त्री० सेना की सामग्री, डेराडण्डा आदि।

सं० बहु (बहि=बढ़ना) गु० बहुत, ढेर, बड़ा, अधिक ।

प्रा० बहुत (बहु) गु० अधिक।

प्रा० बहुतगई थोड़ी रही बोल० उमर पूरी हो चुकी है ।

प्रा० बहुतात
बहुतायत (सं० बहुता) स्त्री० अधिकाई ।

सं० बहुतिथ गु० बहुत दिन, बहुत बेर, अनेकबार, अनेक, बहुत ।

प्रा० बहुतेरा (सं० बहुतर) गु० बहुतसा, बहुतही बहुत ।

सं० बहुधा (बहु=बहुत, धा=प्रकार) क्रि० वि० बहुत प्रकार से, बहुत भाँति से, बहुत बार, अकसर ।

सं० बहुबाहु (बहु=बहुत, बाहु=भुजा) पु० रावण व सहस्रबाहु आदि ।

सं० बहुमूल्य (बहु=बहुत, मूल्य=मोल) गु० बहुत मोल का, बढ़िया, महँगा ।

प्रा० बहुरि / बहोरी } समुच्च० फिर, पुनि, और।

प्रा० बहुरूपिया (सं० बहुरूपी) पु० भाँड़, स्वाँगी ।

सं० बहुवचन (बहु + वचन) पु० बहुतको जतलानेवाला, बहुत बातें ।

सं० बहुल गु० प्रचुर, बहुत, पु० कृष्णवर्ण, अग्नि, आकाश ।

सं० बहुलगन्धा स्त्री० एला, इलायची।

सं० बहुविध (बहु=बहुत, विध=प्रकार) क्रि० वि० बहुत प्रकार से, अनेक भाँति से ।

सं० बहुश्रुत (श्रु=सुनना) गु० पण्डित, विद्वान्, शास्त्री ।

प्रा० बहू (सं० वधू) स्त्री० दुलहिन, भार्या, जोरू, २ पतोहू, बेटेकी दुलहिन ।

प्रा० बाँक (सं० वङ्क, वकि=टेढ़ा होना) स्त्री० टेढ़ापन, तिर्छापन, २ झुकाव, ३ नदी का घुमाव, ४ दोष, अपराध, दुष्टता, ५ एक गहने का नाम जो बाज़ू पर पहनते हैं, ६ एक शस्त्र का नाम जो कटार का ऐसा होता है ।

प्रा० बाँका / बाँकुरा } (सं० वङ्क) गु० टेढ़ा, तिर्छा, २ बहादुर, वीर, ३ छैला, अकड़ैत, अकड़वेग ।

प्रा० बाँचना (सं० वचन, वच्=बोलना) क्रि० स० पढ़ना, पाठ करना, बंचना, क्रि० अ० बचना, जीता रहना ।

प्रा० बांछा (सं० वाञ्छा) स्त्री० इच्छा, चाह, अभिलाषा ।

प्रा० बांछित (सं० वाञ्छित) गु० चाहा हुआ, इच्छित ।

प्रा० बाँझ (सं० बन्ध्या) स्त्री० वह स्त्री जिसके लड़का बाला न होताहो ।

प्रा० बाँट (सं० वण्टक, वटि=बाँटना) पु० भाग, हिस्सा, अंश, २ बटखरा, ३ गाय-भैंस का दूहते समय का खाना ।

प्रा० बाँटना (सं० वण्टन, वटि=हिस्सा करना) क्रि० स० हिस्सा करना, भाग देना ।

प्रा० बाँड़ा (सं० वण्ड, वडि=काटना) गु० पूंछकटा, बेपूंछ, २ बेशरम, निर्लज्ज ।

प्रा० बाँदी स्त्री० लौंड़ी, दासी, चेरी ।

प्रा० बाँध (सं० बन्ध) पु० पानी की रोक, तालाब की पाल, मेंड़बन्ध, आड़।

प्रा० बाँधना (सं० बन्धन) क्रि० स० जकड़ना, कसना, २ बन्ध करना, ३ पानी रोकना, ४ ठहराना, थामना, ५ लपेटना, ६ गाँठ देना, गिरह देना ।

प्रा० बाँधनू (सं० बन्ध्=बाँधना) पु० एक तरह का रँगना जिसमें

कपड़े को बहुत सी जगह बाँध कर के रंग चढ़ाते हैं कि हर एक रंग जुदा २ दिखलाई दे।

प्रा० बाँस (सं० वंश) पु० एक पेड़ जिसकी लकड़ी पोली होती है।

प्रा० बाँस पर चढ़ना बोल० कलङ्की होना, बदनाम होना।

प्रा० बाँसफोड़ पु० बाँस चीरकर टोकरी आदि बनानेवाला।

प्रा० बाँसरी
बाँसली } (सं० वंशी) स्त्री० मुरली, वंशी, वेणु।
बाँसुरी

प्रा० बाँह (सं० बाहु) स्त्री० भुजा, बाजू, २ आस्तीन।

प्रा० बाँहटूटना बोल० कोई सहायक न रहना।

प्रा० बाँह चढ़ाना बोल० लड़ाई को तैयार होना।

प्रा० बाँहदेना बोल० सहायता देना, मदद करना।

प्रा० बाँह पकड़ना बोल० सहायता करना, पक्ष करना, आश्रयदेना।

प्रा० बाँहबल बोल० सहायक, साथी, हिमायती।

प्रा० बाँहगहना बोल० सहायता करना।

प्रा० बाँहगहेकीलाज गु० जिसको सहायता करे उसको छोड़ना बड़ी लाज की बात है।

प्रा० बाई स्त्री० महारानी (मरहठों में), २ कंचनी।

प्रा० बाई (सं० वायु) स्त्री० हवा, बादी, बात रोग।

प्रा० बाई पचना कहावत–शेखी उतरना, दबजाना, उदास होना।

प्रा० बाई में भड़कना बोल० बड़बड़ाना, बकना।

प्रा० बाईस (सं० द्वाविंशति) गु० बीस और दो, २२।

प्रा० बाखर
बाखल } पु० आँगन, चौक, अँगनाई, कई एक घर जो एक हाते में होते हैं।

प्रा० बाग
बागुरु } स्त्री० बागडोर, लगाम, फंदा, जाल।

प्रा० बागमोड़ना बोल० शीतला का ढल जाना।

प्रा० बाग छूटना बोल० बेवश होना, वश में न रहना।

प्रा० बागडोर स्त्री० वह रस्सी जिस को लगाम में लगा कर साईस घोड़े को ले चलता है।

प्रा० बागा (सं० वस्त्र) पु० जोड़ा, पहनने के बहुत अच्छे कपड़े, खिलअत।

प्रा० बाघ
बाघा } (सं० व्याघ्र) पु० नाहर, शेर।

प्रा० बाघम्बर (सं० व्याघ्राम्बर) पु० बाघ की खाल, शेर की पोस्त।

प्रा० बाछना (सं०वाञ्छन=चाहना) क्रि० स० छाँटना, चुनना।

प्रा० **बाजन** **बाजा** (सं० वाद्य) पु० बजाने का यन्त्र, जो चीज़ बजाने के लिये बनाई जाय, बाजा गाजा, बोल० बहुत से बाजाओं की आवाज़ ।

प्रा० **बाजना** (सं० वाद्य, वद्=शब्द करना) क्रि० अ० आवाज़ निकलना, २ प्रसिद्ध होना ।

प्रा० **बाजरा** पु० एक प्रकार का नाज जो मारवाड़ में बहुत पैदा होता है ।

प्रा० **बाज़ू** **बाज़ूबन्द** पु० एक गहना जिसको बाज़ू पर बाँधते हैं, भुजबन्ध ।

प्रा० **बाट** (सं० वाट, वट्=घेरना) पु० मार्ग, रस्ता, राह, डगर, पन्थ ।

प्रा० **बाटकाटना** बोल० रास्ताचलना, सफ़र तैकरना ।

प्रा० **बाटिका** (सं० वाटिका, वट्=घेरना) स्त्री० बाड़ी, फुलवाड़ी, बग़ीचा, उपवन ।

प्रा० **बाड़** (सं० वाट, वट्=घेरना) स्त्री० छूरी या तलवार की धार, २ अहाता या घेरा जो काँटों से बनाते हैं, ३ सिपाहियों की क़तार ।

प्रा० **बाड़उड़ाना** बोल० एकसाथ बंदूक़ चलाना, बंदूक़ों को फ़ैर करना ।

प्रा० **बाड़झाड़ना** बोल० बहुत आदमियोंका एकसाथ बंदूक़ दागना ।

प्रा० **बाड़दिलवाना** बोल० सान पर चढ़ाना, तीखा करना, तीक्ष्ण करना ।

सं० **बाड़व** पु० नरक, समुद्र की अग्नि, स्त्रियों का कान, घोड़ों का समूह, ब्राह्मण ।

प्रा० **बाड़बाँधना** बोल० काँटों से खेत को वा किसी जगह को घेरना ।

प्रा० **बाड़रखना** बोल० तीखा करना, सान पर चढ़ाना ।

प्रा० **बाड़हीजबखेतको खाय तो रखवालीकौनकरे** कहावत—जिस पर भरोसा हो जब वही चुराले तब कोई चीज़ नहीं बचसक्ती ।

प्रा० **बाड़ा** (वट्=घेरना) पु० अहाता, घेरा ।

प्रा० **बाड़ी** (सं० वाटी, वट्=घेरना) स्त्री० छोटा बाग़, बग़ीचा, उपवन, बग़ीचे में घर, बंगाली घरको बाड़ी कहते हैं ।

प्रा० **बाढ़** (बाढ़ना) स्त्री० बढ़ती, अधिकाई, नदी के पानी का उभड़ना या अपनी हद से अधिक बढ़ आना ।

प्रा० **बाढ़ना** (सं० वृध्=बढ़ना) क्रि० अ० बढ़ना, उमँडना ।

प्रा० **बाण** **बान** (सं० बाण, बण्=शब्द करना) पु० तीर, २ मूँज की बनी हुई रस्सी, विरोचन का पुत्र बाणासुर ।

सं० **बाणलिङ्ग** पु० बाणासुर ने

नर्मदा नदीके तट पर शिवमूर्ति स्थापन की उसको कहते हैं ।

प्रा० **बाणि** }
बाणी } (सं० वाणि, वण्=शब्द करना) स्त्री० बोली, सरस्वती, उक्ति, वचन ।

सं० **बाणिज्य** (पण्=लेनदेन करना) पु० ब्यौपार, बनिज, सौदागरी, लेनदेन ।

प्रा० **बात** (सं० वार्ता, वृत्=होना) स्त्री० बोल चाल, कथा, समाचार, बोली, कहना, २ विषय, ३ प्रश्न, सवाल, ४ कारण, सबब, ५ मामला, ६ वृत्तान्त, दशा, अवस्था, ७ हठ ।

प्रा० **बातउठाना** बोल० बातसहना, बातचलाना ।

प्रा० **बातकरना** बोल० बोलना, बातचीत करना, कहना ।

प्रा० **बातकाटना** बोल० दूसरे की बात को रद्द करना ।

प्रा० **बातकाबतक्कड़करना** बोल० छोटीसी बात पर बहुतसा बोलना ।

प्रा० **बातकीबात** }
बातकी बातमें } बोल० दमभर में, पलभर में, थोड़ी सी देरमें, झटपट, तुरंत ।

प्रा० **बातगड़ना** बोल० मतलब की बात करना, झूठी बात बनाना, किसी बात को इस तरह से बनाकर कहना कि दूसरेके मनमें जमजाय ।

प्रा० **बातचबाना** बोल० बोलते २ चुपरहना, ठहर ठहर कर बोलना ।

प्रा० **बातचलाना** बोल० कुछ कहना शुरूअ करना ।

प्रा० **बातचीत** बोल० बोलचाल, गुफ़्तगू ।

प्रा० **बातटालना** बोल० असल बातका उत्तर न देना और और बातें करना ।

प्रा० **बातपरबातयादआती है** कहावत—जिस तरह की चर्चा हो उसी तरह की बातें आपसे आप याद आजाती हैं ।

प्रा० **बातपीजाना** बोल० कड़वे वचन सहना, बातको बर्दाशतकरना ।

प्रा० **बातफेंकना** बोल० ठट्ठा करना, २ बे सोचे विचारे कोई बात बोलना ।

प्रा० **बातफेरना** बोल० कहते २ बात का मतलब बदल देना ।

प्रा० **बातबढ़ाना** बोल० वाद करना, तकरार करना, २ किसी बात को खूब फैलाकर कहना या लिखना ।

प्रा० **बातबनाना** बोल० मतलब गाँठना, झूठ कहना ।

प्रा० **बातबाँधना** बोल० झूठी तर्क करना ।

प्रा० **बातबिगाड़ना** बोल० मतलब खोना, बिगाड़ करना ।

प्रा० **बातमानना** बोल० कहना मानना ।

प्रा० बातरखना बोल० कहना मान लेना ।

प्रा० बातरहना बोल० इज़्ज़त और आबरू रहना, प्रतिष्ठा रहना ।

प्रा० बातलगाना बोल० चुग़ली खाना, निन्दा करना ।

प्रा० बातें करना बोल० इधर-उधर की चर्चा करना ।

प्रा० बातें बनाना बोल० छल करना, खुशामद करना ।

प्रा० बातें मारना बोल० शेख़ी करना, डींग मारना ।

प्रा० बातें सुनना बोल० कड़ुवी बात सहना ।

प्रा० बातें सुनाना बोल० कड़ुवी बात कहना ।

प्रा० बातों में उड़ाना बोल० हँसी चुहल में टालना ।

प्रा० बातों में धरलेना बोल० क़ायल करना, चुपकरदेना ।

प्रा० बातोंमें लपेटना बोल० बातों में धोखा देना ।

प्रा० बात (सं० वात वा जाना) स्त्री० हवा, पवन, वायु, २ वायु रोग ।

प्रा० बाती (सं० वर्त्ति, वृत्=होना) स्त्री० बत्ती ।

प्रा० बातूनिया } (बात) गु० बहुत
बातूनी } बातें बनानेवाला, गप्पी, वाचाल, वाचाट ।

प्रा० बादर } (सं० वारिद) पु०
बादल } बद्दल, मेघ ।

सं० बादरायण (बदर+अयन) पु० वेदव्यास, व्यास महाराज, पाराशर्य, पराशर के पुत्र ।

प्रा० बादला पु० सोने रूपे का तार, लप्पा ।

प्रा० बादि क्रि०वि० वृथा, फ़ज़ूल ।

सं० बाधक (बाध्=रोकना) क० पु० रोकनेवाला, प्रतिबन्धक, हारिज, हर्ज करनेवाला ।

सं० बाधा (बाध्=रोकना) स्त्री० रोक, रुकाव, २ दुःख, पीड़ा या वेदना ।

सं० बाधित } (बाध्=रोकना) भू०
बाध्य } पु० रोका हुआ, २ दुःखित, पीड़ित ।

प्रा० बान (सं०वर्णरंग वा गुण) स्त्री० स्वभाव, प्रकृति, चाल, टेव, आदत ।

प्रा० बानगी स्त्री० नमूना, अटकल, क़यास ।

प्रा० बानबे (सं० द्वानवति) गु० नब्बे और दो, ९२ ।

प्रा० बाना (सं० वर्ण) पु० वेष, लिबास, २ ढंग, चाल, ३ एकतरह का हथियार, ४ वह सूत जिससे कपड़ेकी चौड़ाई बुनीजाती है, भर्ती ।

प्रा० बाना क्रि० स० खोलना, पसारना ।

प्रा० बानी स्त्री० राख, २ वह सूत

जिससे कपड़ा बुना जाता है ।

फ़ा० बानी (विना) क० बिनाडालनेवाला, जड़डालनेवाला, नीवजमानेवाला, बुनियाद डालनेवाला ।

सं० बान्धव (बन्धु) पु० भाई, रिश्तेदार, सम्बन्धी, नतैत, मित्र ।

प्रा० बाप (सं० वप्, वप्=बोना) पु० पिता, जनक, तात, बाबा ।

प्रा० बाप करना बोल० बा१ के बराबर मानना ।

प्रा० बापमेरा ⎫ बोल० अचंभा,
बापरे बाप ⎭ शोच और डर आदि के जतलाने वाले शब्द ।

प्रा० बापमारे का बैर बोल० बड़ा भारी बैर ।

प्रा० बापनमारी पीदड़ी बेटातीरन्दाज़ यह कहावत वहाँ बोलते हैं जब किसी के बाप दादे कुछ योग्य नहीं हों और वह कुछ बढ़ कर किया चाहे या दिखाया चाहे ।

प्रा० बापड़ा ⎫ गु० बेवश, बेचारा,
बापुरा ⎭ अनाथ, दीन, कंगाल।

प्रा० बाफ(सं० बाष्प) स्त्री० धूवां, भाफ़।

प्रा० बाबा पु० बाप, २ बड़ा आदमी, ३ बेटा, लड़का, प्यारा ।

प्रा० बाबाजी पु० योगी, संन्यासियों की पदवी ।

प्रा० बाबू पु० लड़का, बालक, २ छोटा राजा या राजकुमार, ३ बड़ा आदमी, रईस,—हिंदुओं में और विशेष करके बंगालियों में बड़े आदमी को 'बाबू' कहते हैं जैसे दिल्ली आगरे की ओर बड़े आदमी को 'लाला साहिब' या 'मुंशी साहिब' बोलते हैं, और अंगरेज़ अंगरेज़ी लिखनेवाले किरानियों को 'बाबू' कहते हैं, ४ योगी और फुक़रों की बोल चाल में हरएक मर्द को 'बाबू' और स्त्री को 'माई' कहते हैं।

प्रा० बाम (सं० ब्राह्मी) स्त्री० एक मछली का नाम, २ (सं० वाम, वा=जाना) गु० बायाँ, उलटा, ३ सुन्दर, ४ पु० महादेव या कामदेव, ५ (सं० वामा) स्त्री ।

प्रा० बामअंग (सं० वामाङ्ग) पु० बांई ओर, बांई तरफ़ ।

प्रा० बामा (सं० वामा, वाम=बायाँ अर्थात् पुरुष के बांई ओर बैठने वाली) स्त्री० लुगाई, स्त्री ।

प्रा० बाम्हण ⎫ (सं० ब्राह्मण) पु०
बाम्हन ⎭ ब्राह्मण, २ हिंदुओं में ज़मींदारों की एक जाति जो बिहार और बनारस की ओर बहुत होते हैं ।

प्रा० बायब (सं० वायव्य) स्त्री० वायुकोण, पश्चिम उत्तर का कोना, २ हटना, अलग होना ।

प्रा० बायाँ (सं० वाम) गु० बांई ओर, २ उलटा ।

प्रा० बायाँ पाँव पूजना बोल०

खण्डी मनुष्य के छल और पाखण्ड को मान लेना ।

प्रा० **बार** (सं० वार, वृ=ढकना) स्त्री० समय, अवकाश, अवसर, देरी, देर, विलम्ब, २ पु० अठवाड़े का दिन, ३ दरवाज़ा, ४ (सं० बाल) पु० लड़का, ५ केश, ६ (सं० बाला) स्त्री० सोलह बरस की लड़की ।

प्रा० **बारलगाना** बोल० देरी करना ।

प्रा० **बारण** (सं० वारण, वृ=ढकना, बचाना) पु० रोकना, अटकाना, २ हाथी ।

प्रा० **बारम्बार** (सं० वारंवार, वार) क्रि० वि० बार बार, फिर फिर, घड़ी घड़ी, मुतवातिर, लगातार ।

प्रा० **बारह** (सं० द्वादश) गु० दश और दो, १२ ।

प्रा० **बारहबाँट** १ मोह, २ दैन्य, ३ भय, ४ ह्रास, ५ हानि, ६ ग्लानि, ७ क्षुधा, ८ तृषा, ९ मृत्यु, १० क्षोभ, ११ मृषा, १२ अपकीर्ति ।

प्रा० **बारहबाटहोना** बोल० उजड़ना, बिगड़ना, सत्यानाश होना, २ दुखपाना, सताया जाना ।

प्रा० **बारहदरी** (बारह + दर=दरवाज़ा) स्त्री० वह मकान जिसके बारह दरवाज़े हों, बँगला, हवादार मकान ।

प्रा० **बाराखरी** (सं० द्वादशाक्षरी) स्त्री० व्यञ्जनों में बारह स्वरों का मिलान ।

प्रा० **बारासिंगा**
बारहसिंगा } (सं० द्वादश=बारह, शृङ्ग=सींग) पु० एक जानवर जो हरिण सा होता है जिसके सींग लम्बे होते हैं और सींग में सींग होता है ।

प्रा० **बाराह** (सं० वराह) पु० शूकर, सूअर ।

प्रा० **बारी** (सं० वाटी) स्त्री० बाड़ी, बगीचा, २ (सं० बालिका) लड़की, ३ (सं० वार) नियत समय, पारी, नौबत, उसरी ।

प्रा० **बारीदार** पु० वह नौकर जिसकी नौकरी का समय नियत हो ।

प्रा० **बारी** स्त्री० झरोखा, दरीची, छोटा दरवाज़ा, २ हिन्दुओं में एक जाति के लोग जो मशाल और बत्ती बनाते हैं, ३ एकगहने का नाम जो नाक और कान में पहनाजाता है ।

प्रा० **बारुणी** (सं० वारुणी, वरुण अर्थात् जिस का देवता वरुण है) स्त्री० मदिरा, मद्य, शराब, २ पश्चिम दिशा, ३ शतभिषा नक्षत्र, ४ दूब ।

प्रा० **बारूत** स्त्री० दारू, शोरा, गन्धक और कोयला आदि से बनी हुई चीज़ जो आग पड़ते ही भक से उड़ जाती है ।

प्रा० **बारो** (सं० बाल) पु० बालक ।

सं० **बाल** (बल्=जीना, दान, कहना)

पु॰ लड़का, बालक, २ केश, ३ गु॰ मूर्ख, नासमझ, अज्ञान, बेहोश।

प्रा॰ बाल (सं॰ बाला) स्त्री॰ सोलह बरस की लड़की, २ पु॰ सात आठ बरस का लड़का लड़की, ३ अनाज की फुनगी, ४ वह निशान जो काच और पियाले आदि में होताहै।

प्रा॰ बालगोपाल बोल॰ लड़के बाले, बाल बच्चे।

सं॰ बालग्रह पु॰ बालकों के दुःख देनेवाले ग्रह, उपग्रह।

प्रा॰ बालबाँधीकौड़ीमारना या उड़ाना बोल॰ बे चूके निशाना मारना, ठीक निशाना लगाना।

प्रा॰ बालबालबैरीहोना बोल॰ हर एक अपने और पराये से वैर होना।

प्रा॰ बालबालगजमोतीपिरोना बोल॰ खूब सँवारना।

प्रा॰ बालबच्चे बोल॰ लड़के बाले।

प्रा॰ बालबाँकानहोना
बालबंकानहोना } बोल॰ किसी तरह का बिगाड़ न होना।

सं॰ बालक (बाल) पु॰ लड़का, छोटी उमर का बच्चा, मूर्ख, घोड़ा, हाथी, अँगूठी, कङ्कण, बलय, हाहूबेर।

प्रा॰ बालका (सं॰ बालक) पु॰ योगी या संन्यासियों का चेरा।

प्रा॰ बालना
बारना } क्रि॰ स॰ जलाना, सुलगाना।

प्रा॰ बालभोग (सं॰ बाल=बालक, भोग=खाने की चीज़) पु॰ वह नैवेद्य जो देवताको सबेरे चढ़ाते हैं।

प्रा॰ बालम (सं॰ वल्लभ) पु॰ प्रियतम, प्यारा, पति।

प्रा॰ बालमखीरा स्त्री॰ एक तरह का खीरा।

प्रा॰ बालरांड़ (सं॰ बालरण्डा) स्त्री॰ वह स्त्री जो बालकपन में विधवा होजाय।

सं॰ बाललीला (बाल + लीला) स्त्री॰ लड़कपन का खेल, बालचरित्र।

सं॰ बालवत्स पु॰ कबूतर, २ गु॰ बालकों के ऊपर दयालु।

सं॰ बालसुख (बाल + सुख) पु॰ बालकपन का सुख।

सं॰ बाला (बाल) स्त्री॰ लड़की, सोलह बरस से कम उमर की लड़की।

प्रा॰ बाला (सं॰ बाल) पु॰ छोटी उमर का लड़का, २ एकतरह का सोने का गहना जो कानों में पहना जाता है और गोल होता है।

प्रा॰ बालाचांद (सं॰ बालचन्द्र) पु॰ द्वितीया का चन्द्र, दुइज का चाँद, नया चाँद।

प्रा॰ बालापन भा॰ पु॰ बालकपन, लड़काई, लड़कपन।

प्रा॰ बालाभोला बोल॰ वह लड़का

जो कुछ छल कपट न जानता हो।

बालि } (सं०बल=ज़ोर) पु०
बाली } एक बंदर का नाम जो इन्द्र का बेटा और सुग्रीव का भाई और अङ्गद का बाप था जिसको श्रीरामचन्द्र ने मारा।

बालिकुमार (बालि + कुमार) पु० अङ्गद।

बालिश (बाड् + इन) गु० अज्ञ, मूर्ख, बालक, पु० उपबर्हण, तकिया, मसनद, २ उपधान।

बाली (सं० बालिका) स्त्री० छोटी उमर की लड़की, २ एक गहने का नाम जो नाक और कान में पहना जाता है।

बालु (बल् + उ) पु०सुगन्धित द्रव्य, रेत।

बालू (सं० बालुका) पु० रेत, रेती।

बालूशाही स्त्री० एक तरह की मिठाई।

बाल्य भा० पु० लड़कपन।

बाव (सं० वायु) स्त्री० हवा, पवन, बयार।

बावबाँधना बोल० खुशामद करना।

बावबहना बोल० हवा चलना।

बावके घोड़ेपर सवार होना बोल० घमंडी होना, शेखी करना।

बावसुरना बोल० पादना।

प्रा० बावगोला पु० पेटकी पीड़ा, बावसूल।

प्रा० बावझक } गु० गप्पी, झक्की,
बावभक } बड़बड़िया, भूत, प्रेत।

प्रा० बावड़ी } स्त्री० बड़ा कुवाँ,
बावली } जिसके उतरने के लिये सीढ़ी होती हैं।

प्रा० बावन } (सं० वामन) गु०
बावना } नाटा, ठिंगना, पु० विष्णुका पाँचवां अवतार।

प्रा० बावन (सं० द्विपञ्चाशत्) गु० पचास और दो, ५२।

प्रा० बावरा } (सं० बातूल, बात
बावला } =हवा) गु० सिड़ी, पागल, दीवाना।

प्रा० बावसूल (सं० वातशूल) गु० पेटकी पीड़ा, बावगोला।

सं० बाष्प पु० नेत्रजल, आँसू, उष्मा, भाफ़, लोहा।

प्रा० बास (सं० वास, वास्=सुगन्धित होना) स्त्री०महक,सुगन्ध,गन्ध।

प्रा० बास } (सं० वास, वस्=
बासा } रहना) पु० रहने की जगह, डेरा, बसेरा।

प्रा० बासन पु० बरतन, भाँड़ा,पात्र।

प्रा० बासना (सं० वासना, वास्=सुगन्धित होना) स्त्री०इच्छा, चाह, २ सुगन्धि, क्रि० स० महकाना, सुगन्धित करना।

प्रा० **बासी** (सं० वासी, वस्=रहना) पु० बसनेवाला, निवासी, रहनेवाला ।

प्रा० **बासी** (सं० वास्=सूँघना, महक आना) गु० रातका बचा हुआ खाना, औसा, २ बदबूदार, जिसमें बुरी बास आवे ।

प्रा० **बासी बचे न कुत्ता खाय** कहावत—कुछ बाक़ी नहीं रहता ।

प्रा० **बासी फूलों बास नहीं, परदेशी बालम तेरी आस नहीं** यह कहावत निराश होने पर बोली जाती है ।

प्रा० **बासुदेव** (सं० वासुदेव, वसुदेव का) पु० वसुदेव का बेटा, श्रीकृष्ण ।

प्रा० **बाहन** (सं० वाहन, वह=ले जाना) पु० सवारी, असवारी, घोड़ा, गाड़ी आदि जिस पर आदमी चढ़ते हैं ।

प्रा० **बाहर** } (सं० बाहिर) क्रि०
बाहिर } वि० बाहिर की ओर ।

प्रा० **बाहर के खा जायें, घर के गीत गायें** कहावत—अपने सब धरे रहें और दूसरों को लाभ हो ।

सं० **बाहु** (बाध्=रोकना) पु० बाँह, भुजा, भुजदण्ड ।

सं० **बाहुज** (बाहु + जन्=पैदा होना) पु० (बाहू राजन्याविति श्रुतिः) क्षत्रिय, बाहु से पैदा हुये ।

सं० **बाहुयुद्ध** (बाहु + युद्ध) पु० मल्लयुद्ध, कुश्ती ।

सं० **बाहुल्यता** भा० स्त्री० आधिक्यता, अधिकाई, कसरत ।

प्रा० **बिंजन** (सं० व्यञ्जन, वि=बहुत, खूब, अञ्ज्=साफ़ करना) पु० तरकारी, भाजी ।

प्रा० **बिंब** } (सं०बिम्ब)पु०एकतरह
बिंबा } का लाल फल,कुन्दरू ।

प्रा० **बिकट** (सं०विकट, वि=बहुत, कट=जाना या घेरना) गु० डरावना, भयानक, भयंकर, कठिन ।

प्रा० **बिकना** (सं० वि, क्री=लेन देन करना) क्रि० अ० खपना, उठना, बिक्री होना, बेची जाना ।

प्रा० **बिकरार** } (सं० विकराल)
बिकराल } गु०डरावना,भयानक, २ भोंड़ा, कुरूप ।

प्रा० **बिकल** (सं०विकल, वि=नहीं, कला=अंश) गु० बेचैन, व्याकुल, अचैन, दुःखी, घबराया हुआ ।

प्रा० **बिकसना** (सं० विकसन, वि, कस्=जाना) क्रि० अ० खिलना, फूलना, २ प्रसन्न होना, मुसकुराना ।

प्रा० **बिकसित** (सं० विकासित, वि, कस्=जाना) गु० खिला हुआ, फूला हुआ, २ प्रफुल्ल, हर्षित, प्रसन्न, खुश ।

प्रा० **बिकाऊ** (बिकाना) गु० बेचने के योग्य, जो चीज़ बेचने को हो ।

बिकाना (बिकना) क्रि० स० ठाना, खपाना, बेचना ।

बिकाश (सं० विकाश, वि, ाश्=चमकना) पु० प्रकाश, मक, गु० चमकता हुआ, प्रसन्न, ानन्दित, हर्षित ।

बिक्री (सं० विक्रय, वि=बहुत, ी=मोल लेना) स्त्री० बिकाव, पाव, उठाव, बिकना ।

बिखरना (सं० वि, कृ=छी- ना) क्रि० अ० फैलना, छीटना, ित्तर-बित्तर होना, तीन-तेरह ोना, २ कोपना, क्रोध करना, ुस्सा करना ।

बिगड़ना (सं० विग्रह) क्रि० अ० ख़राब होना, नुक़सान होना, हीं बनना, २ फूटरहना, अनबन हना, फिर जाना, बाग़ी होना ।

बिगाड़ (बिगाड़ना) पु० िगन, नुक़सान, उपाध, २ वैर, नबन, तोड़फोड़ ।

बिगाड़ना (बिगड़ना) क्रि० ० ख़राब करना, नुक़सान करना, मित्रों में वैर करवा देना ।

बिघन (सं० विघ्न, वि= हले, हन्=मारना) पु० रोक, काव, बाधा, बिगाड़ ।

बिगाड़ (सं० विचार, वि, र्=चलना) पु० सोच, ध्यान, याल, सम्मति, राय, न्याय ।

प्रा० **बिचारना** (सं० विचरण, वि, चर्=चलना) क्रि० स० सोचना, ध्यान करना, ख़याल करना, समझना, बूझना, निर्णय करना ।

प्रा० **बिचाली** स्त्री० पुआल ।

प्रा० **बिचित्र** (सं० विचित्र, वि=बहुत, चित्र=भाँति भाँति का) गु० भाँति भाँति का, नाना प्रकार का, २ अद्भुत, अनोखा, अजीब ।

प्रा० **बिच्छू** (सं० वृश्चिक) पु० एक ज़हरीले जानवर का नाम जिसके डंक में ज़हर भरा रहता है ।

प्रा० **बिछड़ना**, **बिछरना**, **बिछुड़ना**, **बिछुरना** (सं० वि=बहुत, छुट्=काटना) क्रि० अ० अलग होना, जुदा होना, अलाहदा होना ।

प्रा० **बिछना** (सं० विस्तर, वि, स्तृ=फैलना) क्रि० अ० फैलना, पसरना ।

प्रा० **बिछाना** (बिछना) क्रि० स० फैलना, पसारना, २ पु० बिछौना, बिस्तरा ।

प्रा० **बिछुवा** पु० एक तरह का हथियार जो टेढ़ा होता है, २ एक गहना जो पाँव में पहनते हैं ।

प्रा० **बिछोह**, **बिछोहा** (वि=बिन, छोह=प्यार या बिछुरना से) पु० विरह, वियोग, जुदाई ।

प्रा० **बिछौना** (बिछना) पु० बिस्तरा, सेज ।

प्रा० बिजना (सं० व्यजन, वि, अज्=चलना) पु० पंखा ।

प्रा० बिजली (सं० विद्युत्) स्त्री० दामिनी, चपला, वह आग जो बादलों में चमकती है ।

प्रा० बिज्जु (सं० विद्युत्) स्त्री० बिजली, दामिनी ।

प्रा० बिजोग (सं० वियोग) पु० जुदाई, बिछुड़ना ।

प्रा० बिडारना क्रि० स० भगाना, बिचलाना ।

प्रा० बिताना (बीतना) क्रि०स० गँवाना, काटना ।

प्रा० बितीत (सं० व्यतीत) गु० बीताहुआ, गुज़रा हुआ, जो पूरा होचुका, मुनक़ज़ी ।

प्रा० बित्त (सं० वित्त, वित्त्= छोड़ना, देना) पु० धन, दौलत, द्रव्य, २ गात, बूता ।

प्रा०बिथकना क्रि०अ०चकित होना, अचम्भे में होना, हैरत में आना ।

प्रा० बिथरना (सं० विस्तरण)
बिथुरना क्रि०अ०बिखरना,
छिटकना, फैलना ।

प्रा० बिथा (सं० व्यथा) स्त्री० पीड़ा, दुःख, दर्द ।

प्रा० बिदा (सं०विद्=फाड़ना वा
बिदाई जुदा होना और अरबी में विदअ=रुख़सत होना) स्त्री० छुट्टी, जाने की आज्ञा, रुख़सत, रुख़सती ।

प्रा० बिदाकरना बोल० रुख़सत करना ।

प्रा० बिदारना (सं० विदारण, वि= बहुत, दृ=फाड़ना) क्रि०स०फाड़ना ।

प्रा० बिदेश (सं०विदेश, वि=दूसरा, देश=मुल्क) पु० दूसरा देश, दूसरा मुल्क, परदेश ।

प्रा० बिदेशी (बिदेश) गु० परदेशी, ग़ैर मुल्क का ।

प्रा० बिधना (सं० विधि) पु० विधाता, ब्रह्मा, दैव ।

प्रा० बिधवा (सं० विधवा, वि= बिन, धव=पति) स्त्री० राँड़, बेवा, जिसका पति मरगया हो ।

प्रा० बिन (सं० विना, वि + ना
बिना क्रि० वि० छोड़के,
छुट, रहित, बिदून, सिवाय ।

प्रा० बिनआये तरना बोल० मौत मरना ।

प्रा० बिन रोये लड़का दूध नहीं पाता कहावत—बिन माँगे कुछ नहीं मिलसकता ।

प्रा० बिनभयप्रीतनहीं कहावत— बिन डराये कोई नहीं मानता ।

प्रा० बिन माँगे दूध बराबर माँगे सो पानी कहावत—बिन माँगे मिले वही अच्छा है ।

प्रा० बिनवना (सं० विनमन,
बिनौना वि=बहुत, नम्=

नमस्कार करना) क्रि० स० नमस्कार करना, पूजना ।

ा० **बिनसना** (सं० वि, नश्=नाश होना) क्रि० अ० नाश होना, बिगड़ना ।

ा० **बिनास** (सं० विनाश) पु० नाश, संहार, विध्वंस ।

ा० **बिनौला** पु० रूई का बीज ।

ा० **बिन्ती** / **बिनती** (सं० विनीति वा विनति वा विनय, वि=बहुत, नि=पाना वा चलाना वा नम्=नमस्कार करना) स्त्री० विनय, नम्रता, प्रार्थना, अर्ज़ ।

ा० **बिन्द** / **बिन्दी** (सं० बिन्दु) स्त्री० शून्य, सिफ़र, बिन्दु ।

ा० **बिपत** / **बिपता** (सं० विपत्ति) स्त्री० आपदा, दुःख, बिपदा, तकलीफ़ ।

० **बिया** (सं० बीज) पु० बीज, गुठली ।

० **बियालू** पु० रात का खाना ।

० **बिरद** पु० यश, नाम, ख्याति, २ हथियार ।

० सं० **बिरदावलि** (बिरद=यश, सं० अवलि=पाँत) स्त्री० बहुत यश, बहुत ख्याति, बड़ी नामवरी ।

० **बिरमना** (सं० वि, रम्=ठहरना, चैन करना) क्रि० अ० ठहरना, रहना, बिलमना ।

० **बिरला** (सं० विरल, वि, रा=देना या लेना) गु० कोई कोई, अनूठा, अपूर्व, अनूप ।

प्रा० **बिरवा** पु० रूख, वृक्ष, पौधा ।

प्रा० **बिरह** (सं० विरह, वि=बहुत, रह्=छोड़ना) पु० जुदाई, बिछोह, वियोग, बिछुड़ना, फ़ुरक़त ।

प्रा० **बिरहनी** (सं० विरहिणी, विरह) गु० स्त्री० वह स्त्री जो अपने पति से जुदी रहे ।

प्रा० **बिराजना** (सं० वि=बहुत, राज्=शोभना) क्रि० अ० शोभना, २ सुख भोग करना, चैनसे रहना ।

प्रा० **बिराना** गु० पराया, २ दूसरे का ।

प्रा० **बिरियां** (सं० वेला) स्त्री० समय, वक़्, काल, वेला ।

प्रा० **बिरोग** (सं० वियोग) गु० विरह, वियोग, जुदाई ।

प्रा० **बिरोगन** (सं० वियोगिनी) गु० स्त्री० वह स्त्री जो विरह से व्याकुल हो ।

प्रा० **बिल** / **बिला** (सं० विल, विल्=ढकना या छिपना) पु० चूहे आदि जानवरों के रहने का छेद, छिद्र ।

प्रा० **बिलकना** क्रि० अ० सिसकना, लड़के का रोना ।

प्रा० **बिलखना** (सं० विलक्षण, वि=बुरा, लक्षण=चिह्न) क्रि० अ० उदास होना, क्रि० स० देखना, उदास होकर देखना ।

प्रा० बिलग (सं० विलग्न, वि=नहीं, लग्=मिलना) गु० अलग, जुदा, न्यारा ।

प्रा० बिलगमानना बोल० बुरा मानना ।

प्रा० बिलगना (सं० विलग्न) क्रि० अ० जुदा जुदा होना, अलग होना, २ फटना ।

प्रा० बिलगाना (बिलगना) क्रि० स० जुदा २ करना, अलगाना, क्रि० अ० फटना, फाटना ।

प्रा० बिलबिलाना क्रि० अ० व्याकुल होना, कूकना, तड़फना ।

प्रा० बिलम (सं० विलम्ब) स्त्री० देरी, देर, ढील ।

प्रा० बिलमना बिलंबना (सं० विलम्ब) क्रि० अ० देरी करना, ठहर जाना, रुक जाना ।

प्रा० बिलल्ला पु० भोंदू, मूर्ख, बेढंगा, बेशऊर ।

प्रा० बिलसना (सं० वि, लस्=खेलना) क्रि० अ० प्रसन्न होना, सुख भोगना, भोगना, आनन्दित होना ।

प्रा० बिलस्त (सं० वितस्ति) पु० बित्ता, बिलाँद, बालिश्त, अँगूठे से कन अँगुली तक का नाप ।

प्रा० बिलाई (सं० बिडाली) स्त्री० बिल्ली, २ एक लोहे की चीज़ जिस पर 'कद्दू' छीलतें हैं, ३ किवाड़ बन्द करने की लकड़ी ।

प्रा० बिलाना (सं० विलय, वि=बहुत, ली=मिलना, पर वि उपसर्ग के साथ आनेसे इस धातु का अर्थ नाश होना होता है) क्रि० अ० मिटजाना, नाश होना ।

प्रा० बिलापना बिलपना (सं० विलाप, वि=बुरी तरह से, लप्=बोलना अर्थात् रोना) क्रि० अ० बिलकना, रोना, विलाप करना, दुःख करना ।

प्रा० बिलार बिलाव (सं० बिडाल) पु० बिल्ला, मार्जार, गुर्बह ।

प्रा० बिलावल स्त्री० एक रागिणी का नाम ।

प्रा० बिलोना बिलोवना (सं० विलोडन, वि, लुड्=मथना) क्रि० स० मथना, महना ।

प्रा० बिल्ली (सं० बिडाली) स्त्री० एक जानवर का नाम ।

प्रा० बिल्ली भी लड़ती है तो मुँहपर पंजा धर लेती है कहावत-जब लड़ना चाहिये तो पहले अपना बचाव सोचना चाहिये ।

प्रा० बिल्ली के भागों छीका टूटा कहा०-अयोग्य मनुष्य को संयोग से बड़ा काम मिला ।

प्रा० बिसन (सं० व्यसन) पु० दोष, अवगुण, बुराई, बुरा काम, प्रेम, शौक़, रग़बत ।

प्रा० बिसरना (सं० विस्मरण, वि=

नहीं, स्मृ=याद रखना) क्रि०अ० भूल जाना ।

प्रा० बिसात स्त्री० पुंजी ।

प्रा० बिसाती पु० छोटी छोटी चीज़ें बेचनेवाला ।

प्रा० बिसाना
बिसाहना } क्रि०स०मोललेना, ख़रीदना, लेना ।

प्रा० बिसारना (बिसरना) क्रि० स० भुलाना, बिसरना ।

प्रा० बिसूरना क्रि० अ० धीरे २ रोना, सिसकना ।

प्रा० बिसेला (विष) गु०ज़हरीला ।

प्रा० बिस्तारना (विस्तार) क्रि० स० फैलाना, वसीअ करना ।

प्रा० बिस्वा (बीस) पु० बीघे का बीसवां भाग ।

प्रा० बिहरना (सं० विहरण) क्रि० अ० विहार करना, खुशी करना, हुलसना, सैर करना, ऐश इशरत करना ।

प्रा० बिहरी स्त्री० चन्दा, पातड़ी, उगाहनी ।

प्रा० बिहरुना (सं० विदारण) क्रि० अ० फटना, छाती फटना, छाती दरकना ।

प्रा० बिहँसना (सं०विहसन) क्रि० अ० हँसना, मुसकुराना ।

प्रा० बिहान पु० भोर, तड़का, प्रातःकाल, प्रभात, भिनसार, सुबह, सवेरा ।

प्रा० बिहाना (सं० वि, हा=छोड़ना) क्रि०स०छोड़ना, त्यागना ।

प्रा० बींधना (सं० विद्ध वा वेधन, विध् या व्यध्=छेदना) क्रि०स० छेदना, बेधना ।

प्रा० बीघा पु०बीसबिस्वे की नाप ।

प्रा० बीच नित्य सं० भीतर, अन्दर, में, माँझ, मध्य, २ पु० अन्तर, फूट, विरोध ।

प्रा०बीचपड़ना बोल०अन्तरपड़ना, फूट पड़ना ।

प्रा० बीच बिचावकरना बोल० दो आदमियों में मेल कराना ।

प्रा० बीचमेंपड़ना बोल० दो आदमियों में मेल कराने के लिये मध्यस्थ होना ।

प्रा० बीचोबीच बोल० ठीक बीच में, मध्य में ।

प्रा० बीछा पु०
बीछी स्त्री०
बिच्छी स्त्री० } (सं० वृश्चिक) बिच्छू या बीछी।

प्रा० बीजक पु० मालकी फ़ेहरिस्त, चलान चिट्ठी, २ टिकट जो माल की गठरी पर लगाया जाता है ।

प्रा० बीजना (सं० व्यजन) पु० तालवृन्तक, पंखा ।

प्रा० बीट (सं०विष्ठा) स्त्री०जानवरों का गू ।

प्रा० बीड़ा
बीरा } (सं० वीटिका, वि, इट=जाना) पु०पान

की खीली, चूना, कत्था और सुपारी आदि लगाया हुआ पान, २ वह डोरा जिससे तलवार का मियान उसके क़बज़ेमें बाँधा रहताहै।

प्रा० बीड़ाउठाना बोल० किसी बड़े काम को करने का ज़िम्मा करना ।

प्रा० बीड़ाडालना बोल० किसी कठिन काम के लिये सवाल करना, हिन्दुस्तान में रीति है कि जब किसी सरदार को कठिन काम आ पड़ता है तो वह अपने नौकर चाकरों को इकट्ठा करके उस काम को कहता है फिर एक पान का बीड़ा रकाबी में रख कर सबके सामने फेरा जाता है जो उसको उठा के चबाले वह काम उसके ज़िम्मे होजाता है ।

प्रा० बीण } (सं० वीणा) स्त्री०
बीन } वीणा, तन्त्री, एक बाजे का नाम जिसके दोनों ओर तूँबा और डंडी पर बहुतसी खूँटियां होती हैं जिस पर तार चढ़े रहते हैं ।

प्रा० बीतना (सं० व्यतीत) क्रि० अ० व्यतीत होना, हो चुकना, चला जाना, गुज़रना, पूरा होना, कटना ।

प्रा० बीबी स्त्री० स्त्री, बहू, मेम ।

सं० बीभत्स र्म्प० पु० जुगुप्सित, निन्दित, घृणित, पु० नवरस में एकरस ।

प्रा० बीमा स्त्री० जोखिम, हुंडा, भाड़ा ।

प्रा० बीर पु० भाई, भैया, २ कान में पहनने का एक गहना, ३ (सं० वीर) बहादुर, शूरवीर, ४ स्त्री० बहन ।

प्रा० बीरबहूटी स्त्री० एक प्रकार का लाल कीड़ा जो सावन में पैदा होता है, इन्द्रबधू ।

प्रा० बीरा पु० भाई, भैया ।

प्रा० बीरी (सं० वीटिका) स्त्री० पान की खीली ।

प्रा० बीस (सं० विंशति) गु० दो दहाई, २० ।

प्रा० बीसी स्त्री० अनाज नापने का परिमाण, २ (सं० विंशति) बीस, कोड़ी ।

प्रा० बुंदा (सं० बिन्दु) पु० बिन्दी, शून्य, सिफ़र, बिन्दु ।

प्रा० बुँदेला पु० बुन्देलखण्ड का राजपूत ।

प्रा० बुकनी स्त्री० चूर्ण, बूरा, चूर ।

सं० बुक्क पु० हृदय का मांस, कलेजा, क्लेश, छिलका, वर्णन, देना० गु० दाता, वक्ता ।

सं० बुक्कन (बुक्क् + अन, बुक्क=कहना, भूँकना) पु० कुक्कुरशब्द, कुत्ता का भूँकना ।

प्रा० बुक्का पु० मुट्ठी भर, चुटकी ।

बुक्कार पु० पृष्ठमांस, पीठ का मांस, हृदय, कलेजा, सिंहनाद।

बुझना क्रि० अ० ठंढा होना, बुतना, चिराग़ गुल होना, आग ठंढी होना।

बुझाना क्रि० स० ठंढा करना, बुताना, चिराग़ गुल करना, आग ठंढी करना।

बुड (बुड्=त्याग, आच्छादन) पु० संवरण, आवरण, आच्छादन, ढापना, गु० ढापनेवाला।

बुड़ाना क्रि०स०डुबाना, बोरना।

बुड्ढा (सं०वृद्ध) गु० बूढ़ा।

बुढ़भस गु० वह बूढ़ा जो जवानों की चाल चले।

बुढ़भसलगना बोल० बुढ़ापे में जवानी की बातें करना।

प्रा० बुढ़वा (सं० वृद्ध) गु० बूढ़ा।

प्रा०बुढ़ापा (बूढ़ा) भा० पु० बूढ़ापन, वृद्धावस्था।

प्रा० बुढ़ापाबिगड़ना बोल० बुढ़ापे में दुःख होना।

प्रा० बुढ़िया स्त्री० बूढ़ी स्त्री।

बुत्ता पु० ठगाई, छल, कपट, धोखा।

बुत्तादेना बोल० ठगना, छलना, धोखादेना।

बुद्ध (बुध्=जानना) पु० विष्णु का नवां अवतार, बौद्धमत का स्थापन करनेवाला, २ बुद्धिमान, पण्डित, पल्लवितवृक्ष, कर्म० विदित, जाना हुआ, जागता हुआ।

सं० बुद्धि (बुध्=जानना) स्त्री० मनीषा, मति, धी, धिषणा, समझ, सोच, विचार, ज्ञान, विवेक, पहचान, अक्क।

सं० बुद्धिबल पु० अक्ककी ताक़त।

सं० बुद्धिमान् (बुद्धि + मान्) गु० समझदार, ज्ञानवान्, विवेकी, अक्कमन्द।

सं० बुद्धिहीन (बुद्धि + हीन) गु० बेसमझ, मूर्ख, बेअक्क।

सं० बुद्धीन्द्रिय (बुद्धि + इन्द्रिय) पु०स्त्री० आँख, नाक, कान, जीभ, त्वचा अर्थात् शरीरपर का चमड़ा।

सं० बुध (बुध्=जानना) पु० बृहस्पति की स्त्री के चाँद से उत्पन्न हुआ बेटा, चौथा ग्रह, २ बुधवार, ३ पण्डित, बुद्धिमान्।

सं० बुधजन (बुध + जन) पु० पण्डित लोग, बुद्धिमान्।

सं० बुधवार (बुध + वार=दिन) पु० बुध का दिन, चौथावार।

सं० बुधान क० पु० गुरु, पण्डित, अध्यापक, ब्रह्मा का पारषद।

सं० बुधित कर्म०पु०ज्ञात, जानाहुआ।

प्रा० बुन्ना क्रि० स० बिन्ना।

सं०बुभुक्षा (भुज्=खाना) भा०स्त्री० क्षुधा, भूख, खाने की चाह।

प्रा०बुभुक्षित (बुभुक्षा) क०पु०भूखा।

प्रा० बुरा गु० ख़राब, दुष्ट, नीच, निकम्मा ।

प्रा० बुरा कहना बोल० निन्दा करना, बदनाम करना ।

प्रा० बुरा चीतना बोल० किसी का बिगाड़ चाहना, किसी की बुराई चाहना ।

प्रा० बुराबेटा खोटा पैसा काम आता है कहा०-अपना बेटा निकम्मा भी हो तौभी किसी समय काम आता है ।

प्रा० बुरामानना बोल० अप्रसन्न होना, नाराज़ होना, नाखुश होना ।

प्रा० बुरालगना बोल० भला न मालूम होना ।

प्रा० बुराई भा० स्त्री० ख़राबी, दुष्टता ।

प्रा० बुराई पर कमर बाँधना बोल० बुराई करने पर तैयार होना ।

प्रा० बुलबुला (सं० बुद्बुद) पु० बुद्बुदा ।

प्रा० बुलाक स्त्री० नाक में पहनने का गहना ।

प्रा० बुहारना क्रि० स० झाड़ना ।

प्रा० बुहारी स्त्री० झाड़ू ।

प्रा० बूआ स्त्री० बहिन, २ फूफू ।

प्रा० बूंद (सं० बिन्दु) स्त्री० छींटा, टपका, टपकन, क़तरा ।

प्रा० बूंदा (सं० बिन्दु) पु० बड़ी बूंद, टपका ।

प्रा० बूंदाबांदी बोल० मेह की थोड़ी २ बूंदें गिरना ।

प्रा० बूकना क्रि० स० चूर चूर करना, बुकनी करना ।

प्रा० बूचा गु० कनकटा ।

प्रा० बूझ (सं० बोध वा बुद्धि) स्त्री० समझ, बुद्धि, ज्ञान ।

प्रा० बूझना (सं० बुध्=जानना) क्रि०स०समझना, जानना, सोचना ।

प्रा० बूटा पु० छोटा पेड़, झाड़, २ कपड़ा पर काढ़ा हुआ फूल आदि ।

प्रा० बूढ़ा (सं० वृद्ध) गु० वृद्ध, बुड्ढा, पुराना, बहुत उमर का, प्राचीन ।

प्रा० बूढ़ाघाग
बूढ़ाखराँट } बोल० बहुत बूढ़ा ।

प्रा० बूता पु० बल, ज़ोर, शक्ति, सामर्थ्य ।

प्रा० बूर स्त्री० भूसी, तुष, छिलका, चोकड़ ।

प्रा० बूरकेलड्डू एक मिठाई जो गेहूँ की चोकड़ से बनती है और उसके ऊपर शकर का ग़िलाफ़ चढ़ाते हैं और वह बहुत सस्ती बिकती है इस लिये काम देखने में बहुत अच्छा पर सचमुच निकम्मा हो उसको बोल चाल में बूर का लड्डू कहते हैं और जो लोग बूर का लड्डू बेचते हैं वे इस तरह पुकारते हैं कि "बूर का लड्डू जो खावे सो भी पछतावे, न खावे सो

भी पछतावे"—और कोई कोई कहते हैं कि यह मिठाई कोई नहीं बेचता, न खाता है, न बनाता है पर इसी कहावत में बोलते हैं।

प्रा० बूरा पु० साफ़ की हुई चीनी, २ लकड़ी और हाथीदाँत का चूरा।

प्रा० बे अबे, अरे।

प्रा० बेंग (सं० व्यङ्ग, वि=बुरा, अङ्ग=शरीर) पु० मेंढक।

प्रा० बेंट पु० दस्ता, वह लकड़ी जो कुल्हाड़ी आदि में लगाते हैं।

प्रा० बेंड़ा गु० तिर्छा, ठेढ़ा, बाँका।

प्रा० बेग (सं० वेग, विज्=काँपना) पु०उतावली,फुर्ती,शीघ्रता,प्रवाह, क्रि० वि० जल्दी से, ज़ोर से।

प्रा० बेगार पु० सेंत, मुफ़्त, किसी मज़दूर को ज़बरदस्ती पकड़ना और उसको मज़दूरी नहीं देना या बहुत थोड़ी मज़दूरी देना।

प्रा० बेगारपकड़ना बोल० ज़बरदस्ती से किसी मज़दूर को अथवा गाड़ी को बिन मज़दूरी दिये या थोड़ी मज़दूरी दिये पकड़ना।

प्रा० बेटा पु० पुत्र, लड़का।

प्रा० बेड़ा पु० घरनई, चौघड़ा।

प्रा० बेड़ापारकरना या लगाना बोल० दुःख से छुटाना, दुःख दूर करना, २ उतारना, पारकरना।

प्रा० बेड़ापारहोना बोल० दुःख से छूटना, २ सब चाह पूरी होना।

प्रा० बेण
बेणु (सं० वेणु, वेण्=बाजा बजाना) स्त्री० बाँसुरी, मुरली, २ बाँस।

प्रा० बेत (सं० वेत्र, अज्=जाना) स्त्री० एक तरह की लचकदार लकड़ी।

प्रा० बेधना (सं० वेधक) क्रि० स० बींधना, छेदना।

प्रा० बेमात (सं० विमाता, वि=विरुद्ध, माता=मां) स्त्री० सौतेली मां।

प्रा० बेर (सं० बदरि) पु० एक प्रकार का फल।

प्रा० बेल (सं० बिल्व) पु० एकफल का नाम, २ (सं० वल्लि) स्त्री० बेली, लता, ३ वंश, औलाद, सन्तान।

प्रा० बेला पु० एक पेंड़ का नाम जिस का पुष्प फल सुगन्धित होता है, २ कटोरा, ३ एक बाजे का नाम जो सारङ्गी कासा होता है।

प्रा० बेलि
बेली (सं०वल्लि,वल्=घेरना) स्त्री० बेल, लता।

प्रा० बेवहरा
बेवहरिया (सं० व्यवहारिक) पु० लेन देन करनेवाला, रुपये उधार देनेवाला, महाजन।

प्रा० बेवहार (सं० व्यवहार) पु० लेन देन, लेवा देई, २ रीति रस्म, ३ चाल चलन।

प्रा० **बेसन** पु० चने का आटा ।

प्रा० **बेसर** स्त्री० एक गहना जो नाक में पहना जाता है ।

प्रा० **बेस्वा** (सं० वेश्या) स्त्री० कञ्चनी, पतुरिया, गणिका, नगरनारी, क़सबी, रंडी ।

प्रा० **बेहड़** गु० नाबराबर, ऊँच नीच, ऊँचा नीचा ।

प्रा० **बैंगन** पु० वृन्ताक, भाँटा ।

प्रा० **बैंगनी** **बैंजनी** (बैंगन) गु० कुछ सियाही लिये लाल रंग ।

प्रा० **बैंदी** (सं०विन्दु) स्त्री० टिकली, बिंदी, टीकी, २ एक गहना जिसको स्त्रियां ललाटपर पहनती हैं ।

प्रा० **बैजन्तीमाल**[१] (सं० वैजयन्ती माला, वैजयन्ती = जीतनेवाली, माला=फूलों का हार) स्त्री० पँचरंगी माला, विष्णु भगवान् के पहिनने की माला, जो नीलम, मोती, माणिक, पुखराज, और हीरा, इन पाँच रत्नों से बनती है ।

प्रा० **बैठक** **बैठका** (सं० बैठना) स्त्री० बैठने की जगह ।

प्रा० **बैठना** (सं० उपविष्ट) क्रि० अ० आसन मारना, बैठजाना, २ जमना, ३ दीवार आदिका गिर पड़ना, ४ मातमपुरसी को जाना, ५ बेकाम होना ।

प्रा० **बैठजाना** बोल० गिरपड़ना ।

प्रा० **बैठरहना** बोल० छोड़ देना, आश तोड़ना, सुस्त होना ।

प्रा० **बैठाना** **बैठारना** **बैठालना** क्रि० स० बैठने की आज्ञा देना, बिठलाना, जमाना ।

प्रा० **बैद** (सं० वैद्य) पु० रोगियों का इलाज करनेवाला, मिश्र, हकीम, चिकित्सक, दवादारु करनेवाला ।

प्रा० **बैदक** (सं० वैद्यक) पु० इलाज करने की विद्या, चिकित्सा करने की विद्या, दवादारू करने की विद्या, इल्मे हिकमत, डाक्टरी ।

प्रा० **बैन** (सं० वाणी वा वचन) पु० बोल, वचन, कलाम ।

प्रा० **बैना** पु० एकगहना जो ललाट पर पहनाजाता है, २बखरा, भाजी ।

प्रा० **बैपार** (सं० व्यापार) पु० वणिज, लेनदेन, सौदागरी ।

प्रा० **बैपारी** पु० सौदागर, तज्जार, महाजन ।

प्रा० **बैयरबानी** (सं० वीरवनिता) चारोवर्णकी स्त्री को कहते हैं ।

प्रा० **बैर** (सं० वैर) पु० दुश्मनी, शत्रुता, द्वेष, विरोध ।

प्रा० **बैरपड़ना** बोल० दुश्मनी हो जाना, विरोध पड़ना ।

प्रा० **बैरलेना** बोल० बदलालेना ।

१—"बाँसीसीपीसूकरी करीदशीमठशाल। घटपटमुक्तापोहिये सो बैजन्तीमाल" ॥ १ ॥

प्रा० बैरख (फ़ा० बैरक) पु० झंडा, ध्वजा, पताका ।

प्रा० बैरन (सं० वैरिणी) स्त्री० दुश्मन स्त्री, विरोधिनी ।

प्रा० बैरागन (सं० वैरागिणी) स्त्री० योगिन बैरागिन स्त्री ।

प्रा० बैल (सं० बलीवर्द) पु० एक चौपाये का नाम, बर्द, २ मूर्ख, अज्ञानी, भोंदू ।

प्रा० बैस (सं० वयस्, वय्=जाना वा अज्=जाना) स्त्री० उमर, अवस्था, किशोर बैस=जवानी की शुरूअ अवस्था ।

प्रा० बैस (सं० वैश्य) पु० तीसरा वर्ण, बनियां, २ राजपूतों की एक जाति जिसके नाम से अवध के पास का बहुत सा देश बैसवाड़ा कहलाता है ।

प्रा० बैसंदर (सं० वैश्वानर, विश्व=संसार वा सब, नर=मनुष्य, अर्थात् जिसको सब मनुष्य चाहते हैं) पु० आग, आगी, अग्निदेवता ।

प्रा० बैसाख (सं० वैशाख) पु० एक महीने का नाम, दूसरा महीना ।

प्रा० बोझ पु० भार, बोझा ।

प्रा० बोझ सिरपर होना बोल० कोई कठिन काम का आ जाना ।

प्रा० बोझल गु० भारी, वज़नी ।

प्रा० बोटी स्त्री० मांसका छोटा टुकड़ा।

प्रा० बोटी बोटी फड़कना बोल० बहुत चालाक होना, फरफंदी होना ।

प्रा० बोदा गु० निर्बल, नामर्द ।

सं० बोध (बुध्=जानना) पु० ज्ञान, समझ, बुद्धि ।

सं० बोधक (बुध्=जानना) कृ० पु० शिक्षक, समझानेवाला, जतानेवाला, नासेह, नसीहत करनेवाला ।

सं० बोधन (बुध्=जानना) भा० पु० जतलाना, ज्ञान, बोध, विज्ञापन ।

सं० बोधनी } (बुध्=जानना) स्त्री०
बोधिनी } सिखानेवाली, बोध करानेवाली, नसीहत करनेवाली ।

सं० बोधनीय } गु० बोधनार्ह, स-
बोधित } मझाया गया, स-
बोधितव्य } मझाने योग्य, न-
बोध्य } सीहत कियागया ।

प्रा० बोना (सं० वपन, वप्=बोना) क्रि० स० बीज डालना ।

प्रा० बोरना क्रि० स० डुबाना, बुड़ाना ।

प्रा० बोरा पु० एक तरह का बड़ा थैला, गोन ।

अं० बोर्डिङ्गहाउस पु० छात्रालय, तालिबइल्मों के रहनेका मकान ।

प्रा० बोल (सं० बोलना) पु० वचन, बात, २ गीत का शब्द ।

प्रा० बोलचाल भा० पु० गुफ़्तगू, बात चीत ।

प्रा० बोलना (सं० वद् वा वच्=कहना) क्रि० अ० बात करना, कहना, २ बजना, आवाज़ निकलना ।

प्रा० बोलबाला (बोल=वचन और फ़ारसी शब्द बाला का अर्थ ऊपर) पु० आशीर्वाद, बोलबाला होना, बोल० भला होना, फलना, बढ़ना ।

प्रा० बोली (बोलना) स्त्री० वाणी, भाषा, बात ।

प्रा० बोली ठोली सुनाना बोल० ताना देना ।

प्रा० बोहित स्त्री० नाव, जहाज़ ।

प्रा० बौछाड़
बौछार } स्त्री० मेह की बूँदें जो हवा के कारण तिरछी पड़ती हैं ।

सं० बौद्ध (बुद्ध) पु० बौद्धमती, जैनी, विष्णु का अवतार, जगन्नाथ जी ।

प्रा० बौरहा
बौराहा
बौरा } (सं० वातूल) गु० दीवाना, पागल, सिड़ी, बावला ।

प्रा० बौराना क्रि० अ० पागल होना ।

प्रा० ब्याना (सं० वयन, वी=जनना) क्रि० स० बच्चा देना, जनना, उपजाना ।

प्रा० ब्यापना (सं० व्यापन, वि=बहुत, आप्=फैलना) क्रि० अ० सब जगह फैलना, फैलजाना ।

प्रा० ब्यालू पु० रात का खाना ।

प्रा० ब्याह (सं० विवाह) पु० शादी, विवाह, गँठबन्धन, पाणिग्रहण ।

प्रा० ब्याहरचाना बोल० शादी की रीतें रसमें करना ।

प्रा० ब्याहलाना बोल० दुलहिन को घर में लाना ।

प्रा० ब्याहता (सं० विवाहिता) स्त्री० गु० ब्याही हुई स्त्री ।

प्रा० ब्याहा (सं० विवाहित) गु० ब्याहा हुआ ।

प्रा० ब्योंत पु० कपड़े का तराश, छाँट, २ डौल ।

प्रा० ब्योंतना क्रि० स० कपड़े को तराशना या कतरना ।

प्रा० ब्योपार (सं० व्यापार) पु० बणिज, लेनदेन, सौदागरी ।

प्रा० ब्योपारी पु० महाजन, सौदागर ।

प्रा० ब्योमासुर (सं० व्योमासुर, व्योम=आकाश, असुर=राक्षस) पु० एक राक्षस का नाम जो कंस का मन्त्री था ।

प्रा० ब्योरा
ब्यौरा } पु० समाचार, वृत्तान्त, बात, २ पता, निशान, ३ भेद ।

प्रा० ब्योहार
ब्यौहार } (सं० व्यवहार) पु० काम, धंधा, ब्योपार, लेनदेन, २ रीत भाँत, चलन ।

प्रा० ब्रज (सं० व्रज, व्रज्=जाना) पु० मथुरा का ज़िला जिसमें गोकुल, वृन्दावन आदि हैं और १६८ मील के घेरे में है—व्रज मण्डल=ब्रज का ज़िला ।

प्रा० ब्रजबाला (सं० व्रजबाला) स्त्री० व्रजकी स्त्री, गोपी ।

प्रा० व्रजभाषा (सं० व्रजभाषा) स्त्री० व्रजकी बोली ।

प्रा० ब्रह्म (बृह्=बढ़ना) पु० परमेश्वर, सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापी, परमात्मा, आदिपुरुष, २ वेद, ३ तत्त्व, ४ तप, ५ ब्रह्म, ६ ब्राह्मण ।

प्रा० ब्रह्मअस्त्र (सं० ब्रह्मास्त्र) पु० ब्रह्माका दियाहुआ अस्त्र, ब्रह्मबाण ।

सं० ब्रह्मघातक } ब्रह्मघ्न (ब्रह्म=ब्राह्मण, हन्=मारना) क० पु० ब्राह्मण को मारनेवाला, ब्रह्महत्यारा ।

सं० ब्रह्मचर्य (ब्रह्म=वेद, चर्=चलना अर्थात् वेद पढ़ने के लिये फिरना) पु० ब्रह्मचारी का धर्म ।

सं० ब्रह्मचारी (ब्रह्म=वेद, चर्=चलना, जो वेद पढ़ने के लिये फिरता है) पु० पहला आश्रमी, वेद पढ़नेवाला, विद्यार्थी, मनुष्य की अवस्था के चार भाग किये हैं उनमें से पहली २५ वर्ष तक अवस्था को ब्रह्मचर्य कहते हैं और उस अवस्था में वह केवल वेदशास्त्र पढ़ता है और ब्याह नहीं करता ।

सं० ब्रह्मज्ञ (ब्रह्म=परमेश्वर, ज्ञ=जानना) पु० परमेश्वर को जाननेवाला, ऋषि, मुनि ।

सं० ब्रह्मज्ञान (ब्रह्म + ज्ञान) पु० परमेश्वर का ज्ञान, सच्चा ज्ञान ।

सं० ब्रह्मण्य (ब्रह्म) पु० विष्णु, गु० ब्राह्मण का वा ब्राह्मण के योग्य, २ ब्रह्मा का ।

सं० ब्रह्मभोज } ब्रह्मभोजन (ब्रह्म=ब्राह्मण, भोज वा भोजन=खिलाना) पु० ब्राह्मणों को खिलाना ।

सं० ब्रह्मन् पु० वेद, तप, सत्य, तत्त्व, निर्गुणेश्वर, विशुद्ध, विप्र, ब्राह्मण ।

सं० ब्रह्मपुरी स्त्री० सुमेरुपर्वत पर ब्रह्मा की पुरी ।

सं० ब्रह्मभूति स्त्री० ब्राह्मणता, वेदाधिकार, ब्रह्मा का ऐश्वर्य ।

सं० ब्रह्मयोग (ब्रह्म + योग) पु० परमेश्वर की प्रार्थना, भक्ति, उपासना आदि ।

सं० ब्रह्मरात्रि (ब्रह्म=ब्रह्मा, रात्रि=रात) स्त्री० ब्रह्मा की रात जिसमें १००० युग अथवा मनुष्यों के २१६००००००० बरस बीत जाते हैं, २ छः महीने की रात जिसमें श्रीकृष्ण ने रास किया था ।

सं० ब्रह्मर्षि (ब्रह्म + ऋषि) पु० परमेश्वर का ध्यान करनेवाला और वेद जाननेवाला ऋषि जैसे वसिष्ठ आदि ।

सं० ब्रह्मर्षिदेश पु० आर्यावर्त, कुरुक्षेत्र, मत्स्यदेश, पाञ्चालदेश, मथुरादेश, सूरसेनदेश ।

सं० ब्रह्मलोक (ब्रह्म=ब्रह्मा, लोक=स्थान) पु० ब्रह्मा का स्थान,

सत्यलोक ।

सं० ब्रह्मवर्चस् पु० ब्रह्मतेज ।

सं० ब्रह्मबाण (ब्रह्म + बाण) पु० ब्रह्मअस्त्र, ब्रह्मा का बाण ।

सं० ब्रह्मवादी (ब्रह्म=परमेश्वर, वादी=कहनेवाला, वद्=कहना) पु० वेदान्ती, ब्रह्मज्ञानी ।

सं० ब्रह्मशेष (ब्रह्म=ब्राह्मण, शेष =बचाहुआ) पु० ब्राह्मणों के खाने के पीछे जो खाना बचरहे ।

सं० ब्रह्मसूत्र पु० वेदान्त, २यज्ञोपवीत।

सं० ब्रह्मस्वरूप (ब्रह्म=परमेश्वर, स्वरूप=रूप) गु० परमेश्वर के बराबर, परमेश्वर का रूप ।

सं० ब्रह्महा (ब्रह्म + हन्) क० पु० ब्रह्मघाती, ब्राह्मण का मार डालने वाला ।

सं० ब्रह्महत्या (ब्रह्म=ब्राह्मण, हत्या =मारना) स्त्री० ब्राह्मण को मारना ।

सं० ब्रह्मा (बृह्=बढ़ना) पु० सृष्टि को पैदा करनेवाला देवता, विधाता, बिधना, ब्रह्मा के चार मुँह हैं जिनसे चार वेद निकले हैं और ब्रह्मा का वाहन हंस है ।

सं० ब्रह्माक्षर (ब्रह्म + अक्षर) पु० तीनों देवताओं का मन्त्र, ओम् ।

सं० ब्रह्माणी (ब्रह्मा) स्त्री० ब्रह्मा की स्त्री ।

सं० ब्रह्माण्ड (ब्रह्म + अण्ड) पु० जगत्, सृष्टि, भूमण्डल, सबसृष्टि, २ चाँदि, शिरका बिचला भाग, कांसय सर ।

सं० ब्रह्मादिक (ब्रह्म + आदिक) पु० ब्रह्मा और सब देवता ।

सं० ब्रह्मावर्त (ब्रह्म + आवर्त) पु० स्थान का नाम जो बिठूर के नाम से प्रसिद्ध है ।

सं० ब्रह्मासन (ब्रह्म + आसन) पु० परमेश्वर का ध्यान करते समय का आसन, ऋषिमुनियों का ध्यान करते समय बैठने का ढंग ।

सं० ब्राह्मण (ब्रह्म अर्थात् जो ब्रह्म का अथवा वेद का जाननेवाला) पु० पहले वर्ण के मनुष्य, विप्र, द्विज।

सं० ब्राह्मणी स्त्री० ब्राह्मणकी स्त्री।

सं० ब्राह्म्य (सं० ब्रह्म) पु० ब्रह्म की पूजा, परमेश्वर की पूजा ।

सं० ब्राह्म्यमुहूर्त्त (ब्राह्म्य + मुहूर्त्त) पु० प्रभात, भोर, बिहान, प्रातःकाल, पोह, सूर्य निकलने के पहले का समय ।

अं० ब्रिटिश स्त्री० अँगरेजी ।

भ

सं० भ (भा=चमकना) पु० नक्षत्र, ग्रह, राशि, शुक्राचार्य, दीप्ति, भरद्वाज, भ्रमर ।

प्रा० भँभोरना क्रि० स० काट खाना, फाड़खाना (जैसे कुत्ता) ।

प्रा० भँवर (सं० भ्रमर, भ्रम्=घूमना) पु० भौंरा, २ चक्र, आवर्त्त।

प्रा० **भँवरा** (सं० भ्रमर, भ्रम्=घूमना) पु० एक प्रकार की बड़ी मक्खी, भँवर, अलि, चञ्चरीक ।

प्रा० **भकसी** स्त्री० क़ैद करने के लिये एक बहुत छोटा और तङ्ग और अँधेरा मकान ।

प्रा० **भकुवा** गु० मूर्ख, भोंदू, कुपढ़, निर्बुद्धि ।

सं० **भक्त** (भज्=सेवा करना) क० पु० भक्ति करनेवाला, सेवक, २ भात, ओदन ।

सं० **भक्तकार** क० पु० रसोई बनानेवाला, सूपकार, रसोईदार ।

सं० **भक्तवत्सल** (भक्त + वत्सल) पु० भक्तों पर दया करनेवाला, परमेश्वर ।

सं० **भक्ति** (भज्=सेवाकरना) पूजा, आराधना, विश्वास, परमेश्वर में अथवा अपने राजा या मालिक में प्यार, नवधाभक्ति—१ श्रवण, २ कीर्तन, ३ अर्चन, ४ वन्दन, ५ स्मरण, ६ निवेदन, ७ सख्य, ८ दास्य, ९ सेवन ।

प्रा० **भक्तिवन्त** (सं० भक्तिमत्) गु० जिसके मनमें भक्ति हो, भक्त, सेवक ।

प्रा० **भक्ष** (सं० भक्ष्य, भक्ष्=खाना) पु० खाना, कर्म० खानेयोग्य ।

सं० **भक्षक** (भक्ष + अक) क० पु० खानेवाला, खाऊ, पेटू, खवैया ।

सं० **भक्षण** (भक्ष् + अण) भा० पु० भोजन, आहार ।

सं० **भक्षणीय** (भक्ष् + अनीय) कर्म० पु० खानेयोग्य, खानेकी चीज़ ।

सं० **भक्षित** (भक्ष् + इत) कर्म० पु० खायाहुआ ।

सं० **भक्ष्य** (भक्ष् + य, भक्ष्=खाना) कर्म० पु० खानेयोग्य, पु० खाना, भोजन ।

सं० **भग** (भज्=सेवा करना) पु० योनि, स्त्रीचिह्न, २ सुभाग, ऐश्वर्य, ३ इच्छा, चाह, ४ शोभा, सुन्दरता, ५ सूर्य, ६ चाँद ।

प्रा० **भगत** (सं० भक्त) क० पु० सेवक, भक्ति करनेवाला, २ नर्तक, गानेवाला ।

प्रा० **भगतखेलना** बोल० स्वाँग लाना, नक़ल बनाना ।

प्रा० **भगतन** (भगत) स्त्री० वेश्या, कञ्चनी, पतुरिया, नाचनेवाली ।

सं० **भगदत्त** पु० कामरूप देशाधिप, नाम राजा का जो महाभारत में प्रसिद्ध था ।

सं० **भगवत** **भगवन्त** **भगवान** (भग=ऐश्वर्य, वत्=वाला) पु० ईश्वर, परमेश्वर, गु० ऐश्वर्य आदि गुणयुक्त ।

सं० **भगवती** स्त्री० चण्डी, देवी, ऐश्वर्यादि गुणयुक्ता ।

प्रा० **भगवाँ** पु० गेरुवा बसन, गेरू मिट्टी में रँगाहुआ कपड़ा ।

सं० भगिनी (भज्=सेवाकरना) स्त्री० बहन, बहिन, सहोदरा ।

सं० भगीरथ (भग=ऐश्वर्य)पु०एक सूर्यवंशी राजा का नाम जो अपने तप के प्रभाव से गङ्गा को स्वर्ग से पृथ्वी पर लाया, दिलीप का पुत्र ।

सं० भग्न (भञ्ज्=तोड़ना) कर्म०पु० टूटा हुआ, फूटा हुआ, नष्ट, २ हराया हुआ, जीता हुआ ।

सं० भग्नाश (भग्न=टूटी, आश= आशा जिसकी) गु० निराश, न उम्मेद ।

सं० भग्नी स्त्री० स्वसा, बहिन ।

सं० भङ्ग (भञ्ज्=तोड़ना) भा० पु० तोड़ना, खण्डन, २ लहर, तरङ्ग, ३ हार, पराजय, ४ छेद, ५ डर, स्त्री० भाँग, सबज़ी, एक प्रकार की नशीली पत्ती ।

प्रा० भंगन स्त्री०मेहतरानी,पाख़ाना साफ़ करनेवाली ।

प्रा० भंगी पु० मेहतर, पाख़ाना साफ़ करनेवाला, झाड़ूकश ।

सं० भंगुर (भञ्ज्=तोड़ना) गु० टेढ़ा, बाँका, २ नाश होनेवाला, नष्ट, पु० नदी की बंकाई ।

प्रा० भंगेरा (भङ्ग) पु० बहुत भङ्ग पीनेवाला ।

प्रा० भचकना (सं० भयचकित) क्रि० अ० अचम्भे में आना ।

सं० भजन (भज्=सेवा करना) क्रि० स० माला फेरना, परमेश्वर का नाम रटना, जप ।

प्रा० भजना (सं० भजन) क्रि० स० जपना, ध्यान, माला फेरना।

प्रा० भजना
भजिजाना } क्रि०अ०भरना, चला जाना, दौड़जाना ।

सं० भज्यमान कर्म० पु० सेव्यमान, सेवित, सेवा कियागया ।

सं० भञ्जक (भञ्ज्+अक,भञ्ज्= तोड़ना) क० पु० तोड़नेवाला, खण्डन करनेवाला ।

सं० भञ्जन (भञ्ज्+अन, भञ्ज्= तोड़ना) भा० पु० तोड़न, फोड़न, खण्डन, गु० तोड़नेवाला ।

सं० भञ्जनहार क० पु० तोड़नेवाला ।

सं० भञ्जित (भञ्ज्+इत) कर्म० पु० खण्डित, टूटा हुआ ।

सं० भट (भट्=पोषना) पु० वीर, योधा, लड़ाका, बहादुर,शूर,मल्ल ।

प्रा० भटकना क्रि० अ० डाँवाडोल फिरना, इधर उधर वृथा फिरना, भूलना, भ्रमना ।

प्रा० भटकाना क्रि० स० भुलाना, भ्रमाना ।

सं० भटित्र (भट्+इत्र)पु०शूल, पक्वमांस, कबाब ।

प्रा० भटियारा
भठियारा } (भट्टीहारा) पु०खाना पकानेवाला ।

सं० भट्ट (भट्=पोषना) मरहटे ब्राह्मणों की एक पदवी, २ विद्यावान्, पण्डित, भाट ।

सं० भट्टार पु० सूर्य, पूज्य ।

सं० भट्टारक (भट्ट + ऋ + अक ऋ=जाना) पु० देवता, तपस्वी, राजा, सूर्य, विदूषक, भाँड़, गु० पापरहित, निष्पाप, पुण्यवान् ।

प्रा० भट्टी } (सं० भ्राष्ट्र, भ्रस्ज्=
भठ्ठी } भूंजना) स्त्री० बड़ा चूल्हा, भाड़, २ पजावा ।

प्रा० भड़ पु० एक तरह की बड़ी नाव ।

प्रा० भड़क स्त्री० चमक, दमक, झलक, दिखनौट, २ चौंक ।

प्रा० भड़कना क्रि० अ० चमकना, चौंकना, २ आगका लूका उठना ।

प्रा० भड़भूंजा (सं० भ्राष्ट्रभर्जक, भ्राष्ट्र=भाड़, भर्जक=भूंजनेवाला, भ्रस्ज्=भूंजना) पु० भाड़ झोंकने वाला, कांदू ।

प्रा० भणना (सं० भण्=बोलना या कहना) क्रि० स० बोलना, पढ़ना ।

सं० भणित (भण्=बोलना) कर्म० पु० कहा हुआ, कहता हुआ ।

प्रा० भंटा (सं० भण्टाकी, भटि= पोषना) पु० बैंगन, वृन्ताक ।

सं० भण्ड क० पु० कौतुकी, भाँड़ ।

सं० भण्डक पु० खञ्जनपक्षी, खँडरैचा ।

सं० भण्डन (भण्ड् + अन, भण्ड= बोलना) भा० पु० प्रतारण, छलना ।

सं० भंडूर भा० पु० प्रवञ्चना, छलना ।

प्रा० भंडा (सं० भाण्ड) पु० मटका ।

प्रा० भंडार (सं० भाण्डागार, भाण्ड =बरतन, आगार=घर) पु० ख़ज़ाना, कोठा, कोठार, खत्ता ।

प्रा० भंडारी (भंडार) पु० कोठारी, रोकड़िया, ख़ज़ांची ।

प्रा० भंडेला (सं० भण्ड, भडि= ठट्ठा करना) पु० भाँड़ ।

प्रा० भतार (सं० भर्त्ता) पु० पति, स्वामी, भर्त्ता ।

प्रा० भतीजा (सं० भ्रातृज, भ्रातृ =भाई, जन्=पैदा होना) पु० भाई का बेटा, भाई का लड़का ।

प्रा० भदेशल } गु० भोंड़ा, कुडौल,
भदेशा } गवाँरू, अनाड़ी ।

प्रा० भद्दा गु० मूर्ख, अज्ञानी, भोंदू, गावदी, २ बेरस, मोटे काम की चीज़ ।

सं० भद्र (भदि=कल्याण होना) क० पु० नेक, दोस्त, भागवान्, श्रेष्ठ, उत्तम, पु० कल्याण, मङ्गल, २ शिव, मुबारक ।

प्रा० भद्रहोना बोल० शिर के बाल और डाढ़ी मूछके बाल मुँड़ाना, (हिन्दुओं में एक रीति है कि जब कोई मरता है तब अथवा तीर्थ पर बाल मुँड़ाते हैं) ।

सं० भद्रक पु० लाभ, फ़ायदा, २ रस, मज़ा, ३ भलाई ।

सं० भद्रकाली (भद्र=कल्याणरूप,

काली, दुर्गा) स्त्री० दुर्गा, महामाया, काली देवी।

सं० **भद्रश्री** स्त्री० चन्दन, केसर, कुंकुम, मङ्गल, शोभा, शृङ्गार ।

सं० **भद्रा** (भदि=सुखी होना) स्त्री० श्रीकृष्ण की एक स्त्री का नाम, २ ज्योतिष में दूसरी, सातवीं और बारहवीं तिथि, व्योमनदी, अशकुन।

प्रा० **भनक** पु० आवाज़, शब्द ।

प्रा० **भबकी** स्त्री० धमकी, घुरकी, झिड़की, डाट ।

प्रा० **भभकना** क्रि० अ० आग लगना २ आग का लूका उठना, ३ क्रोध में आना, जल मरना, ४ घोड़े का ख़ूब वेग से दौड़ना ।

प्रा० **भभूका** पु० झल, ज्वाला, गु० ख़ूब लाल (जैसे जलता हुआ कोयला) २ बहुत चमकदार, सुन्दर ।

प्रा० **भभूत** } (सं० विभूति) स्त्री०
भभूती } राख, भस्म जिसको योगी संन्यासी अपने शरीरमें मलते हैं।

सं० **भय** (भी=डरना) पु० डर, शङ्का, ख़ौफ़, त्रास ।

प्रा० **भयखाना** बोल० डरना ।

प्रा० **भयकारक** } (भय=डर, कृ=
भयंकर } करना) क०पु० डरावना, भयानक, भयजनक, ख़ौफ़नाक ।

प्रा० **भयचक** } (सं० भयचकित,
भैचक } भय=डर, चकित= अचम्भित) गु० डराहुआ, घबराया हुआ, भयातुर, भयभीत ।

सं० **भयभीत** (भी=डरना) कर्म० पु० डरा हुआ, घबराया हुआ, भयातुर।

सं० **भयवान्** (भय=डर, वान्=वाला) गु० डरा हुआ, भयातुर।

प्रा० **भया** } (सं० भू=होना) क्रि०
भयौ } अ० हुआ ।

सं० **भयातुर** (भय=डर, आतुर= घबराया हुआ) गु० डर से घबराया हुआ, भयचक ।

सं० **भयानक** (भी=डरना) गु० डरावना, भयंकर, नौ रसों में से एक रस का नाम ।

सं० **भयापह** (भय + अप + हन् =नाश करना) क०पु० भयनाशक, डर छुड़ानेवाला ।

प्रा० **भयावना** (सं० भयानक) गु० डरावना, भयंकर, भयानक।

सं० **भयावह** (वह्=जाना) क० पु० भयंकर, भयानक, भयदायक, ख़ौफ़नाक ।

सं० **भर** (भृ=भरना) गु० पूरा, मुँहामुँह, सब, सारा, तमाम ।

प्रा० **उमरभर** बोल० सारी उमर।

सं० **भरण** (भृ=पालना) भा० पु० भरना, पोषण, पालन, रक्षा, बचाव, तनख़्वाह ।

सं० **भरणी** (भृ=भरना) स्त्री० एक नक्षत्र का नाम, २ साँप का झड़ाना।

सं० भरणीय कर्म० पु० पोष्य, पालन योग्य ।

सं० भरत (भृ=भरना, पालना) पु० राजा दशरथ का बेटा, २ एक राजा का नाम जिसके नाम से यह देश भरतखण्ड अथवा भारतवर्ष कहलाता है, दुष्यन्त का पुत्र ।

प्रा० भरत पु० एकधातु जिसमें ताँबा, जस्ता और सीसा मिला होता है ।

सं० भरताग्रज (भरत + अग्रज) पु० श्रीरामचन्द्रजी ।

सं० भरतपुत्रक पु० विदूषक, भाँड़, बहुरूपिया, बाज़ीगर ।

सं० भरद्वाज पु० एक मुनि का नाम जो बृहस्पति का बेटा था, २ एक पक्षी का नाम, खड़ैचा ।

प्रा० भरना (सं० भरण) क्रि० स० पूरा करना, २ महसूल या ऋण चुका देना, ३ बन्दूक़ में गोली आदि डालना, ४ सहना, पाना जैसे दुःख भरना, बोल० दुःख पाना, दुःख सहना ।

प्रा० भरपाना क्रि० स० वसूल पाना, २ जब कोई आदमी निराश होता है तब भी वह बोलता है कि "मैंने भर पाया" ।

प्रा० भरपूर गु० ख़ूब भरा हुआ ।

प्रा० भरम (सं० भ्रम) पु० संदेह, धोखा, भूल, चूक, २ यश, नामवरी ।

प्रा० भरमजाना बोल० किसी पर किसी बात का संदेह होना ।

प्रा० भरमखुलना या खुलजाना बोल० भेद खुलजाना, मर्यादा खुल जाना ।

प्रा० भरमखोलदेना बोल० छिपी बातको प्रकट करदेना ।

प्रा० भरमगँवाना बोल० अपने यश को बट्टा लगाना, आबरू खोना ।

प्रा० भरमनिकलजाना बोल० भेद खुल जाना ।

प्रा० भरमाना (सं० भ्रम=धोखा) क्रि० स० धोखा देना, भुलाना, फुसलाना, ललचाना ।

प्रा० भरा (भरना) गु० पूरा, पूर्ण, मुँहामुँह ।

सं० भरित (भृ=भरना) कर्म० पु० पूरित, पालित, पोषित, रक्षित ।

सं० भरू क० पु० महादेव, विष्णु, पिता, स्वामी ।

प्रा० भरोसा (सं० भद्राशा, भद्र=अच्छी, आशा=आश) पु० आशा, आस, विश्वास, उम्मेद ।

सं० भर्ग (भृज्=चमकना) पु० महादेव, ब्रह्मा, ज्योति, तेज, प्रकाश, किरण ।

सं० भर्जन (भर्ज्=भूंजना) पु० भूंजना, पचाना ।

सं० भर्त्ता (भृ=पालना, पोसना) पु० पति, स्वामी, ख़ाविंद, गु० पालनेवाला, प्रतिपालक ।

सं० भर्त्सक (भर्त्स=अक) क०पु० तिरस्कारक, निन्दक ।

सं० भर्त्सन् भा०पु०कुत्सा,निन्दा।

सं० भर्तृहरि पु० विक्रमादित्य राजा का भाई ।

प्रा० भल (सं० भद्र) गु० भला, उत्तम, श्रेष्ठ, अच्छा ।

प्रा० भलमनसाई
भलमनसात
भलमनसी } स्त्री० अच्छा आदमीहोना, इन्सानियत।

प्रा० भल पु० तरफ़, ओर से, जैसे शिरके भल=शिर की तरफ़ ।

प्रा० भला (सं० भद्र) गु० अच्छा, उत्तम, श्रेष्ठ, २ चंगा ।

प्रा० भलाकरभलाहो, सौदाकर नुफ़ाहो कहा०—जैसा करेगा वैसा पावेगा ।

प्रा० भलाआदमी बोल० अच्छा आदमी ।

प्रा० भलामानना बोल० अहसान मानना, भलाई मानना ।

प्रा० भलाचङ्गा बोल०नीरोग,मोटा, ताज़ा।

प्रा०भलेआये बोल०बहुतदेरमें आये।

प्रा० भलाई भा० स्त्री० नेकी, नेकनामी, अच्छापन, क्षेम, कुशल ।

प्रा० भलाईलेना बोल० लोगों के साथ अहसानकरना, नेकीकरना।

प्रा० भलाईरहना बोल० सुयश रहना, नेकनाम रहना ।

सं० भल्ल पु० भाला, बरछा, रीछ।

सं० भल्लुक
भल्लूक } पु० रीछ, भालू ।

सं० भव (भू=होना) पु० संसार, जगत्, २ जन्म, ३ कुशल, क्षेम, मङ्गल, ४ पाना, प्राप्ति, ५ शिव, महादेव ।

सं० भवदीय गु० त्वदीय,तुम्हारा, आपका ।

सं० भवन (भू=होना) पु० घर, स्थान, वास, भाव, सत, चिन्तन।

सं० भवन्त पु० आपका, तुम्हारा, समय, काल, गु० पूज्य, श्रेष्ठ, उत्तम, प्रधान ।

सं० भवान्ति क०पु० समय,वर्त्तमान काल, पूजा का समय, श्रेष्ठ, पूज्य।

सं० भवभूति पु० नाटक, मालती-माधव का वर्णन, नकुल, न्योला, स्त्री० संसार की विभूति, संसार का ऐश्वर्य ।

सं० भवसमुद्र
भवसागर } (भव=संसार, समुद्र वा सागर=समन्दर) पु० संसाररूपी समुद्र, संसारसागर ।

सं० भवादृश (भव+आदृश्)गु० आपके तुल्य, तुम्हारे समान, आप सरीखा ।

सं० भवानी (भव=शिव) स्त्री०शिव की स्त्री, शिवरानी, पार्वती, दुर्गा।

सं० भवार्णव (भव=संसार, अर्णव

=समुद्र) पु० संसारसमुद्र, भवसागर।

सं० भवितव्य (भू=होना) भा० स्त्री० होनेवाला, होनहार ।

सं० भवितव्यता (भवितव्य) भा० स्त्री० होनहार, २ भाग्य, भाग।

सं० भविता क०पु० होनहार, होनेवाला, गु० पूज्य, श्रेष्ठ ।

सं० भविष्णु क० पु० होनेवाला ।

सं० भविन क० पु० बात करनेवाला, मुतकल्लिम ।

सं० भविष्य (भू=होना) गु० होनहार, होनेवाला, जो होगा ।

सं० भविष्यत् (भू=होना) पु० आनेवाला समय, गु० होनहार ।

सं० भविष्यद्वक्ता (भविष्यत्=होनहार, वक्ता=कहनेवाला) क०पु० भविष्यत्काल की बात जाननेवाला, आगमज्ञानी, होनहार जाननेवाला ।

सं० भविष्योन्नति (भविष्य+उन्नति) स्त्री० आगामी वृद्धि, होनेवाली तरक़ी, आयन्दा तरक़ी ।

सं० भव्य (भू=होना) गु० भागवान्, होनहार, योग्य, शुभ, सच्चा ।

सं० भषी (भष्=भूंकना) क० पु० कुत्ता, श्वान ।

सं० भस्त्रा स्त्री० चमड़े की धौंकनी ।

सं० भस्म (भस्=चमकना) स्त्री० राख, छार, भभूत ।

सं० भस्मक (भस्म=राख, कृ=करना) क० पु० बहुभख, रोग, बहुत भोजन करनेवाला ।

सं० भस्मसात् अव्य० सर्वभस्म, सब जलगया ।

सं० भा (भा=चमकना) स्त्री० चमक, प्रकाश, शोभा, सुन्दरता, पु० सूर्य ।

प्रा० भाँग (सं० भङ्गा, भञ्ज्=तोड़ना) स्त्री० बूटी, भङ्ग, विजया, सबज़ी ।

प्रा० भाँजना (सं० भञ्जन, भञ्ज्=तोड़ना) क्रि० स० तोड़ना, मिलाना, जैसे रस्सी का ।

प्रा० भाँजा / भानजा (सं० भगिनीज या भागिनेय) स्त्री० बहिन का बेटा ।

प्रा० भाँजी / भानजी (सं० भागिनेयी) स्त्री० बहिन की बेटी ।

प्रा० भाँजी (सं० भञ्जनी, भञ्ज्=तोड़ना) स्त्री० रुकाव, रोक ।

प्रा० भाँजी मारना बोल० रोकदेना, बन्दकरना ।

प्रा० भाँड़ (सं० भण्ड, भडि=हँसी करना) पु० बहुरूपिया, स्वांग करनेवाला ।

प्रा० भाँड़ना (सं० भण्डन, भडि =बुरा कहना) क्रि० स० गाली देना, बुरा भला कहना ।

प्रा० भाँड़ / भाँड़ा (सं० भाण्ड, भा=चमकना) पु० बरतन, हंडा।

प्रा० भाँत / भाँति स्त्री० डौल, ढब, रीति, प्रकार, तरह ।

प्रा० **भाँतभाँत** बोल० तरह तरह का, नाना प्रकार का, क़िस्म क़िस्म के।

प्रा० **भाँवर** पु० } (सं० भ्रम्=घूमना)
भाँवरी स्त्री० } ब्याह में दुलहिन को दूल्हे के चारों ओर सात बार घुमाना या दूल्हा दुलहिन का वेदी की परिक्रमा देना, २ फेर, घुमाव।

प्रा० **भाई** (सं० भ्राता) पु० एक बाप का बेटा, मा जाया भैया, २ संगी, साथी, मित्र।

प्रा० **भाईचारा** पु० भयापा, भायप, नतैत, बिरादरी।

प्रा० **भाईबन्द** (भ्राता + बन्धु) पु० जाति के लोग, भयापा, बिरादरी।

प्रा० **भाकसी** स्त्री० क़ैद करने के लिये एक बहुत छोटा तंग और अंधेरा मकान।

प्रा० **भाखना** } (सं० भाषण) क्रि०
भाषना } स० बोलना, कहना।

प्रा० **भाखा** (सं० भाषा) स्त्री० बोली, भाषा, ज़बान।

सं० **भाग** (भज्=हिस्सा करना) पु० हिस्सा, बाँट, अंश, विभाग, खण्ड।

प्रा० **भाग** (सं० भाग्य) पु० प्रारब्ध, क़िस्मत, नसीब, भाग्य।

प्रा० **भागखुलना** } बोल० भाग्य-
भागजागना } वान् होना, धनी होना।

सं० **भागग्राही** (ग्रह्=लेना) क० पु० भागी, हिस्सेदार।

प्रा० **भागभरोसा** बोल० धीरज, ढाढ़स।

प्रा० **भागना** क्रि० अ० पलाना, दौड़ना, २ अवज्ञा करना।

प्रा० **भागचलना** बोल० निकल चलना, भागजाना, चलाजाना।

प्रा० **भागजाना** बोल० चलाजाना, रफूचक्कर होजाना।

सं० **भागधेय** (धा=लेना) पु० भाग्य, शुभकर्म, उपायन, राजा का कर, ख़िराज, दायाद, सपिण्ड, बलि।

प्रा० **भागनिकलना** मु० निकल चलना, भागचलना।

प्रा० **भागाभाग** बोल० दौड़ादौड़, लगातार दौड़ना।

सं० **भागवत** (सं० भगवत् अर्थात् जिसमें परमेश्वर की कथा हो) पु० अठारह पुराणों में का एक पुराण जिसको वेदव्यासजी ने बनाया जिसमें बारह स्कन्ध हैं और सब पुराणों से यह पुराण इन दिनों में बहुत पढ़ा पढ़ाया जाताहै। इसमें अठारह हज़ार श्लोक हैं। इसके दशवें स्कन्धका उल्था हिन्दीभाषा में हुआ है जिस का नाम प्रेमसागर है।

सं० **भागहार** (हृ=हरण) पु० भा-

जक, गु० भागहर्ता, मक़्सूमअलेह ।

सं० **भागी** (भाग=हिस्सा) पु० साझी, बँटैत, बँटवैया ।

प्रा० **भागीरथी** (भगीरथ) स्त्री० गङ्गा, कहते हैं कि गङ्गा को राजा भगीरथ तपस्या करके स्वर्ग से पृथ्वी पर लाये इस लिये इसका नाम भागीरथी पड़गया ।

सं० **भागुरि** पु० स्मृति-व्याकरणादि का कर्ता, धर्मशास्त्र और व्याकरण का आचार्य ।

सं० **भाग्य** (भज्=सेवा करना) पु० प्रारब्ध, भाग, क़िस्मत, नसीब ।

सं० **भाग्यवन्त** } (भाग्य=भाग,
भाग्यवान् } वत्=वाला) गु० भागवान्, प्रारब्धी, क़िस्मतवाला, लक्ष्मीवान्, धनवान् ।

सं० **भाग्यशाली** क० पु० प्रारब्धी, क़िस्मतवर ।

सं० **भाग्यहीन** (भाग्य + हीन) गु० मन्दभागी, दरिद्री, बद क़िस्मत ।

सं० **भाग्यानुसार** (भाग्य + अनुसार) गु० प्रारब्धानुसार, तक़दीर के मुवाफ़िक़ ।

सं० **भाजक** (भाज्=बाँटना) पु० बाँटनेवाला, वह अङ्क जिसका भाग दिया जाय, मक़्सूमअलेह ।

सं० **भाजन** (भाज्=जुदा करना) पु० बरतन, बासन, पात्र, भाँड़ा ।

प्रा० **भाजना** क्रि०अ० भागना ।

सं० **भाजित** (भाज्=बाँटना) कर्म० पु० बँटा हुआ, जुदा किया हुआ ।

सं० **भाजी** (भाज्=बाँटना) स्त्री० साग, तरकारी ।

प्रा० **भाजी** (सं० भाजित, भाज्=बाँटना) स्त्री० खाने का हिस्सा, बखरा, बैना ।

सं० **भाज्य** (सं० भाज्=बाँटना) कर्म०पु० भाग देने योग्य, पु० भाग, हिस्सा, विभाग, २ गणित में वह संख्या जिसमें भाग दिया जाता है, मक़्सूम ।

प्रा० **भाट** पु० कवि, चारण, यश बखाननेवाला ।

सं० **भाटक** (भट=बेतन) पु० भाड़ा, किराया, क० भाड़ा देने वाला ।

प्रा० **भाठा** पु० समुन्दर के पानी का उतार या गिरना ।

प्रा० **भाड़** (सं० भ्राष्ट्र, भ्रस्ज=भूँजना) पु० एक तरह का बड़ा चूल्हा जिसमें चने आदि भूने जाते हैं ।

प्रा० **भाड़ा** पु० किराया ।

प्रा० **भाण्डीर** पु० एक वन का नाम जो वृन्दावन में है, २ बड़का वृक्ष ।

सं० **भात** (भा=दीप्ति) क० पु० दीप्तिमान्, रोशन, प्रकाशवान् ।

प्रा० **भात** (सं० भक्त, भज्=पकाना) पु० पका हुआ चावल ।

प्रा० **भाथा** पु० तीर रखने का घर, तूण, तर्कश ।

प्रा० **भादौं** (सं० भाद्र, भद्र=भाद्रपदा नक्षत्र) पु० बरस का छठा महीना जिस में पूरा चाँद भाद्रपदा नक्षत्र के पास रहता है और इस महीने की पूर्णमासी को यह नक्षत्र होता है।

प्रा० **भादौं की भरन** बहुत भारी मेह जो भादौं में बरसता है।

प्रा० **भाना** क्रि०स० अच्छा लगना, मन चाहा होना, सोहाना, पसन्द होना।

सं० **भानु** (भा=चमकना) पु० सूर्य, २ सूर्य की किरण।

सं० **भानुज** (भानु+ज, जन्=पैदा होना) पु० अश्विनीकुमार, शनैश्चर, यमराज, राजा कर्ण।

सं० **भानुजा** (भानु=सूर्य, जन्=पैदा होना) स्त्री० यमुना नदी, यमुना।

प्रा० **भान्ना** (सं० भञ्जन) क्रि०स० तोड़ना, भाँजना।

प्रा० **भाफ़** (सं० बाष्प) स्त्री० धुवाँ, बाफ।

प्रा० **भाभी** (सं० भ्रातृवधू) स्त्री० भाई की स्त्री, भावज, भौजाई।

सं० **भाम** पु० सूर्य, क्रोध, प्रकाश, बहनोई।

सं० **भामा** स्त्री० क्रोधयुक्त स्त्री।

सं० **भामी** क० पु० क्रोधी।

प्रा० **भायप** भा० पु० भाईपन।

सं० **भामिनी** (भाम्=क्रोध करना) स्त्री० क्रोध करनेवाली स्त्री, कर्कशा, लड़ाका स्त्री, लुगाईमात्र, स्त्रीमात्र।

सं० **भार** (भृ=भरना) पु० बोझ, बोझा, ६४ माष का पल, २०००पल का भार या ८००० तोले का।

सं० **भारत** (भरत एक राजा का नाम) पु० भरत राजा का वंश अथवा देश, भरतखण्ड, २ महाभारत ग्रन्थ जिसमें भरतवंशी राजा अर्थात् कौरव और पाण्डवों की लड़ाई का वर्णन है।

सं० **भारती** (भृ=भरना) स्त्री० सरस्वती, वाणी।

सं० **भारद्वाज** पु० मुनिभेद, द्रोणाचार्य, अगस्त्यमुनि, बृहस्पति का पुत्र, खड़रैचापक्षी, हड्डी।

सं० **भारवाह** } (भार=बोझ, वह
भारवाहक } =लेजाना) क० पु० बोझ लेजानेवाला पशु जैसे बैल, गधा आदि, मोटिया।

सं० **भारिक** (भृ=भरना) क० पु० कहार।

सं० **भारी** (भार) गु० बोझल, गरू, २ बड़ा मोटा, ३ महँगा, बहुत मोल का।

प्रा० **भारीभरकम** बोल० गंभीर, भला मानुष, सहनेवाला।

प्रा० **भारीपत्थरचूमकरछोड़देना** बोल० जो काम अपने से न होसके उसको छोड़ देना।

प्रा० **भारीहोना** बोल० बहुत कठिन होना ।

सं० **भार्गव** (भृगु) पु० शुक्र, परशुराम, गज, धन्वी, धनुषधारी, स्त्री० पार्वती, लक्ष्मी, दुर्गा, दूब ।

सं० **भार्या** (भृ=भरना) स्त्री० जोरू, ब्याही हुई स्त्री, बहू, पत्नी ।

सं० **भार्यातिक्रम** (भार्या + अतिक्रम) पु० परस्त्रीगामी, स्त्री त्याग, स्त्री का नाश होना, स्त्री का अपराध ।

सं० **भाल** (भा=चमकना) पु० ललाट, लिलाड़, लिलार ।

प्रा० **भाल** (सं० भल्ल, भल्ल्=मारना) स्त्री० तीरकी नोक या फाल ।

प्रा० **भाला** (सं० भल्ल, भल्ल्=मारना) पु० बर्छा, सेल, सांग ।

प्रा० **भालुक** ⎫ (सं० भल्लूक, भ-
भालू ⎬ ल्ल्=मारना) पु०
भाल ⎭ रीछ, एक जंगली जानवर ।

सं० **भाव** (भू=होना वा सोचना) पु० सम्मति, मत, जीकी बात, मानसविकार, २ दशा, अवस्था, ३ गुण, स्वभाव, प्रकृति, ४ अर्थ, अभिप्राय, मतलब, ५ मन, मनकी तरङ्ग, ६ काम, क्रोध, मोह, स्नेह आदि, ७ आन, सदा, नखरा, चोंचला, हाव भाव, ८ होना, ९ पदार्थ, द्रव्य, १० नाटक में बहुत बातों का जाननेवाला पण्डित, ११ तन्वादि द्वादशस्थान अर्थात् कुण्डली के बारह घर ।

प्रा० **भावबनाना** बोल० चोंचला करना, नाचने में हाथ-पैर-आँख आदि अङ्गों से इशारा करना ।

प्रा० **भाव** पु० मोल, निर्ख़ ।

प्रा० **भावई** (सं० भावी) क्रि० वि० दैवयोग से, भविष्य, होनहार ।

प्रा० **भावज** (सं० भ्रातृजाया) भ्रातृ=भाई, जाया=स्त्री) स्त्री० भाई की स्त्री, भाभी, भौजाई ।

सं० **भावना** (भू=होना वा सोचना) स्त्री० चिन्ता, ध्यान, भाव, सोच, संदेह, अनुभव, जो बात पहले हो चुकी हो उसको फ़िर याद करना ।

सं० **भावक** कृ० पु० चिन्ताकारक ।

सं० **भावाभाव** (भाव + अभाव) भा० पु० होना न होना, अदम वजूद ।

सं० **भाविक** कृ० पु० अभिप्राय ज्ञाता, नर्तक, चतुर, जौहरी, परखने वाला ।

सं० **भावित** (भू=होना वा सोचना) कर्म० कृ० सोची, चिन्तित, फ़िकरमन्द, सचेत, शङ्कित, डरता हुआ, चिन्ता करता हुआ ।

सं० **भावी** (भू=होना) गु० होनहार, होने वाला, होतव्य, भविष्य, जो कुछ होनेवाला हो, बदाहुआ ।

सं० **भावुक** (भू=होना) भा०पु० मङ्गल, कल्याण, प्रसन्नता, गु० प्रसन्न, नीरोग ।

प्रा० **भावें** (सं० भावे=होने में) लेखे विचार में, मन में जानने में, पसन्द आवे ।

सं० **भाषण** (भाष्=कहना) पु० कहना, बोलना ।

सं० **भाषणीय** र्म०पु० कहने योग्य ।

सं० **भाषा** (भाष्=कहना) स्त्री० बोली, वाणी, ज़बान, भाषा ।

सं० **भाषान्तर** गु० अन्य भाषा, उल्था ।

सं० **भाषित** (भाष्=कहना) र्म० पु० कहा हुआ, कथित ।

सं० **भाषी** क० पु० वक्ता, वादी ।

सं० **भाष्य**[१] (भाष्=कहना) पु० टीका, टिप्पणी, सूत्रार्थ, महाभाष्य नाम एक ग्रन्थ जो संस्कृत व्याकरण की एक टीका है ।

सं० **भाष्यकार** क० पु० टीकाकारक, टीका बनानेवाला, शरह करनेवाला ।

सं० **भासकार** स्त्री० प्रकाश, दीप्ति, सम्पदा, प्रभा, शोभा, किरण, पु० गृद्ध, मुर्ग़ा, अहीर ग्राम ।

सं० **भासन्त** गु० सुन्दराकार, रमणीक, मनोहर, प्रकाशवान्, पु० सूर्य, चन्द्रमा, कमल, मोर की चोटी, मुर्ग़ी, गृद्ध, स्त्री० तारागण ।

सं० **भास्कर** (भास्=प्रकाश, भास्=चमकना और कृ=करना) पु० सूर्य, २ आग, ३ भास्कराचार्य जिसने सिद्धान्तशिरोमणि आदि ज्योतिष के ग्रन्थ बनाये हैं, ४ सोना, स्वर्ण, गु० चमकता हुआ, प्रकाशित ।

सं० **भास्वर** (भास्=चमकना) पु० सूर्य, २ दिन, ३ अर्कवृक्ष, गु० तेजस्वी, दीप्तिमान् ।

सं० **भास्वान्** पु० सूर्य, दिनमणि ।

सं० **भासु** पु० सूर्य, दिवाकर ।

सं० **भासुर** (भास् + उर) पु० वीर, दीप्तिमान्, शोभित, पु० बिल्लौर पत्थर, कुष्ठ की औषध ।

प्रा० **भिकारी** } **भिखारी** } (सं० भिक्षाहारी, भिक्षा=भीख, आहारी=लेनेवाला वा खानेवाला, हृ=लेना) पु० भीख माँगनेवाला, याचक, मँगता ।

सं० **भिक्षा** (भिक्ष=माँगना) स्त्री० भीख माँगना, भिक्षित वस्तु ।

सं० **भिक्षाटन** (भिक्षा + अटन, अट्=जाना) भा० पु० भीख माँगने के लिये घूमना ।

सं० **भिक्षु** (भिक्ष्=माँगना) पु० संन्यासी, यती, भिखारी ।

सं० **भिक्षुक** (भिक्ष्=माँगना) क० पु० भिखारी, याचक, मँगता,

---

[१] “सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र वाक्यैः सूत्रानुसारिभिः । स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यम्भाष्यविदो विदुः” ॥१॥

संन्यासी ।

भिड़ना क्रि० अ० बहुतही पास पास होजाना, सट जाना, मिलजाना, २ मुठ भेड़ होना, दो सेनाओं का लड़ाई में पास पास आजाना ।

भिड़ाना क्रि० स० मिलाना, दो चीज़ोंको पास पास सटा देना, २ दो आदमियों को लड़ा देना ।

भिंडी स्त्री० रामतरोई, एक तरकारी का नाम ।

भित्त (भिद्=तोड़ना) कर्म० पु० खण्ड, विभाग, टुकड़ा, अर्ध, आधा ।

भित्ति (भिद्=फोड़ना) स्त्री० भीत, दीवार, पगार ।

भिदक (भिद् + अक) क०पु० वज्र, खड्ग, अस्त्र, शस्त्र ।

भिदुक क० पु० भेदक, तोड़ फोड़ करनेवाला ।

भिनकना क्रि० अ० मक्खियों का किसी चीज़ पर इकट्ठा होना, भिनभिनाना ।

भिनभिनाना क्रि० अ० मक्खियोंका शब्द करना, भिनकना ।

भिन्दिपाल (भिन्दि=भेदन, भिद्=फाड़ना, पाल=पालना) पु० हाथ से फेंकने का एक हथियार, ढेलबाँस, गोफना, गोफनी ।

भिन्न (भिद्=टुकड़े करना) गु० जुदा, अलग, न्यारा, पृथक्, पु० टुकड़ा, हिस्सा, बाँटा, कसर, भिन्न भिन्न, बोल० जुदा जुदा ।

प्रा० भिनुसार } (सं०भानुसार, भानु
भिन्सार } =सूर्य, सृ=जाना) पु०सूर्यके निकलने का समय, भोर, बिहान, प्रभात, प्रातःकाल ।

सं० भिषक् } (भिष्=रोग प्रतीकार)
भिषज् } पु० वैद्य, रोगों का डरवानेवाला अथवा जिससे रोग डरें, रोगप्रतीकारक ।

प्रा० भीख (सं० भिक्षा) स्त्री० भिक्षा माँगना, जाचना ।

प्रा० भीड़ स्त्री० ठठ, जमघट ।

प्रा० भीड़भाड़ बोल० ठट्ठ, भीड़ ।

प्रा० भीड़भड़क्का बोल० बहुत से आदमियों का इकट्ठा होना ।

सं० भीत (भी=डरना) क० पु० डराहुआ, भययुक्त ।

प्रा० भीत (सं० भित्ति) स्त्री० दीवार, ओछे की भीति, ज्यों बालू की भीति, कहा०—नीच आदमी की मित्रताई बालूकी भीति की तरह अस्थिर है ।

प्रा० भीतर (सं० अभ्यन्तर) नित्य सं० अन्दर, बीच, मध्य, में ।

सं० भीति (भी=डरना) स्त्री० डर, भय, त्रास, शङ्का ।

सं० भीम (भी=डरना जिससे) गु० डरावना, भयानक, पु०राजा युधिष्ठिर का भाई, वायु देवता से

उत्पन्न, २ भयानक रस, ३ शिव।

सं० **भीमा** (भीम) स्त्री० दुर्गा।

सं० **भीरु** (भी=डरना) क० डरपोकना, डरनेवाला, कम हिम्मत, कादर, पु० शृगाल।

सं० **भीरुक** क० पु० भययुक्त, कातर, डरपोकना, पु० उल्लू पक्षी, चिमगादर, कुहरा, नीहार।

सं० **भीरुता** भा० स्त्री० भय, कादरपन।

प्रा० **भील** (सं० भिल्ल, भिल्=भेदना) पु० एक पहाड़ी जाति का नाम, चुहाड़, किरात।

सं० **भीषण** (भी=डराना) भा० पु० सेहुँड़वृक्ष, भटकटैया, बाजपक्षी, त्रास, भय, भयानकरस, २ शिव, गु० भयानक, भयंकर, डरावना।

सं० **भीषा** गु० स्त्री० त्रास, भय, भयंकरता।

सं० **भीष्म** (भी=डरना जिससे) पु० पाण्डवों का दादा, शंतनु राजा और गङ्गा का पुत्र, २ भय, डर, भयानक रस, गु० डरावना, भयानक, भयंकर।

सं० **भीष्मपञ्चक** पु० भीष्म से बताये गये पाँच दिन कातिक शुक्ल एकादशी से पूर्णमासीपर्यन्त व्रतादिक करना।

सं० **भीष्मसू** (सू=जनना) स्त्री० गङ्गा, भीष्म की जननी, मां।

प्रा० **भुआल** } (सं०भूपाल) पु०
भुवाल } राजा, नरपति।

सं० **भुक्त** (भुज्=भक्षण करना) कर्म०पु० खादित, खाया हुआ।

सं० **भुक्ति** (भुज् + ति) भा० स्त्री० भोजन, भोग, खाना।

प्रा० **भुगतना** (सं० भोग, भुज्=खाना) क्रि० स० भोगना, सहना, भले बुरे का फल पाना।

प्रा० **भुगताना** क्रि० स० भले बुरे का फल देना, भोग करवाना।

सं० **भुग्न** (भुज् + त) क० पु० परेशान, कुटिल, वक्र, कुबड़ा।

प्रा० **भुच** } गु० गँवार, जंगली, मूरख,
भुच्च } अनगढ़, अनपढ़।

सं० **भुज** ण० पु० } (भुज्=खाना
भुजा स्त्री० } जिससे खाते हैं, या भुज्=टेढ़ा होना) बांह, बाहु, दण्ड, २ तिखूंट और चौखूंट आदि खेतों की लकीर।

सं० **भुजग** (भुज=टेढ़ा, गम्=जाना) पु० साँप, सर्प, नाग।

सं० **भुजगान्तक** क० पु० गरुड़।

सं० **भुजगाशन** (भुजग + अशन) क० पु० गरुड़।

सं० **भुजङ्ग** } (भुज=टेढ़ा, गम्=
भुजङ्गम } जाना) पु० साँप, सर्प।

सं० **भुजगहन** पु० भुजवन, भुज समूह।

प्रा० **भुजबन्ध** (भुज=बाँह, बन्ध=

बाँधना) पु० बाजूबन्द ।

भुजबीहा (सं० भुजव्यूह) भुजसमूह, बीसभुजा ।

भुजान कृ० भोगकारी ।

भुञ्जन (भुज्=खाना) भा० भोजन, खादन ।

भुजि कृ० पु० अग्नि ।

भुजिष्य (भुज् + इष्य, भुज्=खाना) कृ०पु० दास, सेवक ।

भुजिष्या स्त्री० दासी, टहलुई ।

भुट्टा पु० मकई की बाली ।

भुतना (सं० भूत) पु० छोटा भूत, प्रेत, पिशाच ।

भुन्ना (सं० भर्जन, भृज्=भूनना) क्रि० अ० सेंकाजाना, सिकना, भूंजा जाना ।

भुरभुरा गु० सूखी बुकनी या ऐसी चीज़ जो थोड़े ज़ोर से चूर २ होजाय ।

भुलसना क्रि० अ० जलना, झुलसना, गर्म रेत या पत्थर से अधजला होना ।

भुरकाना क्रि० स० पीसी हुई किसी चीज़ को किसी चीज़ पर छिड़कना ।

भुरकी डालना बोल० जादू से वश में करलेना ।

भुलाना क्रि० स० भूलजाना, भुलादेना, याद न रखना, २ बहकाना, भरमाना, फुसलाना ।

प्रा० भुलावा पु० धोखा, छलावा ।

प्रा० भुलावा देना बोल० धोखा देना, छलना ।

प्रा० भुवङ्ग (सं० भुजङ्ग) पु० साँप ।

सं० भुवन (भू=होना) पु० लोक, जगत्, सृष्टि ।

सं० भुवर् (भू=होना) पु० आकाश, अन्तरीक्ष, दूसरा लोक ।

प्रा० भुस (सं० बुस, बुस्=छोड़ना) पु० अनाज के ऊपर का छिलका ।

प्रा० भुसंड गु० बहुत मोटा आदमी ।

सं० भुशुण्डी (आयुधविशेष) बन्दूक " भुशुण्डी लोहनलिका नलिका च भुशुण्डिका" (इति पञ्चतन्त्रप्रकाशः) गुर्जरभाषायामपि ।

सं० भू (भू=होना) स्त्री० धरती, पृथ्वी, भूमि, धरणी, २ स्थान, जगह, ३ यज्ञ की आग ।

प्रा० भूंसना (सं० भस्=भौंकना) क्रि० अ० भौंकना, हौं हौं करना, कुत्ते का शब्द करना ।

प्रा० भूंईडोल (सं० भूमि=पृथ्वी, डोल=डोलना) पु० भूचाल, भूकम्प ।

सं० भूकम्प (भू=धरती, कम्प=काँपना) पु० भूचाल, भूंईडोल ।

सं० भूकेश (पु० वट, बरगद, २ शैवल, सिवार ।

प्रा० भूख (सं० बुभुक्षा) स्त्री० खाने की चाह, क्षुधा ।

प्रा० भूखबन्द होजाना बोल०

भूख नहीं लगना ।

प्रा० भूखलगना बोल० भूखमालूम होना ।

प्रा० भूखभागना बोल० सुख होना, आराम पाना, खाने पीने का कुछ दुःख नहीं रहना ।

प्रा० भूखा (सं० बुभुक्षित) गु० जिसको खानेकी चाह हो, २ किसी चीज़ का चाहनेवाला, ३ कंगाल, ग़रीब ।

सं० भूगोल (भू+गोल) पु० पृथ्वीमण्डल ।

सं० भूचक्र पु० भूमण्डल ।

सं० भूचर (भू=धरती,चर्=चलना) पु० धरती पर चलनेवाला जीव ।

प्रा० भूड़ स्त्री० बलुवा धरती, रेतली धरती, रेगिस्तान ।

प्रा० भूड़ल पु० अभ्रक ।

सं० भूत (भू=होना) पु० पिशाच, प्रेत, २ प्राणी, जीवधारी, जन्तु, ३ शिव के गण, ४ अतीतकाल, बीता हुआ समय, भूतकाल, ५ तत्त्व (जैसे पृथ्वी, पानी, आग, हवा और आकाश) गु० हुआ, बीता हुआ, पाया हुआ, २ सच, ठीक, कुमार्गी, धरणी ।

सं० भूतघ्न (भूत + हन्) पु० भोजपत्र, लहसुन, लशुन, ऊँट, बायविड़ङ्ग, हींग ।

सं० भूतनाथ (भूत + नाथ) पु० महादेव, २ भैरव ।

सं० भूतल (भू + तल) पु० पृथ्वी, धरती, धरातल ।

सं० भूति (भू=होना) स्त्री० ऐश्वर्य, संपत्ति, विभूति, अष्टसिद्धि, २ भस्म, राख ।

सं० भूतेश (भूत + ईश) पु० महादेव, शिव ।

सं० भूदार (दृ=फाड़ना) क० पु० शूकर, सुअर ।

सं० भूदेव (भू=धरती, देव=देवता) पु० ब्राह्मण, विप्र, भूसुर ।

सं० भूधर } (भू=धरती, धृ=रखना)
भूध्र } पु० पहाड़, पर्वत, गिरि ।

प्रा० भूनना (सं० भर्जन, भृज्=या भ्रस्ज्=भूनना) क्रि० स० आगपर रख कर झुलस लेना, जैसे मक्की आदि, २ गर्म घी या तेल में डाल कर खूब हिलाना, जैसे मांस आदि, ३ गर्म राख या बालू में पका लेना, जैसे चना आदि ।

सं० भूप (भू=पृथ्वी, पा=पालना) पु० राजा, नृप, बादशाह व ज्योतिष में १६ का नाम ।

सं० भूपति (भू + पति) पु० राजा, महीपाल, भूपाल ।

सं० भूपाल (भू=पृथ्वी, पाल्=पालना) पु० राजा, भूप, नरपति, भूपति ।

प्रा० भूभल स्त्री० गर्म राख, अङ्गार ।

प्रा० भूभुरि पु० छोटे काँटा ।

सं० भूभृत् पु० पहाड़, राजा, शेष, कच्छपराज, दिग्गज ।

सं० भूमि (भू=होना, जिस पर मनुष्य होते हैं) स्त्री० पृथ्वी, धरती, २ जगह, स्थान ।

सं० भूमिका (भूमि) स्त्री० प्रसंग, प्रकरण, आभास, तमहीद ।

सं० भूमिनाग पु० केंचुआ, साधारण साँप, सँपोला ।

सं० भूमिपति (भूमि + पति) पु० राजा, भूपाल, भूपति ।

सं० भूमिपाल (भूमि=पृथ्वी, पाल् =बचाना) पु० राजा ।

सं० भूमिपिशाच पु० ताड़वृक्ष, तालद्रुम ।

प्रा० भूमिया (भूमि) पु० ज़मींदार, २ पृथ्वी का देवता ।

प्रा० भूर, भूरसी } स्त्री०दक्षिणा, दान, भीख।

प्रा० भूरा गु० एकतरह का रङ्ग ।

सं० भूरि (भू=होना) गु० बहुत, अधिक, ढेर ।

सं० भूरिशः अव्य० बहुत, वारंवार, मुतवातिर ।

सं० भूरुह (रुह्=उगना) क० पु० वृक्ष, दरख़्त ।

प्रा० भूल (सं०भ्रम) स्त्री०चूक, सहो ।

प्रा० भूलना क्रि० स० चूकना, याद न रखना ।

प्रा० भूलाबिसरा, भूलाभटका } बोल० भटका हुआ, रास्ता भूल कर इधर-उधर फिरनेवाला ।

सं० भूषक (भूष् + अक) क०पु० अलंकारकारक, भूषणधारी ।

सं० भूषण (भूष्=शोभना) पु० गहना, आभूषण, आभरण ।

सं० भूषित (भूष्=शोभना) गु० शोभित, शोभायमान, अलंकृत ।

प्रा० भूसा (सं०बुष, बुष्=छोड़ना) पु०जानवरोंके खानेका चारा, तुस।

प्रा० भूसी (सं०बुष, बुष्=छोड़ना) स्त्री० चोकर, अनाज के ऊपर का छिलका ।

सं० भूसुर (भू=पृथ्वी, सुर=देवता) पु० ब्राह्मण, विप्र ।

सं० भृकुटी (भ्रू=भौं, कुट=टेढ़ा होना) स्त्री० त्योरी, घुड़की, भौं का चढ़ाना ।

सं० भृगु (भ्रस्ज्=भुनना अर्थात् सबके मन में धर्म की आग को प्रकाश करना) पु० एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम जिसने विष्णु की छाती में लात मारी थी, ब्रह्मा का बेटा, एक प्रजापति ।

सं० भृगुकुलकेतु पु० परशुराम, भृगुवंशके पताका ।

सं० भृगुनाथ, भृगुपति } (भृगु=भृगुवंशियों के, नाथ वा पति= स्वामी) पु० परशुराम, परशुधर ।

सं० **भृङ्ग** (भृ=भरना वा भ्रम्=फिरना) पु० भौंरा, भ्रमर ।

प्रा० **भृङ्गी** (सं० भृङ्ग) स्त्री०भौंरी, लखेरी, शिवगण, पार्वती ।

सं० **भृति** (भृ=भरना) स्त्री०मूल्य, वेतन, भरण, पोषण ।

सं० **भृतिभुज्** गु० वेतनोपजीवी, नौकरी से जीनेवाला ।

सं० **भृत्य** (भृ=भरना अर्थात् जिस को मज़दूरी या तनख़्वाह देना) पु० नौकर, चाकर, टहलू, ख़िदमतगार ।

सं० **भृश** अव्य० अतिशय, बहुत ।

सं० **भृष्टि** स्त्री० भूजना ।

प्रा० **भेंगा** गु० टेढ़ा देखनेवाला, डेरा, ढेरा, स्वर्गपताली ।

प्रा० **भेंट** } स्त्री०मिलाप,मुलाक़ात,
भेट } २सौग़ात,डाली,नज़र ।

प्रा० **भेंटना** } क्रि० स० मिलना,
भेटना } मिलाप करना,मुलाक़ात करना ।

सं० **भेक** (भी=डरना) पु० मेंड़क, बेंग, दादुर ।

प्रा० **भेख** (सं० वेष) पु० भेष, लिबास, रूपबदलना, स्वरूपबनाना ।

प्रा० **भेखधारी** क० पु० भेष बनानेवाला, अपना और रूप बनानेवाला ।

प्रा० **भेजना** क्रि० स० पठाना, पहुँचाना ।

प्रा० **भेजा** पु० शिरका गूदा, शिर का मग़ज़ ।

सं० **भेड** (भी=डरना) स्त्री० गाड़र, भेड़ी ।

प्रा० **भेड़ा** (सं०भेड) पु०मेंढा, मेष ।

प्रा० **भेड़िया** (सं० भेडहा, भेड=भेड़ी, हन्=मारना) स्त्री०हुँडार, ल्याली,एक फाड़नेवाला जानवर।

प्रा० **भेड़ियाधसान** बोल० सब जानते हैं कि जिस ओर एक भेड़ी जाती है सब उसी ओर चलती हैं इसलिये जब बहुत आदमी बेसमझे किसी के पीछे चलते हैं तब यह मुहावरा बोलाजाता है ।

प्रा० **भेड़ी** (सं० भेड) स्त्री० भेड़, गाड़र, मेढ़ी ।

सं० **भेद** (भिद्=तोड़ना) भा०पु० छिपी बात, गुप्त बात, राज़, २ जुदा होना,भिन्नता,अलगाव, ३ अन्तर, फ़रक़, ४ प्रकार, जाति, भाँति, ५ विरोध, विच्छेद, अनमेल ।

सं० **भेदक** (भेद् + अक) क० पु० तोड़नेवाला, विदारक ।

प्रा० **भेदलेना** बोल०छिपी हुई बात को मालूम करना ।

प्रा० **भेद कहना** बोल०छिपाने योग्य बात को कहदेना, राज़ खोलना ।

प्रा० **भेदखोलना** बोल० छिपी बात को प्रकट करना ।

सं० **भेदन** (भिद्=तोड़ना) भा०

पु० तोड़ना, तोड़न, फोड़न ।

सं० भेदि } क० विदारक, छेद क-
भेदी } रनेवाला, पु० वज्र ।

सं० भेदित कर्म० पु० फाड़ा हुआ ।

प्रा० भेदिया } (भेद) गु० भेदू,
सं० भेदी } भेदजाननेवाला ।

प्रा० भेदू (भेदू) गु० भेद जानने वाला, भेदी ।

सं० भेद्य (भिदु=तोड़ना) कर्म० पु० भेदने योग्य, तोड़नेकेलायक़ ।

सं० भेरी (भी=डर पैदाकरना) स्त्री० एक प्रकार का बाजा, तुरही, नफ़ीरी, सहनाई ।

प्रा० भेली स्त्री० गुड़का ढेला ।

प्रा० भेव (सं० भेद वा भाव) पु० भेद, भाव, स्वभाव, तरह ।

प्रा० भेष (सं० वेष) पु० भेष, रूप बदलना, स्वरूप बनाना ।

प्रा० भेषबदलना बोल० स्वाँग भरना, रूपबदलना ।

सं० भेषज (भेष=रोग का डर, भेष्=डरना, जि=जीतना या भिष्=रोग दूर करना) भा० पु० दवा, दारू, औषध ।

सं० भैषज्य भा० पु० औषध, दवा ।

प्रा० भैंस (सं० महिषी) स्त्री० एक जानवर का नाम ।

प्रा० भैंसा (सं० महिष) पु० एक चौपाये का नाम ।

प्रा० भैंसादाद } (सं० महिषदद्रु)
भैंसियादाद } पु० एक प्रकार
का दाद ।

प्रा० भैया (सं० भ्राता) पु० भाई ।

प्रा० भैयापा } (सं० भ्रातृता) पु०
भायप } भाईचारा, बिरादरी ।

सं० भैरव (भी=डर पैदा करना) पु० शिव, दुर्गा के पासरहनेवाला देवता जो शिव का अवतार है, भैरव आठ हैं (१असिताङ्ग, २रुरु, ३ चण्ड, ४ क्रोध, ५ उन्मत्त, ६ कुपित, ७ भीषण, ८ संहार) २ भयानक रस, ३ एक राग का नाम, गु० डरावना, भयंकर ।

सं० भैरवी (भी=डर उपजाना) स्त्री० दुर्गा, काली, देवी, २ एक रागिणी का नाम ।

प्रा० भोंकना } (सं० भष्=भौंकना,
भौंकना } क्रि० अ० भूकना)
हौं हौं करना, कुत्ते का शब्द करना ।

प्रा० भोंडा गु० कुडौल, कुरूप ।

प्रा० भोंथा } गु० तीखा नहीं, कु-
भोंथरा } ण्ठित, कुन्द, गोठिल ।

प्रा० भोंदू गु० गँवार, अनजान, सीधा ।

प्रा० भोंपू पु० नरसिंगा ।

प्रा० भोई पु० कहार, पालकी उठाने वाला ।

सं० भोक्तव्य (भुज्=खाना) कर्म० पु० खाने के लायक़ ।

सं० भोक्ता (भुज्=खाना) क० पु०

खानेवाला ।

सं० भोग (भुज्=खाना)पु०खाना, प्रसाद,नैवेद्य,२सुख, हर्ष, विलास, ऐश, आराम ।

प्रा० भोगना (भोग) क्रि० स० भुगतना, सहना, पाना, दुःख या सुख उठाना ।

सं०भोगपत्र पु०वकूफ़नामा, फ़र्मान-जागीर, जागीरनामा ।

सं० भोगिवल्लभ (भोगि=सर्प, वल्लभ=प्यारा) पु० चन्दन ।

सं० भोगी (भोग) क० पु० भोग विलास करनेवाला, सुखी, २ (भुज्=टेढ़ाचलना) पु०साँप, सर्प ।

सं० भोज (भुज्=पालना) पु० उज्जैन के एक राजा का नाम जो विद्या के फैलाने से बहुत प्रसिद्ध है, २ भोजकट देश जो पटना और भागलपुरके पास है या जिसको अब भोजपुर कहते हैं जो शाहाबाद के ज़िले में है ।

सं० भोगीन्द्र (भोगी + इन्द्र) पु० शेषनाग, वासुकि, नागराज ।

प्रा० भोज (सं० भोज्य, भुज्= खाना) पु० खाना, आहार ।

सं० भोजक (भुज् + अक) क० पु० भक्षक, खाने वाला ।

सं० भोजकट पु० भोजपुर, देश-विशेष ।

सं० भोजन (भुज्=खाना) भा० पु०खाना, आहार, भोजन करना, खाना खाना, जेवना ।

सं० भोजनीय (भुज् + अनीय) कर्म० पु० भोजनयोग्य ।

प्रा० भोजपत्र (सं० भूर्जपत्र)पु० एक वृक्ष की छाल ।

सं० भोजयिता (भुज् + इ + तृ) क० पु० भोजन करानेवाला ।

सं० भोज्य (भुज्=खाना)पु० खाने की चीज़, कर्म० खाने योग्य ।

प्रा० भोड़ल पु० अभ्रक, भूडल ।

सं० भोभो अव्य० सम्बोधन, संभ्रम, आदरार्थ सम्बोधन ।

प्रा० भोर पु० बिहान, पौह, प्रभात ।

प्रा० भोरहोना बोल०बिहान होना ।

प्रा० भोरा
भोला } गु० सीधा सादा, निष्कपट, कम अक़्ल ।

प्रा० भोलानाथ बोल०महादेव, शिव ।

प्रा० भोलाभाला बोल० सादा ।

प्रा० भोली बातें बोल० सीधीबातें, बे कपट बातें ।

प्रा० भौंह
भौं
भौंह } (सं०भ्रू) पु० आँख पर का बाल, भृकुटी ।

प्रा० भौंचढ़ाना बोल०गुस्सा होना ।

प्रा० भौंटेढ़ाकरना बोल० त्यौरी चढ़ाना ।

प्रा० भौंहैंतानना बोल० त्यौरी चढ़ाना ।

प्रा० भौंचाल (सं० भूमिचाल)

पु० भूईडोल, भूकम्प, ज़लज़ला ज़मीन का।

भौंरा (सं० भ्रमर) पु० एक तरहकी बड़ी मक्खी, मधुप, अलि।

भौं (सं० भय) पु० डर, ख़ौफ़।

भौजाई } (सं० भ्रातृजाया)
भौजी } स्त्री० भाई की स्त्री।

भौतिक (भूत) गु० भूत सम्बन्धी पृथिव्यादि वा पिशाचादि सम्बन्धी।

भौम (भूमि=पृथ्वी) गु० पृथ्वी का, पु० मङ्गल ग्रह, २ नरकासुर राक्षस।

भौमवार (भौम + वार) पु० मङ्गलवार।

भौमावती (भौम) स्त्री० भौमासुर की स्त्री।

भ्रंश } (भ्रश् वा भ्रस्=गिरना) पु० नीचे गिरना,
भ्रंस } नाश, ध्वंस, बिगाड़।

भ्रंशित वा **भ्रंसित** कर्म० पु० च्युत, गिरा।

भ्रम (भ्रम्=फिरना) पु० भ्रान्ति, भूल चूक, २ संदेह, संशय, झूठाज्ञान।

भ्रमण (भ्रम्=फिरना) पु० फिरना, घूमना, बिचरना।

भ्रमर (भ्रम्=फिरना) पु० भौंरा, मधुप, मधुकर, अलि।

भ्रष्ट (भ्रश्=नीचे गिरना) कर्म० पु० गिरा हुआ, पतित, अधर्मी, धर्म से गिरा हुआ, भ्रष्ट करना, क्रि० स० बिगाड़ना, बुरे काम में लगाना, भ्रष्ट होना, क्रि० अ० बिगड़ना, बुरेकाम में लगना।

सं० **भ्राजना** (सं० भ्राज्=शोभना) क्रि० अ० शोभना, सोहना।

सं० **भ्राजिष्णु** (भ्राज् + इष्णु) क० दीप्तिमान्, शोभायुक्त।

सं० **भ्राता** (भ्राज्=शोभना) पु० भाई, भैया, सहोदर।

सं० **भ्रान्त** क० पु० भूला हुआ।

सं० **भ्रान्ति** (भ्रम्-फिरना) भा० स्त्री० भ्रम, भूल चूक, २ घूमना, भ्रमण।

सं० **भ्रामक** (भ्रम् + अक) क० पु० भ्रमजनक, अशुद्ध, घूमनेवाला।

सं० **भ्राम्यमान** क० पु० घूमनेवाला।

सं० **भ्राश** पु० प्रकाश, चमक।

सं० **भ्रू** (भ्रम्=फिरना) पु० आँखों पर का बाल, भौंह, भौं।

सं० **भ्रूण** पु० गर्भ, हमल।

सं० **भ्रूभङ्ग** (भ्रू=भौं, भञ्ज्=तोड़ना) पु० घुरकी, त्यौरी, भौं चढ़ाना, कटाक्ष।

म

सं० **म** (मा=नापना वा आदर करना) पु० ब्रह्मा, २ शिव, ३ चाँद, ४ विष्णु, ५ यम, ६ समय, ७ विष।

प्रा० **मँगता** (माँगना) पु० भिखारी, भिखमंगा।

प्रा० **मँगनी** (माँगना) स्त्री०सगाई, ति़स्बत, २ उधार ।

प्रा० **मँगनीदेना** बोल०उधारदेना ।

प्रा० **मँगसिर** **मगशिर** **मगसिर** (सं० मार्गशिर) पु० अगहन ।

प्रा० **मँजना** (सं० मज्जन, मस्ज= साफ़ होना) क्रि० अ० उजला होना, चिकना होना, साफ़ होना ।

प्रा० **मंजीरा** **मजीरा** (सं० मञ्जीर, मञ्ज=शब्द करना) पु० एक बाजे का नाम, झाँझ, करताल ।

प्रा० **मँडुआ** पु० एक अनाज का नाम ।

प्रा० **मँढ़ना** **मढ़ना** (सं० मड्=सँवारना) क्रि०अ०ढकना (जैसे किताब को पूठे से या ढोल ढफ़ आदि को चमड़े से) लपेटना ।

प्रा० **मकड़ा** (सं० मर्कट, मर्क= जाना) पु० एक तरह का कीड़ा ।

प्रा० **मकड़ाना** क्रि० अ० टेढ़ा चलना, अकड़ के चलना, २ काम करने से ज़ी चुराना ।

प्रा० **मकड़ी** (सं० मर्कटी) स्त्री० एक तरह का कीड़ा जिसके आठ पैर होते हैं ।

सं० **मकर** (म=मनुष्य और कॄ= मारना जो मनुष्यों को मार डालता है यहाँ मनुष्य शब्द को म हो जाता है) पु० मगरमच्छ, २ दशवीं राशि ।

सं० **मकरकेतु** **मकरध्वज** (मकर=मगर, केतु वा ध्वजा=झंडा) पु० कामदेव, जिसके झंडे पर मकर का चिह्न है ।

सं० **मकरन्द** पु० फूलों का रस, पुष्परस, पराग ।

सं० **मकराकृत** (मकर =मगर, आकृति=रूप) गु० जिस चीज़ का आकार मगर कैसा हो जैसे मकराकृतकुण्डल ।

सं० **मकरी** (मकर) स्त्री० मछली, एक पानी का जीव, २ जो जाला तानती है ।

प्रा० **मकरोना** क्रि० स० थोड़ासा गीला करना, करमोना ।

सं० **मकुट** **मुकुट** (मकि=शोभना) पु० किरीट, ताज, राजाओं के शिरका गहना ।

सं० **मकुर** **मुकुर** (मकि=शोभना) पु० दर्पण, काँच, आईना, आरसी, शीशा ।

सं० **मकुल** **मुकुल** (मकि=जाना) स्त्री० फूलकी कली, कोंपल ।

प्रा० **मकोड़ा** पु० कीड़ा ।

सं० **माक्षिका** **मक्षीका** (मक्ष्=क्रोध करना) स्त्री०मक्खी, माखी ।

प्रा० **मक्खन** **माखन** (सं० मन्थज, मन्थ= मन्थना और जन्=

पैदा होना, जो मथनेसे निकलता है) पु० माखन, नैनू, नवनीत, हैयङ्गवीन ।

प्रा० मक्खी } माखी } (सं० मक्षिका) स्त्री० एक तरह का उड़ने वाला कीड़ा, माछी ।

प्रा० मक्खी उड़ाना बोल० किसी की खुशामद या गुलामी करना ।

प्रा० मक्खीचूस बोल० कंजूस, सूम, कृपण ।

प्रा० मक्खी मारना बोल० सुस्त बैठा रहना, बेकार बैठा रहना ।

सं० मख (मख्=जाना) पु० यज्ञ ।

प्रा० मग (सं० मार्ग) पु० रस्ता, बाट, पैंड, डगर, मग देखना, बोल० बाट जोहना, राह निहारना ।

सं० मगध पु० सूबे बिहार का दक्खिनभाग ।

प्रा० मगन (सं० मग्न) गु० डूबा हुआ, प्रसन्न, आनन्दित, हर्षित ।

प्रा० मगर (सं० मकर) पु० मगरमच्छ ।

प्रा० मगरा (अ० मग़रूर) गु० ढीठ, घमंडी, गुस्ताख़ ।

प्रा० मगराई स्त्री० ढिठाई, गुस्ताख़ी, घमंड, धृष्टता ।

प्रा० मगरापन भा० पु० मगराई, घमंड ।

प्रा० मगह (मगध) पु० सूबे बिहार का दक्खिन भाग जिसमें गया आदि शहर हैं ।

प्रा० मगही (सं० मागधीय) गु० मगह का (जैसे पान आदि) ।

प्रा० मगहैया (सं० मागधीय) गु० मगध देश का वासी, २ ब्राह्मणों की एक जाति ।

सं० मग्न (मस्ज्=डूबना वा शुद्ध करना) कृ० डूबा हुआ, २ प्रसन्न, आनन्दित, हर्षित, खुश ।

सं० मघवा } मघवान् } (मह्=पूजना, मघ= धन, वान्=वाला) पु० इन्द्र, देवताओं का राजा, सुरपति ।

सं० मघा (मह्=पूजना) स्त्री० दशवां नक्षत्र ।

सं० मङ्गल (मगि=जाना) पु० कुशल, कल्याण, आनन्द, २ तीसरा ग्रह, ३ मङ्गलवार, भौमवार, गु० शुभ, अच्छा, आनन्द देनेवाला ।

सं० मङ्गलवार (मङ्गल + वार) पु० मङ्गलका दिन, भौमवार ।

सं० मङ्गलसमाचार (मङ्गल + समाचार) पु० अच्छा समाचार, सुसमाचार, शुभसमाचार ।

सं० मङ्गलाचरण (मङ्गल + आचरण) पु० देवताओं को नमस्कार, वन्दना ।

सं० मङ्गलाचार (मङ्गल + आचार) पु० बधावा, ब्याह आदि अच्छे कामों में आनन्द के गीत ।

सं० मङ्गलामुखी (मङ्गल + मुख अर्थात् जिसके मुँह में मङ्गल है) गु० गवैया, ब्याहआदि अच्छे कामों में गानेवाली ।

प्रा० मङ्गली (मङ्गल) गु० मङ्गल करनेवाला, मङ्गलामुखी, २ जिस के जन्म, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम, द्वादश स्थानमें मङ्गल ग्रह पड़ा हो ।

प्रा० मचना क्रि० अ० होना, रचना, उठना, किया जाना ।

प्रा० मचलना क्रि० अ० मगरा होना, हठ करना, ज़िद करना ।

प्रा० मचला गु० मगरा, ढीठ, हठीला, ज़िद्दी, हट्ठी ।

प्रा० मचलाई स्त्री० मगराई, ढिठाई, हठ ।

प्रा० मचलाना क्रि० अ० मतलाना, क़ै किया चाहना, क़ै करने को जी चाहना, २ बहाना करना ।

प्रा० मचान (सं० मञ्च) पु० माँच, टाँड, खेतों में बाँसों से बनाई हुई ऊँची बैठक जिस पर एक आदमी खेतकी रखवाली करने के लिये बैठता है ।

प्रा० मचाना क्रि० स० करना, रचाना, उठाना, बनाना ।

प्रा० मचिया (सं० मञ्च) स्त्री० पीढ़ी, चौकी, कुरसी ।

प्रा० मच्छ (सं० मत्स्य) पु० बड़ी मछली, २ विष्णु का पहला अवतार ।

प्रा० मच्छर (सं० मशक) पु० माछर, कुटकी ।

प्रा० मछली (सं० मत्स्यी) स्त्री० पानी के एक जानवर का नाम ।

प्रा० मछवा
मछुवा (मत्स्य) पु० मछली पकड़नेवाला, धीमर, कहार, महरा ।

प्रा० मजीठ (सं० मञ्जिष्ठा) पु० एक लाल चीज़ जो रँगने के काम में आती है ।

सं० मज्जन (मस्ज्=न्हाना) पु० न्हाना, स्नान ।

सं० मज्जक क० पु० स्नान करने वाला ।

सं० मज्जा (मस्ज्=न्हाना) स्त्री० हड्डी के भीतर का गूदा, चर्बी ।

प्रा० मझला (सं० मध्य) गु० बिचला, मध्यम, वस्तु का ।

प्रा० मझार (सं० मध्य) पु० बीच, मध्य, बीच में ।

प्रा० मझारी गु० स्त्री० भीतरी, बीच की, मध्य की ।

सं० मञ्च (मचि=ऊँचा करना) पु० माँच, मचान, खेतों में बाँसों से बनाई हुई ऊँची बैठक जिस पर एक आदमी खेत की रखवाली करने के लिये बैठता है, २ पलँग, खाट, खटिया, माँचा ।

सं० मञ्जन (मञ्ज्=साफ़ होना) पु० दाँत धोनेका चूरण, मिस्सी ।

सं० **मञ्जरी** (मञ्ज्=साफ़ होना वा शुद्ध होना) स्त्री० कली, कोंपल, तुलसीपुष्प, अँखुआ ।

प्रा० **मञ्जार** (सं० मार्जार) पु० बिलाव, बिल्ला ।

सं० **मञ्जीर** (मञ्ज्=शब्द करना) पु० नूपुर, पाँवका गहना, २ मंजीरा, क्षुद्रघण्टिका, छोटीघण्टी, घुंघुरू, पायज़ेब ।

सं० **मञ्जु** } (मञ्ज्=शुद्ध अथवा सु-
मञ्जुल } न्दरहोना) गु० मनोहर, सुन्दर, मधुर, मनमाना, मनचाहा ।

सं० **मञ्जूषा** (मञ्ज्=सुन्दर होना) स्त्री० पिटारा, पिटारी, कपड़े रखने की सन्दूक़, बक्स ।

प्रा० **मटक** } (मटकना) भा०
मटकन } स्त्री० चोंचला, नख़रा, हाव भाव, झाँवली ।

प्रा० **मटकना** क्रि० अ० पलक मारना, झपकना, २ आँखैं लड़ाना, आँख मारना, तिरछी चितवन से देखना, अठलाना, इतराना, भाव बताना, झाँकना, ताकना ।

प्रा० **मटका** (मिट्टी) पु० गगरा, बड़ा घड़ा ।

प्रा० **मटकी** (मिट्टी) स्त्री० गगरी, २ मटकी ।

प्रा० **मटर** पु० एक अनाज का नाम ।

प्रा० **मटियाना** क्रि० अ० टाल देना, २ आँख झपकाना, ३ सहना ।

प्रा० **मट्टी** } (सं० मृत्तिका) स्त्री०
मिट्टी } माटी, रेत, धूल ।

प्रा० **मट्टीकरना** बोल० नाश करना, बरबाद करना, सत्यानाश करना ।

प्रा० **मट्टीखाना** बोल० मांस खाना ।

प्रा० **मट्टीडालना** बोल० दूसरे का दोष छिपाना, ऐबपोशी करना ।

प्रा० **मट्टीदेना** बोल० गाड़ना, मुर्दे को दफ़न करना ।

प्रा० **मट्टीपरलड़ना** बोल० धरती के लिये झगड़ना ।

प्रा० **मट्टीमेंमिलना** बोल० सत्यानाश होजाना, नष्ट होना, ख़राब होना, बरबाद होना, २ बेइज़्ज़त होना ।

प्रा० **मट्टीहोना** बोल० दुबला होना, निर्बल होना, २ सत्यानाश होना ।

प्रा० **मट्ठा** (सं० मन्थित, मन्थ=मथना) पु० छाछ, मही ।

सं० **मठ** (मठ्=बसना) धि० पु० गुसाइयों के रहने का घर, २ विद्यार्थियों के पढ़ने की जगह, पाठशाला, देवागार ।

प्रा० **मठरी** } (मिष्ट) स्त्री० एक
मठली } तरह का मीठा पकवान ।

प्रा० **मड़ोड़** } (मड़ोड़ना) स्त्री०
मरोड़ } ऐंठ, बल, पेंच ।

प्रा० **मड़ोड़ना** } क्रि० स० ऐंठना,
मरोड़ना } पेंचदेना, बलदेना ।

प्रा० मढ़ा (सं० मण्डप) पु० उस जगह का नाम जिसको ब्याह में फूलों आदि से सँवारते हैं और जहाँ शास्त्र के अनुसार ब्याह का काम होता है ।

प्रा० मढ़ी
मढ़ैया } (सं० मठ) स्त्री० झोपड़ी, कुटी ।
मंढी

सं० मणि (मण्=आवाज़ निकलना) स्त्री० हीरा पन्ना आदि रत्न, बहुत मोल का पत्थर ।

प्रा० मणियारा क० पु० मणियुक्त, मणिवाला ।

सं० मण्डन (मडि=शोभना) भा० पु० गहना, ज़ेवर, अलङ्कार, भूषण, शोभा ।

सं० मण्ड पु० माँड़, पीच, पिच्छ, फ़ालूदा, २ कलार, कलवार, मदिरा ।

सं० मण्डप (मण्ड=शोभा, पा=बचाना) पु० एक खुला हुआ मकान जिसको ब्याह अथवा और किसी उत्सव में फूलों से सँवारते हैं और जहाँ ब्याह का काम होता है, २ मन्दिर, देवालय ।

सं० मण्डल (मडि=शोभना) पु० गोल जगह, चक्कर, गोला, २ चाँद वा सूर्यका घेरा, ३ गोलतम्बू, ४ देश, ज़िला, सूबा जो बीस अथवा चालीस योजन तक हर ओर फैलाव में हो, जैसे व्रजमण्डल, कारोमण्डल आदि ।

सं० मण्डलाकार (मण्डल + आकार) गु० गोलरूप, गोलाकार, चक्राकार ।

सं० मण्डलाधिप (मण्डल + अधिप) पु० चार सौ योजन का मालिक, कलक्टर, डिप्टीकमिश्नर, छोटा राजा ।

सं० मण्डलाना (मण्डल) क्रि० अ० घिरआना, घूमना, फिरना ।

सं० मण्डली (मडि=शोभना) स्त्री० सभा, समाज, गिरोह ।

सं० मण्डलीक क० पु० दशलाख रुपये की आमदनीवाला ।

प्रा० मण्डा पु० एकपेड़े जैसीमिठाई।

सं० मण्डित (मडि=शोभना) कर्म० शोभायमान, शोभित, भूषित ।

प्रा० मण्डी स्त्री० बाज़ार जहाँ अनाज और घी आदि बिके ।

सं० मण्डूक (मडि=शोभा देना, वर्षा ऋतु को) पु० मेंड़क, बेंग ।

सं० मत (मन्=जानना) पु० सलाह, सम्मति, २ अभिप्राय, चाह, ३ धर्म, मज़हब, प्रतीत, विश्वास, ४ ज्ञान, सीग़ा, तरीक़ा, कर्म० पु० जाना हुआ, २ माना हुआ, ३ पूजा हुआ, पूज्य ।

प्रा० मत (सं० मा) क्रि० अ० न, नहीं, न करो, निषेधवाचक ।

सं० **मतंग** (मद्=मस्त होना) पु० हाथी, गज, २ मेघ, बादल, ३ एक ऋषि का नाम ।

सं० **मतमतान्तर** गु० दूसरा धर्म, दूसरा मज़हब, दूसरी राह ।

प्रा० **मतवाला** (सं० मत्तवत्) गु० मस्त, मदमाता, उन्मत्त ।

सं० **मतविरुद्ध** गु० मज़हब के ख़िलाफ़, धर्मविरोधी ।

प्रा० **मता** ⎫ (सं०मत)पु०सलाह,
मतौ ⎭ विचार, सम्मति ।

सं० **मतावलम्बी** (मत=धर्म वा सम्मति, अवलम्बी=रखनेवाला) क० पु० किसी धर्म को मानने वाला, पन्थी, किसी के सलाह पर चलने वाला ।

सं० **मति** (मन्=जानना) स्त्री० बुद्धि, समझ, ज्ञान, २ इच्छा, चाह, ३ स्मृति, यादकरने की शक्ति ।

सं० **मतिभ्रम** (मति + भ्रम) पु० भूल, चूक, उलटी समझ, विपरीतबुद्धि ।

सं० **मतिमन्द** गु० मन्दबुद्धि, कमअक़्ल, कुन्दज़ेहन ।

सं० **मतिधीर** गु० दृढबुद्धि ।

सं० **मतिमान्** (मति =समझ, मत्=वाला) गु० बुद्धिमान, समझदार, चतुर, प्रवीण ।

सं० **मतिहीन** (मति + हीन) गु० बेसमझ, मूर्ख, बुद्धिहीन, निर्बुद्धि ।

सं० **मत्त** (मद्=मस्त होना) गु० मतवाला, मस्त, उन्मत्त, घमंडी ।

सं० **मत्सर** (मद्=घमंड करना वा मस्त होना) पु० डाह, द्वेष, जलन, हसद, ईर्षा, परसन्ताप ।

सं० **मत्स्य** (मद्=खुशी करना वा मस्त होना) पु० मछली, मच्छ, २ विष्णु का पहला अवतार, ३ हिन्दुस्थान का एक भाग-जिसको अब दिनाजपुर और रङ्गपुर कहते हैं, ४ एक पुराण का नाम ।

सं० **मत्स्यगन्धा** स्त्री० मच्छोदरी, व्यास की माता ।

सं० **मथन** (मथ्=मथना) पु० महना, मँथना, बिलोवन ।

प्रा० **मथना** (सं० मन्थन) क्रि० स० महना, बिलोना, बिलोड़ना ।

प्रा० **मथानिया** ⎫ (सं० मन्थान वा
मथनी ⎭ मन्थी, मथ्=मथना) स्त्री० दूध मथने की लकड़ी, मथानी, महानी ।

सं० **मथित** र्म० पु० मथागया ।

सं० **मथुरा** (मथ्=मारना या कुचलना जहाँ बहुत से राक्षस कुचले और मारे गये हैं) स्त्री०एक नगरी का नाम जो श्रीकृष्ण की जन्मभूमि और हिन्दुओं के तीर्थ की जगह है ।

प्रा० **मथुरिया** (सं०माथुरीय)पु० मथुरा के ब्राह्मणों की एकजाति ।

सं० **मद** (मद्=प्रसन्न होना वा मस्त होना वा घमंड करना) पु० आनन्द, हर्ष, ख़ुशी, २ हाथी की कनपटियों अथवा गालों से चूता हुआ पानी, ३ मदिरा, दारू, मद्य, शराब, ४ घमंड, गर्व, अहंकार, ५ मतवालापन, नशा, मस्ती, ६ वीर्य, ७ कस्तूरी ।

सं० **मदक** क० पु० अफ़ीम के संयोग से बना हुआ नशा, नशा करनेवाली चीज़ ।

सं० **मदन** (मद्=प्रसन्न होना वा मस्त होना) पु० कामदेव ।

सं० **मदनबाण** (मदन + बाण) पु० एक फूल का नाम ।

प्रा० **मदमाता** (सं० मदमत्त) गु० मतवाला, मस्त ।

प्रा० **मदार** (सं० मन्दार) पु० अकवन, अर्क ।

सं० **मदिर** पु० लालखदिर ।

सं० **मदिरा** (मद्=प्रसन्न होना अथवा मस्त होना) ण० स्त्री० मद, मद्य, दारू, शराब, आसव, अर्क ।

सं० **मदोत्कट** पु० मत्तगज ।

सं० **मदोद्धत** गु० मतवाला ।

सं० **मदोन्मत्त** (मद्=घमंड, उन्मत्त=मस्त) गु० घमंड से मस्त, मतवाला, मदमाता ।

सं० **मद्य** (मद्=प्रसन्न होना वा मस्त होना) ण० पु० दारू, शराब, मदिरा, मद ।

सं० **मद्यप** (मद्य + प, पा=पीना) क० पु० सुरापायी, शराबी ।

सं० **मधु** (मन्=पूजना वा मद्=प्रसन्न होना) पु० शहद, फूलों का रस, २ मद, मदिरा, शराब, ३ वसन्तऋतु, ४ चैत का महीना, ५ एक राक्षस का नाम जिसको महामाया की सहायता से विष्णुने मारा, ६ दूध, ७ पानी, ८ मीठा रस, ९ महुआ, १० मिठास, गु० मीठा ।

सं० **मधुकर** (मधु=शहद, कृ=करना) पु० भँवरा, भौंरा, भ्रमर ।

सं० **मधुप** (मधु=फूलों का रस, पा=पीना) पु० भौंरा, भँवरा, मधुकर ।

सं० **मधुपर्क** (मधु=शहद, पृच्=मिलाना) पु० दही, घी और शहद मिलीहुई चीज़ अथवा "आज्यमेकपलं ग्राह्यं दधि त्रिपलमेव च । मधुना पलमेकन्तु मधुपर्कस्स उच्यते" । घी टकाभर, दही तीन टकाभर, शहद टकाभर इसको 'मधुपर्क' कहते हैं ।

सं० **मधुपुरी** (मधु=एक राक्षस का नाम, पुरी=नगरी) स्त्री० मथुरा ।

सं० **मधुवन** (मधु=एक राक्षस वा मधु=मीठा, वन=जंगल) पु० मथुरा के पास का वन, २ सुग्रीवके बाग़ का नाम ।

प्रा० **मधुमक्खी** / **मधुमाखी** (सं० मधुमक्षिका) स्त्री० शहद की

मक्खी ।

मधुमास (मधु + मास) पु० चैत का महीना ।

मधुर (मधु=मिठास,रा=लेना) गु० मीठा, २ मनमाना, मनचहीता, प्यारा ।

मधुरता (मधु) भा० स्त्री० मिठास ।

मधुरी (मधुर) गु०स्त्री० मीठी, रसीली, सुहानी ।

मधुलिह् (मधु=शहद, लिह्=चाटना) पु० भ्रमर, भौंरा ।

मधुव्रत पु० भ्रमर ।

मधुसूदन (मधु=एक राक्षस का नाम,सूदन=मारनेवाला, सूद्=मारना) पु० विष्णु, भगवान् ।

मध्य (मन्=जानना वा मा=शोभा, धा=रखना) पु० बीच, ? नित्य सं० २ बीच में, में, मांझ, भीतर, अन्दर, दर्मियान ।

मध्यदिवस पु० दोपहर ।

मध्यदेश पु० मुल्कमुतवस्सित, स्यएटल्प्राविंश ।

मध्यम (मध्य) गु०बिचला, बीच का, २ अच्छा न बुरा, उदासीन ।

मध्यमलोक } (मध्य + लोक)
मध्यलोक } पु० बीच का लोक, पृथ्वी, मनुष्यलोक, मर्त्यलोक, यह दुनिया ।

सं० **मध्यमा** (मध्यम) स्त्री० बीच की अंगुली, २ गु० बीच की ।

सं० **मध्यवर्त्ती** (मध्य=बीच में, वर्त्ती =होनेवाला वा रहनेवाला, वृत्=होना) क० पु० बिचवैया, मध्यवर्त्ती, साक्षी ।

सं० **मध्यस्थ** (मध्य=बीच में, स्था =ठहरना) क० पु० बिचवैया, मध्यवर्त्ती, साक्षी ।

सं० **मध्याह्न** (मध्य=बीच, अहन्=दिन) पु० दोपहर, दिनका बीच ।

सं० **मन** (मनस्, मन=जानना) पु० चित्त,हृदय, हिरदा, आत्मा, दिल ।

प्रा० **मनचोर** बोल० मनको लुभाने वाला, जिसमें मन लगजाय, दिलगीर ।

प्रा० **मनभाना** बोल० मनको अच्छा लगना, सुहाना लगना ।

प्रा० **मनभाना मुंड़िया हिलाना** बोल० जिस चीज़ को मन चाहे उसको नहीं चाहनेका बहाना करना ।

प्रा० **मनभावन** } बोल०मनोहर,
मनभावना } सुहावना,दिलचस्प, दिलगीर ।

प्रा० **मनमानता** } बोल०सुहावना,
मनमाना } जो मन को अच्छा लगे,मनचाहा, दिलख़्वाह ।

प्रा० **मनमाररहना** बोल० सन्तोष के साथ दुःख को सहलेना ।

प्रा० **मनमारना** बोल० अपनी चाह

को रोकना ।

प्रा० **मनलाना** बोल० मन लगाना, ध्यान देना, ग़ौर करना ।

प्रा० **मन** पु० चालीस सेर ।

प्रा० **मनका** (सं०मणि) पु० माला का दाना, २ गरदन की हड्डी ।

प्रा० **मनकाढलकना** बोल० मरनेपर होना, मराचाहना, अबतब होना ।

प्रा० **मनकामना** (सं० मनःकामना) स्त्री० मन की इच्छा, मनका मनोरथ, दिलीख़्वाहिश ।

प्रा० **मनघटा** पु० कुएँ के आस पास का चबूतरा ।

सं० **मनन** (मन्=जानना) भा०पु० चिन्तन, सुमिरन, ध्यान, ज्ञान, अभ्यास, विचार ।

प्रा० **मनमोहन** (मन+मोहन) पु० श्रीकृष्ण, गु० मनभावन, मनोहर ।

सं० **मननशक्ति** स्त्री० विचारशक्ति, ग़ौरकरने की ताक़त ।

प्रा० **मनसा** (सं० मानस) स्त्री० मन, चाह, इच्छा, विचार, मतलब ।

सं० **मनसिज** (मनसि=मन में, जन्=पैदा होना) पु० कामदेव, गु० मनका, मनसे जो पैदा हो ।

सं० **मनस्विन्** गु० वीर, मनमौजी, यथेच्छाचारी, प्रशस्त ।

प्रा० **मनहु**
मनहू
मानहु (सं० मन्य) क्रि० वि० मानों, जानों, जैसे ।

सं० **मनाक्** अव्य० ईषत्, स्वल्प, किञ्चित्, सूक्ष्म, बारीक, मन्द ।

प्रा० **मनि**
मन० (सं० मणि) स्त्री० रतन जवाहिर, बहुत मोल का पत्थर ।

सं० **मनीषा** स्त्री० बुद्धि, अक़्ल ।

सं० **मनीषिन्** पु० पण्डित, बुद्धिमान् ।

प्रा० **मनिहार** (सं० मणिकार) पु० चूड़ी बेचनेवाला, बिसाती ।

सं० **मनु** (मन्=जानना) पु० ब्रह्मा का बेटा, मनुष्यों का पुरुषा, मनुस्मृति का बनानेवाला, (स्वयम्भू आदि चौदह मनु हैं) ।

सं० **मनुज** (मनु, जन्=पैदा होना) पु० मनु का वंश, मनुष्य, आदमी ।

सं० **मनुजाद** (मनुज=मनुष्य, अद्=खाना) पु० राक्षस, दैत्य ।

सं० **मनुष्य** (मनु) पु० मनु के बेटे पोते, आदमी, मनुज ।

सं० **मनुष्यगणना** स्त्री० मर्दुमशुमारी ।

सं० **मनुष्यता** स्त्री० इन्सानियत, आदमियत ।

प्रा० **मनुसाई** (सं० मनुष्यता) स्त्री० पुरुषार्थ, मनुष्यपन, जवाँमर्दी ।

प्रा० **मनुहार** (सं० मनोहारि, मनस्=मन, हृ=लेना) गु० सुन्दर, मनोहर, मन हरनेवाली, २ स्त्री० आदरमान, मीठा बोलना ।

सं० **मनोज** (मनस्=मन, जन्=

पैदा होना) पु० कामदेव, गु० मन से जो पैदा हो ।

सं० **मनोजव** (मनस् + जव) गु० मनके समान जिसका वेग हो, अतिवेगवान्, तेज़रौ ।

सं० **मनोज्ञ** (मनस्=मन, ज्ञा=जानना) गु० सुन्दर, मनोहर, सुडौल ।

सं० **मनोभव**
मनोभू
मनोभूत (मनस्=मन, भू=पैदा होना) क० पु० कामदेव, गु० जो मन से पैदा हो ।

सं० **मनोऽभिलाषित** (मनः + अभिलाषित) कर्म० पु० मनोवाञ्छित, मनचाहा, हस्बदिलख़्वाह ।

सं० **मनोरथ** (मनस् + रथ अर्थात् मन का रथ) पु० चाह, इच्छा, अभिलाष, कामना ।

सं० **मनोरम** (मनस्=मन, रम्=प्रसन्न करना) गु० मनोहर, सुन्दर ।

सं० **मनोहत** गु० व्यग्रचित्त, व्याकुल ।

सं० **मनोहर** (मनस्=मन, हृ=लेना) गु० मनको लेलेनेवाला, सुन्दर, सुहाना ।

सं० **मन्तव्य** (मन् + तव्य, मन्=विचारना) कर्म० पु० माननीय, चिन्तनीय, सलाह, राय ।

सं० **मन्ता** क० पु० मन्त्री ।

सं० **मन्त्र** (मत्रि=एकान्त में कहना वा सलाह करना) पु० वेद का एकभाग जिसमें देवताओं की स्तुति है, २ मन्त्र यन्त्र, जादू, टोना, लटका, ३ सलाह, छिपी बात, सम्मति, उपदेश ।

सं० **मन्त्रण** भा० पु० सम्मति, विचार ।

सं० **मन्त्रणा** भा० स्त्री० परामर्श, विचार, युक्ति, सलाह, सम्मति ।

सं० **मन्त्रज्ञ** पु० तान्त्रिक, मन्त्र जाननेवाला, नीतिज्ञ, जासूस, दूत ।

सं० **मन्त्रवित्** (मन्त्र + विद्=जानना) पु० तान्त्रिक, मन्त्रज्ञ, नीतिज्ञ ।

सं० **मन्त्रित** कर्म० पु० मन्त्र से शुद्ध कियागया, संस्कार किया गया ।

सं० **मन्त्री** (मन्त्र) पु० प्रधान, उपदेशक, सचिव, सलाहकार, वज़ीर ।

सं० **मन्थन** (मन्थ्=बिलोना) भा० पु० मथन, बिलोवन, विलोड़न ।

सं० **मन्थनी** स्त्री० मथानी ।

सं० **मन्द** (मदि=आलसी होना वा अचेत होना वा सोना) गु० सुस्त, आलसी, धीमा, धीरा, मूढ़, मूर्ख, ३ निकम्मा, नीच, बुरा, ४ अभागा, अभागी, ५ नीचा, ६ थोड़ा, कम, ७ पतला, पु० शनैश्चर, क्रि० वि० धीरे धीरे, मन्द मन्द, बोल० धीरे धीरे ।

सं० **मन्दगति** (मन्द=धीमी, गति=चाल) स्त्री० धीमी चाल, गु० धीरे चलनेवाला ।

सं० **मन्दबुद्धि**
मन्दमति (मन्द=सुस्त वा कम, बुद्धि वा मति=

अक़्ल)गु० मूर्ख, अज्ञानी, अनाड़ी, अल्पबुद्धि, बुद्धिहीन ।

सं० मन्दभाग्य (मन्द=सुस्त वा कम, भाग्य=भाग) गु० अभागा, कम्बख़्त ।

सं० मन्दर (मदि=सराहना वा प्रसन्न होना) पु० एक पहाड़ का नाम जिससे देवता और राक्षसों ने समुद्र मथा था, २ स्वर्ग का पेड़ पारिजात, ३ स्वर्ग, गु० भारी, मोटा ।

प्रा० मन्दा (सं० मन्द) गु० धीमा, धीरा, कोमल, ठंढा, २ सस्ता ।

सं० मन्दाकिनी (मन्द=धीरे, अक्=जाना) स्त्री० स्वर्ग की गङ्गा ।

सं० मन्दादर (मन्द+आदर) गु० निरादर, कमक़दर ।

सं० मन्दार (मदि=सराहना) पु० स्वर्ग का एक पेड़, कल्पवृक्ष, नींब, मदार ।

सं० मन्दिर (मदि=सराहना वा सोना जिसमें) पु० घर, २ देवालय, देवस्थान, देहरा ।

सं० मन्दोदरी (मन्द=पतला, उदर=पेट, जिसका पेट पतला हो) स्त्री० मयतनया, रावण की स्त्री ।

सं० मन्मथ (मव्=ज्ञान, मथ्=बिगाड़ना, नाश करना या डुलाना) पु० कामदेव ।

सं० मन्मथारि (मन्मथ + अरि) पु० महादेव ।

सं० मन्यु पु० शिव, यज्ञ, क्रोध, शोक, दीनता, अहङ्कार ।

सं० मन्वन्तर पु० इकहत्तर चौयुगी का वा (३११४४८०००) वर्ष का, चौदह मनु हैं उनमें से एक का अधिकार ।

सं० मम (अस्मद्) सर्वना० मेरा, मेरी ।

सं० ममता (मम) भा० स्त्री० मोह माया, प्रेम, प्यार, स्नेह, २ अभिमान, घमंड, मेरापन, मेरा जानना ।

प्रा० मय (सं० मयट्) यह शब्द दूसरे के साथ आता है तब इसका अर्थ मिला हुआ या बना हुआ होता है जैसे मणिमय=मणियों से बना हुआ ।

सं० मय (मय्=जाना) पु० एक राक्षस का नाम, ऊँट, ख़च्चर ।

प्रा० मयंक (सं० मृगाङ्क) पु० चाँद ।

सं० मयतनया (मय=एक राक्षस का नाम, तनया=बेटी) स्त्री० मन्दोदरी, रावण की स्त्री ।

प्रा० मयत्री (सं० मैत्री) भा० स्त्री० मित्राई, मिताई, प्रीति, प्यार, दोस्ती ।

प्रा० मयन (सं० मदन) पु० कामदेव, मवक्लिल शहवत ।

सं० मयु (मि + उ) क० पु० किन्नर, देवज़ाति विशेष ।

सं० मयूख (मा=नापना वा मय्=

जाना) पु० किरण, तेज, शोभा, शिखा, चोटी ।

सं० **मयूर** (मी=मारना, जो साँप आदि जानवरों को मारता है) पु० मोर, एक पखेरू का नाम ।

सं० **मरक** (मृ=मरना) पु० मरी, सब में फैलनेवाला रोग ।

सं० **मरकत** (मृ=नाश होना, जिस से अँधेरा नष्ट होजाता है) पु० पन्ना, हरीमणि, ज़मुर्रद ।

ग्रा० **मरखपना** बोल० मर जाना, मर मिटना ।

ग्रा० **मरघट** (सं० मरघट्ट, मर=मरना, घट्ट=घाट) पु० मसान, वह जगह जहाँ मुर्दा जलाया जाता है ।

सं० **मरण** (मृ=मरना) भा० पु० मरना, मौत, नाश, विनाश ।

ग्रा० **मरना** (सं० मरण) क्रि० अ० जी निकलना, प्राण छूटना, २ किसी चीज़को बहुत चाहना ।

ग्रा० **मरपचना** बोल० बहुत दुख सहना, बहुत मिहनत करना ।

सं० **मरणप्राय** गु० संनिकटमृत्यु, क़रीबुल्मर्ग ।

ग्रा० **मरम** (सं० मर्म०) पु० भेद, छिपी बात, अभिप्राय, सार बात, २ हृदय आदि अङ्ग ।

सं० **मराल** (मृ=मरना) पु० हंस, राजहंस, २ मेघ, गु० साफ़, स्वच्छ ।

ग्रा० **मरी** (सं० मारी, मृ=मरना वा मारना) पु० महामारी, मारने वाला रोग हैज़ा या ताऊन ।

सं० **मरीचि** (मृ=नाश करना, अँधेरेको या अज्ञान को) पु० सप्तऋषियों में का एक ऋषि, ब्रह्मा का बेटा, स्त्री० पु० किरण ।

सं० **मरीचिमाला** स्त्री० किरणसमूह ।

सं० **मरीचिमाली** पु० सूर्य ।

सं० **मरु** (मृ=मरना, जहाँ पानी बिन लोग मरते हैं) पु० निर्जल देश, मरुस्थल, मारवाड़, २ बिन पानी का जङ्गल ।

सं० **मरुत्** (मृ=मरना, जिनको इन्द्र ने दिति के गर्भ में मार कर उनचास टुकड़े किये थे उनके नाम यह हैं:—१ एकज्योति २ द्विज्योति ३ त्रिज्योति ४ ज्योति ५ एकशक्र ६ द्विशक्र ७ त्रिशक्र ८ इन्द्र ९ गतदृश्य १० ततः ११ पतिसकृत् १२ पर १३ मित १४ सम्मित १५ सुमति १६ ऋतजित् १७ सत्यजित् १८ सुषेण १९ सेमजित् २० अतिमित्र २१ अनमित्र २२ पुरुमित्र २३ अपराजित २४ ऋत २५ ऋतवाह २६ धर्ता २७ धरुण २८ ध्रुव २९ विधारण ३० देवदेव ३१ ईदृक्ष ३२ अदृक्ष ३३ व्रतिन ३४ असदृक्ष ३५ समर ३६ धाता ३७ दुर्ग ३८ धिति ३९ भीम ४० अभियुक्त ४१ अर्थात् ४२ सह ४३ द्युति ४४ वपु ४५ अनाद्य

४६ अथवास ४७ काम ४८ जय ४९ विराट्। इसकी कथा श्रीमद्भागवत में इस तरह से लिखी है कि एक बार दैत्योंकी माँ दिति इस विचारसे अपने पति कश्यपजी के बतलाने से अगहन का व्रत करने लगी कि मेरे ऐसा बेटा हो कि इन्द्र को मार डाले इन्द्र को इस बात के सुनने से बड़ा डर हुआ। तब इन्द्र ब्राह्मण का रूप बन कर दिति की टहल करने लगा। एक दिन दिति शिर का बाल खुला छोड़ कर जूठे मुँह सो गई। ये दोनों बातें व्रत में अशुद्ध होनेसे इन्द्र अपना छोटासा रूप बना के वज्र लिये हुए दितिके पेट में घुस गया और वहाँ जाकर गर्भ में जो बालक था उसके सात टुकड़े कर डाले। तब वे सातों रोनेलगे। फिर इन्द्र ने एक एक के सात सात टुकड़े किये। पर परमेश्वर की इच्छा से और दिति के व्रत के प्रताप से कोई नहीं मरा। उन सातों के उनचास बालक होकर रो कर के बोले कि इन्द्र! अब हम को मत मारो। हम तुम्हारी सहायता करेंगे यह दशा देख कर इन्द्र उन लड़कों से बोला कि अब तुम मत रोओ। मरुत् नाम होकर मेरे साथ रहो फिर इन्द्र उन उनचासों बालकों समेत गर्भ की राह बाहर निकल आया। इस लिये, मरुत् नाम पड़ा) पु० हवा, पवन, वायु देवता।

सं० मरुस्थल (मरु + स्थल) पु० निर्जल देश, मारवाड़, मरुभूमि, रेगिस्तान।

सं० मर्कट (मर्क्=जाना) पु० बानर, बन्दर।

सं० मर्कटी स्त्री० बानरी, २ अपामार्ग, लटज़ीरा, कयवाँच।

सं० मर्त } (मृ=मरना) क० पु०
मर्त्य } मनुष्य, आदमी।

सं० मर्त्यलोक (मर्त्य + लोक) पु० पृथ्वी, मनुष्यलोक, यह संसार।

सं० मर्दक (मर्द् + अक) क० पु० प्रेषक, लोढ़ा, शिल का बट्टा।

सं० मर्दन (मृद्=चूर चूर करना) भा० पु० मलना, रगड़ना, चूर करना, नाश करना।

सं० मर्दित कर्म० पु० चूर्णित।

प्रा० मर्दानियां (सं० मर्द्दनीया) पु० नौकर जो शरीर का मैल उतारने के लिये तेल आदि मलते हैं।

सं० मर्म (मृ=मरना) पु० भेद, छिपी बात, मतलब, २ शरीर के जोड़, शरीरके वे अङ्ग जिनके टूटने से आदमी जी नहीं सक्ता।

सं० मर्मी क० पु० भेदी, भेद जाननेवाला, राज़दां।

सं० मर्मज्ञ (मर्म=भेद, ज्ञ=जानना) पु० भेद जाननेवाला, बुद्धिमान्।

सं० मर्यादा (मर्या=सीमा, आ + दा =लेना वा रखना) स्त्री० मान, पत, प्रतिष्ठा, इज़्ज़त, २ सींव, सीमा, हद्द।

सं० मर्श }
मर्शन } (मृश्=छूना, ध्यान करना) भा० पु० स्मरण, विचार, सम्मति, निश्चय।

सं० मर्ष }
मर्षण } (मृष्=सहना, क्षमाकरना) पु० तितिक्षा, सहना, क्षान्ति, बर्दाश्त।

सं० मल (मल्=धारण करना) पु० मैल, तलछट, गाद, २ गूह, ३ पाप, गु० मैला।

सं० मलग्राही }
मलापकर्षी } क० पु० भंगी, ख़ाकरोब।

प्रा० मलना (सं० मर्द्दन) क्रि० स० रगड़ना, मसलना, मींजना, घिसना।

प्रा० मलमल स्त्री० एक तरह का कपड़ा।

प्रा० मलमास पु० अधिक महीना, लौंद का महीना।

प्रा० मलमेटकरना बोल० नष्ट करना।

सं० मलराशि स्त्री० पापकी राशि।

सं० मलय }
मलयगिरि } (मल्=रखना) पु० एक पहाड़ जो दक्षिण में है और जहाँ बहुत अच्छा चन्दन होता है।

प्रा० मलयागीरी }
मलागीरी } (सं० मलयगिरि) पु० चन्दनका रंग।

प्रा० मलार (सं० मल्लार) स्त्री० एक रागिणी का नाम जो बरसात में गाई जाती है।

सं० मलिन }
प्रा० मलीन } (मल=मैल) गु० मैला, अशुद्ध, अपवित्र, बुरा, २ उदास, घबराया हुआ।

सं० मलिनचित्त क० पु० कपटी, दग़ाबाज़, बुरे दिल का।

सं० मलिन्द पु० भ्रमर, भौंरा।

प्रा० मलेछ (सं० म्लेच्छ) पु० मैली जाति के लोग, जंगली, असभ्य, वे लोग जिनकी बोली संस्कृत नहीं है और न वे हिन्दुओं के शास्त्र को मानते हैं।

सं० मल्ल (मल्ल्=रखना वा पकड़ना) पु० बलवान्, पहलवान्, कुश्ती लड़नेवाला।

सं० मल्लयुद्ध (मल्ल + युद्ध) पु० कुश्ती, पहलवानों की लड़ाई, भिड़ाभिड़ी, बाहुयुद्ध।

सं० मल्लिका (मल्ल्=रखना) स्त्री० चमेली।

सं० मशक (मश्=गूंजना) पु० मच्छर, मच्छड़, मसा, डांस।

फ़ा० मशक (मश्क) स्त्री० एक तरह का चमड़े का थैला जिसमें पानी लाया जाता है।

प्रा० मशहरी (सं० मशक=मच्छर, हरी=दूर करनेवाली, हृ=दूर

करना) स्त्री० एक कपड़ा जिसको मच्छरों से बचने के लिये पलंग पर तानते हैं ।

प्रा० **मष्ट** स्त्री० चुप, मौन ।

प्रा० **मष्टमारना** बोल० चुप रहना, मौन रहना, ख़ामोश रहना ।

प्रा० **मसकाना** क्रि० स० चीरना, फाड़ना, दरकाना ।

प्रा० **मसलना** (सं० म्रक्षण, म्रक्ष् =मलना) क्रि० स० कुचलना, मलना, मींजना ।

प्रा० **मसान** (सं० श्मशान) पु० मरघट, श्मशान, मुर्दाघाट ।

सं० **मसी** (मस्=बदल जाना वा नापना) स्त्री० स्याही, काली रोशनाई ।

सं० **मसीपात्र** (मसी + पात्र) पु० दवात ।

प्रा० **मसूडा** / **मसोड़ा** (मांस) पु० दाँतों के ऊपर का मांस ।

सं० **मसूर** (मस्=नापना या बदलना) पु० एक अनाज जिसकी दाल बनती है ।

प्रा० **मसें** स्त्री० ब० व० मोछें निकलने के पहले के बहुत छोटे २ बाल ।

प्रा० **मसोसना** क्रि० स० मरोड़ना, ऐंठना, २ निचोड़ना, ३ कुढना, कलपना ।

सं० **मस्तक** (मस्=बदलना वा नापना) पु० शिर, माथा, कपाल ।

प्रा० **मस्तूल** (पोर्तुगाली भाषा के शब्द Masto या Mastro से) पु० नाव का डंडा जिस पर पाल ताना जाता है ।

प्रा० **महंगा** (सं० महार्घ, महा=बड़ा, अर्घ=मोल) गु० बड़े मोल का, बहुत मोल का, बेश क़ीमत ।

प्रा० **महंगी** (महंगा) स्त्री० काल, अकाल, गरानी, कुसमय, गु० महंगा शब्द का स्त्रीलिङ्ग ।

प्रा० **महक** स्त्री० सुगन्ध, सुबास, गन्ध, खुशबू ।

सं० **महत्** (मह्=पूजना वा बढ़ना) गु० बड़ा, श्रेष्ठ, उत्तम, मानने योग्य, पूजने योग्य, स्त्री० बड़ाई, मान, प्रतिष्ठा ।

प्रा० **महतारी** (सं० महत्तरा=बड़ी) स्त्री० मां, माता ।

प्रा० **महतो** (सं० महत्) वह आदमी जो ज़मींदार की तरफ़ से गाँव में महसूल उगाहने के लिये नियत किया जाय, चौधरी, सजावल ।

सं० **महत्त्व** (महत्) भा० पु० बड़प्पन, बड़ाई ।

प्रा० **महना** (सं० मथन) क्रि० स० मथना, बिलोना ।

सं० **महन्त** (महत्) पु० मठधारी, गुसाईं अथवा वैरागियों का प्रधान ।

प्रा० **महर** (सं० महत्तर, बहुत बड़ा) पु० प्रधान ।

प्रा० महरा पु० कहार, भोई, पालकी उठानेवाला ।

प्रा० महरि, महरी (सं० महिला, मह्=पूजना) स्त्री० भार्या, स्त्री, पत्नी, लुगाई ।

सं० महर्षि (महा + ऋषि) पु० परमऋषि, वेदव्यास आदि बड़े ऋषि ।

सं० महा (महत्, मह्=पूजना वा बढ़ना) गु० बड़ा, उत्तम, श्रेष्ठ, बहुत ।

सं० महाकाय (महा=बड़ा, काया =शरीर) पु० शिव का द्वारपाल, नन्दि, २ हाथी, गु० बड़ामोटा शरीरवाला ।

सं० महाकाल (महा=बड़ा, काल =काला वा समय वा मौत अर्थात् सब को नाश करनेवाला) पु० प्रलयके समय में महादेव का रूप ।

सं० महाकाली (महाकाल) स्त्री० दुर्गा, देवी ।

प्रा० महाकोढ़ (सं०महाकुष्ठ) पु० बड़ा कोढ़ ।

सं० महाघोर (महा=बहुत या बड़ा, घोर=डरावना) गु० बड़ा भयानक, बहुत डरानेवाला, पु० एक नरक का नाम ।

सं० महाजन (महा + जन) पु० बड़ा आदमी, कोठीवाल, साहूकार।

प्रा० महाजनी (महाजन) स्त्री० महाजन का काम, कोठीवाली ।

प्रा० महाजान (सं० महाज्ञानी) गु० बहुत बुद्धिमान् ।

प्रा० महातम (सं० माहात्म्य) पु० बड़ाई, प्रतिष्ठा ।

सं० महात्मा (महा=बड़ा, आत्मा =जीव) गु० महाशय, सज्जन, उत्तम, बुजुर्ग, श्रेष्ठ ।

सं० महादेव (महा=बड़ा, देव=देवता) पु० शिव, महेश, उमेश ।

सं० महान् (महत्) पु० महत्तत्त्व, गु० बड़ा, श्रेष्ठ ।

सं० महानस पु०पाकस्थान, चूल्हा, गु० २ अति प्रसन्न, हर्षद ।

सं० महानुभाव गु० प्रतापी, २ तजरुबाकार ।

सं० महापातक (महा + पातक) पु० बड़ापाप जैसे ब्रह्महत्याआदि ।

सं० महापाप (महा + पाप) पु० बड़ा पाप, महापातक ।

सं० महापुरुष (महा + पुरुष) पु० बड़ा आदमी, महात्मा, साधु, सज्जन ।

सं० महाप्रभु (महा + प्रभु) पु० परमेश्वर, २ शिव, ३ महाराजा, ४ पवित्र मनुष्य ।

सं० महाप्रलय (महा + प्रलय) पु० सृष्टि का नाश जो हर एक ४३२००००००० बरसों पीछे होता है, २ सारी सृष्टिका नाश जो

ब्रह्मा के १०० बरस के पीछे होता है, जिस वर्ष का हर एक दिन ऊपर लिखेहुए बरसों के बराबर होता है और ब्रह्मा की राति भी इतनेही बरसों की होती है। और इस महाप्रलयमें ऋषि, मुनि, देवता और ब्रह्मा समेत सातों लोक नष्ट हो जाते हैं।

सं० **महाप्रसाद** (महा=बड़ा, प्रसाद=भोग या नैवेद्य) पु० देवता का भोग या नैवेद्य, श्रीजगन्नाथजी का प्रसाद।

सं० **महाबली** (महा+बली) गु० बड़ा बलवान्, बड़ा पराक्रमी।

सं० **महाभटमानी** क० पु० बड़ा योद्धा माननेवाला।

सं० **महाभारत** (महा+भारत) पु० एक बहुत बड़ा इतिहास जो पद्यमें लिखाहुआ है, २ भरतवंशी राजा कौरवों और पाण्डवों की बड़ी लड़ाई जो कुरुक्षेत्र के मैदान में हुई थी।

सं० **महाभूत** पु० पञ्चतत्त्व, पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश।

सं० **महामाया** (महा+माया) स्त्री० दुर्गा, देवी, शक्ति।

सं० **महारथी** (महा+रथी) क० जो अकेला ११ सहस्र धनुषधारियों से युद्धकरे, शस्त्र विद्या में प्रवीण हो।

सं० **महाराज** (महा+राजा) पु० बड़ा राजा, राजाधिराज।

सं० **महाराजाधिराज** (महाराज+अधिराज) पु० सबसे बड़ा राजा।

प्रा० **महारानी** (सं० महाराज्ञी, महा=बड़ी, राज्ञी=रानी) स्त्री० राजा की बड़ी रानी, पाटरानी।

सं० **महार्घ** (महा+अर्घ) गु० बड़े मोलका, बहुमूल्य।

सं० **महालक्ष्मी** (महा+लक्ष्मी) स्त्री० संपदा, संपत्ति, ऐश्वर्य, २ अठारह भुजा की देवी, लक्ष्मी।

प्रा० **महावट** (माघ) स्त्री० माह महीने का मेह।

प्रा० **महावत** पु० हाथीवान।

प्रा० **महावर** पु० लाखीरंग।

सं० **महावीर** (महा+वीर) पु० बड़ा शूरवीर, हनुमान्।

सं० **महाशय** (महा+आशय) गु० सज्जन, महात्मा, उदार, बड़ा और भला आदमी।

सं० **महाश्वेता** स्त्री० सरस्वती।

सं० **महि** } (मह्=पूजना वा बड़ा
मही } होना) स्त्री० धरती, धरणी, ज़मीन, पृथ्वी।

सं० **महिदेव** (महि+देव) पु० भूमिदेव, ब्राह्मण।

सं० **महिपाल** } (महि=धरती, पा-
महीपाल } ल्=बचाना) पु० राजा, महाराजा।

सं० महिमन् पु० महत्त्व, बड़ाई, कीर्ति ।

सं० महिमा (मह्=पूजना वा बड़ा होना) स्त्री० बड़ाई, सराह ।

सं० महिला स्त्री० नारी, स्त्री, २ मालकँकुनी ।

सं० महिष (मह्=पूजना जो यज्ञ में वा बलिदान के समय पूजा जाता है) पु० भैंसा ।

सं० महिषासुर (महिष + असुर) पु० एक राक्षस का नाम जिसको दुर्गा ने मारा ।

सं० महिषी (मह्=पूजना या मानना) स्त्री० भैंस, २ रानी ।

सं० महिषेश पु० महिषासुर, २ यमराज ।

प्रा० मही } (सं०मथित,मथ्=मथना) मह्यो } पु० छाछ, मट्ठा ।

सं० महीधर (मही=धरती, धृ=रखना)पु०पहाड़,पर्वत, डूंगर ।

प्रा० महीना (सं०मास्) पु० तीस दिन, २ तनख़्वाह, मासिक, तीस दिन की मज़दूरी ।

सं० महीप (मही=धरती, पा=पालना) पु० राजा ।

सं० महीपति (मही=धरती, पति =मालिक) पु० राजा, भूपति ।

सं० महीरुह पु० वृक्ष, वनस्पति ।

सं० महीसुर (मही + सुर) पु० ब्राह्मण ।

प्रा० महुआ (सं० मधूक, मधु=मीठा) पु० एक पेड़ जिसका फल मीठा होता है और उसकी मदिरा बनाई जाती है ।

प्रा० महूरत (सं० मुहूर्त) पु० दो घड़ी ।

सं० महेन्द्र (महा + इन्द्र) पु० इन्द्र, २ महाराजाधिराज, ३ एक पहाड़ का नाम ।

सं० महेश } (महा=बड़ा, ईश वा महेश्वर } ईश्वर=मालिक) पु० महादेव, शिव ।

सं० महेष्वास (महा + इषु + आस) बड़े धनुषवाले ।

सं० महोक्ष पु० बड़ा बैल, नन्दिकेश्वर ।

सं० महोत्सव (महा + उत्सव) पु० बड़ा तिहवार, बड़ापर्व, बड़ा दिन ।

सं० महोदय पु० कान्यकुब्ज देश, क़न्नौज, गु० २ प्रतापी, नामवर ।

सं० मा (मा=शोभना या आदर करना) स्त्री० शोभा, लक्ष्मी, २ माता, क्रि० वि० मत, नहीं ।

प्रा० मा } (सं०माता) स्त्री० मैया, माई } महतारी ।

प्रा० माँग स्त्री० लुगाइयों के शिर में एक लकीर सी होती है जहाँ से बाल जुदे किये जाते हैं, २ वह कुँवारी लड़की जिसकी सगाई हुई हो ।

प्रा० माँगना (सं० मार्गण, मृग्=

खोजना) क्रि० स० चाहना, याचना, २ सगाई करना, निस्बत करना, सम्बन्ध करना ।

प्रा० माँजना (सं० मार्जन, मृज्=शुद्ध करना वा मञ्जन, मञ्ज्=साफ़ करना) क्रि० स० मलना, उजला करना, उजालना, साफ़ करना ।

प्रा० माँजा } पु० एक रोग जो मछलियोंके बहुत होताहै,
माँझा } २ वर्षा के नवीनजल का फेना ।

प्रा० मांझ (सं० मध्य) पु० बीच, मध्य, मांझधार=नदी के बीच में ।

प्रा० मांझा पु० पतङ्ग की डोर, जिस में काँच पीस कर और लेई या गोंद से मिलाकर लगाया जाता है जिससे दूसरे की पतङ्ग की डोर को काटते हैं ।

प्रा० मांझी (मध्य) पु० नाविक, नाव का मालिक ।

प्रा० माँड़ (सं० मण्ड, मन्=रखना) पु० भात का पानी ।

प्रा० माँड़ना (सं० मर्दन) क्रि० स० मलना, मींजना, मसलना, २ करना, रचना, बनाना ।

प्रा० मांद स्त्री० जंगली जानवरकी गुफा, गु०हलका, २फीका, सीठा ।

सं० मांस (मन्=रखना वा पूजना, जो शक्ति की पूजा और यज्ञ आदि में पूजाजाताहै)पु० गोश्त, सालन ।

सं० मांसल गु० स्थूल, मोटा ।

सं० मांसाद (मांस + अद) क० पु० मांस खानेवाला, गोश्तख़्वार ।

सं० मांसाहारी (मांस + आहारी=खानेवाला) क० पु० मांस खानेवाला, मांसभक्षी ।

सं० मांसभक्षक } (मांस, भक्ष्=
मांसभक्षी } खाना) क०पु० मांस खानेवाला, मांसआहारी ।

प्रा० मांह } (सं० मध्य) में, भीतर,
मांहि } बीच ।

प्रा० माखना क्रि० अ० क्रोध करना, कोपना, खिसियाना ।

प्रा० माखित (माखना) गु० क्रोधित, खिसियाना हुआ, २ ईर्षा या द्वेष या डाह करता हुआ ।

सं० मागध (मगध) गु० मगधदेश का, पु०भाट या कड़खैत जिनका काम राजाओं की और बड़े आदमियों की बड़ाई करने का है ।

सं० माघ (मघा एक नक्षत्र का नाम इस महीने में पूरा चाँद इस नक्षत्र के पास रहता है और इस महीने की पूनौंके दिन यह नक्षत्र होताहै) पु० बरस का ग्यारहवां महीना ।

प्रा० माछी (सं० मक्षिका) स्त्री० मक्खी, माखी ।

प्रा० माजूफल पु० एक फल जो दवाई में काम आता है ।

प्रा० माटी (सं० मृत्तिका) स्त्री० मिट्टी, मट्टी ।

ा० माठा गु० नटखट, ढीठ, मगरा, सुस्त, २ (सं० मन्थित, मन्थ्=मथना) पु० मट्ठा, छाछ ।

ा० माणिक (सं० माणिक्य, मणि) पु० लाल, एक लाल रंग का बहुत मोल का पत्थर ।

ा० मात (सं० मात्रा) स्त्री० मात्रा, लगमात, स्वरों का व्यञ्जनों के साथ मिलान, २ (सं० माता) मां, माता ।

ा० मात स्त्री० बाज़ी हराना, जीतना, शहमात ।

प्रा० मातकरना बाज़ी जीतना ।

सं० मातङ्ग (मद्=मस्त होना) पु० हाथी, हस्ती, गज ।

सं० मातलि (मत=सलाह, ला=लाना अर्थात् सलाह बतलाना) पु० इन्द्र का रथवान्, इन्द्र का सारथी ।

प्रा० माता (सं० मत्त) गु० मस्त, मतवाला, उन्मत्त ।

सं० माता (मान्=पूजना या मन्=आदर, मान करना) स्त्री० मां, मैया, माई, २ शीतला देवी ।

सं० मातामह (माता) पु० मां का बाप, नाना ।

सं० मातुल (मातृ=मां) पु० मां का भाई, मामा ।

सं० मातुलानी, मातुली } स्त्री० मामी, माईं ।

सं० मातृष्वसा स्त्री० मौसी, ख़ाला, मां की बहिन ।

सं० मातृष्वस्रेय पु० मौसी का बेटा, ख़ालाज़ाद ।

सं० मात्र (मा=नापना) क्रि० वि० केवल, अल्प, थोड़ा, कुछ, उतनाही, वहीभर ।

सं० मात्रा (मा=नापना) स्त्री० नाप, परिमाण, २ ह्रस्व-दीर्घ-प्लुतस्वर, ३ दवा का नाप, औषध का परिमाण ।

प्रा० माथा (सं० मस्तक) पु० शिर, कपाल, मस्तक, २ नाव का अगला भाग ।

प्रा० माथाठनकना बोल० किसी काम के बिगड़ने का हाल पहले से मालूम होजाना ।

प्रा० माथारगड़ना बोल० बहुत ग़रीबी से प्रार्थना करना या देवता, मुनि, अथवा राजासे ग़रीबी के साथ माँगना, २ बहुत मिहनत करना ।

प्रा० माथेपरचढ़ना बोल० अन्याय करना, ज़ुल्म करना, प्रजा को बहुत दुःख देना, सताना ।

सं० माथुर (मथुरा) पु० मथुरा का रहने वाला, २ कायथों की एक ज़ात, ३ मथुराके ब्राह्मणों की एक ज़ात ।

सं० मादक (मद्=मस्त होना) क० पु० मस्त करने वाला, नशेकी चीज़ ।

सं० **मादन** क० पु० हर्षकारक, फ़ा० ख़ानसे निकली चीज़ें (खानि)।

सं० **माधव** (मा=लक्ष्मी, धव=पति) पु० लक्ष्मीपति, विष्णु।

सं० **माधव** (मधु) पु० श्रीकृष्ण, २वसन्त ऋतु, ३वैशाखका महीना, ४ महुआ, गु० शहद का।

सं० **माधुर्य** (मधुर) भा० पु० मिठास, मधुरता।

सं० **माध्वी** (मधु) स्त्री० महुवेकी मदिरा, २ एक तरह की मछली।

सं० **मान** (मा=नापना) पु० नाप, माप, अंदाज़, परिमाण, २(मत्त=घमंड करना वा बड़ा जानना) आदर, सन्मान, प्रतिष्ठा, नाम, पत, ३ घमंड, अभिमान, ४ चोंचला, तावभाव, नाज़नख़रा, गु० बराबर।

सं० **मानन** (मान्+अन) भा० पु० पूजा करना, आदर करना।

सं० **मानव** (मनु) पु० मनुके बेटे पोते, मनुष्य, आदमी, २ बालक।

सं० **मानस** (मनस्=मन) गु० मनका, मानसिक, पु० मन, मनसा, २ हिमालय पहाड़ के पास मानसरोवर नामक झील।

सं० **मानसिक** (मनस्=मन) गु० मनका, मनसे पैदा हुआ, दिली।

सं० **मानहानि** स्त्री० अपमान, निरादर, बेक़दरी, बेइज़्ज़ती।

सं० **मानिनी** (मान=घमंड) स्त्री० गु० घमंड करनेवाली स्त्री, मानवती स्त्री।

सं० **मानी** (मान) गु० घमंडी, अभिमानी।

सं० **मानुष** (मनु) पु० मनुष्य, आदमी।

प्रा० **मान्ना** (सं० मान्=विचारना) क्रि० स० सन्मान करना, आदर करना, चाहना, जानना, २ पतियाना, भरोसा करना, ३ स्वीकार करना, क़बूल करना, इक़रार करना, ४ ठहरालेना, अनुमान करना, कल्पना करना।

सं० **मान्य** (मान्=पूजना) र्म० पु० पूजने योग्य, मानने योग्य, माननीय।

सं० **माप** (मा=नापना) पु० नाप, परिमाण।

सं० **मापक** (मा=नापना) क० पु० नापने वाला, २ नापविद्या में दो बराबर खेतों में कोई आध काट से कटे हुए खेत और बाक़ी दो बराबर खेतों के मिलने से मापक बनताहै, ३ पैमाना, ४ अमीन।

प्रा० **मापा** र्म० पु० व्यापा, असरकिया, लगा।

प्रा० **मामा** (सं० मामक, मम=मेरा) पु० मां का भाई, मामू।

सं० **माया** (मा=नापना या बनाना) स्त्री० ईश्वर की शक्ति, कुदरत, २

इन्द्रजाल, कुहक, ३ कृपा, दया, ४ मोह, प्यार, नेह, मुहब्बत, ५ छल, दम्भ, कपट, ६ धन, संपदा, दौलत, मायापात्र, गु० धनवान् ।

सं० मायापति (माया+पति) पु० विष्णु, ईश्वर ।

सं० मायावी (माया=छल) पु० एक राक्षस का नाम जो मय का बेटा था जिसको बालिने मारा, गु० छली, फ़रेबी ।

सं० मार (मृ=मरना या मारना) पु० मरना, २ कामदेव ।

प्रा० मार (मारना) स्त्री० मारना, पीटना, २ लड़ाई, युद्ध, ३ चोट ।

सं० मारक क० पु० कामदेव, २ नाशक, हिंसक ।

प्रा० मारकुटाई बोल० मारना और कुचलना, मारपीट ।

सं० मारकेश जन्मपत्र में लग्न से दूसरे व सातवें घर का स्वामी ।

प्रा० मारखाना }
मारखानी } बोल० पिटना, मार पड़ना ।

प्रा० मारगिराना बोल० पछाड़ना, पटक देना ।

प्रा० मारपड़ना बोल० पिटना, मारखाना ।

प्रा० मारपीट बोल०मारकुटाई, मारना, पीटना ।

प्रा० मारमरना बोल० अपघात करना, आत्महत्या करना, २ लड़ाई में वैरी को मारके मरना ।

प्रा० मारलाना बोल० लूटलाना ।

प्रा० मारलेना बोल० मारना, जीत लेना ।

प्रा० मारहटाना बोल० जीतलेना, मारना और निकाल देना ।

प्रा० मारग (सं० मार्ग) पु० रस्ता, राह, पन्थ, बाट, डगर, पैंड़ा ।

प्रा० मारना (सं० मारण, मृ= मरना या मारना) क्रि० स० जी लेना, मार डालना, प्राण निकालना, २ पीटना, ठोंकना, टकराना, ३ दण्ड देना, सज़ा देना, ४ नाश करना, बिगाड़ना ।

प्रा० मारापड़ना बोल० माराजाना।

प्रा० मारामाराफिरना बोल० भटकता फिरना, डाँवाँ डोल फिरना, इधर-उधर फिरना ।

प्रा० मरामारी बोल० आपस में मार पीट, धौल धप्पा, लातमुक्की।

सं० मारात्मक (मार=मारना, आत्मा=जीव) गु० मारनेवाला, हिंसक, घातक, शत्रु ।

सं० मारी (मृ=मरना वा मारना) स्त्री० मरी, मौत, महामारी, हैज़ा या ताऊन ।

सं० मारीच (मृ=मरना वा मारना) पु० एक राक्षस का नाम जो ताड़का राक्षसी का बेटा और सुबाहु का भाई और रावण का

नौकर था जिसको श्रीरामचन्द्र ने मारा ।

सं० मारुत (मृ=मारना) पु० हवा, बाव, बयार, पवन, वायु देवता (मरुत् शब्द को देखो)।

सं० मारुतसुत (मारुत + सुत) पु० हनुमान्, पवन का पूत ।

सं० मारुतात्मज (मारुत + आत्मज) वायुपुत्र, हनूमान् ।

सं० मारू (मृ=मारना) पु० लड़ाई का बाजा, २ एक रागिणी का नाम जो लड़ाई में गाई जाती है ।

सं० मार्कण्डेय पु० एक मुनि का नाम, मृकण्ड मुनिका पुत्र ।

सं० मार्ग (मृज्=साफ़ करना वा मृग् वा मार्ग=खोजना) पु० रस्ता, मार्ग, बाट, पन्थ ।

सं० मार्गित र्म्म० पु० तलाश किया गया, ढूंढा गया ।

सं० मार्ग्य र्म्म०पु० ढूंढने योग्य ।

सं० मार्गण (मार्ग + अन, मार्ग=ढूंढ़ना) पु० बाण, अन्वेषण, याच्ञा, भिक्षा, तलाश ।

सं० मार्गव पु० व्याध, अहेरी ।

सं० मार्गशिर }
मार्गशीर्ष } (मृगशिरा एक नक्षत्र का नाम इस महीने में पूरा चाँद इस नक्षत्र के पास रहता है और इस महीने की पूर्णमासी के दिन यह नक्षत्र होता है) पु० अगहन, मँगसर, मगसिर ।

सं० मार्जन (मृज्=शुद्ध करना) पु० शुद्ध करना, पवित्र करना, साफ़ करना, २ सन्ध्या पूजा आदि करने के पहले पवित्रता के लिये शरीर आदि में पानी की छींट डालना ।

सं० मार्जनी ण०स्त्री० झाड़ू, बढ़नी ।

सं० मार्जनीय र्म्म० पु० साफ़ करने योग्य ।

सं० मार्जार (मृज्=शुद्ध करना वा मलना) पु० बिलाव ।

सं० मार्तण्ड[१] (मृतण्ड=सूर्य का बाप) पु० सूर्य, शूकर ।

सं० मालका }
मालिका } (माला) स्त्री० माला, हार, २ पांत, पांति, श्रेणी, पंक्ति ।

सं० मालती (माल=विष्णु, अव=जाना अर्थात् विष्णु को चढ़ना वा मा=शोभा, ला=लेना) स्त्री० एक फूल का नाम, चमेली ।

प्रा० मालपूवा पु० मीठा पूवा ।

सं० मालव पु० मालवादेश ।

सं० माला (मा=शोभा, ला=लेना) स्त्री० फूलों का हार, सोने या मोती आदि का हार, २ सुमरनी, जपमाला, ३ पांत, पंक्ति, श्रेणी, क़तार ।

---

(१) मृते अण्डे भवः मार्तण्डः शकन्ध्वादिरिति ।

मालाकार (माला=हार, कार =करनेवाला, कृ=करना) पु० माली, बाग़बान ।

मालादीपक क० पु० अर्थालङ्कार भेद ।

माली (माला) पु० बाग़बान, मालाकार ।

माल्य (माला) र्म० माला के योग्य, पु० फूल, २ माला, हार ।

मावस (सं० अमावस्या) स्त्री० अँधेरे पाख की पन्द्रहवीं तिथि, अमावस ।

माष पु० क्रोध, कोप, २ उड़द ।

माषा (सं० माष, मष्=अन्दाज़ करना) पु० आठ रत्ती की तौल ।

मास (मा=नापना) पु० महीना, २ चाँद ।

मासकबार (पोर्तुगाल की भाषा का शब्द (mes महीना, acabar पूरा होना) से बिगड़ा हुआ) पु० महीने के अन्त का दिन, २ माहवारी नक़शा और यह शब्द मास एकबार से भी बना मालूम होता है क्योंकि माहवारी नक़शे आदि महीने में एक बार भेजेजाते हैं ।

मासान्त (मास + अन्त) पु० पूर्णमासी, संक्रान्ति ।

मासिक (मास) गु० महीने का जो महीने में मिले,

ख़्वाह, वेतन, २ हर एक महीने में अमावस के दिन का श्राद्ध ।

प्रा० मासी (सं० मातृ + स्वसृ, मातृ= मां, स्वसृ=बहिन) स्त्री० मांकी बहिन, मौसी ।

सं० माहेश्वरी (महेश) स्त्री० दुर्गा, देवी, पार्वती, शिवरानी ।

प्रा० माहुर पु० ज़हर, विष ।

प्रा० मिचना क्रि० अ० बन्द होना, मुँदना ।

प्रा० मिटना (सं० मृष्ट, मृज्=साफ़ करना) क्रि० अ० बिगड़ना, साफ़ होना, दूर होना, चलाजाना, सिलपट होना ।

प्रा० मिटिया (मिट्टी) गु० एक तरह का रंग, ख़ाकी रंग, स्त्री० मिट्टीका बर्तन ।

प्रा० मिठाई (सं० मिष्टान्न, मिष्ट= मीठा, अन्न=अनाज) भा० स्त्री० शीरीनी, मीठी चीज़, मीठा पकवान, २ मिठास, मधुरता ।

प्रा० मिठास (सं० मिष्टांश, मिष्ट + अंश) भा० पु० मिठाई, मीठापन ।

सं० मित (मा=नापना) र्म० पु० नापा हुआ, मापा हुआ, परमित ।

सं० मितम्पच पु० कंजूस, किफ़ायती ।

सं० मितप्रद क० पु० थोड़ादेनेवाला ।

सं० मिति स्त्री० परिमाण, तादाद, अन्त, मर्याद ।

मिती (सं० मिति मा=नापना)

स्त्री० तिथि, २ ब्याज, सूद ।

सं० मित्र (मिद्=प्यार करना) पु० जो प्रत्युपकार की इच्छा से उपकार करे व स्नेह करे वह मित्र है, दोस्त, सनेही, प्यारा, हितू, बन्धु, सखा, सुहृद्, २ सूर्य ।

सं० मित्रता (मित्र) भा० स्त्री० मिताई, मित्राई, दोस्ती, प्यार, हेत।

सं० मित्रद्रोही क० पु० मित्र का वैरी।

सं० मित्रवर्ग पु० सुहृद्गण ।

प्रा० मित्राई }
मिताई } (सं० मित्रता) भा० स्त्री० दोस्ती, प्यार ।

सं० मिथस् (मिथ्=मिलना वा समझना) क्रि० वि० आपस में, एक दूसरे को, परस्पर, बाहम ।

सं० मिथिला (मिथ्=नाश करना वैरियों को) स्त्री० तिरहुत, जनक राजा की नगरी, जनकपुर ।

सं० मिथिलेश (मिथिला + ईश) पु० जनक राजा ।

सं० मिथिलेशकुमारी (मिथिलेश + कुमारी) स्त्री० जनकदुलारी, जानकी, सीता, वैदेही ।

सं० मिथिलेशि (मिथिलेश) स्त्री० जनकराजा की रानी ।

सं० मिथुन (मिथ्=मिलना वा समझना) पु० जोड़ा, स्त्री पुरुष, २ ज्योतिष में एक राशि का नाम ।

सं० मिथ्या (मिथ्=मारना वा हानि पहुँचाना) क्रि० वि० [illegible] गु० दरोग़, झूठ, असत्य, अनर्थ ।

प्रा० मिरगी स्त्री० एक रोग का नाम।

प्रा० मिर्च (सं० मरिच, मृ=मरना) स्त्री० एक मसाले का नाम, गोल मिर्च=काली मिर्च ।

सं० मिलक क० पु० संधिकारी, मेल करनेवाला ।

सं० मिलन (मिल्=मिलना) भा० पु० मिलना, मेल, मिलाप, संयोग।

प्रा० मिलनसार (मिलन) गु० मेली, मिलापी ।

प्रा० मिलना (सं० मिलन) क्रि० अ० मिलाप होना, भेंटना, मिला रहना, २ पचमेल होना, गड़बड़ होजाना, ३ पाना, ४ एक होना, बराबर होना ।

प्रा० मिलनाजुलना बोल० सदा मिलारहना, सचाई से मिलना।

प्रा० मिलनाहिलना बोल० इकट्ठा रहना, शामिलरहना ।

प्रा० मिलेजुलेरहना बोल० मेल से रहना, मिलाप से रहना।

प्रा० मिलाप (मिलना) पु० मेल, बनाव, भेंट, योग, संयोग ।

सं० मिलित (मिल्=मिलना) कर्म० पु० मिलाहुआ, लगा हुआ ।

सं० मिश्रक (मिश्र् + अक) क० पु० मेलक, मिलानेवाला, देवोद्यान, देववन ।

सं० मिश्र (मिश्र्=मिलना) गु०

मिलाहुआ, पु०ब्राह्मणोंकी पदवी, २ प्रतिष्ठित मनुष्य, ३ हिन्दू-वैद्य ।

सं० मिश्रकेशी स्त्री० स्वर्गवेश्या ।

सं० मिश्रित (मिश्र्=मिलना) कर्म० पु० मिला हुआ, जुड़ा हुआ, यौगिक ।

सं० मिष (मिष्=हिस्का वा बराबरी करना) पु० छल, कपट, बहाना, हीला, बनावट, २ हिस्का ।

सं० मिष्ट (मिष्=सींचना) गु० मीठा, मधुर ।

सं० मिष्टान्न (मिष्ट + अन्न) पु० मिठाई, शीरीनी, पकवान ।

प्रा० मिस्सी स्त्री० काले रंग का चूरण जिसको स्त्रियां दाँतों में लगाती हैं ।

प्रा० मिहदी मेंहदी (सं० मेन्धी, मा=शोभा, इन्ध=चमकना) स्त्री० एक पौधा जिसके पत्तों से स्त्रियां अपने हाथ रचाती हैं ।

प्रा० मिहना पु० बोली ठोली, ताना ।

प्रा० मिहरारू मिहरिया मिहरी (सं० महिला, मह्=पूजना) स्त्री० लुगाई, नारी, स्त्री ।

सं० मिहिका स्त्री० नीहार, कुहिरा, हिम, बर्फ़ ।

सं० मिहिर पु० सूर्य, आफ़ताब ।

प्रा० मींजना (सं० मृज्=साफ़ करना) क्रि० स० मसलना, मलना, रगड़ना ।

प्रा० मीचु[1] (सं०मृत्यु) स्त्री० मौत, क़ज़ा ।

प्रा० मींचना क्रि० स० आँख बन्द करना, मूँदना ।

प्रा० मीठा (सं०मिष्ट) गु० मधुर, मिष्ट, २ धीमा, पु०चुम्बा, बोसा ।

प्रा० मीणा मीना[2] पु० जंगली आदमियों की एक ज़ात जो चोर और डाकू होते हैं ।

प्रा० मीत (सं० मित्र) पु० मित्र, दोस्त, सुजन, सुहृद्, सखा ।

सं० मीन (मी=मारना) स्त्री० वा पु० मछली, २ एक राशिका नाम ।

सं० मीनकेतन (मीन=मछली, केतन=पताका) पु० कामदेव ।

सं० मीमांसक (मीमांसा) क० पु० मीमांसाशास्त्र का जाननेवाला, २ विचार करनेवाला ।

सं० मीमांसा (मान्=विचारना) स्त्री० छः शास्त्रों में का एकशास्त्र, २ सिद्धान्त विचार ।

सं० मीमांसित कर्म० पु० विचारित, विचारागया ।

प्रा० मीमियाना मिमियाना क्रि०अ० में में करना, बकरी के बच्चे का बोलना ।

---

[1] चिन्तनीय द्वय वस्तु हैं सदा जगत के बीच । ईश्वर के पदपद्मयुग और आपनी मीच ॥

[2] निन्दहिं आप सराइहिं मीना । धिग जीवन रघुवीर विहीना । (इति रामायणम्) ॥

सं० मीलन (मील्=पलक मारना) पु० टिमकाना, टमटमाना ।

सं० मीलित कर्म० पु० संकुचित, बन्धित ।

प्रा० मुँह
मूँह } (सं०मुख) पु० मुखड़ा, मुख, वदन, चेहरा, २ बल, शक्ति, ज़ोर, योग्यता ।

प्रा० मुँह अँधेरा बोल० सन्ध्या, साँझ, शाम, कुछ कुछ अँधेरा ।

प्रा० मुँह अपनासा लेके फिर जाना बोल० निराश होकर चला जाना ।

प्रा० मुँहआना बोल० मुँह फलना, मुँह में छाले होजाना ।

प्रा० मुँहामुँह बोल० खूब पूराभरा हुआ, लबालब ।

प्रा० मुँहउतरजाना बोल० उदास होजाना ।

प्रा० मुँहकरना बोल० साम्हने होना, मिलाना, बराबरी देना, २ गाली देना, ३ फोड़े को छेद करना, फोड़े या घावका फूटना, ४ सबसे पहले हमला करना (जैसे शिकारी कुत्ता या और जानवर दूसरे कुत्ते या जानवर पर करते हैं) ५ किसी चीज़ या जगह की ओर देखना या उसतरफ़ पावँ उठाना।

प्रा० मुँहकाफूहड़ बोल० बुरीबात बोलनेवाला, बदज़बान, निन्दक ।

प्रा० मुँहकाला बोल० कलङ्क, अपमान, अनादर, बुरा ।

प्रा० मुँहकालाकरना बोल० कलङ्क लगाना, दाग़लगाना, आबरू उतारना, २ सज़ा देना ।

प्रा० मुँहकेकौवे उड़जाने बोल० उदास दिखाई देना, व्याकुल दिखाई देना ।

प्रा० मुँह खोलना बोल० गाली देना, निन्दा करना ।

प्रा० मुँहचढ़ाना बोल० हिलमिल जाना, मुँह लगाना, २ साम्हना करना, सन्मुख होना ।

प्रा० मुँह चलाना बोल० काटना, काटा चाहना (जैसे घोड़ा)।

प्रा० मुँहचोर बोल० शरमीला, लजीला, डरपोकना ।

प्रा० मुँहचोरी बोल० लाज, शरम।

प्रा० मुँहछिपाना बोल० लाज से मुँह ढकना ।

प्रा० मुँह ठठाना बोल० किसी के मुँह पर तमाचा मारना, थप्पड़ मारना ।

प्रा० मुँहडालना बोल० माँगना, याचना, चाहना, २ काटना (जैसे घोड़ा)।

प्रा० मुँह तकना बोल० चकित रह जाना, भैचक रहना, घबराना, व्याकुल होना ।

प्रा० मुँहतोड़ना गु० खिझाना, मुँहमें मारना, तकलीफ़ देना ।

मुँहतौ देखो बोल०यह मुहा- रा उस जगह बोलाजाता है जब कोई आदमी अपनी ताक़त या योग्यता से अधिक कोई काम करने का बहाना करता हो।

० मुँहथुथाना बोल०मुँहबनाना।

० मुँहदिखाई स्त्री० जबकि नई दुलहिन आती है तब उसको उस की सास ननँद आदि सुसराल की लुगाइयां मुँह देखकर रुपया अथवा गहना आदि देती हैं उस को मुँहदिखाई कहते हैं।

० मुँह देखकर बात करना बोल० खुशामद करना, ऐसी बात कहना जो सुननेवाले के मन भाये।

०मुँहदेखना बोल० मददचाहना, सहायता माँगना, २ किसी का बहुत आदर सन्मान करना ३ घबराना या बेबश होना।

० मुँह देखरहना बोल० अचंभे में किसी का मुँह ताकना।

०मुँहदेखेकी प्रीति बोल० किसी के साम्हने प्यार की बातें करना और उसके पीठ पीछे उसका कुछ ध्यान नहीं करना, दिखाऊ मिताई अथवा प्यार।

प्रा० मुँहपरगर्महोना बोल० बड़े आदमी के अथवा अपने अफ़सर के साम्हने बे अदबी अथवा ढिठाई से बोलना।

प्रा० मुँहपरलाना बोल० कहना, जताना।

प्रा० मुँहपरहवाई उड़ना बोल० मुँह का रङ्ग बदलजाना।

प्रा० मुँहपसारना बोल० अचंभे में होके मुँह फाड़ना, जमुहाना।

प्रा० मुँहफेरना बोल० किसी काम के करने से रुक जाना।

प्रा० मुँहफैलाना बोल० घमंडकरना, २ बहुत चाहना, ३ जमुहाना, जमुहाई लेना।

प्रा० मुँहबन्दकरना बोल० किसी को चुप करना, जीभ पकड़ना।

प्रा० मुँहबनाना बोल० मुँह थुथाना, भौं टेढ़ी करना, त्यौरी चढ़ाना।

प्रा० मुँहबना बोल० मुँह खोलना, मुँह फाड़ना, जमुहाना, जमुहाई लेना।

प्रा० मुँहबिगड़ना बोल० अप्रसन्न होना, नाराज़ होना, बुरा मानना, रिसाना, २ कोई कड़वी या बुरी चीज़ के खाने से मुँह का स्वाद बिगड़ जाना।

प्रा० मुँहबिगाड़ना बोल० भौं टेढ़ी करना, त्यौरी चढ़ाना, मुँह बनाना।

प्रा० मुँहबोला बोल० माना हुआ, किया हुआ, धर्म का, जैसे मुँह बोला भाई=धर्मका भाई, वह आदमी जिसको अपना भाई कर माने।

प्रा० मुँहभरी बोल० रिशवत, घूस, अकोर ।

प्रा० मुँहमाँगा बोल० जैसा चाहा वैसाही, जैसा मुँहसे माँगा वैसाही ।

प्रा० मुँहमारना बोल० चुप करना, जीभ पकड़ना, मुँह बन्दकरना, २ काटना ।

प्रा० मुँहमेंपानीआना या भर आना बोल० किसी चीज़ को बहुत चाहना, किसी चीज़के लिये मन बहुत ललचाना ।

प्रा० मुँहमोड़ना बोल० फिर जाना, चला जाना, किसी कामके करने से रुकजाना ।

प्रा० मुँहलगना बोल० मरिच आदि चरपरी चीज़ से मुँह जलना या चरपराना, २ हिल मिल जाना, मुसाहिब होना, पक्कादोस्त होना ।

प्रा० मुँहलगाना बोल० छोटे आदमीसे मेल करना, हिलाना, मुसाहिब बनाना ।

प्रा० मुँहलेके रहजाना बोल० शर्म से चुप होजाना ।

प्रा० मुँहसुकड़ना बोल० मुँहका रङ्ग बदलना ।

प्रा० मुँहसेफूलझड़ना बोल० गाली देना, धिक्कारना, झिड़कना ।

प्रा० मुकरना क्रि० स० न करना, इनकार करना, नटना ।

प्रा० मुकरी (मुकरना) स्त्री० एक तरह का छोटाछन्द जो ब्रजभाषा में बहुत आता है और उसमें चार पद होते हैं उसमें से पहले तीन पदों से ऐसा जानाजाता है कि बोलनेवाली स्त्री अपने प्रीतम की बात करती है पर चौथे पद में वह स्त्री अपनी सखी से पूछती है कि क्यों सखी 'सज्जन' हुआ उसपर वह सखी मुकरती है और किसी दूसरी चीज़ को बताती है जैसे

"वा बिन चित्त चहूँदिशि डोलै ।
चातक ज्यों पुनि पिय पिय बोलै ॥
प्रलय होय आवै नाहिं गेह ।
क्यों सखि सज्जन ना सखि मेह ॥"

सं० मुक्कु पु० मोक्ष, उत्सर्ग, छोड़ना ।

सं० मुकुट (मक् + उट, मकि= भूषण) पु० शिरोभूषण, ताज, कलँगी ।

सं० मुकुन्द (मुकु=मुक्ति को, मुकु में धातु मुच्=छुड़ाना, दा=देना) पु० मुक्तिदाता विष्णु भगवान् ।

सं० मुकुम् अव्य० निर्वाण, मोक्ष ।

सं० मुकुर (मुक् + उर, मकि=भूषण) पु० दर्पण, बकुलवृक्ष, मौलश्री, कुम्हारका डंडा, मल्लिकावृक्ष ।

सं० मुकुल पु० थोड़ी खिली कली ।

सं० मुकुलित मर्म० पु० कलियाना, कलिकायुक्त, पुष्पित ।

प्रा० मुक्का (सं० मुष्टिका) पु० घूंसा, धौल, चपेट ।

सं० **मुक्त** (मुच्=छोड़ना या छूटना) गु० छोड़ा हुआ, छूटा हुआ, २ जिस की मुक्ति हुई हो, ३ प्रसन्न, आनन्दित, रिहा, बरी, फ़राग़त पाया हुआ ।

प्रा० **मुक्तमाल** (सं० मुक्तामाला) पु० मोती की माला ।

सं० **मुक्तहस्त** गु० बड़ादानी, फ़य्याज़ ।

सं० **मुक्ता** (मुच्=छूटना या छोड़ना, जो सीपी से छूटता है) पु० मोती ।

प्रा० **मुक्ता** गु० बहुत व घना ।

सं० **मुक्ताफल** (मुक्ता + फल) पु० मोती ।

सं० **मुक्तावली** (मुक्ता + अवली) स्त्री० मोती की माला, मोती का हार, नाम एक पुस्तक का ।

प्रा० **मुक्ताहल** } (सं० मुक्ताफल)
मुकुताहल } पु० मोती ।

सं० **मुक्ति**[1] (मुच्=छूट जाना) स्त्री० छुटकारा, संसार के दुःख अथवा पाप से छूट जाना, मोक्ष, गति, उद्धार, त्राण ।

सं० **मुख** (खन्=खोदना जो ब्रह्मा का खोदा हुआ है) पु० मुँह, मुखड़ा, वदन, चिहरा, गु० पहला, प्रधान ।

प्रा० **मुखड़ा** (सं० मुख) पु० मुँह, वदन ।

सं० **मुखभूषण** (मुख=मुँह, भूषण =शोभा) पु० पान, बीड़ा ।

सं० **मुखर** (मुख=मुँह की बात, रा=लेना अर्थात् मुँह में बुरी बात, वाचाल, बहुत बोलनेवाला) गु० कडुवी बात बोलनेवाला, दुर्वचन बोलनेवाला, पु० प्रधान, मुखिया, २ शब्द, ३ काक, ४ शंख ।

सं० **मुखलांगल** (मुख=मुँह, लांगल=हर) पु० शूकर, सूअर ।

सं० **मुखवल्लभ** पु० दाडिम, अनार ।

प्रा० **मुखागर** (सं० मुखाग्र, मुख=मुँह, अग्र=अनी वा अगला भाग) पु० ज़बानी, मुँह से कहना, २ लगाम ।

प्रा० **मुखिया** (सं० मुख्य) गु० प्रधान, मुख्य, पहला ।

सं० **मुख्य** (मुख) गु० प्रधान, मुखिया, पहला, श्रेष्ठ ।

सं० **मुग्ध** (मुह्=अचेत होना) गु० मूर्ख, अज्ञानी, २ सुन्दर, मनोहर, कमसिन ।

सं० **मुग्धा** (मुग्ध) स्त्री० जवान और सुन्दर स्त्री, एक प्रकार की नायिका ।

सं० **मुचकुन्द** पु० सूर्यवंशी राजा, मान्धाता का बेटा, जिसको श्रीकृष्ण ने मुक्ति दी ।

प्रा० **मुजरा** पु० सलाम, राम राम,

---

[1] विषयाशामहापाशाद्योविमुक्तः सुदुस्त्यजात् । स एव कल्पते मुक्त्यै नान्यः षट्शास्त्रवेद्यपि ॥ १ ॥

प्रणाम, नमस्कार, राजपूताने में 'सलाम' या 'आदाब' की जगह छोटा बड़े को और बराबरी वाला बराबरीवाले को 'मुजरा' करते हैं, २ मिनहा करना, काटना, ३ वेश्या का गान।

सं० मुञ्ज (मुजि=शब्द करना) स्त्री० मूंज, कांसके छिलके जिसकी रस्सी बनती है।

प्रा० मुटाई भा० स्त्री० } (मोटा) मोटापन, स्थूलता।
मुटापा भा० पु० }

प्रा० मुट्ठी (सं० मुष्टि) स्त्री० मुक्की, बुक्का, बुकटा, मुक्का।

प्रा० मुठभेड़ बोल० साम्हना होना, मिलजाना।

प्रा० मुठिया (सं० मुष्टिका) स्त्री० मुट्ठीभर, हाथभर।

प्रा० मुड़ना क्रि० अ० पीछे हट जाना, २ झुकजाना, बलखाना, टेढ़ा होना।

प्रा० मुढ़ (सं० मुण्ड) पु० प्रधान, मुखिया, मुख्य।

सं० मुण्ड (मुडि=मुँड़ाना) पु० शिर, माथा, मस्तक, मूँड़, कपाल, २ एक राक्षस का नाम जिसको दुर्गाजीने मारा, त्र्यं० मुँड़ायाहुआ।

प्रा० मुण्डखई स्त्री० बकवाद करना, शिरखाना, बेफ़ायदा बकना।

सं० मुण्डन (मुडि=मुँड़ाना) पु० मुँड़ाना, बाल बनवाना, २ हिन्दुओं में एक रीति है कि पहलेही पहल किसी देवता के साम्हने लड़के के बाल कतराते हैं उसको मुण्डन या मुण्डना कहते हैं।

सं० मुण्डक (मुण्ड्+अक) क० पु० नापित, नाई, हज्जाम।

सं० मुण्डमाला (मुण्ड+माला) स्त्री० आदमियों के शिरोंकी माला।

सं० मुण्डित (मुडि=मुँड़ाना) त्र्यं० पु० मुँड़ा हुआ, भद्र।

सं० मुण्डी क० पु० नापित, नाई, हज्जाम, २ संन्यासी।

प्रा० मुण्डिया (सं० मुण्ड) पु० शिर, माथा, मस्तक।

सं० मुद् } (मुद्=प्रसन्न होना) भा० स्त्री० प्रसन्नता, खुशी, हर्ष, आनन्द, सुख।
मुदा }

सं० मुदित (मुद्=प्रसन्न होना) क० पु० प्रसन्न, हर्षित, आनन्दित, खुश।

सं० मुदिर (मुद्+इर) क० पु० कामुक, कामी, २ मेघ।

सं० मुदी स्त्री० चन्द्रिका, ज्योत्स्ना, प्रीति, हर्ष।

सं० मुद्ग पु० मूंगअन्न, क़नात, तम्बू, झूल, परदा, ग़िलाफ़।

सं० मुद्गर } (मुद्=खुशी को, गॄ=निकालना) पु० एक बहुत भारी पत्थर जिसके बीच में पकड़ने को कटाहुआ क़बज़ा होता है
प्रा० मुगदर }

जिसको मल्ल और पहलवान हाथ से पकड़के ऊँचा उठाते हैं, २ बेले का वृक्ष ।

सं० मुद्रा (मुद्=प्रसन्न होना) स्त्री० रुपया, अशर्फी आदि, २ छाप, मोहर, ३ अँगूठी, छल्ला, ४ योगियों के कानों के कुण्डल, ५ संध्या पूजा में अंगुलियों को आपस में मिलाना जैसे धेनुमुद्रा, योनिमुद्रा आदि, ६ टकसाल ।

सं० मुद्रिका (मुद्रा) स्त्री० ऐसी अँगूठी जिसपर अपना नाम खुदा हो ।

सं० मुद्रित (मुद्रा) कर्म० पु० छापा हुआ, छापा गया, २ मोहर लगा हुआ, ३ मुँदा हुआ, ४ अनखिला, नहीं खिला हुआ ।

सं० मुधा (मुह्=अज्ञानी होना वा अचेत होना) क्रि० वि० झूठ, बेफ़ायदह, वृथा, व्यर्थ, निरर्थक ।

सं० मुनि (मन्=जानना) पु० दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः । वीतरागभयक्रोधः स्थिरधीर्मुनिरुच्यते(अर्थ) दुखसुख में एकसा रहै राग भय और क्रोधरहित स्थिर बुद्धि मुनि कहाताहै ऋषि, तपस्वी, तपी, ज्ञानी, सात की संख्या ।

प्रा० मुनिघरनी (सं० मुनिगृहिणी) स्त्री० मुनि की स्त्री ।

प्रा० मुनिन्द (सं० मुनीन्द्र) पु० बड़ा ऋषि, श्रेष्ठ मुनि, मुनीश, ऋषिराज ।

सं० मुनिपट पु० वल्कल, भोजपत्र ।

सं० मुनिपुंगव (मुनि=ऋषि, पुंगव=श्रेष्ठ) पु० मुनियों में श्रेष्ठ, मुनिवर, मुनिनायक ।

सं० मुनिराज }
प्रा० मुनिराय } (मुनि + राजा) पु० प्रधान ऋषि, मुनीश ।

प्रा० मुनिन्दा }
सं० मुनीन्द्र }
मुनीश } (मुनि = ऋषि, इन्द्र वा ईश=स्वामी) पु० मुनिवर, ऋषिराज, मुनिन्द, बड़ा ऋषि ।

प्रा० मुन्दना (सं० मुद्रण) क्रि० अ० बन्द होना, मिचना, ढकना ।

सं० मुन्यन्न (मुनि + अन्न) पु० नीवार, तिन्नी का चावल ।

सं० मुमुक्षु क० पु० मुक्ति इच्छुक, मुक्ति चाहनेवाला ।

सं० मुमूर्षु क० पु० मृतप्राय, आसन्नमृत्यु, मरणाशंकी, क़रीबुलमर्ग ।

सं० मुर (मुर्=घेरना) पु० एक राक्षस का नाम जिसके पाँच शिर थे उसको श्रीकृष्ण ने मारा ।

प्रा० मुरई (सं० मूल) स्त्री० मूली ।

प्रा० मुरकी स्त्री० कान का एक गहना ।

प्रा० मुरचंग स्त्री० एक तरह का बाजा ।

प्रा० मुरझाना (सं० मूर्छन,

मूर्च्छ=मुरझाना) क्रि० अ० सूख जाना, कुम्हिलाना ।

सं० मुरली (मुर्=घेरना, और ला=लेना) स्त्री० वंशी, बाँसुरी ।

सं० मुरलीधर (मुरली=वंशी, धर =रखनेवाला, धृ=रखना) क० पु० श्रीकृष्ण, वंशीधर ।

सं० मुरारि (मुर + अरि) पु० विष्णु, श्रीकृष्ण ।

प्रा० मुर्रा पु० छछूंदर, पटाखा ।

प्रा० मुलतानी स्त्री० एक रागिनी का नाम, गु० मुलतान की (जैसे मुलतानी मिट्टी) ।

प्रा० मुलहट्ठी (मूल) स्त्री० जेठी-मधु ।

प्रा० मुलाई (मुलाना) स्त्री० अँकाव, कूत, निरख़ ।

प्रा० मुलाना (सं० मूल्य) क्रि० स० मोल करना, भाव ठहराना, आँकना ।

प्रा०मुश्कैंबाँधना } बोल०हाथपीठ
मुश्कैंचढ़ाना } पीछे बाँधना,
जकड़ना ।

सं० मुष्क पु० वृषण, अण्डकोश, फ़ोता, २ चोर, ३ समूह, ४ कस्तूरी, ५ स्थूल, मोटा ।

सं० मुष्ट र्म्म० पु० हृत, चोरित, चोरी, चौरकर्म्म ।

सं० मुष्टि (मुष्=लेना, या मारना जिससे) स्त्री० मुट्ठी, मुक्की, मुठी ।

प्रा० मुसकान (मुसकाना) स्त्री० मुसकुराहट, मुसकुराई, धीरे धीरे हँसना ।

प्रा० मुसकाना क्रि० अ० मुसकुराना, धीरे धीरे हँसना ।

सं० मुसल } (मुस्=टुकड़े २ करना)
मूसल } पु० चाँवल आदि
नाज कूटने का सोंटा ।

अ० मुसलमान पु० मुहम्मद का मत माननेवाला ।

सं० मुसली क० पु० बलभद्र ।

फ़ा० मुस्ताजिरी पु० ठेका ।

अ० मुहल्ला नगरशाखा, शहरका हिस्सा ।

प्रा० मुहाना (मुँह) पु० नदी का मुँह ।

सं० मुहिर (मुह् + इर, मुह=मोहना) पु० कामदेव, मूर्ख, खल्वाट, बरमुड़ा, गंजा ।

सं० मुहुर्मुहुः अव्य० पुनः पुनः बारंबार ।

सं० मुहूर्त्त (मुहुर्=बारबार) पु० दोघड़ी, दिनरातका तीसवाँ भाग, ४८ मिनट का समय ।

प्रा० मूँग (सं० मुद्ग, मुद्=प्रसन्न होना) पु० एक तरहका अनाज जिसकी दाल बनती है ।

प्रा० मूँगा पु० एक चीज़ जो समुद्रमें मिलती है और जिसकी माला बनती है और उसको नवरत्नों में एक रत्न गिनते हैं जिसको संस्कृत में विद्रुम

और प्रवाल कहते हैं ।

प्रा० मूँगिया (मूँगा) पु० मूँगा के ऐसा रंग ।

प्रा० मूँछ स्त्री० होठ पर के बाल, मोछ ।

प्रा० मूँज (सं० मुञ्ज) स्त्री० एक तरहकी घास के छिलके जिनकी रस्सी बनती है ।

प्रा० मूँड़
मूड़ } (सं० मुण्ड) पु० माथा, शिर, मस्तक, कपाल ।

प्रा० मूँड़फिकारना बोल० शिर नंगा करना ।

प्रा० मूँड़ना (सं० मुण्डन) क्रि० स० बाल काटना या कतरना, हजामत करना, २ चेला करना, शिष्य बनाना, ३ फुसलाना, ठगना, उलटे उस्तरे से मूँड़ना, बोल० किसी को ठगना, छलना, धोखा देना ।

प्रा० मूँड़ी (सं० मुण्ड) स्त्री० शिर ।

प्रा० मूँदना (मुँदना) क्रि० स० बंद करना, मीचना, ढकना ।

प्रा० मूँदरी (सं० मुद्री वा मुद्रिका) स्त्री० अँगूठी, छल्ला, मुँदरी ।

सं० मूक (मू=बन्ध होना) गु० गूँगा जो नहीं बोल सक्ता हो, अवाक्, मौन, पु० मत्स्य, दैत्य, दीन, प्रेत ।

प्रा० मूकना (सं० मुच्=छोड़ना, वा मू=बध करना) क्रि० स० छोड़ना, त्यागना, जैसे रामायण में 'जीवन आश दशानन मूकी ।'

प्रा० मूकी (सं० मुष्टि) स्त्री० मुक्की, मुट्ठी ।

प्रा० मूछ स्त्री० मूँछ, मोंछ, होठ पर के बाल ।

प्रा० मूठ (सं०मुष्टि) स्त्री० बेंट, क़बज़ा, दस्ता, २ मुक्की, मुट्ठी, मुट्ठीभर ।

प्रा० मूठा (सं० मुष्टि) पु० भरमूठ, हाथभर, मुक्का, २ क़बज़ा ।

प्रा० मूठी (सं० मुष्टि) स्त्री० मुक्की, मुट्ठी, घूँसा, मूका, मुक्की ।

सं० मूढ़ (मुह्=अचेत होना वा अज्ञानी होना) कृ० पु० मूर्ख, अनपढ़, अज्ञानी ।

प्रा० मूत (सं० मूत्र, मूत्र्=मूतना) पु० पेशाब, लघुशङ्का ।

सं० मूत्रकृच्छ्र पु० अश्मरीरोग, पथरी रोग, मूत का बन्द होना ।

प्रा० मूर
मूरि } (सं० मूल) पु० जड़ ।

प्रा० मूरख (सं० मूर्ख) गु० अज्ञानी, अनाड़ी, मूढ़, बेवकूफ़ ।

प्रा० मूरत (सं० मूर्ति) स्त्री० पत्थर अथवा लकड़ी की बनी हुई सूरत, प्रतिमा, पुतली, २ आदमी, जैसे साधु या बैरागियों में बोला जाता है कि 'कितनी मूरत हैं' अर्थात् कितने आदमी हैं ।

सं० मूर्ख (मुह्=अज्ञानी होना) गु० अज्ञानी, अनाड़ी, मूर्ख, बेवकूफ़ ।

सं० मूर्च्छा (मुर्छ=अचेत होना)

भा० स्त्री० झँव, ग़श, बेहोशी, मोह, अचेत होना ।

सं० **मूर्च्छित** (मूर्च्छा) गु० अचेत, बेसुध, बेहोश, मोहित ।

सं० **मूर्त्ति** (मूर्च्छ्=मोहित होना जिसको देखने से) स्त्री० मूरत, सूरत, पुतली, प्रतिमा ।

सं० **मूर्द्धन्य** (मूर्द्धन्=शिर) गु० शिरका, शिरसम्बन्धी, (वे अक्षर) जो तालू से ऊपर जीभ लगाने से बोले जायँ, जैसे 'ऋ-ॠ-ट-ठ-ड-ढ-ण-र-ष' ।

सं० **मूर्द्धा** (मुर्व्=बाँधना या मुह्=अचेत होना—अर्थात् जिसमें चोट लगने से आदमी अचेत होजाता है) पु० शिर, मस्तक, माथा, शीश, कपाल ।

सं० **मूल** (मूल्=ठहराना या जमाना, रोपना या मू=बाँधना) पु० जड़, असल, २ वंश, कुल, सन्तान, ३ असल धन, पूँजी, ४ मूलग्रन्थ, किसी पुस्तक का सूत्र अथवा श्लोक (पर टीका नहीं), ५ उन्नीसवाँ नक्षत्र ।

सं० **मूलक** (मूल्=जमाना, रोपना) पु० मूली, मुरई ।

सं० **मूलकारिका** स्त्री० महानस, रसोई, चूल्हा, चूल्ही ।

सं० **मूलधन** पु० मूलद्रव्य, असल पूँजी ।

सं० **मूलभूत** पु० जड़, असलियत ।

सं० **मूल्य** (मूल) पु० मोल, क़ीमत, भाव, निरख़, दर, दाम ।

सं० **मूष**
मूषक
मूषिक } (मूष्=चुराना) क० पु० मूसा, चूहा, २ चौर ।

सं० **मूषिका** क० स्त्री० मुसरिया ।

प्रा० **मूसना** (सं० मुष्=चुराना) क्रि० स० चुराना, खोसना, लूटना ।

प्रा० **मूसला** (सं० मुस्=टुकड़े टुकड़े करना) पु० असल जड़ ।

प्रा० **मूसलाधारबरसना** बोल० बहुत ज़ोर से मेह बरसना ।

प्रा० **मूसा** (सं० मूषक) पु० चूहा ।

सं० **मृग** (मृग्=खोजना) पु० पशुमात्र, सब चौपाये जानवर, २ हरिण, कुरंग, ३ हाथी, ४ पाँचवाँ नक्षत्र, ५ खोजना ।

प्रा० **मृगछाला** (मृग=हरिण, छाला =चमड़ा) स्त्री० हरिण का चमड़ा, हरिण की खाल ।

सं० **मृगणा** भा० स्त्री० अपहृत द्रव्य का अन्वेषण, जातीरही द्रव्य का खोजना, पता लगाना ।

सं० **मृगतृषा**
मृगतृष्णा
मृगतृष्णिका } (मृग=पशु, तृषा व तृष्णा और तृष्णिका=प्यास) स्त्री० एक तरह की भाफ़ जो रेत के मैदानों में बालू रेत के कणों पर पड़ती है तब दूर से पानी के

ऐसी जानी जाती है । अथवा रेतले देशों में बालू के कणों पर सूर्य की किरण के पड़ने से दूर से पानी ऐसी दिखाई देती है तब प्यासे हरिण उस ओर पानी के लिये जाते हैं पर पानी न पाकर उलटे फिर आते हैं इसलिये ऐसा नाम पड़ा, आबसुराव ।

सं० **मृगनयनी** (मृग=हरिण, नयन =आँख) गु० स्त्री० वह स्त्री जिस की आँखें हरिणी कीसी हों, सुन्दर स्त्री, रूपवती ।

सं० **मृगनाभि** (मृग=हरिण,नाभि= नाभ में पैदा हुई चीज) स्त्री० कस्तूरी, मृगमद ।

सं० **मृगपति** (मृग + पति) पु० पशुओं का राजा, सिंह, शेर ।

सं० **मृगमद** (मृग=हरिण, मद= घमंड, अर्थात् जिससे हरिण को घमंड रहता है) पु० कस्तूरी ।

सं० **मृगया** (मृग=खोजने को, या =जाना) स्त्री० शिकार, अहेर ।

सं० **मृगयु** क० पु० व्याध, शिकारी।

सं० **मृगराज** (मृग + राजा) पु० पशुओं का राजा, सिंह, मृगपति ।

सं० **मृगलोचनी** (मृग=हरिण, लोचन=आँख) गु० स्त्री० वह स्त्री जिसकी आँखें हरिण की सी हों, मृगनयनी ।

सं० **मृगशिरा** (मृग=हरिण, शिरस्=शिर अर्थात् जिसका आकार हरिण के शिर ऐसा है) पु० एक नक्षत्र का नाम ।

सं० **मृगाङ्क** (मृग=हरिण, अङ्क= चिह्न, अर्थात् जिसमें हरिण के ऐसा चिह्न हो) पु०चाँद, चन्द्रमा।

सं० **मृगित** (मृग+इत, मृग=खोजना) कर्म० पु० अन्वेषित, दर्शित ।

सं० **मृगी** (मृग) स्त्री० हरिणी ।

सं० **मृगेन्द्र** (मृग + इन्द्र) पु० पशुओं का राजा, सिंह, मृगपति ।

सं० **मृग्य** कर्म० पु० अन्वेषणीय, दर्शनीय या ढूंढने लायक़ ।

सं० **मृजा** (मृज्=शुद्ध करना, माँजना) भा० स्त्री० मार्जन,माँजना ।

सं० **मृड़** (मृड़=प्रसन्न करना) पु० शिव, स्त्री० मृड़ानी, पार्वती ।

सं० **मृण** (मृण्=मारना) पु० क्लेश, शोक, २ मिट्टी, गु० क्लेशद ।

सं० **मृणाल** (मृण्=नाश करना) पु० कमलनाल, कमल की जड़ व भसीड़ा ।

सं० **मृत** (मृ=मरना) कर्म० पु० मरा हुआ, मुआ, मरा, मुर्दार, पु० मरण, मरना, मौत ।

सं० **मृतक** (मृ=मरना) क०पु०मुर्दा, मरा, लोथ, मरा हुआ शरीर ।

सं० **मृतसंजीवनी** स्त्री० विद्याभेद, औषधभेद ।

सं० **मृत्तिका** (मृद्=चूर चूर करना

वा मलना) स्त्री० मिट्टी, मट्टी ।

सं० मृत्यु (मृ=मरना) स्त्री० मौत, मरण, काल, २ यम, जम, क़ज़ा ।

सं० मृत्युञ्जय (मृत्यु=मौत को, जय=जीतनेवाला, जि=जीतना) पु० शिव, महादेव ।

सं० मृत्युनाशक क० पु० अमृत, पारा धातु का रस ।

सं० मृत्युपुष्प पु० इक्षु, ऊँख, गन्ना फूलने से ख़राब जाता है ।

सं० मृत्सा स्त्री० प्रशस्तमृत्तिका,
मृत्स्ना श्रेष्ठ मिट्टी, २ तुम्बी, लौकी ।

सं० मृदङ्ग (मृद्=पीटना) पु० स्त्री० ढोलक, तबलक, एक तरह का बाजा, पटह ।

सं० मृदु (मृदु=मलना) गु० कोमल, नर्म, नम्र, मुलायम ।

सं० मृदुता (मृदु) भा०स्त्री०कोमलता, नरमाई, मुलायमियत ।

सं० मृदुल (मृद्=मलना) गु० कोमल, नर्म, नम्र ।

सं० मृषा (मृष्=सहना) क्रि० वि० झूठ, मिथ्या, वृथा, झूठ मूठ, बेफ़ायदह ।

सं० मृष्ट शोभित, निर्मल, साफ़ ।

प्रा० मेंड स्त्री० बाँध, आड़, घेरा, पुस्ता ।

प्रा० मेंडक (सं० मण्डूक) पु० दादुर, बेंग ।

प्रा० मेंडुकी को जुकाम होना बोल० यह बोलचाल छोटे और नीचे आदमी का घमंड जतलाने के लिये बोला जाता है ।

प्रा० मेंढ़ा (सं०मेण्ढ वा मेढ्र, मिह्=
मेढ़ा सींचना)पु०भेड़ा, मेष।

प्रा० मेंह (सं० मेघ) पु० वर्षा,
मेह पानी, झड़ी, वृष्टि, बरसात ।

सं० मेकलकन्यका (मेकल=एक
मेकलसुता पहाड़, कन्यका वा सुता=बेटी) स्त्री० नर्मदा नदी ।

सं० मेखला (मि=फेंकना) स्त्री० क्षुद्रघण्टिका, करधनी, २ जनेऊ, ३ तलवार का परतला, ४ पहाड़ का उतार या ढाल, ५ नर्मदा नदी।

सं० मेघ (मिह्=सींचना) पु० बादल, घन, २ एक राक्षस का नाम, ३ एक राग का नाम।

सं० मेघध्वनि (मेघ+ध्वनि) स्त्री० बादलों का शब्द, गर्ज, गाज, बादलों का सा शब्द ।

सं० मेघनाद (मेघ+नाद, अर्थात् जिसका शब्द बादल कासा हो) पु० रावण का बेटा, इन्द्रजित्, २ बादलों का शब्द, ३ पलाश का पेड़, ४ वरुणदेवता ।

प्रा० मेघपति (मेघ+पति) पु० बादलों का राजा, इन्द्र ।

० मेघबरण (सं० मेघवर्ण, मेघ =बादल, वर्ण=रंग) गु० जिस का रंग बादलों कासा हो ।

० मेघमाला (मेघ + माला) स्त्री० बादलों का समूह ।

सं० मेचक (मेच्=पाखण्ड करना) गु० काला, श्याम, पु० श्यामवर्ण, कालारंग, २मेघ, ३सुरमा, अञ्जन, ४ धुआँ, ५ अँधेरा, अन्धकार ।

प्रा० मेचकताई (सं० मेचकता) भा० स्त्री० कालापन, कलास, श्यामता ।

सं० मेट पु० गर्व, उन्मत्तता ।

अं० मेट पु० कुलियोंका सर्दार ।

प्रा० मेटना (मिटना) क्रि० स० मिटा डालना; धो डालना, छील डालना, उड़ा देना, मलमेटकरना, नष्ट करना, सत्यानाश करना, लोप करना, काट डालना ।

अं० मेट्रीक्युलेशन पु० इन्ट्रन्स का इम्तिहान ।

सं० मेढ़ (मिह्=सींचना) पु० मेघ, २ बकरा, भेड़ा, ३ लिङ्ग ।

सं० मेथी (मेथ्=काटना) स्त्री० एक सागका नाम ।

प्रा० मेद (सं० मेदस्, मेद=मारना) स्त्री० गूदा, मज्जा, वसा, चर्बी, २ एक बीमारी जिसमें गले का अथवा और किसी जगह का मांस बहुत मोटा होकर लटक जाता है या एक गाठ सी होजाती है ।

सं० मेदिनी (मेदस्=मेद, अर्थात् जो मधु-कैटभ के मेद से बनी हुईहै इसीसे इसका नाम 'मेदिनी' हुआ) स्त्री० धरती, पृथ्वी, भूमि, ज़मीन ।

सं० मेदुर (मिद् + उर) गु० बहुत स्निग्ध, २ सान्द्र, सघन, निबिड़, घना, आच्छन्न, ढपा हुआ, ३ शीतल ।

सं० मेध (मेध्=मारना) पु० यज्ञ, बलिदान ।

सं० मेधा (मेध्=समझना) स्त्री० धारणावती बुद्धि, समझ, बूझ ।

सं० मेधावी (मेधा) पु० बुद्धिमान्, पण्डित, निपुण ।

सं० मेध्य गु० पवित्र, पूत, पु० २ बकरा, ३ खैर, ४ जौ, ५ हल्दी, ६ गोरोचन ।

प्रा० मेमना पु० बकरी का बच्चा ।

अं० मेमोरियल गु० याददाश्त, अर्ज़दाश्त, स्मारक ।

सं० मेरु (मि=फेंकना, अर्थात् प्रकाश को फैलाना) पु० सुमेरु पहाड़ जो हिन्दुओं के मत के अनुसार धरती के बीच में है ।

सं० मेल (मिल्=मिलना) पु० मिलाप, एका, मिलना, संयोग, सम्बन्ध ।

सं० मेलक क० पु० मेलकर्त्ता ।

सं० मेला (मिल्=मिलना) पु०

किसी जगह पर बहुत से आदमियों का इकट्ठा होना ।

प्रा० मेलाठेला बोल० बहुतसे आदमियों का इकट्ठा होना, भीड़ भाड़, रौला ।

सं० मेली (मेल) क० पु० मिलापी, साथी, साक्षी, २ डालदी, पहराई ।

प्रा० मेवाती पु० मेवात का रहने वाला ।

सं० मेष (मिष्=सींचना) पु० मेढ़ा, २ पहली राशि ।

फ़ा० मेहतर पु० भंगी, झाड़ूकश, गु० बुज़ुर्ग ।

फ़ा० मेहतरानी स्त्री० भंगन, २ भठियारी ।

सं० मेहन (मिह्+अन, मिह्=सींचना) भा० पु० लिङ्ग, शिश्न, मूत्रेन्द्रिय, २ वीर्यपात, मनीका गिर जाना, पेशाब करना ।

प्रा० मेहना पु० ठठोली, ताना ।

प्रा० मेहनामारना बोल० ताना देना, बोल बोलना ।

प्रा० मेहरिया मनहरिया ।

प्रा० मैका (मायका) पु० मा का घर, नहिहर, पीहर ।

सं० मैत्र पु० मित्रता, २ अनुराधा नक्षत्र, ३ शौचक्रिया, गु० सफ़ाई ।

सं० मैत्री (मित्र) स्त्री० मित्राई, दोस्ती, प्यार, स्नेह ।

सं० मैथिली (मिथिला) स्त्री० तिरहुत के राजा जनक की बेटी, सीता, जानकी ।

सं० मैथुन (मिथुन=जोड़ा) पु० स्त्री पुरुष का मिलाप, रति, संगम, स्त्रीसंग, हमाग़ोशी ।

प्रा० मैना स्त्री० एक पखेरू का नाम, शारिका, २ पार्वती की माता ।

सं० मैनाक (मेनका=हिमालय पहाड़ की स्त्री) पु० हिमालय पहाड़ का बेटा, एक पहाड़ का नाम जो इन्द्र के डर से समुद्र में जारहा था (इसकी कथा रामायण में है)।

प्रा० मैया (सं० माता) स्त्री० मा, माई, महतारी, माता ।

प्रा० मैल (सं० मल) पु० मल, झाग, गाज, २ मुर्चा ।

प्रा० मैला (सं० मलिन) गु० गँदला, गंदा, अशुद्ध, अपवित्र, ख़राब ।

प्रा० मो सर्वना० मुझको, मुझे ।

सं० मोक्ष (मोक्ष्=छूटजाना या मुक्तिपाना) स्त्री० मुक्ति, छुटकारा, संसार के दुःख से अथवा पापसे छूटजाना ।

प्रा० मोखा (मुख=मुँह) पु० एक छोटा छेद जिसकी राह से धुआँ निकलता है और रोशनी और हवा आती है ।

प्रा० मोगरा (सं० मुद्गर, मुद्=खुशी, गॄ=निकालना) पु० एकतरह का फूल, नीलोफर, कुमोदनी ।

प्रा० मोगरी (सं० मुद्गर) स्त्री० एक लकड़ी की बनी हुई भारी चीज़ जिसको कसरत करनेवाला उठाता है, २ छत या कपड़ा कूटने की लकड़ी ।

सं० मोघ (मुह्=अचेत होना) गु० वृथा, बेफ़ायदा, निष्फल, झूठ ।

प्रा० मोच स्त्री० लचक, कचक, मचक ।

सं० मोचन (मुच्=छोड़ना) भा० पु० छुटकारा, छुड़ाना, उद्धार, मुक्ति, क० पु० छुड़ानेवाला ।

प्रा० मोचना (सं० मोचन) क्रि० स० छोड़ना, त्यागना, २ आँसू डालना ।

प्रा० मोची पु० जूता बनानेवाला, चमार ।

प्रा० मोट
मोठ } स्त्री० गठरी, बस्ता, मोटरी, पुलिंदा, गट्ठा, बोझा, २ जोड़, कुलजमा, ३ पानी निकालने का चमड़े का डोल ।

प्रा० मोटा गु० स्थूल, पुष्ट, जिसके शरीर में बहुत मांस हो, भारी, बड़ा, २ गाढ़ा ।

प्रा० मोटिया पु० बोझा ढोनेवाला, कुली ।

प्रा० मोठ पु० एकतरहका अनाज जिसकी दाल बनती है, घोड़ोंकादाना ।

प्रा० मोतिया पु० एक फूलका नाम ।

प्रा० मोतियाबिन्द (सं० मुक्ताबिन्दु) पु० आँख की एक बीमारी जिसके होने से दिखाई नहीं देता ।

प्रा० मोती (सं० मौक्तिक) पु० एक रत्न जो समुद्र में सीपी के मुँह में पैदा होता है ।

प्रा० मोतीकीसी आब उतरना । बोल० बेइज़्ज़त होना, किसी का अपमान होना, अनादर होना ।

प्रा० मोतीकूटकर भरने बोल० खूब चमकीला होना, (यह मुहावरा आँख के लिये बोला जाता है) ।

प्रा० मोतीपिरोने बोल० माला गूँथना, २ मिठास के साथ बोलना, ३ रोना ।

प्रा० मोतीचूर पु० एक तरह की मिठाई ।

सं० मोद (मुद्=प्रसन्न होना) पु० आनन्द, हर्ष, खुशी ।

सं० मोदक (मुद्=प्रसन्न होना) क० पु० आनन्द करनेवाला, २ एक प्रकार का लड्डू ।

सं० मोदी क० पु० बनियां, दूकानदार, बैपारी, महाजन, आनन्द करनेवाला ।

प्रा० मोर (सं० मयूर) पु० एक परवेरूका नाम ।

प्रा० मोरपंखी स्त्री० एक तरह की नाव, बजरा ।

प्रा० मोरमुकुट पु० मोर के ऐसा मुकुट, मोरपंख का मुकुट ।

प्रा० मोर
मोरा } सर्वना० मेरा ।

प्रा० **मोरचंग** स्त्री० एकबाजे का नाम।

प्रा० **मोरछल** पु० एक तरह का चँवर जो मोरके पंखों का बनता है।

प्रा० **मोरी** स्त्री० नाली, पनाली ।

प्रा० **मोल** (सं०मूल्य) पु०भाव, क़ीमत, दाम–मोल ठहराना, बोल० क़ीमत लगाना, निरख़ ठहराना, दाम ठहराना, मोल तोल, बोल० भाव, निरख़, क़ीमत–मोल बढ़ाना, बोल० क़ीमत चढ़ाना, भावबढ़ाना–मोल लेना, बोल०बिसाहना, ख़रीदना–बिन मोल की चेरी, बोल० बे मोल ली हुई दासी, (यह बोल० बहुतही अधीनी जतलाने के लिये बोला जाता है)।

सं० **मोह** (मुह्=अचेत या अज्ञानी होना) पु० मूर्च्छा, बेहोशी, ग़शी, २ अज्ञानता, अविद्या, बेवकूफ़ी, ३ प्यार, माया, दया, दुलार, लाड़, स्नेह, छोह ।

प्रा० **मोहमें आना** बोल० अपने मित्र अथवा अपनी प्यारी के अचानक मिलने से अचेत होजाना ।

प्रा० **मोहलेना** बोल०रिझाना, किसी का मन अपनी ओर खींच लेना, लुभाना, वश करना, मन्त्र फूंकना।

सं० **मोहन** (मुह्=मोहना) गु० मोहनेवाला, जिसके देखने से शरीर की सुधि न रहे, मनमाना, प्यारा, पु० श्रीकृष्ण का नाम, २ मोहना, वश करना ।

सं० **मोहनभोग** (मोहन=मनमाना, भोग=खाना) पु० शीरा, उत्तम भोजन ।

सं० **मोहनमाला** (मोहन+माला) स्त्री० एक तरह की माला जो सोने के दाने और मूँगे की बनती है।

प्रा० **मोहना** (सं० मोहन) क्रि० स० वशकरना, मन हरना, लुभाना, मन्त्र फूंकना, प्रसन्न करना ।

सं० **मोहनी** (मोहन) क० स्त्री० मन, हरनेवाली स्त्री, मोहनेवाली, रूपवती, मनोहर, सुन्दर ।

सं० **मोहमय** गु० मिथ्या व झूठा।

प्रा० **मोहि** सर्वना० मुझको, मुझे।

सं० **मोही** क० पु० मुग्ध, अवाच्य।

प्रा० **मौ** (सं० मधु) पु० शहद, मधु।

सं० **मौक्तिक** (मुक्ता) पु० मोती।

सं० **मौञ्जी** स्त्री० मूँज की करधनी, मेखला ।

प्रा० **मौड़** (सं० मौलि) पु० सिहरा, मुकुट, मौर जो दुलहा के शिर पर बाँधा जाता है ।

सं० **मौन** (मुनि) पु० चुप, चुप्पी, अवाक्, नहीं बोलना, स्मृति में लिखाहै कि (१ पाख़ाने जाते, २ पेशाब करते, ३ स्त्रीप्रसंग करते, ४ दँतवनकरते, ५ स्नानकरते, ६ खाना खाते) इन छः जगह मौन रहना चाहिये ।

सं० मौनी (मौन) पु० एकतरह के मुनि जो सदा चुप रहते हैं, ऋषि, योगी ।

प्रा० मौर पु० आम की मञ्जरी ।

प्रा० मौराना क्रि० अ० आम के मौर का खिलना ।

सं० मौर्वी स्त्री० ज्या, रोदा, धनुष की डोरी, चिल्ला ।

प्रा० मौलसरी स्त्री० एक तरह के खुशबूदार फूल के पेड़ का नाम ।

सं० मौलि (मूल) पु० किरीट, मुकुट, २ शिखा, चोटी, ३ शिर, ४ स्त्री० धरती, पृथ्वी ।

प्रा० मौसी स्त्री० मां की बहिन, (मौसी शब्द को देखो) ।

सं० म्लान क० पु० ग्लानियुक्त, उदासीन, लज्जित, मलीन, शुष्क, मुरझाया ।

सं० म्लानि (म्लै=उदास होना, वा मुरझाना) स्त्री० थकावट, थकान, २ मलिनता, मैलापन, ३ कुम्हलाना, मुरझाना, उदास होना ।

सं० म्लिष्ट गु० मलीन, ग्लानियुक्त, पु० अव्यक्तवचन, गद्गदवाक् ।

सं० म्लेच्छ (म्लेच्छ्=अशुद्ध वा बुरा बोलना या गँवारू बोली बोलना) पु० नीचजाति, वे लोग जिनकी बोली संस्कृत नहीं है और न वे हिन्दुओं के शास्त्र को मानते हैं, यह शब्द जंगलियों और दूसरी विलायत के लोगों के लिये बोला जाता है, २ पापी ।

य

सं० य (य=जाना) पु० हवा, २ यश, कीर्ति, ३ मेल, योग, ४ सवारी, ५ गति गु० जानेवाला ।

सं० यकृत् पु० उदररोग, तापतिल्ली, प्लीहा, पिलही रोग ।

सं० यक्ष (यक्ष्=पूजना) पु० गुह्यक देवता, कुबेर के नौकर ।

सं० यक्ष्मन् } क्षयीरोग, राजरोग, यक्ष्मा } तपेदिक़ ।

सं० यजन (यज्=पूजना) भा० पु० यज्ञ, पूजा ।

सं० यजमान (यज्=पूजना, या यज्ञ करना) क० पु० यज्ञ करने वाला, यजमान ।

सं० यजुः (यज्=पूजना) ण० पु० यजुर्वेद, दूसरा वेद ।

सं० यज्ञ (यज्=पूजना) पु० बलिदान, पूजा, होम, हवन, याग, २ विष्णु भगवान् ।

सं० यज्ञसूत्र (यज्ञ + सूत्र) पु० जनेऊ ।

सं० यज्ञोपवीत (यज्ञ + उपवीत) पु० जनेऊ ।

सं० यत् अव्य० जो, जितना ।

सं० यज्वा (यज्=पूजना) क० पु० विधान से यज्ञ करनेवाला ।

सं० यतः अव्य० क्योंकि, यस्मात् ।

प्रा० यतन (सं० यत्न) पु० यतन,

उपाय, तदबीर, हिकमत ।

सं० यति } (यत्=यतन करना
यती } मुक्ति के लिये) पु० संन्यासी, वैरागी, जैनियों का भिखारी ।

सं० यन्ता } क० पु० सारथी, सूत,
यन्तार } रथ हाँकनेवाला ।

सं० यत्न (यत्=यतन करना) पु० यतन, उपाय, उद्योग, कोशिश, मिहनत, सावधानी ।

सं० यन्त्रित कर्म० पु० बद्ध, क़ैद ।

सं० यत्र (यद्=जो) क्रि० वि० जहाँ, जिस जगह ।

सं० यथा (यद्=जो) क्रि० वि० जैसे, जिस प्रकार से, ज्यों, जिस रीति से, २ बराबर, तुल्य ।

सं० यथाकाम क्रि० वि० यथेच्छ, २ अभिलाषा से अधिक ।

सं० यथायोग्य (यथा=जैसा, योग्य=ठीक) क्रि० वि० जैसा चाहिये, जैसा ठीक है, जैसा उचित, यथोचित ।

सं० यथार्थ (यथा=जैसा, अर्थ=अभिप्राय, मतलब) गु० ठीक, सत्य, सच, क्रि० वि० ठीक ठीक, हक़ीक़तन्, जैसा चाहिये ।

सं० यथाशक्ति (यथा=जैसी या अनुसार, शक्ति=बल) क्रि० वि० जैसी सामर्थ्य हो, अपने बलके अनुसार, जितना हो सके, हत्तुल्इम्कान ।

सं० यथासाध्य क्रि० वि० इच्छापूर्वक, हत्तुल्इम्कान ।

सं० यथेच्छा } क्रि० वि० इच्छानु-
यथेच्छ } सार, दिलख़्वाह ।

सं० यथेच्छाचारिता स्त्री० इच्छानुसार, मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ ।

सं० यथेप्सित क्रि० वि० यथेच्छ, इच्छानुसार, मनचाहा, हस्बदिलख़्वाह ।

सं० यथोचित (यथा + उचित) क्रि० वि० जैसा चाहिये, यथायोग्य ।

प्रा० यदपि (सं० यद्यपि) समुच्च० जो भी, जो ।

सं० यदा (यद्=जो) क्रि० वि० जब, जिस समय ।

सं० यदि (यद्=जो) क्रि० वि० जो ।

सं० यदु पु० एक राजा का नाम जो राजा ययाति का बड़ा बेटा और श्रीकृष्ण का पुरुषा और चन्द्रवंशी राजाओं में पाँचवां राजा था ।

सं० यदुकुल (यदु + कुल) पु० यदु राजा का घराना, यदुवंश ।

सं० यदुनाथ } (यदु=यदुवंशियों
यदुपति } का नाथ या पति=मालिक) पु० श्रीकृष्ण ।

सं० यदुवंश (यदु + वंश) पु० यदुकुल, यदु राजा का घराना ।

सं० यदुवंशी (यदुवंश) पु० यदु के वंशके लोग, यादव ।

सं० यदृच्छा (यत् + ऋच्छ + आ) स्त्री० स्वातन्त्र्य, खुदराय ।

सं० यद्यपि (यदि=जो, अपि=भी) समुच्च० जोभी, यदपि ।

सं०यद्वा अव्य०पक्षान्तर बोधक,ज्यों।

सं० यन्त्र (यत्रि, या यम्=रोकना) औज़ार या हथियार, २ बाजा, ३ तन्त्रशास्त्र में अपने इष्ट देवता का चक्र,४टोटका,यन्त्र,मन्त्र५, ताला, क़ुफ़ल ।

सं० यन्त्रणा (यत्रि=रोकना या यम्=दण्डदेना) स्त्री०दुःख, पीड़ा, क्लेश ।

सं० यन्त्रस्थ गु० ज़ेरतबअ जो छप रहाहो, मुद्रित हो रहा ।

सं० यन्त्रिका (यत्रि=रोकना, बन्द करना) पु० ताला,क़ुफ़ल ।

सं० यन्त्रित (यत्रि=रोकना) कर्म० पु० रोका हुआ, बन्ध किया हुआ, मुक़ैयद ।

सं० यम (यम्=रोकना, दण्डदेना, वश करना या दबाना) पु० यमराज, धर्मराज, दक्षिणदिशा का दिक्पाल, काल, २ इन्द्रियों को रोकना, गु० जोड़ा ।

सं० यमक (यम्=मिलना) पु० जोड़ा, २ एक शब्दालंकार जहाँ एकही पद दो तीन बार आते हैं पर वहाँ उस पद का अर्थ हर एक जगह जुदा २ होता है ।

प्रा० यमगुफा (सं० यमगुहा) स्त्री० मौत का घर, काल की गुफा ।

सं० यमज (यम=जोड़ा, ज=पैदा) पु० जो दो लड़के एक साथ जन्मे हों, तौअम ।

सं० यमदग्नि पु० परशुराम जी का बाप ।

प्रा० यमदिया (सं० यमदीपक) पु० वह दीपक जो कार्त्तिकबदी १३ के दिन यम के नाम से जलाया जाता है ।

सं० यमदूत (यम + दूत) पु० यम के दूत ।

सं० यमधार (यम + धार) स्त्री० कटार, छुरा, तेग़ा, तलवार ।

सं० यमल (यम=जोड़ा,ला=लेना) पु० जोड़ा ।

सं० यमलार्जुन (यमल=जोड़ा, अर्जुन एक प्रकार का पेड़) पु० एक तरह के दो पेड़ जो वृन्दावन में थे कुबेर के दो लड़के जो वारुणी मदिरा को पीकर गङ्गा में वेश्याओं के साथ नग्नस्नान करते थे नारद के शाप से वृक्ष होगये थे कृष्ण जी महाराज ने उनको वृक्षत्व से मुक्त किया ।

सं० यमुना (यम) स्त्री० यमुना नदी जो यमराज की बहिन और सूर्य की बेटी है ।

सं० ययाति (य=हवा, या=जाना जो हवा की तरह सब जगह जासक्ता हो) पु० नहुष राजा का बेटा ।

सं० यव (यु=मिलना) पु० जौ, एक तरह का अनाज, २ वेग, तेज़ी ।

सं० यवन (यु=मिलना, वा ज़ु=उतावला होना) पु० पहले समय में यूनान या (आयोनिया) के रहने वालों को यवन कहते थे पर अब मुसलमान और फरंगी आदि सब विदेशियों को यवन कहते हैं, म्लेच्छ, मलेच्छ ।

सं० यवीयान् } गु० अतियुवा,
यविष्ठ } अतिशीघ्रगामी, तेज़रौ ।

सं० यश (यशस्, अश्=फैलना) पु० कीर्त्ति, नामवरी, नाम, ख्याति, शुहरत ।

सं० यशस्वी (यशस्) गु० नामी, नामवर, प्रतिष्ठित, मुअज़्ज़िज़ ।

सं० यशोदा (यशस्=यश, दा=देना) स्त्री० जसोदा शब्द को देखो ।

प्रा० यहाँ (सं० इह) क्रि० वि० इस जगह, इस ठौर, इधर ।

प्रा० यहाँ का यहीं बोल० ठीक इसी जगह ।

प्रा० या सर्वना० यह, २ इसका ।

सं० याग (यज्=पूजना) भा० पु० यज्ञ, होम, हवन, पूजा, बलिदान ।

सं० याचक (याच्=माँगना) क० पु० माँगनेवाला, मँगता, याचक, भिखारी ।

सं० याचना (याच्=माँगना) भा० स्त्री० भीख माँगना, चाहना, अभ्यर्थना, दरख़्वास्त करना ।

सं० याच्ञा भा० स्त्री० याचना, माँगना, दरख़्वास्त ।

सं० याचित याच्=(माँगना) कर्म० पु० माँगा हुआ, चाहता हुआ ।

सं० याजक (यज्= यज्ञ करना वा पूजना) पु० यज्ञ करानेवाला, पुजारी, पुरोहित ।

सं० याजन भा० पु० यज्ञकराना, पूजा कराना ।

सं० यात कर्म० पु० गत, गया ।

सं० यातना (यत्=दण्डदेना, दुःख देना) स्त्री० नरक का दुःख, पीड़ा, क्लेश, बड़ा भारी दुःख ।

सं० याता क० पु० जाने व चलने वाला ।

सं० यातु (या=चलना) पु० राक्षस, गु० चलनेवाला ।

सं० यातुधान (यातु=ऐसा, धा=रखना अर्थात् कहलाना) पु० राक्षस, निशाचर, दैत्य, असुर ।

सं० यात्रा, (या=जाना) स्त्री० यात्रा तीर्थ को जाना, २ सफ़र जाना, ज़ियारत, कूच, प्रस्थान, बिदा, ३ कोई पर्व अथवा उत्सव जिसमें देवता की मूर्त्ति को रथ

आदि में बैठाकर बाहर लेजाते हैं जैसे रथयात्रा आदि ।

सं० **यात्रिक** / **यात्री** } (यात्रा) क० पु० यात्रा करनेवाला, यात्री, ज़ियारती, तीर्थ करनेवाला।

सं० **यादव** (यदु) पु० यदुवंश के लोग, यदुवंशी, २ श्रीकृष्ण ।

सं० **यादवपति** (यादव + पति) पु० श्रीकृष्ण, यदुनाथ, यदुपति ।

सं० **यादृश** क्रि० वि० जैसा, जैसी, जिसके समान ।

सं० **यान** (या=जाना) ण० पु० वाहन, सवारी, असवारी जैसे हाथी, घोड़ा, रथ, पालकी आदि ।

सं० **याम** (यम्=बीतना, रोकना) पु० पहर, रात्रि दिनका अष्टमांश ।

सं० **यामिक** क० पु० पहरू, चौकीदार ।

सं० **यामिनी** (याम) स्त्री० रात, रात्री, रजनी, शब, निहार ।

सं० **यामिनीपति** (यामिनी + पति) पु० चाँद, चन्द्रमा, चन्द्र ।

सं० **यावज्जीवन** (यावत् + जीवन) क्रि० वि० जीने तक, जीने के अन्त तक ।

सं० **यावत्** (यत्=जो) क्रि० वि० जबतक, जबलग, २ जितना ।

सं० **यावनीभाषा** (यावनी=यवनों की, भाषा=बोली) स्त्री० यवनों की बोली ।

प्रा० **याहि** / **याही** } सर्वना० इसको, इसे ।

सं० **युक्त** (युज्=मिलना) क० पु० मिलाहुआ, जुड़ाहुआ, लगाहुआ, २ योग्य, उचित, ठीक ।

सं० **युक्ति** (युज्=मिलना) भा० स्त्री० मिलना, मेल, २ योग्यता, ३ चतुराई, गुण, रीति, हथौटी, लोकव्यवहार।

सं० **युग** (युज्=मिलना वा मिलाना) पु० जोड़ा, २ समय, युग—हिन्दू चार युग मानते हैं, (१ सत्ययुग १७२८००० बरसों का, २ त्रेता युग १२९६००० बरसों का, ३ द्वापर ८६४००० बरसों का, और ४ कलियुग ४३२००० बरसोंका)।

सं० **युगल** (युग=जोड़ा, ला=लेना) पु० जोड़ा, दो ।

सं० **युगान्त** (युग + अन्त) पु० युगका अन्त जिसमें सृष्टि का नाश होजाता है ।

सं० **युगपत्** गु० दो, दोनों या एकदा, एकसमय, एक साथ ।

सं० **युग्म** (युज्=मिलना वा मिलाना) पु० जोड़ा, युगल, दो ।

सं० **युत** (यु=मिलना वा मिलाना) गु० मिलाहुआ, युक्त, संयुक्त, शामिल, विशिष्ट,—जैसे श्रीयुत, धर्मयुत ।

सं० **युद्ध** / **युध्** } (युध्=लड़ना) पु० लड़ाई, संग्राम, विवाद,

जंग, कारज़ार ।

सं० युद्धनिदेश पु० पैग़ाम जंग, लड़ाई का संदेशा ।

सं० युद्धशय्या स्त्री० जंग की तैयारी, लड़ने को उद्यत होना ।

सं०युधान क०पु०संग्रामकारी,जंगी।

सं० युधिष्ठिर (युधि=लड़ाई में, स्थिर=ठहरनेवाला) पु० पाँच पाण्डवों में का बड़ा, कुन्ती और पाण्डु का बड़ा बेटा ।

अं० युनाइटेडस्टेट्स / युनाइटेडकिङ्गडम स्त्री० सम्मिलित राज्य, सल्तनत मुश्तरिका ।

सं० युवक / युवाक पु० तरुण, जवान, नवीन अवस्थावाला ।

सं० युवती (युवन, यु=मिलना) स्त्री० जवान स्त्री, यौवनवती, तरुणी, सोलह बरस से तीसबरस तक की स्त्री ।

सं० युवराज (युवन्=जवान, राजा) पु० राजाका बड़ा बेटा जो उसके पीछे राजा होता है, राजकुमार, राजाका वारिस, वली अहद ।

सं० युवा (युवन ,यु मिलना) पु० जवान, तरुण, सोलह बरस से अधिक उमरका ।

सं० युस्मद् सर्वना० त्वत् , तुम ।

प्रा० यूं / यों क्रि० वि० इसतरह से, ऐसे, योंहीं, बोल० इसी तरह से, ऐसेही, संयोग से, २ वृथा, बेफ़ायदह, बिनकारण, सहज में, आसानी से ।

सं० यूथ (यू=मिलना) पु० झुण्ड, समूह, जत्था ।

सं० यूथप (यूथ=समूह,पा=पालना) पु० सेनापति, सेनाका मालिक ।

प्रा० यूहा(सं०यूथ)पु०समूह,झुण्ड।

सं० यूप पु० स्तम्भ, खम्भा ।

सं० योग (युज्=मिलना) भा० पु० मेल, मिलाप, मिलाव, सम्बन्ध, लगन,संयोग,जोड़,२अच्छासमय, शुभ घड़ी, ३ समाधि,ध्यान,परमेश्वर में मनलगाना, तप, तपस्या ।

सं० योगनिद्रा (योग=ध्यान, निद्रा =नींद) स्त्री० विष्णु की नींद, महामाया, दुर्गा ।

सं० योगमाया (योग=ध्यान, माया =ईश्वरकी शक्ति) स्त्री० विष्णुकी माया, महामाया, कुदरत खुदाई ।

सं० योगरूढ / योगरूढि पु० जो शब्द दो शब्दों से बनाहो और सामान्य अर्थ को छोड़ विशेष अर्थ को बतावे जैसे पङ्कज, त्रिशूलपाणि ।

सं० योगिनी (युज्=मिलना, वा मिलाना) स्त्री० शक्ति, नारायणी, गौरी,शाकम्भरी,भीमा,चामुण्डा, पार्वती, भद्रकाली, रुद्राणी, दुर्गा आदि ६४ योगिनी प्रसिद्ध हैं, २ ज्योतिष में अच्छे बुरे को

जतलानेवाली ।

सं० **योगी** (योग) क०पु० ध्यानी, तपस्वी, संन्यासी ।

सं० **योगेश्वर** (योग=ध्यान वा तप, ईश्वर=स्वामी अर्थात् जिसके लिये योगी तपस्या करतेहैं) पु०परमेश्वर, ईश्वर, २बड़ा ऋषि, सिद्ध, योगीश, तपस्वी ।

सं० **योग्य** (युज्=मिलना वा मिलाना) गु० ठीक, उचित, चाहिये, उपयुक्त, संभव, २ निपुण, प्रवीण, लईक़, लायक़, चतुर, गुणी, ३ समर्थ ।

सं० **योग्यता** (योग्य) भा० स्त्री० लियाक़त, प्रवीणता, निपुणता, सामर्थ्य ।

सं० **योजक** (युज् + अक) क० पु० मिलानेवाला ।

सं० **योजन** (युज्=मिलना वा मिलाना) पु० चार कोस ।

सं० **योजना** (युज्=मिलना) भा० स्त्री० मिलाना, जोड़ना, मेल ।

सं० **योधन** भा० पु० अस्त्र ।

सं० **योद्धा** (युध्=लड़ना) क० पु० लड़ाका, शूरमा, सावंत, भट, वीर, बहादुर, लड़नेवाला ।

प्रा० **योधा** (सं० योध, युध्=लड़ना) पु० लड़ाका, वीर ।

सं० **योनि** (यु=मिलना) स्त्री०भग, पैदा होने की जगह, उत्पत्तिस्थान, जायतव्वल्लुद ।

सं० **योषा** | **योषित्** | **योषिता** (युष्=सेवना, जो पुरुषों से पोषण की जाती है) स्त्री० नारी, लुगाई, स्त्री, अबला, अंगना ।

सं० **यौगिक** (योग) गु० दो शब्दों से बना हुआ शब्द, प्रकृति और प्रत्यय के योगसे बना हुआ शब्द ।

सं० **यौतक** | **यौतुक** (युतक, यु=मिलना) पु० दहेज़, दैजा, ब्याह में बेटी का बाप अपनी बेटी को जो धन और कपड़ा आदि देता है ।

सं० **यौवनदशा** स्त्री०यौवनावस्था, जवानी की हालत ।

सं० **यौवन** (युवन्=जवान) भा० पु० जवानी, तरुणाई ।

सं० **यौवनवती** (यौवन=जवानी, वती=वाली) स्त्री० जवान स्त्री ।

र

सं० **र** (रा=देना या लेना) पु० आग, २ कामदेव की आग, कामाग्नि, ३ तीक्ष्ण, तेज़, तीखा, ४ वेग, ५ क्रोध ।

प्रा० **रई** स्त्री० दही मथने की लकड़ी, मथनी, बिलोनी ।

प्रा० **रँहट** | **रहट** पु० पानी निकालने की चर्खी ।

सं० **रक्त** (रञ्ज्=रँगना) पु० लोहू, रुधिर, शोणित, कुंकुम, केसर,

तांबा, गु० लाल ।

सं० **रक्तकन्द** पु० पलाण्ड, प्याज़, २ गाजर, ३ प्रवाल, मूँगा ।

प्रा० **रक्तकोढ़** (सं० रक्तकुष्ठ) पु० एक तरह का कोढ जिससे शरीर लाल होजाता है ।

सं० **रक्तघ्न** पु० लोहितक वृक्ष, लोध औषध, २ दूब ।

सं० **रक्तचन्दन** (रक्त+चन्दन) पु० लालचन्दन ।

सं० **रक्तचूर्ण** (रक्त+चूर्ण) पु० सिन्दूर ।

सं० **रक्तप** (पा=पीना) क० पु० राक्षस, खटमल, मच्छड़ ।

सं० **रक्तपा** (रक्त=लोहू, पा=पीना) स्त्री० जोंक, जलौका ।

सं० **रक्तपात** (रक्त=लोहू, पत्=गिरना) पु० लोहू का गिरना, हत्या, खून ।

सं० **रक्तबीज** (रक्त=लोहू, बीज=पैदा होना) पु० एक राक्षस का नाम जो शुम्भ निशुम्भ का सेनापति था जिसको दुर्गा ने मारा, २ (रक्त=लाल, बीज=दाना) दाड़िम, अनार ।

सं० **रक्षक** (रक्ष्=बचाना) क० पु० रक्षा करनेवाला, पालनेवाला, पालक, पोषक, स्वामी, मालिक, मुहाफ़िज़ ।

सं० **रक्षण** (रक्ष्=बचाना) भा० पु० रक्षा, पालन, पोषण, बचाव ।

सं० **रक्षस्** (रक्ष्=बचाना, जिससे होम की सामग्री को बचाना, या जिससे अपने को बचाना) पु० राक्षस, निशाचर, भूत ।

सं० **रक्षा** (रक्ष्=बचाना) स्त्री० बचाव, पालन, उद्धार, २ राख, ३ राखी ।

सं० **रक्षापेक्षक** (रक्षा+अपेक्षक) क० पु० द्वारपाल, डेवढ़ीदार, सिपाही ।

सं० **रक्षित** (रक्ष्=बचाना) कर्म० पु० रक्षा किया हुआ, बचाया हुआ, रक्खा हुआ ।

प्रा० **रखना** (सं० रक्षण) क्रि० स० धरना, लगाना, खड़ा करना, टिकाना, बिठलाना, २ पकड़ना, अधिकारी होना, मालिक होना, ३ बचाना, रक्षाकरना, ४ विचारना, सोचना ।

प्रा० **रखवाला** (रखना) क०पु० रखवाली करनेवाला, बचानेवाला, गड़रिया, चरवाहा ।

प्रा० **रखवाली** (रखना) भा०स्त्री० बचाव, रक्षा, ख़बरदारी ।

प्रा० **रखैया** (रखना) क० पु० रखनेवाला ।

प्रा० **रगड़** (रगड़ना) भा० स्त्री० घिसाव, संघर्ष, मलाव ।

प्रा० **रगड़ना** क्रि० स० मलना,

घिसना ।

प्रा० रगड़ा पु० झगड़ा, २ घिसाव ।

प्रा० रगड़ाझगड़ा बोल० लड़ाई, दंगा, बखेड़ा, फ़साद ।

प्रा० रगेदना क्रि० स० खदेड़ना, पीछा करना, भगादेना ।

सं० रघु (रघि वा लघि=जाना, जो धरती के अन्त तक अपनी जीत को फैलाता है) पु० एक सूर्यवंशी राजा का नाम जो दिलीप राजा का बेटा और श्रीरामचन्द्र का परदादा था, २ रघु का वंश ।

सं० रघुनन्दन (रघु=रघुवंशियों को, नन्दन=आनन्द देनेवाला) क० पु० श्रीरामचन्द्र ।

सं० रघुनाथ (रघु + नाथ) पु० श्रीरामचन्द्र ।

सं० रघुपति (रघु + पति) पु० श्रीरामचन्द्र ।

सं० रघुराज (रघु + राजा) पु० श्रीरामचन्द्र ।

सं० रघुवंश (रघु + वंश) पु० रघु राजा का कुल, २ कालीदास कवि का वनाया हुआ एक प्रसिद्ध काव्य जिसमें राजा दिलीप से लेकर राजा अग्निवर्ण तक का वर्णन किया है ।

सं० रघुवंशतिलक) (रघुवंश, रघु
रघुकुलतिलक) राजा के कुल में, तिलक=श्रेष्ठ) पु० १ राजा दशरथ, २ श्रीरामचन्द्र ।

सं० रघुवर (रघु=रघुवंशियों में, वर =श्रेष्ठ) पु० श्रीरामचन्द्र, रघुनाथ ।

सं० रङ्क (रक्=स्वाद लेना या पाना) गु० ग़रीब, कंगाल, दरिद्री, २ कृपण, लालची, लोभी ।

सं० रङ्ग (रञ्ज्=रँगना) पु० वर्ण, २ डौल, रीति, ढंग, ढब, ३ खेल, ख़ुशी, आनन्द, ४ (रगि=जाना वा पाना) राँगा धातु ।

प्रा० रंगउड़जाना बोल० रंग बदल जाना, डरना ।

प्रा० रंगउतरजाना बोल० पीला होजाना, फीका होना, २ शोच में होना, कुढ़ना, कलपना ।

प्रा० रंगकरना बोल० ख़ुशी करना, बिलसना, समय को आनन्द में बिताना ।

प्रा० रंग चढ़ना बोल० शराब के नशे में मगन होना ।

प्रा० रंगदेखना बोल० किसी चीज़ की हालत को या उसके फल अथवा अन्त या परिणाम को जानना ।

प्रा० रंगबरंग (सं० रङ्ग विरङ्ग) बोल० रंग रंग का, कई रंग का, चित्र विचित्र, तरहतरह का, भाँति भाँतिका ।

प्रा० रंगबिगड़ना बोल० किसी चीज़ की हालत बदलना ।

प्रा० रंगभंग बोल० आनन्द में बिगाड़ होना, खेल का बिगाड़, ख़ुशी

में शोच होजाना ।

प्रा० रंगमहल पु० भोग विलास करने का महल ।

प्रा० रंगमारना बोल० चौपड़ का खेल जीतना ।

प्रा० रंगरलियां स्त्री० व० ब० आनन्द, हर्ष, ख़ुशी, रंगरस, हँसी ख़ुशी, हुलास, भोगविलास ।

प्रा० रंगरस (सं० रङ्ग + रस) बोल० आनन्द, हर्ष, सुख, ख़ुशी ।

प्रा० रंगरातना बोल० ख़ूब गहरा प्यार होना ।

प्रा० रंगराता बोल० रंग में रँगा हुआ, प्रसन्न, आनन्दित ।

प्रा० रंगरूप (सं० रंग + रूप) बोल० चमक दमक, छवि, हुस्न, जमाल ।

प्रा० रंगलगाना बोल० रँगना, रंग चढ़ाना, २ झगड़ा उठाना, बखेड़ा मचाना ।

प्रा० रंगत (रङ्ग) स्त्री० रंग, वर्ण, शोभा, हुस्न ।

प्रा० रंगना (सं०रञ्जन) क्रि० स० रंग चढ़ाना, रंग देना ।

सं० रंगभूमि (रंग + भूमि) स्त्री० नाचघर, अखाड़ा, नाट्यशाला, रंगशाला, धनुर्यज्ञ की भूमि ।

प्रा० रंगवाई
रंगाई (रँगाना) स्त्री० रँगने की मजूरी ।

प्रा० रंगीला (रंग) गु० चटकीला, भड़कीला, रसीला, रसिया, रसिक, छैला ।

प्रा० रचना (सं० रचन, रच्=बनाना) क्रि० स० बनाना, नई बात निकालना, सिरजना, पैदा करना, तैयार करना, २ क्रि०अ० बनना, पैदा होना, तैयार होना ।

सं० रचक (रच् + अक) क० पु० बनानेवाला, मुसन्निफ़, उत्पादक ।

सं० रचना (रच्=बनाना) स्त्री० तसनीफ़, बनावट, सजावट, तैयारी, २ पैदा की हुई चीज़, ३ ग्रन्थ ।

सं० रचयिता क० पु० निर्म्माणक, रचनेवाला, मुसन्निफ़ ।

प्रा० रचाना (सं० रच्=बनाना, या रञ्ज्=रँगना) क्रि०स० करना, बनाना, २ मेहँदी से अथवा अलता आदि और किसी चीज़ से हाथ पैर रँगना, ३ ब्याह आदि शुभ काम को शुरूअ करना ।

सं० रचित (रच्=बनाना) र्म० पु० बनाया हुआ, सिरजा हुआ, पैदा किया हुआ, निर्मित ।

सं० रज
रजस् (रञ्ज्=रँगना) स्त्री० रेत, धूलि, २ पराग, फूलों की सुगन्धित धूलि, ३ स्त्रीका कँवल या फूल, ४ रजोगुण ।

सं० रजक (रञ्ज्=रँगना) क०पु० धोबी ।

सं० रजकी (रजक) स्त्री० धोबिन ।

सं० रजकण पु० धूलिकण।

सं० रजत (रञ्ज्=रँगना वा चमकना, या राज्=शोभना) पु० चाँदी, रूपा, २ हाथीदाँत, ३ हार, ४ सोना, गु० धौला, शुक्ल वर्ण, श्वेत, सफ़ेद।

सं० रजतद्युति पु० महावीर, गु० गौरवर्ण, श्वेतवर्ण।

सं० रजन भा० पु० रागोत्पादन, रँगना, रँगसाज़ी।

सं० रजनि (रञ्ज्=प्यार करना)
रजनी स्त्री० रात, रात्रि।

सं० रजनिकर (रजनी=रात, कृ
रजनीकर =करना) पु० चाँद, चन्द्रमा।

सं० रजनिचर (रजनी=रात,
रजनीचर चर्=चलना) पु० राक्षस, असुर, निशाचर, २ भूत, प्रेत, ३ चोर, ४ रातको फिरनेवाला।

सं० रजनीजल पु० तुषार, ओस, नीहार, कुहरा।

सं० रजनीमुख (रजनी=राति, मुख =मुँह) पु० साँझ, संध्या, प्रदोष, राति का प्रारम्भ, सफ़क़।

प्रा० रजवाड़ा (राजा) पु० राज, राजपूताना।

सं० रजस्वला (रजस्) स्त्री० वह स्त्री जो कपड़ों से हो, ऋतुमती।

प्रा० रजाई (सं० राजादेश, राज
रजायसु =राजा, आदेश=आज्ञा) स्त्री० राजा की आज्ञा, राजा का हुक्म।

सं० रजोगुण (रजस्+गुण) पु० दूसरा गुण जिससे मोह, क्रोध, प्यार, अहंकार आदि पैदा होते हैं।

सं० रजोग्राहि क०पु० वायु, वात, हवा।

सं० रज्जु (सृज्=पैदा होना या बनाया जाना) स्त्री० रस्सी, रास, डोरी, जेवरी।

सं० रञ्जक (रञ्ज्=प्यार करना वा रँगना) क०पु० प्यार करनेवाला, प्रीति करनेवाला, खुश करनेवाला, प्रसन्न करनेवाला, २ रँगनेवाला, चित्रकार, ३ पु० रंग।

सं० रञ्ज पु० रंजन, रँगना, रंगसाज़ी, रंग, राग।

सं० रञ्जन (रञ्ज्=प्यार करना वा रँगना) भा० पु० प्रसन्नता, प्यार, अनुराग, २ रँगना, रँगावट, चित्रकारी, ३ लालचन्दन, गु० प्रीति करनेवाला, प्रसन्न करनेवाला, खुश करनेवाला, हर्ष देनेवाला।

सं० रञ्जित (रञ्ज्=प्यार करना वा रँगना) कर्म० पु० प्रसन्न, प्यार किया हुआ, २ रँगा हुआ।

सं० रटन भा० पु० घोषणा, रटना, याद करना।

प्रा० रटना (सं० रटन, रट्=बोलना) क्रि०स० बोलना, कहना,

बराबर बोलना, दोहराना, तिहराना।

सं० रटित र्म्म० पु० घोषित, याद किया हुआ।

सं० रण (रण्=शब्द करना) पु० लड़ाई, युद्ध, जंग, संग्राम, ध्वनि, शब्द, पर्यटन, भ्रमण।

सं० रणभूमि (रण + भूमि) स्त्री० रणक्षेत्र, लड़ाई का खेत, लड़ाई का मैदान।

सं० रणित (रण्=शब्द करना) र्म्म० बजता हुआ, बजती हुई।

प्रा० रंडापा (राँड) भा० पु० बेवापन, बिधवापन।

सं० रत (रम्=खेलना) पु० मैथुन, स्त्रीप्रसंग, कामकेलि, र्म्म० लगा हुआ, तत्पर, आसक्त।

सं० रततालिन् पु० अध्यापक, उस्ताद, २ कामुक, भडुआ, परस्त्रीगामी।

सं० रतताली स्त्री० कुटनी, पुंश्चली।

प्रा० रतन पु० रत्नशब्द को देखो।

प्रा० रतनार (सं० रक्त) पु० लाल रंग, गु० लाल।

सं० रतहिण्डक पु० वेश्यापति, लम्पट, कामुक।

प्रा० रतालू (सं० रक्तालु) पु० एक तरकारी का नाम।

सं० रति (रम्=खेलना) स्त्री० कामदेव की स्त्री, २ प्यार, प्रेम, अनुराग, ३ मैथुन, सम्भोग, स्त्रीसंग, क्रीड़ा।

सं० रतिपति (रति + पति) पु० कामदेव।

प्रा० रती (सं० रति) स्त्री० कामदेव की स्त्री, २ भाग्य, भाग, क़िस्मत, नसीब।

प्रा० रतीचमकना बोल० बढ़ना, फलना फूलना, भाग्यवान् होना।

प्रा० रतीवन्त गु० भाग्यवान्, भालब्धी, अच्छी क़िस्मतवाला।

प्रा० रतौंधा (रत=रात, औंधा=अन्धा) पु० एक बीमारी जिसमें रात को नहीं दीखता है।

प्रा० रत्ती (सं० रक्तिका, रक्त) स्त्री० आठ जौ का तौल, २ लाल घुंगची।

सं० रत्न (रम्=खेलना, जिससे वा प्रसन्न होना, जिसको देख कर) पु० रतन, जवाहिर, मणि, बहुत मोल का पत्थर—रत्न नौ हैं- (१ हीरा, २ पन्ना, ३ नीलम, ४ माणिक्य, ५ लहसुनिया, ६ पुखराज, ७ गोमेद, ८ मोती, ९ मूँगा), २ आँख की पुतली।

सं० रत्नकन्दल पु० प्रवाल, मूँगा।

सं० रत्नगर्भ पु० समुद्र, कुबेर, परमेश्वर, स्त्री० पृथिवी।

सं० रत्नजटित (रत्न + जटित) र्म्म० पु० रत्नों से जड़ा हुआ।

सं० रत्नसानु पु० सुमेरु पर्वत।

सं० रत्नसिंहासन (रत्न + सिंहा-

सन) पु० रत्नों से जड़ा हुआ तख़्त ।

सं० रत्नसू (सू=उत्पन्न करना) स्त्री० मेदिनी, पृथिवी, ज़मीन ।

सं० रत्नाकर (रत्न=जवाहिर अथवा मोती, आकर=खानि) पु० समुद्र, २ रत्नों की खानि ।

सं० रत्नावली (रत्न+अवली) स्त्री० रत्नों की माला, रत्नमाला, २ एक नाटक ।

सं० रथ (रम्=खेलना, प्रसन्न होना) पु० एक तरह की चार पहियों की गाड़ी ।

सं० रथकार क० पु० रथ बनाने वाला, बढ़ई, सूत्रधार, वर्णसंकर, क्षत्रिय से वैश्यकन्या में उत्पन्न उस को 'माहिष्य' कहते हैं वैश्य से शूद्रकन्या में जन्मा उसे 'करण' कहते हैं माहिष्य से करण संज्ञावती कन्या में उत्पन्न पुत्र उसे 'रथकार' कहते हैं ।

सं० रथगर्भक क० पु० काँधे की सवारी, शिबिका, पालकी, डोली ।

सं० रथगुप्ति स्त्री० रथ का परदा, रथ का ओहार, पोशिश, परदा ।

सं० रथवान् पु० सारथी ।

सं० रथवाहक क० पु० सारथी, यन्तार ।

सं० रथाङ्ग (रथ+अंग) पु० पहिया, चक्र, चाका, २ चकवा पक्षी, चक्रवाक ।

सं० रथिक (रथ) क० पु० रथ का
रथी स्वामी, रथ पर चढ़ने वाला, रथपर चढ़ कर लड़नेवाला, जनाज़ा, ताबूत, मुर्दा की टिकटी ।

सं० रद (रद्=टुकड़े करना) पु०
रदन दाँत, दन्त, दशन, ३२ संख्या ।

सं० रदनी क० पु० हाथी ।

सं० रदच्छद (रद वा रदन=दाँत,
रदनच्छद छद्=ढकना) पु० होंठ, ओष्ठ, लब ।

सं० रदपट (रद=दाँत, पट=आड़) पु० होंठ, लब ।

प्रा० रद्दी (अ०रद्द) स्त्री० निकम्मे और पुराने काग़ज़ ।

प्रा० रनवास (रानीवास) पु०
रनिवास रानियों के रहने के महल ।

सं० रन्ति स्त्री० क्रीड़ा, प्रसन्नता, रमण, प्रीति ।

सं० रन्तिदेव पु० चन्द्रवंशी राजा, २ कुक्कुर, कुत्ता ।

प्रा० रन्धना (सं० रन्धन, रध्=पकना) क्रि० अ० पकना ।

सं रन्ध्र (रध्=नाश होना, या पूरा होना) पु० छेद, छिद्र, सूराख़, २ दोष, दूषण, ऐब ।

प्रा० रपटना क्रि० अ० फिसलना, खिसलना ।

प्रा० रबड़ी स्त्री०गाढ़ा दूध, खोवा ।

सं० रभस पु० हर्ष, वेग, तेज़ी, उत्सुकता ।

सं० रमक (रम्+अक, रम्=क्रीड़ा करना) क० पु० कामुकपति, परस्त्रीगामी, जार, गु०थोड़ा, कम ।

प्रा० रमचेरा
रामचेरा } पु० दास,गुलाम ।

सं० रमण (रम्=खेलना) भा० पु० खेल,क्रीड़ा,२मैथुन, भोगविलास, रति, ३ रमनेवाला, पति, प्रियतम, प्यारा, ४ कामदेव,५ जार,६ मनोहर, ७ गर्दभ, ८पटोल की जड़।

सं० रमणी (रम्=खेलना) स्त्री० सुन्दर और मनोहर स्त्री ।

प्रा० रमणीक (सं० रमणीय) गु० मनभावन, सुन्दर, सुहावना, दिलचस्प ।

सं० रमणीय (रम्=खेलना) कर्म० पु०सुन्दर,मनोहर,रम्य,दिलरुबा।

सं० रमति क० पु० नायक, पति घूमनेवाला, घूमता है ।

प्रा० रमना (सं० रमण) क्रि० अ० खेलना,क्रीड़ा करना, भोग करना, आनन्द करना, २ फिरना, घूमना, ३ पु० शिकार करने की जगह ।

सं० रमल (अ० रमल) पु० एक तरह का ज्योतिष शास्त्र ।

सं० रमा (रम्=खेलना) स्त्री० लक्ष्मी, विष्णुपत्नी, स्त्री, लुगाई ।

सं० रमापति (रमा + पति) पु० विष्णु, नारायण, भगवान् ।

सं० रम्भा (रभि=शब्द करना) स्त्री० एक अप्सरा का नाम, वेश्या, २ केला, कदली, ३ पार्वती, ४ बिलचा, खंता ।

सं० रम्य (रम्=खेलना) क० पु० सुन्दर, मनोहर, रमणीय ।

सं० रम्या स्त्री० रात्रि, सुन्दरी, पद्मिनी ।

सं० रम्र पु० प्रारम्भ, पूर्वभाग, अरुणोदय, शोभा ।

सं० रय (रय्=जाना) पु० वेग, प्रवाह, जल्दी, साहस ।

प्रा० ररना भा० पु० बोलना, शब्द करना ।

प्रा० रलना क्रि० अ० मिलना, २ पिसना, बुकनी होना ।

सं० रल्लक कम्बल, पक्ष्मकम्बल ।

सं० रव (रु=शब्द करना) पु०शब्द, ध्वनि, आवाज़, आहट ।

प्रा० रवा पु० सोने या चाँदी का छोटा छोटा दाना, २ बालू और मिसरी आदि का दाना, ३ गेहूँ की मैदा से छाना हुआ दाना ।

सं० रवि (रु=शब्द करना, अर्थात् स्तुति करना) पु० सूर्य ।

सं० रवितनया (रवि + तनया) स्त्री० यमुना नदी ।

सं० रविनन्दिनी (रवि + नन्दिनी)

स्त्री० यमुना नदी ।

सं० रविपुत्र पु० कर्ण, सुग्रीव ।

सं० रविमणि स्त्री० सूर्यकान्तमणि, सूर्य की मणि ।

सं० रविमण्डल (रवि + मण्डल) पु० सूर्यमण्डल, सूर्यलोक ।

सं० रविवार (रवि=सूर्य, वार=दिन) पु० एतवार, इतवार, आदित्यवार, सूर्य का दिन ।

सं० रशना (रश्=शब्द करना) स्त्री० स्त्रियों के पहनने की करधनी ।

सं० रश्मि (अश्=फैलाना वा रश्=शब्द करना) स्त्री० किरण, तेज, क्रान्ति, २ रास, घोड़े की बागडोर ।

सं० रस (रस्=स्वाद लेना, प्यार करना) पु० अर्क, किसी पौधे का दूध, सार, २ स्वाद, सवाद, मज़ा, चाट, रुचि, रस छः प्रकार के हैं १ मीठा, २ खट्टा, ३ खारा, ४ कड़ुवा, ५ तीता वा चरपरा, ६ कषैला) ३ साहित्य वा इल्म अदब में नौ रस हैं (१ शृङ्गार, २ हास्य, ३ करुणा, ४ रौद्र, ५ वीर, ६ भयानक, ७ बीभत्स, ८ अद्भुत, ९ शान्त वा वात्सल्य) ४ पारा, ५ मेल, मिलाप, आपस की प्रसन्नता, प्यार, ६ द्रवपदार्थ, बहने वाली चीज़ ।

भा० रसरस क्रि० वि० धीरे धीरे ।

सं० रसज्ञ (रस=स्वाद, ज्ञा=जानना) क० पु० रसिक, रसका जाननेवाला, भाव जाननेवाला, सार जानने वाला, पु० कवि, २ पति, ३ रसायनी ।

सं० रसज्ञा (रस=स्वाद, ज्ञा=जानना) स्त्री० जीभ ।

सं० रसन भा० पु० स्वाद, लज़्ज़त ।

सं० रसना (रस्=स्वाद लेना) स्त्री० जीभ, जिह्वा, रसज्ञा ।

सं० रसराज पु० पारा धातु ।

सं० रसा (रस) स्त्री० पृथ्वी, धरती, ज़मीन, २ जीभ ।

सं० रसातल (रसा=धरती, तल=नीचे) पु० पाताल, नीचे का सातवाँ लोक जहाँ नाग असुर दैत्य और राक्षस रहते हैं और शेषजी और राजा बलि आदि राज्य करते हैं ।

सं० रसायन (रस्=अर्क या पारा, अयन=राह वा जाना) पु० दो तीन चीज़ों को मिला कर एक चीज़ बनाने की अथवा दो तीन चीज़ोंको जुदा जुदा करने की त्रिया; कीमिया ।

सं० रसायनविद्या स्त्री० इल्म कीमिया, किमिस्ट्री ।

सं० रसाल (रस=स्वाद, आ=चारों ओर से, ला=लेना) पु० आम, २ पनस, ३ ऊख ।

सं० रसिक (रस) क० पु० रस जाननेवाला, रसीला, रसिया, रसज्ञ,

२ लम्पट, लुच्चा, ऐयाश।

प्रा० रसिया (सं० रसिक) गु० लुच्चा, लम्पट, विषयी, भोगी, ऐयाश।

प्रा० रसीला (रस) गु० रसभरा, सुस्वादु, मज़ेदार, २ विषयी, व्यसनी, भोगी, लम्पट।

सं० रसेन्द्र (रस + इन्द्र) पु० पारा धातु, रसराज।

सं० रसोत्पल (रस + उत्पल) पु० मुक्ताफल, मोती, २ पारसमणि, पारसपत्थर।

प्रा० रसोइया (रसोई) पु० रसोई बनानेवाला, खाना पकानेवाला।

प्रा० रसोई (सं० रसवती) वि० स्त्री० खाना बनाने की जगह, २ खाना, भोजन।

प्रा० रस्सी (सं० रश्मि) स्त्री० डोरी, जेवरी।

प्रा० रहकला पु० एक तरह की तोप, २ ताँगा, एक तरह की गाड़ी।

प्रा० रहडू पु० छोटी गाड़ी।

प्रा० रहन
रहनि (सं०रहण, रह्=जाना) स्त्री०चाल चलन, रीति।

सं० रंहस् पु० वेग, तेज़ी।

सं० रहस् पु० एकान्त, गोप्य, गुह्य, तत्त्व, अव्य० निर्ज्जन, जनरहित, एकान्त, तनहाई, ख़िलवत।

प्रा० रहस
रहसि (सं० रहस्य) क्रि० वि० एकान्त में, तनहाई।

सं० रहस्य (रह्=छोड़ना) गु० एकान्त, निर्जन, गुप्तवस्तु, गोपनीय, तत्पर।

सं० रहित (रह्=छोड़ना) कर्म० पु० विना छोड़ा हुआ, ख़ाली, हीन, शून्य, वर्जित, त्यक्त, पृथक्, भिन्न।

प्रा० राई (सं० राजिका, राज्=चमकना) स्त्री० सरसों के ऐसी चीज़।

प्रा० राई
राऊ
राय (सं० राजा) पु० राजा, स्वामी, प्रधान जैसे रघुराई या रघुराऊ और नन्दराय।

प्रा० राउत (सं० राजपुत्र) पु० सरदार, मालिक।

प्रा० राँग
राँगा (सं० रङ्ग) पु० एक धातु का नाम।

प्रा० राँझन
राँझा (सं० रञ्जन) पु० प्रियतम, सज्जन, २ एक मनुष्य का नाम जो हीर का आशिक अर्थात् प्रियतम था जिस का राजपूताने में होली के दिनों में स्वाँग बनता है।

प्रा० राँड (सं० रण्डा) स्त्री० विधवा, जिस स्त्री का पति मरगया हो।

प्रा० राँडकासाँड बोल० विधवा लुगाई का बेटा, बिगड़ा हुआ लड़का।

प्रा० राँधना (सं० रन्धन, रन्ध्=पकाना) क्रि० स० पकाना, रींधना।

प्रा० राँपी स्त्री० खुर्पी, करणी।

प्रा० राँभना (सं० रम्भन, रभि=शब्द करना) क्रि० अ० गाय का

शब्द करना, डँकारना, बिंबियाना।

सं० राका (रा=देना, सुख अथवा आनन्द को) स्त्री० पूनों, पूर्णमासी, २ नदी, ३ खजुली, ४ प्रथम रजोवती स्त्री ।

सं० राकापति (राका + पति) पु० पूर्णमासी का चाँद ।

सं० राकेश (राका + ईश) पु० पूर्णमासी का चन्द्रमा ।

सं० राक्षस (रक्ष्=बचाना, जिससे होम की सामग्री को अथवा अपने को) पु० असुर, निशिचर, रजनीचर ।

प्रा० राख (सं०रक्षा, रक्ष्=बचाना) स्त्री० भस्म, भभूत, ख़ाक ।

प्रा० राखना (सं० रक्षण) क्रि० स० रखना, धरना, बचाना ।

प्रा० राखी (सं० राक्षिका, रक्ष्=बचाना) स्त्री० रँगेहुए सूत का तार जिसको हिन्दू पूजा आदि उत्सव में अपने हाथ में बाँधते हैं, २ सावन सुदी १५ का तिहवार जिसमें ब्राह्मण और जाति के लोगों के हाथ में रँगेहुए सूत का तार या रेशम का डोरा बाँधते हैं ।

सं० राग (रञ्ज्=रँगना वा प्यार करना) पु० क्रोध, २ प्यार, ३ रंग, ४ गान, सुर—गानविद्या में राग छः हैं (१ भैरव, २ मल्लार, मेघ, श्रीराग, ३ सारङ्ग, ४ हिंडोल, ५ वसन्त, ६ दीपक)।

प्रा० रागछाला बोल० रागरंग होना, गाना बजाना होना, तान मिलना ।

प्रा० रागरंग बोल० गाना बजाना ।

प्रा० रागना (राग) क्रि० स० गाना शुरूअ करना ।

सं० रागिणी (राग) स्त्री० गान भेद, तान, सुर, (छः राग और ३६ रागिणी हैं) १ राग भैरव—उत्पत्ति शिव के मुखसे निकला है, शिव का ध्यान, शरद् ऋतु में पिछली राति को गाना । उसकी रागिणी (१ भैरवी, २ बंगाली, ३ बरारी, ४ मधुमाधवी, ५ सिन्धवी, ६ गुर्जरी) २ मल्लार वा मेघ—वर्षांऋतु में सब समय में विशेष करके शृङ्गार रस में गाना, इसके गान में मेघवृष्टि अनायासहो, रागिणी (१ बेलावली, २ वर्षा, ३ कानड़ा, ४ माधवी, ५ कीडा, ६ पटमञ्जरी) ३ श्रीराग वा सारंग—हेमन्तऋतु में सिंहासनारूढ़ सुन्दर पुरुष का ध्यान करके गाना । रागिणी—(१ गान्धारी, २ सुभगी, ३ गौरी, ४ कौमारिका, ५ वैरागी, ६ काफ़ी) ४ हिंडोल—ब्रह्मा के शरीर से उत्पत्ति, वसन्तऋतु में दिन के प्रथम भाग में हिंडोलारूढ़ पुरुष का ध्यान करके गाना, इसके गानमें हिंडोला आपसे आप चलने लगता

है। रागिणी-(१ मायूरी, २ दीपक, ३ देशवारी, ४ पाहिडा, ५ बराड़ी, ६ मोरहारी) ५ वसन्त-वसन्त पञ्चमी से राम नौमी तक आठों पहर गाना, वीररस में। रागिणी-(१टोड़ी, २ पञ्चमी, ३ त्वलिता, ४ पटमञ्जरी, ५ गुर्जरी, ६ बियासा) ६ दीपक-सूर्य के नेत्र से उत्पत्ति, गजारूढ़ पुरुष का ध्यान करके ग्रीष्मऋतु में मध्याह्न समय गाना। रागिणी-(१देशी, २कामोदा, ३ केदारा, ४ कान्हड़ा, ५ कर्णाटकी, ६गुर्जरी) इसके गाने पर बुझा दीपक जल उठता है।

सं० **राघव** (रघु) पु० रघुनाथ, रघुराज, रघुनन्दन, श्रीरामचन्द्र।

प्रा० **राचना** (सं० रचन, रच्=बनाना) क्रि० स० प्यार के वश होना, मिलना, मन लगना, लीन होना।

प्रा० **राछ** पु० बढ़ई अथवा राज अथवा और कारीगरों के औज़ार।

प्रा० **राज** (सं० राज्य) पु० बादशाहत, हकूमत, बादशाही, अमल, राजा का अधिकार, राज्य।

प्रा० **राज** पु० कारीगर, मैमार, संगतराश।

सं० **राजकन्या** (राजन्=राजा, कन्या=बेटी) स्त्री० राजा की बेटी, राजकुँवारी, राजकुमारी।

सं० **राजकर** पु० राजस्व, लगान, चुंगी, महसूल, सरकारी मालगुज़ारी।

सं० **राजकीय** गु० सरकारी बादशाही।

सं० **राजकीय महासभा** स्त्री० शाही दरबार, पारलीमयण्ट।

सं० **राजकुटुम्ब** पु० शाही खानदान, राजवंश, राजा का घराना।

सं० **राजकुमार** (राजन्+कुमार) पु० राजा का बेटा, राजपुत्र।

सं० **राजकृत्य** पु० कारसल्तनत, राजकाज।

सं० **राजकोष** पु० बादशाही ख़ज़ाना, रायल ट्रेज़री।

प्रा० **राजगाद्दी** (राजा+गादी) स्त्री० राजगद्दी, राजा का आसन, पायह तख़्त।

सं० **राजदण्ड** पु० राजसम्बन्धी दण्ड।

सं० **राजदत्त** कर्म० पु० राजा का दिया हुआ, राजा से मिला।

सं० **राजद्रोही** क० पु० राजा का वैरी, राजविमुख, बाग़ी।

सं० **राजद्वार** (राजन्+द्वार) पु० राजा की डेवढ़ी।

सं० **राजधानी** (राजन्=राजा, धा=रखना वा रहना) स्त्री० राजस्थान, राजपुर, वह नगर जहाँ राजा रहे और राज का काम काज हो,

दारुल्सल्तनत ।

प्रा० **राजना** (सं० राजन्, राज्=शोभना, चमकना) क्रि० अ० शोभना, चमकना, विराजना ।

सं० **राजनीति** (राजन् + नीति) स्त्री० राज करने की रीति, राजप्रबन्ध, २ एक ग्रन्थ का नाम ।

सं० **राजन्य** पु० क्षत्रिय, राजपुत्र ।

सं० **राजपत्नी** (राजन् + पत्नी) स्त्री० रानी ।

सं० **राजपुत्र** (राजन् + पुत्र) पु० राजा का बेटा, राजकुमार, २ राजपूत, क्षत्री ।

प्रा० **राजपूत** (सं० राजपुत्र) पु० क्षत्री ।

सं० **राजभवन** (राजन् + भवन) पु० राजा का महल ।

सं० **राजमन्दिर** (राजन् + मन्दिर) पु० राजा का महल ।

सं० **राजमार्ग** (राजन् + मार्ग) पु० बादशाही रस्ता ।

सं० **राजरोग** (राजन्+रोग) पु० रोगों का राजा अर्थात् बड़ा रोग, जैसे क्षयरोग आदि ।

सं० **राजशासन** (राजन् + शासन) पु० राजा का दण्ड ।

सं० **राजस** (रजस्) गु० रजोगुण से पैदा हुआ, पु० रजोगुण, अहंकार, क्रोध, मोह आदि ।

सं० **राजसभा** (राजन् + सभा) स्त्री० राजा का दरबार ।

सं० **राजसूय** (राजन्=राजा, सू=सींचना या किया जाना) पु० एक यज्ञ जिसको केवल चक्रवर्ती राजा ही करता है और इस यज्ञ का सारा काम काज केवल उसके अधीन और राजा करते हैं ।

सं० **राजहंस** (राजन् + हंस अर्थात् हंसों का राजा) पु० एक तरह का हंस जिसके पैर और चोंच लाल होती है ।

सं० **राजा** (राजन्, राज्=शोभना, चमकना) पु० नरपति, भूपति ।

सं० **राजाधिराज** (राजा + अधिराज) पु० बड़ा राजा, महाराजा, राजेश्वर, चक्रवर्ती, शाहन्शाह ।

सं० **राजिका** } (राज्=शोभना वा
राजी } चमकना) स्त्री० पंक्ति, पाँति, श्रेणी, कतार, पाँती, राई, नाली, नहर, केदार, क्यारी, वन, ऊसर भूमि ।

सं० **राजित** (राज्=शोभना, चमकना) क० पु० शोभित, शोभायमान ।

सं० **राजीव** (राज्=चमकना) पु० कमल, कँवल, पद्म ।

सं० **राजेन्द्र** (राजन + इन्द्र) पु० महाराजा, राजाधिराज ।

सं० **राजेश्वर** (राजन् + ईश्वर) पु० राजाओं का राजा, महाराजा, राजाधिराज, शाहन्शाह ।

सं० राज्य (राज्=शोभना, चमकना)पु० राजशब्द को देखो ।

सं० राज्याङ्ग (राज्य + अङ्ग) पु० राजा, मन्त्री, मित्र, कोष, देश, दुर्ग, सेना ।

प्रा० राणा (सं०राजन्) पु० राजा (उदयपुर के राजा को राणा कहते हैं) ।

प्रा० राणी / रानी (सं० राज्ञी, राज्=शोभना, चमकना) स्त्री०राजा की स्त्री, राजपत्नी ।

प्रा० रात / राती (सं०रात्रि) स्त्री०रजनी, रैन, निशा, निशि ।

प्रा० रात थोड़ी और साग बहुत यह कहावत उस जगह बोली जाती है जहाँ काम तो बहुत हो और समय थोड़ा हो या थोड़ी आमदनी हो और बहुत खर्च हो ।

प्रा० रातोंरात बोल० रातही में ।

प्रा० रातना(राता) क्रि०स० रँगना, रंग देना, क्रि०अ० किसी से बहुत प्यार होना, किसी पर जीलगना।

प्रा० राता (सं०रक्त) गु० लाल, २ रँगा हुआ, ३ लगा हुआ ।

प्रा० राते गु० रक्त, लाल ।

सं० रात्रि / रात्री (रा=देना सुख को) स्त्री०रात, रजनी ।

सं० रात्रिचर (रात्रि + चर) पु० राक्षस, २ भूत, ३ चौर, ४ रात को फिरनेवाला, चौकीदार ।

सं० रात्रिमणि पु० चन्द्र, चाँद ।

प्रा० राद / राध स्त्री० पीब, मवाद ।

सं० राद्ध (राध्=सिद्ध करना) कृ० पु० सिद्ध, कामयाब ।

सं० राधन भा० पु० साधन ।

सं० राधा (राध्=सिद्ध करना, पूरा करना) स्त्री० एक गोपी जो श्रीकृष्ण को बहुत प्यारी थी, २एक नक्षत्र, विशाखानाम नक्षत्र ।

सं० राधाकान्त (राधा + कान्त) पु० श्रीकृष्णचन्द्र ।

सं० राधाकुण्ड(राधा + कुण्ड)पु० गोवर्द्धन पहाड़ के पास एककुण्ड जिसको श्रीकृष्ण ने खुदवाया था और उसमें सब तीर्थ आकर पानी डालगये थे ।

सं० राधावल्लभ (राधा + वल्लभ) पु० श्रीकृष्णचन्द्र ।

सं० राधिका (राध्=सिद्ध करना) स्त्री० राधा गोपी ।

प्रा० राब स्त्री० ऊख आदि का रस।

प्रा० राब / राबड़ी स्त्री० जुवार या बाजरे को छाछ में मिला कर पकाया हुआ खाना ।

सं० राव (रु=शब्द) पु०शब्द, ध्वनि।

१—" स्वाम्यमात्यश्च राष्ट्रं च दुर्गं कोशो बलं सुहृत् । परस्परोपकारीदं सप्ताङ्गं राज्यमुच्यते " (इति कामन्दकीये) ॥

सं० **राम** (रम्=खेलना, जिसमें योगी रमते हैं, अर्थात् जिसके ध्यान में लगे रहते हैं) पु० परशुराम (यह विष्णु का अवतार जमदग्निऋषि के घर त्रेतायुग के शुरूअ में अन्यायी क्षत्रियों को दण्ड देने के लिये हुआ था) २-रामचन्द्र, दशरथ राजा का बेटा (यह विष्णु का अवतार अयोध्या के राजा दशरथ के घर त्रेतायुग के अन्त में लङ्का के राजा रावण को मारने के लिये हुआ) ३-बलराम, श्रीकृष्ण का बड़ा भाई जो द्वापर युग के अन्त में रोहिणी के पैदा हुआ, ४ गु० सुन्दर, मनोहर, शुभ, ५ सुखदायी, ६ सर्वव्यापक।

प्रा० **रामकहानी** बोल० बड़ी लम्बी बात, लम्बीकथा, २ स्त्री० रामायण।

प्रा० **रामराम** बोल० सलाम, प्रणाम, नमस्कार (गँवारलोग सलाम की जगह राम राम करते हैं)।

प्रा० **रामकली** } स्त्री० एक रागिणी
रामकेली } का नाम।

सं० **रामगिरि** (राम + गिरि) पु० चित्रकूट पहाड़ जो बुन्देलखण्ड में है जहाँ वनवास के समय रामचन्द्र पहले पहल रहे थे।

प्रा० **रामजनी** (सं० रामाजनी, रामा=मनभावन, जनी=स्त्री) स्त्री० कञ्चनी, पतुरिया, नौची, वेश्या।

सं० **रामचन्द्र** (राम + चन्द्र, अर्थात् चाँद के ऐसे सुखदायी राम) पु० विष्णु का सातवां अवतार, श्रीरघुनाथ, राजा दशरथके बड़े बेटे।

प्रा० **रामतुरई** स्त्री० एक तरकारी का नाम।

सं० **रामदूत** (राम + दूत) पु० रामचन्द्र का दूत, हनुमान्।

प्रा० **रामदोहाई** स्त्री० राम की सौगन्द, परमेश्वर की शपथ।

प्रा० **रामानन्दी** (सं०रामानन्दीय) पु० रामानन्द के मत को मानने वाला, वैष्णव।

सं० **रामा** (रम्=खेलना) स्त्री० सुन्दर स्त्री, मनोहर नारी, सुघर लुगाई, गु० सुन्दर, मनोहर, मनभावन।

सं० **रामायण** (राम=रामचन्द्र, अयन=जगह या रस्ता, अथवा चरित्र) स्त्री० रामचरित्र, रामकथा।

प्रा० **रामावत** पु० एक तरह के वैष्णव साधु, साध।

प्रा० **राय** } (सं० राजा) पु० राजा,
राव } २ राय, हिन्दुओं में और विशेष करके कायथों में एक पदवी होती है।

प्रा० **रायता** पु० एक तरह की तरकारी जो दही में कद्दू आदि मिलाने से बनती है।

प्रा० **रायमुनि** पु० एक प्रकार का लाल पखेरू।

अं० रायलकमीशन राजा की ओर से कुछ मनुष्य किसी कार्य के निर्णयार्थ नियत किये जावें।

अं० रायलफैमिली राजवंश, राजकुटुम्ब, शाहीघराना, शाहीखानदान।

प्रा० रार
रारि स्त्री० लड़ाई, झगड़ा,
राड़ कलह, दंगा, फ़साद।

सं० राल (रा=देना) स्त्री० धूना, एक तरह का गोंद।

प्रा० रावचाव पु० रागरंग, विलास, आनन्द, हर्ष, भोगविलास, २ प्यार, प्रीति, लाग, लगाव।

प्रा० रावती स्त्री० एक तरह का डेरा।

सं० रावण (रु=शब्द करना या रुलाना, वैरियों को) पु० लङ्का का राजा जिसको श्रीरामचन्द्र ने मारा।

सं० रावणारि (रावण + अरि) पु० श्रीरामचन्द्र।

प्रा० रावत पु० वीर, बहादुर,
राउत शूरमा, सावन्त, लड़ाका, शूरवीर, २ एक नीच जाति जो भंगी के बराबर है।

प्रा० रावरा
रावरो सर्वना० तुम्हारा,
राउर आपका।
रौरा

सं० राशि (अश=फैलना वा फैलाना) स्त्री० धान आदि का ढेर, समूह, २ ज्योतिष में मेष, वृष, मिथुन आदि बारह, ३ हिसाब में एक प्रकार का अङ्क।

सं० राशिचक्र (राशि + चक्र) पु० ज्योतिश्चक्र, लग्नमण्डल, द्वादशभाव।

सं० राष्ट्र (राज्=शोभना, चमकना) पु० बसा हुआ देश, मुल्क।

प्रा० रास (रश्मि) स्त्री० डोर, बाग, जैसे घोड़े की रास।

सं० रास (रास्=शब्द करना) पु० खेल, क्रीड़ा, नाच, जैसे श्रीकृष्ण ने गोपियों के साथ किया था।

सं० रासन भा० पु० रसनाजन्य ज्ञान, जीभका स्वाद।

सं० रासभ (रास=शब्द करना) पु० गधा, खर, गर्दभ।

सं० राहु (रह्=छोड़ना) आठवां ग्रह।

सं० राहुग्रस्त (राहु + ग्रस्त वा
राहुग्रास ग्रास) पु० चाँद सूर्य का ग्रहण।

सं० रिक्त (रिच् + त, रिच्=
रिक्तक ख़ाली करना) गु० ख़ाली, छूंछा, शून्य, छिन्न, भिन्न।

अं० रिग्युलेशन मंज़ूरी क़ानून, व्यवस्था स्वीकार कराना, प्रस्ताविक विषय।

प्रा० रिझाना (सं० रञ्जन) क्रि० स० प्रसन्न करना, खुश करना।

रिपु (रप्=बुरी बात कहना) पु० वैरी, शत्रु, दुश्मन ।

रिपुञ्जय (रिपु=वैरी को, जि=जीतना) पु० एक राजा का नाम, गु० वैरी को जीतनेवाला ।

रिपुता स्त्री० शत्रुता, दुश्मनी, अदावत ।

रिपुसूदन (रिपु=वैरी, सूद्=नाश करना) क० पु० शत्रुघ्न, श्रीरामचन्द्र का भाई, लक्ष्मण का छोटा भाई ।

रिप्रिज़ेयण्टेटिवसिस्टम साधारण प्रजाजन अपने समूह से सज्जनों को अपने अनुशासन के हेतु अनुशासक नियत करते हैं ।

रिफ़ार्मर (री=दुबारा, फार्मर=सुधारनेवाला) क० पु० संशोधक, देशदशा का दुबारा सूधा करनेवाला ।

रिस (सं० रोष) स्त्री० कोप, क्रोध, गुस्सा, खिसियाहट ।

रिसाना
रिसियाना (सं० रुष्=कोप करना) क्रि०अ० कोपना, खिसियाना, क्रोधित होना, गुस्सा होना, अप्रसन्न होना ।

रिस्पांडंट अनुयोज्य, वह जिस पर अपील की जाय ।

रिष्ट (रिष्+त) पु० मङ्गल, कल्याण, २ अशुभ, पाप, नाश, गु० पुष्ट, दृढ़, कठोर ।

सं० **रिष्टि** (रिष्+ति) स्त्री० शुभ, अशुभ नाश, पु० खड्ग, तलवार ।

प्रा० **रींगना** (सं० रिग्=जाना) क्रि० अ० चलना, रेंगना, धीरे धीरे चलना ।

प्रा० **रींछ**
रीछ (सं० ऋक्ष, ऋष्=जाना) पु० भालू, एक जङ्गली जानवर का नाम ।

प्रा० **रींधना** (सं० रन्धन, रन्ध्=पकना) क्रि०स० पकाना, राँधना ।

प्रा० **रीझना** (सं० रञ्जन) क्रि० अ० प्रसन्न होना, खुश होना, प्यार करना ।

प्रा० **रीढ़** पु० पीठ के बीच की हड्डी ।

प्रा० **रीता** (सं०रिक्त, रिच्=ख़ाली करना) गु० ख़ाली, छूँछा, शून्य ।

प्रा० **रीत**
सं० **रीति** (री=जाना) स्त्री० चाल, ढाल, प्रकार, प्रचार, रसम, क़ायदा, स्वभाव, पीतल, प्रस्ताव, टपकना, लोहकिट्ट, सीमा, गति, स्वभाव, लोकाचार ।

प्रा० **रीस** (सं० रोष) स्त्री० क्रोध, कोप, गुस्सा ।

सं० **रुक** (रुच्=चाहना) पु० रोग, २ उदार, दाता, ३ दीप्ति, प्रकाश ।

सं० **रुकना** (सं०रुध्=रोकना) क्रि० अ० अटकना, बन्द होना ।

प्रा० **रुक्म** (सं० रुक्मी, रुच्=चमकना वा प्यार करना) पु० राजा भीष्मक का बड़ा बेटा और रुक्मिणी

का भाई और श्रीकृष्ण का साला जिसको बलदेवजीने मारा ।

सं० रुक्मिणी (रुच्=चमकना वा प्यार करना) स्त्री०लक्ष्मी का अवतार, कुण्डिनपुर के राजा भीष्मक की बेटी जो श्रीकृष्ण को ब्याही गई थी और पहले जन्म में सीता थी ।

सं० रुक्ष } (रुक्ष्=रूखा होना)
रूक्ष } गु०अचिक्कण, निस्स्नेह, कठोर, रूखा ।

प्रा० रुख पु० सन्मुख, क्रोध, मुँह, शतरंज का प्यादा, इशारा, दयादृष्टि, मेहरबानी की नज़र ।

प्रा० रुखाई (रूखा) भा० स्त्री० रुखावट, सुखावट, २ घुरकी, झिड़की, धमकी ।

सं० रुचक (रुच्=प्रीति करना) पु० सज्जीखार, माङ्गल्यद्रव्य, उत्कट, अश्वभूषण, माला, हींग, काला नोन, बीजपूर नींबू, दल, निष्क, कपोत, गु० हर्षित, प्रसन्न ।

प्रा० रुचना (सं०रोचन, रुच्=प्यार करना वा चाहना) क्रि० अ० भाना,अच्छा लगना,पसंद आना।

सं० रुचि (रुच्=चमकना वा प्यार करना) भा० स्त्री० चाह, इच्छा, अभिलाषा, स्पृहा, चोप, शौक़, २ खाने की इच्छा, भोजन करने की इच्छा, ३ चमक, शोभा, ४ प्यार, अनुराग ।

सं० रुची क० स्त्री० पसंद, प्रवृत्ति ।

सं० रुचिर (रुचि=चाह वा प्यार, रा=देना) गु० सुन्दर, मनोहर, मनभावन, २ मीठा, सुस्वादु ।

सं० रुच्य } गु० सुन्दर, रुचिकर,
रुचिष्य } मधुर, स्वादुयुक्त, मनोहर, पसन्दीदा ।

सं० रुज् } (रुज्=बीमार होना)पु०
रुजा } रोग, बीमारी ।

सं० रुण्ड (रुट् या रुठ्=मारना) पु० धड़, बिन शिरकी देह ।

सं० रुदन (रुद्=रोना) पु०रोना, आँसू बहाना, विलाप, गिरियावज़ारी करना ।

सं० रुद्ध (रुध्=रोकना) म्म०पु० रुका हुआ, छेंका हुआ, अटका हुआ, बँधा हुआ ।

सं० रुद्र (रुद्=रोना वा शब्द करना) पु० शिव, महादेव की ग्यारह मूर्ति, अजैकपाद्, अहिर्बुध्न्य, विरूपाक्ष,सुरेश्वर, जयन्त,बहुरूप, त्र्यम्बक, अपराजित, सावित्र, हर, रुद्र, ११ संख्या ।

सं० रुद्राक्रीड़ पु० श्मशान ।

सं० रुद्राक्ष (रुद्र=शिव, अक्ष=आँख अर्थात् जिसका रूप शिव की आँखों के ऐसा होता है) पु० एक वृक्ष जिसके दानों की माला बनती है ।

सं० रुद्राणी (रुद्र) स्त्री० शिवा,

दुर्गा, पार्वती, शिवरानी ।

सं० रुधिर (रुध्=रोकना) पु० लोहू, लहू, खून, रक्त, मङ्गलग्रह, रक्तवर्ण ।

प्रा० रुपया } रुपैया } (रूपा) पु० रूपे का एक सिक्का जो सोलह आने के बराबर होता है ।

सं० रुमा स्त्री० सुग्रीव की स्त्री ।

सं० रुरु पु० मृगभेद, दैत्य, सर्प, अतिक्रूर ।

सं० रुष् } रुषा } स्त्री० क्रोध, कोप, आमर्ष ।

सं० रुषित क०पु० क्रोध भरा हुआ ।

सं० रुष्ट क० पु० क्रुद्ध, क्रोध भरा हुआ ।

प्रा० रुंगटा (सं० रोम) पु० रों, वाल, रुँवा,–रुँगटे खड़े होना, बोल० डरसे या जाड़े के मारे बाल खड़े होना, डरना ।

प्रा० रूख (सं० रूक्ष, रूक्ष्=कड़ा होना) पु० पेड़, वृक्ष, तरवर, तरु, दरख़्त ।

प्रा० रूखा (सं० रूक्ष, रूक्ष्=कठोर होना) गु० रूखा, फीका, बेरस, २ जो चिकना न हो, खुड़खुड़ा, कड़ा, ३ निर्दय, कठोर, क्रूर ।

प्रा० रूखासूखा बोल० सादा, बे स्वाद खाना, २ कड़ा, कठोर बात ।

प्रा० रूखानी } रुखानी } स्त्री० टाँकी, छेनी ।

प्रा० रूठना (सं० रुष्ट, रुष्=क्रोध करना) क्रि०अ० अप्रसन्न होना, नाराज़ होना, बिगड़ना ।

सं० रूढ़ (रुह्=पैदा होना) क० पु० पैदा हुआ, जमा हुआ, उत्पन्न, २ प्रसिद्ध ।

सं० रूढ़ि (रुह्=पैदा होना) स्त्री० उत्पत्ति, पैदा होना, जन्म, २ प्रसिद्धि, ३ ऐसा शब्द जो किसी से बना न हो और उसका अर्थ उसी पद में रहे जैसे "त्रिफला" यह रूढ़ि है ।

सं० रूप (रूप्=डौल बनाना) पु० आकार, डौल, सूरत, शकल, २ शोभा, स्वरूप, सुन्दरता, ३ रीति, ढब, प्रकार, भाँति, चाल, तरह ।

सं० रूपक (रूप्=डौल बनाना) पु० नाटक, २ रूप, मूरत, ३ एक अलंकार का नाम ।

सं० रूपनिधान (रूप + निधान) पु० सुन्दरता का घर अर्थात् बहुतही सुन्दर ।

सं० रूपराशि स्त्री० सुन्दरता का समूह, मख़ज़नुलजमाल, रूप का ख़ज़ाना ।

सं० रूपवती (रूप + वती) स्त्री० सुन्दर स्त्री, मनोहर स्त्री ।

सं० रूपसागर (रूप + सागर) पु० रूप का समुद्र, बहुतही सुन्दर ।

प्रा० रूपा (सं० रूप्य, रूप) पु० चाँदी ।

फ़ा० रूमाल पु० मुँह पोछने का

कपड़ा, उपवस्त्र ।

सं० रूपी क० स्त्री० रूपवाली ।

प्रा० रूरी गु० स्त्री० सुन्दर ।

प्रा० रूसना (सं० रोषण, रुष्=क्रोध करना) क्रि० अ० क्रोधित होना, रिसाना, २ अप्रसन्न होना, नाराज़ होना, रूठना ।

प्रा० रेंकना क्रि० अ० गधे का बोलना ।

प्रा० रेंगना (सं०रिग्=जाना) क्रि० अ० धीरे धीरे चलना, रींगना ।

प्रा० रेंड, पु० } (सं० एरण्ड)
रेंडी, स्त्री० } एरण्ड का पेड़ ।

प्रा० रेख (सं०रेखा) स्त्री० लकीर, खत।

सं० रेखा (लिख्=लिखना) स्त्री० लकीर, रेख, २ लिखना, ३ प्रारब्ध, भाग ।

सं० रेचक (रिच्+अक, रिच्=जुदा करना) क० पु० दस्तकारक, जुलाब, पु० निशोत, भटकटैया, जयपाल, जमालगोटा ।

सं० रेचन (रिच्+अन) भा० पु० मलभेदन, दस्त कराना, जुलाब देना ।

अं० रेज़ीड्यण्ट राजदूत, वकील-शाही, सफ़ीर ।

सं० रेणु (रि=जाना) स्त्री० रेत, धूलि।

सं० रेणुका (रि=जाना) स्त्री० सुगन्धित चीज़, २ जमदग्नि ऋषि की लुगाई और परशुरामजी की माँ।

प्रा० रेत स्त्री० धूलि, रज, बालू, २ चूर, रेतन ।

प्रा० रेतना (रेत) क्रि० स० घिसना, सोहनकरना, रद्दा फेरना, २ घोटना, चिकना करना, ओपना।

सं० रेतस पु० पाराधातु, वीर्य, शुक्र।

प्रा० रेती (रेत) स्त्री० नदी के तीर पर की रेतीली धरती, बालू, २ सोहन, रेतने का औज़ार ।

सं० रेप (रेप्=शब्द करना) गु० निन्दित, क्रूर, कृपण ।

सं० रेफ (र) पु० रकार, र् अक्षर जो दूसरे व्यञ्जन के साथ मिलता है तब उसका रूप (र्‍) ऐसा होता है जैसे र्क, २ कुत्सित, अधम।

प्रा० रेलना क्रि० स० ठेलना, पेलना, ढकेलना ।

प्रा० रेलपेल स्त्री० भीड़, धूम धाम, २ बहुतायत ।

प्रा० रेवड़ी (एक तरह की खाने की मीठी चीज़, खुटिया ।

अं० रेवन्यु माल का काम ।

अं० रेवन्युबोर्ड शुल्क सम्बन्धी सभा, चुंगी के हाकिमों का दरबार ।

प्रा० रेवड़ीके फेर में पड़ना बोल० कठिनता में फँसना, पेच में आना।

सं० रेवती (रेवत) स्त्री० रेवत राजा की बेटी और बलदेवजी की स्त्री, २ (रेव्=जाना) सत्ताईसवाँ नक्षत्र ।

सं० रेवतीरमण (रेवती + रमण) पु० बलदेव, बलराम, श्रीकृष्ण के बड़े भाई ।

सं० रेवा (रेव्=बहना या उछल के चलना) स्त्री० नर्मदा नदी ।

प्रा० रेह स्त्री० एक तरह का खार जो कपड़ों के धोने और साबुन के बनाने में काम आता है ।

सं० रै पु० धन, स्वर्ण, अर्थ, विभव ।

प्रा० रैन (सं०रजनी) स्त्री० रात ।

सं० रैवत पु० द्वारका के समीप पर्वत, महादेव, चौदह मनु में का एक मनु, रेवती का पिता, बलदेव का श्वशुर ।

प्रा० रोआँ } (सं०रोम) पु० शरीर
रोवाँ } परके बाल, २ऊन, रोएँ।

प्रा० रोंगटी स्त्री० छल से झूठ को सच और सच को झूठ बताना, हथफेर, छलविद्या ।

प्रा० रोक } (सं० रोक, रुच्=चा-
रोकड़ } हना वा प्यार करना) पु० नक़द, नक़दी ।

प्रा० रोकड़िया (रोकड़) पु० खज़ानची, कोठारी ।

प्रा० रोकना (सं० रोधन, रुध्=रोकना) क्रि० स० अटकाना, घेर लेना, बंद करना, थामना, २ मना करना, ३ बात काटना ।

सं० रोग (रुज्=बीमार होना) पु० बीमारी, पीड़ा, व्याधि, दुःख ।

सं० रोगी (रोग) क०पु० बीमार, दुःखी, पीड़ित, मरीज़ ।

सं० रोचक (रुच्=चाहना, प्यार करना)गु० चाह करानेवाला, रुचि करानेवाला,पाचक,पु०भूख,क्षुधा।

सं० रोचन भा०पु०तरग़ीब, पसंद ।

सं० रोचनीय कर्म० पु० मरग़ब, पसंदीदा, स्पृहाजनक ।

सं० रोचिष्णु क० पु० दीप्तिमान् , प्रकाशित ।

प्रा० रोझ(सं०ऋष्य, ऋष्=जाना) पु० एक जानवर का नाम ।

प्रा० रोट (सं० रोटिका या रोटी) पु० मोटी रोटी, जो हनुमान् को चढ़ाते हैं ।

प्रा० रोटा (सं० रोटिका या रोटी) पु० मोटी रोटी ।

सं० रोटिका } (रुट्=ठोंकना या
रोटी } काटना) स्त्री० गेहूँ के आटे की बनी हुई खाने की चीज़, फुलका ।

अं० रोड मार्ग, सड़क ।

प्रा० रोड़ा पु० बड़ा कंकड़, ईंट का बड़ा टुकड़ा ।

सं० रोदन (रुद्=रोना) भा० पु० रोना, रुदन ।

सं० रोद्धा (रुध्=रोकना, ढापना) क०पु० रोकनेवाला ।

सं० रोध भा० पु० तट, किनारा ।

प्रा० रोना (सं०रोदन) क्रि० अ०

आँसू बहाना, विलाप करना, बिलखना, चिल्लाना, २ उदास होना, नाराज़ होना, ३ पु० विलाप, रुदन, दुःख, शोच ।

प्रा० रोपना (सं० रोहण, रुह्=जगना) क्रि०स० बोना, जमाना, उगाना ।

सं० रोपयिता क०पु०लगानेवाला, जमानेवाला ।

सं० रोम (रु=शब्दकरना या रुह्=उगना, जो देह पर उगते हैं) पु० लोम, बाल, केश, रोवाँ, रोआँ ।

सं०रोमाञ्च भा०पु०रोम खड़ाहोना ।

अं० रोमनकैथोलिक क०पु० ईसा के चित्रके पूजनेवाले ।

सं० रोमन्थ पु० राउंथ, पगुराना, दाबी वस्तु को चाबना ।

सं० रोमपाट पु० दुशाला, कम्बल ।

सं० रोमहर्षण पु० रोमाञ्च, रोम खड़े होना, सूत, व्यासशिष्य, बहेरा वृक्ष ।

सं० रोमाञ्चित (रोम=बाल, अञ्च्=जाना) गु० बहुत खुशी या डरसे शरीर के रोएँ खड़े होना, पुलकित, हर्षित ।

सं० रोमावली (रोम+अवली) स्त्री० रोएँ की धारी जो नाभि के बीच में से होकर जाती है ।

प्रा० रोली स्त्री० कुंकुम या जिसका रोचना किया जाता है ।

सं० रोष (रुष्=क्रोध करना) पु० कोप, रिस, क्रोध, गुस्सा, खिसियाहट ।

सं० रोह पु०कली, कुड्मल, रोहण, ऊपर जाना ।

सं० रोहण भा० पु० चढ़ाव, वृद्धि, वृक्ष, चढ़ना ।

सं० रोहिणी (रुह्=पैदा होना) स्त्री० चौथा नक्षत्र, २ चाँद की स्त्री, ३ रोहण राजा की बेटी, वसुदेवजी की स्त्री और बलदेव जी की माँ ।

सं० रोहिणीपति (रोहिणी+पति) पु० चाँद, २ वसुदेव जी ।

सं० रौद्र (अर्थात् जिसका देवता रुद्र है) गु० डरावना, भयानक, पु० क्रोध, कोप, २ धूप ।

प्रा० रौताई भा०स्त्री०ठकुराई, शूरता ।

प्रा० रौना पु० (त्रिरागमन) गौने के पीछे अपनी स्त्री को उसके बाप के घर से अपने घर में लाना ।

सं० रौप्य पु० रजत, चाँदी ।

प्रा० रौर (सं० रव) पु० शब्द, रौला, शोर, गुल, गपाड़, २ यश, नामवरी ।

सं० रौरव (रु=शब्द करना या रोना, जहाँ पापी रोते हैं) पु०एक नरक का नाम, गु० भयानक ।

प्रा० रौला (सं० राव, रु=शब्द करना) पु० धूमधाम, हुल्लड़,

बखेड़ा, गुल, गपाड़ ।

ल

सं० **ल** (ला=लेना वा लू=काटना) पु० इन्द्र, २ मन्त्र, ३ काटना, ४ दीप्ति, प्रकाश, ५ आह्लाद, ६ वायु ।

प्रा० **लकड़** (सं० लगुड) पु० लकड़ी, लाठी, लट्ठ ।

प्रा० **लकड़ी** (सं० लगुड) स्त्री० काठ, इन्धन, जलावन, २ सोंटा, लट्ठ, लाठी, लठिया ।

प्रा० **लकीर** (सं० लेखा, लिख्=लिखना) स्त्री० रेखा, लीक, धारी, डंडीर ।

प्रा० **लकुट** (सं० लगुड, लग्=मिलना वा पाना) पु० लाठी, लकड़ी, छड़ी ।

सं० **लक्त** पु० लाही, महावर ।

सं० **लक्ष** (लक्ष्=देखना, चिह्नकरना) पु० एक लाख, सौ हज़ार, २ छल, बहाना, ३ चिह्न ।

सं० **लक्षक** (लक्ष्+अक) क० पु० दर्शक, दिखानेवाला ।

सं० **लक्षण** (लक्ष्=देखना या चिह्न करना) पु० चिह्न, पहचान, तारीफ़, नाम, गुण, २ श्रीरामचन्द्र का छोटा भाई, लक्ष्मण, सुमित्रा का बेटा ।

सं० **लक्षित** (लक्ष्=चिह्न करना, देखना) र्म० पु० देखा हुआ, जाना हुआ, २ चिह्न किया हुआ ।

सं० **लक्षणा** भा० स्त्री० अध्याहार, जो ऊपर से लिया जाय ।

सं० **लक्ष्मण** (लक्ष्=देखना, चिह्न करना) पु० दशरथ राजा का बेटा जो सुमित्रा से पैदा हुआ, श्रीरामचन्द्र का छोटा भाई ।

सं० **लक्ष्मणा** (लक्ष्=देखना, चिह्न करना) स्त्री० मद्रदेशके राजा की बेटी और श्रीकृष्ण की पत्नी, २ दुर्योधन की बेटी जो श्रीकृष्ण के बेटे साम्ब को ब्याही थी ।

सं० **लक्ष्मी** (लक्ष्=देखना, चिह्न करना) स्त्री० विष्णुपत्नी, धन की देवता, हरिप्रिया, पद्मा, कमला, श्री, इन्दिरा, लोकमाता, रमा, हरिवल्लभा, २ सम्पदा, सम्पत्ति, धन, ऐश्वर्य, ३ शोभा, सुन्दरता ।

सं० **लक्ष्मीकान्त** (लक्ष्मी+कान्त) पु० विष्णु, नारायण, रमेश ।

सं० **लक्ष्मीनाथ** (लक्ष्मी+नाथ) पु० विष्णु, नारायण, माधव ।

सं० **लक्ष्मीपति** (लक्ष्मी+पति) पु० विष्णु, नारायण, रमानाथ ।

सं० **लक्ष्मीवान्** (लक्ष्मी+वत्) गु० धनवान्, संपदावाला, दौलतमन्द, श्रीमान्, श्रीयुत ।

सं० **लक्ष्म** भा० पु० चिह्न, निशान ।

सं० **लक्ष्य** (लक्ष्=देखना, चिह्न करना वा निशान करना) पु०

निशाना, ताक, मर्म० जो जाना जाय, जो देखा जाय, देखने योग्य, साज़िश ।

प्रा० लख़न (सं० लक्षण) पु० लक्ष्मण, श्रीरामचन्द्र का छोटा भाई।

प्रा० लखना (सं० लक्षण, लक्ष्=देखना) क्रि०स० देखना, भालना, ताकना, २ जानना, समझना, पहचानना ।

प्रा० लखपति (सं० लक्षपति) पु० धनी, धनवान्, जिसके घर में लाख रुपये हों, लखिया ।

प्रा० लखेरा (लाख) पु० लाख की चूड़ी आदि बनानेवाला ।

प्रा० लग (सं० लग्=मिलना) नित्य, तक, लौं, पास, जबतक ।

प्रा० लगभग बोल० आसपास, अनुमान, क़रीब ।

प्रा० लगना (सं० लग्=मिलना) क्रि० अ० जुड़ना, चिपकना, मिलना, सटना, २ किसी काम का शुरूअ होना या करना, ३ नियुक्त होना, किसी काम में तत्पर होना, ४ पहुँचना, फैलना, ५ सोहना, फबना, ठीक होना, ६ मालूम होना, ७ सम्बन्ध रखना, लगाव रखना ।

प्रा० लगातार क्रि० वि० या गु० बराबर, निरन्तर, एक पर एक ।

प्रा० लगाव (लगना) भा० पु० मेल, लाग, जोड़ ।

प्रा० लगि लिये, वास्ते, २ तक, तलक ।

प्रा० लग्गा पु० लाग, मेल, प्यार, प्रेम, प्रीति, २ एक डंडा जिससे नाव चलाई जाती है ।

प्रा० लग्गा न खाना बोल० बराबर न होना, उपमा या बराबरी के योग्य न होना ।

प्रा० लग्गी स्त्री० बाँस का डंडा ।

सं० लग्न (लग्=मिलना वा पास होना) पु० मेष आदि राशियों का उदय, मुहूर्त, सायत, कृ० लगा हुआ, मिला हुआ ।

सं० लग्नक पु० प्रतिभू, ज़ामिन ।

सं० लघिमा स्त्री० } (लघु) छोटापन, हलकापन, लघुता, लाघव, २ आठ
लघिमन् पु० } सिद्धियों में की एक सिद्धि ।

सं० लघिष्ठ गु० लघु, छोटा ।

सं० लघु (लघि=जाना, छोटा होना) गु० हलका, २ छोटा, ३ शीघ्र। उतावला, ४ सुन्दर, मनोहर, ५ नीचा, नीच, ६ पु० ह्रस्व स्वर, एकमात्रिक स्वर ।

सं० लघुकाय (लघु=छोटा, काय=शरीर) पु० छाग, बकरा, सूक्ष्म शरीर ।

सं० लघुता (लघु) भा० स्त्री० हलकाई, छोटापन, छुटाई, निचाई ।

सं० लघुहस्त पु० अलगहस्त, सुघुरदस्त ।

सं० लघ्वी स्त्री० सूक्ष्माङ्गी, नागनी ।

सं० लङ्का (लक्=स्वाद लेना या पाना) स्त्री० रावण की राजधानी ।

सं० लङ्कापति (लङ्का + पति) पु० रावण, २ विभीषण ।

सं० लङ्केश } (लङ्का + ईश वा
लङ्केश्वर } ईश्वर) पु० रावण, २ विभीषण ।

प्रा० लंगर पु० जहाज़ आदि को ठहरानेके लिये एक लोहे की चीज़।

प्रा० लंगूर (सं० लाङ्गूली) पु० बन्दरकी जाति का एक जानवर जिसकी पूंछ लम्बी होती है और मुँह काला होताहै, लखुवाबाँदर।

प्रा० लंगोट पु० }
लंगोटा पु० } कोपीन, कछनी।
लंगोटी स्त्री० }

प्रा० लंगोटबन्द बोल० वह आदमी जो ब्याह न करे ।

प्रा० लंगोटियायार बोल० बालकपन का पुराना मित्र ।

सं० लङ्घक (लङ्घ् + अक) क० पु० नाँघनेवाला, पारहोनेवाला ।

सं० लङ्घन (लघि=पार होना या लाँघना) पु० लाँघना, पार होना, उछलना, २ उपास, कड़ाका, फ़ाक़ा ।

सं० लङ्घित (लङ्घ् + इत) कर्म० पु० अतिक्रान्त, उल्लङ्घित, पार होगया ।

प्रा० लचक (लचकना) भा० स्त्री० लचीलापन, झुकाव ।

प्रा० लचकना क्रि० अ० ज़ोर पड़ने से झुकजाना और जब वह ज़ोर न रहे तब पीछे उभरआना ।

प्रा० लच्छन पु० लक्षण शब्द को देखो ।

प्रा० लच्छा पु० रँगेहुए सूत की आँटी ।

प्रा० लछन (सं० लक्षण) पु० लक्ष्मण ।

प्रा० लछमण (सं० लक्ष्मण) पु० लक्ष्मण, श्रीरामचन्द्र का छोटा भाई ।

प्रा० लछमी } (सं० लक्ष्मी) स्त्री०
लछि } लक्ष्मी शब्दको देखो।

प्रा० लजाना (लज्जा) क्रि० अ० शर्माना, लाज करना, संकोच करना।

प्रा० लजालू (सं० लज्जालु) गु० शर्मीला, लज्जित, पु० छूई मुई का पेड़, जिसके पास अंगुली ले जाने से उसके पत्ते सिकुड़ जाते हैं ।

सं० लज्जा (लस्ज्=शरमाना) स्त्री० लाज, शर्म, संकोच ।

सं० लज्जारहित (लज्जा + रहित) गु० निर्लज्ज, बेशर्म ।

सं० लज्जाशील गु० लज्जायुक्त ।

सं० लज्जित (लज्जा) क० पु० शर्मीला, शर्मिन्दा, लजालू, संकोची ।

सं० **लञ्जिका** (रञ्ज्=भासना) स्त्री० वेश्या, पुंश्चली, पु० २ मस्तक, कपाल, ३ चोर, ४ वेणी, ५ पिण्ड, ६ उक्ति ।

प्रा० **लट** स्त्री० लटूरी, उलझेबाल, जटा, २ एक जानवर का नाम ।

प्रा० **लटक** भा० स्त्री० मटक, चटक, नख़रा, आन, मान, चोंचला ।

प्रा० **लटकचाल** स्त्री० नख़रेकी चाल ।

प्रा० **लटकन** (लटकना) स्त्री० लटकती हुई चीज़, झूला, २ झूमका, कुण्डल, ३ एक फूल जिससे कपड़े पीले रँगे जाते हैं, ४ एक हरे रंग के पखेरू का नाम जो अपने पैरों से बहुत बार लटका रहता है, ५ लकड़ी की एक चीज़ जिस पर पानी का लोटा झारी आदि रखते हैं, बोल० पुछल्ला, झुलझुल जो पतङ्ग और कनकौआ में नीचे लटका करती है ।

प्रा० **लटकना** क्रि० अ० झूलना टँगना, २ पीछे रहजाना ।

प्रा० **लटका** पु० मन्त्र, झाड़फूंक, टोना, टोटका, चुटकुला, जादू ।

प्रा० **लटपटा** गु० खिलाड़, चञ्चल, २ उलट पुलट, लपेटी हुई (पगड़ी) ।

प्रा० **लटूरिया** } स्त्री० लट, ज़ुल्फ़,
लटूरी } छोटे छोटे उलझे बाल ।

प्रा० **लट्टू** पु० लड़कों के एक खिलौनेका नाम, लट्टू होना, बोल० मोहित होना, किसी के प्यार में फँसना ।

प्रा० **लठ** (सं० यष्टि) पु० सोंटा, लाठी ।

प्रा० **लठियाना** क्रि० स० लाठीसे मारना, लाठी मारना ।

प्रा० **लड़** स्त्री० लड़ी (मोती आदि की) पांत, जत्था, दल, धड़ा, टोली ।

प्रा० **लड़का** (सं०लड्=खेलना) पु० बालक, छोहरा, छोकरा, २ बेटा ।

प्रा० **लड़काबाला** } बोल० बाल,
लड़कालड़की } बच्चा,बेटाबेटी ।

प्रा० **लड़काई** (लड़का) भा० स्त्री० लड़कपन, बालकपन ।

प्रा० **लड़खड़ाना** क्रि० अ० डगमगाना, डिगना, २ हकलाना ।

सं० **लड़न** भा० स्त्री० लड़ाई करना, झगड़ा करना ।

प्रा० **लड़ना** (सं० लड्=जीभ हिलाना) क्रि० अ० लड़ाई करना, झगड़ना, बखेड़ा करना, युद्ध करना ।

प्रा० **लड़ाई** भा० स्त्री० झगड़ा, बखेड़ा, युद्ध, जंग ।

प्रा० **लड़ाईकरना** बोल० झगड़ना, लड़ना, बखेड़ा करना, युद्ध करना ।

ा० लड़ाक
लड़ाका } (लड़ना) गु० लड़ने वाला, लड़ाई करने वाला, झगड़ालू, बखेड़िया ।

ा० लड़ियाना क्रि० स० पिरोना, गूथना, पोना ।

ा० लड़ी स्त्री० मोतियों की पाँति ।

ा० लड्डू (सं० लड्डुक, लड्=चाहना, विलास करना) पु० लाडू, मोदक, मोतीचूर—मन के लड्डू खाना, बोल० मनही मन में ऐसी बातों का विचार बाँधना जो हो नहीं सकीं ।

प्रा० लंठ गु० मूर्ख, गँवार, अनपढ़ ।

प्रा० लंडूरा गु० बांड़ा, बिन पूंछ का, २ बेमित्र, मित्रों से छोड़ा हुआ, तनहा, अकेला ।

प्रा० लत स्त्री० बुरीचाल, कुटेव, २ लहर, तरंग, ३ लात ।

प्रा० लत (सं० लता) स्त्री० बेल, बेली ।

सं० लता (लत्=उलझना वा चोट करना) स्त्री० बेल, बेलड़ी, बेली, माधवी, निवाड़ी, बेला, दूर्वा ।

सं० लतातरु पु० शालवृक्ष, नारंगी वृक्ष, तालवृक्ष, खजूर ।

सं० लतापनस पु० कालिंग, तरबूज़, खरबूज़ा ।

सं० लतामणि पु० प्रवाल, मूंगा ।

प्रा० लत्ता (फ़ा० लत्तह) पु० चीथड़ा, फटापुरानाकपड़ा, २ ज्योतिष में एक योग का नाम ।

प्रा० लथड़ना क्रि० अ० कीचड़ से भीगना या कीचड़ लगजाना ।

प्रा० लदना क्रि० अ० लादाजाना ।

प्रा० लप स्त्री० मुट्ठीभर, मुक्काभर ।

प्रा० लपकना क्रि० अ० लहकना, तेज़चलना, चमकना, २ उछलना, कूदना ।

सं० लपन (लप्+अन, लप्=कहना) पु० कथन, मुख, आस्य, वचन ।

प्रा० लपका पु० झपट, २ फुर्ती, ३ चाट, बुरीचाल, चसका ।

प्रा० लपट स्त्री० महक, बास, सुगन्ध, २ दहक, लहर, भभक, लूका ।

सं० लपित कर्म० पु० कहा हुआ ।

प्रा० लप्पा पु० पट्टा, गोटा, किनारी ।

प्रा० लबार (सं० लप्=बकना) पु० झूठा, गप्पी, बहुत बोलनेवाला ।

सं० लब्ध (लभ्=पाना) कर्म० पु० पाया हुआ, प्राप्त ।

सं० लब्धवर्ण पु० पण्डित, शास्त्री, विचक्षण ।

सं० लब्धि स्त्री० प्राप्ति, ख़ारिज क़िस्मत ।

सं० लभ्य (लभ्=पाना) कर्म० पु० पानेयोग्य, मिलनेयोग्य, हासिल ।

प्रा० लमकाना
लमहा
लम्भा } (सं० लम्बकर्ण) पु० शशा, खरहा, ख़रगोश, बकरा, गणेश, हाथी ।

सं० लम्पट (रम्=खेलना) गु० व्यभिचारी, कुकर्मी, रंडीबाज़, लुच्चा, २ झूठा ।

सं० लम्फ भा० पु० प्लुतगति, लपकना, तेज़चाल ।

सं० लम्ब (सं० लम्ब्=ठहराना या नीचे लटकाना) गु० ऊँचा, लम्बा, बड़ा, फैला हुआ, पु० नर्तक, नचैया, कान्त, उत्कोच, लोलुप, आसक्त, २ स्त्री० नापविद्या में खड़ी लकीर, अमूद ।

सं० लम्बक पु० विभाग, समय, सारथी ।

सं० लम्बन भा० पु० मालाकार, कण्ठा, हार, लम्बाई ।

प्रा० लम्बा (सं०लम्ब) गु० ऊँचा, बड़ा ।

प्रा० लम्बाकरना बोल० फैलाना, बढ़ाना, २ पीटना, मारना ।

प्रा० लम्बी सांसभरना बोल० रोना, विलाप करना ।

सं० लम्बोदर (लम्ब + उदर) पु० गणेशजी, गु० लम्बे पेटवाला ।

सं० लम्बोष्ट्र (लम्ब + उष्ट्र) पु० लम्बा ऊँट ।

सं० लय (ली=मिलना) पु० लीन, मिलना, मगन होना, २ नाश, प्रलय, ३ टेर, ताल, स्वर ।

सं० लयपालक क०पु० राशि बैठा, मुतबन्ना ।

प्रा० ललकना क्रि० अ० चढ़ना, धावा मारना, क्रि० स० चाहना ।

प्रा० ललकारना क्रि०स० पुकारना, हाँकना, बुलाना, साम्हने करना, लड़ाई माँगना ।

प्रा० ललचाना (लालच) क्रि०अ० तरसना, बहुत चाहना, लालसा करना ।

सं० ललन भा० स्त्री० नारी, जिह्वा, केलिकला ।

सं० ललना (लल्=चाहना) स्त्री० लुगाई, नारी, स्त्री, कामिनी, सुन्दरी ।

प्रा० लला (सं० लल्=चाहना) पु० लाल, बालक, गु० प्यारा, दुलारा, लाड़ला ।

सं० ललाट (लल् वा लड्=चाहना या खेलना) पु० शिर का अगला भाग, भाल, २ कपाल, प्रालब्ध ।

सं० ललाम (लल्=चाहना) गु० सुन्दर, मनोहर, २ पु० लाञ्छन, चिह्न, ३ ध्वजा, पताका, ४ शृङ्ग, ५ प्रधान, ६ भूषण, ७ घोड़ा ।

सं० ललित (लल्=चाहना) गु० सुन्दर, मनोहर, मनभावन, २ चञ्चल, ३ कोमल, ४ प्यारा, ५ स्त्री० एक रागिणी का नाम ।

सं० ललिता (लल्=चाहना) स्त्री० एक गोपी का नाम जिसने उद्धव जी से बात चीत की थी ।

प्रा० लल्लोपत्तो पु० चापलूसी,

खुशामद ।

सं० लव (लू=काटना) पु० क्षण, पल, निमेष, २ हिसाब में भिन्न का अंश, भाग, ३ श्रीरामचन्द्र का बड़ा बेटा, ४ लौंग ।

सं० लवङ्ग (लू=काटना) स्त्री० लौंग, एक तरह की औषध ।

सं० लवण (लू=काटना) पु० लोन, नोन, निमक, नमक, गु० खारा ।

सं० लवणसमुद्र } लवणसागर } (लवण + समुद्र वा सागर) पु० खारासमुद्र ।

प्रा० लवा (सं० लाव, लू=काटना) पु० बटेर, एक तरह का पखेरू ।

सं० लशुन पु० लहसन, लसुन ।

सं० लषित (लष्=चाहना वा भला दीखना) कर्म० पु० विलोकित, दर्शित, चाहा हुआ, २ शोभायमान ।

प्रा० लसना (सं० लस्=मिलना वा खेलना वा चमकना) क्रि० अ० सोहना, चपकना, फबना, सजना, २ चमकना ।

प्रा० लसलसा गु० चिपचिपा, लसीला ।

सं० लसा स्त्री० हरिद्रा, हल्दी, २ चिपटाहुआ ।

सं० लस्त क० पु० थकित, श्रमित ।

प्रा० लहँगा पु० घेंघरा ।

प्रा० लहकना क्रि० अ० चमकना, झलकना, २ लहरना, लू का उठना, तपकना, ३ हिलना ।

प्रा० लहकौर (लेह्य + कवल) दही बतासा जो वर को स्त्रियां खिलाती हैं ।

प्रा० लहना (सं० लभ्=पाना) क्रि० स० लेना, पाना, जानना, मालूम करना, २ पु० क़र्ज़, ऋण, ३ भाग, नसीबा, क़िस्मत ।

प्रा० लहर (सं० लहरि) स्त्री० तरंग, हिलोरा, ढेऊ, हिलकोर, २ मनकी तरंग या मौज, ललक, ३ साँप के ज़हर चढ़ने से देह का लहराना, ४ रंगने में अथवा कारचोबी में निकली हुई धारी ।

प्रा० लहरना क्रि० अ० हिलकोरना, हिलना, डोलना, २ जलन होना, ३ जलउठना ।

प्रा० लहराना क्रि० स० ललचाना, तरसाना, क्रि० अ० हिलकोरना, लहर उठना ।

प्रा० लहरिया (लहर) पु० एकतरह का रँगा हुआ कपड़ा ।

प्रा० लहरी गु० तरंगी, चञ्चल, मौजी, ओछा ।

प्रा० लहलहाना क्रि० अ० फफकना, सरसब्ज़होना, खिलना, बिकसना, फूलना, हरा होना, डहडहाना ।

प्रा० लहसन (सं० लशुन, लश्=मिलना) पु० एक तरह का क़न्द ।

प्रा० लहसनियां एक तरह का

बढ़िया पत्थर ।

प्रा० लहू लेहू लोहू (सं० लोहित, रुह्=पैदा होना) पु० ख़ून, रुधिर, रक्त ।

प्रा० लहूलुहान बोल० लोहू से भरा हुआ, रक्त में डूबा हुआ ।

प्रा० लाई लिये, वास्ते ।

प्रा० लांक लंक स्त्री० कटि, कमर, २ लासा, ३ भूसी, भूसा ।

प्रा० लाँघना (सं० लङ्घन) क्रि० स० कूदना, फाँदना, चढ़ना, २ पार होना, तैरना ।

सं० लाक्षा (लक्ष्=चिह्न करना) स्त्री० लाख, लाह ।

सं० लाक्षणिक क० पु० लक्षण युक्त, अर्थबोधक शब्द, यौगिक ।

सं० लाक्षण्य क० पु० शुभाशुभ, लक्षणज्ञ, बुराई भलाई का बोधक ।

प्रा० लाख (सं० लक्ष) गु० सौ हज़ार ।

प्रा० लाख (सं० लाक्षा) स्त्री० लाह जिससे काग़ज़ पत्र बन्ध किये जाते हैं, २ जिसके रंग से महौरि या महावर बनता है ।

प्रा० लाग (सं० लङ्ग=मिलना) स्त्री० मारना, चोट, २ लगान, लगाव, ३ वैर, द्वेष, द्रोह, ईर्षा, डाह, ४ प्यार, छोह, मोह, ५ मेल, सम्बन्ध, ६ लागत, ख़र्च, ७ क़सूर, चूक ।

प्रा० लागत स्त्री० ख़र्च, उठान ।

सं० लाघव (लघु) भा० पु० हलकाई, छोटापन, लघुता, क्षुद्रता, अपमान, २ आरोग, नीरोगता, तन्दुरुस्ती ।

सं० लाघवेन संक्षेपतः, मुख़्तसरन्, क़िस्सा कोताह ।

सं० लाङ्गल (लगि=मिलना) पु० हल ।

सं० लाङ्गूल प्रा० लङ्गूल (लगि=मिलना या लगारहना) स्त्री० पूंछ ।

प्रा० लाज (सं० लज्जा) स्त्री० शर्म, हया, संकोच, लज्जा ।

सं० लाज पु० उशीर, २ खस, लावा, लाई ।

सं० लाजावर्त्त (लाज+आवर्त) पु० सायबान, रावटी, छोलदारी ।

सं० लाञ्छन (लाञ्छ्=चिह्न करना, दाग़ लगाना) पु० चिह्न, २ कलङ्क, दाग़, ३ नाम ।

सं० लाञ्छना भा० स्त्री० निन्दा, बुराई, तिरस्कार ।

सं० लाञ्छित कर्म० अपमानित, तिरस्कृत, निन्दित ।

सं० लाट पु० देशान्तर, २ वस्त्र, पट वस्त्र, गु० जीर्ण, प्राचीन, पुराना ।

प्रा० लाटी स्त्री० कैंटी, फैफड़ी, जो होठ और तालू के सूखने से होठों पर पड़जाती है ।

प्रा० लाठ (सं० यष्टि) स्त्री० खम्भा, मीनार, २ सोंटा, ३ कोल्हू का लाठा ।

प्रा० लाठी (सं० यष्टि) स्त्री० लकड़ी, सोंटा, छड़ी ।

प्रा० लाड़ (सं० लड्=खेलना) पु० प्यार, मोह, छोह, खेल ।

प्रा० लाड़लड़ाना बोल० दुलाना, प्यार करना ।

प्रा० लाड़ला (लाड़) गु० प्यारा, दुलारा, लड़ैतालाल ।

प्रा० लात स्त्री० पाँव की मार ।

सं० लाभ (लभ्=पाना) पु० फ़ायदा, फल, प्राप्ति, पाना, मिलना, नफ़ा ।

प्रा० लाल (सं० लल्=चाहना या लड्=खेलना) गु० प्यारा, प्रिय, लाड़ना, दुलारा, २ लालरँग, रक्त वर्ण, ३ पु० छोटाबालक, बेटा, ४ (सं० लाला) स्त्री० लार, थूक ।

प्रा० लालबुझक्कड़ पु० बुद्धिमान् मनुष्य जो हर बात को झट समझ जाय या जो होनेवाला हो उस को सोच विचार के पहले से कहदे पर यह शब्द ठट्ठे से या तानासे ऐसे मूर्ख आदमीके लिये बोलाजाता है जो और सब आदमियों से अपने तईं अधिक बुद्धिमान् समझता हो और सचमुच निरा गँवार हो जैसे ऐसे आदमियोंने कि जो कभी हाथी नहीं देखा था, उसके पाँवों के निशान कीचड़ में देखकर लालबुझक्कड़ से पूछा कि [illegible] क्या है ? तब उसने उत्तर दिया, कि " यह तो बूझे लालबुझक्कड़, और न बूझे कोय । पाँयन चक्की बाँध कर, कहिं हरना कूदा होय । " अर्थ– यह बात सिवाय लालबुझक्कड़ के और कोई नहीं समझ सका है क्या हरिन तो अपने पैरों में चक्की बाँध कर यहाँ नहीं कूदा है ।

प्रा० लालच (सं० लालसा) पु० लोभ, चाहना, तृष्णा, तमअ ।

प्रा० लालची गु० लालच करने वाला, लोभी, आपस्वार्थी, खुदग़रज़ ।

सं० लालन (लल्=चाहना) पु० बहुत सनेह करना, बहुत प्यार से बालक को पालना, खिलाना, फुसलाना, दुलारना ।

प्रा० लालना (सं० लालन) क्रि० स० लड़ाना, बहुत प्यार से बालक को पालना ।

सं० लालसा (लस्=चाहना) स्त्री० बहुत चाह, इच्छा, अभिलाष ।

प्रा० लाला पु० साहिब, बाबू, २ गुरु, पढ़ानेवाला, मास्टर, ३ कायथों की और महाजनों की पदवी ।

सं० लालित (लाल्+इत, लल्= स्नेह सहित प्यार) कर्म० पु० पालित, लाड़ित ।

सं० लाला स्त्री० पसेव, पसेउ, मुँह की लार, थूक ।

सं० लालाटिक पु० प्रभु, भाग्योप-

जीवी, भाग्याधीन, भाग्य का भरोसा करनेवाला ।

सं० लालित्य (ललित) भा०पु० सुन्दरता, मनोहरता, कोमलता ।

प्रा० लाली (लालना) क्रि० स० लड़ाई, प्यार किया, दुलार किया, २ (सं०लल्=चाहना) गु०दुलारी, प्यारी, ३ स्त्री० ललाई, सुर्खी ।

सं० लाल्य म्र्म० पु० लालनाई, प्यारयोग्य, लालनीय ।

सं० लावण्य (लवण) भा० पु० देह सौन्दर्य्य, सुन्दरता, शोभा, २ नमकीनी, नमक का स्वाद ।

सं० लास पु० नृत्य, नाच, मोद ।

सं० लासक क० पु० मयूर, मोर, २ नर्तक, नाचनेवाला ।

प्रा० लाह (सं०लाक्षा) स्त्री०लाख।

प्रा० लाह
लाहा } (सं०लाभ)पु०लाभ, फ़ायदा, फल ।
लाहू

प्रा० लिखतं (सं० लिखित) म्र्म० पु० लिखाहुआ काग़ज़ जैसे क्रिवाला, तमस्सुक आदि ।

सं० लिखक (लिख् + अक) क० पु० लिखनेवाला, कातिब ।

प्रा० लिखना (सं० लिखन, लिख् =लिखना) क्रि० स० लिखाई करना, लिख देना ।

प्रा० लिखलेना बोल० नक़ल करना, लिख रखना ।

प्रा० लिखा (लिखना) पु० भाग, प्रालब्ध, कर्म, होनी, होनहार, २ लेख, लिखावट, म्र्म०लिखा हुआ।

प्रा० लिखाई (लिखना) भा०स्त्री० लिखने के दाम, २ लिखने की मिहनत, ३ लिखने का काम, लेखकी।

प्रा० लिखावट भा० स्त्री० लिखने का या लिखाई का काम, तहरीर।

सं० लिखित (लिख्=लिखना) म्र्म० लिखा हुआ, २ पु० लेख, चिट्ठी, पत्र, लिपि ।

सं० लिखितव्य म्र्म० पु० लिखने योग्य, लेखनीय, लिखनेलायक़।

सं० लिङ्ग (लिगि=जाना वा चित्र या चिह्न करना) पु० पुरुषचिह्न, इन्द्री, २ शिव की मूरत, ३ (व्याकरण में) जाति, जैसे पुंलिङ्ग, स्त्रीलिंग आदि ।

सं० लिङ्गित म्र्म० पु० चिह्नित ।

प्रा० लिट्टी स्त्री० बाटी, अँगाकड़ी, आटे का गोला जिसको अँगारों में पकाकर खाते हैं ।

प्रा० लिपटना क्रि० अ० चिपकना, सटना, मिलना ।

सं० लिपि } (लिप्=लेपना) भा०
लिपी } स्त्री० लिखा हुआ काग़ज़, लिखित, लेख, हस्ताक्षर, हाथका लिखा हुआ, नक़ल ।

सं० लि[illegible] } क० पु० लेखक,
लि[illegible] } चित्रकार ।

सं० लिपिसज्जा स्त्री० क़लमदान ।

सं० लिप्त (लिप्=लेपना) कृ० लिपा हुआ, पोता हुआ, मिला हुआ, लेसा हुआ, चर्चा हुआ ।

सं० लिप्सा स्त्री० लाभ, कांक्षा, लाभवासना, आग्रह, ख़्वाहिश ।

सं० लिप्सित कर्म० पु० वाञ्छित ।

सं० लिप्सु कृ० पु० वाञ्छक, ख़्वाहिशमन्द ।

प्रा० लिम्र पु० कलङ्क, दाग़, २ चिह्न ।

प्रा० लिलाट
लिलाड़
लिलार } (सं० ललाट) पु० शिर का अगला भाग, ललाट, भाल, २ कपाल, प्रारब्ध, भाग ।

प्रा० लिवैया (लेना) कृ० लेनेवाला ।

प्रा० लीक
लीका } (सं० लेखा) स्त्री० गाड़ी के पहिये का निशान, पगडंडी, लकीर, २ कलंक, दाग़ ।

प्रा० लीख स्त्री० जूंका अंडा ।

प्रा० लीचड़ गु० सूम, कञ्जूस, कृपण, लोभी ।

प्रा० लीची स्त्री० एक फल जो चीनदेश से फैला है ।

अं० लीडर अगुवा, पेशवा ।

सं० लीढ़ (लिह्=स्वाद लेना) कर्म० पु० आस्वादित, स्वादयुक्त ।

प्रा० लीतरा पु० पुराना जूता ।

सं० लीन (ली=मिलना वा गलना) कृ० लय, लगाहुआ, मिलाहुआ, डूबा हुआ, मग्न, २ गला हुआ, ३ सोखा हुआ ।

प्रा० लीपना (सं० लेपन) क्रि० स० पोतना, लेसना, थोपना ।

प्रा० लीमू (सं० निम्बु, निम्ब्=सींचना) पु० नींबू, लेमू, एक खट्टा फल ।

प्रा० लीर स्त्री० धज्जी, कतरन, कपड़े का टुकड़ा ।

प्रा० लील (सं० नील) स्त्री० नील, गु० नीला ।

प्रा० लीलना क्रि० स० निगलना ।

सं० लीला (ली=मिलना या ला=लेना) स्त्री० खेल, क्रीड़ा, विहार, विलास, कामकेलि, शृंगारभाव ।

सं० लीलावती (लीला) स्त्री० विलास करनेवाली स्त्री, २ भास्कराचार्यकी बेटी का नाम, ३ संस्कृत में एक गणितविद्या की पुस्तक का नाम ।

सं० लीलहि स्त्री० विनाश्रम, बे मेहनत, २ खाय, निगल जाय ।

प्रा० लुकना क्रि० अ० छिपना ।

प्रा० लुकाना क्रि० स० छिपाना ।

प्रा० लुगाई
लोगाई } (लोग) स्त्री० नारी, स्त्री ।

सं० लुञ्चन (लुच=ऊपर जाना, नोचना) भा० पु० उत्पाटन, उखाड़ना, नोचना ।

प्रा० लुटना (सं० लुट=लुटना या

लूटना) क्रि० अ० लुटजाना, छिनजाना ।

प्रा० लुटिया स्त्री० छोटा लोटा ।

प्रा० लुटेरा ⎫ (लूटना) क० पु०
लुटेरू ⎭ लूटनेवाला ।

सं० लुठन (लुठ=लुण्ठन) भा० पु० घोड़ाआदिका धरती पर श्रम दूर करने के लिये लोटना ।

सं० लुण्ठक (लुण्ठ=चोरी करना) क० पु० चोर, स्तेयकारक ।

सं० लुण्ठित र्म्म० पु० अपहृत, चोरित, चुराया हुआ ।

प्रा० लुढ़कना ⎫ (सं०लुठन, लुठ्=
लुढ़ना ⎭ ढुलकना) क्रि० अ०ढुलकना, गिरना, ढनमनाना ।

प्रा० लुढ़कजाना बोल०मरजाना ।

प्रा० लुढ़ाना (लुढ़ना) क्रि० स० ढुलकाना, लुढ़काना, गिरा देना ।

प्रा० लुपरी स्त्री०एकतरह की लपसी।

सं० लुप्त (लुप्=काटना)क०पु०नष्ट, बरबाद, छिपजाना, अदृश्य, गुप्त ।

सं० लुब्ध ⎫ (लुभ्=लोभ करना
लुब्धक ⎭ या मोहना) क० पु० लोभी, लालची, २ शिकारी, ३ लुच्चा, लम्पट ।

प्रा० लुभाना (सं० लोभन) क्रि० स०ललचाना, मोहना, तरसाना, चाहना ।

प्रा० लुभित र्म्म० पु० आकांक्षित, ख़्वाहिशमन्द ।

प्रा० लुहाँगी (लोह) स्त्री० ऐसी लाठी जिस पर लोहा जड़ा रहताहै।

प्रा० लुहार ⎫ (सं०लोहकार) पु०
लोहार ⎭ लोहे का काम बनाने वाला ।

प्रा० लू स्त्री० गर्महवा, लूक, लपट ।

प्रा० लूक ⎫ (सं० उल्का) पु०
लूका ⎭ आग की चिनगारी, पतंगा, लपट ।

प्रा० लूकालगाना बोल० आग लगाना, जलाना, २ झगड़ा उठाना, बखेड़ामचाना ।

प्रा० लूट (सं० लुट्=लूटना) भा० स्त्री० डकैती, लूटपाट ।

सं० लूटक पु० कमरबंद, २ लूटने वाला, ठग ।

प्रा० लूटपूट बोल० लूटना और उजाड़ना ।

प्रा० लूटना (सं०लुट्=लूटना) क्रि० स० छीनलेना, लूटपाट करना ।

प्रा० लूटपाट बोल० लूटना और मारलेना ।

प्रा० लूटालूट बोल० लूट, छीना, झपटी ।

प्रा० लूणी ⎫ (लवण) गु० लोना,
लूनी ⎭ खारा, २ (सं० नवनीत) मक्खन, माखन ।

प्रा० लून (सं० लवण) पु० निमक, नमक, लोन ।

सं० लून (लू=छेदना, काटना)

र्म० पु० काटा गया, लूना गया।

ा० लूनिया (सं० लवण) गु० खारा, २ पु० एक पौधा, ३ बेलदार, वह आदमी जो और के लिये रस्ता साफ़ करताहै, ४ नमक बनाने वाला, ५ बनियों की एक जाति।

ं० लूम पु० लाङ्गूल, पुच्छ, पूँछ।

ा० लूला गु० बिन हाथ का, टुंडा, लुंजा।

ा० लेई स्त्री० आटेका कलप या माड़ी जिससे काग़ज़ आदि साटते हैं।

ा० लेंड़ी स्त्री० बकरी की मेंगनी, २ एक तरह का कुत्ता, गु० नामर्द, असमर्थ।

सं० लेख (लिख्=लिखना) भा० पु०लिखा हुआ काग़ज़,पत्र,लिपि।

सं० लेखक (लिख्=लिखना) क० पु० लिखनेवाला, मोहर्रिर।

सं० लेखनी (लिख्=लिखना) ग० स्त्री० लिखने की चीज़, क़लम।

सं० लेखनीय र्म्म० पु० लेख्य, लिखितव्य, लिखनेलायक़।

सं० लेखा (लिख्=लिखना) पु० हिसाब, गणित, २ स्त्री० लकीर, रेखा।

सं० लेख्य (लिख्=लिखना) र्म्म० पु० लिखने योग्य, २ पु० चिट्ठी, पत्री, लिखा हुआ काग़ज़।

सं० लेख्यगृह धि० पु० दफ़्तर, कचहरी।

प्रा० लेटना क्रि० अ० सोना, आराम करना।

प्रा० लेनदेन भा० पु० }
लेवादेई भा० स्त्री० } (लेना देना) ब्यौपार, व्यवहार।

प्रा० लेना (सं० ला=लेना) क्रि० स० लेलेना, ग्रहण करना, गहना, पकड़ना, स्वीकार करना, चुनना, ख़रीदना।

सं० लेप(लिप्=लेपना) पु० लेपन, मरहम, मलहम।

सं० लेपक क० पु० जर्राह।

सं० लेपन भा० पु० लेसनेकी वस्तु, मरहम।

सं० लेप्य र्म्म० पु० लगाने के योग्य, लेसने के लायक़।

प्रा० लेपालक (ले=पालना) पु० गोदलिया हुआ बेटा, धर्म का बेटा, पोष्यपुत्र, मुतबन्ना।

प्रा० लेवा (लेना)पु० लेनेवाला, पर्थन।

सं० लेश (लिश्=थोड़ा होना) गु० थोड़ा, छोटा, अल्प, किंचित्, पु० छोटाई, अल्पता, कण।

सं० लेशमात्र गु०थोड़ाभी,लघुतर।

सं० लेह्य (लिह्=स्वाद लेना,चाटना) र्म्म० चाटने योग्य,पु०अमृत।

अं० लैस तैयार कपड़ा के किनारे का फ़ीता।

प्रा० लोई (सं० लोमीय, लोम)

स्त्री० एक तरह का ऊनी कपड़ा, छोटा कम्बल, २ मुँहकी चमक, लावण्यता ।

प्रा० लों } नित्य सं० तक, तलक,
लौं } लग, अवधि ।

प्रा० लोंग } (सं० लवङ्ग) स्त्री० एक
लौंग } तरह का गर्म मसाला ।

प्रा० लोंदा पु० मिट्टी का ढेला ।

सं० लोक (लोक्=देखना) पु० लोग, मनुष्य, २ भुवन, सृष्टि के विभाग, तीन लोक प्रसिद्ध हैं (१ स्वर्गलोक अथवा देवलोक अर्थात् देवताओं के रहने की जगह, २ मर्त्यलोक यह संसार जिसमें मनुष्य रहते हैं, ३ पाताललोक अर्थात् नीचे का लोक) कितने एक ग्रन्थों में सात लोक लिखे हैं (१ भूर्लोक, पृथ्वी, २ भुवर्लोक जिसमें ऋषि, मुनि और सिद्ध आदि रहते हैं और वह सूर्य और पृथ्वी के बीच में है जिसको अन्तरिक्ष भी कहते हैं, ३ स्वर्लोक अथवा स्वर्ग जिसमें इन्द्र और देवता रहते हैं और वह सूर्य और ध्रुव के तारे के बीच में है, ४ महर्लोक जिसमें भृगु आदि ऋषि रहते हैं जो ब्रह्मा के जीने तक जीते रहते हैं और जब तीन लोक में प्रलय होजाता है और उसकी लपट महर्लोक तक पहुँचती है तब वे सब ऋषि ५ जनलोक में चढ़ जाते हैं जिसमें ब्रह्मा के बेटे सनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमार रहते हैं, ६ तपोलोक जहाँ तपस्वी रहते हैं, ७ सत्यलोक अथवा ब्रह्मलोक अर्थात् ब्रह्मा का लोक इनमें के पहले तीन लोक हर एक कल्प अर्थात् ब्रह्मा के दिन के अन्त में नाश होजाते हैं और पिछले तीन लोक ब्रह्मा के जीने तक अर्थात् ब्रह्मा के १०० बरस तक रहते हैं और चौथा महर्लोक भी उसी समय तक रहता है पर नीचे के तीन लोक प्रलय के समय में जलते हैं तब उसकी तपनके कारण वहाँ कोई नहीं रहता बहुत से ग्रन्थों में १४ लोक लिखे हैं—७ लोक यही जो ऊपर लिखे गये और ७ पाताल हैं जिनको पाताल शब्द के वर्णन में देखो।

लोकखण्ड अथवा कतिपयदेशों और प्रदेशों के प्राचीन संस्कृत और आधुनिक नाम पाठकों के सुभीते के हेतु उद्धृत किये जाते हैं—

आधुनिक प्रचलित एशिया का संस्कृत नाम 'असेचनक' अथवा 'विष्णुक्रान्त' अनुमित है इसी प्रकार यूरोप का 'इषुजात' वा 'अश्वक्रान्त' है यथा—

(भविष्यपुराणे)

"इषुजाते नराः शुक्लाः
शूराः शिल्पविशारदाः ।
वाणिज्यादिरताः क्रूरा
मायामोहविमिश्रिताः" ॥
अफ्रीका का संस्कृतनाम सूर्यारिका
वा रथक्रान्त है यथा (भविष्यपुराणे)
"रथक्रान्ते नराः कृष्णाः काले
प्रायशो विकृताननाः । बदशक्ल
आममांसभुजः सर्वे कच्चामांस खाने वाले
शूराः कुञ्चितमूर्द्धजाः ॥ घूंघरबाल वाले

प्राचीननाम	आधुनिकनाम
आवर्तन	ब्रिटेन
इन्द्रद्वीप वा इन्दुद्वीप	इङ्गलेण्ड
रोम वा रूम	रोम
पटचर	इटली
पशुशील	पोर्टुगाल
क्रौञ्च	जरमनी
सैनिक वा कुक्कुट	हालेण्ड, बेलजियम
अश्वक वा अश्वीया	अस्ट्रीया
मलिया, कुहक	गाल वा फ्रांस
तामसदेश	स्पेन
माठक वा मारक	डेन्मार्क स्केण्ड नेविया
बर्बर	बारबरी
वारिधान, वारुण	अफ्रीका का उपद्वीप
शक	एशियाई
तुरुष्क	तुर्की
रुष	रसिया
हैख	सैबीरिया
तुखारा	बुखारा
पारट, महाचीन	चीन
तालतोषक	तिब्बत
पार्वत	तातार
बाह्लीक	बलख
आवर्त	अरब
पारस्य	ईरान
यवन	यूनान
नर्दिनाश, कारस्कार	मदानी
पह्नव	काबुल
गन्धार	कन्धार
अपवाह, अपरान्त	मस्कत
सिंहलद्वीप	सीलोन
उपमलवका	मलाका
ब्रह्मोत्तर ब्रह्मदेश	ब्रह्मा
कुमारिका	हिन्दुस्थान
कुमारद्वीप, स्वर्णभूमि	अमेरिका
उत्तरकुमार	उत्तर अमेरिका
दक्षिणकुमार	दक्षिण अमेरिका
तलह	ब्राज़ील

हिरण्यपुर	पेरू
रमणक	अस्ट्रेलेशिया
स्वर्णप्रस्थ	पालिनेशिया

कुमारिका नाम हिन्दुस्थानान्तर्गत प्रदेशों के नाम

दरद	भूटान
दरदलिंग	दारजिलिंग
पञ्चनद	पंजाब
गैरिककाश्मीर	काश्मीर
उत्तरकोसल	फ़ैज़ाबाद नव्वाबगंज
काशी	बनारस
कुरुजाङ्गल	कुरुक्षेत्र
इन्द्रप्रस्थ	दिल्ली
अवन्ति, विशाला	उज्जैन
गुर्जराट	गुजरात
काञ्ची	करनाट
पाण्ड्य	मलावार
किष्किन्धा	दक्षिणदेश
केकय	हिरात
माहिषक	मैसूर
उत्कल, ओड्र	उड़ीसा
सुराष्ट्र,	महाराष्ट्र
सिन्धुसौवीर	सिन्धदेश
विदेह, मिथिला	तिरहुत
महोदय, कान्यकुब्ज	क़न्नौज
मगध, कीकट	गया
पाटलिपुत्र	पटना
अङ्ग	राजमहल, आरा
चम्पा	भागलपुर
पुण्ड्र	मेदिनीपुर
बङ्ग, गौड़	बंगाला
प्राग्ज्योतिष	कामरूप
सूरसेन	मथुरा
अन्ध्र	तिलंगाना
कलिङ्ग	उत्तरीय सरकार
कुलूत	कूलू
चेदि	चन्देरी
चोल	कर्नाटक
अश्मक	ट्रावंकोर
विदर्भ	बरार
श्रावस्ती	(सहेट महेट) एकौना
सौराष्ट्र	काठियावाड़

सं० **लोकनाथ** (लोक + नाथ) पु० राजा, २ शिव, ३ ब्रह्मा, ४ विष्णु।

सं० **लोकप** (लोक=सृष्टि वा भुवन, पा=बचाना) पु० लोकपाल।

सं० **लोकपाल** (लोक, पाल=पालना) पु० राजा, दिक्पाल।

सं० **लोकबान्धव** पु० सूर्य।

सं० **लोकलोचन** पु० सूर्य।

सं० **लोकमाता** (लोक + माता) स्त्री० संसार की माँ, लक्ष्मी।

सं० **लोकयात्रा** स्त्री० संसृति, जन्म-मरण, लोकव्यवहार, प्राणरक्षा, रोज़ी, आजीविका।

अं० **लोकल** देशीय, मुक़ामी, स्थानीय।

अं० लोकल स्यल्फ गवर्नम्यएट स्थानीय आत्मशासनप्रणाली, खुद इख़्तियारी, मुक़ामीहुकूमत, जैसे आनरेरी मजिस्ट्रेट ।

सं० लोकालोक (लोक=देखना, अलोक=नहीं देखना) पु० एक पहाड़ की श्रेणी जिसको सोचते हैं कि सातों समुद्रों को घेरे हुये है और इस संसार की सीमा है ।

सं० लोकेश (लोक + ईश) पु० ब्रह्मा, २ राजा ।

प्रा० लोग (सं० लोक) पु० मनुष्य, आदमी, जन ।

सं० लोकापवाद पु० अपकीर्ति, लोकनिन्दा, अंगुश्तनुमाई ।

सं० लोचक (लोच् + अक) पु० मांसपिण्ड, नेत्रतारा, काजल, बेंदी, टीका, नीलवस्त्र, कर्णफूल, कदली, साँपकी केचुली ।

सं० लोचन (लोच्=देखना) गु० पु० आँख, नेत्र, नयन, २ संख्या ।

प्रा० लोटना (सं० लुट्=फिरना, घूमना) क्रि० अ० घूमना, फिरना, रोलना, २ तड़फना, छटपटाना ।

प्रा० लोटपोटहोना बोल० मोहित होना, किसी के प्यार में डूबना ।

प्रा० लोटा पु० गड़वा, पानी डालने का बरतन ।

प्रा० लोढ़ा (सं० लोष्ट, लोष्ट्=इकट्ठा होना) पु० सिल बट्टा, २ ओसवाल महाजनों की एक जाति ।

प्रा० लोणा } (लवण) गु० खारा,
लोना } २ सुन्दर ।

प्रा० लोथ (सं० लोचक, लोच्=देखना) स्त्री० मरा शरीर, लाश, मृतक ।

प्रा० लोथरा (सं० लोचक) पु० मांस का पिण्ड ।

प्रा० लोदी पठानों की एक जाति ।

प्रा० लोन (सं० लवण) पु० नमक, निमक, नून ।

प्रा० लोनमिर्चलगाना बोल० अपनी तरफ़ से बहुत बढ़ाके कहना ।

प्रा० लोनाई (सं० लावण्य) भा० स्त्री० सुन्दरता, शोभा ।

सं० लोप (लुप्=काटना) पु० काटना, मिटाना, व्याकरण में अक्षर अथवा पद को उड़ा देना या निकाल देना, २ छिपा, अदृश्य, गुप्त, ३ नाश, ४ छीलछाल, काटकूट ।

सं० लोपामुद्रा स्त्री० अगस्त्यऋषि की धर्मपत्नी ।

सं० लोपी क० पु० नाशक, नाशकर्ता ।

सं० लोप्य सर्व० नाशनीय, नाश्य ।

प्रा० लोबान (अ० लुबान) पु० एक तरह की सुगन्धित चीज़ जिसको धूप की तरह देवता के साम्हने आग पर रखते हैं ।

सं० लोभ (लुभ्=लालच करना) पु० लालच, पराये धन के पाने

की चाह, तृष्णा, तमअ ।

सं० **लोभी** (लोभ) क०पु०लालची।

सं० **लोम** (लू=काटना) पु० देह पर के बाल, रोम, रूँगठे ।

प्रा० **लोमड़ी** (सं० लोमशा,लोम) स्त्री० एक जानवर का नाम ।

सं० **लोमश** (लोम अर्थात् जिसके शरीर पर बहुत बाल हों)पु०एक ऋषि का नाम, जिसके गले में राजा परीक्षित ने मरा हुआ साँप डाला था और उसके चेले शृङ्गी ऋषि ने उसको शाप दिया कि सातवें दिन राजा को तक्षक साँप डसेगा तब श्रीशुकदेवजी ने आकर राजा परीक्षित को श्रीमद्भागवत सुनाकर उसका उद्धार किया, गु० जिसके बहुत बाल हों ।

प्रा० **लोयन**(सं०लोचन)पु०आँख।

प्रा० **लोर** (सं०लोल) पु०झुमका, २ आँसू ।

सं० **लोल** (लुल्=हिलना) गु० हिलता हुआ, चंचल, २ पु० आँसू, ३ स्त्री० जीभ, ४ लक्ष्मी ।

सं० **लोलुप** (लुप्=नाश करना अर्थात् सिवाय लोभ के और सब चाह को नाश करना या लुभ्=लोभ करना यहाँ 'भ' को 'प' होजाता है) गु० बहुत लोभी, बड़ा लालची ।

सं० **लोलुभ** (लुभ=लालच करना) गु० बहुत लोभी, बड़ा लालची।

सं० **लोह** } **लौह** } (लुह्=चाहना वा लू=काटना) पु० लोहा, एक तरह की धातु ।

सं० **लोहकार** क० पु० लुहार ।

प्रा० **लोहा** (सं० लोह) पु० ए प्रकार की धातु ।

प्रा० **लोहाबजाना** बोल० तलवार से लड़ना ।

सं० **लोहित** (रुह्=पैदा होना) गु० लाल, पु० लोहू, २ लालरंग ।

सं० **लोहिताक्ष** (लोहित+अक्ष) पु० लालआँख, रक्तनेत्र, विष्णु, कोकिला पक्षी ।

प्रा० **लोहिया** (लोह) गु० लोहका।

प्रा० **लौंडा** पु० लड़का, छोकरा, दास, गुलाम ।

प्रा० **लौंडिया** } **लौंडी** } स्त्री० दासी, छोकरी ।

प्रा० **लौंद** पु०मलमास, अधिकमहीना।

प्रा० **लौ** (सं० लय) स्त्री० जलती हुई बत्ती का शोला या ज्वाला, २ ध्यान, मन, लगन ।

प्रा० **लौलगाना** बोल० ध्यान करना, ईश्वर की उपासना या प्रार्थना में स्थिर होना ।

प्रा० **लौलगना** बोल० ध्यान लगाना, ध्वनि लगना, किसी को बार बार याद करना ।

सं० **लौकिक** (लोक) गु० सांसा-

रिक जो संसार में प्रसिद्ध हो, जो लोकव्यवहार में आता हो, दुनियावी, दुनियवी ।

प्रा० लौटना क्रि०अ० वापसआना, फ़िरना, घूमना, उलटा फिरना ।

प्रा० लौना (सं०लवण,लू=काटना) क्रि० स० काटना, कटनी करना, २ कमबाँट में दूसरा बाँट लगाकर उसे पूरा करना, लगना ।

अं० ल्यजिस्लटिव कौन्सिल न्यायोत्पादनसभा, क़ानून इजराईदरबार।

प्रा० ल्यारी पु० भेड़िया, हुँडार ।

व

सं० व (सं० वा=बहना, जाना) पु० हवा, २ राहु, ३ कल्याण, ४ समुद्र, ५ बाघ, ६ वरुण, ७ मन्त्रण, सलाह, इस अक्षर की जगह हिन्दी में बहुत बार ' ब ' लिखा जाता है इसलिये जो शब्द इसमें नहीं मिले उसको ' ब ' में देखने से मिलेगा ।

सं० वंश (वश्=चाहना) पु०बेटे, पोते,कुल,सन्तान,सन्तति, २बाँस।

सं० वंशभोज्य पु० पितृपितामहप्रभृतिभिरर्जिता भूम्यादिसंपत्, पितृसम्पत्, पुरुषाओं से चली आती जो जीविका, पितरों की सम्पदा ।

सं० वंशलोचन (वंश=बाँस, रुच=चमकना) पु० बाँस में से निकली हुई कपूरसी धौली चीज़ जो बहुत सी औषधियों में काम आती है ।

सं० वंशावली (वंश + आवली) स्त्री० पुरुषों की नामावली, पीढ़ी, परंपरा, वंशक्रम, वंशश्रेणी ।

सं० वंशिका स्त्री०अगर, सुगन्धकाष्ठ, मुरली, वंशरोचन ।

सं० वंशी (वंश=बाँस) स्त्री० बाँस का बना हुआ एक बाजा, बाँसुरी, मुरली ।

सं० वंशीधर (वंशी=बाँसुरी, धर=रखनेवाला, धृ=रखना) पु० श्रीकृष्ण, मुरलीधर ।

सं० वंशीवट (वंशी + वट) पु० एक बड़ का पेड़ जिसके नीचे बैठकर श्रीकृष्णचन्द्र जी वंशी बजाया करते थे ।

सं० वंश्य गु० कुलीन, श्रेष्ठकुलोत्पन्न, पु० पुत्र, (सप्तमपुरुषाद्भिन्नः वंशे भवः)।

सं० वक बक शब्द को देखो ।

सं० वकवृत्ति स्त्री० पु० पाखण्डी, धूर्त, दग़ाबाज़ ।

सं० वकुल पु० मौरश्री वृक्ष ।

सं० वक्तव्य (वच्=बोलना) स्त्री० पु० कहने योग्य, बोलने योग्य ।

सं० वक्ता (वच्=कहना, बोलना) क० पु० बोलनेवाला, कहनेवाला, गोया, स्पीकर ।

सं० वक्त (वच्=बोलना) पु० मुँह, मुख ।

सं० वक्तृता भा० स्त्री० कथन, व्याख्यान, स्पीच, वाज़ करना ।

सं० वक्र (वकि=टेढ़ा होना) गु० टेढ़ा, बाँका, कुटिल, पु० शनैश्चर, जल का भ्रमर, मङ्गलग्रह ।

सं० वक्रनक्र पु० शुकपक्षी, सुग्गा, २ पिशुन, दुर्जन ।

सं० वक्राङ्ग पु० हंस, चकवा पक्षी, सारस, गु० कुब्ज, टेढ़ा अङ्ग ।

सं० वक्रोक्ति (वक्र=टेढ़ा, उक्ति=कहना) स्त्री० टेढ़ा कहना, टेढ़ी बात, व्यङ्ग वचन, कुटिलोक्ति, काकोक्ति, काकुवचन, ताना, २ एक अलङ्कार जिसमें टेढ़ी बात कही जाती है जैसे—

"हम कुलघालक सत्य तुम"
"कुलपालक दश शीश"
अथवा—
"मैं सुकुमारि नाथ वनयोगू"
"तुमहिं उचित वन मोकहँ भोगू"

सं० वक्षःस्थल (वक्षस्=छाती, वह्=लेजाना, और स्थल=जगह) पु० छाती, हृदय, उरस्थल ।

सं० वक्षोज (वक्षस्+ज) पु० उरोज, स्तन, कुच ।

सं० वङ्क (वकि=टेढ़ा करना) गु० बाँका, कुटिल ।

सं० वङ्किल कृ० पु० कपटक, काँसा, त्रिशूल ।

सं० वङ्ग (वगि=जाना) पु० राँगा, एक धातु, २ बंगाला देश ।

सं० वचन बचन शब्द को देखो ।

सं० वचनव्यक्ति स्त्री० बात की सफ़ाई, बात में सफ़ाई ।

सं० वज्र बज्र शब्द को देखो ।

सं० वज्रदन्त पु० शूकर, मूषक, मूस ।

सं० वज्राघात पु० वज्रपात, वज्रसे मारना ।

सं० वञ्चक (वञ्च=ठगना) कृ० पु० ठग, ठगनेवाला, धूर्त, दगाबाज़, २ गीदड़, सियार, ३ बभ्रु, नकुल, न्योला ।

सं० वञ्चित (वञ्च=ठगना) कर्म० पु० ठगा हुआ, ठगा गया, महरूम ।

सं० वट (वट्=घेरना) पु० बड़का पेड़ ।

सं० वटर (वट्=लपेटना) पु० मुर्गा, २ चोर, ३ पगड़ी, ४ आसन, चटाई, ५ लकुट, ६ छड़ी, गु० धूर्त, दुर्जन, कुरूप, आलसी ।

सं० वटी कर्म० स्त्री० औषध की गोली, २ रस्सी ।

सं० वटु (वट्=बोलना) पु० ब्रह्मचारी, २ बालक, विद्यार्थी, ब्राह्मणकुमार ।

सं० वटुक (वट्=बोलना) पु० बालक, २ बालकरूप भैरव ।

सं० वड़ गु० बड़ा, विस्तीर्ण, पु० विस्तार, दीर्घता ।

सं० वडिश पु० कटिया, वंशी, मछलियों के पकड़ने का यन्त्र ।

सं० वण्टक (वण्ट=बाँटना, विभागक) क० पु० बाँट, लोहा या पत्थर के, बाँटनेवाला, विभाजक ।

सं० वत् बराबर, समान, तुल्य, नाईं ।

सं० वत्स (वद्=बोलना, जिससे प्यारसे बोलते हैं) पु० बच्चा, बालक, २ बछड़ा, ३ छाती, ४ बरस, ५ प्यार का शब्द ।

सं० वत्सर (वस्=रहना) पु० बरस, संवत् ।

सं० वत्सल (वत्स=प्यार, ला=लेना) गु० प्यारा, प्रेमी, छोही, मोही, दयालु, कृपालु, रहीम ।

सं० वदन (वद्=बोलना) पु० मुँह, मुख, चिहरा ।

सं० वदान्य पु० दानशील, वक्ता, प्रिय ।

सं० वन (वन्=सेवना, माँगना या शब्द करना) पु० जंगल, विपिन, अटवी, २ पानी, ३ जगह, स्थान ।

सं० वनचर
वनेचर (वन=जंगल, चर=चलनेवाला, चर्=चलना) पु० जङ्गली, वनमानुष, २ वानर, बन्दर ।

सं० वनज (वन=जंगल वा पानी, जन्=पैदा होना) पु० कँवल, कमल ।

सं० वनपांशुल पु० व्याध, बहेलिया ।

सं० वनमाला[१] स्त्री० "तुलसी कुन्द-मन्दार, पारिजाताब्जपुष्पकैः । निर्मिता दीर्घमाला या, वनमाला प्रकीर्तिता" । अर्थ—तुलसी, कुन्द, मन्दार, पारिजात और कमल इनसे बनी हुई ।

सं० वनस्पति (वन=जंगल, पति=मालिक) स्त्री० वनस्पति, ज़मीन से उगनेवाली चीज़ ।

सं० वनित (वन्+इत) कर्म० पु० याचित, माँगा हुआ ।

सं० वनिता (वन्=माँगना, याचना) स्त्री० लुगाई, नारी, पत्नी, प्यारी ।

सं० वन्दनचरित पु० क़ाबिल तारीफ़, प्रशंसा योग्य ।

सं० वन्दन, भा० पु०
वन्दना, भा० स्त्री० (वदि=प्रणाम करना, पूजना वा सराहना) सराह, स्तुति, प्रणाम, नमस्कार, आदाब, सिजदा, सिंदूर ।

सं० वन्दनीय
वन्द्य (वदि=प्रणाम करना वा सराहना) कर्म० पु० सराहने योग्य, प्रणाम या नमस्कार करनेयोग्य ।

सं० वन्दि
वन्दित कर्म० प्रणामकृत, नमस्कार किया गया ।

सं० वन्दीजन पु० भाट, प्रशंसक ।

सं० वन्य (वन) गु० जंगली, वनवासी, बनैला, वनका ।

---

(१) आपादलम्बिनीं मालां वनमालां विदुर्बुधा इति ।

सं० वपन (वप्=बोना) भा० पु० बीज बोना, बीज डालना, २ केश मुण्डन, क्षौरकर्म, बाल बनाना ।

सं० वपनी धि० स्त्री० नापितशाला, हज्जामों का अड्डा ।

सं० वपिल क० पु० पिता, बाप ।

सं० वपुस् (वप्=बोना) पु०शरीर, देह, काय ।

सं० वप्र पु० प्राचीर, खावाँ, परिखा, खाँई, शहरपनाह, धुस्स, मट्टी का टीला, २ बाप ।

सं० वमन (वम्=रद्द करना, कै करना) स्त्री० उलटी, कै, रद्द ।

सं० वमनी स्त्री० जोंक, जलौका, रक्तपा ।

सं० वमित (वम्=रद्द करना) कर्म० पु० रद्द किया हुआ, वमन करता हुआ, वान्त, उगिला हुआ ।

सं० वयस् (वय् अथवा अज्=जाना) स्त्री० उमर, अवस्था ।

सं० वयस्थ क० पु० युवा, समर्थ, बालिग़ ।

सं० वयस्य गु० बराबरवाला, हमउमर ।

सं० वर (वृ=पसन्द करना) पु० आशिष, आशीर्वाद, वरदान, चाही हुई चीज़, २पति, स्वामी, ३जंवाई, गु० सबसे अच्छा, श्रेष्ठ, बड़ा ।

सं० वरण पु० वेष्टन, लपेटना, पूजना, आमन्त्रण ।

सं० वरणा (वृ=पसन्द करना) स्त्री० एक नदी का नाम जो बनारस के उत्तर बहती हुई गङ्गा में मिलती है ।

सं० वरद (वर+दा=देना) क० पु० अभीष्टदाता, अभयदाता ।

सं० वरदा क० स्त्री० दुर्गा, शिवा ।

सं० वरदान (वर+दान) पु० आशिष देना, वर देना, दुआ देना ।

सं० वरदायक (वर+दायक) क० पु० वर देनेवाला, बरदाई, चाहेहुए को देनेवाला ।

प्रा० वररहना बोल० अच्छा रहना, श्रेष्ठ रहना, सरस रहना, जयवन्त होना ।

सं० वरवर्णी (वर=श्रेष्ठ+वर्णी=रङ्ग) स्त्री० गौरी, गोरी स्त्री ।

सं० वराङ्गना (वर=सबसे अच्छी अङ्गना=स्त्री) स्त्री० सुन्दर स्त्री ।

सं० वराटक पु० बीजकोश, बीज का स्थान, कमल का बीज ।

सं० वराटिका स्त्री० कौड़ी, कपर्दिका ।

सं० वराणसी
वाराणसी } (वरुणा एक नदी, और असी एक नदी ये दोनों नदियां बनारस के पास मिलती हैं इसीलिये ऐसा नाम हुआ) स्त्री० बनारस, काशी, शिवपुरी ।

सं० वरासन (वर+आसन) पु० विष्टर, श्रेष्ठासन, राज्यासन, २ द्वारपाल ।

वराह पु० शूकर, विष्णु का अवतार ।

वरुण पु० जल, जलेश, जलपति, २ सूर्य, ३ पक्कामकान ।

वरूथ (वृ=ढकना) पु० रथ के ढकने का कपड़ा, २ समूह, झुण्ड ।

वरूथिनी स्त्री० पृतना, सेना ।

वरेण्य (वृ+एण्य) गु० श्रेष्ठ, मुख्य, उत्तम, प्रार्थनीय, वरदाता ।

वरोरुह गु० श्रेष्ठ जाँघवाली ।

वर्ग (वृज्=ढकना) पु० एक जातिका समूह, गण, २ दर्जा, क्लास, ३ गणित में एक अङ्क को उसी अङ्क से गुना करने से जो फल निकले जैसे ४ का वर्ग सोलह और पाँच का पच्चीस आदि, मजज़ूर, स्क्वायर ।

सं० वर्गमूल (वर्ग+मूल) पु० वर्ग का मूल अर्थात् वह अङ्क जिसका वर्ग किया हो, जैसे १६ का वर्गमूल ४ और पच्चीस का वर्गमूल ५ जज़र, स्क्वायर, रूट ।

सं० वर्गीय (वर्ग) गु० वर्ग में का, उसी समूह में का ।

सं० वर्जक (वृज्+अक) क० पु० परिहारक, रोकनेवाला, मानेअ ।

सं० वर्जन (वृज्=छोड़ना) भा० पु० त्याग, छोड़ना, रोकना, मना करना ।

सं० वर्जनीय (वर्ज्+अनीय) कर्म० पु० रोकने योग्य, मना करने के लायक़ ।

सं० वर्जित ⎫ (वृज्=छोड़ना)
वर्ज्य ⎭ कर्म० पु० छोड़ा हुआ, रोका हुआ, मना किया हुआ ।

सं० वर्ण (वर्ण=रँगना, फैलाना, सराहना) पु० रंग, २ जाति, क़ौम, जैसे (१ ब्राह्मण, २ क्षत्रिय, ३ वैश्य, ४ शूद्र) ३ अक्षर, हर्फ़ ।

सं० वर्णक क० पु० प्रशंसक, तारीफ़ करनेवाला ।

सं० वर्णन (वर्ण्=रँगना, सराहना, फैलाना) पु० बखान, बयान, २ स्तुति, सराह, ३ रँगना ।

प्रा० वर्णना ⎫ (सं० वर्णन) क्रि०
वर्णनकरना ⎭ स० बयान करना, गुण कहना, सराहना, स्तुति करना ।

सं० वर्णमाला (वर्ण=अक्षर, माला=पङ्क्ति) स्त्री० ककहरा, स्वर, व्यञ्जन, हरूफ़तहज्जी=ऐल्फाबिट ।

सं० वर्णसङ्कर (वर्ण=जात, सङ्कर=मिला हुआ) पु० दोगला, जिसका बाप और मा जुदी जुदी ज़ातके हों ।

सं० वर्णिका स्त्री० वर्णों की लिखने वाली, लेखनी, क़लम ।

सं० वर्णित कर्म० पु० स्तुति किया गया, तारीफ़ किया गया, कहा गया ।

सं० वर्त्तन (वृत्=होना) पु० जीविका, आजीविका, जीने का उपाय, रोज़ी, मआश ।

सं० वर्त्तमान (वृत्=होना) पु० जो समय बीतरहा है, गु० विद्यमान, मौजूद ।

प्रा० वर्ताव भा०पु०व्योहार,राहरस्म।

सं० वर्त्ति (वृत् + इन) स्त्री० बत्ती, नयनाञ्जन, इतर, फुलेल, औषध, दीपक, चिराग़ ।

सं० वर्त्तुल गु० गोल, गोलाकार ।

सं० वर्त्म } पु० पथ, अध्वा, राह,
वर्त्मन् } २ पलक, निमेष ।

सं० वर्द्धन (वृध्=बढ़ना)पु० बढ़ना, बढ़ती, वृद्धि ।

सं० वर्धित क०पु० उन्नत, बढ़ा हुआ ।

सं० वर्म्म (वृ=ढकना) पु० कवच, बख़्तर ।

सं० वर्बर (वर्ब् + अर, वर्ब्=कहना) क० पु० बहुत बातूनी, फ़ज़ूलगो, मूर्ख, २ पीलाचन्दन, ३ हींग, ४ केशभेद, ५ बावरी ।

सं० वर्ष (वृष्=बरसना या पैदा करना) पु० साल, संवत्, बारह महीने, २ वर्षा, मेह, ३ जम्बूद्वीप का एक खण्ड ।

सं० वर्षण भा० पु० बरसना ।

सं० वर्षा (वृष्=बरसना) स्त्री०मेह, बरसात, वर्षाकाल, प्रावृट्काल ।

सं० वर्षाकाल (वर्षा + काल)पु० बरसात, चौमासा, चतुर्मास ।

सं० वर्हिण } (वर्ह=मोर की पूंछ,
वर्ही } वर्ह=ऊँचा होना या सबसे अच्छा होना)पु० मोर, मयूर ।

सं० वल (वल्=घेरना) पु० सेना, फ़ौज, २ बल, ताक़त ।

सं० वलभी स्त्री० बरण्डा, गृहचूड़ा, बराम्दा ।

सं० वलय (वल्=ढकना वा घेरना) पु० कंकण, बाला, कड़ा ।

सं० वला स्त्री० सेना, २ लक्ष्मी, ३ धरणी, ४ वरियारा औषध ।

सं० वलाका (वल्=घेरना) स्त्री० बगुला, बगुले के ऐसा पखेरू ।

सं० वलाहक पु० मेघ, बद्दल ।

सं० वलि स्त्री० पूजोपहार, पूजा की सामग्री, २ पशुवध, क़ुर्बानी ।

सं० वल्कल (वल्=ढकना) पु० छाल, छिलका, बकला ।

सं० वल्गु पु० छाग, चन्दन, पण, वन, गु० २ मनोहर ।

सं० वल्मीक (वल्=घेरना, ढकना) पु० दीमक, बिम्बोट, दीमक की बाँबी ।

सं० वल्लभ (वल्ल=ढकना) गु० प्यारा, प्रिय, प्रियतम, पु० पति, २ अधिकारी ।

सं० वल्लभा (वल्लभ) स्त्री० प्यारी स्त्री, प्रिया ।

सं० वल्ली (वल्=घेरना) स्त्री०लता, बेली, २ पृथ्वी, ३ अजमोद ।

सं० वशिष्ठ (वशी=वश करनेवाला जो अपनी इन्द्रियों को अपने वश में

रक्खे या अब और शास्त्र सिखाना जो मनुष्यों को धर्म की बात सिखलावे)पु० एक ऋषि जो ब्रह्मा का बेटा और सूर्यवंशियों का गुरु था, सात प्रजापतियों में एक प्रजापति ।

सं० वश (वश्=स्पृहा, इच्छा) पु० आधीन, क़ाबू, इख़्तियार ।

सं० वशी क० पु० जितेन्द्रिय ।

सं० वशीभूत (वश=अधीन, भू=होना) गु० अधीन, दूसरे के वश में ।

सं० वश्य कर्म०पु०वश में, क़ाबू में ।

सं० वषट् अव्य० देवताओं के हविर्दान में, २ सत्कार, ३ सेवा ।

सं० वसति } (वस्=बसना) स्त्री०
वसती } वास, बासा, बस्ती,
आबादी, रहने की जगह, २रात ।

सं०वसन पु०वस्त्र,छादन,२निवास।

सं० वसन्त (वस्=रहना वा ढकना या महकाना, सुगन्धित करना) पु० १ एक ऋतु जो चैत और कुछ वैशाख के महीने तक रहती है, ऋतुराज, २ एकराग का नाम, ३ शीतला, गोटी ।

सं० वसन्तदूत पु० कोकिला, आम्रवृक्ष, माधवीलता ।

सं० वसा स्त्री० चर्बी, मेदा ।

प्रा० वसीठ पु० दूत, हलकारा, वकील ।

प्रा० वसीठी स्त्री० दूत का काम, दूतपन ।

सं० वसु (वस्=रहना वा ढकना) पु० एक प्रकार के देवता जो आठ हैं (१ धर, २ ध्रुव, ३ सोम, ४ सावित्र, ५ अनिल, ६ अनल, ७ प्रत्यूष, ८ प्रभास) २ आग, ३ किरण, ४ एकवृक्ष, ५ धन, ६ सोना, ७ रत्न, जवाहिर, ८ पानी, गु० मीठा, २ सूखा ।

सं० वसुदा (वस्=धन, दा=देना) स्त्री० धरती, ज़मीन, धरणी, पृथ्वी, भूमि ।

सं० वसुधा (वसु=धन, धा=रखना) स्त्री० धरती, ज़मीन, पृथ्वी ।

सं० वसुन्धरा (वसु=धन, धृ=रखना) स्त्री० पृथ्वी, धरती, ज़मीन ।

सं० वस्तव्य क० पु० वास योग्य, रहने के लायक़ ।

सं० वस्तु पु० पदार्थ, द्रव्य ।

सं० वहित्र (वह्=लेजाना वा पहुँचाना) पु० जलयान, जहाज़ ।

सं० वहिर्मुख गु० विमुख, बाग़ी ।

सं० वह्य पु० काँवर, वहँगी, बहँगा, वाहन, डोला, डोली ।

सं० वह्व गु० भूत, प्रभूत, बहुत ।

सं० वह्नि (वह्=लेजाना वा पहुँचाना) स्त्री० आग, अग्नि ।

सं० वा समुच्च० अथवा, या, विकल्प, सादृश्य, अवधारण, वितर्क, पादपूरण ।

सं० **वाक्य** (वच्=बोलना) पु० बोल, वाक्, वचन, वाणी, २पदों का इकट्ठा होना, जुमला ।

सं० **वाग्** पु० वाक्, वाणी, स्त्री० लगाम ।

सं० **वागीश** (वाच्=बोली, ईश=मालिक)पु० १ बृहस्पति, २ब्रह्मा, ३कवि, ४गु०अच्छा बोलनेवाला ।

सं० **वागीशा** स्त्री०सरस्वती, शारदा ।

सं० **वागीश्वरी** (वाच्=बोली, ईश्वरी=देवी) स्त्री० सरस्वती ।

सं० **वागुरा** स्त्री० मृगपाश, फाँसी, फन्दा या जाल ।

सं० **वाग्डम्बर** पु० वाचालता, वाक्यस्तोम, बहुत बातें, प्रलापी, धूर्त ।

सं० **वाग्दण्ड** (वाच्=बोली, दण्ड =सज़ा) पु० मुँह से भला बुरा कहना, धमकाना ।

सं० **वाग्मी** (वाच्=बोली)गु० सुन्दर बोलनेवाला, पु० बृहस्पति ।

सं० **वाङ्मय** गु० शास्त्र, वाक्यस्वरूप, वाणी का रूप, गोया, वक्ता ।

सं० **वाच्** } (वच्=बोलना) स्त्री०
वाचा } बोली, वचन, वाक्, वाणी, वाक्य ।

सं० **वाचक** (वच्=कहना) क०पु० सार्थक शब्द, ऐसा शब्द जिसका अर्थ हो, २ बोलने वाला ।

सं० **वाचन** भा० पु० पठना, कहना ।

सं० **वाचस्पति** (वाच्=बोली, पति =स्वामी) पु० बृहस्पति, देवताओं का गुरु ।

सं० **वाचा** स्त्री० वाणी, सरस्वती, वचन, ज़बान ।

सं० **वाचाट** गु० कुत्सितभाषी, बदकलाम, दुष्टवचनी ।

सं० **वाचाल** (वच्=बोलना) क० पु० बातूनी, बहुत बोलनेवाला, गप्पी, बक्की ।

सं० **वाचित** कर्म० पु० उक्त, कथित ।

सं० **वाच्य** (वच्=कहना) कर्म०पु० बोलने योग्य, जो बोला जाय, जो कहाजाय, पु० वाक्य, अर्थ ।

सं० **वाच्यता** स्त्री० अपमान, हजो ।

सं० **वाज** पु० अन्न, घृत, जल, यज्ञ, बाजपक्षी, तीर में पंख, वेग ।

सं० **वाजपेय** (वाज=यज्ञ की सामग्री, अथवा घी (वज्=जाना) और पेय पीना पा=पीना) पु० एक प्रकार का यज्ञ ।

सं० **वाजी** (वाज=वेग, वज्=जाना) पु० घोड़ा, २ तीर ।

सं० **वाञ्छा** स्त्री० स्पृहा, काङ्क्षा, इच्छा, ख़्वाहिश, अभिलाष ।

सं० **वाट** पु० पथ, राह, जीविकास्थान ।

प्रा० **वाटी** स्त्री० भौरिया, २ गृह ।

सं० **वात** (वा=जाना, बहना) स्त्री० हवा, बाव, बतास, पवन, वायु, २ गठिया बाव, एकरोग ।

सं० **वातापिसूदन** क० पु० अगस्त्य

मुनि ।

सं० वातायन पु० झरोखा, रोशनदान ।

सं० वात्सल्य (वत्सल) भा०पु० प्यार, प्रेम, स्नेह, दयालुता ।

सं० वाद (वद्=बोलना) पु० शास्त्रार्थ, बहस, चर्चा, बातचीत, विवाद, झगड़ा, २ वचन, वाक्य, ३ दावा, मुक़द्दमा, पुकार, फ़र्याद ।

सं० वादक भा०पु० कहना, बजाना ।

सं० वादरायण पु० व्यासमुनि, बदरिकाश्रमवासी ।

सं० वादी (वाद) क० पु० बोलनेवाला, वाद करनेवाला, शास्त्रार्थ करनेवाला, पु० मुद्दई, दावा करने वाला, नालिश करनेवाला ।

सं० वाद्य (वद्=शब्द करना) पु० बाजा ।

सं० वानप्रस्थ (वन=जंगल, प्रस्थ =रहनेवाला, प्र, स्था=ठहरना) पु० तीसरे आश्रमका मनुष्य जो ब्रह्मचर्य और गृहस्थाश्रम के पीछे वन में रह कर तपस्या करताहै, तपस्वी, वनवासी ।

सं० वानर (वान=वन के फल आदि, रा=लेना अथवा वा=कुछ कुछ, नर=मनुष्य अर्थात् जिस का डील डौल कुछ कुछ मनुष्य से मिलता है) पु० बन्दर, कपि, मर्कट, कीश ।

सं० वानरेन्द्र (वानर + इन्द्र) पु० सुग्रीव, २ हनुमान् ।

सं० वापी (वप्=बोना अर्थात् जिस में कमल आदि उगते हैं) स्त्री० बावड़ी, बावली ।

सं० वाम पु० महादेव, वामदेव, २ धन, ३ वास्तूक, बथुवा, ४ वेदाचारविरुद्ध, गु० ५ वल्गु, मनोहर, ६ सव्य, ७ कुटिल ।

सं० वामन (वाम, वा=जाना) पु० बावना, नाटा ।

सं० वायन पु० बैना, न्योता ।

सं० वायव्य (वायु) पु० वायुकोन, पश्चिम उत्तर का कोना, गु० हवा का ।

सं० वायस (वयस्=उमर अर्थात् बड़ी उमरवाला) पु० कौआ, काग, २ एक वृक्षका नाम ।

सं० वायु (वा=बहना, जाना) स्त्री० हवा, पवन, बयार, बतास ।

सं० वायुपुत्र (वायु + पुत्र) पु० वातजात, हनुमान् , रामदूत ।

सं० वायुवाह पु० धूम्र, धूम, धुआँ ।

सं० वार पु० द्वार, २ अवसर, ३ शिव, ४ क्षण, दिन, ५ यज्ञपात्र ।

सं० वारण (वृ=ढकना) पु० रोक, निषेध, अटकाव, बाधा, २ हाथी, ३ बख़्तर, कवच ।

प्रा० वारना क्रि० स० उतारना, भेंट चढ़ाना, २ घेरना ।

प्रा० वारपार } (सं० अवारपार
वारापार } अवार=इस पार, पार=उस पार) क्रि०वि० इस उस पार, वर्ले-पर्ले पार, पु०हद्द,सीमा।

सं० वाराणसी[1] स्त्री० 'वरुणा' नदी और 'असी' नदी के मध्य की बस्ती, काशी।

सं० वारि (वृ=ढकना) पु० पानी, जल।

सं० वारिचर (वारि=पानी, चर=चलना) पु० जलचर, जल का जीव, मछली, गु० पानी में रहनेवाला।

सं० वारिचरकेतु (वारिचर+केतु) पु० कामदेव, मकरध्वज, मीनकेतन।

सं० वारिज (वारि=पानी, जन्=पैदा होना) पु० कमल, कँवल।

सं० वारिजनयन (वारिज+नयन) गु० जिसकी आँखें कमलसी हों।

सं० वारिद (वारि=पानी, द=देनेवाला,दा=देना)पु०बादल, मेघ।

सं० वारिदनाद (वारिद+नाद) मेघनाद, रावण का बेटा।

सं० वारिधि (वारि=पानी, धा=रखना) पु० समुद्र, सागर।

सं० वारिनाथ (वारि+नाथ) पु० समुद्र, सागर।

सं० वारिनिधि (वारि+निधि) पु० समुद्र, सागर।

सं० वारिवाह क०पु० मेघ, वारिद।

सं० वारीश (वारि+ईश) पु० समुद्र, सागर, सिन्धु।

सं० वारुणी स्त्री० पश्चिम दिशा, २ मदिरा, ३ शतभिषानक्षत्र, ४ दूब, ५ वरुण की स्त्री।

सं० वार्त्ता (वृत्=होना) स्त्री० बात, २ वृत्तान्त, समाचार, ३ गप्प।

सं० वार्त्तिक[2] (वृत्ति अथवा वार्त्ता से, वृत्=होना) पु०सूत्र की टीका, व्याख्या, २ गद्य, नसर।

सं० वार्द्धक पु० वृद्धावस्था, वृद्ध समूह जैसे (वार्द्धके मुनिवृत्तीनाम्)।

सं० वार्य्य } कर्म० पु० निवार्य,
वार्यमाण } रोका गया।

सं० वार्षिक (वर्ष=साल) गु० बरसौड़ी,सालियाना,संवती,बरसका।

सं० वाल्मीक } (वल्मीक=दीमक,
वाल्मीकि } अर्थात् जो दीमक में से निकला इसकी कथा रामायण में देखो) पु० एक मुनि जिसने रामायण बनाई।

सं० वावदूक क० पु० वक्ता, बोलनेवाला।

सं० वाष्प (वा=बहना) स्त्री० भाफ़, धुवाँ, उष्मा।

---

[1] यहाँ पृषोदरादि से वरुणाशब्द के स्थान में वारण आदेश हुआ है।

[2] "उक्तानुक्तद्विरुक्तानां चिन्ता यत्र प्रवर्तते । तं ग्रन्थं वार्त्तिकं प्राहुर्वार्त्तिकज्ञा मनीषिणः" ॥

सं० वासन पु० सुरभीकरन, सुगन्धित करना, २ पात्र, बरतन, ३ वस्त्र ।

सं० वासना स्त्री० इच्छा, प्रत्याशा, २ निवास, स्थान ।

सं० वासर (वस्=रहना) पु० दिन, दिवस ।

सं० वासव (वसु=धन, सम्पदा अर्थात् जिसके बहुत धन सम्पदा हो) पु० इन्द्र, शुक्र, देवताओं का राजा ।

सं० वासित कर्म० पु० गन्धयुक्त ।

सं० वासुदेव (वसुदेव) पु० वसुदेव का बेटा, श्रीकृष्ण ।

सं० वास्तव } (वस्तु) गु० ठीकठीक, वास्तविक } यथार्थ, सचमुच, निश्चय, स्थिर ।

सं० वास्तव्य गु० बसनेयोग्य, पु० बन्धु, रिश्तेदार ।

सं० वाहन (वह्=लेजाना) ण० पु० सवारी ।

सं० वाहिनी (वह्=लेजाना) स्त्री० सेना जिसमें ८१ हाथी ८१ रथ २४३ घोड़े ४०५ पैदल हों, दल, कटक, फ़ौज, २ नदी, ३ गु० लेजानेवाली ।

सं० वाहु ण० पु० भुजा, बाज़ू ।

सं० वाह्य (बहिस्=बाहर) गु० बाहर का, बाहरी ।

सं० वि अव्य० वियोग, विशेष, निश्चय, असहन, निग्रह, हेतु, अव्याप्त, ईषत्, थोड़ा, शुद्ध, अवलम्बन, ज्ञान, गति, आलस्य, पालन ।

सं० विकल गु० विह्वल, व्याकुल, घबराया ।

सं० विकराल (वि=बहुत, कराल=डरावना) गु० बहुत डरावना, बहुत भयानक ।

सं० विकल्प पु० शक, भ्रान्ति, पसोपेश, आगा पीछा ।

सं० विकार (वि, कृ=करना, परंतु वि उपसर्ग के साथ आने से अर्थ बदलना हुआ) पु० स्वभाव का बदलना, बदलजाता, अन्यरूप होना, बीमारी ।

सं० विकशन भा० पु० प्रकाश, खिलना ।

सं० विकिरण भा० पु० फेंकना, फैलाना, २ ज्ञान ।

सं० विकृत (वि, कृ=करना) कर्म० बदला हुआ, २ उलटा, विरुद्ध, ३ बीमार, रोगी, ४ मलीन ।

सं० विकृति स्त्री० बदलना, रूपान्तर ।

सं० विक्रम (वि=बहुत, क्रम=जाना) भा० पु० पराक्रम, बल, ज़ोर, शक्ति, शूरता, वीरता, २ उज्जैन का राजा विक्रमादित्य, ३ विष्णु ।

सं० विक्रमादित्य (विक्रम + आदित्य अर्थात् बल या शूरवीरता का सूर्य) पु० उज्जैन नगरी का

प्रसिद्ध राजा जिसने संवत् चलाया।

सं० विक्रमी (विक्रम) गु० बलवान्, शूरवीर, पराक्रमी, बहादुर, पु० सिंह।

सं० विक्रय (क्री=मोललेना) भा० पु० बेंचना, नीलाम करना।

सं० विक्रयी
विक्रेता } क०पु० बेंचनेवाला।

सं० विक्रिया भा० स्त्री० विकार, बदलजाना, फिरजाना, पलटजाना।

सं० विक्लव
विक्लान्त } गु० विह्वल, परेशान, श्रान्त, श्रमित।

सं० विक्लिन्न गु० जीर्ण, जर्जर।

सं० विक्लेद भा० पु० नमीं, आर्द्रता, रतूबत, तरी।

सं० विक्षेप (वि=बहुत, क्षिप्=फेंकना) पु० घबराहट, व्याकुलता, २ फेंकना, दूर करना, छोड़ना, त्यागना, अन्तर।

सं० विख्यात (वि=बहुत, ख्यात=प्रसिद्ध) र्म० पु० बहुत प्रसिद्ध, नामवर, नामी, यशी, यशस्वी।

सं० विख्याति स्त्री० प्रसिद्धता, शुहरत, नामवरी।

सं० विगत (वि=बहुत, गम्=जाना) र्म० जो चला गया, गत, जुदा हुआ, रहित, विना, हीन।

सं० विगतश्रम (विगत=चली गई है, श्रम=थकावट) गु० जिसकी थकावट चलीगई हो, बिन मिहनत।

सं० विगर्हण भा०पु० निन्दा करना।

प्रा० विगोये गु० छिपे हुये।

सं० विग्रह (वि, 'ग्रह्=लेना, वि उपसर्ग के साथ आने से लड़ना अर्थ भी होता है) पु० लड़ाई, युद्ध, बिगाड़, २ शरीर, देह, ३ फैलाव, ४ भाग, ५ आकार, ६ असमास।

सं० विघटन भा० पु० बचना, २ तोड़ना, बिगाड़ना।

सं० विघटित (घट्=बचना) र्म० पु० मिलाया गया, रचा गया, तोड़ा गया।

सं० विघात (हन्=मारना) भा० पु० नाश करना।

सं० विघातक क०पु० नाशक।

सं० विघ्न (वि, हन्=मारना) पु० रोक, रुकाव, अटकाव, बिगाड़, बाधा।

सं० विचक्षण (वि=बहुत, चक्ष्=बोलना या देखना) गु० चतुर, प्रवीण, पण्डित, बुद्धिमान्, स्याना।

सं० विचरण भा० पु० भ्रमण, इधर उधर घूमना।

सं० विचलना (सं० विचल, वि=बहुत, चल=चलना) क्रि० अ० तितर-बितर होना, अधीर होना, हिम्मत हारना, मचलना, रूठना।

सं० विचार पु० तत्त्वनिर्णय, अभिप्राय, मनका भाव, दिलीखयाल।

सं० विचित्र गु० रंग बरंग, अद्भुत, अजीब।

सं० विच्छिन्न (वि, छिद्=काटना) र्म्म० पु० विभक्त, विदीर्ण, बटा, कटा फटा ।

सं० विच्छेद (वि, छिद्=काटना) पु० वियोग, जुदाई, अन्तर ।

सं० विजय (वि=बहुत, जि=जीतना) स्त्री० जीत, फ़तह, जय ।

सं० विजया (वि=बहुत, जि=जीतना) स्त्री० विजया दशमी, कुँवार सुदी १०—२ दुर्गा, देवी, ३ भाँग, बूटी ।

सं० विजयी (वि=बहुत, जयी=जीतनेवाला) क० पु० बहुत जीतनेवाला ।

सं० विजाति (वि=दूसरी, जाति=भाँति) स्त्री० और जाति, दूसरी जाति, दूसरी भाँति ।

सं० विजिगीषा स्त्री० जीतने की इच्छा ।

सं० विज्ञ (वि=बहुत, ज्ञा=जानना) क० पु० प्रवीण, पण्डित, चतुर, ज्ञानवान्, बुद्धिमान्, विद्वान् ।

सं० विज्ञता (विज्ञ) स्त्री० पण्डिताई, बुद्धिमानी, प्रवीणता, लियाक़त ।

सं० विज्ञान (वि=बहुत, ज्ञा=जानना) पु० बहुतज्ञान, शास्त्रज्ञान, शिल्पविद्या ।

सं० विज्ञापन (वि=बहुत, ज्ञापन=जताना, ज्ञा धातुका प्रेरणार्थक में ज्ञाप रूप होता है) पु० जताना, शिक्षा, २प्रार्थना, बिनती, इत्तिला, नोटिस, इश्तिहार ।

सं० विटप (विट=विस्तार या पेड़ की नई डाली, पा=पालना या विट्=शब्द करना) पु० वृक्ष, पेड़, २ नई डाली और नये पत्ते आदि ।

ग्रा० विडरि गु० विशेष भय से, बिथराना, छितराना ।

सं० विडम्बक (विड्=निन्दा करना) क० पु० निन्दक, प्रतारक ।

सं० विडम्बना स्त्री० तिरस्कार करना, अपमान करना ।

सं० विडम्बित र्म्म० पु० अपमानित, निन्दित, तिरस्कृत ।

सं० विडाल (विड्=बुरा बोलना) पु० बिलाव ।

सं० वितण्डा (वि, तडि=मारना) स्त्री० मिथ्यावाद, वाक्प्रपञ्च, पक्षपात करना, तअस्सुब करना ।

सं० वितर्क (वि+तर्क) स्त्री० बड़ी तर्क, अनुमान, विचार, वाद ।

सं० वितत र्म्म० पु० प्रसारित, फैलाया गया, ताना गया ।

सं० वितान (वि=बहुत, तन्=फैलाना) पु० चँदवा, मण्डप, २ यज्ञ, ३ फैलाव, विस्तार ।

सं० वितरण (वि, तॄ=पारजाना) पु० दान, निस्सरण, ख़ैरात, प्रतरण, निर्वाह, संतरण, उद्धार, बाटना, ख़र्च करना ।

सं० **वितरणशाली** गु० दानी, सखी ।

सं० **वित्त** (वित्त=त्यागना) पु० धन, द्रव्य, गु० ख्यात, ज्ञात, विचारित, लब्ध, गात, बल ।

सं० **विथकहिं** गु० चकित होइँ ।

सं० **विदर्भ** (वि=विन, दर्भ=एक प्रकार का घास जो इस देश में एक ऋषि के शाप से कि जिसका बेटा इस घास से घायल हो कर मर गया था नहीं पैदा होती है) पु० बंगाले के दक्षिण पश्चिम का एक ज़िला और एक शहर जिस को अब नागपुर अथवा बरार कहते हैं ।

सं० **विदा** (विद्=विभाग ज्ञान) स्त्री० ज्ञान, बुद्धि, २ ज़ुदाई, रुख़सत ।

प्रा० **विदाई** भा० स्त्री० जाने की भेट, रुख़सती नज़र ।

सं० **विदारण** (वि=बहुत, दृ=फाड़ना) पु० फाड़ना, चीरना, भेदन, लड़ाई, युद्ध, २ गु० चीरने वाला, फाड़नेवाला ।

सं० **विदित** (विद्=जानना) र्म्म० पु० जाना हुआ, समझा हुआ, २ प्रसिद्ध, ३ प्रार्थना किया गया, निवेदित ।

सं० **विदिश्** (वि=बीच, दिश्=दिशा) स्त्री० दिशा का बीच, कोन, गोसा ।

सं० **विदीर्ण** (दृ=फाड़ना) र्म्म० पु० फाड़ा, चीरा, फाड़ा हुआ ।

सं० **विदुर** पु० कौरवों का मन्त्री, दासीपुत्र, धृतराष्ट्र का भाई, गु० धीर, ज्ञानी ।

सं० **विदूषक** (दूष्=बुरा कहना) क० पु० निन्दक, भाँड़ ।

सं० **विदुष** पु० पण्डित ।

सं० **विदुषी** स्त्री० पण्डिता ।

सं० **विदेह** (वि=नहीं, देह=शरीर अर्थात् जिसको अपने शरीर का कुछ ध्यान नहीं था, केवल परमेश्वर का ध्यान था) पु० जनक राजा, मिथिला का राजा और सीता का बाप ।

सं० **विद्ध** (व्यध्=छेदना) र्म्म० पु० छेदा हुआ, पार किया हुआ, फाड़ा हुआ, ताड़ित ।

सं० **विद्यमान** (विद्=होना) गु० वर्त्तमान, जो हाज़िर हो, मौजूद ।

सं० **विद्या** (विद्=जानना) स्त्री० ज्ञान, शास्त्र का ज्ञान, इल्म, चौदह विद्या प्रसिद्ध हैं (चार वेद और छः वेदों के अङ्ग, ११ वीं पुराण, १२ मीमांसा, १३ न्याय, १४ धर्मशास्त्र) २ देवीका मन्त्र, ३ दुर्गा ।

सं० **विद्याधर** (विद्या=मन्त्र आदि, धर=रखनेवाला, धृ=रखना) पु० एक प्रकार के देवता ।

सं० **विद्यार्थी** (विद्या, अर्थी=चाहनेवाला, अर्थ=चाहना) क० पु०

विद्या पढ़नेवाला, छात्र ।

सं० विद्यालय (विद्या + आलय) धि०पु० पाठशाला, स्कूल, कालेज।

सं० विद्यावान् (विद्या + वान्) गु० पण्डित, ज्ञानवान्, विद्वान् ।

सं० विद्युत् (वि=बहुत, द्युत्=चमकना) क० स्त्री० बिजली, दामिनी, तड़ित ।

सं० विद्रावक (वि + द्रु=जाना) क० पु० चुआनेवाला, टपकानेवाला ।

सं० विद्रुम (वि=विशेष, ख़ास, और द्रुम=वृक्ष) पु० मूंगा, प्रवाल ।

सं० विद्रोह भा० पु० वैर, दुश्मनी ।

सं० विद्रोही (वि + द्रुह्=अशुभचिन्तक) क० पु० वैरी, दुश्मन ।

सं० विद्वान् (विद्=जानना) क० पु० पण्डित, विद्यावान्, ज्ञानी ।

सं० विद्वेष (वि + द्विष्=शत्रुता करना) पु० वैरभाव, शत्रुता, विरोध, वैर।

सं० विद्वेषक
विद्वेषी
विद्वेष्टा } क० पु० हिंसक, वैरी, दुश्मन ।

प्रा० विध (सं० विधि) स्त्री० रीति, प्रकार, ढब, भाँति, रूप, चाल ।

सं० विधातव्य कर्म० विधेय, धरने योग्य ।

सं० विधाता (वि=बहुत, धा=रखना) पु० ब्रह्मा, सृष्टि बनानेवाला, ईश्वर, भाग, क़िस्मत ।

सं० विधात्री स्त्री० ब्रह्माणी, मुहकमा दीवानी ।

सं० विधान (वि=बहुत, धा=रखना) पु० विधि, रीति, शास्त्र में कहीहुई रीति ।

सं० विधायक क० पु० मुन्सिफ़ ।

सं० विधि (वि=बहुत, धा=रखना) पु० ब्रह्मा, २ ईश्वर, सृष्टि बनानेवाला, ३ भाग, क़िस्मत, ४ रीति, शास्त्र में कहीहुई रीति ।

सं० विधिगिरा स्त्री० ब्रह्मा की वाणी ।

सं० विधिवत् अव्य० यथायोग्य, रीत्यनुसार, बा क़ायदा ।

सं० विधु (व्यध्=छेदना, विरही लोगों के हिरदे को) पु० चाँद, चन्द्रमा, २ कपूर, ३ विष्णु, ४ एक राक्षस, ५ ब्रह्मा ।

सं० विधुन्तुद (विधु=चाँद को, तुद्=दुःख देना) पु० राहु ।

सं० विधूत (वि + धू=कँपाना) कर्म० कम्पित, त्यक्त ।

सं० विध्वंस (वि=बहुत, ध्वंस्=गिरना) पु० नाश, विनाश ।

सं० विध्वस्त कर्म० पु० विनष्ट, नाशकृत, हराया गया ।

सं० विनत (वि + नम्=झुकना) क० पु० प्रणत, नम्र ।

सं० विनता स्त्री० गरुड़ की माता ।

सं० विनति भा० स्त्री० विनय, स्तुति ।

सं० विनय (वि=बहुत, नी=ले-

जाना वा पाना) स्त्री० बिनती, शिष्टाचार, नम्रता ।

सं० विनश्वर क० पु० नाश होने वाला, फ़ानी ।

सं० विनायक (वि, नी=लेजाना वा पाना) पु० गणेश, २ बुध, ३ गरुड़।

सं० विनाश (वि=बहुत, नश्=नाश होना) पु० बहुत नाश, बरबादी ।

सं० विनाशित कर्म० पु० नष्ट, विध्वंसित ।

सं० विपात (वि+पत्=जाना, गिरना) पु० निपात, वज्रपात, नाश, व्यसन, अपमान ।

सं० विनिमय (वि+नि+मि+अ, मि=फेंकना) पु० विलोम, अस्तव्यस्त, विपरीत, परिवर्तन, अदला बदली करना, ग्रहण, बन्धन।

सं० विनीत (वि=बहुत, नी=लेजाना वा पहुँचाना) क० पु० नम्र, विनयी, सुशील ।

सं० विनेता क० पु० राजा ।

सं० विनोद (वि, नुद्=प्रेरणा करना, चलाना, परंतु वि उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ हँसी करना होता है) पु० खेल, हँसी ठट्ठा, कौतुक, क्रीड़ा, खुशी, हर्ष, आनन्द ।

सं० विन्दु (विद्=जुदा जुदा होना । पु० बिंदी, बूँद, शून्य, २ अनुस्वार, ३ पानी का कन, गु० ४ ज्ञाता, ५ दाता, जानने योग्य, नामनिशिचर।

सं० विन्ध्य (विध्=छेदना) पु० विन्ध्याचल पहाड़ ।

सं० विन्ध्यवासिनी (विन्ध्य=विन्ध्याचल, वासिनी=रहनेवाली, वस्=रहना) स्त्री० दुर्गा, देवी, भगवती, योगमाया ।

सं० विन्ध्याचल (विन्ध्य+अचल) पु० एक पहाड़ का नाम।

सं० विन्न (विद्=जानना) कर्म० पु० प्राप्त, ज्ञात, जाना गया, स्थित।

सं० विन्यस्त कर्म० पु० यथाक्रम स्थापित किया गया, तरतीबवार रक्खा गया ।

सं० विन्यास पु० स्थापन करना, रचना करना ।

सं० विपक्ष (वि=विरुद्ध या उलटा, पक्ष=ओर, तरफ़) पु० शत्रु, वैरी, दुश्मन ।

सं० विपत्ति (वि=बुरी तरह से, पद्=जाना) स्त्री० आपदा, विपदा, विपत्, दुःख, तकलीफ़ ।

सं० विपद्
विपत्
विपदा } (वि=बुरी तरह से, पद्=जाना) भा० स्त्री० विपत्ति, आपदा, आफ़त ।

सं० विपरीत (वि, परि=उलटा, इण्=जाना) गु० उलटा, विरुद्ध।

सं० विपर्य्यय (वि+परि+इण्+अ, इण्=जाना) पु० व्यतिक्रम, विपरीत, उलटा पलट ।

सं० विपर्य्यस्त क०पु० व्यतिक्रान्त, विपरीत, लौट पौट करनेवाला ।

सं० विपर्य्यास भा० पु० विलोम, विपरीत, विपर्यय ।

सं० विपल पु० क्षण, लहमा ।

सं० विपश्चित् पु० बुद्धिमान् ।

सं० विपाक पु० कर्मभोग, फल, नतीजा ।

सं० विपिन (वप्=बोना) पु० वन, जंगल ।

सं० विपुल (वि=बहुत, पुल्=बढ़ना या फैलना) गु० बड़ा, बहुत फैला हुआ, गंभीर ।

सं० विप्र (वि=बहुत, प्रा=भरना वा वप्=बोना) पु० ब्राह्मण ।

सं० विप्रलब्ध कर्म० वञ्चित, धोखा दियागया ।

सं० विप्लव (वि, प्लु=जाना) पु० देशोपद्रव, राष्ट्रोपद्रव ।

सं० विप्लुत कर्म० व्यसन, ग़दर ।

सं० विफल (वि=बिन,फल=लाभ) गु० निष्फल, वृथा, बेफ़ायदह ।

सं० विबुध (वि=बहुत,बुध्=जानना) पु० देवता, २ पण्डित, ३ चाँद ।

सं० विबुधनदी (विबुध + नदी) स्त्री०देवताओंकी नदी,श्रीगङ्गाजी ।

सं० विबुधान क० पु० पण्डित ।

सं० विबोधन भा० पु० समझाना, प्रबोध करना ।

सं० विभक्त कर्म० पृथक्कृत, बाँटा गया, मुन्क़सिम ।

सं० विभक्ति (वि, भज्=टुकड़े करना, अलग करना) स्त्री०अंश, बाँट, टुकड़ा, हिस्सा, २ व्याकरण में कारकों के चिह्न ।

सं० विभव (वि=बहुत, भू=होना) पु० संपदा, धन, संपत्ति, ऐश्वर्य्य, २ एक संवत्सर का नाम ।

सं० विभाग (वि=बहुत, भज्=टुकड़े करना) पु० भाग, टुकड़ा, बाँट, हिस्सा, अंश, प्रकरण, सरिश्ता, सीग़ञ्च, मद्द, भेद, फ़र्क़, तक़सीम ।

सं० विभाजक क० पु० अंशकारी, हिस्सेदार ।

सं० विभाजित कर्म० बंटित, बाँटा गया ।

सं० विभावना (वि, भू=होना) स्त्री० प्रसिद्ध कारण के अभाव से कार्य की उत्पत्ति युक्त लक्षण, अलंकारभेद ।

सं० विभावसु पु० सूर्य, मदारवृक्ष, वह्नि, चन्द्र, हारभेद ।

सं० विभीषण (वि=बहुत, भी=डराना वैरियों को) पु० रावण का भाई, गु० डरानेवाला, भयानक ।

सं० विभीषा भा०पु०भय,भयानक ।

सं० विभीषिका भा० स्त्री० भयप्रदर्शन, भयदिखाना ।

सं० विभु (वि=बहुत, भू=होना)

गु० समर्थ, प्रभु, सर्वव्यापी, पु० मालिक, २ शिव, ३ ब्रह्मा, ४ विष्णु ।

सं० विभुक्त (वि=बहुत, भुज्=खाना) र्म्म० पु० बहुत खाया, बहुत भोजन किया ।

सं० विभूति (वि=बहुत, भू=होना) स्त्री० सम्पदा, ऐश्वर्य, सिद्धि, सम्पत्ति, धन, दौलत आदि सुख, २ राख, भस्म ।

सं० विभूषण (वि=बहुत, भूष्=सिंगार करना) ण० पु० गहना, अलंकार, ज़ेवर, शोभा, आभूषण ।

सं० विभूषित (वि=बहुत, भूष्=सिंगारना) र्म्म० पु० शोभित, सँवाराहुआ, शोभायमान, फबता हुआ, मुज़ैयन ।

सं० विभेदक (वि, भिद्+अक, भिद्=तोड़ना) क० पु० विक्षेपक, तोड़नेवाला ।

सं० विभ्रम (वि=बहुत, भ्रम्=भूलना) पु० चेष्टाभेद, सन्देह, कटाक्ष, एक अङ्ग का आभूषण दूसरे अङ्ग में धारणकरना, भ्रान्ति, भ्रमण, शोभा ।

सं० विभ्राज क० पु० शोभायमान, भ्राजिष्णु, शृङ्गारसे सुशोभित ।

सं० विमर्श }
विमर्शन } (वि, मृश्=छूना, ध्यान करना) पु० विचार, परामर्श ।

सं० विमर्ष (मृष्=क्षमा करना) क० पु० मौनी, विचारी, क्रोधी ।

सं० विमल (वि=बिन, मल=मैल) गु० निर्मल, स्वच्छ, साफ़, शुद्ध ।

सं० विमाता (वि=दूसरी, माता=माँ) स्त्री० सौतेली माँ ।

सं० विमान (वि=बहुत, मा=आदर करना या मान्=पूजना) पु० देवताओं का रथ ।

सं० विमुक्त (वि, मुच्=छूटना, छोड़ना) र्म्म० छूटा हुआ, रिहा ।

सं० विमुख (वि=उलटा, मुख=मुँह) गु० विरोधी, फिरा हुआ ।

सं० विमुग्ध गु० अज्ञान, मूढ़ ।

सं० विमूढ़ (वि=बहुत, मूढ़=मूर्ख) गु० बहुत अज्ञानी, बड़ा बेवकूफ़ ।

सं० विमोचन (वि, मुच्=छुड़ाना) पु० छोड़ना, मुक्त करना, क० दूर करनेवाला, छुड़ानेवाला ।

सं० विम्ब (वी=चमकना या जाना) पु० मूरत, छवि, तसवीर, छाया, प्रतिबिम्ब, २ सूर्य अथवा चन्द्रमा का मण्डल, ३ बिम्बाफल, एक लालफल, कुंदरू ।

सं० वियोग (वि=नहीं, योग=मेल) भा० पु० विरह, जुदाई, बिछवा, बिछड़ना, जुदा रहना ।

सं० वियोगी (वियोग) क० पु० विरही, जुदा रहनेवाला, बिछड़ा हुआ ।

सं० विरक्त (वि=नहीं, रञ्ज्=रँगना) क० पु० वैरागी, उदासी ।

सं० विरचित (वि, रच्=बनाना) कर्म०पु० बनाया हुआ, रचा हुआ।

सं० विरश्च } (वि=बहुत, रच्=
विरश्चि } बनाना) पु० सृष्टि बनानेवाला, ब्रह्मा ।

सं०विरज गु०क्रोधरहित,बेतमक्रनत।

सं० विरत (वि=नहीं, रम्=खेलना) क०पु० वैराग्यवान्, जिसने संसार छोड़ दिया हो, रिहा, बेग़म ।

सं० विरात (वि=नहीं,रम्=खेलना) भा० स्त्री० वैराग्य, त्याग संसार को छोड़ देना ।

सं० विरद (वि=नहीं.रद्=खोदना) पु०यश. नामवरी, बाना, लिबास, हथियार, अस्त्र, शस्त्र ।

प्रा० विरदैत गु०वीर, बानावाले ।

सं० विरह (वि=बहुत, रह=छोड़ना) पु० जुदाई, बिछोह, बिछुड़ना, वियोग ।

सं० विराग (वि=नहीं,रञ्ज्=रँगना) पु० वैराग, लोभ मोह को छोड़ना।

सं० विराज पु० क्षत्रिय आदि पुरुष, विष्णु का स्थूलरूप ।

सं० विराजमान (वि=बहुत, राज्=शोभना) क० पु० शोभायमान, सोहता हुआ ।

सं० विराजित क०पु०दीप्त,रोशन।

सं० विरुज गु० नीरोग, तन्दुरुस्त, रोगरहित ।

सं० विराट्ट (वि=बहुत, राज्=शोभना) पु० विष्णु की बड़ी मूरत, विश्वरूप, २ एक देश का नाम ।

सं० विराध (वि=बुरी तरहसे, राध्=पूरा करना, सिद्ध करना) पु० एक राक्षस का नाम ।

सं० विराम (वि=बहुत,रम्=आनन्द करना) पु०ठहराव,विश्राम,शान्ति, अन्त,अवसान, निवृत्ति, समाप्ति ।

सं० विराम (वि=नहीं, रम्=चैन करना) गु०व्याकुल, दुःखी,बेचैन।

सं०विरामक क०पु०लौटारनेवाला।

सं० विरुद्ध (वि=बहुत,रुध् रोकना) गु० उलटा, विपरीत, ख़िलाफ़ ।

सं० विरूप (वि=बुरा,रूप=डौल) गु० कुरूप, भौंड़ा, अनसुहावना, बदसूरत ।

सं० विरेचक (रिच्=गिराना) क० पु० दस्तावर, मलभेदक ।

सं० विरेचन भा० पु० जुलाब,मलनिस्सारण ।

सं० विरेचित कर्म०मुसहिल,रेचित।

सं० विरोचन (वि=बहुत,रुच्=चमकना)पु०प्रह्लाद का बेटा और राजा बलिका बाप, २ सूर्य, ३ चाँद ।

सं० विरोध (वि,रुध्=रोकना) भा० पु० वैर, द्वेष, शत्रुता, दुश्मनी, २ झगड़ा, लड़ाई ।

सं० विरोधक क०पु०विवादी,वैरी।

सं० विरोधी (विरोध)क०पु०वैरी, शत्रु, दुश्मन, २ झगड़ालू ।

सं० विल (विल=छेद करना) कर्म० पु० छिद्र, गर्त, गड़हा ।

सं० विलक्षण (वि=बहुत, लक्ष=देखना या चिह्न करना) गु० विचक्षण, अनूप, उत्तम, भला, श्रेष्ठ, २ जुदा, भिन्न ।

प्रा० विलगावना क्रि० स० अलग करना, निकाल देना ।

प्रा० विलपना क्रि० अ० रोदन, रोना ।

सं० विलपत गु० रोते हुए ।

सं० विलम्ब (वि=बहुत, लबि=ठहरना) स्त्री० देरी, अबेर, टालमटोल, अर्सा ।

सं० विलाप (वि=बुरी तरहसे, लाप्=बोलना अर्थात् रोना) पु० रोना, बिलकना, शोच, शोक, सन्ताप, दुःख ।

सं० विलास (वि=बहुत, लस्=खेलना) पु० खेल, क्रीड़ा, केलि, विहार, भोग, सुख, आनन्द, हर्ष, ऐश ।

सं० विलासिन गु० पु० भोगी, ऐयाश, पु० सर्प, २ कृष्ण, ३ वह्नि, ४ कामदेव, ५ महादेव, ६ चन्द्र ।

सं० विलासिनी स्त्री० नारी, वेश्या ।

सं० विलासी क० पु० भोगी, ऐयाश ।

सं० विलीन (ली=लगना) क० पु० विरत, नष्ट, लयप्राप्त ।

सं० विलुप्त (लुप्=अदृश्य होना) क० पु० अदृष्ट, नष्ट, गुम ।

प्रा० विलूलन पु० बुद्बुद, बुल्ला पानी का ।

सं० विलोकन (वि, लोक्=देखना) पु० दृष्टि, दीठ, नज़र, ताक ।

प्रा० विलोकना (सं० विलोकन) क्रि० स० देखना, ताकना ।

सं० विलोकित कर्म० देखा हुआ ।

सं० विलोचन (वि, लोच्=देखना) ण० पु० आँख, नयन, नेत्र ।

सं० विलोप भा० पु० अदर्शन, नाश ।

सं० विल्व (विल्=ढकना) पु० बेल का पेड़ या फल ।

सं० विवर (वि=नहीं, वृ=ढकना) पु० बिल, छेद, गढा, सेंध, २ दोष ।

सं० विवरण (वि=नहीं, वृ=ढकना अर्थात् शब्द के अर्थ आदि का खोलना) पु० टीका, व्याख्या, बखान, २ हिज्जा, ३ रिपोर्ट, बहस ।

सं० विवर्ण गु० अधम, नीच, २ रँगहीन, रूपरहित, निश्चेष्ट ।

सं० विवस्वत् पु० सूर्य, अर्कवृक्ष, अरुण, लाल ।

सं० विवाद (वि=बहुत, वाद=झगड़ा) पु० वाद, झगड़ा, उलटा कहना, विरोध ।

सं० विवाह (वि=आपसमें, वह्=ले-जाना) पु० ब्याह, गठबन्धन, शादी ।

सं० विवाहित (विवाह) कर्म० पु० ब्याहा हुआ, जिसकी शादी हो गई हो ।

सं० विवाहिता (विवाहित) कर्म० पु० स्त्री० ब्याही हुई ।

सं० विविक्त (वि, विच्=जुदा करना) गु० छोड़ाहुआ, २ एकान्त, निर्जन, ३ पवित्र ।

सं० विवृत्ति स्त्री० विस्तार, व्याख्यान ।

सं० विविध (वि=बहुत, विध=प्रकार) गु० नानाप्रकार का, भाँति भाँति का ।

सं० विवेक (वि=बहुत, विच्=जुदा करना, विचारना) पु० विचार, ज्ञान ।

सं० विवेकी (विवेक) क० पु० विचारकरनेवाला, ज्ञानवान्, ज्ञानी ।

सं० विवेचना (वि=बहुत, विच्=जुदा जुदा करना, विचारना) स्त्री० झूठ सच का विचार, विवेक, तमीज़ ।

सं० विवेचित
विवेचितव्य
विवेच्य } कर्म० विचारित, विचारने योग्य ।

सं० विवोढ़ा पु० जामाता, दामाद, वर, दूल्हा, नौशा ।

सं० विशद (वि, शद्=जाना) गु० धौला, सफ़ेद, श्वेत, निर्मल, साफ़, उज्ज्वल ।

सं० विशाखा (वि=बहुत, शाखा=प्रकार) स्त्री० सोलहवाँ नक्षत्र ।

सं० विशारद (विशाल=बहुत, द=देनेवाला, दा=देना यहाँ विशाल के ल को र होगयाहै) गु० पण्डित, विद्वान्, निपुण, श्रेष्ठ, प्रसिद्ध ।

सं० विशाल (वि=बहुत, शल्=जाना) गु० बड़ा, बहुत, चौड़ा, फैलाहुआ ।

सं० विशिख (वि=बहुत, अर्थात् तीखी, शिखा=चोटी अथवा अणी या वि=नहीं, शिखा=चोटी) पु० तीर, बाण, शर, गु० बिन चोटी का, शिखारहित ।

सं० विशिखासन (विशिख + आसन) पु० धनुष, कमान ।

सं० विशिप धि० पु० मन्दिर ।

सं० विशिष्ट (वि=बहुत, शिष्=गुण सहित होना) क० पु० साथ, संयुक्त, सहित, जुड़ाहुआ, २ उत्तम, बड़ा ।

सं० विशुद्ध (वि=बहुत, शुद्ध=पवित्र) गु० बहुत पवित्र, निर्मल, विमल, उज्ज्वल, उज्जल ।

सं० विशुद्धि भा० स्त्री० शोधन, दोष दूर करना ।

सं० विशेष (वि=बहुत, शिष्=गुणके साथ होना) पु० प्रकार, भेद, जाति, गु० मुख्य, ख़ास, निज, २ बहुत, अधिक ।

सं० विशेषोक्ति स्त्री० यत्नोक्ति, विशेष वाक्य, अर्थालङ्कार भेद ।

सं० विशेषण (वि=बहुत, शिष्=गुणके साथ होना) क० पु० गुण, धर्म, स्वभाव, तारीफ़ ।

सं० **विशेष्य** (वि + शिष्) पु० नाम, संज्ञा, र्म्म० ख़ास, प्रधान ।

सं० **विशोक** (वि=बिन, शोक=शोच) गु० जिसको किसी बात का शोच न हो ।

सं० **विश्रम्भ** पु० विश्वास, प्रत्यय, निश्चय, एतबार ।

सं० **विश्रान्त** (वि=नहीं, श्रान्त=थकाहुआ) क० चैनसे, सुस्थिर, आराम कियाहुआ, बेथकाहुआ ।

सं० **विश्रान्तघाट** (विश्रान्त + घाट) पु० यमुना नदी पर का एक घाट जहाँ श्रीकृष्ण और बलदेवजी ने कंसको मारके आराम कियाथा ।

सं० **विश्राम** (वि=नहीं, श्रम्=थकना) भा० पु० चैन, आराम, ठहराव ।

सं० **विश्लिष्ट** (श्लिष्=मिलना) क० पु० अयुक्त, शिथिल ।

सं० **विश्लेष** पु० वियोग, विच्छेद, विभाग, शैथिल्य ।

सं० **विश्लेषक** क० पु० विच्छेदक, विभाजक ।

सं० **विश्व** (विश्=घुसना) पु० जगत्, संसार, जग, दुनिया, २ एक प्रकार के देवता जिनको श्राद्ध में पिण्ड और बलि आदि देते हैं, गु० सब, सम्पूर्ण ।

सं० **विश्वकर्म्मा** (विश्व=संसार, कर्म्म=काम अर्थात् जिसका काम सब संसार में है) पु० देवताओं का राजा और ब्रह्माका बेटा, २ सूर्य ।

सं० **विश्वक्सेन** } (विश्वक्=सब
विष्वक्सेन } संसार में जानेवाली (विश्व=संसार, अञ्च्=जाना) सेना, फ़ौज है जिसकी) पु० विष्णु, नारायण ।

सं० **विश्वनाथ** (विश्व + नाथ) पु० शिव, महादेव जिनका मन्दिर बनारस में है ।

सं० **विश्वप** (विश्व=संसार, पा=रक्षा करना) क० पु० विश्वपालक ।

सं० **विश्वम्भर** (विश्व=संसार को, भर=पालनेवाला, भृ=पालना) पु० विष्णु, २ ईश्वर ।

सं० **विश्वरूप** (विश्व + रूप) पु० विष्णु, सर्वव्यापी ।

सं० **विश्वासित** क० पु० विश्वास पात्र, मुअ्तमिद ।

सं० **विश्वस्त** क० पु० प्रत्ययित, विश्वासकर्त्ता, मुअ्तमिद, जात-विश्वास ।

सं० **विश्वामित्र** (विश्व=संसार अथवा सब, मित्र=प्यारा, जिसका सब संसार मित्र है) पु० गाधि राजा का बेटा जो राजऋषि से ब्रह्मऋषि होगया ।

सं० **विश्वास** (वि, श्वस्=जीना,

१—मित्रे चर्षौ ६ । ३ । १३० इस सूत्र से विश्व को दीर्घ किया गया ॥

पर वि उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ भरोसा करना होजाता है) पु० भरोसा, प्रतीत, एतमाद ।

सं० विश्वासी क० पु० भरोसा करनेवाला, विश्वासक ।

सं० विश्वासघातक (विश्वास + घातक) क० पु० कपटी, छली, दग़ाबाज़, ठग ।

सं० विश्वासपात्र(विश्वास + पात्र) पु० भरोसावाला,क़ाबिल एतमाद ।

सं० विश्वासविशिष्ट पु० विश्वास योग्य, प्रतीति योग्य, जिस पर भरोसा किया जाय ।

सं० विश्वेश }
विश्वेश्वर } (विश्व=संसार, ईश वा ईश्वर=मालिक) पु० महादेव, शिव ।

सं० विष (विष्=फैलना) पु० ज़हर, माहुर, हलाहल, गरल ।

सं० विषण्ण क० दुःखी, विषादप्राप्त ।

सं० विषधर (विष=ज़हर, धृ=रखना) पु० साँप, सर्प, भुजंग ।

सं० विषम (वि=नहीं,सम=बराबर) गु० ना बराबर, असमान, अतुल्य, बराबर नहीं, २ कठिन, कठोर, दुःखदायी, ३ भयंकर ।

सं० विषमज्वर (विषम + ज्वर) पु० कठिन तप, एकप्रकार का तप ।

सं० विषमता स्त्री० राग, द्वेष, मुख़ालिफ़त, बे एतदाली, २ कठिनता, सख़्ती ।

सं० विषमबाण (विषम + बाण, अर्थात् जिसका तीर कठिन है) पु० कामदेव ।

सं० विषय (वि=बहुत, षि=बाँधना अर्थात् जिसमें मन लगना) पु० चीज़, वस्तु, पदार्थ, जो चीज़ इन्द्रियों से जानी जाय, (जैसे रङ्ग, रूप, रस, सुगन्ध, शब्द, छूना) २ काम, ३ बात, ४ भोगविलास, ५ बाबत, वास्ते, लिये ।

सं० विषयिण क० पु० भोगी, ऐयाश ।

सं० विषयी (विषय) क० पु० संसारी, भोगी ।

सं० विषाण (वि=बहुत, षा=नाश करना अथवा विष्=फैलना) पु० सींग, २ हाथीदाँत, ३ सूअरकादाँत ।

सं० विषाद (वि=बहुत, षद्=दुःख देना) भा० पु० शोक, दुःख, ताप, उदासी ।

सं० विषादक क० पु० दुःखदाता ।

सं० विषादित कर्म० पु० कष्टित, दुःखी ।

सं० विषुव }
विषुवत् } (विषु=बराबर, विष्=फैलना और वा=जाना अर्थात् जिसमें दिन रात बराबर होते हैं) पु० वह समय जब दिन रात बराबर होते हैं ।

सं० विषुवत्रेखा (विषुवत् + रेखा) स्त्री० धरती के बीच की लकीर, मध्यरेखा, मध्यसूत्र, भूमध्यरेखा,

ख़त उस्तवा ।

सं० विष्टब्ध कर्म० प्रतिरुद्ध, अवरुद्ध ।

सं० विष्टभ्य गु० सम्हार कर ।

सं० विष्ठा (वि, स्था=ठहरना) स्त्री० गूह, मल, पुरीष ।

सं० विष्णु (विष्=फैलना, जो सब सृष्टि में फैला हुआ है) पु० परमेश्वर, भगवान्, सृष्टि को पालने वाला, व्यापक ।

सं० विष्णुवल्लभा (विष्णु=भगवान्, वल्लभा=प्यारी) स्त्री० तुलसी, २ लक्ष्मी, हरिप्रिया ।

सं० विसर्ग (वि, सृज्=छोड़ना) पु० स्वर के आगे की दो बिन्दी, २ दान, ३ छोड़ना ।

सं० विसर्जन (वि, सृज्=छोड़ना) भा० पु० विदा, भेजना, छुट्टी करना, जानेदेना, २ छोड़ना, ३ देना ।

सं० विसर्ज्जित कर्म० पु० रुख़सत किया, बरख़ास्त हुआ, भेजा गया ।

प्रा० विसासिनि स्त्री० हासिदा, डाहिनि, सौतिनी ।

सं० विसूचिका (वि=कठोर, सूची=सुई, जो सुई के ऐसा कठोर अथवा तीखा अर्थात् बहुत दुःख देने वाला रोग है) स्त्री० एक प्रकार का हैज़े का रोग ।

सं० विस्तर (वि, स्तृ=ढापना) पु० प्रचुर, बहुत, समूह, विस्तार, २ आधार, पीढ़ा, बिछौना ।

सं० विस्तार (वि=बहुत, स्तृ=ढकना) फैलाव, चौड़ाई, स्तम्भ, कालम, सफ़ा का आधा ।

सं० विस्तारक
विस्तारी } क० पु० फैलाने वाला ।

सं० विस्तारित कर्म० पु० फैलाया गया ।

सं० विस्तीर्ण क० पु० फैला हुआ, विस्तृत ।

सं० विस्तृत (वि=बहुत, स्तृ=ढकना, फैलाना) क० पु० फैला हुआ, विस्तीर्ण ।

सं० विस्फुलिंग पु० चिनगारी ।

सं० विस्फोट (वि=बहुत, स्फुट्=फूटना या फटना) पु० फोड़ा, घाव ।

सं० विस्फोटक क० पु० फूटनेवाला अर्थात् बहुत फोड़ा, शीतला, चेचक ।

सं० विस्मय (वि=कुछ, स्मि=मुसकुराना) पु० अचरज, आश्चर्य, अचंभा, चमत्कार, तअज्जुब ।

सं० विस्मरण (वि=नहीं, स्मरण=याद) भा० पु० भूलना, बिसरना ।

सं० विस्मित (वि, स्मि=मुसकुराना) क० पु० अचंभे में चकित, अचंभित ।

सं० विस्मृत (वि=नहीं, स्मृ=याद रहना) क० भूला हुआ ।

सं० विस्मृति स्त्री० भूल, ग़फ़लत ।

सं० विस्मृतता भा० स्त्री० बेहोशी, बे सुधी, बे ख़बरी ।

सं० विहग, विहङ्ग, विहङ्गम (विहायस्=आकाश, वि=बीच में, हा=छोड़ना वा हय्=जाना और गम्=जाना अर्थात् आकाश में उड़नेवाला) पु० पखेरू, पक्षी, २ बादल, ३ तीर, ४ सूर्य, ५ चाँद, ६ ग्रह ।

सं० विहरण (वि, हृ=लेना, परंतु वि उपसर्ग के साथ आनेसे इस धातु का अर्थ खेल करना या आनन्द करना होताहै) भा० पु० विहार करना, खेलकरना, क्रीड़ा करना, घूमना, सैरकरना ।

सं० विहार (वि, हृ=लेना, परंतु वि उपसर्ग के साथ आनेसे इस धातु का अर्थ खेल करना होता है) भा० पु० विलास, खेल, क्रीड़ा, २ आनन्द से फिरना ।

सं० विहारी (विहार) क० पु० विहार करनेवाला, आनन्द करने वाला, पु० श्रीकृष्ण ।

सं० विहित (वि=बहुत, धा=रखना) र्म्म० ठीक, उचित, करने योग्य, ठहराया हुआ ।

सं० विहीन (वि=बहुत, हा=छोड़ना) र्म्म० विना, जुदा, रहित, छोड़ा हुआ ।

सं० विह्वल (वि=बहुत, ह्वल=हिलना, चलना) क० पु० व्याकुल, घबराया हुआ, चञ्चल ।

सं० वी पु० विकाश, दीर्घ, एका ।

सं० वीक्षण (वी + ईक्ष + अन, ईक्ष=देखना) पु० दर्शन, देखना ।

सं० वीक्ष्य गु० देखकर, निहारकर ।

सं० वीक्षित र्म्म० देखा हुआ, दृष्ट ।

सं० वीचि (वे=फैलना) स्त्री० लहर, तरङ्ग, मौज, ढऊ ।

सं० वीज (वि=बहुत, जन्=पैदा होना) पु० व्यथा, दाना जो बोया जाता है, २ मूल कारण, ३ अङ्कुर, ४ वीर्य्य, ५ मन्त्र, ६ बीजगणित, गणित का एक भाग जिसमें अङ्कों की जगह अक्षर लिख कर हिसाब बनाते हैं इसको संस्कृत में अव्यक्तगणित कहते हैं ।

सं० वीणा (अज्=जाना वा वी=जाना) स्त्री० एक प्रकार का बाजा जिसको नारदजीने निकाला,—वीण शब्द को देखो ।

सं० वीत (वी=जाना या वि, इण्=जाना) गु० बीता हुआ, गुज़रा हुआ, चलागया ।

सं० वीथि (वी=जाना वा विथ्=माँगना) स्त्री० गली, रस्ता, २ पंक्ति, श्रेणी ।

सं० वीप्सा (वि=बहुत, आप्=फैलना, लाभ) भा० स्त्री० व्याप्तीच्छा, फैलना, २ आदर ।

सं० वीर (वीर्=पराक्रम करना वा अज्=जाना) पु० शूर, बहादुर,

शूरमा, योद्धा, काव्य के नौरस में से एक रस ।

सं० वीरप्रसू (प्र,सू=पैदाकरना) स्त्री० वीरजननी, वीर पुत्र की माता ।

सं० वीरण } (ईर्=कहना) पु०
प्रा० वीरन } बेना, गाच, खस, गु० प्यारा, प्यारा भाई ।

सं० वीरता (वीर) स्त्री० बहादुरी, शूरमापन ।

सं० वीरभद्र (वीर=बहादुर, भद्र=बहुत अच्छा) पु० महादेव के एक गण का नाम जिसने यज्ञ समेत दक्ष का विनाश किया ।

सं० वीरवृत्ति स्त्री० शूरों का बाना, शूरों का पैंधावा ।

सं० वीरा स्त्री० वीरपुत्र की माता, पीपर औषध ।

सं० वीर्य्य (वीर) पु० बीज, धातु, २ पुरुषार्थ, बल, ज़ोर, ३ प्रताप, प्रभाव, तेज ।

सं० वृक (वृक्=लेना) भेड़िया, हुँडार, ल्यारी ।

सं० वृकोदर पु० भीमसेन, ब्रह्मा ।

सं० वृक्ष (वृश्च्=काटना) पु० पेड़, रूख, गाछ, तरवर, पादप ।

सं० वृत्त (वृत्=होना या ढकना) पु० घेरा, मण्डल, चक्कर, गोलखेत, २ छन्द, ३ रीत, गु० हुआ, पैदा हुआ ।

सं० वृत्तान्त (वृत्त=पैदा हुआ, अन्त=निर्णय अथवा निश्चय अर्थात् जिसके सुनने से किसी बात का निर्णय होजाता है) पु० समाचार, बात, हाल हक़ीक़त, पता ।

सं० वृत्ति (वृत्=होना या पैदा होना) स्त्री० आजीविका, जीविका, रोज़गार, रोज़ी, वज़ीफ़ा ।

सं० वृत्य स्मं० वर्णनीय, कहनेयोग्य ।

सं० वृत्र } (वृत्=होना) पु० एक रा-
वृत्रासुर } क्षस जिसको इन्द्रने मारा ।

सं० वृथा (वृ=ढकना) क्रि० वि० बेफ़ायदह, निरर्थक, निष्फल, व्यर्थ, योंहीं ।

सं० वृद्ध (वृध्=बढ़ना) गु० बूढ़ा, पुराना ।

सं० वृद्धि (वृध्=बढ़ना) स्त्री० बढ़ती, बढ़न्ती, तरक़्क़ी, लक्ष्मी, ऋद्धि, सिद्धि ।

सं० वृन्द (वृण्=प्रसन्न होना) पु० समूह, भीड़ भाड़, ढेर, थोक ।

सं० वृन्दा (वृण्=प्रसन्न होना) स्त्री० तुलसी, २ राधिका, ३ एक देवी का नाम ।

सं० वृन्दारक पु० देवता, गु० मुख्य, मनोहर ।

सं० वृन्दारिका स्त्री० देवताओंकी स्त्री ।

सं० वृन्दावन (वृन्दा + वन) पु० मथुरा के पास एक वन जहाँ वृन्दा देवी का मन्दिर था और जहाँ गोकुलसे नन्दजी और श्रीकृष्ण आदि सब ग्वाल जा बसे थे ।

सं० वृश्चिक (वृश्च्=काटना) पु० बिच्छू, २ आठवीं राशि ।

सं० वृष (वृष्=सींचना या पैदा करना) पु० बैल, २ दूसरीराशि ।

सं० वृषकेतु (वृष + केतु) पु० महादेव, शिव ।

सं० वृषण पु० अण्डकोष, फ़ोता ।

सं० वृषभ (वृष्=सींचना या पैदा करना) पु० बैल ।

सं० वृषल पु० शूद्र, २ गृञ्जन, गाजर, प्याज़, ३ घोड़ा, ४ अधार्मिक, ५ चन्द्रगुप्त नृप ।

सं० वृषली स्त्री० शूद्री, जो पिता के घर में कन्या रजोधर्म को प्राप्त हुई उसे भी कहते हैं ।

सं० वृषाकपि[1] (वृष=धर्म, अ=नहीं, कपि=कँपाना) जो धर्मको नकँपावे, महादेव, विष्णु, अग्नि, इन्द्र ।

सं० वृषोत्सर्ग (वृष + उत्सर्ग) पु० मृतक के हेतु बैल को दाग़ के छोड़ देना, साँड़ ।

सं० वृष्टि (वृष्=सींचना, बरसना) स्त्री० मेह, वर्षा, पानी का गिरना ।

सं० वृहत् (वृह्=बढ़ना) गु० बड़ा ।

सं० वृहत्पाद पु० वटवृक्ष, बर्गद ।

सं० वृहस्पति (वृहती=बोली, पति=मालिक अथवा वृहत्=बड़ा अर्थात् देवता, पति=मालिक या गुरु) पु० देवताओं का गुरु, पाँचवां ग्रह, २ बृहस्पतिवार, बीफै, जुमेरात ।

सं० वेग (विज्=कँपाना) पु० प्रवाह, धारा, जव, महाकाल ।

प्रा० वेगि स्त्री० शीघ्र, जल्दी ।

सं० वेणी (वेण्=जाना) स्त्री० चोटी, बालों को सँवारना, २ नदियों के मिलने की जगह, जैसे त्रिवेणी आदि ।

सं० वेणु पु० बाँस, बाँसुरी का बाजा, मुरली, २ राजा का नाम ।

सं० वेतन (अज्=जाना या वी=जाना) पु० मज़दूरी, महीने की तनख़्वाह, मासिक जीविका ।

सं० वेताल (अज्=जाना) पु० वह मुर्दा जो भूत के घुसने से जीता सा जाना जाय, पिशाच, २ शिव के नौकर ।

सं० वेत्ता (विद्=जानना) क० पु० जाननेवाला, पण्डित ।

सं० वेत्र पु० बेत, बेतवृक्ष ।

सं० वेद[2] (विद्=जानना) पु० श्रुति, हिन्दुओं की पवित्र पुस्तक—मुख्य वेद तीन हैं (१ ऋग्वेद, २ सामवेद, ३ यजुर्वेद) और कहते हैं कि चौथा अथर्ववेद पीछे से मिलाया गया है और इतिहास और पुराणों को पाँचवांवेद भी कहते हैं, ज्ञान,

---

[1] वर्षयति कामानिति वृषःआकम्पयति पापानिति आकपिः वृषश्चासावाकपिश्चेति वा ॥ [2] "तत्रापौरुषेयं वाक्यं वेदः "—"इतिहासपुराणाभ्यां वेदार्थमुपबृंहयेत् । बिभेत्यल्पश्रुताद्वेदो मामयं प्रहरिष्यतीति "१॥

शास्त्रज्ञान, चार की संख्या, चतुर्थांश ।

सं० वेदगर्भ पु० ब्रह्मा, ब्राह्मण ।

सं० वेदना (विद्=जानना) स्त्री० पीड़ा, दुःख, व्यथा, २ जानना, सुख दुःख का ज्ञान ।

सं० वेदपारग पु० सर्व वेदज्ञाता ।

सं० वेदमाता (वेद + माता) स्त्री० गायत्री ।

सं० वेदव्यास (वेद, वि + अस्= फैलाना अर्थात् वेदों को फैलाने वाला) पु० व्यासजी ।

सं० वेदाङ्ग (वेद + अङ्ग) पु० वेद के अङ्ग अथवा भाग जो छः हैं–(१ शिक्षा जो अक्षरों का स्पष्ट उच्चारण सिखलाता है, २ कल्प जिसमें यज्ञ आदि कर्मों की विधि लिखी है, ३ व्याकरण, ४ छन्द, ५ ज्योतिष, ६ निरुक्त, जिसमें वेद के कठिन और गूढ़ शब्द और वाक्यों का अर्थ है)।

सं० वेदान्त (वेद + अन्त) पु० वेदव्यासजी का बनाया हुआ शास्त्र ।

सं० वेदि (विद्=जानना) स्त्री०
वेदिका होम करने की चबूतरी, यज्ञ अथवा बलिदान करने की जगह, २ पीठि ।

सं० वेद्य कर्म० पु० जानने योग्य ।

सं० वेधक (विध्=छेदना) कृ० पु० छेदक, बर्मा ।

सं० वेपथु (वेप् + अथु) कँपना, हिलना ।

सं० वेला (वेल्=जाना) स्त्री० समय, वक्त, काल ।

सं० वेश (विश्=घुसना) पु० गहना, कपड़ा, भेष, भूषण, शोभा ।

सं० वेशर
वेसर पु० अश्वतर, खच्चर ।

सं० वेश्म
वेश्मन धि० पु० गृह, घर ।

सं० वेश्या (वेश) स्त्री० नगरनारी, गणिका, कञ्चनी, पतुरिया ।

सं० वेष (विष्=फैलना) पु० कपड़ा, गहना, २ स्वरूप, डौल, चाल ।

सं० वेष्टन (वेष्ट=लपेटना) भा० पु० उष्णीय, पगड़ी, मुकुट ।

सं० वेष्टित कर्म० पु० लपटा हुआ, लपेटा गया ।

सं० वैकुण्ठ (वि, कुण्ठा=सुभ्र ऋषि की स्त्री और विष्णु की किसी अवतार में माँ उसीके नाम से वैकुण्ठ हुआ या वि=कई प्रकार की, कुण्ठा=माया जिसकी) पु० विष्णु, २ विष्णुलोक, परमपद ।

सं० वैखानस (वि, खन्=खोदना, जो संसार की सब इच्छाको छोड़ देता है) पु० वानप्रस्थ, तपस्वी, (आश्रम शब्द को देखो)।

सं० वैतरणी (वितरण=दान, अर्थात् जो दान पुण्य करने से लांघी

जाती है या वि=बुरी तरह से वा कठिनता से, तॄ=पार होना) स्त्री० नरक की नदी ।

सं० वैदिक (वेद) पु० वेद पढ़ा ब्राह्मण, वेदपाठी ब्राह्मण, गु० वेद में कहा हुआ, वेद के अनुसार, वेद की रीति से ।

सं० वैदेही (विदेह) स्त्री० जनक राजा की बेटी, सीता, जानकी ।

सं० वैद्य (विद्=जानना) पु० हकीम, बैद, दवा दारू करनेवाला, चिकित्सक ।

सं० वैद्यक (वैद्य)पु०बैदक विद्या ।

सं० वैद्यनाथ (वैद्य + नाथ) पु० वैद्यराज, धन्वन्तरि, २ शिव, बैजनाथ,महादेव जिनका मन्दिर झाड़खण्ड में है ।

सं० वैनतेय (विनता=कश्यपमुनि की स्त्री, वि=बहुत, नम्=नवना) भा० पु० विनता का बेटा, गरुड़, पखेरुओं का राजा ।

सं० वैभव (विभव) भा० पु० ऐश्वर्य, सम्पदा, धन, दौलत ।

सं० वैमनस्य भा० पु० उदासीनता, बिगाड़, रंज, नाइत्तिफ़ाक़ी ।

सं० वैयाकरण (व्याकरण) भा० पु०व्याकरण पढ़ा हुआ पण्डित ।

सं० वैयात्य भा० पु० निर्लज्जता, बेहयाई, बेशर्मी ।

सं० वैर (वीर) पु० दुश्मनी, शत्रुता, द्वेष, विरोध ।

सं० वैराग } (विराग) भा० पु०
वैराग्य } संसार की विषयवासना का छोड़ना, बेमुहब्बती ।

सं० वैरागी (वैराग) गु० जिसने संसार की विषयवासना को छोड़ दिया है, उदासीन, साधु ।

सं० वैरी (वैर) क०पु० दुश्मन,शत्रु ।

सं० वैशाख (विशाखा=एक नक्षत्र का नाम इस महीने में पूरा चांद इस नक्षत्र के पास रहता है और इस महीने की पूर्णमासी के दिन विशाखा नक्षत्र होताहै) पु० बरस का दूसरा महीना ।

सं० वैश्य (विश्=घुसना, अपने खेती बनिज आदि धंधे में) पु० बनिया,महाजन,तीसरे वर्णके लोग।

सं० वैश्वानर पु० अग्नि, गु० कृपण, स्थूल, सब, वक्ता ।

सं० वैष्णव (विष्णु) पु०विष्णु का भक्त,विष्णु उपासक, गु०विष्णुका।

सं० व्यक्त (वि, अञ्ज्=जाना, परंतु वि उपसर्ग के साथ आनेसे इसका अर्थ प्रकट होना होताहै) कर्म० पु० जाना हुआ, स्पष्ट, प्रकट ।

सं० व्यक्ति (वि, अज्=जाना) स्त्री० एकता, एक एक करके, २ जन, मनुष्य ।

सं० व्यग्र गु० व्याकुल, परेशान, विकल ।

सं० व्यङ्ग गु० अङ्गहीन, व्याकुल ।

सं० व्यजन (वि, अज्=जाना) पु० तालवृन्तक, पङ्खा, बेना ।

सं० व्यञ्जक क० पु० प्रकाशक, नर्तक, भावबोधक ।

सं०व्यञ्जन (वि=बहुत, अञ्ज्=जाना वा मिलना या प्रकट करना) पु० तरकारी, साग, २ खानेकी अच्छी चीज़, ३ चिह्न, ४ वह अक्षर जिसमें स्वर न हो, जैसे क से ह तक ।

सं० व्यञ्जना भा०स्त्री०श्लेष, शब्द, शक्तिभेद, शब्द के अर्थ से विशेष अर्थको बोध करे जैसे जहाँ धुआँ है वहाँ अग्नि अवश्य होगी ।

सं० व्यतिक्रम पु० विलोम, विपर्य्यय, विपरीत, उलटा पुलटा ।

सं० व्यतिरिक्त (वि, अति, रिच् + त, रिच्=छोड़ना) क० भिन्न, जुदा जुदा, अलावा, सिवाय ।

सं० व्यतिरेक (वि, अति, रिच्=त्यागना) भा०पु० वियोग, भिन्नता, पृथक्त्व, विशेष, अतिक्रम, अलङ्कारभेद।

सं० व्यतीत (वि, अति, इण्=जाना) गु० बीता हुआ, गुज़रा हुआ ।

प्रा० व्यतीपात (वि, अति, पत्=गिरना) पु० बड़ा भारी उपद्रव, २ ज्योतिष में सत्रहवाँ योग ।

सं० व्यथक क० पु० दुःखदाता, तकलीफ़देह ।

सं० व्यथा (व्यथ्=पीड़ा देना) स्त्री० पीड़ा, पीर, दर्द, दुःख ।

सं०व्यथित क०पु०पीड़ित,दुःखित।

सं० व्यधन (व्यध्=ताड़ना) भा० पु० वेधन, ताड़न, पीड़न ।

सं० व्यपदेश (वि + अप,दिश् + अ) पु० संज्ञा, नाम, आरम्भ, मिष, छल, क़िस्सा ।

सं० व्याभिचार (वि=बुरी तरहसे, अभि=चारों ओर से,चर्=चलना) भा० पु० पुरुष का पराई स्त्री के पास जाना, स्त्री का पराये पुरुष के पास जाना, बुरा काम, भ्रष्टाचार, निन्दितकाम, रण्डीबाज़ी ।

सं० व्याभिचारी क० पु० कुमार्गी, गुमराह ।

सं० व्यय (वि=बहुत, इण्=जाना) पु० ख़र्च, लागत, २ नाश, क्षय ।

सं० व्यर्थ (वि=नहीं, अथवा चला गया है, अर्थ=मतलब या प्रयोजन) गु० वृथा, निरर्थक, बेफ़ायदह, विफल, निष्फल, निकम्मा ।

सं० व्यवकलन (वि, अव, कल्=गिनना और इन दोनों उपसर्ग के साथ आनेसे अर्थ घटाना हुआ) पु० घटाना, बाक़ी निकालना ।

सं० व्यवकलित कर्म० वियोगित, घटाया गया ।

सं० व्यवधान (वि, अव, धा=रखना) पु० आच्छादन, आड़,

अन्तर्द्धि, बीच में, रोक ।

व्यवसाय (वि, अव, सै=नाश होना) पु० उद्यम, अनुष्ठान, अवधारण, विचार, अभिप्राय, उद्योग ।

व्यवस्था (वि, अव, स्था=ठहरना) स्त्री० धर्म, निर्णय, शास्त्र, क़ानून, हाल ।

व्यवस्थित क० व्यवस्थाप्रमाणक, पाबन्द क़ानून ।

व्यवहार (वि, अव, हृ=लेना) पु० काम धन्धा, व्यौहार, लेन देन, चाल चलन ।

व्यवहरिया (व्यवहारी) क० पु० व्यवहारकर्त्ता, महाजन, व्यौहारी ।

व्यवहित कर्म० पु० व्यवधान युक्त, रोक, रोकागया ।

व्यसन (वि=बहुत, अस्=फेंकना) पु० विपद्, २ दोष, बुरा काम (जैसे जूआ खेलना, दिन को बहुत सोना, झूठ बोलना, शराब पीना अथवा और अफ़ीम आदि नशा करना, डाँवा डोल फिरना, दाँत पीसना आदि व्यसनहैं) चस्का, लत ।

व्यस्त क० व्याकुल, व्याप्त, विपरीत, विलोम, हीन, असमग्र ।

व्याकरण (वि=बहुत, आ=चारों ओरसे, कृ=करना) पु० शब्दों का शास्त्र, शब्द और धातु का बोधक ।

सं० व्याकुल (वि=बहुत, आकुल=घबराया हुआ) गु० घबरायाहुआ, दुःखी ।

सं० व्याख्या (वि=बहुत, आ=चारों ओरसे, ख्या=प्रसिद्ध करना) स्त्री० वर्णन, व्याख्यान, टीका ।

सं० व्याख्यात कर्म० पु० कथित, कहा हुआ ।

सं० व्याख्यान भा० पु० कथन, वर्णन, टीका ।

सं० व्याघ्र (वि=बहुत, आ=चारों ओरसे, घ्रा=सूँघना) पु० बाघ, शेर, नाहर, लालरेंड वृक्ष, करञ्जावृक्ष ।

सं० व्याज (वि, अज्=जाना) पु० कपट, छल, मिष, बहाना ।

सं० व्याध (व्यध्=ताड़ना, दुःख देना) पु० शिकारी, अहेरी, बहेलिया, जानवरों को मारनेवाला ।

सं० व्याधि (व्यध्=दुःख देना) स्त्री० रोग, पीड़ा, बीमारी, दुःख, सन्ताप ।

सं० व्यापक }
व्यापी } (वि=बहुत, अप्=फैलना) क० पु० फैलनेवाला, प्रभु, सर्वव्यापी, परमेश्वर ।

सं० व्यापकता (व्यापक) भा० स्त्री० प्रभुता, फैलाव ।

सं० व्यापादन भा० पु० मारण, क़तल ।

सं० व्यापादित कर्म० पु० मारा हुआ, मक़तूल ।

सं० व्यापार (वि=बहुत,आ=चारों ओर से, पृ=काम में लगना)पु० व्यौपार, धन्धा, सौदागरीकाम ।

सं० व्याप्त (वि=बहुत, आप्=फैलना) गु० फैला हुआ ।

सं० व्याप्य कर्म० पु० व्यापनीय, फैला हुआ ।

सं० व्यायाम (वि=बहुत,आ=चारों ओर से, यम्=रोकना) पु० परिश्रम, कुश्ती करना, मुद्गर, मोगरी उठाना आदि कसरत ।

सं० व्याल (वि=बहुत, अड्=फैलना वा वि=बहुत,आ=चारोंओर से, ला=लेना) पु० साँप, सर्प, नाग,भुजंग, २ दुष्ट हाथी, ३ मारने वाला जानवर, ४ धूर्त, दुष्ट ।

सं० व्याली क० पु० सर्पधारी, वेगी, महादेव ।

सं० व्यास (वि=बहुत, अस्=फैलाना) पु० एक प्रसिद्ध मुनिका नाम जिसने वेद-पुराणों को इकट्ठा किया और वेदान्तशास्त्रको बनाया, २ विस्तार, फैलाव, ३ चक्कर का आध काट, गोल खेतके बीच की लकीर, विस्तार ।

सं० व्याहति भा० स्त्री० आघात, चोट ।

सं० व्याहृति (वि, आ, हृ=लेना) स्त्री० उक्ति, कथन, वर्णन, (व्याहृतयः सप्त) भूः,भुवः,स्वः, महः, जनः, तपः, सत्यम् ।

सं० व्युत्पत्ति (वि=बहुत, उद्=ऊपर, पद्=जाना) स्त्री० शास्त्रके समझने की शक्ति, शास्त्रज्ञान, वजह, तस्मिया ।

सं० व्युत्पन्न (वि=बहुत, उद्=ऊपर, पद्=जाना) गु० शास्त्र में प्रवीण, पण्डित, विद्वान् ।

सं० व्यूढ (वि, वह्=प्राप्त करना) गु० विस्तृत, दीर्घ, संहति, विपुल, विन्यस्त, समूह, सन्नद्ध, तैयार ।

सं० व्यूह (वि, ऊह्=तर्क करना, पर वि उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ सेनाको सँवारना होता है)पु० सेनाकी रचना, २ भीड़, समूह,तर्क,बल,विन्यास,निर्माण।

सं० व्यूहन भा० पु० सैन्यस्थान, क़िलाबन्दी ।

सं० व्योम (व्ये=ढकना, घेरना) पु० आकाश, आस्मान ।

सं० व्योमयान पु० विमान ।

सं० व्रज (व्रज=जाना)पु० गोस्थान, मार्ग, २ वृन्द, ३ ग्राम ।

सं० व्रजन भा० पु० पर्य्यटन, भ्रमण, घूमना ।

सं० व्रज्या स्त्री० पर्य्यटन, प्रस्थान, वर्ग, संग्रामभूमि, क्रीड़ास्थान, संन्यास ।

सं० व्रण (व्रण्=घाव करना) पु० घाव, फोड़ा ।

सं० व्रत (व्रज्=जाना अथवा वृ=पसन्द करना)पु० उपास,उपवास, पवित्र काम, नियम, पुण्यकर्म ।

सं० व्रात (वृ=ढकना, घेरना या व्रत+घञ्) पु० समूह, भीड़ ।

सं० व्रीड़ा (व्रीड्=लजाना) स्त्री० लाज, लज्जा, शर्म, संकोच ।

सं० व्रीड़ित क० पु० लज्जित, शर्माया हुआ ।

श

सं० श (शी=सोना) पु० शिव, २ शस्त्र, हथियार, ३ कल्याण, मङ्गल, ४ शयन, ५ हृदय ।

सं० शंयु (शम्=दमनकरना) गु० प्रसन्न, हर्षित ।

सं० शंव गु० सुकृती, पुण्यात्मा ।

सं० शंवर पु० जल, शंख ।

सं० शंसा स्त्री० प्रशंसा, स्तव ।

सं० शंसित कर्म० कथित, निश्चित, स्तुत ।

सं० शंस्य कर्म० स्तुत्य, प्रशंसनीय ।

सं० शक (शक्=समर्थ होना) पु० एक म्लेच्छ जातिके लोग, २ एक देश का नाम, ३ संवत् जो शालिवाहन राजा ने चलाया, ४ सामर्थ्य ।

सं० शकट (शक्=सकना या सहना अथवा लेजाना) पु० गाड़ी, छकड़ा ।

सं० शकटासुर (शकट+असुर) पु० एक राक्षस जिसको श्रीकृष्ण ने मारा ।

सं० शकल पु० खण्ड, टुकड़ा, २ स्वरूप, चर्म, चिह्न, वल्कल, मछली का सेहरा या छिलका ।

सं० शकारि (शक+अरि) पु० विक्रमादित्य राजा ।

सं० शकुन (शक्=समर्थ होना)पु० बुरे भले का जतलानेवाला, सगुन, २ एक पखेरू का नाम ।

सं० शकुन्त पु० भासपक्षी ।

सं० शकुन्तला स्त्री० राजा दुष्यन्त की स्त्री, नाटकविशेष ।

सं० शकृत् पु० विष्ठा, मलमूत्र, अव्य० एक बार ।

सं० शक्त पु० समर्थ, दृढ़, पुष्ट ।

सं० शक्ति (शक्=बलवान् या समर्थ होना) स्त्री० बल, ज़ोर, पराक्रम, पुरुषार्थ, २ बर्छी, सांग, ३ देवी, माया, लक्ष्मी, गौरी आदि आठ शक्ति (१ इन्द्राणी, २ वैष्णवी अथवा लक्ष्मी, ३ ब्रह्माणी, ४ कौमारी, ५ नारसिंही, ६ वाराही, ७माहेश्वरी,अथवा गौरी,८भैरवी)।

सं० शक्तिमान् (शक्ति=बल; मत्=वाला) गु० बलवान्, जोरावर ।

सं० शक्तिहीन (शक्ति+हीन) गु० दुबला, दुर्बल, निर्बल, कमज़ोर ।

सं० शक्त गु० समर्थ, पुष्ट ।

सं० शक्नु पु० प्रियवक्ता ।

सं० शक्य कर्म०पु०समर्थ,पुष्ट,योग्य, भविष्य, होनहार, मुमकिन ।

सं० शक्र (शक्=बलवान् अथवा समर्थ होना) पु० इन्द्र, देवताओं का राजा, सुरपति ।

सं० शक्रजित् (शक्र=इन्द्र, जित्=जीतना) पु० रावण का बेटा, इन्द्रजित्, मेघनाद ।

सं० शक्रसुत (शक्र + सुत) पु०इन्द्र का बेटा, जयन्त, २ बालि वानर ।

सं० शक्राणी स्त्री०पुलोमजा,शची ।

सं० शङ्कर (शम्=कल्याण या भला, कर=करनेवाला, कृ=करना) पु० महादेव, शिव, २ शङ्कराचार्य्य ।

सं० शङ्का (शकि=सन्देह करना या डरना) स्त्री० सन्देह, शक, २ डर, भय ।

सं० शङ्कित क० पु० डराहुआ, भीत, २ संदिग्ध, वितर्कित ।

सं० शंकु पु० आठ अंगुल की लकड़ी,ठूंठ वृक्ष, खूंटा,भाला, गांसी, शल्य, पाप, महादेव, अंश ।

सं० शङ्ख (शम्=ठंढा करना) पु० एक जल के जीव की हड्डी जिसको हिन्दू पवित्र समझते हैं और देवता के साम्हने और लड़ाई में बजाते हैं, २ सौ पद्म (गिनती में) ।

सं० शङ्खध्मा (शङ्ख + ध्मा=बजाना) क० पु० शङ्ख बजानेवाला ।

सं० शचि (शच्=बोलना) स्त्री० इन्द्र की स्त्री, इन्द्राणी ।

सं० शचीपति (शची + पति) पु० इन्द्र, देवताओं का राजा ।

सं० शठ (शठ्=छल करना) गु० छली, कपटी, दुष्ट, धूर्त, ठग ।

सं० शठता (शठ) भा०स्त्री० दुष्टता, कपट, छल, ठगाई, मूर्खता ।

सं० शण पु० सनका वृक्ष, पटुआ ।

सं० शण्ठ पु० नपुंसक, हिजड़ा, २ साँड़ ।

सं० शत गु० एकसौ, १०० ।

सं० शतक (शत) गु० सैकड़ा ।

सं० शतकोटि पु० इन्द्र का वज्र, स्त्री० सौकरोड़, अरब संख्या ।

सं० शतक्रतु पु० इन्द्र, सौ यज्ञ करनेवाला ।

सं० शतघ्नी (शत=सौ,हन्=मारना) स्त्री० एक तरह का हथियार, तोप अथवा धनुष्,२एक रोग का नाम ।

सं० शतद्रु (शत=सौ, द्रु=जाना अथवा बहना जो सौ अर्थात् बहुत सी धारा से बहती है) स्त्री०सतलज नदी जो पंजाब में है ।

सं० शतपत्र (शत=सौ, पत्र=पत्ती या पंखड़ी) पु० कमल ।

सं० शतमारी (मृ=मरना) क० पु० वैद्य ।

सं० शताब्द पु० सौ वर्ष ।

सं० शताब्दी गु० सदी ।

शत्रु (शद्=नाश करना) पु० वैरी, दुश्मन, रिपु, अरि, द्वेषी, विरोधी ।

शत्रुविजयी क० पु० शत्रुका जीतनेवाला ।

शत्रुघ्न (शत्रु=वैरी, हन्=मारना) पु० लक्ष्मण का छोटा भाई, रिपुसूदन ।

शत्रुता (शत्रु) भा० स्त्री० वैर, विरोध, दुश्मनी ।

शनि (शो=तीखा होना या तेज़ होना) पु० सातवां ग्रह, शनैश्चर, ग्रहनायक, छायापुत्र, सूर्य का बेटा ।

सं० शनिवार (शनि + वार) पु० सातवां दिन, शनीचर ।

सं० शनैश्चर (शनैस्=धीरे, चर्=चलना) पु० शनिग्रह, शनिवार ।

सं० शप भा० पु० तिरस्कार, निरादर, शाप ।

सं० शपथ (शप्=सौगन्द खाना या सरापना) स्त्री० सौगन्द, किरिया, सौंह, दुहाई, प्रतिज्ञा, २ सराप, शाप ।

सं० शब्द (शब्द्=शब्द करना या शप्=पुकारना) पु० ध्वनि, आहट, आवाज़, जो कान से सुना जाय, २ (व्याकरण में) जो मुँहसे बोला जाय, बोल, वचन, पद, लफ़्ज़ ।

सं० शब्दशास्त्र (शब्द + शास्त्र) पु० व्याकरण आदि शास्त्र जिनसे शब्द का ज्ञान होता है ।

सं० शम (शम्=शान्त होना या ठंढा होना) पु० मन की शान्ति, चैन, २ इन्द्रियों को और मन को रोकना ।

सं० शमन (शम्=ठंढा करना) पु० शान्ति, ठंढा करना, २ यमराज, गु० दूर करनेवाला, ठंढा करनेवाला ।

सं० शमित क० पु० शान्त, मुतहम्मिल, सहनेवाला ।

सं० शम्बल पु० कूल, किनारा, २ पाथेय, राहखर्च, ३ मत्सर ।

सं० शम्बुक स्त्री० सीपी, पु० घोंघा, शूद्र तपस्वी, शंख, दैत्य ।

सं० शम्भु (शम्=कल्याणरूप, भू=होना) पु० महादेव, शिव ।

सं० शयन (शी=सोना) पु० सोना, नींद लेना, नींद, २ सेज, बिछौना ।

सं० शय्या (शी=सोना) स्त्री० सेज, बिछौना, पलंग, खाट ।

सं० शर (शॄ=मारना) पु० तीर, बाण, २ सरकण्डा ।

सं० शरण (शॄ=मारना जो शरण में आवे उसके वैरी को मारना) पु० बचाव, रक्षा, २ बचानेवाला, रक्षक, ३ घर, आसरा ।

सं० शरणागत (शरण + आगत) क० पु० शरण में आया हुआ, जो बचाव के लिये आवे, शरणार्थी,

आश्रित ।

सं० शरण्य क० रक्षक, शरणागतपालक ।

सं० शरण्यु पु० मेघ, वायु, रक्षक ।

सं० शरद् (शॄ=नाश करना, बादल और गर्मी को) स्त्री० एक ऋतु का नाम जो कुंआर और कार्त्तिक में रहती है ।

प्रा० शराटा पु० शब्द, आवाज़, आहट ।

प्रा० शराबोर पु० खूब भीगा हुआ ।

सं० शराव पु० संपुट, डब्बा, डबिया, परई, सरवा, कोसा ।

सं० शरासन (शर=तीर, आसन=ठहरने की जगह) पु० धनुष, कमान ।

सं० शरीर (शॄ=नाश होना) पु० देह, तन, काया, जिस्म ।

सं० शरि क० पु० धूर्त, मूर्ख ।

सं० शर्करा (शॄ=नाश करना अर्थात् गन्ने को पेरना) स्त्री० शक्कर, चीनी, खाँड़ ।

सं० शर्म्मा (शॄ=नाश करना, दुःख को) पु० सुख, २ ब्राह्मणों की पदवी ।

सं० शर्व्वरी (शॄ=नाश करना, थकावट को) स्त्री० रात, रात्री, २ स्त्री, ३ हल्दी ।

सं० शलभ (शल्=जाना) पु० टिड्डी, पतंगा ।

सं० शलाका (शल्=जाना) स्त्री० सुर्मा की सलाई, कूंची, तुली, शूल ।

प्रा० शलीता पु० टाट का बोरा या थैला जिसमें चीज़ वस्तु बाँधी जाती है ।

सं० शल्य (शल्=जाना) पु० एक राजा का नाम जिसका वर्णन महाभारत में है, २ सेल, ३ बाण, गाँसी ।

सं० शव (शव्=बदलना या नाश होना) पु० मुर्दा, मरा, लोथ, लाश, बिनजीव की देह, मराशरीर ।

सं० शवर (शव्=जाना या बदलना) पु० भील, वनवासी, जंगली आदमियों की एक ज़ात, पहाड़ी, २ शिव, महादेव ।

सं० शवरी (शवर) स्त्री० भीलनी, नीचज़ात की स्त्री ।

सं० शवाधार (शव+आधार) वि० पु० टिकटी, रथी ।

सं० शश
शशक (शश्=उछल कर चलना) पु० ससा, खरहा, खर्गोश, २ चाँद में का दाग जो खर्गोश के ऐसा दिखाई देता है ।

सं० शशाङ्क (शश्=खर्गोश, अङ्क=चिह्न, अर्थात् जिसमें खर्गोश के ऐसा दाग़ है) पु० चाँद, चन्द्रमा ।

सं० शशि
शशिन्
शशी (शश) पु० इन्दु, चाँद, चन्द्रमा ।

सं० शश्वत् (शश्=खर्गोश, वत्=बराबर) क्रि० वि० बारबार, फिर फिर, पुनः पुनः, लगातार,

निरन्तर, हमेशा ।

सं० शस्त कर्म० पु० स्तुत, प्रशंसा किया गया ।

सं० शस्त्र (शस्=मारना) पु० हथियार, आयुध, ऐसा हथियार जिसको हाथ में रखकर मारै जैसे तलवार आदि ।

सं० शस्त्रधारी (शस्त्र=हथियार, धारी=रखनेवाला, धृ=रखना) क० पु० हथियारबन्द, शस्त्ररखनेवाला ।

सं० शस्त्रसम्मार्जन भा० पु० सैक़िल करना, हथियारों का साफ़ करना ।

सं० शस्त्राधार (शस्त्र + आधार) पु० शस्त्रगृह, सिलाख़ाना ।

सं० शस्य (शस्=नाश करना जो चौपायों से नाश किया जाताहै) पु० धान, फल आदि ।

सं० शाक (शक्=सकना) पु० साग, तरकारी, भाजी, फल, मूल, फूल, पत्ते आदि, २ एकद्वीप का नाम, ३ शालिवाहन राजा का संवत्, शाका ।

सं० शाकम्भरी (शाक=सागवनस्पति आदि, भरी=भरनेवाली, भृ=भरना) अर्थात् पृथ्वी पर सब चीज़ पैदा करनेवाली स्त्री० दुर्गा, देवी, भगवती जिसका मन्दिर साम्भर नाम नगर के पास पहाड़ पर है और राजपूताने के लोगों का विश्वास है कि इसी देवी के वरदानसे साम्भर नाम झील में नमक पैदा होता है दुर्गा पाठ में लिखा है कि "भविष्यामि सुराः शाकैरावृष्टेःप्राणधारकैः।शाकम्भरीति विख्याता" अर्थ—दुर्गा कहती है कि हे देवता!जबतक पानी नहीं बरसे तब तक प्राण को बचाने वाले साग से सब को पालूंगी तब मेरा नाम शाकम्भरी होगा ।

प्रा० शाकल (सं० शाकल्य) पु० तिल, जौ, घी, शक्कर, फल आदि मिली हुई होम की सामग्री ।

सं० शाकिनी (शक्=बलवान् या समर्थ होना) स्त्री० दुर्गा के साथ रहनेवाली, योगिनी, पिशाचिनी ।

सं० शाक्त (शक्ति) पु० शक्ति उपासक, देवी को पूजनेवाला, दुर्गापूजक ।

सं० शाखा (शाख्=फैलना) स्त्री० पेड़ की डाली, टहनी, डाल, २ वेद का विभाग, ३ भाँति, प्रकार, ४ भाग, हिस्सा ।

सं० शाखामृग (शाखा + मृग) पु० वानर, बन्दर ।

सं० शाखी क०पु०वानर, गवाही ।

सं० शाटिका } (शट्=जाना या
शाटी } सराहना) स्त्री० साड़ी, स्त्रियों के ओढ़ने का एक भाँति का कपड़ा ।

सं० शाठ्यता भा० स्त्री० मूर्खता, जाहिली, अहमक़ी ।

सं० शाणन (शाण=पैनाना) भा० पु०तीक्ष्णकरना, शाणयन्त्र, जिस पर हथियार पैने किये जाते हैं ।

सं० शाणित र्म्म० पु० तीक्ष्णकृत, पैनाया गया ।

सं० शाण्डिल्य पु० शण्डिल मुनि का पुत्र, शक्तिशास्त्रकारक, बेल, एक अग्नि का नाम ।

सं० शात पु० सुख, गु० २ छिन्न, कृश, दुर्बल, निशित ।

सं० शान्त (शम्=ठंढा होना) गु० ठंढा, स्थिर, २ नम्र, ३ चुप, बंद, मुतमैय्यन (जैसा हवा) ४ साहित्य में नौ रसों में क़ा एक रस ।

सं० शान्तन पु० चन्द्रवंशी प्रतीप का पुत्र, भीष्मपितामहका पिता ।

सं० शान्ति (शम्=ठंढा होना) स्त्री० ठंढाई, थिरता, चैन, सुख, काम क्रोध आदि को जीत लेना अर्थात् काम क्रोध आदि नहीं रखना ।

सं० शाप (शप्=शाप देना) पु० शाप, धिक्कार, दुराशिष, बुरीदुआ, कोसना, २ शपथ, सौगंद ।

सं० शाब्दिक गु० शब्द से हुआ, वैयाकरण ।

सं० शामित (शम्=शान्त होना) र्म्म० शान्त कियागया ।

सं० शाम्बरी स्त्री० माया, करशमा, इन्द्रजाल, फ़रेबपन ।

सं० शाम्भव (शम्भु) पु० शिव का भक्त, महादेव का उपासक, शिवको पूजनेवाला, गुग्गुल, गूगुर, कपूर, शम्भुपुत्र ।

सं० शाम्य क० पु० क्षमायुक्त ।

सं० शायक (शो=नाश करना या तीखा करना अथवा शी=सोना, अर्थात् जिसके लगनेसे मनुष्य सो जाता अर्थात् गिर पड़ता है) पु० तीर, बाण, तलवार, खड्ग ।

प्रा० शायर पु० शूर, बहादुर ।

सं० शायी (शी=सोना) क० पु० सोनेवाला ।

सं० शारदी (शरद्) स्त्री० गु० शरद्ऋतु की ।

सं० शारीरिक (शरीर) गु० शरीर का, दुःखादिक ।

सं० शारङ्ग पु० पपीहा, २ मृग, ३ गज, ४ भ्रमर, भौंरा, ५ मयूर, ६ धनुष, ७ मधुमक्खी, ८ दीपक ।

सं० शार्ङ्ग (शृङ्ग) गु० सींग का बना हुआ, पु० धनुष, २ विष्णु का धनुष, ३ एक पखेरू का नाम ।

सं० शार्दूल पु० व्याघ्र, पक्षीभेद, पशुभेद, सिंह, श्रेष्ठ ।

सं० शाल (शल्=जाना) पु० एक तरहकी मछली, २एकपेड़कानाम ।

सं० शालग्राम (शाल=एक तरह का पेड़, ग्राम=समूह जहाँ बहुत

से शाल वृक्ष हैं) पु० एक पहाड़ का नाम, २ उसी पहाड़ पर एक पत्थर होता है जिसको हिन्दू विष्णु की मूरत मानकर पूजते हैं ।

सं० शाला (शल्=जाना या शाल्=बोलना या सराहना) स्त्री०घर, कमरा, स्थान, जगह ।

सं० शालार पु० हाथी का नख, सोपान, सीढ़ी, पिंजरा ।

सं० शालि (शल्=जाना) पु०धान ।

सं० शालूर पु० मण्डूक, मेढ़क ।

सं० शाल्मली (शाल्=जाना या शाल्=सराहना) पु० सेमल का पेड़, २ एक द्वीपका नाम ।

सं० शावक (शव्=जाना या बदलना) पु० बच्चा, बालक ।

सं० शावर (शवर) गु० शिव का बनाया हुआ मन्त्र, पु० पाप, अपराध, २ लोध का पेड़ ।

सं० शाश्वत (शश्वत्) क्रि० वि० लगातार, निरन्तर, २ नित, हमेशह, सदा ।

सं० शासन (शास्=सिखाना,आज्ञा देना या राज करना) पु० आज्ञा, हुक्म, २ राज करना, ३ दण्ड, सज़ा, ४ शिक्षा, सीख, नसीहत, हुकूमत ।

सं० शासनपत्र पु० फ़र्मान ।

सं० शासित कर्म० सिखाया गया, महकूम ।

सं० शासिता }
शास्ता } क० पु० हाकिम, शिक्षक ।

सं० शास्य कर्म० पु० शिक्षणीय, सिखाने योग्य, महकूम ।

सं० शास्ति (शास्=सिखाना, आज्ञा देना या राज्य करना) स्त्री० आज्ञा, २ राज्य करना, हुकूमत करना, ३ दण्ड, सज़ा ।

सं० शास्त्र (शास्=सिखाना) पु० किसी देवता या मुनि का बनाया हुआ ग्रन्थ, पुस्तक, पोथी, पवित्र पुस्तक, (वेदान्त, न्याय, साङ्ख्य, मीमांसा, पातञ्जल और वैशेषिक आदि षट्शास्त्र) काव्य और क़ानून और और विद्याओं की पुस्तकों को भी शास्त्र कहते हैं (जैसे काव्यशास्त्र, धर्मशास्त्र, शिल्पशास्त्र और अलंकारशास्त्र आदि) ।

सं० शास्त्रार्थ (शास्त्र + अर्थ) पु० चर्चा, वादविवाद ।

सं० शास्त्रज्ञाता क० पु० शास्त्री, पण्डित ।

सं० शास्त्री (शास्त्र) पु० शास्त्र जाननेवाला पण्डित, २ ब्राह्मणों की एक पदवी ।

सं० शिंशपा (शिशु=बालक, पा=पालना) पु० एक पेड़ का नाम ।

सं० शिक्य पु० सिकहर, सींका, छींका ।

सं० शिक्षक (शिक्ष्=सीखना या

सिखाना) क०पु० सिखानेवाला, पढ़ानेवाला, गुरु, अध्यापक, उपदेशक।

सं० शिक्षा (शिक्ष्=सीखना या सिखाना) भा० स्त्री० सीख, सिखाई, तालीम, नसीहत, उपदेश, २ वेद का एक भाग, वेदाङ्ग।

सं० शिक्षापत्र पु० वसीयतनामा।

सं० शिक्षाप्रकरण पु० शिक्षाविभाग, सरिश्तातालीम।

सं० शिक्षित (शिक्ष्=सीखना या सिखाना) कर्म० पु० सीखा हुआ, पढ़ा हुआ, निपुण, प्रवीण।

सं० शिखर (शिखा) पु० पहाड़ की चोटी, शृङ्ग।

सं० शिखा (शी=सोना) स्त्री० चोटी, शिरके बीच के बाल, जो हिन्दूलोग रखते हैं, २ आग की ज्वाला।

सं० शिखी (शिखा) पु०मोर, मयूर, २ आग, ३ एक पेड़ का नाम।

सं० शिञ्जा ⎫ स्त्री० रोदा, धनुषकी
शिञ्जिनी ⎭ डोरी।

सं० शिथिल (श्लथ्=ढीला या दुबला होना) गु० ढीला, खुला, २ धीमा, सुस्त, आलसी, ३ दुबला, निबल, कमज़ोर।

सं० शिर ⎫ (शृ=नाश होना) पु०म-
शिरस् ⎭ स्तक, माथा, शिर, कपाल।

प्रा० शिरधरा क० पु० ज़िम्मेदार वारिस।

सं० शिरा (शृ=नाश होना) स्त्री० नाड़ी, नस।

सं० शिरोमणि (शिरस्+मणि) स्त्री० शिर का गहना, शिर में पहननेका रतन, गु० उत्तम, सबसे बड़ा, श्रेष्ठ, प्रधान, मुखिया।

सं० शिरोरुह (शिरस्+रुह=जमना, निकलना) क० पु० बाल, केश।

सं० शिला (शिल्=कण, कण=इकट्ठा करना या चुनना) स्त्री० सिल, चट्टान, पत्थर, पाषाण, २ साफ़ और बराबर, पत्थर जिसपर लोढे से मसाला पीसाजाता है।

सं० शिलाजित् ⎫ (सं० शिलाजतु,
शिलाजीत ⎭ शिला=पहाड़ की चट्टान में पैदा हुई, जतु=लाख या लाल रंग की धातु) पु० शिलारस, कहते हैं कि पहाड़ों की चट्टानों का रस चूकर जम जाता है और पत्थर सा कड़ा होजाताहै उसको शिलाजीत कहते हैं और उसके खाने से शरीर में ज़ोर आता है।

सं० शिलीमुख (शिली=तीखी नोक, मुख=मुँह, जिसके मुँह पर तीखा फल लगा रहता है) पु० तीर, बाण, भ्रमर, भौंरा।

सं० शिलोच्चय पु० पर्वत, पहाड़।

शिल्प (शिल्=चुनना या शिल्प् =कारीगरी का काम करना) पु० कलविद्या, हुनर, गुण, कारीगरी।

शिल्पशाला स्त्री० कारीगरों का कारख़ाना ।

शिल्पक
शिल्पित } क०पु० कारीगर।

शिव (शी=सोना या शो=नाश करना दुःख को या प्रलय में सब सृष्टिको) पु० महादेव, महेश, २ मङ्गल, कल्याण, शुभ, सुख, ३ वेद ।

शिवपुरी (शिव + पुरी) स्त्री० काशी, बनारस ।

शिवरात्री (शिव + रात्री) स्त्री० शिवचतुर्दशी, फागुन बदी १४ ।

शिवसेनानी पु० स्वामिकार्तिकेय, कीर्तिमुख ।

शिवा (शिव) स्त्री० पार्वती, उमा, दुर्गा ।

शिवाला (सं०शिवालय, शिव + आलय) पु० शिव का मन्दिर।

शिवि
शिबि } पु०एक राजा का नाम।

शिविका
शिबिका } (शिव=सुख अर्थात् जिसमें बैठने से सुख मिले या शी=सोना जिसमें) स्त्री० पालकी, डोली ।

शिविर
शिबिर } पु० सैन्य निवास स्थान, छावनी ।

शिशिर (शश=उछल कर चलना अर्थात् पत्तों का झड़ना) स्त्री० एक ऋतु जो माघ और फागुन में रहती है ।

सं० शिशु (शा=पतला होना या शिव=बढ़ना) पु० बालक, बच्चा ।

सं० शिशुपाल पु० चँदेरी का राजा, जिसको श्रीकृष्णचन्द्र ने मारा ।

सं० शिष (शिष्=अन्त होना) भा० स्त्री०सिखाना, शिक्षा, उपदेश ।

सं० शिश्न पु० मेढ्र, लिङ्ग, पुरुषचिह्न।

सं० शिष्ट (शास्=सिखाना) गु० सीखनेयोग्य, सभ्य, २ आज्ञाकारी, ३ अच्छा, उत्तम, भला, काफ़ी ।

सं० शिष्टाचार (शिष्ट + आचार) पु० अच्छाचलन, सन्मान, आदर, विनय, बिनती ।

सं० शिष्टि स्त्री० आज्ञा, शासन, सज़ा।

सं० शिष्य (शास्=सिखाना) पु० उपदेश्य, चेला, विद्यार्थी, छात्र, पढ़नेवाला, २ किसी धर्म को माननेवाला ।

सं० शीकर (शीक्=सींचना या गीला करना) पु० जलकन, फुहारा, सरलद्रव्य, वायु ।

सं० शीघ्र (शीघ्=सूँघना) गु० उतावला, जल्द, फुर्तीला, क्रि० वि० तुरन्त, झटपट, जल्दी से ।

सं० शीघ्रगामी (गम्=चलना) क० पु० जल्दी चलनेवाला ।

सं० शीघ्रता (शीघ्र) भा० स्त्री०

जल्दी, उतावली, फुर्ती ।

सं॰ शीत (श्यै=जाना) गु॰ ठंढा, सर्द, २ सुस्त, पु॰ जाड़ा, सर्दी, ठण्ढ, ३ हिम, पाला ।

सं॰ शीतकर (शीत=ठंढी, कर=किरण) पु॰ चाँद, २ कपूर ।

सं॰ शीतकाल (शीत+काल) पु॰ जाड़ा, सर्दी, हिमन्तऋतु ।

सं॰ शीतज्वर (शीत+ज्वर) स्त्री॰ जाड़ा, जाड़े की तप ।

सं॰ शीतल (शीत=ठंढ, ला=लेना) गु॰ ठंढा, सर्द ।

सं॰ शीतलता (शीतल) भा॰ स्त्री॰ ठंढाई, ठंढापन ।

प्रा॰ शीतलताई, शीतलाई (सं॰ शीतलता) भा॰ स्त्री॰ ठंढाई, ठंढापन ।

सं॰ शीतला (शीतल) स्त्री॰ देवी, माता, चेचक ।

सं॰ शीतांशु (शीत=ठंढी, अंशु=किरण, जिसकी किरणें ठंढी हैं) पु॰ चाँद, २ कपूर ।

सं॰ शीताङ्ग (शीत+अङ्ग) पु॰ पक्षाघात, अर्द्धाङ्ग, एक बीमारी का नाम ।

सं॰ शीर्ण (शृ=मारना) गु॰ कृश, दुर्बल, शुष्क, सूखा ।

सं॰ शीर्ष (शृ=नाश होना) पु॰ शीस, सिर, माथा, मस्तक ।

सं॰ शील (शील्=सोचना या अभ्यास करना) पु॰ अच्छा स्वभाव, अच्छा चाल चलन ।

सं॰ शीलवान् (शील+वान्) गु॰ अच्छे स्वभाववाला, जिसका चाल चलन अच्छा हो, सुशील, नेक चलन ।

सं॰ शीलचक्षु गु॰ मुरौवतदार ।

सं॰ शीलित स्र्म॰ अभ्यस्त, रक्त, रक्ष, रटित ।

प्रा॰ शीशम (सं॰ शिंशपा) पु॰ एक पेड़ और उसकी लकड़ी का नाम ।

प्रा॰ शीस, सीस (सं॰शीर्ष) पु॰ शिर, माथ, मस्तक, कपाल ।

सं॰ शुक (शुक्=जाना या शुभ्=चमकना) पु॰ तोता, सूगा, सूआ, २ शुकदेवमुनि जिन्होंने राजा परीक्षित को श्रीमद्भागवत सुनाई ।

सं॰ शुक्ति स्त्री॰ सीपी, सूती, चक्षु, रोग, अर्शरोग ।

सं॰ शुक्र (शुच्=पवित्र होना या सोचना) पु॰ छठा ग्रह, २ एक मुनिका नाम जो भृगु ऋषि का बेटा और राक्षसों का गुरु था, ३ आग, अग्नि, ४ वीर्य्य, बीज ।

सं॰ शुक्रवार (शुक्र+वार) पु॰ छठादिन, शुक्रवार, जुमा ।

सं॰ शुक्राचार्य्य (शुक्र+आचार्य्य) पु॰ एक मुनिका नाम जो राक्षसों का गुरु था ।

० शुक्ल (शुच्=साफ़ होना) गु० धौला, उजला, सफ़ेद, श्वेत, पु० धौलारंग, श्वेतवर्ण ।

० शुक्लपक्ष (शुक्ल+पक्ष) पु० उजाला पक्ष, सुदी ।

ं० शुचा भा०स्त्री० पवित्रता,सफ़ाई।

ं० शुचि (शुच्=पवित्र होना, साफ़ होना) स्त्री० पवित्रता, सफ़ाई, शुद्धता, गु० साफ़, स्वच्छ, शुद्ध, धौला, सफ़ेद ।

सं० शुण्ड पु० सूंड़ ।

सं० शुद्ध (शुध्=साफ़ होना या करना) गु० पवित्र, साफ़, स्वच्छ, सफ़ेद,उज्ज्वल, २निर्दोष, ३सही।

सं० शुद्धता (शुद्ध) भा० स्त्री० पवित्रता, सफ़ाई, स्वच्छता ।

सं० शुद्धि स्त्री० पवित्रता, शुद्धता, शोधन, सफ़ाई ।

सं० शुद्धिपत्र पु० मुआफ़ीनामा, साफ़ीनामा ।

सं० शुन्य }
शून्य } (श्वि=बढ़ना) गु० ख़ाली, स्त्री० या पु० बिन्दी,सिफ़र,२आकाश,आस्मान।

सं० शुभ (शुभ्=चमकना) गु० अच्छा, भला, कल्याणकारी, मङ्गलदायक ।

सं० शुभग (शुभ=भला, गम्=जाना) गु० कल्याणकरनेवाला, सुखदायी, मङ्गलीक, २ सुन्दर ।

सं० शुभगता भा० स्त्री० मनोहरता, सुन्दरता, उम्दगी ।

सं० शुभचिन्तक क० पु० भला चाहनेवाला, ख़ैरख़्वाह ।

सं० शुभचिन्तकता भा० स्त्री० भलाई, ख़ैरख़्वाही ।

सं० शुभलग्न (शुभ+लग्न) पु० अच्छासमय, मङ्गलीक समय ।

सं० शुभाकाङ्क्षी क० पु० मङ्गलाभिलाषी, भलाई चाहनेवाला, ख़ैरख़्वाह ।

सं० शुभ्र (शुभ्=चमकना) गु० उजला, सफ़ेद, धौला, निर्मल, २ चमकीला, चमकदार, ३ पु० धौला रंग, श्वेतवर्ण ।

सं० शुम्भ (शुम्भ्=मारना) पु० एक राक्षस का नाम जिसको दुर्गा ने मारा ।

सं० शुल्क पु० चुंगी, फ़ीस ।

सं० शुश्रूषक (श्रु=सुनना) क०पु० सेवक, परिचारक, टहलू ।

सं० शुश्रूषा स्त्री० सेवा, टहल ।

सं० शुष्क (शुष्=सूखना) गु० सूखा, निरस, खुश्क ।

सं० शुष्ण पु० सूर्य, अग्नि, वायु, पराक्रम,शोक,प्रकाश,दीप्ति,शोभा।

सं० शूकर (शू=ऐसा शब्द, कर=करनेवाला, कृ=करना) पु० सुअर, वराह ।

सं० शूद्र (शुच्=साफ़ करना, जो बड़ोंको नहलाते, धुलाते हैं)पु०

चौथे वर्णके लोग जिनका काम नौकरी करना है ।

सं० शून्य गु० निर्जनस्थान, आकाश, बिन्दु, सिफ़र, अभाव, असम्पूर्ण, ऊन, तुच्छ, उदासीन ।

सं० शून्याकार गु० उदासीन की सूरत, खालीसा ।

सं० शूर (शूर्=बहादुरी करना) पु० वीर, सूरमा, रावत, बहादुर, साहसी, २ शूरसेन, जो श्रीकृष्ण का दादा था, ३ सिंह, ४ सूर्य, ५ सुअर, ६ साल का पेड़ ।

सं० शूरण पु० ज़मीक़न्द, वर्तुलाकारमूल ।

सं० शूरता (शूर) भा० स्त्री० बहादुरी, वीरता, शूरमापन ।

सं० शूरसेन (शूर=बहादुर, सेन=सेना) पु० मथुरा के एक राजा का नाम, २ मथुरा ।

सं० शूर्प (शूर्प्=मापना) पु० सूप, छाज ।

सं० शूर्पनखा (शूर्प+नख अर्थात् जिसके नख सूप ऐसे हैं) स्त्री० रावण की बहिन ।

सं० शूल (शूल्=बीमार होना) पु० पीड़ा, दुःख, रोग, २ लोहे का तीखा काँटा, त्रिशूल ।

सं० शृगाल (शृंग+अला या असृज् =लोहू, आ, ला=लेना, यहाँ असृज् के अ का लोप होजाता है) पु० सियार, गीदड़ ।

सं० शृङ्खला (शृ=नाशकरना) स्त्री० सांकल, संकली, सिकरी, २ करधनी ।

सं० शृङ्ग (शृ=नाश करना) पु० सींग, २ शिखर, पहाड़की चोटी, पहाड़के ऊपर का भाग, ३ चिह्न, ४ बड़ाई, प्रभुत्व, प्रधानता, ५ कामदेव का बढ़ना ।

सं० शृङ्गबेर पु० श्रीरामचन्द्रके मित्र गुह निषाद के नगर का नाम ।

सं० शृङ्गार (शृङ्ग=कामदेव का अर्थात् प्यार का बढ़ना और ऋ=जाना, जिससे मन में काम बढ़ता है) पु० साहित्य विद्या में एक रस का नाम, २ शोभा, सिंगार, गहना, भूषण—१६ शृङ्गार—

दो० अंग शुची मज्जन वसन,
मांग महावर केश ।
तिलक भाल तिल चिबुक में,
भूषण मेंहदी बेश ।
मिस्सी काजल अरगजा,
बीरी और सुगन्ध ।
पुष्प कलीयुत होयकर,
तब नव सप्त प्रबन्ध ।

शरीर का मैल उतारना, २ न्हाना, ३ साफ़ कपड़े पहनना, ४ काजल लगाना, ५ अलता से हाथ पैर रचाना, ६ बालसँवारना, ७ सिन्दूरसे मांग भरना, ८ लिलाड़ में केशर

चन्दन की खौरी या तिलक निकालना, ९ ठुड्डी पर तिल बनाना, १० मेंहदी लगाना, ११ देह में अरगजा या इतर आदि सुगन्धित चीज़ लगाना, १२ गहना पहनना, १३ फूलोंकी माला आदि पहनना, १४ पान चबाना, १५ दाँत रँगना, १६ होठों को लाल करना ।

सं० शृङ्गी (शृङ्ग) गु० सींगवाला, पु० एक ऋषिका नाम जो लोमश ऋषिका चेला था जिसके शाप से राजा परीक्षित को तक्षक साँप ने डसा ।

सं० शेखर (शिख्=जाना) पु० फूलों की माला जो मुकुट के ऊपर पहनते हैं, मुकुट, किरीट, २ शिखा, चोटी ।

सं० शेष (शिष्=बाक़ी रहना) पु० अनन्त, सर्पराज, साँपों का राजा जिस के १००० फण बतलाते हैं और जिस पर विष्णु सोते हैं और जिसके एक फण पर हिन्दूलोग पृथ्वी को ठहरी बतलाते हैं और लक्ष्मणजी और बलदेवजी को शेषजी के अवतार कहते हैं, गु० बाक़ी, बचा हुआ ।

सं० शेषशायी (शेष=साँपोंका राजा, शायी=सोनेवाला, शी=सोना) पु० विष्णु भगवान् जो शेषजी पर सोते हैं ।

सं० शैल (शिला) पु० पहाड़, पर्वत, गु० पहाड़ी, पथरीला ।

सं० शैलराज पु० हिमालय ।

सं० शैलशिबिर पु० समुद्र, पर्वतीय पुर ।

सं० शैलाट (शैल + अट्=घूमना) पु० सिंह, किरात, श्वेत काँच ।

सं० शैव (शिव) पु० शिव का भक्त, शिवको पूजनेवाला, गु०शिव का ।

सं० शैवाल पु० सिवार ।

सं० शोक (शुच्=चिन्ता करना) पु० शोच, चिन्ता, फ़िक्र, दुःख, खेद, सन्ताप, पछतावा ।

सं० शोकाकुल
शोकार्त्त } (शोक=शोच, आकुल या आर्त्त=घबराया हुआ) गु० शोच से व्याकुल, विकल, दुःखी ।

सं० शोकापह (शोक + अप + हन्=नाश करना) क० पु० शोकनाशक, शोकहारी ।

सं० शोचक (शुच् + अक, शुच्=चिन्ता करना) क० पु० शोच करनेवाला, फ़िक्रमन्द ।

सं० शोचनीय सर्व० शोचनेयोग्य ।

सं० शोणित (शोण्=लाल होना) पु० लोहू, रक्त, रुधिर, २ कुङ्कुम, गु० लाल ।

सं० शोधक क० पु० शुद्ध करनेवाला ।

सं० शोधित सर्व० शुद्ध की हुई ।

सं० शोधन (शुध्=पवित्र करना) पु० पवित्र करना, शुद्ध करना, २ सही करना ।

सं० शोधनी ग०स्त्री०बढ़नी,झाड़ू।

सं० शोधनीय र्म० शोध्य, शोधने योग्य, इस्लाहतलब ।

सं० शोभन (शुभ्=चमकना) भा० श्रेष्ठ, उत्तम, उम्दा ।

सं० शोभा (शुभ्=चमकना) स्त्री० सुन्दरता, ख़ूबसूरती, छवि, कान्ति, २ चमक, झलक ।

सं० शोभायमान क० पु० सुशोभित, ख़ूबसूरत ।

सं० शोभित (शुभ्=चमकना) गु० सुन्दर, शोभायमान, चमकीला ।

सं० शोषक (शुष्+अक, शुष्= सोखना) क० पु० रसाकर्षक, वायु, सूर्यादि ।

सं० शौच (शुचि) भा० पु० पवित्रता, शुद्धता, सफ़ाई, स्नान आदि।

सं० शौण्डिक क० पु० कलवार ।

सं० शौर्य्य (शूर) भा० पु० शूरमापन, बहादुरी, वीरता ।

सं० शौल्किक क०पु०दारोगा चुंगी।

सं० श्मशान (श्मन्=मुर्दा और शी=सोना, जहाँ मुर्दा सुलाया जाता है अर्थात् जलाया जाता है) पु० मसान, मरघट, मुर्दाघाट ।

सं० श्याम (श्यै=जाना) गु० काला काला, नीला मिला हुआ, पु० श्रीकृष्ण का नाम ।

सं० श्यामता (श्याम) भा० स्त्री० कालासा, कालापन, कृष्णता ।

सं० श्यामल (श्याम=कालारङ्ग, ला=लेना)गु०काला,श्यामवर्ण ।

सं० श्यामा (श्याम) स्त्री० काली, दुर्गा, देवी, २ एक काले रङ्गकी गानेवाली चिड़िया, षोड़श वर्ष की स्त्री, सोलह वर्ष की औरत, पीपरि, काले रङ्ग की स्त्री ।

सं० श्येन पु० शाहीन, बाज़पक्षी ।

सं० शृङ्खला स्त्री० ज़ंजीर, सांकरि, बिलाई, भेलन ।

सं० श्रद्धधान क० पु० श्रद्धायुक्त, मुअतक़िद ।

सं० श्रद्धा (श्रत्=विश्वास, धा= रखना) स्त्री० विश्वास, भरोसा, भक्ति, गुरु और शास्त्र के वचन में पक्का भरोसा, २ आदर, ३ इच्छा, चाह, ४ बल, ताक़त ।

सं० श्रम (श्रम्=मिहनत करना) स्त्री० वा पु० मिहनत, थकावट, क्लान्ति, दौड़-धूप, कष्ट, परिश्रम, २ तप, तपस्या ।

सं० श्रमजीवी क० पु० मज़दूर, भारवाहक ।

सं०श्रमित क०पु०थकित,थकाहुआ।

सं० श्रमी क० पु० मेहनती ।

सं० श्रय }
श्रयण } (श्रि=सहारा लेना) पु० अवलम्ब, सहारा,

भरोसा ।

सं० श्रवण (श्रु=सुनना) पु० कान, सुनने की इन्द्रिय, २ सुनना ।

सं० श्रवणा (श्रु=सुनना) स्त्री० बाईसवां नक्षत्र ।

सं० श्राद्ध (श्रद्धा) पु० पितरों को शास्त्र की रीति से जल और पिण्ड देना ।

सं० श्रान्त (श्रम्=थकना) क० पु० क्लान्त, थका हुआ ।

सं० श्रान्ति भा० स्त्री० थकावट, थकवाई ।

प्रा० श्राप (सं० शाप) पु० धिक्कार, दुराशिष, बददुआ ।

सं० श्रावक (श्रु=सुनना अपने धर्म को) पु० जैनी, जिन मत को माननेवाला, २ श्रोता, सुननेवाला ।

सं० श्रावण (श्रवण=एक नक्षत्र का नाम, इस महीने में पूरा चाँद इस नक्षत्र के पास रहता है और पूर्णमासी को यह नक्षत्र होता है) पु० इसीसे एक महीने का नाम सावन हुआ ।

सं० श्रावणी (श्रावण) स्त्री० सावन की पूनौं, राखी ।

सं० श्री (श्रि=सेवा करना जो विष्णु की सेवा करती है या जिस को सब संसार सेवता है) स्त्री० लक्ष्मी, विष्णुपत्नी, २ सम्पदा, धन, दौलत, ३ शोभा, सुन्दरता, यह शब्द देवताओं और बड़े आदमियों और पवित्र पोथियों आदि के साथ बड़ाई और मान के लिये लगाया जाता है और कभी कभी दो श्री अथवा पाँच छः आदि १०८ श्री तक लिखते हैं, जैसे श्रीरामचन्द्र, श्रीकृष्ण, श्रीयज्ञदत्त पण्डित, श्रीभागवत पुराण आदि—यहाँ मत् या युक्त या युत शब्द छिपा हुआ है और कभी २ इन शब्दों के साथ भी बोलते हैं, जैसे श्रीमान्, श्रीयुत, श्रीयुक्त आदि ।

सं० श्रीखण्ड (श्री=शोभा, खण्ड= टुकड़ा) पु० चन्दन ।

सं० श्रीचक्र (श्री + चक्र) पु० त्रिपुरा, सुन्दरी, देवी की पूजा का यन्त्र ।

सं० श्रीनिवास (श्री=लक्ष्मी, निवास=जगह, जो लक्ष्मी के पास रहते हैं या जिनके पास लक्ष्मी रहती है) पु० विष्णु, भगवान् ।

सं० श्रीपति (श्री + पति) पु० विष्णु, भगवान् ।

सं० श्रीफल (श्री + फल) पु० नारियल, २ बिल्व ।

सं० श्रीमत् ⎫ (श्री=शोभा, मत्=
श्रीमान् ⎬ वाला) गु० भाग्य-
श्रीमन्त ⎭ वान्, प्रतापी, धन-
वान्, श्रीयुत ।

सं० श्रीयुक्त } (श्री=शोभा, लक्ष्मी,
श्रीयुत } युक्त वा युत=मिला हुआ) गु० भाग्यवान्, धनवान्, श्रीमान् ।

सं० श्रीवत्स (श्री=शोभा, वत्स=चिह्न) पु० विष्णु ।

सं० श्रुत (श्रु=सुनना) र्म्म० पु० सुना हुआ, समझा हुआ, पु० शास्त्र ।

सं० श्रुति (श्रु=सुनना) स्त्री० वेद, २ कान, ३ सुनना ।

सं० श्रुवा } (श्रु=चूना या टपकना)
स्रुवा } स्त्री० होम का चाटू, खैर का बना हुआ चम्मच हाथ के आकार का ।

सं० श्रेणि } (श्रि=सेवा करना)
श्रेणी } स्त्री० पाँत, पंक्ति, क़तार ।

सं० श्रेष्ठ (प्रशस्य शब्द को श्र हो जाता है प्र=बहुत, शंस्=सराहना) गु० बहुत अच्छा, सबसे अच्छा, उत्तम, सब से बड़ा ।

सं० श्रेष्ठाचार (श्रेष्ठ+आचार) पु० उत्तम रीति, उम्दा तरीक़ा ।

सं० श्रोता (श्रु=सुनना) क० पु० सुननेवाला, सुनवैया ।

सं० श्रोत्र (श्रु=सुनना) पु० कान, सुनने की इन्द्रिय ।

सं० श्रोत्रिय क० पु० वैदिक, वेद पाठक, वेदपाठी, वेद पढ़नेवाला ।

सं० श्लाघा (श्लाघ्=सराहना) स्त्री० सराह, प्रशंसा, तारीफ़, २ चाह, इच्छा ।

सं० श्लाघ्य र्म्म० प्रशंसा योग्य, क़ाबिलतारीफ़ ।

सं० श्लेष (श्लिष्=मिलना) पु० मिलाव, संयोग, २ एक अलंकार जिस में एक शब्द के बहुत अर्थ होते हैं, जैसे, "कीकर पाकर तार,
जामन फलसा आमिला"
"सेव कदम कचनार,
पीपल रत्ती तून तज"

इस में बहुत से पेड़ों के नाम दिखाई देते हैं पर इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर ने तुझ पर कृपा की कि जिस को तू चाहती थी सोही आमिला, सो हे कच्ची स्त्री ! अब उसके पैरों की तू सेवा कर और अब अपने प्यारे को एक पल भर भी मत छोड़ ।

सं० श्लेष्मा पु० कफ़, खखार, ज़ुकाम ।

सं० श्लोक (श्लोक=बढ़ना या इकट्ठा करना) पु० चार पद का संस्कृत छन्द, २ यश, कीर्ति, कीरति, नामवरी ।

सं० श्वपच (श्वन्=कुत्ता, पच्=पकाना अर्थात् कुत्तेको खानेवाला) पु० चण्डाल ।

सं० श्वशुर (शु=जल्दी, अश्=पाना) पु० ससुर, पति या पत्नी का बाप ।

सं० **श्वश्रू** (श्वशुर) स्त्री० सास, ससुर की लुगाई ।

सं० **श्वस्** } अव्य० आगामि दिन,
श्वः } आनेवाला दिन ।

सं० **श्वान** (श्वि=बढ़ना या जाना) पु० कुत्ता, कुक्कुर ।

सं० **श्वास** (श्वस्=साँस लेना) पु० साँस, प्राण, दम ।

सं० **श्वेत** (श्वित्=धौला होना) गु० धौला, सफ़ेद ।

सं० **श्वेतद्वीप** (श्वेत + द्वीप) पु० वैकुण्ठ, २ एक द्वीप का नाम ।

ष

सं० **ष** पु० केश, हृदय, गु० श्रेष्ठ, विज्ञ ।

सं० **षट्** (षष्) गु० छः, ६ ।

सं० **षट्ऊर्म्मि** (बुभुक्षा च पिपासा च प्राणस्य मनसःस्मृतौ । शोकमोहौ शरीरस्य जरामृत्यू षडूर्म्मयः) प्राण को भूँख, प्यास व मनकी स्मृति में शोक, मोह व शरीर को जरा और मृत्यु ये छः ऊर्म्मियां होती हैं ।

सं० **षट्कर्म** (षट् + कर्म) पु० स्नान, संध्या, जप, तर्पण, देवता का पूजन आदि, (१ वेद पढ़ना, २ दूसरे को पढ़ाना, ३ यज्ञ करना, ४ दूसरे को कराना, ५ दान देना, और ६ दान लेना ये ब्राह्मण के छः काम हैं) ।

सं० **षट्कोण** (षट् + कोण) पु० छःकोना खेत, छःखूंट खेत, २ वज्र ।

सं० **षट्पद** (षट् + पद) पु० भौंरा ।

सं० **षट्प्रयोग** १ शान्ति, २ वशीकरण, ३ स्तम्भन, ४ विद्वेषण, ५ उच्चाटन, ६ मारण ।

सं० **षट्रसभोजन** (षट्=छः, रस =स्वाद, भोजन=खाना) पु० मीठा, खट्टा, खारा, कड़ुआ, कसैला और तीता इन छः रसों से मिला हुआ खाना ।

सं० **षट्वदन** } (षट्=छः, वदन
षडानन } या आनन=मुँह)
पु० कार्त्तिकेय, महादेव का बेटा ।

सं० **षट्वर्ग** पु० काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य्य ।

सं० **षट्शास्त्र** (षट् + शास्त्र) पु० न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त, सांख्य और पातञ्जल ये छःशास्त्र इनको षट्दर्शन भी कहते हैं (दर्शन शब्दको देखो) ।

सं० **षडङ्ग** (षट् + अङ्ग) पु० शरीर के छः भाग जैसे दो हाथ, दो पाँव, शिर और कमर, २ वेद के छःअङ्ग, (जैसे १ शिक्षा, २ कल्प, ३ व्याकरण, ४ निरुक्त, ५ ज्योतिष, ६ छन्द, वेदाङ्ग शब्द को देखो) ।

सं० **षडङ्घ्रि** (षट्=छः, अंघ्रि=पाँव) पु० भौंरा, भ्रमर ।

सं० **षण्ड** (षण् + ड) कमलादिकों का समूह, साँड़ ।

सं० **षण्ढ** पु० नपुंसक, हिजड़ा,

मुखन्नस ।

सं० षष्टि (षष्=छः, पर आगे तिप्रत्यय के आनेसे उसका अर्थ दश गुना होता है) गु० साठ ।

सं० षष्ठ (षष्) गु० छठा ।

सं०षष्ठी (षष्) स्त्री० छठ, छठी तिथि, षष्ठीदेवी ।

सं० षोडश (षट्=छः, दश=दस) गु० सोलह, १६ ।

सं० षोडशदान (षोडश + दान) पु० सोलह चीज़ों का दान, जैसे १ धरती, २ आसन, ३ पानी, ४ कपड़ा, ५ दीपक (या दीपक के लिये तेल), ६ अनाज, ७ पान, ८ छत्र, ९ सुगन्धित चीज़, १० फूलों की माला, ११ फल, १२ सेज, १३ खड़ाऊं, १४ गाय, १५ सोना, १६ रूपा या चांदी ।

सं० षोडशभुजा (षोडश=सोलह, भुजा=हाथ) स्त्री० सोलह हाथ की दुर्गा, देवी की मूरत ।

सं० षोडशसंस्कार या कर्म (१ गर्भाधान, २ पुंसवन, ३ सीमन्त, ४ जातकर्म, ५ नामकरण, ६ निष्क्रमण, ७ अन्नप्राशन, ८ चूड़ाकर्म अर्थात् मुण्डन, ९ कर्णवेध, १० उपनयन अर्थात् यज्ञोपवीत, ११ वेदारम्भ, १२ समावर्तन अर्थात् ब्रह्मचर्य, १३ विवाह, १४ गृहाश्रम, १५ द्विरागमन, १६ वानप्रस्थ, १७ महावाक्यपरिसमाप्ति, १८ संन्यासविधि, १९ सर्वसंस्कार होम विधि, २० मृतककर्म) ।

सं० स्णुषा स्त्री० बहू, पुत्रभार्या जैसे " स्नुषेयं तव कल्याण " ।

स

सं० स (सो=नाश करना) पु० विष्णु, २ साँप, ३ शिव, ४ पखेरू, भृगु, ५ समुच्च० साथ, सहित, समेत (जैसे सजीव, जीवसहित), ६ बराबर, वही, एकही (जैसे सधर्म एकही धर्म का), ७ साम्हन ।

सं० संक्षिप्त म्प० कम की हुई, मुख़्तसिर की हुई ।

सं० संक्षेप (सम्=साथ, क्षिप्=फेंकना) पु० सारअंश, सारभाग, मुख़्तसर ।

प्रा० संगत (सं० संगति) स्त्री० मेल, साथ, सोहबत, २ वह जगह जहाँ सिख अपने धर्म की रीति रसम करते हैं ।

प्रा० संचना }
सांचना } (सं० सञ्चयन, सम्=अच्छीतरह से, चि=इकट्ठा करना) क्रि० स० इकट्ठा करना ।

सं० संज्ञा (सम्=अच्छी तरह से, ज्ञा=जानना) स्त्री० इस्म, नाम, चीज़ का नाम, २ बुद्धि, ३ चेतना, ४ गायत्री, ५ सूर्य की स्त्री ।

प्रा० संजोवना (सं० संयोजन,

सम्, युज्=मिलना) क्रि० स० तैयार करना ।

सं० संन्यासी संन्यास लेने वाला ।

प्रा० संपत् (सं० सम्पद्) स्त्री० सम्पदा, धन, दौलत ।

प्रा० संभलना क्रि० अ० थँभना, ठहरना, सहारापाना, खड़ा होना, गिरते गिरते थँभ जाना ।

प्रा० संभालना } (सं० सम्भारण,
संभारना } सम्, भृ=पकड़ना) क्रि० स० थाँभना, पकड़ना, सहारादेना, मदद देना, सहायता देना ।

सं० संयम (सम्=अच्छीतरह से, यम्=रोकना) भा० पु० नेम, नियम, व्रत के दिन कितनी चीज़ों के खाने पीने की रुकावट, इन्द्रियनिग्रह, परहेज़, बन्धन ।

सं० संयमी क० पु० मुनि, इन्द्रियरोधक ।

सं० संयुक्त (सम्=साथ, युज्=मिलना) गु० मिला हुआ, लगा हुआ, जुड़ा हुआ ।

सं० संयुग (सम्=साथ, युज्=मिलना) पु० लड़ाई, युद्ध, संग्राम ।

सं० संयुत (सम्, यु=मिलना) कर्म० मिला हुआ, लगा हुआ ।

सं० संयोग (सम्, युज्=मिलना) पु० मेल, मिलाप, सम्बन्ध, २ दैवयोग, संयोग, इत्तिफ़ाक़ ।

सं० संयोजित कर्म० मिलाया गया ।

सं० संरम्भ (सम्, रभ्=कोसना) पु० कोप, आक्रोश, वेग ।

सं० संराधन (सम्, राध=सेवा करना) भा० पु० सर्वप्रकार से सेवा करना, चिन्तन करना ।

सं० संराव (सम् + रु=बोलना) पु० ध्वनि, शब्द ।

सं० संलग्न (सम्, लग्=मिलना) क० पु० मिलित, संयुक्त ।

सं० संलाप (सम्, लप्=कहना) भा० पु० परस्पर कहना, बाहमगुफ़्तगू करना ।

सं० संवत् (सम्, वय्=जाना) पु० विक्रमादित्य राजा का चलाया हुआ साल, बरस, सन् ।

सं० संवत्सर (सम् + वत्सर) पु० बरस, संवत्, साल, सन् ।

सं० संवाद (सम्, वद्=कहना) पु० बात चीत, चर्चा, प्रसंग, कथा, संदेश, संदेशा, समाचार ।

प्रा० संवारना क्रि० स० सजाना, सुधारना, सिंगारना, तैयारकरना ।

सं० संशय (सम्, शी=सोना, पर सम् उपसर्ग के साथ आने से इस का अर्थ संदेह करना होजाता है) पु० संदेह, शक ।

सं० संशयात्मन् पु० संदिग्ध अन्तःकरण, संशयात्मा, अस्थिरचित्त,

डामाडोल मन ।

सं० संशोधन (शुध्=शुद्ध करना) भा० पु० संशुद्धि, नज़रसानी, दुबारा देखना, ध्यान से देखना ।

सं० संसर्ग (सम्=साथ, सृज्=पैदा होना) पु० संगत, सोहबत, सम्बन्ध, मेल ।

सं० संसार (सम्=साथ,सृ=जाना) पु० जगत्, जग, दुनिया ।

सं० संसारी (संसार) गु० संसार का, दुनिया का, लौकिक, दुनियावी ।

सं० संसृति (सम्=साथ,सृ=जाना) स्त्री० संसार, जगत्, आवागमन ।

सं० संस्कार (सम्=शुद्ध, कृ=करना) पु० पवित्रता, सफ़ाई, शुद्ध करनेकी रीति, २ मरम्मत, ३ प्रारब्ध ।

सं० संस्कृत (सम्=शुद्ध,कृ=करना) गु० अच्छी भाँति से सुधारा हुआ, उत्तम, पवित्र, पु० एक बोली जिसको हिन्दू पवित्र समझते हैं और देववाणी अर्थात् देवताओं की बोली कहते हैं और जिसमें हिन्दुओं के वेद शास्त्र लिखे हुए हैं और इस बोली का व्याकरण और सब बोलियों से बहुत पूरा और अच्छा है ।

सं० संहार (सम्, हृ=लेना, पर सम् उपसर्ग के साथ आनेसे अर्थ नाश करना होता है) पु० नाश, विनाश, २ प्रलय, संसार का नाश, ३ एक नरक का नाम, ४ एक भैरव का नाम ।

प्रा० संहारना (सं० संहारण) क्रि० स० नाश करना, मार डालना ।

सं० संहिता (सम्=अच्छी भाँति से, धा=रखना) स्त्री० मनु आदि आचार्यों के बनाये हुए धर्मशास्त्र, पुराण, इतिहास आदि, कर्मकाण्ड, वेद का भाग ।

प्रा० सकट } (सं० शकट) पु०
सगड़ } गाड़ी, छकड़ा ।

प्रा० सकत } (सं० शक्ति) स्त्री०
सगत } ज़ोर, बल, ताक़त, (शक्ति शब्द को देखो) ।

प्रा० सकना (सं० शक्=समर्थ होना) क्रि० समर्थ होना, किसी काम के करने का बल रखना ।

प्रा० सकरा } (सं० संकीर्ण) गु०
संकड़ा } तंग, संकेत, छोटा ।

सं० सकर्मक (स=साथ, कर्म=कर्मकारक) पु० ऐसी धातु अथवा क्रिया जिसमें कर्म हो, जैसे खाना, पीना, लेना, देना आदि ।

सं० सकल (स=साथ,कला=अंश, कल्=गिनना) गु० सब, सारा, सिगरा, पूरा, संपूर्ण, समस्त, तमाम ।

सं० सकाम (स=साथ,काम=इच्छा) गु० कामना सहित, चाहनेवाला,

२ सफल ।

० सकार (सं० सकाल) पु० सबेरा, भोर, प्रभात, प्रातःकाल ।

० सकारना (सं० स्वीकरण) क्रि० स० सही करना, मानना, अँगेज़ना, मंज़ूर करना ।

० सकाश धि० समीप, निकट, पास ।

० सकुचना (सं० सङ्कोचन, सम् =साथ, कुच्=सिकुड़ना) क्रि० अ० लजाना, शर्माना, संकोच करना, २ डरना ।

० सकृत्[1] अव्य० एकबार, एक मर्तबह, एक दफ़ा ।

० संकेत गु० संकड़ा, तंग, छोटा ।

० सकोड़ना (सं० सङ्कोचन) क्रि० अ० सिमटना, सिकुड़ना, २ क्रि० स० पीछे खेंचलेना, समेट लेना ।

० सखा (स=बराबर, ख्या=कहलाना) पु० मित्र, दोस्त, साथी, बन्धु, संगी ।

० सखी (सखा) स्त्री० सहेली, सथिनी, संगिनी, आली ।

० सगर (स=साथ, गर=विष, ज़हर, जो ज़हर के साथ पैदा हुआ) पु० अयोध्या के एक राजा का नाम जिससे समुद्र का नाम सागर हुआ, गु० ज़हरीला, विषैला ।

सं० सगा (सं० स्वकीय, स्व=अपना) गु० अपना, सम्बन्धी, समधी, नातेदार, रिश्तेदार, सगा भाई=अपना भाई, एक बाप का बेटा ।

प्रा० सगाई } (सं० स्वकीयता, स्त्री०
सगावत } भाईचारा, नाता, अपनायत, रिश्ता, २ मँगनी, निस्बत, ३ नीच ज़ात की लुगाई का दूसरा ब्याह ।

सं० सगुण (स+गुण) गु० गुण सहित, रजोगुण सतोगुण तमोगुण सहित ।

सं० सघन (स+घन) गु० गहरा, घना, गहन ।

सं० सङ्कट (सम्=साथ, कट्=घेरना) पु० दुःख, कष्ट, आपदा, विपत्, तकलीफ़, आफ़त ।

सं० सङ्कर (सम्=मिला हुआ, कॄ=फैलना) पु० मिली हुई ज़ात, और ज़ात के पुरुष से और ज़ात की स्त्री में पैदा हुआ मनुष्य, दोगला, वर्णसंकर, खिचड़ी, दो ज़ातका ।

सं० सङ्कर्षण (सम्, कृष्=खींचना) पु० श्रीकृष्ण का बड़ा भाई, बलदेव जिसने एक मां देवकी के गर्भ

---

[1] " सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते । अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद् व्रतं मम " (इति मायणे रामवाक्यम्) ॥

से गिर कर दूसरी मां रोहिणी के पेट से जन्म लिया इस लिये ऐसा नाम हुआ ।

सं० **सङ्कलन** (सम्, कल=गिनना) पु० जोड़, जोड़ना ।

सं० **सङ्कलित** कर्म० जोड़ा हुआ, जमा, संगृहीत ।

सं० **सङ्कल्प** (सम्=साथ, कृप्=समर्थ होना) पु० मन की इच्छा, कामना, मनोरथ, २ प्रतिज्ञा, नियम, नेम, प्रहर ।

सं० **सङ्कल्पित** कर्म० दत्त, अभिप्रेत, दीहुई ।

सं० **सङ्काश** गु० सदृश, समान ।

सं० **सङ्कीर्ण** (सम्=साथ, कॄ=बिखरना) गु० बहुत मनुष्यों का मिलाव, भीड़ भाड़, घनाघन, तंग ।

सं० **सङ्कीर्णता** भा० स्त्री० तंगी, सकराई, कोताही ।

सं० **सङ्कीर्तन** भा० पु० वर्णन करना, यश गाना ।

सं० **संकुल** (सम्=खूब, कुल=इकट्ठा होना) गु० खूब भरा हुआ, बहुत आदमियों या जीवों से भरा हुआ ।

सं० **सङ्केत** (सम्, कित्=जानना) पु० सैन, इशारा, चिह्न, २ वचन।

सं० **सङ्कोच** (सम्, कुच्=सिकुड़ना) पु० लाज, शर्म, २ सिमटाव, तकल्लुफ़ ।

सं० **सङ्कोचन** भा० पु० लपटाव, सिकुरना, यन्त्रण ।

सं० **सङ्कोचित** / **संकुचित** क० सकुचा हुआ, सिकुरा हुआ, लज्जित ।

सं० **सङ्कोची** क० पु० शर्मिन्दा, पशोपेश करनेवाला, दब्बू, लज्जालु ।

सं० **संक्रम** (क्रम्=जाना) पु० दुर्गमार्ग, क़िला की राह, आक्रमण, हिसार, घिराव, जलबाँध ।

सं० **संक्रमण** भा० पु० संक्रान्ति, पर्यटन, राशियों का बदलना ।

सं० **संक्रान्त** पु० मेल, मिलाप ।

सं० **संक्रान्ति** (सम्=साथ, क्रम्=जाना) स्त्री० सूर्य अथवा और ग्रहों का एक राशि से दूसरी राशि पर जाना ।

सं० **संक्रामक** क० पु० पर्यटक, घूमनेवाला ।

सं० **सङ्ख्या** (सम्, ख्या=प्रसिद्ध होना) स्त्री० गिन्ती, शुमार ।

सं० **सङ्ग** (सम्=साथ, गम्=जाना, अथवा सञ्ज्=मिलना) पु० मेल, सम्बन्ध, संयोग, साथ ।

सं० **सङ्गति** (सम्=साथ, गम्=जाना) स्त्री० मेल, साथ, सङ्गत, सोहबत ।

सं० **सङ्गम** (सम्=साथ, गम्=जाना) पु० मिलना, मेल, मिलाव, संयोग, २ एक नदी का दूसरी नदी के

साथ अथवा समुद्र के साथ मिलना, ३ मैथुन, स्त्रीसंग ।

सं० **सङ्गर** (सम्=साथ, गृ=निगलना वा निकलना) पु० लड़ाई, युद्ध, झगड़ा, २ आपदा, ३ विष, ४ शमी का पेड़, ५ प्रतिज्ञा ।

सं० **सङ्गी** (सङ्ग) गु० साथी, मेली, मिलापी, मित्र ।

सं० **सङ्गीत** (सम्=अच्छीतरह से, गै=गाना) पु० गाने की विद्या, गाना, गाने नाचने की विद्या, गु० वर्णित, कथित ।

सं० **संगृहीत** (सम्=अच्छी तरह से, ग्रह्=लेना) कर्म० पु० इकट्ठा किया हुआ, संग्रह किया हुआ, संकलित, तालीफ़शुदह ।

सं० **संग्रह** (सम्=अच्छी तरह से, ग्रह्=लेना) पु० इकट्ठा, एकट्ठा, सञ्चय, तालीफ़ ।

सं० **संग्रहण** भा०पु० संग्रह, संचय ।

सं० **संग्रहणी** स्त्री० बहुत दस्त आना, नाम रोग ।

सं० **संग्रहीता** (सम्=अच्छी तरह से, ग्रह्=लेना) क० पु० संग्रहकर्त्ता, जोड़नेवाला ।

सं० **संग्राम** (संग्राम=लड़ाई करना) पु० लड़ाई, युद्ध, रण, जंग ।

सं० **संग्राहक** क०पु० संग्रहकर्ता ।

सं० **संग्राही** क० पु० संग्रहकर्ता, जमा करनेवाला, इकट्ठा करनेवाला ।

सं० **सङ्घट्टक** (सम्+घट्ट=रगड़ना) क० पु० योजक, मिलानेवाला, रगड़नेवाला, रचनेवाला ।

सं० **सङ्घट्टन** (सम्, घट्ट=चलना) भा०पु० मेलना, गढ़ना, रचना, साथ ।

सं० **सङ्घर्ष** (सम्, घृष्=घिसना) पु० रगड़ा, परस्पर रगड़ना, स्पर्द्धा, प्रभञ्जन ।

प्रा० **सच** (सं० सत्य) गु० सत्य, ठीक, साँच, हाँ, निश्चय, २ पु० सचाई, सचावट, क्रि० वि० ठीक ठीक, यथार्थ ।

प्रा० **सचमुच** बोल० ठीक ठीक, यथार्थ ।

सं० **सचराचर** (स=साथ, चर=चलनेवाला, अचर=नहीं चलनेवाला) गु० जीव, जन्तु, पेड़, पत्थर आदि सब समेत ।

प्रा० **सचाई**
सच्चाई } (सं० सत्यता) भा० स्त्री० सच, साँच, सचावट, ईमान्दारी, खराई, शुद्धता ।

सं० **सचि**
सची } (सच्=बाँधना या सींचना) स्त्री० इन्द्राणी, इन्द्रकी पत्नी ।

सं० **सचिव** (सच्=बाँधना या सींचना) पु० मन्त्री, सलाह देनेवाला ।

सं० **सचेत** (स=साथ, चेत=सुधि

या होश) गु० चौकस, सावधान, होशियार ।

सं० सचेतन (स=साथ, चेतना=बुद्धि, ज्ञान) गु० ज्ञानवान्, बुद्धिमान् ।

प्रा० सचौटी (सच) स्त्री० सचाई, सचावट ।

प्रा० सच्चा (सं० सत्य) गु० ठीक, सत्य, यथार्थ, ईमान्दार, विश्वासी, धार्मिक, खरा, शुद्ध, सात्त्विक ।

सं० सच्चिदानन्द (सत्=सदा या सत्=सच्चा, चित्=चैतन्य, आनन्द =प्रसन्न या सुखरूप) पु० ब्रह्म, परमेश्वर, परमात्मा, परब्रह्म ।

प्रा० सज (सं० सज्ज, सस्ज्=जाना) स्त्री० डौल, रूप, धज, शोभा ।

प्रा० सजधज बोल० बनाव, तैयारी, रूप, शोभा ।

प्रा० सजग (स=साथ, जागना= होशियार होना) गु० सावधान, सचेत, होशियार, खबरदार ।

प्रा० सजन ⎫ (सं० सज्जन) पु०
सजना ⎭ बड़ा आदमी, २ प्यारा, पति, ३ स्त्री० प्यारी, प्रिया ।

प्रा० सजना (सं० सज्ज, सस्ज्= जाना) क्रि० अ० तैयार होना, २ बनना, बनाव करना, फबना, सोहना ।

प्रा० सजनी (सं० सज्जन) स्त्री० सखी, सहेली ।

सं० सजल (स + जल) गु० पानीसे भरा हुआ, गीला, भीगा, तर, नम ।

प्रा० सजला पु० चार भाइयों में तीसरा, स्त्री० पानी से भरी हुई ।

प्रा० सजाई (सजाना) स्त्री० तलवार के म्यान या परतले की बनाई, २ तैयारी ।

सं० सजाति (स=बराबर या एक ही, जाति=ज़ात) गु० एक जाति का ।

सं० सजातीय (स + जाति) गु० एक जाति का, एक तरह का ।

प्रा० सजाना (सजना) क्रि० स० तैयार करना, बनाना, सुधारना ।

प्रा० सजावट भा० स्त्री० तैयारी, बनावट ।

प्रा० सजीला गु० सुडौल, सुन्दर ।

सं० सजीव (स + जीव) गु० जीता हुआ, जीव सहित, ज़िन्दा ।

सं० सजीवनी (सजीव) स्त्री० गु० प्राण देनेवाली ।

सं० सज्जन (सत्=सच्चा, जन=मनुष्य) गु० सत्पुरुष, साधु, भला आदमी, कुलवान्, बड़ा आदमी, भद्रपुरुष ।

सं० सञ्चय (सम्=अच्छी भाँति से, चि=इकट्ठा करना) पु० ढेर, इकट्ठा, संग्रह, राशि ।

सं० सञ्चारक (सम्, चर्=चलना) क० पु० नायक, रहबर, रहनुमा ।

सं० सञ्चारण भा० पु० प्रकाशन, विकाशन, संचालन, संचार, फैलाव ।

सं० सञ्चारिका (सम्, चर्=जाना) स्त्री० दूती जो नायक का संदेशा नायिका को या नायिका का संदेशा नायक को पहुँचाती है, २ घ्राण, नासिका, ३ युग्म, युगल, जोड़ा।

सं० सञ्चालन (सम्, चल्=जाना) भा० पु० चलाना, फैलाना।

सं० सञ्चित (सम्, चि=इकट्ठा करना) कर्म० इकट्ठा किया हुआ, बटोरा हुआ, संग्रह किया हुआ।

सं० सज्ञान (स+ज्ञान) गु० ज्ञान सहित, ज्ञानी, ज्ञानवान्, बुद्धिमान्।

प्रा० सटक स्त्री० लचीली छड़ी जो एक ओर मोटी होती है और दूसरी ओर पतली होती है।

प्रा० सटकना क्रि०अ० भाग जाना, खसकना, दौड़ जाना, चलाजाना।

प्रा० सटना (सं० सन्नद्ध, सम्=अच्छीतरह से, नह्=बाँधना) क्रि० अ० मिलना, जुड़ना, चिपकना।

प्रा० सटपटाना क्रि०अ० घबराना, अचंभे में होना, पिछलना।

सं० सटा स्त्री० जटा, शिखा, चोटिया, केशर, अयाल, २ मिलाव, गभ्भिन।

प्रा० सड़क स्त्री० राजमार्ग, बादशाही रास्ता, रोड।

प्रा० सड़क गु० मस्त, मतवाला।

प्रा० सड़ना क्रि० अ० गलना, पचना, बिगड़ना, ख़राब होना।

प्रा० संड
संडा } गु० मोटा, ज़ोरावर, बलवान्, मज़बूत, हृष्ट पुष्ट।

प्रा० संडमुसंड गु० खूब मोटा ताज़ा और ज़ोरावर।

प्रा० संडसी
संडासी
सँड़सी } (सं० सन्दंशिनी, सम्=खूब, दंश्=काटना) स्त्री० गह्वा, संगसी।

प्रा० संडास पु० जाज़रूर, पाख़ाना।

सं० सत् (अस्=होना) गु० सच, ठीक, सत्य, २ ब्रह्म, परमेश्वर, ३ पु० आदर, ४ विद्यमानता।

प्रा० सत (सं० सत्त्व) पु० ज़ोर, बल, २ सार, हीर, रस, अर्क़, ३ सतोगुण।

सं० सततम् (सम्=साथ, तन्=फैलाना) क्रि० वि० लगातार, निरन्तर।

प्रा० सत्तमी (सं० सप्तमी) स्त्री० सातवीं तिथि।

प्रा० सत्तरह (सं० सप्तदश) गु० सात और दश।

प्रा० सतलड़ी (सात+लड़) स्त्री० सात लड़ की माला।

प्रा० सतसठ (सं० सप्तषष्टि) गु० साठ और सात, सरसठ।

प्रा० सतसई स्त्री०
सतसैया पु० } (सं० सप्तशती) एक पोथी का नाम जिसको बिहारी-

लाल ने (जोकि ग्वालियर का रहने वाला था) बनाई, इसमें ७०० दोहे व्रजभाषा में लिखे हैं ।

प्रा० सतहत्तर (सं० सप्तसप्तति, सप्त=सात, सप्तति=सत्तर) गु० सत्तर और सात ।

प्रा० सताना (सं० सन्तापन, सम् =साथ, तप्=तपाना) क्रि० स० दुःख देना, छेड़ना, खिजाना, तकलीफ़ देना ।

प्रा० सतानन्द (सं०शतानन्द)पु० गौतम ऋषि का बेटा और जनक राजा का पुरोहित ।

सं० सती (सत्) स्त्री० पतिव्रता स्त्री, धर्मात्मा स्त्री, २ वह स्त्री जो अपने पति की लाश के साथ जलजाती है, ३ दक्ष की बेटी और महादेव की पत्नी जो अपने बाप के अपमान करने से उसके यज्ञ में योगाग्नि से जल मरी और कहते हैं कि वही सती फिर हिमाचल के घर में पार्वती होकर जन्मी ।

प्रा० सतुआ } (सं० सक्तु) पु०
सत्तू } भूंजे अनाज का चून, सातू ।

सं० सत्कर्म (सत्=सच्चा या अच्छा, कर्म=काम)पु० भलाकाम, अच्छा काम, पुण्य, पवित्र काम, नेक काम, सच्चा काम ।

सं०सत्कार(सत्=आदर,कृ=करना) पु० आदर, सन्मान, ख़ातिर ।

सं० सत्क्रिया (सत्=अच्छा, कृ= करना) स्त्री० सत्कार, सन्मान, पूजन, उत्तम काम ।

प्रा० सत्तर (सं० सप्तति) गु० दश गुना सात, सात दहाई ।

सं० सत्तम गु० बड़ा साधु, अति सीधा ।

सं० सत्र (सद् + त्रल्) पु० स्थान, यज्ञ, सदा दान, आच्छादन, ढापना, अरण्य, कैतव, कपट, धन, गृह, सर, तालाब ।

सं० सत्रशाला स्त्री० अन्नजलादि के देने का स्थान, धर्मशाला ।

सं० सत्राजित पु० श्रीकृष्ण का श्वशुर, सत्यभामा का पिता ।

सं० सत्रिन् पु० गृहस्थ, यजमान, दानी ।

प्रा० सत्ता[1] (अस्=होना) स्त्री० होना, विद्यमानता, २ बल, पराक्रम, ज़ोर, ३ भलाई, उत्तमता ।

प्रा० सत्ताईस (सं० सप्तविंशति) गु० बीस और सात ।

प्रा० सत्तानवे (सं०सप्तनवति)गु० नब्बे और सात ।

प्रा० सत्तावन (सं० सप्तपञ्चाशत्) गु० पचास और सात ।

प्रा० सत्तासी (सं० सप्ताशीति)गु०

---

[1] अस्तीति सत्सतोभावःसत्ता=आत्मधारणानुकूलव्यापारः ॥

अस्सी और सात ।

सं० **सत्त्व** (सत्) पु० सतोगुण, २ अतिबल, ज़ोर, ३ चीज़, वस्तु, ४ सार, ५ प्राण, ६ व्यवसाय, उद्यम, ७ हृदय, ८ सांख्य, नेचर ।

सं० **सत्यपुरुष** (सत्य=सच्चा,पुरुष=आदमी) पु० साधु, सज्जन, भला आदमी ।

सं० **सत्य** (सत्) गु० सच, ठीक, सही, यथार्थ, निश्चय, २ सच्चा, खरा, ईमान्दार, पु० साँच, सचाई, सचौट, २ सत्ययुग, पहलायुग, ३ शपथ, ४ ब्रह्मलोक ।

सं० **सत्यता** (सत्य) भा० स्त्री० सचाई, सचौटी ।

सं० **सत्यभामा** (सत्य=सच,भामा =क्रोधिनी स्त्री) स्त्री० श्रीकृष्ण की एकपत्नी और सत्राजित की बेटी ।

सं० **सत्ययुग** (सत्य + युग) पु० पहला युग (युग शब्द को देखो)।

सं० **सत्यलोक** (सत्य + लोक) पु० ब्रह्मलोक, ऊपर का सातवां लोक ।

सं० **सत्यवादी** (सत्य=सच,वादी =बोलनेवाला) क० पु० सच बोलनेवाला, रास्तगो ।

सं० **सत्यव्रत** गु० सत्य=सच्चा,व्रत=संकल्प, सत्यप्रतिज्ञ, पु० त्रिशंकुराजा ।

सं० **सत्यसन्ध** गु० सत्यप्रतिज्ञ या दृढ़ मर्यादवाला ।

सं० **सत्यानाश** (सं० सत्य=सच, आनाश=बड़ी बरबादी) पु० नाश, विनाश, बरबादी ।

प्रा० **सत्यानाशकरना** बोल० नष्ट करना, बरबाद करना, ख़राब करना, बिगाड़ डालना ।

प्रा० **सत्यानाश जाना** } बोल०
सत्यानाश होना } नष्ट होना, बरबाद होना, ख़राब होना, बिगड़ जाना ।

सं० **सत्वर** (स=साथ,त्वरा=जल्दी) गु० जल्द, उतावला, क्रि० वि० शीघ्र, तुरन्त, झटपट, जल्दी से ।

सं० **सत्सङ्ग** पु० } (सत्=अच्छा,
सत्सङ्गति स्त्री० } संग या संगति=साथ) अच्छी संगत, भले आदमी का साथ, अच्छी सोहबत ।

सं० **सदन** (सद्=जाना या बैठना जिसमें) पु० घर, स्थान, जगह, २ पानी ।

सं० **सदनुमति** (सत् + अनुमति) स्त्री० अच्छी सम्मति, अच्छी सलाह ।

सं० **सदय** (स=साथ + दया=कृपा) गु० दयालु, दयासहित, कोमल ।

सं० **सदसत्** (सत् + असत्) गु० सच झूठ, रास्तदरोग़ ।

सं० **सदा** क्रि० वि० नित, हमेशह, नित्य, रोज़ रोज़ ।

सं० सदाचार (सत् + आचार) पु० सनातन धर्म, उत्तमाचरण, नेकचलन ।

सं० सदानन्द (सदा + नन्द) पु० सदाशिव, महादेव, २ गु० हमेशह, प्रसन्न ।

सं० सदाव्रत (सदा + व्रत) पु० खाना जो भूखों को सदा दिया जाय ।

सं० सदाशिव (सदा + शिव) पु० महादेव, शम्भु, शिव, शंकर ।

सं० सदृश ⎫ (स=बराबर, दृश्=
सदृक्ष ⎭ देखना) गु० बराबर, समान, तुल्य, एकसा ।

सं० सद्गति (सत्=अच्छी, गति=दशा) स्त्री० उत्तम गति, मुक्ति, मोक्ष, निस्तार, छुटकारा, २ धर्म, नेकी, ३ सम्पदा, सम्पत्ति ।

सं० सद्भाव गु० प्रतिष्ठा, श्रेष्ठता, निष्कपटता, बेमक्र ।

सं० सद्म गु० गृह, मकान ।

सं० सद्यः (स=साथ, दिव्=चमकना) क्रि० वि० तुरन्त, फ़ौरन्, उसीदम, तत्काल, तत्क्षण ।

सं० सधना (सं० सान) क्रि० अ० बनना, खूब सिखाया जाना, अच्छी तरह से शिक्षा पाना ।

सं० सधवा (स=साथ, धव=पति) स्त्री० वह लुगाई जिसका पति जीता हो, सुहागिन ।

प्रा० सधाना (सं० साधन) क्रि० स० सिखाना, २ बनाना, ३ हिलाना ।

सं० सध्र्यूच् क० पु० सहचर ।

सं० सध्रीची क० स्त्री० सहचरी ।

प्रा० सन (सं० शण, शण्=देना) स्त्री० एक पौधा जिसके तारों की रस्सी बनती है ।

प्रा० सन से, साथ ।

सं० सनक (सन्=सेवा करना, देना) पु० एक मुनि का नाम, ब्रह्मा का बेटा जो सदा बालकरूप रहता है ।

सं० सनत्कुमार (सनत्=सदा या ब्रह्मा, कुमार=बालक) पु० ब्रह्मा का बेटा, एक मुनि जो सदा बालकरूप रहता है ।

सं० सनन्द ⎫ (स=साथ, नन्द=
सनन्दन ⎭ आनन्द) पु० ब्रह्मा का बेटा, एक मुनि जो सदा बालकरूप रहता है ।

प्रा० सनसनाना क्रि० अ० सन-सन ऐसा शब्द करना ।

सं० सनातन (सना=सदा) पु० ब्रह्मा का बेटा, एक मुनि जो सदा बालकरूप रहता है, गु० नित, सदा, हमेशह, अनादि, सदा का, हमेशह का, परम्परा ।

सं० सनाथ (स + नाथ) गु० जिसके मालिक और सहायक हो, सपक्ष ।

ा० सनाह (सं० सन्नाह, सम्=अच्छी तरह से, नह्=बाँधना) पु० बख़्तर जिरह, कवच ।

ा० सनीचर (सं० शनैश्चर) पु० सातवां ग्रह, २ शनिवार ।

ा० सनीचरा (सनीचर) गु० अभागा ।

ा० सनेह (सं० स्नेह) पु० प्यार, प्रीति, नेह, छोह, मोह, प्रेम ।

ं० सन्त (सत्) पु० साधु, सत्पुरुष, सज्जन, धर्मात्मा ।

ं० सन्तत (सम्=साथ, तन्=फैलना) क्रि० वि० लगातार, निरन्तर, सदा, नित, हमेशह, गु० विस्तीर्ण, फैला हुआ ।

ं० संतति (सम्=साथ, तन्=फैलना) स्त्री० लड़का बाला, बेटा पोता, सन्तान, वंश ।

ं० सन्तप्त (सम्=अच्छी तरह से, तप्=तपना या तपाना) कर्म० पु० तपा हुआ, श्रान्त, थका हुआ, गर्म, २ दुःखी ।

ं० सन्तान (सम्=साथ, तन्=फैलना) पु० लड़का बाला, वंश, कुटुम्ब ।

ं० सन्तापक क० पु० दुःखदाता ।

ं० सन्ताप (सम्=अच्छी तरह से, तप्=तपना) पु० शोक, शोच, फ़िक्र, चिन्ता, पीड़ा, दुःख ।

ं० सन्तुष्ट (सम्=अच्छी तरह से, तुष्=प्रसन्न होना) क० पु० प्रसन्न, तृप्त, हर्षित, मनभरा, सन्तोष के साथ ।

सं० सन्तुष्टि (सम् + तुष् + ति) भा०स्त्री० सन्तोष, प्रसन्नता, सब्र, क़नाअत ।

सं० सन्तोषक क० पु० तुष्टिकर, तृप्तिकर ।

सं० सन्तोष (सम्=अच्छी भाँति से, तुष्=प्रसन्न होना) भा० पु० सब्र, तृप्ति, आनन्द, सुख ।

सं० सन्तोषित कर्म० हर्षित, आनन्दित ।

सं० सन्तोषी (सन्तोष) क० पु० सन्तोष रखनेवाला, सब्रवाला ।

सं० सन्था (सं०संस्था, सम्=अच्छी तरह से, स्था=ठहरना) स्त्री० पाठ, सबक़, पढ़ना ।

सं० सन्दर्भ (सम्=अच्छी तरह से, दृभ्=बनाना) पु० रचना, प्रबन्ध, गुहना, इन्तिज़ाम, गूढार्थप्रकाश ।

सं० सन्दिग्ध (सम्=साथ, दिह्=बढ़ना) क० सन्देहयुक्त, जिसमें सन्देह पाया जाय ।

सं० सन्देश (सम्=साथ, दिश्=देना) पु० संदेशा, समाचार, ख़बर, वृत्तान्त ।

सं० सन्देह (सम्=साथ, दिह्=बढ़ना या इकट्ठा करना) पु० शक, संशय, शुबहा, शङ्का ।

सं० सन्देहक क० पु० शकी, शुबही, संशयी, सन्देही ।

सं० सन्दोह (सम्, दुह्=दुहना, पर सम् उपसर्ग के साथ आनेसे इकट्ठा होना अर्थ होजाता है) पु० समूह, बहुत, गिरोह, मजमुआ ।

सं० सन्धा (सम् + धा=रखना) स्त्री० प्रतिज्ञा, मर्यादा, स्थिति, गु० उपविष्ट, बैठा हुआ, मिलित, युक्त ।

सं० सन्धान (सम्=अच्छी भाँति से, धा=रखना) भा० पु० भेद लेना, खोज, अन्वेषण, पता, २ जोड़ना, मिलाना, ३ युक्ति, ४ परामर्श, ५ कार्यप्रवृत्ति, ६ आचरण।

सं० सन्धि (सम्=साथ, धा=रखना) स्त्री० मेल, मिलाव, व्याकरण में दो अक्षरों का मिलाव, २ सुलह, मेल करना, दो राजाओं के आपस में मेल होना, ३ शरीर में दो हड्डियों का जोड़, ४ सेंध, ५ दरार, छेद ।

सं० सन्ध्या (सम्=अच्छी तरह से, ध्यै=ध्यान करना) स्त्री० साँझ, सायंकाल, शाम, २ प्रभात, दोपहर और साँझ इन तीन समय की पूजा जप ध्यान आदि ।

सं० सन्नद्ध गु० लगा हुआ, तय्यार ।

प्रा० सन्ना (सं० सन्धान) क्रि० अ० मिलना, जुड़ना, सटना ।

प्रा० सन्नाटा पु० पानी या हवा से जो शब्द होता है ।

सं० सन्नाह पु० कवच, बख़्तर ।

सं० सन्निधान (सम् + निधान) पु० समीप, निकट ।

सं० सन्निधि पु० समीप, निकट, नज़दीक, पास ।

सं० सन्निपात (सन्=साथ, नि=नीचे, पत्=गिरना) पु० एकतरह का रोग जो कफ, वात और पित्त के बिगड़ने से होता है, सन्निपात, त्रिदोष, सरसाम ।

सं० संन्यास (सम्, नि, अस=फेंकना) पु० चौथा आश्रम, संन्यासी का धर्म, संसारकी चीज़ों का त्याग।

सं० संन्यासी (संन्यास) पु० चौथा आश्रमी जो संसार को छोड़ देता है, परमहंस ।

प्रा० सन्मान (सं० सम्मान, सम्=साथ, मान=आदर) पु० आदर, सत्कार ।

प्रा० सन्मुख (सं० सम्मुख, सम्=साथ या साम्हने, मुख=मुँह) गु० साम्हने, आगे, प्रत्यक्ष ।

सं० सपक्ष (स=साथ, पक्ष=पाँख या सहायता) गु० सहायक, साथी, २ पाँखोंवाला, पाँखों के साथ ।

सं० सपदि (स=साथ, पद=जाना) क्रि० वि० तुरन्त, झटपट, शीघ्र।

प्रा० सपना (सं० स्वप्न) पु० नींद में जो कुछ देखा जाय, नींद में जो कुछ ख़याल उपजे, जागने में जो

देखते-सुनते मन में चिन्ता करते हैं उन्हीं ख़यालात को सोते में देखना ।

सं० **सपल्लव** (स + पल्लव) गु० नये२ पत्ते टहनी के साथ ।

प्रा० **सपुत्र**, **सपूत** (सं० सुपुत्र) पु० अच्छा लड़का, सुशील बेटा, २ बेटे के साथ, पुत्र सहित ।

प्रा० **सपोला**, **सपोलिया** (सं० सर्पपोत, सर्प =साँप, पोत=बच्चा) पु० साँप का बच्चा ।

सं० **सप्त** (सप्=मिलना) गु० सात, ७।

सं० **सप्तचत्वारिंशत्** (सप्त + चत्वारिंशत्) गु० सात और चालीस, सैंतालीस ।

सं० **सप्तमी** (सप्त) स्त्री० सत्तमी, सातवीं तिथि ।

सं० **सप्तदश** (सप्त + दश) गु० सत्रह ।

सं० **सप्तर्षि** (सप्त + ऋषि) पु० १ कश्यप, २ अत्रि, ३ भरद्वाज, ४ विश्वामित्र, ५ गौतम, ६ जमदग्नि, ७ वशिष्ठ ।

सं० **सप्तसागर** पु० सातसमुद्र, १ क्षार अर्थात् लवण, २ इक्षु, ३ दधि, ४ क्षीर अर्थात् दूध, ५ मधु, ६ मदिरा, ७ घृत ।

सं० **सप्ताह** (सप्त=सात, अहन्=दिन) पु० सात दिन, हफ़्ता, अठवाड़ा ।

सं० **सप्रीति** (स + प्रीति) गु० प्यार से, प्यार सहित, प्यार के साथ ।

सं० **सप्रेम** (स + प्रेम) गु० प्यार, प्यार के साथ ।

सं० **सफर** पु०, **सफरी** स्त्री० मत्स्य, मछरी, पुँटी या शहरी मछली ।

सं० **सफल** (स + फल) गु० फलसहित, सिद्ध, फल देनेवाला, कृतार्थ, सार्थक, कामयाब ।

प्रा० **सब** (सं० सर्व) गु० सर्वना० सारा, पूरा, समूचा, संपूर्ण, समस्त ।

सं० **सबल** (स=साथी, बल=ज़ोर या सेना) गु० बलवान्, ज़ोरावर, सामर्थी, प्रौढ़, २ सेना के साथ ।

प्रा० **सबेरा**, **सुबेरा** (सं० सुवेला, सु= अच्छा, वेला=समय) पु० भोर, बिहान, पोह, तड़का, प्रभात, प्रातःकाल ।

सं० **सभय** (स=साथ, भय=डर) गु० डरा हुआ, डर के साथ, सशङ्क, भीतियुक्त ।

सं० **सभा** (स=साथ, भा=चमकना) धि० स्त्री० समाज, मण्डली, २ राजदरबार, दरबार, ३ पञ्चायत, ४ मजलिस, जलसह ।

सं० **सभापति** (सभा + पति) पु० सभा का मालिक, मीरमजलिस,

प्रेसीडेंट, चेयरम्यन ।

सं० **सभासद्** (सभा=समाज,सद्=बैठना) क० पु० सभा में बैठनेवाला, सभा का मेम्बर, दरबारी ।

सं० **सभिक** क० पु० मजलिसी, सभ्य, म्यम्बर ।

सं० **सभ्य** (सभा) गु० सभा के योग्य, चतुर, बुद्धिमान् ।

सं० **सभीत** (स + भीत) कर्म०डरा हुआ, सभय ।

सं० **सम्** उपस० अच्छी तरह से, भले प्रकार से, सुन्दरता से, भली भाँति से, २ साथ से, ३ बहुत, ४ सब तरह से, ५ पास, साम्हने, ६ शुद्ध ।

सं० **सम** गु० बराबर, तुल्य, समान, सदृश, २ सब, पूरा, ३ साधु, ४ दो, चार, छः आदि की संख्या ।

सं० **समक्ष** अ०य० समीप, गु० सन्मुख, प्रत्यक्ष, नेत्रगोचर, साम्हने ।

सं० **समग्र** (सम्=सब तरह से, अग्र=आगे या सम=सब, ग्रह्=लेना) गु० सब, सारा, पूरा, सम्पूर्ण ।

सं० **समज्या** (सम्=सब, अज्=जाना) ।घि० स्त्री० सभा, २ कीर्ति ।

प्रा० **समझ** स्त्री० बुद्धि, ज्ञान, अक़ल, बूझ, २ सम्मति, राय, विचार, ध्यान ।

प्रा० **समझना** क्रि० स० जानना, बूझना, विचारना ।

सं० **समता** (सम) भा० स्त्री० बराबरी, तुल्यता, सादृश्य, मुताबिक़त ।

सं० **समदर्शी** (सम्=बराबर,दर्शी=देखनेवाला, दृश=देखना) गु० दोनों ओर बराबर देखनेवाला, पक्षपात नहीं करनेवाला, पक्ष नहीं करनेवाला, अपक्षपाती, बेतअस्सुब ।

प्रा० **समधन** (समधी) स्त्री० बेटे की या बेटी की सास ।

प्रा० **समधियाना** (समधी) पु० समधी का घराना ।

प्रा० **समधी** (सं० सम्बन्धी) पु० बेटे का या बेटी का ससुर, सगा, नातेदार ।

सं० **समन्तात्** अ०य० सब, सर्वत्र, चारों ओर ।

सं० **समन्वित** गु० संयुक्त, समेत, सहित, साथ ।

सं० **समबल** गु० बराबर बलवाला ।

सं० **समय** (सम्=साथ या सबतरफ़ से, इण्=जाना) पु० काल, वक़्त, बेला, समां, २ अवसर, फ़ुर्सत ।

सं० **समर** (सम्=साथ, ऋ=जाना) पु० लड़ाई, युद्ध, रण ।

सं० **समर्थ** (सम्=साथ, अर्थ=धन) गु० बलवान्, योग्य, लायक़ ।

सं० **समर्थन** (सम्=सब, अर्थन=माँगना, याचना) पु० प्रमाण

करना, ताईद करना ।

सं० **समर्थना** स्त्री० सिफ़ारिश करना ।

सं० **समर्थाधिकारी** क० पु० हाकिम मजाज़ ।

प्रा० **समर्पना** (सं० समर्पण, सम् + ऋ + इ + अन, सम्=साथ, अर्पण=भेंट देना) क्रि० स० देवता को भेंट देना, सौंपना, अर्पण करना ।

सं० **समवाय** (सम् + अव + इण् =जाना) पु० मिलावट, मेल, इत्तिफ़ाक़, सम्बन्ध ।

सं० **समस्त** (सम्=साथ, अस्= फेंकना या होना) गु० सब, सारा, सम्पूर्ण, पूरा, तमाम ।

सं० **समस्या** (सम्, अस्=फेंकना पर सम् उपसर्ग के साथ आनेसे मिलना या संक्षेप होना अर्थ होता है, स्त्री० श्लोक या दोहे-चौपाई आदि संस्कृत और हिन्दी छन्दों का एक पद जो उस छन्द को पूरा करने के लिये दिया जाता है, तर्ज़, तरह, इशारा ।

प्रा० **समा** / **समाँ** (सं० समय) पु० समय, वक़्, २ बहुतात, ३ दशा, अवस्था, ४ एक ताल, एक लय, एक स्वर, ५ शोभा, समाबँधना, बोल० राग छाना ।

प्रा० **समाई** (समाना) भा० स्त्री० समाव, फैलाव, चौड़ाई, गुंजायश, २ सं० शाम्य, सन्तोष, धीरज ।

सं० **समाकुल** (सम्=सब प्रकार से, आकुल=परेशान) गु० व्याकुल, दुःखी, परेशान ।

सं० **समागम** (सम्=साथ + आगम =आना) पु० आगमन, आना, अवाई, २ मिलना, मुलाक़ात, मिलाप, संयोग, मजमा, भीड़भाड़, मेला ।

सं० **समाचार** (सम्=साथ, आ= चारों ओर से, चर्=चलना) पु० सन्देशा, ख़बर, वृत्तान्त, हाल ।

सं० **समाकर्षण** (सम् + आकर्षण, कृष=खींचना) पु० सञ्चय, तहसील ।

सं० **समाज** (सम्=साथ, अज्= जाना) पु० सभा, साथ, समूह, झुण्ड ।

प्रा० **समाजी** (सं० समाजीय) पु० बजंत्री, तबलची जो नाच में तबला बजाता है, २ सभासद ।

सं० **समाधान** (सम्, आ, धा= रखना) पु० किसी शङ्का अर्थात् दलील का ठीक उत्तर, दो आदमी जो किसी बात पर बाद करते हों उनका निबेड़ा करना, शक रफ़अ करना, २ दमदिलासा, ढारस, इतमीनान, धीरज, शान्ति, परमे-

श्वर का ध्यान ।

सं० समाधि (सम्,आ,धा=रखना) स्त्री० गहरा और मन से ध्यान, योगाभ्यास, हब्सदम करना, इन्द्रियों को रोकना और मन को परमेश्वर के ध्यान में लगाना, २ वह जगह जहाँ योगी संन्यासियों को गाड़ते हैं ।

सं० समान (स=बराबर, मा=नापना) गु० बराबर, तुल्य, एकसा, सदृश, एकही, २ (सम्=अच्छी तरह से, अन्=जीना) पु० पाँच प्राणों में एक प्राण ।

प्रा० समाना (सं०सम्मान, सम्=अच्छी तरह से, मा=नापना) क्रि० अ०अटना,अमाना, भरना,पूरना ।

सं० समाप्त (सम्=साथ, आप्=पाना या फैलना) गु० पूरा, सम्पूर्ण, होचुका, सिद्ध, इति, ख़त्म, तमाम, अन्त, आख़िर ।

सं० समाप्ति स्त्री० अवसान, पूर्ति, पूर्णता, ख़ातमा ।

सं० समाप्य अव्य० ख़ातमा किया, पूर्ण किया, पूरा करके ।

सं० समारोह (सम् + आ + रुह्=चढ़ना) पु० भीड़भाड़, धूम धाम, जमाव, मेला ।

सं० समास (सम्, अस्=फेंकना पर सम् उपसर्ग के साथ आनेसे इसका अर्थ मिलना या संक्षेप होना होता है) पु० संक्षेप, अविग्रह, २ व्याकरण में दो तीन आदि पदों का मेल, व्याकरण में समास छः हैं (१ तत्पुरुष, २ कर्मधारय, ३ द्विगु, ४ बहुव्रीहि, ५ अव्ययीभाव, ६ द्वन्द्व) ।

सं० समाहित (सम् + आ + धा=रखना) स्त्री० स्थिर, अचल, मुतमैअन, समाधिस्थ ।

सं० समाह्वान भा० पु० बुलाना, पुकारना ।

सं० समिध (सम्, इन्ध्=जलना या चमकना) स्त्री० होम की लकड़ी ।

सं० समीकरण (सम्=बराबर, कृ=करना) पु० बराबर करना, बीजगणित में एकतरह का गणित जिस में दो राशि बराबर होती हैं ।

सं० समीचीन (सम्=अच्छी भाँति से, अञ्च्=जाना) गु० सच, यथार्थ, ठीक, उत्तम, योग्य, बहुत अच्छा ।

सं० समीप (सम्=साथ, आप्=फैलना) गु० पास, नगीच, निकट ।

सं० समीर (सम्=अच्छी भाँति से, ईर्=जाना) पु० हवा, पवन, वायु ।

सं० समीहा (सम् + ईह्=चेष्टा करना) स्त्री० लज्जा, शर्म ।

सं० समुच्चय (सम्=साथ, उत्=ऊपर, चि=इकट्ठा करना) पु० इकट्ठा, ढेर, राशि, संग्रह, समूह,

२ वाक्यों का मेल, अत्फ़ ।

सं० **समुज्झित** (सम् + उज्झ्=त्यागना) कर्म० त्यक्त, छोड़ा हुआ ।

सं० **समुदाय** (सम् + उद्, इण्=जाना) पु० ढेर, समूह, इकट्ठा, राशि, सब, गिरोह ।

सं० **समुद्र** (सम्=सबतरह से, उन्द्=भिगोना या सम्=सब तरहसे, उद्=ऊपर अथवा बहुत, दा=देना) पु० सागर, समंदर, जलनिधि (सागर शब्द को देखो) ।

प्रा० **समूचा** (सं० समुच्चय) गु० सारा, पूरा, सबका सब, तमाम ।

सं० **समूह** (सम्, ऊह्=तर्क करना पर सम् उपसर्ग के साथ आनेसे इसका अर्थ इकट्ठा होना होता है) पु० भीड़ भाड़, झुण्ड, थोक, समुदाय, ढेर, गिरोह ।

सं० **समृद्ध** (सम्=सब तरह से, ऋध्=बढ़ना) गु० भागवान्, संपदा वाला, धनवान्, समर्थ, दौलतमन्द ।

सं० **समृद्धि** स्त्री० बड़ी उन्नति, बड़ी बढ़ती, बड़ी तरक़्क़ी ।

प्रा० **समें** ⎫ (सं० समय) पु० समय,
समै ⎬ वक़्त, २ अवकाश, फ़ुर्सत,
समैया ⎭ अवसर, मौक़अ ।

प्रा० **समेटना** क्रि० स० इकट्ठा करना, बटोरना, २ सकोड़ना ।

सं० **समेत** (सम्, आ, इण्=जाना) क्रि० वि० साथ, सहित, संयुक्त, मये ।

प्रा० **समोना** (सं० शमन, शम्=ठंढा करना) क्रि० स० गर्म पानी में ठंढा पानी डाल कर कुछ ठंढा करना ।

सं० **सम्पत्ति** (सम्=अच्छी तरह से, पद्=जाना) स्त्री० धन, दौलत, सुख, संपदा, सुभाग, बढ़ती, न्यामत ।

सं० **सम्पद्** ⎫ (सम्=अच्छी तरह
सम्पदा ⎭ से, पद्=जाना) स्त्री० संपत्ति, धन, दौलत, विभव, न्यामत, अशिया ।

सं० **सम्पन्न** (सम्, पद्=जाना) क० युक्त, शामिल, पूरा, परिपूर्ण, सम्पूर्ण, सिद्धि, भागवान्, संपदावाला ।

सं० **सम्पर्क** (सम् + पर्क=मेल) पु० संसर्ग, लगाव, सम्बन्ध ।

सं० **सम्पात** (सम्, पत्=गिरना) पु० गिरना, २ रेखागणित में छूती लकीर जो चक्कर के घेरे को छूने पर बढ़ाने से उसको काटे नहीं, ख़त ममास ।

सं० **सम्पाति** (सम्, पत्=गिरना) पु० जटायु गीध का भाई जिसकी कथा रामायण में है ।

सं० **सम्पादक** (सम्=अच्छी तरह से, पद्=चलना अर्थात् किसी काम को चलानेवाला या पूरा करने

वाला) क० पु० पूरा करनेवाला, प्रबन्ध करनेवाला, पानेवाला, कार्य वाहक, निरूपक, समापक, कहने वाला, बयान करनेवाला ।

सं० सम्पादन भा० पु० निरूपण, कथन, समाप्ति करना, निष्पादन।

सं० सम्पुट (सम्=साथ, पुट्=मिलना) पु० डब्बा, २ मिलना ।

सं० सम्पुटक क० पु० पिटारा, डब्बा ।

सं० सम्पूर्ण (सम्=सब तरह से, पूर्ण=पूरा) गु० पूरा, परिपूर्ण, सब, सारा, समाप्त ।

सं० सम्प्रति क्रि० वि० इदानीं, अब, अभी ।

सं० सम्प्रदान (सम्=अच्छी तरह से, प्र=बहुत, दा=देना) पु० दान देना, व्याकरण में चौथा कारक, मफ़ऊललहू ।

सं० सम्प्रदाय (सम्, प्र+दा=देना) स्त्री० परम्परा का धर्म, कुल धर्म, परिपाटी, रसूमातक़दीम ।

सं० सम्प्रेषित (सम्+प्र+इष्=जाना) कर्म० पठया गया, ख़ारिज हुआ, भेजा गया ।

सं० सम्बन्ध (सम्=साथ, बन्ध्=बाँधना) पु० मेल, लगाव, योग, नाता, रिश्ता, २ व्याकरण में छठा कारक या षष्ठी विभक्ति ।

सं० सम्बन्धी (सम्बन्ध+इन्) क० पु० सम्बन्ध रखनेवाला, समधी, नातेदार, रिश्तेदार, मुज़ाफ़ ।

सं० सम्बल (सम्ब्=जाना या सम्=से, बल्=जीना) पु० रस्ता ख़र्च, २ तोशाराह, मार्गव्यय, ३ पानी ।

सं० सम्बलित (सम्+बल्=जाना) क० समेत, सहित, मये ।

सं० सम्बुद्ध (सम्+बुध्=समझाना) कर्म० समझायागया ।

सं० सम्बोधक (सम्+बुध्=जतलाना) क० पु० जतानेवाला, मुनादी ।

सं० सम्बोधन (सम्, बोधन=जतलाना, बुध्=जानना) पु० जतलाना, चिताना, साम्हने करना, पुकारना, व्याकरण में आठवां कारक या प्रथमा विभक्ति, हर्फ़निदा ।

सं० सम्बोधित कर्म० पुकारा गया, जताया गया, मुनादी ।

सं० सम्भव (सम्, भू=होना) पु० उत्पत्ति, पैदा होना, हो सकना, २ कारण, ३ मिलना, गु० होनहार, होने योग्य, २ उचित, योग्य ।

सं० सम्भावना (सम्, भू=होना) स्त्री० संभव होना, इच्छा, चाह, ३ संदेह, ४ दुबिधा, वह फ़ेल जिससे वर्तमान और भविष्यत्काल जाना जाय ।

सं० सम्भाषण (सम्=अच्छीतरह से, भाष्=कहना) पु० बोलचाल,

बात चीत ।

सं० **सम्भोग** (सम् + भुज्=जाना) पु० हर्ष, सुख, सुरति, मैथुन, शृङ्गारभेद ।

सं० **संभ्रम**[१] (सम्=साथ, भ्रम्=घूमना) पु० घबराहट, हड़बड़ी, वेग, उतावली, घूमना, डर, २ आदर, सन्मान, ख़ातिरदारी ।

सं० **सम्मत** (सम्=सब तरह से, मन्=समझाना) सर्व० अनुमत, स्वीकृत, राय के मुवाफ़िक़ ।

सं० **सम्मति** (सम्=अच्छी भाँति से, मन्=जानना) स्त्री० सलाह, विचार, राय, २ चाह, इच्छा ।

सं० **सम्मतिपत्र** पु० राज़ीनामा, सुलहनामा ।

सं० **सम्मार्जनी** (सम्, मृज्=साफ़ करना) ण० स्त्री० बढ़नी, झाड़ू, कूंची, बुर्स, कुचरा ।

सं० **सम्यक्** (सम्=अच्छी भाँति से, अञ्च्=जाना) क्रि० वि० अच्छी भाँति से, भले प्रकार से, ठीक, योग्यता से, २ सब तरह से, सब भाँति से, लियाक़त के साथ ।

सं० **संरम्भ** प्रारम्भ, क्रोध, संक्रम ।

सं० **सम्राज्** } (राज्=शोभादेना)
सम्राट् } पु० सब भूमि का मालिक, राजसूययज्ञकर्ता, सर्वभूमीश्वर, चक्रवर्तीराजा ।

प्रा० **सयाना** }
सियाना } (सं० सज्ञान) गु० समझवान्, चतुर, प्रवीण, निपुण, बुद्धिमान्, पक्का ।
स्याना }

सं० **सर** (सृ=जाना) पु० सरोवर, तालाब, झील, २ तीर, बाण, ३ पानी, जल ।

प्रा० **सरकंडा** (सं० शरकाण्ड) पु० नरकट, नरसल ।

प्रा० **सरकना** (सं० सृ=जाना) क्रि० अ० हटना, टलना, चलना, भागना, खिसकना ।

सं० **सरघा** (सर=रस, हन्=जाना, मारना) स्त्री० मधुमक्षिका, शहद की मक्खी ।

सं० **सरट** (सृ=जाना) पु० गिरगिट ।

प्रा० **सरदा** पु० ख़र्बूज़ा या दशाकुल ।

प्रा० **सरन** }
सरना } (सं० शरण) पु० आसरे की जगह, बचाव की जगह, बचाव, पनाह ।

प्रा० **सरना** क्रि० अ० बनना, चलना, निकलना, पूरा होना, २ सड़जाना ।

प्रा० **सरपट** स्त्री० बगछूट दौड़, घोड़े की बड़ी दौड़ ।

प्रा० **सरपटफेंकना** बोल० घोड़े को बगछूट दौड़ाना ।

---

[१] संभ्रमत्रयमिच्छन्ति भयमुद्वेगमादरम् ।

प्रा० **सरबरि** स्त्री० समानता,
सरवरि बराबरी ।

सं० **सरयु** (सृ=जाना) स्त्री०
सरयू एक नदी जो अयोध्या के पास बहती है और उसको घाघरा, घर्घरा, देविका और देवा भी कहते हैं ।

सं० **सरल** (सृ=जाना) गु० सीधा, सोझा, २ सच्चा, ईमान्दार, धर्मात्मा, ३ भोला जो छल कपट न जानता हो, निष्कपट, सीधा, सादा, पु० एक पेड़ का नाम जिस को सरो कहते हैं ।

प्रा० **सरवर** (सं०-सरोवर) पु० ताल, तलाव, झील, पोखरा, तालाब ।

सं० **सरस्** (सृ=जाना) पु० तलाव, सरोवर, २ पानी, जल ।

प्रा० **सरस** (सं० श्रेयस्) गु०
सरसा श्रेष्ठ, उत्तम, बहुत अच्छा, २ अधिक, बहुत ।

सं० **सरस** (स=साथ, रस=स्वाद या पानी) गु० रसीला, रसवाला, पु० सरोवर ।

प्रा० **सरसाई** (सरस.) भा० स्त्री० अधिकाई, बहुतायत, कसरत, २ उत्तमता ।

सं० **सरसिज** (सरसि=तलाव में, जन्=पैदा होना) पु० कमल, कँवल ।

सं० **सरसीरुह** (सरसी=तलाव, रुह्=पैदा होना) पु० कमल, पद्म, कँवल ।

प्रा० **सरसों** (सं० सर्षप, सृ=जाना) पु० राई के ऐसी चीज़ ।

सं० **सरस्वती** (सरस्=पानी, वती =वाली अथवा स=साथ, रस= स्वाद या पानी, वती=वाली) स्त्री० एक नदी का नाम, २ वाणी, बोली, राग और विद्या गुणआदि की देवी, वागीश्वरी, शारदा, भारती, वाग्देवता ।

प्रा० **सराप** (सं० शाप) पु० शाप, फिटकार, दुराशिष, बददुआ ।

प्रा० **सरापना** (सं० शापन) क्रि० स० सराप देना, कोसना, बददुआ देना ।

प्रा० **सरावक** (सं० श्रावक) पु० जैनी, जैन धर्म को माननेवाला ।

प्रा० **सराह** स्त्री० बड़ाई, तारीफ़, स्तुति, प्रशंसा ।

प्रा० **सराहना** क्रि० स० बड़ाई करना, स्तुति करना, तारीफ़ करना ।

सं० **सरित** (सृ=जाना, बहना)
सरिता स्त्री० नदी, दरिया ।

सं० **सरित्पति** पु० समुद्र या सागर ।

सं० **सरित्सुत** पु० गङ्गापुत्र, भीष्मपितामह, २ घाटिया ।

प्रा० **सरिस** (सं० सदृश या सदृक्ष)
सरीखा गु० बराबर, समान ।

सं० सरीसृप पु० सर्प, बिच्छू ।

सं० सरुज (स=सहित, रुज्=रोग) गु० रोगी, बीमार, मरीज़ ।

सं० सरूप (स=बराबर, रूप=डौल) गु० बराबर, समान ।

प्रा० सरूप स्वरूप शब्द को देखो ।

प्रा० सरेखा (सं० श्लेषा) स्त्री० नवाँ नक्षत्र ।

प्रा० सरेश (सरेस) पु० एक लसलसी चीज़ जिससे लकड़ी आदि की चीज़ें जोड़ते हैं, सींग और खुर के छीलन से बनता है ।

सं० सरोज (सरस्=तालाब, जन्=पैदा होना) पु० कमल, कँवल, पद्म ।

सं० सरोजभव (सरोज=कमल, भू=जन्मना) पु० ब्रह्मा ।

प्रा० सरोता ग्रा० पु० सुपारी काटने का औज़ार ।

सं० सरोरुह (सरस्=तालाब, रुह=पैदा होना) पु० कमल, कँवल, पद्म ।

सं० सरोवर (सरस्=तालाब, वर=बड़ा) पु० बड़ा तालाब, सरवर, झील ।

सं० सरोष (स+रोष) गु० क्रोधित, कोपित, गुस्से में ।

प्रा० सरौकरे क्रि० स० दण्ड करना, कूदना, कला करना, उरझना, सुरझना ।

सं० सर्ग (सृज्=पैदा होना या छोड़ना) पु० उत्पत्ति, सृष्टि, २ छोड़ना, ३ निश्चय, ४ अध्याय, बाब, च्यप्टर, स्वभाव ।

प्रा० सर्गुण (सं० सगुण अथवा सर्वगुण) गु० सब गुणों समेत, २ सगुण ब्रह्म ।

सं० सर्ज्जक (सृज्+अक, सृज्=पैदा करना, त्यागना) क० त्यागी, उत्पत्तिकारक, २ शालवृक्ष ।

सं० सर्प (सृप्=जाना) पु० साँप, नाग ।

सं० सर्पराज (सर्प+राजा) पु० साँपों का राजा, शेषजी, २ वासुकी ।

सं० सर्पिष् (सृप्+इष्) पु० घी, घृत, रोग़नज़र्द ।

सं० सर्व (सर्व् या सृ=जाना) गु० सब, सारा, सकल, समस्त, पु० शिव, विष्णु ।

सं० सर्वग (सर्व=सब जगह, गम्=जाना) गु० सब जगह जानेवाला, सब में जानेवाला, सब में फैलनेवाला, सर्वव्यापी, पु० शिव, २ परमेश्वर, ३ पानी, ४ हवा, ५ आत्मा, जीव ।

सं० सर्वज्ञ (सर्व=सब, ज्ञा=जानना) क० सब जाननेवाला, पु० परमेश्वर, २ शिव ।

सं० सर्वतोभद्र पु० यज्ञ में प्रधान देवताओं का आसन, सिंहासन, २ विष्णु का रथ, मण्डलविशेष ।

सं० सर्वत्र (सर्व=सब, त्र=जगह

अर्थ में प्रत्यय) क्रि० वि० सब जगह, सब ठौर, सब स्थान में ।

सं० **सर्वथा** (सर्व=सब, था=प्रकार अर्थ में प्रत्यय) क्रि०वि० सबप्रकार से, सब भाँति से, सब तरह से, सब रीति से, २ निश्चय करके, निस्सन्देह, विनचूक, सचमुच, अवश्य ।

सं० **सर्वदमन** (सर्व=सब, दम्=दबाना) पु० दुष्यन्त का पुत्र, भरतनृप ।

सं० **सर्वदा** (सर्व=सब, दा=समय अर्थ में प्रत्यय) क्रि० वि० सदा, सब समय में, नित्य, दिन दिन ।

सं० **सर्वनाम** (सर्व + नाम) पु० वह शब्द जो नाम के बदले में बोला जाय, जैसे मैं, तू, वह, ज़मीर ।

सं० **सर्वभूत** पु० सबप्राणी, सब मनुष्य, सर्वजन ।

सं० **सर्वमङ्गला** (स्त्री०) पार्वती ।

सं० **सर्वरस** पु० राधा, धूप, गन्ना ।

प्रा० **सर्वस** **सर्वसु** (सं० सर्वस्व, सर्ववसु, सर्व=सब, स्व वा वसु =धन) पु० सब धन, सब सम्पदा, सब चीज़, सब कुछ, कुल यश ।

सं० **सर्वेश** **सर्वेश्वर** (सर्व=सब, ईश या ईश्वर=मालिक) पु० सबका मालिक, परमेश्वर, विष्णु, शिव, सबका ईश्वर ।

सं० **सर्वोपरि** (सर्व + उपरि) गु० सब से बड़ा ।

प्रा० **सर्सुराहट** स्त्री० खुजलाहट ।

सं० **सलज्ज** (स=साथ, लज्जा=लाज) गु० लजालू, शर्मीला, लज्जावान् ।

सं० **सलभ** पु० पतंगा, टिड्डी, टीड़ी ।

प्रा० **सलाई** (सं० शलाका) स्त्री० पतले तारका टुकड़ा जिससे आँख में सुरमा डालते हैं और सलाई उस लोहे के पतले तार के टुकड़े को भी कहते हैं जिसको आग में खूब लाल करके अपने वैरी की आँख में डालते हैं जिससे आँख फूटकर अन्धा होजाता है, २ सुरमई पैंसिल ।

सं० **सलिल** (सल्=जाना) पु० पानी, जल, आपः, आब, २ आसान, सहल ।

प्रा० **सलूना** **सलोना** (सं० सलवण, स =साथ, लवण=निमक) गु० नमकीन, नोन सहित, २ सुस्वाद, मज़ेदार, रोचक, स्वादिष्ठ, ३ सुन्दर, साँवला-सुहावना, खूबसूरत ।

प्रा० **सलूनो** (सं० श्रावणी) स्त्री० राखीपूनौ, सावनकी पूनौ ।

प्रा० **सल्लू** पु० जूता सीने का चाम ।

सं० **सवर्ण** गु० समानवर्ण, एक जाति वाले, सजातीय, हमजिन्स ।

प्रा० **सवा** (सं० सपाद, स=साथ, पाद=चौथा हिस्सा) गु० एक

और चौथाई, १¼ ।

प्रा० सवाई (सवा) पु० जैपुर के राजाओं की पदवी, गु० सवा, एक और चौथाई ।

प्रा० सवांग / स्वांग (सं० स्वाङ्ग, स्व=अपना, अङ्ग=शरीर, अर्थात् अपने शरीर को और तरह से बनाना) पु० भँड़ैती, नक़ल बनाना, वेषबदलना, २ खेल, तमाशा ।

प्रा० सवांगलाना / स्वांगलाना बोल० नक़ल बनाना, वेष बदलना ।

प्रा० सवाद (सं० स्वाद) पु० रस, मज़ा, लज़्ज़त, २ ख़ुशी ।

प्रा० सवाया / सवैया (सवा) गु० एक और चौथाई, सवा, सवाका पहाड़ा, सवैया ।

सं० सविता पु० सूर्य, बारह की संख्या ।

सं० सव्य (सू=पैदा होना) गु० बायाँ, दहना, प्रतिकूल, विष्णु ।

सं० सव्यसाचिन् पु० अर्जुन, पाण्डुसुत ।

सं० सशङ्क (स=साथ, शङ्का=डर या सन्देह) गु० डरा हुआ, सभय, २ जिसमें सन्देह हो ।

प्रा० सस्ता गु० सौंधा, मन्दा, अर्ज़ां ।

प्रा० सस्ताई भा० स्त्री० सौंधाई, अर्ज़ानी ।

प्रा० ससा (सं० शश) पु० ख़रगोश ।

प्रा० ससुर (सं० श्वशुर) पु० पति का या स्त्री का बाप ।

सं० सह (सह=सहना) अव्य० साथ, सहित, संग, समेत, २ बराबर, एकही, वही ।

सं० सहकार पु० सुगन्धित आम, सहायता ।

सं० सहगामिनी (सह=साथ, गामिनी=जानेवाली, गम्=जाना) स्त्री० सती, अपने पति के साथ जलनेवाली स्त्री ।

सं० सहचर (सह=साथ, चर्=चलना) पु० साथी, हमराही ।

सं० सहचरी (सह=साथ, चरी=चलनेवाली, चर्=चलना) स्त्री० साथ रहनेवाली, साथिनी, संगिनी, सहेली, २ स्त्री, पत्नी, अपनी लुगाई ।

सं० सहज (सह=साथ, जन्=पैदा होना) गु० जो साथही पैदा हो, स्वाभाविक, जो स्वभावही से पैदा हो, २ सुगम, आसान, सहल ।

सं० सहदेव (सह=साथ, दिव्=खेलना या चमकना) पु० पाँच पाण्डवों में सबसे छोटा जो पाण्डु राजा की दूसरी रानी माद्री का बेटा था ।

सं० सहन (सह=सहना) पु० सहना, बर्दाश्त, सहिष्णुता, ग़मख़्वारी, क्षमा, गु० सहनेवाला,

सन्तोषी, सहनहार।

प्रा॰ सहना (सं॰ सहन) क्रि॰ स॰ भोगना, उठाना, पाना, भुगतना, सन्तोष करना।

प्रा॰ सहनाई (फ़ा॰ सहनाई) स्त्री॰ बाँसुरी के ऐसा एक बाजा जिस को सुर्नाई भी कहते हैं।

प्रा॰ सहमना (फ़ा॰ सहिम से बना है जिसका अर्थ डर है) क्रि॰ अ॰ डरना, घबराना।

सं॰ सहमरण (सह=साथ, मरण=मरना) पु॰ पति की लाश के साथ जलना, सती होना।

सं॰ सहयोगी गु॰ साथी, संगती, हमसर।

प्रा॰ सहराना
सहिराना } क्रि॰ अ॰ सहलाना, चुलचुलाना, धीरे २ मलना।

सं॰ सहवास (सह=साथ, वस्=रहना) पु॰ पड़ोस, एकत्रवास।

सं॰ सहवासी क॰ पु॰ पड़ोसी, हमसाया।

सं॰ सहसा (सह=साथ, सो=नाश करना या सह=सहना) क्रि॰वि॰ झटपट, विना विचारे, एकाएकी, उतावली से, दफ़अतन्।

सं॰ सहस्र
प्रा॰ सहस } गु॰ एक हज़ार, दश सौ, १०००।

सं॰ सहस्रनयन
सहस्रनेत्र } (सहस्र=हज़ार, नयन वा नेत्र=आँख) पु॰ देवताओं का राजा इन्द्र जिसके हज़ार आँखें हैं।

सं॰ सहस्रपाद पु॰ विष्णु, सूर्य।

सं॰ सहस्रबाहु
प्रा॰ सहसबाहु } (सहस्र=हज़ार, बाहु=भुजा) पु॰ एक राजा का नाम जिसके हज़ार हाथ थे जिसको परशुरामजीने मारा।

प्रा॰ सहसाखी (सं॰ सहस्राक्ष) पु॰ इन्द्र, देवताओं का राजा, २ सहसाक्षी, गवाहों के साथ, मय गवाह।

प्रा॰ सहसानन (सं॰ सहस्रानन, सहस्र=हज़ार, आनन=मुँह) पु॰ शेषनाग जिसके हज़ार मुँह हैं।

सं॰ सहस्राक्ष (सहस्र=हज़ार, अक्ष=आँख) पु॰ इन्द्र, २ विष्णु, ईश्वर, गु॰ हज़ार आँखवाला।

प्रा॰ सहाई (सं॰ सहाय) स्त्री॰ सहायता, मदद, गु॰ मदद करनेवाला।

सं॰ सहानुभूति स्त्री॰ अनुवेदना, हमदर्दी, दुःख सुख का साथी होना।

सं॰ सहाय (सह=साथ, इण्=जाना) पु॰ मदद, सहारा, सहाई, अनुकूल, क॰ पु॰ सहायक, मददगार, मदद करनेवाला।

सं॰ सहायक (सह=साथ, इण्=जाना) क॰ पु॰ मदददेनेवाला, मददगार, रक्षक, उपकार करनेवाला।

सं० सहायता (सह=साथ, इण्=जाना) स्त्री०सहाय,मदद,सहारा।

प्रा० सहारा (सं० सहायता) पु० मदद, सहायता, आसरा।

प्रा० सहित (सह=साथ, इण्=जाना अथवा सह=सहना) नित्य सं०साथ, संग, समेत, संयुक्त,मेल।

सं० सहिदानी स्त्री०निशानी,चिह्न।

सं० सहिष्णु (सह्+इष्णु, सह=सहना) क० पु० सहनशील, क्षमावान्, बरदाश्ती।

प्रा० सही (अरबी सहीह) क्रि०वि० सच, बहुत अच्छा,हां, निश्चय।

प्रा० सहेजना क्रि० स० सौंप देना, सिपुर्दकरना, जाँचना, सैंतना, इकट्ठा करना, बटोरना।

प्रा० सहेली (स=साथ, आली=सखी) स्त्री० साथ रहनेवाली, सखी, सजनी।

सं० सहोदर (सह=एकही, उदर=पेट, जो एकही पेटसे पैदा हो) पु० एकही मां से पैदा हुआ, भाई, सगा भाई।

सं० सह्य (सह्=सहना) कर्म० सहने योग्य, जो सहाजाय।

प्रा० सा (सं० समान या सदृश) बराबरीको जतलानेवाला,अव्यय, (जैसे तुमसा) २ कुछ, कुछेक, थोड़ा, (जैसे कालासा=कुछेक काला) ३ कभी २ इसका अर्थ कुछ नहीं दिखाई देता है पर कहीं कहीं जिस शब्द के साथ लगाया जाता है उसके अर्थ में अधिकता जतलाता है (जैसे 'बहुतसा')।

प्रा० साईं (सं० स्वामी) पु० मालिक, नाथ, स्वामी, २ ईश्वर, परमेश्वर, प्रभु, ३ फ़क़ीर।

प्रा० सांईं पु० हवा के धीरे धीरे चलने का शब्द।

प्रा० सांकर } (सं० शृङ्खला) स्त्री०
सांकरी } सिकली, साँकल, २ करधनी, ३ (सं० सङ्कीर्ण) सँकड़ी गली, नाका, घाटा, ४ कठिनता, दुःख, झंझट, ५ गु० संकड़ा, संकेत, तंग।

प्रा० साकल (सं० शृङ्खला) स्त्री० सिकली, साँकली।

प्रा० सांखू पु० पुल, सेत, २ एक तरह की लकड़ी।

प्रा० सांग } (सं० शंकु या शक्ति)
सांगि } स्त्री० बर्छी, सेल।

प्रा० सांग सवांग शब्द को देखो।

प्रा० सांच(सं० सत्य) स्त्री० सचाई, सचावट, सत्य, २ गु० ठीक, सही, सच।

प्रा० सांचा पु० मिट्टी की एक चीज़ जिसमें कोई चीज़ ढाली जाती है या उसका रूप बनाया जाता है।

प्रा० सांझ (सं० सन्ध्या) स्त्री० शाम, सन्ध्या, सायंकाल।

प्रा० सांझा
सांझी (सं० सन्ध्या) स्त्री० गोबर की मूरतें जिन को लड़के लड़कियां आश्विन के कृष्णपक्ष में भीतों पर बनाते हैं ।

प्रा० सांड
सांड़ (सं० षण्ड) पु० बैल।

प्रा० सांडनी स्त्री० ऊंटनी, सांडनी-सवार, ऊंट पर चढ़नेवाला ।

प्रा० सांडा पु० एक जानवर जो छिपकली सा होता है और कहते हैं कि उसके तेल में बहुत ज़ोर होता है ।

प्रा० सांप (सं० सर्प) पु० सर्प, नाग, भुजंग ।

प्रा० सांभर (सं० शाकम्भरी) पु० एक शहर जो जैपुर और जोधपुर के राज में है और वहां एक झील या सर है जिसमें बहुत अच्छा निमक पैदा होता है और उसके पास एक पहाड़ पर शाकम्भरी देवी का मन्दिर है ।

प्रा० सांवला (सं० श्यामल) गु० कुछेक काला, श्यामवर्ण ।

प्रा० सांस (सं० श्वास) पु० स्त्री० दम, प्राण ।

प्रा० सांस उलटी लेना बोल० हांपना, दम नाक में आना (जैसे मरने के समय में होता है) ।

प्रा० सांसना क्रि० स० डाटना, धमकाना, ताड़ना ।

प्रा० सांस भरना बोल० आह भरना, लम्बी साँस लेना, ठंढी साँस लेना, पछतावा करना ।

प्रा० सांसरुकना बोल० दम बन्द होना, गला घुटना ।

प्रा० सांसरोकना बोल० गला घोटना, दम बन्द करना, गला दाबना ।

प्रा० सांसा (सं० संशय) पु० सन्देह, शङ्का, डर, चिन्ता ।

सं० सांसारिक (संसार) गु० संसार का, संसारी, दुनियाबी ।

सं० साकं
साकम् अव्य० सह, साथ ।

प्रा० साकबनिक (सं० शाकवणिक्) पु० साग बेचनेवाला, कुँजड़ा ।

प्रा० साका (सं० शाक) पु० संवत् ।

प्रा० साकाकरना बोल० नया संवत् चलाना, बहादुरी के काम करके नामी होना ।

प्रा० साकेबन्ध बोल० वह राजा जो नया संवत् जारी करता है ।

सं० साकार (स + आकार) गु० आकार सहित, मूर्त्तिमान्, जिसकी मूरत हो ।

सं० साक्षात् (स=साथ या साम्हने, अक्ष=आँख) क्रि० वि० साम्हने, आँखों के आगे, प्रत्यक्ष, प्रकट, प्रसिद्ध, २ गु० आप, खुद, ३ बराबर, समान ।

सं० साक्षी (स=साथ या साम्हने,

अक्षि=आँख) गु० गवाह, जिसने अपनी आँखों से देखा हो, साखी, शाहिद, २ स्त्री० गवाही, साख, शाहिदी ।

० साख (सं० साक्ष्य, साक्षी) स्त्री० गवाही, शाहिदी, २ यश, धाक, कीर्ति, नाम, भरम, ३ (सं० शाखा) ऋतु, फस्ल, अनाज काटने का समय ।

० साखी (सं० साक्षी) स्त्री० वाही, साख, २ गु० गवाह, शाहिद ।

० साग (सं० शाक) पु० हरी तरकारी, भाजी ।

० सागपात बोल० तरकारी ।

० सागर (सगर=एक राजा का नाम) पु० समुद्र, समन्दर, हिन्दू सात समुद्र मानते हैं (१ निमक का, २ दूध का, ३ घी का, ४ दही का, ५ शराब का, ६ ऊख के रस का, ७ शहद का) ।

० सागू पु० सागूदाना जो बहुत हलका होता है इस लिये बीमार को बहुत बार दूध में या पानी में पकाकर खिलाते हैं ।

० सागून पु० एकतरह की लकड़ी ।

० सांख्य (संख्या, सम्=अच्छी तरह से, ख्या=प्रसिद्ध होना) गु० संख्या का, पु० कपिलमुनि का बनाया हुआ एक दर्शनशास्त्र, तत्त्वपरामर्श ।

प्रा० साज (सं० सज्ज, षस्ज्=जाना) पु० समान, तैयारी, सरंजाम ।

प्रा० साजन (सं० सज्जन) पु० सजन, प्यारा, पति ।

प्रा० साजना (सं० सज्जन, षस्ज्=जाना) क्रि० स० तैयार करना, सजाना, सँवारना, पहनाना ।

प्रा० साझा (सं० साहाय्य, सहाय अथवा साह्य, सह्=सहना) पु० हिस्सा, शराकत, शामिलात ।

प्रा० साझी (साझा) पु० साथी, हिस्सेदार, शरीक, संगी ।

सं० साटोप गु० विकट घमण्डी, सगर्व्व ।

प्रा० साठ (सं० षष्टि) गु० छः गुना दश, ६० ।

प्रा० साठी (साठ) पु० एक तरह के चावल जो बरसात के दिनों में पैदा होते हैं और बोने के ६० दिन पीछे पक जाते हैं इस लिये साठी कहलाते हैं ।

प्रा० साड़ी (सं० साटी) स्त्री० लुगाइयों के ओढ़ने का कपड़ा ।

प्रा० साढू (सं० श्याली वोढा, श्याली=अपनी लुगाई की बहन, वोढा=पति, वह्=लेजाना) पु० साली का पति, हमजुल्फ़ ।

प्रा० साढ़े (सं० सार्द्ध, स=साथ, अर्ध=आधा) गु० आधा के साथ, (जैसे साढ़े तीन=तीन और आधा)।

प्रा० सात (सं० सप्त) गु० चार और तीन, ७—सात पाँच करना, बोल० दुबिधा में होना,—सात समुन्दर=एक खेल का नाम ।

प्रा० सात्त्विक (सं० सत्त्व=सतोगुण) गु० सतोगुणी, साधु, सीधा, सच्चा, सरल ।

प्रा० साथ (सं० सार्थ अथवा सह) सङ्ग, सहित, समेत, २ पु० संग, संगति, सोहबत ।

प्रा० साथ देना बोल० मिलना, मेल रखना, शामिल होना ।

प्रा० साथवाला गु० साथी, सङ्गी ।

प्रा० साथरी स्त्री०पत्तोंका बिछौना, चटाई, आसनी ।

प्रा० साथिन स्त्री० संगिनी, सहेली, सखी ।

प्रा० साथी (साथ) गु० सङ्गी, मेली, मिलापी, मित्र, दोस्त ।

प्रा० साद } (सं० श्रद्धा) स्त्री० इच्छा,
साध } चाह, अभिलाषा ।

सं० सादर (स=साथ, आदर=सन्मान) क्रि० त्रि० आदर से, सन्मान से, खातिर से ।

सं० सादृश्य (सदृश) भा० पु० बराबरी, समानता, तुल्यता ।

प्रा० साध (सं० साधु) पु० सन्त, सत्यपुरुष, सज्जन, भला आदमी, २ वैरागी ।

सं० साधक (साध्+अक, साध=सिद्ध करनाँ, पूरा करना) क०पु० साधनेवाला, अभ्यास करनेवाला, मन्त्र साधनेवाला, तपस्वी, २ मददगार ।

सं० साधन (साध=सिद्ध करना, पूरा करना) भा०पु० उपाय, यत्न, काम सिद्ध करने की तदबीर, २ अभ्यास, ३ व्याकरण में करणकारक ।

प्रा० साधना (सं० साधन) क्रि० स० सिद्ध करना, पूरा करना, पक्का ठहराना, साबित करना, बनाना, ठीक ठाक करना, २ अभ्यास करना, स्वभाव डालना, बान डालना, सीखना ।

सं० साधनीय (साध्+अनीय) कर्म० सिद्ध करने योग्य, पूरा करने लायक, निष्पाद्य ।

सं० साधारण (स=साथ, धारण=रखना) गु० सामान्य, सहज, २ बराबर, समान, आम ।

सं० साधारणधर्म पु० " अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः दमक्षमार्जवं दानं धर्मं साधारणं विदुः १ " अहिंसा, २ सत्य, ३ अस्तेय, चोरी न करना, ४ शौच पवित्र रहना, ५ इन्द्रियों को रोकना, ६ दम, मनको रोकना, ७ क्षमा, ८ आर्जव, कोमलता, ९ दान ये साधारण धर्म हैं ।

० **साधित** कर्म० निष्पादित, सिद्ध किया गया, पूरा किया गया ।

० **साधु** (साध्=सिद्ध करना, पूरा करना) गु० जो शास्त्रविहित कर्मोंको करता है या जो पर के कार्यको सिद्ध करता है वह साधु है, सन्त, उत्तमजन, सत्यपुरुष, सज्जन, सीधा, सच्चा, २ पु० साध, वैरागी, भला आदमी ।

० **साध्य** (साध्=पूरा करना) कर्म० पूरा होने योग्य, सिद्ध होने के योग्य, जो होसके, २ सुगम, सहज, आसान, ३ चंगा होने के योग्य, जिसका इलाज होसके, ४ पु० जो बात सिद्ध की जाय, जो बात पक्की ठहराई जाय ।

० **सान**(सं०शाण, शान् या शो=तीखा करना) स्त्री० सिल्ली, पथरी, लोहे के हथियारों पर धार चढ़ाने का पत्थर, एक चक्राकार यन्त्र ।

० **सानन्द** (स+आनन्द) गु० आनन्द के साथ, हर्षित, खुश ।

० **सानुकूल** (स+अनुकूल) गु० कृपालु, दयालु, सहायक, मिहरबान ।

० **सानना** (सं० सन्धान) क्रि० स० मिलाना, गूंदना, २ (सं० शानन, शान्=तीखा करना) चोखा करना, तीखा करना, तेज़ करना, सान लगाना ।

प्रा० **साबर** / **सांबर** (सं० शम्बर या शाम्बर, शम्ब्=जाना) पु० एक तरह का बारहसींगा, २ बारहसींगा का चमड़ा ।

सं० **साम** (सो=नाश करना पापों का) पु० तीसरा वेद, जिसकी ऋचा गाई जाती हैं ।

सं० **सामग्री**(सामग्र=सब) स्त्री० सामा, सामान, असबाब, चीज़, वस्तु ।

सं० **सामन्त** पु० वीर, बहादुर, पराक्रमी, योद्धा, मल्ल, २ उपराज, ज़मींदार, एक लाख रुपये साल की आमदनी जिसको है ।

सं० **सामायिक** गु० समय पर, कालोचित, अवसर की, बेरापर की ।

सं० **सामर्थ्य** / प्रा० **सामर्थ** (समर्थ) स्त्री० बल, शक्ति, पराक्रम, योग्यता ।

प्रा० **सामर्थी** (सं० समर्थ) क० बलवान, पराक्रमी, प्रतापी, योग्य ।

प्रा० **सामा** (सं० सामग्री) पु० स्त्री० नाना प्रकार के भोजन, सामान, सामग्री ।

सं० **सामाजिक** पु० सभासद, सभ्य ।

फ़ा० **सामान** (सामान) पु० असबाब, अटाला, सामा, सामग्री ।

सं० **सामान्य** (समान) गु० मध्यम, साधारण, चलनसार, चलनीक, प्रचलित, आम ।

सं० **सामान्यतः** गु० साधारण से,

आमतौरपर ।

सं० **सामान्या** (सामान्य) स्त्री० साधारण नायिका, धन के लालच से पराये आदमी के पास जाने वाली, वेश्या, व्यभिचारिणी, सामान्या, नायिका तीन तरह की हैं, (१ अन्यसंभोगदुःखिता, २ वक्रोक्तिगर्विता, ३ मानवती) ।

सं० **सामीप्य** (समीप) भा० पु० समीपता, समीपी, नज़दीकी, निकटता, पड़ोस ।

सं० **सामुद्रिक** (स=साथ, मुद्रा=चिह्न) भा०पु०एक विद्या जिससे स्त्री पुरुष के हाथ पैर के चिह्नों से उनके भले बुरे भाग को बतलातेहैं ।

सं० **साम्नाय** गुरुपरम्परागत सदुपदेश, सलाह ।

प्रा० **साम्ना** / **साम्हना** (सं० सम्मुख) पु० सन्मुख, आगा, अगवाड़ा ।

सं० **साम्प्रत** अव्य० अधुना, इदानीं, योग्य, उचित, अब ।

प्रा० **साम्हनाकरना** बोल० लड़ाई करना, लड़ना, चढ़ाई करना, मुक़ाबिला करना ।

सं० **सायङ्काल** (सायम्=सांझ, सो=नाश करना और काल=समय) पु० सांझ, सन्ध्या का समय, दिन का अन्त ।

सं० **सायुज्य** (स=साथ, युज्=मिलना) पु० एक प्रकार की मुक्ति, परमेश्वर में मिल जाना, एक हो जाना, एकत्व, अभेद ।

सं० **सार** (सृ=जाना) पु० गूदा, मज्जा, हीर, सत, सत्त्व, रस, जल, मूल, २ बल, ज़ोर, ३ मूलबात, असलमतलब, खुलासा, ४ क़ीमत, मोल, ५ खाद, खात, ६ लोहा, ७ धन, ८ लाभ, फ़ायदा, फल, ९ गु० बहुत अच्छा, उत्तम, श्रेष्ठ ।

प्रा० **सार** (सं०शार, अथवा शारि, शॄ=मारना) स्त्री०चौपड़की गोटी ।

सं० **सारङ्ग** (सृ=जाना) पु० एक राग का नाम, २ मोर, ३ साँप, ४ बादल, ५ मोर की बोली, ६ हरिण, ७ पानी, ८ एक देश का नाम, ९ चातक, पपीहा, १० हाथी, ११ राजहंस, १२ सिंह, १३ कोकिला, १४ एक पेड़ का नाम, १५ कामदेव, १६ कई प्रकार के रंग, १७ भौंरा, मधुमक्खी, १८ धनुष, १९ स्त्री, २० दीपक, २१ वस्त्र, २२ शंख, २३ चन्दन, २४ कपूर, २५ कमल, २६ आभरण, शोभा, सुवर्ण, २७ केश, २८ पुष्प, २९ छत्र, ३० रात्रि, ३१ भूमि, ३२ दीप्ति ।

" सारँगने सारँग गह्यो ।
मोर साँप
सारँग बोल्यो आय ॥
बादल ।

जो साँरग साँरग कहे ।
मोर मोर की बोली ।
साँरग मुँहते जाय ॥”

साँप ।

अर्थ—मोर ने साँपको पकड़ा और बादल गर्जा, जो मोर अपनी बोली बोले तो साँप मुँह से निकल कर भागे । (कहते हैं कि मोर का यह स्वभाव है कि जब बादल को गर्जते सुनता है तो बहुत ख़ुशी से बोलता है और नाचता है) ।

सं० **सारङ्गी** (सृ=जाना) स्त्री० एक बाजेका नाम, किंगिरी ।

सं० **सारण** (सृ=जाना) पु० रावण के एक मन्त्रीका नाम, २ अतिसार रोग ।

सं० **सारथि** (सृ=जाना या स+रथ) पु० रथवान्, रथके घोड़े हांकनेवाला, यन्ता, सूत ।

सं० **सारदा** (सार=तत्त्व, दा=देनेवाली, दा=देना) स्त्री० सरस्वती, गु० सार देनेवाली ।

प्रा० **सारना** (सं० साधन) क्रि० स० बनाना, करना, पूरा करना, सिद्ध करना ।

सं० **सारस** (सरस्=तालाब) पु० एक तरह का पखेरू, २ चाँद, ३ कमल, ४ कमर में पहनने का गहना, ५ गु० सरोवर की चीज़ ।

सं० **सारस्वत** (सरस्वती) पु० एक देश का नाम, २ उस देश का मनुष्य, पञ्चगौड़ (१ सारस्वत, २ कान्यकुब्ज, ३ गौड़, ४ उत्कल, ५ मैथिल) ये विन्ध्याचल के उत्तरवासी हैं पञ्च द्राविड़ (१ महाराष्ट्र, २ कार्नाटक, ३ गुरजर, ४ द्राविड़, ५ तैलंग) ये विन्ध्याचल के दक्षिणवासी हैं, ब्राह्मणों में एक ज़ात, गु० सरस्वती देवी का, सरस्वती नदी का ।

प्रा० **सारा** (सं० सर्व) गु० पूरा, सम्पूर्ण, सब, समस्त, २ (सं० श्याल, श्यै=जाना) पु० अपनी लुगाई का भाई, साला ।

सं० **सारिका** (सृ=जाना) स्त्री० मैना पखेरू ।

प्रा० **सारी** (सं० शाटी) स्त्री० साड़ी, स्त्रियों के पहनने अथवा ओढ़ने का कपड़ा, २ (सं० सार) दूध का सार, मलाई ।

सं० **सार्थक** (स+अर्थ) गु० अर्थ सहित, २ सफल, सिद्ध, मौजूम ।

सं० **सावर्ण**
सावर्णि } पु० सवर्णा, सूर्यपत्नी में जन्मा या सूर्य का पुत्र, १४ मनु में अष्टम मनु ।

सं० **सार्धम्** अव्य० साकम्, साथ ।

सं० **सावित्र** पु० रुद्र, महादेव, सूर्य, वसुदेवता, ब्राह्मण ।

सं० **सार्वभौम** (सर्वभूमि) पु०

सब संसार का राजा, चक्रवर्त्ती राजा, २ उत्तर दिशा का हाथी ।

सं० **साल** (सल्=जाना) पु० एक पेड़ और उसकी लकड़ी का नाम साखू।

प्रा० **साल** (सं० शल्य, शल्=जाना) पु० गाँसी, काँटा, शूल, २ छेद, ३ (सं० शाला) स्त्री० जगह, घर, ४ पाठशाला, स्कूल, ५ (सं० शृगाल) पु० सियार, गीदड़ ।

प्रा० **सालन** } **सालना** } पु० मांस, मांस की तरकारी, २ साग, तरकारी ।

प्रा० **सालना** (सं० शल्य, शल्=जाना) क्रि० स० छेदना, बेधना, धसाना, पैठाना, बर्मा से छेद करना, बर्माना, पारकरना, चुभाना, २ क्रि० अ० दुखना, पिराना, खटकना, दुखपाना ।

प्रा० **सालसा** पु० एक तरह की औषध जिसका अर्क पीने से शरीर का लोहू साफ़ होता है और इस को अरबी में 'उशबह' और अंगरेज़ी में 'सार्सा पेरिल्ला' कहते हैं ।

प्रा० **साला** (सं० श्याल, श्यै=जाना) पु० स्त्री का भाई, २ (सं० शाला) स्त्री० जगह; घर ।

प्रा० **साली** (सं० श्याली) स्त्री० स्त्री की बहिन ।

प्रा० **सालूर** पु० एक तरह का लाल कपड़ा ।

सं० **सालू** (पु० मंडूक) मेढक ।

प्रा० **सालोतरी** (शालि=घोड़ा, होत्र=वैद्य) पु० घोड़ों का वैद्य ।

प्रा० **सावक** (सं० शावक) पु० बच्चा, बालक ।

प्रा० **सावकरन** (सं० श्यामकर्ण) पु० काले कान का घोड़ा ।

सं० **सावकाश** (स=साथ, अवकाश =अवसर) पु० अवसर, अवकाश, समय, मौक़ा, फ़ुर्सत, सुभीता, काम से छुट्टी ।

सं० **सावधान** (स=साथ, अवधान =चौकसी, अव, धा=रखना) गु० चौकस, सचेत, ख़बरदार, सुचेत, अग्रशोची, होशियार, सजग ।

सं० **सावधानी** (सावधान) स्त्री० चौकसी, चौकसाई, सुचेती, सुरता, ख़बरदारी, होशियारी, चेतौनी, अग्रशोच ।

प्रा० **सावन** (सं० श्रावण) पु० चौथा हिन्दी महीना ।

प्रा० **सावन हरे न भादों सूखे** बोल० सदा सरीखे, सदा एक से।

प्रा० **सावन्त** (सं० सामन्त) गु० वीर, बहादुर, योद्धा, पराक्रमी ।

प्रा० **सास** } **सासू** } (सं० श्वश्रू) स्त्री० पति या पत्नी की माँ ।

प्रा० **साह** (सं० साधु) पु० महाजन, बड़ा सौदागर, कोठीवाल, दूकानदार, भला आदमी ।

सं० **साहस** (सहसा) पु० बल, ज़ोर, वेग, २ ढारस, हिम्मत, वीरता, पराक्रम, जुरअत ।

सं० **साहसी** (साहस) गु० तेज़, प्रबल, २ हिम्मतवाला, निडर, पराक्रमी, वीर, ढीठ ।

सं० **साहित्य** (सहित=मेल) पु० मेल, मिलान, साथ, २ एक विद्या जिससे बोलीके बोलने और लिखने की सुन्दरता जानी जाती है और इस विद्या के अंग अर्थात् हिस्से अलङ्कार, रस, छन्द आदि हैं । और कवियों के बनाये हुए काव्यों को भी साहित्य कहते हैं, जैसे भट्टि, रघुवंश, कुमारसम्भव, माघ, किरातार्जुनीय, मेघदूत, विदग्धमुखमण्डन और शान्तिशतक आदि, इल्म अदब ।

प्रा० **साही** **सेही** (शल्लकी, शल्ल्=जाना) स्त्री० कण्टकी, एक जानवर जिसकी पीठ पर काँटे ही काँटे होते हैं ।

प्रा० **साहूकार** (सं० साधुकार, साधु=सच्चा, कार=करनेवाला, कृ=करना) पु० महाजन, बैपारी, हुण्डीवाला, कोठीवाला, बड़ा दुकानदार, २ ईमानदार, सच्चा और भला आदमी ।

प्रा० **साहूकारी** स्त्री० बैपारी, लेन देन, सौदागरी, वणिज, व्यवहार, हुण्डी का व्यवहार ।

प्रा० **सिंगा** (सं० शृङ्ग) पु० तुरही, रणसिंगा ।

प्रा० **सिंगार** (सं० शृंगार) पु० शोभा, गहने कपड़ों की सजावट, २ नौरसों में का एक रस ।

प्रा० **सिंगारना** (शृङ्गार) क्रि० स० सजाना, सँवारना, शोभित करना ।

प्रा० **सिंघाड़ा** (सं० शृङ्गाट, शृङ्ग=बड़ाई, अट्=जाना) पु० एक तरह का फल जो पानी में पैदा होता है, पानीफल ।

सं० **सिंह** (हिंस्=मारना) पु० शेर, केशरी, मृगराज, मृगेन्द्र, पशुओंका राजा, २ पाँचवीं राशि, ३ हिन्दुओं में एक पदवी, हिंस् का वर्ण विपर्यय होनेसे सिंह बनगया ।

सं० **सिंहद्वार** पु० पुरद्वार, फाटक ।

सं० **सिंहनाद** (सिंह + नाद)पु० शेर का गर्जना, २ लड़ाईका शब्द, सिंहके ऐसा शब्द, भयानक शब्द ।

सं० **सिंहनी** (सिंह) स्त्री० शेरनी ।

प्रा० **सिंहपौर** (सिंह + पौर) स्त्री० बड़ा दरवाज़ा अथवा फाटक जहाँ बहुधा सिंह की मूरत रक्खी रहती है ।

सं० **सिंहलद्वीप** पु० लङ्का, सीलोन ।

सं० **सिंहविक्रान्त** पु० घोड़ा, अश्व ।

सं० **सिंहासन** (सिंह + आसन)

पु० राजाका आसन, तख़्त, पाट।

सं० सिंहिका स्त्री० राहु की माता, कश्यपपत्नी, २ सिंहनी।

सं० सिकता स्त्री० बालू, रेत।

प्रा० सिकना क्रि० अ० सेंका जाना, भूना जाना।

प्रा० सिकरी (सं० शृङ्खला) स्त्री० सांकल, संकल, सिकली।

सं० सिक्त (सिच्=सींचना) गु० सींचा हुआ, कृतसेचन।

प्रा० सिख (सं०शिष्य) पु० चेला, २ नानक के मतको माननेवाला।

प्रा० सिखर (सं० शिखर) पु० पहाड़ की चोटी, २ मन्दिरों के ऊपर का गुम्बज़।

प्रा० सिखरन (सं० शिखरिणी) पु० दही में चीनी और किशमिश मिली हुई खाने की चीज़।

प्रा० सिखाई (सिखाना) भा० स्त्री० पढाई, शिक्षा।

प्रा० सिखाना } (सं० शिक्षण,
सिखलाना } शिक्ष्=सिखाना) क्रि० स० पढाना, बतलाना, शिक्षादेना, उपदेश देना, २ डाटना, धमकाना, दण्डदेना, ताड़ना करना।

प्रा० सिगरा } (सं० समग्र) गु०
सिगरौ } सब, सारा, संपूर्ण,
सगरा } हरएक।

प्रा० सिझाना (सिद्ध) क्रि० स० पकाना, रींधना, उबालना, २ मारडालना।

प्रा० सिठाई (सीठा) स्त्री० फिकाई, मन्दताई।

प्रा० सिड़ स्त्री० बौड़ाहट, बावलापन, पागलपन, उन्मत्तता।

अं० सिण्डिकेट थोड़े म्यम्बर जिन को सिनेट नियत करती है काम होने के लिये।

प्रा० सिड़ा } गु०बावला, बौड़हा,
सिड़ी } पागल,उन्मत्त, मस्त।

सं० सित (सो=नाश करना) गु० धौला, सफ़ेद, श्वेत, शुक्लवर्ण।

सं० सिद्ध (सिध्=सिद्ध करना, पूरा करना) पु० एक प्रकार के देवता, २ योगी, व्यास आदि मुनि, ऐसा मनुष्य जिसके वश में अष्ट सिद्धि हों और जिसको भूत, वर्त्तमान, भविष्यत् की बात मालूम हो, ज्ञानी, तपस्वी, सन्त, ३ ज्योतिष में एक योग का नाम, ४ गु० पूरा, समाप्त, पक्का; बना, तैयार, २ प्रसिद्ध, विख्यात, ज़ाहिर, ३ सफल, ४ साबित किया हुआ, पक्का ठहराया हुआ, सच्चा ठहराया हुआ, ५ निश्चय किया हुआ, निर्णय किया हुआ।

सं० सिद्धान्त (सिद्ध + अन्त) पु० सच ठहराई हुई बात, सिद्ध की हुई बात, तर्क अर्थात दलील से

जो बात सच ठहराई जाय, फल, परिणाम, नतीजा, २ सूर्यसिद्धान्त आदि ज्योतिष के शास्त्र ।

सं० **सिद्धि** (सिध्=सिद्ध करना, पूरा करना) स्त्री० मन के मनोरथ का पूराहोना, मनवाञ्छित फल का मिलना, मन चाही बात का पूरा होना, २ अणिमा आदि आठ सिद्धि (अष्टसिद्धि शब्दको देखो) ।

सं० **सिद्धियोग** पु० कार्यसिद्धि हेतु योग—(शुक्रे नन्दा बुधे भद्रा, शनौ रिक्ता कुजे जया । गुरौ पूर्णा च संयुक्ता सिद्धियोगः प्रकीर्तितः ।) अर्थ—शुक्रवार परिवा, बुधवार दुइज, शनिवार चौथि, मङ्गलवार तीज, बृहस्पतिवार पञ्चमी, ज्योतिषमत से उक्त वारों में उक्त तिथि होवें तो सिद्धियोग कहलाते हैं ।

प्रा० **सिधारना** (सं० सिध्=जाना) क्रि० अ० जाना, बिदा होना, रवाने होना, चला जाना, क्रि० स० दुरुस्त करना, सँवारना, ठीक ठाक करना, तरतीब देना ।

प्रा० **सिनकना** क्रि० स० नाक झाड़ना, नाक साफ़ करना ।

अं० **सिनेट** युनीवरसिटीके म्यम्बरों की मण्डली ।

सं० **सिन्दूर** (स्यन्द्=चूना या टपकना) पु० एक तरह का लाल चूरण जिससे स्त्रियां माँग भरती हैं ।

सं० **सिन्धु** (स्यन्द्=चूना, या टपकना) पु० समुद्र, समंदर, सागर, २ एक नदी जिसको इंडस और अटक भी कहते हैं, ३ सिन्धका देश, ४ हाथी का मद, ५ एक रागिणी का नाम ।

सं० **सिन्दुर**
सिन्धुर (सिन्ध्=हाथी का मद, अर्थात् मद वाला) पु० हाथी, हस्ती ।

सं० **सिन्धुरगामिनी** (सिन्धुर=हाथी, गामिनी=चलनेवाली, गम्=चलना) स्त्री० वह स्त्री जिसकी हाथीकीसी चाल हो,गजगामिनी ।

सं० **सिप्र** (सप्=मिलना) पु० निदाघजल, पसीना, चाँद, घाम ।

सं० **सिप्रा** (सप्=मिलना) स्त्री० एक नदी जो उज्जैन के पास है, २ महिषी, भैंस, कुट्टनी, कुटनी, रजस्वला, कपड़ों से हुई स्त्री ।

प्रा० **सिमटना** क्रि० अ० सिकुड़ना, इकट्ठा होना, बटुरना ।

प्रा० **सिय**
सिया (सं० सीता) स्त्री० सीता, जानकी, श्री रामचन्द्र की पत्नी और राजा जनक की बेटी ।

प्रा० **सियपी** (सं०सीताप्रिय)पु० सीतापति श्रीरामचन्द्र, रघुनाथ ।

प्रा० **सियार**
सियाल (सं० शृगाल) पु० गीदड़ ।

प्रा० सिर (सं० शिर) पु० माथा, मस्तक ।

प्रा० सिरउठाना बोल० अपने मालिक से फिर जाना, बग़ावत करना ।

प्रा०सिरकरना बोल०शुरूअकरना।

प्रा०सिरकाढ़ना बोल०नामी होना, प्रसिद्ध होना, मशहूर होना ।

प्रा०सिरकेज़ोर बोल०अपने ज़ोरसे।

प्रा० सिरकेभल बोल० औंधा सिर, मुँहभरा ।

प्रा० सिरखुजलाना बोल० मार खायाचाहना, सज़ाचाहना, पिटा चाहना ।

प्रा० सिरचढ़ा बोल० घमण्डी, अभिमानी ।

प्रा० सिरचढ़ाना बोल० बड़ाई करना,बड़ा जानना, माथे पर रखना, पवित्र समझना,२इतराना,घमण्डी होना, ३ आदर मान करना ।

प्रा० सिरझुकाना बोल० नमस्कार करना, प्रणाम करना ।

प्रा० सिरडुलाना
सिरधुनना } बोल०दुःख से सिर हिलाना, घबराना, दुःखी होना ।

प्रा० सिरतोड़ना बोल० वश में करना, अधीन करना, दबाना ।

प्रा०सिरधरना बोल०वश में होना, अधीन होना, ताबे होना, आज्ञाकारी होना ।

प्रा० सिरनवाना बोल० गरीब होना, अधीन होना, वश में होना, २नमस्कार करना, शिर झुकाना।

प्रा० सिरपरधूलडालना बोल० रोना, विलाप करना ।

प्रा० सिरपर चढ़ाना बोल०लड़के को बिगाड़ना, इतराना, २ छोटे आदमी को बड़ा करना, ३ आदर मान करना ।

प्रा० सिरपीटना बोल० रोना, विलाप करना, दुःख करना ।

प्रा० सिरफिराना बोल०बेफ़ायदह मिहनत करना,वृथा परिश्रम करना।

प्रा० सिरफेरना बोल० हुक्म नहीं मानना, आज्ञा नहीं मानना ।

प्रा० सिरमारना बोल० बहुत मिहनत उठाना, मिहनत से खोजना।

प्रा० सिरमुंडाना बोल०सबसे मेल छोड़कर फ़क़ीर बनजाना ।

प्रा० सिरकी स्त्री० एक तरह का सरकण्डा जिसकी चटाई बनती है और झोंपड़ों की छावनी होती है, २ एक तरह की चटाई सी चीज़ जिसको मेह के बचाव के लिये गाड़ी पर डालते हैं ।

प्रा० सिरजना (सं० सर्जन, सृज् =पैदा करना) क्रि० स० पैदा करना, रचना, बनाना ।

प्रा० सिरसींग पु०दंगा करनेवाला, उपद्रवी, बाग़ी, फ़सादी, बलवाई।

ा० **सिरहाना** (शिर) पु० सिर की ओर, सिरकी तरफ़, २तकिया ।

प्रा० **सिरा** (सिर) पु० सिर, नोक, अन्त ।

प्रा० **सिराना** (शीत) क्रि० अ० ठंढा होना, २ क्रि०स० ठंढा करना, ३ (सं० सृ=जाना) क्रि० अ० बीतना, चलाजाना, ४ बहना, ५ क्रि० स० भेजना, पठाना ।

प्रा० **सिरसि** (सं० शिरीष, शॄ=काटना, नाश करना) पु० एक पेड़ का नाम, अथवा उसका फूल ।

प्रा० **सिल** } (सं० शिला) स्त्री०
सिला } पत्थर, चट्टान, साफ़ और बराबर पत्थर जिस पर सिल बट्टे से मसाले पीसे जाते हैं ।

प्रा० **सिलपट** गु० चौपट, उजाड़, २ चौरस, बट्टाधार ।

प्रा० **सिलबट्टा** (सं० शिलापट्ट, शिला=सिल, पट्ट=पीसने का पत्थर) पु० सिल लोढा ।

प्रा० **सिली** } (सं० शिला) स्त्री०
सिल्ली } लोहे के हथियारों पर धार चढाने का पत्थर, पथरी, सान ।

प्रा० **सिवाना** (सं० सीमा) पु० हद, सींव, सीमा, अन्त, छोर ।

प्रा० **सिवार** (सं० शैवाल, शी=सोना) पु०हरी हरी काई सी चीज़ जो तालाबों के पेंदोंमें उगती है ।

अं० **सिविल** स्त्री० दीवानी का मोहकमा ।

अं० **सिविलसर्विस** स्त्री० दीवानी की नौकरी ।

प्रा० **सिसकना** क्रि० अ० सिसकी भरना, ठुनकना, बिसुरना ।

प्रा० **सिहरना** क्रि० अ० काँपना, थरथराना ।

प्रा० **सिहरा** (फ़ा० सेह=तीन, और सं० हार=माला) पु० मौर, मुकुट, माला, जो ब्याह में दुलहा और दुलहिनके शिर पर पहराई जातीहै ।

प्रा० **सिहराना** क्रि०अ० थरथराना, सनसना, बालों का खड़ा होना, २ क्रि० स० सहलाना, चुलचुलाना, धीरे धीरे मलना, ३ थकाना, उचाटना ।

प्रा० **सिहाना** क्रि० अ० देखके संतुष्ट होना, २ किसी अच्छी चीज़ को देख कर उसके मिलनेके लिये मन ललचाना, डाह करना ।

प्रा० **सींक** स्त्री० एक तरह की घास जिसकी झाड़ू बनती है ।

प्रा० **सींग** (सं० शृङ्ग) पु० एक कड़ी चीज़ जो चौपायों के शिर में उगती है, शृङ्ग, विषाण ।

प्रा० **सींगड़ा** (शृङ्ग) पु० बारूद रखने का बरतन, बारूददान ।

प्रा० **सींगा** (शृङ्ग) पु० नरसिंगा ।

प्रा० **सींचना** (सं० सेचन, सिच्=

सींचना) क्रि० स० पानी देना, पनियाना, पाटना ।

प्रा० **सींव** (सं० सीमा) स्त्री० हद्द, सिवाना ।

सं० **सीकर** (सीक्=सींचना) पु० जलकण, पानी के कण ।

प्रा० **सीख** ⎫ (सं० शिक्षा) स्त्री०
सिखावन ⎭ उपदेश, समझ की बात, नसीहत ।

प्रा० **सीखना** (सं० शिक्षण, शिक्ष्=सीखना) क्रि०स० पढ़ना, विद्या का अभ्यास करना, पाना ।

प्रा० **सीजना** (सं० स्विद्=पसीना होना) क्रि०अ० पसीजना, पसीना निकलना, २ उबलना, गलना ।

प्रा० **सीटी** स्त्री० मुँह से सीसी ऐसी आवाज़ निकालना ।

प्रा० **सीठा** गु० फीका, बेरस, असार ।

प्रा० **सीढ़ी** (सं० निःश्रेणि) स्त्री० सोपान, नसेनी, ज़ीना ।

प्रा० **सीतला** (सं० शीतला, शीत=ठंढा, ला=लेना) स्त्री० माता, चेचक, गोटी ।

सं० **सीता** (सि=बाँधना) स्त्री० जानकी, वैदेही, मिथिला के राजा जनक की बेटी और श्रीरामचन्द्र की पत्नी, २ हलके नीचे एक लोहे का फल लगा रहता है उसे भी सीता कहते हैं—(और जब राजा जनक यज्ञ के लिये हल जोतकर धरती को साफ़ कर रहे थे तब धरती में से एक घड़ा निकला उस में से एक लड़की निकली, इसी कारण से उसका नाम सीता रक्खा गया) ।

सं० **सीतापति** (सीता + पति) पु० श्रीरामचन्द्र ।

प्रा० **सीताफल** पु० सरीफ़ा, खिरीसागर, कुम्हड़ा ।

प्रा० **सीधा** (सं० साधु) गु० सोझा, सरल, २ साम्हने, सन्मुख, ३ सादा, भोला, निष्कपट, शुद्ध, ४ सच्चा, साधु, खरा, साफ़दिल, धर्मी, ईमानदार, नेक, ५ दहिना, ६ (सं० सिद्ध) पु० कोरा अन्न, बे पका खाना ।

प्रा० **सीना** (सं० सीवन, सिव्=सीना) क्रि० स० टाँकना, टाँका लगाना, टाँका मारना, गाँठना ।

प्रा० **सीप** ⎫ स्त्री० समंदर के एक
सीपी ⎭ जानवर की हड्डी जिसमें से मोती निकलता है, २ पकाआम ।

सं० **सीमन्त** पु० केशरचना, माँग काढ़ना, गर्भवती का छठे या आठवें महीने का संस्कार ।

सं० **सीमा** (सि=बाँधना) स्त्री० सिवाना, हद्द, सींव, २ मर्यादा, अवधि ।

सं० **सीमाविवाद** पु० अठारह प्रकार के न्याय का एक न्याय, सरहद्दी झगड़ा ।

प्रा० सीय (सं० सीता) स्त्री० जानकी, वैदेही ।

प्रा० सीरा पु० मोहनभोग, हलुवा ।

प्रा० सीरा } (सं० शीतल) गु०
सीला } ठंढा, शीतल, गीला ।

प्रा० सीस शीस शब्द को देखो ।

प्रा० सीसा (सं० सीस या सीसक, सि=बाँधना) पु० एक धातु का नाम ।

प्रा० सीसों (सं० शिंशपा) पु० शीशम का पेड़ या उसकी लकड़ी ।

सं० सु गु० उपस० अच्छा, भला, सुन्दर, उत्तम, बहुत, क्रि० वि० अच्छी तरह से, सुख से, सुन्दरता से, २ सुगमता से, सहज में, बेमिहनत, ३ कभी कभी, ४ पूजा और आदर और संपदा आदि अर्थों में भी बोला जाता है ।

प्रा० सुकचाना } (सं० सङ्कोच)
सुकुचाना } क्रि० अ० लजाना, शर्माना, २ डरना, क्रि० स० किसीको लजाना, चपाना ।

प्रा० सुकड़ना (सं० सङ्कोचन) क्रि० अ० सिमटना, इकट्ठा होना ।

सं० सुकण्ठ (सु=अच्छा, कण्ठ=गला) पु० वानरों का राजा सुग्रीव ।

सं० सुकर्करा स्त्री० कठोर मार्ग ।

सं० सुकर्म (कृ=करना) पु० उत्तम काम, सप्तमयोग, विश्वकर्मा ।

सं० सुकाल (सु=अच्छा, काल=समय) पु० अच्छा समय, अच्छी ऋतु, २ सौंघाई, सस्ताई, ३ बहुतायत ।

सं० सुकुमार (सु=सुन्दर, कुमार=बालक) गु० कोमल, मनोहर, सुन्दर, नाज़ुक ।

सं० सुकृत (सु=भला, कृ=करना) बोल० धर्म, पुण्य, अच्छा काम, अच्छी करनी, गु० पुण्यात्मा, धर्मात्मा, सुशील, भाग्यवान् ।

सं० सुकेतु (सु=अच्छा, केतु=झंडा) पु० एक राक्षस या यक्ष का नाम जो ताड़का का बाप था ।

सं० सुकेतुसुता (सुकेतु + सुता) स्त्री० ताड़का ।

सं० सुख (सुख=सुखी होना, अथवा सु=अच्छी तरह से, खन्=खोदना-दुःख को) पु० चैन, आनन्द, आराम, कल, शान्ति, हर्ष ।

प्रा० सुखचैन बोल० आराम, चैनचान ।

प्रा० सुखपाना बोल० आराम करना, चैन करना ।

सं० सुखद (सुख=चैन, द=देनेवाला, दा=देना) क० पु० सुखदायी, सुख देनेवाला, सुखदायक ।

सं० सुखदायी } (सुख=चैन, दा=
सुखदायक } देना) क० पु० सुख देनेवाला ।

सं० सुखधाम (सुख=चैन, धाम=

घर) पु० सुख के घर, सुखदायी ।

सं० सुखपाल (सुख=चैन + पाल् =पालना) पु० पालकी, डोली ।

प्रा० सुखमा (सुख=चैन, मा=मापना) स्त्री० परमशोभा, बहुतही सुन्दरता ।

प्रा० सुखारी (सं० सुख) गु० सुखी ।

सं० सुखावह (सुख + आ, वह्=प्राप्त करना) क० पु० सुखजनक, सुखदाता ।

सं० सुखी (सुख) गु० सुखपाने वाला, सुख भोगनेवाला, सुखिया, सुखारी ।

सं० सुगति (सु=अच्छी, गति=चाल) स्त्री० अच्छीगति, मुक्ति, छुटकारा ।

सं० सुगन्ध (सु=अच्छी, गन्ध=वास) स्त्री० अच्छीवास, महक, ख़ुशबू ।

सं० सुगन्धित (सुगन्ध) क० जिसमें अच्छी बास हो, सुगन्ध वाला, ख़ुशबूदार ।

सं० सुगम (सु=अच्छीतरहसे, गम् =जाना) गु० सहज, आसान, सरल ।

सं० सुगमता भा० स्त्री० सरलता, आसानी ।

सं० सुग्रीव (सु=सुन्दर, ग्रीवा=गरदन) पु० वानरों का राजा और सूर्य का बेटा जो किष्किन्धापुरी का राजा और श्रीरामचन्द्र का मित्र और सहायक था, २ विष्णु के रथ का घोड़ा ।

प्रा० सुघड़ (सुघट, सु=अच्छा, घट=बना हुआ, घट्=बनाना) गु० सुन्दर, सुडौल, सुथरा, मनोहर, बहुत अच्छा ।

सं० सुघटित कर्म० सुन्दर रचित ।

प्रा० सुचकना (सं० सुचकित) क्रि० अ० अचंभा करना ।

सं० सुचरित (चर=जाना, खाना) क० पु० श्रेष्ठाचार, शुभाचरण, नेकचलन ।

सं० सुचित् (सु=अच्छा, चित्=मन) गु० सुगम, आसान, २ निश्चिन्त, बेफ़िक्र, निचिंत, ३ चौकस, सावधान ।

प्रा० सुचिताई भा० स्त्री० निश्चिन्ताई, सावधानी, बेफ़िक्री ।

सं० सुचेत (सु=अच्छी, चेत=सुध) गु० चौकस, सावधान, होशियार, सचेत ।

सं० सुजन (सु=अच्छा, जन=मनुष्य) गु० साधु, सज्जन, भला मानस, भला आदमी ।

सं० सुजनता भा० स्त्री० सौम्यता, सौजन्यता, सीधापन, भलमनसई, भलमन्सी ।

प्रा० सुजान (सं० सुज्ञानी, सु=अच्छा, ज्ञानी=जाननेवाला) गु० ज्ञानी, चतुर, प्रवीण, बहुत अच्छा जाननेवाला ।

प्रा० **सुझाना** क्रि० स० दिखाना, बताना, समझाना ।

प्रा० **सुठि** (सं० सुष्ठु, सु=अच्छी तरह से, स्था=ठहरना) गु० सुन्दर, उत्तम, २ बहुत, अत्यन्त ।

प्रा० **सुडौल** / **सुढब** (सु=अच्छा, डौल या ढब=रूप) गु० सुघड़, सुथरा, सुन्दर, मनोहर ।

सं० **सुत** (सु=पैदा होना, जन्मना) पु० बेटा, पुत्र, लड़का ।

सं० **सुता** (सुत) स्त्री० बेटी, पुत्री, कन्या, लड़की ।

प्रा० **सुतार** (सं० सूत) पु० बढ़ई, खाती (सं० सुतारा, सु=अच्छा, तारा=नक्षत्र) अच्छा समय, अवकाश, घात, दाँव ।

प्रा० **सुथरा** गु० अच्छा, सुन्दर, सुडौल, सुहावना ।

प्रा० **सुथरासाही** पु० नानकसाही फ़क़ीर ।

सं० **सुदर्शन** (सु=अच्छा, दर्शन=देखना जो अच्छा देखा जाता है) पु० विष्णुका चक्र, २गु०जो देखने में अच्छा हो, सुन्दर, सुहावना ।

सं० **सुदामा** (सु=अच्छा, दा=देना) पु० एक माली का नाम जिसने मथुरा में जाते समय श्रीकृष्ण को माला पहनाई थी, २ श्रीकृष्ण के साथी एक ग्वाल का नाम, ३ श्रीकृष्ण के एक गरीब मित्र का नाम जो जाति का ब्राह्मण था जिसको फिर श्रीकृष्णने बहुत ही धनवान् बनादिया, ४ बादल, ५ एक पहाड़ का नाम, ६ समुद्र ।

सं० **सुदि** (सु=अच्छी तरह से, दिव्=चमकना) अ०१० उजाला पाख, शुक्लपक्ष ।

सं० **सुदिन** (सु+दिन) पु० अच्छा दिन, अच्छा समय ।

प्रा० **सुध** / **सुधि** (सं०सुधी,सु=अच्छी, धी=बुद्धि) स्त्री० चेत, याद, स्मरण, ख़बरदारी ।

प्रा० **सुधबुध** (सं० शुद्धबुद्धि) स्त्री० समझ, बूझ, चेत, शुद्धज्ञान ।

प्रा० **सुधलेना** बोल० ख़बर लेना ।

प्रा० **सुधरना** (सं० सुधरण, सु=अच्छी तरह से, धृ=रखना) क्रि० अ० सही होना, अच्छा होना, २ बनना, सफल होना, ३ संभलना ।

सं० **सुधा** (सु=अच्छी भाँति से, धे=पीना या धा=रखना) पु० अमृत, अमी, पीयूष, आबहयात, २ रस, जल ।

सं० **सुधांशु** (सुधा=अमृत, अंशु=किरण, जिसकी किरणें अमृत के ऐसी आनन्द देनेवाली हैं) पु० चाँद, चन्द्रमा, २ कपूर ।

सं० **सुधाकर** (सुधा=अमृत, कर=किरण) पु०चाँद,चन्द्रमा,२कपूर ।

प्रा० **सुधारना** (सुधरना) क्रि०स०

सँवारना, बनाना, अच्छा करना, सही करना, सजाना, ठीक ठाक करना ।

सं० **सुधी** (सु=अच्छी, धी=बुद्धि जिसकी हो) पु० पण्डित, बुद्धिमान्, विद्वान्, सुबुद्धि, विज्ञ ।

प्रा० **सुन** (सं० शून्य) गु० बेहोश, मूर्च्छित, शीताङ्गी, २ खाली, छूछा, रीता ।

प्रा० **सुनसान** बोल० उजाड़, २ चुपचाप, ३ एकान्त, निराला ।

प्रा० **सुनना** (सं० श्रवण) क्रि० स० कान देना, श्रवण करना ।

सं० **सुनयना** स्त्री० सुन्दर नेत्र वाली, २ जनकपत्नी ।

प्रा० **सुनहरा** (सोना) क० सो-
सुनहरी नहला, सोनेका या सोना सा ।

प्रा० **सुनार** (सं० स्वर्णकार, स्वर्ण=सोना, कार=करनेवाला, कृ=करना, अर्थात् जो सोने की चीज़ बनावे) क० पु० सोने चाँदी की चीज़ बनानेवाला ।

प्रा० **सुनारिन** स्त्री० सुनार की
सुनारनी स्त्री, सुनार की लुगाई ।

प्रा० **सुनारी** स्त्री० सुनार का काम ।

प्रा० **सुनावनी** (सुनाना) स्त्री० मरने के समाचार, जो कोई आदमी परदेश में मरजाय उसके मरने की ख़बर ।

सं० **सुनासीर** (सु=अच्छा, नासीर=सेना का मुँह, अर्थात् जिसकी सेना अच्छी सजी हुई हो) पु० इन्द्र, देवताओं का राजा ।

सं० **सुन्दर** (सु=अच्छी तरह से, दृ=आदर करना) गु० मनोहर, सुरूप, बहुत अच्छा, सुडौल, ख़ूबसूरत ।

सं० **सुन्दरता** (सुन्दर) भा० स्त्री० मनोहरता, शोभा, छवि ।

सं० **सुन्दरी** (सुन्दर) स्त्री० रूपवती, ख़ूबसूरत स्त्री ।

प्रा० **सुन्ना** (सं० शून्य) स्त्री० सिफ़र, बिन्दी ।

सं० **सुपथ** (सु=अच्छा, पथ=रास्ता) पु० अच्छी रास्ता, सुमार्ग, अच्छी राह, २ अच्छाचलन ।

सं० **सुपर्ण** (सु=अच्छा, पर्ण=पत्ता, पल्लव) पु० गरुड़, २ गु० अच्छे पत्तोंवाला ।

सं० **सुपात्र** (सु + पात्र) गु० योग्य, भला मानस, उत्तमजन, २ पु० अच्छा बरतन, शरीफ़ ।

प्रा० **सुपारी** स्त्री० एक कड़ा फल जिसको पान के साथ खाते हैं, पूगीफल ।

प्रा० **सुपास** पु० आराम, सुख, सुभीता ।

सं० **सुपुत्र** (सु=अच्छा, पुत्र=बेटा)

पु० सपूत, अच्छा लड़का ।

सं० **सुप्त** (स्वप्=सोना) कृ० पु० निद्रित, सोया हुआ ।

सं० **सुप्ति** भा० स्त्री० नींद, निद्रा ।

सं० **सुफल** (सु + फल) गु० सिद्ध, फलदायक, सफल, लाभकारी, २ पु० अच्छा फलवाला पेड़ ।

सं० **सुबुद्धि** (सु + बुद्धि) गु० बुद्धिमान्, अच्छी समझवाला, चतुर, प्रवीण ।

सं० **सुभग** (सु=अच्छा, भग=ऐश्वर्य) गु० सुन्दर, मनोहर, प्यारा, सौभाग्यवान्, ऐश्वर्यवान्, प्रतापी, भाग्यवाला ।

सं० **सुभगा** (सुभग) स्त्री० सौभाग्यवती स्त्री, सुन्दर स्त्री, वह स्त्री जिसको उसका पति बहुत चाहे ।

सं० **सुभगता** (सुभग) भा० स्त्री० उत्तमता, अच्छाई, भलाई ।

सं० **सुभट** (सु=अच्छा, भट=लड़ाका) पु० वीर, बहादुर ।

सं० **सुभद्रा** (सु=अच्छा, भद्र=कल्याणरूप) स्त्री० श्रीकृष्णकी बहन, जिसको संन्यासी का रूप धर अर्जुन हर लेगया था, २ श्रेष्ठ नारी ।

सं० **सुभाव** (सु + भाव) पु० अच्छा स्वभाव, सुशीलता ।

प्रा० **सुभीता** (सं० शुभ + हित, शुभ=अच्छा, हित=जैसा चाहिये) पु० अवकाश, अवसर, फ़ुर्सत ।

सं० **सुभुज** (सु + भुज) पु० सुबाहु नाम दैत्य ।

सं० **सुमति** (सु=अच्छी, मति=बुद्धि) स्त्री० अच्छीबुद्धि, सुमति, भलमनसाई ।

प्रा० **सुमन** (सं० सुमनस्, सु=अच्छा, मनस्=मन, अर्थात् जिससे मन प्रसन्न होजाय) पु० फूल, पुष्प, २ गु० सुन्दर ।

सं० **सुमना** स्त्री० चमेली, मालती ।

प्रा० **सुमन्त** (सं० सुमन्त्र, सु=अच्छी, मन्त्=सलाह देना) पु० राजा दशरथ का सारथि और मन्त्री ।

सं० **सुमन्त्रक** कृ० पु० वज़ीर, मुशीर, मन्त्री ।

प्रा० **सुमरण**
सुमिरण
सुमरन
(सं०स्मरण) पु० याद, नाम लेना, स्मरण, २ (सं० स्मरणी) स्त्री० माला, जपमाला ।

प्रा० **सुमरना**
सुमिरना
(सं०स्मरण) क्रि० स० याद करना, स्मरण करना, नाम लेना, २ (सं० स्मरणी) स्त्री० माला, जपमाला ।

सं० **सुमित्रा** (सु=अच्छी तरह से, मिद्=प्यार करना) स्त्री० राजा दशरथकी पत्नी और लक्ष्मणकी माँ ।

सं० **सुमुखी** (सु=सुन्दर, मुख=मुँह) स्त्री० सुन्दर मुँहवाली, सुन्दरी ।

सं० **सुमेरु** (सु+मेरु) पु० मेरु पहाड़ जिसको हिन्दू सोनेका और रत्नों का बना हुआ कहते हैं और जहाँ देवता रहतेहैं, २ ज्योतिष में उत्तर ध्रुव, ३ जपमाला के सिरे पर का दाना या मनका ।

प्रा० **सुम्बा** पु० बन्दूकका काग़ज़, ठसनी ।

सं० **सुयश** (सु+यश) पु० अच्छा यश, अच्छा नाम, नामवरी ।

सं० **सुयोग** (सु+योग) पु०अच्छी संगति, सुसंगति ।

सं० **सुर** (सु=अच्छा, रा=देना, अर्थात् मन चाही चीज़ को देने वाला, सुर्=ऐश्वर्य रखना या चमकना अथवा सु=बहुत बल रखना) पु० देवता, देव, २ सूर्य ।

प्रा० **सुर** (सं० स्वर) पु० ताल, तान, आवाज़, राग, गान ।

प्रा० **सुरमिलाना** बोल० एक सुर करना, अच्छे सुर से गाना ।

सं० **सुरगुरु** (सुर+गुरु)पु० देवताओं के गुरु, बृहस्पति ।

सं० **सुरङ्ग** (सु+रङ्ग) पु० हिंगलू, २ स्त्री० ज़मीन के नीचे रास्ता, ३ गु० लाल या तेलिया रंग का (सुरङ्ग जैसे घोड़ा), ४ सुन्दर, जिसका रंग अच्छा हो, चमकीला ।

सं० **सुरत** (सु=अच्छी तरह से, रम्=खेलना) पु० स्त्रीसंग, मैथुन, भोग, विलास ।

प्रा० **सुरत** (सं० स्मृति) स्त्री०
सुरता सुध, चेत, ख़बर, याद, ध्यान ।

सं० **सुरतरु** (सुर+तरु) पु०देवताओं का वृक्ष, कल्पवृक्ष ।

प्रा० **सुरता** (सं० स्मर्ता, स्मृ=
सुरतीला याद करना) गु० सुचेत, सावधान ।

प्रा० **सुरती** स्त्री० तमाकू, तम्बाकू ।

सं० **सुरधेनु** (सुर+धेनु) स्त्री० कामधेनु, इन्द्र की गाय ।

सं० **सुरनदी** (सुर+नदी) स्त्री० वियद्गङ्गा, आकाशगङ्गा, मन्दाकिनी, सुरदीर्घिका ।

सं० **सुरपति** (सुर+पति) पु० देवताओं का राजा, इन्द्र ।

सं० **सुरपुर** पु० (सुर+पुर या
सुरपुरी स्त्री० पुरी) स्वर्ग,इन्द्रलोक, अमरावती ।

सं० **सुरभि** (सु=अच्छी तरहसे, रभ्=बहुत चाहना या शब्द करना) पु० सुगन्ध, २ वसन्तऋतु, ३ जायफल, ४ चैतका महीना, ५ सोना, ६ (सुरभी) स्त्री० कामधेनु, ७ गाय, ८ धरती, ज़मीन, ९ गु० सुगन्धित, १० विख्यात, ११ अच्छा, सुन्दर, मनोहर ।

सं० **सुरलोक** (सुर+लोक)पु० स्वर्ग, इन्द्रलोक, सुरपुरी ।

सं० **सुरस** (सु=अच्छा, रस=स्वाद) गु० मीठा, सुस्वाद ।

प्रा० **सुरसरि**, **सुरसरिता** (सं० सुरसरित्, सुर=देवता, सरित्=नदी) स्त्री० गंगा ।

सं० **सुरसा** (सुरस) स्त्री० नागों की माँ ।

सं० **सुरसेनप** (सुर+सेन+पा=बचाना) पु० कार्त्तिकेय, कीर्त्तिमुख, षडानन ।

सं० **सुरा** (सुर्=चमकना या बहुत बल रखना) स्त्री० मदिरा, मद्य, दारू, शराब ।

सं० **सुराङ्गना** (सुर=देवता, अङ्गना=स्त्री) स्त्री० देवताओं की स्त्री, देवपत्नी, अप्सरा ।

सं० **सुराचार्य** (सुर+आचार्य) पु० देवताओंके गुरु, बृहस्पति ।

सं० **सुरारि** (सुर+अरि) पु० देवताओं के वैरी, असुर, राक्षस, दैत्य ।

सं० **सुरापगा** (सुर+आपगा) स्त्री० देवनदी, गङ्गा ।

सं० **सुरूप** (सु+रूप) गु० सुन्दर, सुडौल, मनोहर ।

सं० **सुरेन्द्र** (सुर+इन्द्र) पु० देवताओं का राजा, सुरपति, इन्द्र ।

सं० **सुरेश**, **सुरेश्वर** (सुर+ईश या ईश्वर) पु० इन्द्र, २ महादेव, शिव ।

सं० **सुरेश्वरी** (सुरेश्वर) स्त्री० देवी, दुर्गा, महामाया, योगमाया ।

प्रा० **सुरैत**, **सुरैतिन** (सुरत) स्त्री० वह स्त्री जिसके साथ ब्याह नहीं हुआ हो और ऐसेही घर में डाल ली जाय, रखनी, उढ़री, उपपत्नी ।

प्रा० **सुलगना**, **सिलगना** (सं० संलग्न) क्रि० अ० जल उठना, लहरना, बलना, धुआँ निकलना ।

प्रा० **सुलझना** क्रि० अ० खुलना, सुधरना ।

सं० **सुलभ** (सु=अच्छीतरह से, लभ्=पाना) गु० सहज, सुगम, आसान, सहल, २ जो सहज से मिल जाय ।

सं० **सुलोचना** (सु=अच्छी, लोचन=आँख, जिसकी हो) स्त्री० जिस स्त्री की आँखें अच्छी हों, सुन्दरी, मनोहर स्त्री, २ रावण के बेटे मेघनाद की स्त्री का नाम ।

प्रा० **सुवन** (सं० सूनु) पु० बेटा, पुत्र, लड़का ।

सं० **सुवर्ण** (सु+वर्ण) पु० सोना, २ हरिचन्दन, ३ सोना गेरू मिट्टी, ४ गु० सुजाति, अच्छी जात का, ५ सुन्दर, चमकीला, ६ सुरंग, अच्छे रंग का ।

सं० **सुवास** (सु+वास) अच्छा घर, अच्छा मकान, २ स्त्री० सुगन्ध, खुशबू ।

सं० **सुवासिनी** (सु=सुखसे, वस्=

रहना) स्त्री० सुहागिन, २ अपने बाप के घर बहुत रहनेवाली स्त्री ।

सं० **सुबाहु** (सु + बाहु) पु० एक राक्षस का नाम ।

सं० **सुबेल** (सु=अच्छा, वेल=किनारा, जो समुद्र के पास है) पु० समुद्रतट, त्रिकूट पहाड़ ।

सं० **सुशील** (सु + शील) गु० सुस्वभाव, अच्छी चाल चलन वाला, सीधा, साधु ।

सं० **सुषुप्त** (स्वप्=सोना) कृ० पु० सोनेवाला, ज्ञानशून्य ।

सं० **सुषुप्ति** स्त्री० सुनिद्रा, नींद, जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय इन चार अवस्था[1] में से एक अवस्था का नाम ।

प्रा० **सुसकारना** क्रि० अ० फनफनाना, सिसकारी मारना ।

सं० **सुसङ्ग** (सु + सङ्ग) पु० अच्छी संगति, सुसंगति, नेक सुहबत ।

प्रा० **सुसताना** (सं० स्वस्थ या सुस्थ) क्रि० अ० विश्राम लेना, ठहरना, साँस लेना, आराम करना ।

प्रा० **सुसर** / **सुसरा** (सं० श्वशुर) पु० पति या पत्नी का बाप ।

प्रा० **सुसरार** / **सुसराल** सं० (श्वशुरालय, श्वशुर=ससुर, आलय=घर) स्त्री० ससुर का घर या घराना ।

सं० **सुस्थ** (सु=अच्छी तरह से, स्था=ठहरना) गु० भला चङ्गा, नीरोगी, २ सुखी, प्रसन्न, हर्षित ।

सं० **सुस्थिर** (सु + स्थिर) गु० अटल, अचल, निश्चल, दृढ़, ठहराऊ ।

सं० **सुस्वाद** (सु + स्वाद) गु० जिसमें अच्छा स्वाद हो, मज़ेदार, सुरस, मधुर, मीठा ।

प्रा० **सुहाग** (सं० सौभाग्य) पु० अच्छा भाग, २ पति का प्यार, ३ पति के जीते रहने की दशा, ४ स्त्री का गहना अर्थात् काजल टीकी आदि जो पति के जीने का चिह्न है (यह शब्द 'रंडापा' का उलटा है)।

प्रा० **सुहागन** / **सुहागिन** (सं० सौभागिनी, सुभगा, अच्छे भाग वाली) स्त्री० वह लुगाई जिसका पति जीता हो, सधवा स्त्री, सपतिका ।

प्रा० **सुहाना** / **सुहावना** (सं० शोभन) गु० सुन्दर, मनभावन, मनोहर, २ क्रि० अ० अच्छा लगना, मनभाना, फबना, रुचना ।

सं० **सुहृद्** (सु=अच्छा, हृद्=मन) प्रत्युपकार की इच्छारहित जो उपकार करे उसका नाम सुहृद् है गु० मित्र, दोस्त, हितू, सखा ।

प्रा० **सुअर** (सं० सूकर, सू=ऐसा शब्द, कर=करनेवाला, कृ=करना) पु० एक जंगली जानवर का नाम, वराह, शूकर ।

---

[1] नेत्रस्थं जाग्रतं विद्यात् स्वप्नं कण्ठे समादिशेत् । सुषुप्तिं हृदये चैव तुरीयं मूर्ध्नि संस्थितम् ॥ १ ॥

ा० सूआ }
सूवा } (सं० शुक) पु० तोता, सुग्गा ।
सूगा }

ा० सूआ }
सूवा } पु० बड़ी सूई ।

ा० सूई (सं० सूची) सूच्=जतलाना या सिव्=सीना) स्त्री० कपड़े सीने की चीज़ ।

ा० सूंघना (सं० सुघ्राण, सु,घ्रा=सूंघना) क्रि० स० बास लेना, महक लेना, सुगन्ध लेना ।

ा० सूंट स्त्री० चुप, मौन ।

ा० सूंट भरना या मारना बोल० चुपचाप रहना ।

ा० सूंटमारेजाना बोल० चुपचाप चला जाना ।

ा० सूंड (सं०शुण्ड, शुण्=जाना) स्त्री० हाथी की नाक ।

ा० सूंतना }
सूंथना } क्रि० स० तोड़ना (जैसे पेड़ से पत्ते), २ खींचना (जैसे तलवार) ।

ा० सूकी स्त्री० चौअन्नी ।

सं० सूक्त (सु=उक्त, सु=सुन्दर, उक्त=कहा, वच्=कहना) पु० सुन्दर वार्ता, पुरुषसूक्त ।

सं० सूक्ष्म (सूच्=जतलाना) गु० थोड़ा, छोटा, पतला, महीन, बारीक, पतील ।

सं० सूक्ष्मता (सूक्ष्म) भा० स्त्री० छोटापन, पतलाई, बारीकी, पतलापन ।

सं० सूक्ष्मदर्शी (सूक्ष्म + दर्शी=देखनेवाला, दृश्=देखना) गु० चतुर, प्रवीण, बुद्धिमान्, तेज़, २ जिसकी नज़र तेज़ हो, बारीकबीं ।

प्रा० सूखना }
सूकना } (सं० शोषण, शुष्=सूखना) क्रि० अ० शुष्क होना, कड़ा होना, खुश्क होना, २ मरना, जलना (जैसे पेड़ आदि), ३ उड़ना, हवा होना (जैसे अर्क़ आदि), ४ पचकना, टूटना (जैसे स्त्री का अथवा गाय आदिका दूध); ५ दुबला होना, ६ बिगड़ना, गलना, ख़राब होना, कुम्हलाना, मुरझाना, बेरस होना ।

प्रा० सूखा (सं० शुष्क) गु० बेरस, शुष्क, गला, सड़ा ।

सं० सूचक (सूच् + अक, सूच्=जतलाना) क० पु० जतलानेवाला, बतलानेवाला, सिखानेवाला, बोधक, पिशुन, वाई ।

प्रा० सूचना (सूच्=जतलाना) स्त्री० जतलाना, चिताना, इत्तिला ।

सं० सूचनापत्र पु० इत्तिलानामा, नोटिस, इश्तिहार ।

सं० सूचिक क० पु० दरज़ी, ख़ैयात ।

सं० सूचित कर्म० जताया गया ।

सं० सूचीपत्र (सूची=जतलाना, पत्र=काग़ज़) पु० फ़ेहरिस्त, २ बीजक ।

प्रा० सूजना (सं० शोथ या श्वयथु, शिव=फूलना) क्रि० अ० फूलना,

मोटा होना, बढ़ना, किसी रोग से देहका कोई अङ्ग मोटा होजाना ।

प्रा० सूजी (सं० सूचिक) पु० दरज़ी, सीनेवाला, २ (सं०सूची) स्त्री० सूई ।

प्रा० सूजी स्त्री० मोटा आटा, दरदरा आटा ।

प्रा० सूझना क्रि० अ० दीखना, नज़र आना, दीख पड़ना, दिखाई देना, मालूम होना, प्रकट होना, प्रत्यक्ष होना ।

प्रा० सूत (सं० सूत्र) पु० डोरा, तागा, धागा, रूई का डोरा ।

सं० सूत (सू=चलाना, बहुत बल रखना या पैदा होना) पु०रथवान्, सारथि, २ बढ़ई, ३ भाट, ४ वर्णसंकर, दोग़ला, जिसका बाप राजपूत और मां ब्राह्मणी हो, ५ पुराणों का जाननेवाला एक पण्डित जिसका नाम लोमहर्षण था जिसने नैमिषारण्य में बहुत से ऋषियों को पुराण और महाभारत की कथा सुनाई थी और उसको बलदेवजीने मार डाला था ।

सं० सूतक (सू=पैदा होना) पु० लड़के के पैदा होनेसे या गर्भ के गिरने से या मौत होजानेसे जो अपवित्रता होती है उसे सूतक कहतेहैं ।

प्रा० सूतना (सं० सुप्त) क्रि०अ० सोना ।

प्रा० सूतली (सूत) स्त्री० सन की डोरी, रस्सी ।

प्रा० सूती (सं० सूत्रीय) गु०सूत से बना हुआ ।

सं० सूत्र (सूत्र्=गूंथना या सिव्=सीना) पु० सूत, डोरा, धागा, तागा, २ रीति, क़ायदा, ३ ऐसा वाक्य जिसमें संक्षेप से बहुत से अर्थ का ज्ञान हो जैसे व्याकरण आदि के सूत्र ।

सं० सूत्रधार (धृ=धरना) पु० प्रधान नट, नाटक के खेल का मुखिया ।

प्रा० सूथन पु०पायजामा, पाजामा, जांघिया, सुथनी ।

सं० सूदन (सूद्=मारना) पु० मारना, गु० मारनेवाला ।

प्रा० सूधा (सं० शुद्ध) गु० सीधा, भोला, निष्कपट, शुद्ध ।

सं० सूदशाला स्त्री० पाकशाला, रसोईघर, बावरचीख़ाना, कुकिंरूम।

प्रा० सूना (सं० शून्य) गु०ख़ाली, छूछा, रीता, २ उजाड़ ।

सं० सूनु (सू=पैदा होना) पु०बेटा, पुत्र, लड़का ।

प्रा० सूप (सं० सूर्प, सूर्प्=नापना) पु० छाज, अनाज पछोरनेकी चीज़।

सं० सूपकार } (सूप=रसोई, कार=करनेवाला) पु० पाचक, रसोईबरदार ।
सूपकारी

० सूम (अ० शूम) पु० कंजूस, मक्खीचूस, कृपण।

० सूर (सू=चलाना) पु० सूर्य, २ सूरदास।

० सूर (सं०शूर)पु०वीर,बहादुर।

० सूरज (सं० सूर्य) पु० रवि, भानु, दिनकर, आफ़ताब, ख़ुर्शेद।

० सूरजगहन } (सं०सूर्यग्रहण)
सूरजग्रहण } सूर्यका गहन।

० सूरजमुखी (सं०. सूर्यमुखी) पु० एक फूल का नाम।

० सूरन (सं० सूरण) पु० ज़िमींक़न्द, सूरन।

० सूरदास पु० एक हिन्दी कवि और गवैये का नाम जो अन्धा था इस लिये अब हिन्दुओं में अन्धे को सूरदास कहते हैं।

० सूरवीर (सं० शूरवीर) पु० वीर, बहादुर, सामन्त, योद्धा।

० सूरमलार पु० एक रागिनी का नाम।

० सूरमा (सं० शूर) गु० बहादुर, वीर, सामन्त, शूरवीर।

० सूरमापन भा० पु० बहादुरी, वीरता।

ा० सूरा (सं० शूर) पु० बहादुर, शूरवीर, योद्धा एक आदमी लड़ाई में जाने के लिये तैयारी कर रहा था उस समय में उसकी स्त्रीने कहा कि–

"सूरा रण में जायकै
लोहा करो निशङ्क।
ना मोहिं चढ़े रँडापरो
ना तोहिं चढ़े कलङ्क॥"

अर्थ–हे धीर ! लड़ाई में जाकर निडर होके लड़ो जिससे न तो मैं राँड होऊं और न तुम्हारे नाम को दाग़ लगे।

सं० सूर्य (सृ=चलना) पु० सूर्य।

सं० सूर्यवंशी (सूर्य=सूर्य,वंशी=घराने के) पु०राजपूतों की एकज़ात जिनकी राजधानी अयोध्यापुरीथी।

सं० सूर्योदय (सूर्य + उदय) पु० सूर्य का निकलना, दिन चढ़ना, सबेरा, तड़का, भोर, बिहान, प्रभात।

प्रा० सूल (सं० शूल, शूल्=बीमार होना) पु० बावगोला, बात्रसूल, एक तरह की बीमारी जिसके होने से पसलियों में और पेट में बहुत दर्द होता है, २ त्रिशूल, सेल, ३ भाले की नोक, ४ कांटा।

प्रा० सूल पु० दशा, हाल, हालत।

प्रा० सूली (सं० शूल) स्त्री० एक तरह का कांटा जिस पर अपराधी लटकाया जाता है।

प्रा० सूसी स्त्री० एक तरह का कपड़ा।

प्रा० सूहा (सं० शोण, शोण्=लाल होना) गु० लाल, राता, किरमची, २ पु० एक राग का नाम।

सं० सृष्ट (सृज्=पैदा होना) र्म्म० रचित, निर्म्मित ।

सं० सृष्टि (सृज्=पैदा होना) स्त्री० उत्पत्ति, संसार, जगत्, दुनिया, स्वभाव, प्रकृति ।

सं० सृष्टिशिरोमणि पु० स्त्री० संसार में श्रेष्ठ, सर्वोत्तम, अशर्फुलमख़्लूक़ात, मनुष्य, इन्सान ।

प्रा० सेंकना क्रि० स० गर्म करना, तत्ता करना, उष्ण करना, भूनना, भूंजना, झुलसना ।

प्रा० सैंत
सैंतमेत } क्रि० वि० मुफ़्त, विना मोल, बेदाम का ।

प्रा० सेंध (सं० सन्धि) पु० छेद जिसको चोर चोरी करने के समय दीवार में करते हैं ।

प्रा० सेंधा (सं० सैन्धव) पु० लाहौरी नमक, पहाड़ी नमक ।

प्रा० सेंधिया (सिन्ध) पु० ग्वालियर के महाराजा की ज़ात जो शायद सिन्ध नदी के पास के देश से फैले हों, २ ज़हर, विष, ३ (सेंध) सेंध लगानेवाला, चोर, घर फोरनेवाला, सेंधमार, सेंधचोर ।

सं० सेचन (सिच्=सींचना) पु० सींचना, छिड़काव ।

सं० सेचक क० पु० सींचनेवाला, भिगोनेवाला ।

सं० सेचित र्म्म० आर्द्रीकृत, तर किया हुआ, सींचा गया, भिगोया गया ।

प्रा० सेज (सं० शय्या) स्त्री० पलँग, बिछौना ।

प्रा० सेठ (सं० श्रेष्ठ) पु० साहूकार, महाजन, हुण्डीवाल, धनवान् ।

प्रा० सेत (सं० श्वेत) गु० धौला, सफ़ेद, उजला ।

सं० सेतु (सि=बाँधना) पु० स्त्री० पुल, बाँध, बन्ध ।

सं० सेतुबन्ध (सेतु + बन्ध) पु० वह जगह जहाँ श्रीरामचन्द्र ने लङ्का जानेके लिये नल और नील वानर से पुल बँधवाया था ।

सं० सेतुबन्धरामेश्वर (सेतुबन्ध + रामेश्वर) पु० महादेव जिनको श्रीरामचन्द्रने लङ्का जानेके समय सेतुबन्धपर स्थापन किया था ।

सं० सेना (स=साथ, इन=मालिक या सि=बाँधना) स्त्री० कटक, दल, फ़ौज, लश्कर, सिपाह ।

सं० सेनानी (सेना + नी=लेचलना) क० पु० सेनापति, सिपहसालार, कप्तान ।

सं० सेनापति (सेना + पति) पु० फ़ौज का सरदार ।

प्रा० सेमल (सं० शाल्मली) पु० एक पेड़का नाम ।

प्रा० सेर पु० सोलह छटाँक की तौल ।

प्रा० सेल
सेला } (सं० शूल) पु० बर्छी, बर्छा, बल्लम, भाला ।

प्रा० सेला पु० एक तरह की चद्दर, एक तरह का कपड़ा, २ एक तरह का बाघ।

प्रा० सेली स्त्री० बद्धी या जाली जिसको फ़क़ीर गले में पहने रहते हैं।

प्रा० सेव स्त्री० एक तरह का फल।

सं० सेवक (सेव्=सेवा करना) क० पु० सेवा करनेवाला, पूजा करने वाला, पुजारी, नौकर, दास, चाकर।

प्रा० सेवकाई (सेवक) भा० स्त्री० नौकरी, चाकरी, टहल, सेवा।

प्रा० सेवड़ा पु० एक तरह के हिन्दू फ़क़ीर, २ जैनमत का भिखारी।

प्रा० सेवती (सं० सेमन्ती, सिम्= नाश होना या तोड़ाजाना) स्त्री० एक फूल का नाम।

प्रा० सेवना (सं० सेवन, सेव्= सेवा करना) क्रि० स० सेवा करना, २ पालना, अण्डा सेना, अण्डों को पालना पोसना।

सं० सेवा (सेव्=सेवा करना) स्त्री० नौकरी, चाकरी, टहल, सेवकाई, २ पूजा, सत्कार।

सं० सेवित (सेव्=सेवा करना) कर्म० उपासित, सेवा किया हुआ, पूजा किया हुआ।

सं० सेवी क० पु० पुजारी, नौकर, दास, चाकर।

प्रा० सेवैं (सं० समिता, सम्=साथ, इण्=जाना) स्त्री० बहुव० मैदा की बनी हुई खाने की चीज़, क्रि० सेवा करें।

सं० सेव्य (सेव्=सेवा करना) कर्म० सेवा करने योग्य, पूजा करने योग्य, उपास्य, सेवने योग्य, मख़दूम।

प्रा० सैकड़ा (सं० शतक) गु० शतकड़ा, १००।

प्रा० सैंतालीस (सं० सप्तचत्वारिंशत्) गु० चालीस और सात, ४७।

प्रा० सैंतीस (सं० सप्तत्रिंशत्) गु० तीस और सात, ३७।

प्रा० सैन } (सं० संज्ञा) स्त्री०
सेन } संकेत, इशारा, चिह्न, आँख का या अंगुली का इशारा, २ (सं० सैन्य) फ़ौज, कटक, सेना, ३ (सं० शयन) पु० सोना, नींद लेना।

प्रा० सैनासैनी बोल० आपस में आँख से या अंगुली से इशारा करना।

सं० सैन्धव (सिन्धु) गु० सिन्धु नदी के पास के देशों में पैदा होने वाला, २ पु० सेंधानमक, लाहौरी नमक, ३ घोड़ा।

सं० सैन्य (सेना) स्त्री० फ़ौज, कटक, सेना, दल।

सं० सैन्यनिकेत पु० पदातिस्थान, सैन्यवास, छावनी।

सं० सैन्यप्रदर्शनीय स्त्री० फ़ौजी नुमायश, सेना की सजावट।

प्रा० सौंअर (सं० सूतिकागृह,

सूतिका=ज़च्चा, सू=पैदा होना, (गृह=घर) पु० कोठरी जिस में ज़च्चा अर्थात् वह स्त्री जिसके बच्चा पैदा हुआ है रहे ।

प्रा० सोआ स्त्री० एक तरह का साग ।

प्रा० सोई सर्वना० वही, आप ।

प्रा० सों से, साथ ।

प्रा० सोंटा पु० लाठी, लट्ठ ।

प्रा० सोंठ (सं० शुण्ठी, शुण्ठ्=सूखना) स्त्री० सोंठि ।

सं० सोढ (सह्=सहना) क० पु० क्षान्त, सहनशील ।

सं० सोढा (सह्=सहना) क० पु० शान्त, सहनशील, मुतहम्मिल ।

सं० सोंधा (सं० सुगन्ध) पु० सुगन्धित मसाला जिससे बाल धोये जाते हैं, २ सुगन्ध, बास, बू, ३ ऐसी बू जैसी कि मिट्टी के कोरे बरतनों को भिगोने से या चने आदि के सेंकने से निकलती है ।

प्रा० सोंपना } (सं० समर्पण) क्रि०
सौंपना } स० दे देना, हवाले करना, सुपुर्द करना ।

प्रा० सोंह (सं० शपथ) स्त्री० सौगन्द, शपथ, किरिया, क़सम ।

प्रा० सोंहीं (सं० सम्मुख) क्रि० वि० सामने, आगे, सन्मुख ।

प्रा० सोखना (सं० शोषण, शुष्=सूखना) क्रि० स० चूसना, पीलेना, खींचना ।

प्रा० सोग (सं० शोक) पु० चिन्ता, फ़िक्र, शोच, उदासी, दुःख ।

प्रा० सोच (सोचना) पु० ध्यान, ख़याल, विचार, २ चिन्ता, फ़िक्र ।

प्रा० सोचना (सं० शोचना, शुच्=सोचना) क्रि० ख़याल करना, समझना, विचारना, ध्यान करना ।

प्रा० सोझा गु० सीधा, खड़ा ।

प्रा० सोत } (सं० स्रोत) पु० धारा,
सोता } चश्मा, झर्ना ।

प्रा० सोध (शोधना) स्त्री० शुद्ध करना, शोधन, २ खोज, पता, भेद, ख़बर ।

प्रा० सोधना (सं० शोधन) क्रि० स० सही करना, ग़लती निकालना, शुद्ध करना, जाँचना, २ ऋण चुकाना, क़र्ज़ चुकाना, ३ धातु को साफ करना ।

प्रा० सोन (सं० शोण, शोण्=जाना) पु० स्त्री० एक नदी का नाम, २ रुधिर, रक्त, उदासी, ब्रह्मचारी ।

प्रा० सोनहरा } (सोना) गु०
सोनहला } सुनहरा, सुनहरी, सोने का या सोने सा ।

प्रा० सोना (सं० स्वर्ण) पु० बहुत मोल की धातु, कञ्चन, कनक ।

प्रा० सोना } (सं० शयन) क्रि० अ०
सोवना } नींद लेना, पौढ़ना, सुतना ।

सं० **सोपान** (स=साथ,उप=पास, अन्=जीना, पर उप उपसर्ग के साथ आनेसे इसका अर्थ चढ़ना होजाता है) स्त्री० सीढ़ी,नसेनी ।

प्रा० **सोभना** (सं० शोभन) क्रि० अ० सोहना, अच्छा दिखाई देना ।

सं० **सोम** (सू=पैदा होना या फेंकना किरण को) पु० चाँद, चन्द्रमा, २ अमृत, ३ देवताओं का ख़ज़ानची, कुबेर, ४ हवा, ५ यमराज, ६ कपूर, ७ सोमलतानाम जड़ी और उसका रस, ८ (स=साथ, उमा=पार्वती) शिव, महादेव, ९ वानरेश,सुग्रीव, १० हव्य, कव्य, ११ आकाश ।

सं० **सोमज** (सोम + जन्=पैदा होना) पु० बुधग्रह, अमृत, दुग्ध ।

सं० **सोमपा** (सोम + पा=पीना) क० पु० यज्ञवल्ली का पीनेवाला, याज्ञिक, यजमान ।

सं० **सोमवार** (सोम=चाँद, वार= दिन) पु०चाँद का दिन, चन्द्रवार ।

सं० **सोमवल्क** पु० करञ्ज, कंजा, रीठी, श्वेतखदिर, सफ़ेद खैर, कैफरा ।

प्रा० **सोरठ** स्त्री० एक रागिनी का नाम ।

प्रा० **सोरठा** पु० हिन्दी बोली में एक छन्द जिसके पहले पद में ११ और दूसरे में १३ फिर तीसरे में ११ और चौथे में १३ मात्रा होती हैं और यह छन्द दोहेका उलटा है ।

प्रा० **सोरह** / **सोलह** (सं० षोडश) गु० दश और छः, १६ ।

अं० **सोशलरिफ़ार्मकमेटी** सामाजिक संशोधनसभा, जलसा रिफ़ाहआम ।

प्रा० **सोहना** (सं० शोभन, शुभ्= चमकना) क्रि० अ० शोभना, अच्छा दिखाई देना, फबना, भला दीखना ।

प्रा० **सौ** (सं०शत) गु० दशदहाई ।

प्रा० **सौसिरका होना** बोल० बहुत बलवान् या मग़रा होना, २ बहुत सहना ।

प्रा० **सौगन्द** पु० शपथ, किरिया, आन ।

सं० **सौगन्ध** सुगन्ध, भा० पु० खुशबू, २ कपूर ।

प्रा० **सौंघाई** (सं० स्वर्घता, सु= अच्छा, अर्घ=मोल) स्त्री० सस्ती, सस्ताई ।

प्रा० **सौंफ** (सं० शतपुष्पा) स्त्री० एक ठंढी पाचक दवाई ।

सं० **सौचि** भा० पु० दर्ज़ी, सूचीजीवन, सूचीजीवी ।

सं० **सौजन्य** / **सौजन्यता** (सुजन) भा० पु० सुजनता, भलमनसाहत,साधुपन,सुशीलता,शराफ़त।

प्रा० **सौत** / **सौतन** / **सवति** (सं० सपत्नी, स=एक ही, पति=भर्ताहै जिसका) स्त्री० एकही

पति की दूसरी स्त्री, सौती ।

प्रा० **सौतेला** (सौत) गु० सौतसे जनमा हुआ ।

सं० **सौदामनी**
सौदामिनी (सुदामन्=बादल अर्थात् बादलों में रहनेवाली, सु=बहुत, दा=देना) स्त्री० बिजली, दामिनी ।

सं० **सौध** (सुधा=पोतने की एक लाल चीज़ उससे रँगा हुआ, सु=अच्छी तरह से, धा=रखना) पु० महल, प्रासाद, राजमन्दिर, देवमन्दिर ।

सं० **सौनिक** पु० व्याध, वधिक, बहेलिया, हिंसक, क़साई जैसे "सौनिकेन यथा पशुः" ।

सं० **सौन्दर्य** (सुन्दर) भा० पु० सुन्दरता, ख़ूबसूरती, चमकदमक, रंगरूप ।

सं० **सौभरि** (पु० एक ऋषि का नाम जिसने मान्धाता राजा की पचास लड़कियों से ब्याह किया था जिसकी कथा विष्णुपुराण में है ये ऋषि यमुनानदी के तीर पर बैठे तप कर रहे थे वहाँ गरुड़ ने जाय एक मछली मार कर खाई तब ऋषि ने गरुड़ को शाप दिया कि जो फिर इस जगह आवेगा जीता न बचेगा ।

सं० **सौभद्र** भा० पु० सुभद्रा का पुत्र, अभिमन्यु ।

सं० **सौभाग्य** (सुभग) भा० पु० भाग्यवानी, अच्छा भाग्य, २ ज्योतिष में चौथा योग ।

सं० **सौमित्र** (सुमित्रा) भा० पु० सुमित्रा का बेटा, लक्ष्मण, श्रीरामचन्द्र का छोटा भाई ।

सं० **सौम्य** पु० बुध, चन्द्र, गु० सुशील, सुन्दर, मनोहर, प्रियदर्शन, क्रोधरहित, मुतहम्मिल, बुर्दबार ।

सं० **सौम्यता** भा० स्त्री० सुशीलता, सीधापन, संजीदगी ।

सं० **सौर** (सूर=सूर्य) गु० सूर्यसम्बन्धी, सूरज का (महीना दिन आदि), २ पु० शनैश्चर ।

सं० **सौरभेय**
सौरभेयी भा० पु० सुरभीपुत्र, वृषभ, बैल, स्त्री० गौ, वशिष्ठ की धेनु, नन्दनी ।

प्रा० **सौरज** (सं० शौर्य) भा० पु० शूरमापन, शूरवीरता, बहादुरी ।

सं० **सौरभ** (सुरभि) पु० सुगन्ध, ख़ुशबू, महक, २ केशर, ३ आम का पेड़ ।

सं० **सौरि** भा० पु० शनैश्चर, कृष्ण, वसुदेव ।

सं० **सौवर्चल** पु० कालानमक ।

सं० **सौहार्द** भा० पु० मित्रता, दोस्ती ।

सं० **स्कन्ध** (स्कन्द्=ऊपर जाना) पु० कंधा, कांधा, २ पेड़ की धड़, मोटे गुद्दे, ३ पुस्तक का एक भाग जिसमें कई अध्याय हों, ४ बाणासुर

का बेटा, ५ व्यूह, ६ युद्धसमूह ।

सं० स्खलित (स्खल्=गिरना) क० पु० च्युत, गिरा, गिर पड़ा ।

सं० स्तन (स्तन्=शब्द करना) पु० चूंची, छाती, पयोधर ।

सं० स्तनयित्नु पु० गर्जना, विद्युत्, बिजली, मृत्यु, रोग ।

सं० स्तब्ध (स्तम्भ्=रोकना) गु० रुका हुआ, ठहरा हुआ, मूर्ख, सुस्त, नम्रतारहित ।

सं० स्तब्धत्व पु० अदब, दबाव ।

सं० स्तम्भ (स्तम्भ=ठहरना, रोकना) पु० खंभा, थंभा, थंभ, थूनी, रुकाव, अटकाव ।

सं० स्तम्भन भा० पु० रोकना, जड़ करना ।

सं० स्तव (स्तु=सराहना) पु० स्तुति, बड़ाई, प्रशंसा, तारीफ़, सराह ।

सं० स्तवक पु० गुच्छा, गुलदस्ता ।

सं० स्तवन भा० पु० स्तुति, प्रशंसा ।

सं० स्तिमित गु० अचल, स्थिर ।

सं० स्तुति (स्तु=सराहना) स्त्री० सराह, वड़ाई, तारीफ़, प्रशंसा, २ भजन ।

सं० स्तुत्य कर्म० प्रशंसित, स्तवनीय, तारीफ़ के लायक़ ।

सं० स्तेन (स्तेन=चोरी करना) पु० चोर, चौर, दुज़्द ।

सं० स्तेय पु० चौरकर्म, चोरी, दुज़्दी ।

सं० स्तोता क० पु० प्रशंसक, तारीफ़ करनेवाला ।

सं० स्तोत्र (स्तु=सराहना) पु० सराह, बड़ाई, स्तुति ।

सं० स्तोम पु० पुञ्ज, समूह, २ यज्ञ, स्तुति, ३ मस्तक, ४ लोहदण्ड ।

सं० स्त्री (स्त्यै=इकट्ठा होना) स्त्री० लुगाई, नारी, औरत ।

सं० स्त्रीधन पु० दायज, महेर ।

सं० स्थपति बृहस्पति, यज्ञकर्ता, शिल्पी ।

सं० स्थल (स्थल्=ठहरना) पु० सूखी धरती, खुश्की जगह ।

सं० स्थाणु पु० शिव, २ पीपल, ३ गु० मोटा, ४ डुंडावृक्ष, पत्ररहितवृक्ष ।

सं० स्थान (स्था=ठहरना) पु० जगह, घर, ठौर, ठाँव, ठिकाना ।

सं० स्थानापन्न (स्थान+आपन्न) क० पु० जगहपानेवाला, एवज़ी, क़ायममुक़ाम ।

सं० स्थापन (स्था=ठहरना) पु० बैठाना, रखना, धरना, ठहराना, जमाना ।

सं० स्थापित (स्था=ठहरना) कर्म० बैठायाहुआ, ठहरायाहुआ, जमाया हुआ, स्थापन किया हुआ ।

सं० स्थायिन् क० पु० ठहरनेवाला ।

सं० स्थाल पु० थाला, थारा ।

सं० स्थाली स्त्री० बटलोई, पाकपात्र, हांडी ।

सं० स्थावर (स्था=ठहरना) गु०

अचल, अटल, ठहरा हुआ, जो चले नहीं, जैसे पेड़, पत्थरआदि ।

सं० स्थिति (स्था=ठहरना) भा० स्त्री०ठहराव,टिकाव, वास, रहना, पालन, आसन, मर्यादा, सीमा ।

सं० स्थिर (स्था=ठहरना)गु०ठहरा हुआ, अचल, अटल, दृढ, २ शान्त, ठंढा, कोमल ।

सं० स्थिरपूंजी स्त्री० स्थिरधन, जायदाद ग़ैरमन्कूला ।

सं० स्थूल (स्थूल्=मोटा होना) गु० मोटा, फूला हुआ, बड़ा ।

सं० स्नातक (स्ना=न्हाना)क०पु० गृहस्थब्राह्मण, व्रती, स्नानकारी ।

सं० स्नान (स्ना=न्हाना)गु०न्हाना ।

सं० स्नायी क० पु० स्नानकर्ता, न्हानेवाला ।

सं० स्नायु स्त्री० नस, रग ।

सं० स्निग्ध गु० चिक्कण, चिकना, मेहरबान, दयालु ।

सं० स्नेह (स्निह्=प्यार करना या चिकना होना) पु० प्यार, छोह, मोह, प्रेम, नेह, मिताई, २ तेल आदि चिकनी चीज़, ३ चिकनाई ।

सं० स्पन्द संकल्प विकल्प, आगा पीछा, पशोपेश ।

सं० स्पर्द्धा (स्पर्द्ध=डाह करना) स्त्री० डाह, जलन, हिस्का, द्वेष, विरोध, वैर, ईर्षा ।

सं० स्पर्श (स्पृश्=छूना) पु०छूना, छुहावट, परसना, २ एकतरह की बीमारी जो छूने से लगती है ।

सं० स्पष्ट (स्पश्=देखना या प्रकट होना) गु० साफ़, खुला खुला, शुद्ध, सही, प्रकाशित, प्रकट ।

सं० स्पृष्ट (स्पृश् + त, स्पृश्=छूना) कर्म० छुआगया, कृतस्पर्श ।

सं० स्पृहा (स्पृह=चाहना) स्त्री० चाह, इच्छा, वाञ्छा, अभिलाष ।

सं० स्पृही क० इच्छान्वित, ख़्वाहिशमन्द ।

सं० स्फटिक (स्फट्=फटना या खुलना) पु० बिल्लौर का पत्थर ।

सं० स्फुटन (स्फुट्=विकसना)भा० पु० खिलना, फूटना ।

सं० स्फुटित क०विकसित,प्रफुल्लित ।

सं० स्फोटक (स्फुट्=फूटनिकलना) फोड़ा, चेचक ।

सं० स्फूर्त्ति (स्फुर्=हिलना) स्त्री० हिलाव, धड़धड़ाहट, स्फरन ।

सं० स्म अव्य० पूर्वसमय, व्यतीतकाल, गुज़रगया ।

सं० स्मर (स्मृ=याद करना) पु० कामदेव, २ याद, स्मरण ।

सं० स्मरण (स्मृ=याद करना)पु० चिन्तन, याद, सुध, चेत, स्मृति ।

सं० स्मरहर (स्मर=कामदेव, हर=नाश करनेवाला, हृ=नाशकरना) पु० शिव, महादेव ।

सं० स्मारक (स्मृ+अक, स्मरण

करना)-क० पु० स्मृतिज्ञाता, स्मरण करानेवाला ।

अं० स्मालकाज़कोर्ट अल्पन्यायालय, अदालतख़फ़ीफ़ा ।

सं० स्मित (स्मि=थोड़ा हँसना) पु० ईषद्धास्य, थोड़ाहँसना, मुसक्याना, मुसकिराना, गु० विकसित, विस्मित ।

सं० स्मृति (स्मृ=याद करना) स्त्री० याद, सुमिरन, स्मरण, २ धर्मशास्त्र, जैसे मनुस्मृति और याज्ञवल्क्यस्मृति आदि ।

सं० स्यन्दन (स्यन्द्=जाना) पु० रथ, २ सारथी, ३ जल, ४ वृक्ष ।

सं० स्यात् अव्य० विद्यमान, २ समीचीन, ३ शायद ।

प्रा० स्यानपन (स्याना) भा०पु० स्त्री० बुद्धिमानी, चतुराई, निपुणता, प्रवीणता ।

प्रा० स्याना सियाना शब्द को देखो ।

प्रा० स्यार } (सं० शृगाल) पु०
स्याल } गीदड़ ।

सं० स्रक् (सृज्=बनाना) स्त्री० माला, पुष्पमाला ।

प्रा० स्रवना (सं० स्रवण, स्रु=बहना) क्रि० अ० चूना, बहना, गिरना ।

सं० स्रोतः (स्रु=बहना) पु० सोता, बहाव, धारा, नाला ।

सं० स्व सर्वना० [illegible] आपका, निज, निजका, २ पु० धन, ३ जाति ।

सं० स्वकीय पु० अपना, निजका ।

सं० स्वकीया (स्व=अपना) स्त्री० अपनी ब्याही हुई स्त्री ।

सं० स्वच्छ (सु=बहुत, अच्छ=साफ़) गु० निर्मल, शुद्ध, उज्ज्वल, साफ़ ।

सं० स्वच्छता (स्वच्छ) भा० स्त्री० निर्मलता, सफ़ाई, उज्ज्वलता ।

सं० स्वच्छन्द (स्व=अपनी, छन्द= इच्छा या मतलब) गु० अपनी चाह के अनुसार चलनेवाला, आपमौजी, स्वाधीन, इच्छानुसार ।

सं० स्वच्छन्दता स्त्री० स्वतन्त्रता, स्वेच्छाचारिता, ख़ुद मुख़्तारी ।

सं० स्वतन्त्र (स्व=अपने, तन्त्र=वश) गु० स्वाधीनता, अपने वश ।

सं० स्वतन्त्रता (स्वतन्त्र) स्त्री० स्वाधीनता ।

सं० स्वतः (स्व) क्रि० वि० आपसे, आपसे आप, आपही, स्वभाव से ।

सं० स्वत्वस्थापित करना क़बज़ा करना, दख़ल करना ।

सं० स्वत्वापहरण भा० पु० बेदख़ली ।

सं० स्वधर्म (स्व + धर्म) पु० अपना धर्म, अपना काम, (जैसे वेदशास्त्र पढ़ना-पढ़ाना ब्राह्मणों का धर्म, देश का प्रबन्ध करना राजपूतों का धर्म, खेती [illegible] वैश्यों का

धर्म और नौकरी चाकरी करना शूद्रों का धर्म है) ।

सं० स्वधा (स्वद्=स्वाद लेना या स्व=आप, धा=रखना या धे=पीना) अव्य० पितरों को जब पिण्ड देते हैं तब यह शब्द बोलकर पिण्ड देते हैं, २ स्त्री० दुर्गा, देवी, माया ।

सं० स्वप्न (स्वप्=सोना) पु० सपना, नींद में जो देखा जाय ।

सं० स्वभाव (स्व + भाव) पु० प्रकृति, टेंव, बान, सुभाव, आदत, खू ।

सं० स्वयम् (स्व या सु=अच्छी तरह से, अय्=जाना) अव्य० आप, निज, अपना, आपसे ।

सं० स्वयंवर (स्वयम्=आपसे, वृ=पसन्द करना) पु० स्त्री का आप से पतिको पसन्द करना ।

सं० स्वयम्भु
स्वयम्भू } (स्वयम्=आप से, भू=पैदा होना) पु० ब्रह्मा, आपसे पैदा होनेवाला ।

सं० स्वयंसिद्ध (स्वयम्=आपसे, सिद्ध=बना हुआ) गु० आपही सच, जो आपही से पक्का ठहराया जाय ।

सं० स्वर (स्टृ=शब्द करना) पु० शब्द, आवाज़, २ वे अक्षर जो आपसे बोले जायँ और जिनके मिलने से व्यञ्जन भी बोले जायँ, ३ गानविद्या में तान सुर आदि ।

सं० स्वर (स्टृ=शब्द करना) पु० स्वर्ग, आकाश ।

सं० स्वरापगा (स्वः=स्वर्ग, आपगा=नदी) स्त्री० आकाशगङ्गा ।

सं० स्वरित गु० उदात्तानुदात्तयुक्त अर्थात् स्वरों की ऊँची नीची आवाज़ ।

सं० स्वरूप (स्व + रूप) पु० अपना रूप, २ छवि, शोभा, सुन्दरता ।

सं० स्वर्ग (स्वर्, गै=गाना या कहलाना, अर्थात् जो स्वर् कहलाता है या सु=अच्छी तरह से, ऋज्=जाना अर्थात् जहाँ अच्छी तरह से जाते हैं या रहते हैं) पु० इन्द्रलोक, देवताओंके रहनेकी जगह, आकाश ।

सं० स्वर्गीय
स्वर्ग्य } (स्वर्ग) गु० स्वर्ग का ।

सं० स्वर्ण (सु=अच्छा, अर्ण या वर्ण=रंग, जिसका रंग अच्छा है या सु=अच्छी तरह से, ऋण् या ऋ=जाना) पु० सोना, कञ्चन, कनक, हेम, बहुत मोल की धातु ।

सं० स्वर्णकार (स्वर्ण=सोना, कार=करना) पु० सोनेका काम करने वाला, सुनार ।

सं० स्वल्प (सु=बहुत, अल्प=थोड़ा) गु० बहुत थोड़ा, बहुत छोटा, किञ्चित्, ज़रा ।

सं० स्वस्ति (सु=अच्छा, भला, अस्=होना) अव्य० कल्याण,

मङ्गल, अच्छा हो, भला हो, २ ऐसाही हो, तथास्तु ।

सं० **स्वस्तिवाचन** (स्वस्ति=कल्याण, वाचन=कहना, वच्=कहना) पु० किसी अच्छे काम के शुरूअ में किसी तरह का बिगाड़ न होने के लिये और देवताओं की आशिष पाने के लिये ब्राह्मणों से वेद के मन्त्र पढ़वाना, शान्ति, मङ्गलाचार।

सं० **स्वस्तिवाचक** (वच्+अक, वच्=कहना) क०पु०मङ्गलपाठक, दुआगो।

सं० **स्वस्त्ययन** (स्वस्ति+अयन) पु० शुभस्थान, शुभ का लाभ, मङ्गलाचरण ।

सं० **स्वस्थ** (स्व=अपने, स्था=रहना) क० सुखसे रहनेवाला, सावधान।

प्रा० **स्वांग** सवांग शब्द को देखो ।

सं० **स्वागत** (सु=अच्छी तरह से, आगत=आया हुआ) पु०आदर, सन्मान, सत्कार, कुशल, क्षेम ।

सं० **स्वाति** (सु=अच्छी तरह से, अत्=जाना) स्त्री० पन्द्रहवां नक्षत्र, २ चन्द्रमा की एक स्त्री ।

सं० **स्वाद** (स्वद् या स्वाद्=स्वाद लेना) पु० रस, सवाद, चाट, मज़ा, लज़्ज़त, २ मिठास, ३ ख़ुशी, प्यार, प्रीति ।

सं० **स्वादिष्ठ** / **स्वादुयुक्त** } गु०मज़ेदार, ज़ायकेदार ।

सं० **स्वादु** (स्वद् या स्वाद्=स्वाद लेना) गु० मीठा, रसीला, सुरस, मज़ेदार, २ चाहा हुआ ।

सं० **स्वाधीन** (स्व+आधीन) गु० अपने वश, स्वतन्त्र ।

सं० **स्वाभाविक** (स्वभाव) गु० जो स्वभाव से हो ।

सं० **स्वामित्व** (स्वामी) पु० स्वामीपन, मालिकियत, अधिकार, प्रभुता ।

सं० **स्वामी** (स्व=धन या आप) पु० मालिक, धनी, प्रभु, २ भर्त्ता, पति, ३ राजा, ४ गुरु, ५ परमहंस ।

सं० **स्वार्थ** (स्व=अपना, अर्थ=मतलब, अभिप्राय) पु० अपना मतलब, अपना काम, अपने लाभ की चाह ।

सं० **स्वार्थी** (स्वार्थ) गु० आप मतलबी, आप काजी, आत्मपालक, ख़ुद ग़रज़ ।

सं० **स्वास्थ्य** (स्वस्थ) भा० पु० आरोग्य, तन्दुरुस्ती, संतोष, सुख।

सं० **स्वाहा** (सु=अच्छी तरह से, आ=सब ओरसे, ह्वे=बुलाना) अव्य० होम या यज्ञ करते समय जब देवताओं को बलि देते हैं तब यह शब्द बोलते हैं, २ स्त्री० आग की स्त्री, ३ देवी, दुर्गा, माया ।

सं० **स्वीकार** (स्व=आप या अपना, कृ=करना) पु० अङ्गीकार, मानना,

हामी, हां, मंजूर, क़बूल ।

सं० स्वेच्छा (स्व + इच्छा) स्त्री० अपनी चाह, स्वाधीनता ।

सं० स्वेद (ष्विद्=पसीना होना) पु० पसीना, पसेव, प्रस्वेद, ताप, गर्मी ।

सं० स्वेदज (स्वेद=पसीना या गर्मी, जन्=पैदा होना) पु० चिलुआ, जुई आदि छोटे छोटे जानवर जो पसीने से या भाफ़ अथवा गर्मी से पैदा होजाते हैं ।

सं० स्वैर (स्व + ईर्=जाना) पु० स्वेच्छा, यथेच्छा, स्वतन्त्र, स्वच्छन्द ।

सं० स्वैरिणी (स्वैर + इन् + ई) स्त्री० कुलटा, स्वेच्छाचारिणी ।

सं० स्वैरन्ध्री } (स्वैर + न्ध्र् + ई)
सैरन्ध्री } क० स्त्री० पराये घर में रहनेवाली, २ शिल्पकारिणी ।

सं० स्वैरी (स्वैर + ई) क० स्त्री० स्वतन्त्र, स्वेच्छाचारिणी ।

सं० ह (हा=छोड़ना या जाना) पु० शिव, २ पानी, ३ आकाश, ४ स्वर्ग, ५ मङ्गल, ६ लोहू, ७ वि० वो० हाय हो, हाहा, ८ पद पूरा करने के लिये, ९ सम्बोधन के लिये, १० नियोग, ११ क्षेप, फेंकना, १२ निग्रह, १३ प्रसिद्ध ।

प्रा० हँकाना (हांकना) क्रि० स० निकाल देना, चलाना, हांकना ।

सं० हङ्कार (हम्=ऐसा क्रोध का शब्द, कृ=करना) पु० हांक, पुकार, चिल्लाहट, २ निकालना, हांकना ।

प्रा० हंडा (सं० हण्ड, हन्=मारना) पु० तांबे पीतल का अथवा मिट्टी का बड़ा बरतन, कड़ाह ।

प्रा० हंडा फोड़ना बोल० भेद खोल देना, राज खोल देना ।

सं० हंस (हन्=मारना या जाना अथवा हस्=हँसना) पु० एक तरह के पखेरू जो पानी के सरोवरों में रहते हैं, २ आत्मा, जीव, ३ परमात्मा, ब्रह्म, ४ नृप, ५ योगी, ६ तुरङ्ग, श्वेत, सफ़ेद ।

सं० हंसक क० पु० पादकटक, बिछुआ, घुंघुरू ।

प्रा० हंसगमनी } (सं० हंसगामि-
हंसगवनी } नी, हंस, गामिनी =चलनेवाली, गम्=जाना, चलना) स्त्री० जिस स्त्रीकी चाल हंस की सी हो ।

प्रा० हँसना (सं० हसन, हस्=हँसना) क्रि० अ० हँसी करना, मुसुकुराना, ठट्ठा करना ।

प्रा० हँसमुख (सं० हास्यमुख) गु० जिसके मुँहपर हँसी खुशी जानी जाय, मगन, आनन्दी, हँसनेवाला ।

---

(१) पतिं त्यक्त्वा तु यां नारी [illegible] स्वैरिणी साभिधीयते ॥

प्रा० हँसा पु० } (सं० हास्य)
हँसी स्त्री० } हाँसी, मुसकुराहट, ख़ुशी, खेल, विनोद ।

प्रा० हँसाई (सं० हास्य) स्त्री० हँसी, ठट्ठा, ठठोली ।

प्रा० हँसिया }
हँसुआ } पु० दराँती, दाँत, दात्र।

प्रा० हकराना क्रि० स० बुलाना, पुकारना, बुलवाना, बुलालेना ।

प्रा० हकबकाना क्रि० अ० घबराना, व्याकुल होना, हड़बड़ाना ।

प्रा० हकला गु० तोतला, लड़बड़ा, जो तुतला कर बोले ।

प्रा० हकलाना क्रि० अ० तुतलाना, हिचक २ के बोलना, अटक अटक के बोलना ।

प्रा० हक्काबक्का गु० घबराया हुआ, परेशान, बेहोश, व्याकुल, अचम्भे में, चकित, विस्मित ।

प्रा० हगना (सं० हद्=झाड़ा फिरना) क्रि० अ० झाड़ा फिरना, जंगलजाना, दिशाजाना, पाख़ाने जाना ।

प्रा० हचका } पु० धक्का, झोंक,
हचकोला } टक्कर ।

प्रा० हचरमचर पु० वाद विवाद, झूंठा झगड़ा, २ आगा पीछा, सोच विचार, पशोपेश ।

प्रा० हटकना क्रि० अ० रुकना, अटकना, छेंकना, क्रि० स० रोकना ।

प्रा० हटताल (हट=हाट, ताल =ताला) स्त्री० किसी दुःख अथवा अन्याय होने से दूकानों को ताला लगा देना, बाज़ारबन्ध ।

प्रा० हटना क्रि० अ० पीछे चला जाना, पीछे फिर जाना, टलना, चला जाना, अलग हो जाना, २ हार जाना ।

प्रा० हटवा (हाट) पु० तोलने वाला, क़याल, दूकानदार ।

प्रा० हटाना क्रि० स० दूर करना, अलग करना, टाल देना, निकाल देना, सरकाना, पीछे खेंच लेना ।

सं० हट्ट (हट्ट=चमकना) स्त्री० हाट, दूकान, बाज़ार ।

प्रा० हट्टाकट्टा पु० बलवान् और चालाक, संडमुसंड, पोढ़ा, गाढ़ा, धाकड़, ज़ोरावर ।

सं० हठ (हठ्=हठ करना) पु० मगराई, मचलाई, अड़, ज़िद, बलात्कार, ज़बरदस्ती ।

प्रा० हठकरना } बोल० मग-
हठकीटेकपरहोना } राई से किसी बात को नहीं मानना, ज़िद करना ।

प्रा० हठधर्मी गु० ज़िद्दी, हठीला ।

सं० हठात् क्रि० वि० बलात्, बल से, ज़बरन् ।

प्रा० हठी } (हठ) गु० मगरा,
हठीला } चिड़चिड़ा ।

प्रा० हड़गिल्ला } (सं० हड्ड=हड्डी,
हड़गीला } गॄ=निगलना) पु० एक पखेरू का नाम जो पाँच फुट ऊँचा होता है और उसके पंख फैलने से पन्द्रह फुटतक नापा गया है।

प्रा० हड़फूटन पु० हड्डियों में दर्द ।

प्रा० हड़बड़ाना क्रि०अ०घबराना, व्याकुल होना, हकबकाना, जल्दी करना ।

प्रा० हड़बड़ी स्त्री० खलबली, हुल्लड़, बलवा, हौरा ।

प्रा० हड़हड़ाना क्रि०० काँपना, थरथराना, २ खड़खड़ाना, धड़धड़ाना, आवाज़ होना ।

प्रा० हड़हड़ाहट स्त्री० खड़खड़ाहट, आवाज़ ।

प्रा० हड्डी (सं० हड्ड) स्त्री० हाड़ ।

प्रा० हत् वि० बो० दुर, दुत ।

प्रा० हतना } (सं० हनन, हन्=
हनना } मारना) क्रि० स० मारना, मारडालना ।

सं० हत (हन्=मारना) कर्म०मारा हुआ, नष्ट ।

सं० हति (हन्=मारना) स्त्री० मारना, हनना, गुणना ।

सं० हत्या (हन्=मारना) स्त्री० मारना, हिंसा, खून, पाप ।

सं० हताशा (हत+आशा) गु० छिन्नाशा, नाउम्मैद ।

फ़ा० हत्तुलइम्कान इच्छा पूर्वक, यथासाध्य ।

प्रा० हत्यारा (सं० हत्याकार) क०पु० हत्या करनेवाला, हिंसक, पापी, दुष्टी ।

प्रा० हथ (सं० हस्त) पु० हाथ ।

प्रा० हथकड़ी स्त्री० हाथ की बेड़ी, एक बड़ा भारी लोहे का कड़ा जो क़ैदियों के हाथ में डालदिया जाता है ।

प्रा० हथखण्डा (हथ=हाथ, खण्डा =ढब) पु० ढब, टेंव, अभ्यास, करतब, चाल, बान, हथौटी ।

प्रा० हथनी (सं० हस्तिनी) स्त्री० हस्तिनी ।

प्रा० हथफेर बोल० अदलाबदली, एरा फेरी, २ छल, फ़रेब, खोटे रुपये को चालाकी से अच्छे रुपये से बदल लेना ।

प्रा० हथलेवा (हथ=हाथ, लेवा= लेना) पु० ब्याह में दुलहा दुलहिन का हाथ मिला देना, ब्याह की एकरीति ।

प्रा० हथवासना क्रि० स० हाथ में लेना, हाथ में पकड़ना ।

प्रा० हथवासे क्रि० वि० हाथ में, अपने अधिकार में ।

प्रा० हथा } (सं० हस्त) पु०बेंट,
हत्था } क़बज़ा, २ बेलचा, खोदनी ।

ा० हथिया (सं०हस्त) पु० ज्योतिष में तेरहवां नक्षत्र ।

ा० हथियाना (हाथ) क्रि० स० पकड़ना, हाथ में लेलेना ।

ा० हथियार (हाथ) पु० शस्त्र, २ कलकांटा, औज़ार ।

ा० हथेली (हाथ) स्त्री० हाथ में बीचकी जगह ।

ा० हथौटी (हाथ) स्त्री० चतुराई, प्रवीणता, होशियारी, गुण, हुनर ।

ा० हथौड़ा पु० घन, बड़ा मार्तोल ।

ा० हथौड़ी स्त्री० छोटा हथौड़ा ।

सं० हनन (हन् + अन, हन्=मारना) भा०पु० मारना, घात, हिंसा ।

सं० हननीय (हन् + अनीय, हन् =मारना) र्म० मारनेयोग्य ।

सं० हनुमान् (हनु=ठुड्डी, हन्=नाश करना, मत्=वाला) पु० श्रीरामचन्द्र का दूत, पवनका पूत, हनुमन्त, महावीर ।

सं० हन्तव्य (हन् + तव्य) र्म० मारने के लायक़, हनने योग्य ।

सं० हन्ता क० पु० मारनेवाला, घातक ।

सं० हन्यमान (हन्य + मान, हन्=मारना) क० वध्यमान, मारनेवाला ।

सं० हय (हय् या हि=जाना) पु० घोड़ा, अश्व, तुरंग ।

सं० हर (हृ=लेना) पु० शिव, महादेव, २ आग, अग्नि, ३ गणितविद्या में भाजक, भिन्नगणित में वह अङ्क जो जतलाता है कि एक पूरी चीज़ के कितने टुकड़े किये गये हैं, नसबनुमा ।

प्रा० हर (सं० हल) पु० हल शब्द को देखो ।

प्रा० हरख } (सं० हर्ष) पु० आनन्द,
हरष } सुख, खुशी, प्रसन्नता ।

प्रा० हरखना } (सं० हर्षण, हृष्=
हरषना } खुश होना) क्रि० अ० प्रसन्न होना, खश होना, फूलना, खिलना, सुखी होना, आनन्दित होना ।

सं० हरगिरि (हर + गिरि) पु० महादेव का पहाड़, कैलास पहाड़ ।

सं० हरण (हृ=लेना) भा० पु० ज़बरदस्ती से किसी की चीज़ लेलेना, लूट, चोरी ।

प्रा० हरता (सं० हर्ता) क० पु० लेनेवाला, हरनेवाला, दूर करनेवाला, २ चोर, लुटेरा, ठग ।

प्रा० हरना (हरण) क्रि० स० लेलेना, ज़बरदस्ती से लेना, लूटना, चुराना ।

सं० हरणीय (हृ + अनीय, हृ=हरना) र्म० हार्य, हरणयोग्य ।

प्रा० हरनौटा } (हरिण) पु०
हिरनौटा } हरिण का बच्चा ।

प्रा० हरमुष्टा गु० बली, बलवान्, हट्टाकट्टा ।

प्रा० हरा (सं० हरित्) गु० सबज़ सबुज़ रंग, २ ताज़ा, नया ।

प्रा० हराना (हारना) क्रि० स० थकाना, शिकस्त देना, हरा देना, जीतना, जीतपाना ।

प्रा० हरावल पु० स्त्री० आगे की सेना (यह शब्द तुर्की है), २ अगाड़ी, आगा ।

प्रा० हरास (सं० ह्रास) पु० दुःख, शोक ।

सं० हरि (हृ=लेना, दूर करना) पु० विष्णु, २ इन्द्र, ३ साँप, ४ मेंडक, ५ सिंह, ६ घोड़ा, ७ सूर्य, ८ चाँद, ९ सूगा, सूवा, तोता, १० वानर, ११ यमराज, १२ हवा,—

(" हरिर्विष्णावहाविन्द्रे,
भेके सिंहे हये रवौ ।
चन्द्रे कीरे सवङ्गे च,
यमे वाते च कीर्तितः")

१३ ब्रह्मा, १४ शिव, १५ किरण, १६ मोर, १७ कोयल, कोकिला, १८ हंस, १९ आग, २० धनुष, २१ पर्वत, २२ गज, २३ कामदेव गु०, हरा रंग ।

प्रा० हरिअरे गु० हराहरा, २ हरि को अरे=शत्रु समझना ।

सं० हरिचन्दन पु० देववृक्ष, गोरोचन, मलयागिरिचन्दन, सफ़ेद चन्दन, ज्योत्स्ना, केशर ।

प्रा० हरिचंन्द
सं० हरिचन्द्र
सं० हरिश्चन्द्र (हरि=विष्णु, चन्द्र=चाँद) पु० एक बड़े दानी राजा का नाम जो अपना सत और धर्म निबाहने के लिये एक चंडाल के घर दास होकर रहा था।

सं० हरिजन (हरि=विष्णु, जन=भक्त) पु० विष्णु का भक्त, भगवान् का भक्त, २ प्रह्लाद, हिरण्यकशिपु का बेटा ।

सं० हरिण (हृ=लेना) पु० एक जानवर का नाम, मृग, मृगा, कुरंग, गु० हरा ।

सं० हरिणी स्त्री० मृगी, २ सुवर्ण की प्रतिमा, हरे रङ्ग की ।

सं० हरित् (हृ=लेना मनको) गु० हरा, सबज़, हरियर, पीला, पु० हरारंग, २ सूर्य का घोड़ा, ३ सिंह, ४ सूर्य, ५ विष्णु ।

सं० हरिताल (हरित्) स्त्री० पीले रंग की एक धातु ।

सं० हरितालक (हरित्) पु० हरित् कपोत, हरा कबूतर, शुक, सुगा, नाटक, हरताल ।

सं० हरितालिका स्त्री० भादौं सुदी तीज का स्त्रियोंका व्रत, दूर्वा, दूब ।

सं० हरिद्रा (हरित्=हरा या पीला रंग, द्रु=जाना) स्त्री० हल्दी ।

सं० हरिद्वार (हरि=विष्णु, द्वार=

---

(१) चन्द टरै सूरज टरै टरै जगत व्योहार । पै दृढ़ श्रीहरिचन्दको टरै न सत्य विचार ॥

दरवाज़ा अर्थात् जहाँ गङ्गा में न्हाने से वैकुण्ठ मिलता है) पु० एक शहर का नाम जो गङ्गा के तीर पर है वहाँ गङ्गा में न्हाने का बहुतफल है ।

प्रा० **हरिपैड़ी** (सं०हरिपंक्ति) स्त्री० हरिघाट, विष्णुघाट, विष्णुपैड़ी ।

सं० **हरिप्रिया** (हरि + प्रिया) स्त्री० लक्ष्मी, तुलसी, द्वादशी ।

सं० **हरिभक्त** (हरि + भक्त) पु० विष्णु का भक्त, विष्णुउपासक, वैष्णव ।

प्रा० **हरिभजन** (हरि + भजन) पु० विष्णु का भजन सेवन वा कीर्तन ।

प्रा० **हरियल** (हरा) पु० एक तरह का हरा कबूतर ।

सं० **हरियान** (हरि=विष्णु, यान=वाहन) पु० गरुड़, विष्णु का वाहन ।

प्रा० **हरियाली** (हरा) स्त्री० हराई, हरअरी, सबज़ी ।

सं० **हरिवाहन** (हरि + वाहन) पु० विष्णु की सवारी, गरुड़ ।

सं० **हरीश** (हरि=वानर, ईश=मालिक) पु० वानरों का राजा सुग्रीव ।

प्रा० **हरु**
हरुअ } गु० हलका ।

प्रा० **हरुआई** स्त्री० हलकाई, हलकापन ।

प्रा० **हर्ड़ा**
हर्ड़े
हर्रा
हर्रे } (सं० हरीतकी, हरि=हरा वा पीलारंग, इत + क + ई=पानेवाला) स्त्री० एक दवाई का नाम ।

सं० **हर्त्तव्य** (हृ + तव्य, हृ=लेना) कर्म० लेनेयोग्य ।

सं० **हर्त्ता** (हृ=लेना) क० पु० लेनेवाला, हरनेवाला, दूर करनेवाला, पु० चौर ।

सं० **हर्म्य** पु० अट्टालिका, अटारी, प्रासाद, अण्टा, ऊपर का कोठा ।

सं० **हर्ष** (हृष्=प्रसन्न होना) पु० आनन्द, सुख, प्रसन्नता, खुशी ।

सं० **हर्षण** (हृष् + अन, हृष्=प्रसन्न होना) भा० पु० आनन्द, ज्योतिष का एक योग ।

सं० **हर्षित** (हर्ष) क० आनन्दित, प्रसन्न, खुश, मगन, प्रफुल्लित, आह्लादित ।

सं० **हल** (हल्=चलना) पु० हर, नाङ्गल, लाङ्गल, एक चीज़ जिससे किसान बीज बोते समय धरती को साफ़ करते हैं, २ व्यञ्जन अक्षर ।

सं० **हलभूति** स्त्री० कृषिवृत्ति, खेती का धन्धा ।

प्रा० **हलका** गु० हौला, हलुक, फुलका, २ सस्ता, ३ ओछा, नीच, अधम, तुच्छ ।

प्रा० हलका करना बोल० बोझ उतारना, घटाना, कम करना, २ बे आबरू करना, हेठा करना, पानी उतारना, लतारना, बेइज़्ज़त करना ।

प्रा० हलकाजानना बोल० तुच्छ समझना, अयोग्य जानना ।

प्रा० हलकाना क्रि० स० सहारा देना, उकसाना ।

प्रा० हलकोरना क्रि० स० इकट्ठा करना, बटोरना, समेटना, २ लहराना, फहराना, मौजमारना ।

प्रा० हलचल पु० खलबली, हड़बड़ी, घबराहट, डर, हुल्लड़, बलवा ।

प्रा० हलचलमचना बोल० हुल्लड़ होजाना, ग़दर होना ।

प्रा० हलदिया (हल्दी) पु० एक तरह का ज़हर, २ कँवलरोग या पाण्डुरोग जिसमें सारा शरीर पीला पड़जाता है पीलियारोग, २ गु० पीलारंग, हल्दी सा रंग ।

प्रा० हल्दी (सं० हरिद्रा) स्त्री० एक तरह का मसाला ।

सं० हलधर (हल, धृ=रखना) पु० बलदेव, बलराम ।

प्रा० हलपना क्रि० अ० तड़फड़ाना, तड़फना, लोट पोट होना, २ जाड़े की तपसे काँपना ।

प्रा० हलफल स्त्री० शिष्टाचार, सन्मान, आदर, २ हड़बड़ी, हलचल ।

प्रा० हलरावना क्रि० स० बहलाना, बच्चे को खेलाना ।

प्रा० हलवाहा (हल) क० पु० जोता, हल जोतनेवाला ।

प्रा० हलहलाहट स्त्री० जर से या डर से काँपना ।

सं० हलायुध (हल + आयुध) पु० बलराम जिनका हथियार हल है, बलदेव, हलधर ।

सं० हलाहल पु० विष, ज़हर, माहुर, बड़ा ज़हर ।

सं० हली (हल + अ + इन्, हल् =जोतना) क० पु० लराम ।

प्रा० हलोरा } हिलोरा } (सं० हिल्लोल, हिल्लोल्=डोलना, हिलना) पु० लहर, मौज, तरङ्ग ।

प्रा० हल्ला (अ० हमला) पु० धावा, चढ़ाई, रौला, हुल्लड़ ।

सं० हवन (हु=होम करना) पु० होम, यज्ञ, आहुति ।

सं० हविः } हविष्य } (हु=होमना) पु० स्त्री० घी, तिल, चावल आदि होम की सामग्री ।

सं० हव्य (हु=होमना) पु० देवता को बलि या भेंट, नैवेद्य ।

सं० हविष्यान्न (हविष्य + अन्न) पु० तिल, चावल, जवादि ।

सं० हविर्भुज् पु० देवता, अग्नि ।

सं० हस्त (हस्=हँसना) पु० हाथ, २ हाथी की सूंड़, ३ तेरहवां

नक्षत्र, ४ कोहनी से लेकर बीचकी अंगुली के सिरे तक का नाम ।

सं० हस्तगत कर्म० हाथ में आया ।

सं० हस्तामलक (हस्त=हाथ, आमलक=आँवला, हाथ में आँवले के ऐसे अर्थात् बहुत सहज या हस्त=हाथ, अमल=निर्मल, क=पानी अर्थात् हाथमें निर्मल पानी की बूंद की तरह) गु० सहज, सुगम, बेमिहनत, २ पु० एक ग्रन्थ का नाम ।

सं० हस्तिदन्त (हस्ती + दन्त) पु० हाथीदाँत ।

सं० हस्तिनापुर (हस्तिन्=एक राजा, पुर=नगर) पु० पुरानी दिल्ली जिसको हस्तिन् नाम राजा ने बसाई थी और जो राजा युधिष्ठिर और उसके भाइयों की राजधानी थी, उसके खण्डहरे और चिह्न दिल्ली से ५७ मील ईशान कोनको गङ्गा की पुरानी नहर पर अबतक हैं ।

सं० हस्तिनी (हस्तिन्)स्त्री०हथिनी ।

सं० हस्ती (हस्तिन्, हस्त=सूंड़) पु० हाथी, गज, मतंग, नाग ।

सं० हस्र (हस्+र, हस्=हँसना) क० मूर्ख, अज्ञ ।

प्रा० हस्ली स्त्री० गले की हड्डी, २ गले में पहनने का सोने या चाँदी का एक गहना ।

सं० हा (हा=छोड़ना या जाना) वि० बोल०हाय, आह, ओह, दुःख, शोक, पीड़ा, विषाद, प्रसिद्ध, पादपूरण, विस्मय, कुत्सा, निन्दा, यथा "हाहातिकष्टः सुवीरप्रवासः" वीरों में बसना अतिकष्ट है ।

अं० हाईकोर्ट (हाई=बड़ी, कोर्ट=कचहरी) बृहन्न्यायालय ।

अं० हाउस आफ़ लार्ड्स मजमा मुदब्बिरान आला, महान् राज्यप्रबन्धकों की सभा ।

अं० हाउस आफ़ कामन्स मजमा मुदब्बिरान आम, सर्वसाधारण राज्यप्रबन्धकों की सभा ।

प्रा० हां (सं० आं, अम्=जाना) क्रि०वि०मान लेने का शब्द, स्वीकार, अङ्गीकार, अंगेज़, ठीक ।

प्रा० हांक (सं० हंकार) स्त्री० पुकार, ज़ोर से पुकारना, ललकार, किलकारी, चिल्लाहट, गूंज, गर्ज, २ निकालना ।

प्रा० हांक मारना बोल० ज़ोर से पुकारना, चिल्लाना, ललकारना ।

प्रा० हांकना (हङ्कार) क्रि० स० पुकारना, ललकारना, २ निकालना ।

सं० हाङ्गर (हा=दुःख, अङ्ग=शरीर, श=लेना अर्थात् जो दुःख देने के लिये आदमीको ले लेता या पकड़ लेता है) पु० मगरमच्छ ।

प्रा० **हांड़ी** ⎫ (सं० हण्डी, हन्=
हांडी ⎭ मारना या फोड़ना)
स्त्री०एक तरह का मिट्टी का बरतन।

प्रा० **हांपना** ⎫ क्रि०अ०हफहफाना,
हांफना ⎭ हौंकना, ऊँची सांस
लेना।

प्रा० **हांस** (सं० हंस) पु० हंस।

प्रा० **हांसी** (सं० हास्य) स्त्री० हँसी, मसखरी, ठट्ठा।

प्रा० **हांहीं** ⎫ क्रि० वि० हां, ठीक,
हांहूं ⎭ सच, सही।

अ० **हाकिम** प्रशास्ता, हुक्म करने वाला।

प्रा० **हाट** ⎫ (सं०हट्ट) स्त्री०दूकान,
हाठ ⎭ लेन देन की जगह,
बाज़ार, चौक, कटरा।

सं० **हाटक** (हट्=चमकना) पु० सोना, कञ्चन, धतूरा, गु० सोने का बना हुआ, सोने का।

प्रा० **हाटकपुर** (हाटक + पुर) पु० सोने का नगर, लङ्का।

प्रा० **हाड़** (सं० हड्ड) पु० हड्डी।

प्रा० **हात** ⎫ (सं० हस्त) पु० शरीर
हाथ ⎭ का एक अङ्ग, हस्त,
कर, २ कोहनी से लेकर बीच की अंगुली के सिरे तक का नाप, ३ अधिकार, वश, क़बजा।

प्रा० **हाथ आना** ⎫ बोल०अपने अ-
हाथ में आना ⎭ धिकार में आना,
क़बजे में आना, मिलना, हाथ लगना, मिलजाना।

प्रा० **हाथ उठाना** बोल० छोड़देना, किसी काम के करने से रुकजाना, २ हाथ शिर पर लगा के सलाम करना, ३ मारना, ४ भीख देना, ख़ैरात बाँटना।

प्रा० **हाथ कमर पर रखना** बोल० बहुत निबल होना, बहुत कमज़ोर होना।

प्रा० **हाथ कानों पर रखना** बोल० अचम्भेमें होना, २ झटपट इन्कार कर जाना।

प्रा० **हाथ खैंचना** बोल० छोड़ना, मुँह फेरना, दूर भागना, किनारे होना, अलग होना।

प्रा० **हाथ चाटना** बोल० किसी अच्छे खाने का बहुत स्वाद लेना या अच्छे खाने को बहुत ख़ुशी से खाना।

प्रा० **हाथ जोड़ना** बोल० विनती करना, घिघियाना।

प्रा० **हाथ डालना** बोल० किसी काम में अपना अधिकार करना, दस्तअंदाज़ी करना, दखल करना, दबाना।

प्रा० **हाथ धोना** बोल० निराश होना, नाउम्मैद होना।

प्रा० **हाथ पड़ना** बोल० अपने अधिकार में आना, क़बजे में आना, हाथ लगना।

प्रा० हाथ पत्थर तले दबना बोल० बेवश होना, कुछ नहीं करसकना ।

प्रा० हाथ पसारना बोल० माँगना, चाहना ।

प्रा० हाथ पाँव फूल जाना बोल० घबरा जाना, काम करने से हिचकिचाना ।

प्रा० हाथ पाँव मारना बोल० मिहनत करना, कोशिश करना, २ घबरा जाना, वृथा परिश्रम करना ।

प्रा० हाथ फेंकना बोल० पटा या लकड़ी चलाना, २ मुफ़्त का माल लेना ।

प्रा० हाथ फेरना बोल० प्यार करना, दुलार करना, छोह करना, गले लगाना, फुसलाना, शाबाशी देना ।

प्रा० हाथ बन्द होना बोल० काम में बहुत लगा रहना, कुछ फुर्सत नहीं पाना, २ गरीब होना, ख़ाली हाथ होना, तिहीदस्तहोना ।

प्रा० हाथबढ़ाना बोल० किसी चीज़के मिलनेके लिये कोशिश करना, २ दूसरे आदमी के माल असबाब पर दख़ल करना ।

प्रा० हाथबाँधना बोल० हाथ जोड़ना, बिनती करना ।

प्रा० हाथबैठना बोल० जमना, किसी हुनर में खूब अभ्यास होना ।

प्रा० हाथभरना बोल० हाथ थक जाना ।

प्रा० हाथमलना बोल० पछतावा करना, सोच करना, फ़िक्र करना ।

प्रा० हाथमारना बोल० वचन देना, ताली मारना, २ पाना, लेलेना, छीन लेना, लूट लेना, ३ तलवार से घायल करना, वार करना ।

प्रा० हाथमिलाना बोल० बराबरी का दावा करना, २ कुश्ती लड़ने को तैयार होना ।

प्रा० हाथमेंरखना बोल० अपने अधिकार में रखना, अपने अख़्तियार में रखना, वश में होना ।

प्रा० हाथलगना बोल० हाथ आना, मिलना, पाना, हासिल होना ।

प्रा० हाथलगाना बोल० हाथ रखना, छूना, २ झिड़कना, सज़ा देना, ३ किसी काम में लगना, किसी काम को शुरूअ करना ।

प्रा० हाथसमेटना बोल० देनेसें हाथ को रोक लेना ।

प्रा० हाथपाईकरना }
हाथबाहीकरना } बोल० धक्कम धक्का करना, धौलधप्पा चलाना, लात मुक्की मारना, आपस में लड़ना ।

प्रा० हाथोहाथकरना बोल० सब मिलके करना ।

प्रा० हाथोंहाथ बोल० तुरन्त, झटपट, तुरत, फुरत ।

प्रा० हाथोंहाथलेजाना बोल० झट-

पट लेजाना, तुर्तफुर्त झपट लेना ।

प्रा० हाथा (सं० हस्त) पु० हाथ, २ अधिकार, वश ।

प्रा० हाथाजोड़ी स्त्री० एक पौधे का नाम ।

प्रा० हाथी (सं० हस्ती) पु० एक जानवर का नाम, मतंग, गज ।

प्रा० हाथीदाँत (सं० हस्तीदन्त) पु० हाथी का दाँत ।

प्रा० हाथीवान् पु० महावत ।

प्रा०हान } (हा=त्यागना, छोड़ना)
सं०हानि } स्त्री०घटी,टोटा,नुक़सान।

प्रा० हाय } (सं०हाहा)वि०बोल०
हायहाय } आह, ओह, २ स्त्री० दुःख, पछतावा ।

सं० हायन पु० स्त्री० वर्ष, वत्सर, वर्ष का दिन ।

प्रा० हायमारना बोल० पछताना, दुःख करना, आह मारना, आह भरना, किसी की उन्नति देख कर कुढ़ना ।

प्रा० हायहायकरना बोल०रोना, पीटना, दुःख से रोना ।

सं० हार (हृ=लेना) पु० मोती अथवा फूलों की माला ।

प्रा० हार (सं० हारि, हृ=लेना) स्त्री० शिकस्त, पराजय, घटी, २ पु० बेलों का झुण्ड, ३ चरने की जगह, चरी, चरागाह ।

सं० हारक (हृ+अक, हृ=लेना) क० पु० कितव, चोर, भाजकाङ्क, चुरानेवाला ।

प्रा० हारना (सं० हरण) हृ=लेना या पकड़ना, क्रि० अ० थकना, शिकस्त खाना, पराजित होना, २ खेल खोना, खेल में मात होना ।

प्रा०हारमानना } बोल० निराश
हारमानलेना } होके छोड़देना।

सं० हारित र्म० हरगया, छीना गया, ज़बरदस्ती से लिया गया ।

सं० हार्दिक दुःख भा० पु० चित्त ताप, दिली सदमा ।

सं० हारी क० पु० चोर, ठग ।

सं० हार्य र्म० हर्तव्य,चुरानेलायक़ ।

सं० हाव (ह्वे=बुलाना या कामदेव को उठाना) पु०नख़रा, चोंचला, तावभाव, हावभाव, रावचाव ।

सं० हावभाव (हाव+भाव) पु० रावचाव, रंगरस, दुलार प्यार, नख़रा, चोंचला ।

सं० हास्य (हस्=हँसना) पु०हँसी, हाँसी, ख़ुशी, कौतुक, खेल, ठट्ठा ।

सं० हाहा (हा=छोड़ना सुख को) क्रि० वि० हाय हाय, आह, ओह, २ अचम्भा, वाह, वाहवाह ।

सं० हाहाकार (हाहा=हाय हाय, कृ=करना) पु० हाय हाय करना, घबराहट, २ लड़ाई का शब्द, हुल्लड़, कोलाहल, शोक का शब्द ।

प्रा० हाहाहीही स्त्री०हँसी,हँसना।

हाहाहीहीकरना बोल० हँसना, दाँतनिकालना ।

० **हि** अव्य० हेतु, निश्चय, अवधारण, निकालना, विशेष, प्रश्न, सम्भ्रम, हेतु, उपदेश, शोक, असूया, निन्दा, अवश्य ।

० **हिंडोल** (सं० हिन्दोल, हिल्लोल्=हिलना) स्त्री० एक राग का नाम जो वसन्त ऋतु में भोर के समय गाया जाता है ।

० **हिंडोला** (सं० हिन्दोल, हिल्लोल्=हिलना) पु० पलना, झूला, २ गीत जो झूलते समय गायाजाता है ।

० **हिंसक** } (हिंस्+अक, हिंस्
हिंस्रक } =मारना) क० पु० मारनेवाला, हिंसा करने वाला, घातक, वधिक, २ दुर्जन, दुष्ट, पापी, ३ जङ्गली जानवर जैसे बाघ भेड़िया चीता आदि ।

० **हिंसन** भा० स्त्री० वध करना, मारना ।

० **हिंसा** (हिंस्=मारना) स्त्री० मारना, वध, घात, २ नुक़सान ।

० **हिक्का** स्त्री० हेचकी, हिचकी, रोगभेद ।

० **हिंगु** पु० रामठ, हींग ।

० **हिंगुल** (हिंगु एक लालचीज़, ला=लेना) पु० सिन्दूर ऐसी लालचीज़, शिंगरफ़ ।

प्रा० **हिचकना** क्रि० अ० आगा पीछा करना, रुकना, दबना, झझकना, हटना, टलना, ठिठकना ।

प्रा० **हिचकाना** क्रि० स० धक्का देना, झोका देना, दिल छोटा करना, हिम्मत पस्त करना ।

प्रा० **हिचकिचाना** बोल० संदेह में पड़ना, दुबिधामें होना, आगा पीछा करना, २ हकलाना, लड़बड़ाना ।

प्रा० **हिचकी** (सं० हिक्का, हिक्क्=हिचकी लेना) स्त्री० 'हिच्' ऐसा शब्द जो गले में से निकलता है ।

प्रा० **हिजड़ा** पु० नपुंसक, नामर्द ।

सं० **हित** (हि=जाना या बढ़ना, अथवा धा=रखना) पु० प्यार, मित्राई, २ उपकार, भलाई, ३ गु० उचित, ठीक, योग्य, भला ।

सं० **हितकार** } (हित=भला, कार
हितकारी } या कारी=करने वाला, कृ=करना) क० भला करने वाला, मित्र, सज्जन, उपकारी, हितू ।

प्रा० **हितू** (हित) क० मित्र, हितकारी ।

सं० **हितैषी** (हित्=भला, इष्=चाहना) गु० दूसरे का भला चाहनेवाला, परोपकारी, हितकारी ।

सं० **हितोपदेश** (हित=भला, उपदेश=शिक्षा) पु० भली शिक्षा, अच्छी सीख, २ संस्कृत में विष्णुशर्मा की बनाईहुईएक पुस्तक जिस में राजनीति की बातें लिखी हैं ।

प्रा० हिनहिनाना क्रि० अ० घोड़े का बोलना, हींसना ।

प्रा० हिन्द (यह शब्द सिन्धु से निकला है क्योंकि पश्चिमी देशों के लोग 'स' की जगह 'ह' और 'ध' की जगह 'द' बोलते हैं और जब सिकन्दर यहाँ आया तो उसने सिन्धु नदी के इस पार के देश को हिन्द कहा था और आजतक यूनानवाले भी इसे 'इन्द' कहते हैं उसी से 'इण्डिया' शब्द बना है जिस नाम से अंगरेज़ हिन्दुस्तान को पुकारते हैं) पु० भरतखण्ड, हिन्दुस्तान ।

प्रा० हिन्दी (हिन्द) गु० हिन्दुस्तान का, हिन्दुस्तानी, २ स्त्री० हिन्दुस्तान की बोली ।

प्रा० हिन्दू (हिन्द) पु० हिन्दुस्तान के वासी जो वेद के मत को मानते हैं ।

सं० हिम (हि=जाना या बढ़ना) पु० पाला, वर्फ़, शीत, तुषार, गु० ठंढा, जमा हुआ ।

सं० हिमऋतु (हिम + ऋतु) स्त्री० जाड़ा, जाड़े की ऋतु, शीतकाल, सर्दी की ऋतु ।

सं० हिमकर (हिम=ठंढी, कर=किरण) पु० चाँद, २ कपूर ।

सं० हिमकूट पु० शिशिरऋतु, जाड़ा ।

सं० हिमगिरि (हिम + गिरि) पु० हिमालय पहाड़ ।

सं० हिमवत् (हिम=वर्फ़, वत् वाला) पु० हिमालय पहाड़, गु० वर्फ़वाला, बहुत ठंढा ।

सं० हिमांशु (हिम=ठंढी, अंशु=किरण) पु० चाँद, २ कपूर ।

सं० हिमाद्रि (हिम=वर्फ़, अद्रि=पहाड़) हिमालय पहाड़ ।

सं० हिमालय (हिम=वर्फ़, आलय=जगह) पु० हिन्दुस्तान का एक पहाड़ जो उत्तर में है और संसार के सारे पहाड़ों से ऊँचा है और जिसको हिमाचल, हिमाद्रि, हिमगिरि भी कहते हैं ।

प्रा० हिय (सं० हृद् या हृदय)
हिया पु० हिरदा, मन,
हियो हृदय ।

प्रा० हियाव (सं० हृदय) भा० पु० शूरमापन, शूरवीरता, हिम्मत, साहस ।

प्रा० हियो जब गाय गोरू को बुलाते हैं तब यह शब्द बोलते हैं ।

सं० हिरण (हृ=लेना, मन को)
हिरण्य पु० सोना, सुवर्ण ।

सं० हिरण्यकशिपु (हिरण्य=सोना, कशिपु=कपड़ा या शय्या, कश्=शब्द करना) पु० एक दैत्य का नाम जो प्रह्लाद का बाप था जिसको विष्णु ने नृसिंह अवतार लेकर मारा ।

सं० हिरण्यगर्भ (हिरण्य=सोना,

गर्भ=पेट) पु० जिसके पेट में सुवर्ण हो, शालग्राम की मूर्ति, २ ब्रह्मा ।

० हिरण्याक्ष (हिरण्य=सोना, अक्ष=आँख जिसकी आँखें सोने सी लाल चमकती हों) पु० हिरण्यकशिपु का भाई जो फिर कुम्भकर्ण और दन्तवक्र हुआ था ।

० हिरद / हिरदा (सं० हृद् वा हृदय,) पु० हिया, हृदय, छाती, मन, अन्तःकरण ।

ा० हिरन (सं० हरिण) पु० एक जानवर का नाम, मृग, मृगा ।

ा० हिराना क्रि० स० खोना, रख कर भूलजाना ।

प्रा० हिलकना क्रि० अ० दर्द से ऐंठना ।

ा० हिलकोर स्त्री० / हिलकोरा पु० (सं० हिल्लोल) लहर, तरङ्ग, मौज, २ हिलाव, लहराव ।

ा० हिलकोरना (हिलकोर) क्रि० अ० लहराना, मौजमारना, हिलाना ।

प्रा० हिलना (हिल्लोल) क्रि० अ० डोलना, काँपना, २ मिलजुल जाना, वश होजाना ।

प्रा० हिलमिलजाना बोल० मिला जुला रहना, मिलजुल जाना ।

प्रा० हिलामिला बोल० मिलाजुला ।

प्रा० हिलोरना (हिल्लोल) क्रि० अ० लहराना, मौज मारना, हिलकोरना ।

प्रा० हिलोरा (हिल्लोल) पु० लहर, तरङ्ग, मौज, हिलकोरा ।

प्रा० हिस्का पु० बराबरी, देखादेखी, बदाबदी, लाग ।

प्रा० हींग (सं० हिंगु, हिम्=ठंढा, गम्=जाना) स्त्री० एक सुगन्धित चीज़ जिसको घीमें गर्म करके दाल आदि तरकारी में बघार देते हैं ।

प्रा० हींसना क्रि० अ० हिनहिनाना ।

प्रा० हीक स्त्री० उबकाई, मतलाई ।

सं० हीन (हा=छोड़ना) गु० बिन, छोड़ा हुआ, रहित, कम, २ नीच, अधम, ३ ग़रीब, दीन ।

सं० हीनजाति (हीन=नीच, जाति =ज़ात) गु० नीच ज़ात का, २ स्त्री० गणित में बड़े नाम के अङ्कको छोटेनाम के अङ्कमें लाना जैसे रुपये को आनेके रूप में लाना आदि ।

सं० हीनवर्ण (हीन+वर्ण) गु० नीच जाति का, अधम, नीच ।

सं० हीर (हृ=लेना) पु० सार, गूदा, २ वज्र, ३ हीरा, ४ शिव, ५ साँप, ६ हार, ७ सिंह ।

प्रा० हीर स्त्री० एक स्त्री का नाम जो राँझा को बहुत प्यारी थी ।

प्रा० हीरा (सं० हीर) पु० एक रत्न का नाम ।

प्रा० हीरामन पु० एक तरह का

तोता, एकतरह का सुवा ।

प्रा० हीरावल
हीरावली } (सं०हरि+आवली, अर्थात् जिस पर हरि हरि ऐसा लिखा हो या हीर=हीरा, अवली=पांत) स्त्री० एक तरह का कम्बल जिसको योगी ओढ़ते हैं ।

प्रा० हीही वि० बो०हँसनेका शब्द, हाहा, हीही, २ अचम्भे का शब्द, आहा, वाहवाह ।

सं० हुङ्कार (हुम् ऐसा शब्द, कृ=करना) स्त्री० पुकार, गर्जन, डराने का शब्द ।

प्रा० हुड़दंगा गु० दंगैत, लड़ाक, उपद्रवी ।

प्रा० हुंडवी
हुंडी } स्त्री० रुपये के पहुँचाने की चिट्ठी ।

प्रा० हुंडाभाड़ा पु० बीमा, जोखिम पहुँचावना, किसी चीज़ या सोने चाँदी आदिके ज़ेवर को एक जगह से दूसरी जगह पहुँचा देनेके लिये जो कुछ ठहरे ।

प्रा० हुँडार पु० भेड़िया ।

प्रा० हुँडावन
हुँडियावन } स्त्री० हुंडी का बट्टा, हुंडी के लिये जो कुछ दियाजाय ।

प्रा० हुंडीवाल पु० कोठीवाल, वह महाजन जिसके हुंडी का व्यवहार होता है ।

सं० हुत (हु=होमना) कर्म०होमी हुई, पु०होमने की चीज़ जैसे घी आदि

सं० हुतभुक् पु० अग्निदेवता ।

सं० हुताश
हुताशन } (हुत+अश्=भक्षण करना) अग्नि, वह्नि

प्रा० हुमकना क्रि० अ०उछलना

प्रा० हुलसना (सं० उल्लसन उत् लस्=खेलना, आनन्द करना) क्रि०अ० खुश होना, प्रसन्न होना, आनन्दित होना ।

प्रा० हुलसी स्त्री० सुखी, खुशी, तुलसीदास की माता का नाम ।

प्रा० हुलास (सं० उल्लास) पु० आनन्द, हर्ष, खुशी, प्रसन्नता ।

प्रा० हुल्लड़ पु० रौला, बखेड़ा, हलबल, हौड़ा ।

प्रा० हूं क्रि० वि० हां, भी, सही, भला, ठीक, अच्छा, २ वर्त्तमानकाल में एक वचन उत्तमपुरुष का चिह्न ।

प्रा० हूंहां पु० धूमधाम, हुल्लड़ ।

प्रा० हूक स्त्री० पीड़ा, टसक ।

प्रा० हूकहूकके रोना बोल० सिसकी भरके रोना, टसक टसक के रोना ।

सं० हूति (ह्वे=बुलाना) स्त्री० आह्वान, बुलावा ।

प्रा० हून पु० मदरास का सोने का सिक्का ।

प्रा० हूलना क्रि० स० पेलदेना, (जैसे हाथी को) चलना, २ चुभाना, खींचना, आँकुस मारना ।

सं० **हृत** (हृ=लेना) वि० लिया हुआ।

सं० **हृद** } (हृ=लेना) पु० मन,
हृदय } दिल, २ कुण्ड, हिरदा, हिया, छाती ।

सं० **हृषीकेश** (हृषीक=इन्द्रिय, हृष्=प्रसन्न होना + ईश=मालिक) पु० विष्णु भगवान्, नारायण ।

सं० **हृष्ट** (हृष्=प्रसन्न होना) क० प्रसन्न, हर्षित, आनन्दित, मग्न ।

सं० **हृष्टपुष्ट** (हृष्ट=प्रसन्न, पुष्ट=मोटा ताज़ा) क० मोटा ताज़ा, प्रसन्न, संडमुसंड, मुश्कड़ ।

सं० **हे** अव्य० सम्बोधन, बुलाना, आह्वान करना, असूया करना, निन्दा करना ।

प्रा० **हेठ** क्रि० वि० नीचे, तले, हेठे ।

प्रा० **हेठा** (सं० हेठ्=रोकना) गु० डरपोकना, २ ढीला, आसकती, आलसी, ३ नीच ।

सं० **हेति** सूर्यका तेज, शस्त्र, अग्नि की ज्वाला ।

सं० **हेतु** (हि=जाना या बढ़ना) पु० कारण, सबब, अर्थ, अभिप्राय, मतलब, फल ।

सं० **हेम** (हि=बढ़ना) पु० सोना, सुवर्ण, कञ्चन ।

सं० **हेममाली** पु० सूर्य, स्वर्णमाली ।

सं० **हेमन्त** (हि=जाना या बढ़ना) पु० जाड़े की ऋतु, एक ऋतु जो अगहन और पूस के महीनों में रहती है, सर्दी ।

सं० **हेय** (हा=छोड़ना) वि० त्याज्य, छोड़ने योग्य ।

प्रा० **हेरना** क्रि० स० खोजना, ढूंढ़ना, २ देखना, ३ रगेदना, खदेड़ना।

सं० **हेरम्ब** (हे=शिव, रबि=जाना) पु० गणेश ।

प्रा० **हेलना** क्रि० अ० पैरना, तैरना, पार होना ।

सं० **हेला** (हेल्=अवज्ञा करना) स्त्री० खेल, क्रीड़ा, २ अवज्ञा, अनादर ।

प्रा० **हौंकना** क्रि० अ० हाँपना, हफहफाना, ऊँचा साँस लेना ।

प्रा० **होंठ** } (सं० ओष्ठ) पु० मुँह के
होठ } बाहर का हिस्सा, ओष्ठ।

प्रा० **होड़** स्त्री० पण, वचन, दाँव, पेच, शर्त ।

प्रा० **होड़बदना** बोल० शर्त लगाना ।

प्रा० **होड़लगाना** बोल० शर्त लगाना, वचन करना, पण करना, बाज़ी लगाना ।

प्रा० **होड़हारना** बोल० बाज़ी हारना ।

प्रा० **होत** (होना) स्त्री० वश, शक्ति, सामर्थ्य, पहुँच ।

प्रा० **होतब** (सं० भवितव्य) पु० भाग, क़िस्मत, प्रारब्ध ।

प्रा० **होतव्यता** (सं० भवितव्यता) स्त्री० होनहार, संयोग, भाग, प्रारब्ध ।

सं० होता (हु=होमना) क० पु० होम करनेवाला ।

प्रा० होना (सं०भवन, भू=होना) क्रि०अ० रहना, विद्यमान रहना ।

प्रा० होआना बोल० जाके चला आना ।

प्रा० होचुकना, होलेना } बोल०पूरा होना।

प्रा० होजाना बोल० आपड़ना, संयोग बनना ।

प्रा० होते होते बोल० धीरे-धीरे, क्रम-क्रम से ।

प्रा० होन्हार, होनहार } (होना) गु०होने वाला, संभव, जो होगा ।

सं० होम (हु=होमना) पु०हवन, यज्ञ, वेद के मन्त्रों से देवताओं को बलि देने के लिये घी आदि को आग में डालना ।

सं०होमकुण्ड(होम + कुण्ड)पु०होम करने के लिये आग रखने का गढ़ा ।

प्रा० होमना (होम) क्रि० स० होम करना, घी आदि होमकी चीज़ को आग में डालना ।

सं० होमी (हु=होम) क० पु० होम करनेवाला ।

प्रा० होला (सं०होलका,हु=खाना) पु० कच्चे चने या आग में सेंके हुए कच्चे चने, छोला, बूट ।

प्रा० होला पु०एक तरह की नाव ।

प्रा० होली (सं० होला, अथवा होलिका,हु=होम करना या खाना) स्त्री०हिन्दुओं का एक बड़ा तेहवार जो फागुन के महीने में होता है ।

प्रा० हौस (अ० 'हवस') स्त्री० चाह, चोप, इच्छा, उमंग, बढ़ने की चाह ।

प्रा० हौले क्रि० वि० धीरे, धीमे ।

सं० ह्यस् अव्य० गत दिन ।

सं० ह्रद (ह्राद्=शब्द करना) पु० गहरी झील, सरोवर, दह, कुण्ड ।

सं० ह्रस्व (ह्रस्=छोटा होना) पु० एक मात्रा का स्वर, लघु, २ गु० छोटा, नाटा, बावना ।

सं० ह्रास (ह्रस्=छोटा होना या शब्द करना) पु० घटी, कमी, क्षय, २ शब्द, आवाज़ ।

सं० ह्री (ह्री=लजाना) स्त्री०लाज, लज्जा, शर्म ।

सं० ह्लाद (ह्लाद्=प्रसन्न होना) पु० आनन्द, हर्ष, संतोष, सुख ।

सं० ह्लादित क० पु० आनन्दित, प्रसन्न, हर्षित ।

सं० ह्लादिनी स्त्री० बिजली, वज्र, ईश्वरी शक्ति, गु० आनन्दयुक्त ।

सं० ह्वलन (ह्वल्=जाना)पु० चलना, महादेव, ब्रह्मा, विष्णु, गणेश, स्त्री० सरस्वती, दुर्गा, लक्ष्मी ।

सम्पूर्णम् ॥

कवियों का जीवनचरित्र ।

कबीरदास—संवत् १६१० में उत्पन्न हुआ एक जुलाहे का लड़का था स्वामी रामानन्द के खड़ाऊं की ठोकर खाकर आह का शब्द किया इसको सुन स्वामीजी ने राम राम कहा इसने उनको अपना गुरु मान लिया इनके कबीर की साखी आदि कई ग्रन्थ हैं ॥

केशवदास—सनाढ्य ब्राह्मण देहली के महाप्रतापी अकबर बादशाह के समय में संवत् १६२४ में उत्पन्न हुए थे उस समय से अबतक के और किसी कविने गुरु आशय की जमकदार काव्य की रचना नहीं की है ओड़छा के राजा इन्द्रजीत के यहाँ ये कविजी रहा करते थे वहाँ उन्हीं राजा के नाम से चार पुस्तकें अर्थात् रामचन्द्रिका, रसिकप्रिया, कविप्रिया, विज्ञानगीता की रचना की थी जिसमें विज्ञानगीता तो ज्ञान के विषय में और शेष तीनों रस के काव्य हैं जिनका आशय कहना बहुत कठिन है इससे जाना जाता है कि केशवदासजी पिङ्गल, नायिकाभेद, अलंकार, लक्षणा, व्यञ्जना, कोष आदि जो काव्य के अङ्ग हैं इनमें बहुत विज्ञ थे प्राचीनलोग कहते चले आते हैं कि रसिकप्रिया के एक कवित्त का एक चरण "मखतूल के झूल झुलावत केशव भानु मनो शनि अङ्क लिये" ऐसा लिखा है जिसमें असम्भव उपमा होगई है जिससे स्वप्न में श्रीराधा महारानीजी ने कहा कि तुम्हारी प्रेतों की सी बुद्धि है तुम प्रेत होगे तिस पीछे कुछ काल व्यतीत कर ओड़छा में प्रेतयज्ञ करके केशवदासजी ने अपना शरीर त्याग किया और प्रेत हुए ॥

क्षेमकरण—सरवरिया ब्राह्मण गाँव धनौली ज़िला बारहबंकी के वासी संवत् १८३५ में पैदा हुए ये संस्कृत और भाषा दोनों की कविता में बड़े विज्ञ थे इन्होंने श्रीरामरत्नाकर संस्कृत में रामगीतमाला आदि भाषा के ग्रन्थ बनाये और संवत् १९१८ में स्वर्गवासी हुए ॥

ख़ानख़ाना नव्वाब अब्दुलरहीम—जिनका छाप अर्थात् तख़ल्लुस् रहीम और रहमन है संवत् १५८० में उत्पन्न हुए थे ये यावनीभाषा तथा संस्कृत और व्रजभाषा के बड़े पण्डित थे इनकी सभा रात दिन पण्डित जनों से भरी पुरी रहती थी संस्कृत में इनके बनाये हुए श्लोक बहुत कठिन हैं और भाषा में

गिरिधर कविराय—अन्तर्वेद के रहनेवाले संवत् १७७० में उत्पन्न हुए इन की सामयिक नीति सम्बन्धी कुण्डलिया विख्यात हैं ये जयपुर के जयसिंह सवाई की सभा में थे उक्त महाराजा ने इनको कविराय की पदवी दी थी ये एक कुण्डलियों का ग्रन्थ बना रहे थे पर पूरा न हुआ मृत्युवश हुए पश्चात् उनकी स्त्री ने उसे पूरा किया जिन कुण्डलियों में साईं का पद पड़ा है लोग कहते हैं कि उनकी स्त्री की कही हैं ॥

देवकीनन्दन, शिवनाथ, गुरुदत्त शुक्ल—ये तीन भाई कान्यकुब्ज ब्राह्मण कन्नौज के समीप मकरन्दनगर के वासी हिन्दी में बहुत अच्छे कवि थे इन्होंने फुटकर काव्य तो बहुत की है परन्तु पक्षीविलासनामक एक पुस्तक कही है जिसमें सब पक्षियों का जुदा २ रंग ढंग स्वभाव आदि का वर्णन किया है जिन दिनों पक्षीविलास की रचना करते थे तब कबूतर पक्षी के वर्णन में "गुरुदत्त तुम्हें यह छाँड़वे टोला" यह पद अन्त में कह गये जब पीछे को सोचा तो जाना कि यह काव्यागण पड़ गया है सो मिथ्या न होगा अब अवश्य करके यहाँका वास छूटेगा दैवयोग से गोरखपुर की ओर किसी राजा के यहाँ गये वहाँ बहुत मान से ठहराये गये दो ग्राम राजा ने नानकार दिये वहाँ गुरुदत्त जी रहने लगे और विक्रम के संवत् १८६४ में उत्पन्न हुए मैं (पण्डित श्रीधर त्रिपाठी) इनके मान्यों में हूँ ॥

गङ्गकवि—एकनौर गांव ज़िला इटावा के वासी थे संवत् १५९५ में उत्पन्न हुए ये बड़े कवि थे राजा वीरवर ने इनको छप्पय में एक लाख रुपये इनाम दिये इसी प्रकार से अकबर, जहाँगीर, ख़ानख़ाना, मानसिंह सवाई आदि सबों ने इनका बहुत मान किया और दान दिया ॥

घाघकवि—कान्यकुब्ज अन्तर्वेदनिवासी संवत् १७५३ में उत्पन्न हुए इनके दोहा, छप्पय, लोकोक्ति, अर्थात् ज़र्बुलमसल तथा नीतिसम्बन्धी सामयिक ग्रामीण बोल चाल में विख्यात हैं ॥

चन्द्रकवि—प्राचीन वन्दीजन सम्भलनिवासी सन् १०९८ में उत्पन्न हुए ये महाराजा वीसलदेव चौहान रणथम्भौरवाले के प्राचीन कवीश्वर के औलाद में थे संवत् ११२० में राजा पृथ्वीराज चौहान के पास आकर मन्त्री और कवीश्वर दोनों पदों को प्राप्त हुए, इन्होंने संस्कृत में एक लक्ष श्लोकों का पृथ्वीराज रायसानामक एक ग्रन्थ रचा जिसमें ६९ खण्ड हैं और पुरानी बोली हिन्दुओं की है । इस ग्रन्थ में चन्द्रकवि ने संवत् १११० से संवत् [illegible] के साथ बहुत छन्दों में

र्णन किया है छप्पयछन्द तो मानों इसी कवि के भाग में थे जैसा चौपाई न्द श्रीगुसाईं तुलसीदास के हिस्से में पड़ी थी इस ग्रन्थ में क्षत्रियों की शावली और अनेकयुद्ध और आबू पहाड़ का माहात्म्य और दिल्ली आदि राजधानियों की शोभा और क्षत्रियों के सुभाव, चालचलन, व्यवहार बहुत विस्तारपूर्वक वर्णन किये हैं ये कवि केवल कवीश्वरही नहीं थे वरन नीतिशास्त्र और चारन के काम काज में महाशूरवीर थे संवत् ११४९ में साथ पृथ्वीराज के ये भी मारेगये इन्हीं की औलाद में शारंगधर कवि थे जिन्हों ने हमीरगयरा और हमीरकाव्य भाषा में बनाया है ॥

चिन्तामणि त्रिपाठी—टिकमापुर ज़िले कानपुरवाले संवत् १७२९ में उत्पन्न हुए ये महाराज भाषासाहित्य के आचार्यों में गिने जाते हैं अन्तर्बेद में विदित है कि इनके पिता दुर्गापाठ करने नित्य देवीजी के स्थान में जाते थे वे देवीजी बन की भुइयां कहाती हैं टिकमापुर से एक मील के अन्तर पर हैं एक दिन महाराजराजेश्वरी भगवती प्रसन्न ह्वै चार मुण्ड दिखाय बोली यही चारो तेरे पुत्र होंगे निदान ऐसाही हुआ कि चिन्तामणि १ भूषण२ मतिराम ३ जटाशङ्कर या नीलकण्ठ ४ चार पुत्र उत्पन्न हुए इनमें केवल नीलकण्ठ महाराज तो एक सिद्ध के आशीर्वाद से कवि हुए शेष तीनों भाई संस्कृत काव्य को पढ़कर ऐसे पण्डित हुए कि उनका नाम प्रलयतक बाक़ी रहेगा इन्हीं के वंश में शीतल और विहारीलाल कवि जिनका लालभोग है संवत् १९०१ तक विद्यमान थे निदान चिन्तामणि महाराज बहुत दिनतक नागपुर में सूर्यवंशी भोसला मकरन्दशाह के यहाँ रहे और उन्हीं के नाम छन्दविचार नाम पिङ्गल १ एक बहुत भारी ग्रन्थ बनाया और काव्यविवेक २ कविकुलकल्पतरु ३ काव्यप्रकाश ४ रामायण ५ ये पाँच ग्रन्थ इनके बनाये हुए हैं ॥

तानसेन कवि—ग्वालियरनिवासी संवत् १५८८ में उत्पन्न हुए ये कवि मकरन्द पांड़े गौड़ ब्राह्मण के पुत्र थे प्रथम श्रीगोसाईं स्वामी हरिदासजू गोकुलस्थ के शिष्य हुए काव्यविद्या को यथावत् सीख तत्पश्चात् शेख मोहम्मद गौस गवालियरवासी के पास जाय संगीतविद्या के लिये प्रार्थना करी शाहसाहब तन्त्रविद्या में अद्वितीय थे बरन मुसल्मानों में इन्हीं को इस विद्या का आचार्य सब इतिहासों में लिखा है शाहसाहब ने अपनी जीभ तानसेन की जीभ में लगादी उसी समय से तानसेन गानविद्या में महानिपुण होगये इनकी

प्रशंसा आईनअकबरी में ग्रन्थकर्ता फ़हीम ने लिखी है कि ऐसा गानेवाल पिछले हज़ारा में कोई नहीं हुआ निदान तानसेन दौलतख़ां शेरख़ां बादशा के पुत्र पर आशिक़ है उनके ऊपर बहुत सी कविता करी तेहि पीछे दौलत ख़ां के मरने पर श्रीबान्धवनरेश रामसिंह बघेले के यहाँ गये और वहाँ से अकबर बादशाह ने अपने यहाँ बुला लिया तानसेन और सूरदासजी से बहुत मित्रता थी तानसेनजी ने सूरदास की तारीफ़ में यह दोहा बनाया ।

दो॰ क्रिधौं सूरको शर लग्यो, क्रिधौं सूर की पीर ।
क्रिधौं सूरको पद लग्यो, तन मन धुनत शरीर ॥ १ ॥

तब सूरदासजीने यह दोहा कहा ॥

दो॰ बिधना यह जिय जानिकै, शेष न दीन्हे कान ।
धरा मेरु सब डोलते, तानसेन की तान ॥ २ ॥

इनके ग्रन्थ रागमाला आदि महाकाव्य उत्तम कई ग्रन्थ हैं ॥

तुलसीदास—संवत् १६०१ में उत्पन्न हुए सरयूपारीण अर्थात् सरवरिया ब्राह्मण चित्रकूट के इलाक़े में राजापुरनामक ग्राम के रहनेवाले थे प्रथम तो पाण्डित्य के द्वारा अपना निर्वाह करते थे परन्तु अन्त को अपनी स्त्री के उपदेश से संन्यास धारण करके अयोध्यापुरी, चित्रकूट, काशीजी आदि तीर्थों में रहते रहे श्रीरामोपासक इन्होंने इसी संन्यासधर्म में रामायण की रचना की है सात प्रकार से रामायण कवित्तावली दोहावली और विनय-पत्रिका आदि बहुत अन्य काव्य कह मरणसमय से पहले तुलसीदास को यह ज्ञान होगया था कि मैं अमुक दिन इस असार संसार से पधारूंगा तब यह दोहा लिख अपने मित्रों को दिखा दिया ॥ दो॰ ॥ "संवत सोरहसै असी, असी वरुण के तीर । श्रावणशुक्ला सप्तमी, तुलसी तजे शरीर ॥" उसके लिखने के अनुसार उनका देहान्त हुआ ये षट्शास्त्री पण्डित थे ॥

द्विजदेव—महाराजा मानसिंह शाकद्वीपीय अवधनरेश संवत् १८८० के लगभग उत्पन्न हुए ये महाराज संस्कृत, भाषा, फ़ारसी, अंगरेज़ी आदि विद्या में महानिपुण थे प्रथम संवत् १६०७ के क़रीब इनको भाषाकाव्य करने की बहुत रुचि थी इसी कारण शृङ्गारलतिका नाम एक ग्रन्थ बहुत सुन्दर टीका सहित बनाया इनके यहाँ ठाकुरप्रसाद, जगन्नाथ, बलदेवसिंह आदि महान्

थे अन्त में इन दिनों अब क़ानून अंगरेज़ी का शौक़ हुआ था संवत् १९१० हान्त हुआ और इस देश के रईसों के भाग फूटगये ॥

पण्डित पुत्तीलाल त्रिपाठी—तिरवानिवासी ज़िला फ़र्रुख़ाबादके जो दश पुराण और कोष काव्यादि में अतिप्रवीण समस्या और कवित्तादि की ता में अतिनिपुण हैं इन्होंने सामयिक कवित्त व दोहादि बनाये जो कि ी समाचारपत्रों में बहुधा देखने में आये हैं ये इस ग्रन्थकर्त्ता के ज्येष्ठभ्राता डत बदरीनाथजी के पुत्र हैं ॥

पद्माकर भट्ट—बांदावाले मोहनभट्ट के पुत्र संवत् १८३८ में उत्पन्न हुए वि प्रथम आपासाहब अर्थात् रघुनाथ राव पेशवा के यहाँ थे जब पद्माकर ने यह कवित्त (“गिरत गरेते निज गोदते उतारे ना”) बनाया तो ाने एक लक्ष मुद्रा पद्माकर को इनाम दिया तयहि पीछे पद्माकरजी जय- में जाय सवाई जगत्सिंह के नाम जगद्विनोद नाम ग्रन्थ बनाय बहुत ा हाथी, घोड़े, रथ, पालकी लाय गङ्गासेवन में शेष काल व्यतीत किया ालहरी नाम ग्रन्थ इनका है ॥

ब्रह्मकवि राजा बीरबर का भोग है—ये महाराज कान्यकुब्ज द्विवेदी ण कानपुर से दक्षिण ओर यमुनाजी के समीप बारा अकबरपुर के रहने े थे अकबर शाह बादशाह के बड़े नामी मुसाहबों में शिरोमणि थे शास्त्र- ा में पण्डित, दान में कर्ण, शील का समुद्र, धर्म-कर्म में जमदग्नि, बुद्धि बृहस्पति सम, सत्य पूछिये तो राजा बीरबर जी को विप्रवंशावतंसशिरो- ण कहना चाहिये तो थोड़ा है क्योंकि उस समय से अब तक कोई और रा ब्राह्मण ऐसे दर्जे को नहीं पहुँचा और न नाम चलाया जो आजतक ावत चली जाती है कि उस मनुष्य वा उस लड़के का अथवा उस राजा बुद्धि को क्या कहना है वे तो मानों दूसरे बीरबर हैं उन्होंने जो काव्य ा में की है वह बहुत मनोरञ्जन है ॥

भूषण त्रिपाठी—टिकमापुर ज़िले कानपुर संवत् १७३८ में उत्पन्न हुए, वीर, भयानक ये तीनों रस जैसे इनकी काव्य में हैं ऐसे और कवि ोगों की कविता में नहीं पाये जाते ये महाराज प्रथम राजा छत्रशाल परना श के यहाँ छह महीने तक रहे तेहि पीछे महाराज शिवराज सुलङ्की सितारा वाले के यहाँ जाय बड़ा मान पाया और जब यह कवित्त भूषणजी ने ा-(“इन्द्र जिमि जम्भपर”) तब शिवराज ने पाँच हाथी और पच्चीस

हज़ार रुपया इनाम दिया इसी प्रकार से भूषण ने बहुत बार बहुत २ रुपया हाथी, घोड़ा, पालकी आदि दान में पाये ऐसे २ शिवराज के कवित्त बनाये हैं जिनकी बराबर किसी कवि ने वीरयश नहीं बनाय पाया निदान जब भूषण अपने घर को चले तो परना होकर राजा छत्रशाल से मिले छत्रशाल ने विचारा अबतो शिवराज ने इनको ऐसा कुछ धन धान्य दिया है कि हम उनका दशवां हिस्सा भी नहीं देसक्ते ऐसा शोच विचार कर चलते समय भूषण की पालकी का बाँस अपने कन्धे पर धरलिया ब्राह्मण कोमल हृदय तो होतेही हैं भूषणजी ने बहुत प्रसन्न ह्वै यह कवित्त पढ़ा ॥

“साहू को सराहौं की सराहौं छत्रशाल को” ॥ और दूसरा यह कवित्त बनाया ॥ “तेरी बरछी ने बरछीने ह्वै खलनके” ॥ और दो दोहा बनाय छत्रशाल को दे घर में आये ॥

दो० एक हाड़ा बूंदी धनी, मरद महेवावाल ।
शालत औरंगज़ेब के, ये दोनों छत्रशाल ॥ १ ॥
ये देखो छत्ता पता, ये देखो छत्रशाल ।
ये दिल्ली की ढाल ये, दिल्ली ढाहनवाल ॥ २ ॥

भूषणजी थोड़े दिन घर में रह बहुत देशान्तरों में घूम २ रजवाड़ों में शिवराज का यश प्रकट करते रहे जब कुमाऊं में जाय राजा कुमाऊं के यश में यह कवित्त पढ़ा (“उलदत्त मद अनुमद ज्यों जलद जल”) तब राजा ने शोचा कि ये कुछ दान लेने आये हैं और जो हमने सुना था कि शिवराज ने लाखों रुपया इनको दिया सो सब झूठ है ऐसा विचार हाथी, घोड़े, मुद्रा बहुत कुछ भूषण के आगे किया भूषणजी बोले इसकी अब भूख नहीं इसलिये यहाँ आये थे कि देखैं शिवराज का यश यहाँतक फैला है या नहीं—इनके बनाये हुए ग्रन्थ शिवराजभूषण १ भूषणहज़ारा २ भूषणउल्लास ३ दूषणउल्लास ४ ये चार ग्रन्थ सुने जाते हैं कालिदासजी ने अपने ग्रन्थहज़ारा की आदि में ७० कवित्त नौरस के इन्हीं महाराज के बनाये हुए लिखे हैं ॥

मदनगोपाल—ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण फतूहाबाद के निवासी थे इन्होंने संवत् १८७६ में बलिरामपुर के महाराज दिग्विजयसिंहजीके पिता अर्ज्जुनसिंह के नाम से अर्ज्जुनविलासनामक ग्रन्थ बनाया ये अच्छे कवि थे उस ग्रन्थ में इन्होंने सब पदार्थों का वर्णन संक्षेप से किया है और ग्रन्थ बनाने के पश्चात् थोड़ेही दिनों में इस असार संसार को छोड़ दिया ॥

मतिराम—ये महाराज भाषाकाव्य के आचार्यों में गिने जाते हैं हिन्दुस्तान में बहुधा बड़े राजों महाराजों के यहाँ थोड़े थोड़े दिन रहे और राजा उदान्तचन्द्र कुमाऊं नरेश और भाऊसिंह हाड़ा छत्रशाल राजा कोटाबूंदी और शम्भुनाथ सुलङ्की आदि के यहाँ बहुत दिनों तक रहे ललितानाम अलंकार ग्रन्थ राव भाऊसिंह कोटावाले के नाम से बनाया और छन्दसार पिङ्गल फतेशाह बुंदेला श्रीनगर के नाम से रचा और रसराजग्रन्थ नायिकाभेद का बहुत सुन्दर बनायाहै ॥

यशवन्तसिंह—बघेले क्षत्रिय तिरवानामक ग्राम कान्यकुब्जनगर से छह कोस दक्षिण के राजा थे संस्कृत में पण्डित, काव्यरचना में बड़े कवि, समर में शूर, योग-तप में योगी, पण्डित कवि गुणी लोगों का आदर सत्कार बहुत करते थे संस्कृत के १८ हों पुराण उन्होंने अपने पुस्तकालय में रक्खे थे वे अब तक उनके पौत्र राजा उदितनारायणजी के यहाँ विद्यमान हैं भाषाकाव्य की रचना करने में बड़े कुशल थे शृंगारशिरोमणि-शालहोत्र दो पुस्तकों की रचना की जिनमें अपना सम्भोग यशवन्त कहा है इन महाराज के कोई पुत्र न था इस कारण अपने भाई का पुत्र गोद लिया था और तालाव और श्रीअन्नपूर्णाजी का मन्दिर बनवाने के मनोरथ से तीन लक्ष रुपये खर्च करनेका संकल्प करके काशीजी से बहुत उत्तम पाषाण का मन्दिर और तालाव का चित्र मगवाकर ताल और मन्दिर बनवाने का प्रारम्भ किया परन्तु तालाव तो महाराजजी के मनमाना बनचुका और मन्दिर पनियाँसोत से जुड़कर पृथ्वीतल तक आने पाया था कि एक दिन रात्रिसमय महाराज को कुछ ज्वर आया दो चार दिन ज्यों त्यों कर बीते अन्त को अवश होकर विक्रम के संवत् १८७१ में स्वर्गवासी हुए उनके पश्चात् छोटे भाई पीतमसिंहजी जो उनके स्थानाधिप हुए उन्होंने उस मन्दिर को पूर्ण किया जिन्होंने देखा है वह कहते हैं कि गङ्गा यमुना के मध्य में ऐसा दूसरा मन्दिर नहीं है ॥

लालकवि लल्लूलालजी—गुजराती आगरावाले संवत् १८९२ में उत्पन्न हुए महाराज वार्तिकभाषा की बोलचाल में प्रथम आचार्य हैं इनका बनाया हुआ प्रेमसागर ग्रन्थ इस बात का साक्षी है और दोहा चौपाई आदि सीधे २ छन्दों के बनाने में भी निपुण थे सभाविलास २ माधवविलास ३ वार्तिक राजनीति ४ आदि इनके ग्रन्थ बहुत सुन्दर हैं ॥

बन्दीदीन दीक्षित—मसवासी ग्रामनिवासी ज़िला उन्नाम जो कि संवत् १९२० में उत्पन्न हुए थे जिन्होंने महाभारत भारतखण्ड भाषा आल्हा छन्द में

बनाया उक्त पण्डित भाषा काव्यादि में बड़े प्रवीण थे सूरसागर रामायणादि भाषा के ग्रन्थों में बड़े विद्वान् थे महाभारत आल्हखण्ड के अवलोकन करने से उनकी विद्वत्ता प्रकट होती है कथनकी कोई आवश्यकता नहीं है ॥

बिहारीलाल चौबे व्रजवासी—सं० १६०२ में उत्पन्न ये कवि जयसिंह कछवाहे महाराजा अजमेर के यहाँ थे जयपुर की तारीफ़ देखनेसे प्रकट है कि ये महाराजा मानसिंह से जो संवत्-१६०३ में विद्यमान थे संवत् १८७६ तक तीन जयसिंह होगये हैं पर हमको निश्चय है कि ये कवि महाराजा मानसिंह के पुत्र जयसिंह के पास थे जो महागुणग्राहक थे और दूसरे सवाई जयसिंह इन जयसिंह के प्रपौत्र संवत् १७५५ में थे यह बात प्रकट है कि जब महाराजा जयसिंह किसी एक थोरी अवस्थावाली रानी पर मोहित ह्वै रात दिन राजमन्दिर में रहने लगे राज्य के सम्पूर्ण काम काज बन्द होगये तब बिहारीलाल ने यह दोहा बनाय राजा के पासतक किसी उपाय से पहुँचाया ॥ दोहा ॥ "नहिं पराग नहिं मधुररस, नहिं विकाश यहि काल । अली कलीही सों बिध्यो, आगे कौन हवाल ? ॥" इस दोहापर राजा अत्यन्त प्रसन्न ह्वै १०० मोहर इनाम दै कहा इसीप्रकार के और दोहा बनावो बिहारीलाल ने ७०० दोहा बनाये और ७०० अशरफ़ी इनाम में पाईं यह सतसईग्रन्थ अद्वितीय है, बहुत कविलोगों ने इसके ढंग पर सतसई बनाकर अपनी कविता का रंग जमाना चाहा पर किसी कवि को सुर्खरूई प्राप्त नहीं हुई यह ग्रन्थ ऐसा अद्भुत है कि हमने १८ तिलक तक इसके देखे हैं और आजतक तृप्ति नहींहै लोग कहते हैं कि अक्षर कामधेनु होते हैं सो वास्तव में इसी ग्रन्थ के अक्षर कामधेनु दिखाई देते हैं सब तिलकों में सूरतिमिश्र आगरेवाले का तिलक विचित्रहै और सब सतसैयोंमें विक्रमसतसई और चन्दनसतसई इसके लगभगहैं॥

सुखदेवमिश्र—ये कवि भाषासाहित्य के आचार्यों में गिनेजाते हैं प्रथम राजा अर्जुनसिंह के पुत्र राजा राजसिंह गौरके यहाँ जाय कविराज की पदवी पाय वृत्तविचार नाम पिङ्गल सब पिङ्गलों में उत्तम ग्रन्थ को रचा तत्पश्चात् राजा हिम्मतसिंह बंधलगोती अमेठी के यहाँ आय छन्दविचार नाम पिङ्गल बनाया फिर नव्वाब फ़ाज़िलअलीखां मन्त्री औरंगज़ेब बादशाह के नाम भाषासाहित्य में फ़ाज़िलअलीप्रकाश नाम ग्रन्थ महाअद्भुत रचा इन तीनों ग्रन्थों के सिवाय हमने कहीं लिखा देखा है कि अध्यात्मप्रकाश १ दशरथराय २ ये दो ग्रन्थ और भी इन्हीं महाराज के किये हुए हैं ॥

सुन्दरकवि—ब्राह्मण ग्वालियरनिवासी संवत् १६८८ में उत्पन्न हुए ये महाराज शाहजहाँ बादशाह के कवि थे पहिले कविराय का पद पाय पीछे महाकविराय की पदवी पाई इनका बनाया हुआ सुन्दरशृङ्गार नाम ग्रन्थ भाषासाहित्य में बहुत सुन्दर है इन्हीं कवि के पद में यह अगन पड़ा था ("सुन्दर कोप नहीं सपने") यह कवित्त इस ग्रन्थ में है ॥

सबलसिंह—चौहान क्षत्रिय चन्द्रगढ़ के राजा थे इन महाराज के कोई पुत्र न था इसलिये बहुत से सज्जन तान्त्रिक-मान्त्रिक पण्डित बुलाकर पुत्रोत्पन्न होनेके हेतु देवपूजनका आरम्भ कराया बहुत दिनोंतक पूजन होतारहा परन्तु पुत्र होने की कुछ आश न हुई जब इस बात से राजा और पण्डित सब निराश हुए तब सब पण्डितों ने एकमत होकर कहा कि आपका नाम चलता यदि आपके पुत्र होता सो उस नामके टूट जानेका संदेह था तिससे उत्तम यह है कि हम सब लोग मिलकर आपके नाम से एक पुस्तक की रचना करें जिससे हज़ारों वर्ष आपका नाम इस भूमण्डल पर बना रहै इस बात को राजाने स्वीकार किया और आज्ञा दी कि महाभारत जो संस्कृत में है उसको भाषाकाव्य में कहो तब सब पण्डितों ने विक्रम के संवत् १८२७ में महाभारत को भाषा छन्दप्रबन्ध में कहने का आरम्भ किया और कुछ काल में सम्पूर्ण भारत को भाषाकाव्य में सबलसिंह जी के नाम से कहा है ॥

सूरदास ब्राह्मण—व्रजवासी बाबा रामदास के पुत्र वल्लभाचार्य के शिष्य संवत् १६४० में उत्पन्न हुए इन महाराज के जीवनचरित्रों से सब छोटे बड़े आगाह हैं भक्तमाल आदि में इनकी कथा विस्तारपूर्वक है सूरसागर इनका बनाया ग्रन्थ विख्यातहै हमने इनके पद साठहज़ार तक देखे हैं समस्त ग्रन्थ कहीं नहीं देखा इनकी गिनती अष्टछाप अर्थात् व्रजके आठ महाकवीश्वरों में है ॥

सहजराम—ये सनाढ्य ब्राह्मण पञ्जाब के रहनेवाले थे और यहाँ सुलतांपुर के ज़िले में जो बंधुवा ग्राम है वहाँ के रहनेहारे एक नानकसाही ब्राह्मण के शिष्य हुए ये भी बड़े महात्मा हुए हैं और सहजराम रामायण प्रह्लादचरित ये दो ग्रन्थ इन्होंने निर्मित किये और संवत् १२०५ में इस संसार से निराश हो स्वर्गवास किया ॥

नन्ददास ब्राह्मण—रामपुरनिवासी विट्ठलनाथजीके शिष्य संवत् १५८५ में उत्पन्न हुए इनकी गणना अष्टछाप में है अर्थात् व्रजभूमि के आठ महानन्द कवि सूर १ कृष्णदास २ परमानन्द ३ कुम्भनदास ४ चतुर्भुज ५ छीत ६

नन्ददास ७ गोविन्ददास ८ में ये भी एक हैं इनकी बाबत यह मसल है ("और सब गढ़िया नन्ददास जड़िया") इनके बनाये हुए ग्रन्थों के नाम ये हैं नाममाला १ अनेकार्थ २ पञ्चाध्यायी ३ रुक्मिणीमङ्गल ४ दशमस्कन्ध ५ दानलीला ६ मानलीला ७ और इन ग्रन्थों के सिवाय हज़ारों पद इनके हैं इन आठों महाकवीश्वरों के रचे अनेक ग्रन्थ आजतक व्रज में मिलते हैं ॥

हुलासराम—ये शाकद्वीपीय ब्राह्मण ज़िला बारहबंकी तहसील फ़तेहपुर ग्राम रामनगर के रहनेवाले थे इनके पिता का नाम मयागदत्त था इन्होंने बुद्धिप्रकाश, वेतालपञ्चविंशतिका, लङ्काकाण्ड आदि ग्रन्थ निर्मित किये १८४५ संवत् में उत्पन्न हुए और १९१२ में मृत्युवश हुए ॥

10648

STOCK VERIFY
2020
G.K.V. Library

COMPILED